हृदन्तरज्ञान-तमो-वितान-निवारणं पण्डित-मण्डलीड्यम्। त्रिकालदर्शि

श्री शंकरः शं करोतु।

भारतीय एवं पाश्चात्य ज्योतिष के विषयों

पंचांग-प्रवर्तकः

अखिल भारतोपयोगी

विक्रम संवत् २०५९, शक संवत् १९२४
सन् २००२-२००३, जय हिन्द संवत् ५५-५६

भीमाय व्योमरूपाय शब्दमात्राय ते नमः।
महादेवाय सोमाय अमृताय नमोऽस्तु ते॥

दैवज्ञरत्न राजज्योतिषी
स्व० पं० श्री मुकुन्दवल्लभ मिश्र ज्योतिषाचार्य

श्री मार्त्तण्ड पञ्चांगम्

पञ्चांगप्रवर्तक

अनेक ग्रंथों के यशस्वी लेखक स्व० पं० श्री मुकुन्दवल्लभ मिश्र ज्योतिषाचार्य

सम्पादक मण्डल

श्री प्रियव्रत शर्मा, M.A., सिद्धान्तज्योतिषाचार्य (बनारस), साहित्याचार्य, स्वर्ण-रजत पदक प्राप्त

दृक्सिद्धान्तभास्कर डॉ० शक्तिधर शर्मा M.Sc, Ph.D. (Nuclear Physics), (U.S.A.), F.R.A.S. (LONDON), M.A., सिद्धान्तज्योतिषाचार्य (बनारस), तीन स्वर्ण पदक प्राप्त

ज्योतिर्भूषण श्री इन्दुशेखर शर्मा शास्त्री, M.A., ज्योतिषाचार्य,

प्रकाशक: रुचिका पब्लिकेशन्स
7/6411 देवनगर, आर्य समाज रोड़, करोल बाग, नई दिल्ली-110005

मूल्य ७५.००

श्री मार्तण्ड पंचांग के 75 वें वर्ष प्रवेश की मांगलिक वेला पर

प्रिय पाठकों को हार्दिक बधाई

श्री शंकरः शं करोतु।

भीमाय व्योमरूपाय शब्दमात्राय ते नमः।
महादेवाय सोमाय अमृताय नमोऽस्तु ते॥

60 वर्ष (1941 से 2000 ई. तक) का चन्द्र सहित सभी ग्रहों का सूक्ष्मतम राशि प्रवेश काल (भा.स्टे.टा.)

देखें पृष्ठ 362 से 414

विक्रम संवत् २०५९, शक संवत् १९२४

सन् २००२-२००३, जय हिन्द संवत् ५५-५६

पंचांग-प्रवर्तकः
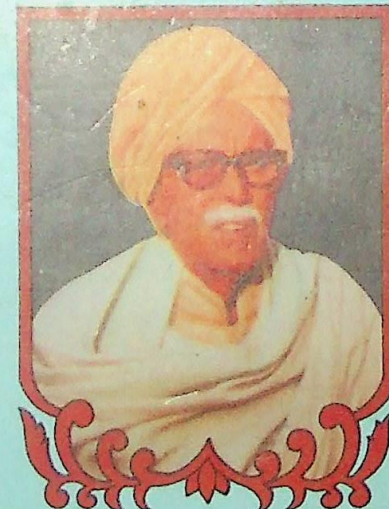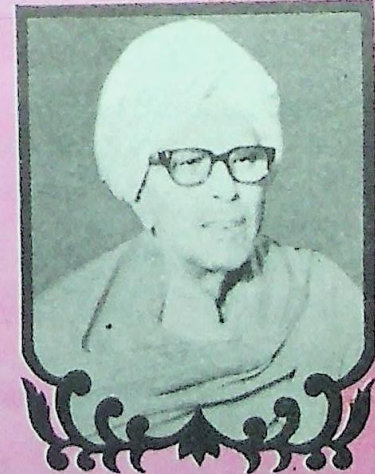
दैवज्ञरत्न राजज्योतिषी
स्व. पं. श्री मुकुन्दवल्लभ मिश्र ज्योतिषाचार्य

श्री मार्त्तण्ड पञ्चांगम्

राजा शनि

मंत्री शनि

पञ्चांगप्रवर्तक

अनेक ग्रंथों के यशस्वी लेखक स्व. पं. श्री मुकुन्दवल्लभ मिश्र ज्योतिषाचार्य

सम्पादक मण्डल

श्री प्रियव्रत शर्मा, M.A., सिद्धान्तज्योतिषाचार्य (बनारस), साहित्याचार्य, स्वर्ण रजत पदक प्राप्त

• दृक्सिद्धान्तभास्कर डॉ. शक्तिधर शर्मा M.Sc, Ph.D. (Nuclear Physics), (U.S.A.), F.R.A.S. (LONDON), M.A., सिद्धान्तज्योतिषाचार्य (बनारस), तीन स्वर्ण पदक प्राप्त

ज्योतिर्भूषण श्री इन्दुशेखर शर्मा शास्त्री, M.A., ज्योतिषाचार्य,

प्रमुख वितरक : अग्रवाल बुक डिपो

460, खारी बावली दिल्ली-6 दूरभाष : 3943254, 3936116, निवास: 5721403

मूल्य ७५.००

इस पञ्चाङ्ग में प्रयुक्त ज्ञातव्य सांकेतिक शब्द

अ.-	अस्त, अश्विनी, अनुराधा (नक्षत्र)। अतिगण्ड (योग), अग्नि (वाण)।
अं.-	अंग्रेजी (तारीख, मास), अंश।
आव.-	आवश्यकता में।
उ.-	उपरान्त, उदित, उत्तर।
उ. गो. -	उत्तर गोल।
क. -	करण, कर्क, कला।
कृ. -	कृष्णपक्ष, कृत्तिका (नक्षत्र)
क्रां. सा. -	क्रान्तिसाम्य (महापात)
गोधू. -	गोधूलि (लग्न)
घ. -	घड़ी।
घं. -	घण्टा।
चो. -	चोर (वाण)
ति. -	तिथि।
द. -	दक्षिण।
द. गो.	दक्षिण गोल।
दा. -	दान, पूजन।
दि. -	दिन।
दि. मा. -	दिनमान।
दि. ल. -	दिन का ल. न।
न. -	नक्षत्र।
निं. -	निम्बार्कों के लिए।
ने. -	नेप्च्यून।
नृ. -	नृप (वाण)।
प. -	पल, परिघ (योग), पश्चिम।
प्र. -	प्रविष्टा (पंजाबी तारीख)।
प्रा. -	प्रारम्भ।
भ. -	भद्रा, भरणी (नक्षत्र)।
भा. -	भाद्रपद।
मा. -	मार्गी।
मि. -	मिनट, मिथुन।
मृ. -	मृगशिरा, मृत्यु (वाण)।
या. -	यावत् (=तक)।
रा. -	रात्रि, राशि।
रो. -	रोग (वाण), रोहिणी।
ल. -	लग्न।
व. -	वक्री, वक्रगति से, वणिक्, वज्र, वरीयान् (योग)
वा. -	वार
वि. -	विकला, विष्टि (करण), विष्कम्भ, विशाखा।
वि. मु. -	विवाहमुहूर्त।
वै. -	वैष्णवों के लिए, वैधृति (योग) वैशाख।
व्र. स. -	व्रत सबके लिए।
शु. -	शुक्लपक्ष, शुक्रवार, शुक्र (ग्रह) शुभ, शुक्ल (योग)।
श. -	भारत सरकार द्वारा संचालित शक संवत्, तारीख-मास।
स. -	समाप्त।
सं. -	संक्रान्ति, संवत्।
सां. का. -	साम्पातिक काल।
सा. -	सायन।
स्मा. -	स्मार्तों के लिए।
ल. -	लग्न

इस पंचाग के तिथि, नक्षत्र, योग, ग्रह भोगांश और ग्रहों के क्रान्ति-शर की गणित डा. शक्तिधर शर्मा द्वारा विकासित *Computer Program* से की जातीं है।

इस पञ्चाङ्ग के लिए आवश्यक निर्देशन

(१) इस पञ्चाङ्ग का निर्माण ग्रीन्विच से पूर्व रेखांश ७६°।५२' एवं उत्तर अक्षांश ३०°।४४' के आधार पर किया गया है, अतः यहां जहां विशेष निर्देश न किया गया हो वहां 'सूर्योदय' से हमारा अभिप्राय इसी स्थल के सूर्योदय से रहता है।

(२) यहां सर्वत्र निरयणपद्धति को अपनाया गया है। जहां सायनगणना की गई है, वहां निर्देश कर दिया गया है। चित्रापक्षीय अयनांश प्रामाणिक माने हैं। इस पञ्चाङ्ग में दिए गए अयनांश धूनन-संस्कार-संस्कृत (स्पष्ट) हैं।

(३) तिथि, नक्षत्र एवं करणों के सम्मुख दिए गए घटी-पल उनका सूर्योदय से समाप्तिकाल बतलाते हैं।

(४) इस पंचांग में केवल सूर्योदयव्यापी ही करण लिखे गए हैं, दूसरे नहीं।

(५) चन्द्रसञ्चार वाले कालम में राशियां के साथ दिए गए घड़ी-पल चन्द्रमा के राशिप्रवेश का काल बतलाते हैं।

(६) चंन्द्रसंचार के आगे वाले कालमों में सूर्य के उदयास्त, जोकि भा. स्टैं. टा. में हैं, उपरोक्त स्थल के ही हैं। इनका सम्बन्ध सूर्यकेन्द्र से है। ये सूर्योदयास्तकाल किरण-वक्री-भवन संस्कार रहित हैं। प्रत्यक्ष देखने के लिए दो मिनट सूर्योदय में घटाएं एंव सूर्यास्त में जोड़ें।

(७) घड़ी-पलों वाले २४ पक्षों के लस्टर में पंचक-भद्रा की प्रारम्भ-समाप्ति, ग्रहों के उदयास्त, वक्र-मार्ग तथा राशि-नक्षत्र-प्रवेश आदि के सभी काल भी घड़ीपलों में ही हैं। यह घड़ीपल उपरोक्त स्थल के सूर्योदय से बीता काल बतलाते हैं।

(८) पंक्तियों (अष्टमी, पूर्णिमा, अमावस्या) के स्पष्टग्रहों के नीचे दैनिक-गति, उसके नीचे मार्गी या वक्री, उसके नीचे उदित या अस्त, फिर चरण सहित नक्षत्र का (जिस में ग्रह है उसका) निर्देश किया गया है।

(९) पंक्तियां की सभी कुण्डलियां सूर्योदय-कालिक हैं।

(१०) पञ्चाङ्ग की गणित, आचार्यों एवं ऋषियों द्वारा अनुमोदित सूक्ष्म दृक्तुल्य पद्धति द्वारा की गई है।

(११) यहां दिए गए ग्रह एवं शर भूमध्य दृश्य हैं।

(१२) जिस घटीपलात्मक तिथि, योग, नक्षत्र के आगे (६०/०) लिखा है, उस तिथि योग नक्षत्र की वृद्धि समझें। घण्टामिनटात्मक तिथि, नक्षत्र योग के आगे (. . . .) ऐसा चिह्न उस तिथि, नक्षत्र, योग की वृद्धि बतलाता है।

(१३) यहां दिया गया भा. स्टैं. टा. ८२°/३०' पूर्व-रेखांश के स्थल का स्थानीयमध्यमकाल है।

(१४) दैनिक लग्न सारणियां चण्डीगढ़ के लिए हैं, ये सारणियां चित्रा-पक्षीय निरयणलग्नों का समाप्तिकाल बतलाती है।

(१५) पञ्चाङ्ग में क्षीणतिथि, नक्षत्र, योग के समाप्तिक्षण ही दिए गए हैं, पूर्ण भाग नहीं।

संक्षिप्त विषय सूची (सं . २०५९ वि .)

हीरकजयन्ती के अवसर पर विशेष सामग्री

अनन्त श्रीविभूषित श्रीकांचीकामकोटि- पीठाधिपति, जगद्गुरु श्रीशंकराचार्य जी का शुभाशीर्वाद (मुद्रा)

श्रीमत्परमहंस – परिव्राजकाचार्यवर्य्य – श्रीमच्छंकर– भगवत्पाद – प्रतिष्ठित – श्रीकांचीकामकोटिपीठाधिप – जगद्गुरु – श्रीमच्चन्द्रशेखरेन्द्र – सरस्वती – श्रीपादैः क्रियते नारायणस्मृतिः।

श्रीसदाशिव आप्टे- महोदयस्य शिष्यैः श्रीमुकुन्दवल्लभशर्मभिः प्रवर्तितम्, अधुना श्रीप्रियव्रतशर्म– श्रीशक्तिधरशर्म – श्रीमदिन्दुशेखर– शास्त्रिभिः तन्त्रद्वारा शुद्ध–स्फुट– गणितरीत्या परिशोध्य स्वीकृतया दृग्गणितपद्धत्या सम्पाद्यते। एतत्पञ्चांगं धर्मशास्त्रसम्मतैकमात्र – दृग्गणितपद्धत्यनुसारि–व्रत–पर्वादि – धार्मिक – कृत्यानुष्ठाने धार्मिकैः प्रयोज्यम्–इति सम्मन्यामहे। एतस्य सम्पादकः डॉ.शक्तिधरशर्मा ज्योतिष–गणितादि–विषयेषु महत्प्रागल्भ्यं भजते, इति अस्माभिः सः सप्रसादं " दृक्सिद्धान्तभास्करः ' इति विरुदेन पूर्वमेव सभाजितः। अधुना श्रीमार्तण्ड–पंचांगमेतत् स्वर्णजयन्ती–महोत्सवमनुभवत्, अशेषास्तिक–लोकोपकारकं सत् श्रीचन्द्रमौलीश – कृपया प्रचुरं प्रचारं प्राप्नुयादित्याशास्महे।

काञ्चीक्षेत्रम् नारायणस्मृतिः

'अनल' चैत्रामावस्या (सन् १९७६ ई.)

विशेष आकर्षण एवं उपहार :- सन् १९४१ से २००० ई. तक का चन्द्रसहित सभी ग्रहों का राशिप्रवेशकाल (भा. स्टै. टा.), जिसकी सहायता से इन ६० वर्षों की अवधि में उत्पन्न जातक की जन्मकुण्डली तुरन्त बनाई जा सकती है, (देखें पृष्ठ ३६२-४१४)।

'श्रीमार्त्तण्ड पञ्चांग' :- एक सिंहावलोकन

लेखक- डॉ. गोपालचन्द शर्मा, वार्ड नं. 8, नालागढ़ (हि.प्र.)

पञ्चांग प्रवर्त्तक- पं. श्री मुकुन्दवल्लभ मिश्र, ज्यौतिषाचार्य

पं. श्री मुकुन्दवल्लभ मिश्र, ज्योतिषाचार्य एक ऐसा नाम है जो भारतीय ज्योतिष-जगत् में परिचय की अपेक्षा नहीं रखता। बीसवीं शताब्दी में हिन्दीभाषी भारतीय प्रान्तों पर ज्योतिष के क्षेत्र में आपका एक अविस्मरणीय प्रभावशाली प्रभुत्व रहा, और इस शास्त्र पर अद्‌भुत आधिपत्य के कारण आपको लोग ज्योतिष का अपर पर्याय सा मानने लगे। आपने इस भारत विख्यात "श्रीमार्त्तण्ड पञ्चांग" को संस्कृत (हिन्दी), उर्दू और पंजाबी- इन तीन भाषाओं में पृथक्-पृथक् प्रकाशित करना प्रारम्भ किया, जो कि आजकल इन भाषाओं में प्रकाशित होने वाले पंचांगों में सर्वाधिक प्रामाणिकता एवं लोकप्रियता लिए हुए हैं। क्योंकि पण्डित जी ने कुराली (रोपड़, पंजाब) में स्थित अपने 'श्रीमार्त्तण्ड ज्योतिष कार्यालय' से इन पंचांगों का सम्पादन-प्रकाशन किया, अतः ये तीनों पंचांग 'कुराली वाले' पंचांगों के नाम से प्रसिद्ध हैं। कुराली, पंजाब के रोपड़ जिले का एक छोटा सा नगर है, जो आज पण्डित जी की प्रख्याति के कारण भारतीय ज्योतिष के मानचित्र पर मोटे अक्षरों में अंकित किया जाता है। आज इस कुराली को अनेक लोग 'ज्योतिषी की कुराली' या पंजाबी में 'जोशी दी कुराली' भी कहते हैं।

पं. श्री मुकुन्दवल्लभ जी कुराली के भरद्वाज गोत्रीय एक विद्वान् ब्राह्मण परिवार में उत्पन्न हुए। इनके पिता श्री रामचन्द्र जी और माता श्रीमती शिवदेवी- दोनों यौवनावस्था के प्रारम्भिक वर्षों में ही, श्री मुकुन्दवल्लभ जी (जिनका बचपन का नाम कुन्दनलाल था), और उनके छोटे भाई श्री वीरभानु जी को बाल्यावस्था में ही छोड़कर दिवंगत हो गये। माता-पिता के अभाव में इनके दादा श्री नानकचन्द जी ने, जो ज्योतिष एवं आगम के विद्वान् थे, इन दोनों भाइयों का पालन-पोषण किया। तात्कालिक परम्परानुसार कुमारावस्था में ही श्री मुकुन्दवल्लभ जी का विवाह हो गया। विवाह के बाद उग्र ज्ञानलिप्सा से प्रेरित होकर वे अपनी धर्म-पत्नी श्रीमती पूर्णा देवी की प्रेरणा से ज्योतिष पढ़ने के लिए सुदीर्घ प्रवास पर जयपुर चले गये। वहां प्रसिद्ध खगोलवेत्ता पं. श्री केदारनाथ जी ज्योतिषाचार्य (जयपुरीय ज्योतिष वेधशाला के अध्यक्ष) के पास वर्षों रहकर नवीन एवं प्राचीन ज्योतिष के मूल ग्रन्थों का परिशीलन किया। वहां से वे उज्जैन गये, जहां उन्होंने अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त प्राच्य एवं पाश्चात्य ज्योतिष के महाविद्वान् श्री गोविन्दसदाशिव आप्टे (प्रिंसिपल- माधवराव कॉलेज, उज्जैन एवं अध्यक्ष- जिवाजी वेधशाला, उज्जैन) से पाश्चात्य एवं दृक्पक्षीय ज्योतिष के नव्यतम सिद्धांतों का परिपूर्ण ज्ञान प्राप्त किया, साथ ही वेधयन्त्र आदि की प्रयोगात्मक कुशलता भी। प्रवासकाल की इस सुदीर्घ अवधि में पंडित जी ने गणित के साथ-साथ फलित का भी गंभीरता से परिशीलन किया। ज्योतिष की इन दो प्रमुख शाखाओं में पारंगत होने के बाद जब पण्डित जी उज्जैन से अपने घर (कुराली, पंजाब) के लिए प्रस्थान करने ही वाले थे, तभी पं. हरदेव शर्मा त्रिवेदी (सम्पादक- "श्री विश्वविजय पंचांग व ज्योतिष्मती") के बड़े भाई उनके (पं. मुकुन्दवल्लभ जी के) पास पहुंचे और उनसे अपने छोटे भाई हरदेव जी को, जिनका उस समय नाम हस्तिमल्ल था, ज्योतिष पढ़ाने का आग्रह किया। पंडित जी ने उनका आग्रह मान लिया और वे हस्तिमल्ल को अपने साथ कुराली, पंजाब ले आये, और वहां हस्तिमल्ल तिवारी का नाम बदल कर हरदेव शर्मा त्रिवेदी कर दिया गया। श्री हरदेव त्रिवेदी ने कुराली में पूज्य पण्डित जी के घर पर ही अन्तेवासी शिष्य के रूप में रहते हुए फलित एवं पंचांगगणित का ज्ञान पूज्य पण्डित जी से प्राप्त किया।

पूज्य पण्डित जी द्वारा पञ्चांग प्रवर्त्तन एवं उनके पट्टशिष्य श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी का सहयोग

पाश्चात्य एवं पौरस्त्य ज्योतिषशास्त्र के गंभीर अध्ययन के बाद पूज्य पण्डित जी के मन में एक सर्वाङ्गशुद्ध पंचांग प्रकाशित करने की धारणा उज्जैन में पढ़ते हुए ही बन गई थी, लेकिन पंचाग जैसे श्रमसाध्य प्रकाशन के लिए अकेले ही प्रवृत्त होने का साहस कई वर्षों तक उन्हें नहीं हुआ। इसीलिए अपने पट्टशिष्य श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी को पंचाग की पूरी गणित उन्होंने हृदय से सिखाई। श्री हरदेव शर्मा जैसे योग्य शिष्य की सहायता से उनके मन में पंचांग-प्रकाशन के लिए उत्साह जागा और वि. संवत् 1985 में श्रीमार्त्तण्डपंचांग का प्रकाशन उन्होंने प्रारम्भ किया। श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी ने सम्पादन कार्य में अपने गुरु को पुत्रवत् अन्तरात्मना सहयोग दिया। लगभग 14-15 वर्षों तक वे श्रीमार्तण्डपंचाग के सम्पादन में दक्षिण हस्त की भान्ति पं० जी को सहयोग देते रहे। तदनन्तर अपने गुरु पूज्य पण्डित जी की अनुमति लेकर

सोलन (हि०प्र०) में जा बसे और वहां उन्होंने अपने निजी पंचांग(विश्वविजय)का प्रकाशन प्रारम्भ किया। श्री हरदेव त्रिवेदी एवं उनकी धर्मपत्नी पूज्य पण्डित जी के परिवार में एक सदस्य के रूप में लगभग 8-9 वर्ष तक एक साथ रहे। गुरुकुलीय शिष्य की भांति श्री हरदेव एवं उनकी धर्मपत्नी ने 15 वर्ष तक पूज्य पण्डित जी एवं उनकी धर्मपत्नी की नितान्त विनय-सम्मानपूर्वक पुत्र एवं पुत्रवधू की भान्ति जो सेवा की उसका दृष्टान्त आजकल की गुरु-शिष्य परम्परा में शायद ही मिले। इसी गुरुसेवा के फलस्वरूप श्री हरदेव त्रिवेदी जी को ज्योतिष क्षेत्र में स्पृहणीय सम्मान मिला- यह श्री हरदेव त्रिवेदी जी स्वयं भी स्वीकार करते थे।

पूज्य पण्डित जी राजज्योतिषी बने

त्रिस्कन्ध ज्योतिष पर पं० मुकुन्दवल्लभ जी के अद्भुत आधिपत्य और 'श्री मार्त्तण्ड पंचांग' की गणित आदि की प्रामाणिकता से प्रभावित महामहोपाध्याय पं० मथुरा प्रसाद जी दीक्षित, राजगुरु सोलन नरेश ने, सोलन (हि.प्र.) के राजा (**बघाट नरेश) श्री दुर्गासिंह जी पंवार** को प्रेरित किया, कि वे पण्डित जी को राजज्योतिषी के पद से सम्मानित करें। तदनुसार सोलन नरेश ने पण्डित जी को राजज्योतिषी पद देकर सम्मानित किया और 'श्री मार्त्तण्ड पंचांग' के प्रकाशनार्थ प्रतिवर्ष आर्थिक सहायता देना भी प्रारभ की। कुछ वर्ष बाद पण्डित जी के अगाध वैदुष्य की ख्याति से प्रभावित पटियाला के तात्कालिक **महाराजा श्री भूपेन्द्र सिंह** जी ने पण्डित जी को अपने राज्य के राजज्योतिषी पद से सम्मानित करने के लिए आमन्त्रित किया। लेकिन पण्डित जी ने इसे स्वीकार करने में अपना असामर्थ्य प्रकट किया। क्योंकि महाराजा साहेब का आग्रह था कि पण्डित जी कुराली को छोड़ पटियाला को ही अपना आवास बनाएं। जब पण्डित जी ने कुराली छोड़ने की बात नहीं मानी तब महाराजा साहेब ने वर्ष में केवल छः मास पटियाला में रहने की प्रतिबन्ध की बात की तो उसे भी पण्डित जी ने अस्वीकार कर दिया। इस पर महाराजा पटियाला ने पण्डित जी से अनुरोध किया कि यदि वे राजज्योतिषी पद को स्वीकार करने असमर्थ हैं तो वे स्वयं किसी योग्य समर्थ ज्योतिषी को इस पद के लिए मनोनीत कर दें। इस विषय में अपने आपको किसी प्रकार के पक्षपात दोष से मुक्त रखने के उद्देश्य से पण्डित जी ने राजज्योतिषी चुनने के लिए एक परीक्षा निर्धारित की। इस परीक्षा के परीक्षक और निर्णायक पण्डित जी ही थे। इस परीक्षा में भारत के अनेक ज्योतिषियों ने भाग लिया जिसमें कालका (हि.प्र.) के पं. देवीदत्त जी शास्त्री इस पद के लिए योग्य घोषित हुए।

पण्डित जी का गणितज्योतिष की ही भांति फलितज्योतिष पर भी अद्भुत प्रभुत्व था। फलितीय योगायोगों के गम्भीर परिशीलन, सुदीर्घ अनुभव एवं विशुद्ध तपोमय जीवन से प्राप्त अलौकिक अन्तर्दृष्टि के कारण पण्डित जी की भविष्यवाणियों की सत्यता वस्तुतः चौंका देने वाली थी। यही कारण था कि उनके कार्यालय (श्री मार्त्तण्ड ज्योतिष कार्यालय कुराली, पंजाब) में प्रतिदिन पचासों व्यक्ति भारत के कोने-कोने से अपनी ज्योतिषसम्बन्धी समस्याओं के समाधानार्थ उनसे मिलने आया करते थे। इसी कारण सर्वसाधारण से लेकर राजा-महाराजा, मंत्री-उद्योगपति आदि सभी वर्ग, धर्म और सम्प्रदाय के लोग उन पर गहरी आस्था रखते थे। उन्हें एक अद्भुत वाक्शक्ति प्राप्त थी। उन्होंने असंख्य वैयक्तिक, राजनैतिक और मेदिनीय भविष्यवाणियां कीं, जो रामबाण की भांति बिना किसी विचलन के ठीक लक्ष्य पर लगीं, जिनसे फलित ज्योतिष के कटु आलोचक भी अवाक् रह गये। क्वेटा के ऐतिहासिक भूकम्प की यथार्थ तिथि और काल तथा बुल्गानिन की पदच्युति आदि उनकी ऐसी अगण्य मेदिनीय और राजनैतिक भविष्यवाणियां 'श्री मार्त्तण्ड पंचांग' में छप चुकी हैं जिनकी सत्यता में आकस्मिक संयोग को कारण बतलाने का साहस कोई तार्किक तो नहीं कर सकता। उनकी भविष्यवाणियों की आश्चर्यजनक यथार्थता के कारण समाज उन्हें एक भविष्यद्रष्टा सिद्ध के रूप में मानता था। उनकी इस दिव्य भविष्यदृष्टि की ख्याति से आकृष्ट होकर इतने लोग प्रतिदिन उनके पास आते थे कि उन्हें अपनी 89 वर्ष की आयु के अन्तिम लगभग 60 वर्षों में एक दिन भी अवकाश पर रहने का अवसर नहीं मिला। अनेक प्रकार के आधिदैविक, आधिभौतिक दुःखों से सन्त्रस्त लोगों की, जो अपनी समस्याओं के समाधानार्थ उनके पास प्रतिदिन दूर-दूर से आया करते थे, अपने प्रति अगाध श्रद्धा को देखकर पण्डित जी अक्सर कहा करते थे- ''इन विनीत श्रद्धालुओं को दुःखों से पूरी तरह कैसे मुक्त करूं, यह मेरी आत्मिक समस्या है।'' उन्होंने अपने वैदुष्य और व्यापक प्रतिष्ठा को अर्थोपार्जन का साधन कभी नहीं बनाया। अर्थ को वे एक महत्त्वहीन अपरिहार्य आवश्यकता समझते थे।

इस प्रकार की भविष्य कथन की लोकेतर आश्चर्यकारी शक्ति का रहस्य पण्डित जी का अगाध शास्त्रपरिशीलन, सुदीर्घ अनुभव और साधनाबल ही था, जिसे ज्योतिषी लोग परमगोपनीय समझकर अपने पास ही सुरक्षित रखते हैं और विरले व्यक्ति को ही इस रहस्य की दीक्षा का अधिकारी समझते हैं। पण्डित जी ने सुदीर्घकाल के अनुभवों से संकलित फलादेश के अपने ये रहस्य और साधना के तत्त्व अपने विद्वान् चारों पुत्रों (श्री सत्यव्रत, श्री प्रियव्रत, श्री शक्तिधर एवं श्री इन्दुशेखर शर्मा) को दिए। लेकिन पिताश्री से प्राप्त भविष्यकथन के इन दुर्लभ रहस्यों का परोपकारी व्यवसाय के रूप में प्रयोग उनके सबसे छोटे पुत्र श्री इन्दुशेखर शर्मा ही कर रहे हैं, जो इन दिनों 'श्री मार्त्तण्ड ज्योतिपकार्यालय, कुराली' में पण्डित जी की गद्दी पर बैठते हैं। दूसरे भाइयों को अध्यापन एवं साहित्य-सर्जन में रुचि होने के कारण व्यवसाय के रूप मे भविष्य

दृष्टि के इन रहस्यों को प्रयुक्त करना वांछित नहीं।

पण्डित श्री मुकुन्दवल्लभ जी का फलित ज्योतिष की ही भांति सिद्धांत ज्योतिष के क्षेत्र में भी समान रूप से प्रशंसनीय योगदान रहा है। "श्री मार्त्तण्ड पंचांग," जिसका प्रवर्त्तन-सम्पादन उन्होंने किया, आज भारत के मूर्धन्य पंचांगों में अपना एक विशिष्ट स्थान रखता है। इस पंचांग की ग्रहभोगांश, तिथ्यादि, ग्रहण आदि की गणित शुद्धता में आदर्श मानी जाती है। उत्तर भारत में पण्डित जी ने ही अपने पंचांग में सर्वप्रथम ग्रहभोगांश, ग्रहण, गुरु-शुक्रोदयास्त आदि के निमित्त दृक्शुद्ध गणित का प्रयोग आरम्भ किया। 'श्री मार्त्तण्ड पंचांग' के प्रकाशन के प्रारम्भिक वर्षों में उत्तर भारत के प्राचीन-गणितपक्षपाती अधिकतर पंचांगों में कई बार सूर्यग्रहण-काल अक्षम्यरूप से गलत पाया गया, जबकि वह ग्रहणकाल 'श्री मार्त्तण्ड पंचांग' में सर्वथा शुद्ध था। **वि. सं. 1993 में भाद्रपद अमावस के दिन (21 अगस्त सन् 1933 ई. को) कुरुक्षेत्र में कंकण सूर्यग्रहण हुआ, जिसकी गणना सूक्ष्मपद्धति के अनुसार सवंत् 1993 वि. के 'श्रीमार्त्तण्डपंचाग' में ही प्रकाशित हुई थी। अन्य पंचांगों में स्थूल-अशुद्ध गणित होने से इस कंकण सूर्यग्रहण का उल्लेख ही नहीं था। ज्योतिष में तो प्रत्यक्ष ही प्रमाण स्वीकार किया जाता है, अतः तब 'श्री मार्त्तण्डपंचांग' की प्रामाणिकता वास्तविकरूपेण जनता के सामने उभकर आई।** उस कंकण सूर्यग्रहण के स्पर्श-मोक्ष एवं कंकणाकृति के प्रारंभ-समाप्ति के काल श्री मार्त्तण्ड पंचांग की ठीक गणित के अनुसार ही घटित हुए। इसी प्रकार की अन्य कई दृश्य आकाशीय घटनाओं (गुरु-शुक्रोदयास्तादि) द्वारा 'श्री मार्त्तण्ड पंचांग' की गणित की शुद्धता अनेक बार अन्य परम्परागत पंचांगों की अपेक्षा कहीं अधिक शुद्ध प्रमाणित हुई, जिससे विद्वानों ने 'श्री मार्त्तण्ड पंचांग' को प्रामाणिक घोषित किया तथा पण्डित जी को ज्योतिष तथा धार्मिक संस्थाओं ने भी अनेक उपाधियों से अलंकृत कर सम्मानित भी किया। **'श्रीमार्त्तण्ड पंचांग' की शुद्ध गणित की ख्याति से अनेक विद्वान् श्री मार्त्तण्ड कार्यालय में आकर पूज्य पण्डित जी से पंचांगकार्य की शिक्षा प्राप्त करने लगे।** इनमें झबकरा (जिला - गुरदासपुर) के पं. उमादत्त शर्मा एवं विलासपुर निवासी पं. बालमुकुन्द शर्मा मुख्य हैं। उन्होंने पंचांग गणित-शिक्षा के साथ साथ पंचागसंपादन में सहयोग भी दिया । तदनन्तर इन्होंने अपने-अपने प्रदेशों में स्थानीय अक्षांश-रेखांशों के आधार पर पंचांगों का प्रकाशन भी किया।

पंचांगसम्बन्धी अनेक विवादास्पद विषयों पर पण्डित जी द्वारा दी गई व्यवस्थाओं को काशी के विद्वानों ने भी प्रामाणिकता की कोटि में रखा। ज्योतिष के क्षेत्र में प्राचीन परम्परा से किसी कारणवश लुप्त अनेक शास्त्रीय, तर्कसंगत सिद्धान्तों की वैधता उन्होंने सिद्ध की और

अपनी सशक्त लेखनी और वाचिक शास्त्रार्थ द्वारा उनकी शास्त्रीयता को प्रतिष्ठापित करते हुए भारत के ज्योतिर्विदों और पंचांगकारों को उन्हें पुनः स्वीकार करने के लिए बाधित किया। **उदाहणार्थ— अश्विनी, चित्रा, श्रवण, धनिष्ठा- ये चार नक्षत्र गृह्यसूत्र में विवाह कृत्य के लिए ग्राह्य लिखे हुए हैं। किसी अज्ञात कारणवश उत्तर भारत में ये नक्षत्र विवाहमुहूर्त्तों में शताब्दियों से वर्जित किये जाते रहे। लेकिन पण्डित जी ने इन्हें पुनः मान्यता देने के लिए पंचांगकारों को बाधित किया। जिसके फलस्वरूप उत्तर भारत के सभी पंचांगकार जो वर्षों तक इन नक्षत्रों को अग्राह्य घोषित करते रहे, अब अन्य विवाहनक्षत्रों के साथ इन चार नक्षत्रों को भी विवाह के लिए बिना संकोच प्रयुक्त करने लगे हैं।**

इसके अतिरिक्त पण्डित जी ने बहुत से ग्रन्थ लिखकर ज्योतिष और कर्मकाण्ड के साहित्य को समृद्ध किया। आपके लिखे ग्रंथ ये हैं-

(1) षड्वर्गफल प्रकाश (2) 'सर्वानन्द लाघव' की सोदाहरण व्याख्या, (3) कर्मठगुरु (संस्कृत में कर्मकाण्ड-ग्रन्थ), (4) अर्घमार्त्तण्ड (हिन्दी एवं उर्दू में), (5) फलितमार्त्तण्ड, (6) राश्यभिधान कल्पलता (नाम कोष), (7) 'उडुदाय प्रदीप' भाष्य , (8) सदाचारी गुरु (अप्रकाशित)

इन उपरोक्त सात ग्रन्थों के अनेकों संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं, जिससे इनकी लोकप्रियता सूचित होती है। किञ्च संस्कृत के प्रति निष्ठा सेवा तथा कर्मकाण्ड क्षेत्र में प्रकाशन तथा क्रियात्मक निर्देशन के कारण आप पण्डितों में बहुत आदरणीय रहे हैं।

श्री सत्यव्रत शर्मा एवं श्री प्रियव्रत शर्मा 'श्रीमार्त्तण्ड पंचाग' के उपसंपादक बने

वि. सं. 2003 में पंचांग के सम्पादन का भार पं. जी ने अपने दो ज्येष्ठ पुत्रों-श्री सत्यव्रत शास्त्री एवं श्री प्रियव्रत शास्त्री के कन्धों पर डाला । इन कुमार उपसंपादकों ने इस कार्य को बड़ी योग्यता से आगे बढ़ाया। उन दिनों कम्प्यूटर तो बहुत दूर की बात थी, सामान्य कैल्क्युलेटर्ज का भी आविष्कार तब नहीं हुआ था। ग्रहभोगांश-तिथ्यादि-ग्रहण आदि की विकट गणित भी हाथों से (स्लेट एवं कागज पर) ही की जाती थी। खून-पसीना एक करा देने वाली इस पंचांगगणित को इन दोनों भाइयों ने वर्षों तक स्वयं हाथों से किया । उस समय पंचांग सौर-पक्षीय गणितानुसार ही बनाए जाते थे। सौरपक्षीय गणित यद्यपि दृक्पक्षीय गणित से

अपेक्षाकृत आसान थी, लेकिन तब भी वह श्रमापेक्षी तो थी ही। जब मार्त्तण्डपंचाग ने दृक्पक्ष को पूरी तरह अपनाया, उस समय (लगभग सन् 1956 ई.) से तो पंचांगगणित को हाथ से करना और भी दूरूह हो गया। लेकिन यौवनोत्साह में इन दोनों भाइयों ने हिम्मत नहीं हारी, दृक्पक्षानुसारी विकट पंचांगगणित को वे बड़ी दक्षता एवं उत्साह से तब तक [15 वर्षों तक (सन् 1960 तक)] अपने हाथों से ही करते रहे जब तक कि श्री शक्तिधर शर्मा ने पंचांग गणित की कम्प्यूटर-प्रोग्रामिंग नहीं की। यद्यपि पंचाग की सारी गणित इन्होंने अपने पिताश्री से ही प्राप्त की, लेकिन दृक्पक्षीय गणित में निष्णात कराने वाले इनके पूज्यपिताजी के परममित्र '**श्रीवेंकटेश्वर शताब्दि पंचांग**' के सहायक-गणितकार (सिमारला, जिला सीकर, राजस्थान निवासी) **पं. श्री वंशीधर जी जोशी** थे।

श्री सत्यव्रत शर्मा ने पंजाब यूनिवर्सिटी से शास्त्री एवं साहित्याचार्य महाराज-संस्कृत कालेज, जयपुर से प्रथम-श्रेणी एवं प्रथम-स्थान प्राप्त करके उत्तीर्ण किया। आप संस्कृत एवं प्राकृत भाषा के प्रकाण्ड विद्वान् हैं। साहित्यसृजन में इनकी प्रतिभा अद्भुत है। कुमारावस्था की आपकी संस्कृत गद्य-पद्य रचनाएं, जिनमें से कई प्रकाशित भी हैं, इनकी जन्मजात प्रौढ़ प्रतिभा का परिचय देती हैं। गद्यलेखन की भान्ति द्रुत पद्यरचना में इनकी प्रतिभा आश्चर्यान्वित करने वाली है। कई काव्य, नाटक एवं लक्षण ग्रन्थों की रचना इन्होंने की है, जो कि समयानुसार प्रकाशित होंगे। इनकी अनेक रचनाएं आजकल संस्कृत पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो रही हैं जिनकी विद्वज्जनों द्वारा भूरि-भूरि प्रशंसा हुई है।

श्री प्रियव्रत शर्मा ने भी पंजाब विश्वविद्यालय से शास्त्री एवं महाराज संस्कृत कालेज, जयपुर, से साहित्याचार्य में प्रथम श्रेणी एवं द्वितीय स्थान प्राप्त किया। आपने सिद्धांत ज्योतिष का अध्ययन बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के ज्योतिषविभागाध्यक्ष पोस्टाचार्य सिद्धांत-फलित-ज्योतिषाचार्य, **स्व. श्री अच्युतानन्द झा** जी से किया। इनके साहित्य गुरु **पं. श्रीजगदीश शर्मा**, साहित्याचार्य (अध्यक्ष-साहित्य विभाग, महाराज-संस्कृत कालेज, जयपुर) थे। आपने सिद्धान्तज्योतिषाचार्य सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी से प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। तत्पश्चात् पंजाब विश्वविद्यालय से एम०ए० संस्कृत की उपाधि प्रथम श्रेणी में प्राप्त की। आपने संस्कृत साहित्य, धर्मशास्त्र, सिद्धान्त एवं फलित-ज्योतिष का गहन स्वाध्याय किया है, जो कि श्रीमार्त्तण्डपंचाग में प्रकाशित इनकी मौलिक अनुसन्धानपूर्ण लेखमाला, 'समस्याएं एवं समाधान' आदि स्तम्भों में दी गई गणित-फलित एवं धर्मशास्त्र संबंधी दुरूह समस्याओं के शास्त्रीय समाधानों तथा इनकी प्रकाशित अन्य अनेक रचनाओं से स्पष्ट है। इन्होंने लगभग 250 गणित फलित एवं धर्मशास्त्रीय मौलिक अनुसन्धान लेख लिखे हैं तथा लगभग 200 ऐसी फलित, सिद्धान्त, मुहूर्त्त एवं धर्मशास्त्रीय समस्याओं के समाधान का श्रेय इन्हें प्राप्त है, जो कि भारतीय दैवज्ञों को बुरी तरह उलझाए हुए थीं। ये समाधान प्रतिवर्ष 'श्री मार्त्तण्ड पंचांग' में लगभग 16 वर्षों से प्रकाशित होते आ रहे हैं। प्रत्येक समाधान अपने आप में एक मौलिक लेख है।

इन्होंने 14 पुस्तकें लिखी हैं जिनमें से 4 पुस्तकों के सहलेखक श्री शक्तिधर शर्मा हैं। श्री शक्तिधर शर्मा के साथ लिखी इनकी पुस्तकें ये हैं-

1. **क्षयाधिमास विमर्श (संस्कृत-हिन्दी) (प्रकाशित)**
2. **अयनदोलन विमर्श एवं क्षयमास निर्णय (प्रकाशित)**
3. **भारतीय पंचांग विवाद में अशास्त्रीय साहित्य का प्रकाशन (प्रकाशित)**
4. **शास्त्रीय पंचांगमीमांसा (संस्कृत में) (प्रकाशित)**

निम्नांकित ये 10 पुस्तकें श्री प्रियव्रत शर्मा ने स्वतंत्र रूप से लिखी हैं-

1. **हैली-धूमकेतु एवं उसका विश्व पर प्रभाव (प्रकाशित)**
2. **ग्रहयोग एवं दाम्पत्य जीवन (प्रकाशित)**
3. **गणक मार्त्तण्ड (110 वर्ष का पंचांग) (दोभागों में) (प्रकाशित)**
4. **भारतीय वास्तुशास्त्र के सिद्धांत (जल्दी ही प्रकाशित हो रही है)**
5. **विश्व लग्नसारणी (जल्दी ही प्रकाशित हो रही है)**
6. **हमारे अवतार एवं महापुरुषों की कृत्रिम-जन्मकुण्डलियां (अप्रकाशित)**
7. **फलित ज्योतिष निराधार सिद्धांत (हिन्दी एवं इग्लिश में) (अप्रकाशित)**
8. **नामकोष (हिन्दी-इंग्लिश में) (अप्रकाशित)**
9. **व्रत-पर्व-विवेक (जल्दी प्रकाशित होगा)**
10. **ग्रहचार विचार (जल्दी प्रकाशित होगा)**

श्री प्रियव्रत शर्मा की लेखावली और पुस्तकों के विषय अनेक परम्परागत ज्योतिष-विचारधाराओं से काफी हट कर हैं। फलित ज्योतिष में प्रचलित ऐसी निर्मूल विचारपद्धतियों की इन्होंने आलोचना एवं उनका तर्कसंगत निराकरण किया है, जिन्हें परम्परया भारतीय दैवज्ञ लोग आँख मूंद कर ''बाबावाक्यम्'' मानकर शताब्दियों/सहस्राब्दियों से प्रामाणिक माने हुए थे। निराधार पुरातन-विचार सरणियों की तर्कानुगत प्रतिवादक शैली के कारण आपको 'क्रान्तिकारी ज्योतिर्विद्' कहा जाता है।

श्री शर्मा हि. प्र. की शिक्षा सेवा में प्रथम श्रेणी के राजपत्रित अधिकारी (H.P.P.E.S.-I) रहे हैं। सन् 1989 में वे वरिष्ठ प्राध्यापक पद से गवर्नमेंट कालेज, सोलन (हि.प्र.) से सेवानिवृत्त होकर अब जीवनके शेष क्षणों को फलितज्योतिष के सिद्धान्तों का नीर-क्षीर विवेचन करने में व्यतीत करना चाहते हैं। यही कारण है- सिद्धान्त ज्योतिष की भांति फलितज्योतिष में भी पारंगत होने के बावजूद लोगों की जन्मपत्र आदि से सम्बद्ध वैयक्तिक ग्रह-समस्याओं के समाधान के लिए थोड़ा सा भी समय निकाल पाना आपके लिए संभव नहीं है ।

श्री शर्मा की ज्योतिषयोग्यता का सम्मान करते हुए ''पं. गोस्वा. गिरिधारी लाल फाउण्डेशन, दिल्ली'' के तत्त्वाधान में इन्हें भूतपूर्व राष्ट्रपति श्री जैलसिंह जी ने 'ज्योतिषसम्राट्' पदवी से अलंकृत किया है। भारत सरकार की Positional Astronomy Centre संस्था द्वारा प्रकाशित किए जाने वाले Indian Nautical Almanac की व्रत-पर्व-निर्णायिका समिति के भी आप सम्मानित सदस्य हैं।

श्री शक्तिधर शर्मा सम्पादक बने

श्री शक्तिधर शर्मा ने वि.सं. 2012 से पंचांग का सम्पादन कार्य सम्भाला। पंजाब विश्वविद्यालय से शास्त्री करने के उपरांत **आचार्य श्री अच्युतानन्द झा** जी से गणित एवं सिद्धांत ज्योतिष का ज्ञान प्राप्त कर सिद्धांतज्योतिषाचार्य परीक्षा में स्वर्णपदक प्राप्त किया। इन्होंने ज्योतिषाचार्य करने के बाद मैट्रिक, इण्टर, बी.एससी. परीक्षाएं प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण कीं, और कालेज का रोल आफ ऑनर और स्वर्ण पदक प्राप्त किया, एम.एससी.की डिग्री प्रथम श्रेणी में प्राप्त की । बाद में डॉ. शर्मा ने भी विशेष दार्शनिक विषयों के साथ एम.ए.(संस्कृत) डिग्री स्वर्ण पदक के साथ प्राप्त की। अमेरिका की लारेंस में स्थित कैंसास यूनिवर्सिटी के फिजिक्स विभाग से न्यूक्लियर फिजिक्स में पी॰ एच.डी. डिग्री ली। अमेरिका में रहते हुए न्यूक्लियर फिजिक्स की कठिनातिकठिन समस्याओं के समाधान कम्प्यूटर से किये और साथ ही ज्योतिष के विविध विषयों पर गणित-सूत्रों के लिए कम्प्यूटर-प्रोग्राम लिखे। अमेरिका में रहते हुए आपने Oklahoma University, Norman Oklahoma में आयोजित ज्योतिषज्ञों के सम्मेलन में वैदेशिक ज्योतिर्विदों को भारतीय ज्योतिष के महत्त्व से अवगत कराया और Denver तथा Boulder Colorado में भी भाषण दिये। भावातीत समाधि के विश्वप्रसिद्ध युग प्रवर्त्तक **महर्षि श्री 1008 महेश योगी जी** के आमन्त्रण पर स्पेन के Mallorca Island में भारतीय ज्योतिष-गणित पर अनेक भाषण दिये। इनके शोधगुरु Dr. J.P. Davidson इनकी गणित-सिद्धांत की योग्यता की भूरि भूरि प्रशंसा करते रहे हैं। कैंसास विश्वविद्यालय में ही आपने Dr. N.W. Storer (Professor-Astronomy) से ज्योतिष की प्रैक्टिकल ट्रेनिंग के कोर्स लिये ओर सर्वोत्तम ग्रेड प्राप्त किया। Dr. Storer इनकी सिद्धान्त-ज्योतिष विषयक योग्यता से बहुत प्रभावित हुए और इस विषय में आपकी बहुत प्रशंसा करते रहे । Dr. Storer हमेशा कहते थे कि If Jyotisharyas are like Sharma our Kansas University can recognise Jyotisharya Degree.

फरवरी 1971 में भारत आकर आपने पंजाबी यूनिवर्सिटी पटियाला में न्यूक्लियर फिजिक्स एवं ज्योतिष का अध्यापन तथा इन्हीं विषयों पर शोधकार्य प्रारम्भ किया। न्यूक्लियर-भौतिकी एवं घनावस्था-भौतिकी आदि विषयों में भारतीय प्रस्तारपद्धति एवं संख्या-सिद्धान्त आदि जैसे शुद्ध गणितशास्त्र का प्रयोग कर अद्भुत परिणाम आपने प्राप्त किए हैं तथा आचार्य आर्यभट्ट की वल्लीविधि को व्यापक रूप देकर उसे एक प्रबल परिकलन विधि (Powerful algorithm) के रूप में विकसित कर दिया है। आप इन मौलिक प्रयत्नों के लिए भारतीय तथा पाश्चात्य विद्वानों के प्रशंसापात्र बने हैं।

डॉ. शर्मा ने अपने अध्यापनकाल में Nuclear Physics, Astromony (Cometary Studies etc.), History of Astromony (Jain and Vedanga Traditions), Astrophysics (Be stars), Ayurveda, Indian Mathematics (Advancements and applications) and Philosophy(Jain and other Indian systems) इन क्षेत्रों में अनुसंधान कार्य किया और 11 छात्रों को पी॰ एच.डी. डिग्री में मार्ग-निर्देशन किया और अब भी अनुसंधान कार्य चल रहा है। शोध-निबन्ध इंग्लैण्ड, जापान, हॉलेण्ड , अमेरिका, इण्डोनेशिया एवं स्कॉटलैण्ड आदि देशों की पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए। इन क्षेत्रों में 271 शोधनिबन्ध डॉ. शर्मा के प्रकाशित हुए हैं ।

डॉ. शर्मा ने अमेरिका, चैकोस्लोवाकिया, फिन्लैण्ड, सीरिया, पाकिस्तान, फ्रांस, इंग्लैण्ड, स्कॉटलैण्ड, मैक्सिको, स्पेन आदि देशों में तथा भारत की विभिन्न संस्थाओं में Nuclear Physics. Indian Astronomy and Mathematics में भाषण दिये और सत्रों की अध्यक्षता की। इन गतिविधियों में आजतक लगभग 150 के करीब भाषण आपके हुये हैं। डॉ. शर्मा का विशेष उद्देश्य यह रहा, कि भारतीय ज्योतिषशास्त्र के आचार्यों की देन को उचित मान्यता प्राप्त हो और भारतीय गणित के विकास से नये वैज्ञानिक क्षेत्रों की समस्याएं हल की जाएं । इन दोनों उद्देश्यों में डा० शर्मा बहुत सफल रहे हैं।

भारत में कम्प्यूटर युग के प्रारम्भ की कठिन परिस्थितियों में भी डा० शर्मा ने सर्वप्रथम पंचांग के लिए शुद्धतम ग्रहस्पष्ट, तिथ्यादि के प्रोग्राम विकासित किए जिनका प्रयोग हमारे पंचांग में होता रहा है। डॉ. शर्मा Positional Astronomy Centre of Govt. of India Calcutta की एडवाईजरी कमेटी के मैम्बर भी रहे हैं।

डॉ. शर्मा संस्कृत के प्रकाण्ड पण्डित होने के साथ साथ उद्भट वैज्ञानिक भी हैं। इस अद्भुत विषयसंगम के लिए उन्हें इस विगत संस्कृतवर्ष (सन् 2000 A.D.) में पंजाब तथा कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालयों द्वारा अद्भुत व्यक्तित्व के रूप में विशेष रूप से सम्मानित किया गया ।

अन्य प्रकाशित पुस्तकें १. भौतिकी-गणितम्, २.मान-मन्दिर-वेधालय-वर्णनम्, ३ प्रतोद यन्त्रम् । प्रकाशनाधीन पुस्तकें १. भूमण्डलीय लग्नसारणी (Global Ascendent Tables for, Astrologers, Astronomers/Amateurs),स्व.भ्राता शशिधर शर्मा की पुण्य स्मृति में। २.Indian Mathematics and Applications एवं अन्य लिखित पुस्तकें

श्री सत्यव्रत शर्मा ने पंचांग सम्पादन छोड़ा

पंचांगकार्य बहुत श्रमसाध्य है। श्रद्धास्पद पं. मुकुन्दवल्लभ जी की यह हार्दिक इच्छा थी, कि उनके चारों पुत्र इस पंचांग के सम्पादन का कार्य पूर्ण सहयोग से करें । इसी दृष्टि से उन्होंने अपने पुत्रों को इस रहस्यमयी दिव्य विद्या में पारंगत बनाने का हृदय से प्रयास किया। ज्योतिष का उच्चतम अध्ययन कराने के लिए उन्हें बनारस भेजा गया । लेकिन श्री सत्यव्रत शर्मा, जो पंचांग गणित में पूरी तरह दक्ष होने से उस समय पंचांग संपादन तो करते थे, लेकिन ज्योतिष के प्रति उनकी विशेष रुचि न थी। वे साहित्य में अधिक रुचि रखते थे। अत: साहित्याचार्य करने के बाद ज्योतिषशास्त्र के अध्ययन में पूज्य पिता जी द्वारा बार-बार दी गई प्रेरणा एवं आग्रह का उन्होंने सम्मान नहीं किया, जबकि अन्य भाइयों ने ज्योतिष की उच्चतम परीक्षा ज्योतिषाचार्य उत्तीर्ण की और तदनन्तर भारतीय एवं पाश्चात्य सभी ज्योतिष सिद्धान्तों का गंभीर अध्ययन किया। श्री सत्यव्रत शर्मा ने ज्योतिष के विभिन्न मत मतान्तरों के परिशीलन की बात तो दूर रही, पंचांग -गणितप्रक्रिया से भी अपना हाथ खींच लिया और स्पष्ट शब्दों में कह दिया, कि अब मैं पंचांग कार्य में किसी प्रकार का सहयोग न दूंगा। उन्होंने यह घोषणा सवंत् 2014 (सन् 1957 ई.) में ही कर दी थी। पूज्य पण्डित जी एवं उनके मित्र बन्धुओं ने उन्हें बहुत समझाया कि- सम्मान एवं लाभप्रद इस पैतृक संपदा को ठुकराना अच्छा नहीं है । लेकिन श्री सत्यव्रत ने किसी की नहीं सुनी। पंचांगसम्पादन में इनका यत्किञ्चित् सहयोग न होने पर भी 15 वर्षों (1956 ई. से 1971 ई.) तक के पंचांगों में सम्पादक के रूप में लगातार इनका नाम सर्वोपरि छपता रहा, क्योंकि पण्डित जी को कुछ आशा थी, कि श्री सत्यव्रत जी कभी न कभी अपना दुराग्रह छोड़ देंगे। वे नहीं चाहते थे कि- उनका ज्येष्ठ पुत्र उनके द्वारा प्रवर्तित इस प्रतिष्ठित प्रकाशन के लाभ से वञ्चित रहे। वि. सं. 2029 (1972 ई.) के मार्त्तण्डपंचाग के प्रकाशन से पूर्व पण्डित जी ने अपने शुभचिन्तक मित्र एवं वृद्धबन्धुओं के मध्य श्री सत्यव्रत शर्मा को बुलाकर अन्तिमरूपेण उन्हें अपना हठ छोड़ने के लिए आग्रहपूर्वक कहा। सभी मित्र-बन्धुओं के बार-बार समझाने-बुझाने के बावजूद भी वे टस से मस न हुए। भविष्य में भी पंचांग कार्य में सहयोग न देने पर वे अडिग रहे। उन्होंने उस समय मुद्रण-व्यवसाय करने की इच्छा व्यक्त की। तदनुसार इनके पिताश्री ने अपेक्षित सभी उपकरणों सहित एक मुद्रण प्रैस स्थापित करके उन्हें दे दिया और मार्त्तण्ड पंचांग से पूज्य पण्डित जी ने उनका नाम उनकी (श्री सत्यव्रत जी की)अपनी इच्छा के अनुसार हटा दिया। पंचांग कार्य से उनके विलग होने की सूचना पूज्य पण्डित जी ने वि. सं. 2029 के 'श्री मार्त्तण्डपंचाग' के पृष्ठ नं. 1 पर पाठकों को इस प्रकार दी-

''सूचित किया जाता है, कि विगत 15 वर्षों से लगातार पंचांगसम्पादन में किसी प्रकार का भी सहयोग न देने से एवं बार बार सूचित करने पर भी इस कार्य में सहयोग के लिए सहमत न होने से श्री सत्यव्रत शर्मा शास्त्री, साहित्याचार्य का नाम 'श्रीमार्त्तण्ड पंचांग' के सम्पादकमण्डल से पृथक् करना पड़ रहा है, जिसका मुझे भारी खेद है।''

[हस्ताक्षर- मुकुन्दवल्लभ]

अमृतसर में दृक्पक्ष सौरपक्ष पर रोचक शास्त्रार्थ

क्योंकि श्री प्रियव्रत शर्मा एवं शक्तिधर शर्मा ने सौरपक्ष एवं दृक्पक्ष का गंभीर अध्ययन करने पर सौरपक्षगत स्थूलताओं को दृष्टि में रखते हुए पूरे श्रीमार्त्तण्डपंचाग को वेधसिद्ध दृक्पक्षीय गणित के आधार पर बनाना शुरु कर दिया था। अत: बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय आदि से प्रकाशित होने वाले **'विश्वपंचांग'** तथा **'हृषीकेश'** आदि सौरपक्षीय पंचांगों से **'श्रीमार्त्तण्ड पंचांग'** में दिए जाने वाले व्रतपर्वों में अनेकदा गंभीर वैमत्य पैदा होने लगा। श्रद्धेय स्वामी **श्री करपात्री जी महाराज** एवं बनारस के **श्री रामव्यास पाण्डेय (ज्योतिष विभागाध्यक्ष- बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय)** आदि सूर्यसिद्धान्त के पक्षपाती विद्वान् दृक्पक्षपाती 'श्री मार्त्तण्ड पंचांग' को 'अशास्त्रीय' कहने लगे। दृक्पक्षीय गणित को वे 'पाश्चात्य' कह कर धर्मशास्त्र की दृष्टि से अग्राह्य घोषित करने लगे। इस बारे में उन्होंने जो छोटे मोटे प्रकाशन किए उनका प्रतिवाद दोनों विद्वान्-भाइयों ने अनेक प्रकाशनों द्वारा किया। जब वि. सं. 2020 (ई. सं. 1963) में

क्षयमास घटित हुआ तब दृक्पक्षीय एवं सौरपक्षीय पंचांगों में निर्दिष्ट दीपावली-दशहरा आदि प्रमुख त्योहारों में एक एक मास का अन्तर आ गया। जनता में भारी विभ्रम रहा। इस भारी विभ्रम को देखकर बनारस के विद्वानों ने "भविष्य में सौरपक्ष के अनुसार ही व्रतपर्व आदि धर्मशास्त्रीय निर्णय किए जाएं"- यह एकपक्षीय घोषणा कर दी। धर्मशास्त्रीय निर्णयों में उन्होंने दृक्पक्षीय पंचांगों को अग्राह्य सिद्ध करने का विफल प्रयास किया। इसके विरोध में श्री प्रियव्रत एवं श्री शक्तिधर जी ने दृक्पक्ष के समर्थन में काफी कुछ साहित्य प्रकाशित किया। सन् 1964 ई. के नवम्बर मास में 'सर्ववेदशाखा सम्मेलन' अमृतसर के दुर्ग्याणा मन्दिर में श्री करपात्री जी महाराज के तत्त्वावधान में आयोजित हुआ। इस सम्मेलन में 18 एवं 19 नवम्बर-दो दिन ज्योतिषसम्मेलन के लिए निर्धारित किये गए। इस सम्मेलन में श्री करपात्री जी एवं **पुरी के शंकराचार्य श्री 1008 जगद्गुरु निरंजनदेव तीर्थ जी महाराज** ने श्री प्रियव्रत जी एवं श्री शक्तिधर जी को इस उद्देश्य से आमन्त्रित किया, कि वे सौरपक्षपाती बनारस के विद्वानों द्वारा उपस्थापित किए गए दृक्पक्ष का खण्डन करने वाले तर्कों का या तो शास्त्रानुसार प्रतिवाद करें या वे पुनः सौरपक्ष को अपना लें। श्री करपात्री जी ने इन दोनों व्युत्पन्न भाइयों के विरोध में बनारस के **श्री मीठालाल व्यास, श्रीराम व्यास पाण्डेय** को एवं अन्य सौरपक्षपाती विद्वानों को आमन्त्रित किया। पुरी के शंकराचार्य जगद्गुरु श्री निरंजनदेव तीर्थ जी महाराज भी इस शास्त्रार्थ में भाग लेने के लिए वहाँ उपस्थित थे। शेष तीन मठों (धामों) के जगद्गुरु श्री शंकराचार्य जी भी दर्शकों के तौर पर वहाँ विराजमान थे। शास्त्रार्थ की मध्यस्थता श्रीकरपात्री जी महाराज एवं श्री मीठालाल व्यास ज्योतिषाचार्य कर रहे थे। यह शास्त्रार्थ दो दिन चला और 3-3 घण्टों के चार सत्रों में सम्पन्न हुआ। 33 एवं 25 वर्ष के युवाओं के साथ काशी के वयोवृद्ध धुरन्धर विद्वानों का शास्त्रार्थ देखने के लिए लगभग 8-10 हजार व्यक्तियों का कौतूहल भरा जनसमूह वहां एकत्र था, जिसमें स्थानीय कालेजों के प्रोफेसर, अनेकों विशेषज्ञ विद्वान् एवं पत्रकार तथा सामान्य दर्शक थे। दोनों भाइयों द्वारा सभी प्रतिपक्षी विद्वानों के आक्षेपों का शास्त्रीय युक्तियों से दृढ़तापूर्वक किए गए प्रतिपादन को सुनकर जनता स्वतः असली शास्त्रीयपक्ष को समझ गई, क्योंकि बनारस के सौरपक्षपाती विद्वान्, जो कि दृक्पक्षीय नव्य सिद्धांतों से सर्वथा अपरिचित थे, इन युवाओं के तर्कों का न तो खण्डन ही कर सके, और न ही उनके प्रतिप्रश्नों का उत्तर दे सके। जगद्गुरु श्री शंकराचार्य श्री निरंजन देव तीर्थ जी महाराज को तो, जो कि सूर्यसिद्धान्तीय गणित का समर्थन कर रहे थे, पहले दिन के प्रथम सत्र के बीच ही शास्त्रार्थ से विरत होने के लिए बाधित होना पड़ा, क्योंकि श्रीकरपात्री जी महाराज ने जगद्गुरु शंकराचार्य जी को परामर्श दिया, कि जिस उच्चस्तरीय खगोलीय-सिद्धान्तों के आधार पर अपने मत का ये युवक विद्वान् प्रतिपादन कर रहे हैं, वह आपका विषय नहीं है। श्रीरामव्यास पाण्डेय जी की स्थिति भी ऐसी ही रही। प्राचीन सौरादि-गणित में दिए जाने वाले बीजादि संस्कारों की निर्मूलता आदि विवादास्पद विषयों के बारे में उपस्थापित नव्य गणितीय तर्कों का वे तनिक भी प्रतिवाद नहीं कर सके । अनेकत्र तो दोनों भाइयों द्वारा किए गए नव्य खगोल सिद्धान्तों से सम्बद्ध प्रतिपादनों को वे समझ ही नहीं सके । श्रीकरपात्री जी ने भी जब यह देखा, कि उनके पक्ष के विद्वान् श्री शक्तिधर प्रियव्रत जी द्वारा प्रस्तुत ठोस गणितीय तर्कों को समझने एवं निरस्त करने में सर्वथा विफल हो गए हैं, तो शास्त्रार्थ का सहसा पटाक्षेप कर देना ही उन्होंने उचित समझा।

शास्त्रार्थ सभा में उपस्थित शिक्षित दर्शकों, पत्रकारों, ज्योतिपशास्त्रज्ञों एवं सर्वसाधारण का यह कहना था कि इस प्रकार के खुले मंच पर ऐसे गंभीर शास्त्र से सम्बद्ध ऐसा उच्चस्तरीय शास्त्रार्थ आज तक कभी भी देखने को नहीं मिला। इसे उन्होंने **'ऐतिहासिक शास्त्रार्थ'** की संज्ञा दी। शास्त्रार्थ की समाप्ति पर सैंकड़ों प्रशंसक दर्शकों ने इन दोनों भाइयों को घेर लिया। "शास्त्रार्थ में नवयुवक श्री प्रियव्रत एवं श्री शक्तिधर का पक्ष विजयी रहा" यह समाचार पंजाब के ट्रिब्यून, मिलाप आदि समाचार पत्रों ने प्रकाशित किया। इस शास्त्रार्थ का विस्तृत विवेचन खगोलशास्त्रीय प्रौढ़ गणितप्रतिपादनों के साथ **'शास्त्रीय पंचांग मीमांसा'** नामक पुस्तक में प्रो.श्री प्रियव्रत शर्मा एवं डा० शक्तिधर शर्मा ने संस्कृत में लिखकर प्रकाशित किया। 228 पृष्ठ की यह पुस्तक बनारस के प्रत्येक सौरपक्षपाती विद्वान् को भेजी गई थी। **श्री केदारदत्त जोशी (बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के भूतपूर्व ज्योतिष विभागाध्यक्ष)**, अनेक ज्योतिषग्रन्थों के प्रणेता **श्री सीताराम झा, ज्योतिषाचार्य** एवं **श्री रविशंकर भार्गव, ज्योतिषाचार्य** आदि बनारस के अनेक निष्पक्ष ज्योतिषविद्वान् इस पुस्तक को पंचांग-वाद-विवाद पर लिखी गई एक प्रौढ़ प्रामाणिक कृति मानते हैं।

इसके अलावा वि. सं. 2039 (सन् 1982 ई.) में भी एक क्षयमास घटित हुआ, उस समय भी दोनों पक्षानुसार दीपावली-दशहरा में एक एक मास का अन्तर आ गया था। इस विवाद के समाधानार्थ **कांचीकाम कोटिपीठाधीश जगद्गुरु शंकराचार्य श्री 1008 जयेन्द्र सरस्वती जी** के तत्वावधान में दूसरा शास्त्रार्थ गुरुवायूर (केरल)में आयोजित हुआ। इस शास्त्रार्थ में महाराष्ट्र मद्रास, केरल, आन्ध्रप्रदेश के वे सभी पंचांगकर्त्ता विद्वान् आमन्त्रित थे, जो श्री प्रियव्रत-शक्ति धर शर्मा के धर्मशास्त्रीय सिद्धान्तों के प्रतिकूल दशहरा-दीपावली एक-एक मास बाद मनाने के पक्ष में थे। श्री प्रियव्रत शर्मा एवं श्री शक्ति धर शर्मा ने उनके मत का

तर्कन्यासपूर्वक खण्डन करते हुए धर्मशास्त्रीय एवं गणितात्मक शैली से अपने मत को दृढ़तापूर्वक उपस्थापित किया, जिसे सुनकर काञ्चीमठ के जगद्गुरु अनन्त श्री विभूषित शंकराचार्य जी ने अन्तिम निर्णय देते हुए श्री प्रियव्रत शर्मा एवं शक्तिधर के मतानुसार ही दीपावली -दशहरा मनाने की घोषणा की।

दो-दो घण्टों के चार-सत्रों में विभाजित दो दिन चला यह शास्त्रार्थ विशुद्ध संस्कृत माध्यम से ही हुआ था।

श्री इन्दुशेखर शास्त्री सम्पादक बने

वि. सं. २०२४ में पूज्य पण्डित जी के कनिष्ठ पुत्र श्री इन्दुशेखर जी ने भी अपने विद्वान् अग्रजों के साथ 'श्रीमार्त्तण्डपंचांग' के सम्पादन में हाथ बंटाना प्रारम्भ किया। आपने पंजाब विश्वविद्यालय से शास्त्री एवं पंजाब विश्वविद्यालय से ही संस्कृत में एम.ए. परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी से ज्योतिषाचार्य भी आपने प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की है। फलितज्योतिष में विशेष-रुचि होने से इन्दुशेखर जी ने पंचांग-सम्पादन के साथ साथ अपने पिताश्री से वर्षों तक जातक-संहिता ग्रन्थों का विशेष अध्ययन किया और अचूक भविष्यकथन के परम-रहस्य उनसे प्राप्त किये। आपने लगभग २५ वर्ष तक अपने पिताश्री के सान्निध्य में रहते हुए '**श्रीमार्त्तण्डज्योतिष कार्यालय**' में देश-देशान्तर से प्रतिदिन आने वाले लोगों की जटिल ग्रहसमस्याओं के समाधान के शास्त्रीय-प्रतिकारों को गंभीरता से हृदयंगम किया है, जिसके फलस्वरूप आप अब अपने स्व. पितृचरणों की अनुपस्थिति में उनके द्वारा प्रदत्त शिक्षा-दीक्षा के बल पर लोगों की उलझी समस्याओं के ज्योतिषशास्त्रीय समाधान करने में सिद्धहस्त हैं। जन्मकालिक-ग्रहस्थिति के आधार पर जातक की भूत, भविष्य एवं वर्तमान घटनाओं को करधृतामलकवत् देख सकने की आपकी अद्भुत शास्त्रदृष्टि के कारण आपके कार्यालय (**श्रीमार्त्तण्डज्योतिष कार्यालय, कुराली (रोपड़) पंजाब**) में प्रतिदिन भारत के अनेक प्रदेशों से अनेकों व्यक्ति अपनी फलितशास्त्रीय समस्याओं के समाधान के लिए उपस्थित होते हैं। अपनी ग्रहसमस्याओं के प्रतीकार के लिए देश के सुप्रसिद्ध उद्योगपति, मूर्धन्य राजनीतिज्ञ तथा समाज के अन्य सभी क्षेत्रों के विशिष्ट-व्यक्तित्व 'श्रीमार्त्तण्ड कार्यालय' में अनेकदा आपसे परामर्श के लिए उपस्थित देखे जा सकते हैं। आपकी सफल भविष्यवाणियों की चर्चा पंजाब, हरयाणा, हिमाचल आदि प्रदेशों के लोग बड़े सम्मान से करते हैं।

आपकी असंख्य राजनैतिक -भविष्यवाणियों ने वस्तुतः लोगों को अनेकदा चौंकाया है। 'श्रीमार्त्तण्डपंचांग' में दी जाने वाली मेदिनी, अर्घकाण्ड तथा राजनीति से सम्बद्ध भविष्यवाणियों के प्रणेता आप ही हैं। आपके द्वारा पंचांग में प्रतिवर्ष '**आकाशी कौंसिल**' तथा '**व्यापार विमर्श**' नामक स्तम्भों में प्रकाशित भविष्यवाणियों की यथार्थता से पंचांग के पाठक भलीभान्ति परिचित हैं। **अभी पीछे श्री अटल विहारी वाजपेयी जी की सरकार के भंग होने की यथार्थ तारीख पंचांग में एकवर्ष पूर्व ही घोषित कर दी गई थी, जोकि लक्ष्य से यत्किञ्चित् भी च्युत न होने वाली आपकी तीव्र भविष्यद्दृष्टि का ज्वलन्त उदाहरण है। आपकी ऐसी विस्मयकारी अनेकों राजनैतिक भविष्यवाणियों की ख्याति के कारण आप अनेकों राजनीतिज्ञों के परामर्शदाता दैवज्ञ के रूप में माने जाते हैं।**

आपकी अव्यभिचरित-भविष्यदृष्टि से आकृष्ट विश्वविख्यात महर्षि **श्री १००८ महेशयोगी जी** ने आपको '**राजज्योतिषी**' पद के लिए निर्वाचित किया था, लेकिन श्री इन्दुशेखर जी ने इस पद को स्वीकार करने में अपनी असमर्थता प्रकट की, क्योंकि इसे स्वीकार कर लेने पर आपको वर्ष में कम से कम छः मास तक हॉलैण्ड में सम्मान्य श्रीयोगी जी की संस्था में अनिवार्यतः रहने का प्रतिबन्ध था और इस प्रतिबन्ध को स्वीकार करना ७० वर्षों से सुप्रतिष्ठित 'श्रीमार्त्तण्ड ज्योतिष कार्यालय ' के लिए हानिप्रद था।

श्री इन्दुशेखर जी दैवज्ञ होने के साथ साथ संस्कृत के भी विद्वान् हैं। भारतीय फलितशास्त्र के प्रति विशेष आकर्षण होने के कारण ही इन्होंने स्नातकोत्तर शिक्षण संस्थाओं में शिक्षण का अवसर प्राप्त होने पर भी पदग्रहण की स्वीकृति नहीं दी ।

त्रिस्कन्ध ज्योतिष के पारदृश्वा इन सम्पादकों द्वारा सम्पादित इस पंचांगशिरोमणि ने इन विगत 75 वर्षों की गरिमामय अवधि में ऐसा शोधपूर्ण मौलिक चिन्तन पाठकों को दिया है, जिससे इस शास्त्र में परम्परागत विचारधारा से अपने आप में एक विलग क्रान्तिकारी दर्शन भारतीय-ज्योतिष जगत् में प्रतिष्ठापित हुआ है।

मुझे दृढ़ विश्वास है, कि भविष्य में भी इनकी समर्थ लेखनी से इसी प्रकार की अमूल्य विचारधारा इस ज्ञानशाखा में विशेष क्रान्तिप्रवाह लाएगी। '**हीरक जयन्ती**' की इस मंगलमय वेला पर मैं 'श्रीमार्त्तण्डपंचांग' के प्रबुद्ध सम्पादकमण्डल को अपनी हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं एवं प्रभु से प्रार्थना करता हूं कि कल्पान्तस्थायी यह 'श्रीमार्त्तण्डपंचांग' अपनी ज्ञानरश्मियों से ज्योतिषशास्त्रगत भ्रान्तधारणाओं के अन्धतमस को सदा के लिए सर्वथा दूर भगा दे।

—: श्रीमार्त्तण्डपंचांग पर विद्वानों की अमूल्य सम्मतियां :—

(आपरितोषाद् विदुषां न मन्ये साधु प्रयोग–विज्ञानम्)

(श्रीमार्त्तण्ड पंचांग पर अनुरक्त असंख्य सम्मान्य विद्वानों की अमूल्य सम्मतियां हमें विगत 74 वर्षों से प्रतिवर्ष उपलब्ध हो रही हैं, जिन्हें हमने विशेष सम्मान से अपने पास सुरक्षित रखा है। इस हीरकजयन्ती के अवसर पर तो इन गुणग्राही अमत्सर विद्वान् पाठकों का हमारे प्रति अनुरागातिशय अनकी प्रशंसामय सम्मतियों की बाढ़ के रूप में प्रकट हुआ है, जिससे अपने परिश्रम की उपयोगिता के बारे में जानकर हमारे हृदय में भारी आत्मविश्वास उत्पन्न हुआ है। हमारे इस तुच्छ प्रयत्न से महाविद्वानों एवं श्रद्धास्पद धर्माचार्यों के अधिकल्प हृदय भी उत्तरंगित हो उठे हैं– यह वस्तुतः हमारे लिए हर्ष और गौरव का विषय है —— **सम्पादक मण्डल**

श्रद्धास्पद परमादरणीय श्रीभुवनेश्वरी पीठाधीश श्री 1008 घनश्याम जी महाराज, गोण्डल (गुजरात) का शुभ आशीर्वाद

जय भुवनेश्वरी ! अखिल भारतोपयोगी "श्रीमार्त्तण्ड पंचाग" 75 वें वर्ष में प्रवेश कर रहा है, यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई। भारतीय एवं पाश्चात्य ज्योतिष के विषयों से अलंकृत यह पंचांग का 75 वें वर्ष में पर्दापण हो रहा है। यही सिद्धि एवं साफल्य का प्रतीक बना है।

"श्रीमार्त्तण्ड पंचांग" को हीरकजयंती तक पहुंचाने में आप सभी की मेहनत, विद्धज्जनों का मार्गदर्शन, ज्योतिषाचार्यों, इस विषय के ज्ञाता एवं सभी का अमूल्य योगदान है ही, जिनकी सफलता एवं यश के अधिकारी आप सभी ही हैं। ज्योतिष सम्बन्धी एवं खगोलीय गति–विधियों में रुचि रखने वाले पाठकों की अभिलाषा एवं पुष्टि इस पंचांग से प्राप्त हो रही है, जो उत्तरीभारत के लिए गौरव की बात है। इस सुअवसर पर मां भगवती भुवनेश्वरी से प्रार्थना है, कि यह पंचांग प्रतिदिन–प्रतिवर्ष अग्रेसर होता हुआ, हरेक घर में आवश्यक बने एवं उच्च सफलता प्राप्त करे।

मां भगवती भुवनेश्वरी तथा हमारी ओर से वेदोक्त आशीर्वाद प्रेषित करते है।

मार्त्तण्डपंचांगस्य हीरकजयन्त्युत्सवं विज्ञाय मनसि महान् प्रमोदस्समजनि। नूनं हि मार्त्तण्डपंचांगमिदानीं पंचांगसरणौ 'मार्त्तण्ड' इव भासते। प्रत्यब्दं नूतनविषयाणां गुम्फनं न केवलमस्य महत्त्ववर्द्धनाय अपितु सर्वजनोपकाराय कल्पते। विवादास्पदानां गूढानां व्यावहारिकाणाञ्च विषयाणां प्रमाणपुरस्सरं समाधानं पंचांगकर्तृभिरतिश्रमेण प्रत्यब्दं क्रियते। भारतीयज्योतिषशास्त्रस्य धर्मशास्त्रस्य च मर्यादामनुपालयदि्भः पंचांगसम्पादकैरत्र व्रतपर्वणां विशिष्टानां मुहूर्त्तादीनाञ्च निर्देशः नैपुण्येन विधीयते, यस्मात् पञ्चनदासन्नवर्तिप्रदेशाति–रिक्तप्रदेशेष्वपि लोकप्रियत्वमस्यास्माभिरनुभूयते। अत्रास्य प्रामाण्यमपि कारणम्। ज्योतिः–शास्त्रस्य जिज्ञासु–पाठकानां ज्योतिषकर्मणि रतानां जनानाञ्चास्य माध्यमेन महानुपकारः पंचांगपरिवारैः क्रियते इति सत्यम् ।

पण्डितवराः दैवज्ञवर्याः श्रीप्रियव्रतशर्ममहानुभावाः शक्तिधरेन्दुशेखराभ्यामनुजाभ्यां ज्योतिषशास्त्राय समर्पिताभ्यां सहातिश्रमेण समुचितेन कालेनास्य प्रकाशनार्थं भूयो–भूयो धन्यवादार्हाः प्रशंसार्हाश्च सन्ति। अत एतस्य हीरकजयन्त्युत्सवे मार्त्तण्डपंचांगपरिवारस्याभि–नन्दनपुरसरं कामये यत् पञ्चाङ्गस्यास्य महिमा गुणाभिवृद्धया सततं वृद्धिमीयात्।

डॉ. रामचन्द्रपाण्डेयः,
आचार्योऽध्यक्षश्च ज्योतिषविभागे,
काशीहिन्दुविश्वविद्यालयः, वाराणसी।

विरुद्धवाक्यकालाहि–कलितान्विषयान्मृतान्। निर्णीय जीवदानेन मार्त्तण्डं मुकुटीयते।।
प्रियः प्रियव्रतः श्रेष्ठः शोधव्रत – विनिर्णयः। त्रिस्कन्ध – मर्मविद्यत्र समस्याः समुपाऽनुदत्।।
प्रिया वाणी प्रियःपाणिः, प्रियं शास्त्रस्य मन्थनम्। निधिरेवं प्रेयसां यः तमहं श्रेयसा युजे।।
जयन्ती हीरकाऽख्येऽस्मिन् विशेषांक–प्रकाशने। श्रीकण्ठ–हृच्छर्म कामा भवन्तु भवभावनात्।।

श्रीकण्ठ शर्मा 'चक्रपाणि' शास्त्री,
गुरु निकेतन, चौक फव्वारा,
अमृतसर (पं.)

श्रीमार्त्तण्डपंचांगं विविध–ज्यौतिष–धर्म–शास्त्रीय–विषयनिकरमण्डितत्वान्नैजं वैशिष्ट्यं भजते। ज्योतिष–सम्बन्धि–विविधसमस्यासमाधान–दक्षस्य श्रीमार्त्तण्डपंचांगस्य 'हीरकजयन्ती' प्रकाशनं विद्वत्तल्लजानां ज्योतिर्विदां नितरां मुदे स्यादिति भृशं कामये।

डॉ. हंसधरःझा, ज्यौतिषप्राध्यापकः,
कें. सं. विद्यापीठः,
गरली, (हि. प्र.)।

सच्छ्रीमार्त्तण्ड–पंचांगं श्रीमुकुन्द प्रवर्तितम्। भ्राजतां ज्योतिषां भव्यमिन्दुशेखरशोभितम्।।
प्रिय–शक्तिसुसम्पन्नं, गणितफलिताञ्चितम्। सुरम्यवरणं नव्यं जयन्त्या हीरकांचितम्।।
नरदेवः शुभाशंसी शास्त्री शास्त्र–वशंवदः। सौख्यं कामयते नित्यं मार्त्तण्डस्य प्रियं सदा।।

डॉ. नरदेव शास्त्री,
प्राध्यापकः संस्कृत विभागे,
हि.प्र. विश्वविद्यालयः, शिमला (हि.प्र.)

रवौ निलीनाः द्युषदो दिने–दिने, तमस्विनीमाप्य विभान्ति केवलम्।।
परन्तु मार्त्तण्डमवाप्य भूचरं, दिनेऽपि रात्राविव भांति ते खगाः।।

ज्ञातव्यानां शकुन–मुहूर्त्त–ग्रहण–फल–खगोल–भूगोलादि–विषयकघटनाविशेषाणां सूक्ष्मातिसूक्ष्मं सरलातिसरलञ्च सिद्धान्त–फलिताधारं निरूपणं प्रतिपृष्ठं सम्पठामः। सत्यं नहि दृष्टम् अस्माभिरेतादृशमन्यत्पंचांगम्। पंचांगमिदं भारतीयेषु शास्त्रशुद्धेषु पंचांगेषु अद्वितीयता–पदं सर्वथाऽर्हत्यलंकर्तुमिति निःशंकमुल्लिखितुं शक्नुमः।

तद्यथा –

श्रीमन्मार्त्तण्ड–पंचांगं, दृक्पक्षेणविनिर्मितम्।
मार्त्तण्डवत्प्रकाशेन, प्रोज्ज्वलं भुवि राजते।।

"हीरकजयन्ती" अवसरे सम्पादकानां भृशमभिनन्दनाय समुत्कण्ठते मे मनः। भगवत्याः श्रीचरणेष्वभ्यर्थये यत् पंचांगमहिमा गुणाभिवृद्ध्या अहर्निशं वृद्धिमीयात्।

श्रीकृष्ण शर्मा, शास्त्री,
वेद–साहित्याचार्यः,
ग्रा. सुन्हाड़, पो. सौर, सोलनम् (हि. प्र.)

मान्यं ग्राह्यं गुणाढ्यं ग्रहगणगणितं धर्मशास्त्रान्वितं च।
सर्वोच्चं विश्वपूज्यं प्रियव्रत – विदुषा पोषितं वर्धमानम्।।
पञ्चाङ्गं देव पाञ्चायतनमिव परं हीरकायां जयन्त्याम्।
श्रीमार्तण्डं जगति विजयतां ज्योतिषां ज्योतिरेतत्।।

श्रीराम कुमार मिश्रः,
स्नातकोत्तर संस्कृत महाविद्यालयः,
ब्रह्मनिवास आश्रम, वृन्दावनम् (मथुरा)।

दैवज्ञरत्न–श्रीमन्मुकुन्दवल्लभमिश्रैः प्रवर्त्तितं सम्प्रति च तत्पुत्रैः ज्योतिश्शास्त्र–मर्मज्ञैः सम्पाद्यमानं 'श्रीमार्त्तण्डपंचांगम्' अनुगुणसंज्ञं प्रकाशनम्। त्रिस्कन्धज्योतिषपारदृश्वनाम् एतेषां सम्पादकानाम् एतद्दिव्यविद्या–रहस्यव्यंजनाभिः लेखमालाभिः रुचिरं समृद्धं वपुः बिभ्रत् आकृष्ट–विद्वज्जनमानसम् अनन्वयमेतत् पंचांगम् अज्ञान–तमोभेदे सत्यं मार्त्तण्ड एव। अस्य 'हीरकजयन्ती' पर्वणि परममुल्लासं वहतो हृदो मे एता मांगल्यकामनाः– 'प्रत्यहमुदीयमानं मार्त्तण्डपंचांगमेतत् सुमनसां मनसां विकासाय भवेत्, सम्पादकवर्गश्चास्य दीर्घाद्दीर्घतरं निरामयम् आयुः अधिगच्छेत्, येन तस्य ज्ञानराशिना अधिगतेन लोक एषः अपगतभ्रमः युक्तां दिशमाश्रयेत्।'

मार्त्तण्डोऽयं मुकुन्दस्य , कलामासाद्य कालजाम्।
बोधयन्कालविज्ञानं , कल्पान्तं राजतां भुवि।।

डॉ. भक्तवत्सलम् शर्मा, प्राचार्यः,
स.ध.आ. संस्कृत महाविद्यालयः,
डोहगी (ऊना) (हि. प्र.)।

श्रीमार्तण्ड–पञ्चाङ्गेन विगतान् त्रिंशदुत्तराब्दान् अहं व्यवहरामि, पंचाङ्गमेतत् चित्रापक्षीय–दृग्गणितैक्य–वादि–पंचाङ्गेषु मूर्धन्यम् सर्वथा सैद्धान्तिकंसूक्ष्मगणित–विविध–मुहूर्त–मण्डितं, विविध–समस्या–समाधायकं सिद्ध–भविष्य–वाणी–चमत्कृतलोकं सारार्थ–विलास–गर्भं, पंचाङ्गमेतत् मार्तण्डाऽभिधं समग्रे भारतवर्षे ज्योतिष–ज्ञानं सर्वतः विकिरति।

इदानीं मार्तण्ड–पंचांगस्य हीरक–जयन्ती शुभावसरे अस्य साम्प्रतिक–सम्पादक–वर्याणां, लब्ध–स्वर्णपदकादि–प्रशस्तानां सुप्रतिष्ठितानां, राष्ट्रपति–बहुमान– सम्मानितानां खगोल–भूगोलगणितविज्ञाग्रगण्यानां, विभूतये, भृशं भवानीशममीडे। समेषामेतेषां श्रीर्वर्चस्वञ्च वृद्धिमीयात्।

प्रो. कृष्णगोपाल व्रजेश,
साहित्य–ज्यौतिषाचार्यः,
भूतपूर्वः ज्यौतिष विभागाध्यक्ष एवं प्राचार्यः,
महाराज संस्कृत कॉलेज, जयपुर (राज.)।

श्रीमार्त्तण्ड पंचांग दिव्य, भव्य ज्ञानोपयोगी सामग्री सहित प्राप्त हुआ। आपके यशस्वी प्रकाशन हेतु व्रज के आराध्य श्री श्यामसुन्दर से अहर्निश प्रार्थना है कि उत्तरोत्तर

इसी प्रकार पंचांग अभिवृद्धि करे। साथ ही आप समस्त बन्धुवर्ग का चतुर्दिक मंगलमय **विकास हो।**

डॉ. प्राणगोपाल, आचार्य ,
श्रीरंगलक्ष्मी आदर्श संस्कृत महाविद्यालय,
वृन्दावन (मथुरा)।

पंचांग अतिविशिष्ट ज्ञानवर्धक एवम् अग्रगण्य है। ' हीरक जयन्ती ' अवसर पर हमारी शुभ कामनाएं स्वीकार करें।

आचार्य गोस्वामी रामगोपाल जी,
श्रीगोपीश्वर महादेव मन्दिर,
वृंदावन (मथुरा)।

लगभग पचहत्तर वर्ष से जनता–जनार्दन की सेवा में संल्लग्न अखिल भारतोपयोगी श्रीमार्त्तण्ड पंचांग अखिल भारत में ज्योतिषतिलक के रूप में सर्वोपरि विराजमान हो चुका है, विश्व के सभी ज्योतिष–मनीषी हृदय से नतमस्तक होकर, इसे सम्मान प्रदान कर रहे हैं। हीरक जयन्ती अवसर पर भगवान् श्रीकृष्ण से सम्पादक मण्डल एवम् पंचांग की अहर्निश उन्नति की कामना है।

भागवत भूषण, श्रीनाथ शास्त्री,
पुराणाचार्य, भागवतशोध संस्थान, गान्धी मार्ग,
वृन्दावन (यू.पी.)

श्रीमार्त्तण्ड पंचांग प्रतिवर्ष नवीन शोधपूर्ण सामग्री से अलंकृत दृष्टिगोचर होता है, इसकी प्रत्यक्ष दृग्गणित अतिसूक्ष्म होने पर भी सरल और बुद्धिगम्य है। अज्ञानी को भी विद्वत्तापथ पर ले जाने वाला यह पंचांग सर्वतोभावेन प्रशंसनीय एवम् अग्रगण्य कहा जा सकता है।

श्रीवृन्दावन बांके बिहारीलाल जी से प्रार्थना है, कि सम्पादकमण्डल को दीर्घायु प्रदान करें। श्रीमार्त्तण्ड पंचांग 'हीरक जयन्ती' के विशेषांक पर हमारी शुभकामनाएं।

ब्रह्मर्षि, पं. वृन्दावन बिहारी मिश्र, "बिन्दु जी"
श्रीभागवतकुन्ज, प्रताप बाजार,
वृन्दावन (यू.पी.)।

यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि आप सं. 2059 वि. में श्रीमार्त्तण्डपंचांग की 'हीरक जयन्ती' मनाने जा रहे हैं। मैं समझता हूँ , श्रीमार्त्तण्डपंचाग ज्योतिषशास्त्र के इतिहास में मील का पत्थर साबित होगा। ठाकुर श्रीबांके बिहारी जी से प्रार्थना है कि यह पंचांग इसी तरह अहर्निश प्रगति के पथ पर अग्रेसर रहे।

श्री राधाकृष्ण, एडवोकेट,
मन्दिर प्रबंधक कमेटी, श्रीधाम,
वृन्दावन (यू.पी.)।

श्रीमार्त्तण्ड पंचांग में नवीनतम विषयविवेचन, सारगर्भित समस्यासमाधान, ग्रहणगणित आदि की सूक्ष्मतम शैली एवम् अव्यभिचरित भविष्यवाणियों को पाकर अत्यन्त प्रसन्नता होती है। श्रीवृन्दावनबिहारीलाल जी के चरणकमलों में प्रार्थना करता हूँ कि श्रीमार्त्तण्ड पंचांग 'हीरक जयन्ती' के अवसर पर भारतवर्ष के समस्त पंचांगों की श्रृंखला में एक आदर्श पंचांग के पद से समलंकृत होकर, गौरवपूर्ण रूप से महिमामण्डित रहे।

.आचार्य पं. विष्णुकान्त शास्त्री,
कर्मकाण्ड–ज्योतिष कार्यालय,
श्रीधाम, वृन्दावन (यू. पी.)।

श्रीमार्त्तण्ड पंचांग विद्वानों के लिए न केवल मार्गदर्शक है अपितु सैद्धान्तिक ज्योतिष एवम् वास्तु आदि विविध विषयों से अलंकृत होने के कारण जनमानस के लिए संग्रहणीय एवम् अतिप्रिय भी है, इसमें प्रशस्तगणित–फलित अथवा सारभूत अन्यलेख उत्कृष्टकोटि के विद्वानों द्वारा अनुमोदित हैं। हीरक जयन्ती अवसर पर "मां जगदम्बा" के श्रीचरणों में सदैव विनम्र प्रार्थना करते हुए, श्रीमार्त्तण्ड पंचांग की अभिवृद्धि हेतु कामना करते हैं।

कृष्णकाली पीठाधीश्वर,
डॉ. केशवाचार्य जी महाराज,
गोपीनाथ बाजार, वृंदावन – मथुरा (यू.पी.)।

श्रीमार्त्तण्ड पंचांग ज्योतिषशास्त्र पर शोधकर्ता विद्यार्थियों के लिए दर्पणतुल्य है। पंचांगगत सभी विषय प्रशंसनीय एवम् संग्रहणीय हैं। 'हीरक जयन्ती' पर हमारी शुभकामनाएं।

श्रीगोपाल चन्द्र घोष,
वृन्दावन शोधसंस्थान, रमण रेती, वृन्दावन, (यू. पी.)।

श्रीमार्त्तण्ड पंचांग के हीरक जयन्ती अवसर पर हमारी हार्दिक शुभकामनाएं हैं। भगवान् सम्पादकों को चिरायुसम्पन्न एवम् स्वस्थ रखें। श्रीमार्त्तण्ड पंचांग अपने आपमें एक परिपूर्ण ज्योतिषस्तम्भ है।

श्री चक्रपाणि मिश्र, प्राचार्य,
लक्ष्मी संस्कृत महाविद्यालय,
वृंदावन, (यू.पी.)।

उदित हुआ प्राचीदिशि से, मार्त्तण्ड प्रकाश फैलाया है।
राशि मंडल में घूमघूम, अपना प्रभाव दिखलाया है।।1।।
व्योम का वृतान्त " शंकर " क्रान्ति मंडल कथन है।
शोध है, सत् खोज है, सुलेख सुन्दर चयन है ।।2।।
वैदिक ऋचा धर्मादि व्याख्या, बतला रही क्या महत्त्व है।
विज्ञान ज्योतिषज्ञान गरिमा, सम्पूर्ण शिक्षातत्त्व है।।3।।
है प्रमुख वार्ता व्रतपर्व की, मेलों तथा अवकाश की।
उपराग सूरज–चन्द्र विवरण, तालिका आकाश की।।4।।
संसार भारत देश का क्या भविष्य होगा अभी।
समाज राजनैतिक व्यवस्था हल समस्या आर्थिक सभी।।5।।
उपनयन, परिणय, गृह, प्रतिष्ठा, मुहूर्त्त सुन्दर मनन है।
नवीनता लेकर बढ़ा, ज्योतिकिरण तपन है ।।6।।
प्रश्न, औषधि, चिकित्सा विवेचन, गणित सर्वाङ्गपूर्ण है।
आकाश लक्षण, बाजार रुख, ग्रहचाल भी परिपूर्ण है।।7।।
साधारणजनों अरु ज्ञानियों को ज्ञान की उज्ज्वल प्रभा।
मार्त्तण्ड "हीरकजयन्ती" यह भविष्य की सुन्दर विभा।।8।।

ब्रह्मर्षि ज्योतिषाचार्य,
पं. शंकरलाल गौड़, 'शंभुकवि' दूरा (आगरा) उ. प्र.।

श्रीमार्त्तण्ड पंचांग का हीरकजयन्ती विशेषांक प्रशंसनीय प्रभात है। महाराष्ट्र में भी इसकी लोकप्रियता निरन्तर बढ़ रही है एवम् विद्वज्जनों द्वारा इसकी प्रामाणिकता को स्वीकार किया जाता है। हार्दिक शुभकामनाओं के साथ।

पं. श्रीबोधराज शास्त्री, ज्योतिषी एवम् वास्तु सलाहकार,
श्रीप्रभु मं., बालुर रोड,
सेलू–पटमणि (महाराष्ट्र)।

ज्योतिषशास्त्र के पारदृश्वा सम्पादकमण्डल द्वारा सम्पादित श्रीमार्त्तण्ड पंचांग की गरिमा अहर्निश प्रगति पथ पर है। प्रतिवर्ष शोधपूर्ण निबन्ध, अनेकों जटिल समस्याओं का समाधान एवम् सर्वांगशुद्ध गणित के लिए यह पंचांग आज सभी पंचांगों मे शीर्षस्थानीय है। 'हीरकजयन्ती' विशेषांक ज्योतिषशास्त्र–व्यवसायी पण्डितों के लिए निःसन्देह संग्रहणीय होगा। इस ऐतिहासिक वेला पर मेरी शुभ कामनाएं।

खगोलविद् श्रीचक्रधर भट्ट, शास्त्री,
पंचकूला, (हरि.)

उत्तरभारत में हिन्दी में छपने वाले सभी पंचांगों का अध्ययन करके मैं निश्चितरुप से कह सकता हूँ कि श्रीमार्त्तण्ड पंचांग भारत के सर्वश्रेष्ठ पंचांगों मे मूर्धन्य है। सम्पादक एवम् लेखक श्रीप्रियव्रत–शक्तिधर–इन्दुशेखरशर्मा प्राचीन व आधुनिक ज्योतिर्विज्ञान के वेत्ता है :– सर्वांगीण–शास्त्रशुद्ध गणित भारतीय एंवम् पाश्चात्य विषयों से समलंकृत दृक्सिद्ध ज्योतिषशास्त्र के गूढ एवम् क्लिष्ट विषयों पर आधिकारिक स्पष्ट शास्त्रीय निर्णय देने वाला एकमात्र पंचांग श्रीमार्त्तण्ड पंचांग ही है, मेरा अनुभव है कि दूसरे पंचांगों की अपेक्षा इस पंचाग की भविष्यवाणियां ईश्वरकृपा से सत्यसिद्ध होती रही हैं। 'हीरक जयन्ती' विशेषांक पर कोटिशः शुभ कामनाएं।

श्रीकण्ठ पाठक,
भविष्यवाणी सेंटर,
फिरोजपुर (पं.)।

वर्त्तमान में सिद्धान्तशिरोमणि, ज्योतिषाचार्य श्रीप्रियव्रतशर्मा, डा. शक्तिधर शर्मा एवं श्रीइन्दुशेखर शर्मा शास्त्री जी ने जो ज्योतिषगणित व फलित के संदर्भ में परिश्रम किया है, वह शब्दात्मक शैली में अकथनीय है।

श्रीमार्त्तण्ड पंचांग का, हीरक वर्ष प्रवेश।
प्रकाश है ज्योतिषजगत्, भ्रम तम नहिं अवशेष।।
सूक्ष्मदृश्यगणित का, खुल कर किया प्रचार।
उत्तरभारतभूमि से, हुआ जगत्, साकार।।
त्रियदेवन को बहु मिले, विद्या–धन और मान।
विनय करत सर्वज्ञ से, श्रीकौशिक परम सुजान।।

पं. श्री प्रेमपाल कौशिक,
श्री राजधानी पंचांग कार्यालय,
जगजीतनगर, दिल्ली–11 00 53

आप श्रीमार्त्तण्ड पंचांग में प्रतिवर्ष नए विषयों के विशेषांक प्रकाशित कर रहे हैं। गतवर्ष **'वास्तु–विशेषांक'** और इसवर्ष **'ग्रह–चार'** विशेषांक !

विद्वानों की समस्याओं का समाधान आप अत्यंत शास्त्रीय एवं वैज्ञानिक रुप से करते हैं, उसकी जितनी प्रशंसा की जाए वह कम है। मैं तो आपकी उपलब्धियों पर मात्र आपका हार्दिक अभिनंदन ही कर सकता हूँ !

रवि त्रिवेदी,
104–ए किशनगढ़,
वसंत कुंज, नई दिल्ली।

श्रीमार्त्तण्ड पंचांग गणित–फलितादि ज्योतिष स्कन्धों से विभूषित होकर, समस्या समाधान, शोधपूर्ण आदर्श लेखों, व्यापारी वर्ग–समाज–राष्ट्र तथा विश्व के लिए प्रामाणिक तथा सत्यसिद्ध हो रही भविष्यवाणियों से ख्यातिप्राप्त, मणि–मन्त्र–औषधादि गृहस्थोपयोगी अनेक विषयों से सुसज्जित होकर मार्त्तण्डवत् सर्व सुलभ ज्ञान का प्रखर प्रकाश कर रहा है और भविष्य में करता रहेगा। 'हीरक जयन्ती' विशेषांक पर शुभ कामनाओं के साथ।

राष्ट्रपति–सम्मानित आचार्य,
श्री शालग्राम, शर्मा, दर्शनाचार्य,
भूतपूर्व–प्राचार्य, रा.सं. कॉलेज, सोलन (हि. प्र)।

श्रीमार्त्तण्ड पंचांग की 'हीरक जयन्ती' के शुभावसर पर विजयेश्वर एवम् रणवीरेश्वर पंचांग के सम्पादक मण्डल की ओर से हार्दिक अभिनन्दन एवम् शुभ कामनाएं; यह विशेषांक अपने आपमें एक अद्वितीय ज्योतिषग्रन्थ के रुप में ख्यात हो,– ऐसी भगवान् श्रीविश्वनाथ से प्रार्थना है।

श्री ओंकारनाथ शास्त्री,
अजीत कॉलोनी, गोल गुजराल,(जम्मू)।

हीरक जयन्ती' विशेषांक की अत्यन्त उपयोगी सामग्री अवश्य ही एक संग्रहणीय पुस्तक का स्थान प्राप्त करेगी। यह पंचांग अभूतपूर्व सफलता के साथ हमेशा अग्रेसर रहे; यही शुभ कामना है।

डॉ.गो. मो. वल्लभ,
हैदराबाद,(आंध्रप्रदेश)।

आज पंचांगक्षेत्र में श्रीमार्त्तण्ड पंचांग की तुलना में कोई भी पंचांग दृष्टिगोचर नहीं हो रहा, पाण्डित्य परम्परा एवम् विद्वन्मण्डली में सर्वश्रेष्ठ अग्रज के रूप में आप तीनों बन्धुओं की तुलना में पूरे देश–विदेश में सही अर्थो में कोई नहीं। यह सब पूज्य–पिताश्री स्वनामधन्य पं. श्रीमुकुन्दवल्लभमिश्र जी की त्याग–तपस्या, शोध, अध्ययन, सात्त्विक शुभाशीष का परिणाम है। 'हीरक जयन्ती' पर शुभ कामनाएं प्रेषित हैं।

पं. श्रीरामजी शुक्ल,
सेवा सदन,
मु. पो. लेवदी, जसरा (इलाहाबाद)।

इसमें सन्देह नहीं कि आज इस पंचांग के स्तर का कोई भी पंचांग भारत में दृष्टिगोचर नहीं हो रहा। आज काशी के अनेक विद्वान् भी इस पंचांग को अवश्य सराहते हैं, क्योंकि अनेकविधाओं पर जो इस पंचांग द्वारा प्रकाश डाला जाता है, वह अन्य पंचांगों में उपलब्ध नहीं। मैं भगवती 'विन्ध्यवासिनी' से प्रार्थना करता हूँ कि यह पंचांग सदैव फलता–फूलता रहे, जिससे ज्योतिष जगत् प्रकाशित होता रहे।

सगुणलाल पाण्डेय,
श्री विन्ध्यवासिनी मन्दिर,
विन्ध्याचल।

नवीन और प्राचीन ज्योतिषिक विषयों से अलंकृत भारत के गिने–चुने उत्कृष्ट पंचांगों में मूर्धन्य श्रीमार्त्तण्ड पंचांग के 'हीरक जयन्ती' विशेषांक पर विद्वत्सम्पादक मण्डल को 'भारतीय ज्योतिर्विज्ञान अनुसंधान संस्थान' की ओर से हार्दिक शुभ कामनाएं प्रेषित करता हूँ और निरन्तर पंचांग की उन्नति के लिए ईश्वर के चरणारविन्दों मे प्रार्थना करता हूँ।

डॉ. केदारनाथ प्रभाकर, डी. लिट्.,
स्वामी रामतीर्थ नगर,
सहारनपुर, (यू. पी.)।

आप श्री मार्त्तण्ड पंचांग में 'भारतीय वास्तुशास्त्र', 'ग्रहों की खगोलीय स्थिति', 'गोचरफल', 'आकाशीय कौंसिल', 'समस्या समाधान' द्वारा ज्योतिष को लोकप्रिय व बोधगम्य बना रहे हैं। 'हीरक जयन्ती' विशेषांक बुद्धिजीविवर्ग एवम् ज्योतिष–वेत्ताओं के लिए अनुपम उपहार साबित होगा; हमारी शुभ कामनाएं स्वीकार करें।

डॉ. नीलमणि उपाध्याय,
अवकाश प्राप्त प्राचार्य, अपर्णा निवास,
मण्डी (हि. प्र.)।

श्रीमार्त्तण्ड पंचांग ने धर्मशास्त्रसम्मत अपने स्वरुप से विभिन्न विषयों से ज्योतिषसम्बन्धी तमोनिवारण को अद्वितीय ढंग से सम्पन्न करते हुए, अतीव महत्त्वपूर्ण सेवा की है, मूर्धन्य होकर दिनानुदिन ज्योतिषजगत् को प्रवर्धमान सेवा से आलोकित करे।

आचार्य श्री शुकदेव शर्मा,
अवकाश प्राप्त प्राचार्य,
कोट, बिलासपुर (हि. प्र.)।

विद्वन्मूर्धन्य पं. श्रीमुकुन्दवल्लभ मिश्र ज्योतिषाचार्य द्वारा प्रवर्तित श्रीमार्त्तण्ड पंचांग में विभिन्न सैद्धान्तिक, फलित सम्बन्धी लेखों से ज्योतिष जगत् को जो गरिमा प्राप्त हुई है, उसके लिए सम्पादकमण्डल बधाई का पात्र है। 'हीरक जयन्ती' अवसर पर शुभ कामनाएं प्रेषित हैं।

रामदयालु शास्त्री,
मु. पो. पनवाड़,
टोंक, (राजस्थान)।

ज्योतिष जगत् का प्रत्येक विद्वान् श्रीमार्तण्ड पंचांग के विस्मयकारी वैज्ञानिक शोधकर्म से भलीभान्ति परिचित है। ज्योतिष के लगभग सभी छूते अछूते विषयों को आमूलचूड़ परखकर, उन्हें दृढ़ वैज्ञानिक निकष पर संस्कारित करके, इस पंचांग के विद्वान् विधाताओं ने, जिस क्रान्ति की मिसाल जलाई है, उसे देखकर कौन गुणज्ञ हर्षविभोर न होगा। अतिरंजित 'बाबा वाक्यों', मिथ्याधारणाओं तथा अनर्गल भ्रान्तियों को तर्को और प्रमाणों के आधार पर निरस्त करके इस शास्त्र के यथार्थतत्त्व को इसने करामलकवत् स्पष्ट किया है। गणित और स्वस्थ तर्क के परिप्रेक्ष्य में सही न उतरने वाले चिरप्रचलित सिद्धान्ताभासों का उन्मूलन कर शास्त्रमर्यादा को सुरक्षा प्रदान की है। दृक्तुल्यपक्ष पर इस पंचांग का सोपपत्तिक चिन्तन विद्वानों द्वारा सम्मानित है। 'हीरक जयन्ती' विशेषांक विद्वानों एवम् ज्योतिषकर्मा जनों के लिए अपूर्व निधि बने एवम् उज्ज्वल प्रतिष्ठा बनाए रखे।

आचार्य केशव शर्मा, एम. ए., दर्शनाचार्य,
(राष्ट्रीय–प्रान्तीय अनेक विद्वत्तापुरस्कारों एवम् महाकवि कालिदास पुरस्कार से अलंकृत)
सोलन,(हि. प्र.)।

ज्योतिर्विज्ञान की शंकाओं के सारगर्भित समाधान हेतु श्रीमार्त्तण्ड पंचांग का योगदान सर्वाधिक स्तुत्य है। शास्त्रीय विषय एवम् शास्त्रगरिमा का शाश्वत् नीतिन्याय नियामक से विश्लेषण बनते, जनहितार्थ श्रीमार्त्तण्ड पंचांग के 'हीरक जयन्ती' विशेषांक का प्रकाशन प्रशंसनीय किंवा स्तुत्य है, ज्योतिषजगत् हेतु यह प्रयास अतुलनीय गरिमामय प्रसंग है।

वैद्य आनन्दस्वरूप शास्त्री,
पंचांग प्रकाशन,
नीमच, (म. प्र.)।

ज्योतिषशास्त्र के विशेषज्ञ श्रीमार्त्तण्ड पंचांग के सम्पादकों ने ज्योतिषियों के लाभार्थ जो अथक प्रयास किए हैं, वस्तुतः प्रशंसनीय हैं। **पंचांग शिरोमणि** इस श्रीमार्त्तण्ड पंचांग के 'हीरक जयन्ती' पर्व पर हमारी शुभ कामनाएं हैं।

महन्त अवधबिहारी दास शास्त्री,
मन्दिर–तपियां,
नाभा, (पंजाब)।

श्रीमार्त्तण्ड पंचांग प्रतिवर्ष अपनी प्रतिष्ठा के उन्नत प्रतिमान को प्रस्तुत करता आ रहा है। ज्योतिषसम्बंधी गणित, फलित, धर्माचार–कृत्य एवम् व्रत–पर्व–निर्णय आदि का सूक्ष्म विशुद्ध एवम् विशद रूपेण इस पंचांग की महान् विशेषता रही है। 'हीरक जयन्ती' अवसर पर धर्माचरण और लोककृत्य निर्वाह की आधारभूमि शुद्धकालनिर्णय का आलोकस्तम्भ स्थापित करने वाले सम्पादकमण्डल के हम आभारी हैं। इस पंचांग की सर्वतोमुखी प्रगति की कामना करते हैं।

डॉ. रामनिवास शर्मा, रीडर,
मेतीलाल नेहरु कॉलेज,
दिल्ली विश्वद्यिालय, दिल्ली,

वर्तमान समय में विद्वान् सम्पादकों द्वारा सम्पादित श्रीमार्त्तण्ड पंचांग प्राच्य एवम् अर्वाच्य सिद्धान्तों का उत्कृष्ट निदर्शन है। नवीन उपलब्धियों के साथ श्रीमार्त्तण्ड पंचांग सर्वोत्कृष्ट है। राष्ट्रिय एवम् अन्तर्राष्ट्रिय भविष्यवाणियों, व्रत–पर्व व्यवहार, मुहूर्त एवम् सर्वोत्कृष्ट ग्रहणगणित के लिए यह पंचांग विद्वानों द्वारा प्रतिष्ठित और लोकमान्य हो चुका है। 'हीरक जयन्ती' शुभावसर पर मेरी हार्दिक शुभ कामनाएं।

सरिद्वराणां गंगांभः पावनस्तापनाशनः।
पंचांगानां तथैवेह मार्त्तण्डो मूर्ध्नि राजते।।
ज्योतिर्विज्ञान कल्पद्रुः प्रत्यक्ष–गणितान्वितः।
लोकानां संशयोच्छेदी मार्त्तण्डो भुवि राजते।।

आचार्य केशवानन्द नौटियालः,
शास्त्री, साहित्याचार्यः, एम.ए.,
9–शान्तिनगरम् , ऋषिकेश, (यू.पी.)।

सुमुहूर्त्त–सनातनव्रतपर्व–तिथ्यादि–निर्णायक–धर्मग्रन्थ–स्वरूपमद्भुतं विभिन्न–ज्योतिषानेकविषयैर्विभूषितं ज्ञापकं महनीयं सम्पूर्ण–शंकासमाधानक्षमं, विशदग्रन्थाकारमिदं विशुद्धदृक्सिद्धान्त–पुरस्सरमनुपमं 'श्रीमार्त्तण्डपंचांगम्' स्वस्तिकरंल्लोके। 'हीरक जयन्ती' अवसरे पंचांगमेतत् समेषां विदुषां मुदे स्यादिति शुभं कामये।

ब्रह्मर्षि प्रेमाच्युत प्रेम जी महाराज,
श्रीसाकेत धाम, गड़खल, सोलन (हि. प्र.)।

श्रीमार्त्तण्ड पंचांग ज्योतिषजगत् के लिए एक अनुपम उपलब्धि है। पंचांगक्षेत्र में सर्वांगशुद्ध गणित, शोधपूर्णनिबन्ध, जटिल समस्याओं के समाधान एवं ग्रहणगणित की प्रामाणिकता का क्षेत्र श्रीमार्त्तण्ड पंचांग के प्रवर्तक विद्वान् ज्योतिषाचार्य स्वनामधन्य पं. मुकुन्दवल्लभ तथा उनके सुयोग्य विद्वान् आत्मजों को जाता है। 'हीरक जयन्ती' विशेषांक निश्चितरूप से ज्योतिष जगत् की श्रीवृद्धि करेगा, ऐसा मेरा विश्वास है। शुभ कामनाओं के साथ।

डॉ. अरविन्द शर्मा,
एम.ए., पी.एच.डी., ज्योतिषाचार्य,
सम्पादक, कनकप्रभा, बिजनौर, (यू.पी.)।

'हीरक जयन्ती' का प्रकाशन भारतीय विद्वानों तथा ज्योतिष जगत् के लिए विशेषरूप से ज्ञानवर्धक एवम् जिज्ञासु विद्वानों की विभिन्न शंकाओं के समाधान के लिए निःसन्देह महदुपकारक सिद्ध होगा। इस पंचांग के प्रतिभाशाली सम्पादक मण्डल ने इस पंचांग को मूर्धन्य बना दिया है। भविष्य में भी अहर्निश उन्नति की कामना भगवान् शंकर से करते हैं।

ज्योतिर्विद, आचार्य राजाराम शास्त्री
ज्योतिषभवन,मन्दिर चित्रगुप्त, बिजनौर (यू.पी.)

इसवर्ष श्रीमार्त्तण्ड पचांग की 'हीरक जयन्ती' मनाई जा रही है, इस पीयूषवर्षक वृतान्त से मन आप्यायित हो ऊठा। श्रद्धेय बन्धुद्वय आचार्य प्रियव्रत जी व डॉ. शक्तिधर जी तथा मेरे बालसखा श्री इन्दुशेखर जी की सामूहिक वैदुषी और अथक साधना ने मेरे पितृकल्प परमाराध्य सर्वतन्त्र स्वतन्त्र स्व. पं. श्रीमुकुन्द वल्लभ मिश्र, ज्योतिषाचार्य जी की यशःपताका अद्यावधि अक्षुण्ण रखी है, इससे अधिक और क्या सन्तोष हो सकता है। इस सुअवसर पर मेरा वर्धापन स्वीकार करें। भगवान् **'आशुतोष'** आप सब भाइयों को सपरिवार चिरायुष्य दे, जिससे आप जीवलोक की अनन्तकाल तक सेवा करते रहें। **किमधिकम्**–

पंचांगानि महर्घाणि सन्त्यन्यान्यपि भूतले।
किन्तु मार्तण्ड–पंचांगकलां तानि स्पृशन्ति नो।।

अत एव –

अंगैः समग्रैः सहितं व्यवस्था–विधायकं संगणना–समृद्धम्।
श्रीमन्मुकुन्दाभिधमिश्रकीर्तिः मार्त्तण्डपंचांगमतत्यवन्याम्।।

तथा च –

सोदराणां समेषां वो हेलया सन्निधिं गता।
रोचतां मोदतां नित्यं ज्योतिर्विद्या वशंवदा।।

डॉ. उमाकान्त शुक्लः, एम.ए. (हिन्दी, संस्कृत),
साहित्य– साङ्ख्ययोगाचार्यः (लब्धस्वर्णपदकः),
604 संजयमार्ग, पटेलनगरम् ,
मुजफ्फरनगरम् , (यू.पी.)

श्रीमार्त्तण्ड पंचांग – परिवार से मेरा पुराना सम्बन्ध है। इन विगत 75 वर्षों में इस पंचांगराज ने सचमुच आश्चर्यजनक प्रगति की है। सिद्धान्त एवं फलितज्योतिष के मर्मज्ञ इसके सम्पादकों द्वारा त्रिस्कन्धज्योतिष सम्बन्धी अनेक असमाहित समस्याओं का जिस प्रकार समाधान किया है, उससे इस ज्ञानविधा पर इन सम्पादकों का अद्भुत आधिपत्य स्पष्ट होता है। पंचांग में आज तक प्रकाशित बहुमूल्य मौलिक लेखमाला को यदि पुस्तकों के आकार में प्रकाशित किया जाए तो भारतीय ज्योतिष जगत् का भारी उपकार होगा। भारतीय दैवज्ञवर्ग के अन्तस्तल में बद्धमूल यह अनुपम पंचांग अपने गौरवमय स्वर्णिम 75 वर्ष पार कर आज अपनी हीरक जयन्ती मनाने जा रहा है – यह मेरे लिए सचमुच परम हर्ष का अवसर है। यह आदर्श पंचांग इसी प्रकार दैवज्ञों का इसी भान्ति

मार्गदर्शन करते हुए प्रगतिपथ पर अनवरत उत्तरोत्तर बढता चले ,– यह मेरी हार्दिक शुभकामना है।

डॉ. जगदीश प्रसाद सांकृत्यायन,
8642, गली गोपालवाली,
गोशाला मार्ग, दिल्ली – 6,

श्रीमार्त्तण्डपंचांगं न केवलं भारतीयविदुषामेव, अपितु वैदेशिकानां अपि सकल–दैवज्ञाना ज्योतिष–सम्बन्ध्यनेक–भ्रान्तधारणाध्वान्तं मार्तण्ड इव ध्वस्तं कुर्वत् यथार्थज्ञानं च प्रकाशयत् ज्योतिष–जगति महतीं ख्यातिं वहति।

ऋषिकल्पेन निखिल–शास्त्रपारावारावगाहनाधिगतापार–ज्ञान–राशिना ज्योतिषा–चार्येण दैवज्ञरत्नेन परमपूज्य–स्वर्गीय–पण्डित–श्रीमुकुन्दवल्लभमिश्रेण रोपितस्य सम्प्रति विविध–शास्त्रानुसन्धान–समासादितागाध–पाण्डित्यैः ज्योतिषशास्त्रपारंगतैः तत्पुत्रैः रक्षितस्य संवर्धितस्य चास्य वृक्षस्य शाखा–प्रशाखामधिश्रिता दैवज्ञद्विजाः फलानि स्वदमानाः रसं चैतेषां अमन्दमानन्दमनुभवन्तः कुर्वन्ति कारयन्ति च स्वज्योतिषसम्बन्धिकार्यजातम् ततः निर्भ्रान्ताश्च सन्तः सत्स्वरूपं समधिगच्छन्ति शास्त्रस्याऽस्य।

२०५८ तमे वर्षे श्रीमार्तण्डपंचांगे लेखान्तरैः सह प्रकाशिता वास्तुविद्यादि–सम्बन्धिनो लेखाः 'स्वर्णे सुगन्धम्' आभाणकं चरितार्थयन्ति। मादृशां जिज्ञासूनां विदुषां दैवज्ञाना च प्रश्नानामुत्तराणि तत्तद्विषयकसमाधानानि च सम्पादकमण्डलस्य बुद्धेः वैशिष्ट्यं पाण्डित्यं च प्रकटयन्ति। भविष्ये इतोऽप्यधिकां सामग्रीं ज्योतिःशास्त्र–रहस्योद्घाटिनीं पाठका दैवज्ञाः प्राप्स्यन्तीति दृढो मे विश्वासः।

एतादृशस्य लब्धख्यातेः श्रीमार्तण्डपंचांगस्य 'हीरकजयन्ती' विशेषांकः २०५६ तमे वैक्रमाब्दे प्रकाश्यमानो विद्यते, एतन्मे महते प्रसादाय। एतस्यां मंगलवेलायां सम्पादकमण्डलाय वर्धापनं दीयते। प्रार्थ्यते च भगवान् भूतनाथः शंकरः शंकरः, सम्पादक–मण्डलस्य समृद्धये समुन्नत्यै च। विधीयते च तेषां यशसो दीर्घायुषश्च कामना।

पंचांगस्यास्य एवमेव उत्तरोत्तरं वर्धमानामुन्नतिं शुभं च कामयमानः।

आचार्य श्री इन्द्रदत्त उनियालः, दर्शनाचार्यः, M.A.,
संचालकः–विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोधसंस्थानम्,
साधुआश्रमः, होशियारपुरम्।

वि. सं. २०५८ के पंचांग को देखकर ज्ञात हुआ है, कि आपका २०५६ वि. का श्रीमार्तण्डपंचांग अपनी शुद्धता के आधार पर उत्तरभारत की जनता को सब ओर से उपकृत कर रहा है, पंचांग में निर्दिष्ट भविष्यवाणियां भी पंचांग की शुद्धता की प्रतीक हैं। पंचांग में निर्दिष्ट परिष्कृत मुहूर्त्त भी जनमानस को अपनी ओर आकर्षित कर रहे हैं, इस पंचांग में ज्योतिष के मूर्धन्य विद्वान् श्री प्रियव्रत शर्मा जी तथा डॉ. शक्तिधर शर्मा जी के अथाह प्रयास से गणित–फलित की समस्त विधियों को सुपरीक्षित करके निर्दिष्ट किया जाता है। मुझे पूर्ण विश्वास है, कि प्रकाशित होने वाला यह विशेषांक समस्त जनता की ज्योतिषसम्बन्धी सभी आकांक्षाओं को पूरा करेगा।

शुभ कामनाओं के साथ,

डॉ. विश्वमूर्ति शास्त्री,
सहित्यविभागाध्यक्ष,
श्री आर. के. संस्कृत विद्यापीठ, जम्मू तवी।

" श्रीमार्त्तण्ड पंचांग " की हीरक जयन्ती की सुखद सूचना पर कृपया हार्दिक बधाई स्वीकार करें।

" श्रीमार्त्तण्ड पंचांग " कभी भी अपनी उपयोगिता को किसी भी रूप में कम नहीं होने देता।

आपके शोधपूर्ण लेख, समस्याओं के समाधान, भविष्यवाणियां एवं अन्य सभी ज्ञानवर्धक विषयों के कारण पंचांग का प्रत्येक अंक संग्रहणीय होता है, इसकी उत्तरोत्तर इसी प्रकार की प्रगति के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं हैं।

पं. विष्णुकान्त शुक्ल,
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
जे. वी. जैन कॉलेज, सहारनपुर।

श्रीमार्त्तण्ड पंचांग आधुनिक पंचांगों में अपना विशिष्ट एवम् अद्वितीय स्थान रखता है। इसमें आधुनिक वैज्ञानिक पद्धति के आधार पर ज्योतिर्विज्ञानविषयक अनेक तथ्यों का समावेश रहता है, जो प्रत्येक ज्योतिषी के लिए उपादेय है। इस पंचांग की प्रामाणिकता का प्रमुख कारण यह है, कि इसे सिद्धान्तज्योतिष में लब्धप्रतिष्ठ विद्वानों द्वारा सम्पादित किया गया है। वास्तव में पंचांगप्रणयन के लिए सिद्धान्तज्योतिष अपरिहार्य है। जहां प्रो. प्रियव्रत शर्मा सिद्धान्तज्योतिष के क्षेत्र में अच्छा अधिकार रखते हैं, वहां डॉ. शक्तिधर शर्मा विविध सम्मानों के विषय में प्रमाण माने जाते हैं और श्री इन्दुशेखर शर्मा फलितज्योतिष के क्षेत्र में प्रतिष्ठित हैं। ऐसे विद्वानों की प्रतिभा जिस पंचांग के निर्माण में लगी हो, उसकी अद्वितीयता असन्दिग्ध ही है। इन विद्वानों की कृति इस पंचांग की

हीरकजयन्ती के प्रकाशन के अवसर पर मेरी शुभकामनाएं समर्पित हैं और आशा है, कि " श्रीमार्त्तण्ड पंचांग " रूपी मार्त्तण्ड निखिल ब्रह्माण्ड में अपने ज्ञानगौरव से गरिमामण्डित होगा।

आचार्य डॉ. वेदप्रकाश उपाध्याय,
प्रोफेसर संस्कृत विभाग,
पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ (U.T.)

स्व. पं. मुकुन्दवल्लभ जी द्वारा प्रवर्त्तित 'श्रीमार्त्तण्ड पंचांग' दृश्य गणना के पंचांगों में प्रसिद्ध है। आजभी उनके योग्य पुत्र श्री प्रियव्रत शर्मा, डॉ. शक्तिधर शर्मा, श्री इन्दुशेखर शर्मा इस पंचांग में अनेक उपयोगी साहित्य की अभिवृद्धि करते हुए अपने पिताश्री की स्मृति को अक्षुण्ण बनाये हुए हैं। आज पंचांग की हीरकजयंती के अवसर पर स्व. पं. मुकुन्दवल्लभ जी के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ और तीनों भाइयों को साधुवाद देता हूँ , कि इन्होंने अपने पिताश्री के कार्य को बढ़ाया और उनके नाम को गौरवान्वित किया है। अपने और हमारे परिवार के आत्मीय संबंधों को भी इन्होंने दृढ़ और मधुर बनाये रखा, इस बात का मुझे परमहर्ष है।

डॉ. आनन्दशंकर व्यास,
ज्योतिषाचार्य,
महाकाल उज्जैन (M.P.)

स्वनामधन्यदैवज्ञरत्न – श्रीमन्मुकुन्दवल्लभशर्मभिः प्रवर्तितं प्राच्यप्रतीच्योभय–विधविद्याविशारदैः श्रीमत्प्रियव्रत.–शक्तिधरेन्दुशेखरशर्मभिः सम्पादितं विविधोपयोगिसम्बद्ध–विषयैरलङ्कृतं सकलजनलब्धादरं यथाकालं शास्त्रसम्मतसिद्धान्तोपेत–क्षयमलमासादिविषयैः समुल्लसितं दृक्सिद्धान्ताश्रितं निरयणं "श्रीमार्त्तण्डपंचांगम्" यथोक्तमुद्देश्यं सम्यक् प्रपूरयतीति 'हीरकजयन्ती' महोत्सवावसरे निरन्तरोऽस्याभ्युदयः जगज्जननीजानकीभ्यः सादरमभ्यर्थ्यते।

डॉ. रामचन्द्र झा,
ज्योतिष–विभागाध्यक्षः,
कामेश्वरसिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालयः,
कामेश्वरनगरम् , दरभंगा (बिहार)

'श्रीमार्त्तण्डपंचांगम्' ज्योतिर्विज्जगति सुप्रतिष्ठम् नाम। श्रीप्रियव्रत–डॉ. शक्तिधर–इन्दुशेखरशर्मेति–भ्रातृत्रयेण ज्योतिश्शास्त्रमर्मविदा सम्पाद्यमानमेतत् पंचांगं शीर्षस्थं विषये मौलिकैः अनुसन्धानलेखैः नव–नवैः प्रतिवर्षं विदुषांमपि ज्ञाने वृद्धिमातनोति। ज्योतिरागमे शासनं भजमानानां भ्रातृणां त्रयस्यास्य विषयोपस्थाने प्रयुज्यमाने भाषा शैली च तथा प्राञ्जले,–याभ्यां सुतरां दुरूहा अपि ज्योतिश्शास्त्रीया विषयाः सुव्यक्तिमाप्ताः सामान्यस्यापि ज्यौतिषिकस्य बुद्धिं सहसा विशन्ति। ज्योतिषे युगप्रवर्त्तकमेतत् श्रीमार्त्तण्डपंचांगम्।

२०५६ तमे वैक्रमाब्दे आक्रान्त–पंचसप्ततिसमं हीरकवत् चाकचक्यमभितः किरत् हीरकजयन्त्यै समारोहाय प्रवर्त्तते पंचांगमेतत्। अस्यां मंगलवेलायां, मे हृदन्तस्तलोद्गताः कामनाः– 'सम्पादकवर्गोऽस्य शतोत्तरं वयः सुस्वस्थं लभताम्, येन निरन्तरं वहन्ती एतस्य लेखनी दिव्यज्ञानस्याऽस्य रहस्यमशेषं लोकान् वेदयेत् ; पंचांगं चैतत् मार्त्तण्डवज्–ज्योतिर्नभसि द्योततां कल्पम्।

डॉ. शिवलोचन झा, ज्योतिषाचार्यः
(सिद्धान्त–फलित),ज्योतिष–प्राध्यापकः, आदर्श संस्कृत–
महाविद्यालयः, डोहगी, ऊना (हि. प्र.)।

श्रीमार्त्तण्ड पंचांग में अब तक प्रकाशित महत्त्वपूर्ण लेखमाला

लेखक - कृष्णशर्मा, शास्त्री, वेदाचार्य, साहित्याचार्य,
{ग्राम-सुन्हाड़, पो. सौर (सोलन), हि.प्र.}

प्राचीनकाल में पंचांग का उद्देश्य ग्रहों के भोगांश,वक्र-मार्ग, राशि-नक्षत्र-नवांश प्रवेश, लोप-दर्शन, उदयास्त, लग्न, तिथ्यादि, ग्रहण, विवाहादि मुहूर्त्त एवम् धार्मिक व्रतपर्वों से जनता को अवगत कराना मात्र था, लेकिन अब इसके उद्देश्य की परिधि पहले से कहीं विस्तृत हो गई है। अब लोग इसे ज्योतिष की ऐसी वार्षिक पत्रिका के रूप में देखने लगे हैं, जिसमें गणित एवम् फलित ज्योतिष से सम्बद्ध रोचक एवम् ज्ञानवर्धक लेख भी समाविष्ट हों। उनकी इस इच्छा की पूर्ति के लिए **श्रीमार्त्तण्ड पंचांग** विगत लगभग ३४ वर्षों से प्रतिवर्ष ज्योतिष सम्बन्धी अनेक ज्ञातव्य, रुचिकर, प्रौढ़ एवम् सर्वसाधारणोपयोगी लेखमाला से अलंकृत होकर प्रकाश में आ रहा है। अपनी इस मौलिक शोधपूर्ण लेखमाला के लिए यह पंचांग भारतीय पंचांगजगत् में अपना एक विशिष्ट स्थान एवम् लोकप्रियता बनाए हुए है। जिज्ञासु पाठकों के प्रबल अनुरोध से प्रेरित होकर विविध पक्षों को उजागर करने वाली ज्योतिर्लेखमाला का प्रकाशन विद्वान् सम्पादकों द्वारा वि. सं. २०२४ से प्रारम्भ किया गया। इस वैदुष्यपूर्ण लेखमाला ने सैकड़ों ज्योतिषशास्त्रीय शंकाओं को समाहित कर पाठकों के स्वाध्याय पथ को प्रशस्त किया है। इस ३४ वर्षीय अवधि में प्रकाशित, इस लेखावली की सूचि नीचे दी जा रही है। यदि पाठकों से प्रेरणा मिली तो इसे पुस्तकरूप में प्रकाशित करने के लिए, इस पंचांग के सम्पादक प्रस्तुत हैं।

विक्रमी संवत् २०२४ से विक्रमी संवत् २०५८ तक - 'श्रीमार्त्तण्ड पंचांग' में प्रकाशित लेखों की सूचि

(जिस विक्रमी संवत् के पंचांग में लेख प्रकाशित हुआ है, उसका निर्देश दूसरे कॉलम में दिया गया है।)

क्रमांक	वि.संवत्	लेख/शीर्षक	लेखक
१	२०२४	भारतीय वर्षा विज्ञान पर वैज्ञानिक दृष्टिकोण।	डॉ. शक्तिधर शर्मा
२	२०२६	धूपघड़ी कैसे बनाएं ? (पांच प्रकार की विभिन्न धूपघड़ियों के निर्माण की सचित्र विधि)।	श्री प्रियव्रत शर्मा
३	२०२७	अक्षांश-रेखांश ज्ञापक यन्त्र बनाने की विधि ।	श्री प्रियव्रत शर्मा
४	२०२७	चन्द्रधरा पर मानव और हमारी आस्था।	श्री प्रियव्रत शर्मा
५	२०२८	लग्न यन्त्र (बिना गणित के लग्न बतलाने वाला यन्त्र)।	श्री प्रियव्रत शर्मा
६	२०२८	१४ अप्रैल को वैशाखी क्यों ?	श्री प्रियव्रत शर्मा
७	२०२८	सन् १९७४ से २००१ ई. तक की मेष संक्रान्तियों की तारीखें तथा वार।	श्री प्रियव्रत शर्मा
८	२०२९	इष्टकालिक ग्रहस्पष्ट करने की अद्भुत सारणी।	श्री प्रियव्रत शर्मा
९	२०२९	तिथियों के परमाल्पाधिक मान।	डॉ. शक्तिधर शर्मा
१०	२०२९	नक्षत्रघड़ी (रात्रि में नक्षत्र- वेधद्वारा काल बतलाने वाला यन्त्र)।	श्री प्रियव्रत शर्मा
११	२०३०	अन्तर्न्यास पद्धति (इष्टकालिक सूक्ष्म ग्रहस्पष्ट करने की विधि)।	श्री प्रियव्रत शर्मा
१२	२०३०	ग्रहरत्न एवम् वैज्ञानिक विचारधारा।	डॉ. शक्तिधर शर्मा
१३	२०३१	वेधयन्त्र निर्माण (वेधयन्त्र द्वारा ग्रहों के भोगांशादि का ज्ञान)।	श्री प्रियव्रत शर्मा
१४	२०३१	दैनिक लग्नसारणी में वार्षिक संस्कार।	श्री प्रियव्रत शर्मा
१५	२०३१	**'मूक'** प्रश्नसार (अंकविद्या द्वारा मूक प्रश्नज्ञान)।	श्री प्रियव्रत शर्मा
१६	२०३२	फलितज्योतिष की सत्यता में कुछ प्रमाण।	डॉ. शक्तिधर शर्मा
१७	२०३२	उत्तरभारत के सभी लग्नों की दैनिक लग्नसारणियां।	श्री प्रियव्रत शर्मा
१८	२०३३	आकाश में मंगल आदि तारा ग्रहों को पहचानिए ।	श्री प्रियव्रत शर्मा

क्रमांक	वि.संवत्	लेख/शीर्षक	लेखक
१९	२०३३	कुम्भपर्व के विषय में विरोधी शास्त्रवाक्यों का समन्वय।	डॉ. शक्तिधर शर्मा
२०	२०३४	प्लूटो नहीं, वेंकटेश कहें।	डॉ. शक्तिधर शर्मा
२१	२०३४	यह व्यक्ति कितने वर्ष जीयेगा (वराहमिहिरोक्त आयु-साधन-पद्धति)।	श्री प्रियव्रत शर्मा
२२	२०३५	जैमिनि-मतानुसार आयु-स्पष्ट करने की सरल विधि।	श्री प्रियव्रत शर्मा
२३	२०३५	सन् १९०० से २०१९ ई. तक का सूक्ष्म सूर्य स्पष्ट।	श्री प्रियव्रत शर्मा
२४	३०३५	सन् १९५० से १९७६ ई. तक के साप्ताहिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह।	श्री प्रियव्रत शर्मा
२५	२०३६	मानवजाति के स्वास्थ्य पर, ग्रहस्थिति का प्रभाव।	डॉ. शक्तिधर शर्मा
२६	२०३६	देसी तारीख (प्रविष्टा) के दिन-अंग्रेजी तारीख कैसे मालूम करें (प्रविष्टा की तारीख बतलाने वाली-सारणियां)।	श्री प्रियव्रत शर्मा
२७	२०३६	दशमलग्न स्पष्ट करने की सरलतम विधि।	श्री प्रियव्रत शर्मा
२८	२०३७	तिथि से अंग्रेजी तारीख का ज्ञान कराने वाली सारणियां ।	श्री प्रियव्रत शर्मा
२९	२०३७	सरकारी नौकरी निर्विघ्न और प्रगतिकारक कैसे हो ?	श्री प्रियव्रत शर्मा
३०	२०३७	अग्निकाण्ड से बचिए।	श्री प्रियव्रत शर्मा
३१	२०३७	भविष्यवाणी के लिए नई आविष्कृत विधि - **"जैविक-लय-वक्रविधि।"**	डॉ. शक्तिधर शर्मा
३२	२०३८	जैविक-लय-वक्र पद्धति द्वारा भविष्यज्ञान (सारणियां)।	श्री प्रियव्रत शर्मा
३३	२०३८	यात्रा में सुरक्षा देने वाला मुहूर्त्त।	श्री प्रियव्रत शर्मा
३४	२०३९	क्षयमास से उत्पन्न पर्वों में भारी मतभेद और उसका विश्लेषण।	श्री प्रियव्रत शर्मा
३५	२०४०	क्षयमास में मास युगलीकरण-एक गणितीय विसंगति है।	डॉ. शक्तिधर शर्मा
३६	२०४०	प्रणयविवाह का मुहूर्त्त (बिना मुहूर्त्त के प्रणयविवाह)।	श्री प्रियव्रत शर्मा
३७	२०४०	सरल मुहूर्त्त।	श्री प्रियव्रत शर्मा

क्रमांक	वि.संवत्	लेख/शीर्षक	लेखक
३८	२०४०	३८०० वर्षों का कैलेण्डर।	श्री प्रियव्रत शर्मा
३९	२०४०	ये हजारों-लाखों वर्षों के कैलेण्डर।	श्री प्रियव्रत शर्मा
४०	२०४१	केरल मत से प्रश्नपिण्ड द्वारा शुभाशुभ फल।	- - - -
४१	२०४२	समस्या और समाधान-स्तम्भ का शुभारम्भ।	श्री प्रियव्रत शर्मा
४२	२०४२	भारतीय संस्कृति में शकुन।	डॉ. शक्तिधर शर्मा
४३	२०४३	भगवान् श्रीपरशुराम जी की कुण्डली का गणितीय विश्लेषण्ज्ञं	श्री प्रियव्रत शर्मा
४४	२०४३	राजस्थान के नगरों के अक्षांश-रेखांश, लग्नसारणियां व सूर्योदयास्त।	श्री प्रियव्रत शर्मा
४५	२०४३	हैलि-धुम्रकेतु को आकाश में कब, कहां और कैसे देखें ?	श्री प्रियव्रत शर्मा
४६	२०४४	जन्मपत्र आदि के ग्रहभोगांश, लग्न, दशा, अन्तर्दशा आदि की गणित में कितनी सूक्ष्मता युक्तियुक्त है।	श्री प्रियव्रत शर्मा
४७	२०४४	उत्तरभारत के सभी नगरों के लिए अद्भुत दैनिक लग्न-सारणी।	श्री प्रियव्रत शर्मा
४८	२०४४	चन्द्रमा पर मनुष्य के अवतरण से विज्ञान क्षेत्र में नई धारणाएं।	डॉ. शक्तिधर शर्मा
४९	२०४४	दिल्ली-हरियाणा और पंजाव के नगर-उपनगरों के अक्षांश-रेखांश व लग्न सारणियां।	श्री प्रियव्रत शर्मा
५०	२०४५	ताजिक हिल्लाज़ का वर्षफल प्रकरण (वर्षकुण्डली में- ग्रह-स्थिति का शुभाशुभफल।	श्री प्रियव्रत शर्मा/ श्री इन्दुशेखरशर्मा
५१	२०४५	धनु तथा मकर की आकाशीय स्थिति के बारे में भारतीय-ज्योतिषियों की महाभ्रान्ति (एक-शोधपूर्ण चिन्तन)।	श्री प्रियव्रत शर्मा
५२	२०४५	हिमाचलप्रदेश के नगर-उपनगरों के अक्षांश-रेखांश, सूर्योदयास्त और लग्नसारणियां।	श्री प्रियव्रत शर्मा
५३	२०४६	भगवान् श्रीरामचन्द्र जी की जन्मकुण्डली का मूलस्वरूप और उसका विश्लेषण।	श्री प्रियव्रत शर्मा

क्रमांक	वि.संवत्	लेख/शीर्षक	लेखक
५४	२०४६	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत के निर्णय में मत-मतान्तरों का विश्लेषण।	श्री प्रियव्रत शर्मा
५५	२०४६	जम्मू-काश्मीर के नगर-उपनगरों के अक्षांश-रेखांश, सूर्योदयास्त एवम् लग्नसारणियां।	श्री प्रियव्रत शर्मा
५६	२०४६	ज्योतिषशास्त्र एवम् भूकम्प।	डॉ. शक्तिधर शर्मा
५७	२०४६	जैन ज्योतिषविज्ञान की विलक्षण समस्याएं।	डॉ. शक्तिधर शर्मा
५८	२०४६	रत्नों द्वारा रोगोपचार ।	डॉ. शक्तिधर शर्मा
५९	२०४६	प्लूटो की सत्ता के विषय में भविष्यवाणी का श्रेय सर्वप्रथम **'श्री वेंकटेश केतकर'** को।	डॉ. शक्तिधर शर्मा
६०	२०४६	क्रान्ति एवम् शर की फलादेश में उपयोगिता।	डॉ. शक्तिधर शर्मा
६१	२०४६	ज्योतिष के सिद्धान्तों की सेना के लिए उपयोगिता।	डॉ. शक्तिधर शर्मा
६२	२०४७	पादवेध द्वारा नाड़ीदोष के पीरहार में परम्परागत भ्रान्ति।	श्री प्रियव्रत शर्मा
६३	२०४७	विदेशों में हिन्दु व्रतपर्वों की तारीखों का निर्णय।	श्री प्रियव्रत शर्मा
६४	२०४७	बृहस्पति एवम् उसका उपग्रह परिवार।	डॉ. शक्तिधर शर्मा
६५	२०४७	यवनाचार्य हिल्लाजकृत जातक का भावफल प्रकरण (जन्मकुण्डली में ग्रहस्थिति का शुभाशुभफल)।	डॉ. शक्तिधर शर्मा
६६	२०४७	उत्तरप्रदेश के ३६० नगर-उपनगरों के अक्षोश-रेखांश, सूर्योदयास्त व दैनिकलग्नों के समाप्तिकाल।	श्री प्रियव्रत शर्मा
६७	२०४७	आकाश परिचय।	डॉ. शक्तिधर शर्मा
६८	२०४८	अशुद्ध वर्षमान के प्रयोग से भारतीय राशिचक्र का विचलन।	श्री प्रियव्रत शर्मा
६९	२०४८	मासप्रवेश का यथार्थकाल।	श्री प्रियव्रत शर्मा
७०	२०४८	ताराओं से कालज्ञान।	डॉ. शक्तिधर शर्मा
७१	२०४८	मणित्थ ताजिक।	डॉ. शक्तिधर शर्मा
७२	२०४८	प्राग्वैदिक काल का नक्षत्रचक्र।	डॉ. शक्तिधर शर्मा

क्रमांक	वि.संवत्	लेख/शीर्षक	लेखक
७३	२०४८	करणों का उद्भव।	डॉ. शक्तिधर शर्मा
७४	२०४८	मूकप्रश्न का अद्भुत प्रकार।	- - - -
७५	२०४९	मध्यप्रदेश के २६० नगर-उपनगरों के अक्षांश-रेखांश, सूर्योदयास्त एवम् लग्नसारणियां।	श्री प्रियव्रत शर्मा
७६	२०४९	कर्क-मकर की संक्रान्तियों के पुण्यकालों में भिन्नता क्यों ?	डॉ. शक्तिधर शर्मा
७७	२०४९	मासप्रवेश-काल साधन विधि।	श्री प्रियव्रत शर्मा
७८	२०४९	भाव के किस बिन्दु पर बैठा ग्रह-कितना फल देता है?	श्री प्रियव्रत शर्मा
७९	२०४९	कुम्भपर्वो का उद्गम-विकास।	डॉ. शक्तिधर शर्मा
८०	२०५०	यहभाव का मध्य है या प्रारम्भ ? (पाश्चात्य और भारतीय भावों के प्रारम्भ-बिन्दुओं में मतभेद) ।	श्री प्रियव्रत शर्मा
८१	२०५०	स्पष्टमान से मासप्रवेश-साधन।	श्री प्रियव्रत शर्मा
८२	२०५०	असमान- मानात्मक भावों के फल की मात्रा (भाव के किस बिन्दु पर स्थित ग्रह भाव का कितना फल देगा)।	श्री प्रियव्रत शर्मा
८३	२०५०	तारों की सहायता से कालज्ञान ।	डॉ. शक्तिधर शर्मा
८४	२०५०	अपशकुन एवम् उत्पातों का फल तथा उनकी शान्ति के उपाय।	श्री इन्दुशेखर शर्मा
८५	२०५०	नौ ग्रहों के रत्नों की परीक्षा एवम् उनके प्रयोग की विधि।	श्री इन्दुशेखर शर्मा
८६	२०५१	विदेश में उत्पन्न जातक की जन्मपत्री कैसे बनाएं- (विदेशी जन्मपत्र बनाने की प्रक्रिया का सोदाहरण विवेचन)।	श्री प्रियव्रत शर्मा
८७	२०५१	बिहार - नेपाल के नगर - उपनगरों के अक्षांश-रेखांश एवम् लग्न।	श्री प्रियव्रत शर्मा
८८	२०५१	पितृभाव नवम या दशम।	श्री प्रियव्रत शर्मा
८९	२०५२	वर्षप्रवेश लग्न किस स्थान का होना चाहिए (जातक वर्षप्रवेश के समय जहां हो, वहां का लग्न लेना चाहिए)।	श्री प्रियव्रत शर्मा
९०	२०५२	व्रत-पर्वशास्त्र का आवश्यक ज्ञान।	श्री प्रियव्रत शर्मा

क्रमांक	वि.संवत्	लेख/शीर्षक	लेखक
९१	२०५२	बंगाल के नगर-उपनगरों के अक्षांश-रेखांश, सूर्योदयास्त एवम् लग्नकाल।	श्री प्रियव्रत शर्मा
९२	२०५२	विषकन्या योग के घटक-तत्त्व।	श्री प्रियव्रत शर्मा
९३	२०५२	रत्नों द्वारा ग्रहशान्ति एवम् औषधस्नान।	श्री इन्दुशेखर शर्मा
९४	२०५२	प्राचीन पद्धति से पंचांगपरिवर्तन।	श्री प्रियव्रत शर्मा
९५	२०५२	ग्रेगरी तारीख का वार जानने की सरलतम विधि।	डॉ. शक्तिधर शर्मा
९६	२०५३	वास्तुशास्त्रानुसार किस नगर में, कहां रहें?	श्री प्रियव्रत शर्मा
९७	२०५३	'नीचभंगयोग' - एक निर्मूल कल्पना।	श्री प्रियव्रत शर्मा
९८	२०५३	किस ग्रह का रत्न धारण करें।	श्री प्रियव्रत शर्मा
९९	२०५३	होरा का निर्णय (लंका के सूर्योदय से नहीं, स्थानीय सूर्योदय से)।	श्री प्रियव्रत शर्मा
१००	२०५३	तेरहवीं राशि क्यों नहीं ?	श्री प्रियव्रत शर्मा
१०१	२०५३	जन्माष्टमी व्रत किस दिन करें ?	श्री प्रियव्रत शर्मा
१०२	२०५४	उत्तरभारत के प्रमुख-प्रमुख ४०० नगरों के तैयार सूर्योदयास्तकाल (भा.स्टैं.टा.)।	श्री प्रियव्रत शर्मा
१०३	२०५४	जीवन के अच्छे-बुरे क्षण कब और कितने? (गोचर-पद्धति द्वारा शुभाशुभ घटनाओं को जानने की प्रक्रिया का विस्तृत विवेचन)।	श्री प्रियव्रत शर्मा
१०४	२०५४	विवाह के दिन का चुनाव (त्रिबल-शुद्धि निर्णय की यथार्थ पद्धति)।	श्री प्रियव्रत शर्मा
१०५	२०५४	भद्रादोष का परिहार (भद्रा का कुफल किन स्थितियों में नहीं होता) ।	श्री प्रियव्रत शर्मा
१०६	२०५४	२०० वर्षों का कैलेण्डर-आपकी उंगलियों पर।	श्री प्रियव्रत शर्मा
१०७	२०५४	सन् १९९१ से २०५० ई. तक के गुड फ्राई डे और अन्य सभी क्रिश्चियन त्योहार।	श्री प्रियव्रत शर्मा
१०८	२०५४	मुहूर्त्त सम्राट् - " **अभिजित्** " (किसी भी नगर में अभिजित् मुहूर्त्त का प्राराम्भ-समाप्तिकाल तुरन्त जानें)।	श्री प्रियव्रत शर्मा
१०९	२०५४	मध्याह्न, अपराह्ण, प्रदोष और अरुणोदय का काल- { किसी भी स्थान पर मध्याह्नादि का काल (प्रारम्भ-समाप्तिकाल) सरलता से जानिए }।	श्री प्रियव्रत शर्मा
११०	२०५४	क्या कभी राशियों के भी विषम विभाग थे ?	डॉ. शक्तिधर शर्मा
१११	२०५५	ग्रहण में क्या-कब-कैसे करें और क्या न करें ?	श्री प्रियव्रत शर्मा
११२	२०५५	गुरु-शुक्रोदयास्त की तिथियों में स्थानभेद से अन्तर का खगोलीय विश्लेषण।	श्री प्रियव्रत शर्मा
११३	२०५५	दशा के प्रारम्भ का सूक्ष्मकाल कैसे जानें ?	श्री प्रियव्रत शर्मा
११४	२०५५	क्या ग्रहों का हम पर-वस्तुतः प्रभाव पड़ता है ?	डॉ. शक्तिधर शर्मा
११५	२०५५	ग्रहों के उदयास्त और उनकी दिशाएं।	डॉ. शक्तिधर शर्मा
११६	२०५५	सूक्ष्म सूर्योदयास्त साधन की गणित प्रक्रियाएं।	श्री प्रियव्रत शर्मा
११७	२०५६	यात्रा का मुहूर्त्त स्वयं निकालिए।	श्री प्रियव्रत शर्मा
११८	२०५६	शोककाल की अवधि कितनी हो ? (किस सम्बन्धी की मृत्यु पर कितने दिन तक शुभकार्य वर्जित है)।	श्री प्रियव्रत शर्मा
११९	२०५६	द्वारचक्र (गृह के प्रमुख-द्वार की चौखट कब लगाएं)।	श्री प्रियव्रत शर्मा
१२०	२०५६	भूशयनचक्र और वास्तुचक्र।	श्री प्रियव्रत शर्मा
१२१	२०५६	सायन-निरयण पद्धतियों से फलादेश में अन्तर ।	श्री प्रियव्रत शर्मा
१२२	२०५६	भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम अपनाइए, घड़ी-पलों को तिलांजलि दीजिए।	श्री प्रियव्रत शर्मा
१२३	२०५७	लग्न का प्रारम्भकाल कैसे जानें ?	श्री प्रियव्रत शर्मा
१२४	२०५७	भारतीय वास्तुशास्त्र के सिद्धान्त (३५ पृष्ठों का मौलिक विशिष्ट लेख)।	श्री प्रियव्रत शर्मा
१२५	२०५७	सबल नहीं, निर्बल क्रूर ग्रह ही दोषकारक है।	श्री प्रियव्रत शर्मा

क्रमांक	वि.संवत्	लेख/शीर्षक	लेखक
१२६	२०५७	नाड़ीदोष के अनेक परिहार वाक्यों का विश्लेषण।	श्री प्रियव्रत शर्मा
१२७	२०५७	राहु-केतु भी मार्गी होते हैं।	डॉ. शक्तिधर शर्मा
१२८	२०५७	नाक्षत्रहोरेश की परिकल्पना।	डॉ. शक्तिधर शर्मा
१२९	२०५८	ग्रहचार (ग्रहगति सिद्धान्तों का सरलशैली में विस्तृत प्रतिपादन)-(२६ पृष्ठों का विशिष्ट लेख)।	श्री प्रियव्रत शर्मा
१३०	२०५८	कम्प्यूटर से बनाई गई जन्मपत्रियों में अन्तर क्यों ?	श्री प्रियव्रत शर्मा
१३१	२०५८	२१वीं शताब्दी और तीसरी सहस्राब्दी का प्रारम्भ कब ?	श्री प्रियव्रत शर्मा
१३२	२०५८	ग्रहों का चेतन और अचेतन जगत् पर प्रभाव।	डॉ. शक्तिधर शर्मा
१३३	२०५८	विवाहकाल निर्णय।	श्री प्रियव्रत शर्मा
१३४	२०५८	कुजदोष विचार (कुछ प्रश्न और उनके उत्तर) ।	श्री प्रियव्रत शर्मा
१३५	२०५८	गोचरफल का सूक्ष्म विचार।	श्री प्रियव्रत शर्मा
१३६	२०५८	साभिजित् नक्षत्रगणना में उ.षा., अभिजित् और श्रवण के चरणों का मान।	श्री प्रियव्रत शर्मा
१३७	२०५८	नक्षत्र-चरण, नवांश कोष्ठक।	श्री प्रियव्रत शर्मा
१३८	२०५८	अब पंचांग वस्तुतः पंचांग नहीं ।	डॉ. शक्तिधर शर्मा

श्रीमार्त्तण्ड पञ्चांग के तीन महत्त्वपूर्ण स्थायी स्तम्भ

ऊपरलिखित लेखमाला के अतिरिक्त **श्रीमार्त्तण्ड पंचांग** में **"संदिग्ध व्रत- पर्व- व्यवस्था"** तथा **"समस्याएं और समासधान"** एवम् **"यन्त्र-मन्त्र-तन्त्रों का चमत्कार"** नाम के तीन स्थायी स्तम्भ भी वर्षों से प्रकाशित होते चले आ रहे हैं।

" संदिग्ध व्रत- पर्व- व्यवस्था " स्तम्भ में श्रीरामनवमी, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी, एकादशी, प्रदोष- व्रतादि सभी व्रत-पर्वों के विवादास्पद सिद्धान्तों का सरल शैली में विस्तार से विवेचन प्रकाशित हो चुका है, जिसे पढ़कर किसी भी **' हिन्दु व्रत-पर्व '** की तिथि के निर्णय में उपस्थित उलझन का समाधान करने में किसी भी दैवज्ञ या अन्य सामान्यजन को कोई कठिनाई न होगी। इस स्तम्भ में आज तक प्रकाशित कुल सामग्री को, जो वर्ष के प्रत्येक व्रत-पर्व से सम्बद्ध है, पुस्तक के रूप में शीघ्र ही प्रकाशित करने की भी सम्पादकवर्ग की योजना है।

इस स्तम्भ के लेखक श्रीप्रियव्रत शर्मा कालमाधव, वीरमित्रोदय, पुरुषार्थचिन्तामणि आदि व्रतपर्व साहित्य पर प्रशस्य आधिपत्य रखते हैं।

श्रीमार्त्तण्ड पंचांग का दूसरा स्थायी स्तम्भ **" समस्या और समाधान "** अत्यन्त लोकप्रिय है। इसके लेखक भी **श्रीप्रियव्रत शर्मा** हैं, जिन्होनें इस स्तम्भ के माध्यम से आज तक सिद्धान्त (Astronomy), फलित (Astrology), मुहूर्त्तशास्त्र एवम् व्रतपर्वशास्त्र से सम्बद्ध दैवज्ञों को उलझानें वाली २५० से भी अधिक समस्याओं के समाधान सरल, सुबोध भाषा एवम् शैली में दिए हैं। इन समाधानों को पुस्तकाकार में मुद्रित करने के लिए-अनेक पाठकों के आग्रहपूर्ण पत्र सम्पादकमण्डल को मिल रहे हैं। **उनके इस आग्रह की पूर्ति, मैं भी समझता हूँ, अवश्य होनी चाहिए।**

इसके अतिरिक्त **श्रीमार्त्तण्ड पंचांग** में तीसरा स्थायी स्तम्भ **"यन्त्र-मन्त्र-तन्त्रों का चमत्कार "** अत्यन्त लोकोपकारी सिद्ध हुआ है। लगभग ४० वर्षों से यह स्तम्भ तान्त्रिक विद्वान् दैवज्ञों एवम् श्रद्धालु जनता के आग्रह से, इस पंचांग में दिया जा रहा है। इस स्तम्भ के अन्तर्गत अनुभूत **'यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र'** प्रतिवर्ष दिए जाते हैं। इस स्तम्भ के लेखक **श्री इन्दुशेखर शर्मा** हैं। ये सभी यन्त्र-मन्त्र आदि अप्राप्य हस्तलिखित ग्रन्थों से उद्धृत किए जाते हैं। इस स्तम्भ के मर्मज्ञ लेखक एवम् फलितशास्त्र के प्रसिद्ध विद्वान् का अनुभव है कि यन्त्र-मन्त्र-तन्त्रों की सहायता से कोई भी दैवज्ञ, अपने सिद्धिवल पर अवश्य जगत् में यशस्वी एवम् कीर्तिमान् हो सकता है, **" सिद्धिर्भूषयते विद्याम्। "**
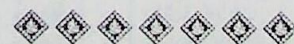
प्रमुख–प्रमुख व्रतपर्व (1 जनवरी सन् 2002 ई. से 1 अप्रैल सन् 2003 ई. तक)

व्रतपर्व	तारीख	वार
इंग्लिश नववर्ष (2002 ई.) प्रारम्भ	1 जन.	मं.
लोहड़ी (पं.)	13 जन.	र.
मकर–संक्रान्ति	14 जन.	चं.
माघ स्नान प्रारम्भ	28 जन.	चं.
संकष्ट चतुर्थी	31 जन.	गु.
मौनी अमावस	12 फर.	मं.
गौरी तृतीया (गोंत्तरी)	15 फर.	शु.
तिल–वरद–कुन्द–चतुर्थी	16 फर.	श.
श्रीपंचमी, वसन्तपंचमी	17 फर.	र.
रथ–सप्तमी, आरोग्य–सप्तमी	19 फर.	मं.
भीष्माष्टमी	20 फर.	बु.
भीष्म द्वादशी	24 फर.	र.
माघ स्नान समाप्त, माघी पूर्णिमा	27 फर.	बु.
श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	12 मार्च	मं.
होलाष्टक प्रारम्भ	22 मार्च	शु.
गोविन्द द्वादशी	26 मार्च	मं.
होलिका दहन, होलाष्टक समाप्त	28 मार्च	गु.
वसन्तोत्सव	29 मार्च	शु
वारुणी पर्व	9 अप्रै.	मं.
चान्द्र–संवत् 2058 वि. पूर्ण	12 अप्रै.	शु.
वि. संवत 2059 प्रारम्भ,वैशाखी	13 अप्रै.	श.
नवरात्र प्रारम्भ	13 अप्रै.	श
गौरी तृतीया(गणगौर)	15 अप्रै.	चं.
श्री (लक्ष्मी) पंचमी	17 अप्रै.	बु.
नाग पंचमी	17 अप्रै.	बु.
स्कन्द षष्ठी	18 अप्रै.	गु.
श्रीदुर्गाष्टमी	20 अप्रै.	श.
श्रीराम नवमी	21 अप्रै.	र.
नवरात्र समाप्त	21 अप्रै.	र.
अनंग त्रयोदशी	25 अप्रै.	गु.
वैशाख स्नान प्रारम्भ	27 अप्रै.	श.
श्रीपरशुराम जयन्ती	14 मई	मं.
अक्षय तृतीया	15 मई	बु.
श्रीगंगा जन्म	19 मई	र.
श्रीजानकी जयन्ती	21 मई	मं.
श्रीबुद्ध पूर्णिमा, वैशाखी पूर्णिमा	26 मई	र.

व्रतपर्व	तारीख	वार
वैशाख स्नान समाप्त	26 मई	र.
भद्रकाली एकादशी (पं.)	6 जून	गु.
वट सावित्री व्रत (अमापक्ष)	10 जून	चं.
खण्डग्रास सूर्य ग्रहण (पूर्वी भारत में दृश्य)	10 जून	चं.
भावुका अमावस	10 जून	चं.
रम्भा तृतीया	13 जून	गु.
श्रीगंगा दशहरा	20 जून	गु.
निर्जला एकादशी	21 जून	शु.
वट सावित्री व्रत (पूर्णिमा पक्ष)	24 जून	चं.
रथयात्रा (पुरी)	12 जुला.	शु.
कुमार षष्ठी	15 जुला.	चं.
विवस्वत् सप्तमी	16 जुला.	मं.
शिवशयनोत्सव	23 जुला.	मं.
चातुर्मास्य व्रत–नियमादि प्रारम्भ	24 जुला.	बु.
गुरु पूर्णिमा (व्यास पूजा)	24 जुला.	बु.
हरियाली अमावस	8 अग.	गु.
मधुश्रवा तृतीया, संधारा तीज	11 अग.	र.
नागपंचमी	13 अग.	मं.
श्रीदुर्गाष्टमी	15 अग.	गु.
ऋग् वेदियों का उपाकर्म	21 अग.	बु.
शुक्ल–कृष्ण–यजु उपाकर्म	22 अग.	गु.
रक्षाबन्धन	22 अग.	गु.
बहुला चतुर्थी, संकष्ट चतुर्थी	26 अग.	चं.
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत (समार्त–गृहस्थियों के लिए)	30 अग.	शु.
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत (वैष्णव–सन्यासियों के लिए)	31 अग.	श.
दूर्वाष्टमी	31 अग.	श.
श्रीगुग्गा नवमी	1 सितं.	र.
कुशोत्पाटिनी अमावस	6 सितं.	शु.
पिठोरी अमावस	6 सितं.	शु.
हरितालिका , गौरी तृतीया	9 सितं.	चं.
कलंक चतुर्थी	10 सितं.	मं.
हरितालिका चतुर्थी	10 सितं.	मं.
सिद्धिविनायक व्रत	10 सितं.	मं.

व्रतपर्व	तारीख	वार
ऋषि पंचमी	11 सितं.	बु.
सूर्य षष्ठी	12 सितं.	गु.
श्रीमहालक्ष्मी व्रत प्रारम्भ	13 सितं.	शु.
श्रीराधाष्टमी	14 सितं.	श.
श्रीचन्दनवमी	15 सितं.	र.
श्रवण द्वादशी	17 सितं.	मं.
श्रीवामन जयन्ती	18 सितं.	बु.
अनन्त चतुर्दशी	20 सितं.	शु.
प्रोष्ठपदी श्राद्ध, पूर्णिमा श्राद्ध	21 सितं.	श.
श्राद्ध–प्रारम्भ	22 सितं.	र.
श्रीमहालक्ष्मी व्रत समाप्त	29 सितं.	र.
श्राद्ध समाप्त	6 अक्तू.	र.
शारद् नवरात्र प्रारम्भ	7 अक्तू.	चं.
उपांगललिता व्रत	10 अक्तू.	गु.
सरस्वती आवाहन	11 अक्तू.	शु.
सरस्वती पूजन	12 अक्तू.	श.
श्रीदुर्गाष्टमी, महाष्टमी	13 अक्तू.	र.
सरस्वती विसर्जन	14 अक्तू.	चं.
महानवमी, नवरात्र समाप्त	14 अक्तू.	चं.
विजयादशमी (दशहरा)	15 अक्तू.	मं.
भरत मिलाप	16 अक्तू.	बु.
शरत्पूर्णिमा, कोजागर व्रत	20 अक्तू.	र.
कार्त्तिक स्नान प्रारम्भ	21 अक्तू.	चं.
महर्षि वाल्मीकि जयन्ती	21 अक्तू.	चं.
करक चतुर्थी (करवा चौथ)	25 अक्तू.	शु.
अहोई अष्टमी (पं.)	29 अक्तू.	मं.
गोवत्स द्वादशी	1 नवं.	शु.
धन त्रयोदशी	2 नवं.	श.
नरक चतुर्दशी, श्रीहनुमान् जयन्ती	3 नवं.	र.
दीपावली	4 नवं.	चं.
अन्नकूट, बलिपूजा	5 नवं.	मं.
गोवर्धन पूजा	5 नवं.	मं.
विश्कर्मा पूजा	5 नवं.	मं.
यमद्वितीया (भाई दूज)	6 नवं.	बु.
सूर्यषष्ठी	10 नवं.	र.
गोपाष्टमी	12 नवं.	मं.

व्रतपर्व	तारीख	वार
अक्षय नवमी, कुष्माण्ड नवमी	13 नवं.	बु.
भीष्म पंचक प्रारम्भ	15 नवं.	शु.
तुलसी विवाह	16 नवं.	श.
वैकुण्ठ चतुर्दशी	18 नवं.	चं.
भीष्म पंचक समाप्त,	19 नवं.	मं.
कार्तिक स्नान समाप्त	19 नवं.	मं.
कार्तिक पूर्णिमा, श्री गुरुनानक जयन्ती	19 नवं.	मं.
चातुर्मास्य व्रत–नियमादि समाप्त	19 नवं.	मं.
श्रीकालाष्टमी (भैरवाष्टमी)	27 नवं.	बु.
स्कन्द–चम्पा–गुह–षष्ठी	9 दिसं.	चं.
मित्र सप्तमी	10 दिसं.	मं.
श्रीगीता जयन्ती	15 दिसं.	र.
श्रीदत्त जयन्ती	19 दिसं.	गु.
(सन् 2003 ई.)		
इंग्लिश नववर्ष (2003 ई.) प्रारम्भ	1 जन.	बु.
लोहड़ी (पं.)	13 जन.	चं.
मकर–संक्रान्ति	14 जन.	मं.
माघ स्नान प्रारम्भ	18 जन.	श.
संकष्ट चतुर्थी	21 जन.	मं.
मौनी अमावस	1 फर.	श.
गौरी तृतीया (गोंत्तरी)	4 फर.	मं.
तिल–वरद–कुन्द–चतुर्थी	5 फर.	बु.
श्रीपंचमी, वसन्तपंचमी	6 फर.	गु.
रथ–सप्तमी, आरोग्य–सप्तमी	8 फर.	श.
भीष्माष्टमी	9 फर.	र.
भीष्म द्वादशी	13 फर.	गु.
माघ स्नान समाप्त, माघी पूर्णिमा	16 फर.	र.
श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	1 मार्च	श.
होलाष्टक प्रारम्भ	11 मार्च	मं.
गोविन्द द्वादशी	15 मार्च	श.
होलिका दहन	17 मार्च	चं.
होली, होलाष्टक समाप्त	18 मार्च	मं.
वसन्तोत्सव	19 मार्च	बु.
वारुणीपर्व	30 मार्च	र.
चान्द्र–संवत् 2059 वि. पूर्ण	1 अप्रै.	मं.

वर्गीकृत व्रत–पर्व (1 जनवरी, सन् 2002 ई. से 1 अप्रैल सन् 2003 ई. तक)

एकादशी व्रत

(सन् 2002 ई.)	
पौष कृष्ण	9 जन.
पौष शुक्ल	25 जन.
माघ कृष्ण (स्मा.)	7 फर.
माघ शुक्ल	23 फर.
फाल्गुन कृष्ण	9 मार्च
फाल्गुन शुक्ल	25 मार्च
चैत्र कृष्ण	8 अप्रै.
चैत्र शुक्ल	23 अप्रै.
वैशाख कृष्ण	8 मई
वैशाख शुक्ल (स्मा.)	22 मई
ज्येष्ठ कृष्ण	6 जून
ज्येष्ठ शुक्ल	21 जून
आषाढ कृष्ण	6 जुला.
आषाढ शुक्ल	20 जुला.
श्रावण कृष्ण	5 अग.
श्रावण शुक्ल	18 अग.
भाद्रपद कृष्ण	3 सितं.
भाद्रपद शुक्ल	17 सितं.
आश्विन कृष्ण (स्मा.)	2 अक्तू.
आश्विन शुक्ल	16 अक्तू.
कार्तिक कृष्ण	1 नवं.
कार्तिक शुक्ल	15 नवं.
मार्गशीर्ष कृष्ण	30 नवं.
मार्गशीर्ष शुक्ल	15 दिसं.
पौष कृष्ण	30 दिसं.
(सन् 2003 ई.)	
पौष शुक्ल	14 जन.
माघ कृष्ण	28 जन.
माघ शुक्ल	13 फर.
फाल्गुन कृष्ण (स्मा.)	26 फर.
फाल्गुन शुक्ल	14 मार्च
चैत्र कृष्ण	28 मार्च

(स्मा. = स्मार्तो का व्रत)
वैष्णवों का व्रत स्मार्तों के व्रत के दिन से दूसरे दिन होता है। जिसके आगे "स्मा." नहीं लिखा है वह व्रत तिथि स्मार्त और वैष्णव दोनों के लिए है।

पक्षों का प्रारम्भ

(सन् 2002 ई.)	
पौष शुक्ल	14 जन.
माघ कृष्ण	29 जन.
माघ शुक्ल	13 फर.
फाल्गुन कृष्ण	28 फर.
फाल्गुन शुक्ल	15 मार्च
चैत्र कृष्ण	29 मार्च
चैत्र शुक्ल	13 अप्रै.
वैशाख कृष्ण	28 अप्रै.
वैशाख शुक्ल	13 मई
ज्येष्ठ कृष्ण	27 मई
ज्येष्ठ शुक्ल	11 जून
आषाढ कृष्ण	25 जून
आषाढ शुक्ल	11 जुला.
श्रावण कृष्ण	25 जुला.
श्रावण शुक्ल	9 अग.
भाद्रपद कृष्ण	23 अग.
भाद्रपद शुक्ल	8 सित.
आश्विन कृष्ण	22 सितं.
आश्विन शुक्ल	7 अक्तू.
कार्तिक कृष्ण	22 अक्तू.
कार्तिक शुक्ल	5 नवं.
मार्गशीर्ष कृष्ण	21 नवं.
मार्गशीर्ष शुक्ल	5 दिस.
पौष कृष्ण	20 दिसं.
(सन् 2003 ई.)	
पौष शुक्ल	3 जन.
माघ कृष्ण	19 जन.
माघ शुक्ल	2 फर.
फाल्गुन कृष्ण	17 फर.
फाल्गुन शुक्ल	4 मार्च
चैत्र कृष्ण	19 मार्च

उत्तरी भारत में कृष्णादि एवं दक्षिणी भारत में शुक्लादि मासों का प्रचार है। ऊपर दिए गए पक्ष कृष्णादि हैं।

श्री सत्यनारायण व्रत

(सन् 2002 ई.)	
पौष	28 जन.
माघ	27 फर.
फाल्गुन	28 मार्च
चैत्र	26 अप्रै.
वैशाख	25 मई
ज्येष्ठ	24 जून
आषाढ	23 जुला.
श्रावण	22 अग.
भाद्रपद	21 सितं.
आश्विन	20 अक्तू.
कार्तिक	19 नवं.
मार्गशीर्ष	19 दिसं.
(सन् 2003 ई.)	
पौष	17 जन.
माघ	16 फर.
फाल्गुन	17 मार्च

अमावस्याएं(स्नान–दानार्थ)(2002 ई.)

पौष	13 जन.
माघ (भौम.)	12 फर.
फाल्गुन	13 मार्च
चैत्र	12 अप्रै.
वैशाख	12 मई
ज्येष्ठ (सोम.)	10 जून
आषाढ	10 जुला.
श्रावण	8 अग.
भाद्रपद (शनैश्चरी)	7 सितं.
आश्विन	6 अक्तू.
कार्तिक (सोम.)	4 नवं.
मार्गशीर्ष	4 दिसं.
(सन् 2003 ई.)	
पौष	2 जन.
माघ (शनैश्चरी)	1 फर.
फाल्गुन (सोम.)	3 मार्च
चैत्र (भौम.)	1 अप्रै.

श्री गणेश चतुर्थी व्रत

(सन् 2002 ई.)	
पौष	2 जन.
माघ	31 जन.
फाल्गुन	2 मार्च
चैत्र	31 मार्च
वैशाख	30 अप्रै.
ज्येष्ठ	29 मई
आषाढ	28 जून
श्रावण	27 जुला.
भाद्रपद	26 अग.
आश्विन	25 सितं.
कार्तिक	25 अक्तू.
मार्गशीर्ष	23 नवं.
पौष	23 दिसं.
(सन् 2003 ई.)	
माघ	21 जन.
फाल्गुन	20 फर.
चैत्र	21 मार्च

संक्रान्तियां (सन् 2002 ई.)

माघ	14 जन.
फाल्गुन	12 फर.
चैत्र	14 मार्च
वैशाख	13 अप्रै.
ज्येष्ठ	14 मई
आषाढ	15 जून
श्रावण	16 जुला.
भाद्रपद	16 अग.
आश्विन	16 सित.
कार्तिक	17 अक्तू.
मार्गशीर्ष	16 नवं.
पौष	15 दिसं.
(सन् 2003 ई.)	
माघ	14 जन.
फाल्गुन	12 फर.
चैत्र	14 मार्च

दशावतार जयन्तियां

(सन् 2002 ई.)	
श्रीमत्स्य जयन्ती	15 अप्रै.
श्रीरामनवमी	21 अप्रै.
श्रीपरशुराम जयन्ती	14 मई
श्रीनृसिंह जयन्ती	25 मई
श्रीकूर्म जयन्ती	26 मई
श्रीबुद्ध जयन्ती	26 मई
श्रीकल्कि जयन्ती	13 अग.
*श्रीकृष्ण जन्माष्टमी	30 अग.
श्रीवराह जयन्ती	9 सित.
श्रीवामन जयन्ती	18 सित.

* अर्धरात्रि व्यापिनी अष्टमी के दिन ही श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का व्रत करना चाहिए। श्रीमद् भागवत एवं स्कन्द – विष्णु पुराण आदि इसी का समर्थन करते है ।

आश्विन कृष्ण पक्ष के श्राद्ध

(सन् 2002 ई.)	
पूर्णिमा	21 सित.
प्रतिपदा	22 सितं.
द्वितीया	23 सितं.
तृतीया	24 सितं.
चतुर्थी	25 सितं.
पंचमी	26 सितं.
षष्ठी	27 सितं.
सप्तमी	28 सितं.
अष्टमी	29 सित.
नवमी	30 सित.
दशमी	1 अक्तू.
एकादशी	2 अक्तू.
द्वादशी	3 अक्तू.
त्रयोदशी	4 अक्तू.
चतुर्दशी	6 अक्तू.
अमावस	6 अक्तू.
सर्वपितृश्राद्ध	6 अक्तू.

प्रदोष व्रत

(सन् 2002 ई.)	
पौष कृष्ण	10 जन.
पौष शुक्ल (शनि)	26 जन.
माघ कृष्ण (शनि)	9 फर.
माघ शुक्ल (सोम.)	25 फर.
फाल्गुन कृष्ण (सोम.)	11 मार्च
फाल्गुन शुक्ल (भौम.)	26 मार्च
चैत्र कृष्ण (भौम.)	9 अप्रै.
चैत्र शुक्ल	24 अप्रै.
वैशाख कृष्ण	9 मई
वैशाख शुक्ल	24 मई
ज्येष्ठ कृष्ण (शनि)	8 जून
ज्येष्ठ शुक्ल (शनि)	22 जून
आषाढ कृष्ण	7 जुला.
आषाढ शुक्ल	21 जुला.
श्रावण कृष्ण (भौम.)	6 अग.
श्रावण शुक्ल (भौम)	20 अग.
भाद्रपद कृष्ण	4 सितं.
भाद्रपद शुक्ल	18 सितं.
आश्विन कृष्ण	4 अक्तू.
आश्विन शुक्ल	18 अक्तू.
कार्तिक कृष्ण (शनि)	2 नवं.
कार्तिक शुक्ल	17 नवं.
मार्गशीर्ष कृष्ण (सोम.)	2 दिसं.
मार्गशीर्ष शुक्ल (भौम.)	17 दिसं.
पौष कृष्ण (भौम.)	31 दिसं.
(सन् 2003 ई.)	
पौष शुक्ल	15 जन.
माघ कृष्ण	29 जन.
माघ शुक्ल	14 फर.
फाल्गुन कृष्ण	28 फर.
फाल्गुन शुक्ल	16 मार्च
चैत्र कृष्ण	30 मार्च

सोम = सोम प्रदोष व्रत
भौम = भौम प्रदोष व्रत
शनि = शनि प्रदोष व्रत

वर्गीकृत व्रतपर्व (1 जनवरी, सन् 2002 ई. से 1 अप्रैल सन् 2003 ई. तक)

सिक्ख पर्व अवतार दिन (प्राचीन परम्परा के अनुसार)

(सन् 2002 ई)	
श्री गुरु गोबिन्दसिंह जी	21 जन
श्री गुरु हरराय जी	25 फर
श्री गुरु तेगबहादुर जी	1 मई
श्री गुरु अर्जुनदेव जी	3 मई
श्री गुरु अंगददेव जी	13 मई
श्री गुरु अमरदास जी	25 मई
श्री गुरु हरगोबिन्द जी	25 जून
श्री गुरु हरकिशन जी	2 अग
श्री गुरु रामदास जी	23 अक्तू
श्री गुरु नानकदेव जी	19 नव
(सन् 2003 ई)	
श्री गुरु गोबिन्दसिंह जी	9 जन
श्री गुरु हरराय जी	15 फर

गुरयाई मिली (सन् 2002 ई)	
श्री गुरु हरराय जी	10 अप्रै
श्री गुरु अमरदास जी	13 अप्रै
श्री गुरु तेगबहादुर जी	26 अप्रै
श्री गुरु हरगोबिन्द जी	3 जून
श्री गुरु अर्जुनदेव जी	8 सित
श्री गुरु रामदास जी	19 सित
श्री गुरु अंगददेव जी	26 सित
श्री गुरु हरकिशन जी	30 अक्तू
श्री गुरु गोबिन्दसिंह जी	6 दिस
(सन् 2003 ई)	
श्री गुरु हरराय जी	30 मार्च

जोती जोत समाए (सन् 2002 ई)	
श्री गुरु अंगददेव जी	17 अप्रै
श्री गुरु हरगोबिन्द जी	18 अप्रै
श्री गुरु हरकिशन जी	26 अप्रै
श्री गुरु अर्जुनदेव जी	14 जून
श्री गुरु रामदास जी	9 सित
श्री गुरु अमरदास जी	21 सित
श्री गुरु नानकदेव जी	2 अक्तू
श्री गुरु हरराय जी	30 अक्तू
श्री गुरु गोबिन्दसिंह जी	9 नव
श्री गुरु तेगबहादुर जी	8 दिस

जैन व्रतपर्व (सन् 2002 ई.)

व्रतपर्व	तिथि
आचार्य श्रीतुलसी दीक्षा	3 जन
जन्म श्रीपार्श्वनाथ	8 जन
श्रीमेरुत्रयोदशी	10 फर
मर्यादा महोत्सव	19 फर
आचार्य भिक्षु अभिनिष्क्रमण	21 अप्रै
श्रीजैन महावीर जयन्ती	25 अप्रै
श्रीमहावीर केवलज्ञान दिवस	22 मई
श्रीमहावीर च्यवन दिवस	15 जुला
तेरापन्थ स्थापना दिवस	24 जुला
चातुर्मास्य प्रारम्भ	24 जुला
पर्युषण पर्व प्रारम्भ	4 सित
श्रीजयाचार्य निर्वाण	4 सित
सवत्सरी महापर्व	11 सित
श्रीकालू निर्वाण	12 सित
श्रीतुलसी पट्टारोहण	15 सित
आचार्य भिक्षु निर्वाण दिवस	19 सित
श्रीमहावीर निर्वाण दिवस	4 नवं
आचार्य श्रीतुलसी जन्म	6 नवं
ज्ञानपंचमी	9 नवं
चतुर्मास्य समाप्त	19 नवं
श्रीमहावीर दीक्षा	29 नवं
आचार्य श्रीतुलसी दीक्षा	24 दिसं
जन्म श्रीपार्श्वनाथ	29 दिसं
(सन् 2003 ई.)	
श्रीमेरुत्रयोदशी	30 जन
मर्यादा महोत्सव	8 फर

क्रिश्चियन त्योहार (सन् 2002 ई)

त्योहार	तिथि
नया साल प्रारम्भ	1 जन
गुड फ्राई डे	29 मार्च
ईस्टर सण्डे	31 मार्च
क्रिसमस डे	25 दिसं
(सन् 2003 ई.)	
नया साल प्रारम्भ	1 जन

मासिक शिवरात्रिव्रत (सन् 2002 ई.)

मास	तिथि
पौष	11 जन
माघ	10 फर
फाल्गुन	12 मार्च
चैत्र	10 अप्रै
वैशाख	10 मई
ज्येष्ठ	9 जून
आषाढ	8 जुला
श्रावण	7 अग
भाद्रपद	5 सितं
आश्विन	5 अक्तू
कार्तिक	3 नवं
मार्गशीर्ष	2 दिस
(सन् 2003 ई.)	
पौष	1 जन
माघ	30 जन
फाल्गुन	1 मार्च
चैत्र	31 मार्च

मासिक कालाष्टमी व्रत (2002 ई)

मास	तिथि
पौष	6 जन
माघ	4 फर
फाल्गुन	6 मार्च
चैत्र	4 अप्रै
वैशाख	4 मई
ज्येष्ठ	3 जून
आषाढ	2 जुला
श्रावण	1 अग
भाद्रपद	31 अग
आश्विन	29 सितं
कार्तिक	29 अक्तू
मार्गशीर्ष	27 नवं
पौष	26 दिसं
(सन् 2003 ई.)	
माघ	25 जन
फाल्गुन	23 फर
चैत्र	24 मार्च

महापुरुषों के जन्मदिन (सन् 2002 ई.)

महापुरुष	तिथि
श्री नेताजी सुभाषचन्द्र बोस	23 जन
लाला लाजपतराय	28 जन
स्वामी विवेकानन्द	4 फर
श्रीरामानन्दाचार्य	4 फर
योगीराज बा. श्रीलालदयाल जी	14 फर
श्री गुरु रविदास जी	27 फर
महर्षि दयानन्द सरस्वती	8 मार्च
श्रीरामकृष्ण परमहंस	16 मार्च
श्रीचैतन्य महाप्रभु	28 मार्च
डा. अम्बेडकर	14 अप्रै
श्रीरवीन्द्रनाथ टैगोर	7 मई
श्रीवल्लभाचार्य	8 मई
श्रीछत्रपति शिवाजी जयन्ती	14 मई
आद्य जगद्गुरु श्रीशंकराचार्य	17 मई
श्रीरामानुजाचार्य	18 मई
श्रीमहाराणाप्रताप	13 जून
लो. मा. बालगंगाधर तिलक	23 जुला
गोस्वामी तुलसीदास जी	14 अग
स्वामी शिवानन्द जी	8 सित
श्रीमहात्मा गांधी	2 अक्तू
श्रीलालबहादुर शास्त्री	2 अक्तू
महाराज अग्रसेन जयन्ती	7 अक्तू
श्रीमाध्वाचार्य	15 अक्तू
स्वामी रामतीर्थ	22 अक्तू
श्रीजवाहर लाल नेहरु	14 नवं
श्रीवीर वैरागी	17 नवं
भगवान् श्रीसत्यसाईं बाबा	23 नवं
(सन् 2003 ई)	
श्री नेताजी सुभाषचन्द्र बोस	23 जन
स्वामी विवेकानन्द	24 जन
श्रीरामानन्दाचार्य	24 जन
लाला लाजपतराय	28 जन
योगिराज बा. श्रीलालदयाल जी	3 फर
श्री गुरु रविदास जी	16 फर
महार्षिदयानन्द सरस्वती	26 फर
श्रीरामकृष्ण परमहंस	5 मार्च
श्रीचैतन्य महाप्रभु	18 मार्च

मुस्लिम त्योहार (सन् 2002 ई.)

त्योहार	तिथि
इदुलज्जुहा	23 फर
मुहर्रम (ताजिया)	25 मार्च
चेहलम	3 मई
आखिरी चहार शम्बा	8 मई
शहादत–ए–इमाम हसन	12 मई
ईद–ए–मिलाद	25 मई
ईद–ए–मौलाद	30 मई
फतिहायज़दहुम	23 जून
जन्म श्रीहज़रत अली	21 सितं
शब–ए–मिराज	5 अक्तू
शब–ए–बरात	22 अक्तू
रमज़ान का पहला दिन	7 नवं
शहादत–ए–हजरत अली	27 नवं
जमतुल विदा	29 नवं
शब–ए–कद्र	3 दिसं
ईदुलफित्र	6 दिसं
(सन् 2003 ई.)	
इदुलज्जुहा	12 फर
मुहर्रम (ताज़िया)	14 मार्च

सूचना

सभी मुस्लिम–त्योहार चन्द्र–दर्शन (नया चाँद दिखाई देने) पर ही निर्भर करते हैं। कई बार स्थानभेद या आकाशीय वातावरण के कारण चन्द्रदर्शन की तारीख आगे–पीछे हो जाने पर, इन मुस्लिम त्योहारों के दिन में एक दिन का अन्तर संभव है।

भारत सरकार के अवकाश (1 जनवरी , सन् 2002 ई. से 1 अप्रैल, सन् 2003 ई. तक)

(सूचना :– अवकाश की इस सूची को भारत सरकार के गज़ट की सूची से मिला लेना चाहिए।)

अवकाश	तिथि	अवकाश	तिथि	अवकाश	तिथि	अवकाश	तिथि
इंग्लिश नववर्ष (2002 ई.) प्रारम्भ	1 जन.	विशु (केरल)	14 अप्रैल	जन्म श्रीमहात्मा गांधी	2 अक्तूबर	(सन् 2003 ई.)	
मकर संक्रान्ति	14 जन.	श्रीराम नवमी	21 अप्रैल	श्रीदुर्गाष्टमी	13 अक्तूबर	इंग्लिश नववर्ष (2003 ई.) प्रारम्भ	1जन.
पोंगल	14 जन.	श्रीमहावीर जयन्ती	25 अप्रैल	दशहरा	15 अक्तूबर	अवतार दिन श्री गुरु गोबिन्दसिंह जी	9 जन.
अवतार दिन श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी	21 जन.	ईद–ए–मिलाद	25 मई	श्रीवाल्मीकि जयन्ती	21 अक्तूबर	मकर संक्रान्ति	14 जन.
भारत गणतन्त्र दिवस	26 जन.	श्रीबुद्ध जयन्ती	26 मई	दीपावली	4 नवंबर	पोंगल	14 जन.
इदुलज्जुहा	23 फर.	रथयात्रा (पुरी)	12 जुलाई	भाई दूज	6 नवंबर	भारत गणतन्त्र दिवस	26 जन.
जन्म श्री गुरु रविदास जी	27 फर.	भारत स्वतन्त्रता दिवस	15 अगस्त	श्रीगुरुनानक जयन्ती	19 नवंबर	इदुलज्जुहा	12 फर.
श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	12 मार्च	ओनम (केरल)	21 अगस्त	जमतुलविदा	29 नवंबर	जन्म श्री गुरु रविदास जी	16 फर.
मुहर्रम	25 मार्च	रक्षाबन्धन (राखी)	22 अगस्त	इदुलफित्र	6 दिसंबर	श्री महाशिवरात्रि व्रत	1 मार्च
गुड फ्राई डे	29 मार्च	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी	31 अगस्त	बलि. दिवस श्री गुरु तेगबहादुर जी	8 दिसंबर	मुहर्रम	14 मार्च
गुडी पडवा	13 अप्रैल	श्रीगणेश चतुर्थी	10 सितंबर	क्रिसमस डे	25 दिसंबर		
वैशाखी (पंजाब)	13 अप्रैल	जन्म श्रीहजरत अली	21 सितंबर				

पंजाब , हरियाणा , हिमाचल प्रदेश व जम्मू–काश्मीर, उ.प्र. के मेले (1 जनवरी , सन् 2002 ई. से 1 अप्रैल, सन् 2003 ई. तक)

मेला	तिथि	मेला	तिथि	मेला	तिथि	मेला	तिथि
(सन् 2002 ई.)		आनी आऊटर सिराज (कुल्लू) प्रा.	7 मई	श्री चिन्तपूर्णी (हि. प्र.)	15 अग.	जन्मदिन श्रीवीर वैरागी (नकोदर पं.)	17 नव.
लोहड़ी (दांऊ.बिदरख) रोपड	14 जन.	पिंजौर (हरि.)	12 मई	ब. सन्त बाबा हरचन्द सिंह लौंगोवाल	20 अग.	श्रीरामतीर्थ (अमृतसर पं.)	19 नव.
मुक्तसर (पंजाब)	14 जन.	दूगरी जातर (मनाली) प्रा.	14 मई	श्री अमरनाथ यात्रा (काश्मीर)	22 अग.	कपालमोचन (हरि.)	19 नव.
माणकपुर शरीफ (रोपड) प्रारम्भ	29 जन.	बंजार (कुल्लू) प्रा.	14 मई	कैलाशयात्रा (काश्मीर) प्रा.	5 सित.	श्रीपुष्करराज (राज.)	19 नव.
ब.सन्त बाबा अतर सिंह जी मस्तुआणा(पं.)	1 फर.	साढी जातर, नगर (हि.प्र.) प्रा.	18 मई	श्रीगुसांईआणा, कुराली (पंजाब)	8 सित.	पुरमण्डल, देविका स्नान (जम्मू)	3 दिसं.
वसन्त पंचमी	17 फर.	समागम (8 दिन)हरिहरघाट,मणिकर्ण,		श्रीगणेशोत्सव (मण्डी) हि.प्र. प्रारम्भ	10 सितं.	ब. बा. वैशाखा सिंह, दुदेहर साहब,	5 दिस.
श्रीमहाशिवरात्रि (मण्डी, हि.प्र.) प्रारम्भ	12 मार्च	(कुल्लू) प्रा.	20 मई	मेला पट्ट (काश्मीर) प्रारम्भ	11 सितं.	(अमृतसर)	
नीलकण्ठ महादेव (पौडी, गढवाल)	12 मार्च	पाण्डवों का बाडी मेला (सरयांझ) सोलन,	15 जून	श्रीवामन द्वादशी (अम्बाला,पटियाला)	18 सितं.	जोडमेला फतेहगढ साहिब (पं.) प्रा.	26 दिसं.
जन्म बाबा अतर सिंहजी (नानकसर चीमा)	15–17 मार्च	भुन्तर (कुल्लू) प्रा.	15 जून	बाबा सोढल (जालन्धर)	20 सितं.	संगीत मेला बाबा हरवल्लभ(जालन्धर),प्रा.	27 दिसं.
होला श्री आनन्दपुर साहिब (पं.)	29 मार्च	क्षीर भवानी (जम्मू–काश्मीर)	18 जून	छपार (पं.)	20 सितं.	**(सन् 2003 ई.)**	
श्रीवीरमदास, बधौछी (पटियाला)	2 अप्रैल	श्रीगंगा दशहरा	20 जून	श्रीगोईंदवाल साहिब, (अमृतसर), पं.	21 सितं.	लोहड़ी (दांऊ,बिदरख) रोपड़, पंजाब	13 जन.
श्रीगुरु रामराय (देहरादून)	2 अप्रैल	सपोर यात्रा धारलदा (उधमपुर)	20 जून	श्री आशापति यात्रा (काश्मीर) प्रा.	5 अक्तू.	मुक्तसर (पंजाब)	14 जन.
शीतला माता (कुराली) पं.	4 अप्रैल	नमाणी एकादशी, नौवे गुरु बरहे (बठि.)	21 जून	श्रीज्वालामुखी, तारादेवी (हि.प्र.)	13 अक्तू.	माणकपुर शरीफ (रोपड़) प्रारम्भ	18 जन.
पिहोवा (हरियाणा)	11 अप्रैल	पीपलू , ऊना (हि.प्र.)	21 जून	ज्वालामुखी (हरचोवाल,गुरदासपुर), पं.	13 अक्तू.	ब.सन्त बाबा अतर सिंह जी मस्तुआणा(पं.)	1 फर.
कशाधा, नहयाणी सह (कुल्लू)प्रा.	15 अप्रैल	शुद्ध महादेव यात्रा (उधमपुर)	24 जून	दशहरा (कुल्लू) प्रा.	15 अक्तू.	वसन्त पंचमी	6 फर.
माईसर खाना (पं.)	19 अप्रैल	ब.बा. सन्तोख सिंह जी, नानकसर–	9 जुला.	मेला पीरभीखनशाह(घड़ाम)पटियाला प्रा.	18 अक्तू.	श्रीमहाशिवरात्रि (मण्डी, हि.प्र.) प्रारम्भ	1 मार्च
श्रीमनसादेवी (हरि.)	20 अप्रैल	चीमा प्रा.		श्रीशाकम्भरी देवी (उ.प्र.)	20 अक्तू.	नीलकण्ठ महादेव (पौडी गढवाल)	1 मार्च
बहुफोर्ट (जम्मू–काश्मीर)	20 अप्रैल	शरीक भवानी (जम्मू–काश्मीर)	18 जुला.	देवीमेला हथीहरा (कुरुक्षेत्र)	20 अक्तू.	होला श्री आनन्दपुर साहिब (पं.)	19 मार्च
ज्वालामुखी (हरचोवाल, गुरदासपुर) पं.	20 अप्रैल	गुरु पूर्णिमा, नदीपार आश्रम (कुराली)	24 जुला.	दीपावली (अमृतसर)	4 नवं.	श्री गुरु रामराय (देहरादून)	22 मार्च
माता कासादेवी (कासल, रोपड) प्रारम्भ	25 अप्रैल	बरसी स. बाबा प्यारा सिंह जी,		बालमेला	14 नवं.	श्री वीरमदास, बधौछी (पटियाला)	25 मार्च
देवी मेला हथीहरा (कुरुक्षेत्र)	26 अप्रैल	(झाडसाहिबवाले) चमकौर साहिब	5–7 अग.	बाबा रुद्रानन्द, नारी (ऊना,हि.प्र.)प्रा.	15 नवं.	शीतला माता (कुराली) पं.	27 मार्च
पीपल जातर (कुल्लू) प्रा.	28 अप्रैल	श्रीनैना देवी (हि. प्र.)	15 अग.	रेणुका (नाहन) हि.प्र.	15 नवं.	पिहोवा (हरियाणा)	31 मार्च

गण्डमूल नक्षत्रों का प्रारम्भ एवं समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.)

(1 जनवरी, सन् 2002 ई. से 1 अप्रैल , सन् 2003 ई. तक)

सन् 2002 ई.	प्रारम्भ घं. मि.	सन् 2002 ई.	समाप्त घं. मि.	सन् 2002 ई.	प्रारम्भ घं. मि.	सन् 2002 ई.	समाप्त घं. मि.	सन् 2002–03ई	प्रारम्भ घं. मि.	सन् 2002–03ई	समाप्त घं. मि.	सन् 2003 ई.	प्रारम्भ घं. मि.	सन् 2003 ई.	समाप्त घं. मि.
1 जन.	21 04	3 जन.	16 58	9 मई	7 10	11 मई	12 18	13 सित.	5 32	15 सित.	5 33	19 जन.	14 32	21 जन.	12 21
10 जन.	10 41	12 जन.	12 25	18 मई	17 57	20 मई	15 46	22 सित.	20 00	25 सित.	2 04	28 जन.	3 09	30 जन.	1 42
20 जन.	5 24	22 जन	10 28	27 मई	2 41	29 मई	1 15	2 अक्तू.	11 49	4 अक्तू.	8 07	6 फर.	8 14	8 फर.	14 11
29 जन.	7 05	31 जन.	1 37	5 जून	14 40	7 जून	19 53	10 अक्तू.	13 32	12 अक्तू.	12 11	15 फर.	23 58	17 फर.	20 53
6 फर.	16 09	8 फर.	18 26	14 जून	23 31	16 जून	21 10	20 अक्तू.	2 05	22 अक्तू.	8 03	24 फर.	8 30	26 फर.	7 35
16 फर.	12 17	18 फर.	17 51	23 जून	11 24	25 जून	10 25	29 अक्तू.	19 46	31 अक्तू.	17 40	5 मार्च	15 57	7 मार्च	21 48
25 फर.	18 19	27 फर.	12 36	2 जुला.	22 38	5 जुला.	4 09	6 नव.	23 47	8 नव.	21 00	15 मार्च	10 16	17 मार्च	7 21
5 मार्च	22 17	8 मार्च	0 02	12 जुला.	6 34	14 जुला.	3 12	16 नव.	8 31	18 नव.	14 28	23 मार्च	14 47	25 मार्च	13 04
15 मार्च	18 23	17 मार्च	23 56	20 जुला.	18 08	22 जुला.	18 03	26 नव.	1 42	28 नव.	0 45	1 अप्रैल	22 38	-- --	-- --
25 मार्च	4 29	26 मार्च	23 44	30 जुला.	6 27	1 अग.	12 18	4 दिसं.	10 45	6 दिसं.	7 27				
2 अप्रैल	6 32	4 अप्रैल	6 53	8 अग.	15 39	10 अग.	11 16	13 दिसं.	15 48	15 दिसं.	21 49				
12 अप्रैल	0 28	14 अप्रैल	5 45	16 अग.	23 36	19 अग.	0 03	23 दिसं.	7 16	25 दिसं.	6 11				
21 अप्रैल	12 12	23 अप्रैल	9 00	26 अग.	13 36	28 अग.	19 39	31 दिसं.	20 16	2 जन.	17 36				
29 अप्रैल	16 32	1 मई	15 35	5 सितं.	1 56	6 सितं.	21 21	9 जन.	23 55	12 जन.	5 58				

पंचकों का प्रारम्भ एवं समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.)

(1 जनवरी, सन् 2002 ई. से 1 अप्रैल , सन् 2003 ई. तक)

सन् 2002 ई.	प्रारम्भ घं. मि.	सन् 2002 ई.	समाप्त घं. मि.	सन् 2002 ई.	प्रारम्भ घं. मि.	सन् 2002 ई.	समाप्त घं. मि.	सन् 2002–03ई	प्रारम्भ घं. मि.	सन् 2002–03ई	समाप्त घं. मि.	सन् 2003 ई.	प्रारम्भ घं. मि.	सन् 2003 ई.	समाप्त घं. मि.
16 जन.	7 16	21 जन	8 09	1 जून	17 03	6 जून	17 26	16 अक्तू.	4 33	21 अक्तू.	5 05	1 मार्च	21 23	6 मार्च	18 45
12 फर.	14 08	17 फर.	15 12	29 जून	1 35	4 जुला.	1 31	12 नवं.	11 16	17 नवं.	11 32	29 मार्च	3 14	-- --	-- --
11 मार्च	20 07	16 मार्च	21 15	26 जुला.	9 41	31 जुला.	9 26	9 दिसं.	19 35	14 दिसं.	18 51				
8 अप्रै.	2 08	13 अप्रै.	03 13	22 अग.	16 44	27 अग.	16 38	6 जन.	4 59	11 जन.	2 54				
5 मई	9 02	10 मई	9 53	18 सितं.	22 46	23 सितं.	23 01	2 फर.	13 59	7 फर.	11 06				

रविवार कैलेण्डर (1 जनवरी, सन् 2002 ई. से 1 अप्रैल , सन् 2003 ई. तक)

2002 ई.	रविवार की तारीखें					2002 ई.	रविवार की तारीखें					2002 ई.	रविवार की तारीखें					2003 ई.	रविवार की तारीखें				
जनवरी	6	13	20	27	–	मई	5	12	19	26	–	सितंबर	1	8	15	22	29	जनवरी	5	12	19	26	–
फरवरी	3	10	17	24	–	जून	2	9	16	23	30	अक्तूबर	6	13	20	27	–	फरवरी	2	9	16	23	–
मार्च	3	10	17	24	31	जुलाई	7	14	21	28	–	नवंबर	3	10	17	24	–	मार्च	2	9	16	23	30
अप्रैल	7	14	21	28	–	अगस्त	4	11	18	25	–	दिसंबर	1	8	15	22	29	अप्रैल	6	13	20	27	–

ग्रहण विवरण (सं. २०५६ वि.)

परिलेखक - प्रियव्रत शर्मा

इसवर्ष (सं. २०५६ वि. में) भूगोल पर निम्नलिखित दो ग्रहण होंगे :-

(१) खण्डग्रासूर्यग्रहण (१०/११ जून २००२ ई.)

(२) खग्रास सूर्यग्रहण (४ दिसम्बर २००२ ई.)

इन दो सूर्यग्रहणों में से नं. (१) वाला खण्डग्रास-सूर्यग्रहण ही भारत के पूर्वोत्तरी कोने में बहुत थोड़े समय के लिए मामूली सा ही दिखाई देगा।

इसवर्ष कोई भी चन्द्रग्रहण भूगोल पर दिखाई नहीं देगा। लेकिन ३ उपच्छाया ग्रहण विश्व के विभिन्न भागों में दिखाई देंगे।

-: भारत में अदृश्य सूर्यग्रहण का संक्षिप्त विवरण :-

खग्रास सूर्यग्रहण- यह ग्रहण मार्गशीर्ष कृष्णपक्ष, अमावस, बुधवार (४ दिसम्बर, सन् २००२ ई.) को अफ्रीका, दक्षिण-एशिया, आस्ट्रेलिया एवं हिन्दमहासागर में दिखाई देगा। यह ग्रहण भूगोल पर (भा.स्टैं.टा. के अनुसार) ४ दिसम्बर २००२ ई. को १० बजकर २१ मिनट से १५ बजकर ४१ मिनट तक दिखाई देगा।

-: भारत में दृश्य ग्रहण का विवरण :-

खण्डग्रास सूर्यग्रहण (१०/११ जून, सन् २००२ ई., ज्येष्ठकृष्ण अमावस,चन्द्रवार) :-

यह ग्रहण ११ जून को भारत के पूर्वोत्तरी कोने में बहुत थोड़े समय के लिए मामूली सा ही दिखाई देगा। यह माइनामर, थाईलैण्ड, इण्डोनेशिया, फिलिपाइन्स, ताइवान, जापान, उत्तरी एवं मध्य आस्ट्रेलिया, कनाडा, उत्तरी अमेरीका एवं मैक्सिको में दिखाई पड़ेगा। इसकी कंकणाकृति अधिकतर पेसिफिक-समुद्र में ही दिखाई देगी।

यहां दिए गए भारत के मानचित्र में खींची गई 'क-ख' रेखा से दाईं ओर स्थित अरुणाचल, असाम एवं नागालैण्ड के पूर्वोत्तरी थोड़े से भाग में ही यह ग्रहण खण्डग्रास के रूप में कुछ ही मिनटों के लिए ११ जून को सूर्योदय के समय दिखाई देगा। इस 'क-ख' रेखा पर बसे नगरों में सूर्योदय के समय ही ग्रहण समाप्त हो जाएगा। इस रेखा से बाईं ओर यह ग्रहण भारत में कहीं भी दिखाई नहीं देगा। आसाम के डिब्रूगढ़ नगर में यह ग्रहण ११ जून को भा.स्टैं.टा. के अनुसार सूर्योदय (४ घं. १७ मि.) के बाद ४ बजकर २६ मिनट पर समाप्त हो जाएगा। क्योंकि पंजाब, हरियाणा, हि.प्र., राजस्थान, जम्मू-काश्मीर, दिल्ली, उ.प्र. एवं म.प्र. आदि प्रदेशों में यह ग्रहण दिखाई नहीं देगा,- अतः इस ग्रहण में यहां स्नान-दानादि

खण्डग्रास सूर्यग्रहण (११ जून २००२ ई.)

क-ख = सूर्योदय के समय ग्रहणमोक्ष।
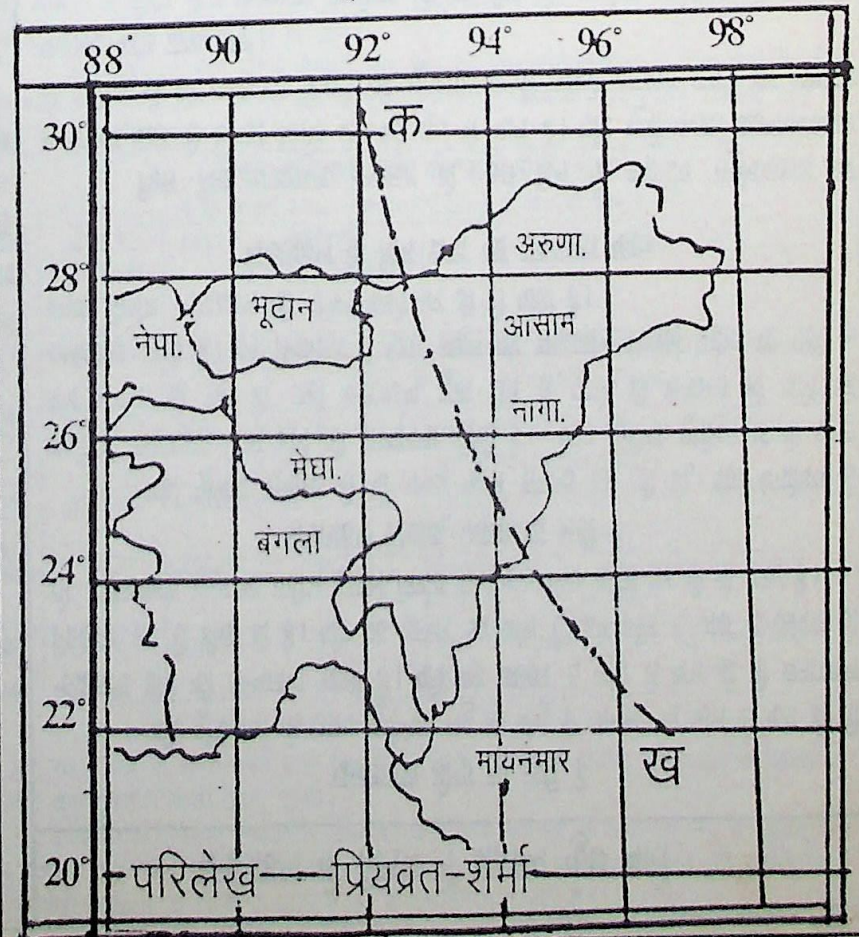
धार्मिक विधानों का कोई महत्व नहीं होगा।

जैसाकि पहले स्पष्ट किया जा चुका है, कि इसवर्ष भूगोल पर कोई भी चन्द्रग्रहण नहीं दिखाई देगा; लेकिन इसवर्ष निम्नांकित ३ उपच्छाया-चन्द्रग्रहण विश्व के विभिन्न भागों में दिखाई देंगे ,-

(१) उपच्छाया चन्द्रग्रहण (वैशाख पूर्णिमा, रविवार, २६ मई २००२ ई.) :-

यह उपच्छाया ग्रहण दिन के ३ बजकर ४२ मिनट से सायं ७ बजकर २४ मिनट तक देखा जा सकेगा। भारत में चन्द्रोदय के समय यह उपच्छाया ग्रहण थोड़ी देर के लिए ही देखा जा सकेगा।

(२) उपच्छाया चन्द्रग्रहण (ज्येष्ठ पूर्णिमा, चन्द्रवार, २४/२५ जून, २००२ ई.) :-

यह उपच्छाया ग्रहण २५ जून को रात्रि के १ बजकर ४८ मिनट से प्रातः ४ बजकर ५ मिनट तक सारे भारत में देखा जा सकेगा।

(३) उपच्छाया चन्द्रग्रहण (कार्तिक पूर्णिमा, बुधवार, २० नवम्बर, २००२ ई.) :-

यह उपच्छाया चन्द्रग्रहण २० नवम्बर को प्रातः ५ बजकर २ मिनट से ६ बजकर ३१ मिनट तक देखा जा सकेगा। यह उपच्छाया चन्द्रग्रहण भारत में सूर्योदय से कुछ देर पहिले ही दिखाई पड़ेगा।

नोट :- चन्द्रमा का उपच्छाया-ग्रहण वास्तविक चन्द्रग्रहण नहीं होता। वास्तविक-चन्द्रग्रहण तो पृथ्वी की वास्तविक छाया में चन्द्रप्रवेश होने पर ही होता है। जब चन्द्रमा पृथ्वी की उपच्छाया में प्रवेश करता है, तब उपच्छाया चन्द्रग्रहण होता है। उपच्छाया चन्द्रग्रहण के समय चन्द्र की चांदनी किंवा बिम्ब धुन्दले पड़ जाते हैं। लेकिन चन्द्रबिम्ब काला नहीं पड़ता। क्योंकि ये उपच्छाया ग्रहण वास्तविक-चन्द्रग्रहण नहीं हैं, अतः इस समय जप-दानादि का कोई महत्त्व नहीं होगा, न ही सूतकादि का विचार इसमें होता है। यह एकमात्र आकाशीय चमत्कार है।

ध्यान दें; - ***सन् २००१ ई. में ५ जुलाई को चन्द्रग्रहण हुआ था। तदनन्तर पूरे सन् २००२ ई. में कोई चन्द्रग्रहण घटित नहीं होगा। अब आगामी चन्द्रग्रहण मई, २००३ ई. में घटित होगा। इसप्रकार एकवर्ष दस महीने की अवधि में कोई चन्द्रग्रहण घटित नहीं हो रहा है ; इसप्रकार की स्थिति बहुत वर्षों बाद आया करती है।***

उपच्छाया ग्रहणों के विषय में
डॉ. शक्तिधर शर्मा
का विशेष लेख पढ़ें → पृ. ६० पर

चन्द्रग्रहण के विषय में ज्ञातव्य कुछ बातें

चन्द्रग्रहण होगा या नहीं ?

यदि पूर्णिमान्त के समय सूर्य का राहु या केतु से अन्तर १३ अंश से कम हो तो चन्द्रग्रहण होने की सम्भावना रहती है। यदि यह अन्तर ६ अंश से कम हो तो चन्द्रग्रहण निश्चित रूप से होता ही है। यदि यह अन्तर १३ अंश से कम और ६ अंश से अधिक हो तो 'चन्द्रग्रहण होगा या नहीं'- इसका निर्णय चन्द्रग्रहणगणित करने पर ही हो पाता है।

चन्द्रग्रहण दिखाई पडेगा या नहीं ?

जहां पूर्णिमा सूर्यास्त से दो घण्टा पहले समाप्त हो रही हो, वहां चन्द्रोदय से पहले ही चन्द्रग्रहण खत्म होने की सम्भावना रहती है। जहां पूर्णिमा सूर्योदय के दो घण्टा बाद समाप्त हो रही हो, वहां चन्द्रग्रहण शुरू होने से पहले ही चन्द्रास्त हो जाने की सम्भावना रहती है। इन स्थितियो में 'उस स्थान पर चन्द्रग्रहण दिखाई पड़ेगा या नहीं' - इसका निर्णय चन्द्रग्रहण की गणित करने पर ही हो पाता है।

चन्द्रग्रहण के दिन चन्द का उदयास्त काल

जिस दिन चन्द्रग्रहण ग्रस्तास्त हो, उस दिन के स्थानीय सूर्योदयकाल का ग्रहणमध्य-काल से अन्तर करके शेष को ३० से भाग दें। यदि सूर्योदयकाल ग्रहणमध्यकाल से अधिक हो तो लब्धि के मिनटों को सूर्योदयकाल में जोड़ने अन्यथा घटाने पर स्थानीय चन्द्रास्त-काल प्राप्त होगा।

जिस दिन चन्द्रग्रहण ग्रस्तोदय हो उस दिन के स्थानीय सूर्यास्तकाल का ग्रहण-मध्यकाल से अन्तर करके शेष को ३० से भाग दें। सूर्यास्तकाल ग्रहणमध्यकाल से अधिक हो तो लब्धि के मिनटों को सूर्यास्तकाल में जोडने अन्यथा घटाने पर स्थानीय चन्द्रोदय-काल प्राप्त होगा।

इस उपरोक्त पद्धति से प्राप्त चन्द्रोदयास्तकाल में सामान्यतः एक - दो मिनट से अधिक अशुद्धि नहीं होती।

शनि की साढेसाती (बृहत्कल्याणी), ढैया (लघुकल्याणी) और गुरु–राहु का गोचरफल (सं. 2059 वि.)

जन्मकुण्डली में शनैश्चर का शुभग्रह से संबंध हो अथवा महादशा का अंतर शुभ चल रहा हो, तो ढैया और साढेसाती का अशुभफल कम होता है। यदि चन्द्र, शनि जन्म में अशुभ ग्रहों से युक्त हों तो साढेसाती व ढैया महान् अशुभ, चिंता, अवनति, धनहानि, झगड़ा, कार्य में विघ्न, रोजगार में कमी, व्यर्थ कलह एवं रोग, पशु–पीड़ा आदि का कारण बनती है। यदि जन्मकुण्डली में शनि अष्टमेश या मारकेश हो तो भी ढैया, साढेसाती विशेष अनिष्ट फलप्रद होती है। यदि जन्म में शनि लग्नेश, पंचमेश, नवमेश होकर 3, 6, 11 में स्थित हो तो सुख–सम्पत्ति मिलती है, व्यापारादि में लाभ होता है। शनि के अष्टकवर्ग में अधिक रेखाएं हों तो शुभ, कम रेखाएं हों तो अशुभ फल निश्चित होता है। शान्त्यर्थ–सतनाजा को तेल का हाथ लगाकर पक्षियों को डालना चाहिए या शनिवार को तेल में मुख देखकर उसमें मिष्ठान्न, गुलगुले आदि बनाकर, गरीबों को, भैंसे या कुत्ते को दें या बन्दरों को गुड़–चने डालते रहें। अष्टगंध से शुभमुहूर्त में बना हुआ शनियंत्र धारण करना विशेष शांतिप्रद है।

साढेसाती में प्रत्येक राशि के लिए शनि का अशुभ फल इस प्रकार है–

मेष राशि वालों को बीच के अढाई वर्ष खराब हैं। वृष को पहिले अढाई वर्ष, मिथुन को अंत के अढाई वर्ष, कर्क को बीच के अढाई वर्ष, सिंह को पहिले 5 वर्ष उसमें भी मध्य के अढाई वर्ष खराब हैं। कन्या को पहिले 5 वर्ष, उसमें भी मध्य के अढाई वर्ष विशेष अशुभ हैं। तुला को आखिर के अढाई वर्ष, वृश्चिक को अंतिम 5 वर्ष नेष्ट हैं, उसमें भी मध्य के अढाई वर्ष विशेष अशुभ हैं। धनु को प्रारंभ के अढाई वर्ष, मकर को पहिले 5 वर्ष, उसमें भी पहिले अढाई वर्ष विशेष खराब हैं। कुंभ को आदि एवं अंत के पांच वर्ष, विशेषतः अंत के अढाई वर्ष अधिक अशुभ हैं। मीन को पूरे साढेसात वर्ष नेष्ट हैं, उनमें भी अंत के अढाई वर्ष विशेष अशुभफल देने वाले होते हैं।

सं. 2057 वि. में 6 एवं 7 जून, 2000 ई. की मध्यरात्रि में 24 घं. 57 मिनट पर आश्लेषा नक्षत्र एवं कर्कराशि में स्थित चन्द्र के समय शनि वृषराशि में प्रविष्ट होकर सं. 2059 वि. एवं सन् 2002 ई. की 23 जुलाई तक शनि वृषराशि में ही रहेगा। वृषराशिस्थ शनि की साढेसाती–ढैया आदि का फल बाईं ओर कोष्ठक में दिया गया है।

नोट :– कोष्ठक में जिन राशियों का निर्देश नहीं है, उनराशि वाले व्यक्तियों के लिए वृष राशिस्थ शनि की अवधि में साढेसाती और ढैया नहीं है।

वृष राशिस्थशनि की साढेसाती, ढैया

(संवत् के आरम्भ से 23 जुलाई 2002 ई. तक के लिए)

राशि	ढैया या साढेसाती	पाद	साढेसाती		फल
			किस अंग पर	चढ़ती या उतरती	
मेष	साढेसाती	लौह	पाद	उतरती	शरीरपीड़ा, रक्तविकार, पशुधनहानि, स्त्री–पुत्र कष्ट, व्यापारहानि, राजभय।
वृष	साढेसाती	ताम्र	हृदय	– – –	सुख–सम्पत्ति,व्यापार अच्छा, शारीरिक सुख एवं संतानपक्ष से सुख मिले।
मिथुन	साढेसाती	रजत	मस्तक	चढ़ती	व्यापार बढ़े, धन–धान्य–सम्पत्ति लाभ, प्रभाव बढ़े, राजनीति में लाभ व राजा से लाभ।
तुला	ढैया	ताम्र	– –	– – –	सुख–सम्पत्ति, व्यापार अच्छा, शारीरिक सुख, संतान सुख प्राप्त हो।
कुम्भ	ढैया	सुवर्ण	– –	– – –	निजीजनों से विरोध, शत्रु बढ़ें, गृहक्लेश, रोग से परेशानी, व्यर्थ में खर्च, धनहानि हो।

संवत् 2059 वि. में 23 जुलाई (सन् 2002 ई.) को पू.षा. नक्षत्र एवं धनुराशिस्थ–चन्द्र के समय शनिदेव मृगशिरा नक्षत्र के तीसरे चरण एवं मिथुनराशि में 7 घं. 57 मि. पर प्रवेश करेंगें एवं 8 जनवरी 2003 ई. तक मिथुनराशि में ही रहेंगे।

मिथुनराशिस्थ शनि की साढेसाती और ढैया का फल नीचे कोष्ठक में दिया गया है। नीचे कोष्ठक में जिन राशियों का निर्देश नही है, उनराशि वाले व्यक्तियों के लिए मिथुन राशिस्थ शनि की अवधि में साढेसाती और ढैया नहीं है ;– यह जान लें।

मिथुन राशिस्थ शनि की साढेसाती, ढैया

(23 जुलाई 2002 से 8 जनवरी 2003 ई. तक के लिए)

राशि	ढैया या साढेसाती	पाद	साढेसाती		फल
			किस अंग पर	चढ़ती या उतरती	
वृष	साढेसाती	लौह	पाद	उतरती	शरीरपीड़ा, रक्तविकार, पशुधनहानि, स्त्री–पुत्र कष्ट, व्यापारहानि, राजभय।
मिथुन	साढेसाती	ताम्र	हृदय	– –	सुख–सम्पत्ति,व्यापार अच्छा, शारीरिक सुख एवं संतानपक्ष से सुख मिले।
कर्क	साढेसाती	सुवर्ण	मस्तक	चढ़ती	निजीजनों से विरोध, शत्रु बढ़ें, गृहक्लेश, रोग से परेशानी, व्यर्थ में खर्च, धनहानि हो।
वृश्चिक	ढैया	रजत	– –	– –	व्यापार बढ़े, धन–धान्य–सम्पत्तिलाभ, प्रभाव बढ़े, राजनीति व राजा से लाभ।
मीन	ढैया	ताम्र	– –	– –	सुख–सम्पत्तिलाभ, व्यापार बढ़े, शारीरिक सुख, सन्तति सुख।

सं. 2059 वि. में 8 जनवरी सन् 2003 ई. को दिन में 13 घं. 52 मि. पर पू.भा. नक्षत्र एवं कुम्भस्थ चन्द्र के समय शनि (वक्र स्थिति में) पुनः वृषराशि में प्रविष्ट होगा और सं. 2059 वि. के अन्त तक वृषराशि में ही स्थित रहेगा।

वृषराशिस्थ शनि की साढेसाती–ढैया का फल आगे कोष्ठक में दिया जा रहा है। कोष्ठक में जिन राशियों का निर्देश नहीं है; उन राशि वाले व्यक्तियों के लिए वृषराशिस्थ शनि की कालावधि में (8 जनवरी 2003 ई. से संवत् के अन्त तक) साढेसाती–ढैया नहीं है।

शनि के (वक्रावस्था में) पुनः वृषराशि में [illegible] साढेसाती–ढैया विचार

(8 जनवरी 2003 ई. से संवत् 2059वि. के अन्त तक के लिए)

राशि	ढैया या साढेसाती	पाद	साढेसाती		फल
			किस अंग पर	चढ़ती या उतरती	
मेष	साढेसाती	सुवर्ण	पाद	उतरती	निजीजन एवं कुटुम्ब में विरोध, क्लेश–रोगभय धननाश हो।
वृष	साढेसाती	ताम्र	हृदय	– –	धनलाभ, कार्यक्षेत्र में प्रगति, स्त्री–पुत्रसुख,सम्पत्ति–लाभ, शारीरिक सुख रहे।
मिथुन	साढेसाती	रजत	मस्तक	चढ़ती	व्यापार वृद्धि, धन–धान्य–सम्पत्तिलाभ, प्रभावक्षेत्र बढे, मान बढे, मंगल कार्य हों।
तुला	ढैया	रजत	– –	– –	व्यापार वृद्धि, धनधान्य सम्पत्तिलाभ, प्रभावक्षेत्र बढ़े, मान सम्मान मिले, मंगल कार्य हों।
कुम्भ	ढैया	सुवर्ण	– –	– –	निजीजन एवं कुटुम्बजन विरोध, क्लेश, रोगभय, धननाश हो।

शनिजन्य नेष्टफल शान्त्यर्थ शनैश्चर स्तोत्र

पिप्पलाद उवाच–

"ॐ नमस्ते कोण–संस्थाय पिंगलाय नमोऽस्तु ते। नमस्ते बभ्रुरूपाय कृष्णाय च नमोऽस्तु ते।।
नमस्ते रौद्र – देहाय नमस्ते चांतकाय च । नमस्ते यम–संज्ञाय नमस्ते सौरये विभो ।।
नमस्ते मन्द – संज्ञाय शनैश्चर नमोऽस्तु ते । प्रसादं कुरु देवेश दीनस्य प्रणतस्य च ।।"

इस स्तोत्र को प्रातः पढने से साढेसाती व ढैया की दुःखद, पीड़ा नहीं होती, अनुभूत है।

गुरु के संचार का फल

गत संवत् 2058 वि. में 16 जून 2001 ई. को गुरु 7 घं. 26 मि. पर रेवती नक्षत्र एवं मीन राशिस्थ चन्द्र के समय मिथुन राशि में प्रविष्ट हुआ था। 5 जुलाई 2002 ई. तक गुरु मिथुन राशि में ही रहेगा, मिथुन राशिस्थ गुरु का फल नीचे कोष्ठक में देखें–

मिथुन राशि के गुरु का शुभाशुभ फल

(16 जून 2001 ई. से सं. 2059 वि. में 5 जुलाई 2002 ई. तक के लिए)

राशि→	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल↓	शारीरिक कष्ट	धनलाभ	भय	आधि–व्याधि	प्रगति	धनहानि	धनलाभ	धननाश	सम्मान	रोग	सुख	धनहानि

सं. 2059 वि में 5 जुलाई (सन् 2002 ई.) को 12 घं. 26 मि. पर भरणी नक्षण एवं मेष राशिस्थ चन्द्र के समय गुरु पुनर्वसु नक्षत्र के चतुर्थ चरण एवं कर्क (अपनी उच्चराशि)में प्रवेश करके संवत् 2059 वि. के अन्त तक कर्कराशि में ही रहेगा।

[illegible] राशि वाले व्यक्तियों के लिए निम्नांकित कोष्ठक में पढ़ें ;–

कर्क राशिस्थ गुरु का शुभाशुभ फल

(5 जुलाई सन् 2002 ई. से संवत् 2059 वि. के अन्त तक के लिए)

राशि→	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	अपमान	सौभाग्य	कलह	भय	विनाश	धनलाभ	कलह	दुःख	धननाश	राजभय	महासुख	धनक्षय

राहु के संचार का फल

गत संवत् 2058 वि. में 16 / 17 फर. (सन् 2002 ई.) को 24 घं. 36 मि. (भा. स्टैं. टा.) पर राहु वृष राशि में प्रविष्ट होकर संवत् 2059 वि. के अन्त तक वृष राशि में ही रहेगा।

वृष राशि के राहु का शुभाशुभ फल

(16 फरवरी 2002 ई. से सं. 2059 वि. के अंत तक के लिए)

राशि→	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	कलह	भय	विनाश	धनलाभ	कलह	दुःख	धननाश	राजभय	महासुख	धनक्षय	अपमान	सौभाग्य

अथ नवग्रह स्तोत्रम्

जपाकुसुम संकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम् । सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम् ।।
तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्।। नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम् ।
दधिशंखतुषाराभं क्षीरोदार्णव संभवम् । छायामार्त्तण्डसंभूतं तं नमामि शनैश्चरम् ।।
नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुटभूषणम् ।। अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम् ।
धरणीगर्भसंभूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम् । सिंहिकागर्भसंभूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम् ।।
कुमारं शक्तिहस्तं च मंगलं प्रणमाम्यहम् ।। पलाशपुष्पसंकाशं तारकाग्रहमस्तकम् ।
प्रियङ्गु कलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम् ; रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम् ।।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम् ।। इति व्यासमुखोद्गीतं यःपठेत्सुसमाहितः ।
देवानां च ऋषीणां च गुरुं काञ्चन–सन्निभम् । दिवा वा यदि वा रात्रौ विघ्नशांतिर्भविष्यति।।
बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम् ।। नर–नारी–नृपाणा च भवेत् दुःस्वप्ननाशनम् ।
हिमकुन्द – मृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम् । ऐश्वर्यमतुलं तेषामारोग्यं पुष्टिवर्धनम् ।।

आकाशी कौंसिल का विचार (सं. २०५६ वि.)

संसार की सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक स्थिति का ग्रहगोचर के आधार पर सर्वेक्षण

- संवत् का राजा एवं मन्त्री पद शनि को प्राप्त हैं, अनेकत्र अग्निकाण्ड, बम-विस्फोट एवं युद्धाग्नि से व्यापक क्षति के संकेत।
- धार्मिक-साम्प्रदायिक उलझनपूर्ण-समस्याओं से सरकार विशेष संकट में, सत्तारूढ़ नेताओं का मार्ग अधिक कठिन, विशिष्ट नेता के निधन से शोक।
- शासन की उदारवादी नीति किंवा बाह्य कम्पनियों के निवेश से आन्तरिक-व्यापार प्रभावित, बेरोजगारी एवं असन्तोष, परिणाम दूरगामी।
- पड़ौसी विरोधी देश से आतंकवाद को प्रोत्साहन गुप्तरूप से चले, कठोर पग उठाना पड़े, मुस्लिम देशों की स्थिति चिन्तनीय, आन्तरिक अशान्ति, कहीं प्रधानपद रिक्त हो।
- संवत् के आरम्भ से १८ मई तक सड़क, रेल, यानदुर्घटना से हानि, युद्धाग्नि गुप्तरूप से विषमरूप धारण करे।
- ४ जुलाई से ५ अक्तूबर (सन् २००२ ई.) तक एवं ७ जनवरी (सन् २००३ ई.) से संवत् २०५६ वि. के अन्त तक का समय विश्व के लिए विशेष कठिन, राजनैतिक हत्याकाण्ड, विस्फोट, विशिष्ट नेतृत्व को खतरा, सत्तापरिवर्तन।
- विभिन्न दलों से गठित केन्द्रीय सरकार का भविष्य, सत्तारूढ़दल एवं सहयोगीदलों का तालमेल कब तक ? राजनैतिकदलों के भविष्य एवं राजनैतिक गतिविधियों का सर्वेक्षण।

"संसार का प्रत्येक परमाणु एक निर्धारित नियम से विलग नहीं हो सकता। एक सूक्ष्मतम परमाणु में यदि तनिक भी अव्यवस्था किंवा अनुशासनहीनता आ जाए, तो विराट्ब्रह्माण्ड एकक्षण के लिए भी न टिक सके। एक क्षणिक विस्फोट से अनन्त प्रकृति अग्निज्वालाओं से अतिरिक्त कुछ न रहे," - यह नियामक विधान किसी अदृश्य सत्ता के अस्तित्व को प्रमाणित करता है। इसी प्रकार यह सम्पूर्णब्रह्माण्ड प्रभु के एक निश्चत विधान के अनुसार ही चल रहा है। इस विधान का साक्षात् कृतधर्माऋषियों ने जो अध्ययन व चिन्तन किया है, उसका परिणाम ही ' ज्योतिष ' है।

इस वेदांगरूप ज्योतिष को गुरु-शिष्य परम्परया आजतक जीवित रखा गया है।

" साक्षात्कृत धर्माण ऋषयो बभूवुः। तेऽवरेभ्योऽसाक्षात्कृतधर्मभ्य उपदेशेन मन्त्रान् सम्प्रादुः। उपदेशाय ग्लायन्तोऽवरे बिल्मग्रहणायेमं ग्रन्थं समाम्निषुर्वेदं वेदांगानि च।। " - भास्कराचार्यः ।

ज्योतिष के अनुसार ब्रह्माण्ड के सभी क्रयाकलाप ग्रहों द्वारा नियन्त्रित हैं। आकाश में जो भी ग्रहनक्षत्र हैं, उनसे यह पृथ्वी किंवा सम्पूर्णब्रह्माण्ड अप्रभावित नहीं रहते - यह ज्योतिष का एक मूलभूत सिद्धांत है। लेकिन सिद्धांत की प्रमाणिकता में सन्देह करना तो दुराग्रह ही है।

ज्योतिषशास्त्र के अनुसार कालात्मा सूर्य को सबग्रहों का प्रधान माना गया है। शुक्ल यजुर्वेद की इस ऋचा पर ध्यान दें-

"आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशन्नमृतं मर्त्यं च।
हिरण्येन सविता रथेनादेवो याति भुवनानि पश्यन्।।"

अर्थात्-सूर्यनारायण सम्पूर्ण भुवनों को देखते हुए परिभ्रमण करते हैं। सभी ग्रहों में एकमात्र सूर्यदेव ही तो हैं, जो प्रत्यक्षरूप से दृष्टिगोचर होते रहते हैं। सम्पूर्ण दिशाओं को प्रकाश देने वाला कालात्मा-सूर्य, स्थावर-जंगमजगत्, ग्रह, पृथ्वी, जल, वायु, आकाश किंवा समस्त भूचक्र का भेद जानता है। सूर्य की प्राकृतिक व्यवस्था में तनिक भी रूपान्तर होने से दिग्दाह, उल्कापात, भूकम्प, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, युद्ध, महामारी, अराजकता आदि उपद्रवों से संसार त्रस्त हो जाता है। अतः **स्पष्ट है, कि आकाशीय पिण्डों (ग्रहों) का विश्वजनीन घटनाचक्र से कुछ सम्बन्ध अवश्य है। इस तथ्य को वैज्ञानिक-विचारक एवं बुद्धिजीवियों का एक बड़ा वर्ग स्पष्ट स्वीकार करता है।**

बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में भौतिक ज्योतिष की अनेक शाखाओं का विकास हुआ है, जिनके आधार पर फलितशास्त्र की सत्यता के बारे में प्रमाण मिलते ही जा रहे हैं। सूर्य-कलंक-चक्रों, चन्द्रमा एवं ज्वारभाटा सम्बन्धी सिद्धान्तों के परिशीलन तथा ग्रहों के आकर्षण सिद्धांत की प्रक्रिया के आधार पर विवेचन करने से प्राणीशास्त्र-वनस्पतिशास्त्र एवं प्रकृति के प्रत्येक पहलु पर ग्रहों का प्रभाव सत्यसिद्ध हो चुका है। यही कारण है, कि - आजकल के वैज्ञानिक युग में पाश्चात्य एवं पूर्वीय सभी देशों में इस शास्त्र के प्रति आस्था प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही है। इस विषय में मिन्नेसोटा विश्वविद्यालय (अमेरिका) (University of Minnesota) में

डॉ. मार्कग्रोबार्ड (Dr. Mark Graubard) के तत्त्वाधान में हुए फलितशास्त्र सम्बन्धी शोध के परिणाम महत्वपूर्ण हैं। भारत सरकार ने वेदांग ज्योतिषशास्त्र के विश्वविद्यालयों में अध्ययन-अध्यापन में रुचि प्रदर्शित की लेकिन कुछ सांसदों ने इसे विवाद का विषय बना दिया और मामला सुप्रीम कोर्ट तक चला गया। यथार्थ बात तो यह है कि ज्योतिष शायद सबसे पुराना विषय है और एक अर्थ में सबसे ज्यादा उपेक्षित विषय भी। उपेक्षित इसलिए कि फलितशास्त्र में शोध के लिए शासन उपेक्षा भाव लिए है। मनुष्यजाति के इतिहास की जितनी भी खोज हो सकी है, उसमें ऐसा कोई भी समय नहीं था जबकि ज्योतिष मौजूद न रहा हो। इसलिए इसे पुरातनतम भी माना गया है।

विज्ञानकार्य-कारण के सिद्धांत पर ही आधारित है। परन्तु आज भी असंख्य घटनाएं ऐसी हैं, जिनका कारण समझने एवं समझाने में चोटी के वैज्ञानिक अपने आपको सर्वथा असमर्थ पा रहे हैं। सिद्धांतों के व्यभिचारमात्र से शास्त्र की वैज्ञानिकता का प्रतिवाद नहीं किया जा सकता। ज्योतिष चिरन्तन सत्य-सिद्धांतों पर आधारित एक विज्ञान है जिसमें अभी अत्यधिक अनुसंधान की आवश्यकता है।

ऋग्वेद में पचानवें हजार वर्ष पूर्व ग्रहनक्षत्रों का वर्णन उपलब्ध है। महर्षियों द्वारा प्रस्फुरित इस शास्त्र पर गुरु-शिष्य परम्परया चिंतन व संशोधन-संवर्धन होते रहे हैं। प्रत्येक ग्रह जब अपनी गतिस्थिति में अंतर लाता है, तभी विश्व का घटनाचक्र प्रभावित होता देखा गया है। इस पृथ्वी पर जो कुछ भी घटित होता अनुभव करते हैं, वह सब ग्रहों के वक्र-मार्ग आदि के ही परिणाम हैं। इस ग्रहगतिजन्य संकेत के आधार पर ही अपनी मति के अनुसार विश्व में जो भी प्रतिवर्ष घटित होता है, " **श्रीमार्त्तण्डपंचांग** " के माध्यम से प्रिय पाठकों के समक्ष उपस्थित करते हैं और यह इस प्रकाशन का ७५ वां गौरवपूर्ण वर्ष प्रारम्भ हो रहा है।

श्री वि. संवत् २०५६ की ग्रहस्थिति के अनुसार विश्वजनीन घटनाओं की भविष्यवाणी प्रस्तुत करने से पहिले हम अपने विद्वान्-प्रबुद्ध पाठकों का आभार व्यक्त कर देना उचित समझते हैं, जिन्होंने लगातार ७४ वर्षों तक हमारी भविष्यवाणियों का सही मूल्यांकन करके हमें आज ७५ वें वर्षप्रवेश पर भी इस बारे में कुछ लिखने को प्रोत्साहित किया है। पाठको ! आपका यह पंचांग अपनी सर्वांगशुद्ध गणित एवं आश्चर्यजनक भविष्यवाणियों के लिए भारत में ही नहीं, विदेशों में भी विश्रुत हो चुका है।

आपके इस लोकप्रिय पंचांग में प्रतिवर्ष प्रकाशित होने वाली आश्चर्यजनक अव्यभिचरित भविष्यवाणियों में साधारणवर्ग के व्यक्ति से लेकर **भारतरत्न श्री जवाहरलाल नेहरु, श्रीमती इन्दिरा- गांधी, प्रथम राष्ट्रपति डॉ.राजेन्द्र प्रसाद** एवं अन्य गण्यमान्य प्रतिष्ठित-ऐतिहासिक महापुरुषों की अभिरुचि रही है। आज भी यह पंचांग अपनी सफल आश्चर्यचकित कर देने वाली भविष्यवाणियों के कारण तथा ग्रहण आदि पंचांग-गणित की सूक्ष्मता एवं शुद्धि के कारण भारत में ही नहीं, विदेशों में भी लोकप्रिय है और भारत में अग्रणी स्थान प्राप्त कर चुका है।

भारत-पाक विभाजन, बंगलादेश का अस्तित्व में आना, श्री जवाहरलाल नेहरु, श्रीलाल- बहादुर शास्त्री, श्रीमती इन्दिरागांधी के शासन का अंत एवं मृत्यु की सूचना, भारत-पाक युद्ध, भारत-चीन युद्ध, विदेश में घटित होने वाले महत्वपूर्ण घटनाचक्र, समय-समय पर भारत की राजनीति में विशेष परिवर्तनों एवं अन्य घटनाचक्र की सूचना एवं ऐतिहासिक भूकम्प आदि की अव्यभिचरित भविष्यवाणियों के लिए यह पंचांग सम्पूर्ण भारत किंवा विदेशों में भी ख्यातनामा हो चुका है।

सं. २०५६ वि. की ग्रहस्थिति के आधार पर भावी घटनाओं पर विचार करने से पूर्व स्पष्ट कर देना उचित है, कि संवत् १९८४ से लेकर आजतक सभी स्तब्ध कर देने वाली भविष्यवाणियों की चर्चा करना तो स्थानाभाव के कारण संभव नहीं है। लेकिन गत एक-दो वर्षो की सफल भविष्यवाणियों की चर्चा करना प्रासंगिक समझते हैं, ताकि फलितशास्त्र की प्रामाणिकता को स्थापित किया जा सके।

सं. २०५४ वि. के पंचांग में जो भविष्यवाणियां आश्चर्यचकित कर देने वाली थीं,सभी की चर्चा करना तो सम्भव नहीं, लेकिन उनमें से कुछ प्रमुख भविष्यपाणियों की चर्चा कर देना युक्तिसंगत समझते हैं-

(१) प्रधानमंत्री देवगौड़ा जी के अपदस्थ होने की भविष्यवाणी- सं. २०५४ वि. के पंचांग के पृ. १६, कॉलम २, पर प्रकाशित पंक्तियां पढ़ें,-

" ध्यान दें - कि ५ फरवरी सन् १९९७ ई. को मंगल वक्री भी हो जाता है और १३ मार्च को शनि अस्त हो रहा है। यह ग्रहस्थिति सत्तारूढ़ मोर्चा सरकार के लिए पेचीदा है, इस अवधि में प्रधान नेता को विषम चक्रव्यूह से निकलना कठिन होगा, वैसे तो संवत् २०५४ वि. के प्रारम्भ के लगभग केन्द्र सरकार में विशेष परिवर्तन के योग हैं। "

पाठक जानते हैं कि ११ अप्रैल को देवगौड़ा सरकार भंग हो गई थी। २१ अप्रैल को श्री इन्द्रकुमार गुजराल जी नए प्रधानमंत्री बने।

(२) कांग्रेस पार्टी में श्रीमती सोनिया गांधी के प्रवेश का संकेत सं. २०५४ वि. के ही पंचांग में पृ. २०, कॉलम २ पर, **कांग्रेस शीर्षक** के अन्तर्गत स्पष्टरूप से निम्नांकित शब्दों में किया गया था, पढ़ें,-

" कर्मक्षेत्र (कन्याराशि) का स्वामी बुध होने से मीन के गुरु में किसी पुराने कांग्रेसी नेतृत्व-परिवार की मदद मिलने से पार्टी को पुनः चेतना मिलने का योग है।"

पाठक जानते हैं, कि ८ मई को श्रीमती सोनिया गांधी कांग्रेस में सम्मिलित हो गई।

(३) 'केन्द्रीय-सरकार' से कांग्रेस ने समर्थन वापिस लिया' परिणामस्वरूप शक्तिपरीक्षण असफल एवं पुनः देश राजनैतिक असंतुलन की ओर। पढ़ें - सं. २०५५ वि. के पंचांग में पृ. २५, कॉलम २, स्टैंजा १ की अन्तिम चार पंक्तियां -

"कांग्रेस आदि कुछ राजनैतिक दलों के अग्रणी नेता अपनी महत्वाकांक्षा किंवा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण केन्द्रीय-शासन सत्ता से कभी भी अलगाव की स्थिति पैदा करके देश में राजनैतिक संतुलन को बिगाड़ सकते हैं।"

इस भविष्यवाणी को और स्पष्ट करते हुए आगे लिखा था (पृ. २६, कॉलम १, स्टैंजा ४), -

"सत्ता से अलग प्रभावी पार्टी अपना हाथ खींच लेगी, परिणामस्वरूप प्रधानशासक ऐसे चक्रव्यूह में फंस जायेंगे, जहां से निकलना संभव न होगा और भारत का केन्द्रीय मंत्रिमण्डल शक्तिपरीक्षण में असफल सिद्ध होगा।" और पढ़ें, पृ. २६, कॉलम २, पंक्ति ७ से - **" १५ मई १९९८ ई. से पूर्व ही कोई प्रभावी पार्टी जनहित के नाम पर कांग्रेस ' संयुक्त मोर्चा' से समर्थन वापिस ले लेगी। "** - ठीक इसी प्रकार घटित हुआ और **'संयुक्त मोर्चा सरकार'** गिर गई।

(४) आसाम, गुजरात, महाराष्ट्र में भयंकर बाढ़ की भविष्यवाणी, पढ़ें - सं.२०५५ वि. में पृ. २६, कॉलम २, अंतिम स्टैंजा-

"इसी मध्य २७ जून से १० अगस्त तक मिथुन राशि के मंगल पर नीच शनि की विशेष दृष्टि है। इस अवधि में गुजरात, आसाम आदि प्रान्तों में कहीं प्राकृतिक प्रकोप से जनधनहानि, कहीं बाढ़, उत्तरी भारत में कहीं भयंकर अग्निकाण्ड व तूफान, भयंकर बाढ़ से हानि का योग है। आसाम-गुजरात महाराष्ट्र में भी भयंकर बाढ़ से हानि होगी।"

सं. २०५५ वि. के मार्त्तण्ड पंचांग पृ. २७ कॉलम २, पर निम्नांकित पंक्तियां पढ़ें:-

(५) गुजराल सरकार के गिर जाने की भविष्यवाणी -

"संयुक्त मोर्चा की कुण्डली के अनुसार इसवर्ष सत्तारूढ़ दल (संयुक्त मोर्चा) में संवत् के पूर्वार्ध में ही विशेष परिवर्तन आने के योग हैं। नवम्बर '९७ से संयुक्त मोर्चा पर अन्य प्रभावी दलों के प्रहार प्रारम्भ होंगे। घटकदलों में एकता कमजोर होगी और कांग्रेस द्वारा समर्थन छलावा सिद्ध होगा। संवत् २०५५ वि. के प्रारम्भिक मास गुजराल सरकार के लिए ऐतिहासिक घटना वाले सिद्ध होंगे।"

"श्री गुजराल जी की शपथ ग्रहणकालीन कुण्डली में शनि-मंगल का षडष्टकयोग एवं कर्मेश गुरु की नीच राशि में स्थिति ७ जनवरी १९९८ ई. से पूर्व इनके लिए विषम परिस्थितियों को जन्म देने वाली है। इस अवधि में संयुक्त मोर्चा सरकार की गतिविधि पर विशेष आक्षेप होंगे। कुछ पार्टियां अपनी अस्मिता को बनाए रखने के लिए स्वंतत्र सिद्धांतों के कारण विमुख होने लगेंगी। कांग्रेस अपनी कई शर्तें समक्ष रखेगी और इस प्रकार संवत् के पूर्वार्ध से भी पहिले ही गुजराल सरकार संकट को पार करने में असमर्थ अनुभव करेगी। कदाचित् शनि के मीन में आने पर (७ जनवरी के बाद) यह सरकार चलती है तो ४ अप्रैल से १४ मई तक तथा १६ नवम्बर से संवत् के अंत तक का समय सत्तारूढ़ पार्टी के लिए तथा प्रधान नेताओं के लिए विशेष घटनापूर्ण किंवा सत्ता से विलग होने वाला सिद्ध होगा।"

इस भविष्यवाणी की सत्यता पर हमें देश-विदेश से अनेकों पत्र प्राप्त हुए हैं और आज फलितज्योतिष पर आस्था न रखने वाले व्यक्ति भी ज्योतिषशास्त्र की प्रामाणिकता को स्वीकार करने लगे हैं। यह श्रीमार्त्तण्डपंचांग के लिए गौरव की ही बात है।

(६) सं. २०५५ वि. के पृ. २७ पर सत्तारूढ़ पार्टी 'भाजपा' के बारे में स्पष्ट लिखा था- पढ़ें अन्तिम पंक्तियां-

" राजनैतिक क्षितिज पर भाजपा का विस्तार होता नजर आएगा। आगामी निर्वाचनों में भाजपा पुनः एक सशक्त-प्रबल पार्टी के रूप में उभरेगी, लेकिन सत्ता प्राप्त करना एक प्रबल चुनौती होगी।"

भारत की राजनीतिक पार्टियों के प्रबल विरोध के बावजूद चुनौतीपूर्ण स्थिति में भाजपा सत्ता में आई एवं सशक्त-प्रबल पार्टी के रूप में भाजपा निर्वाचन में उभरी है ; यह सर्वविदित ही है।

सं. २०५६ वि. की अनेकों सफल भविष्यवाणियों में से कुछ अंश प्रस्तुत हैं -

(७) "काश्मीर-कारगिल में भयंकर युद्ध में हजारों वीर जवानों को शहीद होना पड़ा-" सं. २०५६ वि. में पढ़ें, पृ. २७ :-

"कुछ राष्ट्रों में युद्धभय व्याप्त होगा, जिससे पड़ौसी देश अनिवार्यतः उलझन में आ सकेंगे। लेकिन गुरु के राजा होने से अन्तर्राष्ट्रीय किंवा क्षेत्रीय हस्ताक्षेप से स्थिति नियंत्रण में आ सकेगी।"

ठीक, कारगिल की लड़ाई में अमेरिका के हस्ताक्षेप से पाकिस्तान का मनोबल कमजोर हुआ और भारत को यश प्राप्त हुआ।

(८) १७ अगस्त १९९९ में तुर्की में भूकम्प से १७ हजार व्यक्ति मरे एवं ४० हजार मरने की आशंका व्यक्त की गई -

सं. २०५६ वि., पृ. २६ पर "आर्यमान विचार" में कॉलम २ पर स्पष्ट लिखा था, कि-

"टर्की, लंका, जापान, अमेरिका व किसी मुस्लिमराष्ट्र में तूफान, चक्रवात, ज्वालामुखी विस्फोट किंवा कंही भयंकर प्राकृतिक विनाशलीला का दृश्य उपस्थित होगा।"

ठीक इस भविष्यवाणी के अनुसार २ मई को अमेरिका में भयंकर तूफान से भारी जनधनहानि हुई। ८ मई को इरान में भयंकर भूकम्प से विनाश एवं १७ अगस्त को तुर्की में प्रलयंकारी भूकम्प ने जो विनाशलीला उपस्थित की है, वह ऐतिहासिक है।

ध्यान दें,- हमारी उर्दू जन्त्री में अगस्त मास के संक्रान्ति फलादेश में तुर्की में भयंकर भूकम्प से विनाश की भविष्यवाणी ठीक १७ अगस्त को ही की गई थी। इस भविष्यवाणी पर राजनेता किंवा अन्य पाठक अवाक् रह गए।

इस आशय को स्पष्ट करते हुए संवत् २०५६ वि. के पंचांग में पृ. ३० पर, कॉलम २ की अंतिम पंक्तियों में लिखा था -

"संवत् के आरम्भ से २२ अगस्त तक कहीं अकाल की स्थिति बने। कहीं युद्धाग्नि से अशान्ति....कहीं प्राकृतिक प्रकोप से जनधनहानि भी होगी।"

पाठक जानते हैं, इसवर्ष अनेक प्रान्तों मे वर्षा की कमी से किसान चिन्तित रहे। काश्मीरक्षेत्र कारगिल में भयंकर युद्धाग्नि से अशांति रही एवं अमेरिका, इरानं एवं तुर्की में तूफान, भयंकर भूकम्पों से अत्यधिक जनधनहानि हुई है, जो कि उल्लिखित भविष्यवाणी की सफलता का निदर्शन है।

(९) सं. २०५६ वि. में पृ. ३० कॉलम १ में मुस्लिमदेश शीर्षक में जो लिखा गया है, अक्षरशः सत्य घटित हो चुका है ; पढ़ें -

भविष्यवाणी :- " पाकिस्तान की आर्थिक स्थिति उत्तरोत्तर विषम होती जाएगी, आतंकवाद बढ़ेगा। शासनसत्ता में परिवर्तन किंवा यहां लोकतांत्रिक सरकार के खतरे में पड़ जाने के योग हैं। पाकिस्तान के लिए यह संवत् भयंकर समस्याओं को लेकर आ रहा है। सिन्धप्रान्त में गृहयुद्ध जैसी स्थिति बनेगी- यह पुनः एक और विभाजन की तरफ बढ़ने लगेगा और पाकिस्तान में सैनिकशासन की संभावनाएं ग्रहगति के अनुसार प्रबल हो रही मालूम देती हैं।"

पाठको ! पाक की स्थिति इसी प्रकार है। पाक में सैनिकशासन चल रहा है।

(१०) ५ सितम्बर १९९८ ई. को लेखनीबद्ध की गई इन भविष्यवाणियों में से एक और आश्चर्यचकित कर देने वाली भारतीय राजनीति में सत्ता हथियाने की होड़ की भविष्यवाणी इस प्रकार की गई थी -

पढ़ें- सं. २०५६ वि. , पृ. ३२, कॉलम २ की अन्तिम पंक्तियां -

भविष्यवाणी :-"गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार २६ मई १९९९ ई. से पूर्व, राजनीतिक-परिस्थितियां कुछ इस प्रकार पेचीदा हो जाएंगी, कि सहयोगी दल (सत्तारूढ़ दल का) साथ न देंगे, तब विपक्ष के प्रधाननेताओं की सत्तालिप्सा विभिन्न सिद्धान्तों वाली पार्टियों से भी तालमेल करके सत्ता हथियाने को आतुर रहेगी, जिनमें कांग्रेस प्रमुख होगी। यह खेल २८ अगस्त सन् १९९९ ई. तक चल सकता है।"

यह आश्चर्यचकित कर देने वाली भविष्यवाणी अक्षरशः सत्य उतरी है। श्रीमती सोनिया जी ने सत्ता कांग्रेस को प्राप्त करने की नीति से भाजपा सरकार को अविश्वास प्रस्ताव से गिराया। विभिन्न सिद्धांतों वाली पार्टियां भी १६ अप्रैल के बाद सत्तालिप्सा में कांग्रेस के साथ हो गई, परन्तु सफलता हाथ न लगी। अन्ततः ५ सितम्बर को नए लोकसभा निर्वाचन कराने पड़े।

(११) १६ अप्रैल सन् १९९९ ई. को भाजपा सरकार के विरूद्ध अविश्वास प्रस्ताव पारित, भारत में एक आश्चर्यजनक परिवर्तन की भविष्यवाणी, पढ़ें - सं. २०५६ वि. में पृ. ३१, कॉलम १, पंक्ति २ के बाद -

भविष्यवाणी :- "गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार संवत् के आरम्भ में ही संवत् का रक्षामंत्री (क्रूरग्रह मंगल) वक्र हो रहा है और गुरु (शुभग्रह) संवत् के शुरु में ही अतिचारी हो रहा है। संवत् के प्रारम्भ से ही शनि-मंगल का समसप्तकयोग २२ अगस्त तक चलेगा,- यह समय केन्द्रीय शासनसत्ता के सामने विशेष समस्याओं को लाकर खड़ा कर देगा और सरकार को १६ अप्रैल १९९९ ई., तक इन समस्याओं को सुलझाना कठिन हो जाएगा, भारत की राजनीति में अविन्तित घटनाचक्र चलेगा। राजनीतिक पार्टियों में नए समीकरण बनेंगे। तोड़-फोड-जोड़ की नीति प्रबल होगी और सत्तारूढ़दल के घटक (सहायक) दल छिटकने लगेंगे, कोई आश्चर्य नहीं यदि इस अवधि में कोई विशेष राजनीतिक परिवर्तन हो जाए।"

भारत की जनता १६/१७ अप्रैल को भाजपा सरकार के गिर जाने से आवाक् रह गई। इस प्रकार भारत में एक विशेष राजनैतिक परिवर्तन आया। इस भविष्यवाणी की सफलता पर देश-विदेश से जिन महानुभावों एवं राजनीतिज्ञों ने प्रशंसापत्र भेजे हैं, हम उनके आभारी हैं।

(१२) सं. २०५६ वि. के पंचांग में पृ. ३१, कॉलम २, संदर्भ ३ में अगस्त से अक्तूबर तक **राजनैतिकदलों में शक्तिपरीक्षण (निर्वाचन) की भविष्यवाणी** भी कम आर्श्चजनक नहीं -

भविष्यवाणी :- "२३ अगस्त को मंगल वृश्चिक राशि में आकर शनि-गुरु के साथ षडष्टकयोग बनाएगा। अगस्त से अक्तूबर तक की ग्रहस्थिति के अनुसार केन्द्रीय शासन पुनः शक्तिपरीक्षण की ओर बढ़ने लगेगा, राजनैतिक अस्थिरता अनुभव होगी और विभिन्न राजनैतिक दल निर्वाचन संग्राम में कूदने का मन बना लेंगे।"

इस भविष्यवाणी के अनुसार ५ सितम्बर को लोकसभा निर्वाचन की घोषणा कर दी गई, और तदनुसार निर्वाचन हुए।

११-१२-९९ ई. को क्रोशिया के राष्ट्रपति का निधन, १२-१२-९९ ई. को रोमानिया का प्रीमियर अपदस्थ, १४-१२-९९ ई. को सूडान की पार्लियामेंट भंग, १६-१२-९९ ई. को इटली के प्रधानमंत्री का त्यागपत्र।

भविष्यवाणी :-"मार्गशीर्ष शुक्लपक्ष ८ से २२ दिसम्बर के मध्य कुछ राष्ट्रों की शासन- सत्ता में परिवर्तन हो।" (पढ़ें- सं. २०५६ वि. पृ. ११७),

(१३) **२६ जुलाई (२००० ई.) को फिजी में सत्ता पलट, आन्तरिक हिंसा -**

भविष्यवाणी :- " इसवर्ष सं. २०५७ वि. का राजा बुधग्रह अतिचारी होकर कुछ क्रूर ग्रहों के साथ सम्बन्ध करेगा, संवत् का मंत्री भी मेषराशि में शनि-मंगल एवं आगे सारा साल अपने शत्रुग्रह शुक्र की राशि वृष में शनि के साथ ही मौजूद रहेगा, अतः बुध शुभ होकर भी विश्व के कुछ राष्ट्रों को भयानक एवं अशान्तिप्रद निर्णय लेने को मजबूर करेगा, गुरु ग्रह शत्रुक्षेत्र में क्रूर- शनि के साथ होने से अपना दायित्व ठीक ढंग से नही निभा सकेगा।... कहीं आन्तरिक अशांति व क्रांति से सत्तापरिवर्तन होगा व कहीं सेना द्वारा सत्ता का हथियाना संभव है।" (पढ़ें- श्रीमार्त्तण्डपंचांग सं. २०५६ वि., पृ. २२, कॉलम १)

(१४) **१२-१०-९९ ई. को नवाज़ शरीफ का तख्ता पलट-**

भविष्यवाणी :-" पाकिस्तान में नवाज़शरीफ जी के खिलाफ बगावत होकर संवत् २०५७ वि. के प्रारम्भ से पूर्व ही सत्ता से च्युत हो जाने का योग है। आगे सिन्धप्रान्त में स्थिति विकट होती जायेगी, जो कि आन्तरिक क्रान्ति का रूप आगामी वर्षों में धारण करके पृथक् तंत्र की मांग करेगी। लोकतंत्र खतरे में पड़ेगा, सेना का अधिक दबदबा संभव है।" (पढ़ें- श्रीमार्त्तण्डपंचांग सं. २०५७ वि., पृ. २४ कॉलम २)।

(१५) **१४-०८-२००० ई. को रूसी पनडुब्बी समुद्र में डूबी,** ११८ अधिकारी मरे, २३-०८-२००० ई. को गल्फ एअर लाईन्स का हवाई जहाज ध्वस्त। १-०८-२००० ई. को हि.प्र. में वर्षा व बादल फटने की घटना से १५० व्यक्ति मारे गए। महाराष्ट्र, आन्ध्रप्रदेश एवं गुजरात में भी जुलाई/अगस्त में बाढ़ से जन-धनहानि के समाचार प्रकाशित हुए हैं।

भविष्यवाणी :- "२२ जुलाई से सितम्बर के प्रथम सप्ताह के लगभग यान दुर्घटना किंवा भयंकर बाढ़ आदि प्राकृतिक प्रकोप से जनधनहानि के समाचार मिलेंगे।" (सं. २०५७ वि., पृ. २३, कॉलम २)।

(१६) **भूतपूर्व यूनियन मिनिस्टर श्री राजेशपायलट की दुर्घटना में ११ जून २००० ई. को मृत्यु।**

भविष्यवाणी :- "नववर्षप्रवेश कुण्डली में भारत की प्रभावराशि-मकर में केतु एवं प्रभावराशीश शनि-मंगल एवं गुरु के साथ अपनी नीचराशि मेष में स्थित है। नववर्षेश-कुण्डली 'कालसर्प योग' से प्रभावित है। दक्षिण में किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति के निधन से शोक व्याप्त हो। भारत के प्रतिष्ठित नेताओं को अपनी सुरक्षा-व्यवस्था को सुदृढ़ कर लेना चाहिए, अन्यथा अकस्मात् दुर्घटना किंवा राजनैतिक दृष्टिकोण से जीवन को खतरा बनेगा।" - (सं. २०५७, पृ. २५, कॉलम १)।

सब जानते हैं, कि श्री राजेश पायलट जी की Z प्लस सुरक्षा कुछ सप्ताह पूर्व ही उठाई गई थी। यदि सुरक्षा पंक्ति रहती तो इस दुर्घटना मे बचने की संभावना थी।

(१७) **आन्ध्रप्रदेश में अगस्त २००० ई. में बाढ़ से भारी विनाश हुआ,** एवं अगस्त में 'अमरनाथ यात्रा ' के समय उत्तराखण्ड के पर्वतीय भूभाग पर भूस्खलन-जलप्लाव से हानि भी हुई।

भविष्यवाणी :- " जून से अगस्त तक कहीं भयंकर बाढ़, उत्तराखण्ड व पर्वतीय भूभाग पर किंवा उत्तरी भारत में जलप्लाव से भयंकर जनधनहानि के संकेत मिलते हैं।" (सं. २०५७ वि., पृ. २७, कॉलम २)।

(१८) गतवर्ष अक्तूबर में लोकसभा निर्वाचन में राष्ट्रीय जनतांत्रिक मोर्चा को सरकार बनाने का अवसर मिला।

भविष्यवाणी :- "निर्वाचनकालीन गोचरग्रहस्थिति के अनुसार 'राष्ट्रीय जनतांत्रिक मोर्चा' सरकार बनाने की स्थिति में आ सकेगी।" (सं. २०५७ वि. पृ. २८, कॉलम १)।

(१९) काश्मीर में उग्रवादियों की गतिविधियां तीव्र -

भविष्यवाणी :- "यहां (काश्मीर में) स्थिति गंभीर बनेगी। पाक की कुनीति से सीमाप्रान्तों पर अशान्ति रहे। कुपवाड़ा, अनन्तनाग एवं श्रीनगर में उग्रवादियों की गतिविधियां तीव्र होंगी।" (सं. २०५७ वि., पृ. २८, कॉलम २)।

(२०) सं. २०५७ वि. के पंचांग में की गई भविष्यवाणियों के आकलन करने पर २६ जनवरी २००१ ई. को गुजरात में आने वाले भूकम्प का उल्लेख आश्चर्य चकित कर देने वाला था;-

भविष्यवाणी :- "१३ दिसम्बर को मंगल तुला में आकर २ फरवरी सन् २००१ ई. तक शनि के साथ षडष्टकयोग बनाएगा। उसके बाद ३ फरवरी से संवत् के अंत तक शनि-मंगल का समसप्तकयोग बना रहता है। यह ग्रहस्थिति विश्व में अघटित घटनाचक्र का आभास कराती है। किसी राष्ट्रविशेष में भूकम्प, जलप्लाव आदि प्राकृतिक प्रकोप से जनधनहानि होगी।" (देखें- श्रीमार्त्तण्डपंचांग सं. २०५७ वि., पृ. २८, कालम १)।

भुज, अहमदाबाद आदि गुजरात के गांवों में भूकम्प से बहुमंजली बिल्डिगें धाराशायी हो गईं, लाखों लोग बेघर हुए, लाखों कालकवलित हो गए। रुक-रुक कर फरवरी २००१ ई. तक भूकम्प के झटके आते रहे।

(२१) भाजपा की वरिष्ठ सदस्या 'श्रीमती विजयराजे सिन्धिया' के निधन से शोक व्याप्त-

भविष्यवाणी :- " माघकृष्ण चतुर्थी शनिवार की होने से ... किसी विशिष्ट व्यक्ति की मृत्यु से शोक व्याप्त हो।" - (श्रीमार्त्तण्डपंचांग सं. २०५७ वि., पृ. १३०, लोकभविष्य)।

माघमास में १३ प्रविष्टे (२५ जनवरी २००१ ई.) को राजमाता जी के स्वर्गवास से सारे देश में शोक व्याप्त रहा।

(२२) 'तहलका धमाका' ने भारतीय शासनतन्त्र को हिला दिया।

भविष्यवाणी :- "स्वतंत्र भारत के ५४ वें वर्ष की ग्रहस्थिति के अनुसार लग्नेश मंगल की भाग्यस्थान में नीच स्थिति एवं व्ययेश शुक्र की कर्मस्थान में स्थिति, शनि-मंगल की चतुर्थभाव पर एक साथ दृष्टि भारत की केन्द्रीय शासनसत्ता को अजीब स्थिति में लाकर खड़ा कर देगी। जिससे हमारी धर्मनिरपेक्षता एवं सशक्त-शासनसत्ता को गहरी चोट पहुंचेगी।" (संवत् २०५८ वि.)

उल्लिखित भविष्यवाणी के आधार पर जून में ही 'तहलका धमाका' सशक्त शासनसत्ता को गहरी चोट पहुंचाई, परिणामस्वरूप रक्षामन्त्री श्री जार्ज फर्नाण्डीज और भाजपा प्रधान श्रीलक्ष्मण जी को पदत्याग के लिए बाधित होना पड़ा।

(२३) प्रधानमन्त्री 'श्री अटलबिहारी बाजपेयी जी द्वारा इस्तीफे की पेशकश की :-

भविष्यवाणी :- " १० जून को मंगल वक्री पोजीशन में रहता हुआ फिर से वृश्चिक राशि में आकर शनि के साथ समसप्तकयोग बना लेगा; २५ अगस्त तक यह योग अघटित-घटनाओं को जन्म देगा।.....यदि केन्द्रीय शासनसत्ता ने दूरदर्शिता किंवा कूटनीति से काम न लिया तो आगे हालात विघटक व कोई भी करवट ले सकते हैं। २४ दलों के आश्रित खड़ी इस सरकार के लिए यह समय अग्निपरीक्षा का ही होगा।" (सं.२०५८ वि.)

ठीक इस भविष्यवाणी के अनुसार प्रधानमन्त्री श्री अटलबिहारी वाजपेयी जी ने प्रधानमन्त्री पद से ICICI के शेयर घोटाले में मिथ्या ही कुछ सांसदों द्वारा नाम उछालने के कारण त्यागपत्र की पेशकश की, लेकिन केन्द्रीय मन्त्रिमण्डल की दूरदर्शिता एवं प्रधानमन्त्री जी की कूटनीति के परिणामस्वरूप स्थिति पुनः संभल गई; वस्तुतः यह समय सरकार के लिए अग्निपरीक्षा का ही था।

(२४) काश्मीर, आसाम, बिहार आदि में आतंकवादियों द्वारा विध्वंसक कारवाई सरकार के लिए गंभीर चिन्ता का कारण बनी :-

भविष्यवाणी :- " पाक द्वारा पोषित आतंकवादियों को (इस संवत् २०५८ में) भारत को अपनी सशक्ता का भान कराने को मजबूर होना ही पड़ेगा। भारत की प्रभावराशि मकर का अतिक्रमण करके यूरेनस का कुम्भ राशि में पदार्पण भारत के लिए आर्थिक दृष्टि से शुभ है। लेकिन राहु-मंगल का परस्पर समसप्तकयोग कुछ आन्तरिक समस्याओं को जन्म देगा। इस समय सीमा पार से घुसपैठियों, आतंकवादियों व विध्वंसक तत्त्वों से निपटने के लिए भारत की गुप्तचर व्यवस्था को चुस्त-दुरुस्त रखना होगा, अन्यथा राजस्थान के बाड़मेर-जैसलमेर क्षेत्र में अन्तर्राष्ट्रीय सीमा पर एवं बिहार के साथ ही केरल तथा पश्चिमी बंगाल में तथा काश्मीर, आसाम में शत्रुदेश की कुनीति से अनेक प्रकार के विस्फोट आदि से जनधनहानि सरकार के लिए गंभीर चिन्ता का कारण बनेगी।" (देखें-श्रीमार्त्तण्डपंचांग , सं. २०५८ वि., पृ. २८, कॉलम २ , अन्तिम पहरा)।

ठीक इस भविष्यवाणी के मुताबिक पाक द्वारा पोषित तालिबानी उग्रवादियों का संहार करने एवं अपनी सशक्ता का भान कराने के लिए अन्ततः अमेरीका के साथ मिलकर सक्रिय पग उठाना ही पड़ा। काश्मीर एवं सीमाप्रान्तों पर आतंक (उग्र) वादियों ने हजारों निरपराध लोगों की हत्या कर दी और कर रहे हैं; यह सब जानते ही हैं।

(२५) ताइवान में भूकम्प, फिलीपाइन के होटल में आग एवं उड़ीसा में बाढ़ :-

भविष्यवाणी :- " आषाढ़ चान्द्रमास में (७ जून से ५ जुलाई तक) पांच गुरुवार हैं, साथ ही १० जून को मंगल वक्री पोजीशन में (उल्टा चलता हुआ) फिर से वृश्चिक राशि में दाखिल होकर शनि के साथ समसप्तकयोग बनाएगा। २५ अगस्त तक इस योग का प्रभाव नेष्ट रहेगा। विश्व के कुछ राष्ट्रों में अघटित घटनाचक्र चलेगा। मुस्लिमराष्ट्रों एवं यूरोप के कुछ राष्ट्रों में कहीं आन्तरिक संघर्ष, भयंकरबाढ़, भूकम्प-प्राकृतिक प्रकोप से भयंकर जनधनहानि के योग हैं। एशिया के कुछ देशों में भयंकर बाढ़ आदि से कहीं दुर्भिक्ष की स्थिति बनेगी।

(देखें- श्रीमार्त्तण्डपंचांग संवत् २०५८ वि., पृ. २५, कॉलम २, लाईन ४ से ६ तक)।

पाठक जानते हैं, कि ३१ अगस्त को ताइवान में भूकम्प, १६ अगस्त को फिलिपीन्स के होटल में आग एवं २० अगस्त को उड़ीसा में भारी बाढ़ से कितनी तबाही हुई है।

(२६) सांसद श्रीमती फूलन देवी का निधन :-

भविष्यवाणी :- "१० जून को मंगल वक्री पोजीशन में रहता हुआ, फिर से वृश्चिक-राशि में आकर शनि के साथ समसप्तकयोग बना लेगा। २५ अगस्त तक यह योग ,अघटित घटनाओं को जन्म देगा। अगस्त तक कहीं यान-दुर्घटना से हानि, किंवा किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति की आकस्मिक हत्या व निधन से शोक व्याप्त होगा।"

(श्रीमार्त्तण्डपंचांग सं. २०५८ वि., पृ. २६, कॉलम १ पर पढ़ें)।

पाठक जानते हैं, कि - २६ जुलाई को किसी अज्ञात व्यक्ति ने भारतीय महिला सांसद फूलन देवी की नृशंस हत्या कर दी थी एवं सर्वत्र शोकमय वातावरण बन गया था।

(२७) भारत के प्रबुद्ध सांसद, कांग्रेस के वरिष्ठनेता, एवं ग्वालियर के राजा श्री माधवराव सिन्धिया का वायुयान दुर्घटना में निधन :-

भविष्यवाणी :- "२६ अगस्त को मंगल धनु राशि में आकर शनि के साथ षडष्टकयोग बनाता है। यह योग १७ अक्तूबर तक प्रभावी रहेगा। अगस्त-सितम्बर में यानदुर्घटना में जनधनहानि, बाढ़, भूकम्प आदि प्राकृतिक प्रकोप से हानि एवं किसी नेता का पद रिक्त होने का योग है।

ठीक ३० सितम्बर २००१ ई.को वायुयान दुर्घटना में भारत के जनप्रियनेता श्रीमाधवरावसिंधिया के निधन के समाचार ने सभी राजनीतिज्ञों-नेताओं को एवं जनता को शोकसन्तप्त कर दिया।

इसी भविष्यवाणी के अनुसार ठीक २ सितम्बर को श्री लंका, रूस एवं हिन्दमहासागर-क्षेत्र में भूकम्प भी आया था :- इन सभी भविष्यवाणियों कों पढ़कर, फलितज्योतिष पर जनता की आस्था सुदृढ़ हुई है।

(२८) " आत्मघाती उग्रवादियों द्वारा अमेरीका पर 'विश्व का सबसे बड़ा हवाई हमला'- विश्व स्तब्ध"

भविष्यवाणी :- "वर्षेश चन्द्र का शुक्र के साथ समभाव है, लेकिन वर्ष के मंत्री शुक्र का वर्षेश चन्द्र के साथ शत्रुभाव होने से संकेत मिलता है, विश्व के राष्ट्रसमुदाय में से किसी देश का कोई राजनीतिज्ञ अपनी हठधर्मिता एवं अविमृश्यकारिता से विश्व के किसी देश-विशेष की शान्ति को भंग करेगा, जिससे विश्व का घटनाचक्र प्रभावित हुए बिना नहीं रहेगा। इसवर्ष मुस्लिम- समुदाय का कोई राष्ट्र अपनी कुनीति के कारण .... देशों में युद्ध का सूत्रपात करेगा; अपने उग्रवादी-समुदाय द्वारा मुस्लिमराष्ट्र प्रच्छन्नरूप से कुछ राष्ट्रों में वातावरण को अशांत करेंगे।" (श्रीमार्त्तण्डपंचांग सं. २०५८ वि. पृ., २४, कॉलम १, लाईन १२ से १८ तक); साथ ही श्रीमार्त्तण्डपंचांग सं. २०५८ वि. के पृ. २४ पर और भी स्पष्ट किया गया था :-

"इसवर्ष गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार विश्व के कुछ मुस्लिम राष्ट्रों में आन्तरिक क्रान्ति, अशांति एवं युद्ध की संभावना भी बनती है। जगत् लग्न कुण्डली में केन्द्र में क्रूरग्रह होने से मेष, वृष, मिथुन, कन्या, कुम्भ, मीन प्रभावराशि वाले देश विशेष प्राकृतिक प्रकोप एवं राजनैतिक घटनाक्रम किंवा हत्याकाण्ड, विस्फोट, ज्वालामुखी विस्फोट आदि की घटनाओं के लिए विशेष चर्चित रहेंगे। पाक, जापान, चीन, रूस, अफगानिस्तान, अमेरीका, कम्बोडिया, इराक, इरान, साइप्रस, पोलैण्ड, आयरलैण्ड, नॉर्वे आदि राष्ट्रों में विशेष घटनाएं घटित होंगी।"

ठीक, उपरोक्त भविष्यवाणी के अनुसार अफगानिस्तानी लाडेन आदि उग्रवादियों के संकेत पर आत्मघाती उग्रवादियों द्वारा विमानों से अमेरीका के दो टावर (वर्ल्ड ट्रेड सैंटर) एवं पैंटागन (सैनिक- मुख्यालय) पर हमला कर देने से अरबों रुपऐ की सम्पत्ति का नाश एवं लगभग २५ हजार से भी अधिक व्यक्ति कालकवलित हो गए।

(२६) 'मुस्लिम-देश' - शीर्षक में पाकिस्तान आदि मुस्लिमराष्ट्रों की जो स्थिति ग्रहस्थिति के अनुसार लिखी थी, तदनुसार ही घटनाचक्र चल रहा है;-(पढ़ें- श्रीमार्त्तण्डपंचांग सं. २०५८ वि., पृ. २६, कॉलम २ पर) ।

भविष्यवाणीः- "२६ अगस्त से १७ अक्तूबर तक मंगल-शनि का षडष्टकयोग एवं ४ अप्रैल २००२ ई. से संवत् के अन्त तक की ग्रहस्थिति मुस्लिमराष्ट्रों के लिए विशेष भयावह प्रतीत होती है। ग्रहस्थिति के अनुसार पाकिस्तान में उदारवादी लोकतंत्र की स्थापना शीघ्र संभव नहीं है। पाकिस्तान सर्वाधिक असहिष्णु कट्टर-पन्थी, धर्मान्धदेश के रूप में जाना जाएगा। कट्टरपन्थी- मुल्लाओं से वर्तमान शासक स्वतः तंग आ जाएंगे, इसका दुष्परिणाम पाकिस्तान की आम जनता को भी भोगना होगा।। पाक की आर्थिक स्थिति बहुत ही चिन्तनीय हो जाएगी, जनता का आक्रोश सेना प्रमुख वर्तमान शासक के लिए गंभीर समस्या बन जाएगा। पाक स्वयं आतंकवाद की आग से झुलसने लगेगा। गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार पाकिस्तान को १३ दिसम्बर २००१ ई. से २३ जून २००२ ई. तक भारी दुर्घटनाओं, राजनीतिक उलझनों एवं प्रशासनिक दिक्कतों का सामना करना पड़ेगा। इसके बाद यहां प्रशासनिक परिवर्तन होंगे। अफगानिस्तान, ... में आतंकवाद पनपेगा एवं पड़ौसी देशों के लिए भी संकट पैदा होगा।"

इस भविष्यवाणी की सत्यता पाठक स्वयं अनुभव कर रहे हैं, आगे भी उल्लिखित भविष्यवाणी के अनुसार ठीक इसी प्रकार घटित होता अनुभव हो रहा है।

इस प्रकार प्रतिवर्ष अनेकों आश्चर्यचकित करदेने वाली अव्यभिचरित भविष्यवाणियों की सफलता का श्रेय ७४ वर्षो से आपके इस लोकप्रिय पंचांग को प्राप्त होता आ रहा है। सभी सफल भविष्यवाणियों का उल्लेख / चर्चा स्थानाभाव के कारण यहां संभव नहीं।

पाठको, श्री मार्त्तण्ड पंचांग के माध्यम से की गई या की जा रही भविष्यवाणियों की सफलता का श्रेय जो आप हमें दे रहे हैं, वह सब पूर्वाचार्यो एवं ज्योतिषशास्त्र के मर्मज्ञ गुरुचरणों की कृपा ही है या जनता जनार्दन के सौहार्द का परिणाम। हम उन पाठकों के भी आभारी हैं, जो विभिन्न प्रान्तों से पत्राचार द्वारा भविष्यवाणियों की सफलता पर बधाई भेजकर हमें भावी वर्षो में ग्रहगतिजन्य संकेतों के आधार पर कुछ न कुछ लिखने के लिए प्रेरित करते रहते हैं।

सं. २०५६ वि. की ग्रहपरिषद् के अधिकारियों का विश्व पर प्रभाव

ग्रहों की प्रभाव-परिधि में ही विश्व का घटनाचक्र अहर्निश चलता रहता है; - "ग्रहाधीना नरेन्द्राणामुच्छाया पतनानि च।" जिसतरह पृथ्वी पर लोकतांत्रिक राज्य की स्थापना के लिए प्रधानमंत्री आदि के चुनाव होते हैं और उन निर्वाचित व्यक्तियों के गुण-कर्म स्वभाव-योग्यता का प्रभाव उनके अधिकृत क्षेत्रों पर पड़ता है, इसी प्रकार अखिलेश्वर प्रभु की इच्छा से निर्मित आकाशीय शिशुमार चक्रस्थ ग्रहों की परिष्द् में संसारचक्र को चलाने के लिए प्रतिवर्ष दिव्य एवं अद्भुत शक्तिमती आकाशीकौंसिल का निर्माण होता है। इस आकाशीय कौंसिल में ग्रहों की शुभाशुभ प्रकृति के अनुकूल संसार में जो उलटफेर एवं अघटित घटनाएं होती हैं, उन्हें अपनी तुच्छमति के अनुसार

त्रिकालज्ञ दैवज्ञों द्वारा लिखित ग्रन्थों के आधार पर वि. सं. २०५९ के घटनाचक्र के बारे में कुछ लिखने की चेष्टा कर रहे हैं।

इस वर्ष (विक्रमी संवत् २०५९) की 'ग्रहपरिषद' में ८ पद (अधिकार) **क्रूर ग्रहों को एवं दो पद सौम्यग्रहों को प्राप्त हुए हैं। इस संवत् के राजा एवं मन्त्री दोनों पद महाक्रूर एवं दलितवर्ग के प्रतिनिधि ग्रह-'शनि' को ही प्राप्त हैं।** इसके अतिरिक्त मेघेश (मौसम, वर्षा-पानी का स्वामित्व) भी शनिग्रह के ही अधिककारक्षेत्र में आता है। स्पष्ट है, कि- महत्वपूर्ण तीन पद महाक्रूर ग्रह-शनि के अधिकार क्षेत्र में हैं। २२ जुलाई २००२ तक शनि वृषराशि (मित्र ग्रह की राशि) में ही संचार करता रहेगा। संवत् का राजा शनि होने से संवत् का वाहन महिष (भैंसा) है। सारे संवत् (२०५९ वि.) में शनि की दृष्टि पूर्व दिशा की तरफ ही रहेगी। अतः संकेत मिलता है, कि पूर्वी गोलार्धस्थित देशों एवं प्रान्तों में कहीं राजनैतिक-अस्थिरता, समुद्री तूफान, किसी देश विशेष में राजनीतिक हत्याकाण्डों से अशान्ति एवं सत्तापरिवर्तन हो। कुछ मुस्लिम-यूरोपीय देश युद्धाग्नि में कूदेंगे, विश्वजनीन शान्ति को खतरा पैदा होगा। मुस्लिम देशों में विशेष अशान्ति, किसी प्रतिष्ठत यावनदेश में आन्तरिक अशान्ति से प्रधान नेता को गंभीर परिस्थिति का सामना करना होगा किंवा राजनीति से प्रेरित बमविस्फोट आदि काण्ड में प्रधान शासक की हत्या का प्रयास, सत्ता हस्तान्तरण का भी योग बनता है।

इसवर्ष पूर्वी एवं दक्षिण दिशाओं में स्थित प्रान्तों एवं देशों में भयंकर अग्निकाण्ड, कहीं भयंकर रेल व वायुयान दुर्घटना, दुर्भिक्ष किंवा भूकम्प आदि प्राकृतिक-प्रकोप से भारी जनधन हानि के योग हैं। जून से सितम्बर के मध्य का समय ग्रहगत्यनुसार विशेषरूप से भयावह प्रतीत होता है। इस अवधि में किसी विशेष राजनीतिज्ञ के निधन से शोक व्याप्त होगा।

ग्रह परिषद् में इस वर्ष सुरक्षा-प्रतिरक्षा का स्वामित्व वर्षेश-शनि के मित्रग्रह- शुक्र को उपलब्ध हुआ है, साथ ही शुक्र को फलफूल जड़ीबूटी आदि का स्वामित्त्व (फलेशत्व) भी प्राप्त है। दुर्गेश शुक्र का फल शास्त्रों में इस प्रकार लिखा है ;-

" नगर-देशविशेषपतिर्यदा भृगुसुतो बहुसौख्यकरो मतः।
विनय-वाणिज गेहसमः सुखो नग-वने निकटेऽपि च दूरतः।।"

शुक्र के दुर्गेश होने से विभिन्न देशों से सामरिक एवं व्यापारिक-सम्बन्ध दृढ़ होंगे। शस्त्रास्त्र-क्रय विक्रय सम्बन्धी अनेक प्रकार की सन्धियों से भारत लाभान्वित होगा। सैन्यबल-समृद्ध एवं प्रबल-मनोबल वाला होगा ;- ऐसा संकेत मिलता है। पुनरपि वर्षेश शनि एवं वर्ष के प्रधान अमात्य पद पर शनि के होने से एवं दुर्गेश-शुक्र होने पर कुछ मुस्लिम-राष्ट्रों के साथ युद्ध विभीषिका का माहौल बने। ईराक-अफगानिस्तान-लीबिया एवं पाकिस्तान के साथ विश्व के कुछ प्रमुख राष्ट्रों की भूमिका उग्रवाद के विरुद्ध पग उठाने से कठोर एवं युद्धपरक ही रहेगी।

इस संवत् का धनेश चन्द्र होने से विश्व के कुछ देशों में भारी आर्थिक उथल-पुथल होगी। अमेरीका आदि प्रमुख समृद्ध देश में भी यूरो करंसी के प्रसार से किंवा व्यापारिक वैश्वीकरण से भारी परिवर्तन होंगे। कुछ प्रमुख देशों की आर्थिक स्थिति भी प्रभावित होगी। कुछ नकली करंसी का धंधा करने वाले भी पकड़ में आएंगे। इस प्रकार आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष विशेष सावधानी एवं उथल-पुथल वाला मालूम देता है।

सं. २०५९ वि. के चार स्तम्भों के विचार से यह वर्ष विशेष स्वस्थ-समृद्ध प्रतीत नहीं होता। इस- वर्ष जलस्तम्भ ९ प्रतिशत एवं तृणस्तम्भ का आभाव है। विश्व के कुछ देश, प्रान्त आन्तरिक अशान्ति-दुर्भिक्ष किंवा राजनीतिक शत्रुताजन्य प्रतिबन्धों के फलस्वरूप अकालग्रस्त व अभावग्रस्त होंगे, भुखमरी से स्थिति दयनीय होगी। खाद्यान्न वस्तुओं का अभाव रहेगा। पशुधन भी इस अभाव से प्रभावित होगा। पूर्व-दक्षिणवर्ती भूभाग पर अकाल की छाया विशेष होगी, यहां पशुचारा की कमी से पशुधननाश भी देखा जाएगा। जलस्तम्भ के क्षीण होने से इस साल कुछ भाग में वर्षा की भारी कमी अनुभव होगी। अन्न एवं वायुस्तम्भ के ठीक होने से अन्नभण्डारण अधिक होगा, कहीं वायुवेग से भारी जनधनहानि भी होगी।

संवत् २०५९ वि. की ग्रहस्थिति के आधार पर विश्वजनीन घटनाचक्र का संक्षिप्त विवरण।

जगत् लग्न कुण्डली

जगतूलग्नकुण्डलीगत ग्रहस्थिति के अनुसार लग्नेश गुरु (केन्द्रस्थ) चतुर्थस्थान में शुभ है, लेकिन तृतीयस्थान में द्वितीयेश मंगल का आयेश-व्ययेश शनि के साथ राशिसम्बन्ध विश्व के समृद्ध देशों में भी आर्थिक-व्यावसायिक एवं सुरक्षात्मक अनेकविध समस्याओं को जन्म देगा। जगत् लग्नकुण्डली में शनि-मंगल-राहु का एकत्र होना विश्व के विशिष्ट राष्ट्रों के लिए एवं मुस्लिमराष्ट्रों के लिए भयावह है। कुछ प्रमुख राष्ट्र आतंकवादियों के मानमर्दन किंवा आतंकवाद-समाप्ति हेतु की गईसैन्य कार्रवाई से आगे लम्बे युद्ध का सूत्रपात कर देंगे, जोकि आगे विश्व के देशों में एक विचित्र ध्रुवीकरण की प्रक्रिया को जन्म देगा, जिससे विश्वशान्ति खतरे में पड़ेगी और आगे सन् २००५ ई. तक एक भयंकर युद्ध का कारण बनेगा। जगत् लग्नकुण्डली में द्वितीयेश मंगल का क्रूरग्रहों से सम्बन्ध तथा धनस्थान में सूर्य, बुध, शुक्र, चन्द्र होने से विश्व में आर्थिक उदारीकरण एवं यूरो करंसी प्रचलन से कई देश मुद्रा-मूल्यांकन एवं जालीमुद्रा प्रचलन की वारदातों से प्रभावित होंगे। कुण्डली में सप्तमेश-अष्टमेश (मृत्युभावेश) क्रमशः बुध-शुक्र के द्वितीयस्थान (मृत्युस्थान) में होने से किसी राष्ट्रविशेष में भयंकर-भूचाल, अग्निकाण्ड, ज्वालामुखी-विस्फोट एवं दुर्भिक्ष आदि प्राकृतिक प्रकोप से जनधनहानि होगी। विश्व के किसी प्रमुख राष्ट्र में आन्तरिक-अशान्ति से जनजीवन अस्तव्यस्त

होगा। इसवर्ष मुस्लिमराष्ट्रों के किसी प्रमुख नेता की हत्या व मृत्यु का योग भी बन रहा है। यूरोप के कुछ राष्ट्रों में हत्याकाण्ड-बमविस्फोट किंवा यानदुर्घटना आदि में विशिष्टव्यक्ति के निधन से शोक व्याप्त हो। कुछ राष्ट्रों में सैन्यसंघर्ष की स्थिति अनिवार्य प्रतीत होने लगेगी। **ज्येष्ठ-आषाढ़-मार्गशीर्ष एवं पौष मास विशेष घटनापूर्ण रहेंगे।**

मेष-वृष-वृश्चिक-मकर-कुम्भ एवं मीन नाम राशि वाले प्रमुख नेताओं के लिए यहवर्ष ऐतिहासिक किंवा विशेष दुर्घटनापूर्ण एवं कष्टप्रद रहेगा।

सं. २०५९ वि. की गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार विश्व के घटनाचक्र का सिंहावलोकन

सं. २०५९ वि. का राजा एवं मन्त्री (दोनों) पद क्रूरग्रह शनि को प्राप्त हैं - "स्वयंराजा-स्वयंमन्त्री अग्निचौरादिजं भयम्।" एक ही ग्रह का प्रमुख दो पदों पर आसीन होना शुभ नहीं माना गया। संवत् के प्रारम्भ में ही शनि-मंगल-राहु एक साथ वृषराशि में चल रहे हैं। शनि-मंगल दोनों संवत् के आरम्भ मे रोहिणीनक्षत्र में ही चल रहे हैं। संकेत मिलता है, कि - **" युद्धं नृपाणां गद-तस्कराद्यैर्भ्रमन्ति लोकाः क्षुधिताश्च देशान्।"** विश्व के कुछ देश भयंकर युद्ध में उलझे रहें। जनता अशान्तक्षेत्र से अन्यत्र पलायन के लिए विवश हो। विश्व में विकिरण-प्रक्रिया किंवा प्रदूषणजन्य नेष्टप्रभाव से नानाविध रोग-कष्टों से जनता परेशान हो। किसी देश मे भयंकर अकाल की स्थिति से जनता एवं पशु भूखे मरें। मुस्लिम-राष्ट्रों में शासकों के कठोर-निर्दयतापूर्ण व्यवहार किंवा नीति से जनता को भारी कष्टों का सामना करना पड़ेगा। वर्षा न होने से कुछ भूभाग अकालग्रस्त होगा। इसवर्ष विश्व में एड्स आदि असाध्य भयंकर रोगों के अधिक होने का भय है।

पीछे ४ अप्रैल सन् २००२ ई. को ही मंगल वृषराशि में आकर शनि के साथ राशिसम्बन्ध बना चुका है तथा १६ फरवरी २००२ ई. (शनिवार) को राहु पहले ही वृषराशि में स्थित है। इस प्रकार संवत् २०५९ वि. के प्रारम्भ में ही महाक्रूरत्रयी का एकत्र होना किसी भंयकर युद्ध का सूत्रपात कर सकता है, जिससे विश्व की शान्तिभंग हो जाने से घातक शस्त्रास्त्रों एवं जैविक-शस्त्रास्त्रों के प्रयोग का भय संत्रस्त करेगा। मुस्लिमराष्ट्र अपनी हठधर्मिता से एवं यूरोप के देश एक विशेष लक्ष्य को लेकर युद्ध के मैदान में उतरेंगे, उभयपक्ष के विनाश के सिवा युद्ध किसी को लाभ न देगा।

२० अप्रैल को शुक्र एवं २६ अप्रैल को बुध भी वृषराशि में आकर शनि-मंगल-राहु के साथ मेल करेंगे और इस प्रकार **पंचग्रहीयोग** बन जाता है। यहां २० अप्रैल के लगभग बुध अतिचारी है। यह पंचग्रहीयोग १४ मई तक चलेगा। पंचग्रहों का फल 'भविष्यफल भास्कर' में इस प्रकार लिखा है ,-

"एक राशौ यदा यान्ति चत्वारः पंचखेचराः।
प्लावयन्ति महीं सर्वां रुधिरेण जलेन वा।। "

इसवर्ष अमेरिका एवं चीन में प्रक्षेपास्त्र-प्रौद्योगिकी निर्यात के मुद्दे पर एवं युद्धसामग्री किसी मुस्लिमदेश को देने पर किंवा पाक, इरान, उ.कोरिया एवं लीबिया जैसे देशों की पीठ थपथपाने पर आपसी सम्बन्ध कटु होने के आसार बनेंगे। विश्व के देशों में ध्रुवीकरण की प्रवृत्ति से विश्वशान्ति को खतरा होगा।

दक्षिण-पश्चिम के देशों में कहीं घोर अशान्ति, मुस्लिम-राष्ट्रों पाक, अफगानिस्तान, इराक, ईरान, लीबिया एवं रूस के समीपस्थ मुस्लिमराष्ट्रों में अराजकता, जनधनहानि किंवा भूकम्पादि प्राकृतिक प्रकोप से भारी जनधनहानि भी होगी। वैशाख कृष्णपक्ष अष्टमी (४ मई २००२ ई.) को मंगल, बुध, शुक्र एवं शनि एक नक्षत्र में ही हैं ; - इस समय से एकमास के अन्दर भूकम्प, अग्निकाण्ड आदि प्राकृतिक आपदा या युद्धमय वातावरण में भयंकर शस्त्रास्त्रों के प्रयोग से भारी जनधनहानि के योग बन रहे हैं; - सर्वज्ञ तो भगवान् ही हैं।

१५ मई को शुक्र मिथुनराशि में आकर अपने शत्रुग्रह गुरु के साथ मेल करेगा। गुरु-शुक्र का सम्बन्ध ८ जून तक बना रहेगा। १६ मई को मंगल मिथुनराशि में आकर गुरु-शुक्र के साथ मेल करेगा। यह ग्रहस्थिति भी किन्हीं दो विरोधी विचारधारा के देशों में युद्धभय का संकेत देती है ;-

"गुरु-शुक्रौ यदैकस्थौ नरयुद्धं तदा भवेत्।
अकाले वा भवेत् वृष्टिः जगत्यां नात्र संशयः।।"

कहीं आकालिक वर्षा से खड़ी फसलों को हानि, व जनधनहानि भी हो।

१४ मई से १४ जून तक शनि-सूर्य-राहु एवं बुध एक राशि में स्थित रहेंगे; लगभग १० जून से १८ जून तक शनि अतिचारी भी रहेगा। ग्रहों की गति एवं दृष्टिविचार से नेपाल में चीन समर्थक माओवादियों का प्रभावक्षेत्र बढ़ेगा। श्रीलंकाई राजनीति में नए मोड़-तोड़, राजनैतिक संकट नए-नए बनेंगे। संयुक्तराष्ट्र के विमानों पर एवं संयुक्तराष्ट्र पर तालिबान समर्थकों द्वारा विध्वंसक गतिविधियों से प्रछन्नरूप में तालिबान समर्थक मुस्लिमराष्ट्रों की पोल खुलेगी।

४ जुलाई को मंगल अपनी नीच राशि (कर्क) में दाखल होगा, साथ ही ४ जुलाई को गुरुग्रह अपनी उच्च राशि (कर्क) में प्रवेश करेगा। ७ जुलाई को गुरु अस्त रहेगा। इसी दिन शुक्र सिंहराशि में आकर वर्षा में रुकावट पैदा करेगा। आषाढ़ शुक्लपक्ष (११ जुलाई से २४ जुलाई) तक बुध अतिचारी रहेगा। तालिबान के प्रति पाकिस्तान की नीति दोगली रहेगी। मध्य एशिया में व्यापकरूप से अस्थिरता में भागीदार पाकिस्तान ही होगा। अफगानिस्तान- मलेशिया आदि में पाक प्रछन्नरूप से उग्रवादियों की पीठ थपथपाता रहेगा। **४ जुलाई से २२ जुलाई तक नीच मंगल पर एवं इसी बीच १६ जुलाई से २२ जुलाई तक सूर्य-मंगल पर भी शनि की नीच दृष्टि** आगामी दो मास के मध्य (सितम्बर तक) कहीं भयंकर भूकम्प, अग्निकाण्ड आदि प्राकृतिक आपदा, विस्फोट व यानदुर्घटना आदि से भयंकर जनधनहानि के योग बन रहे हैं, भगवान् रक्षा करें।

२३ जुलाई को शनि मिथुन राशि में आकर ३१ जुलाई तक शुक्र पर दृष्टि बनाए रखेगा। कहीं शासनसत्ता में परिवर्तन आश्विन के अन्त तक किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति का पद-रिक्त हो। दक्षिणी अफ्रीका में नस्लवाद के विरोध में आवाज उठेगी। विश्व अर्थव्यवस्था में नए बदलाव के कारण आर्थिक असमानता बढ़ेगी।

१ अगस्त को शुक्र कन्या में एवं २ अगस्त को बुध सिंह में आकर शनि से देखा जाएगा। १६ अगस्त को सूर्य भी सिंहराशि में आकर १५ सितम्बर तक शनि की विशेष दृष्टि में ही रहेगा। लेकिन शनि की मंगल पर विशेष दृष्टि ५ अक्तूबर तक बनी ही रहेगी। विश्व के राष्ट्रों में हथियारों की होड़ बढ़ेगी, अशान्ति, भूस्खलन, वर्षा, बाढ़ आदि से अनेकत्र जनधनहानि होगी। कुछ देश परस्पर सैन्यसंघर्ष के लिए उद्यत होंगे, लेकिन कुछ देशों की मध्यस्थता से स्थिति नियन्त्रण में आ जाएगी।

शनि-शुक्र दोनों १०/११ अक्तूबर से २० नवम्बर तक एक साथ वक्री चलते रहते हैं। जुलाई से १४ नवम्बर तक सभी ग्रह राहु-केतु के मध्य ही संचरण कर रहे हैं। इस प्रकार चल रहा 'कालसर्पयोग' राजनीतिज्ञों में वैमनस्य, पश्चिमी भूभाग पर अशान्ति, कहीं दुर्भिक्ष; इटली, रोम, जापान, टर्की, अमेरिका किंवा किसी मुस्लिमदेश में कहीं भूकम्प, अन्य प्राकृतिक प्रकोप किंवा यान दुर्घटना में भारी जनधनहानि के योग बनाएगा। इसी दौरान आतंकवादियों के खिलाफ एक विशेष अन्तर्राष्ट्रीय ध्रुवीकरण की प्रवृत्ति दिखाई देगी। एड्स एवं अन्य भयंकर संक्रामकरोगों के रोकथाम के उपाय अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर किए जाएंगे।

२२ नवम्बर को तुलाराशि का मंगल एवं ४ दिसम्बर को गुरु का वक्री होना, राहु-मंगल का षडष्टकयोग, मार्गशीर्ष मास(१६ नवंबर से १५ दिसंबर तक) के लगभग किसी नेता व बड़े व्यक्ति की मृत्यु किंवा पदच्युत होने का संकेत देता है। ६ दिसम्बर को बुध के उदय होने पर कहीं वायुवेग व भूस्खलन-भूकम्प आदि से जनधनहानि का भी समाचार मिले। १५ दिसंबर '०२ से ७ जनवरी (२००३ ई.) तक शनि-सूर्य का समसप्तकयोग विश्व के कुछ प्रमुख राष्ट्रों में विशेषतः किसी मुस्लिम देश में शासक एवं प्रजा में संघर्ष किंवा आंतरिक क्रान्ति, प्राकृतिक प्रकोप-आपदा से हानि का संकेत देता है।

८ जनवरी को मंगल वृश्चिक राशि में एवं ६ जनवरी को शनि वक्री होकर पुनः वृषराशि में प्रवेश करेगा। शनि-राहु एवं मंगल का यह समसप्तक-योग विश्व में अघटित घटनाचक्र का कारण बनेगा। यह योग २२ फरवरी सन् २००३ ई. तक चलेगा। किसी मुस्लिम-राष्ट्र में अप्रत्याशित-परिवर्तन संभावित है। किसी देश में राजनैतिक कारणों से घोर अशान्ति, सैन्यबल-प्रयोग, सीमाप्रान्तों पर युद्धमय वातावरण बनेगा। जनवरी २००३ से फरवरी के मध्य कहीं भयंकर भूकम्प, तूफान व यानदुर्घटना में या कहीं युद्धज्वाला से भारी विनाश के साथ कहीं वरिष्ठ व्यक्ति की मृत्यु से शोक व्याप्त हो या परिवर्तन होगा। जन. (२००३ ई.) ७, ८, ६, १६ से २०, २२, २७, २८, ३०, फर. १, २, ८, १२, १६ एवं २३ से संवत् के अन्त तक का समय विश्व में विशेष कष्टप्रद घटनाक्रम को जन्म देगा।

२३ फरवरी २००३ ई. से संवत् २०५९ वि. के अन्त (१ अप्रैल २००३ ई.) तक शनि-मंगल का षडष्टकयोग चलेगा। इस समय चीन, अमेरिका, इराक, इण्डोनेशिया, भारत, पाकिस्तान, अफगानिस्तान एवं अन्य कुछ राष्ट्रों में सीमाप्रान्तों पर सैनिक हलचल एवं कहीं राजनीतिक परिवर्तन व राजनीतिक हत्याकाण्डों से वातावरण अशान्त रहेगा। कहीं सत्ता हस्तान्तरण किंवा यानदुर्घटना में जनधनहानि के समाचार भी मिलेंगे।

यूरोप के देश

यूरोपीय देशों की कुण्डली (१) के चिन्तन से ज्ञात होता है, कि शनि-मंगल का दशम-चतुर्थ दृष्टि सम्बन्ध यूरोप के देशों के सामने जटिल युद्धात्मक समस्याओं को लाकर खड़ा कर देगा, जिसके परिणाम दूरगामी होंगे। कुछ देश मित्रक्षेत्र में होकर भी परस्पर विपरीत विचारधारा के हो जाएंगे और विपरीत सिद्धान्त वाले कुछ देश परस्पर नजदीक आकर एक अप्रत्याशित ध्रुवीकरण की तरफ बढ़ने लगेंगे। यूरोपीय देशों में बर्तानिया, स्कॉटलैण्ड, जापान, रूस आदि में बेरोजगारी बढ़ेगी। प्रमुख देशों की अर्थव्यवस्था चरमरा जाएगी। यूरोप की कुण्डली ने नं. (१) में शत्रुक्षेत्रीय-मंगल हिंसा-रक्तपात-विध्वंस एवं षडयन्त्रों, यान अपहरण-दुर्घटना आदि से यूरोप में किसी वरिष्ठ व्यक्ति की मृत्यु का संकेत देता है, जिससे विश्वशान्ति को धक्का पहुंचेगा।

यूरोपीय देशों की कुण्डली (१)

७ | ५ | ८ | ६ | ४ चं. | के. ९ शु. सू. | रा. ३ गु. | १० बु. | १२ | २ श. | ११ मं. | १

३१ दिसं. (सन् २००१ ई.) मध्यरात्रि २४ घं.० मि.

यूरोपीय देशों की वर्ष कुण्डली नं. (२) में राहु-मंगल का षडष्टक, सूर्य-शनि का समसप्तकयोग है। राहु-शनि आदि यावन सम्प्रदाय के प्रतिनिधि ग्रहों की स्थिति से संकेत मिलता है, कि यूरोप के कुछ देशों को अशान्ति, युद्ध किंवा आर्थिक उलझनों का लम्बे समय तक सामना करना पड़ेगा। इसवर्ष में यूरोप एवं मुस्लिमदेशों में कहीं हत्याकाण्ड, बम्बार्डमेण्ट, कहीं गृहयुद्ध से अशान्ति का वातारण बनेगा।

गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार इसवर्ष यूरोप के प्रमुख देशों की अर्थव्यवस्था भी कुछ चर्चा का विषय बनेगी। **गतवर्ष के पंचांग में पृष्ठ २६, कॉलम २ में, पंक्ति ४ में स्पष्ट घेषणा की थी, कि - " आतंकवाद पर अंकुश लगाने के लिए कोई यूरोपीय देश आवाज उठाएगा; "** - तदनुसार ब्रिटेन ने U.S. के साथ इसके विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी है। गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार इसवर्ष संवत् के आरम्भ से १८ मई तक, ४ जुलाई से २२ जुलाई तक, १६ अगस्त से ५ अक्तूबर तक, ७ जनवरी (सन् २००३ ई.) से २२ फरवरी (२००३ ई.) तक की ग्रहस्थिति एवं २३ फरवरी (२००३ ई.) से संवत् के अन्त तक शनि-मंगल का षडष्टकयोग यूरोपीय देशों के लिए अनेक अघटित घटनाओं को लेकर उपस्थित होगा। इस अवधि में कहीं प्रमुख नेता की हत्या के षडयन्त्र एवं हत्याकाण्डों से स्थिति नाजुक होगी; उपरोक्त समयावधियां यूरोप के कुछ देशों के लिए ऐतिहासिक घटनापूर्ण रहेंगी।

यूरोपीय देशों की वर्ष कुण्डली नं. (२)

शु. ७ मं. | ५ | ८ चं. के. | ६ | ४ गु. | ९ सू. | श. ३ | १० बु. | १२ | २ रा. | ११ | १

३१ दिसं. (सन् २००२ ई.) मध्यरात्रि २४ घं.० मि.

अमेरिका के राष्ट्रपति जार्ज डब्ल्यू बुश की यथालब्ध जन्मांगकुण्डली के आधार पर शनि की महादशा में राहु का अन्तर नवम्बर २००३ ई. के लगभग तक प्रभावी रहेगा। दशा अवान्तर एवं प्रत्यन्तर के विचार से २० अक्तूबर २००१ ई. से २ अप्रैल २००२ ई. तक की समयावधि राष्ट्रपति डब्ल्यू बुश के लिए विशेष चिन्ताजनक स्थिति पैदा करेगी। अक्तूबर २००१ से चला समय अनेक चुनौतियों को लेकर आया है। जातकग्रन्थों के आधार पर शनि में राहु का अवान्तर एवं शनि का प्रत्यन्तर होने से शत्रुपक्ष से भय बना रहेगा। भावचलित कुण्डली का परिशीलन करने से शनि-सूर्य द्वादशस्थ हैं, जोकि अनेक चिन्ताओं से एवं प्रशासनिक समस्याओं से परेशानी कारक ही है। शनि मारकेश है; अतः बुश को अन्तर्राष्ट्रीय उलझनों से निपटना कठिन प्रतीत होता है। शनि- राहु-सूर्य की स्थिति से ज्ञात होता है, कि राष्ट्रपति जार्ज डब्ल्यू बुश को अपनी सुरक्षा व्यवस्था को विशेषरूप से सुदृढ़ करना होगा। इन पर शत्रुकृत षडयन्त्र से घातक हमला होगा; स्थिति उत्तरोत्तर कठिन प्रतीत होती है। युद्ध में कहीं जीत कर भी हार न हो जाए, जीवन को भय है। **युद्धकालीन ग्रहस्थिति के अनुसार अफगानिस्तान की भारी क्षति से युद्ध जीता हुआ मालूम देगा, लेकिन यह युद्ध फिर भी सायी मुस्लिमदेशों की मदद से लम्बा चलेगा।** यद्यपि अभी विश्वयुद्ध का खतरा नहीं, पुनरपि आगामी ५/६ वर्षों में (सन् २००५ ई. के

अमेरिकन राष्ट्रपति जार्ज डब्ल्यू बुश की कुण्डली

५ मं. | ३ सू. | गु. ६ चं. | बु. ४ शु. श. | २ रा. | ७ | १ | ८ के. | १० | १२ | ९ | ११

अमेरिका की वर्ष कुण्डली

लगभग तक) चिंगारी की तरह सुलगता हुआ, यह युद्ध कहीं विकराल रूप धारण न कर ले,- यह गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार चिन्ता का विषय है।

अमेरिका की यथालब्ध वर्षकुण्डली में सप्तमस्थ-शनि होने से अन्तर्राष्ट्रीय विवादास्पद समस्याओं के समाधान में इसे वर्षों तक सचेत रहना होगा। सामरिक-शक्ति के आधार पर भी समस्याएं लम्बी पड़ेंगी, विश्व में यू. ऐस. की नेतृत्व छवि बनी रहेगी, लेकिन समस्याएं गहराती ही जाएंगी। देश की आर्थिक स्थिति की तरफ भी विशेष ध्यान देना होगा, क्योंकि धनेश मंगल पर शनि-गुरु की दृष्टि है। अंतः इस तरफ ध्यान देना आवश्यक है।

मुस्लिम देश

१ मुहर्रम से एक दिन पूर्व (चन्द्रदर्शन के दिन) १५ मार्च सन् २००२ ई. को सूर्यास्तकाल के समय १८ घण्टा २६ मिनट पर कन्या लग्न में इसवर्ष मुस्लिम नववर्ष का उदय हुआ है।

क्योंकि १६ मार्च को १ मुहर्रम शनिवार को हिज़्री सन् १४२३ की शुरुआत है और हिज़्री सन् का बादशाह भी शनि ही है। विक्रमी संवत् एवं हिज़्री सन् का बादशाह शनि होने से यह वर्ष मुस्लिमदेश के शासकों को भारी उलझनों में फंसा देगा। कहीं भयंकर युद्ध से जन-धन हानि होगी। किसी देश विशेष की राजनीति विश्व में अशान्ति का कारण बनेगी।

मुस्लिम वर्षकुण्डली में लग्नेश एवं कर्मेश बुध शत्रुक्षेत्र में, शत्रुक्षेत्रेश-शनि एवं चतुर्थेश- सप्तमेश-गुरु से विशेषरूप से दृष्ट है। अतः शत्रुपक्ष प्रबल होने पर भी किसी बड़े देश की मध्यस्थता, शान्ति स्थापना के लिए होगी।

नवमेश-शुक्र सप्तमभाव में उच्च है, नवमभाव में शनि-राहु की स्थिति मुस्लिमराष्ट्र के राजनीतिज्ञ-शासकों को किंकर्त्तव्य-विमूढ़ बना देगी और दशमभाव में गुरु होने से किसी बड़े देश की मदद से स्थिति में सुधार आएगा। पाकिस्तान एवं अफ़गानिस्तान की वर्ष कुण्डलियों के अध्ययन से ज्ञात होता है; आगामी समय यहां के शासकों के सामने भयावह है। पाकिस्तान के राष्ट्रपति परवेज मुशर्रफ साहेब की ग्रहस्थिति ३ नवम्बर २००१ ई.से ६ जनवरी सन् २००२ ई. तक बहुत खराब है। यहां गृहयुद्ध होगा, देशवासी ही विरोध करेंगे, सेना सत्तापलट पुनः कर सकती है। आगे १६ फरवरी २००२ से १८ मई तक, ४ से २२ जुलाई तक, १६ अग. से ५ अक्तूबर तक और ७ जनवरी २००३ ई. से संवत् २०५९ वि. के अन्त तक की ग्रहस्थिति मुस्लिमराष्ट्रों के लिए विशेष घटनापूर्ण सिद्ध होगी। इस समय कुख्यात-आतंकवादी एवं किसी मुस्लिम देश विशेष के प्रमुख व्यक्ति की हत्या का योग है।

मुस्लिम नववर्ष कुण्डली

अफ़गानिस्तान की यथालब्ध संवत्सर कुण्डली में शनि-मंगल का समसप्तक, युद्ध में विनाश के कगार पर पहुंचा देगा। प्रधान पुरुष कालकवलित होंगे। पाकिस्तान में सिन्धक्षेत्र में अधिक उपद्रव होंगे।

सं. २०५९ वि. की ग्रहस्थिति के अनुसार ' भारत ' एवं ' भारत सरकार' के घटनाचक्र का सर्वेक्षण

नववर्ष प्रवेश कुण्डली — स्वतन्त्र भारत कुण्डली — स्वतन्त्र भारत का ५५ वां वर्ष (दृक्पक्षीय) — स्वतन्त्र भारत का ५६ वां वर्ष (दृक्पक्षीय) — भारत का ५३ वां गणतन्त्र वर्ष

नववर्ष प्रवेश कुण्डली: १०, ८ के., ११, ९, ७, १२ सू. चं., ६, १ शु. बु., ३ गु., ५, २ मं. रा. श., ४

स्वतन्त्र भारत कुण्डली: ३ मं., १, शु. श. ४ चं. बु. सू., २ रा., १२, ५, ११, ६, ८ के., १०, ७ गु., ९

१५ अगस्त १९४७ ई. मध्यरात्रि ० घं.० मि.

स्वतन्त्र भारत का ५५ वां वर्ष: १२, १०, १, ११, ९ के., २ श., ८ मं., गु.३ शु. रा. चं., ५ बु., ७, ४ सू., ६

१५ अगस्त २००१ ई.

स्वतन्त्र भारत का ५६ वां वर्ष: सू. गु. मं. ४, २ रा., ५ बु., ३ श., १, ६ शु., १२, ७ चं., ९ मुंथा, ११, ८ के., १०

१५ अगस्त २००२ ई. २ घं. २४ मि. रात्रि

भारत का ५३ वां गणतन्त्र वर्ष: ५, गु. रा. चं. ३, ६, ४ मुंथा, २ श., ७, १, ८, सू. बु. १० शु., १२ मं., ९ के., ११

२६ जनवरी २००२ ई. २७/३० इष्ट

गतसंवत् के अन्तिम चरण का सिंहावलोकन

२६ अगस्त से १६ अक्तूबर २००१ ई. तक शनि-मंगल का षडष्टक अमेरीका-अफगानिस्तान मेंयुद्ध का कारण बन चुका है। युद्धाग्नि उत्तरोत्तर तालिबान का दम तोड़ने वाली सिद्ध होगी। ६ जनवरी, २००२ ई. से पूर्व भारत को शत्रुदेश की गतिविधि से सीमाप्रान्तों पर सावधान रहना जरूरी है। अचानक परेशानी आ सकती है।

३० नवम्बर से ६ जनवरी २००२ ई. तक किसी प्रमुख मुस्लिमराष्ट्र में आन्तरिक क्रान्ति से जनजीवन अस्तव्यस्त होगा, राजनीतिक-हत्याएं एवं प्रधान पद में परिवर्तन, सत्ता हस्तान्तरण के योग हैं। सं. २०५८ के अन्त तक विश्व के देशों में परस्पर मतभेद बढ़ेंगे और आगामी वर्ष में देशों में ध्रुवीकरण की प्रवृत्ति चिन्ताजनक वातावरण बना सकती है। भगवान् सबको सुरक्षित एवं सन्मार्ग पर चलने की प्रेरणा दें- यही प्रार्थना है। **आगामी वर्ष सं. २०५९ वि. किन-किन घटनाओं को लेकर आ रहा है** - यह ग्रहगत्यनुसार लिखने का प्रयासमात्र है; सर्वज्ञ तो प्रभु ही है।

संवत् २०५९ वि. की नववर्ष प्रवेश कुण्डली में लग्नेश-गुरु की लग्न पर पूर्णदृष्टि है, चन्द्र गुरु के क्षेत्र में है;- यह ग्रहस्थिति उदीयमान-संवत् के लिए शुभ है; भारत प्रगतिपथ पर अग्रेसर रहेगा। भारत की प्रतिष्ठा समर्थ देशों में होने लगेगी। लेकिन नववर्ष कुण्डली में व्ययेश-पंचमेश मंगल तथा द्वितीयेश-तृतीयेश शनि-ये दोनों ग्रह राहु के साथ छटे भाव में स्थित हैं; - आर्थिक दृष्टि से देश की स्थिति यद्यपि काफी उलझनपूर्ण रहेगी, पुनरपि **" त्रिषडायगतो भौमः त्रिषडायगतः शनिः। त्रिषडायगतो राहुः सर्वारिष्टान्निवारयेत;"** प्रमाणानुसार देश अनेक प्रकार के विदेशी षडयन्त्रों, धर्मिक- सामाजिक उलझनों से सम्मानपूर्वक निकल जाएगा और शत्रुदेश हतप्रभ हो जाएंगे। वर्षलग्नेश लग्न को देखता है। जोकि शुभ है,-

"यदा शुभग्रहैर्दृष्टं लग्नं स्यात्तु शुभाशुभम्।
धनधान्यादि सम्पूर्णं सर्वं वर्षं शुभावहम्।।"

स्वतन्त्र भारत की जन्मकुण्डली में लग्नेश-द्वितीयेश-तृतीयेश-चतुर्थेश-पंचमेश-षष्टेश एवं भाग्येश-कर्मेश क्रमशः शुक्र, बुध, चन्द्र, सूर्य, पुनः बुध, पुनः शुक्र एवं शनि ये पांचग्रह तृतीय भाव में एकत्र हैं, संकेत मिलता है, कि आगे कर्क राशि में बृहस्पति के आने पर लगभग पांच/सात वर्षों में भारत पूर्णरूपेण समर्थ - समृद्ध एवं सशक्त महानूराष्ट्र के रूप में विश्वमानचित्र पर उदित होगा। पुनरपि शनि की व्ययस्थान पर नीच दृष्टि एवं व्ययेश मंगल की धनस्थान में स्थिति नई औद्यौगिक एवं आर्थिक सम्पन्नता में बाधाएं उपस्थित करेगी, लेकिन समर्थ-शासनतन्त्र नई-नई योजनाओं से इस समस्या को हल करने में सक्रिय योगदान देगा। स्वतन्त्रभारत के जन्मांग में 'कालसर्पयोग' प्रगतिपथ पर अग्रेसर होने के लिए काफी संघर्षात्मक प्रक्रिया में से निकलने का संकेत देता है।

स्वतन्त्रभारत के ५५ वें वर्ष की ग्रहस्थिति के अनुसार व्ययेश एवं लग्नेश शनि चतुर्थ (सुख) भाव में स्वस्थ-मंगल से पूर्ण प्रतियोग बना रहा है, लेकिन लग्न पर बृहस्पति की विशेष दृष्टि है एवं नवमभाव पर भी गुरु की विशेष दृष्टि है। स्पष्ट है, कि बिहार, आसाम, उ.प्र. एवं उत्तरांचल, काश्मीर आदि प्रान्तों की स्थिति को सामान्य करने के लिए इस वर्ष सरकार को चिन्तित रहना होगा और बिहार एवं उत्तरप्रदेश आदि में शासनसत्ता के लिए किए गए शक्ति परीक्षण के परिणाम इन प्रान्तों के मौजूदा-शासकों के अनुकूल न होंगे। बिहार के गण्यमान्य किसी नेता के विरुद्ध न्यायालय अपना निर्णय देकर दण्डित कर सकता है;- ऐसा योग है। शनि-मंगल का समसप्तक सीमाप्रान्तों पर सैन्यहलचल से अशान्ति का भी संकेत देता है। कहीं यान दुर्घटना, अग्निकाण्ड से व बम्बविस्फोट से कुछ स्थानों पर हानि होगी ,- ऐसा ग्रहगोचर से ज्ञात होता है।

शनि संवत् का राजा एवं मन्त्री भी है, शनि-मंगल एवं राहु, ये तीनों ग्रह मार्क्सवादी सिद्धान्तों के प्रतिनिधि ग्रह हैं। इसवर्ष कम्युनिस्टिक-मार्क्सवादी पार्टियों में खाई बढ़ेगी, सशक्त नेतृत्व की कमी अनुभव होगी।

भारत के ५५ वें वर्ष की कुण्डली के अनुसार पाकिस्तान, भारत के काश्मीरी जेहादी बैल्ट से परेशान करके मध्य एशिया में व्यापकरूप से अस्थिरता लाने का प्रयास करेगा; परन्तु पाक की यह चाल पूर्णरूपेण असफल सिद्ध होगी। वर्षलग्न एवं गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार 'राजग' पार्टी के कुछ घटकतत्त्वों (शिवसेना, चन्द्रबाबुनायडू, काश्मीर के श्री अब्दुल्ला आदि) से प्रधान नेता को निराशाजनक स्थिति का सामना करना पड़ सकता है, जिससे सरकार कठिन परिस्थिति में आ जाएगी।

स्वतन्त्र भारत के ५६ वें वर्ष की ग्रहस्थिति के अनुसार लग्नस्थ शनि भाग्येश होकर कर्मस्थान को एवं कर्मेश गुरु भी द्वितीयस्थान में उच्च का होकर कर्मस्थान को देख रहा है; - यह ग्रहस्थिति प्रधान राजनीतिज्ञों की प्रतिष्ठा एवं कर्मक्षेत्र में पूर्णस्थायीत्व प्रदान करती है। ५६ वें वर्ष की राजनीति, पिछड़े वर्ग के विकास, औद्यौगिक प्रगति, विश्वव्यापारजन्य कुप्रभावों का अपाकरण आदि जनहितार्थ उपायों से पुनः चेतना प्राप्त करेगी। विकृत-राजनीतिक दाव-पेचों को व्यवस्थित करने के लिए एक स्वस्थ आचार संहिता बनाने के लिए केन्द्र को आगामी निर्वाचनों के लिए सचेष्ट हो जाना पड़ेगा। वर्षलग्न में मुंथेश गुरु उच्च है, लेकिन नीच मंगल एवं सूर्य की सन्निधि में होने से सत्तारूढ़ केन्द्रीय शासकों की आलोचना का कारण कोई प्रमुख विषय बनेगा, जिससे उन्हें आगे सत्ता में आ पाना सन्दिग्ध मालूम देगा।

भारत के ५३ वें गणतन्त्र की ग्रहस्थिति पर ध्यान देने से ज्ञात होता है, कि - मुंथेश गुरु बारहवें भाव में राहु-चन्द्र के साथ है, मंगल की इन पर विशेष दृष्टि है। लग्न को शनि विशेष दृष्टि से देख रहा है। ग्रहस्थिति संकेत देती है, कि हमारा केन्द्रिय नेतृत्व साम्प्रदायिक गतिविधियों से होने वाले जघन्य अपराधों, बम्बविस्फोट आदि काण्डों से परेशान रहेगा। कुछ प्रान्तीय किंवा राष्ट्रीय राजनीतिक पार्टियां सम्प्रदायिकता, जातिवाद को तूल देकर गणतन्त्र की छवि को धूमिल करेंगी। उ.प्र. के कुछ स्थल जातिवाद, धर्मोन्माद के कारण अशान्त रहेंगे। धार्मिक असहिष्णुता किंवा विवादास्पद धार्मिक स्थलों पर निर्माण लोकतन्त्र के लिए चिन्ता का विषय बने ,- समाधानार्थ शासन को कठोर पग उठाने पड़ें। सर्वधर्म सहिष्णुता ही धर्मनिरपेक्ष छवि को दृढ़ करेगी, लेकिन ग्रहस्थिति कुछ और ही संकेत देती है, जिससे अनेक समस्याएं सामने आएंगी। संवत् के प्रारम्भिक ३/४ मासों में किसी प्रान्त में धार्मिकस्थल विवाद का कारण बनेंगे, जिससे कुछ सम्प्रदायों में मतभेद होने से उपद्रवों की आशंका बनेगी। केन्द्रीय शासनतन्त्र से जुड़े गठबन्धन शिथिल होने लगेंगे, जिससे केन्द्रीय सरकार खतरे में पड़ जाएगी।

४ अप्रैल सन् २००२ ई. से १८ मई तक शनि-मंगल-राहु वृषराशि में एक साथ चल रहे हैं। २० अप्रैल को शुक्र एवं २६ अप्रैल को बुध भी वृषराशि में आकर पंचग्रही योग बना देते हैं। यह ग्रहस्थिति भारत के किसी उत्तरी प्रान्त में शासनसत्ता के समक्ष धार्मिक, सामाजिक उलझनों को लेकर उपस्थित होगी। कहीं प्राकृतिक प्रकोप, भूकम्प-जलाप्लाव किंवा साम्प्रदायिक उपद्रवों से प्रधान नेता असमंजस में पड़ जाएंगे, स्थिति पर नियन्त्रण पाने के लिए कठोर पग उठाने होंगे। इस समय काश्मीर एवं अन्य सीमाप्रान्तों पर भी पैनी नज़र रखनी होगी, शत्रुदेश की गुप्तचाल से हानिभय है।

१५ मई को सूर्य वृषराशि में आकर शनि-राहु-बुध के साथ चतुर्ग्रही योग बनाएगा एवं शुक्र मिथुनराशि में आकर गुरु के साथ और १६ मई को मंगल के साथ राशिसम्बन्ध भी कहीं भयंकर बाढ़, अकालिक वर्षा व प्राकृतिक प्रकोप से जनधनहानि का भय करे। इस योग का प्रभाव जुलाई तक चलेगा।

११ जून को मंगलवारी ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिपदा एवं १५ जून को शनिवारी मिथुन संक्रान्ति कहीं भयंकर बाढ़ व सूखे से हानि का संकेत देती है। २६ जून से २२ जुलाई तक भी कहीं भयंकर बाढ़ से भारी जनधनहानि होगी। इसवर्ष कहीं भारी सूखा पड़ने से भीषण अकाल की स्थिति भी बनेगी। २३ जुलाई को शनि मिथुनराशि में आकर पश्चिमी देशों एवं प्रान्तों में कृषकों के लिए कठिन परिस्थिति पैदा करेगा, कहीं अकाल की स्थिति चिन्ताजनक बनेगी, पश्चिमी भूभाग पर जंग के बादल मंडराए रहेंगे ,-

"मिथुने च यदा सौरिर्दुर्भिक्षं तत्र दारुणम्।
पश्चिमे दारुणं युद्धं नृपाणां च महद्भयम्।।"

यह समय नेतावर्ग एवं राजनीतिज्ञों के लिए भी उलझनपूर्ण मालूम देता है। आगे श्रावण कृष्ण नवमी (३ अगस्त) को शनिवार होने से आश्विन में (१६ सितम्बर से अक्तूबर मध्य तक) किसी विशिष्ट व्यक्ति का पद खाली होगा। श्रावण शुक्लपक्ष में (६ से २२ अगस्त तक) तिथिक्षय होने से कार्तिकमास (१७ अक्तूबर से १५ नवम्बर के मध्य) किसी वरिष्ठ नेता की मृत्यु से शोक व पदत्याग का योग बनता है। १० अक्तूबर को शुक्र वक्री हो रहा है, साथ ही ११ अक्तूबर को शनि भी वक्री हो जाता है। ये दोनों २० नवम्बर तक एक साथ वक्रस्थिति में ही रहते है,- प्रभावस्वारूप क्षेत्रवाद एवं साम्प्रदायिकता देश को दिशाहीन बना सकते हैं। पूर्वोत्तर - राज्यों के आर्थिक लेखा-जोखा पर विशेष ध्यान रखना होगा। पूर्वोत्तर राज्यों के विकास हेतु अधिक वित्तीय सहायता का उपक्रम बने। इसवर्ष भारत एवं नेपाल में किसी क्षेत्रीय समस्या को लेकर विवाद खड़ा होने के योग हैं, जिससे माउवादियों द्वारा शान्तिभंग की आशंका है। सीमावर्ती देश नेपाल में आगामी वर्षों में पुलिस-प्रशासन माओवादियों के सामने निष्क्रिय मालूम देंगा। चीन इसमें विशेष भूमिका निभाएगा, जिसका प्रभाव भारत की सीमाओं पर दिखाई देगा। कालापानी भारतीय क्षेत्र का संवेदनशील क्षेत्र रहेगा; सुरक्षा की दृष्टि से भारत को इन सीमाओं पर विशेष नजर रखनी होगी। काश्मीर में पाक, पूर्व में चीन-पाक द्वारा प्रोत्साहित पूर्वोत्तर के विद्रोहियों तथा बंगलादेशियों की घुसपैठ से भी भारतीय शासकों को सचेत रहना होगा।

२२ नवम्बर को मंगल तुलाराशि में आकर राहु के साथ षडष्टकयोग बनाएगा। ग्रहस्थिति के अनुसार हमें यह निश्चय कर लेना उचित होगा, कि अमेरीका के निरस्त्रीकरण सम्बन्धित एकतरफा फैसलों के आगे झुकना स्वीकार्य नहीं; क्योंकि २१ वीं सदी में हमारी सुरक्षा का कार्य प्रमुख है। अतः सैन्यबल को समृद्ध करना होगा। और समयानुसार शासन परमाणुशस्त्र निर्माण में पीछे नहीं रहेगा। जातीय राष्ट्रवाद एवं धार्मिक-राजनीतिक उग्रवाद से सम्बन्धित नई समस्याएं उपस्थित होंगी। मणिपुर, आसाम, बंगाल में अशान्ति रहेगी। ५ दिसंबर को शनि-सूर्य का 'समसप्तकयोग' राहु मंगल का षडष्टकयोग प्रधान राजनीतिज्ञों के समक्ष विषम परिस्थितियां पैदा करे। कहीं यान दुर्घटना में जनधनहानि, कहीं अग्निकाण्ड व भूकम्प जैसे प्राकृतिक प्रकोप से हानि हो।

७ जनवरी (२००३ ई.) को मंगल वृश्चिक राशि में एवं ८ जनवरी को शनि वक्री होकर फिर से वृषराशि में आ जाएगा। इस प्रकार शनि एवं मंगल का समसप्तकयोग केन्द्रीय शासनसत्ता के लिए अघटित घटनाक्रम को जन्म देगा। नेपाल में चीनियों तथा पाकिस्तानियों द्वारा हजारों मील लम्बी भारत-नेपाल सीमा पर भारत को विशेष सुरक्षाप्रबन्ध करने होंगे। अन्यथा भारत में और उपद्रव, उग्रवादी गतिविधियां तेज होंगी, हानि भी संभव है। विश्व में तालिबानीकरण की प्रवृत्ति (जिसमें बहुत से मुस्लिमदेश शामिल हैं) मध्यएशिया के देशों के लिए भारी चिन्ता का कारण रहेगी। भारत में सामाजिक-आर्थिक एवं पर्यावरण की समस्या प्रबल होती जाएगी।

७ जनवरी (२००३ ई.) से २२ फरवरी तक की ग्रहस्थिति (शनि-मंगल का प्रतियोग) के परिणामस्वरूप यूरोप एवं एशियाई देशों में कहीं आन्तरिक क्रान्ति, रक्तपात, देश का विभाजन, कहीं प्रतिष्ठित-व्यक्ति की मृत्यु से शोक व्याप्त होगा। इस अवधि में राष्ट्रीय जनतान्त्रिक गठबन्धन का पार्टी के कुछ घटक तत्वों से नाता टूट जाने का योग है। उ.प्र. के विधान सभाई निर्वाचनों के बाद गठबन्धन केन्द्रीय सरकार में विशेष परिवर्तन होंगे, यह समय केन्द्रीय-शासन एवं प्रधानमन्त्री श्रीवाजपेयी जी के लिए दुरूह सिद्ध होगा। प्रधानमन्त्री ऐसे चक्रव्यूह में उलझेंगे जहां से निकल पाना संभव प्रतीत नहीं होता, कुछ विशेष परिवर्धन-संवर्धन पार्टी में होने के योग हैं। माघी अमा १ फरवरी (२००३ ई.) शनिवारी होने से माघमास में किसी प्रतिष्ठित गण्यमान्य व्यक्ति की मृत्यु से शोक व्याप्त होगा। सीमाप्रान्तों पर कहीं सैन्यसंघर्ष हो। किसी प्रान्त में सत्ता परिवर्तन के आसार भी है।

२३ फरवरी (२००३ ई.) से संवत् (२०५९ वि.) के अन्त तक पुराने बोफ़ोर्स आदि मुद्दे एवं राजनयिकों एवं विभिन्न पार्टियों के खिलाफ विभिन्न मुद्दे उठाकर प्रतिष्ठित व्यक्तियों की छवि को खराब करने की चाल रहेगी। भारत अपने पश्चिमी क्षेत्र, काश्मीर एवं पूर्वोत्तर क्षेत्रीय समस्याओं को ठीक करने में व्यस्त रहेगा, सीमाप्रान्तों पर से खतरा पैदा होगा, सैन्यबल को सुसंबद्ध रखना होगा। पूर्वोत्तर भारत में उग्रवाद किंवा अलगाववाद का जुनून बेकाबू होकर खतरा पैदा कर सकता है- सरकार को सावधानी रखनी होगी।

इसवर्ष भारत-पाक किंवा हिमालय के क्षेत्रों में शक्तिशाली भूकम्पों से भारी जनधनहानि के योग हैं। गौचर ग्रहस्थिति के आधार पर मालूम होता है कि इस वर्ष भारतीय अर्थव्यवस्था में निरन्तर गिरावट आएगी, कृषि की विकासदर घटेगी। विश्वबाजार के प्रभाव में हमारे देसी उद्योग धन्धों को गंभीर खतरा पैदा हो जाने के योग हैं और बेरोजगारी बढ़ेगी।

इन सभी चुनौतियों को ध्यान में रखकर भारत सरकार को अपनी नीतियों का निर्धारण फिर से करना होगा।

भारत के प्रमुख राजनैतिक दल

भारतीय जनता पार्टी :- भाजपा के जन्मांग में शनि भाग्येश एवं अष्टमेश है, मंगल षष्ठेश-आयेश है, गुरु कर्मेश एवं सप्तमेश है;- ये तीनों ग्रह राहु की सन्निधि में तृतीयभाव में हैं एवं सभी की नजर भाग्यस्थान पर व भाग्यस्थान में स्थित बुध-केतु पर है। केन्द्रीय सत्ता की प्रमुख पार्टी भाजपा को क्षेत्रीय-सहयोगी पार्टियों के साथ मिलकर चलने से स्वतन्त्र निर्णय लेने की क्षमता कम अनुभव होगी।

भारतीय जनतापार्टी कुण्डली

शनि के मिथुन में आने पर २३ जुलाई २००२ ई. के बाद भाजपा गठबन्धन में काफी उलटफेर होने के योग हैं। लेकिन भाजपा अनेक विषम परिस्थितियों में उलझने पर भी अपना जनाधार बनाने में सक्षम अनुभव करेगी, क्योंकि उस समय भाग्येश शनि की एवं कर्मेश उच्चगुरु की (५ जुलाई '०२ ई. के बाद) कर्मस्थान पर विशेष दृष्टि होगी। प्रतिरोधी किंवा कुछ अन्य पार्टियां इस पार्टी के साथ मिलकर पुनः अपना जनाधार बनाना चाहेंगी। वैसे इसवर्ष केन्द्रीय-शासनतन्त्र को भारी संकटों-समस्याओं का सामना करना पड़ेगा, स्थिति डगमगा जाएगी, लेकिन भाजपा सरकार अपना कार्यकाल पूरा कर सकेगी; ऐसा ग्रहस्थिति के आधार पर लिखा है, सर्वज्ञ तो भगवान् ही हैं।

कांग्रेस पार्टी

कांग्रेस पार्टी :- कांग्रेस पार्टी के यथालब्ध जन्मांग में भाग्येश-कर्मेश (सूर्य-बुध) व्ययस्थान में हैं। लग्नेश गुरु का आयेश शुक्र के साथ आयस्थान में सम्बन्ध, द्वितीयेश-तृतीयेश शनि नीच होकर योजनास्थान में चन्द्र के साथ है। जन्मकालिक ग्रहस्थिति इतनी सशक्त नहीं, कि अपने ही बलबूते पर सत्ता प्राप्त कर सके। लेकिन गोचरग्रहस्थिति के अनुसार ५ जुलाई २००२ के बाद बृहस्पति के कर्कराशि में आने पर योजनापति मंगल पर पूर्णदृष्टि होने से विशेष-सक्रियता पार्टी में नजर आएगी एवं पार्टी का मनोबल पुनः प्रबल होगा, नेतृत्व का मनोबल बढ़ेगा, विशेष परिवर्तन- परिवर्धन सन् २००२ ई. के मध्य इस पार्टी में होंगे, आगे मजबूत स्थिति बनाकर प्रभावक्षेत्र को यह पार्टी पुनः प्राप्त कर लेगी।

संयुक्त मोर्चा

संयुक्त मोर्चा :- शनि-केतु छठे भाव में, मंगल सप्तमेश होकर सप्तमस्थान में, बुध (भाग्येश) के साथ है। अष्टमेश शुक्र भाग्यस्थान में चन्द्रयुत है, लेकिन गुरुदृष्ट भी है। इस दल का नवीकरण नए नाम पर संभव प्रतीत होता है, गुरु के कर्कराशि में आने पर कुछ प्रमुखपार्टियां एवं प्रमुख राजनीतिज्ञ एक सशक्त नई पार्टी बनाकर आगे निर्वाचनक्षेत्र में आकर केन्द्र में शासन कर रही पार्टियों के लिए एक केन्द्रशासन के विकल्प के रूप में प्रस्तुत करेंगे। इस मंच पर दक्षिण की कुछ पार्टियां एवं राष्ट्रीय स्तर की कोई बड़ी पार्टी सहायक होगी।

राष्ट्रीय जनतान्त्रिक गठबन्धन

राष्ट्रीय जनतान्त्रिक गठबन्धन :- इस गठबन्धन सरकार की कुण्डली में नवमेश चन्द्र लग्न में नीच है, दशमेश सूर्य तीसरे भाव में शत्रुक्षेत्रीय है। अष्टमभाव में शनि, गुरु-बुध के क्षेत्र में एवं बुध गुरु के क्षेत्र में परस्पर समसप्तकयोग बना रहे हैं। गोचरग्रहस्थिति के अनुसार यह गठबन्धन बीच-बीच में कमजोर होने पर भी अपने कार्यकाल को पूरा कर जाएगा। सन् २००३ के प्रारम्भ में इसगठ बन्धन में विशेष पीरवर्तन होंगे, लेकिन पुनः मजबूती प्राप्त कर सकेगा। लग्न में नीच चन्द्र, चतुर्थस्थ शुक्र नीचभंगयोग बनाते हैं, जो देश की महिमा को उजागर करेगा। लेकिन गोचर में शनि की स्थिति इस मोर्चे के घटकतत्त्वों में वैमनस्यता बनाकर सरकार को कई बार खतरे में डाल सकती है। आगामी उ.प्र. आदि प्रान्तों के मध्यावधि लोकसभा निर्वाचनों में इस पार्टी को भारी निराशा का सामना करना पड़ेगा।

१३ अक्तू. १९९९ ई. १०/३० A.M.

श्री अटल बिहारी वाजपेयी

श्री अटल बिहारी वाजपेयी :- सम्मान्य श्री अटल जी की जन्मकुण्डली में शनि केन्द्रेश-त्रिकोणेश होकर लग्न में उच्च है। कर्मक्षेत्र में राहु, नवमेश गुरु, सूर्ययुत बुध राजनैतिक जीवन में प्रखरता, नई योजनाएं एवं राजनीतिक चातुर्य का प्रतीक है। राहु में मंगलान्तर जून २००१ में समाप्त हो गया है। अब बृहस्पति के प्रभावक्षेत्र में चल रहे हैं, बृहस्पति तृतीयेश एवं षष्ठेश होकर शत्रुओं को

प्रबल करेगा; विरोधी पक्ष किंवा अपनी ही पार्टी के कुछ घटकतत्त्व गड़बड़ी करेंगे, जिसे भाग्येश प्रबल बुध गुरुयुत होकर स्थिति को नियन्त्रित कर देगा। जुलाई २००२ से उच्च गुरु की कर्मस्थान में स्थिति आपकी गरिमा-प्रतिष्ठा एवं प्रभुत्त्व को बरकरार रखेगी। लेकिन मारकेश मंगल की छठे भाव में स्थिति स्वास्थ्य के लिए खराब है, स्वास्थ्य रक्षार्थ विशेष सावधान रहना होगा। गोचरग्रहस्थिति के अनुसार १८ मई २००२ ई. तक का समय सरकार के लिए एवं श्री वाजपेयी जी के लिए काफी उलझनपूर्ण है। इस अवधि में राजनीतिक वातावरण किसी विशेष कारण को लेकर क्षुब्ध रहेगा। आगे ४ से २२ जुलाई एवं १६ अगस्त से ५ अक्तूबर २००२ ई. तक की ग्रहस्थिति, २२ नवम्बर '०२ से लेकर संवत् के अन्ततक शनि-राहु का मंगल के साथ समप्तकयोग भाजपा सरकार एवं भाजपा के प्रतिष्ठित नेताओं के लिए भयावह है। इस समय प्रधानमन्त्री एवं श्री आडवानी जी को सुरक्षा व्यवस्था सुदृढ़ रखनी चाहिए।

श्रीमती सोनिया गांधी :- यथालब्ध कुण्डली में शनि वक्र है। लग्नेश चन्द्र द्वादशस्थ है। एकादशस्थ राहु की महादशा शत्रुदमनकारक एवं चतुर्थभाव में गुरु-शुक्र की स्थिति परिस्थितियों को अनुकूल बनाती है। दशमभाव पर गुरु-शुक्र की दृष्टि राजनीति में प्रतिष्ठापित तो करती है, लेकिन दशमेश मंगल का मारकेश शनि के साथ षडष्टकयोग भारत के प्रतिष्ठित पद पर आसीन होने में बाधक है।

श्रीमती सोनिया गांधी

श्रीमती प्रियंका गांधी की ग्रहस्थिति के अनुसार मई (सन् २००३ ई.) के लगभग राजनीति में समावेश के प्रबल योग हैं। इन्हें राजनीति के क्षेत्र में काफी गरिमा-प्रतिष्ठा आगामी वर्षों में उपलब्ध हो सकती है। इनके जन्मांगलग्न (जन्मसमयादि के आधिकारिक रूप से) ठीक प्राप्त न होने से विशेष लिखना संभव नहीं।

भारत के कुछ प्रान्त

पंजाब :- मीनराशि से प्रभावित इस राज्य का प्रभावी ग्रह बृहस्पति ४ जुलाई २००२ ई. तक मिथुन राशि में ही रहेगा। २ नवम्बर २००१ को गुरु वक्री हो रहा है, शनि पहले ही वक्र चल रहा है। इस समय राजनीतिक पार्टियां अपना पक्ष मजबूत करने पर जुट जाएंगी एवं निर्वाचनों का संकेत मिलेगा। १८ जनवरी २००२ ई. को बुध के वक्री होने पर यहां की राजनीति में विशेष हलचल एवं जोड़तोड़ की नीति गरमा जाएगी। सत्तारूढ़ दल को भारी कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। शनि-मंगल-राहु का संवत् के प्रारम्भ में एक साथ होना यहां के वातावरण को क्षुब्ध करेगा। शासन को विशेष सावधान रहना होगा। संवत् के प्रारम्भ से १८ मई २००२ तक की ग्रहस्थिति, आगे ४ से २२ जुलाई, १६ अगस्त से ५ अक्तूबर एवं ७ जनवरी २००३ से संवत् के अन्त तक शनि-मंगल का समसप्तक इस प्रान्त के लिए कई प्रकार की समस्याओं को लेकर उपस्थित होगा। प्रधान नेता के लिए भी ये उल्लिखित समय कठिन प्रतीत होता है। जनसाधारण कुछ आतंकित, बम्बविस्फोट व हत्याकाण्ड की घटनाएं चिन्ताकारक होंगी। पंजाब में एक नया राजनीतिक समीकरण बनेगा। सितम्बर २००१ से ही इसकी सत्ता अनुभव होगी; लेकिन इस समीकरण (मोर्चा) के परिणामस्वरूप अकाली दल (बादल) को अंततः लाभ होगा।

हरियाणा :- प्रभावराशि मीन, नामराशि मिथुन है। ३ नवम्बर से मई २००२ ई. तक यहां राजनीतिक पार्टियां पदासीन पार्टी की छवि को खराब करना चाहेंगी। लेकिन इस प्रान्त के मुख्यमन्त्री श्री ओमप्रकाश चौटाला जी की जन्मकालिक ग्रहस्थिति के अनुसार इस समय चन्द्र की महादशा में बृहस्पति का अन्तर २८ जनवरी २००२ तक प्रभावी रहेगा, - यह समय श्रीचौटाला जी के प्रभाव को क्षीण न होने देगा। इससे आगे चन्द्र में शनि का अन्तर (२८ अगस्त २००३ तक) विशेष उलझनपूर्ण रहेगा एवं हविपा आदि पार्टियों के मेल से विशेष राजनीतिक - विकल्प इस क्षेत्र में चर्चित होंगे। इस समय कांग्रेस पार्टी भी सक्रिय एवं समर्थ भूमिका में दिखाई देगी। प्रधान नेता को इस महादशा में विशोष राजनीतिक दृष्टि से सावधान रहना होगा। गोचरग्रहस्थिति के अनुसार इस प्रान्त में नई-नई योजनाएं एवं सर्वतोमुखी प्रगति के लिए सरकार की तरफ से बहुमुखी प्रयास होंगे, लेकिन सार्वजनिक पिछड़े क्षेत्रों को मुद्दा बनाकर कुछ राजनीतिक दल अपना प्रभाव बढ़ाने में सफल रहेंगे।

हिमाचल प्रदेश :- प्रभावराशि मीन है, नामराशि मिथुन है। यहां के प्रधान नेता के लिए नवम्बर २००१ से मई २००२ ई. तक का समय राजनीतिक दृष्टि से कठिन परिस्थितियों वाला है। इस प्रान्त में कांग्रेस पार्टी का जनाधार प्रबल होता मालूम देता है। जुलाई २००२ के बाद विकासकार्य अधिक होंगे। लेकिन ४ जुलाई से २४ जुलाई तक एवं १६ अगस्त से ५ अक्तूबर तक, ४ दिसम्बर के लगभग एवं ७ जनवरी २००३ ई. से संवत् २०५९ वि. के अन्त तक की ग्रहस्थिति इस प्रान्त के लिए विशेष खराब रहेगी। यान-दुर्घटनाओं, प्राकृतिक प्रकोप आदि से जनधनहानि के योग बनते हैं। प्रधान नेता को भी इन समयावधियों में अपनी छवि को मुखरित रखने के लिए विशेष प्रयास करने होंगे। यहां के कृषि क्षेत्र में प्राकृतिक प्रकोप से क्षति संभव है। औद्योगिक क्षेत्रों के विकास हेतु विशेष पग उठाए जाएंगे।

जम्मू-काश्मीर :- प्रभाव राशि तुला है। संवत् के प्रारम्भ से ही तुला राशि का स्वामी शुक्र, शनि-मंगल-राहु के साथ मेल कर रहा है; यहां स्थिति विकट होने से भारतीय शासनतन्त्र को कुछ कठोर पग उठाने होंगे और यह समय २ नवम्बर २००१ से मई २००२ ई. तक अनिवार्य मालूम देगा। अगस्त सितम्बर २००२ ई. एवं ७ जनवरी २००३ ई. से सम्वत् के अन्त तक का समय इस प्रान्त के लिए विशेष भयावह है। **गतवर्ष सं. २०५८ वि. के पंचांग में हमने जम्मू- काश्मीर में इस आज के मौजूदा घटनाचक्र के बारे में पृ. ३ पर, जम्मू-काश्मीर शीर्षक के अन्तर्गत इस प्रकार लिखा था,-** जोकि अक्षरशः सत्य घटित हो रहा है-

"यह सवंत् यहां की जनता एवं शासकों के लिए भारी संकटमय मालूम देता है। अफगानिस्तान तैयार की गई आतंकवादी शक्ति को मुख्य रूप से काश्मीर पर केन्द्रित करेगा। स्थिति कई जगहों पर

विस्फोटक होगी। सीमाप्रान्तों पर युद्धमय वातावरण से देश का वातावरण अशांत हो सकता है, सीमा पार की गतिविधि को ध्यान में रखते हुए सेना को तैय्यार रखना होगा। अप्रैल से अगस्त, नवम्बर से अप्रैल २००२ तक सीमाप्रान्तों पर सावधानी की जरूरत है-प्रतिष्ठित व्यक्ति किंवा राजनीतिज्ञों के लिए समय कठोर है। बिना कठोर सैनिक दण्ड से शान्ति संभव नहीं।"

पाठको ! आतर्क्य भविष्य देखने की क्षमता तो इस कलियुग में कठिन ही है। पुनरपि ज्योतिष विज्ञानदृष्ट्या एवं श्री प्रभुकृपावशात् राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय जो शुभाशुभ घटनाएं मेरी अल्पविषया मति में प्रस्फुरित हुई हैं, आपके समक्ष उपस्थिति कर दी हैं। आगे **कर्तुमकर्तुमन्यथाकर्तुम्** समर्थ भविष्य के निर्धारक स्वयं प्रभु ही हैं। उनकी प्रबल मायाशक्ति के सम्मुख मुझ जैसे अल्पज्ञ की भीवष्यलेखन में प्रवृत्ति बालचापल ही तो है :-

" तत्त्वं चात्रेश्वरो वेत्ति नाहं वेद्मि कदाचन।"

शुभचिन्तक -
इन्दुशेखर शर्मा,
श्रीमार्त्तण्ड भवन,
मु.पो.कुराली, रोपड़ (पंजाब)

(लेख पूर्ण होने की तिथि- २६ सितम्बर सन् २००१ ई.)

आभार प्रदर्शन

हमारे परम सहयोगी मित्रवर ज्ञानी श्री करतार सिंह जी 'गढ',

(मालिक, कंवल फोटोस्टेट, चौक माता रानी, कुराली । PHONE 01888-641274)

ज्ञानी श्री करतार सिंह जी विगत १० वर्षों से हमारी 'शिरोमणि तिथपत्रिका' (पंजाबी) और 'श्री मार्त्तण्ड आलम जन्त्री' (उर्दू) के अनुवाद, पाण्डुलिपि-लेखन, प्रूफरीडिंग आदि का श्रमसाध्य पूरा कार्य अत्यन्त आत्मीयभाव, तन्मयता, परिश्रम तथा निःस्वार्थभाव से करते चले आ रहे हैं; जिससे ये दोनों प्रकाशन प्रतिवर्ष उत्तरोत्तर समृद्ध कलेवर में हमारे पाठकों को उपलब्ध होने लगे हैं। अब तक श्रीमार्त्तण्डपंचांग (हिन्दी) की ही संस्कार-समृद्धि की ओर हमारा अधिक झुकाव रहा । अतः एवं ज्योतिष से सम्बद्ध विशेष लेखमाला तथा अन्य ज्ञानवर्धक स्तम्भ हम इसी (हिन्दी) पंचांग में प्रकाशित करते रहे हैं। उर्दू एवम् पंजाबी की इन जन्त्रियों में ऐसे लेख एवम् स्तम्भों को समाविष्ट करने से, हम अनुवाद आदि के लिए समय की कमी के कारण, आज तक कतराते रहे हैं । लेकिन अब प्रियमित्र ज्ञानी करतार सिंह जी की हमसे निःस्वार्थ घनिष्ठता एवम् उर्दू-पंजाबी भाषाओं में इनकी प्रशस्य दक्षता के कारण इन दोनों प्रकाशनों को भी हम ऐसे लेख-स्तम्भों से श्री मार्त्तण्डपंचांग की ही भान्ति अलंकृत करने में अपने आप को समर्थ पा रहे हैं। विगत कुछ वर्षों से दिए जा रहे नये-नये आकर्षक, ज्ञानवर्धक विषयों से वर्धमान कलेवर वाली 'शिरोमणि तिथपत्रिका' का श्रेय आपको ही है। इन उर्दू-पंजाबी जन्त्रिओं के अनुवाद आदि के भारी उत्तरदायित्त्व को पूरी तरह निभाते हुए आप जेसे-तैसे समय निकालकर हिन्दी के श्रीमार्त्तण्डपंचांग की प्रूफ-रीडिंग आदि में भी हाथ बटाने में हर्ष अनुभव करते हैं। अपने प्रति इस निःस्वार्थ सौहार्दातिशय के लिए हम सभी हृदय से ज्ञानी जी के ऋणी हैं। आप अपने व्यस्त जीवन के क्षणों में भी हमारे लिए प्रचुर पर्याप्त समय सहर्ष निकाल लेते हैं। आपके इस सौहार्दभरे स्पृहणीय सहयोग से हमारा प्रकाशन-कार्यभार काफी कुछ हल्का हुआ है। एतदर्थ हम आपके प्रति विनम्रतापूर्वक आभार प्रकट किए बिना सचमुच नहीं रह सकते।

आपका सहयोग भी हमारे लिए कम महत्त्वपूर्ण नहीं है

श्रीमार्त्तण्ड ज्योतिष कार्यालय कुराली के प्रबन्धक, हमारे पूज्य पिताजी के प्रियशिष्य, हमारे अनुजकल्प *चि. प्रेमचन्द्र शर्मा;* संस्कृत के नवयुवा विद्वान आचार्य *श्रीकृष्णशर्मा,* वेदाचार्य, साहित्याचार्य; *चि. दिलबाग शर्मा* पुत्र श्री रामचन्द शर्मा, ग्राम एवं डा. सिनन्द (कैथल - हरि.) एवम् नालावलोग (पंचकूला) के निवासी *चि. सुरेशानन्दशर्मा,* बी.ए., भी 'श्रीमार्त्तण्डपंचांग' (हिन्दी) की पाण्डुलिपि लेखन, प्रूफरीडिंग आदि का काम बड़ी तत्परता, सावधानी, अपनापन और आदरभाव से करते हैं। इस पंचांग के प्रकाशनकार्य का हमारा भार इन युवाओं के स्वत्व भरे उत्साहपूर्ण सहयोग से हल्का हुआ है। एतदर्थ इनके निरन्तर प्रगतिमय, परमोज्जवल भविष्य के लिए हमारा इन्हें सस्नेह आशीर्वाद है।

' संपादक मण्डल '

व्यापार-विमर्श

(संवत् २०५६ वि. की ग्रहस्थिति के आधार पर व्यापारिक वस्तुओं में आने वाली तेजी एवं मन्दी का मासिक विवरण)

संसार के सभी पदार्थों पर ग्रहों का नियंत्रण है, सभी पदार्थों का समावेश बारह राशियों में है। जब ग्रह भ्रमण करता हुआ राशिभोग करता है, तो उस राशि में समाहित सभी व्यापारिक वस्तुएं, ग्रह की प्रकृति के अनुसार प्रभावित होती रहती हैं। प्रभावित वस्तु में परिवर्तन आते हैं और इन्हीं परिवर्तनों से बाजारों में घटा-बढ़ी होती है, जिसे हम ' तेजी-मंदी ' कहते हैं। व्यापारी 'तेजी-मन्दी' इन दो शब्दों से अपने भाग्य को आजमाता है। परन्तु मनुष्य का भाग्य कर्मफल किंवा ग्रहचाल के मुताबिक आर्थिक स्थिति को कभी बिगाड़ता है, कभी सुधारता है। रथ के पहिए में लगे आरों की भांति मनुष्य को समाज में कभी ऊपर उठाता है, कभी नीचे गिराता है- **" चक्रारपंक्तिरिव गच्छति भाग्यपंक्तिः"** कहने का तात्पर्य यह है कि जो व्यक्ति आज व्यापार में घाटा खा चुका है, वह सदा के लिए डूबा ही रहेगा-यह धारणा भ्रामक है । **व्यापार में बहुत ही आश्चर्यजनक उतार-चढ़ाव आते हैं, न जाने आपको शीघ्र उत्तम धनलाभ हो जाए। जो व्यक्ति धनाढ्य होकर सट्टे का काम विचारपूर्वक नहीं करते, वे शीघ्र ही डूब सकते हैं । व्यापार तो किस्मत के सिकन्दर का ही प्रत्यक्ष साथ देता है। अतः किसी भी तरह का व्यापार करने से पहिले आप पत्राचार द्वारा या प्रत्यक्ष मिलकर ग्रहस्थिति पर विचार करा लें,विश्वास रखें, ग्रहस्थिति के आधार पर किए गए व्यापार से आप हानि में न रहेंगे। आप भारीहानि से भी बच सकते हैं।**

जीवन में ग्रहस्थिति के प्रभाव का अध्ययन करने से यह निःसन्देह सत्य सिद्ध हो चुका है, जितना लाभ आपको होना है, उतना ही होगा, अधिक नहीं " यदस्मदीयं नहि तत्परेषाम्" अर्थात् जो मेरा है, वह मिलेगा ही, उसे और कोई नहीं ले सकता । अतः जीवन पर ग्रहों का संकेत समझकर ही व्यापार करना बुद्धिमत्ता है।

खुलकर व्यापार करने से पहिले अप्रत्याशित हानि से बचने के लिये अपनी व्यक्तिगत ग्रहचाल को ध्यान में रखना सतर्कता है । हानिप्रद ग्रह से संबंधित वस्तु का व्यापार न करें। वर्ष में जो ग्रह लाभप्रद हैं, उन ग्रहों के अधिकारक्षेत्र में आने वाली वस्तुओं का ही व्यापार करें, तभी आप लाभ ले सकेंगे।

हाजर एवं वायदा व्यापारी जो अपने व्यापारिक-जीवन से निराश हो चुके हैं, उनके लिए हम यहां व्यापार-विमर्श में ग्रहों का पूर्ण अध्ययन करके तेजी-मन्दी का मशवरा देते हैं, व्यापारियो, निराश न हों । हमसे प्रत्यक्ष मिलें, आपकी उलझी हुई व्यापारिक समस्या का समाधान हम करेंगे ।

संवत् २०५६ में गुरु, शनि, राहु, मंगल, यूरेनस, नेपच्यून और प्लूटो आदि के चार एवं युति प्रतियुति के आधार पर यह स्पष्ट घोषणा की जाती है कि इस साल व्यापार जगत् में विशेष लम्बे तेजी एवं मन्दे के रिएक्शन आऐंगे । इस वर्ष गुड़, खाण्ड, घी, तेल, तिलहन एवं रुई में विशेष लाभ के चांस हैं, तुरन्त फीस भेजकर टेलीफोन से सर्म्पक्र स्थापित करें । विदेशी व्यापारी पत्र द्वारा या टेलीफोन द्वारा सम्पर्क स्थापित करें,उत्तर मिलेगा। कहने का तात्पर्य यह है कि **इसवर्ष व्यापारिक क्षेत्र में रंक से राजा एवं राजा से रंक बना देने वाले विशेष योग हैं । अतः प्रत्यक्ष मिलकर या वर्षभर की फीस भेजकर टेलीफोन के जरिये समय-समय पर, ताजा परामर्श प्राप्त करके उत्तम लाभ प्राप्त करें। व्यापार-विमर्श लेख में जिस जगह हम ताजा मशवरा हासिल करने की बात लिखते हैं , वहां व्यापारी अगर प्रत्यक्ष मिलकर मशवरा लें, तो अच्छा रहे ।** 'व्यापार-विमर्श ' लेख में हम ग्रहचाल के मुताबिक सभी व्यापारियों को प्रतिवर्ष बाजारों के उतार-चढ़ाव से सावधान करते रहे हैं ।

सं. २०४६ वि. में चना के व्यापारी हमारे परामर्श से भारी लाभ उठा चुके हैं । सरसों, तेल, तिलहन में तेजी से सं. २०४८ वि. में तो जो व्यापारी हमारे संपर्क में रहे, लाखों का लाभ उठा गए हैं । हमने तेल, सरसों, बिनौला,अलसी, सूरजमुखी, मूंगफली एवं रुई में अपने व्यापारियों को भयंकर तेजी बताई थी, उस साल व्यापारियों को हमरे परामर्श से छः गुणित लाभ प्राप्त हुआ। सं. २०४९ वि. में तेल, घी, एवं शेयरों के बाजार में जो उथल-पुथल हुई,- उसका खुलासा हम निजी व्यापारियों को देते रहे हैं । सं. २०५२-५३ वि. में रुई एवं दालवग्ना के व्यापारी हमारे साथ मशवरा करके लाखों रुपये का लाभ प्राप्त कर चुके हैं ।

सं. २०५४ वि. में सरसों के व्यापारी हमारे ताजा मशवरे से भारी हानि से बचे एवं गुड़ के व्यापारी लाखों कमा गए। सं. २०५५ वि. में तेल के व्यापारी २४ अगस्त तक ५४५०/- तेल के भाव में सौदा सैटल करके पूरा लाभ ले गए । सं. २०५६-५७ वि. में तेल, गुड़, सरसों, सोना-चांदी एवं अनाजों के व्यापारी हमारे मशवरे से विशेष लाभ प्राप्त कर चुके हैं । **व्यापारियों से अनुरोध है कि व्यक्तिगतरूप से आकर व्यापारिक जानकारी लेने में भारी लाभ ले सकेंगे । दूर-दराज से आने वाले व्यापारी टेलीफोन से समय निश्चित करके आएं या एक मास की फीस ५०० रु. भेजकर टेलीफोन से ही तेजी-मन्दी जान सकेंगे ।**

सं. २०५६ वि. में ग्रहों के वक्रमार्गी, युति, गति के अनुसार हम इसवर्ष तेजी-मन्दी की विशेष लाइनों का संकेत देंगे, साथ ही सामयिक तेजी-मंदी का विवेचन भी करेंगे ।

व्यापारियों से निवेदन है, कि वे निम्नांकित हिदायतों को ध्यान में रखकर, अपनी ग्रहचाल के अनुकूल होने पर ही व्यापार करें। व्यापार में किसी प्रकार की हानि के लिए सम्पादक/लेखक जिम्मेदार न होंगे ।

नोटः- वायदा व्यापार या हाजर सौदा के व्यापार की लाईन अगर लिखे या बताए गए विचार के

विपरीत चले तो तुरंत सौदा काटकर नुकसान से बचें, तुरन्त प्रत्यक्ष मिलकर या टेलीफोन से ताजा मशवरा हासिल करें । ऐसी स्थिति में किसी प्रकार के नुकसान(हानि) की जिम्मेदारी हम नहीं लेते । अर्थात्- व्यापार में हानि होने पर हम जिम्मेदार न होंगे ।

वायदा-व्यापारियों के लिए हिदायतें

(१) सदैव उतने ही लाभ की आशा करके व्यापार करें, जितनी साधारणतया हानि उठाने की सामर्थ्य हो। (२) सदैव याद रखो, कि वायदा व्यापार में नुक्सान की लिमिट बांध कर काम करें, ज्यादा नुक्सान व घबराहट से बच जाओगे, कम नुक्सान में सौदा काट देना अक्लमन्दी है। (३) व्यापार करते समय ध्यान रहे- कि सबसे पहले अपने मन में व्यापारिक आधार के साथ-साथ ग्रह-गति के आधार पर निर्णय कर लें कि यह समय इस वस्तु में मोटी तेजी का है या मोटी मन्दी का ? मन में यह धारणा बांधकर बाजार का रुख देखें। यदि व्यापार की लहर तेजी की चल रही हो तो हमारे परामर्श से तेजी का व्यापार करके लाभ उठावें। (४) यदि योग भी मन्दे का हो और बाजार में मन्दे के मोटे कारण भी दिखाई देने लगें एवम् व्यापार के वक्त भी बाजार का रुख मन्दे का हो, तो एसी स्थिति में हर बढ़े भाव में बचाव करते रहिए, थोड़ा सौदा काटकर नफा से सुलटते रहिए। (५) व्यापार की लहर तेजी की है या मन्दी की, यह जानने के लिए खास वस्तु के भावों को देखना चाहिए। यदि उस वस्तु में हर तीसरे-चौथे-आठवें दिन मन्दी के या तेजी के नए-नए भाव आते चले जाएं, जैसे-तीसरे दिन नया भाव मन्दी का आवे तो जान लो, कि वस्तु में अब मन्दे की लहर चल रही है, उछाल में बेच दें। (६) यदि मन्दी के भाव छूटते चले जाएं और तेजी के भाव तीसरे या चौथे दिन नए-नए बनते जाएं तो समझ लें कि तेजी की लहर चल रही है, ऐसे समय जब ग्रहचाल से भी तेजी नजर आए तो तेजी का व्यापार करके प्रायः लाभ उठाया जा सकता है। (७) बाजार के खिलाफ कभी काम न करें। मान लो, आपने तेजी का काम किया, उधर सौदा करते ही मन्दे की लहर चल रही है, तो किसी भी समय तेजी का उछाल आते ही सौदा खत्म कर दो, बड़े नुकसान से बच जाओगे।

हमेशा ग्रहयोग को आधार मानकर और बाजार के रुख को ध्यान में रखते हुए अपनी पाराशरी शुभदशा में व्यापार से अच्छा लाभ उठाया जा सकता है। इसके विरुद्ध खोटी ग्रहस्थिति वाले व्यापारियों को वायदे का व्यापार भूलकर भी नहीं करना चाहिए। भारी हानि हो सकती है, सट्टा तो सितारे का साथी है। अतः समयानुसार पत्र द्वारा अपनी दशा के अनुसार हमारे सुझावों द्वारा लाभ उठा सकते हैं।

इसवर्ष की व्यापारिक तेजी-मन्दी पर विचार करने से पूर्व सं. २०५६ वि. के राजा, मन्त्री, धान्येश-सस्येश एवं रसेश का संक्षिप्तरुप से व्यापार पर प्रभाव जानना चाहेंगे। २०५६ वि. संवत्सर का नाम **'मन्मथ'** है। शास्त्रों में इसका फल इस प्रकार लिखा है ;

"मन्मथाब्देऽखिला लोकास्तस्करा अति लोलुपाः।
शालीक्षु यव गोधूमैर्नयनाभिनवाधरा।।"

स्पष्ट है; कि - लोगों में भौतिक वस्तुओं में अधिक लोभ बढ़े, उत्कोच (रिश्वत), चोरी आदि की घटनाएं बढें। धान, ईख, जौ एवं गेहूं आदि अनाज काफी मात्रा में उपलब्ध होंगे।

इसवर्ष का राजा एवं मन्त्री दोनों शनि हैं; अग्निकाण्ड से कई स्थानों पर खड़ी फसलों को हानि पहुंचेगी। सुण्डी आदि बीमारियों से नरमा, कपास एवं तिलहन को नुक्सान पहुचेगा। कहीं अवर्षण किंवा अतिवर्षण से खड़ी फसलों को हानि व अकाल की स्थिति से जनता को परेशानी उठानी पड़ेगी। देश की आर्थिक-स्थिति कुछ चिन्तनीय होगी, जिसका प्रभाव व्यापारक्षेत्र पर अनुभव होगा। इसवर्ष घी, गुड़, चीनी एवं नरमा, रुई आदि के व्यापारी उत्तम लाभ प्राप्त करेंगे।

सं. २०५६ वि. में शरत् सस्य जातक कुण्डली में शीतकालीन फसलों के स्वामी (धान्येश) सूर्य, शनि-मंगल-बुध-शुक्र-राहु एवं चन्द्र के साथ वृषराशि में हैं। **धान्येश-सूर्य का क्रूर ग्रहों के साथ मेल होने से मूंग-मोठ-बाजरा आदि की फसलों को भारी नुक्सान पहुंचेगा। व्यापारी लोग इन चीजों का स्टॉक करके कार्तिक में लाभ ले सकेंगे।**

ग्रीष्मसस्य जातक कुण्डली के अनुसार गेहूं, जौ, चना, दालवाना की फसल ठीक होगी। किसान लाभान्वित होंगे। लेकिन अवर्षण-अतिवर्षण आदि प्राकृतिक प्रकोप से कुछ प्रान्तों में खड़ी फसलों को हानि होने के योग भी हैं। सस्येश मंगल जी, गेहूं एवं चावल आदि की फसल को हानि पहुंचाएगा।

गत सं. २०५८ वि. के अन्तिम मासों पर पुनः एक नजरः- १६ से १६ फर. २००२ ई. को प्रत्येक वस्तु के वायदा एवं हाजर व्यापार में तेजी के रिएक्शन आएंगे। ७ मार्च के लगभग घी, तेल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, चीनी में तेजी रहे। १४ मार्च के लगभग तिलहन, गुड़, शक्कर, सोना, चांदी में तेजी बनेगी। २६-२७ मार्च को अनाज, गुड़, खाण्ड में तेजी; तिलहनों में बाजार अचानक मन्दे हों।

इससे आगे २००२ ई. अप्रैल २, ३, ४, ७, १० को जोरदार तेजी-मन्दी के योग हैं। व्यापारी ४ से १० अप्रैल तक तेल, तिलहन, खाद्य तेल, गुड़, घी आदि में तेजी से अच्छा लाभ ले सकते हैं। इस समय शेयर बाजारों में राजनैतिक-परिस्थितिवश जोरदार मन्दा आ सकता है, होशियारी से काम करें।

ग्रहों के वक्रमार्ग- युति प्रतियुति, ग्रहों के उदयास्त के अनुसार इसवर्ष सं. २०५६ वि. में चना,

गेहूं, गुड़, चीनी, दालवाना, नरमा, रुई, तेल, तिलहन में भयंकर तेजी-मन्दी के रिएक्शन आएंगे। हमारा व्यापारियों से अनुरोध है, कि प्रत्यक्ष मिलें, या पांच सौ (५००/-)रुपये प्रतिमास के हिसाब से फीस जमा कराकर टेलीफोन से बातचीत करके पूर्णलाभ प्राप्त करें।

अप्रैल

२ अप्रैल को गुरु आर्द्रा नक्षत्र के तीसरे चरण में एवं शनि रोहिणी के तीसरे चरण में प्रवेश करेगा। सोना, चांदी आदि धातु, तेल एवं तिलहन में तेजी रहे, कपास, सूत एवं रस तेज रहें। नमक एवं कर्याणा की चीजों में तेजी रहे।

३ अप्रैल को रेवती नक्षत्र का बुध एवं नेपच्यून (मेदिनी ग्रह) श्रवण के तीसरे चरण में दाखिल होगा, परिणामस्वरूप केसर, मजीठ, कुसुम्भ, लालचन्दन, गेरु, लालमिर्च आदि लाल चीजें, गुड़, खाण्ड, शक्कर, तिल, तेल, सरसों, घी एवं चान्दी में मन्दा आएगा। मोठ, चना, चावल, मूंग, उड़द, मसूर, ज्वार, बाजरा में तेजी बनेगी।

४ अप्रैल को मंगल वृष राशि में आकर शनि एवं राहु के साथ मेल करेगा यह अच्छी तेजी या मन्दे की लम्बी हाजर लाईन बना सकता है, सावधानी से काम करें। हमारे विचार से क्रूर ग्रहों के साथ मंगल का राशि सम्बन्ध विशेष तेजी कारक रहेगा। एक मास में लालचन्दन, लालमिर्च, गेरु, केसर, मजीठ, कुसुम्भ, तेल, सोना-चांदी, ताम्बा-जस्ता आदि धातु व शेयर तेज हों। इस समय तेल, तिलहन, घी, गुड़, खाण्ड में भी अच्छी तेजी की उम्मीद है।

७ अप्रैल को भरणी नक्षत्र का शुक्र भी तेजी कारक ही है। १२ दिन में सोना, चांदी, अफीम, लाल चीजें, सरसों, तिल, तेल, अलसी, घी, उड़द, नारियल में कुछ मन्दा रहे। चना, मूंग, मोठ, ज्वार, तूअर में घटाबढ़ी तथा रुई में तेजी बने।

१० अप्रैल को बुध अश्विनी नक्षत्र एवं मेष राशि में आकर शुक्र के साथ मेल करेगा। ***ध्यान रहे :-*** *अकेला शुक्र ही कभी-कभी जोरदार मन्दी कर देता है और जब यह बुध के साथ राशि-सम्बन्ध बनाता है तो मन्दे को बल देता है।* ***व्यापारी यह समझ लें, कि-यदि बाजार में मन्दा हो तो शुक्र मन्दे को बढ़ावा देता है और धमाके का मन्दा ला देता है; तेजी का ट्रेण्ड चल रहा हो तो शुक्र साधारण तेजी को बल देता है। बुध में बाजारों में घटाबढ़ी करने की विशेष पावर है। शुक्र-बुध दोनों अधिमित्र हैं, बुध-शुक्र दोनों मिलकर बाजारों में अच्छी मन्दी का वातावरण बना देते हैं।***

हमारे विचार से गेहूं, ज्वार, बाजरा, जौ, चना, अलसी, मूंग, मोठ में तेजी; रुई में भी तेजी रहे। दूध, घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, सरसों, तिल, तेल में ६ दिन में मन्दी बने । इस समय चांदी में अच्छी मन्दी आ सकती है। सोना-चांदी आदि धतुओं में भी मन्दे से लाभ लें।

{४ अप्रैल को वायदा व्यापारी तेजी का काम करें, लाभ रहे।
७ से १२ अप्रैल के बीच मन्दे का काम करके लाभ लें।}

१३ अप्रैल को शनिवारी संवत् २०५६ वि. का प्रारम्भ मेष संक्रान्ति से हो रहा है। इसदिन सूर्य मेष राशि एवं अश्विनी नक्षत्र में प्रवेश करेगा। इस समय शुक्र एवं बुध पहले ही मेषराशि में चल रहे हैं। **बुध की अपनी विशेषता यह है, कि जब यह सूर्य के साथ या सूर्य-मंगल-शनि की राशि में आता है तो क्रूर हो जाता है और यह तेजीकारक हो जाता है।** झूठी-सच्ची अफवाहों से बाजार गिरगिर कर ऊपर उठते हैं। परिणामस्वरूप अलसी-एरण्ड, तिल, तेल, सोना, चांदी, लोहा, तांबा, लालचंदन, नारियल, सुपारी, हींग, सूत, मेथी, लौंग एवं इलायची में तेजी बने। गुड़, खाण्ड, शक्कर, घी भी तेज रहें। गेहूं, जौ, चना, उड़द, मूंग, अरहर, मटर आदि में कुछ मन्दे के बाद तेजी के रिएक्शन आएं। मैंथा में भी तेजी बने।

१६ अप्रैल को भरणी नक्षत्र का बुध एवं बुध का मेष राशि में उदय चावल, चना, गेहूं, दालवाना आदि अनाजों में ८ दिन में तेजी बनाएगा। शेयर बाजार एवं रुई में १५ दिन तक मन्दा बन सकता है। १७ अप्रैल को कृत्तिका नक्षत्र का शुक्र रुई, सूत, वस्त्र, चांदी-सोना एवं हीरा-मणि-मोती आदि जवाहरात में मन्दा बनाए। अनाजों में कुछ तेजी- मन्दी के रिएक्शन आएं।

१६ अप्रैल को मंगल रोहिणी नक्षत्र में आ रहा है। इस समय मंगल वृष राशि में शुक्र-शनि-राहु के साथ मेल कर रहा है। राहु-शनि भी इस समय रोहिणी नक्षत्र में ही हैं। रुई, कपास, सूत, वस्त्र, रेशम, सरसों, तिल, तेल, लालमिर्च, हींग एवं शेयर बाजार तेज रहेंगे।

२० अप्रैल को मृगशिरा के प्रथम चरण में राहु एवं ज्येष्ठा के ३ चरण में केतु का प्रवेश रुई, सोना-चांदी में घटाबढ़ी एवं अनाजों में मन्दी बनाए।

२० अप्रैल को शुक्र, वृष राशि में दाखिल होगा। राहु-शनि-मंगल ये तीनों क्रूर ग्रह पहले ही वृष राशि में मौजूद हैं, वृषराशि शुक्र की अपनी राशि है। व्यापारियों की रुचि खरीद में रहेगी। कपड़ा व सूत की खरीद अधिक होगी । निर्यात की नीति व घोषणा से भी तेजी बन सकती है। कच्ची रुई व बंगाल, पंजाब व कल्याण रुई पर भी इसका असर तेजी कारक ही रहता है। रुई, सोना-चांदी के बाजार तेजी की तरफ बढ़ेंगे। **नोट :- यद्यपि वृष राशि का शुक्र रुई, कपास में अच्छी मन्दी; सोना-चांदी में घटाबढ़ी के बाद तेजी एवं अनाजों में भी मन्दे का ही रुख बनाता है; लेकिन यहां क्रूरग्रहों के साथ मेल होने से यह हमें तेजी कारक ही मालूम देता है। अतः बाजार के रुख को देखकर, जांचकर ही व्यापार बढावें।**

२०-२१ अप्रैल को बुध ग्रह अतिचारी हो जाता है। जब बुध अतिचारी होता है, तो उस अवधि

में अच्छी तेजी की संभावना बनती है। अतिचारी बुध में तेलवाना में तेजी का काम करने वाले लाभान्वित होंगे। यह तेजी लम्बी चले।

{२०, २१ अप्रैल को दैनिक तेजी-मन्दी खेलने वाले व्यापारी तिलहनों में तेजी खेलकर लाभ ले सकते हैं। इन दिनों मैंथा तेल में भी तेजी बने।}

२६ अप्रैल को वृषराशि का बुध, शनि-मंगल-शुक्र-राहु के साथ मेल करेगा। बुध अफवाहों के साथ बाजारों में उठापटक करता है। तिलहन बाजारों पर इसका विशेष असर होता है। तेल, तिलहन, गेहूं, जौ, चना, चावल, मटर, कपास, सूत, अफीम में तेजी रहे। रुई में जोरदार घटाबढ़ी के बाद तजी रहे।

२७ अप्रैल को सूर्य भरणी में एवं २८ अप्रैल को शुक्र भी रोहिणी नक्षत्र में प्रवेश करेगा, और २८ अप्रैल को ही गुरु आर्द्रा ४ में दाखिल होगा। सोना, चांदी, तांबा, मूंगा, पीतल, अनाज, सरसों, गुड़, खाण्ड, घी, रुई, छुहारा-सुपारी, नारियल में बाजार अनिश्चित रहेंगे, हमारे विचार से बाजार मन्दे रहेंगे। ३० अप्रैल तक बाजार ऊपर-नीचे चलें।

मई

३ मई को बुध एवं ४ मई को शनि रोहिणी के चतुर्थ चरण में आते हैं। मंगल-शुक्र पहले से ही रोहिणी नक्षत्र में चल रहे हैं। इस प्रकार एक राशि एवं एक नक्षत्र में इन चारों ग्रहों का एक साथ होना कपास, वस्त्र, सोना-चांदी, तांबा, जस्ता, पीतल, तिल, तेल, सरसों आदि तिलहन, मैंथाआयल में भी तेजी कारक है। रुई में पहले तेजी; फिर मन्दा हो। चना, गेहूं, ज्वार, बाजरा एवं दालवाना में तेजी बने।

९ मई को मंगल एवं शुक्र दोनों मृगशिरा नक्षत्र में दाखिल होंगे; तिल, चांदी, गुड़, खाण्ड, शक्कर में तेजी रहे। १२ दिन में गेंहू, चना, ज्वार एवं अन्य व्यापारिक-वस्तुओं में मन्दे की तरफ झुकाव रहता है। ११ मई को कृत्तिका नक्षत्र का सूर्य घी, रुई, सोना, चांदी, अलसी, एरण्ड, गेहूं, जौ, चना, मूंग, मोठ, चावल, राई एवं सरसों में तेजी बनाए। १२ मई को भी बाजार तेज रहेंगे। १३ मई को नेपच्यून वक्री होगा और वृषराशि में चन्द्रदर्शन भी होगा। इस समय भी बाजारों में तेजी से लाभ लें।

१४ मई को सूर्य वृष राशि में दाखिल होगा। इस समय शु., मं., बु., श., रा. एकत्र हैं, बाजारों में जोरदार तेजी की संभावना है। चांदी, सोना, गुड़, खाण्ड, शक्कर, कपास, रुई, सूत, बादाम, सुपारी, नारियल, तिल, तेल, सरसों आदि में अच्छी तेजी बनने की उम्मीद है। गेहूं , जौ, चना, मटर, अरहर, मूंग, चावल में मन्दा आकर तेजी बने।

{नोटः- ९ मई को मन्दा, ११ एवं १४ मई को तेजी लगाकर लाभ ले सकते हैं।}

१५ मई को बुध के वक्री होने पर घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर में तेजी से लाभ लें। १५ मई को शुक्र मिथुन में आकर बृहस्पति के साथ राशि-सम्बन्ध बनाएगा। क्योंकि गुरु सबसे अधिक शुभ एवम् मन्दी प्रधान ग्रह है। यह खेती, अच्छी पैदावार-व्यापार व देश में शान्ति प्रिय वातावरण बनाता है। जिससे बाजार मन्दे ही रहते हैं। लेकिन गुरु-शुक्र जब एकराशि में आते हैं तो वर्षा-बाढ़ से खड़ी फसलों को हानि होती है एवं कहीं युद्धविभीषिका से बाजार प्रभावित होते हैं। अतः बहुत सावधानी से काम करें। हमारे विचार से रुई, कपास, सूत, पाट, बारदाना, एरण्ड, तिल, तेल, सरसों, अरहर, ग्वार आदि में काफी मन्दी आने का योग है। अलसी, गुड़, घी में अच्छी तेजी के बाद घटाबढ़ी होगी। गेहूं, जौ, चना, चावल तेज रहें।

{ १५ से १७ मई तक तिलहनों में मन्दा एवं गुड़, घी एवं अनाजों में तेजी से लाभ लें। }

१८ मई को गुरु पुनर्वसु नक्षत्र के प्रथम चरण में आकर चान्दी, रुई में मन्दी एवं अनाजों में तेजी करेगा। १९ मई को बुध पश्चिम में अस्त होगा, इस समय बुध वक्री भी है। ठीक इसी दिन (१९ मई को ही) मंगल मिथुन राशि में आकर शुक्र-गुरु के साथ मेल करेगा। **ध्यान दें:- यहां मंगल नीच राशि की तरफ बढ़ रहा है और गुरु अपनी उच्च राशि की तरफ बढ़ रहा है। मंगल ग्रह का प्रभाव मौसम - जलवायु पर विशेषतः होता है। कहीं भारी वर्षा, कहीं बाढ़ व कहीं सूखा करके बाजारों को प्रभावित करता है। बाजार का रुख देख कर काम करें।** रुई, गुड़, खाण्ड, शक्कर, अलसी, अफीम, तांवा, कुसुम्भ, मजीठ, तथा अन्य लालरंग की चीजों में अच्छी तेजी बनने के योग हैं। चान्दी के भाव ऊपर-नीचे चलें। मंहगाई में बेचें, मन्दे में खरीदें। २० मई तक बाजार एक जैसे ही चलेंगे। अनाज तेज रहें, रुई में झटके की मन्दी बने । पाट हैसियन एवं शेयर बाजार मन्दे रहेंगे।

२१ मई को आर्द्रा नक्षत्र का शुक्र गेहूं आदि आनाजों में मन्दे का वातावरण बनाए। २३ मई को शनि अस्त होगा। वृष राशि में वक्री एवं अस्त बुध किंवा राहु के साथ मेल कर ही रहा है, साथ ही सूर्य भी वृष राशि में ही है। शनि-सूर्य दोनों परमशत्रु हैं। बुध क्रूर ग्रहों की सन्निधि में होने से क्रूर ग्रह का ही फल करेगा। अनाज एवं दालवाना में तेजी बनेगी। शेयर, सोना-चांदी में मन्दी की संभावना होने पर भी अच्छी तेजी बनेगी, ऐसा विचार है।

{१९ से २४ मई तक अच्छी तेजी के झटके आएंगे, वायदा व्यापारी लाभ ले सकते हैं।}

२५ मई को सूर्य रोहिणी नक्षत्र में आएगा। **ध्यान दें :- वृषराशिस्थ शनि-बुध भी रोहिणी नक्षत्र में ही चल रहे हैं। शनि शीघ्रगति किंवा अतिचारी होने को ही है।** तिल, तेल, एरण्ड, अलसी, सरसों, गुड़ खाण्ड, घी, गेहूं, जौ, चना, ज्वार, बाजरा, ऊन, सूत, वस्त्र, सण, सुपारी, मिर्च एवं राई में तेजी; चांदी में मन्दी एवं रुई में कुछ तेजी हो।

२६ मई को मंगल आर्द्रा में, ३० मई को वक्री बुध कृत्तिका में एवं शनि मृग. १ में दाखिल होगा। सूत, कपास, अलसी, एरण्ड, गुड़, खाण्ड, तिल, तेल एवं नमक तेज रहें। बिनौला भी तेज रहे। रुई, सोना, चांदी में घटाबढ़ी; अनाजों में कुछ मन्दा रहे।

जून

१ जून को शुक्र पुनर्वसु में दाखिल होगा। इस समय शुक्र, गुरु-मंगल के साथ मिथुन राशि में ही है। १२ दिन में अनाज एवं बिनौला तेज रहें; सोना, चांदी, रुई, कपास एवं सूत में जोरदार मन्दा या तेजी के रिएक्शन आएंगे। **२ जून को यूरेनस वक्री होकर बाजारों में अच्छी तेजी या मन्दी करेगा।** विचारपूर्वक काम करें। ४ जून को गुरु पुनर्वसु नक्षत्र के दूसरे चरण में आकर १२ दिन में रुई एवं चांदी में मन्दा ही करेगा ; लेकिन अनाजों में कुछ तेजी करे।

८ जून को सूर्य के मृगशिरा नक्षत्र में आने पर रुई, सूत, रेशम, सण, कपूर, कस्तूरी, चन्दन, सोना, चांदी, उड़द, मूंग, मोठ, चना, बाजरा, अलसी एवं नारियल आदि में तेजी बनेगी। गुड़, चीनी, घी मन्दें एवं सोना तेज रहे। **८ जून को बुध मार्गी होकर** रुई में पहले मन्दी; बाद में तेजी; चांदी में घटाबढ़ी के बाद तेजी बने। ८ दिन में गेहूं, जौ, चना एवं अन्य अनाज तेज होंगे। रेशम, तेल, अलसी, एरण्ड, गुड़, बिनौला, मूंगफली, कपूर, चन्दन, आदि सुगन्धित पदार्थो में मन्दी बने। **नोट :- ८ तारीख को बाजार का रुख देखकर ही व्यापार बढ़ावें, क्योंकि बुध के मार्गी होने पर अचानक बाजारों का रुख बदल सकता है या बाजारों में चल रही तेजी या मन्दी को जोरदार बल मिल सकता है, अतः सावधानी से काम करें।**

६ जून को शुक्र कर्क राशि में दाखिल होगा; कर्क-राशि में स्थित शुक्र पर अतिचारी शनि की खास नजर होगी; अतः शुक्र अपने राशि भोग में रुई में पहलें अच्छी मन्दी; बाद में अच्छी तेजी करेगा। अलसी, एरण्ड, तिलहन, बिनौला-खल, तेल, घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर में अच्छी तेजी बनने की स्थिति बनती है। चांदी, गेहूं, जौ, चना, अरहर एवं मटर में मन्दा बनता हें

{जून के आरम्भ से ८ जून तक वायदा व्यापारी मन्दे में खरीदकर, तेजी में बेचकर, लाभ ले सकते हैं। ६ जून को एक दिन की तेजी से लाभ ले सकते हैं।}

१० जून (सोमवती अमावस) को बुध पूर्व में उदित होगा, ध्यान दें :- इसदिन शनि अतिचारी है एवं पूर्वी भरत बहुत में कम अंगुलमात्र दृश्य सूर्यग्रहण भी है। बुध ग्रह परममन्द गति से चल रहा है तथा सूर्य राहु-शनि एवं चन्द्रमा के साथ है। अतः अनुमान के विपरीत तेजी-मन्दी आ सकती है। सावधानी से काम करें। हमारे विचार से इस समय यदि रुई, सूत, कपास, गेहूं, चना एवं दालवाना यदि मन्दे हों, तो स्टाक करें, ४० दिन में भारी तेजी से लाभ मिलेगा। क्योंकि शनि इस समय अतिचारी है, शनि के प्रभावक्षेत्र में रुई, कपास, शेयरबाजार, अनाज, मूंगफली, अलसी, एरण्ड, सूरजमुखी, सरसों आदि आते हैं। लौहखण्ड से सम्बन्धित शेयरों को भी शनि प्रभावित करता है, अतः जिंसों के खराब होने या पैदावार कम होने के समाचारों से बाजार उठेंगे। कहने का तात्पर्य यह है कि विचारपूर्वक काम करके अच्छा लाभ लिया जा सकता है।

१० जून के ग्रहणफल के अनुसार सूत-कपास-रुई के स्टॉक से १० मास में उत्तम लाभ मिल सकता हैं। खड़ी फसलों का नुक्सान होनें से दालवाना एवं अनाजों में तेजी बनेगी - ऐसा विचार है।

१२ जून को शुक्र पुष्य नक्षत्र में प्रविष्ट होगा एवं इसी दिन आर्द्रा नक्षत्र में चन्द्रदर्शन भी होगा। शुक्र पर अतिचारी शनि की दृष्टि है, चन्द्रमा मिथुन राशि में मंगल-गुरु के साथ मेल करेगा। रुई, सूत, सण,रेषम,ऊन व अनाजों में तेजी बने। लाख, चमड़ा, कपूर ,पारा,शिंगार, हींग, गुड़-खाण्ड-शक्कर मन्दे हों।

१५ जून को सूर्य मिथुन राशि में आकर मंगल एवं गुरु के साथ राशि-सम्बन्ध बनाएगा। १६ जून को रोहिणी नक्षत्र का बुध एवं मंगल ग्रह का अस्त होना पाट, बारदाना, रेशम, सूत, कपास रुई,सरसों लोहा, तिल, तेल,गुड़, खाण्ड, शक्कर, चीनी, घी, मूंग,उड़द, गेहूं, जौ, चना, चावल आदि प्रत्येक जाति के अनाजों में तेजी कारक है। सोना,चांदी में भी तेजी आती है। इस समय अलसी में विशेष तेजी का झटका आ सकता है। १८ जून को पुनर्वसु नक्षत्र का मंगल १७ दिन में रुई, चांदी,नमक, खाण्ड, तिल, तेल, सरसों में तेजी करे।

२० जून को गरु पुनर्वसु के तीसरे चरण में आकर रुई आदि सभी चीजों में तेजी एवं सरसों में कुछ मन्दा करें। २२ जून को आर्द्रा नक्षत्र का सूर्य एवं रोहिणी के चतुर्थ चरण में राहु, ज्येष्ठा के दूसरे चरण में केतु का प्रवेश रुई, सूत, कपास, खल, अलसी, एरण्ड, मोती, गेहूं, चावल, चना, जौ आदि अनाजों में तेजी करेगा; सोना-चांदी में घटाबढ़ी चले। २३ जून को आश्लेषा का शुक्र एवं वक्री नेपच्यून श्रवण २ में आकर रुई, चावल, चांदी में मन्दे का वातवरण बनाएगा।

२५ जून को मृग. २ में शनि के आने पर रुई,सोना, चांदी में घटाबढ़ी हों, कपास व अनाज तेज रहेंगे।

२६ जून शनिवार को शनि के उदय होने पर ८ दिन में रुई, शेयर, अलसी, सरसों, एरण्ड, विनौला, एवं मूंगफली में मन्दा हो। सज्जी, लोहा, सीसा, रांगा आदि काले पदार्थ, लकड़ी, लहसुन, चावल एवं गुड़-खाण्ड में तेजी आए। २६ जून को ही मृगशिरा नक्षत्र का बुध १५ दिन में रुई, सोना, चांदी में मन्दा; सरसों, तारामीरा में घटाबढ़ी करे।

{१५ जून से ३० जून तक मन्दे में खरीदें और तेजी में बेचकर लाभ लेते रहें।}

जुलाई

१ से ३ जुलाइ तक तिलहन बाजार कुछ तेज रहें। ४ जुलाई को बुध मिथुन राशि में आकर गुरु, मंगल एवं सूर्य के साथ मेल करेगा। रुई, सोना, चांदी में मन्दा होकर जोरदार तेजी बनेही। सरसों, तारामीरा में घटाबढ़ी के बाद तेजी; पशुओं के भाव तेज रहें।

४ जुलाई को मंगल अपनी नीच- राशि कर्क में अएगा। कर्क-राशि के मंगल पर शनि की विशेष दृष्टि है। रुई में झटके के साथ मन्दे एवं तेजी के रिएक्शन आएंगे, लेकिन तेजी प्रधान रहेगी। सरसों, एरण्ड, अलसी, तेल आदि में मन्दा आने की उम्मीद होने पर भी तेजी बनेगी, चान्दी में घटावढ़ी; सारे अनाज, गुड़, शक्कर तेज होंगे।

दैनिक तेजी-मन्दी खेलने वाले व्यापारी, ४ जुलाई को तेजी से लाभ लेंगे।

ध्यान दें:- कर्क का मंगल यद्यपि मन्दीकारक है, पुनरपि मंगल पर क्रूरग्रह राहुयुत शनि की दृष्टि तेजी ही करेगी, समझ से व्यापार बढ़ावें।

५ जुलाई को पुनर्वसु के चतुर्थ चरण एवं कर्क राशि में गुरु का प्रवेश महत्त्वपूर्ण है। इसी दिन शुक्र मघा नक्षत्र एवं सिंह राशि में प्रवेश करेगा। यहां व्यापारी ध्यान रखें कि कर्क राशि का गुरु उच्च माना जाता है; एवं कर्कराशि में नीच-मंगल के साथ गुरु का मेल हो रहा है।

गुरु का सबसे अधिक प्रभाव रुई, कपास पर अनुभव किया गया है। रुई, कपास, तेलवीया, चांदी, सोना, शेयर-बाजार आदि-आदि सभी प्रमुख व्यापारिक-वसतुओं में बहुत बड़ी तेजी का चांस बन रहा है। **गुरु जब आश्लेषा नक्षत्र में आएगा तब जोरदार तेजी बनेगी। (प्रत्यक्ष मिलें या पूरी फीस भेजकर अेलीफीन से ताजा मशवरा हासिल करें।)**

कर्कराशि में स्थित गुरु एवं मंगल पर शनि की विशेष दृष्टि है। व्यापारियों की उम्मीद के प्रतिकूल चांदी-रुई में जोरदार तेजी के झटके आएंगे। तेल, तिलहन, सोना-चांदी, शेयर बाजार एवं दालवाना आदि सभी अनाजों में अच्छी तेजी बनेगी।

" दैत्यगुरुर्यदा कर्के रसानां वै महर्घता। सर्वधान्यमहर्घत्वं मेघाश्च प्रबला भुवि ।। "

नीच मंगल एवम् सिंहराशि का शुक्र वर्षा में कमी करके लालमिर्च, घी, गुड़, खाण्ड एवं अनाजों में तेजी करता है। चांदी में झटके की मन्दी, रुई में ८-१० दिन में मन्दा आकर तेजी हो।

६ जुलाई को पुनर्वसु का सूर्य रुई, सोना, चांदी, गुड़, खाण्ड, तिल, ज्वार, मोठ, बाजरा, उड़द, चावल, नमक, सज्जी, हरड़, सुपारी, नारियल, माजू, केसर,मजीठ, नील, सोंठ,गुग्गल आदि सुगन्धित पदार्थ एवं करयाणा में तेजी बने। ७ जुलाई को आर्द्रा नक्षत्र का बुध गेहूं, उड़द, जौ, चना, मूंग, मोठ में मन्दा कारक रहे।

७ जुलाई को गुरु अस्त होगा; रुई व शेयर बाजार तेज रहेंगे। सोना-चांदी एवं अनाजों में मन्दे का रुख रहे। ६ जुलाई को पुष्य में भौम के आने पर चांदी व रुई में घटाबढ़ी चले। इस समय सोने में खास तेजी बनने का योग है।

६-१० जुलाई को बुध अतिचारी होकर सूर्य के साथ राशि सम्बन्ध बनाता है। मिथुन राशि में बुध के अतिचारी होने से रुई, कपास, तेलवाना, पाट, बारदाना, हल्दी तथा तेलों में तेजी का ही कारोवार करें; लाभ होगा। क्योंकि सूर्य के साथ मिलकर बुध यदि अतिचारी हो तो तेजी ही बनाता है; - यह अनुभव है। यह तेजी तिलहन बाजारों में कुछ लम्बी चल सकती है, विचार से काम करें।

११ जुलाई गुरुवार पुष्य नक्षत्र एवं कर्कस्थ चन्द्र के समय चन्द्रदर्शन होगा, इसी दिन बुध पूर्व में अस्त होगा। अनाज, घी आदि मन्दे; रुई में घटावढ़ी; पहले तेज; बीच में मन्दी; अन्त में फिर तेज। सोने में घटावढ़ी के बाद तेजी बने।

१४ जुलाई को बुध पुनर्वसु में आकर सूत एवं कपास के भाव में मन्दा करेगा। इन दिनों चांदी, रुई, सूत, सण में भी मन्दे का योग है; स्टॉक करें; आगे लाभ मिलेगा।

१६ जुलाई को सूर्य कर्क राशि में आकर नीच मंगल एवं उच्च गुरु के साथ मेल करेगा, इन ग्रहों पर शनि की विशेष दृष्टि भी है। रुई, सूत, सुपारी, बादाम, गुड़, खाण्ड, शक्कर, तिल, नारियल, सरसों, चान्दी, सोना आदि तेज रहें। गेहूं, चना, जौ, मटर, अरहर, उड़द, मूंग एवं चावल में मन्दा बने। १७ जुलाई को पू. फा. नक्षत्र का शुक्र १४ दिन में गेहूं, जौ, ज्वार, बाजरा, उड़द, मूंग एवं चना में मन्दे का ही वातावरण रखेगा- सावधानी से व्यपार बढ़ाएं।

१६ जुलाई को बुध भी कर्क राशि में आकर मंगल, सूर्य एवं बृहस्पति के साथ राशि सम्बन्ध बना लेगा। यहां विशेष ध्यान देने योग्य बात यह है कि बुध अस्त एवं अतिचारी भी है; - जब मंगल- सूर्य के साथ अतिचारी बुध का एक राशि में मेल होता है तो सच्ची-झूठी अफवाहों से बाजारों में जोरदार तेजी बनती है। अतिचारी बुध का प्रभाव विशेषतः तिलहन बाजारों पर अनुभव किया गया है। कर्क-राशि में गुरु ग्रह के साथ बुध का मेल तेजी कारक ही है। रुई में झटके की मन्दी के बाद तेजी बनेगी। चांदी में भी घटावढ़ी के बाद तेजी बने। गुड़, चीनी, घी, तेल- मूंगफली, सरसों, एरण्ड, सोयाबीन, तिल एवं अन्य तिलहन बाजार में तेजी की अच्छी संभावना है। ध्यान दें:- **यदि मन्दा बने तो शीघ्र ही स्टॉक करें, उत्तम लाभ मिलेगा।**

२० जुलाई को सूर्य, बुध एवं गुरु ये तीनों पुष्य नक्षत्र में आकर तिल, तेल, सरसों, मध, गुड़, खाण्ड, चावल, गेहूं, जौ, ज्वार, बाजरा, सुपारी, सोंठ, गुग्गल, मोम, हींग, हल्दी, लाख, सण, उनी वस्त्र, सिक्का में तेजी करेंगे। सोना, चान्दी में ऊपर-नीचे रेट चलें। रुई में विशेष मन्दी के बाद अच्छी तेजी बने।

२३ जुलाई को मिथुन राशि एवं मृगशिरा नक्षत्र में शनि का प्रवेश व्यापारियों के लिए महत्त्वपूर्ण है :--

" मिथुने च यदा सौरिः दुर्भिक्षं तत्र रौरवम्। पश्चिमे दारुणं युद्धं नृपाणां च महद्भयम्।। "

सरकारी व्यापारिक नीति एवं राजनैतिक गतिविधि के कारण व्यापार प्रभावित होगा। कहीं दुर्भिक्ष की स्थिति

बनेगी। शनि ग्रह के अधिकार में खासतौर से तिलहन बाजार एवं शेयर बाजार आते हैं। मूंगफली, एरण्ड, तिल, सरसों, अलसी आदि तिलहन, तेल, घी, गुड़, खाण्ड,लोहा में प्रायः तेजी का ही वातावरण रहे। इस समय रुई में जबरदस्त तेजी चलने का सम्भावना है।

२७ जुलाई को आश्लेषा नक्षत्र का बुध १५ दिन में तिल, तेल, सरसों, गुड़, खाण्ड, उड़द, मूंग, मोठ एवं मूंगफली में तेजी बनाए! २६ जुलाई को उ. फा. नक्षत्र का शुक्र १२ दिन में गेहूं आदि अनाजों एवं रुई में तेजी करे; सोना-चान्दी में घटाबढ़ी का कारण बने।

३० जुलाई को मंगल आश्लेषा नक्षत्र में दाखिल होगा, बुध भी इसी नक्षत्र में चल रहा है। रुई में मन्दे का वातावरण बने। अनाज तेज रहें। चान्दी में झटके के साथ तेजी-मन्दी के रिएक्शन आएंगे।

३१ जुलाई को गुरु के उदित होने पर चान्दी एवं धान्य तेज और सोना मन्दा हो।

अगस्त

मासारम्भ में ही १ अगस्त को शुक्र अपनी नीच राशि कन्या में दाखिल होगा। चांदी में घटाबढ़ी के बाद तेजी; गेहूं आदि सभी अनाज, गुड़, खाण्ड, धान व ऊनी-रेशमी वस्त्र तेज हों। चावलों में **विशेष तेजी का झटका आए।**

२ अगस्त को बुध मघा नक्षत्र एवं सिंह राशि में आकर शनि की नजर में आ गया है। सोना, चांदी, रुई, सूत, वस्त्र, देवदारु एवं खट्टे पदार्थों में तेजी हो। गुड़, खाण्ड, शक्कर आदि रस पदार्थ एवं कपूर मन्दे हों; अनाजों के भाव सम रहें।

३ अगस्त को सूर्य के आश्लेषा नक्षत्र में आने पर सोना, चांदी, रुई, बिनौला, गेहूं, चावल, उड़द, चना, गुड़, शक्कर, घी, तिल, तेल, सरसों, एरण्ड, अलसी, मिर्च, मजीठ एवं नील के भाव तेज रहें। **४ अगस्त को** पुष्य नखत्र के दूसरे चरण में गुरु का प्रवेश रुई आदि सभी वस्तुओं में तेजी एवं सरसों में मन्दी करे। **४ अगस्त को बुध का पश्चिम में उदय होने से** वस्त्र रुई व शेयरों में १५ दिन में मन्दा आने का योग है। १० अगस्त को पू. फा. का बुध गुड़, खाण्ड, गेहूं आदि अनाजों में मन्दा करेगा। १० अगस्त को ही यूरेनस वक्री अवस्था में धनिष्ठा के तीसरे चरण में आ जाता है;- यह दालवाना एवं अनाजों में तेजी तथा गुड़-खाण्ड में मन्दा करेगा।

११ अगस्त को शुक्र हस्त नक्षत्र में आकर रुई, चान्दी, चावल में मन्दी करे। इस समय यदि दालवाना एवं मोटे अनाज मन्दे हों तो स्टॉक करें, आगे लाभ होगा। सोना, चांदी कुछ तेज; गुड़-खाण्ड-शक्कर में घटाबढ़ी चले।

नोटः- अगस्त के शुरु में १,२,३ को बाजारों में अच्छी तेजी बन सकती है, लेकिन बाद में १५ अगस्त तक मन्दे का प्रभाव रह सकता है, सावधानी से काम लें। मन्दें में स्टाक करें, तेजी आते ही लाभ लें; इस नीति से काम करने पर लाभ मिलेगा।

१६ अगस्त को सूर्य मघा नक्षत्र एवं सिंह राशि में आकर शनि की नजर में आ जाता है। १५ दिन में मूंग, ज्वार, बाजरा, सरसों तिल, तेल, एरण्ड, दाख, और मिर्च में तेजी करेगा। गुड़, खाण्ड, शक्कर, चांदी सोना,रुई में भी जेजी का रुख रहे। शेयरों में मन्दे का वातावरण संभव है।

१६ अगस्त को उ. फा. नक्षत्र का बुध ७ दिन में उड़द, मूंग, मोठ, मसूर एवं अरहर में कुछ तेजी बनाए। १६ अगस्त को मंगल भी मघा नक्षत्र एवं सिंह राशि में आकर सूर्य से मेल करेगा; इस समय इन पर शनि की विशेष नजर भी है। इसी दिन (१६ अगस्त को ही) गुरु पुष्य नक्षत्र के तीसरे चरण में प्रवेश करता है। रुई में घटाबढ़ी के बाद तेजीएवं चान्दी में मन्दा ही रहे।मूंग, मोठ, उड़द, तिल, सरसों, मूंगफली, राई व गेहूं आदि अनाजों में तेजी हो।

{ १६ से १६ अगस्त तक तेजी मन्दी के अच्छे रिएक्शन आएंगे; मन्दे में खरीदें, तेजी में बेचते रहें। १६ अगस्त को तेजी खेलने वाले लाभ लेंगे }

२१ अगस्त को कन्या का बुध अपनी उच्च-राशि में नीच-शुक्र के साथ मेल करेगा। कन्या राशि रुई, कपास, तेलवाना आदि की पैदावार व फसल की राशि है। चांदी में मन्दी, गेहूं, जौ, चना, गुड़, शक्कर, खाण्ड एवं हल्दी में जेजी का वातावरण बनेगा। २२,२३ अगस्त को भी तेजी का ही माहौल रहेगा।

२४ अगस्त को चित्रा नक्षत्र का शुक्र एवं रोहिणी के तीसरे चरण में राहु, ज्येष्ठा के प्रथम चरण में केतु होने से कपास, रुई, सूत, सोना, चांदी, तांबा, जस्ता, पीतल आदि में तथा अनाजों में मन्दा रहे। गुड़-खाण्ड में तेजी रहे। २५ अगस्त को भी बाजार अनिश्चित रहेंगे। २६ अगस्त को प्लूटो मार्गी एवं शनि मृगशिरा के चतुर्थ चरण में दाखिल होगा। रुई, सोना, चांदी में घटाबढ़ी, गुड़, तेल, खाण्ड, नमक में तेजी का वातावरण रहे।

३० अगस्त को हस्त नक्षत्र में बुध, पू. फा. नक्षत्र में सूर्य एवं नेपच्यून धनिष्ठा ३ में दाखिल होगा। १४ दिन में जीरा, सरसों, गुड़, खाण्ड, तिल, तेल, घी, सोना, गेहूं, ज्वार, चावल, ऊनी कपड़ा, रुई, सूत में तेजी एवं चांदी में घटाबढ़ी चले।

३१ अगस्त को तुला राशि में शुक्र आता है। तुलाराशि- शुक्र की अपनी राशि है। तुला राशि निर्यात (Export) की राशि है। वायदा व सट्टे का व्यापार भी इस राशि से सम्बन्ध रखता है। रुई, चांदी, कपास, सूत आदि बाजारों में शुक्र का प्रभाव विशेष माना जाता है। सिल्क, इतर आदि पर भी इसका प्रभाव रहता है। अकेला शुक्र जोरदार मन्दा कर सकता है। **व्यापारी सावधानी से काम करें। यदि मन्दे का ट्रेण्ड चल रहा हो तो शुक्र मन्दे को ही बल देगा और बाजारों में जोरदार मन्दा चलेगा, यदि तेजी का ट्रेण्ड बना हो तो साधारण तेजी कर सकता है;** - यह ध्यान में रखकर, व्यापार करें। रुई, अफीम में पहले तेजी

आकर, पीछे मन्दी बने। सोना में तेजी; चांदी में घटाबढ़ी एवं गुड़-खाण्ड में कुछ तेजी का वातावरण रहे। तिलहन बाजारों में साधारण घटाबढ़ी के बाद तेजी की सूचना मिलती है।

सितम्बर

सितम्बर के प्रारम्भ में प्रमुख शेयरों में तेजी; तेल, तिलहन में तेजी के झटके आएंगे। ४ सितम्बर को गुरु पुष्य ४ में आने से रुई, सोना-चांदी में तेजी का वातावरण रहेगा। ७ सितंबर को शनिवारी अमावस होने से तेल, तिलहन में अच्छी तेजी बनेगी; कहीं फसलों को नुक्सान पहुंचे। ८ सितंबर को स्वाती का शुक्र एवं रविवारी चन्द्रदर्शन है। सोना, चादी एवं दालवाना में अच्छी तेजी का संकेत मिलता है।

६ सितंबर को पू.फा. में मंगल तिल, तेल, सरसों, मूंगफली, घी, गुड़, खाण्ड, नमक में तेजी करे। मंगल पर शनि की विशेष दृष्टि होने से तेजी अच्छी बनने की संभावना है।

१३ सितम्बर को सूर्य उ.फा. नक्षत्र में दाखिल होगा और बुध पश्चिम में अस्त होगा। बुध-सूर्य दोनों मित्र हैं। सूर्य अपनी राशि में मंगल के साथ है, शनि द्वारा देखा भी जा रहा है। रुई में झटके की मन्दी के बाद शीघ्र तेजी बने। चान्दी तेज; पाट, हैसियन एवं शेयरों में मन्दा बने। कपास, रेशम, सूत, सोना, लोहा, घी, तेल, अलसी, सरसों, एरण्ड, चावल, उड़द, ज्वार, सुपारी, नारियल, मूंज, बांस एवं नील तेज रहें।

१४ सितम्बर को बुध के कन्या राशि में वक्री होने पर घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर में तेजी और गेहूं, जौ, चना, आदि अनाजों में मन्दा आ सकता है, बाजार का रुख देखकर काम करें।

(सितम्बर ३, ७, ६, १३, १४ को तेजी से लाभ लें।)

१६ सितंबर को सूर्य कन्याराशि में आकर बुध के साथ मेल करेगा। बुध परम मन्दगति में है। बुध में सट्टा बाजार, वायदा बाजार में जोरदार तेजी-मन्दी लाने की सामर्थ्य है। रुई, कपास, तिलहन, नारियल, सुपारी, तिल, तेल, मजीठ एवं लाल चीजों में तेजी बनेगी। चांदी व शेयरों में मन्दा आकर, तेजी बनेगी।

२१ सितंबर को गुरु के आश्लेषा (१) में आने पर रुई में जोरदार तेजी का झटका आएगा। घी, तेलों में तेजी एवं प्रत्येक व्यापारिक वस्तुओं में तेजी का वातावरण रहे।

२२ सितंबर को मंगल के उदित होने पर, ५ दिन में रुई, उड़द, तिल, तेल, अलसी में तेजी आए। अनाजों में मन्दे का वातावरण बनेगा।

२७ सितंबर को सूर्य हस्त नक्षत्र में आकर १५ दिन में गेहूं, जौ, ज्वार, गुड़, खाण्ड, कपास, रुई, सूत, जूट, घास, लकड़ी, नमक, हरड़, हींग, धनिया एवं हल्दी में तेजी का वातावरण बनाएगा।

{ सितंबर १६, २१, २२, से २७ तक दैनिक तेजी - मन्दी से लाभ लें। हमारे विचार से इन दिनों बाजार तेजी की तरफ रहेंगे। }

२८ सितंबर को वक्री बुध उ.फा. में आकर ७ दिन के अन्दर उड़द, मूंग, मोठ, मसूर एवं अरहर में कुछ तेजी बनाएगा। रुई में घटाबढ़ी होकर मन्दी; चान्दी में भी मन्दी रहे।

३० सितंबर को उ.फा. नक्षत्र का मंगल २३ दिन में गुड़-खाण्ड-शक्कर में अच्छी तेजी से लाभ देगा।

{५, ६,१६, १८, सितंबर को दैनिक तेजी - मन्दी लगाने वाले मन्दी से लाभ ले सकते हैं। }

अक्तूबर

१ अक्तूबर को शुक्र विशाखा नक्षत्र में आकर रुई व अनाजों में मन्दा करेगा। ३ अक्तूबर को वक्री बुध पूर्व में उदित होगा। बुध का उदय आश्विन में है। रुई में पहले मन्दी, बाद में तेजी रहे। तिल, घी, पाट, हैसियन एवं लालमिर्च में तेजी हो। कपास की फसल अच्छी होने से कपास मन्दा रहे।

६ अक्तूबर को मंगल कन्या राशि में आकर बुध-सूर्य के साथ मेल करेगा। इसी दिन बुध मार्गी भी हो रहा है। रुई में जोरदार तेजी एवं मन्दी के झटके आएंगे। लेकिन तेजी प्रधान रहेगी। चांदी में घटाबढ़ी के बाद तेजी बने। ८ दिन में गेहूं, जौ, चना, अनाज में तेजी हो। रेशम, तेल, अलसी, एरण्ड, गुड़, विनौला, मूंगफली, कपूर, चन्दन, अगर आदि सुगन्धित पदार्थ मन्दे हों। गुड़, खाण्ड, घी में भी मन्दा रहे। सोना, ऊनी-सूती व लालरंग की चीजों, अलसी में तेजी। कन्या राशि का मंगल गेहूं में विशेष तेजी का कारण बन सकता है।

७ अक्तूबर को तुला राशि में चन्द्रदर्शन, आश्विन शुक्ल तृतीया तिथिक्षय घी एवं दालवाना में तेजी कारक रहेगा।

१० अक्तूबर को शुक्र वक्री होगा; शुक्र अपनी नीचराशि कन्या में स्थित है। घी, तेल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, गेहूं, जौ, चना, में तेजी बनेगी। सोना, चांदी, में भी तेजी बने, लेकिन रुई में पहले तेजी बाद में मन्दी बनेगी।

१० अक्तूबर को सूर्य चित्रा नक्षत्र में दाखिल होगा। १५ दिन में रुई, सूत, सोना, चांदी, मोती आदि रत्न, गुड़, खाण्ड, अरहर, गेहूं, चना, तिल, नारियल, सण, केसर, कपूर, एवं लाल कपड़ा में तेजी बनेगी।

११ अक्तूबर को शनि वक्री होगा। शनि मृगशिरा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में वक्र होने से कहीं अवृष्टि एवं अकाल की स्थिति बनने के समाचारों से ज्वार, चावल, घी, तेल, अलसी, सरसों, गेंहू, तमाखू, सीमेण्ट में तेजी का वातावरण बने। एरण्ड में घटाबढ़ी चले। शनि के वक्र होने पर रुई की तेजी पर लगाम लग जाती है, तेजी कम होने लगती है।

१२ अक्तूबर को आश्लेषा २ में गुरु के आने पर घी, तेल में तेजी के साथ प्रत्येक व्यापारिक वस्तु में तेजी का वातावरण रहे। १५ अक्तूबर को हस्त नक्षत्र का बुध गेहूं आदि अनाजों में मन्दे का वातावरण बना सकता है।

१७ अक्तूबर को सूर्य तुला राशि में आकर शुक्र के साथ मेल करेगा। तुला राशि सूर्य की नीच राशि है। रुई, चांदी में मन्दी; गेहूं, जौ, चना, अलसी, सोना, तांबा में तेजी, लाल चन्दन, मजीठ, श्री फल एवं सुपारी में भी तेजी का वातावरण रहेगा।

१९ अक्तूबर को वक्री शुक्र स्वाती नक्षत्र में आकर गुड-खाण्ड में तेजी एवं अनाजों में मन्दा करे। २० अक्तूबर को नेपच्यून मार्गी होकर बाजारों में मामूली उतार-चढ़ाव लाएगा।

२१ अक्तूबर को हस्त नक्षत्र में मंगल के आने पर दालें, घी, गुड़, खाण्ड, नमक में तेजी से लाभ मिलेगा। इस समय बुध भी हस्त नक्षत्र में ही है, अतः तेजी से लाभ लें।

२२ अक्तूबर मंगलवार को शुक्र पश्चिम में अस्त होगा। शुक्र मन्दगति है। सोना, चांदी, गुड़, सूत, कपड़ा, घी, तेल, अलसी, एरण्ड, बिनौला, मूंगफली आदि मन्दे हों; रुई में तेजी बने।

२४ अक्तूबर को स्वाती नक्षत्र का सूर्य एवं चित्रा नक्षत्र का बुध तेजी कारक है। १५ दिन में सूत, सण, रेशम, कपड़ा, सोना, गुड़, शक्कर, बिनौला, सुपारी, मिर्च, अलसी, सरसों, राई एवं हींग, गुग्गल में तेजी बने। रुई एवं चांदी में घटाबढ़ी होकर तेजी हो, अनाजों में भी कुछ तेजी रहे।

२५ अक्तूबर को रोहिणी २ में राहु, अनुराधा ४ में केतु तिल, अलसी, मसूर, गेहूं, उड़द, मूंग, घी, जीरा, कपास सूत में तेजी हो।

२८ अक्तूबर को बुध तुला राशि में आकर सूर्य-शुक्र के साथ मेल करेगा। सूर्य, शुक्र एवं बुध- ये तीनों एकत्र जोरदार तेजी ला सकते हैं, सावधानी से काम करें, लाभ मिलेगा। रुई, गुड़, खाण्ड, सोना एवं अफीम में तेजी रहे। चांदी, अलसी, सरसों, एरण्ड, बिनौला एवं मूंगफली आदि तिलहन में मन्दी एवं तेजी के रिएक्शन आएंगे। **नोटः- यद्यपि तुला राशि का बुध तेल-तिलहन में मन्दीकारक है, लेकिन सूर्य-शुक्र संयोग से यहां हमें तेजी ही मालूम देती है, पुनरपि विचारपूर्वक काम करें; अच्छा लाभ प्राप्त कर सकेंगे।**

३० अक्तूबर को बुध पूर्व में अस्त होगा; एक मास में घी आदि रसपदार्थ मन्दे हों। रुई में घटाबढ़ी चले; पहले तेज; फिर मन्दी और अन्त में फिर तेज रहे। सोने में घटाबढ़ी के बाद तेजी रहेगी।

नवम्बर

१ नवम्बर को स्वाती नक्स्त्र का बुध ८ दिन में रुई में अच्छा मन्दा करे; क्योंकि सूर्य एवं वक्री शुक्र ये दोनों भी स्वाती नक्षत्र में ही चल चल रहे हैं। ध्यान दें:- दैनिक तेजी-मन्दी खेलने वाले व्यक्ति इस दिन जोरदार तेजी या मन्दी की जांच करके ही व्यापार बढ़ावें। यदि तेजी चले तो तेजी में ही काम करें अथवा यदि मन्दा चले तो मन्दे में ही रहें। क्योंकि- मासारम्भ में सूर्य, बुध और शुक्र विशेष स्थिति में चल रहे हैं, अतः तेजीकारक हैं। अनाज, उड़द, तेल, तिलहन में तेजी भी बन सकती है।

४ नवम्बर को सोमवती अमावस वाले दिन स्वाती नक्षत्र में दीपावली भी मन्दे का ही संकेत देती है। दिवाली की शुभ कामनाओं के साथ हम यह बता देना भी उचित समझते हैं कि सोमवती अमावस वाले दिन दीपावली सटोरिये-व्यापारियों के हक में नहीं; अतः सावधानी से काम करें।

५ नवम्बर को कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा मंगलवारी होने से एवं ५ नवम्बर को शुक्र का उदय पूर्व में होने से रुई, सूत, चांदी, चावल, घी एवं सोना तेज रहेंगे। फाल्गुन शुक्ल पक्ष तक रुई में जोरदार तेजी बननी चाहिए- ऐसा विचार है। **शुक्र के उदय होने पर सभी बाजारों का रुख बदल सकता है; अतः विचार पूर्वक काम करें।**

६ नवम्बर को अनुराधा नक्षत्र में चन्द्रदर्शन एवं विशाखा नक्षत्र का सूर्य १४ दिन में जौ, चावल, गेहूं, मसूर, गुड़, खाण्ड, रुई, सूत, सरसों, तिल, एरण्ड एवं अफीम में तेजी करे। अलसी,चांदी में घटाबढ़ी के बाद तेजी रहे। यह तेजी ९ नवम्बर को मध्याह्न तक चल सकती है। ९ नवम्बर को विशाखा नक्षत्र का बुध एवं धनुस्थचन्द्र में **शूल योग** अनाजों में कुछ मन्दा एवं कहीं तेजी का रुख रहे। रुई में विशेष मन्दा आने का योग है। इस योग में रुई खरीदने से आगे भारी लाभ की संभावना को नकारा नहीं जा सकता। ८ दिन में अच्छी मन्दी के झटके संभव हैं।

११ नवम्बर को आश्लेषा नक्षत्र का गुरु घी-तेल में तेजी के साथ प्रत्येक व्यापारिक वस्तुओं में तेजी का वातावरण करे। ११ नवम्बर को चित्रा नक्षत्र का मंगल १२ दिन में गेहूं, चना, चावल, सोना, चांदी, तांबा, पीतल में तेजी का संकेत देता है।

१५ नवम्बर को बुध वृश्चिक राशि में आकर, बृहस्पति की नजर में आ जाता है। घी, तेल, सरसों, रुई, एवं चांदी में तेजी का रुख बने। अनाज एवं अफीम में कुछ मन्दा आए।

१६ नवम्बर को चित्रा नक्षत्र का वक्र-शुक्र एवं वृश्चिक राशि का सूर्य- रुई व उनी वस्त्रों में कुछ तेजी व सोना, चांदी, तांबा और लालरंग की चीजों में मन्दा करे। (**सूर्य-शुक्र एकतरफा लाईन बना सकते हैं, रुख देखें।**)

नोटः- वृश्चिक - धनु एवं मकर यह तीनों संक्रान्तियां, क्रमशः शनिवार- रविवार एवं मंगलवार को होने से खप्पर योग बन रहा है।

" शनिः स्यादाद्य संक्रान्तौ द्वितीयायां प्रभाकरः। तृतीयायां कुजे योगः खर्पराख्योऽति कष्टकृत्।। "

कहीं घोर दुर्भिक्ष की स्थिति से शासन चिन्तित रहे, जनता में जनजीवनोपयोगी वस्तुओं में मंहगाई से परेशानी बढ़े। व्यापारिक-वस्तुओं में तेजी का योग बनेगा। अतः व्यापारियों से अनुरोध है, कि आगे जोरदार तेजी से लाभ रहेगा, सरकार की नीति को देखकर काम करें।

१७ नवम्बर को बुध एवं १९ नवम्बर को सूर्य अनुराधा नक्षत्र में आएंगे। रुई, सूत, सण, सोना, चांदी में मन्दा एवं जौ, चना, ऊन व धातुओं में तेजी बनेगी। गेहूं, अलसी,मिर्च में तेजी होकर मन्दी हो।

२० नवम्बर को पूर्णिमा की वृद्धि, आगे व्यापारिक-वस्तुओं में मन्दी आने का संकेत देती है।

२१ नवम्बर को शुक्र के मार्गी होने पर अचानक बाजार का रुख बदलने की संभावना है, बाजार के रुख को देखकर काम करें। हमारे विचार से रुई में मन्दे का रिएक्शन आए, चान्दी-सोना तेज रहें। इस समय दालवाना, गुड़, घी के संग्रह से आगे अच्छा लाभ मिल सकता है।

२२ नवम्बर को तुला राशि का मंगल शुक्र के साथ मेल करेगा। यह शुक्र-मंगल योग मूल पदार्थों में भारी तेजी करेगा। रुई, कपास, सूत, सण, पाट, बारदाना, मूंगफली, गुड़, खाण्ड, गेहूं, उड़द, मूंग आदि अनाजों व दलहन में तेजी बनेगी। शुक्र का विशेष प्रभाव रुई, गुड़, खाण्ड एवं चान्दी के बाजारों पर देखा गया है, **जब शुक्र क्रूरग्रह मंगल के साथ मेल करता है, तो रुई, चांदी और सोना के बाजार में विशेष तेजी का जोश ला देता है। लोगों की खरीदशक्ति बढ़ेगी। कपड़ा-सूत का उठाव अपेक्षाकृत अधिक होता है। सरकार निर्यात का कोटा ऐलान कर सकती है, समझ से काम करें।**

२६ नवम्बर को बुध ज्येष्ठा नक्षत्र में आ रहा है एवं शुक्र स्वाती में पदार्पण करेगा। ११ दिन में घी, गुड़, खाण्ड एवं चावलों में तेजी बनेगी। दालवाना में कुछ मन्दे का रुख रहे।

२७ नवम्बर को वक्री शनि के मृगशिरा नक्षत्र के तीसरे चरण में आने से रुई, सोना-चांदी में घटाबढ़ी चले एवं अनाज मन्दे रहें। आगे मास में चावल-घी में अच्छी तेजी से लाभ मिलेगा। मासान्त में शुक्र के साथ चन्द्र किंवा मंगल का राशि-सम्बन्ध घटाबढ़ी के साथ बाजारों में तेजी करेगा। सोना, चांदी, अलसी, सरसों आदि तिलहन में मन्दे के बाद तेजी बने। यह योग नवम्बर अन्त तक चलता है।

दिसम्बर

मासारम्भ में २ दिसम्बर को ज्येष्ठा नक्षत्र का सूर्य एवं स्वाती नक्षत्र का मंगल १५ दिन में वस्त्र, चावल, गेहूं, जौ, चना, अलसी, सरसों, एरण्ड, तिल, तेल, हींग, गुग्गुल, पारा एवं गुड़-खाण्ड में तेजी करेगा। चांदी एवं रुई में पहले मन्दी; बाद में तेजी बने। सोना कुछ मन्दा रहे।

४ दिसम्बर को प्लूटो ज्येष्ठा नक्षत्र के तीसरे चरण में प्रवेश करेगा। उसी दिन बुध मूल (१) **धनु में आकर शनि के साथ समसप्तक योग बनाएगा। ४ दिसम्बर को ही गुरु परम-मन्दगति में चलता हुआ वक्री हो जाता है। नोट--- ध्यान दें:- शनि एवं गुरु ये दोनों अब २१ फरवरी सन् २००३ ई. तक वक्रगति से ही चलेंगे। यह मन्दीकारक योग है; इन दिनों में बीच-बीच में कुछ तेजीकारक ग्रहस्थिति भी बनती है; अतः बाजार के रुख को समझते हुए काम करें, लाभ मिलेगा। इस समय ताजा मशवरा हासिल करें।** गेहूं, जौ, चावल, चना आदि धान्य, अलसी व घी में मन्दी; रुई,कपास, सूत, सोना-चान्दी आदि धातु व ऊनीवस्त्र तेज हों।

५ दिसम्बर को वृश्चिक राशि में चन्द्रदर्शन एवं ८ दिसम्बर को **बुध का पश्चिम में उदय होना शेयर बाजार में १५ दिन में मन्दा करेगा। रुई में मन्दे की उम्मीद होने पर भी तेजी का ही वातावरण बनेगा। क्योंकि मार्गशीर्ष में बुध पश्चिम में उदित हो तो रुई में तेजी ही करता है; ऐसा अनुभव है।** रुई, गुड़, चांदी, चावल, पशुचारा, बिनौला आदि तिलहन में तेजी बनेगी।

१३ दिसम्बर को पू.षा. में बुध बिनौला में तेजी; अनाजों में मन्दा एवं सोना, चांदी में विशेष मन्दे का संकेत देता है।

१५ दिसम्बर को सूर्य मूल नक्षत्र एवं धनु राशि में प्रवेश करके, बुध के साथ मेल करेगा। इस समय बुध, सूर्य पर शनि की पूर्णदृष्टि होने से रुई, कपास, सूत, तिल, तेल, सोना, चांदी आदि में तेजी बनेगी। **यह संक्रान्ति उपविष्ट (बैठी) स्थिति में क्रूरवार एवं खप्परयोग वाली है, भारी तेजी बनेगी। अनाज, गुड़, रसपदार्थ एवं लालचीजों में अच्छी तेजी बनेगी। तेजी से तुरन्त लाभ लें, आगे शीघ्र ही मन्दा आ जाने का योग भी है।**

२० दिसम्बर को विशाखा नक्षत्र का शुक्र रुई और अनाजों में मन्दा बनाएगा। २३ दिसम्बर को उ.षा. में बुध एवं विशाखा नक्षत्र में मंगल रुई, कपास, वस्त्र व गेहूं में तेजी करें।

२५ दिसम्बर को बुध मकर राशि में आकर गुरु के साथ समसप्तक योग बना रहा है और बुध पर मंगल की विशेष नजर भी है। रुई, सोना, चांदी में तेजी; दालवाना में भी तेजी- मन्दी के अच्छे रिएक्शन आएंगे।

२७ दिसम्बर को रोहिणी के प्रथम चरण में राहु, अनुराधा के तीसरे चरण में केतु आएगा। साथ ही इसी दिन वक्री गुरु आश्लेषा के दूसरे चरण में प्रविष्ट होगा। तिल, तेल, रुई, कपास, सूत, वस्त्र, सोना, चांदी, तांबा, जस्ता, पीतल, घी, गुड, खाण्ड में तेजी से लाभ मिलेगा। इस समय प्रत्येक व्यापारिक वस्तु में तेजी से लाभ मिलेगा। **विशेष :- पौष कृ. पंचमी को मंगलवार एवं पौष कृ. नवमी को शनिवार होने से अनाज आगे २१ जून २००३ तक मन्दे होने पर धान्य का स्टॉक करने से आगे उत्तम लाभ मिलेगा।**

२९ दिसम्बर को सूर्य पू.षा. नक्षत्र में आकर १४ दिन में तिल, तेल, सरसों, बिनौला, गुड़,

खाण्ड, हल्दी, गुग्गुल, चमड़ा, कपूर, ऊनी वस्त्र, सण.एवं चांदी में तेजी करेगा।

जनवरी - २००३ ई.

१ जनवरी को शुक्र वृश्चिक राशि में आकर केतु के साथ मेल करेगा; लेकिन इन पर गुरु की विशेष दृष्टि रहेगी। रुई, चांदी, अफीम एवं शेयर बाजार में पहले मन्दी आकर बाद में तेजी बनेगी। रुई में घटाबढ़ी रहे। गेहूं, जौ, चना, उड़द, मूंग, मोठ, बाजरा आदि अनाजों एवं अलसी में कुछ तेजी का रुख रहे।

२ जनवरी को बुध के वक्री होने पर बाजारों का रुख बदल सकता है, सावधानी से काम करें। इस समय बुध, गुरु एवं शनि ये तीनों ग्रह वक्री है। २४ दिन में घी, गुड़, खाण्ड एवं शक्कर में तेजी; गेहूं, जौ, चना आदि अनाज मन्दे होकर तुरन्त तेज हों।

४ जनवरी को अनुराधा नक्षत्र का शुक्र एवं इसी दिन मकरस्थ चन्द्र के समय शनिवार को चन्द्रदर्शन होने से तेल-तिलहन एवं दालवाना में तेजी; गुड़, खाण्ड, चावल, नमक आदि में मन्दे का वातावरण रहे।

७ जनवरी को बुध (वक्री पोजीशन में) पश्चिम में अस्त होगा, साथ ही इसी दिन मंगल वृश्चिक राशि में आकर केतु एवं शुक्र के साथ मेल करेगा। इस समय शुक्र-मंगल-केतु के साथ राहु का समसप्तक योग बनेगा। रुई में कुछ मन्दा आकर, जोरदार तेजी का झटका आएगा। गुड़, सोना, चांदी, घी, तेल, तिलहन में अच्छी तेजी के आसार है। **क्योंकि इस समय बु., गु., श., रा., के. वक्र हैं, अतः दालवाना एवं अनाजों में भी तेजी का ही विचार है। इस समय सभी व्यापारिक वस्तुओं में प्रायः तेजी ही रहेगी।**

८ जनवरी को शनि वक्रगति से मृगशिरा के दूसरे चरण में आकर पुनः वृष राशि में प्रवेश कर लेगा। इस प्रकार शु., मं. पर शनि का पूर्ण प्रतियोग बन जाएगा। यह योग जोरदार तेजी या मन्दे की लम्बी लाईन बना सकता है। यह चांस बहुत उत्तम है, बाजार का रुख देखें, अच्छा लाभ मिलेगा। शनि-ग्रह का विशेष प्रभाव तिलहन, तेल, शेयर बाजार, मूंगफली, अलसी, एरण्ड, सूरजमुखी, सोयाबीन, कपास, सरसों एवं सभी खाद्य तेलों पर अनुभव किया गया है। शेयर बाजार में लौहखण्ड, टाटा-मशीनरी आदि के शेयरों पर विशेष प्रभाव होगा। अतः तेल, तिलहन, गुड़, कस्तूरी, कुंकुम एवं कर्याणा में अच्छी तेजी का चांस समझें।

६ जनवरी को वक्री बुध उ.षा. १ धनु में आ जाता हैं। रुई, कपास, वस्त्र, सूत एवं चांदी में मन्दे एवं तेजी के अच्छे झटके आएंगे। मन्दी में खरीदें एवं तेजी में बेचकर लाभ लेते रहें।

११ जनवरी को उ.षा. नक्षत्र का सूर्य१४ दिन में उड़द, मूंग, चावल, चना, गेहूं, गुड़, खाण्ड, लाल चन्दन, कपास, सरसों, मूंग, पिपलामूल में तेजी करेगा। **१२ जनवरी को वक्री बुध पू.षा.में एवं मंगल अनुराधा में प्रवेश करेगा। बिनौला तेज; अनाज मन्द;, सोना, चान्दी में खास मन्दे का चांस है।** २४ दिन में रुई, कपास, गेहूं, लालमिर्च व अन्य लालरंग की चीजों में तेजी बढ़ेगी।

१४ जनवरी को मंगलवार के दिन सूर्य मकर राशि में आकर गुरु के साथ समसप्तक योग बना रहा है। घी, तेल, अलसी, गुड़, शक्कर, खाण्ड एवं रुई में तेजी बनेगी, गेहूं आदि अनाजों व बारदाना में मन्दे की ओर रुख रह सकता है।

१६ जनवरी को पूर्व में बुध का उदय बाजारों का रुख बदल सकता है। सावधानी से काम करें। रुई में पहले मन्दी; २५ दिन के अन्दर रुई में झटके की तेजी बनेगी। गेहूं, चना आदि अनाज,तिल,घी एवं लालमिर्च में तेजी बने। १७ जनवरी को ज्येष्ठा नक्षत्र का शुक्र अनाजों में तेजी, सोना, चांदी, चावल, सरसों, तिल, तेल-हींग में मन्दे की तरफ इशारा करता है।

२२ जनवरी को बुध के मार्गी होने पर बाजार मन्दे की तरफ बढ़ेंगे। घी, गुड़, खाण्ड में तेजी, गेहूं , जौ, चना आदि अनाजों में मन्दा बने। २४ जनवरी को श्रवण नक्षत्र का सूर्य गेहूं , जौ,चावल, रुई, सूत, सण, सोना, चांदी, गुड़, खाण्ड, अलसी, सुपारी एवं लौंग में तेजी से लाभ देगा।

{ १२ जनवरी से १७ जनवरी तक मन्दे में खरीदें, २२ से २६ तक तेजी से लाभ लें। }

२७ जनवरी को वक्री गुरु के आश्लेषा में आने पर तेल, घी तथा प्रत्येक व्यापारिक-चीजों में तेजी से लाभ मिलेगा। २८ जनवरी को नेपच्यून श्रवण ३ में आकर गेहूं आदि अनाज एवं अलसी में अच्छी तेजी बनाए ; गुड़, खाण्ड, नमक भी तेज रहें।

३० जनवरी को शुक्र मूल नक्षत्र एवं धनुराशि में दाखिल होकर बुध के साथ मेल करेगा। शुक्र- बुध जब एक राशि में आते हैं तो जोरदार तेजी या मन्दे की लाईन बनाते हैं। जो लाईन चली आ रही हो, उसे खूब बढ़ावा मिलता है; अतः बाजार के रुख के विपरीत काम न करें। गेहूं , जौ, चना आदि अनाज, चांदी-सोना, तांबा आदि धातु एवं शेयरों में तेजी का रुख रहे। रुई, सूत, कपास में पहले मन्दी होकर पीछे तेजी बनेगी।

फरवरी

१ फरवरी को शनैश्चरी अमा बाजार का रुख तेजी की तरफ संकेत देती है। चान्द्रमास-माघ में पांच रविवार होने से कहीं दुर्भिक्ष की स्थिति बनेगी एवं तेजी से जनजीवन प्रभावित होगा। राजनैतिक हलचल से भी व्यापार प्रभावित होगा।

२ फरवरी को ज्येष्ठा नक्षत्र का मंगल, जो कि सप्तमस्थ शनि-राहु से प्रभावित है; १२ दिन में चांदी में मन्दी; रुई में घटाबढ़ी एवं अफीम में तेजी करे। **ध्यान रहे :- मंगल पर शनि-राहु की दृष्टि होने से**

कदाचित् चांदी, सोना एवं तिलहन में तेजी भी बना सकता है, अतः बाजार के रुख को देख कर काम करें।

५ फरवरी को उ.षा. के बुध का शुक्र के साथ मेल होने से अनाज का भाव मन्दा रहेगा। ६ फरवरी को धनिष्ठा नक्षत्र का सूर्य १५ दिन में सोना चांदी, मणि, मोती आदि जवाहरात, मूंग-मसूर-गेहूं आदि अनाजों व अलसी-रुई में तेजी हो।

८ फरवरी को बुध मकर-राशि में आकर राहु के साथ मेल करेगा एवं गुरु की इन पर नजर रहेगी। रुई, सोना, चांदी, तेल, तिलहन, दालवाना में अच्छी तेजी या मन्दी के झटके आएंगे। मन्दी में खरीदें और तेजी में बेचकर लाभ लेते रहें।

१० फरवरी को पू.षा. नक्षत्र का शुक्र १३ दिन में मूंग, मोठ, उड़द, तिल, तेल, सरसों, व क्षारद्रव्य नमक आदि मन्दा करे।

१२ फर. को सूर्य कुम्भ में आकर शनि-मंगल की नजर में आ जाता है। ध्यान दें :- बाजारों में अच्छी तेजी आ सकती है। घी, तेल, नमक, सरसों, मूंगफली, एरण्ड, सोयाबीन, सूरजमुखी, बिनौला आदि तिलहन में तेजी बनेगी। दालवाना, गुड़, शक्कर, खाण्ड में मन्दे का संकेत होने पर भी सूर्य पर शनि-मंगल की नजर होने से तेजी ही मालूम देती है, फिर भी रुख देखकर काम करें।

१५ फरवरी को श्रवण नक्षत्र का बुध १० दिन में गुड़, खाण्ड, अलसी, चना, चावल में तेजी करेगा।

१६ फरवरी को शतभिषा नक्षत्र का सूर्य १४ दिन में सोना, चांदी, सूत-सण, कपड़ा, तिल, तेल, एरण्ड, सरसों, हींग, जायफल, दाख, छुहारा, सोंठ, हल्दी, गेहूं एवं गुड़ का भाव तेज करे। २१ फर. तक तेजी चल सकती हैं।

२२ फरवरी को उ.षा. नक्षत्र में शुक्र आएगा; इसी दिन वक्री गुरु पुष्य ४ में दाखिल होगा एवं शनि मार्गी हो जाएगा। गुड़, खाण्ड, सोना, चान्दी, अलसी सरसों, एरण्ड एवं रुई में मन्दी होकर, तेजी बनेगी। अनाज, दालवाना, मिर्च में तेजी रहे।

२३ फरवरी को मंगल मूल नक्षत्र एवं धनुराशि में आकर शुक्र के साथ मेल करेगा और शनि के साथ षडाष्टकयोग बनाएगा। चावल, चना, जौ, मूंग, चान्दी, सोना में तेजी बने। रुई में घटावढ़ी के बाद तेजी हो। सूत, सण, बिनौला, सरसों, घी एवं दालवाना आदि सभी प्रकार के अनाज तेज रहें।

२५ फरवरी को धनिष्ठा में बुध आएगा, बुध पर गुरु की दृष्टि चल रही है; चावल, स्वांक में तेजी बनेगी। सोना-चांदी में मन्दी; रुई में घटाबढ़ी चले। **इसी दिन शुक्र मकर राशि में आकर बुध के साथ मेल करेगा। ध्यान दें :- यदि मन्दे की लाईन चल रही हो तो मन्दा जोरदार बन सकता है, अगर लाईन तेजी की हो तो जोरदार तेजी बनेगी; बाजार के रुख को देख कर काम करें।** हमारे विचार से इस समय शुक्र-बुध पर गुरु की दृष्टि होने से बाजारों में मन्दा कम एवं तेजी का रुख ज्यादा मालूम देता है। शेयर, अफीम, गुड़, खाण्ड, घी, गेहूं, चना आदि सब अनाज तेज रहेंगे। रुई, चांदी में पहले घटाबढ़ी के बाद तेजी रहे।

२६ फरवरी को बुध पूर्व में अस्त होगा। अनाज, घी, आदि में ३३ दिन में मन्दा बनेगा। रुई में घटाबढ़ी चले, पहले तेज; बीच में मन्दी; अन्त में फिर तेज हो; सोने में घटाबढ़ी के बाद तेजी हो। मासान्त तक तेजी-मन्दी के रिएक्शन रहेंगे।

मार्च

१ मार्च को बुध कुम्भ राशि में आकर सूर्य के साथ राशि सम्बन्ध बनाएगा। कुम्भ राशि में स्थित सूर्य-बुध पर शनि की विशेष दृष्टि भी रहेगी। इसी दिन राहु कृत्तिका नक्षत्र के चतुर्थ चरण में एवं केतु अनुराधा के दूसरे चरण में दाखिल होगा। राहु एवं शनि एकत्र एक साथ चल रहे हैं। अलसी, रुई और चान्दी में जोरदार मन्दी एवं तेजी के झटके आएंगे। घी, तेल, रस, गुड़, खाण्ड एवं अनाजों में तेजी ही रहे।

३ मार्च को सोमवती अमावस मन्दी का वातावरण बनाएगी। ४ मार्च को पू.भा. नक्षत्र का सूर्य एवं इसीदिन मंगलवारी चन्द्रदर्शन पुनः तेजी का रुख बनाएगा। १४ दिन में रेशम, सोना, चांदी, गेहूं, चना, उड़द, चावल, ज्वार, बाजरा, घी, सरसों, तिल, तेल, गुड़, खाण्ड, गुग्गुल एवं रुई में तेजी बने। ५ मार्च को शतभिषा नक्षत्र में बुध एवं श्रवण नक्षत्र में शुक्र प्रवेश करेगा। सोना, चांदी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, मूंग, मोठ, उड़द एवं अनाजों में मन्दा रहे। तिल-तेल में तेजी बने। रुई में मन्दा होकर फिर तेजी हो। १२ मार्च को बुध पू.भा. जक्षत्र में दाखिल होगा। इस समय रुई में घटाबढ़ी, सोना, चांदी, तांबा, लोहा तथा अनाजों में मन्दा बनेगा। यह तेजी-मन्दी की लाईन उथल-पुथल के साथ १२ मार्च तक चलेगी। अतः मन्दे में खरीदें और तेजी में बेचें।

१४ मार्च को सूर्य मीन राशि में आकर बृहस्पति की विशेष नजर में आ जाता है। अतः इस समय विशेष तेजी की संभावना नहीं; फिर भी तिल, तेल, अलसी, सरसों, गुड़, खाण्ड, शक्कर, रुई, सोना में सामान्यतः तेजी बनेगी। सभी प्रकार के अनाजों में पहले कुछ तेजी आकर बाद में रुख मन्दे की ओर रहेगा। चान्दी में झटके के साथ अच्छा मन्दा आने की संभावना है।

१६ मार्च को मंगल पू.षा. नक्षत्र में आएगा। सोना, चांदी, चावल, उड़द, घी, तिल, तेल, सरसों एवं मूंगफली में तेजी बने। गेहूं आदि अनाज मन्दे हों।

१७ मार्च को धनिष्ठा नक्षत्र का शुक्र, गुरु द्वारा दृष्ट होने से मन्दे का कारण बनेगा।

चावल, मूंग, मोठ, उड़द, ज्वार, बाजरा, चांदी,सोना, रुई, कपास में विशेष तेजी के योग नहीं; गेहूं में विशेष मन्दा बने।

१८ मार्च को सूर्य उ. भा. में दाखिल होगा एवं बुध मीन राशि में दाखिल होकर सूर्य के साथ मेल करेगा। **इस समय सूर्य एवं बुध पर गुरु एवं मंगल की विशेष दृष्टि है।** रुई, गुड़, खाण्ड एवं शक्कर में मन्दा बने। सोना-चांदी में घटाबढ़ी के साथ पहले तेजी होकर, बाद में उतनी ही मन्दी हो; बिनौला में तेजी ही रहे;ऐसा विचार है। **नोट:- यहां बुध अतिचारी है; संवत के अन्त तक अतिचारी ही चलेगा। अतः दालवाना, तेल, तिलहन में बहुत बड़ी तेजी-मन्दी बनेगी, तेजी का विशेष ख्याल है, बाजार के रुख को देखकर काम करें।**

२० मार्च को बुध उ.भा. में आएगा। चान्दी में घटाबढ़ी, रुई, गुड़, खाण्ड, चावल, गेहूं आदि अनाजों के भाव सम रहते हैं। २१ मार्च को यूरेनस शतभिषा १ में आकर आनाजों एवं डालडा आदि घी में कुछ तेजी करें।

२२ मार्च को शुक्र कुम्भ राशि में दाखिल होगा एवं इस पर- इस समय शनि की विशेष दृष्टि रहेगी। यद्यपि कुम्भ का शुक्र बाजारों में मन्दा बनाता है; लेकिन शनि की नजर होने से बाजारों में सामान्यतः कुछ तेजी भी बना सकता है। अतः बाजार के रुख को देखकर, व्यापार करें। रुई, चान्दी, गुड़, खाण्ड, गेहूं, चना, जौ, मूंग, ज्वार, बाजरा तथा सफेद चीजें मन्दी हों। २३ मार्च को प्लूटो के वक्री होने पर बाजार कुछ उठ सकते हैं।

२६ मार्च को **अतिचारी बुध** रेवती नक्षत्र में दाखिल होगा। ११ दिन में केसर, मजीठ, कुसुम्भ, लालचन्दन, गेरु, लाल-मिर्च आदि लाल चीजों में तेजी; गुड़, तिलहन, घी एवं चांदी में कुछ मन्दा रहे। ऐसा फल शास्त्रों में लिखा है, लेकिन बुध के अतिचारी होने से सभी चीजों में तेजी भी रह सकती है। सटोरियों को खास ध्यान से काम करना चाहिए।

२८ मार्च को शतभिषा का शुक्र गेहूं , गुड़, खाण्ड, चावल, घी, सरसों, रुई, सोना, चांदी में तेजी करे।

३१ मार्च को सूर्य रेवती में दाखिल होगा, बुध भी रेवती में ही चल रहा हैं। ३१ मार्च को ही बुध पश्चिम में उदय भी होगा, ***ध्यान रहे-बुध अतिचारी ही है।*** *१४ दिन में अलसी, सरसों, एरण्ड, मूंगफली, लहसुन, मोती, लाख, सब्जी, गेहूं , जौ, चना एवं चावलों में जोरदार तेजी से लाभ ले सकते हैं।* ***रुई एवं शेयर बाजारों में जोरदार उठापटक से सावधान रहें।*** *क्योंकि बुध का उदय शेयर बाजारों एवं रुई में अस्थिर बाजार का संकेत देता है। १ अप्रैल को भौमवती अमावस भी तेजी का संकेत देती है।*

" ॐ कीर्तिभवान्यै नमः। "

सज्जनो ! हमने ग्रहचाल को पूरी तरह जांच कर तेजी-मन्दी के रुख का बेरवा दिया है, फिर भी ग्रहचालवश यदि किसी प्रकार से आपको व्यापार में हानि होती है, तो हम उसके लिए उत्तरदायी न होंगे। वैसे हमारी प्रभु से प्रार्थना है, कि आपको व्यापार में उत्तम लाभ हो।

व्यापारी सज्जनो ! यदि आप एक मास का वायदा-हाजर बाजार का चांस चाहते हैं या दैनिक तेजी-मंदी चाहते हैं, तो एक मास की फीस ५००/- (पांच सौ) रु. भेजकर टेलीफोन करके जानकारी प्राप्त करें। वर्षभर के लिए तेजी-मन्दी के प्रमुख चांसों की फीस ५०००/-(पांच हजार) रुपये है। प्रत्यक्ष मिलने पर अधिक संतोषजनक बात हो सकेगी। टेलीफोन से भी बात की जा सकती है। दूर से आने वाले व्यक्ति, आने से पहले, फोन से अपना समय निश्चित कर लें। नीचे लिखे पते पर सम्पर्क करें:-

पं. इन्दुशेखर शर्मा शास्त्री, ज्योतिषाचार्य, एम. ए.,
मार्त्तण्डभवन, मु. पो. कुराली, (रोपड़) पंजाब,
पिन : 140103 — फोन : 01888–641277

नोट :- गुरुवार को कार्यालय बन्द रहता है।

श्रद्धाञ्जलियां

हमारी स्व. माता जी की सबसे छोटी सगी बहन, हमारी स्नेहमयी मासी श्रीमती रामरक्षा देवी जी एवं उनके पतिदेव, हमारे पूज्य चाचा श्री गोवर्धन लाल जी के देहावसान से २०५८ के पूर्वार्ध में ही हमारे मातृ एवं पितृ युग का उपसंहार होगया है। किस तरह प्रिय सम्मान्य वृद्धजनों के वरदहस्त धीरे-धीरे हमारे सिर से उठते चले गए - यह देख-सोचकर संसार की वास्तविकता समझने में अब कुछ बचा ही नहीं है। ईश्वर इन मातृ-पितृकल्प दिवंगत आत्माओं को शाश्वत शान्ति दे- यही हार्दिक प्रार्थना है।

शोकसंतप्त -

प्रियव्रत - शक्तिधर - इन्दुशेखर

यन्त्र–मन्त्र–तन्त्र साधना के लिए महत्त्वपूर्ण काल

(1 जनवरी सन् 2002 ई. से 1 अप्रैल सन् 2003 ई. तक)

जप एवं यन्त्र–मन्त्र आदि की साधना के लिए शास्त्रों द्वारा बारह सायन संक्रान्तियों के पुण्यकाल तथा सूर्य–चन्द्र के क्रान्तिसाम्य (महापात) के काल को ठीक सूर्य–चन्द्र ग्रहण के समान ही महत्त्वपूर्ण माना गया है। संहिता और ज्योतिष ग्रन्थों में इस विषय में अनेक वचन उपलब्ध हैं। क्रान्तिसाम्य को तन्त्रादि की सिद्धि के लिए ऋषियों ने स्पष्ट रूप से फलप्रद माना है। आचार्य भास्कर ने भी 'सिद्धान्तशिरोमणि' में कहा है, कि–क्रान्तिसाम्य के काल में विवाहादि मंगल कृत्य करना तो वर्जित है, लेकिन यदि इस समय जप, अनुष्ठानादि किया जाए तो उसकी वृद्धि होती है– " **पातस्थितिकालान्तर्गतमंगलकृत्यं न शस्यते तज्ज्ञैः। स्नान–जप–होमदानादिकमत्रोपैति खलु वृद्धिम्।**" यन्त्र–मन्त्र–तन्त्रों की साधना में विशेष रुचि रखने वाले पाठकों के लिए हम नीचे 1 जनवरी सन् 2002 ई. से 1 अप्रैल सन् 2003 ई. तक की सायन संक्रान्तियों के पुण्यकाल तथा क्रान्तिसाम्य के प्रारंभ और समाप्तिकाल (भा.स्टैं.टा.) दे रहे हैं। इन कालों में यंत्र–तंत्रों के निर्माण से एवम् मंत्रजाप से वे अभीष्ट सिद्धि प्राप्त कर सकेंगे।

ग्रहणों के पर्वकाल को भी साधकों को उपयोग में लाना चाहिए। लेकिन इसवर्ष भारत में चन्द्रग्रहण नहीं है, देश के उत्तर–पूर्वी छोर पर कुछ क्षण के लिए सूर्यग्रहण होगा, जिसका देश के दूसरे भागों में कोई महात्म्य या पर्व विशेष नहीं होगा। सायन संक्रान्तिपुण्यकाल, क्रान्तिसाम्य और सूर्य–चन्द्रग्रहण के अलावा मन्त्रादि साधना के लिए अर्धोदय, महोदय, महामहावारुणीपर्व, महावारुणीपर्व, वारुणीपर्व और षडशीतिमुख पुण्यकाल भी महत्त्वपूर्ण माने गए हैं। षडशीतिमुख पुण्यकाल प्रतिवर्ष चार बार घटित होता है, जबकि शेष अर्धोदय आदि योग कभी–कभी आते हैं। इसवर्ष वारुणीपर्व और महोदययोग ही घटित हुए हैं। जिनका पर्वकाल नीचे कोष्ठक में दिया गया है।

सावधान–यंत्र–मंत्र–तंत्रों के प्रयोग को प्रभावशाली रूप में सद्यः फलप्रद बनाने के लिए शास्त्रविहित काल में साधना कीजिए, अन्यथा आगमशास्त्र पर साधक की निराधार अनास्था होने की पूर्ण आशंका है।

सायन संक्रान्ति पुण्यकाल (भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ तारीख	घं. मि.	समाप्त तारीख	घं. मि.
(सन् 2002 ई.)			
20 जन.	5 33	20 जन.	17 33
18 फर.	19 46	19 फर.	7 46
20 मार्च	18 48	21 मार्च	6 48
20 अप्रै.	5 52	20 अप्रै.	17 52
21 मई	5 00	21 मई	17 00
21 जून	12 56	22 जून	0 56
22 जुला.	23 46	23 जुला.	11 46
23 अग.	6 48	23 अग.	18 48
23 सितं.	4 27	23 सितं.	16 27
23 अक्तू.	13 49	24 अक्तू.	1 49
22 नवं.	11 25	22 नवं.	23 25
22 दिसं.	0 45	22 दिसं.	12 45
सन् 2003 ई.			
20 जन.	11 23	20 जन.	23 23
19 फर.	1 31	19 फर.	13 31
21 मार्च	0 31	21 मार्च	12 31

निरयण संक्रान्ति पुण्यकाल

सायन संक्रान्तियों के पुण्यकाल की भान्ति निरयण संक्रान्ति के पुण्यकाल में भी यंत्र–मंत्रादि की साधना की जा सकती है, लेकिन सायन संक्रान्तियों का पुण्यकाल, इसके लिए विशेष महत्त्व रखता है।

क्रान्तिसाम्य का प्रारम्भ और समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ तारीख	घं. मि.	समाप्त तारीख	घं. मि.
(सन् 2002 ई.)			
10 जन.	17 59	11 जन.	4 01
24 जन.	11 27	24 जन.	18 27
5 फर.	6 28	5 फर.	12 04
18 फर.	21 04	19 फर.	2 20
2 मार्च	19 50	2 मार्च	23 57
15 मार्च	5 28	15 मार्च	11 09
16 मार्च	2 06	16 मार्च	6 54
10 अप्रै.	8 05	10 अप्रै.	13 04
23 अप्रै.	11 18	23 अप्रै.	15 45
5 मई	16 46	5 मई	22 51
19 मई	4 01	19 मई	10 28
31 मई	8 05	31 मई	17 07
14 जून	3 13	14 जून	14 15
24 जून	0 11	24 जून	12 01
8 जुला.	1 39	8 जुला.	11 21
20 जुला.	9 12	20 जुला.	16 20
2 अग.	23 12	3 अग.	5 26
15 अग.	2 02	15 अग.	6 50
28 अग.	10 18	28 अग.	15 21
9 सितं.	19 28	9 सितं.	23 18
22 सितं.	15 19	22 सितं.	22 42

क्रान्तिसाम्य का प्रारम्भ और समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ तारीख	घं. मि.	समाप्त तारीख	घं. मि.
(सन् 2002 ई.)			
5 अक्तू.	16 58	5 अक्तू.	20 43
18 अक्तू.	1 49	18 अक्तू.	6 45
31 अक्तू.	13 24	31 अक्तू.	17 58
12 नवं.	12 09	12 नवं.	18 08
26 नवं.	6 33	26 नवं.	13 23
8 दिसं.	8 57	8 दिसं.	17 38
31 दिसं.	22 38	1 जन.'03	7 17
सन् 2003 ई.			
14 जन.	13 06	14 जन.	20 47
27 जन.	1 04	27 जन.	6 34
9 फर.	4 22	9 फर.	9 53
21 फर.	16 42	21 फर.	20 50
6 मार्च	13 33	6 मार्च	18 11
19 मार्च	6 14	19 मार्च	10 21
19 मार्च	11 39	19 मार्च	15 17
31 मार्च	22 38	1 अप्रै.	3 09

सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य–सूर्य–चन्द्र की राशियों के अनुसार निर्धारित किये जाने वाले क्रान्तिसाम्य का प्रारम्भ–समाप्तिकाल नितान्त स्थूल होता है। यहां दिया गया क्रांतिसाम्य का प्रारम्भ–समाप्तिकाल महापात गणित द्वारा स्पष्ट किया गया है। यह सर्वथा सूक्ष्म है। विवाहादि मुहूर्तों में इसी सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य के काल को ही वर्जित किया गया है।

षडशीतिमुख संक्रान्ति पुण्यकाल (भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ तारीख	घं. मि.	समाप्त तारीख	घं. मि.
(सन् 2002 ई.)			
10 जन.	7 07	10 जन.	19 07
5 अप्रै.	20 14	6 अप्रै.	8 14
4 जुला.	0 07	4 जुला.	12 07
1 अक्तू.	5 25	1 अक्तू.	17 25
सन् 2003 ई.			
10 जन.	13 16	11 जन.	1 16
महोदयपर्व (सन् 2002 ई.)			
11 फर.	11 06	11 फर.	14 25
सन् 2003 ई.			
1 फर.	10 54	1 फर.	16 18
वारुणीपर्व (सन् 2002 ई.)			
9 अप्रै.	17 42	9 अप्रै.	18 33
सन् 2003 ई.			
30 मार्च	सूर्योदय	30 मार्च	17 52

यन्त्र-मन्त्र एवम् तन्त्रों का चमत्कार

इस स्तम्भ के अन्तर्गत अनुभूत यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र गतवर्षों से देते आ रहे हैं। इस स्तम्भ के अन्तर्गत दिए गए मन्त्रों को शुभमुहूर्त में गुरुमुख से प्राप्त करके ग्रहणवेला, क्रान्तिसाम्य या सायन-संक्रान्तियों के पुण्यकाल में दृढ़ निश्चयपूर्वक अनुष्ठान करके, सिद्ध कर लेना चाहिए। **ध्यान रहे** - दीपमाला के समय एवं महाशिवरात्रि की महत्वपूर्ण रात्रियों में किंवा उल्लिखित समयावधियों में इनमन्त्र तन्त्रों को सिद्ध करके, इनका चमत्कार आप अविलम्ब देख सकेंगे। यन्त्र-मन्त्रों के बल पर ही दैवज्ञ अपने वैदुष्य से अक्षुण्ण यश प्राप्त कर सकता है ;- **" सिद्धिर्भूषयते विद्याम् ।"**

मन्त्र ऐसे दिव्यशब्दों का समूह है, जिससे दृढ़ इच्छा शक्ति पूर्वक उच्चारण एवं मनन से ही हम अलौकिक काम कर सकते हैं। चुने हुए गुप्तशब्द ही मन्त्र हैं। इसमें शब्दों को ऐसा क्रम दिया जाता है, कि उनके मौन या अमौन अवस्था में उच्चारणमात्र से शून्य-महाकाश में एक विचित्र कम्पन उत्पन्न होता है, जिसमें अभीप्सित कार्यसिद्धि एवं रचनात्मक प्रबल-प्रछन्नशक्ति होती है।

"मननात् त्रायते यस्मात्तस्मात् मन्त्र : प्रकीर्तित :। जपात् सिद्धिर्जपात् सिद्धिर्जपात् सिद्धिर्न संशयः।।"

मन्त्रशास्त्र के अनुसार वेदमन्त्रों को ब्रह्मा ने शक्ति प्रदान की थी। तान्त्रिकप्रयोगों को भगवान् शिव ने शक्ति सम्पन्न किया। इसी प्रकार कलियुग में शिवावतार श्री शावरनाथ जी ने शावरमन्त्रों को अद्भुतशक्ति प्रदान की । शाबरमन्त्र अनमिल बेजोड़ शब्दों का एक समूह होता है, जोकि अर्थहीन मालूम देते हैं, परन्तु भगवान् शंकर जी के प्रताप से ये मन्त्र अवन्ध्य प्रभाव वाले हैं ;- **"अनमिल आखर अर्थ न जापू। प्रकट प्रभाव महेश प्रतापू।।"** अतः शाबरमन्त्रों को यथावत् उच्चारण करें, किसी प्रकार से इसमें न्यूनाधिकता न करें। **नोट** :- मन्त्र का पुरश्चरण करते समय गुप्त रखें। प्रकट होने पर पुरश्चरण अर्थहीन हो जाता है ;- **"गोपनीयं गोपनीयं गोपनीयं प्रयत्नत :।"**

(१) सर्वेष्ट सिद्ध्यर्थ नृसिंहमन्त्र

निम्नांकित श्लोकरूप मन्त्र के जाप से व्यक्ति सर्वविध कष्टों से मुक्ति पा सकता है। **शारदातिलक** मन्त्रशास्त्र में इसमन्त्र को मनोरथ-सिद्ध्यर्थ एवं महामारी से मुक्ति पाने के लिए प्रत्यक्ष फलप्रद कहा है।

मन्त्र -"ॐ उग्रवीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्यु-मृत्युं नमाम्यहम्।। "

विधि- इस श्लोकात्मक मन्त्र की सूर्याभिमुख होकर प्रातः तीनमाला, प्रतिदिन करने से मनोवांछित फल मिलता है, घर में रोगकष्ट नहीं होता।

(२) भुवनेश्वरी कर्णपिशाचिनी मन्त्र

मन्त्र - "ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं भुवनेश्वरी वाग्वादिनी कर्णपिशाचिनी साधकाय सिद्धिदायै नमः ॐ। "

जलप्रवाह में खड़ा होकर पांचसौ बार इसमन्त्र का जाप करें । जाप के बाद तर्पण-मार्जन-होम एवं ब्रह्मभोज कराएं। फिर निम्नांकित यन्त्र १०,००० बार जमीन पर लिखें। शासक भी वश में हों , जो भी वचन निकलेगा , सत्य ही होगा। इसमन्त्र साधना से प्राणी भूत-भविष्य एवं वर्तमान की बातें अनायास ही जान लेता है।

-: यन्त्र :-

ह्रीं ८	ह्रीं १	ह्रीं ६
ह्रीं ३	ह्रीं ५	ह्रीं ७
ह्रीं ४	ह्रीं ९	ह्रीं २

(३) स्वप्न में कार्यसिद्धि किंवा कार्यहानि ज्ञानार्थ मन्त्र

रात्रि में स्नान करके शुद्ध आसन पर बैठकर, कम से कम तीन माला निम्नांकित मन्त्र का जाप करके, भगवती दुर्गा का ध्यान करके शयन करें। रात्रि में स्वप्न में आपको मनोभिलषित- कार्यसिद्धि किंवा असिद्धि का ज्ञान हो जाएगा, अनुभव करें ।

मन्त्र -

**" ॐ ह्रीं दुर्गे देवि नमस्तुभ्यं सर्वकामार्थसाधिके ।
मम सिद्धिमसिद्धिं वा स्वप्ने सर्वं प्रदर्शय ह्रीं ॐ।।"**

(४) भविष्यकथन के लिए अद्भुत-अनुभूत सिद्ध साबर (शाबर) मन्त्र

मन्त्र :- "ॐ नगरी वाला बलवन्त की सिमरूं पवनकुमार रोज्जी देवे चौगुनी दूने देवे महन्त, आद्र घाटी विषभरे भैरों बसे ललाट, तीन खूंटकी मोहनी पिण्डी बसे ललाट, हंकी काली रूप किया विकराल, आधी रैण फिरे मतवाली भजदी आवे, ऋद्धि-सिद्धि सब ल्यावे, दर मोहूं दरम्यान मोहूं, पीड़े बैठी पटराणी मोहूं , घी-सिंदूर मस्तक चढ़े, राजा प्रजा सब नाथ जी के चरणों में पड़े, नाथ जी का आदेश।"

विधि :- इसमन्त्र का जाप शुक्ल द्वितीया के चन्द्रदर्शन के बाद आने वाले मंगलवार से शुरु करें। मंगलवार वाले दिन मीठी रोटी (मन्नी) बनाकर खाएं, यदि पूरी न खा सकें, तो बचे टुकड़े (अंश) को

किसी को भी न दें, उसे शुद्ध जगह पर पृथ्वी में दबा दें। मन्त्रजाप के दिनों में ब्रह्मचर्यपूर्वक रहें, भूमिशयन करें -और क्षौर (शेव आदि) न करें। ३१ हजार जाप, जितने दिनों में निष्ठापूर्वक कर सकें, पूरा करें।

ध्यान रहे,- जितना मन्त्रजाप पहले दिन करें, उतना ही प्रतिदिन नियमपूर्वक समय पर करें, मन्त्रजाप न्यूनाधिक नहीं होना चाहिए। मन्त्र सिद्ध होने पर साधक त्रिकालज्ञ होता है। सभी के मन की बात स्वतः स्फुरित हो जाती है, मन्त्रजाप पूर्वक अनुभव करें।

(५) सुरकात्यायनी मन्त्र-प्रयोग

मन्त्र - " ऊँ श्रूं हुं फट्। " - इस चार अक्षरों के मन्त्र में अवन्ध्य प्रभाव निहित है।

विधानम् - "शून्यं देवालयं गत्वा अष्टसहस्रं जपेत्। तदा स्वयमेव सुरकात्यायनी महाट्टहासं कृत्वाष्टशत परिवारेण नियतमागच्छति। आगतायै चन्दनोदकेन अर्घो देयः। तुष्टा भवति रस-रसायनं प्रयच्छति। भविष्य कथने सामर्थ्यं ददाति।।" - (मन्त्र महार्णवः)

अर्थात् - उपेक्षित-शून्य मन्दिर में बैठकर, आठ हजार मन्त्रजाप करें। सुरकात्यायनी, सपरिवार अट्टहासपूर्वक सामने आएगी। सुरकात्यायनी भगवती के आने पर, जल में चन्दन मिलाकर अर्घ्य दें। इस प्रकार माता अनेकविध भोज्य पदार्थ देती है और भविष्य कथन में सामर्थ्य प्रदान करती है।

(६) कर्णपिशाचिनी मन्त्र-प्रयोग

इसमन्त्र प्रयोग से भूत-भविष्यत्-वर्तमान (कालत्रय) की घटनाओं को साधक सहसा-ऐसे कह सकता है जैसे सब कुछ प्रत्यक्ष देख रहा हो। जो व्यक्ति साधक से पूछना चाहे, उसके बारे में भगवती कर्णपिशाचिनी सब कुछ साधक के कान में कह देती है। साधक के शत्रुओं को सर्वतोभावेन परास्त करके यश एवं ऋद्धि-सिद्धि देती है। यह प्रयोग एक सिद्ध महात्मा ने दिया है, अनुभूत है।

मन्त्र -"ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं दुं हु फट् कनक-वज्र-वैदूर्य-मुक्तालंकृत- भूषणे एहि एहि आगच्छ आगच्छ मम कर्णे प्रविश्य भूत-भविष्य-वर्तमान-कालज्ञानं दूर दृष्टि दूरश्रवणं ब्रूहि ब्रूहि, अग्निस्तम्भनम्, शत्रुस्तम्भनम् शत्रुमुखस्तम्भनम्, शत्रुगतिस्तम्भनम्, शत्रुमतिस्तम्भनम्, परेषां गतिं मतिं सर्वशत्रूणां वागृजृम्भणस्तम्भनम् कुरु कुरु, शत्रुकार्य-हानिकरि मम कार्यसिद्धिकरि, शत्रूणामुद्योग- विध्वंसकरि वीरचामुण्डिनि हाटक-धारिणि, नगरी-पुरी-पट्टणस्थान-सम्मोहिनि असाध्य-साधिनि ऊँ श्रीं ह्रीं ऐं ऊँ देवि हन हन हुं फट् स्वाहा।"

विधान - इमं मन्त्रमयुतं जपेत, सिद्धिर्भवति। सर्वं कर्णे कथयति शत्रून् नाशयति सर्वकार्याणि सिध्यन्ति।

अर्थात् - इसमन्त्र के अयुत (१०,०००) जाप से यहमन्त्र सिद्ध हो जाता है। पिशाचिनी द्वारा कालत्रय की घटनाएं कान में सुना दी जाती हैं। शत्रुनष्ट होते हैं, सभी कार्य सिद्ध होते हैं।

(७) कर्ण पिशाचिनी का संक्षिप्त चमत्कारी मन्त्र

मन्त्र- "ऊँ कं ह्रीं प्राणकर्षणमालोकितेन विश्वरूपी पिशाची वद वद इँ ह्रीं स्वाहा ।"

एकपक्ष (१५ दिन) में दसहजार बार इसमन्त्र का जाप करें, तत्पश्चात् माह (उड़द) की दाल से तलकर बनाए गए भल्लों की बलि, केले के पत्तों पर रख कर दें या प्रतिदिन शुद्ध मिट्टी के छोटे बर्तन में भांग रगड़कर रखें और पाठ के बाद भांग का भोग लगाकर, स्वयं सेवन करें, सिद्धि मिलेगी, कान में भूत-भविष्यत्-वर्तमान की घटनाएं सुनाई देने लगेंगी।

(८) कर्ण पिशाचिनी का एक और अनुभूत मन्त्र

मन्त्र - "ऊँ नमः कर्ण पिशाचिनी मम कर्णे प्रविश अतीतानागत वर्तमानं सत्यं सत्यं कथय मे स्वाहा।"

विधान - एकान्त में पृथ्वी पर शयन करें। रात्रि में धूप-दीप करके इसमन्त्र का जाप करें। आम के पट्ट पर १०८ बार मन्त्र लिखें, प्रत्येक बार लिखकर, धूप-दीप से उसमन्त्र की पूजा करें, बाद में मन्त्रपट्ट को सिर के नीचे रखकर रात्रि में शयन करें, सब बात स्पष्ट हो जाएगी । यदि साधक तीनलाख बार इसमन्त्र का जाप करे तो कर्ण पिशाचिनी प्रत्यक्ष सामने आ जाती है, भूत-भविष्यत्-वर्तमान सब कान में कहती है।

(९) स्वप्न चक्रेश्वरी मन्त्र प्रयोग

मन्त्र - "ऊँ नमः स्वप्नचक्रेश्वरि स्वप्ने अवतर अवतर गतं वर्तमानं कथय कथय स्वाहा। "

विधान - मन्त्रजाप से पहले गोमय (गाय के गोबर) से पृथ्वी का लेपन करके ज्योति का प्रकाश करें, बताशों का भोग ज्योति के समीप रखें और उल्लिखित मन्त्र का इक्कीस हज़ार मन्त्रजाप करें। बाद में भोग कुमारी कन्या को दे दें, तत्पश्चात् शयन करें, रात्रि में स्वप्न में आपके प्रश्न का उत्तर मिल जाएगा। यदि इसमन्त्र का जाप एकलाख करें तो स्वप्न चक्रेश्वरी देवी (मन्त्र अधिष्ठात्री देवी) स्त्रीरूप में प्रत्यक्ष आकर वर देगी, इसमें सन्देह नहीं। यहमन्त्र बड़ा ही चमत्कारी है एवं एक महात्मा ने स्वयं अनुभव किया है।

(१०) 'योजनगंधा-योगिनी' मन्त्र प्रयोग

मन्त्र - " जोजन गन्धा जोगिनी ऋद्धि सिद्धि में भरपूर।
मैं आयो तोय जांचणे करजो कारज जरूर ।। "

इसमन्त्र से प्रश्न का उत्तर जानने का **विधान** इस प्रकार है :- सवा सेर गेहूं का आटा, अढ़ाई पाव घी और अढ़ाई पाव खाण्ड, ये सब मिलाकर , भूनकर कसार बनालें। शनिवार के दिन निराहार सूर्योदय से पहले जंगल में चींटियों के बिल में थोड़ा-थोड़ा कसार गिराता जाए, साथ ही उल्लिखित मन्त्र बोलता जाए। जंगल में खूब भ्रमण करें, मन्त्र जाप करता रहे। मध्याह्न ढलने पर जब थक जाए तो किसी वृक्ष के नीचे विश्राम करे। उसी समय निद्रावस्था प्राप्त होने से एकाकी पुरुष या स्त्री सम्मुख उपस्थित हो जाएगा और साधक के प्रश्न का स्पष्ट शब्दों में उत्तर देगा। उसकी बात साधक को अच्छी तरह सुनाई देगी। यह चार प्रहर का प्रयोग निराहार व्रत रखकर ही करें - इसमन्त्र के प्रयोग के पहले दिन ही प्रश्न का उत्तर मिलने लगता है;- इसमें सन्देह नहीं। यहविधान कई दिनों तक लगातार करने पर तो मनोवांछित फल प्राप्त होता है। भोजन घर आकर रात्रि में करें ।

(११) मनोकामना शीघ्र पूर्ण करने के लिए अनुभूत मन्त्र

आपके कार्य में देरी हो रही हो या बनते-बनते कार्य बिगड़ने की शंका हो तो , निम्नांकित मन्त्र को एकादशी का व्रत रखकर १००८ बार जाप करें, मनोकामना अविलम्ब पूर्ण होगी।

मन्त्र - "ऊँ नमः कामाक्षायै देव्यै नमः। ऊँ ह्रीं क्रीं श्रीं अं कं चं टं तं पं यं शं ऐं सां ऐं मनोकामनां पूर्णां कुरु कुरु स्वाहा।"

(१२) नौकरी (कारोबार) प्राप्ति के लिए साबर मन्त्र

मन्त्र - "ऊँ नमो आदेश गुरु का धरती में बैठ्या लोहे का पिण्ड राख लगाता गुरु गोरखनाथ आवन्ता जावन्ता धावन्ता हांक देत धार धार मार मार शब्द सांचा फुरो वाचा।"

विधि- मृगछाल (मृगचर्म) पर बिनासिला कपड़ा पहन कर बैठें। १०८ बार रुद्राक्ष की माला से इसमन्त्र का जाप करके, खीर की १०८ आहुतियां डालें, आहुतियां एकसप्ताह जाप करके डालें, आजीविका का साधन बन जाएगा। शुक्लपक्ष की द्वितीया से मन्त्रजाप शुरु करें।

(१३) प्रेतबाधा शान्त्यर्थ मन्त्र

मन्त्र - " ऊँ नमो काली कपाली दहि दहि स्वाहा। " -

इसमन्त्र से जल को अभिमन्त्रित करके प्रेताविष्ट व्यक्ति पर छिड़कना चाहिए। जल के छींटे पड़ते ही प्रेत चिल्लाकर भाग जाएगा।

(१४) बालक को दृष्टिदोष (नजर) से मुक्त करने के लिए साबरी मन्त्र

मन्त्र - "ऊँ डायन मोर जादू बाण । चौंक उठे बालक के प्राण । रोए बालक फक्का फाड़। चीखें मार करे चीत्कार। दोहाई कामाक्षा देवी की, तुझे शंकर की आन। ऊँ नमः रुद्राय। ऊँ नमः कामाक्षादेव्यै ह्रीं क्रीं श्रीं फट् स्वाहा। "

अगर सोया हुआ बच्चा चौंक कर उठता हो, अकारण रोता रहता हो, तो झाडू की एक तिल्ली लेकर बच्चे को उल्लिखित मन्त्र पढ़ते हुए झाड़ दें, तिल्ली को आग में जला दें, बच्चा पूर्णतया प्रसन्न रहेगा।

(१५) भूत-पिशाच बाधा से मुक्ति पाने के लिए अनुभूत मन्त्रप्रयोग

मन्त्र - " ऊँ ह्रीं दुर्वृत्तानामशेषाणां बलहानिकरं परम्। रक्षो-भूत-पिशाचानां पठनादेव नाशनम् ह्रीं ऊँ।।

विधि :- (क) उल्लिखित मन्त्र दीपावली की रात्रि में ११ हजार बार जपने से ही सिद्ध हो जाता है। दशांश हवन करना भी अनिवार्य है।

यदि घर में नित्यकलह, अकारण भय, बाधा बनी रहे, धनहानि हो, दरिद्रता-आतंक रहे, भूत-प्रेत-पिशाच की छाया हो, किसी ने घर पर अनिष्टकारक प्रयोग किया हो, तो इस चामत्कारिक मन्त्र को शुभवेला में, शुद्ध कागज पर अनार की कलम से लिखकर, मन्त्र का विधिवत् पूजन करके धूप-दीप करने के वाद दाईं भुजा में बांधने पर या लाल कपड़े में बांधकर, घर में शुद्धस्थान पर रखने से सर्वविध शान्तिलाभ होता है।

(ख) यदि सारे घर के सदस्य भूत-प्रेत बाधा से परेशान हों तो घर में ही इसमन्त्र का जाप करावें। मन्त्रजाप पूरा होने पर दशांश हवन कराएं। हवन पूर्ण होने पर खैर की लकड़ी, ८ लोहे की कीलें, ८ पीली कौड़ी, ८ हल्दी की गांठें, डोडी वाले ८ लौंग लेकर, उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित करके, मन्त्रोच्चारण करते हुए आग्नेय कोण से शुरु करके आठों दिशाओं में एक हाथ का गड्ढा खोदकर, इन चीजों को कौड़ी चित्त करके गाड़ें। ऐसा करने से भूत-प्रेत बाधा से घर पूर्णतया सुरक्षित रहेगा। यह प्रयोग अनेकत्र अनुभूत है। उल्लिखित मन्त्र से उपद्रवग्रस्त स्थान भी सुखद होता देखा गया है।

(१६) अचानक आया संकट तुरन्त दूर हो।

आजकल विश्व में अशान्त वातावरण से आत्मरक्षा के लिए किंवा समयानुसार सर्वविध संकटों से मुक्ति

पाने के लिए आप आगे लिखे गये मन्त्र का जाप करें-

मन्त्र - " ऊँ ह्रीं सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्ति समन्विते।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते।।
एतत्ते वदनं सौम्यं लोचनत्रय - भूषितम्।
पातु नः सर्वभीतिभ्यः कात्यायनि नमोऽस्तु ते ह्रीं ऊँ।। "

ऐसी स्थिति में जबकि घर का कोई सदस्य भारी संकट में हो, राजभय किंवा आतंक का साया सिर पर हो तो अपने विश्वस्त विद्वान् पण्डित से उक्त जाप कराएं अथवा स्वयं जाप करें। समय कम होने की अवस्था में उल्लिखित मन्त्र का यथाशक्ति जाप करें एवं एक पान पर शाकल्य, १ कमलगट्टा,१ सुपारी, २ लौंग, १ इलायची, गुग्गुल की आहुति दें, मन्त्रजाप करते रहें. तुरन्त आपत्ति का निराकरण होगा।

(१७) बिच्छू-विषनाशक गारुड़मंत्र

मन्त्र - " ऊँ सुपर्णोऽसि गरुत्मान् स्त्रीवृते शिरागावत्रं चक्षुर्वृहद्रथन्तरे वक्षी। सोम आत्माच्छेन्दां स्याद्भानि यजूंषि नाम। साम ते तनुर्वाम देव्यं यज्ञयज्ञि यम्पुच्छन्धिष्टायाऽशव्या सुपर्णोऽसि गुरुत्मान् दिवं गच्छ स्वः पत ऊँ।। "

इसमन्त्र को संस्कृत की दृष्टि से शुद्ध करने का प्रयास न करें। गारुड़मंत्र का जाप ग्रहण वेला में करके सिद्ध कर लें। बिच्छू विषाक्तव्यक्ति को नीम की डाली या अपामार्ग (पुठकण्डा)से झाड़ें, तुरन्त शान्ति मिलेगी।

-: विषशान्त्यर्थ प्रचीन शास्त्रोक्त औषध :-

**" दधि मधु नवनीत पिप्पली शृङ्गवेरम्। मरिचमपि कूटे प्रतिहंसा सुकेशी।।
यदि दंशति सरोषो तक्षको वासुकिर्वा। यमसदन गतानां नास्ति मृत्युर्नराणाम्।।"**

अर्थात् - गाय के दूध से प्राप्त ताजा मक्खन, गाय का दही, शहद, पिप्पली, अदरक, काली मिर्च, कूट, प्रतिहंसा और सुकेशी-ये सभी बराबर मात्रा में मिलाकर, सर्प से डंसे हुए व्यक्ति को खिला दें, विष उतर जाएगा। यह शास्त्रों में से उद्धृत है, अनुभूत नहीं।

(१८) पशुओं में रोग-शान्ति के लिए मन्त्र

गांव में पशुओं की बीमारी से मुक्ति के लिए गुरुपुष्य, रविपुष्य, हस्तार्क या किसी उत्तम समय में मिट्टी के कोरे कसोरे (परई) के भीतर इसमन्त्र को भोजपत्र पर लिखकर, धूप देकर डाल दें। मन्त्र से युक्त हांडी या कसोरे को भी धूप देकर, लालकपड़े से पशुशाला में लटका दें, बीमारी नहीं रहेगी।

मन्त्र- " अर्जुनः फाल्गुनो जिष्णुः किरीटी श्वेतवाहनः।
बीभत्सुः विजयी पार्थः सव्यसाची धनञ्जयः।।
कपिध्वजो गुड़ाकेशो गांडिवी कृष्णसारथिः।
एतान्यर्जुन नामानि गवां गोष्ठे च यो लिखेत्।
निश्चितं पशु-रोगादेर्नाशः शीघ्रं प्रजायते ।। "

(१९) बालरक्षार्थ मन्त्र

यदि अबोधबालक अकारण रोता रहे, सांस चढ़ा ले, नीला होता जाए, तो समझें कि किसी बुरी छाया का प्रभाव है। ऐसी स्थिति में निम्नांकित मन्त्र को भोजपत्र पर अष्टगन्ध या केवल लालचन्दन की मसी (स्याही) लेकर अनार की कलम से लिखें। गुग्गुल की धूप देकर, इसमन्त्र को बच्चे के गले में डाल दें, आश्चर्यजनक रूप से बच्चे को शान्ति मिलेगी।

मन्त्र- "रक्ष रक्ष महादेव नीलग्रीव जटाधर।
ग्रहैस्तु सहितो रक्ष मुञ्च मुञ्च कुमारकम्।।"

इसमन्त्र का कुलपुरोहित या विद्वान् पण्डित से जाप करा सकते हैं, मन्त्रजाप से ही यहमन्त्र पूर्णरूपेण फलद है।

(२०) श्रीघण्टाकर्ण का चमत्कारी मन्त्र

मन्त्र - " ऊँ ह्रीं श्रीं क्लीम् घण्टाकर्ण महावीर सर्वव्याधि-विनाशकः। आधिं व्याधिं विपत्तिं च महाभीतिं विनाशय।। नाम मन्त्रोऽस्ति ते सिद्धिः सर्वमंगल कारकः। इष्टसिद्धिं महासिद्धिं जयं लक्ष्मीं विवर्धय ।। त्वच्छ्रद्धा भक्तियोगेन भवन्तु सर्वशक्तयः। पराभवन्तु दुष्टाश्च शत्रवो वैरिदुर्जनाः।। आपत्कालेषु मां रक्ष मम बुद्धिं प्रकाशय । सर्वोपद्रवतो रक्ष घोर- रोगान्विनाशय।। ऊँ ह्रीं श्रीं क्लीं घण्टाकर्ण महावीर धन समृद्धिं प्रवर्धय। राज्यं च राज्यमानं च बलबुद्धिं प्रवर्धय।। ऊँ क्लीं ह्रीं श्रीं घण्टाकर्ण महावीर सर्वव्याधि विनाशकः। महारोगान्भयान्चोरान्नाशय नाशय मे द्रुतम्।। दर्शनं देहि प्रत्यक्षं संरक्ष सर्व कंटकात् । रणे वने समुद्रे च रक्ष सरंक्ष मे द्रुतम्।। अग्निचौरादितो रक्ष त्वन्नाम मन्त्रजापतः। ह्रीं घण्टाकर्ण नमोऽस्तु ते ठःठःठः स्वाहा।। "

-: श्रीघण्टाकर्ण महावीर का ध्यान एवं प्रयोग :-

**" रक्तामाल्याम्बरधरो रक्तगन्धानुलेपनः। सेवितो यक्ष कन्याभिर्वेष्टितश्चन्द्रशेखरः।
एवं ध्यात्वा महावीरं जपेद् रुद्रसहस्रकम्। पायसान्नेन जुहुयाद् गुग्गुलेन घृतेन वा।।"**

अर्थात् - भगवान् घण्टाकर्ण महावीर रक्तवर्ण के वस्त्र एवं लालवर्ण की माला धारण किए हुए हैं, लाल सुगन्धित सिन्दूर से शरीर लिप्त है। यक्षकन्याओं से सेवित शिवरूप भगवान् श्रीघण्टाकर्ण महावीर का ध्यान करके, एकहजार रुद्रमन्त्र (उल्लिखित मन्त्र) का जाप करें। तत्पश्चात् गोदुग्ध से बनी खीर, गुग्गुल या गोघृत से हवन करें तो उल्लिखित मन्त्र आश्चर्यजनक रूप से प्रभावकारी सिद्ध होगा।

इसमन्त्र के विभिन्न प्रयोग :- श्रीघण्टाकर्ण मन्त्र को पहले सूर्य या चन्द्रग्रहण में अथवा किसी शुभमुहूर्त्त में ११ हजार बार जप करके सिद्ध कर लें, तभी इसे प्रयोग में लाएं।

ध्यान दें-इसमन्त्र को परोपकार की भावना से ही प्रयोग में लाएं, व्यापारिक दृष्टि से नहीं।

कुत्ते के काटने पर **"ठःठःठः स्वाहा"** इसमन्त्र को पढ़कर मिट्टी के गोले से सात बार झाड़ें, तो कुत्ते के बाल मिट्टी के गोले के अन्दर आ जाते हैं। पशु बीमार हो तो उक्त घण्टाकर्णमन्त्र को सात बार जपकर पशु पर हाथ फेरने से पशु के सब प्रकार के रोग दूर हो जाते हैं। इस सिद्धमन्त्र से बड़े-बड़े साधक कार्य लेते हैं। नारियल की गिरि, छुहारा, दाख, घी, शक्कर एवं शहद से १२ हजार होम करके और इसमन्त्र का यन्त्र बनाकर अपने पास रखने से **सर्वविध उपद्रवों से मुक्ति** मिलती है। प्रातः उक्त मन्त्र को २१ बार पढ़कर, तीन अंजलि जलपान करने से विद्या-बुद्धि में वृद्धि होती है।

२१ बार मन्त्रोच्चारण के बाद अपने थूक का तिलक करके राजदरबार, कोर्ट आदि में जाने से अभीप्सित कार्य सिद्ध होता है, मन्त्र पढ़कर पगड़ी के कोने में गांठ बांधकर, उस गांठ को लटकाने पर **सामने खड़ा शत्रु भी वशीभूत हो** जाए। ग्रहदोष, शाकिनीदोष आदि से सबन्धित रोग की अवस्था में झाडू बगैरह से झाड़ देने पर **सर्वग्रहदोष-रोगों से मुक्ति** मिले।

कुमारी कन्या के हाथ से काता हुआ नौ तन्तुओं वाला सूत का धागा सिर से पैर तक की माप कर सात गाठें दे दें। १२१ बार इसमन्त्र से अभिमान्त्रित करके गुग्गुल का धूप देकर, स्त्री की कमर में बांधने से **गर्भस्तम्भन** होता है। इसमन्त्र से २१ बार फूंक देकर शिशु सहित स्त्री को वस्त्र से ओढ़ दें तो उसका बालक रोने से हट जाता है। श्वेतचन्दन को घिसकर जल में मिला लें, उसजल को इसमन्त्र से अभिमन्त्रित करके भूत-प्रेत बाधा से पीड़ित व्यक्ति को पिला देने से बाधा तुरन्त शान्त होती है-अनुभूत है। दुकान में बिक्री न होती हो तो उन चीजों पर हाथ रखकर, इसमन्त्र को ७ बार पढ़ें, तो **बिक्री चौगुनी** हो जाए। इसमन्त्र को घर के भीतर की दीवार पर हल्दी से लिखने पर **आधि-व्याधि-महामारी** आदि नहीं रहती।

(२१) मृतवत्सा (अठरहा) रोग-निवृत्ति मन्त्र

मन्त्र - "ऊँ परब्रह्म परमात्मने 'अमुकी ' गर्भे दीर्घजीवि सुतं कुरु कुरु स्वाहा।"

मृतवत्सादोष निवारण के लिए ज्येष्ठमास की पूर्णमासी को १००८ बार मंत्र को विधिपूर्वक जपें एवं दीपावली की रात्रि अथवा ग्रहण के समय जाप से सिद्ध करें। तत्पश्चात् मन्त्र में **'अमुकी'** शब्द के स्थान पर स्त्री का नाम लिखें। मन्त्र को अष्टगंधादि से लिखकर, स्त्री अपने पास भुजा आदि पर बांधे रखे, मृतवत्सा रोग शान्त होगा।

(२२) सिरदर्द हेतु सिद्ध साबर मन्त्र

मन्त्र - "हजारघर चाले एक घर खाय, आगे चले तो पीछे जाय।
फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा, मेरे गुरु का वचन सांचा।। "

विधि :- शनिवार या मंगलवार के दिन श्रीमहावीर जी की प्रतिमा के चरणभाग से थोड़ा सा सिन्दूर लें। सिरदर्द वाले रोगी के माथे पर, उल्लिखित मन्त्र बोलते हुए उस सिन्दूर से तिलक करें, तुरन्त लाभ अनुभव होगा।

(२३) दृष्टिदोष (नजर) दूर करने के लिए मन्त्र

कुछ बच्चे अकारण रोते रहते हैं, रात्रि में भी सोते नहीं, जबकि वैद्य उन्हें ठीक बताता है। ऐसे लक्षण दृष्टिदोष युक्त बालक के हैं। ऐसी स्थिति में बालक को सामने बैठाकर मोरपंख से झाड़ा दें एवं निम्नांकित मन्त्र को उच्चारण करते रहें-

मन्त्र - "ऊँ अंजनि-गर्भ-संभूतं कुमारं ब्रह्मचारिणम्।
दृष्टिदोष-विनाशाय हनुमन्तं स्मराम्यहम्।।"

नोट :- इसमन्त्र को दीपावली की रात्रि में, होली, मंगलवार की रात्रि में या ग्रहण के समय १००८ बार जप करके सिद्ध कर लेना आवश्यक है।

(२४) नेत्रज्योति को सुरक्षित रखने के लिए अद्भुत प्रयोग

"चाक्षुषी विद्या"

इस चाक्षुपी विद्या को **'चाक्षुषोपनिषद्'** एवं श्रीकृष्ण यजुर्वेद में **'चाक्षुषी विद्या'** के नाम से जाना जाता है। इस विद्या का श्रद्धापूर्वक नियमित रूप से प्रातः सूर्य के सामने बैठकर पाठ करने से नेत्र-सम्वन्धित

समस्त रोग स्वतः शान्त हो जाते हैं, औषध सद्यः फल देने लगती है। नेत्रज्योति स्थिर रहती है। जिस परिवार में इस चमत्कारी चाक्षुषी विद्या का नित्यप्रति पाठ किया जाता है, उस कुल में कोई भी व्यक्ति दैविक-प्रकोप किंवा किसी भी प्रकार के नेत्ररोग से अन्धा नहीं होता। पाठ के पूर्ण होने पर गन्ध, पुष्पादि युक्त जल से सूर्य को अर्घ्य देना चाहिए और अर्घ्य देते समय जल के माध्यम से सूर्य को देखना चाहिए। आजकल नेत्ररोग एवं अन्वेषन से अनेकों लोग अपने जीवन को संकटापन्न अनुभव करते हैं, उन सभी लोगों के लिए यह निम्नांकित **'चाक्षुषी विद्या विधान'** अवश्यमेव वरदान सिद्ध हो सकता है , इसमें सन्देह नहीं ।

विधान इस प्रकार है :-

विनियोगः - (जल दाएं हाथ में लेकर) " **ॐ अस्याश्चाक्षुषी विद्याया अहिर्बुध्न्य;ऋषिः, गायत्री छन्दः, सूर्यो देवता, चक्षुरोगनिवृत्तये जपे विनियोगः।"**

(इस विनियोग का उच्चारण करके सूर्य भगवान् के समक्ष जलत्याग करें ।) -

तत्पश्चात् निम्नांकित **'चाक्षुषी विद्या'** का पाठ सूर्याभिमुख होकर करें ,-

-: नेत्रोपनिषद् :-

" ॐ चक्षुः चक्षुः चक्षुः तेजः स्थिरो भव। मां पाहि पाहि। त्वरितं चक्षु - रोगान् शमय शमय। मम जातरूपं तेजो दर्शय दर्शय। यथा अहम् अन्धो न स्याम् तथा कल्पय कल्पय। कल्याणं कुरु कुरु। यानि मम पूर्वजन्मोपार्जितानि चक्षु-प्रतिरोधक दुष्कृतानि सर्वाणि निर्मूलय निर्मूलय। ॐ नमश्चक्षुस्तेजो दात्रे दिव्याय भास्कराय। ॐ नमः करुणाकरायामृताय। ॐ नमः सूर्याय। ॐ नमो भगवते सूर्यायाक्षितेजसे नमः। खेचराय नमः। महते नमः। रजसे नमः। तमसे नमः। असतो मा सद्गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय। मृत्योर्मा अमृतं गमय। उष्णो भगवान् शुचिरूपः। हंसो भगवान् शुचिरप्रतिरूपः। यः इमां चाक्षुष्मतीं विद्यां ब्राह्मणो नित्यमधीते, न तस्याक्षिरोगो भवति। न तस्य कुलेऽन्धो भवति। अष्टौ ब्राह्मणान् सम्यग् ग्राहयित्वा विद्यासिद्धिर्भवति। ॐ नमो भगवते आदित्याय अहोवाहिनी अहोवाहिनी स्वाहा।। "

यदि इसपाठ के बाद हवन करने की इच्छा हो तो **" ॐ नमो भगवते आदित्याय अहोवाहिनी अहोवाहिनी स्वाहा "** - इस मन्त्र से कम से कम १०८ आहुतियां डालें।

उल्लिखित प्रयोग अनेक विद्वान् पण्डितों एवं नेत्ररोगियों द्वारा अनुभूत एवं परीक्षित है, पाठक आवश्यकता में पाठ करके फल अनुभव करें।

(२५) अपस्मार (मिरगी) रोग एवं भूत-प्रेत-पिशाच आदि से मुक्ति पाने के लिए अनुभूत ' त्रिपुर भैरवयन्त्र '

–: त्रिपुर भैरवयन्त्र :–

इसयन्त्र को मिरगी रोगग्रस्त व्यक्ति एवं भूत-प्रेत आदि से पीड़ित व्यक्ति त्रिधातु से निर्मित (अर्थात् १० रत्ती सोना, १२ रत्ती तांबा , १६ रत्ती चांदी मिलाकर बनाए गए) ताबीज में मढ़ाकर, विधिवत् पूजा करके शुभवेला में धारण करे तो अपस्मार रोग से मुक्ति एवं प्रेतबाधा से भी मुक्ति मिलती है। यहयन्त्र हस्तलिखित **' यन्त्र चिन्तामणि '** से उद्धृत है। **इसयन्त्र में जहां ' देवदत्तः ' लिखा है, वहां रोगग्रस्त किंवा प्रेतत्रस्त व्यक्ति का नाम लिखना चाहिए।**
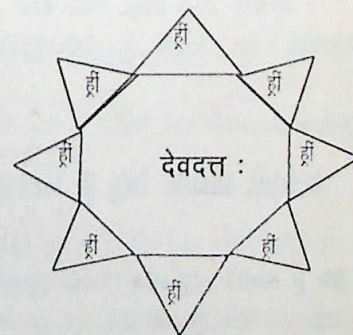
इसयन्त्र को ग्रहणवेला किंवा दीपावली की रात्रि में भोजपत्र पर अष्टगन्ध, केसर की स्याही लेकर अनार की कलम से लिखें ।

(२६) प्रेतपीड़ा या टोने आदि से बचने के लिए मन्त्र

बारहवर्ष से कम आयु की कन्या के काते हुए कच्चे सूत के सात धागे लेकर, उन पर सात गांठे लगा लें। प्रत्येक गांठ पर सात बार निम्नांकित मन्त्र को पढ़ें -

मन्त्र – **" ॐ प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च चण्डिके रक्ष दक्षिणे।
भ्रामणेनात्म - शूलस्य उत्तरस्यां तथेश्वरि।।
सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते।
यानि चात्यर्थ-घोराणि तैरक्षास्मान् तथा भुवम्।। "**

यहप्रयोग अत्यन्त सफल है। गर्भावस्था में गर्भपातभय से मुक्ति एवं शत्रुकृत टोना किंवा प्रेतादि शान्ति के लिए अनुभूत है।

(२७) वशीकरण के लिए शाबरमन्त्र

यहमन्त्र चमत्कारी है, परन्तु पति अपनी पत्नी के लिए एवं पत्नी अपने पति के लिए प्रयोग में लावें। अनुचित कार्यार्थ परस्त्री-पुरुष के वशीकरण के लिए इसमन्त्र का प्रयोग व्यक्ति के लिए (कर्त्ता के लिए) स्वयं हानिकारक रहेगा-यह ध्यान रहे।

मन्त्र - **"ऊँ मोहिनी माता भूत पिता भूतसिर बेताल उड़ ऐ काली नागिन.......... को लग जाये। ऐसी जाके लगे कि........को लग जाए हमारी मुहब्बत की आग, न खड़े सुख न लेटे सुख, न सोते सुख। सिन्दूर चढ़ाऊं मंगलवार, कभी न छोड़े हमारा ख्याल, जब तक न देखे हमारा मुख, काया तड़प तड़प मर जाय, चलो मन्त्र फुरो वाचा दिखाओ रे शब्द अपने गुरु के इलम का तमाशा।।"**

इसमन्त्र में......इस प्रकार बिन्दुओं से युक्त खाली छोड़े स्थानों पर, उस स्त्री या पुरुष के नाम का उच्चारण करें जिसे वश में करना चाहते हैं।

विधि :- शुक्लपक्ष की अष्टमी से पूर्णमासी तक एकान्त-शान्त कमरे में रात को दस बजे के बाद ऊनी आसन पर बैठकर, जल का पात्र अपने पास रखें, धूप-दीप जलाकर उल्लिखित मन्त्र का जाप प्रारम्भ करें। अपनी प्रेमिका, पत्नी या प्रिय (जिसे अनुकूल बनाना हो) का चित्र सामने रख लें। दृढ़ इच्छाशक्ति के साथ प्रतिदिन दो घण्टे मन्त्रजाप करें। नौ दिन में ही अभीष्ट कार्यसिद्धि होगी।

(२८) गाय-भैंस दूध दे - साबरी मन्त्र

नीचे लिखे मन्त्र को ग्रहण या दीपावली की रात्रि में सिद्ध कर लेने पर प्रयोग में लाएं। इसमन्त्र को राख पर पढ़कर, पशु के स्तन एवं मस्तक पर लगा दें या दूब (घास)पर पढ़कर, बिगड़े हुए पशु को खिला दें, तो निश्चय ही पशु ठीक ढंग से दूध देने लगता है।

साबरी मन्त्र - "सुआ झार कज्जल भार, तेल कड़ाही दूधा धार, सावा भार विष उतर गंगा-यमुना चले नीर, बालक छोड़े मातु शरीर, जो अटके तो गौरां पार्वती का अंचला फटे, दोहाय ईश्वर महादेव गौरां पार्वती नैना योगिनी, कामरु कामाक्षा के दोहाय।"

(२९) पति-पत्नी में परस्पर मेल हो - वैदिक मन्त्र

किसी वजह से पति-पत्नी में विवाद उठ खड़ा हो, दोनों के विचार विरोधी दिशाओं में चलते हों तो निम्नमन्त्र का जाप करें। विरोध शान्त हो जाएगा और मधुरता उत्पन्न होकर पुनः मिलन होगा।

मन्त्र - " यथा नकुलो विच्छिद्य संदधात्यहिं पुनः । एवा कामस्य विच्छिन्नं संधेहि वीर्यावति।। अस्यौ नौ मधु संकाशे अनीक नौ समञ्जनम्। अन्तः कृणुष्व मां हृदि मन इन्नौ महासति।। "

(३०) गृहक्लेश दूर करने के लिए मन्त्र

निम्नमन्त्र को उत्तराभिमुख होकर रात के ९ बजे के बाद साढ़े ११ बजे से पहले प्रारम्भ करें। धूप-ज्योति जगाकर पांच-पांच माला मन्त्रजाप ३३ दिन तक प्रतिदिन करें। तर्पण करें तथा ब्राह्मण भोजन कराएं। दीपावली की रात्रि या ग्रहण के समय निम्नमन्त्र को सिद्ध करके, लिखकर देने से एवं घर में हवन करने से घर में क्लेश दूर होकर, गृह में शान्ति हो जाती है।

मन्त्र - "ऊँ दमयन्ती-नलाभ्यां तु नमस्कारं करोम्यहम्। अभिवादो भवेदत्र कलिदोष प्रशान्तिदः।। ऐकमत्यं भवेदेषां ब्राह्मणानां पृथगृधियाम् । निर्वैरता च जायेत संवादाग्ने प्रसीद मे।।"

(३१) कुपथगामी-पति किंवा पत्नी के वशीकरण के लिए मन्त्र

**मन्त्र - "ऊँ कामातुरे काममेखले विद्योषिणि नीललोचने !
"अमुकं" मे वश्यं कुरु कुरु ह्रीं स्वाहा।। "**

विधिः-इस उल्लिखित मन्त्र से मिठाई या किसी मीठी भक्ष्यवस्तु को सात बार अभिमंत्रित करें, फिर दुबारा उसव्यक्ति का नाम लेकर उसव्यक्ति का ध्यान करें कि वह व्यक्ति आपके चरणों में गिर रहा है, क्षमा याचना कर रहा है, ऐसा ध्यान करके, इसमंत्र से अभिमन्त्रित करें और उस चीज को कुपथगामी व्यक्ति को खिला दें। ऐसा ही चालीस दिन करें, व्यक्ति अवश्यमेव वश में हो जाएगा। **ध्यान दें - इसमन्त्र में जहां 'अमुकं' लिखा है , वहां कुमार्गगामी व्यक्ति का नाम बोलना चाहिए।**

(३२) पुत्र या अन्य किसी भी व्यक्ति के वशीकरण के लिए अनुभूत सूर्यमन्त्र

आजकल पति-पत्नी, पिता-पुत्र आदि में वैमनस्य देखा गया है, एतदर्थ आप पारस्परिक सम्बन्धों को मधुर बनाने के लिए इसमन्त्र का प्रयोग कर सकते हैं-

मन्त्र -"ऊँ नमो भगवते श्रीसूर्याय ह्रीं सहस्रकिरणाय, ऐं अतुल - बल - पराक्रमाय नवग्रह-दशदिक्पाल-लक्ष्मी-दैवताय, धर्म-कर्म-सहिताय 'अमुकं नाम' नाथय नाथय, मोहय मोहय, आकर्षय - आकर्षय दासानुदासं कुरु कुरु क्षिप्रं वश्यं कुरु कुरु स्वाहा।"

इसमन्त्र में जहां **'अमुकं नाम'** शब्द का प्रयोग किया गया है, वहां जिसे अनुकूल करना हो उसव्यक्ति का नाम लेना चाहिए। वश्यव्यक्ति का ध्यान करके प्रतिदिन इस मंत्र को एक सौ आठ बार पढ़ना चाहिए और बाद में ध्यान करें कि वह व्यक्ति आपके सामने झुक गया है; ४१ दिन में ही व्यक्ति वशंवद हो जाएगा।

ध्यान दें - वशीकरण मन्त्रों का प्रयोग उचित कार्य के लिए ही करें, बुरे उद्देश्य से मन्त्र का अनुचित प्रयोग फलीभूत न होगा, पाप के भागी भी आपको होना पड़ेगा।

(३३) पति-वशीकरण मन्त्र

आजकल अनेकत्र देखा गया है कि पति अन्यासक्त या क्रोधाभिभूत होने के कारण अपनी पत्नी को सम्मान नहीं देता एवं पति-पत्नी में संघर्ष रहता है। एतदर्थ हम एक अनुभूत पति-वशीकरण मन्त्र लिखते हैं,-

मन्त्र - " ऊँ क्लीं ज्ञानिनामपिचेतांसि देवी भगवती हि सा।
बलादाकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति।। "

विधि :- उल्लिखित मन्त्र को जपने से पूर्व साधक इसप्रकार ध्यान करे कि महामाया भगवती अपने दृढ़पाश (रज्जू) से साध्य (पति) को बांधकर साधिका (मन्त्र करने वाली) के पैरों में डाल रही है, उस त्रिनेत्रों वाली भगवती के एक हाथ में तलवार है। ऐसी महामाया शक्तिरूपा दुर्गा को मैं पतिवशीकरणार्थ नमस्कार करती हूँ। इसप्रकार ध्यान करके साधिका ४१ दिन (दोनों समय ११००/११००) मन्त्र का जाप प्रातःपूर्वाभिमुख एवं सायं को उत्तराभिमुख होकर करे। अष्टमी एवं चतुर्दशी को तीन कन्या एवं एक बटुक को खीर-पूरी का भोजन करावें। निश्चय ही साधिका पतिवशीकरण में सफल होगी।

(३४) लौंग-मोहिनी मन्त्रप्रयोग

निम्नांकित मन्त्र का जाप शुभमुहूर्त में शनिवार की रात्रि में प्रारम्भ करें। प्रतिदिन एक निश्चित समय में कम्बल के आसन पर बैठकर, लौंग सामने रखकर, इसमन्त्र का जाप निश्चयपूर्वक करें। कम से कम ३ माला प्रतिदिन करें। २१ दिन में मन्त्र सिद्ध हो जाता है। जब भी किसी शत्रु या व्यक्ति विशेष को वश में करना हो तो इसमन्त्र से अभिमन्त्रित करके ४ दिन लौंग खिला दें, व्यक्ति पूर्णरूपेण समर्पित हो जाएगा।

मन्त्र- " सत्य नाम आदेश गुरु को लौंग लौंग मेरा भाई, इन्हीं लौंग ने शक्ति चलाई। पहली लौंग राती माती, दूजी लौंग जोवनमाती, तीजी लौंग अंग मरौड़ै, चौथी लौंग दोऊ कर जोड़े, चारो लौंग जो मेरी खाय, फलाने के पास से फलाने कने आ जाय, गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।। "

नोट :- यहां **'फलाने'** शब्द के स्थान पर वश्यव्यक्ति का नाम लें।

(३५) किसी व्यक्ति से अभीप्सित कार्य कराने के लिए तन्त्र

कुंकुम, चन्दन, गोरोचन को गंगाजल एवं गाय के दूध में पीसकर, अपने मस्तक पर तिलक करने से राजा को भी अपने अनुकूल किया जा सकता है-

तन्त्र - "कुंकुमं चन्दनं चैव रोचनं शशिमिश्रितम्।
गवां क्षीरेण तिलकं राजवश्यकरं परम्।।"

ध्यान दें, कि - उपर्युक्त प्रयोग करने के साथ निम्नलिखित मन्त्र का जाप अवश्य करें-

मन्त्र - "ऊँ ह्रीं सः 'अमुकं' में वशमानय स्वाहा।"

यहां **'अमुकं'** के स्थान पर व्यक्ति विशेष का नाम लेना चाहिए। उल्लिखित गोरोचनादि का तिलक, जिस व्यक्ति से काम लेना है, उस व्यक्ति के सामने जाते समय ही लगावें।

(३६) सिद्ध आकर्षण विधान

कोई स्त्री-पुरुष या बालक घर से रूठकर चला गया हो, या विदेश गया हुआ व्यक्ति वापिस घर आने का विचार न रखता हो तो निम्नांकित विधान उसे घर बुलाने में अमोघ सिद्ध होता है।

कुम्हार के घर स्वयं जाकर एक नया पक्काघड़ा (जो कहीं से फुटा या रिसता न हो) एवं एक कसोरा ले आइए।

ध्यान रहे - इनमें कहीं भी काला दाग न हो। घड़े के ऊपर और कसोरे के बीच निम्नांकित नवार्ण मन्त्र का यन्त्र केसर से लिखें, साथ ही एक नवार्ण मन्त्र-यन्त्र केसर की मसी (स्याही) से भोजपत्र पर लिखकर, उसी घड़े में डाल दीजिए और तांबे के चार पैसे भी उसी में डाल दें। पैसे ज्यादा-कम न हों। यदि पैसे न मिलें तो तांबे के चार गोल पत्र डालें। कसोरे से ढककर घड़े को बाईं तरफ को सात बार घुमाते हुए, **"ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे"** इसमन्त्र को पढ़ते जाएं। घड़े को मन्त्रोच्चारण पूर्वक सात बार बाईंओर घुमाकर एकान्त में रख दीजिए । ऐसा सात दिन करें। अर्थात् उसी घड़े के साथ यह प्रयोग सात दिन करें । सात दिन के अन्दर ही व्यक्ति चल पड़ेगा या किसी माध्यम से अपना पता देगा ।

घड़े के अन्दर एवं भोजपत्र पर लिखा जाने वाला यन्त्र यह है ;-

-: यन्त्र :-

ऐं	ह्रीं	क्लीं
डा	मुं	चा
यै	वि	च्चे

नोट :- इस आकर्षण विधान करने से पहिले नवार्णमन्त्र का नियमपूर्वक सवालक्ष जाप करें एवं उल्लिखित-यन्त्र को दीपावली की रात में लिखकर, सिद्ध कर लेना चाहिए।

(३७) ग़ायब (खोया हुआ) व्यक्ति वापिस लौटे- शास्त्रीयमन्त्र

मन्त्र - " ऊँ क्लीं कार्तवीर्यार्जुनो नाम राजा बाहुसहस्रवान्।
यस्य स्मरणमात्रेण गतं नष्टं च लभ्यते ।।
ऊँ कार्तवीर्याय नमः 'अमुकं' शीघ्रमानय स्वाहा।।"

विधि - उपरोक्त गायब व्यक्ति के पहिने हुए बिनाधुले वस्त्र पर केसर व लाल चन्दन की स्याही से अनार की कलम द्वारा इसमन्त्र को लिखें। फिर उस कपड़े को धूप-दीप करके, दो पत्थरों (चक्की के पाटों के बीच) में दबा दें। २१ दिन तक पत्थरों में रखे कपड़े को हिलाएं नहीं, बाद में वस्त्र उठाकर, बन्दर व कुत्तों को रोटियां खिलाएं। मन्त्र में जहां ' **अमुकं** ' लिखा है, वहां गायब (खोए हुए) व्यक्ति का नाम लिखें।

नोट :- मन्त्र-यन्त्र लिखने के लिए, पुष्यनक्षत्र में विधिवत् बनाई अनार की कलम काम देगी। इस विधान के प्रभाव से वह व्यक्ति यदि जीवित हुआ तो आ जाएगा अन्यथा पता चल जाएगा ।

{ ३८ } (क) ऋणमुक्ति के लिए अनुभूत गणपति स्तोत्र

आजकल भौतिकगुण प्रधानविश्व में व्यापारी लोग शेयरबाजार, सट्टा या व्यापारिक वस्तुओं के स्टॅाक से उत्तरोत्तर लाभ लेने की दौड़ में लगे हैं। इस दौड़ में अधिकांश व्यापारी भारी हानि में फंसकर कर्जदार हो जाते हैं, परिणामस्वरूप आत्महत्या तक सोचने लगते हैं। ऐसी स्थिति में हम उन लोगों को परामर्श देंगे कि वे निम्नांकित श्रीगणेश जी के स्तोत्र का प्रातः प्रतिदिन पाठ करना प्रारम्भ करें, कुछ ही दिनों मे ऋण से मुक्ति मिलने लगेगी, यह विश्वस्त व्यक्तियों द्वारा अनुभूत है। स्तोत्र का विनियोग एवं स्तोत्र निम्नांकित है -

विनियोगः -" ऊँ अस्य श्री ऋणविमोचन महागणपति स्तोत्र-मन्त्रस्य शुक्राचार्य ऋषिः,
ऋण विमोचन महागणपतिः देवता, अनुष्टुप् छन्दः, ऋण-विमोचक -
महागणपति प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः। "(यहां दाएं हाथ से जल का त्याग करें।)

स्तोत्र -"ऊँ स्मरामि देव देवेशं वक्रतुण्डं महाबलम्।
षडक्षरं कृपासिन्धुं नमामि ऋण - मुक्तये ।।
महागणपतिं वन्दे महासेतुं महाबलम्।
एकमेवाद्वितीयं तु नमामि ऋण-मुक्तये।।
एकाक्षरं त्वेकदन्तमेकं ब्रह्म सनातनम् ।
महाविघ्नहरं देवं नमामि ऋण-मुक्तये।।
शुक्लाम्बरं शुक्लवर्णं शुक्ल गन्धानुलेपनम्।
सर्वशुक्लमयं देवं नमामि ऋण-मुक्तये ।।
रक्ताम्बरं रक्तवर्णं रक्त-गन्धानुलेपनम् ।
रक्तपुष्पैः पूज्यमानं नमामि ऋण-मुक्तये।।
कृष्णाम्बरं कृष्णवर्णं कृष्णगन्धानुलेपनम् ।
कृष्ण यज्ञोपवीतं च नमामि ऋण-मुक्तये।।
पीताम्बरं पीतवर्णं पीतगन्धानुलेपनम् ।
पीतपुष्पैः पूज्यमानं नमामि ऋण-मुक्तये।।
धूम्राक्षं धूम्रवर्णं च धूम्रगन्धानुलेपनम् ।
सर्वपुष्पैः पूज्यमानं नमामि ऋण-मुक्तये।।
सर्वात्मकं सर्ववर्णं सर्वगन्धानुलेपनम् ।
सर्वपुष्पैः पूज्यमानं नमामि ऋण-मुक्तये।।
एतद् ऋणहरं स्तोत्रं त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नरः ।
षण्मासाभ्यन्तरे तस्य ऋणच्छेदो न संशयः ।।
सहस्र-दशकं कृत्वा ऋणमुक्तो धनी भवेत् ।। "
।। ऋणनिवारक गणेशस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।।

(ख) अनुभूत ऋणहर्तृ (कर्जे से मुक्ति पाने के लिए) श्रीगणेशमन्त्र विधान

इस ऋणहर्तृ-गणेशमन्त्र का प्रभाव हमने अनेकदा अनुभव किया है। ऋण से परेशान व्यक्ति विधिवत् इसमन्त्र का पुरश्चरण करे, स्वतः अनुभव हो जाएगा। यह गुप्त रहस्यात्मक मन्त्र **'कृष्णयामल तन्त्र'** में **' शिव-पार्वती-संवाद '** में उपलब्ध है। यहमन्त्र बहुत ही चमत्कारी है, सर्वजनहिताय इसे पंचांग प्रेमियों के लिए उद्धृत किया गया है।

मन्त्र - " ऊँ गौं गणेश! ऋणं छिन्धि वरेण्यं हुं नमः फट् । "

इसमन्त्र का २१ हजार संख्या में पुरश्चरण करे तो मनुष्य सर्वप्रिय हो जाता है, साथ ही साथ ज्ञान तथा धनलाभ अकस्मात् होता है। सवालक्ष जाप करने से मनोरथ अनायास पूर्ण होने लगते हैं।

जो लोग इसमन्त्र का पुरश्चरण न कर सकें, उनके लिए, ऋणहर्तृ गणेशस्तोत्र लिख रहे हैं ; ऋण हरने वाले इस स्तोत्र का प्रतिदिन एक बार प्रातः सायं पाठ करने से ही आप कर्जे से राहत पा सकेंगें तथा दरिद्रता से छुटकारा पा लेगें। प्रतिदिन नित्यकर्म के बाद आप श्रद्धा, विश्वास के साथ इस स्तोत्र का पाठ करें और अनुभव करें।

गणेश जी का ध्यान -

"ॐ सिन्दूरवर्णं द्विभुजं गणेशं लम्बोदरं पद्मदले निविष्टम्।
ब्रह्मादि देव्यैः परिसेव्यमानं सिद्धैर्युतं तं प्रणमामि देवम्।।"

इसप्रकार कमल में स्थित, सिन्दूरवर्ण, ब्रह्मादि देवताओं से पूजित, द्विभुज, लम्बोदर गणेश जी का ध्यान करके, निम्नांकित स्तोत्र का पाठ करें। यह स्तोत्र ऋणहरण के लिए सर्वोत्तम है। इसस्तोत्र का पाठ बिना नागा एकवर्ष तक नियम पूर्वक करें ; ऋण से मुक्ति मिलेगी।

(ग) ऋणहर्तृ गणेशस्तोत्रम् :-

सृष्ट्यादौ ब्रह्मणा सम्यक् पूजितः फल सिद्धये।
सदैव पार्वती पुत्रः ऋणनाशं करोतु मे ।।

त्रिपुरेस्तु वधात् पूर्वं शंभुना सम्यगर्चितः।
सदैव पार्वती पुत्रः ऋणनाशं करोतु मे।।

हिरण्यकश्यपादीनां वधार्थं विष्णुनार्चितः।
सदैव पार्वती पुत्रः ऋणनाशं करोतु मे।।

महिषस्य वधे देव्याः गणनाथः प्रपूजितः।
सदैव पार्वती पुत्रः ऋणनाशं करोतु मे।।

तारकस्य वधात्पूर्वं कुमारेण प्रपूजितः।
सदैव पार्वती पुत्रः ऋणनाशं करोतु मे।।

भास्करेण गणेशो हि पूजितश्छवि सिद्धये।
सदैव पार्वती पुत्रः ऋणनाशं करोतु मे।।

शशिना कान्तिवृद्ध्यर्थं पूजितो गणनायकः।
सदैव पार्वती पुत्रः ऋणनाशं करोतु मे।।

वृत्रस्य नाशनार्थाय शक्रेण परिपूजितः।
सदैव पार्वती पुत्रः ऋणनाशं करोतु मे।।

देवैः समुद्र मथने प्रारम्भे परिपूजितः।
सदैव पार्वती पुत्रः ऋणनाशं करोतु मे।।

पालनाय च तपसां विश्वामित्रेण पूजितः।
सदैव पार्वती पुत्रः ऋणनाशं करोतु मे।।

।। दारिद्र्यनाशकं गणेशस्तोत्रं सम्पूर्णमिदम् ।।

(३९) वंश परम्परागत गरीबी दूर करने का अनुभूत मन्त्र

मन्त्र - " ॐ क्लीं नन्दादि गोकुलत्राता दाता दारिद्र्यभञ्जनः ।
सर्वमंगलदाता च सर्वकाम प्रदायकः। श्रीकृष्णाय नमः।। "

विधि - इसमन्त्र को शुभमुहूर्त में प्रारम्भ करें। प्रतिदिन नियमपूर्वक ५ माला श्रद्धा से भगवान् श्रीकृष्ण का ध्यान करके, जप करता रहे। शीघ्र ही गरीबी दूर होकर ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है ,- अनुभूत है।

(४०) ऋणमुक्ति के लिए-'ऋग्वेदोक्त मन्त्र का प्रयोग'

आर्थिक-संकट-ग्रस्त व्यक्ति के मित्र-बन्धु भी साथ छोड़ देते हैं। ऐसी स्थिति में सच्चे हृदय से भगवान् विष्णु की प्रतिमा या चित्र के सामने श्रद्धापूर्वक निम्नांकित ऋग्वेदीय-मन्त्र का सात बार जाप करें। इसमन्त्र को सफेद कागज पर लालरंग की स्याही या लालचन्दन से लिखकर, अपने गल्ले में फूल बिछाकर रखें। यदि किसी के पास आर्थिक लाभ की आशा लेकर जा रहे हो , तो इसमन्त्र को २१ बार पढ़कर , कागज पर लिखकर ताबीज में मढा लें, आर्थिक कामनाएं सिद्ध होने लगेंगी। अपनी आस्था व श्रद्धा को दृढ़ रखें।

मन्त्र - " ॐ भूरिदा भूरि देहिनो, मादभ्रं भूर्याभर। भूरिघेदिन्द्र दित्ससि। ॐ भूरि दाह्यसि श्रुतः पुरुजा शूरवृत्रहन्। आ नो भजस्व राधसि।। "

(४१) स्वप्नमातंगी मन्त्र प्रयोग

मन्त्र - "ॐ नमः स्वप्नमातंगिनि सत्यभाषिणि स्वप्नं दर्शय दर्शय स्वाहा।"

विधान - सारादिन निर्जल व्रत करें। रात्रि में १०८ बार उक्त मन्त्र का जाप करके भूखा ही भूशयन करे। पहली ही रात्रि में प्रश्न का उत्तर स्वप्न में मिलने लगेगा।

(४२) तेजी-मन्दी जानने के लिए 'ज्ञान चेतक' मन्त्रप्रयोग

जिन-जिन वस्तुओं की तेजी-मन्दी जाननी हो, उन-उन वस्तुओं को बराबर मात्रा में तोलकर, अलग-अलग कपड़ों में रखकर, निम्नांकित मन्त्र से अभिमन्त्रित करते हुए, गांठ बांध दें। प्रातः उठकर तोले, जो घटे तो वह वस्तु मंहगी होगी तथा जो बढ़े तो वह मन्दी रहेगी।

मन्त्र - "ऊँ श्रीं ह्रीं क्लीं ऊँ ह्रीं श्रीं क्लीं लक्ष्म्यै नमः।"

(४३) स्वप्न में सट्टा, लाटरी, तेज़ी-मन्दी जानने के लिए मन्त्र

मन्त्र - "ऊँ हिलि हिलि शूलपाणये नमः।"

विधि - इसमन्त्र का पुरश्चरण ज्येष्ठ (जेठे) सोमवार से प्रारम्भ करना चाहिए। स्नान करके कम्बल के आसन पर बैठकर, सातदिन तक रात्रि में नियमित रूप से शिवजी को स्नान कराएं। फिर गाढ़े दही में कालेतिल, चावल मिलाकर पेड़ा बनाकर, शिवपिण्डी पर रख दें। तत्पश्चात् धूप-दीप-नैवेद्य एवं पुष्पों से शिवपूजन करके, आरती करने के बाद उपरोक्त मन्त्र का निष्ठापूर्वक जाप करें। इक्कीस मालाजाप प्रतिदिन बिना नागा करें, जप से पूर्व **"अभीष्टकार्य की सिद्धि के लिए मन्त्रजाप कर रहा हूँ"** - यह संकल्प अवश्य करें। मन्त्रजाप के बाद चुपचाप शयन करें, इच्छितकार्य का उत्तर स्वप्न में सही-सही मिलेगा,-यह मन्त्र विशिष्टव्यक्ति के द्वारा अनुभूत है।

(४४) अनावृष्टि शान्तिप्रयोग

गंगा, यमुना आदि महानदियों को छोड़ के अन्य किसी नदी के तट पर या तालाब या वन या शिव के मन्दिर में जाकर , वहां मेघों का आवाहन करें। कमल के आकार का अष्टदल का यंत्र बना के, उसमें पर्जन्य सहित सातों मेघों की स्थापना करके, कनेर के पीले-लाल तथा श्वेतपुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य आदि से पूजा करें। **मेघों के नाम और आवाहन मंत्र- ऊँ ह्रीं मेघदूताय नमः आगच्छ-आगच्छ स्वाहा ।। ऊँ ह्रीं मेघदूत कमलोद्भवाय नमः आगच्छ आगच्छ स्वाहा ।।१।। ऊँ ह्रीं महानीलराजाय हिमवद्धासिने मेघराजाय आगच्छ-आगच्छ स्वाहा ।। २।। ऊँ ह्रीं नन्दिकेश्वराय जठरनिवासिने मेघराजाय आगच्छ-आगच्छ स्वाहा ।।३।। ऊँ ह्रीं सिंहराजाय कैलाशनिवासिने मेघराजाय आगच्छ-आगच्छ स्वाहा ।।४।। ऊँ ह्रीं कुम्भराजायवामश्रृङ्गमेरुनिवासाय मेघराजाय आगच्छ-आगच्छ स्वाहा ।।५।। ऊँ ह्रीं नन्दराजाय दक्षिणश्रृङ्गमेरुनिवासाय मेघराजाय आगच्छ आगच्छ स्वाहा ।।६।।** फिर नाभिमात्र जल में खड़ा होकर, ऊपर लिखे मन्त्रों को १०००/१००० जपे, पश्चात् गुग्गुल, श्वेतचन्दन, अगर , कनेर के पुष्प और शहद तथा घृत की १०८-१०८ आहुतियां, प्रत्येक मन्त्र से दें, तो निश्चय ही वर्षा होवे ।

(४५) अतिवृष्टि शान्तिप्रयोग

मन्त्र :- " ऊँ नमो हनमन्तवीर अंजनी पवन देवता की आण जहू ऐसी मेघ मण्डली - वर्षसी इत उत फूट सत खण्ड जावसी । " अतिवर्षा के समय इसमंत्र का ७-७ बार जाप करके तीन बार ताली बजाकर, आकाश की ओर मुख करके फूंक मारने से अतिवर्षा करते हुए मेघ भी तत्काल फट जावें। इसी मन्त्र को जपता हुआ वर्षते हुए पानी को झाड़ू से दूर करके, उस झाड़ू को सीधा खड़ा कर दें, तो वर्षा बन्द हो जाए। मन्त्र को पहले दीपमाला में जपकर सिद्ध कर लें ।

-: श्री अन्नपूर्णानुष्ठान विधि :-

अन्नपूर्णा भगवती के निम्नलिखित मन्त्र के जाप, स्तोत्रपाठ किंवा अनुष्ठान करने पर, सभी मनोकामनाएं पूर्ण होकर, घर में स्थायी ऋद्धि-सिद्धि की उपलब्धि होती है ; ऐसा अनुभव है।

यह अनुष्ठान हस्तलिखितरूप में पं. मिलखीराम जी शास्त्री, मोरिंडा (रोपड़) निवासी से प्राप्त हुआ है- जनहितार्थ, इसे यहां प्रकाशित कर रहे हैं - **सम्पादक।**

"ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सौं नमो भगवति माहेश्वरि अन्नपूर्णे ममाभिलषितमन्नं देहि देहि स्वाहा। " सम्पुट मन्त्रोऽयम्।। (इसमन्त्र का नियमपूर्वक आजीवन-पाठ करने से सभी प्रकार की सुख-सम्पत्ति प्राप्त होती है, अनुभूत है।) **द्वात्रिंशद्वर्ण-मन्त्रोऽयं शंकरेणैव भाषितः। अन्नपूर्णा महाविद्या सर्व मन्त्रोत्तमोत्तमा।। पूर्वमुत्तरमुच्चार्य सम्पुटीकरणमुत्तमम्।।**

अथ विनियोगः :- "ॐ अस्य श्री अन्नपूर्णा-स्तोत्र-मन्त्रस्य ब्रह्माऋषिः, त्रिष्टुब्छन्दः, अन्नपूर्णा देवता, ह्रीं बीजम्, स्वाहेति शक्तिः, धर्मार्थ-काम-मोक्षार्थ सिद्धये जपे विनियोगः।" (यहां दाएं हाथ से जलत्याग करें।)

"ॐ ह्रीं भगवति माहेश्वरि अन्नपूर्णायै स्वाहा। " (मूलमन्त्रः)

ॐ सत्यार्णव-मनुष्याणां जपन्मन्त्रं समाहितः। अन्नपूर्णेत्यमुं मन्त्रमनुसप्तदशाक्षरम्।।
सर्व-सम्पत्प्रदा नित्यं सर्व-सम्पत्करी तथा। भुवनेश्वरीति विख्याता सर्वाभीष्टं प्रयच्छति।।
श्लाघ्योऽयमिति ज्ञेयमोंकाराक्षर रूपिणी। कान्ति-पुष्टि-धनारोग्यं यशांसि लभते श्रियम्।।
यस्मिन्मन्त्रे जपेन्नित्यं सर्व-काम-फलप्रदम्। एकसन्ध्यं द्विसन्ध्यं वा त्रिसन्ध्यं स्तोत्र-मन्त्रवित्।।
महामाया-प्रभावेण सर्व-सिद्धिं लभेद् ध्रुवम् ।।

(इस प्रकार नतमस्तक होकर, भगवती श्री अन्नपूर्णा का ध्यान करने से सर्वविध सम्पद् लाभ होता है।)

-: अथांगन्यास-करन्यासौ :-

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सौं अगुष्ठाभ्यां नमः।

ॐ नमो भगवती तर्जनीभ्यां नमः।

ॐ माहेश्वरीति मध्यमाभ्यां नमः।

ॐ अन्नपूर्णेत्यनामिकाभ्यां नमः।

ॐ ममाभिलषितमन्नं देहि देहि इति कनिष्ठिकाभ्यां नमः।

ॐ स्वाहेति करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः।

(इन मन्त्रांशों से करन्यास करें ।)

-: अथ हृदयादिन्यासाः :-

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सौं हृदयाय नमः।

ॐ माहेश्वरीति शिखायै वषट्।

ॐ अन्नपूर्णेति कवचाय हुँ।

ॐ ममाभिलषितमन्नं देहि देहि इति नेत्रत्रयाय वौषट्।

ॐ स्वाहेति अस्त्राय फट्।

ॐ भूर्भुवः स्वरोम्।

(इन मन्त्रांशों से हृदयादिन्यास करें।)

-: अथ ध्यानम् :-

ॐ यत्पाद-पद्म-मकरन्द-कणान्धरित्री, यन्मध्यवर्तितमिदं गगनं समग्रम्।
यद्गात्र-संगीकरेण शरणेन्दुरर्कः,स्तौमि तव स्ववपुषो पितरां सविद्याम्।।१।।

ॐ रक्तां विचित्र-वदनां तव चन्द्र-चूड़ामन्नप्रदात्रि नितरां स्तनभार नम्राम्।
नृत्यन्तमिन्दु-शकलाभरणां विलोक्य हृष्टो भजे भगवतीं मम दुःखहन्त्रीम्।।२।।

(इसप्रकार भगवती अन्नपूर्णा का ध्यान करें।)

-: अथ अन्नपूर्णा दशकम् :-

"ॐ मन्दार-कल्प-हरिचन्दन-पारिजात-मध्ये शशांक-मणि-मण्डप-वेदिसंस्थे।
अर्धेन्दु-मौलि-सुललाट-षडर्ध-नेत्रे भिक्षां प्रदेहि गिरिजे! क्षुधिताय मह्यम्।।१।।

ॐ देवी-कदम्ब-परिसेवित-पार्श्वभागे शक्रादयो मुकुलिताञ्जलयः पुरस्तात्।
देवि! त्वदीय-चरणौ शरणं प्रपद्ये भिक्षां प्रदेहि गिरिजे! क्षुधिताय मह्यम्।।२।।

ॐ केयूर-हार-मणि-कंकण-कर्णपूरे काञ्ची-कलाप-मणि-कान्ति-लसद्दुकूले।
दुग्धान्न-पात्र-वर-कञ्चन-दर्वि-हस्ते भिक्षां प्रदेहि गिरिजे ! क्षुधिताय मह्यम्।।३।।

ॐ सद्भक्त - कल्पलतिके भुवनैकवन्द्ये भूतेश-हृत्कमल-मग्न-कुचाग्रभृंगे।
कारुण्य-पूर्ण-नयने किमुपेक्षसे मां भिक्षां प्रदेहि गिरिजे! क्षुधिताय मह्यम्।।४।।

ॐ शब्दात्मिके शशिकलाभरणार्ध - देहे शम्भोरुरः - स्थल-निकेतन-नित्यवासे।
दारिद्र्य-दुःख-भय-हारिणी का त्वदन्या भिक्षां प्रदेहि गिरिजे! क्षुधिताय मह्यम्।।५।।

ॐ लीला-वचांसि तव देवि ऋगादि-वेदाः सृष्ट्यादि-कर्म-रचना भवदीय-चेष्टा।
त्वत्तेजसा जगदिदं परिभाति नित्यं भिक्षां प्रदेहि गिरिजे ! क्षुधिताय मह्यम्।।६।।

ॐ वृन्दार - वृन्द - ऋषि- नारद-कौशिकात्रि-व्यासाम्बरीष-कलशोद्भव-गौतमाद्याः।
भक्त्या स्तुवन्ति निगमागम-सूक्त-मन्त्रैः भिक्षां प्रदेहि गिरिजे ! क्षुधिताय मह्यम्।। ७।।

ॐ देवि! त्वदीय - चरणाम्बुज - सेवयैव ब्रह्मादयोऽप्यविकलां श्रियमाश्रयन्ते।
तस्मादहं तव नतोऽस्मि पदारविन्दं भिक्षां प्रदेहि गिरिजे ! क्षुधिताय मह्यम्।।८।।

ॐ सन्ध्यात्रये सकल - भूसुर - सेव्यमाने स्वाहा स्वाधाऽसि पितृ - देव - गणार्तिहन्त्री।
जाया सुताः परिजनोऽतिथयोऽन्नकामाः भिक्षां प्रदेहि गिरिजे ! क्षुधिताय मह्यम् ।। ९।।

ॐ एकाग्र-मूल-निलयस्य महेश्वरस्य प्राणेश्वरि प्रणत-भक्त-जनाय शीघ्रम् ।
कामाक्षि ! रक्षित-जगत्त्रितयेऽन्नपूर्णे भिक्षां प्रदेहि गिरिजे ! क्षुधिताय मह्यम्।।१०।।

ॐ भक्त्या पठन्ति गिरिजा-दशकं प्रभाते कामार्थिनो बहु-धनान्न-समृद्धिकामाः।
प्रीत्यामहेश - वनिता हिमशैल - कन्या तेभ्यो ददाति सततं मनसेप्सितानि।। ११ ।।"

।। अन्नपूर्णादशकम् सम्पूर्णम् ।।

(इस अन्नपूर्णा दशक के पाठ के बाद निम्नलिखित सम्पुटमन्त्र का यथाशक्ति जप करना चाहिए ;- ऐसा शास्त्रविधान है।)

मन्त्र :- "ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सौं नमो भगवति माहेश्वरि अन्नपूर्णे ममाभिलषितमन्नं देहि देहि स्वाहा।"

।। अन्नपूर्णास्तोत्रं सम्पूर्णमिदम् ।।

卐卐卐卐卐卐卐卐

—: सात ऋषियों का धाम —'सप्तर्षि तारामण्डल' :—

(सप्तर्षि तारामण्डल में वशिष्ठादि सात ऋषियों को पहिचानिए)

लेखक :— प्रियव्रत शर्मा

'सप्तर्षि तारामण्डल' को लगभग सभी लोग पहिचानते हैं। उत्तरीध्रुव से कुछ दूरी पर स्थित यह तारामण्डल हमेशा उत्तरीध्रुव की पूरी परिक्रमा 24 घण्टे में करता रहता है। उत्तरी–गोलार्ध के प्रदेशों में यह आसानी से दिखाई पड़ता है। उत्तरी–भारत के प्रदेशों में तो यह उत्तरी क्षितिज से काफी ऊपर बड़ी आसानी से दिखाई देता है। इस तारामण्डल को English में Ursa Major कहा जाता है। जैसाकि इसके नाम से स्पष्ट है, :— इसके 7 तारे मरीचि, वशिष्ठ, अंगिरा, अत्रि, पुलस्त्य, क्रतु एवं पुलह – ये सात ऋषि माने जाते हैं। सर्वसाधारण तो क्या, पठित व्यक्तियों को भी यह ज्ञात नहीं है, कि इनमें से कौन सा तारा, कौन सा ऋषि है। हिन्दुधर्म पर आस्था रखने वालों को तो यह जानना ही चाहिए, ताकि वे रात्रि में इन ऋषियों का दर्शन करके प्रतिदिन इनका अभिवादन कर सकें।

यहां हम **'सप्तर्षि तारामण्डल'** का एक चित्र दे रहे हैं, जिसमें यह दिखाया गया है, कि कौन सा तारा, कौन सा ऋषि है। इस चित्र को देखने का प्रकार यह है– इस चित्र को अपने सिर के ऊपर आसमान की ओर ऐसे फैला कर रखिए कि इसके पूर्व आदि दिशाओं वाले भाग अपनी–अपनी दिशाओं की ओर हों। *यह तारामण्डल भी अन्य सभी तारों एवम् तारामण्डलों की भान्ति 24 घण्टों में पूर्व से पश्चिम की ओर उत्तरी ध्रुव की पूरी परिक्रमा करता है,– जिससे 24 घण्टों में एकबार यह चित्र में दिखाई गई स्थिति में अवश्य आता है। अर्थात् तब यह तारामण्डल उत्तरी ध्रुव से बिल्कुल ऊपर होता है और तब, जैसा कि चित्र में दर्शाया गया है, मरीचि (η) तारा पूर्व की ओर और शेष सभी तारे इससे पश्चिम की ओर स्थित होते हैं। अब इस चित्र को देखें –यहां Ursa Major Constellation के $\beta, \alpha, \gamma, \delta, \in, \xi, \eta$, तारे क्रमशः पुलह, क्रतु, पुलस्त्य, अत्रि, अंगिरा, वशिष्ठ और मरीचि हैं। अचार्य वराह मिहिर ने इस तारामण्डल में सप्तर्षि ताराओं की स्थिति का स्पष्टीकरण 'बृहत्संहिता' में इस प्रकार किया है:–*

"पूर्वे भागे भगवान् मरीचिरपरे स्थितो वसिष्ठोऽस्मात्।
तस्यांगिरास्ततोऽत्रिः तस्यासन्नः पुलस्त्यश्च।।
पुलहः क्रतुरिति भगवानासन्ना अनुक्रमेण पूर्वाद्यात्।
तत्र वसिष्ठं मुनिवरमुपाश्रिताऽरुन्धती साध्वी।।"

इसका अर्थ है; कि – इस तारामण्डल में सबसे पहिले पूर्व की ओर भगवान् मरीचि और इससे पश्चिम की ओर क्रमशः वशिष्ठ, अंगिरा, अत्रि, पुलस्त्य, पुलह एवं क्रतु भगवान् स्थित हैं। यहां मुनिवर वशिष्ठ के बिल्कुल समीप में ही उनकी पतिव्रता पत्नी 'अरुन्धती' के नाम वाला एक छोटा सा तारा भी है। वशिष्ठ ऋषि (तारा) के पास स्थित इस अरुन्धती तारा को देखने के लिए वशिष्ठ तारे के ऊपर ही निगाह टिकानी होगी, तभी उसके बिल्कुल पास स्थित (वशिष्ठ तारे से लगभग सटा हुआ) **'अरुन्धती'** नाम का यह छोटा सा तारा देखा जा सकेगा। वशिष्ठ तारे पर निगाह केन्द्रित किए बिना इसे नहीं देखा जा सकता।

पुलह (β) से क्रतु (α) तारे की ओर गुजरती सरल रेखा सर्वप्रथम जिस चमकीले तारे को लगभग छूती है, वही तारा उत्तरी ध्रुव है। यह क्रतु से लगभग 27 अंश की दूरी पर स्थित है। यह ध्रुवतारा लगभग स्थिर है। इसके चारों ओर आकाशस्थ उत्तरी गोलार्ध के सभी तारे 24 घण्टों में पूरा चक्कर काटते रहते हैं। ध्रुव को English में α Ursae minoris कहा जाता है।

यहां दिए गए कोष्ठक में इन सातों तारों और ध्रुव के विषुवकाल, क्रान्ति एवं दीप्ति अंक (Magnitudes) दिए गए हैं। दीप्ति अंक तारों की चमक का मापदण्ड है। **ध्यान रहे–** जिस तारे का दीप्तिअंक जितना ज्यादा होगा, उतनी ही उसकी चमक कम होगी। अर्थात् दो तारों में से जिसका दीप्तिअंक अधिक होगा, वह दूसरे से कम चमकने वाला होगा। सबसे कम चमकने वाले तारे का दीप्तिअंक 6 माना गया है। इससे अधिक दीप्तिअंक वाला तारा नंगी आंख से नहीं देखा जा सकता है।

यहां कोष्ठक में प्रदर्शित इन सप्तर्षि तारों के दीप्ति अंकों से स्पष्ट है, कि अंगिरा तारा इन तारों में सबसे ज्यादा एवं अत्रि तारा सब से कम चमकदार है। क्रतु एवं मरीचि, दोनों तारों की चमक लगभग बराबर है। ध्रुव तारे की चमक वशिष्ठ, अत्रि, पुलस्त्य एवं पुलह नामक तारों से अधिक और क्रतु, अंगिरा एवं मरीचि से कुछ कम है।

सप्त ऋषि ताराओं के विषुवकाल, क्रान्ति और दीप्ति अंक

तारा	ऋषि	विषुवकाल घं. मि.	क्रान्ति अं. क.	दीप्ति-अंक
β Ursae Majoris	पुलह	11 00	+ 56 31	2.4
α "	क्रतु	11 02	+ 61 54	1.9
γ "	पुलस्त्य	11 52	+ 53 51	2.5
δ "	अत्रि	12 14	+ 57 11	3.4
∈ "	अंगिरा	12 52	+ 56 06	1.7
ζ "	वसिष्ठ	13 22	+ 55 04	2.4
η "	मरीचि	13 46	+ 49 27	1.9
α Ursae Minoris	ध्रुव	2 04	+ 89 08	2.1
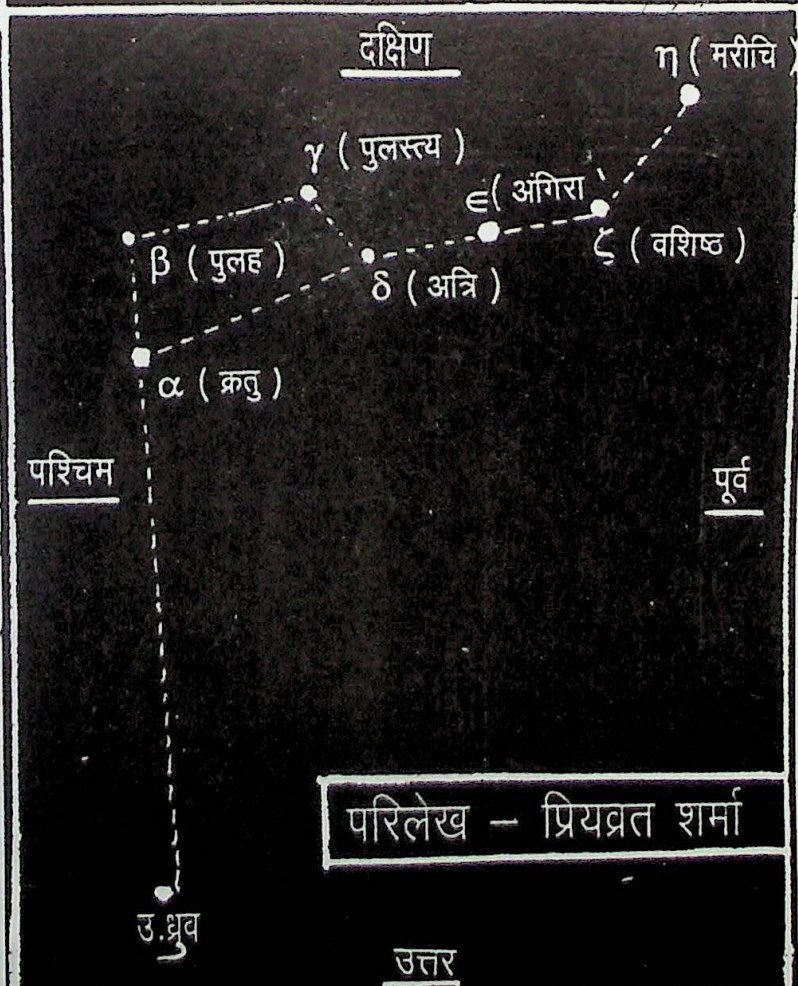
निराधार मतभेद के शिकार–होरा, द्रेष्काण और त्रिंशांश

(एक शोधपूर्ण निबन्ध)

लेखक – प्रियव्रत शर्मा

फलितज्योतिष असंख्य परस्पर विरोधी सिद्धान्तों का विशाल भण्डार है। दुःख की बात तो यह है कि बहुत से ऐसे अत्यन्त मूलभूत सिद्धान्त भी, जिनपर फलादेश की भित्ति टिकी है, वैमत्य के बुरी तरह शिकार हैं। इन सिद्धान्तों की उपपत्ति के अभाव/अज्ञान के कारण किसी एकपक्षीय सिद्धान्त पर अन्तिमरूप से प्रामाणिकता की मुद्रा लगा सकना भी तो किसी के वश की बात नहीं है। यही कारण है ,– शताब्दियों या सहस्राब्दियों से इसशास्त्र के असंख्य सिद्धान्त वैमत्य की उग्र विक्षुब्ध धारा में अजस्र डगमगाते बहते चले आ रहे हैं, उन्हें अभी तक अन्तिमरूपेण कोई एक किनारा प्रश्रय के रूप में नहीं मिल पाया। क्योंकि प्रत्येक फलितीय सिद्धान्त के व्यभिचार की प्रतिशतता समानरूप से पाई जाती है, अतः Statistically (आंकड़ों के आधार पर), उनका परीक्षण कर , उनमें से किसी एक को यथार्थता का प्रमाणपत्र नहीं दिया जा सकता। अगर कहीं ऐसा कर सकना सम्भव होता तो इन विवादाक्रान्त सिद्धान्तों के बारे में युगों से चले आ रहे इन विरोधों का सम्मार्जन कभी का हो गया होता। युगों से चले आ रहे खण्डन–मण्डन से बुरी तरह प्रताड़ित ये सिद्धान्त आज भी अचूक भविष्यवाणियों के लिए लालायित दैवज्ञों के लिए असाध्य सिरदर्द बने हुए हैं। ऐसे अनिर्णीत विवादास्पद फलितीय सिद्धान्तों में से कई सिद्धान्तों पर मैं पहले भी विवेचनात्मक निबन्ध लिख चुका हूँ ; अब मैं षड्वर्ग के तीन सदस्यों– **होरा, द्रेष्काण और त्रिंशांश**– पर प्रचलित मतभेद का विश्लेषण यहां करूंगा। इस बारे में मुझे अनेक जिज्ञासु पाठकों की तीव्र जिज्ञासा से प्रेरणा मिली है।

इन तीन (**होरा – द्रेष्काण – त्रिंशांश**) वर्गों के बारे में ये तीन विभिन्न मत हमें उपलब्ध हैं :–

(1) भारतीय परम्परागत मत (भारतीय मत)।
(2) यवन मत।
(3) मेषादि परिवृत्ति-नियम मत (परिवृत्ति-मत)।

इनमें से कौन सा मत ग्राह्य या प्रामाणिक है, यह जानने के लिए हम यहां इनका विश्लेषणात्मक विवेचन करेंगे।

–: भारतीय परम्परागत मत :–

प्राचीन एवम् अर्वाचीन भारतीय जातक, संहिता, मुहूर्त्तादि फलितग्रन्थों में जो मत इन वर्गों के बारे में हमें उपलब्ध हैं, उनके अनुसार होरा, द्रेष्काण एवम् त्रिंशांश की परिभाषाएं इस प्रकार हैं :–

होरा :– राशि का अर्द्ध, होरा कहलाता है। इसके अनुसार प्रत्येक राशि में 15–15 अंशो की दो–दो होराएं होती हैं। भारतीय मतानुसार विषम (मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धनु, कुम्भ) राशियों की प्रथम होरा का स्वामी सूर्य और द्वितीय होरा का चन्द्र होता है। सम (वृष, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर, मीन) राशियों के लिए इससे विपरीत है। यहां प्रथम होरा चन्द्र की और द्वितीय सूर्य की मानी जाती है।

इस मत का समर्थन **'ज्योतिर्विदाभरण'** को छोड़कर **बृहज्जातकादि** सभी भारतीय जातकग्रंथों द्वारा किया गया है। प्रमाणार्थ उनके कुछ वाक्य यहां उद्धृत किए जा रहे हैं ,–

होरा रवीद्वोरोजर्क्षे समभे चन्द्रसूर्ययोः। – (नारदः)

होराऽर्केन्द्वोः ओज राशौ युग्मभे चन्द्र–सूर्ययोः । – (कश्यपः)

होराधिपोऽहं चन्द्रश्च विषमेष्वपिराशिषु।
युग्मे व्यस्तविधिः सूत, होरोक्ताभदलं बुधैः।। – (सूर्यः)

सूर्येन्द्वोः विषमे राशौ समे तद्विपरीतकम् ।। – (पराशरः)

ओजेषु रवेर्होरा प्रथमा युग्मेषु चोत्तरा शेषा।
इन्दोः क्रमशो ज्ञेया. . . . .।। – (सत्याचार्यः)

मार्त्तण्डेन्द्वोः अयुजि समभे चन्द्रभान्वोश्च होरे। – (वराहमिहिरः)

. . . होराणां रविचन्द्रौ इन्दुरवी विषम-समेष्वर्धराशीनाम्। – (कल्याणवर्मा)

होरा राश्यर्धमोजे दिनकरशशिनोः इन्दुमार्त्तण्ड-होरे युग्मे। – (वैद्यनाथः)

होरे समेब्ज–खगयोः विषमे रवीन्द्वोः। – (केशवार्कः)

होरा राशिदलं समे प्रथमतः चन्द्रस्य भानोरतो।
व्यत्यासो विषमे ....।। – (जीवनाथः)

समे चन्द्रार्कयोः विषमे व्यत्ययेन होरा । – (जातक तत्त्वम्)

होराओं के स्वामियों के निर्धारण में इन उपरोक्त भारतीय फलितशास्त्रियों से मतभेद रखने वाले (यावनमत का अनुसरण करने वाले) एकमात्र भारतीय दैवज्ञ **'ज्योतिर्विदाभरणकार'** हैं। इस बारे हम आगे चलकर विवेचन करेंगे।

द्रेष्काण :– प्रत्येक राशि में 10–10 अंशों के तीन–तीन द्रेष्काण होते हैं। भारतीय मतानुसार (भारतीय–परम्परागत मतानुसार) प्रत्येक राशि के प्रथम, द्वितीय और तृतीय द्रेष्काणों के स्वामी क्रमशः स्वराशि,* स्वराशि से पंचमराशि और स्वराशि से नवमराशि के स्वामीग्रह माने गए हैं। **उदाहरणार्थ** – मेष राशि के प्रथम–द्वितीय–तृतीय द्रेष्काणों के स्वामी क्रमशः स्वराशि (मेष) का स्वामी मंगल, स्वराशि से पंचम राशि (सिंह) का स्वामी सूर्य और स्वराशि से नवम राशि (धनु) का स्वामी गुरु होंगे।

इस मत का समर्थन भी **'उत्तरकालामृत'** ⊗ को छोड़कर सभी भारतीय फलितग्रन्थों द्वारा किया गया है। इस मत के समर्थक इन ग्रन्थों के ये वाक्य देखिए ,–

स्युर्द्रेष्काणाः लग्न–पंच–नवराशीश्वराः क्रमात्। – (नारदः)

लग्न–पंच–नवक्षेत्र नाथा द्रेष्काणपाः क्रमात् । – (कश्यपः)

राशित्रिभागा द्रेष्काणाः ते च षट्त्रिंशदीरिताः।
स्व–पंच–नवमानाञ्च राशीनां क्रमशश्च ते ।। – (पराशरः)

राशेः त्रिभागाः द्रेष्काणाः प्रागंशाधिपतिः तनोः।
अधिपोऽथ द्वितीयस्य पंचामाधिपतिः स्मृतः।
एवमन्त्यत्रिभागस्य नवमाधिपतिः प्रभुः।। – (सूर्यः)

राशिपतेः द्रेष्काणः तत्पंचम–नवमभवनपतयः स्युः। – (सत्याचार्यः)

द्रेष्काणाः स्युः स्वभवन–सुत–त्रित्रिकोणाधिपानाम् । – (वराहः)

स्वर्क्ष–सुतनवमेशाः द्रेष्काणानां क्रमात्। – (कल्याणवर्मा)

दृगाणाः निजतनय–तपःस्थानपानां भवन्ति। – (वैद्यनाथः)

दृकाणपतयः स्वाक्षांकभावाधिपाः। – (जीवनाथः)

दृक्काणकाः प्रथम–पंच–नवेश्वराणाम्। – (केशवार्कः)

स्वेषु – नवर्क्षेशाः द्रेष्काणपाः। – (जातक तत्त्वम्)

भारतीय फलित शास्त्रियों में केवल **'उत्तरकालामृतकार'** ही ऐसे हैं, – जिन्होंने द्रेष्काण के स्वामियों का निर्धारण चर –स्थिर–द्विस्वभाव राशियों के अनुसार किया है। उनका मत है, कि चर राशियों के द्रेष्काणेश क्रमशः स्वराशि, स्वराशि से पंचमराशि एवम् स्वराशि से ही नवमराशि के स्वामी होते हैं। स्थिर राशियों के द्रेष्काणेश क्रमशः स्वराशि से नवमराशि, स्वराशि एवम् स्वराशि से पंचम राशि के स्वामी माने जाते हैं। द्विस्वभाव राशियों के द्रेष्काणेश क्रमशः स्वराशि से पंचमराशि, स्वराशि से नवमराशि एवम् स्वराशि के स्वामी होते हैं।

इस बारे में **'उत्तरकालामृत'** का यह वाक्य है ,–

.... अथ द्रेष्काणके।
लग्नेष्वंक–गृहेश्वराः चरगृहे, भाग्येश्वरात्स्युः स्थिरे।
पुत्रेशाच्च त एव तु द्वितनुभे ....।। – (उत्तरकालामृतम्)

'उत्तरकालामृतकार' का ग्रह मत यवन मतानुसारी है ,– यह आगे चलकर स्पष्ट हो जाएगा।

त्रिंशांश – प्रत्येक विषमराशि के क्रमशः 5, 5, 8, 7 एवम् 5 तथा सम राशि के 5, 7, 8, 5 और 5 अंशों के पांच–पांच त्रिंशांश माने गए हैं, विषम राशियों के पांच त्रिंशांशों के स्वामी क्रमशः मंगल, शनि, गुरु, बुध, शुक्र और सम राशियों के त्रिंशांशों के स्वामी क्रमशः शुक्र, बुध, गुरु, शनि, मंगल हैं।

इस मत की पुष्टि भी भारतीय फलितशास्त्र के सभी ग्रन्थों ने की है। इनके एतद्विषयक वाक्य आगे उद्धृत किए जा रहे हैं ,–

---

* जिस राशि का विचार किया जा रहा है, उसे यहां **'स्वराशि'** लिखा गया है।

⊗ **उत्तरकालामृत और ज्योतिर्विदाभरण**– दोनों के रचयिता एक कालिदास ही माने जाते हैं।

त्रिंशांशेशाश्च विषमे कुजार्कीज्यज्ञभार्गवाः।
पंच–पंचाष्टसप्ताक्षभागाः व्यत्ययतः समे।। – (पराशरः)

कुज–रविज–गुरु–ज्ञ–शुक्राः पवन–समीरण–कौर्प्य–जूक–लेयाः।
अयुजि, युजि तु भे विपर्ययस्थाः।। – (बृहज्जातकम्)

समे शुक्रज्ञेज्यार्किकुजानां पंचाद्र्यष्टशरेषवः त्रिंशांशाः, विषमेऽन्यथा। –
– (जातक तत्त्वम्)

पंचाथ पंच चाष्टौ सप्तच पंचैव चौज भवनेषु।
धरणिसुत–मन्द–सुरगुरु–बुध–शुक्राणां क्रमेणांशाः।।
पंचैव सप्तचाष्टौ पंच च पंचाथ युग्मभवनेषु।
भागाः भार्गव–शशिसुत–सुरेज्य–शनि–भूमिपुत्राणाम्।। – (श्रुतकीर्तिः)

शरपंचाष्ट–मुनीन्द्रियभागाः त्रिंशांशकास्तु विषमेषु।
युग्मेषूत्क्रमगत्या कुजार्कि–जीवज्ञ–शुक्राणाम्।। – (कल्याणवर्मा)

पंच पंचाष्ट शैलाक्षाः त्रिंशांशा विषमे क्रमात्।
भौम–भानुज–जीव–ज्ञ–शुक्राणामुत्क्रमात् समे।। – (जीवनाथः)

त्रिंशांशाः सित–सौम्य–जीव–रविज–क्ष्माजन्मनां व्युत्क्रमात्।
ओजर्क्षेषु शराश्व- सर्प-मरुतः पंच . . . . ।। – (केशवार्कः)

आरार्किजीव –शशिनन्दन–शुक्रभागाः, त्वोजे समीर–पवनाष्टक शैल- बाणाः।
युग्मे समीर–गिरि–पन्नग–पंच–बाणाः, त्रिंशांशकाः सितविदार्य–शनि–क्षमाजाः।।–
– (वैद्यनाथः)

भारतीय मतानुसार सभी राशियों की होरा, द्रेष्काण और त्रिंशांशों की राशियों के स्वामियों का स्पष्ट निर्देश नीचे चक्रों (कोष्ठकों) द्वारा किया गया है ,–

होरा चक्र (भारतीय मतानुसार)

राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
प्रथम होरेश	सू.	चं.	सू.	चं.	सू.	चं.	सू.	चं.	सू.	चं.	सू.	चं.
द्वितीय होरेश	चं.	सू.	चं.	सू.	चं.	सू.	चं.	सू.	चं.	सू.	चं.	सू.

द्रेष्काण चक्र (भारतीय मतानुसार)

राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
प्रथम द्रेष्काण की राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
द्वितीय द्रेष्काण की राशि	5	6	7	8	9	10	11	12	1	2	3	4
तृतीय द्रेष्काण की राशि	9	10	11	12	1	2	3	4	5	6	7	8

त्रिंशांश चक्र (भारतीय मतानुसार)

राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
प्रथम त्रिंशांशेश	मं.	शु.	मं.	शु.	मं.	शु.	मं.	शु.	मं.	शु.	मं.	शु.
द्वितीय त्रिंशांशेश	श.	बु.	श.	बु.	श.	बु.	श.	बु.	श.	बु.	श.	बु.
तृतीय त्रिंशांशेश	गु.	गु.	गु.	गु.	गु.	गु.	गु.	गु.	गु.	गु.	गु.	गु.
चतुर्थ त्रिंशांशेश	बु.	श.	बु.	श.	बु.	श.	बु.	श.	बु.	श.	बु.	श.
पंचम त्रिंशांशेश	शु.	मं.	शु.	मं.	शु.	मं.	शु.	मं.	शु.	मं.	शु.	मं.

विषमराशियों में :– प्रथम त्रिंशांश 0 से 5 अंश, द्वितीय त्रिंशांश 6 से 10 अंश, तृतीय त्रिंशांश 11 से 18 अंश, चतुर्थ त्रिंशांश 19 से 25 अंश तथा पंचम त्रिंशांश 26 से 30 अंश तक ।

समराशियों में :– प्रथम त्रिंशांश 0 से 5 अंश, द्वितीय त्रिंशांश 6 से 12 अंश, तृतीय त्रिंशांश 13 से 20 अंश, चतुर्थ त्रिंशांश 21 से 25 और पंचम त्रिंशांश 26 से 30 अंश तक।

ऊपर दिए गए चक्रों में दर्शाई गई पद्धति वाले इन्हीं होरा, द्रेष्काण तथा त्रिंशांशों को मैंने आगे इसलेख में 'भारतीय मतानुसारी' या 'भारतीय परम्परागत' होरा, द्रेष्काण तथा त्रिंशांश लिखा है, – पाठक यह ध्यान रखें।

–: यवन–मत :–

यवन ज्योतिषियों द्वारा रचित फलितग्रन्थों में होरा, द्रेष्काण एवम् त्रिंशांश वर्गों की परिभाषाएं, भारतीय – परम्परागत उपरोक्त परिभाषाओं से भिन्न हैं, जिनका

विवरण इस प्रकार है ,–

होरा :– प्रत्येक राशि 15–15 अंशों की दो–दो होराओं में विभाजित है:– इस बात पर तो भारतीय एवम् यवन ज्योतिषी परस्पर सहमत हैं , लेकिन होराओं के स्वामियों के बारे में यवनमत भिन्न है। इसके अनुसार राशि की प्रथम होरा का स्वामी स्वराशि का और द्वितीय होरा का स्वामी स्वराशि से ग्यारहवीं राशि का स्वामी ग्रह माना जाता है। इस विषय में यवनेश्वर का यह वचन है ,–

आद्या तु होरा भवनस्य पत्युः एकादशक्षेत्रपतेः द्वितीया। – (यवनेश्वरः)

वराहमिहिर ने भी होरा के बारे में इस यवनमत का निर्देश 'बृहज्जातक' में इस प्रकार किया है ,–

केचित्तु होरां प्रथमां भपस्य वांछन्ति लाभाधिपतेः द्वितीयाम्। – (बृहज्जातकम्)

'ज्योतिर्विदाभरणकार' ही एकमात्र भारतीय दैवज्ञ है ; जिन्होंनें होरेश के निर्धारण में यवनमत का अनुसरण किया है। इसका स्पष्टीकरण हम आगे चलकर करेंगे।

द्रेष्काण :– प्रत्येक राशि में 10–10 अंशों के तीन–तीन द्रेष्काण होते हैं; इस बात पर भी भारतीय एवम् यवन दैवज्ञों में सहमति है। लेकिन द्रेष्काणों के स्वामियों के बारे में इनमें भी परस्पर मतभेद है।

यवन दैवज्ञों में भी द्रेष्काण के बारे में तीन मत उपलब्ध हैं; जो कि ये हैं ,–

(1) एक मत यह है कि प्रत्येक राशि के तीन (प्रथम–द्वितीय–तृतीय) द्रेष्काणों के स्वामी क्रमशः स्वराशि, स्वराशि से बारहवीं राशि तथा स्वराशि से ग्यारहवीं राशि के स्वामी ग्रह होते हैं, जैसे–मेष के तीन द्रेष्काणों के स्वामी क्रमशः मेषेश (मंगल), मीनेश (गुरु) और कुम्भेश (शनि) होंगे।

वराहमिहिर ने यही बात **बृहज्जातक** में इस प्रकार लिखी है ,–

(केचित्तु) द्रेष्काण-संज्ञामपि वर्णयन्ति स्वद्वादशैकादशराशिपानाम्।

(2) दूसरा मत यह है कि चर राशियों के प्रथम–द्वितीय–तृतीय द्रेष्काणेश क्रमशः स्वराशि, स्वराशि से पंचमराशि और स्वराशि से नवमराशि के स्वामी होते हैं। स्थिर राशियों के प्रथम–द्वितीय–तृतीय द्रेष्काणेश क्रमशः स्वराशि से नवम राशि, स्वराशि और स्वराशि से पंचमराशि के स्वामी होते हैं। इसी प्रकार द्विस्वभाव राशियों के प्रथम–द्वितीय–तृतीय द्रेष्काणेश, क्रमशः स्वराशि से पंचमराशि, स्वराशि से नवम राशि और स्वराशि के स्वामी ग्रह माने गए हैं। द्रेष्काण के स्वामियों के निर्धारण के लिए इस नियम को जातकीय फलादेश में ही प्रयुक्त करने का यवनेश्वर ने निर्देश किया है ,– यहां उनका कहना है कि विधानकर्म (मुहूर्त्त) के लिए सभी चर–स्थिर–द्विस्वभाव राशियों के प्रथम–द्वितीय–तृतीय द्रेष्काणों के स्वामी क्रमशः स्वराशि, स्वराशि से पंचमराशि और स्वराशि से नवमराशियों के स्वामी ग्रह मानने चाहिएं । प्रश्नप्रकरण में प्रथम–द्वितीय–तृतीय द्रेष्काणों के स्वामी क्रमशः स्वराशि, स्वराशि से बारहवीं और स्वराशि से ही ग्यारहवीं राशि के स्वामी ग्रह होते है ,– यह भी यवनेश्वर का मत है। इसके लिए यवनेश्वर का यह श्लोक **'बृहज्जातक'** की **'नौका टीका'** में उद्धृत है ,–

लग्न - पुत्र - शुभपाः चरेगृहे पुत्रधर्मतनुपाः युगे गृहे,
धर्मलग्न - सुतपाः स्थिरेगृहे जातके खलु दृकाण उच्यते।
सर्वराशिषु दृकाण उच्यते लग्नपस्य सुतपस्य वाप्यथ,
धर्मपस्य तु विधानकर्मणि प्रश्न एव तनुरिष्फलाभपाः ।।
– (यवनेश्वरः)

'उत्तरकालामृतकार' अकेले ऐसे भारतीय दैवज्ञ हैं – जिन्होंने द्रेष्काणेशों का निर्धारण चर–स्थिर–द्विस्वभाव राशियों के आधार पर, उपरोक्त यवन- मतानुसार ही किया है। इसका निर्देश हम पहिले भारतीय मत के प्रसंग में कर चुके हैं।

(3) 'ताज़िक नीलकण्ठी' में पंचवर्गी के लिए मेषादि बारह राशियों के प्रथम द्रेष्काण के स्वामी क्रमशः मंगल, बुध, गुरु आदि, द्वितीय द्रेष्काण के स्वामी सूर्य, चन्द्र, मंगल आदि और तीसरे द्रेष्काणों के स्वामी शुक्र, शनि, रवि, चन्द्र आदि माने गए हैं।

आद्याः कुजाद्या रवितोऽपि मध्यमाः।
सितात्तृतीयाःक्रियतो दृकाणपाः।। – (ताज़िक नीलकण्ठी)

लेकिन **'ताजिक नीलकण्ठी'** में ही द्वादशवर्गी के लिए द्रेष्काण ठीक वही माने गए हैं ,– जो कि भारतीय मतानुसार हैं, अर्थात् द्वादशवर्गी के लिए वहां प्रत्येक राशि के प्रथम–द्वितीय– तृतीय द्रेष्काणों के स्वामी क्रमशः स्वराशि का स्वामी, स्वराशि से पंचमराशि का स्वामी और स्वराशि से नवमराशि का स्वामी माने गए हैं।

द्रेष्काणपाः स्वेषु नवर्क्षनाथाः । – (ताजिक नीलकण्ठी)

त्रिंशांश :– भारतीय दैवज्ञों ने प्रत्येक विषम राशि को क्रमशः 5, 5, 8, 7 और 5 तथा प्रत्येक समराशि को 5, 7, 8, 5 और 5 अंशों में बांटकर, इनके पांच–पांच भाग किए हैं, जिन्हें त्रिंशांश संज्ञा दी गई है। इन त्रिंशांशों के स्वामी सम और विषम राशियों के लिए भिन्न–भिन्न प्रकार से निर्धारित किए हैं, जिनका निर्देश हम ऊपर कर चुके हैं। लेकिन यवन दैवज्ञों ने प्रत्येक राशि को 6–6 अंशों के समान पांच–पांच भागों में विभाजित किया है और उन भागों को 'पंचमांश' की संज्ञा दी है। इन समान–मानात्मक 6–6 अंशों वाले पंचमांशों के स्वामियों का निर्धारण यवनों ने ठीक भारतीय मतानुसार ही किया है, जैसा कि यवन मत के इस पद्य से स्पष्ट है ,–

ओजर्क्षे पंचमांशेशाः कुजार्कीज्यज्ञभार्गवाः।
समभे व्यत्ययाज्ज्ञेयाः . . . . ।। (यवन मतम्)

स्पष्ट है, भारतीय दैवज्ञों ने राशि के विषममानेन (असमान भागों वाले) पांच–पांच भाग करके, उन्हें त्रिंशांश की संज्ञा दी और यवन ज्योतिषियों ने समान भागों (6–6 अंशों) के पांच–पांच भाग कर, उन्हें त्रिंशांश संज्ञा न देकर, पंचमांश संज्ञा दे दी। यही यहां त्रिंशांश और पंचमांश में अन्तर है। इन भारतीय त्रिंशांशों एवम् यावन पंचमांशों के स्वामियों के निर्धारण का नियम तो दोनों में सर्वथा समान है। अर्थात्– त्रिंशांश एवम् पंचमांश दोनों में मेषादि राशियों के प्रथम–द्वितीय–तृतीय–चतुर्थ एवम् पंचम भागों के स्वामी बिल्कुल एक से हैं। अतः हम पंचमांश को 'यवन ज्योतिष का त्रिंशांश' कह सकते हैं। **यवन मतानुसार होरा, द्रेष्काण और त्रिंशांशों की राशियों/स्वामियों का चक्रद्वारा निर्देश नीचे किया जा रहा है ,–**

होरा चक्र
(यवन मतानुसार)

राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
प्रथम होरा की राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
द्वितीय होरा की राशि	11	12	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10

द्रेष्काण चक्र (जातकोपयोगी) (यवन मतानुसार)

राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
प्रथम द्रेष्काण की राशि	1	10	7	4	1	10	7	4	1	10	7	4
द्वितीय द्रेष्काण की राशि	5	2	11	8	5	2	11	8	5	2	11	8
तृतीय द्रेष्काण की राशि	9	6	3	12	9	6	3	12	9	6	3	12

द्रेष्काण चक्र (विधान कर्मोपयोगी) (यवन मतानुसार)

राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
प्रथम द्रेष्काण की राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
द्वितीय द्रेष्काण की राशि	5	6	7	8	9	10	11	12	1	2	3	4
तृतीय द्रेष्काण की राशि	9	10	11	12	1	2	3	4	5	6	7	8

द्रेष्काण चक्र (प्रश्नोपयोगी) (यवन मतानुसार)

राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
प्रथम द्रेष्काण की राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
द्वितीय द्रेष्काण की राशि	12	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
तृतीय द्रेष्काण की राशि	11	12	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10

पंचमांश चक्र (यवन मतानुसारी–त्रिंशांश)

राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
प्रथम पंचमांश का स्वामी	मं.	शु.	मं.	शु.	मं.	शु.	मं.	शु.	मं.	शु.	मं.	शु.
द्वितीय पंचमांश का स्वामी	श.	बु.	श.	बु.	श.	बु.	श.	बु.	श.	बु.	श.	बु.
तृतीय पंचमांश का स्वामी	गु.	गु.	गु.	गु.	गु.	गु.	गु.	गु.	गु.	गु.	गु.	गु.
चतुर्थ पंचमांश का स्वामी	बु.	श.	बु.	श.	बु.	श.	बु.	श.	बु.	श.	बु.	श.
पंचम पंचमांश का स्वामी	शु.	मं.	शु.	मं.	शु.	मं.	शु.	मं.	शु.	मं.	शु.	मं.

ध्यान दें :–"भारतीय मतानुसारी" त्रिंशांश चक्र और इस "पंचमांश चक्र" में कोई अन्तर नहीं है। इन दोनों में अन्तर केवल यही है कि त्रिंशांश में राशि के सभी पांच भाग समान नहीं हैं, जब कि पंचमांश में यह सभी समान हैं।

–: मेषादि–परिवृत्तिनियम मत :–

उपरोक्त दो (भारतीय एवम यावन) मत ही होरा, द्रेष्काण और त्रिंशांश के बारे में भारतीय और यवन दैवज्ञों में प्रचलित हैं। जैसा कि ऊपर हमने बतलाया है, इन तीन वर्गों के भारतीय परम्परा प्राप्त निर्धारण में, भारतीय ज्योतिष-शास्त्रियों में तनिक भी मतभेद नहीं है। शतप्रतिशत जातक मुहूर्तग्रन्थ इनके (होरा, द्रेष्काण और त्रिंशांश के) विषय में एकस्वर हैं। **इन सब का यही मत है कि;–**

(i) राश्यर्द्ध होरा है, विषम-राशियों में प्रथम-द्वितीय होराओं के स्वामी क्रमशः सूर्य-चन्द्र और सम-राशियों में चन्द्र-सूर्य होते हैं।

(ii) प्रत्येक राशि में 10-10 अंशों के तीन-तीन (प्रथम-द्वितीय-तृतीय) द्रेष्काण होते हैं। इनके स्वामी क्रमशः स्वराशि, स्वराशि से पंचमराशि और स्वराशि से नवम राशि के स्वामी ग्रह माने गए हैं।

(iii) प्रत्येक विषम-राशि के क्रमशः 5, 5, 8, 7 और 5 अंश तथा प्रत्येक सम-राशि के क्रमशः 5, 7, 8, 5 और 5 अंश-त्रिंशांश कहलाते हैं। विषम राशियों के त्रिंशांशों के स्वामी क्रमशः मंगल, शनि, गुरु, बुध और शुक्र तथा सम राशियों के त्रिंशांशों के स्वामी क्रमशः शुक्र, बुध, गुरु, शनि और मंगल होते हैं।

होरा, द्रेष्काण और त्रिंशांश के बारे में, इस ऐकमत्य के समर्थक अनेक प्रमाणिक प्राचीन एवम् अर्वाचीन भारतीय जातकादि ग्रन्थों के ऊपर उद्धृत वाक्यसमूह से यद्यपि सुतरां स्पष्ट है कि होरादि तीन वर्गों के बारे में भारतीय ज्योतिषियों में कोई विवाद है ही नहीं। लेकिन फिर भी आधुनिक एक-दो ज्योतिषियों ने इस पर आदर्श ऐकमत्य की उपेक्षा करके, सर्वथा एक नए ही मत के प्रतिष्ठापन का प्रयास किया है। इस नए मत को **" मेषादि परिवृत्तिनियम "** मत या **'परिवृत्ति'** कहा जाता है। इस नए मत को तूल देने वाले **बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के ज्योतिष विभाग के अध्यक्ष, स्व. श्रीरामयत्न ओझा जी** हैं, जिन्होनें अपनी पुस्तक **'फलितविकास'** में इस मत की वकालत की है।

यद्यपि सभी भारतीय फलितशास्त्री एवम् दैवज्ञलोग होरा, द्रेष्काण तथा त्रिंशांश के विषय में पूर्वोक्त सर्वसम्मत भारतीय मत को ही प्रारम्भकाल से निरपवादरूपेण प्रयोग में लाते चले आ रहे हैं , पुनरपि इस नए मत की चर्चा से उत्पन्न बुद्धिभेद के कारण कुछ सामान्य दैवज्ञलोग, इस विषय में कई बार दुविधा की स्थिति में दिखाई देते हैं। उनके सन्देह का मार्जन करने के लिए मैं यहां इस नए मत का विश्लेषण कर इसकी अग्राह्यता का प्रतिपादन करूंगा।

इस मत को **'मेषादि परिवृत्तिनियम मत'** इसलिए कहा गया है, क्योंकि इसके अनुसार मेषादि बारह राशियों के होरा, द्रेष्काण और त्रिंशांश भागों* की राशियों का निर्धारण मेष से प्रारम्भकर, क्रमशः बारह राशियों की परिवृत्तियों (आवृत्तियों) द्वारा किया जाता है। **उदाहरणार्थ-** मेष आदि 12 राशियों की 24 होराएं हैं; इन 24 होराओं की राशियां परिवृत्ति नियमानुसार इस तरह ज्ञात होंगी ,-

मेषराशि की प्रथम-द्वितीय होराएं क्रमशः मेष, वृष की, वृष राशि की प्रथम-द्वितीय होराएं क्रमशः मिथुन, कर्क की, मिथुन राशि की प्रथम-द्वितीय होराएं क्रमशः सिंह, कन्या की .... इत्यादि। इसप्रकार दो बार मेषादि की आवृत्ति से सभी होराओं की राशियां ज्ञात होंगीं।

इसी प्रकार मेषराशि के प्रथम, द्वितीय, तृतीय-द्रेष्काण की राशियां क्रमशः मेष, वृष, मिथुन; वृष राशि के प्रथम, द्वितीय, तृतीय द्रेष्काणों की राशियां क्रमशः कर्क, सिंह, कन्या; मिथुन राशि के प्रथम, द्वितीय, तृतीय द्रेष्काणों की क्रमशः तुला वृश्चिक,धनु .... इत्यादि । इसी प्रकार 3 बार मेषादि की आवृत्तियों से सभी (36) द्रेष्काणों की राशियां ज्ञात होंगी।

इस परिवृत्ति मत का संकेत जैमिनिसूत्र के व्याख्याकारों द्वारा उद्धृत की गई कुछ कारिकाओं में, जिन्हें वृद्धकारिका ✕ कहा जाता है, मिला है। इस मत की ओर संकेत करने वाली दो वृद्धकारिकाएं हैं, जिनमें से एक कारिका होरा और दूसरी द्रेष्काण के लिए है। होरा के लिए वृद्धकारिका यह है ,-

होरा :- राशेर्धं भवेद्होरा ताः चतुर्विंशतिः स्मृताः।
मेषादि तासां होराणां परिवृत्तिद्वयं भवेत्।। - (वृद्धकारिका)

इसका अर्थ है- राशि का आधा होरा होती है, इसलिए 12 राशियों की कुल होराएं 24 हैं ; मेष से लेकर 12 राशियों की दो बार क्रमशः आवृत्ति करने पर, इन 24 होराओं की राशियों का (कौन-सी होरा-किस राशि की है इसका) निर्णय हो जाता है। (इसका उदाहरण ऊपर दिया जा चुका है, वहां देखें।)

इस मतानुसार मेष आदि 12 राशियों की 24 होराओं की राशियां नीचे चक्रद्वारा स्पष्ट हैं ,-

होरा चक्र (परिवृत्ति-नियमानुसार)

राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
प्रथम होरा की राशि	1	3	5	7	9	11	1	3	5	7	9	11
द्वितीय होरा की राशि	2	4	6	8	10	12	2	4	6	8	10	12

द्रेष्काण :- दूसरी वृद्धकारिका यह है, जो द्रेष्काण के बारे में है ,-

राशि-त्रिभागो द्रेष्काणः ते च षट् त्रिंशदीरिताः।
परिवृत्तित्रयं तेषां मेषादेः क्रमशो भवेत् ।। - (वृद्धकारिका)

**** होरा, द्रेष्काण, त्रिंशांश भागों के अलावा अन्य चतुर्थांश, दशमांश आदि की राशियां भी श्री ओझाजी ने परिवृत्ति-नियमानुसार ही निर्धारित की हैं।***

✕ इन वृद्धकारिकाओं के प्रणेता का नाम अज्ञात है। म.म. श्री दुर्गाप्रसाद द्विवेदी जी ने अपने **'जैमिनि-पंद्यामृत'** के परिशिष्ट में ये कारिकाएं संगृहीत की हैं।

इसका अर्थ है ,– राशि का तृतीयांश द्रेष्काण होता है। द्रेष्काणों की कुल संख्या 36 है। इन द्रेष्काणों में मेष आदि राशियों की क्रमशः तीन बार आवृत्ति से इन द्रेष्काणों की राशियों का (कौन सा द्रेष्काण–किस राशि का है इसका) ज्ञान हो जाता है। (इसका उदाहरण ऊपर दिया जा चुका है, वहां देखें।)

इसके अनुसार 12 राशियों के 36 द्रेष्काणों की राशियों का निर्देश इस चक्र में किया गया है ,–

द्रेष्काण चक्र
(परिवृत्ति–नियमानुसार)

राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
प्रथम द्रेष्काण की राशि	1	4	7	10	1	4	7	10	1	4	7	10
द्वितीय द्रेष्काण की राशि	2	5	8	11	2	5	8	11	2	5	8	11
तृतीय द्रेष्काण की राशि	3	6	9	12	3	6	9	12	3	6	9	12

त्रिंशांश :– यद्यपि ऐसी कोई वृद्धकारिका या अन्य कोई वाक्य उपलब्ध नहीं है, जिसमें त्रिंशांशों की राशियों के निर्धारणार्थ परिवृत्तिनियम का निर्देश हो, तथापि श्री ओझा जी ने भारतीय परम्परागत मत को तिरस्कृत कर, त्रिंशांश का शाब्दिक अर्थ 30 वां भाग* लेकर प्रत्येक राशि में 30 त्रिंशांश मानकर, मेषादि-परिवृत्ति–नियमद्वारा इन 30–30 त्रिंशांशों की राशियों का (कौन सा त्रिंशांश किस राशि का है इसका) निर्धारण किया है। स्पष्ट है ,– इस नियमानुसार एकराशि में बने 30 त्रिंशांशों का भारतीय–परम्परा प्राप्त 5 त्रिंशांशों से कोई सामंजस्य नहीं रह जाता। इस मतानुसार 30 त्रिंशांश भागों तथा उनकी राशियों को बतलाने वाला चक्र इसी पृष्ठ पर दाईं ओर वाले कॉलम में दिया गया है।

त्रिंशांश चक्र
(परिवृत्ति–नियमानुसार)

राशि ▸	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
त्रिंशांश 1	1	7	1	7	1	7	1	7	1	7	1	7
त्रिंशांश 2	2	8	2	8	2	8	2	8	2	8	2	8
त्रिंशांश 3	3	9	3	9	3	9	3	9	3	9	3	9
त्रिंशांश 4	4	10	4	10	4	10	4	10	4	10	4	10
त्रिंशांश 5	5	11	5	11	5	11	5	11	5	11	5	11
त्रिंशांश 6	6	12	6	12	6	12	6	12	6	12	6	12
त्रिंशांश 7	7	1	7	1	7	1	7	1	7	1	7	1
त्रिंशांश 8	8	2	8	2	8	2	8	2	8	2	8	2
त्रिंशांश 9	9	3	9	3	9	3	9	3	9	3	9	3
त्रिंशांश 10	10	4	10	4	10	4	10	4	10	4	10	4
त्रिंशांश 11	11	5	11	5	11	5	11	5	11	5	11	5
त्रिंशांश 12	12	6	12	6	12	6	12	6	12	6	12	6
त्रिंशांश 13	1	7	1	7	1	7	1	7	1	7	1	7
त्रिंशांश 14	2	8	2	8	2	8	2	8	2	8	2	8
त्रिंशांश 15	3	9	3	9	3	9	3	9	3	9	3	9
त्रिंशांश 16	4	10	4	10	4	10	4	10	4	10	4	10
त्रिंशांश 17	5	11	5	11	5	11	5	11	5	11	5	11
त्रिंशांश 18	6	12	6	12	6	12	6	12	6	12	6	12
त्रिंशांश 19	7	1	7	1	7	1	7	1	7	1	7	1
त्रिंशांश 20	8	2	8	2	8	2	8	2	8	2	8	2
त्रिंशांश 21	9	3	9	3	9	3	9	3	9	3	9	3
त्रिंशांश 22	10	4	10	4	10	4	10	4	10	4	10	4
त्रिंशांश 23	11	5	11	5	11	5	11	5	11	5	11	5
त्रिंशांश 24	12	6	12	6	12	6	12	6	12	6	12	6
त्रिंशांश 25	1	7	1	7	1	7	1	7	1	7	1	7
त्रिंशांश 26	2	8	2	8	2	8	2	8	2	8	2	8
त्रिंशांश 27	3	9	3	9	3	9	3	9	3	9	3	9
त्रिंशांश 28	4	10	4	10	4	10	4	10	4	10	4	10
त्रिंशांश 29	5	11	5	11	5	11	5	11	5	11	5	11
त्रिंशांश 30	6	12	6	12	6	12	6	12	6	12	6	12

–: मेषादि–परिवृत्ति मत की समीक्षा :–

श्रीरामयत्न ओझा ने अपनी पुस्तक **'फलितविकास'** में इस मेषादि–परिवृत्ति मत द्वारा होरा, द्रेष्काण तथा त्रिंशांश के भागों की राशियों/स्वामियों के निर्धारण के लिए केवल उपरोक्त दो वृद्धकारिकाओं को ही प्रमाण मान लिया। उन्होंनें नारद, कश्यप, सूर्य, सत्याचार्य, पराशर, कल्याणवर्मा, वराहमिहिर आदि अन्य सभी भारतीय फलितशास्त्रकारों द्वारा एक स्वर से समर्थित भारतीय परम्परा-प्राप्त उपरोक्त मत की ओर तनिक भी ध्यान नहीं दिया, यह आश्चर्य की बात है। एकमात्र वृद्धकारिकाकार के मत द्वारा अन्य सैकड़ों

* त्रिंशांश शब्द का शाब्दिक अर्थ लेना संगत नहीं है। इसका प्रतिपादन आगे किया गया है।

फलितशास्त्रियों के ऐसे सर्वसम्मत मत को, जो शताब्दियों से भारतीय दैवज्ञों द्वारा अविच्छिन्न रूप से प्रयुज्यमान है, तिरस्कृत कर डालने में उन्हें तनिक भी संकोच नहीं हुआ; यह सचमुच दुःख की भी बात है। भारतीय ही नहीं बल्कि यावन ज्योतिषियों ने भी परिवृत्तिनियम को इन तीन (होरा, द्रेष्काण, त्रिंशांश) वर्गों में प्रयुक्त नहीं किया।

ओझा जी का यह तर्क–कि नवांश, सप्तमांश, षोडशांश, विंशांश तथा भांश वर्गों में परिवृत्तिनियम पहिले से ही लागू है, अतः होरा, द्रेष्काण, त्रिंशांश में भी समानन्यायेन यह लागू होना ही चाहिए– तर्क गलत है; क्योंकि चतुर्थांश, दशमांश, द्वादशांश, खवेदांश, अक्षवेदांश एवं षष्ठ्यंश वर्गों में भी परिवृत्तिनियम लागू नहीं है।

नारद, कश्यप, पराशर, सत्याचार्य, वराह आदि सभी भारतीय फलितशास्त्री जिस सिद्धान्त को सर्वसम्मति से लगातार अपनाते चले आ रहे हैं और वर्त्तमान में भी जिसे शत-प्रतिशत दैवज्ञलोग षड्वर्ग, सप्तवर्ग आदि के साधन में निर्बाधरूपेण प्रयुक्त कर रहे हैं, उस मत को किसी अज्ञातनामा एकमात्र विद्वान् द्वारा निर्दिष्ट, परिवृत्तिनियम द्वारा बुहार कर, कचरे के पात्र में फेंकने के लिए, **श्री ओझा** द्वारा किया गया यह प्रयास तनिक भी तर्कसंगत नहीं है। एक–दो विद्वान् गलती कर सकते हैं। विषय के विशेषज्ञ विद्वानों के इतने विशाल समाज को भ्रान्त, पथभ्रष्ट घोषित कर, वृद्धकारिका के एकमात्र किसी अज्ञात विद्वान् को ही प्रभावान् घोषित कर देना किसी भी प्रेक्षावान् को सह्य नहीं होगा।

फलित के अधिकतर नियमों की उपपत्ति हमें अज्ञात है। ऐसे नियमों में जहां परस्पर विरोध उपस्थित हो जाए, फलितशास्त्रियों का मत है, कि वहां हमें स्वयं कोई निर्णय न लेकर बहुमत को ही प्रामाणिकता देनी चाहिए। वराहमिहर ने भी वैमत्य के ऐसे अनेक स्थलों पर बहुमत का सम्मानकर, बहुमतानुसारी मत को ही अपनी जातक रचनाओं में अन्तिम सिद्धान्त के रूप में स्वीकार किया। इस बारे उनका यह वाक्य है ,–

ज्योतिषमागमशास्त्रं विप्रतिपत्तौ न योग्यमस्माकम्।
स्वयमेव विकल्पयितुं किन्तु बहूनां मतं वक्ष्ये।। – (वराहः)

'होरारत्न' के रचयिता **श्री बलभद्रमिश्र** ने भी होरा, द्रेष्काण आदि के बारे में भारतीय एवं यावन फलिताचार्यों के पारस्परिक मत–मतान्तरों की चर्चा करने के उपरान्त भारतीय फलिताचार्यों के मत को ही बहुसम्मत होने के कारण प्रामाणिक माना। इस विषय में **श्री बलभद्र** का यह वचन है ,–

अत्र (होरा, द्रेष्काणादि- विषये) बहुमुनि–सम्मतत्वात् एतदेव (भारतीयमतमेव) प्रमाणम्। पूर्वपक्षः (यवनेश्वर प्रतिपादितः) एक-सम्मतत्वादुपेक्ष्यः। – (होरारत्नम्)

श्रीबलभद्र का यह वाक्य ध्यान देने योग्य है, जो स्पष्ट कह रहा है कि अनेक विद्वानों द्वारा समर्थित मत के विरोधी किसी ऐसे मत को मान्यता नहीं दी जा सकती जिसका समर्थन कोई एक ही विद्वान् कर रहा हो। श्री ओझा जी का होरा, द्रेष्काण, त्रिंशांश पर लादा जा रहा–यह परिवृत्ति नियम, जो अनेक विद्वानों के मत के विरुद्ध केवल एक ही विद्वान् द्वारा समर्थित है ,– कदापि ग्राह्य सिद्ध नहीं होता है।

होरा, द्रेष्काण, त्रिंशांश – इन तीनों वर्गों की राशियों/स्वामियों का निर्णय परिवृत्तिनियमानुसार ही होना चाहिए; इस मत की पुष्टि में श्री ओझा एवं एक अन्य विद्वान् द्वारा उपस्थापित कुछ उदाहरणों का परीक्षण करना भी यहां आवश्यक है ,–

श्रीरामयत्न ओझा ने अपने **'फलितविकास'** में ही **ज्योतिर्विदाभरण** के राजसत्ताध्याय का एक यह पद्य उद्धृत किया है, जिसमें लिखा है कि स्थिर एवं द्विस्वभाव लग्न की मेष, मिथुन, कन्या या मीन की होरा में राज्याभिषेक करना शुभ है ,–

शस्तः तिमि–स्त्री–जितुमादि होरा, स्थिरांश-गुर्वशवतीह लग्ने ।
चरेतरेग्वंशुमदंशु जारैः त्र्यायारिगैः भूमिभुजोऽभिषेकः ।। – (ज्योतिर्विदाभरणम्)

यहां पर ओझा जी का तर्क है कि भारतीय परम्परागत मतानुसार तो केवल सूर्य (सिंह) तथा चन्द्र (कर्क) की ही होरा होती है; लेकिन ज्योतिर्विदाभरण के इस वाक्य में मेष, मिथुन, कन्या और मीन की होराओं की चर्चा है, अतः स्पष्ट है ,– यह वाक्य परिवृत्तिमतानुसारी होरा की ओर संकेत करता है, क्योंकि परिवृत्तिनियमानुसार ही प्रत्येक राशि की होरा उपलब्ध होती है।

लेकिन ओझा जी का यह प्रतिपादन ठीक नहीं है। परिवृत्तिनियमानुसार स्थिर एवं द्विस्वभाव राशियों में मिथुन ,कन्या और मीन की होराएं तो मिलती हैं, लेकिन मेष की होरा–इनमें नहीं मिलती। मेष की होरा केवल चर राशियों (मेष और तुला) में ही मिलती है, { देखें ,– होराचक्र (परिवृत्ति–नियमानुसार) }। इस प्रकार स्पष्ट है – श्री ओझा जी द्वारा दिया गया, यह परिवृत्ति–नियमानुसारी होरा का यह एकमात्र उदाहरण भी गलत है। जैसा कि हम पहिले भी बतला चुके हैं ,– भारतीय फलितशास्त्रियों में केवल **ज्योतिर्विदाभरणकार** ही ऐसे हैं, जो यवनमतानुसारी होरा के समर्थक हैं। **ज्योतिर्विदाभरण** के इस पद्य में निर्दिष्ट होरा केवल यवनमतानुसारी है, { देखें–होराचक्र (यवनमतानुसारी) }।

अनेक ज्योतिषग्रन्थों के हिन्दी टीकाकार **श्री गोपेशकुमार ओझा** भी श्री रामयत्न ओझा के परिवृत्तिमत से प्रभावित हैं। उन्होंने भी **'जातकपारिजात'** के प्रथमाध्याय (राशि–शीलाध्याय) की अपनी हिन्दी टीका में **'मध्यपाराशरी'** के इन निम्नांकित पद्यों की

और पातकों का ध्यान आकृष्ट किया है, जहां वृषराशि के वृषांश, मिथुनांश, कर्कांश, सिंहांश, कन्यांश, तुलांश, वृश्चिकांश, धनुरंश, मकरांश, कुम्भांश एवं मीनांश में स्थित लग्नेश व अष्टमेश के फल (बैल, भालू आदि से मृत्यु जैसे कुफल) लिखे गए हैं,–

लग्नेश्वरो रन्ध्रपतिश्च युक्तौ वृषे वृषांशे वृषभ दृकाणे।
स्थितौ भवेतां यदि तौ वृषेण घातात्तयोः स्यान्मरणं हि भुक्तौ।।
वृषे युग्मांशके तौ चेद् भल्लूकेन मृतिः नृणाम्।
वृषे कर्कांशके तौ चेन्नक्रादथ जले मृतिः ।।
वृषे सिंहांशके तौ चेद् व्याघ्राद्या - घाततो मृतिः।
वृषे कन्यांशके तौ चेत् कपिना नात्र संशयः।।
वृषे तुलांशके तौ चेद् व्याघ्र - व्याघाततो मृतिः।
वृषे कौर्प्यांशगौ तौ चेदश्वात्पीड़ा प्रजायते।।
वृषे चापांशगौ तौ चेन्महिषेण मृतिं वदेत्।
वृषे मृगांशगौ तौ चेन्महिषेण मृतिर्भवेत् ।।
वृषे कुम्भांशगौ तौ चेद् गोलांगूलान्मृतिर्भवेत्।।
वृषे मीनांशगौ तौ चेत्तयोः भुक्तौ मृगादभयम्।।

ओझा जी का कहना है कि इन पद्यों में प्रयुक्त वृषांश, मिथुनांश आदि शब्द वृषनवांश, मिथुननवांश आदि के वाचक नहीं हो सकते, क्योंकि यहां वृष राशि के तुलांश, वृश्चिकांश और धनुरंश का भी निर्देश है। वृषराशि में तुला, वृश्चिक एवं धनु के नवांश नहीं होते। अतः यहां यह मानना होगा कि मध्यपाराशरीकार द्वारा ये वृषांश आदि शब्द वृषत्रिंशांश आदि के लिए प्रयुक्त किए गए हैं और यहां आचार्य (मध्यपाराशरीकार) ने त्रिंशांश को एक अंशात्मक (राशि का 30 वां भाग) मानकर, परिवृत्ति–नियमानुसार–इन (एक अंशात्मक) त्रिंशांशों की राशियों का निर्धारण किया है – यह भी स्पष्ट है। ओझा जी का कहना है कि यदि भारतीय परम्परागत मतानुसार पंचविभागात्मक त्रिंशांश ही माना होता तो आचार्य यहां सिंहांश (सिंह के त्रिंशांश) व कर्कांश (कर्क के त्रिंशांश) की चर्चा न करते, क्योंकि भारतीय मतानुसार तो सूर्य (सिंह) और चन्द्र (कर्क) के त्रिंशांश होते ही नहीं हैं।

उपरोक्त प्रकार से श्री ओझा ने मध्यपाराशरी के ऊपर उद्धृत वाक्यों द्वारा यह सिद्ध करने का प्रयास किया है कि मध्यपाराशरीकार (पराशर) 30 विभागात्मक त्रिंशांश और मेषादि परिवृत्ति, नियम के समर्थक हैं। लेकिन श्री ओझा द्वारा किया गया–यह प्रतिपादन त्रिंशांश को एक अंशात्मक बनाने और उसपर परिवृत्तिनियम आरोपित करने के पूर्वाग्रह की उपज है। त्रिंशाश का शाब्दिक अर्थ लेकर उसे राशि का 30 वां भाग मानना, सर्वसम्मत परम्पराप्राप्त भारतीय फलितशास्त्र के विरुद्ध है, (इसके बारे में हमने आगे स्पष्टीकरण दिया है)। यहां प्रयुक्त ये वृषांश, तुलांश, वृश्चिकांश आदि शब्द द्वादशांशों के वाचक हैं, क्योंकि होरा, द्रेष्काण, त्रिशांशों के लिए मध्यपाराशरीकार परिवृत्तिनियम के अनुसरण का समर्थक नहीं है और परिवृत्तिनियम माने बिना त्रिंशांशों में कर्क और सिंह के त्रिंशांश सम्भव नहीं हैं। **'मध्यपाराशरीकार परिवृत्तिनियम का अनुसर्त्ता नहीं है'** – इसकी पुष्टि नीचे दिए गए मध्यपाराशरी के ही एक श्लोक से पूरी तरह हो जाती है (ओझा जी ने भी इस श्लोक को स्वयं उद्धृत किया है, देखें ऊपर) –

लग्नेश्वरो रन्ध्रपतिश्च युक्तौ वृषे वृषांशे वृषभ दृकाणे।
स्थितौ भवेतां यदि तौ वृषेण घातात्तयोः स्यान्मरणं हि भुक्तौ ।।

– (मध्यपाराशरी)

इस पद्य का अर्थ है ,– यदि लग्नेश, अष्टमेश दोनों इकट्ठे वृष राशि के या तो वृषांश में या वृष द्रेष्काण में हों तो इनकी दशा में वृषभ (बैल) के प्रहार से जातक की मृत्यु होती है।

ध्यान दें – वृषराशि में वृषद्रेष्काण भारतीय परम्परागत मतानुसार ही सम्भव है { देखें, –द्रेष्काण चक्र (भारतीय मतानुसार) }। परिवृत्ति मतानुसार तो वृषराशि में वृष द्रेष्काण आता ही नहीं है { देखें, – द्रेष्काण चक्र (परिवृत्तिमतानुसार) }। इससे यह सिद्ध है, मध्यपाराशरीकार परिवृत्तिनियम का समर्थक नहीं है। अतः इससे यह भी सुस्पष्ट है – मध्यपाराशरीकार के उपरोक्त वाक्यों में प्रयुक्त वृषांश, मिथुनांश आदि शब्दों के वास्ताविक अर्थ वृषत्रिंशांश, मिथुनत्रिंशाश आदि नहीं , अपितु वृष- द्वादशांश, मिथुन-द्वादशांश आदि ही हैं। क्योंकि इनके वृषत्रिंशांश अर्थ तो त्रिंशांश को एक अंशात्मक एवम् परिवृत्ति- नियमान्तर्गत मानने पर ही सम्भव है। **किञ्च–'लघुपाराशरी'**, *'मध्यपाराशरी'* और

'बृहत्पाराशर होरा' :– इन तीनों के रचयिता पराशर ही माने गए हैं। बृहत्पाराशर होरा में होरा, द्रेष्काण, त्रिंशांश की परिभाषाएं उपरोक्त भारतीयमत के अनुसार ही दी गई हैं। परिवृत्तिनियम को उन्होंने नहीं माना *। अतः 'मध्यपाराशरी' के इन उपरोक्त वाक्यों में प्रयुक्त वृषांश आदि शब्दों की संगति के लिए त्रिंशांश को एक अंशात्मक तथा परिवृत्ति–नियमान्तगर्त मानना पराशर के मत के भी प्रतिकूल होगा । अतः यह पूरी तरह सिद्ध है, ये वृषांश आदि शब्द, वृष-द्वादशांश आदि से ही अर्थ रखते हैं।

इसप्रकार यह स्पष्ट है, मध्यपाराशरीकार ने वृद्धकारिकाकार द्वारा प्रतिपादित परिवृत्तिनियम को तिरस्कृत किया है–

श्री गोपेशकुमार ओझा ने भारतीय परम्पराप्राप्त होरा का भी प्रतिवाद करने के लिए **' जातकपारिजात '** की ही टीका में लिखा है ,–

"प्रायः ज्योतिष की जो षड्वर्ग या सप्तवर्ग की जन्मकुण्डलियां बनती हैं, उनमें होरा कुण्डली के नीचे लिखा या छपा रहता है ,– " **होरायां वै सम्पदाद्यं सुखं च।**" अथवा यह पद्य लिखा रहता है ,–

होरालग्नाद् धनस्थाने शुभा धनसमृद्धिदाः।
विनाशकारकाः पापा मिश्रैः मिश्रफलं वदेत्।।

अर्थात् *– होरा कुण्डली में होरालग्न से धन (द्वितीय) स्थान में शुभग्रह धन–समृद्धि और पापग्रह धन–विनाश करते हैं। . . . . सम्प्रति जो होराकुण्डली बनाने की प्रक्रिया है, उसमें सात ग्रहों में से कुछ को, जो सूर्य की होरा में होते हैं, सूर्य की होरा में '5' लिखकर–उसमें रख देते हैं। अन्य ग्रहों को जो चन्द्रमा की होरा में होते हैं, उन्हें चन्द्रमा की होरा में '4' लिखकर–उसमें रख देते हैं ,– लग्न में सूर्य की होरा हुई तो '5' ऊपर लिख देते हैं। लग्न में चन्द्रमा की होरा हुई तो '4' ऊपर लिख देते हैं। अब कहिए– होरालग्न से धनस्थान कैसे देखा जाए ? होरालग्न–तभी ठीक होगा, जब बारहों राशियों की होराएं हों और होरालग्न से द्वितीयस्थान में शुभ ग्रह हों– या पाप ग्रह हों– उससे निष्कर्ष निकाला जाए।"*

होरालग्न कुण्डली

5 लग्न (प्रथमभाव)
सूर्य होरा
चं. मं. के. बु. रा.

4
(द्वितीयभाव)
चन्द्र होरा
शु. सू. श. गु.

ओझा जी का यह तर्क भी ठीक नहीं है, क्योंकि होरालग्न कुण्डली, जो भारतीय परम्पराप्राप्त मतानुसार, जन्मपत्रियों में दी जाती है; उसमें केवल दो ही भाव होते हैं– एक होरालग्न वाला प्रथमभाव, और दूसरा द्वितीयभाव कहलाता है। होरालग्न कुण्डली में इन दो भावों के अतिरिक्त अन्य तृतीय आदि दसभाव होते ही नहीं हैं, यह सामने दी गई, होरालग्न कुण्डली से स्पष्ट है।

ध्यान रहे :– होरालग्न में केवल ये (प्रथम, द्वितीय) दोनों ही भाव होते हैं। अतः होरालग्न कुण्डली को फलादेश में इन दो ही भावों में स्थित ग्रहों का फल मिलता है, अन्य भावों में ग्रहस्थिति का फल कहीं भी उपलब्ध नहीं है।*

** आजकल उपलब्ध 'बृहत्पाराशर होरा' के संस्करण में भी परिवृत्ति नियम द्वारा होरा व द्रेष्काणों की राशियों के निर्णय का निर्देश करने वाली ऊपर उद्धृत दो वृद्धकारिकाएं उद्धृत हैं, लेकिन साथ ही वहां प्रत्येक राशि की होराओं के स्वामी केवल सूर्य, चन्द्र तथा तीन द्रेष्काणों के स्वामी स्व–पंचम–नवमेश ही दिए गए हैं। इससे स्पष्ट है – यहां ये वृद्धकारिकाएं बाद में प्रक्षिप्त की गई हैं।*

अपि च, कल्याणवर्मा ने 'सारावली' में भी यह निम्नांकित पद्य दिया है , जिसमें परिवृत्तिनियम द्वारा लग्नादिभावों तथा ग्रहों के वर्गों की राशियों का निर्णय करने की बात लिखी है ,–

लग्नादीनां लिप्ता ज्ञेयाः स्वगृहादिवर्ग संगुणिताः।
अष्टादश–शत भक्ताल्लब्धः स्यादीप्सितो वर्गः।। – (सारावली)

लेकिन कल्याण वर्मा ने होरा, द्रेष्काण और त्रिंशांश वर्गों के लिए इस पद्योक्त प्रक्रिया का प्रयोग बिल्कुल नहीं किया । इन तीन वर्गों की परिभाषाएं इस आचार्य ने बृहज्जातकोक्त (भारतीय परम्परागत) ही स्वीकार की है–यह इन तीन वर्गों से सम्बद्ध सारावली के ऊपर उद्धृत वाक्यों से स्पष्ट हैं। इस पद्योक्त प्रक्रिया से तो केवल नवमांश, सप्तमांश, षोडशांश, विंशांश और भांश वर्गों की ही राशियां ज्ञात हो सकती हैं। शेष वर्गों में भारतीय फलिताचार्यों ने परिवृत्ति–नियम का अनुसरण नहीं किया है।

** यहां ऊपर दी गई होराकुण्डली में लग्न (प्रथमभाव) में सिंह और द्वितीयभाव में कर्क राशि है। अतः यहां राशियों का क्रम, भावों के क्रम के सापेक्ष विपरीत है – ऐसा समझना ठीक नहीं है। इसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है ,–*

होरालग्न–कुण्डली के इन दो भावों में सूर्य–चन्द्र की होराओं के स्थान प्रकट करने के लिए क्रमशः 5, 4 राशियों का विन्यास करना उचित नहीं है, क्योंकि भारतीय मतानुसार होराएं ग्रहों (सूर्य– चन्द्र) की ही होती है, उनकी राशियों (सिंह, कर्क) की नहीं। दैवज्ञलोग इस कुण्डली में सूर्य की होरा वाले घर में '5' और चन्द्र की होरा वाले घर में '4' राशि–लिख देते हैं। इनके स्थान पर उन्हें क्रमशः 'सूर्य होरा' एवम् 'चन्द्र होरा' लिखना चाहिए। इससे सूर्य की होरा में लग्न होने पर होराकुण्डली के प्रथमभाव की राशि '5' और द्वितीयभाव की '4'– इसप्रकार भावों एवम् राशियों में (पौर्वापर्यक्रम के) व्यत्यय का आभास नहीं होगा।

उपरोक्त होराकुण्डली में मैंने प्रथम, द्वितीय भावों में क्रमशः 5 और 4 राशियों का निर्देश पाठकों को केवल समझाने की दृष्टि से किया है।

भारतीय फलितसाहित्य के जातक–संहिता–मुहूर्त्त आदि के सभी ग्रन्थों में होरा, द्रेष्काण, त्रिंशांश की परिभाषाएं निरपवादरूप से ठीक वही हैं; जिनका निर्देश **'बृहज्जातक'** में किया गया है, और इन्हें ही हमने यहां सर्वत्र भारतीय मतानुसारी होरा, द्रेष्काण व त्रिंशांश लिखा है। होरा एवं द्रेष्काण के लिए मेषादि–परिवृत्तिनियम की चर्चा भी एकमात्र **वृद्धकारिका** में ही मिलती है। त्रिंशांशों के बारे में तो परिवृत्तिनियमानुसरण का निर्देश वृद्धकारिका में भी नहीं है। इस परिवृत्तिनियम की चर्चा न तो भारतीय फलितसाहित्य के किसी अन्य ग्रन्थ में ही मिलती है और न इसका होरादि त्रिवर्ग में किसी फलितशास्त्री ने ही प्रयोग किया है। यही नहीं; इन तीन वर्गों में परिवृत्तिनियम को यवन फलिताचार्यों ने भी मान्यता कतई नहीं दी । भारतीयफलित साहित्य के किसी भी ग्रन्थ में इन तीन वर्गों के बारे में परिवृत्तिनियम के प्रयोग का एक भी उदाहरण गम्भीरता से ढूंढने पर भो नहीं मिलता। **किञ्च**–सभी जातकग्रन्थों के होराफल प्रकरणों में केवल सूर्य एवं चन्द्र की ही होराओं का फल निर्दिष्ट है, जबकि परिवृत्ति-मतानुसार तो सभी ग्रहों की होराओं का फल निर्दिष्ट होना चाहिए। इसी प्रकार इन ग्रन्थों में केवल मंगल, बुध, गुरु, शुक्र और शनि के ही त्रिंशांशो का फल दिया गया है, परिवृत्तिनियम के अनुसार तो सूर्य, चन्द्र के त्रिंशाशों का भी फल वहां होना चाहिए। इस प्रकार भारतीय फलितसाहित्य का परिशीलन बतलाता है ,– वृद्धकारिकाकार द्वारा उपस्थापित यह परिवृत्तिनियम इस वर्गत्रयी में सर्वत्र सर्वथा अप्रयुक्त रहा है।

त्रिंशांश एक–एक अंश का क्यों नहीं ?

"त्रिंशांश शब्द का शाब्दिक अर्थ **'तीसवां भाग'** है, अतः प्रत्येक राशि में 30 त्रिंशांश होने चाहिएं" – इसमत की समीक्षा करना भी नितान्त आवश्यक है ,–

त्रिंशांश शब्द का अर्थ **'तीसवां भाग'** ही है * । यह प्रत्येक संस्कृतज्ञ जानता है। लेकिन इसशब्द का प्रयोग भारतीय फलितसाहित्य में सर्वत्र निरपवादरूपेण राशि के ऐसे पांच भागों के लिए ही, जो सभी परस्पर समान नहीं है, शताब्दियों से किया जा रहा है। अपने वास्तविक अर्थ से सर्वथा भिन्न अर्थ में, इसशब्द का प्रयोग इतने सुदीर्घकाल से अविच्छिन्न–रूपेण चला आ रहा है ,– यह सचमुच आश्चर्यजनक बात है। और भी आश्चर्यजनक बात तो यह है कि इस संस्कृत शब्द का अर्थान्तर में प्रयोग करने वाले जातकादि ग्रन्थों के प्रणेता सभी भारतीय फलितशास्त्री संस्कृत के प्रकाण्ड पण्डित रहे हैं, अतः ऐसा नहीं कि उन्हें इसका वास्तविक अर्थ ज्ञात नहीं था। ऐसा प्रतीत होता है, कि प्रारम्भ में ही शताब्दियों पूर्व जबकि भारतीय फलितसाहित्य में इसवर्ग का उदगम हुआ, तभी किसी से इसके नामकरण में गलती हुई है। उस गलती का शोधन परवर्ती फलितशास्त्रियों द्वारा उपेक्षा या अन्य किसी कारण से नहीं किया गया और धीरे–धीरे यह त्रिंशांश शब्द पंचविभागात्मक वर्ग के लिए रूढ़ हो गया। अर्थान्तर में इसके प्रयोग को भलीभान्ति जानते हुए भी किसी भी दैवज्ञ का आजतक यह साहस नहीं हुआ, कि इस शब्द के स्थान पर अन्वर्थक शब्द रख दिया जाए। जब कोई शब्द किसी विशेष अर्थ में रूढ़ हो जाता है, तब उसे दूसरे अर्थ के लिए प्रयोग में लाने का प्रयास कभी भी सफल नहीं होता है– यह भाषाशास्त्री जानते हैं। कुछ भी हो, त्रिंशांश शब्द पूरे भारतीय फलितसाहित्य में राशि के पंचविभागात्मक वर्ग के अर्थ में ही–लगभग दो हजार वर्षों से (जब से भारतीयफलित का उदगम हुआ है, तब से) अब तक निरन्तर प्रयुक्त होता आ रहा है। अब इसे इस अर्थ से विच्छिन्न नहीं किया जा सकता। भारतीय फलित में इसप्रकार के दो और भी शब्द हैं; जो अपने वास्तविक (मूलभूत) अर्थ से भिन्न अर्थ में भारतीय फलितसाहित्य में लगभग पौने दो हजार वर्षों से प्रयुक्त होते चले आ रहे हैं। वे शब्द हैं ,– **'उच्च' और 'नीच'।** ये खगोलशास्त्र के पारिभाषिक शब्द हैं, जिन्हें क्रमशः **मन्दोच्च एवम् मन्दनीच** भी कहा जाता है। प्रत्येक ग्रह के मन्दोच्च एवं मन्दनीच उसके भ्रमणवृत्तीय खगोलरथ–दो ऐसे बिन्दु हैं जिनसे उसकी पृथ्वी से क्रमशः दूरी और समीपता का ज्ञान होता है। प्रत्येक ग्रह के ये मन्दोच्च, मन्दनीच बिन्दु, प्रतिवर्ष थोड़ा–थोड़ा, खगोल में चलते रहते हैं, ग्रहों के Exaltation और Debilitatian नाम वाले उन बिन्दुओं को ,जहां ग्रह क्रमशः परमसबल और परमनिर्बल होने से शुभाशुभ भावादि फल परमाधिक एवं परमाल्प देते हैं, किसी प्राचीन भारतीय दैवज्ञ ने क्रमशः उच्च एवं नीच संज्ञाएं दे दीं, जो बिल्कुल गलत हैं। खगोलशास्त्रीय उच्च (मन्दोच्च) और नीच (मन्दनीच) बिन्दुओं को English में क्रमशः Apogee और Perigee कहा जाता है। भारतीय फलितसाहित्य में ये दोनों (उच्च, नीच) शब्द प्रारम्भकाल से ही अर्थान्तर में प्रयुक्त होते आ रहे हैं। शताब्दियों के इस सुदीर्घ अन्तराल में किसी भी दैवज्ञ ने (खगोलशास्त्र के ज्ञाता नारद, कश्यप, पराशर, वसिष्ठ, वराह, भट्टोत्पल आदि ने भी) इन भ्रष्टार्थ शब्दों के स्थान पर अन्य अन्वर्थक शब्दों को प्रतिष्ठापित करने का नाम तक नहीं लिया ⁂ । यही दशा इस 'त्रिंशांश' शब्द की भी है।

---

* त्रिंशः = त्रिंशत्तमः , अंशः = भागः (= तीसवां भाग)।

⁂ श्री रामयत्न ओझा जी ने तो फलितविकास में ही फलित में प्रयुक्त किए जा रहे इन उच्च, नीच शब्दों को खगोलशास्त्रीय उच्च नीच के ही वाचक बतलाया है। यह भी श्री ओझा जी की भ्रान्ति है। उनकी इस भ्रान्ति का निराकरण मैंने अपने एक अप्रकाशित निबन्ध **'फलितशास्त्रीय उच्च–नीच'** में किया है।

श्री ओझा का कहना है – " त्रिंशांश का अर्थ '30 वां भाग' है। अतः तदनुसार प्रत्येक राशि में 30 त्रिंशांश होने चाहिएं। प्राचीन ऋषि प्रतिपादित मत भी यही है।" इसके अनुसार, ओझा जी ने 12 राशियों में 360 त्रिंशांश मानकर 12 बार मेषादि परिवृत्ति द्वारा प्रत्येक त्रिंशांश की राशियों का निर्धारण किया है { इसके स्पष्टीकरण के लिए पहिले दिया गया "त्रिंशांश चक्र (परिवृत्ति नियमानुसार)" देखें }।

यदि ओझा जी द्वारा दी गई त्रिंशांश की उपरोक्त परिभाषा को हम **वादिपरितोष–न्यायेन** स्वीकार भी कर लें, तब प्रश्न यह उपस्थित होता है, कि–इस स्थिति में पंचभागात्मक इस त्रिंशांश को, जोकि सभी भारतीय फलितग्रन्थों में षड्वर्ग, सप्तवर्ग, दशवर्ग आदि का शताब्दियों से अब तक अभिन्न अंग बना चला आ रहा है, क्या समेट कर कूड़ापात्र में फेंक दें ? लेकिन ऐसा कर सकने का साहस किसी भी दैवज्ञ में नहीं है। नारद, कश्यप, पराशर आदि मुनियों तथा फलित के मूर्धन्य आचार्य सत्य, वराह, आदि द्वारा समर्थित इस त्रिंशांश को तिरस्कृत करना इन सभी आगमत्वेन प्रामाणिक माने जाने वाले मुनियों, आचार्यों का भारी तिरस्कार माना जाएगा। सारा फलितसाहित्य त्रिंशांश की इसी (पंचभागात्मक) परिभाषा तथा तदनुसारी फलादेश से बुरी तरह लदा पड़ा है। जब कि राशि के 30 वें–भाग वाला त्रिंशांश तो, जिसे ओझा जी प्राचीन ऋषिसम्मत कहते हैं, फलितसाहित्य के किसी एक भी ग्रन्थ में परिभाषित एवं तनिक चर्चित भी नहीं है।

ध्यान रहे ;– ओझा जी ने जिस त्रिंशद्भागात्मक त्रिंशांश की स्थापना का प्रयास किया है, उस त्रिंशांश का फलादेश भी तो हमारे किसी एक भी ग्रन्थ में उपलब्ध नहीं है। इन ग्रन्थों में त्रिंशांश का जो फलादेश उपलब्ध है, वह पंचभागात्मक त्रिंशाश का ही है। उसमें सूर्य–चन्द्र के त्रिंशांशों का फल है ही नहीं । अतः उसे त्रिंशद्भागात्मक त्रिंशांशों के स्वामी ग्रहों के लिए,–जिनमें सूर्य–चन्द्र भी समाविष्ट हैं, प्रयोग में लाना अशक्य एवं सिद्धान्तविरुद्ध भी होगा। यही कारण है ,– फलितशास्त्र से पूरी तरह समवेत पंचभागात्मक त्रिंशांश को ध्वस्त कर उसके स्थान पर ऐसे त्रिंशद्भागात्मक त्रिंशांश को प्रतिष्ठापित करने का ओझा जी का प्रयास , जिसका प्राचीन एवं अर्वाचीन फलितसाहित्य में गन्धमात्र भी नहीं है, सभी दैवज्ञों के अभिनन्दन से वंचित रहा है।

अन्त में मैं **काशी हिन्दु विश्वविद्यालय** के ज्योतिष विभाग द्वारा प्रकाशित होने वाले **स्व. श्री रामयत्न ओझा जी** द्वारा संस्थापित **' श्रीविश्वपंचांग '** में प्रतिवर्ष परिवृत्ति–नियमानुसार प्रकाशित किए जा रहे – **होरा, द्रेष्काण, त्रिंशांश** चक्रों को बदलकर भारतीय परम्परानुसार प्रकाशित करने के लिए इसके वर्तमान सम्पादकवर्ग से अनुरोध करुंगा, ताकि इससे सामान्य दैवज्ञवर्ग व्यर्थ में दिग्भ्रान्त न हों।

✪✪✪✪✪✪✪✪

वि.सं. २०५९ में चन्द्र उपच्छाया ग्रहण ही क्यों ? क्या ये उपेक्ष्य हैं ?

लेखक- शक्तिधर शर्मा

इस वर्ष दोनों ग्रहण ऋतुओं (Eclipse Seasons) में सभी चन्द्र ग्रहणं उपच्छाया ग्रहण (उपग्रहण) हैं। वस्तुतः ५-७-२००१ ई. से १६-५-२००३ तक सभी चन्द्र ग्रहण उपग्रहण ही हैं। ऐसी स्थिति का कारण क्या है ?

पाठक -चन्द्रग्रहण की ज्यामिति जानते ही होंगे । सूर्य के प्रकाश से बनी पृथ्वी छाया से चन्द्रग्रहण लगता है। पृथ्वी की छाया चन्द्रमा की कक्षा में दो तरह से आ सकती है। दो छाया शंकु बनते हैं। छाया शंकु; जो कि पृथ्वी को सीधी स्पर्श रेखाओं की दिशा में होता है । उपछाया शंकु : पृथ्वी को तिर्यक् एवं एक दूसरे को काटती स्पर्श रेखाओं से बनता है। छाया शंकु में छाया गूढ़ी होती है। यह शंकु एक शीर्ष बिन्दु तक जाता है। उपछाया शंकु धुंधला सा होता है क्योंकि वहां पूरी छाया नहीं पहुंचती। यह आगे आगे धुंधला होता जाता है। (देखें चित्र-क)
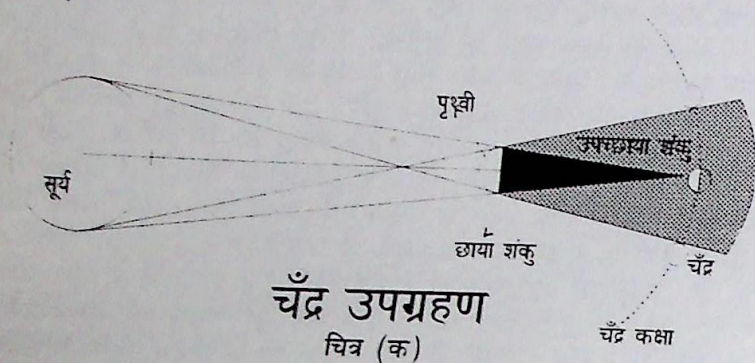
चँद्र उपग्रहण
चित्र (क)

चन्द्र उप-ग्रहण घटित होने की निर्णायक स्थितियां निम्नलिखित हैं-

(१) राहु/केतु पूर्णिमा के दिन सूर्य से एक निश्चित अन्तर पर हो (लगभग ९° से कम अंतर)

(२) चन्द्रमन्दोच्च राहु के पास हो क्योंकि चन्द्रमन्दोच्च चन्द्र कक्षा का सर्वोच्च बिन्दु है। क्योंकि उपच्छाया शंकु छाया शंकु से ऊपर के क्षेत्र में है अतः चन्द्र कक्षा का पात उच्च के पास हो तभी चन्द्रमा को उपच्छाया शंकु में से अपनी कक्षा का मार्ग अपनाना पड़ेगा।

(३)सूर्य का मन्दोच्च में होना। यह स्थिति उपग्रहण घटना में कुछ प्रभाव डालती है विशेष नहीं।

(४) राहु केतु के लम्बन एवं शर में सूर्याकर्षणजन्य अन्तर। साधारणतः राहु, केतु एवं चन्द्रमा के लम्बन बराबर होते हैं परन्तु पूर्णिमा और अमा के समय विशेषतः राहु के मार्गी होने पर इनका लम्बन एवं शर काफी विचलित हो जाता है । कक्षा की आकृत्ति see saw की तरह हो जाती है क्योंकि राहु केतु लम्बन विपरीत दिशा में बदलते हैं। यदि राहु का लम्बन (Parallax) घटेगा तो केतु का लम्बन बढ़ेगा। इस स्थिति में पर्व संभव स्थिति डगमगाने से बीच में ग्रहण की घटना का अभाव भी संभव है ।

इस वर्ष पांच ग्रहण हैं । तीन चन्द्र उपग्रहण (सन् २००२, २६ मई, २४ जून एवं १९ नवम्बर), सूर्य ग्रहण दो हैं (जून १० तथा दिसम्बर ४,२००२)। यहां तीनों चन्द्रग्रहण उपग्रहण ही हैं। सन् २००१ के प्रारम्भ में गणित करने से राहु एवं चन्द्रमन्दोच्च दोनों के सायन भोगांश लगभग ८३° हैं। कुछ मास पहिले एवं बाद तक राहु एवं चन्द्रोच्च समीप समीप ही हैं। **क्या हमें उपग्रहण को ग्रहण मानना चाहिए या नहीं ?** सभी ज्योतिषी मानते हैं- कि भारतीय परम्परा में उन्हें ग्रहण नहीं माना गया। लेखक के विचार से इन्हें ग्रहण अवश्य मानना चाहिए। इस विचार के कुछ कारण हैं-

१. इन चन्द्र उपग्रहणों में ग्रासमान ९० प्रतिशत तक हो जाता है। अतः ये आदेश्य हैं। १ अंगुल (१/१६ भाग) से कम ग्रास वाले ही अनादेश्य होते हैं।

२. ये ग्रहण भी गणितागत हैं और पुराने आचार्य भी इन्हें पहिचानते थे और ग्रहण के रूप में स्वीकृत करते थे। किञ्च छाया-ग्रहण में भी कुछ समय के लिए चन्द्र उप छाया में से निकलता है।

३. पिछले समय में ग्रहणों की पहिचान रंगों से होती थी और इसके आधार पर ग्रहणों के चक्रों का ध्यान हुआ । Winfled Petri और शामशास्त्री जी के शोधकार्य इस क्षेत्र में श्लाघनीय हैं। वेदांग काल में धूसर वर्ण ग्रहण का वर्णन है जो कि शायद उपग्रहण ही था। अतः इन्हें ग्रहण मानना उचित है। शायद धर्मशास्त्रकारों ने इन उप ग्रहणों में चन्द्र विम्ब पर मालिन्य मात्र छाया आने से इसे ग्रहण की कोटि में नहीं रखा! ——

सूर्य के दो दुधमुंहे से अनुचर ग्रह बुध एवं शुक्र

लेखक—शक्तिधर शर्मा

आजकल साधारण छात्र भी यह जानते हैं कि सभी ग्रह सूर्य के चारों ओर परिक्रमाएं करते हैं। परन्तु यदि आप शुक्र एवं बुध की गति प्रक्रियाओं को देखें तो ज्ञात होगा कि ये सूर्य के दोनों तरफ दोलक (Pendulum) की तरह दोलित होते हैं। बाहरवीं सदी (12th A.D.) के भारतीय ज्योतिषाचार्य श्री भास्कर ने इन्हें सूर्य के अनुचर (अर्थात् दास) कहा है। इन की गतिविधियों में बड़ी विलक्षणताएं हैं और इन की कलाएं भी बनती हैं । बुध तो साधारण स्थितियों में दिखाई नहीं देता क्योंकि उसका दोलनायाम (Amplitude of oscillation)छोटा है तथा यह ग्रह आकार में भी छोटा है। थोड़े अक्षांशों वाले स्थानों में विशेषत: यह दीखना भी असंभव सा है परन्तु इसकी गतिप्रक्रियाएं सूर्य-सापेक्ष शुक्र जैसी ही हैं।

अध्ययन की दृष्टि से ग्रहों का वर्गीकरण

यदि ग्रहों की गतियों का अध्ययन करना हो तो इन्हें दो वर्गों में बांटना उचित है -

(१) वे ग्रह जिन की कक्षाएं सूर्य से पृथ्वी की कक्षा के भीतर हैं- ये आभ्यन्तर ग्रह कहे जाते हैं। बुध एवं शुक्र आभ्यन्तर ग्रह हैं।

(२) जिन ग्रहों की कक्षाएं सूर्य एवं पृथ्वी की कक्षा के मध्य न होकर बाहिर हैं वे बाह्य ग्रह कहलाते हैं। बुध एवं शुक्र के अतिरिक्त सभी ग्रह बाह्य हैं। हमारा चन्द्रमा भी एक आभ्यन्तरपिण्ड है जो कि सूर्य की परिक्रमा कर रही पृथ्वी के गिर्द चक्कर लगाता है।

ग्रहों की गतियों में अध्येतव्य विषय

ध्यान रहे कि - साधारणतया ग्रह पश्चिम से पूर्व की ओर चलते हैं इसे मार्गी गति कहा जाता है। अध्ययन में गति का परम या अल्पतम होना, ग्रह का स्थिर होना, शून्य गति बिन्दु, वक्रगति (राशियों में पश्चिम से पूर्व की ओर चलने के बजाय पूर्व से पश्चिम की ओर चलना)इसे (वक्रगति)कहते हैं। इसका परममान, वक्रगति शून्य होकर पुन: ग्रह का स्थिर होना और पूर्व की ओर चलना, परम मार्ग गति एवं इन गतियों में सूर्य से परम अन्तर, ग्रहों का सूर्य के पास आने पर उसकी चमक में दीखना बन्द होना, सूर्य से परमअन्तर तथा सूर्य से विशेष दूरी होने पर भी दीखना प्रारम्भ होना (अर्थात् ग्रहों के सूर्य कैन्द्रिकअस्त एवं उदय)तथा ग्रहों की दृश्य कलाएं बनना आदि घटनाएं है जिनके अध्ययन आवश्यक हैं। ये सभी गति प्रक्रियाएं इस लेख में गति घटनाएं कही जाएंगी। इन गति घटनाओं के अतिरिक्त सूर्य के साथ ग्रहों की युतियां भी कोरी आंख से अदृश्य गति घटनाएं हैं, जिनका गणितीय अनुमान आवश्यक है। इन सभी घटनाओं के समय क्षण तथा आकाश में वे बिन्दु जहां घटनाएं घटित हुई हैं ज्ञातव्य विषय हैं।

आभ्यन्तर एवं बाह्य ग्रहोंकी गतिविधियों में अन्तर

(१) आभ्यन्तर ग्रह बुध एवं शुक्र की सूर्य से परम दूरी निश्चित है। बुध सूर्य से $+२८^\circ$ से अधिक दूरी पर नहीं जा सकता । शुक्र का परम अन्तर $\pm ४८^\circ$ है। ये परम अन्तर कक्षाओं के परिमाण व्यासादि पर निर्भर हैं। बुध एवं शुक्र की सूर्य से दूरियां निश्चित होने से इन दूरियों में ही इनकी कलाएं बनती हैं। ये यह इन निश्चित दूरियों के अन्दर ही दोलित होते हैं।

(२) बाह्य ग्रहों का सूर्य से अन्तर कुछ भी ०°-१८०°-३६०° हो सकता है।

(३) आभ्यन्तर ग्रह केवल सूर्योदय से पहिले पूर्व में सूर्यास्त के समय ही देखे जा सकते हैं- और पूर्व एवं पश्चिम के क्षितिज के ऊपर के परम आयाम (maximum amplitude)तुल्य आकाश खण्ड में ही देखे जा सकते हैं। स्पष्ट है कि आभ्यन्तर ग्रह अन्य आकाश खण्ड (यानी आकाश मध्य आदि) में कोरी आंखों से नहीं देखे जा सकते केवल खग्रास सूर्य-ग्रहण के समय एवं साधारण स्थितियों में टैलीस्कोप में फिल्टर लगाकर ही देखे जा सकते हैं।

जैसाकि पहले स्पष्ट किया है कि बुध को साधारात: देखना असंभवा सा ही स्वयं लेखक ने बुध को जीवन में एक बार साधारण स्थिति में देखा है जबकि स्व० पिता जी ने लगभग ३५ साल पहिले हमें सावधान किया । प्रात: पूर्व में यह देखने योग्य स्थिति में आया था। उस समय यह चन्द्रमा के श्रृंग के पास पूर्व में क्षितिज से ऊपर उठा हुआ दृश्य था । उस समय इसे पहिचानने देखने में कोई कठिनाई नहीं हुई। इसके अतिरिक्त बुध सूर्य के साथ संक्रमण करता हुआ पटियाला यूनिवर्सिटी टैलिस्कोप में फिल्टर लगा कर देखा। उस समय यह सूर्य बिम्ब पर चलते हुए एक छोटे से धब्बे के रूप में लघु ग्रहण सा लगा रहा था उस समय दो से अधिक घण्टों तक दिन मध्याह्न में (खमध्य में)देखा और छात्रों को दिखाया । यह एक

विशेष सुन्दर एवं स्पष्ट स्थिति थी। बुध को तो साधारण स्थिति में बहुत कम ज्योतिषशास्त्रियों ने अपने जीवनकाल में देखा है क्योंकि इसका दोलन आयाम कम है इसकी चमक भी कम है तथा सन्ध्यारुण (Twilight) में यह डूबा रहता है। किञ्च गति अधिक होने से शीघ्र ही दृश्य क्षेत्र से बाहिर हो जाता है। इसके विपरीत शुक्र सूर्योदय से पहिले पूर्व में एवं सूर्यास्त समय पश्चिम में प्रायः सभी ने बहुशः देखा है। बाह्य ग्रह तो वर्ष के कुछ दिन महीनों को छोड़कर सारा वर्ष रात्रि समय देखे जा सकते हैं आकाश के किसी भी क्रान्तिवृत्त के समीप भाग में। ध्यान रहे ये ग्रह केवल तभी अदृश्य होते हैं जब वे सूर्य के पास आने से उसकी चमक के कारण नहीं देखे जा सकते। शीघ्र ग्रह सूर्य के पास आकर अस्त हो जाते हैं और मन्द ग्रहों को सूर्य उनके पास आकर उन्हें कुछ समय के लिए अस्त कर देता है। इस अदृश्यताकाल को ग्रह का अस्तकाल कहा जाता है। इस काल को छोड़कर यह अवश्य दृश्य हो गया जब भी क्षितिज से ऊपर रहेगा।

कोरी आंखों से आभ्यन्तर ग्रहों के अध्ययन की विधि

जैसा कि पिछले प्रद्यट्टक में स्पष्ट किया गया है कि बाह्य ग्रह तो वर्ष में कुछ दिन, मास (अस्तमनकाल) छोड़कर सदैव दृश्य होते हैं। ये सूर्य से १८०° के दूरी पर होते समय सूर्यास्त के बाद पूर्व में उदित (क्षितिज से ऊपर उठकर) सारी रात्रि पूर्व से पश्चिम में जाते देखे जा सकते हैं। आभ्यन्तर ग्रह बुध एवं शुक्र तो सूर्योदय एवं सूर्यास्त के समय ही (कुछ घंटों के लिए) देखे जा सकते हैं। क्योंकि बुध साधारण स्थिति में दिखाई नहीं देता वह तो नन्हें दुधमुहें बच्चे की तरह बारंबार जल्दी ही सूर्य की गोद में जा छिपता रहता है। किञ्च- यह शिशु ग्रह जैसी ही गति घटनाओं में अपना समय व्यतीत करता है जैसे शुक्र। इसके अतिरिक्त बाह्य ग्रहों के गतिविधि अध्ययन में कोई विशेष रूचिकर बात नहीं। अतः यहां विशेष गति प्रक्रियाओं वाले शुक्र की गति घटनाओं का अध्ययन ही अपेक्षित है। हम आगे केवल शुक्र के अध्ययन को लेकर चलेंगे।

यहां यह स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि हम अब शुक्र की मात्र गतिविधियों का ही अध्ययन करने जा रहे हैं जैसा कि एक ज्योतिशास्त्र तथा गतिविज्ञान (Dynamics) से अपरिचित मनुष्य स्वयं इस ग्रह को देखकर यथासंभव ज्ञान प्राप्त करता है। आजकल विज्ञान क्षेत्र में गत्यध्ययन के लिए दो शब्दों का प्रयोग होता है। Kinematics एवं Dynamics पहिले शब्द के लिए हम गतिपरिचय ज्ञान व गतिज्ञान और दूसरे शब्द के उपर्युक्त शब्द ''गति-विज्ञान'' कहेंगे। गति परिचय में मात्र गतिविधियों से परिचय होता है जिसके लिए कोई विशेष जटिल गणित-ज्ञान की आवश्यकता नहीं। परन्तु गतिविज्ञान में आकर्षण सिद्धांत आदि गति-कारणों को लेकर अध्ययन किया जाता है। यह साधारण जन गम्य विषय नहीं। अतः हम साधारण दर्शक जो कुछ देखने से प्राप्त करता है उसका विवेचन करके इस ग्रह के गतिविज्ञानीय विषय को छोड़ देते हैं।

साधारण स्थिति में शुक्र पश्चिम में सूर्यास्त से पहिले काफी दिनों तक प्रायः देखा जा सकता है। यह सायं तारा (Evening Star) के रूप में विश्वविख्यात है (ध्यान रहे कुछ दिन बाद) यही तारा प्रातः सूर्योदय से पहिले पूर्व में दीखने लग जाएगा तब यह कुछ समय के लिए प्रातः तारा (Morning Star) है। क्योंकि जनता प्रातः सो रही होती और सांय सभी जागते होते हैं अतः जब यह सांयतारा होता है अपनी विशेष चमक एवं सौन्दर्य के कारण सभी को लुभाता है।

प्राचीनकाल में शुक्र की गति घटनाओं का अध्ययन

इसका अध्ययन सांयकाल की इसकी छवि से प्रभावित होकर प्राचीनकाल से ही लेखकों द्वारा किया जाता रहा है। ऋग्वेद के उषः सूक्त में इसका वर्णन है कालीदास ने भी इसका वर्णन किया है। वराह हिमहिर (५वीं शती) ने ज्योतिष सिद्धांतों के अपने संकलन ग्रन्थ 'पञ्चसिद्धांतिका' के वसिष्ठ सिद्धांत तथा पौलिश सिद्धांत में इस ग्रह के गतिज्ञान का पूरा परिचय दिया है। लगभग २५ वर्ष पूर्व अमेरिका के प्रो० डा० पिंगरी ने अपने "पञ्चसिद्धान्तिका'' के विस्तृत व्याख्या ग्रन्थ में तथा इन से पूर्व भी श्रीसुधाकर ने शुक्र के गतिविषयक श्लोकों की गलत व्याख्या कर दी थी जिसे प्रो० कुप्पन्न शास्त्री जी ने संशोधित करने का प्रयत्न किया - उनकी पञ्चसिद्धान्तिका सटीक प्रकाशन उनके स्वर्गवास के बाद हुआ अभी दो तीन वर्ष पूर्व शास्त्री जी ने पाश्चात्य विद्वानों का खण्डन करते हुए शुक्र के गत्यध्ययन सम्बन्धी पद्यों की व्याख्या में संशोधन करके एक शोध निबन्ध (Indian National Sciences Academy New Delhi) के जरनल में प्रकाशित करवाने के लिए भेजा- इस सन्दर्भ में लेखक गुप्त निरीक्षक (Blind Referee) था- उन श्लोकों की व्याख्या में त्रुटियों को ठीक करके पाणिनीय व्याकरण तथा गणितीय सिद्धांतों के अनुसार संगत अर्थ के साथ लेखक द्वारा दी गई प्रमाण सम्मति के अनुसार उस निबन्ध का प्रकाशन किया गया। लेखक को भी इन श्लोकों का अर्थ व्यवस्थित करने में कई मास लगे थे अर्थों में दुविधाएं थीं अतः गणित तथा गतिविज्ञान के अनुसार सिद्धांतमान्य अर्थ पर पहुंचने के लिए काफी समय लगा। अन्तिम प्राप्ति में पंचसिद्धांति का प्रतिपादन प्रामाणिक

सिद्ध हुआ। पंचसिद्धांतिका के दोनों पौलिश तथा वसिष्ठ सिद्धांत के प्रतिपादन प्राचीनतम गणितीय प्रतिपादन माने जा सकते हैं। वराह मिहिर का काल भी शायद ५वीं शती नहीं अपितु प्रथम शती ही है। क्योंकि प्रो० पिंगरी की पञ्चसिद्धान्तिका के विश्लेषण में मध्यम ग्रह किस ग्रन्थ से लिये हैं और इन्हें प्राप्त करने के लिए पंचसिद्धांतिका के सूत्र लिये या अन्य सिद्धांतों से ? क्योंकि स्पष्ट दृश्य ग्रह ही तो वास्तविक ग्रह है। मध्यमग्रह तो सिद्धांत पर निर्भर है। अत: प्रो० पिंगरी का निर्णय सन्दिग्ध है। प्राचीन साहित्य में शुक्र की गतियों का अध्ययन बहुत प्रारम्भिक पाया जाता है। शुक्र की गति कभी घोड़े की सी कभी हाथी की सी समरूप वर्णित की गई है और गति के आकाश खण्ड वीथियों में विभक्त किये गए हैं ऐसे ही वर्णन जैन ग्रन्थों में मिलते हैं । आचार्य वराहमिहिर ने ये प्राप्तियां भी अपने विश्वकोषकल्प ग्रन्थ ''बृहत् संहिता'' में संगृहीत कर दी थी।

शुक्र की गति घटनाओं का कोरी आंख से अध्ययन

अब हम शुक्र के गति परिचय की विधि बतलाते हैं। यदि आप सायंकाल सूर्यास्त के समय पश्चिम की ओर देखें और यदि आपको देदीप्यमान तारा दिखाई दे तो प्रतिदिन उसी सम सूर्यास्त के वक्त देखने का नियम बना लें। यदि आपको पश्चिम में कोई देदीप्यमान तारा न दिखाई दे तो भी आप प्रतिदिन उसी समय देखने का नियम बना लें- कुछ दिनों में वहां एक तारा सूर्य की लाली से बाहिर ऊपर आता दीख पड़ेगा। प्रतिदिन उसी समय सूर्यास्त वक्त देखने का नियम रक्खें क्योंकि पृथ्वी एक दिन में अपनी धुरी पर पूरा चल जाती है अत: सांय उसी समय (सूर्यास्त समय) देखने से, पृथ्वी के अक्षभ्रमण के कारणजन्य अन्तर निरस्त हो जाता है। इस तरह देखने पर उसमें उसकी अपनी गति के कारणजन्य परिवर्तन का ज्ञान प्रारम्भ हो जाएगा और यह स्पष्ट प्रतीत होने लगेगा कि यह तारा प्रतिदिन सूर्य से ऊपर (क्षितिज से ऊपर)उठ रहा है। वह लालिमा से बाहिर आकर ऊपर उठता जाएगा कुछ दिन या मासों बाद वह क्षितिज में लगे सूर्य से अधिकतम दूरी (लगभग ४८° या इससे कम अन्दाजन दूरी पर)फिर नीचे की ओर आना शुरु हो जाएगा। यह शुक्र की कक्ष का आकाश में चरमविन्दु है। अब वह धीरे-धीरे प्रतिदिन लगभग उतने ही दिनों में (जितने दिनों में वह ऊपर उठा था) नीचे क्षितिज की ओर आकर एक दिन सूर्य की लाली में डूब जाएगा और काफी दिनों तक दीखना बन्द रहेगा। वस्तुत: ऊपर के चरमबिन्दु पर आकर वह वक्री हो गया । अर्थात् पूर्व से पश्चिम की ओर चलने लग गया और अस्त अवस्था में किसी एक दिन इसकी सूर्य से युति हुई और सूर्य को लांघकर पूर्व की ओर आगे बढ़ने लगा। युति आपने देखी नहीं क्योकि बिना टेलिस्कोप यह देखी ही नहीं जा सकती। अब अगर आप अस्तकाल के समय प्रात: प्रतिदिन पूर्व मे क्षितिज के ऊपर सूर्योदय समय देखें तो वह कुछ दिनों में सूर्य की सन्ध्यारुणिमा को पार करके ऊपर उठता दीखेगा। अब शुक्र पूर्व में उदित हो गया और प्रतिदिन प्रात: क्षितिज से ऊपर देखने से स्पष्ट ज्ञात होगा कि वह क्षितिज से ऊपर पूर्व की ओर बढ़ रहा है। जैसे सांयकाल पश्चिम क्षितिज ऊपर यह स्थिर सा होकर वक्री हुआ था अब यह पूर्व क्षितिज से ऊपर (लगभग ४८° तक) उठकर स्थिर सा होकर मार्गी हो जाएगा और अगर इसको प्रात: सूर्योदय समय प्रतिदिन देखते रहेंगे तो यह ज्ञात हो जाएगा कि यह पूर्व क्षितिज की ओर बढ़ रहा है। कुछ दिनों में यह सूर्य की प्रात:सन्ध्यारुणिमा में डूब जाएगा इस प्रकार यह पूर्व में अस्त कहा जाएगा। जब यह इन दिनों अदृश्य है किसी दिन इसकी सूर्य के साथ युति हो जाएगी और यह इन दिनों सूर्य को पूर्व से पश्चिम की ओर लांघकर पश्चिम क्षितिज में सूर्य की सायं संध्यालालिमा में डूबा रहकर और ऊपर उठकर पश्चिम क्षितिज से ऊपर सायं संध्या लालिमा पारकरके पश्चिम में दीखना शुरु हो जाएगा। यह वही स्थिति है जहां पहिली बार देखना शुरु किया था। ध्यान रहे यह पुन: पश्चिम क्षितिज के ऊपर लगभग ४८° उच्चतम बिन्दु पर वक्री होकर वक्री गति से ही सूर्य से युति करके पूर्व क्षितिज के ऊपर दीखेगा और फिर पूर्व क्षितिज से ऊपर के उच्चतम बिन्दु पर मार्गी होकर मार्गी गति से ही सूर्य के पास विपरीत दिशा से युति करते हुए पश्चिम दिशा में क्षितिज से ऊपर दीखने लगेगा। इसकी गति इसी प्रकार ऐसी ही दोलन प्रकृति से चलती रहती है।

इसी प्रकार बुध भी सूर्य के दोनों ओर दोलन गति से चलता है। अन्तर केवल इतना है कि बुध सूर्य से २८° से अधिक अन्तर पर नहीं जा सकता जबकि शुक्र ४८° तक की दूरी पर चला जाता है। यही तो कारण है कि जातक कुण्डलियों मतें बुध सूर्य से आगे पीछे की राशियों या सूर्य के साथ की राशि में ही हो सकता है। इसी तरह शुक्र सूर्य से इधर-उधर को दो राशियों में हो सकता है या सूर्य के साथ उसी राशि में।

वस्तुत: बुध एवं शुक्र सूर्य की परिक्रमा करते हैं परन्तु पृथ्वी और इन की कक्षाओं की ज्यामिति के कारण ही दोलन गति प्रतीत होती है। बुध एवं शुक्र की कक्षा पृथ्वी की कक्षा छोटी होने के कारण दोलन गति प्रतीत होती है। अभ्यन्तर ग्रह (बुध एवं शुक्र) सूर्य से प्रतियुति

यानी (१८०° तुल्य अन्तर (opposition) में नहीं आते जबकि बाकी सभी ग्रह सूर्य से लगभग प्रतिवर्ष एक बार प्रतियुति करते हैं। सूर्य की गति सभी बाह्य ग्रहों की गति से अधिक है अत: सूर्य उनके पास पहुंच कर उन्हें अस्त करके आगे चला जाता है और उसके दूर चले जाने पर ये उदित हो जाते हैं । इन सब का सूर्य से परम अन्तर कुछ भी हो सकता है । बुध एवं शुक्र की तरह सीमित आभ्यन्तर ग्रह सूर्य से प्रतियुति में तो नहीं आते परन्तु इनकी सूर्य के साथ दो युतियां होती हैं। एक युति मार्गी गति से और दूसरी युति वक्री गति से । आभ्यन्तर ग्रहों की गति की दिशा चरम बिन्दु पर बदलती है जबकि बाह्य ग्रहों की गति पृथ्वी की गति की दिशा में समानान्तर होकर पिछड़ जाती है। यह स्पष्ट है कि बाह्य ग्रह एक वर्ष में एक ही बार वक्री होंगे और बुध एवं शुक्र अपनी कक्षा के चरम बिन्दु पर पथ्वी से स्पर्श रेखा की दिशा में गति होने पर वक्री होंगे। ये जितनी बार चरम बिन्दुओं पर आएंगे उतनी ही बार दिशा बदलेंगे। भ्राता प्रियव्रत जी ने वि.सं.२०५८ के मार्त्तण्ड पंचांग प्रकाशन में चित्रों द्वारा बालसुबोध शैली से स्पष्ट कर दिया है, इस विषय की पुनरूक्ति अनावश्यक है । अत: यह भ्रान्ति नहीं होनी चाहिए कि दोलन गति वास्तविकता है। वस्तुत: बुध शुक्र भी सूर्य के चारों तरफ परिक्रमा ही कर रहे हैं। दोलन गति तो ज्यामितिक प्रतीति मात्र है जो कि दैनिक अक्षभ्रमण गति के कारण सूर्य की परिक्रमा कर रही पृथ्वी के सापेक्ष द्रष्टा को पृथ्वी के क्षितिज के ऊपर एवं नीचे पश्चिम एवं पूर्व दिशा में दोलन के रूप में प्रतीत होती हैं।

यहां स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि शुक्र का सूर्य के चारों तरफ परिक्रमण का काल २२५ दिन है परन्तु पृथ्वी स्थित द्रष्टा के लिए सूर्य सापेक्ष ५४८ दिन का भगण काल प्रतीत होता है। यह सूर्य सापेक्ष भगण काल (Synodic period) है।

अत: यह ग्रह ५४८ दिन में दो बार सूर्य के साथ युति करता है। एक बार सूर्य एवं पृथ्वी के मध्य जब होता है इसे आभ्यन्तर युति कहते हैं। दूसरी बार जब यह सूर्य एवं पृथ्वी दोनों से बाहिर होता है इसे बाह्य युति कहते हैं । एक वर्ष में कभी दो बार युतियां होती हैं कभी एक बार । इसकी कलाएं भी बनती हैं। ये शुक्रसापेक्ष तिथि (शुक्र-सूर्य) पर निर्भर हैं। इसकी चमक तब सर्वाधिक होती है जब शुक्र तिथि = ४०°

जैसा कि पहिले स्पष्ट कर दिया गया है कि बुध की गति घटनाएं शुक्र की तरह ही हैं। इसकी कलाएं भी बनती हैं परन्तु इसके कम दीखने से कलाएं कभी ही दीख पड़ती हैं। बुध १ वर्ष में १०-१२ बार सूर्य से युति करता है। आभ्यन्तर बाह्य युतियां क्रमश: आती रहती हैं। यह दुधमुंहा शिशु सा दोलनगति से सूर्य के पास बारम्बार जाता दीखता है। जैसे बच्चा पिता के पास जाता रहे। आखिर यह ग्रह-लाप्लास के ग्रहोत्पत्ति सिद्धान्तानुसार सभी ग्रहों से बाद में बना शिशु ग्रह ही तो है जो बारम्बार अपने पिता सूर्य के पास जा-जा कर अदृश्य हो-हो कर आंख मिचौनी सी करता रहता है।

अभिजित् : एक मुहूर्त्त एवं विशेष पर्व

लेखक—शक्तिधर शर्मा

आजकल हम अभिजित् मुहूर्त्त को अणपुच्छ मुहूर्त्त कह कर प्रतिदिन के कार्यकलाप में इसके उपयोग को शास्त्रविहित मानते हैं। परन्तु पुराने समय में यह एक पर्व होता था- जो अभिजित् तारे से सम्बद्ध था। यह उस समय की बात है जब अभिजित् नक्षत्र में सूर्य आने पर मनाया जाता था। यह लगभग १२०० की बात है। लगभग १६०० ई. पू. सूर्य के धनिष्ठा में रहने पर वर्षारम्भ मनाया जाता था । अयनांश की गति के कारण सूर्य के अभिजित् के पास आने पर वर्षारम्भ मनाया जाने लगा। यद्यपि यह तारा क्रान्तिवृत्त से बहुत दूर क्रान्ति पर (इसकी क्रान्ति लगभग उत्तर +८०° है।) परन्तु इसकी चमक बहुत तीव्र लुभावनी है। आर्य लोग, जब साल में एक बार सूर्य इस तारे के समीपतम क्रान्तिवृत्तीय बिन्दु पर आता था तब वर्षारम्भ मनाने लगे। इस वर्षारम्भ के दिन विशेष उत्सव मनाए जाते थे। अत: यह सभी कामों में शुभ माना गया। वस्तुत: ३६५ दिनों में से ३६० दिन-वर्ष के मानकर शेष ५ दिन उत्सव मनाए जाते थे। इस उत्सव को महत्त्वपूर्ण मानकर अभिजित् को विशेष मुहूर्त्त मानने लगे।

वस्तुत: सम्पूर्ण वर्षभर या इन पांच पर्व दिनों में एक दण्ड (शंकु Gnomon) की धूप में छाया देखी जाती थी। जब दुपहर के समय छाया स्थिर एवं अल्पतम हो जाती थी, तभी वर्षारम्भ का क्षण माना जाता (ज्योतिषसिद्धान्तों के अनुसार उसी क्षण को वर्षारम्भ का क्षण माना जाएगा।) कुछ शताब्दी बाद अयनांश अधिक हो जाने के कारण अभिजित् भी वर्षारम्भ का तारा नहीं माना जा सकता था। अत: उसे नक्षत्रों की सूची में से निकालना पड़ा । यजुर्वेद संहिताओं में अभिजित् नक्षत्र-सूची में लेने और बाद में उसे छोड़ने के उल्लेख मिलते हैं।

अभिजित् तो नक्षत्र सूची से निकल गया, परन्तु मध्याह की छाया स्थिर होना इतनी महत्त्वपूर्ण घटना मानी जाने लगी कि प्रतिदिन दुपहर का शंकु द्वारा प्राप्त मुहूर्त्तअभिजित् कहलाने लगा। लगभग ३-४ हजार वर्ष अभिजित् का मध्याह्न छाया से सम्बंध रहा। यह सम्बन्ध सदा के लिए हो गया एवं इस तरह दुपहर की छाया से ही अभिजित् प्रतिदिन माना जाता रहा है। परिणामस्वरूप प्रतिदिन मध्याह्न अभिजित् नाम से माना जाने लगा। हमारे यहां यह पर्व परम्परा तो खत्म हो गई परन्तु इस रूप में अभिजित् सदा के लिए मुहूर्त्त बन गया।

ध्यान रहे अभिजित् एक अणपूच्छ मुहूर्त्त के रूप में स्वीकृत हो गया । सिख समुदाय दुपहर के समय ही विवाह मुहूर्त्त रखते हैं। यह अभिजित् मुहूर्त्त ही होता है। सिख गुरु अभिजित् मुहूर्त्त को विशेष मान्यता देते थे। यह जानने योग्य है कि केवल भारत में ही नहीं अपितु जापान में भी यह विशेष पर्व था- और वहां अब भी है। अभिजित् पर्व आजकल भी विशेष रूप से मनाया जाता है। इस उत्सव को यू.एन.ओ. ने भी मान्यता दी है जिसे Vega Star Function के नाम से पुकारा जाता है।

ग्रहों के अचेतन एवं चेतन जगत् पर प्रभाव

लेखक—शक्तिधर शर्मा

अचेतन जगत् पर प्रभावों का विवेचन करते हुए गतवर्ष के विक्रम सं. २०५८ के मार्त्तण्ड पंचाग में निम्नलिखित तीन विषयों पर प्रकाश डाला गया-

(१) पृथ्वी के ऊपर जलागार समूह पर आकर्षणजन्य प्रभाव (ज्वारभाटा के रूप में)

(२) पृथ्वी की अन्दरूनी भूकम्पीय प्रक्रियाओं के आकर्षणजन्य उद्रेक के रूप में प्रभाव।

(३) पृथ्वी के ऊपर के वातावरण में भी ज्वारभाटा जैसी तरंगों के रूप में प्रभाव

अब इस लेख में क्रमांक (२) में हम पृथ्वी की ऊपर सतहों पर प्रभाव तथा चन्द्रमा के ऋतुओं के साथ सम्बन्ध - इन विषयों पर की गई रिसर्च के विवेचन किये जाएंगे ।

1. पृथ्वी की ऊपर की सतहों पर चन्द्रमा का प्रभाव

सन् १९३२ में नार्वे से एक ज्यामितिक विज्ञान कुशल प्रो. हैंस जैलस्टप, पश्चिमी ग्रीनलैण्ड के टापू सेबीने में अपने ग्रुप के साथ सर्वेक्षण के लिए गए । उन्होंने बड़ी सावधानी से मापन अंकन आदि का काम किया। इनसे पहिले सन् १८७० ई. में भी एक अन्य ग्रुप ने यही काम किया था। इन के परिणामों की जब पिछले ग्रुप के परिणामों से तुलना की गई तो आश्चर्य हुआ कि अभीष्ट स्थान दूसरे स्थान से १०३० फुट पश्चिम की ओर था। उन्हें विश्वास नहीं हो रहा था कि वे गल्त थे या पहिले ग्रुप की गल्ती थी। पिछले ग्रुप के वैज्ञानिक भी तो बड़ी इमानदारी से काम करने वाले थे। अत: उनके सर्वेक्षण के परिणामों पर किसी भी प्रकार से संदेह नहीं किया जा सकता था। बारंबार अंकन मापन द्वारा वे भी आश्वस्त हो गए कि वे भी स्वयं गल्त नहीं थे।

चांस की बात है कि उसी समय उनसे लगभग आधी पृथ्वी तुल्य अन्तर पर शंघई चीन में एक ग्रुप बिजली रेडियो संदेश भेज रहे थे- उन्हें आश्चर्य हुआ कि रेडियो संदेश को एक ही स्थान पर भेजने में कभी कितना परिणाम आता और कालान्तर में उसी स्थान पर रेडियो सन्देश भेजने में जो समय लगता वह पिछले प्रयोग के साथ तुलमा पर भिन्न पाया गया। इन दोनों ग्रुपों के प्रयोगों में ये परिणाम बहुत ही भ्रामक थे। दोनों ग्रुपों की प्रायोगिक विश्वसनीयता पर शक नहीं किया जा सकता था। इस ग्रुप में यदि जैलस्टप योग्य थे जो सूक्ष्मता से काम करते थे तो उधर पहिले प्रयोग में भी योग्य सुयोग्य वैज्ञानिक थे। उनके प्रयोगों को किसी भी तरह अमान्य मानना संभव नहीं था।

इस समस्या का समाधान करने के लिए कुछ लोगों ने तो कौटिनेंटल प्रस्खलन की अवधारणा का आश्रय लिया। परन्तु इतना कम प्रस्खलन उस कोटि में नहीं आता था । किंच यह प्रस्खलन दूसरे प्रकार का ही था। भ्रांति अधिक होती रही कोई समाधान नहीं मिला।

सन् १९३३ में यू.एस. नैवल वेधशाला (Naval Observatory) वाले वैज्ञानिकों ने आधुनिक इलैक्ट्रानिक सामग्री की सहायता से सन्-डियागो एवं वांशिगटन डी.सी. का अन्तर मापा और इस प्रयोग में भी वैसी ही भ्रामक स्थिति बन गई। कौंटिनेंटल प्रस्खलन को भी ध्यान में रखते हुए उत्तर नहीं मिला।

कुछ वैज्ञानिकों ने इसका उत्तर देने में पृथ्वी की अयनांश गति में धूनन संस्कार आदि से संभव उत्तर देने की कोशिश की परन्तु असफलता ही रही।

प्रो. स्टैटसन ने चन्द्रमा के पृथ्वी के ऊपर से गुजरने पर यह प्रभाव होता है यह मानकर Gravimeter की सहायता से स्पष्ट सिद्ध किया कि चन्द्रमा आकाश में जिस मार्ग पर चलता है उसके नीचे पृथ्वी की सतह पर प्रभाव पड़ता है। इसे Terrestrial Tide कहा जिसके कारण पृथ्वी की सतह पर भी ज्वारभाटे जैसा प्रभाव होता है। इससे भ्रामक समस्या का समाधान मिला। और वैज्ञानिक लोगों ने Terrestrial Tide घटना की सत्ता को स्वीकृति दी।

२. चन्द्रमा का ऋतुओं से सम्बन्ध

* लगभग १५००० वर्ष पूर्व ऐटलांटिक एवं प्रशान्त महासागर का कुछ भाग (जहां अब भारत है,) तथा मैडिटैरेनियन क्षेत्र सूखे थे और इस क्षेत्र में एक बड़ी सभ्यता की सत्ता थी- उस समय पृथ्वी से आगे मंगल की कक्षा से पहिले एक चतुर्थ बड़ा ग्रह था। यह ग्रह प्रकृत्या इस स्थान पर प्रतिकूलावस्था में था। यह अपनी धुरी पर घूमता हुआ पृथ्वी एवं मंगल के पास

* यह तारीख भले ही संशयास्पद है। बाइबिल में सृष्टिवर्ष हमारी कल्पगणना से बहुत ही कम है अत: यहां ऐसा Prof H.S. Balammy की इस उपज्ञा में चन्द्रमा का ऋतुओं से सम्बन्ध एवं तत्सम्बद्ध लोकोक्तियों की सत्यापन विधि बहुत ही रोचक है ।

बारम्बार आता था और इसकी कक्षा में गड़बड़ी बढ़ती जाती थी और एक मौके पर यह ग्रह सूर्य की पकड़ में आ गया । इस ग्रह को आजकल हम इसे लुना (चन्द्र) कहते हैं। इस पुरातन प्रलय-कल्प घटना का सम्बन्ध Jaik and Jill एवं नाविकों के Aratus'day(वह दिन जब चन्द्रमा के ओर मण्डल होता है और अगले दिन वर्षा होती है। "Jack and Jill" एवं नाविकों के Aratus'day (वह दिन जिससे अगले दिन वर्षा होती है) कहानी भी चन्द्रमा की कलाओं के क्षय एवं वृद्धि की लोकोक्तियां ही है। ध्यान रहे Jack शब्द की व्युत्पत्ति वृद्धि-द्योतक धातु और Jill क्षय द्योतक धातु से बने हैं।

Aratus तृतीय शताब्दी B.C. का एक भैषज्यशास्त्री तथा कवि था जिसने अपनी कविताओं चन्द्रशृंग एवं चन्द्रमा के परिवेष से ऋतु सम्न्धी सूचनाओं के प्राकृतिक संकेतों की व्याख्या की हैं उनमें से कुछ निम्नलिखित हैं-

(१) यदि चन्द्र शृंग तीखा एवं लाल हो और तीन दिनतक ऐसे ही रहे तो वर्षा अवश्य होती है ।

(२) यदि चन्द्र बिम्ब पर सफेद बर्फ सी चलती दिखाई दे तो वर्षा हो इसके विपरीत यदि चन्द्रमा साफ चमके तो यह अच्छे मौसम का संकेत है।

(३) चन्द्रमा पर काले से धब्बे दीखना वर्षा का सूचक है।

(४) जब चन्द्रमा पर एक परिवेष हो तो शान्त या कुछ थोड़ी वायु चले। अधिक परिवेष हों तो बहुत तेज ठंडी हवाओं के संकेत समझें।

मध्ययुग में तो लोकोक्तियों में ही चन्द्रमा के ऋतुओं से सम्बन्ध सीमित रहे परन्तु German G Schubler ने १९वीं सदी में १८३० तक के मैट्रालाजिकल रिकार्ड से विश्लेषण द्वारा चन्द्रमा के साथ ऋतुओं का सम्बन्ध सिद्ध कर दिया । इन साधारण ऋतु घटनाओं के अतिरिक्त भयंकर वायुप्रकोप हैरिकेन एवं तूफानों को जानने के लिए यू.एस. के मैट्रोलौजि डिपार्टमैंट के प्रारम्भ से अब तक के रिकार्ड चैक किये गए निणर्य यह निकला कि ऐसे भयंकर वायुप्रकोप अधिकांश पूर्णिमा एवं अमावस्या के पास २-३ दिन तक घटित होते हैं। Thomas H. Carpentar के ग्रुप ने सिद्ध कर दिखाया कि ऐसी तूफानी हवाएं फ्रंास एवं जर्मनी के मैट्रोलौजी विभागों के रिकार्डस से भी यही परिणाम आते हैं। सन् १८९१-१९६८ के ७७ वर्ष के रिकार्ड से भी यह सिद्ध हुआ कि तूफानी हवाएं अधिकाशं पूर्णिमा -अमावस्या के पास केन्द्रित रहती हैं। इस रिकार्ड में १०१३ हैरिकेन-तूफान वायु प्रकोप के आंकड़ों का प्रयोग हुआ । कार्पेन्टर ग्रुप ने अरब समुद्र एवं बंगाल की खाड़ी के ४५ वर्ष के रिकार्ड का प्रयोग किया । इन रिकार्डस में चन्द्रमा की उच्च नीच स्थिति पर अध्ययन किया गया। इन्हीं परिणामों की सर्वत्र पुष्टि पाई गई और पूर्णिमा एवं अमावस्या के साथ इन घटनाओं से सम्बन्ध होने से यह सिद्ध है कि सौरचान्द्र प्रभाव वायु प्रकोप को कन्ट्रोल करता है। इन आधार पर भविष्यवाणी लगभग ६७ प्रतिशत सत्य सिद्ध होंगी ।

यहां यह स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि चन्द्रमा के शृंग एवं परिवेष आदि के ऋतु सम्बन्धों के बारे में हमारे फलित-ज्योतिष के विशेष अंग मेदिनी ज्योतिष में दिए तथ्य ऊपर विवेचित वैज्ञानिक विश्लेषण से प्राप्त परिणामों से काफी अधिक हैं। उदाहरणार्थ- वैज्ञानिकों ने चन्द्र शृंग के तथा परिवेष के एक ही रंग से भविष्यवाणी करने के परिणाम प्राप्त किये हैं। परन्तु -बृहत्संहिता के परिवेपलक्षणध्याय आदि में सभी प्रकार के रंगों के परिणाम दिये हैं। ये निष्कर्ष भी आंकड़ों के सतत परीक्षणों से ही प्राप्त किये होंगे! इस दृष्टि से मौसम विज्ञान के वैज्ञानिकों का अभी भी बहुत कार्य शेष है ।

कुछ लोग आजकल फलित ज्योतिष के जातक संबंधी भविष्यवाणियों के चक्कर में सांख्यकी विश्लेषण (Statistical analysis) की प्रामाणिकता की उपेक्षा कर के कोर्ट को ही निर्णय देने के लिए भाग रहे हैं। ध्यान रहे फ्रांस के शीर्ष कोटि के सांख्यकी विश्लेषण के आधार पर तथा लन्दन के डा० Persy Maysor (Director observatory and Institute Technology London) ने प्राणि जगत् पर ग्रहों के प्रभाव को सिद्ध कर दिया है। Dr. Persy ने एतद्विषयक एक पुस्तक Astrology के पक्ष में लिखी जो कि २०वीं सदी की अस्ट्रालोजी के पक्ष में सबसे अधिक प्रामाणिक प्रकाशन मानी जा रही है। भविष्य में इन प्रभावों की प्रक्रियाओं तथा मनुष्यों पर प्रभाव को जानने की पद्धतियों में विकास हो सकता है ! न्यूटन से पहिले पश्चिम जगत् ज्वारभाटाओं पर चन्द्रमा के प्रभाव को नहीं मानता था, जबकि भारतीय आचार्य इस तथ्य को जानते थे। पश्चिम ने तब माना जब न्यूटन ने सिद्ध कर दिया। कोर्ट में जाने वालों को हमारी यही सलाह है कि वे Statistical analysis के माध्यम से रिसर्च प्रोजैक्ट स्वीकार करवाएं और कोर्ट को भी Mathematical analysis से ऊपर न मानकर इस विषय पर अपनी राय लेनी उचित है । यदि पृथ्वी के सभी भागों पर इतना प्रभाव होता है तो इसमें सन्देह नहीं कि पृथ्वी पर रहने वाली सभ्यता पर प्रभाव न हो इस तथ्य को कोई नकार नहीं सकता ।

कम्प्यूटर की क्षमता, प्रकाश की गति एवं मूर्त्त-अमूर्त्त काल की इकाइयां

लेखक—शक्तिधर शर्मा

[भारतीय परम्परा में काल की इकाइयां दो प्रकार की हैं:-मूर्त (स्थूल = व्यवहारोपयोगी) अमूर्त (सूक्ष्म = सूक्ष्म जगत् की प्रक्रियाओं को द्योतित करने वाली)

कम्प्यूटर की कार्यक्षमता तथा प्रकाश की गति के आविष्कारों ने इन दोनों प्रकार कीइकाइयों को उपयोगी सिद्ध कर दिया है - पढ़ें इस लेख में ।]

भारतीय ज्योतिष वाङ्मय में काल की इकाईयों के उद्भव एवं विकास में बहुत समय लगा । मनुष्य को व्यवहारार्थ नियमितता वाले तथा आवर्ती काल की आवश्यकता थी जो प्रकृति में पृथ्वी की दैनिक गति एवं आकाशीय पिण्डों में ही उपलभ्य है। अन्य प्राणियों पदार्थों में ऐसी गति की प्राप्ति संभव नहीं थी। अत: कृत्रिम प्रयोगों से घटी यन्त्र आदि कृत्रिम उपकरण भी बनाने पड़े। सूक्ष्म काल के लिए बौद्धिक चिन्तन प्रयोग (Gedanken, Thought experiments) भी करने पड़े।

अब हम इन दोनों प्रकार की काल की इकाईयों का विवेचन करेंगे:-

मूर्तकाल

इस वर्ग की इकाईयों के ज्ञान के लिए लिखित उपकरण बनाने पड़े।

(१) शंकु एक दण्ड जिसकी लम्बाई १२ इकाई हो धूप की छाया मापने के लिए भूमि में गाड़ दिया जाता था इसे शंकु (Gnomon) कहा जाता है।

(२) घटीयन्त्र— अनार की आकृति का पात्र

(३) तुला (Balance)

जल का भार मापने के लिए शंकु से मुहूर्त्त सामित* तुल्य जल को आयतन में मापते थे जल सूखने के डर से तुला द्वारा भार मापना भी आवश्यक था। इन्हीं यन्त्रों से आचार्यों ने ज्योतिष के सभी पराभितिक ({Parameters) ज्ञात किये । शंकु से प्रामाणिकीकरण (Standardisation) किया जाता था।

घटी यन्त्र एवं तुला के बनाने की पूरी विधियां जैनों के प्राकृत ग्रन्थ 'ज्योतिष्करण्डक' में वर्णित हैं। घटी के छिद्र का मान विशेष रूप से इसी कार्य के लिए बनाई गई सोने की तार से अथवा सद्योजात हथिनी की पूंछ के बाल की साइज का रक्खा जाता था । तुला धरणक (fulcrum weight) वाली वर्णित है जिस पर अंकन है। तुला का अंकन समायकरण सिद्धान्तानुसार (Law of Equilibrium of moments) से किया जाता था। ये सारे विवरण लेखक के एतद्विपयक लेख जो कि I.I.Sc. बेंगलूर के जवाहर लाल नेहरू केन्द्र द्वारा प्रकाशित पुस्तक (Sciences in West and India) में एक अध्याय के रूप में प्रकाशित है।

इन यन्त्रों से ज्योतिषशास्त्र के सभी परामितिक (Parameters) ज्ञात किये गए।

प्रामाणिकी करण में यह जानना आवश्यक है कि चन्द्रमा ने हमें मास = ३० तिथि दी जो कि कैलेण्डर के मौलिक इकाई है। पक्ष १५ दिन का होता है- अत: आगे सौर दिन के भी १५ भाग किए गए जिसे हम मुहूर्त्त कहते हैं। इस प्रामाणिकी करण में सबसे उपयोगी इकाईयां जो प्राप्त हुई वे तथा इनके सौर मानों से सम्बन्ध निम्नलिखित हैं-

सूर्य की एक दिन (६० घड़ी) = १°

एक घड़ी की गति = १

एक पल की गति = १ विकला

इस प्रकार सूर्य की गति काल इकाइयों में अंकित हो गई।

ये काल की इकाईयां बहुत महत्त्वपूर्ण है। (ध्यान रहे दिन को १२ घण्टे में बांटना सैद्धांन्तिक दृष्टि से अनुपयोगी है । वस्तुत: बैबिलोनियन सभ्यता में हरेक वस्तु को दर्जन की ईकाई से मापने की परम्परा थी। सौर गति का अंकन तो इन भारतीय परम्परा की ईकाई में सर्वत्र होता रहा है न कि इन कृत्रिम दर्जन की इकाईयों में ।) इन मूर्त्त इकाईयों में ही सौर गति का अंकन संभव है अन्य इकाईयां से नहीं । इन प्राकृतिक इकाईयों से ही बड़ी अन्य इकाईयां परिभाषित की जाती रही हैं। कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं-

* यहां समित जल शब्द से (Equivalent water)समझें।

सर्वेनिमेषा: जजिरे विद्यत:पुरुषादधि
कला: मुहूर्त्तकाष्ठाश्च अहोरात्रश्च सर्वश:। (तैत्तिरीयारण्यक)
निमेषा: दश चाष्टौ च काष्ठा: त्रिंशत्तु ता: कला ।
त्रिंशत्-कलो मुहूर्त:स्यात् अहोरात्रस्तु तावता। मनु स्मृति

इनकी और भी इकाईयां हैं जिनमें ६० का अंक नहीं आता ३० का अंक ही है। इनके अतिरिक्त अन्य ग्रन्थों कूर्मपुराण, विष्णु पुराण आदि में इकाई कुलको में भी काफी अन्तर पाए जाते हैं। ये सब विकास को बतलाते हैं। पंजाब यूनिवर्सिटी के पुराने संस्कृत विभाग लाहौर में इन विषयों पर काफी कार्य शोध हुए थे । बहुत से संदर्भों में अमूर्त काल की इकाईयां भी मूर्त काल के साथ वर्णित नहीं हैं।

अमूर्तकाल

अमूर्तकाल की इकाईयां भी बहुत से उत्तरवर्ती ग्रन्थों में मूर्त इकाइयों के साथ क्रमानुसार दी गई हैं।

इन सब का विकास हुआ है। अधिकांश सन्दर्भों में अणुकाल की परिभाषा के अनुसार ये इकाइयां परिभाषित हैं। अणु,द्व्यणु तथा त्रसरेणु काल परिभाषित हैं।

चिन्तन प्रयोग में त्रुटि मुख्य इनका आधार है- एक चिन्तन प्रयोग है जिस में १ हजार कमल पत्रों को इकट्ठा करके तीखी सूई से छेद करने में जितना समय लगता है उसका १०००वां हिस्सा त्रुटि कहलाती है। जैन एवं बौद्ध परम्पराओं में भी ऐसे चिन्तन प्रयोग तथा परिभाषाएं मिलती हैं ।

मूर्त एवं अमूर्त इकाईयों का सम्बन्ध त्रुटि इकाई से किया गया है । वस्तुत: मूर्त इकाईयां सीधे ग्रह गति अध्ययन से सम्बन्ध रखती हैं- जैसा कि स्पष्ट है घटी पल विपल का सीधा सम्बन्ध सूर्य के राशिचक्र के अंकन से है। सूर्य १ दिन में एक अंश १ घटी में १ कला १ पल में १ विकला चलता है। ध्यान रहे- ३० एवं १५ के अंक चन्द्रमा ने दिये इस दृष्टि से इनका सम्बन्ध चन्द्रमा से भी है परन्तु सूर्य से तो सीधा राशि चक्र के अंकन से है। पृथ्वी का अपने अक्ष पर दैनिक भ्रमण काल जानने के श्वास गणना का प्रयोग किया गया जिससे नाक्षत्र दिन का मान ज्ञात हुआ। इन सब इकाईयों का मूर्तकाल से ही सम्बद्ध कर दिया गया।

अमूर्तकाल के पहिले मिले चित-चिन्तन प्रयोग किये गए।

इन दोनों इकाई वर्गीकरणों का सम्बन्ध त्रुटि के माध्यम से है। त्रुटि से कम काल गणना पहिले से ही उपयोग में नहीं आई। परन्तु अब कम्प्यूटर के आने से इन इकाइयों की उपयोगिता स्पष्ट हो रही है। आजकल कम्प्यूटर अमूर्तकाल में कितनी प्रक्रियाएं या गणित करता है इसकी बहुत सी जनित्राएं (Generations) रही हैं। वर्तमान जनित्रा में इसकी स्पीड (Giga-Hertz) है जिसकी पहले कल्पना भी नहीं की जा सकती थी।

सूक्ष्मकाल की इकाईयों के अतिरिक्त बड़े बड़े मान वालों के कालों की भी कल्पना जैन,बौद्ध एवं हिन्दू परम्परा में बहुत हैं। आजकल वैज्ञानिकों में भी ऐसे चिन्तनों की धारणाएं हैं जो भारतीय परम्पराओं जैसी हैं । कुछ वैज्ञनिक ऐसी प्रवृत्तियों को तो 'Lores of small and high **units** ' कहते हैं । यह तो मानना होगा कि भारतीय हिन्दू जैन बौद्ध परम्पराओं में जो कालाणु आदि की कल्पना है वह आज सार्थक हा गई है। सूक्ष्मकाल में कम्प्यूटर द्वारा इतनी प्रक्रियाएं एवं गणना इन इकाईयों की वास्तविकता सिद्ध करती हैं। अत: यह स्पष्ट है कि ये चिन्तन मात्र नहीं थे अपितु वास्तविक काल की इकाई हैं।

प्रकाशकी गति सर्वाधिक मानी जाती है ।

जब लेखक M.Sc. की कक्षा में प्रविष्ट हुआ तब उसी सप्ताह में फिजिक्स विभाग के बोर्ड पर किसी अध्यापक (या छात्र) ने लिखा कि प्रकाश की गति भारतीयों को वैज्ञानिक रोमर से दो सौ वर्ष पूर्व ज्ञात थी। इस धटना के बाद फिजिक्स क्षेत्र में बहुत बार चर्चा चलती रही।

मद्रास के I.I.T के एक विद्वान् वैज्ञानिक तथा मैसूर के एक अन्य विद्वान् तथा अमेरिका के भी फिजिक्स के कई वैज्ञानिकों ने भी इस तरफ ध्यान दिया । लेखक सदैव इस तरफ ध्यान देता रहा । इस विषय में जो प्राप्ति हुई हैं उनका विवरण यहां दिया जा रहा है।

लेखक ने स्वयं सन्दर्भ ग्रन्थ देखा है। आचार्य सायण की ऋग्वेद पर टीका में लिखते हैं- तथा चैवं स्मर्यते:

योजनानां सहस्रे द्वे, द्वे शते, द्वे च, योजने।
एकेन निमिषार्धेन क्रममाण नमोऽस्तु ते॥

अर्थात् एक निमेषार्ध में २२०२ योजन चलने वाले हे प्रकाश ! आपको प्रणाम हो।

ध्यान रहे यहां आचार्य सायण ने ''स्मर्यते'' कहा है। अत: यह धारणा सायण से पूर्व शंकराचार्य की है । जैसे कि - मैसूर के प्रो० ने लिखा है- कोई ऐसा भी कह सकते हैं कि ये विचार सूर्य सूक्त में है इसलिए यह प्रकाश की गति नहीं बल्कि सूर्य का अपनी गति से जम्बूद्वीप को पार करने का उल्लेख है वस्तुत: कुछ साल से मेरे चिन्तन में भ्रान्तिवश यह बात खटक रही थी कि यह कहीं सूर्य की ही गति का जम्बू द्वीप पार करने का उल्लेख तो नहीं है। यह सूर्य सूक्त के भाष्य में आचार्य सायण ने उद्धृत किया है । यह लेखक ने कुछ समय पूर्व स्वयं साक्षी किया

है। यह सूर्य सूक्त की ऋचा नहीं है और हिन्दू, जैन, बौद्ध सृष्टि विज्ञान के अनुसार जम्बू द्वीप का परिणाह २२०२ योजन नहीं है। उसकी टीका में पूर्व प्रचलित ''धारणा'' ही सायण ने भाष्य में उल्लिखित की है। श्री सायण १५ वीं शताब्दी ईसा के थे राजा बुक्क के समय में थे, इसमें कोई सन्देह नहीं। अब यहां प्रकाश की गति की गणित के विषय में कुछ विवेचना दिया जा रहा है। जब सर्व प्रथम इस विषय पर विवेचन हुआ तब इस गणित में अत्रि की ईकाईयों को प्रयोग हुआ उसका पूरा विवरण न देकर कुछ अंश जो अभी मुझे उपलभ्य हैं दे रहा हूं।

फिजिक्स के वैज्ञानिक प्रो. रोमर ने बृहस्पति के चन्द्रमाओं में ग्रहण लगने से प्रकाश की गति ज्ञात की वे १७ वीं शताब्दी के थे। फिजिक्स के अन्य सभी प्रयोग भी जो बाद में प्रायोजित किये गए १७ वीं सदी से भी आगे के हैं। अत: यह स्पष्ट है कि आचार्य सायण से पूर्व शंकराचार्य का यह मंत्र उनकी अलौकिक चिन्तन शक्ति का प्रमाण है क्योंकि जैसे यहां नीचे दिखलाया जाएगा कि योजन का परम्परागत प्रामाणिक मान एवं अमूर्त इकाईयों की परम्पराओं में से एक इकाई (अत्रि ऋषि कुलक लेकर) गणित करने पर यह गति आजकल स्वीकृत प्रकाशगति ही प्राप्त हो रही है। हमारे विचार में एक इकाई कुलक से यदि परिणाम वास्तविक गति से मिलते हैं तो यह मानना कि श्रीशंकराचार्य जी को प्रकाश की गणित चिन्तन प्रयोग (Thought experiments) से ज्ञात हो गया था। इसमें कोई सन्देह नही। ईकाईयों के कुलक विकास प्रक्रिया में बहुत धारणाएं हैं-परन्तु मात्र एक कुलक, प्रकाश की गति तुल्य परिणाम देता है अत: यही प्रामाणिक कुलक है।

अत्रि की इकाईयों में मूर्त एवं अमूर्त इकाईयां से परमाणुकाल का मान

परमाणुकाल = $\frac{१}{७५०००}$ सैकिण्डस प्राप्त होता है

इस समस्या के पहिले परामितिक 'काल का प्रामाणकि मान' ज्ञात है दूसरा परामितिक योजन मान है। बहुत शताब्दी पूर्व की इकाइयों पर French एवं British Architects रिसर्च के अनुसार से तथा ज्यौतिष ग्रन्थों से यही ज्ञात होता है कि मध्य युगीन प्रशासनों में योजना का प्रामाणिक रूप से मान

१ योजन = ९ मील १६० गज = $\frac{१००}{११}$ मील

अत्रि इकाई कुलक के अनुसार

परमाणु काल = $\frac{१}{७५००}$ सैं

क्योंकि अणु = २ परमाणु, त्रसरेणु = ३अणु

३ त्रसरेणु = १ त्रुटि, १०० त्रुटि = १ वेध

३ वेध = १ लव, ३ लव = १ निमेष

अत: निमेषार्ध = $\frac{२७}{२५०}$ सैं

प्रकाश गति = $\frac{२२०२\times१००\times२५०}{२७\times११}$ = १८६३०० मील प्रति सैकण्ड लगभग

एक इकाई से परिणाम ठीक आते हैं मात्र चांस नहीं अपितु परिणाम की सत्यता का परिचायक है।

लगभग यही परिणाम रोमर ने २०० साल बाद बृहस्पति के चन्द्रमाओं में ग्रहण से तथा अन्य प्रयोगों से प्राप्त किए।

अत: यह स्पष्ट है कि चिन्तन प्रयोग (Gedanken, Thought-experiments) से प्रकाश की गति भारत में पहिले ही ज्ञात हो चुकी थी। आजकल भी एक अमेरिकन युवक ने यह दावा किया है कि अणिमा सिद्धि से चिंतन प्रयोग द्वारा Quark की सत्ता की वास्तविकता उसने अणिमा सिद्धि से प्राप्त कर ली थी। उसके ३० वर्ष पूर्व रिसर्च पेपर प्रमाण हैं। अत: यह स्पष्ट है कि चिन्तन प्रयोगों से एकल व्यक्ति भी प्रयोगशाला में प्रयोग किये बिना अच्छे परिणाम प्राप्त कर सकता है। यौगिक चिन्तक को सूक्ष्मातिसूक्ष्मकाल खण्डों में भी अन्तर्पत्यय होता है और साथ ही सूक्ष्म आकाश खण्डों में अन्तर प्रतीति होती है। अत: सूक्ष्म जगत् की घटनाएं भी यौगपद्येन एवं एकादेशावच्छेदेन होती हैं। पर्याप्त स्वतंत्र रूप से क्षेत्र और काल में सूक्ष्म जगत की प्रक्रियायें बिना संहनन के होती हैं। आजकल के कम्प्यूटर्स ने भी यह प्रत्यक्ष सिद्ध कर दिया है। किञ्च मूर्तकाल की बड़ी बड़ी इकाईयां युग सृष्टिकाल आदि जो ज्योतिष शास्त्र में परिभाषित है वे भी महत्वपूर्ण हैं- क्योंकि ये व्यवहार में उपयोगी सिद्ध हुई हैं। इन बड़ी पूर्णांक संख्याओं से नम्बर थ्यूरी के आधार पर ज्योतिशास्त्र के परामितिक ज्ञात करना बहुत सरल है। अत: मूर्त एवं अमूर्त काल विभाग सभी दृष्टि से उपयोगी हैं। काल: अणोरणीयान् तथा महतो महीयान् है यह ब्रह्म का प्रतीक जो ठहरा। वस्तुत: आजकल प्रकाश की गति के संदर्भ में भी प्रश्नचिह्न लग गया है। N.E.C.Institute of Fundamental Particle Physics, Prinston में Lizul Wang and Prof. Kushik द्वारा प्रयोग से यह सिद्ध हो रहा है कि प्रकाश की गति इससे कहीं अधिक है जो कि सामवेद में प्रतिपादित सिद्धांत के अनुकूल है।

यह व्यक्ति कितने वर्ष जीएगा ?

(आयु स्पष्ट करने की वराहमिहिरोक्त सरल विधि)

लेखकः- प्रियव्रत शर्मा

आयु का निर्णय करने वाली अनेक पद्धतियां हैं। यहां हम आयुनिर्णय की "अंशायु-पद्धति" का, जिसे वराहमिहर ने अपेक्षाकृत अधिक शुद्ध बतलाया है, विवेचन करेगें।

इस पद्धति से आयु स्पष्ट करने के लिए राहु-केतु को छोड़कर शेष सूर्य आदि ७ ग्रहों तथा लग्न की राशि-अंश-कलाएं और जन्मकुण्डली की आवश्यकता होती है। सूर्यादि ग्रहों की राश्यादि से सभी ग्रहों की आयु (ग्रहायु) और लग्न की राश्यादि से लग्न की आयु (लग्नायु) बना लीजिए। ग्रहायु और लग्नायु जानने के लिए आगे दिए गए दो कोष्ठकों और सहायककोष्ठकों की सहायता लीजिए। इनसे ग्रहायु और लग्नायु साधन की विधि इस प्रकार है :-

कोष्ठक (१) के पहिले तीन कालमों में रा. अं. क. दी हुई हैं। ग्रह की राश्यादि से इस कोष्ठक में से आयु के वर्ष, मास दिन उठा लें। क्योंकि यह कोष्ठक ३ अं. २० क. के अन्तर पर बना हैं, अतः शेष अंश-कलाओं की आयु के मास एवं दिन सहायक कोष्ठक (१) से प्राप्त करके उन्हें भी कोष्ठक (१) से मिली ग्रह की वर्षादि आयु में जोड़ दें, यह ग्रहायु होगी। सूर्य आदि सातों ग्रहों की आयु इस तरह इस कोष्ठक से जान लें। इसी प्रकार लग्न की आयु (लग्नायु) भी इस कोष्ठक से प्राप्त करें। यदि लग्न बली (गुरु, शुक्र, बुध और लग्नेश से युक्त या दृष्ट) हो तो लग्नायु के लिए कोष्ठक (२) और सहायक कोष्ठक (२) को प्रयोग में लाएं। अन्यथा लग्नायु का साधन-कोष्ठक (१) और सहायक-कोष्ठक (१) से ही करें।

ध्यान रखें-किसी भी ग्रह की आयु १२ वर्ष से ज्यादा नहीं होती, अतः कोष्ठकों से मिली लग्नायु एवम् ग्रहायु १२ वर्ष से ज्यादा हो तो उसमें से १२ वर्ष घटाकर शेष को ही लग्नायु एवं ग्रहायु समझें। इस प्रकार मिली लग्नायु सर्वथा शुद्ध एवं स्पष्ट होगी। लेकिन सभी ग्रहों की यह आयु स्थूल (अस्पष्ट)होगी। इन्हें स्पष्ट करने के लिए इनमें ये तीन संस्कार करनें होंगे ,-

(१) चक्रार्धहानि संस्कार, (२) शत्रुक्षेत्रास्तहानि संस्कार , (३) स्वोच्चादिवृद्धि संस्कार।

इन संस्कारों को ग्रहायु में देने की पद्धति इस प्रकार है :-

(१) **चक्रार्धहानि संस्कार** :-- यदि कोई पापी ग्रह (सूर्य, मंगल या शनि) सप्तम-भाव में हो तो उसकी आयु का छठा , अष्टम में हो तो पांचवां , नवम में हो तो चौथा, दशम में हो तो तीसरा, एकादश-भाव में हो तो आधा भाग, और द्वादश भाव में हो तो आधी आयु नष्ट हो जाती है। यदि कोई शुभ ग्रह (चन्द्र, बुध, गुरु या शुक्र) सप्तम में हो तो उसकी आयु का बारहवां , अष्टम में हो तो दसवां, नवम में हो तो आठवां, दशम में हो तो छठा, एकादशभाव में हो तो चौथा भाग, द्वादशभाव में हों तो आधी आयु नष्ट हो जाती है। इसे ही चक्रार्धहानि संस्कार कहते हैं। यदि एक ही भाव में दो ग्रह बैठे हों तो उनमें से जो अधिक बली हो केवल उसीकी आयु में चक्रार्धहानि संस्कार करना चाहिए।

(२) **शत्रुक्षेत्रास्तहानि संस्कार** :-- 'चक्रार्धहानि संस्कार' करने के बाद शत्रुक्षेत्रास्तादिहानि संस्कार करना चाहिए। यदि कोई मार्गी-ग्रह शत्रु की राशि में हो तो उसकी आयु का तीसरा भाग नष्ट हो जाता हैं। वक्री ग्रह के लिए यह बात नहीं हैं। किंच, शुक्र और शनि को छोड़कर यदि कोई ग्रह अस्त (सूर्य के समीप आ जाने से लुप्त) हो तो उसकी आयु का आधा भाग नष्ट हो जाता हैं। यहां यदि कोई मार्गी ग्रह शत्रु की राशि में हो और साथ ही अस्त भी हो तब उस ग्रह की आयु में केवल अर्धहानि ही करनी चाहिए, तृतीयांश की हानि को छोड़ देना चाहिए।

(३) **स्वोच्चादिवृद्धि संस्कार** :-- ऊपर लिखे ढंग से चक्रार्धहानि और शत्रुक्षेत्रास्तहानि संस्कार करने के बाद जो ग्रहों की भिन्न-भिन्न आयु आएगी, उनमें स्वोच्चादिवृद्धि संस्कार भी करना होगा, जिससे ग्रहों की आयु के वर्षादि पूरी तरह स्पष्ट हो जाएंगे। यह संस्कार करने का यह प्रकार हैं :--

यदि ग्रह वक्री या उच्च-राशि में हो तो ग्रह की आयु तिगुनी, एवं स्वराशि, स्व-नवमांश वर्गोत्तम या स्व-द्रेष्काण में हो तो दुगुनी हो जाती है। स्वोच्चादिवृद्धि संस्कार करते समय यदि किसी ग्रह की आयु में वृद्धि कई प्रकार से उपस्थित हो रही हो तो अधिक वृद्धि को स्वीकार करें और थोड़ी वृद्धि को छोड़ दें। जैसे :-- यदि सूर्य ० रा. २ अं. ५ क. हो तों वह अपनी उच्च राशि और वर्गोत्तम दोनों में हैं। यहां उच्चस्थ होने से सूर्य की आयु तिगुनी तथा वर्गोत्तम में होने से दुगुनी होनी चाहिए। परन्तु नियमानुसार हमें यहां सूर्य की आयु को तिगुना ही करना होगा। यहां यह भी ध्यान रक्खें, कि यदि कोई ग्रह वक्री होकर उच्च में भी हो तब उसकी आयु को केवल एक बार ही तिगुना करना होगा।

इन तीनों संस्कारों से ग्रहों की आयु स्पष्ट हो जाएगी। सभी ग्रहों की स्पष्ट आयु तथा लग्न की आयु के वर्ष आदि को जोड़ देने पर जातक (बच्चे) की पूरी आयु निकल आएगी।

उदाहरण :-- किसी जातक (व्यक्ति) के जन्म के समय का लग्न स्पष्ट और ग्रह स्पष्ट तथा जन्म कुण्डली नीचे दी जा रही हैं। इसकी आयु स्पष्ट कीजिए :--

जन्मकालिक

	रा.	अं.	क.	
सूर्य	०	०६	५०	
चन्द्र	०	१२	१५	(अस्त)
मंगल	२	२२	२०	(वक्री)
बुध	११	२४	२०	(मार्गी) (अस्त)
गुरु	७	१४	१०	(मार्गी)
शुक्र	११	१६	२०	(मार्गी)
शनि	०	२८	०६	(वक्री)
लग्न	०	२१	२१	

जातक की जन्मकुण्डली

२
१
बु. शु. १२
म. ३
चं. सू. श.
११
४
१०
५
७
९
६
८ गु.
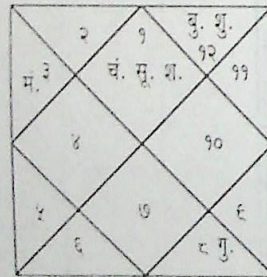
यहां सूर्य स्पष्ट ० रा. ६ अं. ५० क. है। कोष्ठक (१) में ० रा. ६ अं. ४० क. के आगे २ वर्ष ० मास ० दिन लिखा है। शेष १० कलाओं की आयु सहायक कोष्ठक (१) में १८ दिन लिखी है। अतः सूर्य की आयु २ व., ० मा., १८ दिन हुई । यहां लग्न स्पष्ट ० रा. २१ अं. २१ क. है। क्योंकि लग्न यहां दो क्रूर ग्रहों (सू. श.) तथा अस्तंगत चन्द्र से युक्त होने के कारण निर्बल है, अतः उक्त निर्देशानुसार कोष्ठक (१) से ही लग्नायु स्पष्ट की जाएगी। कोष्ठक (१) में ० रा. २० अं. ० क. के आगे ६ व., ० मा., ० दिन लिखा है। शेष १ अं. २१ क. की आयु सहायक कोष्ठक (१) में ४ मा. २६ दिन है। अतः लग्नायु ६ व. ४ मा. २६ दिन हुई। इसी प्रकार शेष चन्द्रादि ग्रहों की भी आयु कोष्ठक (१) से लेकर नीचे 'आयुसाधन उदाहरण कोष्ठक' के दूसरे स्तम्भ में लग्नायु के साथ दी गई हैं। इस स्तम्भ में दी गई लग्नायु तो स्पष्ट है, लेकिन सूर्य आदि ग्रहों की यह आयु स्पष्ट नहीं हैं। ग्रहों की आयु को स्पष्ट करने के लिए पूर्वोक्त निर्देशानुसार हम इनमें चक्रार्धहानि, शत्रुक्षेत्रास्तहानि और स्वोच्चादिवृद्धि, ये तीन संस्कार करेंगे, जिनका विवरण नीचे दिया गया हैं :--

चक्रार्धहानि संस्कार :- जातक की ऊपर अंकित कुण्डली में शुभग्रह गुरु अष्टमस्थ है। अतः इसकी आयु (अस्पष्ट आयु) में से इसका १० वां भाग घटा दिया गया है , द्वादश भाव में बुध, शुक्र - दो शुभ ग्रह पड़े हैं। यहां शुक्र उच्चस्थ होने से वह नीचस्थ बुध से ज्यादा बली है , अतः पूर्वोक्त नियमानुसार यहां केवल शुक्र की ही आयु को आधा किया गया है।

शत्रुक्षेत्रास्तहानि संस्कार :- यहां चन्द्रमा अस्त है , अतः इसकी आयु आधी कर दी गई हैं। बुध भी यहां अस्त हैं, अतः इसकी आयु भी आधी की गई हैं । यहां यद्यपि शनि शत्रुराशि में है; फिर भी इसकी आयु में से इसका तृतीयांश कम नहीं किया गया है, क्योंकि पूर्वोक्त नियमानुसार वक्री ग्रह पर यह नियम लागू नहीं होता। यहां शनि वक्री हैं।

स्वोच्चादिवृद्धि संस्कार :-- यहां सूर्य उच्चस्थ हैं, अतः इसकी आयु उक्त नियमानुसार तिगुनी कर दी गई हैं। चन्द्रमा अपने (कर्क के)नवांश में है अतः इसकी आयु दुगुनी की है। मंगल और शनि वक्री हैं अतः इन दोनों की आयु तिगुनी और गुरु स्वद्रेष्काण में है, अतः इसकी आयु दुगुनी कर दी गई है।

इस प्रकार ग्रहों की स्वोच्चादिवृद्धि-संस्कृत आयु स्पष्ट होगई है। सभी ग्रहों की स्पष्ट आयु तथा लग्नायु का योग जातक की स्पष्ट आयु मानी जाती है, अतः इस उदाहरण में जातक की स्पष्ट आयु ७३ वर्ष ८ मास ३ दिन सिद्ध हुई है। इसका अर्थ हुआ इस जातक की जीवनावधि इस गणनानुसार कुल ७३ वर्ष ८ मास ३ दिन होगी। (नीचे दिया गया कोष्ठक देखें)।

आयुसाधन उदाहरण कोष्ठक

ग्रह लग्न	अस्पष्ट ग्रहायु	चक्रार्धहानि-संस्कृत आयु	शत्रुक्षेत्रास्तहानि-संस्कृत आयु	स्वोच्चादिवृद्धि-संस्कृत आयु (स्पष्ट आयु)
↓	व. मा. दि.	व. मा. दि.	व. मा. दि.	व. मा. दि.
सू.	२/००/१८	२/००/१८	२/००/१८	६/०१/२४
चं.	३/०८/०३	३/०८/०३	१/१०/०२	३/०८/०४
मं.	०/०८/१२*	०/०८/१२	०/०८/१२	२/०१/०६
बु.	१०/०३/१८	१०/०३/१८	५/०१/२४	५/०१/२४
गु.	७/०३/००	६/०६/०६	६/०६/०६	१३/००/१८
शु.	७/१०/२४	३/११/१२	३/११/१२	११/१०/०६
श.	८/०५/०५	८/०५/०५	८/०५/०५	२५/०३/१५
लग्न	६/०४/२६	६/०४/२६	६/०४/२६	६/०४/२६

जातक की स्पष्ट आयु ७३/०८/०३

ग्रहों की आयु में चक्रार्धहानि आदि संस्कार करते हुए इन बातों को ध्यान में रखें .-

चक्रार्धहानिसंस्कार ग्रहायु { ग्रह की कोष्ठक (१) से प्राप्त आयु } में किया जाता हैं। चक्रार्धहानि- संस्कार से संस्कृत यह ग्रहायु 'चक्रार्धहानिसंस्कृत' आयु कहलाती है। जिस ग्रह की आयु में चक्रार्धहानिसंस्कार शून्य हो, उसकी कोष्ठक (१) से प्राप्त आयु ही , ' चक्रार्धहानिसंस्कृत आयु ' मानी जाती है,

चक्रार्धहानिसंस्कृत वह आयु , जिसमें शत्रुक्षेत्रास्तहानि संस्कार कर दिया गया हो , 'शत्रुक्षेत्रास्तहानि- संस्कृत' , आयु कही जाती है। चक्रार्धहानिसंस्कृत वह आयु भी शत्रुक्षेत्रास्तहानि-संस्कृत ही मानी जाती है, जिसमें शत्रुक्षेत्रास्तहानि संस्कार शून्य हो।

शत्रुक्षेत्रास्तहानि- संस्कृत वह आयु, जिसमें स्वोच्चादिवृद्धिसंस्कार किया गया हो, ' स्वोच्चादिवृद्धि- संस्कृत 'आयु कही जाती है। शत्रुक्षेत्रास्तहानि-संस्कृत वह आयु भी स्वोच्चादिवृद्धिसंस्कृत ही मानी जाती है, जिसमें स्वोच्चादिवृद्धि संस्कार शून्य हो। ग्रह की स्वोच्चादिवृद्धिसंस्कृत आयु ही उसकी स्पष्ट आयु है।

यह उपरोक्त आयुसाधनविधि वराहमिहिर के मतानुसार है। जैमिनिमतानुसार आयुसाधन विधि इससे सर्वथा भिन्न है-, जिसका निर्देश मैं वि.सं. २०३५ के श्रीमार्त्तण्ड पंचांग में कर चुका हूँ।

---

* *मंगल की कोष्ठक १ से प्राप्त आयु १२ वर्ष से अधिक थी, अतः इसमें से १२ वर्ष घटा दिए गए हैं।*

कोष्ठक (१) (लग्नायु एवं ग्रहायु)			
लग्न या ग्रह	लग्न या ग्रह	लग्न या ग्रह	आयु
रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	व. मा. दि.
० ०० ००	४ ०० ००	८ ०० ००	० ०० ००
० ०३ २०	४ ०३ २०	८ ०३ २०	१ ०० ००
० ०६ ४०	४ ०६ ४०	८ ०६ ४०	२ ०० ००
० १० ००	४ १० ००	८ १० ००	३ ०० ००
० १३ २०	४ १३ २०	८ १३ २०	४ ०० ००
० १६ ४०	४ १६ ४०	८ १६ ४०	५ ०० ००
० २० ००	४ २० ००	८ २० ००	६ ०० ००
० २३ २०	४ २३ २०	८ २३ २०	७ ०० ००
० २६ ४०	४ २६ ४०	८ २६ ४०	८ ०० ००
१ ०० ००	५ ०० ००	९ ०० ००	९ ०० ००
१ ०३ २०	५ ०३ २०	९ ०३ २०	१० ०० ००
१ ०६ ४०	५ ०६ ४०	९ ०६ ४०	११ ०० ००
१ १० ००	५ १० ००	९ १० ००	१२ ०० ००
१ १३ २०	५ १३ २०	९ १३ २०	१ ०० ००
१ १६ ४०	५ १६ ४०	९ १६ ४०	२ ०० ००
१ २० ००	५ २० ००	९ २० ००	३ ०० ००
१ २३ २०	५ २३ २०	९ २३ २०	४ ०० ००
१ २६ ४०	५ २६ ४०	९ २६ ४०	५ ०० ००
२ ०० ००	६ ०० ००	१० ०० ००	६ ०० ००
२ ०३ २०	६ ०३ २०	१० ०३ २०	७ ०० ००
२ ०६ ४०	६ ०६ ४०	१० ०६ ४०	८ ०० ००
२ १० ००	६ १० ००	१० १० ००	९ ०० ००
२ १३ २०	६ १३ २०	१० १३ २०	१० ०० ००
२ १६ ४०	६ १६ ४०	१० १६ ४०	११ ०० ००
२ २० ००	६ २० ००	१० २० ००	१२ ०० ००
२ २३ २०	६ २३ २०	१० २३ २०	१ ०० ००
२ २६ ४०	६ २६ ४०	१० २६ ४०	२ ०० ००
३ ०० ००	७ ०० ००	११ ०० ००	३ ०० ००
३ ०३ २०	७ ०३ २०	११ ०३ २०	४ ०० ००
३ ०६ ४०	७ ०६ ४०	११ ०६ ४०	५ ०० ००
३ १० ००	७ १० ००	११ १० ००	६ ०० ००
३ १३ २०	७ १३ २०	११ १३ २०	७ ०० ००
३ १६ ४०	७ १६ ४०	११ १६ ४०	८ ०० ००
३ २० ००	७ २० ००	११ २० ००	९ ०० ००
३ २३ २०	७ २३ २०	११ २३ २०	१० ०० ००
३ २६ ४०	७ २६ ४०	११ २६ ४०	११ ०० ००
४ ०० ००	८ ०० ००	१२ ०० ००	१२ ०० ००

सहायक कोष्ठक (१)			
शेष	आयु	शेष	आयु
अं. क.	मा. दि.	अं. क.	मा. दि.
० ००	० ००	३ ०५	११ ०३
० ०५	० ०९	३ १०	११ १२
० १०	० १८	३ १५	११ २१
० १५	० २७	३ २०	१२ ००
० २०	१ ०६		
० २५	१ १५		
० ३०	१ २४		
० ३५	२ ०३		
० ४०	२ १२		
० ४५	२ २१		
० ५०	३ ००		
० ५५	३ ०९		
१ ००	३ १८		
१ ०५	३ २७		
१ १०	४ ०६		
१ १५	४ १५		
१ २०	४ २४		
१ २५	५ ०३		
१ ३०	५ १२		
१ ३५	५ २१		
१ ४०	६ ००		
१ ४५	६ ०९		
१ ५०	६ १८		
१ ५५	६ २७		
२ ००	७ ०६		
२ ०५	७ १५		
२ १०	७ २४		
२ १५	८ ०३		
२ २०	८ १२		
२ २५	८ २१		
२ ३०	९ ००		
२ ३५	९ ०९		
२ ४०	९ १८		
२ ४५	९ २७		
२ ५०	१० ०६		
२ ५५	१० १५		
३ ००	१० २४		

कोष्ठक (२) (बली लग्न की आयु)					
लग्न	आयु	लग्न	आयु	लग्न	आयु
रा. अं. क.	व. मा. दि.	रा. अं. क.	व. मा. दि.	रा. अं. क.	व. मा. दि.
० ०० ००	० ०० ००	४ ०० ००	४ ०० ००	८ ०० ००	८ ०० ००
० ०३ २०	० ०१ १०	४ ०३ २०	४ ०१ १०	८ ०३ २०	८ ०१ १०
० ०६ ४०	० ०२ २०	४ ०६ ४०	४ ०२ २०	८ ०६ ४०	८ ०२ २०
० १० ००	० ०४ ००	४ १० ००	४ ०४ ००	८ १० ००	८ ०४ ००
० १३ २०	० ०५ १०	४ १३ २०	४ ०५ १०	८ १३ २०	८ ०५ १०
० १६ ४०	० ०६ २०	४ १६ ४०	४ ०६ २०	८ १६ ४०	८ ०६ २०
० २० ००	० ०८ ००	४ २० ००	४ ०८ ००	८ २० ००	८ ०८ ००
० २३ २०	० ०९ १०	४ २३ २०	४ ०९ १०	८ २३ २०	८ ०९ १०
० २६ ४०	० १० २०	४ २६ ४०	४ १० २०	८ २६ ४०	८ १० २०
१ ०० ००	१ ०० ००	५ ०० ००	५ ०० ००	९ ०० ००	९ ०० ००
१ ०३ २०	१ ०१ १०	५ ०३ २०	५ ०१ १०	९ ०३ २०	९ ०१ १०
१ ०६ ४०	१ ०२ २०	५ ०६ ४०	५ ०२ २०	९ ०६ ४०	९ ०२ २०
१ १० ००	१ ०४ ००	५ १० ००	५ ०४ ००	९ १० ००	९ ०४ ००
१ १३ २०	१ ०५ १०	५ १३ २०	५ ०५ १०	९ १३ २०	९ ०५ १०
१ १६ ४०	१ ०६ २०	५ १६ ४०	५ ०६ २०	९ १६ ४०	९ ०६ २०
१ २० ००	१ ०८ ००	५ २० ००	५ ०८ ००	९ २० ००	९ ०८ ००
१ २३ २०	१ ०९ १०	५ २३ २०	५ ०९ १०	९ २३ २०	९ ०९ १०
१ २६ ४०	१ १० २०	५ २६ ४०	५ १० २०	९ २६ ४०	९ १० २०
२ ०० ००	२ ०० ००	६ ०० ००	६ ०० ००	१० ०० ००	१० ०० ००
२ ०३ २०	२ ०१ १०	६ ०३ २०	६ ०१ १०	१० ०३ २०	१० ०१ १०
२ ०६ ४०	२ ०२ २०	६ ०६ ४०	६ ०२ २०	१० ०६ ४०	१० ०२ २०
२ १० ००	२ ०४ ००	६ १० ००	६ ०४ ००	१० १० ००	१० ०४ ००
२ १३ २०	२ ०५ १०	६ १३ २०	६ ०५ १०	१० १३ २०	१० ०५ १०
२ १६ ४०	२ ०६ २०	६ १६ ४०	६ ०६ २०	१० १६ ४०	१० ०६ २०
२ २० ००	२ ०८ ००	६ २० ००	६ ०८ ००	१० २० ००	१० ०८ ००
२ २३ २०	२ ०९ १०	६ २३ २०	६ ०९ १०	१० २३ २०	१० ०९ १०
२ २६ ४०	२ १० २०	६ २६ ४०	६ १० २०	१० २६ ४०	१० १० २०
३ ०० ००	३ ०० ००	७ ०० ००	७ ०० ००	११ ०० ००	११ ०० ००
३ ०३ २०	३ ०१ १०	७ ०३ २०	७ ०१ १०	११ ०३ २०	११ ०१ १०
३ ०६ ४०	३ ०२ २०	७ ०६ ४०	७ ०२ २०	११ ०६ ४०	११ ०२ २०
३ १० ००	३ ०४ ००	७ १० ००	७ ०४ ००	११ १० ००	११ ०४ ००
३ १३ २०	३ ०५ १०	७ १३ २०	७ ०५ १०	११ १३ २०	११ ०५ १०
३ १६ ४०	३ ०६ २०	७ १६ ४०	७ ०६ २०	११ १६ ४०	११ ०६ २०
३ २० ००	३ ०८ ००	७ २० ००	७ ०८ ००	११ २० ००	११ ०८ ००
३ २३ २०	३ ०९ १०	७ २३ २०	७ ०९ १०	११ २३ २०	११ ०९ १०
३ २६ ४०	३ १० २०	७ २६ ४०	७ १० २०	११ २६ ४०	११ १० २०
४ ०० ००	४ ०० ००	८ ०० ००	८ ०० ००	१२ ०० ००	१२ ०० ००

सहायक कोष्ठक (२)			
शेष	आयु	शेष	आयु
अं. क.	मा. दि.	अं. क.	मा. दि.
० ००	० ००	३ ०५	१ ०७
० ०५	० ०१	३ १०	१ ०८
० १०	० ०२	३ १५	१ ०९
० १५	० ०३	३ २०	१ १०
० २०	० ०४		
० २५	० ०५		
० ३०	० ०६		
० ३५	० ०७		
० ४०	० ०८		
० ४५	० ०९		
० ५०	० १०		
० ५५	० ११		
१ ००	० १२		
१ ०५	० १३		
१ १०	० १४		
१ १५	० १५		
१ २०	० १६		
१ २५	० १७		
१ ३०	० १८		
१ ३५	० १९		
१ ४०	० २०		
१ ४५	० २१		
१ ५०	० २२		
१ ५५	० २३		
२ ००	० २४		
२ ०५	० २५		
२ १०	० २६		
२ १५	० २७		
२ २०	० २८		
२ २५	० २९		
२ ३०	१ ००		
२ ३५	१ ०१		
२ ४०	१ ०२		
२ ४५	१ ०३		
२ ५०	१ ०४		
२ ५५	१ ०५		
३ ००	१ ०६		

समस्याएं और समाधान

लेखक:- प्रियव्रत शर्मा, 59/6 (अभिजित्), पंचकूला-134109

फलित एवं गणित (सिद्धांत) ज्योतिष से सम्बद्ध अपनी समस्याएं मुझे भेजिए। आवश्यक समझने पर डाक से उत्तर देने का भी मेरा पूरा प्रयास रहता है । लेकिन इसके लिए कृपया जवाबी पत्र न डालिए। यदि मुझे आपकी समस्या का उत्तर पत्र द्वारा देना होगा, मैं अपने व्यय पर ही दे दूंगा। मुझे प्रतिदिन अनेक पाठकों की समस्याएं पत्रों द्वारा प्राप्त होती हैं। सीमित समय आदि के कारण मैं प्रत्येक पाठक को पत्र द्वारा समस्याओं का समाधान भेजने के लिए किसी भी तरह बाधित नहीं होना चाहता।

कृपया कर्मकाण्डसम्बन्धी समस्याएं मुझे मत भेजिए। यह मेरा विषय नहीं है ।

ध्यान दें — मैं ज्योतिष का व्यवसाय नहीं करता हूँ, अतः अपनी ज्योतिषसम्बन्धी व्यक्तिगत समस्याओं के लिए मुझे कृपया पत्र न लिखें, और न ही इसके लिए मुझे कोई फीस वगैरह भेजिए। इस सम्बन्ध में मैं किसी से मिलता भी नहीं हूँ- *प्रियव्रत शर्मा*]

यहां इन समस्याओं के समाधान पढ़िए

(१) सत्यनारायणव्रत की तिथि का निर्णय- प्रकार क्या है ?

(२) वधूप्रवेश या अन्य मांगलिक कार्यों में लग्नाष्टक या राश्यष्टक दोष हो तो क्या किया जाए ?

(३) क्या बात है 'श्रीमार्त्तण्ड पंचाग' में कुछ विवाह-मुहूर्त्तों का निर्देश शुद्ध एवं अशुद्ध मुहूर्त्त - दोनों सूचियों में देखने को मिलता है ?

(४) निर्धारित मापदण्डों की अनुपस्थिति में व्रत-पर्व की तिथि का निर्णय कैसे किया जाता है ?

(५) उड़ते वायुयान में जन्म लेने वाले जातक के जन्मस्थान,काल आदि का निर्णय कैसे होगा ?

(६) ग्रहों के भावफल, दृष्टि तथा पंचधामैत्री-निर्णय आदि के लिए दैवज्ञ लोग भावचक्र का प्रयोग क्यों नहीं करते ?

(७) विभिन्न देशीय/नगरीय पंचांगों में गुरु-शुक्र के लोप-दर्शन की तारीखें भिन्न-भिन्न क्यों होती हैं ?

(८) दिन और रात्रि के मुहूर्त्तों के नाम एवं उनके स्वामी कौन-कौन हैं ?

(९) राशियों के स्वोदयमान किसे कहते हैं, तथा इन्हें ज्ञात करने की क्या प्रक्रिया है ?

(१०) क्या अनुराधा नक्षत्र नीचस्थ चन्द्र के कारण विवाह के लिए त्याज्य नहीं होना चाहिए ?

(११) भद्रा के स्वर्ग, पाताल और भूमि पर वास का क्या अभिप्राय है ?

(१२) सन् २००१ में मकर संक्रान्ति १३ जनवरी की थी लेकिन प्रयाग महाकुम्भ पर्व पर लोगों ने संक्रान्ति स्नान १४ जनवरी को किया ऐसा क्यों ?

(१३) सं. २०५८ में रंगवाली होली कुछ लोगों ने ९ मार्च को और कुछ ने १० मार्च को खेली। यह मतभेद क्यों ?

(१४) कम्प्यूटरों से की जाने वाली भविष्यवाणियां कहाँ तक सत्य होती हैं ?

(१५) कुछ ज्योतिषी लोग भूकैन्द्रिक ग्रह भोगांशों की जगह भूपृष्ठीय ग्रहभोगांशों के प्रयोग की बात करने लगे हैं। आपका इस बारे में क्या मत है ?

समस्या (i)— सं. २०५७ की मार्ग. पूर्णिमा ११ दिसं. को १८ घ.१७ प. मात्र है । आपने इस दिन सत्यनारायण व्रत लिखा है, जबकि इस दिन सांयकाल में पूर्णिमा नहीं है। इस दिन इस व्रत के निर्धारण में क्या शास्त्रीय प्रमाण है ?

(ii)— वधू -प्रवेश या अन्य मांगलिक कार्यों में लग्नाष्टक या राश्यष्टक दोष हो तो क्या किया जाए ?

श्री जिया लाल शर्मा शास्त्री,

मु. बटलौथ P.O. *शिलारु, (शिमला)*

समाधान (i)— १० दिसं. को तो पूर्णिमा सारा दिन (सूर्योदय से सूर्यास्तपर्यन्त) है ही नहीं । ११ दिसं. को यह मध्याह्नकाल से कहीं बाद तक विद्यमान है। अत: इस दिन **''यां तिथिं समनुप्राप्य उदयं याति भास्करः। सा तिथिः सकला ज्ञेया दानाध्ययन-कर्मसु॥''** वाक्यानुसार आपाद्या पूर्णिमा सारा दिन व्याप्त मानी जाएगी। इसी आपाद्या पूर्णिमा के आधार पर सांयकाल में सत्यनारायणव्रत का पूजन एवं उद्यापन करना शास्त्रविहित होगा।

समाधान (ii)— लग्नाष्टक, राश्यष्टक का विचार विशेषेण विवाहलग्न में करने का निर्देश है। पुनरपि वधू-प्रवेशादि के समय केन्द्र-त्रिकोणगत शुक्र, गुरु से यह दोष परिहत समझना चाहिए।

समस्या (i)— क्या बात है 'श्रीमार्त्तण्डपंचांग' में कुछ विवाहमुहूर्त्तों का निर्देश शुद्ध एवं अशुद्ध मुहूर्त्त -दोनों सूचियों में देखने को मिलता है ? जैसे -सं. २०५८ वि. सं. में २६ अप्रै., २९ जून, १३ जुला. आदि के विवाहमुहूर्त्त शुद्ध और अशुद्ध दोनों सूचियों में हैं ? ऐसा क्यों ?

(ii)— कुछ व्रत पर्व निर्धारित मापदण्डों (निर्णायक तत्त्वों) को पूरा नहीं करते - ऐसा कई बार देखा गया है। जैसे- श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के दिन अर्धरात्रि में रोहिणी नक्षत्र कई बार नहीं होता। ऐसी स्थिति में व्रत-पर्व का निर्णय कैसे किया जाता है ?

(iii)— उड़ते वायुयान में जन्म लेने वाले जातक के जन्मस्थान, काल आदि का निर्णय कैसे होगा ?

श्री अश्विनीकुमार शर्मा,

ज्योतिष कार्यालय, नमक मण्डी-अमृतसर

समाधान (i)— यदि एक ही दिन ऐसे दो विवाहनक्षत्र हों जिनमें से एक 'भद्रा, लग्नाभाव आदि के कारण वर्ज्य और दूसरा शुद्ध लग्न के कारण ग्राह्य हो, तब ऐसा होता है। जैसे- २६ अप्रैल को रोहिणी विवाहनक्षत्र में विवाह लग्न बनता है लेकिन इसी दिन मृग. विवाहनक्षत्र में अतिगण्ड की षड्घटी दोष से विवाह लग्न नहीं बनता। इसीलिए २६ अप्रैल शुद्ध एवं अशुद्ध -दोनों विवाहमुहूर्त्त-सूचियों में निर्दिष्ट हैं।

समाधान (ii)— व्रतपर्वों के निर्धारक तत्त्व दो प्रकार के हैं- (१)—निर्णायक, (२)— महत्त्वाधायक। जब किसी विशेष स्थिति में निर्णायक तत्त्व द्वारा व्रत-पर्व की तिथि (दिन)का निर्धारण संभव नहीं होता, तब वहां महत्त्वाधायक तत्त्व के आश्रय से तिथिनिर्धारण किया जाता है। जैसे- श्रीकृष्ण जन्माष्टमीव्रत की तिथि के निर्धारक दो प्रमुख तत्त्व हैं - (१)अर्धरात्रि (चन्द्रोदय) व्यापिनी अष्टमी और (२) रोहिणी नक्षत्र । जहां 'अर्धरात्रिव्यापिनी अष्टमी' निर्णायक और 'रोहिणी नक्षत्र' महत्त्वाधायक है। यदि अष्टमी दो दिन अर्धरात्रिव्यापिनी हो जाए तब रोहिणी नक्षत्र जिस दिन होगा उसी दिन जन्माष्टमी व्रत माना जाएगा। यहां रोहिणी नक्षत्र महत्वाधायक का तत्व है। अत: ऐसी स्थिति में यह जिस दिन विद्यमान होगा, उसी दिन को व्रत के लिए महत्त्व दिया जाएगा। यहां निर्णायकतत्त्व अर्धरात्रिव्यापिनी अष्टमी ही है। रोहिणी नक्षत्र तो महत्त्वाधायक मात्र है। यदि अष्टमी एक ही दिन अर्धरात्रिव्यापिनी हो तो उस दिन रोहिणी नक्षत्र भी हो तो अच्छी बात है, न हो तो भी व्रत उसी दिन होगा। इस प्रकार महत्त्वाध्यायक तत्त्व का अनेक बार व्रत-पर्व-तिथि के निर्णय में कोई योगदान नहीं होता। कई दुविधा वाली स्थितियों में महत्त्वाधायक तत्व भी निर्णायक तत्व का काम करता है।

(iii)— जातक के जन्म के समय वायुयान जिस भूपृष्ठीय बिन्दु के बिल्कुल ऊपर (खमध्य में) विद्यमान होगा उस बिन्दु के अक्षांश और रेखांश ही उसके जन्मस्थान के अक्षांश रेखांश माने जाएंगे। दूसरे शब्दों में यूं समझिए- जन्म के क्षण में वायुयान से गिराई गई लम्ब रेखा भूपृष्ठ को जहाँ स्पर्श करती है उस स्थान पर उस जातक का जन्म माना जाएगा और वहीं के अक्षांश-रेखांशानुसार उसके जन्मकालिक लग्न-दशम का निर्णय करना होगा। (आगे दिया गया चित्र देखें) इस भूपृष्ठ बिन्दु के अक्षांश-रेखांश का निर्णय वायुयान में एतदर्थ स्थापित उन G.P.S. आदि यन्त्रों से किया जा सकता है,

जो प्रतिक्षण यह बतलाते रहते हैं कि वायुयान इस समय कितने अक्षांश-रेखांश वाले भूपृष्ठीय बिन्दु पर उड़ रहा है। जातक के जन्म का G.M.T. समय भी प्रत्येक वायुयान में लगे कालज्ञापक यन्त्र से ज्ञात किया जा सकता है ।
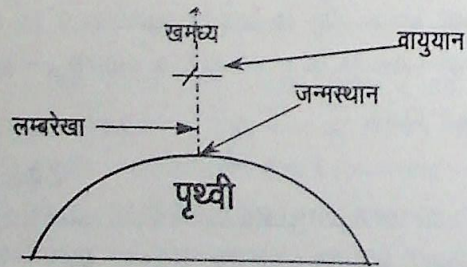
समस्या (i)— ग्रहों के भावफल, दृष्टि तथा पञ्चधामैत्री निर्णय आदि के लिए भावचक्र का प्रयोग होना चाहिए। लेकिन दैवज्ञ लोग ऐसा क्यों नहीं करते ?

(ii)— विभिन्न देशीय/नगरीय पंचांगों में यद्यपि गुरु-शुक्र के भोगांश सर्वथा समान होते हैं, फिर भी इनके लोप-दर्शन की तारीखें इन पंचांगों में भिन्न-भिन्न क्यों होती है ?

पं. कैलाशचन्द्र भारद्वाज,

मानेसर (गुड़गांव), हरियाणा

समाधान (i)— निःसन्देह इनके लिए भावचक्र का ही प्रयोग होना चाहिए। लेकिन दैवज्ञ लोग सर्वत्र राशिकुण्डली का ही प्रयोग सुदीर्घ परम्परया करते चले आ रहे हैं । स्पष्ट है - राशि कुण्डली के प्रयोग में लाघव होने से भावकुण्डली का प्रयोग लगभग लुप्त सा ही हो गया है। और तो और अनेक फलिताचार्यों ने भी भावकुण्डली की उपेक्षा कर राशिकुण्डली से ही अपने ग्रन्थों में फलादेशकथन के सिद्धांत बतलाए हैं।

(ii)— ग्रहों के भोगांश भूकैन्द्रिक होने से किसी भी क्षण विश्व के प्रत्येक स्थान पर वे एक से ही होते हैं। लेकिन उनके उन्नतांशों में स्थान भेद से भिन्नता रहती है और ग्रहों के लोप-दर्शन उनके स्थानीय उन्नतांशों पर ही निर्भर करते हैं। यही कारण है ग्रहों के लोप-दर्शन की तारीखें स्थान-भेद से भिन्न-भिन्न होती हैं। (विशेष स्पष्टता के लिए देखें- 'श्रीमार्त्तण्डपंचांग'(वि.सं.२०५८) पृष्ठ ६८ से ७१)।

समस्या — दिन और रात्रि के १५-१५ मुहूर्त्तों के नाम एवं उनके स्वामी कौन-कौन हैं ?

श्री प्रेमचन्द शर्मा,

मु.पो. चोचड़ा, करनाल (हरियाणा)

समाधान — (१) शिव, (२) अहि,(३) मैत्र, (४) पितर, (५)वसु, (६)अम्भ, (७) विश्व, (८) वेधस् (अभिजित्),(९) ब्रह्मा, (१०) इन्द्र, (११) इन्द्राग्नी, (१२)राक्षस, (१३) अब्धीश, (१४) अर्यमा, (१५)यम- ये क्रमशः १५ मुहूर्त्त दिन के और (१) शिव, (२) अजपाद, (३) अहिर्बुध्न्य, (४)पूषा, (५) दास्त्र, (६) यम, (७) अग्नि, (८) ब्रह्मा, (९) चन्द्र, (१०) अदिति, (११) जीव, (१२) विष्णु, (१३) अर्क, (१४) तक्षन् (१५) मारुत- ये क्रमशः १५ मुहूर्त्त रात्रि के हैं। ये सभी मुहूर्त्त अपने देवताओं के नामों से ही पुकारे जाते हैं।

विभिन्न ग्रन्थों में कई मुहूर्त्तों के नामों (देवताओं) के बारे में मतभेद है।

समस्या — राशियों के स्वोदयमान किसे कहते हैं। इन्हें ज्ञात करने की क्या प्रक्रिया है ?

पं. हरिप्रसाद प्रभाकर,

पो.ओ. खेकड़ा (बागपत) (यू.पी.)

समाधान— पश्चिम से पूर्व की ओर अपने अक्ष पर २४ घण्टों में एक चक्र लगाती हुई पृथ्वी से हमें आकाशस्थ क्रान्तिवृत्त में स्थित मेष आदि १२ राशियों के ३०-३० अंशों के खण्ड पूर्व क्षितिज में उदय होते नज़र आते हैं। भिन्न-भिन्न अक्षांशीय स्थलों पर इन राशिखण्डों के उदयकाल भिन्न-भिन्न होते हैं। अभीष्ट स्थल पर मेषादि इन राशियों के उदयकालों को तत्तद्राशियों के स्वोदय मान कहा जाता है। अलग-अलग अक्षांशों वाले स्थलों पर राशियों के स्वोदयमान ज्ञात करने के लिए 'ग्रहलाघव' के 'त्रिप्रश्नाधिकार' का पहिला श्लोक देखिए।

समस्या (i)— अनुराधा नक्षत्र विवाह के लिए शुभ माना गया है। लेकिन इस नक्षत्र में स्थित चन्द्र नीचस्थ होता है। नीचस्थ ग्रह निर्बल एवं अशुभफलप्रद माना

गया है। क्या इस दृष्टि से अनुराधा नक्षत्र विवाह के लिए त्याज्य नहीं होना चाहिए?

(ii)— भद्रा का स्वर्ग, पाताल और भूमि पर वास मुहूर्त्तग्रन्थों में लिखा मिलता है? इसका अभिप्राय क्या है?

श्री मुरारि लाल शर्मा, बी.ए.,

शाहजहाँपुर (अलवर)], राजस्थान

समाधान (i)— विवाहनक्षत्रों का निर्धारण जब हुआ था, तब ग्रहों की उच्च-नीच राशियों की कल्पना नहीं थी। विवाह के योग्य नक्षत्रों का निर्देश तो वैदिक गृह्यसूत्रों में मिलता है, जबकि उच्च-नीच राशियों का निर्धारण तो 'टैट्राबिब्लोस' की उपज है। इसलिए यह विरोध है। फलितज्योतिष में इस प्रकार की परस्पर स्वतंत्र विचारधाराओं से उत्पन्न अनेक ऐसे सिद्धांत प्रचलित हैं, जिनका परस्पर समन्वय कर सकना संभव नहीं है। ऐसे असंख्य अन्तर्विरोध भी फलितज्योतिष पर अनेक चिन्तकों की अनास्था का कारण है।

(ii)—भद्रा को विष्टिकरण भी कहा जाता है। मूलतः भद्रा आकाश का एक भाग है, जो पृथ्वी के भ्रमण से कभी पृथ्वी से नीचे अधःकपाल में और कभी ऊपर ऊर्ध्वकपाल में स्थित होता है। करणों के बारे में बहुत कुछ अभी ज्ञातव्य है। इस बारे में मेरे अनुज डॉ. शक्तिधर शर्मा का लेख **'पंचांग वस्तुतः पंचांग नहीं'** श्रीमार्त्तण्डपंचांग (सं. २०५८) के पृष्ठ २७६ पर पढ़ें।

समस्या — सन् २००१ ई. की मकर संक्रान्ति पंचांगों में १३ जनवरी को दर्साई गई थी, लेकिन प्रयाग महाकुम्भ पर मकरसंक्रान्ति का स्नान लोगों ने १४ जनवरी को किया। ऐसा क्यों?

मार्त्तण्ड पंचांग के अनेक पाठक

समाधान — संक्रान्ति के पुण्यकाल में ही स्नान-दान-जप का माहात्म्य शास्त्रों में लिखा है। यद्यपि यह मकरसंक्रान्ति शनिवार को थी, लेकिन इसका पुण्यकाल रविवार को था। अतः रविवार के दिन १४ जनवरी को ही लोगों ने स्नान, दान आदि किया।

मकरसंक्रान्ति जिस समय घटित होती है (सूर्य जिस समय मकर में प्रवेश करता है) उससे ४० घड़ी (१६ घण्टे) बाद तक का काल 'मकर संक्रान्ति का पुण्यकाल' कहलाता है।

समस्या — सं. २०५८ में रंगवाली होली भिन्न-भिन्न नगरों में दो भिन्न-भिन्न दिनों में (९ और १० मार्च '०१ को) खेली गई। इस मतभेद का क्या कारण है?

मार्त्तण्ड पंचांग के अनेक पाठक

समाधान — धर्मशास्त्रों में होलिका-दाह का ही वर्णन है, और उसी के निर्णायक तत्त्वों की वहां चर्चा है। इन शास्त्रों में प्रदोषव्यापिनी फाल्गुन पूर्णिमा वाले दिन होलिकादाह करने का निर्देश है। एक दूसरे पर गुलाल, रंग फैंकने वाले पर्व की इन ग्रन्थों में चर्चा नहीं है। यह पर्व स्थानीय परम्परानुसार कहीं होलिकादाह वाले दिन (होलिकादाह से पहिले) और कहीं उससे दूसरे दिन मनाया जाता है। इस पर्व के बारे में परम्परा ही प्रमाण है। धर्मशास्त्रों ने इस पर्व का कोई निर्णायक नियम नहीं बतलाया है।

समस्या — आजकल कम्प्यूटरों से जन्मपत्र बनने लगे हैं। कम्प्यूटरों द्वारा की जाने वाली भविष्यवाणियों की सत्यता के बारे में आपका क्या विचार है?

श्री पी.सी. असधीर,

३३५३/१५-डी, चण्डीगढ़ (यू.टी.)

समाधान— कम्प्यूटरों द्वारा की जाने वाली भविष्यवाणियों में वे सभी दोष / न्यूनताएं होती हैं, जो किसी ज्योतिषी की भविष्यवाणियों में अक्सर पाई जाती हैं, क्योंकि किसी ज्योतिषी द्वारा निर्दिष्ट सिद्धांतों के आधार पर बने प्रोग्रामिंग के अनुसार ही तो कम्प्यूटर भविष्यफल प्रिण्ट करता है। अलग-अलग प्रोग्रमिंग वाले कम्प्यूटर्ज एक ही जातक के बारे में ऐसे अलग-अलग भविष्यफल देते हैं, जिनमें कई बार तो कोई समानता ही नहीं होती। क्योंकि फलादेश के विभिन्न सिद्धांतों में परस्पर काफी विरोध है, अतः उनके अनुसार तैयार किए गए अलग-अलग सॉफ्टवेयर्ज भी परस्पर विरोधी परिणाम देते हैं। फलादेश में इस हास्यास्पद विरोध से बचने के लिए ज्योतिषी लोग कम्प्यूटर का प्रयोग अब केवल जन्मपत्र की गणित के लिए ही करने लगे हैं, फलादेश के लिए उन्होंने इसकी सेवाएं उपलब्ध कराना छोड़ दिया है।

समस्या — कुछ ज्योतिषी लोग भूकैन्द्रिक ग्रहभोगांशों की जगह अब भूपृष्ठीय ग्रहभोगांशों के प्रयोग का समर्थन करने लगे हैं। इस विषय में आपकी क्या राय है?

श्रीजगदीश प्रसाद सांकृत्यायन

8642-गली गोपाल वाली, गोशाला मार्ग-दिल्ली-6

समाधान — विश्व के सभी Ephemeris, पंचांगों में प्राचीनकाल से भूकैन्द्रिक ग्रहभोगांशों का ही प्रयोग निरपवाद रूप से होता चला आ रहा है। केवल ग्रहण, ग्रहयुति, ग्रहोदयास्त आदि में ही भूपृष्ठीय तत्त्वों का प्रयोग होता है। परम्परागत भूकैन्द्रिक ग्रहभोगांशों के स्थान पर भूपृष्ठीय भोगांशों का सिद्धांत अपनाने पर केवल चन्द्र भोगांशों में ही कुछ अन्तर पड़ता है, जिसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती । शेष ग्रहों के भूकैन्द्रिक और भूपृष्ठीय भोगांशों में अन्तर लम्बन की नगण्यता के कारण इतना कम होता है जिसे आसानी से उपेक्षित किया जा सकता है। चन्द्रमा के भूकैन्द्रिक और भूपृष्ठीय भोगांशों में ६१.५ तक का अन्तर घटित होता है, जिससे भूपृष्ठीय एवं भूकैन्द्रिक तिथि-नक्षत्रों के प्रारम्भ-समासिकालों में ५ घटी (२ घण्टे) से भी अधिक तक का अन्तर आएगा। यह परम अन्तर प्रतिदिन (लगभग प्रत्येक तिथि एवं दैनिक नक्षत्र में) चन्द्र के परमलम्बन की स्थिति में (चन्द्र के उदय एवं अस्त के समय) दो बार घटित होगा. हमसे (भारत से) १८० अंश पूर्व और इतना ही पश्चिम में स्थित स्थलों के भूपृष्ठीय चन्द्रभोगांशों का हमारे (भारतीय) भूपृष्ठीय चन्द्रभोगांशों से प्रतिदिन दो बार १२३ (२ अं. ३ क.)का अन्तर घटित होगा। एतदनुसार तिथ्यादिकालों में भी ४ घंटे से भी अधिक अन्तर पाया जाएगा। इसके परिणामस्वरूप अमान्तकाल और सूर्य संक्रान्तिकाल में ४ घण्टे से कम अन्तर रहने की स्थिति में कई बार एक ही समय में हमारे चैत्रादि चान्द्रमास विभिन्न देशों में भिन्न भिन्न होंगे। क्योंकि अमान्तकालिक-सूर्य राशि से ही चान्द्रमासों की चैत्रादि संख्याएं निर्धारित होती हैं (**मेषादिस्थे सवितरि यो यो मासः प्रपूर्यते चान्द्रः चैत्राद्यः स ज्ञेयः ...**)। यह स्थिति अधिकमास वाले स्थल पर संभव है। यही नहीं भारत के भी विभिन्न दो भागों में भूपृष्ठीय चन्द्रभोगांशों के मान में अन्तर के कारण एक ही समय में दो भिन्न-भिन्न चान्द्रमास मानने की स्थिति उत्पन्न होगी। विभिन्न भारतीय स्थलों पर भूपृष्ठीय चन्द्रभोगांशों में यद्यपि बहुत कम अन्तर रहने से विभिन्न भारतीय स्थलों के भूपृष्ठीय अमान्तकालों में २०-२१ मिनट से अधिक अन्तर संभव नहीं है, फिर भी कभी न कभी (भूपृष्ठीय अमान्तकाल और सूर्यसंक्रान्ति काल में २०-२१ मिनट । कम अन्तर प्राप्त होने की स्थिति में) भारत के एक भाग में एक चान्द्रमास और दूसरे भाग में दूसरा चान्द्रमास- इस प्रकार एक ही काल में दो चान्द्रमास मानने की समस्या उत्पन्न हो सकती है। भूकैन्द्रिक चन्द्रभोगांशों से ऐसी समस्या कभी उत्पन्न नहीं होती।

सुदीर्घ परम्पराप्राप्त भूकैन्द्रिक भोगांशों के स्थान पर भूपृष्ठीय भोगांशों का प्रतिष्ठापन करने के लिए प्रयत्नशील महानुभाव शायद यह समझते हैं कि इससे फलादेश की असत्यता की मात्रा में कुछ कटौती होगी। उनकी इस धारणा का कोई ठोस आधार नहीं है। अक्षम्य रूप से परस्पर अन्तरित ब्रह्म, सूर्य आदि सिद्धांत एवं वाक्यग्रन्थों पर आधारित ग्रहभोगांशों के अनुसार परम्परया शताब्दियों से फलित बतलाने वाले भारत के विभिन्न प्रान्तों में प्रतिष्ठित दैवज्ञों के अनेक वर्ग अपने-अपने भविष्य कथन की सत्यता के बारे में आज तक पर्याप्त सन्तोष प्रकट करते चले आ रहे हैं। परस्पर अनेक अंशों का अन्तर रखने वाले विभिन्न अयनांशों से सम्बद्ध विभिन्न निरयण भोगांश भी अनेक अलग-अलग दैवज्ञों की भविष्यवाणी का दृढ़ आधार बने हुए हैं। सायन भोगांशों पर आधारित अविकल भविष्यदृष्टि का भी असंख्य ज्योतिषी दावा करते हैं। पारस्परिक असामञ्जस्य के दृष्टांत दैवज्ञों के इन विविध वर्गों के प्रति श्रद्धालु असंख्य ग्राहकसमुदाय भी, जो भविष्यकथन के आधारों की इस विविधता को नहीं जानते हैं, फलित के प्रति अपनी आस्था को अविच्छिन्न बनाए हुए हैं। ऐसी स्थिति को देखते हुए- यह कल्पना करना कि चन्द्र के भूकैन्द्रिक भोगांशों को भूपृष्ठीय भोगांशों में बदल देने पर फलितक्षेत्र में कोई क्रान्ति आ जाएगी- कोई तत्त्व नहीं रखता। ग्रहभोगांश भूकैन्द्रिक लिए जाएं या भूपृष्ठीय, सायन लिए जाएं या निरयण, अयनांश चित्रापक्षीय हों या रैवतपक्षीय- प्रत्येक स्थिति में फलादेश की यथार्थता के व्यभिचार की प्रतिशतता यथावस्थित ही रहेगी- यह निश्चित है। भूकैन्द्रिकता ग्रहभोगांश जैसे खगोलीय तत्वों का एक ऐसा विशिष्ट गुण है जो उन्हें सार्वदैशिक एकरूपता प्रदान करता है, गणना को लाघव देता है। और इसके विपरीत भूपृष्ठीयता उन्हें एकदेशीय संकीर्ण बनाकर गणना-प्रक्रिया को उलझाती है। किसी उद्देश्य की पूर्ति भी तो यह नहीं करती। अतः स्पष्ट है कोई भी खगोलशास्त्री खगोलीय तत्त्वों की इस वैज्ञानिक विशेषता को छिन्न-भिन्न करने के प्रयास का समर्थन नहीं करेगा।

प्रसूति-लग्न विचार

मेष- जन्म समय मेष लग्न हो, तो माता का पूर्व या पश्चिम में सिर,उपसूतिका दो या तीन, प्रसव में माता को कष्ट अधिक, पाद से प्रसव, भूमि में घर के पूर्व भाग में जन्म हुआ, बालक जन्मोपरान्त दीर्घ शब्द से रोया। माता ने लाल एवं मीठा भोजन किया था। वस्त्र लाल मलिन थे। ४ ।११ ।१६ ।४४ ।५८ वर्षों में बालक कष्ट पावे, इन वर्षों के प्रारम्भ में तुलादान, गोदान, मृत्युञ्जय जप कराना श्रेष्ठ है। इन वर्षों से बचे, तो १०० वर्ष जीवे।

वृष-माता का दक्षिण में सिर, उपसूतिका ३ या ४ जन्मोपरान्त दो और आईं, जन्मते ही बालक दीर्घ शब्द से रोया,गौरवर्ण, अधोमुख, पाद से प्रसव, घर से पूर्व में सूतिका स्थान, श्वेत स्वच्छ वस्त्र, जन्म से पहले माता ने शुष्क शाकादि भोजन किया। १ ।२८ ।३३ ।४४ ।६१ वर्षों में बालक कष्ट पावे। इन वर्षों के प्रारम्भ में महामृत्युञ्जय का जाप और ब्राह्मणभोजन करवाना श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो ९० वर्ष जीवे।

मिथुन-माता का सिर पश्चिम में, उपसूतिका ३या ५ ,माता का हरा या जीर्ण वस्त्र, शिर से प्रसव,मुख ऊपर को , जन्मते ही दीर्घ शब्द किया, नाल छूटा था , घर के आग्नेय भाग में जन्म, माता ने पहले लवणयुक्त विचित्राल्प भोजन किया , दूध कम उतरे । ४ ।१० ।१४ ।३८ ।५८ वर्षों में बालक कष्ट पावे, इन वर्षों के आरम्भ में शिवार्चन और मृत्युञ्जय का जप करवायें । यदि इन वर्षों से बचे तो ८६ वर्ष जीवे ।

कर्क- माता का उत्तर में सिर, उपसूतिका ५ या ४ , बालक जन्मते ही छींका , नाल छुटा, भूमि पर जन्म , घर के दक्षिण भाग में प्रसवस्थान , माता के वस्त्र श्वेत व लाल , माता ने प्रसव के पहले मधुर व शीतल भोजन किया था, दीपक उठाया गया , बालक के वामांग में लहसन आदि का चिह्न , देर से रोया, ५ ।२५ ।४० ।५८ ।६२ इन वर्षों में बालक कष्ट पावे । इनसे बचे तो १०० वर्ष जीवे । कष्टकारक वर्षों कें प्रवेश के समय तुलादान ,छायादान और मृतसञ्जीवनी मन्त्र का जाप करवाना कल्याणप्रद है ।

सिंह- माता का पश्चिम या पूर्व में सिर , मलिन या लाल वस्त्र, शुष्क कसैला या खट्टा भोजन किया था, जन्म समय स्त्री ३, पीछे से १ आई, दीपक स्थिर रहा, बालक जन्मते ही तुरन्त रोया , घर के दक्षिण भाग में प्रसवस्थान , ५ ।१३ ।२८ ।३६ ।४८ इन वर्षों में बालक कष्ट पावे । इनसे बचे तो ६७वर्ष जीवे । कष्टकारक वर्षो के प्रवेश होते ही श्री सूर्यनारायण के मन्त्र का जाप या आदित्यहृदय का पाठ और मीठा भोजन करावे तो कल्याण रहेगा ।

कन्या- माता का दक्षिण में सिर , रक्त जीर्ण वस्त्र, मिष्टान्न बासी-चीज या बड़े आदि का भोजन,जन्म समय स्त्री ३या ५, दीपक हाथ में उठाया गया ,बालक ने जन्मते ही अर्द्ध शब्द किया,घर के नैर्ऋत्य कोण में सूतिका-स्थान , ४ ।१६ ।२३ ।३६ ।५५ वर्ष कष्टकारक है । यदि इन वर्षों से बचे तो १०० वर्ष जीवे ।

तुला -माता का सिर पश्चिम या पूर्व को , श्वेत जीर्ण वस्त्र , भुना हुआ अन्न , ठंडा जल , या कोइ मामूली चीज क्रोधपूर्वक खाई थी। जन्म समय स्त्री ३या ६, वहां १कन्या भी हो , दीपक उठाया गया,बालक जन्म समय कुछ ठहर कर अर्धशब्द करके रोया , घर के पश्चिम भाग में सूतिका स्थान , ८ ।१५ ।३१ ।३५ ।६२ ।६४ इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में नवग्रह का दान , हवन, जप करवाना श्रेष्ठ है । यदि इन वर्षों से बचे तो ७५ वर्ष जीवे ।

वृश्चिक-माता का दक्षिण या उत्तर में सिर , रक्त या दग्ध वस्त्र , कष्ट अधिक,अमधुर मामूली क्रोधपूर्वक भोजन , जन्म समय स्त्री २ या ३, पीछे से भी दो आई , दीपक स्वस्थान में टिका रहा, बालक जन्मोत्तर देरी से रोया। छींक भी किया, दीर्घकेश, घर के पश्चिम भाग में प्रसवस्थान, ११ ।२८ ।३८ ।५२ ।६२ इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में मृत्युञ्जय जप और तुलादान कराना श्रेष्ठ है । यदि इन वर्षों से बचे तो १०० वर्ष जीवे ।

धनु-माता का सिर पश्चिम या पूर्व को , पीत या रक्त वस्त्र, पक्वान्नादि भोजन, जन्म समय स्त्री १या ५,दीपक हाथ में उठाया गया, बालक जन्मोत्तर तत्काल दीर्घ शब्द से रोया और छींक भी किया, घर के वायव्य कोण में सूतिका स्थान २,१०,१८,३१,३८,४२,६७, इन वर्षो के आरम्भ में शिवार्चन, महामृत्युञ्जय जप , ब्राह्मण भोजन श्रेष्ठ है , यदि इन वर्षो से बचे तो ८१ वर्ष जीवे।

मकर-माता का सिर दक्षिण में ऊपर काला वा जीर्ण कमजोर वस्त्र, गुड़, दुग्ध, कसैला भोजन, ठण्डा जलपान किया था। जन्म समय स्त्रियाँ २, पीछे से एक आई । दीपक हाथ में उठाया गया। बालक जन्मोत्तर अर्धशब्द से रोया और छींक भी किया, घर के उत्तर भाग में. पुराना सूतिकास्थान, ५ ।१३ ।२७ ।३६ ।५७ ।६३ ।८७ इन कष्ट कारक वर्षो से बचे, तो ९५ वर्ष जीवे।

कुम्भ-माता का सिर पश्चिम को, जीर्ण, धूम्रवर्ण वा कुरूप वस्त्र, मधुर शीत शाकादि कुभोजन, कष्ट अधिक, जन्म समय पास स्त्रियां ४, दो स्त्री पीछे से आई। उनमें एक स्त्री गर्भिणी भी हो। दीपक स्वस्थान में टिका रहा, बालक जन्मोत्तर अर्द्ध शब्द से रोया, वामांग में कोई चिह्न भी हो, घर के उत्तर भाग में सूतिका-गृह, २ ।२८ ।३३ ।४८ ।६४ इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में तुलादान, गोदान, मृत्युञ्जय जप हितकारक है, इन वर्षों से बचे तो ९० वर्ष जीवे।

मीन-माता को सिर उत्तर में, पीत या मलीन वस्त्र, विचित्र अल्प भोजन, जन्म समय स्त्री २ या ५, दीपक हाथ में उठाया व जलाया गया था, बालक जन्मोत्तर देरी से रोया, घर के ईशान में सूतिका-स्थान, १ ।८ ।१३ ।३६ ।४८ इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में ग्रह-शान्ति हवन मृतसञ्जीवनी मन्त्र का जप कराना श्रेष्ठ है, यदि इन वर्षों से बचे तो ८३ वर्ष जीवे। स्मरण रहे, अधिकांश जिस लग्न के लक्षण मिले-वहीं बालक का जन्मलग्न जानना, क्योंकि यह साधारण लग्न के फल बलाबल के कारण सभी नहीं मिल सकते।

पितृपरोक्ष ज्ञान- (१) जन्म लग्न को चन्द्रमा न देखे,(२) बुध-शुक्र के मध्य में चन्द्रमा हो,(३)लग्न में शनैश्चर चन्द्रमा से अदृष्ट हो,(४)भौम सप्तम, चन्द्रमा लग्न को न देखता हो -इन चारों योगों में से एक भी योग में उत्पन्न हुए बालक का पिता के परोक्ष में जन्म कहना।

जन्म कुण्डली में दिशा ज्ञान- प्रथम भाव पूर्व, द्वितीय,तृतीय ईशान। चतुर्थ-उत्तर। पञ्चम-षष्ठ-वायव्य। सप्तम-पश्चिम। अष्टम, नवम-नैर्ऋत्य। दशम-दक्षिण। एकादश तथा द्वादश भाव को आग्नेय समझना।

प्रसूति स्थान से पाकशालादि विचार

जन्म कुण्डली में सूर्य मंगल जिस दिशा में हो, वहाँ अग्नि स्थान(पाकगृह) जानना, इसी तरह चन्द्रमा से जलस्थान, बुध से भण्डार, गुरु से धनस्थान, शुक्र से देवस्थान और शनि से अशुभ मैला स्थान जानना चाहिए। दोहा- जग्रनाथ जो केन्द्र में तीन दिशा को द्वार। वा लग्न दिशि जानिए कहत बुद्धि आगार॥ केन्द्र(१।४।७।१०)स्थान में एक से अधिक ग्रह हो तो उनमें जो बली(स्वराशिमित्रोच्च व मूल त्रिकोण राशि का)केन्द्र स्थान में स्वमित्र शुभ के नवांश में स्थित ग्रह हो उसकी दिशा में वा-लग्न पति की दिशा में सूतिकागृह का द्वार होता है । **ग्रहों की दिशा**-सूर्य की पूर्व, चन्द्र की वायव्य, भौम की दक्षिण, बुध की उत्तर, गुरु की ईशान, शुक्र की आग्नेय, शनैश्चर की पश्चिम, राहु केतु की नैर्ऋत्य।

चन्द्रात्तैल-ज्ञानम्-चन्द्रमा से दीप के तैल को ज्ञान होता है, जैसे रात्रि का जन्म है और जन्मकाल पर चन्द्रमा के कम अंश व्यतीत हुए हैं, तो दीपक में तैल ज्यादा कहना। यदि चन्द्रमा आधी राशि भोग कर चुका हो, तो दीपक में आधा तैल कहना। यदि चन्द्रमा शीघ्र ही दूसरी राशि पर बदलने वाला हो तो बहुत ही कम तैल कहना। सो० तनुस्थान शशि जाई, वा शशि षष्टे भवन में, शिशु जन्म तब आई, तब कही दीपक तैल नहीं। सित-शनि दशमें धाम, पंचम तनुपै चन्द्रमा, शिशु जन्म में तब वाम, दीपक तैल सौं युक्त कहि।

लग्नाद्दीपवर्ति-ज्ञानम्-जन्म लग्न के कम अंश हो तो बड़ी बत्ती कहना, अधिक अंश हो तो छोटी कहें।

चन्द्रलग्नांतर्गतैर्ग्रहैः स्युरुपसूतिकाः:- यदि लग्न की निर्बलता के कारण लग्न फलानुसार उपसूतिका का पूरा पता न लगे तो जन्म काल में लग्न से चन्द्र पर्यन्त जितने ग्रह हों उतनी ही उपसूतिका कहना। परन्तु जब कोई ग्रह चन्द्रमा के साथ हो तो उसके अंश देखें। यदि उसके अंश चन्द्रमा से कम हो तो उसकी गणना करे अन्यथा उसे नहीं जोड़ें। इस प्रकार जो ग्रह लग्न में हो और उसके अंश लग्न से अधिक हों तब ही उसकी संख्या जोड़े अन्यथा नहीं जोड़ें। लग्नचन्द्रांतर्गत कोई ग्रह वक्र या उच्च का हो तो तीन गुणा करना और स्वराशि, स्वनवमांश, स्वद्रेष्काण में हो तो द्विगुण करना, इसी प्रकार जितने ग्रह नीचे राशि के अस्त होवें उनका आधा करके उपसूतिकाओं में जोड़ने से ठीक उपसूतिका स्त्रियों की संख्या का ज्ञान होगा। इसमें भी विशेष यह ध्यान में रखने योग्य है, कि वह लग्न चन्द्रांतर्गत ग्रह लग्न के भोगांश से सप्तम भाव पर्यन्त होवे तो सूतिकागृह से बाहर समीप में, और सप्तम भाव से लग्न के भुग्तांश पर्यन्त हों तो सूतिका के समीप में अन्दर जानना। उन ग्रहों में जो शुभ ग्रह वहाँ, धर्मशील सौभाग्यवती स्त्रियां कहना, अशुभ ग्रहों से विधवा दुश्चरित्रा कहें।

शय्या-शिर व पाद विचार

"लग्नदिशि शय्या शिरस्त्रिषट्क्रान्त्येषु पादाः।" लग्न की दिशा की तरफ पलंग का सिराहना कहना, अर्थात् १।२ लग्न में पूर्व, ३ में अग्निकोण, ४।५ में दक्षिण,६में नैर्ऋत्य,७।८ में पश्चिम, ९ में वायव्यकोण,१०।११ में उत्तर और १२ लग्न में ईशान कोण की तरफ जानना। तीसरा, छठा, नौवां, बारहवां, स्थान पाये जानना। इन स्थानों में से जिन स्थानों में पाप ग्रह हों वहाँ सूतिका के पलंग का पावा फटा टूटा समझना।

दो०-मीन-मिथुन-सिंह-तुला,मेष होय तत्काल। अन्तरिक्ष भयो बालक,शेषे भूमि विशाल।।

अथ चिह्नज्ञानम्-दोहा-षट्त्रिकोण वा लग्न रवि बुध भाषे धरि ध्यान। वामें कुछ लहसन अहै गर्गवचन परमाण॥ भानु तथा सौरी तनधन कुंज कण्टक चन्द। बालक के षट् अंगुली भाषत कविकुलवृन्द। तनु स्थान में शुक्र हो अष्टम जावे राह। वाम कर्ण वा मस्तके अवश चिह्न दरशाह॥ सुहृद भाव में कवि तव भौम वा सौरी लग्न। वाम पाद के चिह्न को भाषत ज्योतिषमग्न॥ नौमें पांचे भृगु बसे तनु वा चौथे मन्द। मृत्यु जावे बुध गुरु उदरे चिह्न भणंद।''

प्रसवकष्ट दूर--प्रसव काल से पहले शुक्लपक्ष के चतुर्दशी को प्रातः सूर्योदय से पहले सहदेवी या अपामार्ग (पुठकंडा) की जड़ें लाकर घृतयुक्त गुगुल की धूनी देकर कटि में बांधे और साथ ही ''ओंमुक्ताः आशा विपाशाश्च मुक्ताः सूर्येण रश्मयः। मुक्ताः सर्वभयाद् गर्भमेहि माचिर-माचिर-स्वाहा॥'' इस मंत्र से सात बार शुद्ध जल अभिमन्त्रित करके गर्भिणी स्त्री को पिलावे तो सुख से ही शीघ्र प्रसव होगा। अगर तीस का यंत्र भी अनार की कलम से कांसे की थाली में लिख धोकर पिला देवें तो गर्भिणी को कोई भय न होवे, बच्चा बिना कष्ट पैदा होवे। स्मरण रहे कि पहले उपरोक्त मंत्र तथा तन्त्र ग्रहण के समय या दीपमाला की रात्रि को मन्त्र का जाप करके तथा यन्त्र को लिखकर सिद्ध कर लेवें, तब कष्ट को मिटाता है।

बालक के लिए अरिष्ट

दो०:- द्यूनाष्टमतनु पाप खग, बरहै शशि जो खीन। कण्टक शुभ खगना बसै, वेगि ताहि यमलीन। बसै चन्द्रा द्वादसे अष्ट भवन दो पाप। एक मास में शिशु मरे मातु पिता संताप॥ लग्नाष्टम शशि राहुयुत जन्म समय जो पाप। एक मास में शिशु मरे मातु पिता संताप। लग्नाष्टम शशि राहुयुत जन्म समय जो पाव। बालक दशवासर जिये कहत बुद्धि गुण भाव॥''

अथ काणयोग--तनु धन व्ययपतियुक्त भृगु आई बसे त्रिकधाम। वा शशि धन कवि पाप युत, ताहि नेत्र बेकाम। सार्कशुक्र तनुनाथयुक्त भवन बसै त्रिक जाय। जन्म अन्ध यह योग है भाषत बुध समुदाय॥ तात मात भ्राता तनय मातुल त्रियधर नाथ॥ चन्द्र भौम जो द्वादशे वाम नैन की हान॥ भानु राहु दहनो नयन, बुधजन कहत बखान॥''

मूकयोग-''पञ्चमेश गुरु युक्त त्रिक मूक बाल तब होय। जौन भौमपतियुक्त गुरु त्रिकहि मूक कहि सोय॥ शुक्र त्रिके गुरु सिंह अज दशम भानु कुज वास। मूक होय संशय नहीं बुधजन करत प्रकाश।''

दुःखदयोग -रिपु मृत्यु द्वादश गेह में पाप युक्त लग्नेश । जन्म समय जाके परे ताको अंग कलेश ॥ पाप युक्त तनु भवन में रिपु मृत्युप के ईश । यथा जोग जाके परे तनु मुख विश्वाबीस॥ पापग्रहयुत लग्न पति परै लग्न में आय । वीर्यहीन नर होय तो अधिक व्याधि रुजताय॥

बन्धनयोग- क्रूर रहै धन नवम व्यय, और पञ्चम आगार। सो नर सूर कसूर करि निवसै कारागार॥

सर्पवेष्टितयोग- यदि अष्टमेश लग्न में राहु सहित हो तो बालक सर्पवेष्टित अर्थात् सर्प जैसे नाल से वेष्टित होता है ।

यमल जन्मयोग- चतुष्पद राशि (मेष, वृष, सिंह,मकर का पूर्वार्द्ध और धन के उत्तरार्द्ध)का सूर्य होवे , शेष ग्रह बलवान् होकर द्विस्वभावराशि के लग्न में स्थित हों तो यमल अर्थात् दो

बच्चों का इकट्ठा जन्म कहना। अथवा आधान लग्न (गर्भ वाले दिन का लग्न)का स्वामी लग्न में हो तो यमल का जन्म होता है।

माता बच्चे को त्याग दे-शनि मंगल से ५।७।९ स्थान में चन्द्रमा हो तो माता बालक को त्याग दे, यदि गुरु देखता हो तो त्याग देने पर भी दीर्घायु हो।

मृत्यु-समय-विचार-- जिन अरिष्ट योगों में मरण काल नहीं कहा गया, उन अरिष्ट योगकारक ग्रहों में जो ग्रह बली हो,वह जन्मकाल में जिस राशि में स्थित हो उस राशि में जब चन्द्रमा आता है तब मृत्यु कहना। अथवा-जन्मकाल में जिस राशि में चन्द्रमा स्थित हो जब फिर उसी राशि में चन्द्रमा आता है, तब मरण कहना। अथवा चन्द्रमा जब लग्न राशि में आता है,तब मरण कहना। अथवा वर्ष के भीतर जब जिस योगयुक्त स्थान में जाकर चन्द्रमा बली हो और पापग्रहों द्वारा देखा जाता हो, तब मरण कहना चाहिए। किन्तु जब तक आयु का विचार न हो सके तब तक अन्य विचार करना निरर्थक है, इसलिए आयु का प्रथम विचार करे, फिर मृत्यु कहें।

सुखदयोगा:-अंगधीश निज लग्न में बुध गुरु कवि के संग। या केन्द्र गृह दो परे तो जानो सुख संग॥ जन्म लग्न में उच्च ग्रह जो काहु के होय। मित्र दृष्टि ता पर परे सर्वसुखी नर होय॥

क्लीब (नपुंसक)योगा:-- दशम भवन भृगु मन्द दोउ क्लीब योग तब जान। शुक्र भवन से रिष्फ षट मन्द बसे क्लि भानु॥

कुष्ठयोगा:--लग्नप बुध कुज शशि युते राहुयुक्त या केतु। श्वेतकुष्ठ को योग यह वरणत गुणी सचेतु॥ भौम भास्कर मन्दयुक्त रक्तकृष्ण कह कुष्ठ। लग्नाधिप रविसाथ त्रिक तापगण्ड अति रुष्ट॥ जलजगंडयुत चन्द जो ग्रन्थिगंड कुज साथ। पित्त रोग तब जानियो बुध त्रिकयुत तनु नाथ॥ आमरोग गुरुयक्त त्रिक क्षयी रोग भगसून। यमतम शिखि वा युक्त त्रिक, दिन प्रति रुजि कहि दून॥

केमद्रुम:-आगे पीछे चन्द्र के जो ना परै ग्रह कोय। केमद्रुम यह योग है सब धन डारे खोय॥ उच्च चन्द्र शुभयुक्त दृग केन्द्रधाम में होय। तब केमद्रुम शुभ कहे दोष न मानो कोय॥

स्त्रीजातक

क्रूरलग्नयुक्त क्रूर जो, स्वामी दृष्टि नहीं होय। सो कन्या कुल गरल है, भूलि न व्याहेउ कोय॥ जाके कुज दशमे बसै ऋणी होय पति तासु। लग्न राहु शनि सातवें पति जीवे नहीं जासु। क्रूर युक्त लग्नेश जो पापग्रहों के बीच सो कन्या व्यभिचारिणी बुधवर कहै कुज नीच। राहु शुक्र जो लग्न में कन्या को पति और। पाप दृष्टि शनि सातवें कन्या वास कुठौर। लग्न बीच शनि कुज तमसि निर्धन स्वेच्छाचारि। सप्तम कुज राण्ड कहै पति को तजि तमारि। छटे आठवें चन्द्र जो क्रूर पर निज अङ्ग। भौम आठवे भवन में सो पति करै है भंग॥ राहु सातवें लग्न कुज कंटक शुभ सो हीन। ताको पति जीवित रहे वर्ष दो या तीन॥ द्वादशाष्ट कुज कूरयुत राहु बसै त्रिकधाम। राण्ड होय कुछ दिवस में कहत गणक गुणग्राम॥ पापग्रहों के बीच में लग्न होय वा चन्द। सो त्रिय नासे कुलो दुबो भाषत कविकुल वृन्द॥ सप्तम भृगु जाके बसै सो कुल दोषी नारि। रूपवती तनु भृग बसै बुधजन कहत विचारि॥

वैधव्य-विषकन्यायोगा:-चौ.- रविवार द्वितीया जो होय श्लेषा ताहि दिन में जोय॥ १ ॥ कृत्तिका होय शनिश्चर वार साते तिथि को करो विचार॥२ ॥ होय शतभिषा मंगलवार कहो द्वादशी तिथि निर्धार॥ ३ ॥ इन योगन में कन्या होय निश्चय विधवा जाने सोय॥ ४ ॥ जन्मलग्न द्वै शुभग्रह होय एक पाप ग्रह नभ १० में जोय॥५ ॥ शत्रु क्षेत्र में द्वै ग्रह मानो ता कन्या को विधवा जानो॥ ६ ॥ अश्लेषा द्वितीया को होय मंदवार युत लीजो जोय॥ ७ ॥ परे शतभिषा मंगलवार साते तिथि लीजो निर्धार॥ ८ ॥ रविवार द्वादशी जो होय नक्षत्र विसाखा जानो होय॥ ९ ॥ ऐसो योग लखो जो परै तो कन्या को विधवा करै॥ १० ॥ दो० धर्म सदन में भूमिसुत जन्म सदन शनि जान। सूर्य होत सुत सदन में कन्या विधवा मान॥ ११ ॥

वैधव्य- विषकन्याभंगयोग:-जन्मलग्न या चन्द्र ते शुभग्रह सप्तम होय। अथवा सप्तम लग्नपति सुभगा कन्या होय॥

काकवन्ध्यादियोग:-- ज्ञे अष्टमे काकबन्ध्या। मन्दार्कावष्टमे बन्ध्या अष्टमे जीवे वा शुक्रे नष्टगर्भा वा मृतापत्या॥

स्त्रीणां राजयोग:--चौपाई- केन्द्रधाम नभगा शुभ होई नरतनु पाय कलत्र समोई। रानी होय बहुत धन ताके मन प्रसन्न होई है सुत वाके-चन्द्रज तुग बसे तनु जाई लाभ धन गुरु आवे धाई। सो तिय होय नृपति की नारी जन विख्यात होय सुकुमारी। जो षडवर्ग शुद्ध गुरु होई शशि दृग केन्द्र भवन में होई॥ ऐसे योग जन्म सुकुमारी रानी होय सदन धनभारी॥ दोहा....कर्क चन्द्रमा सातवें जीव दृष्टि परिपूर। पुत्र पौत्र धन भूरि युत ताको पति नृप शूर॥ लाभ भवन सित चन्द्र जो सोमज सप्तम भौम। सुरगुर परिपूर्ण लखे रानी होई है तौन॥

स्त्रीणां पुत्रभावविचार:--पञ्चमें शुभदृष्टे च पञ्चमाधिपतावपि। केन्द्रकोणे तदा नारी बहुपुत्रवती भवेत्''॥

अशुभ प्रसव मास:-कार्तिक में स्त्री,भाद्रपद में गौ,मार्गशीर्ष में हथनी,श्रावण में गधी व घोड़ी,माघ में भैंस,ज्येष्ठ में बिल्ली,बैसाख में ऊँटनी,पौष में बकरी,चैत में कुतिया के बच्चे जन्में तो ६ मास में पिता व घरवाले की मृत्यु अथवा महाभय होता है। माघ में बुधवार को भैंस,श्रावण में दिन में घोड़ी प्रसूति हो तो महाभय शीघ्र होवे। स्मरण रहे कि यहां सर्वत्र सौरमास ग्रहण है, प्रसूता गौ आदि का तत्क्षण दानकर व्याहृति मन्त्रों से घृतयुक्त श्वेत सरसों का हवन करें, बच्चा जन्में तो कार्तिक शान्ति करने से शुभ है।

त्रिखलजन्म फल:-यदि तीन कन्याओं के पश्चात् पुत्रोत्पत्ति हो अथवा तीन पुत्रों के पश्चात् कन्या का जन्म हो तो त्रिखल नामक दोष के कारण कन्या माता को,लड़का पिता को भय,धनहानि आदि कष्टप्रद होते हैं,कृपणता छोड़कर त्रिखल शांति करें तो शुभ होता है। तीन अन्न,तीन वस्त्र,तीन धातु(सोना,चांदी,तांबा)दान करें।

बालक की दन्तोत्पत्ति का फल

बालक के जन्मते ही दांत निकले हो तो माता-पिता को अरिष्ट,ऊपर की पक्ति में दांत से युक्त जन्म ले तो अधिक अरिष्ट, प्रथम ऊपर की पंक्ति में दांत निकले तो मातृपक्ष को भय हो, मामा शान्ति करे। पहले मास में दांत निकले तो शरीर नष्ट, द्वितीय में छोटा भ्राता नष्ट, तृतीय में भगिनी नष्ट, चुतुर्थ में भाई नष्ट,पांचवे में ज्येष्ठबन्धु नष्ट,छठे में बहुभोग,सातवें में पितृ सुख,आठवें में पुष्टि,९वें में धनी, १०वें में सुख,११वें में सुख,१२वे में धनी।

अथैकनक्षत्रजनन-फल :--वृद्ध गर्ग कहते हैं, कि- यदि भ्राताओं वा पिता - पुत्र, माता वा कन्या का एक नक्षत्र हो तो दोनों की अथवा एक की अवश्य मृत्यु होती है। स्वर्णदान से कल्याण होता है।

जन्म-कुण्डली से विशेष विचार

लघु-भ्राता का जन्म समय जानना-(१) जन्म लग्न स्पष्ट में दशम भाव का स्पष्ट जोड़ें,जो राशि हो उस पर जब गोचर में गुरु ग्रह आवे तो भाई या बहन का जन्म होता है।
(२) तृतीयेश, तृतीयस्थग्रह की दशा में छोटे भ्राता का जन्म होता है , यदि भ्रातृ-प्रतिबन्धक योग न हो तो ।

भ्राता के कष्ट (खतरे) का समय जानना-(१)जन्म लग्न के स्पष्ट में से तृतीयेश के स्पष्ट को घटावें, शेष राश्यादि का जो नक्षत्र हो उस नक्षत्र पर जब गोचर में शनि आता है तब भाई या बहन को कष्ट होता है।
(३)लग्नेश स्पष्ट में से तृतीयेश स्पष्ट घटावें, शेष में दशमेश स्पष्ट और मंगल-स्पष्ट घटावें - शेष राशि में जब गोचर का शनि आता है तब भ्रातृकष्ट होता है।
(४)लग्नेश, तृतीयेश, दशमेश,भौम, इन चारों स्पष्टों को जोड़कर जो राश्यादि हो उसके नवांश राशि में जब गोचर का शनि होता है उस काल में भ्रातृ-कष्ट होता है।
(५)लग्नेश,तृतीयेश, दशमेश ओर भौम को जोड़कर जो राश्यादि हो उसके द्रेष्काण राशि में जब गोचर का गुरु होता है, तब भ्रातृकष्ट जानिये।

माता की मृत्यु का समय जानना-(१)जन्म के सूर्य में से चन्द्रस्पष्ट को घटावे शेष की राशि में या त्रिकोण राशि में या उस शेष राशि के नवांश राशि में जब गोचर का शनि या गुरु होगा तब माता की मृत्यु का समय जानना।

अथ कन्याजन्मनि मूलचक्रम्

शीर्षे	मुखे	कण्ठे	हृदये	बाह्वो	हस्ते	गुह्ये	जंघा	जान्वो	पादे	स्थानम्
४	६	५	५	५	४	९	४	४	१०	घटी
पशुना.	धनना.	धनला.	कुटिला	धनला.	दयावती	कामिनी	मातृना.	भ्रातृना	वैधव्य	फलम

कन्याजन्मनि नक्षत्रफलम्

जन्म नक्षत्र	मूल (१।२।३ च.)	आश्लेषा (२।३।४ च.)	ज्येष्ठा	विशाखा (४च.)
फलम्	ससुरहानि	सास नाश	ज्येष्ठनाश	देवरनाश

सुतः सुता वा नियतं श्वशुरं हन्ति मूलजः। तदन्त्यपादजो नैव तथाश्लेषाद्यपादजः।

तिथिगण्डान्त-पूर्णा तिथियों के अन्त की ७ घड़ी, नन्दा तिथियों की शुरू की दो-दो घड़ी तिथि गण्डान्त होता है। यह गण्डान्त जन्म, यात्रा, विवाह में भयप्रद होता है।

अथ गण्डमूलनक्षत्राणि

अश्विनी	आश्लेषा	मघा	ज्येष्ठा	मूल	रेवती

उपरोक्त ये ६ नक्षत्र गण्डमूल कहलाते हैं, इन नक्षत्रों में उत्पन्न होने वाला बालक, माता, पिता, कुल और अपने शरीर का नाश करने वाला होता है। यदि अपना शरीर नष्ट होने से बच जाए, तो धन तथा घोड़ों का स्वामी होता है।

गण्डमूल में उत्पन्न पुत्र का ६ मास अथवा २७ दिन तक पिता को दर्शन नहीं करना चाहिए, तत्पश्चात शान्ति करके विधि से मुख देखना कल्याणप्रद है।

मूल और आश्लेषा नक्षत्र के चरण जन्मफल

मूल पाद	फल	आश्लेषा पाद	फल
१	पितृनाश	४	पितृनाश
२	मातृनाश	३	मातृनाश
३	धननाश	२	धननाश
४	शान्ति से मुख	१	शान्ति से सुख

मूलजनने वृक्षविभाग फलम्

मूल	स्ताम्भ	त्वचा	शाखा	पत्र	पुष्प	फल	शिखा	विभाग
७	८	१०	११	१२	५	४	३	घटी
मूल नाश	वंश नाश	मातृ क्लेश	मातुल नाश	मन्त्री पद	मन्त्री पद	विपुल लाभ	अल्प जीवन	फल

अथ मूल पुरुष चक्रम्

मूर्ध्नि	मुख	स्कन्धे	बाह्वोः	हस्ते	हृदये	नाभौ	गुह्ये	जान्वोः	पाद	स्थान
५	७	४	८	४	९	२	१०	६	६	घटी
राजा	पि.मृ.	बली	बली	ज्ञानी	मन्त्री	ज्ञानी	कामी	मतिमा.	मतिमा.	फलम.

अथ मूलनिवासचक्रम्

जन्ममासानुसारेण	वै. ज्ये. मार्ग. फा.	चैत्र, श्रा. का. पौ.	आषा. आ. माघ. भा.
जन्मलग्नानुसारेण	२।५।८।११	३।६।९।१२	१।४।७।१०
मूलनिवासस्थानम्	पाताले	भूमौ	स्वर्गे
फलम्	शुभम्	कुलनाशः	शुभम्

मूल का निवास मास व लग्नानुसार दोनों प्रकार से भूमि पर आवे तो महाभयप्रद होता है,एक प्रकार से स्वल्पभय होता है। तृतीया,दशमी,षष्ठी शनिभौमसमन्विता। शुक्ला चतुर्दशी मूले जातः संहरते कुलम्॥ यत्र गण्डे क्रूरयुते महादोषकरो भवेत्। शुभग्रहसमायोगे ईषच्छुभकरंभवेत्॥ दिनक्षये व्यतीपाते व्याघाते विष्टिवैधृतौ। शूले गंडातिगडे च परिघे यमघण्टके॥ ब्रह्मदण्डे मृत्युयोगे प्राप्ते गंडदिने शिशुः। जातो हन्ति कुलं सर्वं तस्मात् कुर्वीत शान्तिकम्॥यथा सर्पविषंचैव मन्त्रश्रवणाद्विलीयते। तथैव गंडदोषोऽपि विधानेन विलीयते॥ रत्नैः शतौषधीमूलैः ससमृद्भिः प्रपूर्यते। शतच्छिद्रं घटं तस्मान्निःसुतेन जलेन हि॥बालकस्यापि तत्स्नाने विप्रैः सम्पादिते सति। जपहोमप्रदानेन कृते स्यान्मंगलं ध्रुवम्॥विरुद्धावयवे मूले विधिरेव स्मृतो बुधैः। मुनीनां वचनं सत्यं मन्तव्यं क्षेममीप्सुभिः॥

अथाभुक्तमूलविचार :- ज्येष्ठा नक्षत्र की अन्तिम चार घटी, किसी के मत से एक घटी एवं मूल नक्षत्र की आदि की चार घटी विशेष आधी, अभुक्तमूल कहलाता है। इस

समय में जो बच्चा जन्म ले उसका परित्याग कर दें या आठ वर्ष, असमर्थ हों तो ६ मास अथवा २७ दिन तक पिता मुख न देखे। धनगंडे दरिद्रोऽपि शांतिं कुर्यात्स्वशक्तितः। अन्यथा नाशमाप्नोति चाभुक्तर्क्षे विशेषतः॥

गण्डमूलोत्पन्न बालक का जन्मकाल फल

दिन में	रात्रि में	सन्ध्या	प्रातः	समय
मू. ज्ये. पिता को भय	मू. मू. माता को भय	रे. अश्वि. शरीर को भय	पशु- हानि	फल

अथ पुरुष जन्मकुण्डल्यां भावस्थ-ग्रह फलानि

भाव	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तनु १	अंगपीड़ा	कान्तिसुख	रक्तकोप	सुखी	विद्वान्	सुखी	दुखी	रोगी	सकाम
धन २	धननाश	सम्पत्तिवान्	ऋणी	धनी, गुणी	धनागम	धनी	धनहानि	निर्धन	खल
सहज ३	नीरोगी	कीर्तिमान्	विक्रमी	अरिमर्दन	पापी	पापी	पराक्रमी	विक्रमी	शूर
सुहृत् ४	दुखी	सुखभोगी	दुःखी	सुखी	सुखी	सुखी	दुखी	मातृहा	दुःखी
सुत ५	सुतहानि	धनी, पुत्रवान्	पुत्रहीन	अल्पपुत्र	प्रतापी	धीमान्	पुत्रहीन	कुमति	मूर्ख
शत्रु ६	शत्रुनाश	अल्पआयु	शत्रुनाश	रोगी	कामी	रोगी	शत्रुजित्	सबल	सबल
स्त्री ७	स्त्रीदुष्टा	सुभार्यावान्	स्त्रीनाश	धर्मज्ञ	सुभार्या	कामी	स्त्रीकुलटा	स्त्रीरोगी	स्त्रीहा
मृत्यु ८	अल्पायु	योगी	शरीरपी.	गुणी	नीचस्व.	नीच	नेत्ररोगी	रोगी	क्लेशयुक्त
धर्म ९	दुष्टमति	धर्मात्मा	पापरत	सुखी	धार्मिक	तपस्वी	दुष्टबुद्धि	दैन्ययुक्त	पापी
कर्म १०	शूर	तेजयुक्त	तेजस्वी	कीर्तिमान्	सम्पत्तिमान्	संपत्ति	पराक्रमी	मानी	पितृहीन
लाभ ११	धनी	धनी	धनी	धनी	सुलाभ	सुमति	धनवान्	सुख्यात	धनी
व्यय १२	दुष्टस्वभाव	कामी	पतितदार	दरिद्र	खल	रोगी	दुःखी	पतित	दुर्जन

अथ स्त्रीजन्मकुण्डल्यां भावस्थग्रहफलानि

भाव	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तनु १	क्रोधिनी	गतायुः	विधवा	सौभाग्य	सती	ससुखा	बन्ध्या	पुत्रहीना	दुखिनी
धन २	दरिद्रा	बहुधन	वन्ध्या	धनाढ्य	धनाढ्या	सुभगा	दुःखिनी	दरिद्रा	दुःखार्ता
सहज ३	सुसुता	सुखिनी	विसहजा	पुत्रवती	सुसहजा	धनाढ्या	सुदक्षा	सवित्ता	रोगिणी
सुहृत् ४	सपीड़ा	दुर्भगा	दुःखार्ता	सुगृहा	सुखिनी	सुखिनी	हृद्रोगा	रोगार्त्ता	मातृहा
सुत ५	विपुत्रा	ससुखा	विपुत्रा	धीकांतियुत्ता	सगुणा	पुत्रवती	विपुत्रा	विपुत्रा	अपुत्रा
शत्रु ६	सुखिनी	सरोगा	अरोगा	सकोपा	सापदा	दरिद्रा	गुणज्ञा	सधना	धनयुता
पति ७	दुःखार्ता	पतिप्रिया	विधवा	पतिव्रता	कीर्तियुता	पतिप्रिया	विधवा	दुःखिता	विधवा
मृत्यु ८	विधवा	रोगिणी	विधर्मा	कृतघ्ना	सरोगा	विसुखा	दुःखिनी	विधवा	दुःखिनी
धर्म ९	धर्मज्ञा	सुखिनी	दुःखिनी	सुभोगा	पुत्राढ्या	धर्मरता	वन्ध्या	वन्ध्या	शोकयुक्ता
कर्म १०	सुकर्मा	धर्मज्ञा	कुपुत्रा	सत्कर्मा	साध्वी	सधना	पापिनी	दुष्कर्मा	पापिनी
लाभ ११	सधना	गुणज्ञा	सुलाभा	पतिव्रता	सुपुत्रा	सुपुत्रा	सुलाभा	नीरोगा	सुभगा
व्यय १२	क्रोधिनी	हीनांगी	खला	कृशांगी	सुव्यया	सुव्यया	मूढा	दुष्टा	रोगिणी

अश्विनीजातस्य फलम्– अश्विनी नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म हो तो पिता को भय, द्वितीय में सुखेश्वर्य, तृतीय में मंत्री तुल्य, चतुर्थ में नृपति समान होता है।

मघाफलम्-मघा के प्रथम चरण में जन्म हो तो माता या मातृपक्ष को हानि, दूसरे में पिता को भय, तीसरे में सुख, चतुर्थ चरण में धन विद्या लाभ होंगे।

ज्येष्ठापाद फलम्– प्रथम चरण में बड़े भाई को नेष्ट, द्वितीय में छोटे का नाश, तृतीय में माता का नाश, चतुर्थ में अपने बाप का नाश होता है। ज्येष्ठाद्यपादजी ज्येष्ठं हन्ति बालो न बालिका। न बालिका तु मूलर्क्षे मातरं पितरं तथा।

रेवतीपाद फलम्–रेवती के प्रथम चरण में जन्म हो तो नृप समान, दूसरे में मंत्री या मुख्तार, तीसरे में सुख सम्पत्तियुक्त, चतुर्थ चरण में अनेक कष्ट हों।

अथ मातृसुखनाश योगा :-(१)पापग्रह युक्त चन्द्रमा सातवें भाव में होवे,(२) चन्द्रमा से सातवें पापयुक्त शुक्र हों, (३)पाप ग्रहों के बीच चन्द्रमा हो अथवा चन्द्रमा से चौथे सातवें पापग्रह हो,(४)तीसरे अथवा सातवें स्थान में सूर्य और लग्न में मंगल होवे,(५)चौथे भाव में शनि पापग्रहों से ही दृष्ट हो – इन पाचों में से एक भी योग मिले तो माता को भय हो, जप दान करना चाहिए ।

पितृनाश योगा – (१) सूर्य मंगल दसवें वा नवम में गये हो(२) दशमेश रवि मंगल से युक्त हो,(३) शत्रु राशि का मंगल १०वें हो, (४)पापग्रह से युक्त सूर्य सातवें हो,इन चार योगों में से एक भी योग हो तो पिता को भय हो ।

भ्रातृनाश योगाः- भ्रातृ गृह को ईश जो भौम संगत्रिक होय। जाके ऐसे योग है भ्रातृहीन नर होय॥

सन्तानसुख नाशयोगाः- गुरु ते पञ्चम गेह पति, जाय परे त्रिक भाव। ऐसा योग जो लखि परे ताकि पुत्र अभाव । पुत्र धर्म अरु लग्नपति जाय परे, त्रिक धाम। जन्म समय या योग ते सदा पुत्र की हान।

रोगिणी स्त्रीयोग- शुक्र और सूर्य सप्तम, पंचम और नवम में हो तो उसकी स्त्री प्रायः रोगयुक्त रहती है ।

नीचयोगाः-सहज सप्तम धन सदन में क्रूर बसे खग आई। भवन पांचवें गुरु बसै नीच जाति मनसाई॥ सिंह लग्न जन्मे शिशु सप्तम शनि विकराल। म्लेच्छ होय कुछ दिवस में यदपि ब्रह्म को बाल। जिनके बुध भग राह सग सप्तम भाव विराज। लहे सर्वदा राजसुख होवे वेश्यावाज।

जारज योगा : –भानुचन्द्रतनु ना लखै लग्नप लखै न लग्न। सो शिशु है पर पुरुष को भाषत ज्योतिषमग्र॥ रवि कुज गुरु तिथि अष्टमी चौथ चतुर्दशी सार। तीन उत्तर जन्म में तब शिशु कहो परार॥

गोचरग्रहाणां द्वादशभाव-फल बोध-चक्रम्

गृह	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्यः	स्थानना:	भय	श्री:	मानभंग	दैन्य	विजय:	यात्रा	पीड़ा	सुकृ. ना.	सिद्धि:	धनलाभ	द्रव्यनाश
चन्द्रः	अन्नलाभ,	धननाश	सुख	रोग	कार्यनाश	धनलाभे	स्त्रीलाभ	रोग:	धर्मलाभ	सौख्यं	धनलाभ	धननाश
भौमः	शत्रुभीति,	धननाश	धनलाभ	शत्रुभय	धननाश	धनलाभ	द्रव्यनाश	शत्रुभीति	शत्रुभय	शोक:	धनलाभ	धननाश
बुधः	बन्धनं	धनलाभ	शत्रुभय	पशुलाभ	सुखं	स्थानलाभ	पीड़ा	धनला.	पीड़ा	सौख्यं	धनलाभ	धननाश
गुरु.	भयं	धनलाभ	क्लेश	धननाश	सुखं	शोक	राजमान	पीड़ा	सौख्य	दैन्यं	धनलाभ	पीड़ा
शुक्रः	शत्रुनाश,	धनलाभ	सौख्यं	धनलाभ	पुत्रलाभ	शत्रुभय	शोक:	धनलाभ	वस्त्रलाभ	दु:ख	धनलाभ	धनलाभ
शनिः	भय	धननाश	ऐश्वर्य	शत्रुभय	पुत्रनाश:	धनलाभ	दोष	पीड़ा	धर्मनाश	दौर्मनस्य	धनलाभ	धननाश
राहुः	हानि	धननाश	धनलाभ	वैर	शोक :	श्री:	कलह:	मृत्यु	दु:ख	वैर	सुखं	शोक
केतुः	रोग	वैर	सुख	भय	सुखं	धनलाभ	कलह:	रोग	पाप	शोक:	कीर्ति:	शत्रुभीति

अथग्रहाणामेक भोगफल-समयादि ज्ञानम्

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा. के	ग्रहा:
मा.१	दि. २।	मा१ ॥	मा. १	मा.१२	मा.१	मा.३०	मा.१८	एकार्थभोग
आदौ	अन्ते	आदौ	सदा	मध्ये	मध्ये	अन्ते	अन्ते	फलसमय:
भय.५	घ.३	दि.८	दि.७	मा.२	दि.७	मा.६	मा.३	गतव्यराशे:
								प्राक्फलम

अथ ग्रहतुष्ट्यर्थं धारणाय मणयः

सु.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
माणिक्यम्	मुक्ताफलम्	प्रवाल	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेदम्	वैदूर्यम्
विद्रुमम्	वैक्रान्त	विद्रुमम्	सुवर्णम्	मुक्ताफलम्	नीलम्	वैडूर्यम्	लाजवर्तः	लाजवर्तः

पूतना-ग्रसित लक्षण एवं शांति

बहुत मैले बिछौने पर अकेली जगह में छोटे बच्चे को सुला देने से पूतना नाम राक्षसी का उसमें प्रवेश होने से बच्चा बीमार हो जाता है । तब पूतना की बली निकालने से अच्छा होता है । जब कभी बच्चा बैठे बैठे गिर पड़े, या यों मालूम हो कि किसी के पीटने से गिरा है और मूर्छा आ गई है अथवा एकाएक कोई रोग हो गया है तब जानो, कि उसे महापूतना ने ग्रसा है । यदि कोई लाभादि के वश में आकर वनदेवता या नाकदेवता का तिरस्कार कर दे तो उसके बालक में ऊर्ध्वपूतना प्रवेश कर लेती है । यदि कोई मनुष्य अपनी ऋतुस्नाता स्त्री का गमन करने के पश्चात् स्नान न करे या बिना ऋतु के संगम करके हाथ मुंह न धोवे और माता अपवित्र अवस्था में ही बालक के साथ सो जावे तो बालक्रांता नाम की राक्षसी का दोष होगा । बच्चे को इतर फुलेन और फूल माला पहिना कर बाहर जाने से रेवती ग्रही का दोष होता है । सिर खुले जूते बाल को संध्या के समय सोने से भी रेवती का आवेश हो जाता है । संध्या के समय जमीन पर सोने से अथवा खेलने से बालक को पुष्प रेवती का दोष होता है । कदाचित् बालक खेलता खेलता गिर जाये अथवा उसे उल्टी हो या हाथ पांव नहीं धुले हों तब उसे शुष्क रेवती का आवेश होता है। जूठा खाने और देवता के स्थान पर मल मूत्र करने से शकुनी ग्रही बालक को पकड़ लेती है । जो नित्य कर्म संध्या बंदनादि नहीं करते या जो लोग पक्षियों को पालते हैं जन्मान्तर में उनके बालकों पर शिशुमुण्डिका राक्षसी का दोष हो जाता है । फिर उसका पूजन और बलि धूपादि दान करने से शांति होती है ।

चेष्टा:- जिस बालक के नखों और दांतों में विकार हो, नींद नहीं आवे, डर लगे, मन में उद्वेग रहे, शरीर में दुर्गन्ध उठे, अनेक प्रकार की चेष्टा करे, बल अधिक हो जावे, उसे ग्रहाविष्ट जानना।

उद्वर्तनम् - दूर्वा, कुटकी, नीम के पत्ते, तज, इनका उबटना बालक के शरीर में मलकर पीछे पीपल के पत्ते मुलट्ठी, लसूडे के पते इनका काढ़ा बनाकर स्नान करावे यह रोग दूर होगा ।

सर्वबालग्रहशान्त्यर्थं देवालये ज्योतिदर्शन निवासश्च तत्र रात्रौ- "ॐ हिनस्ति दैत्यतेजांसि स्वनेनापूर्य या जगत्। सा घण्टा पातु नो देवि पापेभ्यो नः सुतानिव॥" इत्यस्य जपः. ततोऽनेनैव मन्त्रेण सदीप दधिमाषान्नबलिदाने घण्टाबन्धने च सर्वबालग्रहशान्तिः ॥

अथ बाल रक्षा विधि (प्रयोगसारे)

यदि दुष्टदृष्टि (नजरादिदोषों) के कारण बालक के शरीर में कोई रोग कष्ट हो जाये तो- ॐवासुदेवो जगन्नाथः पूतनातर्जनो हरिः। रक्षति त्वरितं बालं मुञ्च मुञ्च कुमारकम् ॥ १॥ कृष्ण, रक्ष शिशुं शंख-मधुकैटभ-मर्दन! प्रातः-सङ्गव मध्याह्न सायाह्नेषु च सन्ध्ययोः ॥ २ ॥ महानिशि सदा रक्ष कंसाराति निषूदन! यद्गोरजः पिशाचांश्च ग्रहान् मातृग्रहानपि ॥ ३॥ बालग्रहान्विशेषेण छिन्धि छिन्धि महाभयान् । त्राहि त्राहि हरे नित्यं त्वद्रक्षाभूषितं शिशुम् ॥ ४॥

इन चारों मंत्रों से अभिमंत्रित हुई गौ के गोबर की शुद्ध भस्म को बालक के मस्तक, कण्ठ, हृदयादि अंगों में लगाने से बालक का कष्ट दूर होगा।

बाल कष्टावली चक्रम्

किस समय कौन पूतना ग्रस्त करती है?	मूर्ति निर्माणार्थ द्रव्य	पूजन द्रव्य	बलि विधान व समय	स्नान पूजा मार्जन मंत्र	धूप
प्रथम दिन मास वर्ष में योगिनी	नदी के दोनों किनारों की मृत्तिका	श्वेत चन्दन, तिलक, श्वेतपुष्प ५ रंग की झंडी ५,५दीपक, ५आटे के सतिये,कपूर,लोहबान	श्वेत भात,५पूर्ण पोली(सुहाली) १प्रहर दिन चढ़े पूर्व दिशा में चौरास्ते पर रखना।	ॐ ब्रह्माविष्णुश्च रुद्रश्च स्कन्दो वै श्रवणस्तथा। रक्षन्तु त्वरितं बालं मुञ्च मुञ्च कुमारकम्।	राई, खस, आक के फुल, बिल्ली और मनुष्य के बाल, निम्ब पत्र, गौघृत
द्वितीय दिन मास वर्ष में सुनन्दना	एक सेर चावलों का आटा	१०दीपक,१०झण्डी,पुष्प, चावलों के आटे के सतिये १०	भात एक सेर, आटे के पूड़े, मत्स्य व बकरे का मांस, संध्या समय पश्चिम दिशा में चौरास्ते पर रखना	ॐ नमश्चामुण्डायै विच्चे ह्रां ह्रां ह्रीं ह्रीं हुं हुं स्थानाद्राज्ञया स्वाहा	
तृतीय दिन मास वर्ष मे पूतना	एक सेर चावलों का आटा	रक्त चन्दन,रक्त पुष्प,श्वेत ध्वजा, दीपक१०,गेहूं केआटे के सतिए१०	एक सेर लाल भात,आधा सेर पूर्ण पौली, पश्चिम दिशा में किसी वृक्ष के नीचे	सुनन्दना विधानोक्त	लहसुन, गाशृंग, साप का काचली नीम के पत्ते, पुरुष और बिल्ली के बाल गोघृत
चतुर्थदिन मास वर्ष में मुख मंडिका	तिल -चूर्ण एक सेर	श्वेत पुष्प, श्वेत ध्वजा ५,दीपक, मिल सके तो अर्जुन वृक्ष के पुष्प	भात , सेर आटे के पूड़े आध सेर पूर्ण पौली , सांय ,पश्चिम दिशा में वृक्ष के नीचे	सुनन्दना विधानोक्त	
पंचम दिन मास वर्ष में बिडालिका	एक सेर चावलों का आटा	श्वेत चन्दन , श्वेत पुष्प , दीपक ५,श्वेत ध्वजा ५,गेंहु के आटे के सतिये	श्वेत भात, ७ पूड़ियाँ , सांयकाल पश्चिम दिशा में वृक्ष के नीचे ।	ओंभगवती ह्रीं ह्रीं ह्रीं हुं हुं मुञ्च रक्षां कुरु कुरु बलिं गृहाण अस्त्र ठ:ठ: चामुडे सर्वारि चण्डिके ठ:ठ:स्वाहा।	
षष्ठ दिन मास वर्ष में, षट्कारिका	नदी के दोनों किनारों की मिट्टी	श्वेत चन्दन , श्वेत पुष्प , दीपक ५,श्वेत ध्वजा ५,	भात,५ मिठाई ,५सुहाली ,७पूड़ियां,१ प्रहर दिन चढ़े पूर्व में चौरास्ते पर	योगिनी विधानोक्त	कूठ , गुग्गल , राई , हाथीदांत ,घृत।
सप्तमदिन मास वर्ष में में कालिका	चावल का आटा एक सेर	श्वेत चन्दन , श्वेत पुष्प , दीपक ५,श्वेत ध्वजा ५,	भात, ७ पूड़ियाँ , सांयकाल पश्चिम में चौरास्ते पर मौन होकर	बिडालिका विधानोक्त	
अष्टम दिन मास वर्ष में में कामिनी	जल के दोनों किनारों की मिट्टी	रक्त चन्दन, ५रंग की झण्डी ५, दीपक ५,	गेहूँ की रोटी,मसूर की दाल,हरा साग, छाग मांस संध्या में चौरास्ते पर	बिडालिका विधानोक्त	
नवम दिन मास वर्ष में, मदना	एक सेर गेहूं का आटा	चन्दन, पुष्प,५दीपक,५ रंग की झण्डी ५ ।	भात, मत्स्य मांस, पापडी, सुहाली उत्तर में प्रात: चौरास्ते पर	ॐ नमो भगवते वासुदेवाय कृष्णाय मंडल बलिमादाय हन २हुं फट् स्वाहा	गोशृंग, लसुन, सांप की कांचली निम्बपत्र , मनुष्य और बिल्ली के बाल , राई , गोघृत ।
दशमदिन मास वर्ष में में रेवती	एक सेर गेहूं का आटा	रक्त पुष्प २५, झंडी,२५ दीपक,२५ सतिये।	गुड़ के घी भुने चावल,गौ घृत, सांय,दक्षिण में चौरास्ते पर	ॐ नमो भगवते वैश्वदेवाय हन हुं फट् स्वाहा	
एकादश दिन मास वर्ष में, सुदर्शना	काले उड़दों का आटा एक सेर	श्वेत पुष्प,२५ दीपक,२५ सफेद झण्डी,२५ आटे के सतिये।	श्वेत भात, ७ पूड़े, सुहाली ७,सांय व प्रात: दक्षिण में चौरास्ते पर	ॐ नमो भगवते रावणाय चन्द्रहास वज्रहस्ताय ज्वल २ दुष्ट ग्रहादीन् ॐ ह्रीं फट् स्वाहा	
द्वादश दिन मास वर्ष में अद्भुता	चावलों का आटा आटा एक सेर	१३ दीपक,१३झण्डी,१३ सतिये सतिये आटे के ।	सुहाली ,पूड़े ७,पूड़ियां ७ , मत्स्य मांस, पापड़ी , सांयकाल दक्षिण में चौरास्ते पर।	ॐ नमो नारायणाय ज्वलद्धस्ताय हन हन शोषय२ मर्दय२ तापय२ हुं३ हन २ दुष्टानां ह्रां हुं स्वाहा	

अथ बाल पूतना विधान- यहां लिखे बाल कष्टावली चक्रोक्त हर एक बलिदान के पीछे मार्जन शिखास्थान-स्पर्श निम्नलिखित मंत्रों द्वारा एक ही प्रकार से होता है, बलिदान विधि तीन दिन निरंतर करें। चौथे दिन पलाश, अश्वत्थ, बिल्व, गूलर, मिल सके तो कपित्थ, इनके पत्तों को उबाल कर बालक को मंत्र पाठपूर्वक स्नान कराना । तदन्तर कल्याणार्थ यथा शक्ति भिक्षुकों को तथा कुत्ते आदि जीवों को मिष्ठान्न भोजन कराना तदनन्तर " ओं द्यौ: शांतिरन्तरिक्षं" इत्यादि शांतिमंत्रों व मार्जनमंत्रों से कुशा से छींटे देने के अनन्तर बालक की शिखा या शिखा-स्थान स्पर्श पूर्वक यह मंत्र पढ़ें- " ओं रक्ष रक्ष महादेव नीलग्रीव जटाधर। ग्रहैस्तु सहितो रक्ष मुञ्च मुञ्च कुमारकम् ॥ ओं सर्वमातर इमं ग्राहं संहरंतु हुं रोदय रोदय, स्फोटय स्फोटय स्वाहा। गर्ज २ स: गृहाण गृहाण आमर्दय २ ह्रीम् ह्रीम्, हन हन एवं सिद्धि रुद्रो ज्ञापय स्वाहा ॥ इति रक्षामंत्र: ॥

अथ नक्षत्र -कष्टावली

रोग नक्षत्र	रोगशान्त्यर्थ दान	नक्षत्रपादवशाद् रोग दिन संख्या				रोगशांत्यर्थ जपनीयमन्त्र	रोगनिवृत्त्यर्थ बलि
अश्विनी	भोजनदान	९	११	१	२०	मृत्युञ्जयमंत्र:	घोड़ी के मुख में सात व्रीही धान्य देवे।
भरणी	गो-अन्नादिदान	०	८०	४०	११	यमायतवेति मंत्र	हाथी के मुख में तिल चावल
कृत्तिका	स्वर्णदान	९	११	१६	२८	अग्निर्मर्धेति	कछुए के मुख में घी दे
रोहिणी	घृतदान	३	९	१८	३०	ब्रह्मायर्येति	सर्प को दूध-दही खिलावे
मृगशिरा	तिलदान	९	५	७	१०	इमंदेवेति मन्त्र:	खरगोश को दूध पिलावे
आर्द्रा	गोदान	०	१८	०	०	नमस्ते रुद्र इति मन्त्र	बकरे के मुख में रक्त डालें
पुनर्वसु	पीतलदान	७	१४	२	२१	अदितिद्यौ रितिमन्त्र:	सूअर को धान्य खिलावे
पुष्य	तैलान्नदान	६	७	१०	२१	बृहस्पतेति मन्त्र:	बकरे के मुख में दही डाले
आश्लेषा	गो-अजादिदान	०	०	४१	०	नमोस्तुसर्पेति मन्त्र:	बिलाव को दूध पिलावे
मघा	वस्त्राभ्यदान	१५	७	१७	२०	पितृभ्य इति मन्त्र:	बन्दर को तिल उड़द खिलावे
पू. फा.	भोजनदान	०	१५	०	३०	भगम्प्रणेति मन्त्र:	ऊंट के मुख में शहद दें
उ. फा.	अन्नदान	७	१४	७	६०	दध्यावद्धेति मन्त्र:	गाय को शाक खिलावे
हस्त	तैलदान	१५	१७	१५	०	उदत्यंजातवेदैति मन्त्र:	भैंसे को कमल के फूल खिलायें
चित्रा	दुग्ध दान	११	९	९	१६	त्वष्टा तुरिगति मन्त्र:	बाघ के लिए तगर धतूरे के फूल वन में रखें
स्वाती	गौघृत दान	६०	१७	३०	०	वायोरग्रेति मन्त्र:	भैंसे को गुड़ चावल खिलावें
विशाखा	गौ-स्वर्णदान	१५	०	४	१३	इंद्राग्नी इति मन्त्र:	बाघ के मुख में गुड़ भात की बलि दें
अनुराधा	गौधृत दान	६०	१२	३६	३०	नमोमित्रेति मन्त्र:	बकरे को कुलथी सहित भात गुड़ दें
ज्येष्ठा	तिलदान	६९	९	६	४	त्रातारमिन्द्रमिति मन्त्र:	बंदरों को गुड़ तिल डालें
मूल	रौप्यपात्रदान	०	९	१५	६	माता पुत्रेति मन्त्र:	बिलाव को दूध पिलावें
पू. षा.	गोमुक्तादान	०	१५	२४	१०	आपो धर्मेति मन्त्र:	कछुए के मुख में नागर मोथे की बलि दें
उ.षा.	भोजनदान	३०	२४	२६	१६	विश्वेदेवेति मन्त्र:	गौ को धान्य डालें
श्रवण	श्रीफलदान	६०	२४	६	९	विष्णोररा. मन्त्र	भैंसे के मुख में रक्त, मीठा की बलि दें
धनिष्ठा	अश्वान्नदान	१५	४	२०	२१	वसो: पवित्रेति मन्त्र	मनुष्य के मुख में दही अन्न की बलि दें
शतभिषा	भोजनान्नदान	४	४५	३	२२	वरुणस्तम्भेति मन्त्र	गौ को चावल खिलावें
पू. भा.	भोजनदान	०	१२	२१	१९	अहिर्बुध्न्येति मन्त्र	कौए के मुख में फल की बलि दें
उ.भा.	अन्नदान	१०	३	९	१५	अहिर्बुध्न्येति मन्त्र	गाय को चावल खिलावें
रेवती	फल दा.कन्यापूजन	१८	१०	९	२०	पूषन्नयेति मन्त्र	हाथी के मुख में पूरी-पूओं की बलि दें

ज्वालामुखी योग

तिथि	१	५	६	९	१०
नक्षत्र	मूल	भर.	कृत्ति.	रोहि.	आश्लेषा

जम्मे सो जीवे नहीं बसै जो उजड़ जाय। चूड़ा पहिरे कामिनी चटपट विधवा होय। गये गए ना बुहरे कूए नीर सुकाय।

पुत्रोत्पत्ति का समय जानना - (१) जन्मलग्नेश व पुत्रेश के स्पष्ट को जोड़े। योगफल के राश्यादि और नवांश की राशि में या इन दोनों के त्रिकोण राशि में जब गोचर का गुरु होता है तब संतान उत्पन्न होती हैं।

(२) चं. ल. गु. इन तीनों से पंचम स्थानेश या नवमस्थानेश की दशान्तर्दशा में संतानोत्पत्ति होती है।

विवाह (स्त्रीमुख)होने का समय जानना-(१)जन्म लग्नेश सप्तमेश को जोड़कर जो राशि हो उस राशि में जब गोचर का गुरु हो तब विवाह होता है॥

(२) चन्द्र राशीश और अष्टमेश को जोड़े, उस राशि में जब गोचर का गुरु आवे तब विवाह होता है।

(३) लग्नेश का नवांशेश जिस राशि में हो उस राशि से द्वितीय भाव में जब गोचर में गुरु चन्द्र होते हैं, तब विवाह होता है।

(४) शुक्र-चन्द्र व सप्तमेश की दशान्तर्दशा में विवाह होता है।

पिता के खतरे का समय जानना-(१) गुलिक स्पष्ट से सूर्य-स्पष्ट घटावें, शेष राशि के त्रिकोण में जब गोचर का शनि हो तब पिता की मृत्यु होती है।

(२) सूर्य से १।२।७।१२ भाव में जो पापग्रह हो उस की दशान्तर्दशा में पिता की मृत्यु होती है।

नोट -

इस कष्टावली में प्रत्येक नक्षत्र का जपनीय मंत्र पृथक् पृथक् लिखा है वह न कर सके तो महामृत्युञ्जय ही करे। जिस नक्षत्र के जिस चरण में पहले रोग उत्पन्न हुआ है उस चरणानुसार कष्ट व दिन जाने, शून्य से विशेष भय जाने, दान, जप करे।

जिस नक्षत्र में रोग पैदा हुआ है उसे यहां कष्टावली में रोग नक्षत्र का नाम दिया गया है।

रोग नक्षत्र को जानकर इन कोष्ठों में लिखा उपाय एवं यथाशक्ति दान करने से रोग शान्त होगा। 'रोग निवृत्त्यर्थ बलिदान'-वाले कालम में घोड़ी हाथी आदि के मुख में बलि देने के लिए लिखा है, वह गेहूं के आटे की वैसी ही आकृति बनाकर (मन में हाथी आदि की धारणा करके) उसके मुख में बलीद्रव्य देकर धूप-दीपादि करके आटे की आकृति को जल में प्रवाहित कर दें-ऐसा तीन दिन करें। साथ ही दान और जप भी करें।

रोगोंत्पत्तौ कुयोगाः

(१)रोग के शुरु दिन में जन्मराशि नक्षत्र लग्न में या राशि व लग्न से आठवें चन्द्र वा यमघंट कुयोग हो।

(२)सूर्यवार को मघा, द्वादशी या भरणी अनुराधा नक्षत्र हो।

(३)सोमवार को आर्द्रा या उत्तराषाढा नक्षत्र हो ।

(४) मंगलवार को कृ. मघा व शतभिषा या नन्दा (१।६।११)हो ।

(५)बुधवार को अश्विनी व विशाखा या भद्रा(२। ७।१२) आश्लेषा हो।

(६)गुरुवार छठ व शतभिषा या ज्येष्ठा व मृग. या जया (३।८।१३)व मघा, हस्त हो ।

(७)शुक्रवार अष्टमी व अश्विनी या आश्लेषा श्रवण या रिक्ता(४।९।१४) आर्द्रा या धनिष्ठा हो।

(८) शनिवार को नवमी व पू. षा. या हस्त व पू. भा. या पूर्णा(५।१०।१५)व भरणी हो।

(९)सूर्य मंगल शनिवारों को ४।६।९।१२।१४।३० तिथि, भरणी, कृत्ति, आर्दा, आश्लेषा, पूर्वा ३, विशा, ज्ये, धनि, शत, नक्षत्र हो तो मृत्युतुल्य कष्ट होता है ।

परञ्च जन्मपत्र में मारकेश का और भी विचार कर लेना । क्योंकि बिना मारकेश आये मृत्यु तो होती ही नहीं। हां, ऐसे योग में कष्ट जरूर मृत्युतुल्य होता है । उपरोक्त योगों में से किसी भी एक योग में रोगारम्भ होते ही तुला दान, गोदान तथा मृत्युञ्जय जप करना कल्याणप्रद है ।

अथ रोगत्रिनाड़ी चक्रम्

आर्द्रा	पू.फा	उ.फा.	उ.फा.	ज्ये.	धनि.	शत.	भर.	कृ.	प्रथमा
पुन.	मघा	हस्त	विशा.	मूल	श्रवण	पू. भा.	अश्वि	रो.	मध्या
पुष्य	आश्ले	चि॰ा	स्वा.	पू.षा.	उ.षा.	उ. भा.	रेव.	मृ.	अन्त्या

सूर्य नक्षत्र, दिन नक्षत्र और जन्म नक्षत्र व नाम नक्षत्र रोगत्रिनाडीचक्र में एक ही नाडी पर हों तो असाध्य रोगी का मरण होता है। मरने को हो तो प्रतिदिन देखने से जिस दिन यह योग मिले उसी दिन निःसदेह रोगी की मृत्यु कहे। यह रोगत्रिनाडीचक्र यात्रा तथा रण के समय वर्जित करना ।

कालस्य मुखदंष्ट्रा ज्ञानम्

दिन नक्षत्र से नाम नक्षत्र ५।१३।२३संख्या का हो तो काल का मुख होता है और उसी प्रकार १०।१८ वां, नक्षत्र दंष्ट्रा (दाढ़ा) होती है। काल के मुख में दाढ़ में जिस दिन गोचर में नक्षत्र प्राप्त हो उस दिन अत्यन्त रोगग्रस्त पुरूष की मृत्युपर्यन्त हालत होती है । रोग पर सर्पादि दर्शन पर,विग्रह - युद्ध में जाने पर काल के मुख दंष्ट्रा में नक्षत्र हो तो अशुभ होता है

कालांग चक्र से शुभाशुभ फलज्ञान

यदि किसी व्यक्ति के अंङ्ग विशेष में पीड़ा, कष्ट, घाव, फोड़ा आदि चर्म विकार किंवा वायु-विकारादिजन्य कोई कष्ट हो तो तात्कालिक प्रश्नकुण्डली लगा कर निम्नलिखित कालांग चक्र में दिए भावों के अनुसार उस पीड़ित भाव को देखें। यदि उस भाव में कोई अशुभ ग्रह हो, किंवा वह भाव खलदृष्ट, अस्त, नीच तथा शुभग्रह की दृष्टि से रहित हो तो समझें, कि उस अवयव में और विशेष कष्ट की संभावना है । शांति के लिए उस ग्रह की शांति करावें। यदि प्रश्नकुण्डली में पीड़ित-भाव शुभग्रह से युक्त किंवा शुभ ग्रह दृष्ट हो तो रोग (कष्ट)शीघ्र निवृत्त हो जाएगा ।

कालांग चक्र

भाव	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
अंङ्ग	सिर	मुख	भुजाएं	हृदय	उदर	कटिभाग	बस्ति (मूत्राशय)	लिङ्ग गुदा	जंघाएं	घुटने	पिण्डलियां	पाद-युगल

तिथि कष्टावली यन्त्रम्

ति.	तिथीश	कष्टदिन	बलि	दान
१	अग्नि	१२	शर्कराण्यबलि	धृतदान
२	ब्रह्मा	५	पायसबलि	भोजनदान
३	काम	७	घृतान्नबलि	रक्तवस्त्रद.१
४	गणेश	१६	मोदकान्नबलि	मूंगादान
५	सर्प	२१	पायसबलि	दुग्धदान
६	स्कन्द	१२	मोदकान्नबलि	चित्रवस्त्र दान
७	सूर्य	८	पायसबलि	ताम्रपात्रदान
८	ईश्वर	१३	नानाभक्ष्यबलि	पीतवस्त्रदान
९	दुर्गा	१८	मिष्टान्न बलि	रक्तवस्त्रदान
१०	यम	२५	कृशरान्नबलि	नीलवस्त्रदान
११	विश्वेदेव	७	मोदकान्नबलि	पीतवस्त्रदान
१२	विष्णु	७	मोदकान्नबलि	श्वेत वस्त्रदान
१३	काम	१०	दधिशर्कराबलि	सुवर्णदान
१४	शिव	६०	मिष्टान्नबलि	क्षीद्रशाक भो.
१५	चन्द्र	३	दध्योदनबलि	रौप्यदान
३०	पितर	१८	अपूपकान्न बलि	उत्तमान्नभोजन

वारकष्टावली यंत्रम्

वा.	वारेश	क.दि.	बलि व दान
सू.	रुद्र	५	पायसबलि, सूर्यदान
च.	गौरी	८	नानाभक्ष्यबलि, चन्द्रदान
मं.	स्कन्द	५	दुग्धबलि, भौमदान
बु.	विष्णु	७	मुद्गान्नबलि, बुधदान
वृ.	ब्रह्मा	५	घृतपक्ववलि,गुरुदान
शु.	इन्द्र	७	तिलयवाज्यमधुवलि, शुक्रदान
श.	यम	१५	माषान्नबलि, शनिदान

बाल-रक्षार्थ धूप

राई, लाख,नीम के पत्ते, बांस का छिलका, लहसुन, शिवजी पर चढ़े हुए फूल, अगर, गाय का घी, इन सब को मिलाकर धूप देने से सब पूतना तथा अन्य बालग्रह दूर हो जाते हैं । धूप देते समय ''खुं खुर्दनं हुं फट् स्वाहा-'' इस मंत्र का उच्चारण करें ।

ग्रहगोचराद्यैर्दशा क्रमाद्यैर्ग्रह कृतानिष्ट-फल-शमनार्थ प्रत्येक-ग्रहाणां-दान-पदार्था:												जप संख्या	जपनीय-मंत्रा:	दान समय	हवन-समिध:
सूर्य	माणिक	सुवर्ण	ताम्र	गेहूं	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	रक्तपुष्प	केशर	मूंग, रक्तगाय	रक्तचन्दन	७०००	ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः	उदय	अर्क
चन्द्र	मोती	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दही	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	शंख	कपूंर, श्वेतबैल	श्वेतचन्दन	११०००	ॐ श्रा श्रीं सः चन्द्राय नमः	सन्ध्या	पलाश
भौम	मूंगा	सुवर्ण	ताम्र	मसूर	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	रक्तकनेर	केशर	कस्तूरी, रक्तबैल	रक्तचन्दन	१००००	ॐ क्रां क्री क्रौं सः भोमाय नमः	घ. २ शेष दिन	खदिर
बुध	पन्ना	सुवर्ण	कांसी	मूंग	खांड	घी	हरावस्त्र	सर्वपुष्प	हाथीदांत	कपूंर, शस्त्र	फल	१९०००	ॐ ब्रां ब्री ब्रौं सः बुधाय नमः	घ. ५ शेष दिन	अपामार्ग
गुरु	पुखराज	सुवर्ण	कांसी	दालचने	खांड	घी	पीतवस्त्र	पीतपुष्प	हल्दी	पुस्तक, घोड़ा	पीतफल	१९०००	ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः	संध्या	अश्वत्थ
शुक्र	हीरा	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दूध	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	सुगंध	दधि, श्वेतघोड़ा	श्वेतचन्दन	६०००	ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः	सूर्य उ.	उदुम्बर
शनि	नीलम	सुवर्ण	लोहा	उड़द	कुलथी	तेल	कृष्णवस्त्र	कृष्णपुष्प	कस्तूरी	कृष्णांग, भैंस	उपानह	२३०००	ॐ प्रां प्रीं प्रौ सः शनये नमः	मध्याह्ने	शमी
राहु	गोमेद	सुवर्ण	सीसा	तिल	सरसों	तिल	नीलवस्त्र	कृष्णपुष्प	खड्ग	कंबल, घोड़ा	शूर्प	१८०००	ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौ सः राहवे नमः	रात्री	दूर्वा
केतु	लसनी	सुवर्ण	लोहा	तिल	सप्तधान्य	तेल	धूम्रवस्त्र	धूम्रपुष्प	नारियल	कंबल, बकरा	शस्त्र	१७०००	ॐ स्त्रां स्त्रीं स्त्रौं सः केतवे नमः	रात्री	कुशा
मुन्था	मोती	सुवर्ण	कांसी	चावल	सुवर्ण	घी	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	कपूर	मसरी, श्वेतचन्दन	हाथीदांत	मुन्थेशवत्	ॐ मुन्थेशमन्त्र:	मुन्थेशकाले	

नवग्रहों के व्रत की विधि

यदि किसी व्यक्ति का कोई ग्रह गोचर से या दशा-अन्तर्दशा से खराब चल रहा हो तो निम्नलिखित प्रकार के उस ग्रह का शास्त्रोक्त व्रत-विधान ब्रह्मचर्य पूर्वक करने से अशुभ फल निवृत्ति होती है।

रविवार के व्रत की विधि-सूर्य का व्रत रविवार को करें। यह व्रत शुक्लपक्ष के पहले (जेठ) रविवार से आरम्भ करके वर्ष पर्यन्त तीस या कम से कम १२ व्रत करें। उस रोज केवल गेहूं की रोटी घी लाल खण्ड के साथ या गेहूं का गुड़ से बना दलिया या हलवा इलायची डाल कर दान करके शेष का दिन में ही सूर्यास्त से पहले भोजन करें। नमक बिल्कुल न खायें। भोजन से पूर्व हो सके तो लाल वस्त्र पहनकर ऊपर चक्रोकत बीज-मन्त्र की माला जप करें। तदनन्तर सूर्य को गन्धाक्षत रक्त पुष्पदूर्वायुक्त अर्घ्य प्रदान करे। अपने मस्तक में लाल चन्दन का तिलक करें। जब व्रत का अन्तिम रविवार हो तो हवन पूर्णाहुति के बाद ब्राह्मण को भोजन करावें। ऐसा करने से सूर्य का अशुभ फल शुभ फल में परणित हो जावेगा। तेजस्विता बढ़ेगी। नेत्र रोग, चर्म रोग एव अन्य शारीरिक रोग भी शान्त होंगे।

सूर्य शान्ति का सरल उपचार :- लाल वस्तुओं का विशेष उपयोग जैसे चादर, परना तथा तांबे की अंगूठी का पहनना।

सोमवार के व्रत की विधि-चन्द्रमा का व्रत शुक्ल-पक्ष के प्रथम (जेठे) सोमवार से प्रारम्भ करके ५४ या १० व्रत करें। व्रत के दिन श्वेत वस्त्र धारण करके चक्रलिखित बीज-मन्त्र को ११ माला या ३ माला जप करें। सफेद फूलों से पूजन करके सफेद चन्दन का तिलक करें। मध्यान्ह के समय नमक के बिना दही - चावल, घी, खण्ड का यथाशक्ति दान करके स्वयं भोजन करें। जब व्रत का अन्तिम सोमवार हो उस दिन हवन पूर्णाहुति करके खीर-खण्ड से ब्राह्मण व बटुकों को भोजन करावें। इस व्रत के करने से व्यापार में लाभ, मानसिक कष्टों की शान्ति होती है, विशेष कार्य सिद्धयर्थ भी पूर्ण फलदायक होता है।

चन्द्र शान्ति का सरल उपचार:-सफेद जुराब, रूमाल, सफेद वस्त्र, दूध, दहीं का उपयोग, चांदी की अंगूठी पहनना।

मंगलवार के व्रत की विधि-यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) मंगलवार से प्रारम्भ करके २१ या ४५ व्रत करने चाहिएं। हो सके तो यह व्रत आजीवन रखें। बिना सिला हुआ लाल वस्त्र धारण करके बीज-मन्त्र की १, ५ या ७ माला जप करें। नमक सेवन न करे, यह जरूरी है। उस दिन गुड़ से बने हलवे का या लड्डुओं का दान करें। और स्वयं भी खावें। गुड़ से बना कुछ हलवा आदि बैल को भी खिलावें। मंगलवार का व्रत ऋण-हर्ता तथा सन्तति-सुखप्रद है। जब व्रत का अन्तिम मंगलवार हो उस दिन हवन-पूर्णाहुति करके लाल वस्त्र, तांबा, मसूर, गुड़, गेहूं तथा नारियल का दान करें। ब्राह्मणों तथा बच्चों को मीठा भोजन करावें।

मंगल शान्ति का सरल उपचार:- लाल रंग की वस्तुओं का उपयोग रात को लाल वस्त्र पहनें, तांबे के वर्तन, तांबे की अंगूठी पहनना।

बुधवार का व्रत- यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम बुधवार (जेठ) से प्रारम्भ करें। २१ या ४५ व्रत करें। हरा वस्त्र धारण करके बीज-मन्त्र की १७ या तीन माला जप करना चाहिए। उस दिन भोजन में नमक-रहित खण्ड, घी से बने पदार्थ जैसे मूंगी का बना हुआ हलवा, मूंगी की बनी मीठी पंजीरीं या मूंगी के लड्डूओं का दान करे। फिर तीन तुलसीपत्र, गंगाजल या चरणामृत के साथ लेकर स्वयं भी उपरोक्त पदार्थ खावें। व्रत के अन्तिम बुधवार को हवन पूर्णाहुति करके अङ्गहीन भिक्षुक को मूंगीयुक्त भोजन कराकर हरा वस्त्र, मूंगी आदि का दान भी करें। इस व्रत से विद्या, धन-लाभ, व्यापार में तरक्की तथा स्वास्थ्य लाभ होता है। अमावस का व्रत करने से भी बुध ग्रह जन्य नेष्ट फल से मुक्ति मिलती है।

बुध शांन्ति का सरल उपचार:- हरा रंग, हरे वस्त्र तथा श्रृंगार की अन्य वस्तुएं हरा रूमाल आदि रखना, कांसी के बर्तन में भोजन, बुधाष्टमी व्रत।

बृहस्पति के व्रत की विधि- यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) गुरूवार से आरम्भ करें, तीन वर्ष पर्यन्त या १६ गुरूवार व्रत करें, उस दिन पीत वस्त्र धारण करके बीज-मन्त्र की ११ या तीन माला जप करें। पीत पुष्पों से पूजन-अर्घ्य दानादि के बाद भोजन में चने के बेसन की बनी घी-खाण्ड से बनी मिठाई लड्डू या हल्दी से पीले या केसरी चावल आदि ही खावें और यही दान करें। जब व्रत का अन्तिम गुरूवार हो तो हवन पूर्णाहुति के बाद ब्राह्मण व बटुकों को लड्डू भोजन करावे। स्वर्ण, पीत-वस्त्र चने की दाल आदि का दान करें। यह व्रत-विद्यार्थियों के लिए बुद्धि तथा विद्या-प्रद है, धन की स्थिरता तथा यश-वृद्धि करता है। अविवाहितों के लिए स्त्री प्राप्तिप्रद सिद्ध होता है।

बृहस्पति शान्ति का सरल उपचार- पीले वस्त्र, रूमाल आदि पीले फूल धारण करना, सोने की अंगूठी पहनना।

शुक्र के व्रत की विधि- यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) शुक्रवार से प्रारम्भ होता है। ३१ या २१ व्रत करे। श्वेत वस्त्र धारण करके बीज-मन्त्र की ३ या २१ माला जपें। भोजन में चावल, खण्ड या दूध से बने पदार्थ ही सेवन करें। यही पदार्थ यथा-शक्ति सम्भव हो तो एकाक्षी (एक आंख वाले) भिक्षुक को या श्वेत गाय को दें। जब व्रत का अन्तिम शुक्रवार हो, हवन पूर्णाहूति के बाद खीर-खण्ड से बने पदार्थ ब्राह्मण बटुकों को खिलावें। चांदी, श्वेतवस्त्र, खाण्ड, चावल का दान करें। इस व्रत से स्त्री सुख एवं ऐश्वर्य की वृद्धि होती है।

शुक्र शान्ति का सरल उपचार:- सफेद वस्त्र, सफेद रूमाल , सफेद फूल धारण करना आदि गाय को हरा घास या पेड़ा देना, शिव पूजन।

शनि के व्रत की विधि- यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) शनिवार से आरम्भ करे, व्रत ५१ या ३१ करने चाहिएं। व्रत के दिन काला वस्त्र धारण करके बीज-मन्त्र की १९ या तीन माला का जप करें। फिर एक बर्तन में शुद्ध जल, काले तिल, काले फूल या लवंग (लौंग), गङ्गाजल तथा शक्कर, थोड़ा दूध डालकर पश्चिम की ओर मुंह करके पीपल-वृक्ष की जड़ में डाल दें। भोजन में उड़द के आटे का बना पदार्थ, पंजीरी, कुछ तेल से पका हुआ पदार्थ कुत्ते व गरीब को दें तथा तेलपक्व वस्तु के साथ केला व अन्य फल स्वयं प्रयोग में लाना चाहिए। यही पदार्थ दान भी करें। व्रत के अन्तिम शनिवार को हवन पूर्णाहुति के बाद तेल में पकी हुई वस्तुओं को देने के बाद काला वस्त्र, केवल उड़द तथा देसी जूता, तेल लगाकर दान करें। इस व्रत से सब प्रकार की सांसारिक प्रेशानी दूर हो जाती है। झगड़े में विजय होती है। लोह-मशीनरी कारखाने वालों के व्यापार में उन्नति होती है।

शनि शान्ति का सरल उपचार:- घर के परदे, जूते, जुराब, घड़ी का पट्टा, रूमाल आदि काले रंग के धारण करें।

राहू केतु के व्रत की विधि- शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) शनिवार से यह व्रत शुरू करना चाहिए। यह व्रत १८ करें। काला वस्त्र धारण करके १८ या ३ बीज-मन्त्र की माला जपें। तदनन्तर एक बर्तन में जल, दूर्वा और कुशा लेकर पीपल की जड़ में डालें। भोजन में मीठा चूरमा, मीठी रोटी समयानुसार रेवड़ी, मुग्गा, तिल के बने मीठे पदार्थ सेवन करें और यही दान में भी दें। रात को घी का दीपक जलाकर पीपल की जड़ में रख दें। इस व्रत से शत्रुभय दूर तथा राजपक्ष से विजय मिलती हैं।

राहू, केतु शान्ति का सरल उपचार:- नीला रूमाल, नीला घड़ी का पट्टा, नीला पैन, लोहे की अंगूठी पहनें।

ग्रहों के अरिष्ट-निवृत्त्यर्थ स्नान-विधि

यथा सिद्धौषधैः रोगाः नश्येयुर्मन्त्रतो भयम्॥
तथा स्नान-विधानेन ग्रह-दोषः प्रणश्यति॥

रवि ग्रह के दोष की शान्ति के लिए कभी-कभी व्रत के दिन बिल्ववृक्ष की जड़, देवदारू, मुलेठी, लाल फूल, केसर, पानी में उबाल कर स्नान करे। सोमवार के व्रत के दिन खिरनी की जड़, श्वेत, चन्दन, सिप्पी, पञ्चगव्य उबाल कर स्नान करें। ऐसे ही मंगल के दिन अनन्त मूल, रक्त चन्दन, मौलश्री, लाल फूल ये सब उबाल कर, बुध के दिन गोबर, मधु, चावल, विधारा उबाल कर, गुरु के दिन भारंगी, मुलह्ठी, श्वेत सरसों, मालती पुष्प उबाल कर, शुक्र के दिन इलायची, मजीठ तथा शनि के दिन काले तिल, गौंद, सुरमा, अमलबेत, सफेद बिनौला उबाल कर स्नान करें। ऐसे ही राहु केतु की शान्ति के लिए शनिवार के दिन देवदारू, सरसों तथा लोहवान उबाल कर स्नान करें, तो ग्रह शान्ति होती है।

नोट- स्नानोक्त कोई वस्तु उपलब्ध न हो तो जो वस्तु मिले उससे ही स्नान करें।

सर्वग्रह किंवा सर्वविध शन्ति के लिए सामान्य औषध स्नान

लाजवन्ती (छुई-मुई), कूट, खिलां, कांगनी, जौं, सरसों, देवदारु, हल्दी, सर्वौषधि लोध इन औषधियों के जल एवं से सत्तीर्थोदक स्नान करने से सब ग्रहों की पीड़ा नष्ट होती है तथा पूर्व ही जो दान कह चुके हैं उनके करने से शान्ति होती है। गुरू, वचन, देवता ब्राह्मणों की वेदना, वेदादि श्रवण, साधुओं से बातें, मन की शुद्धता, जप, दान, होम तथा यज्ञ के करने से दुष्ट स्थानों में स्थित ग्रह पीड़ा नहीं करते (श्रीपतिः)॥

शनि विचार-अथ लघु कल्याणी (ढैया) फलम्- कल्याणी प्रददाति वा रविसुते राशेश्चतुर्थाष्टमं व्याधिः बन्धु विरोध देशगमनं क्लेशं च चिन्ताधिकम्। मृत्युं चैव करोति चापि मनुजं दुःखादि वह्नेर्भयं लोह शस्त्रभयं सदैव-असुखं कुर्यादयं सर्वदा॥ १॥ **वृहत्कल्पाणी फलम्** . . . . राशौ द्वादश (१२) मूर्ध्नि जन्म (१) हृदये पादौ द्वितीय (२) शनिः। नानाक्लेशकरोऽति दुर्जनभयं पुत्रान्पशून्पीडयेत्॥ हानिः स्थानमरणं विदेशगमनं सौख्यं च साधारणम्, रामाकृद्धिविनाशनं प्रकुरुते तुर्याष्टमे वाऽथवा॥ २॥

सप्तधान्य- उड़द १. मूंगी २. गेहूं ३. चने ४. जौं ५. धान्य (तंदुल) ६. कंगनी ७.
अष्टगंध- अगर, कस्तूरी, कुकुम कर्पूर, चन्दन, टोपीदार लौंग, गोरोचन देवदारु।
अष्टगंध धूप- अगर, छरीला, जटामासी, कर्पूर-कचरी, गुग्गुल, देवदारु गोमृत सफेद चन्दन।

नक्षत्र-राशि ज्ञान चक्र

राशिज्ञाने विशेष :-

नक्षत्र वा राशि में श और स में, ब और व में कोई भेद नहीं होता। जिसके नाम का पहला अक्षर संयुक्त हो, वहां प्रथमाक्षर ग्रहण करें। (संयोगजाक्षरं नाम्नि ग्राह्यं तत्रादिमाक्षरम्)

राशयः	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या			तुला			वृश्चिक			धनु			मकर				कुम्भ			मीन		
नक्षत्राणि	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिर	मृगशिर	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू. फा.	उ. फा.	उ. फा.	हस्त	चित्रा	चित्रा	स्वाती	विशाखा	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पू. षा.	उ. षा.	उ. षा.	अभिजित्	श्रवण	धनिष्ठा	धनिष्ठा	शतभिषा	पू. भा.	पू. भा.	उ. भा.	रेवती
प्रथमचरण	चू	ली	अ	०	आ	वे	०	कु	के	०	हु	डी	मा	मो	टे	०	पू	पे	०	रू	ती	०	ना	नो	ये	भू	भे	०	जू	खी	गा	०	गो	से	०	दू	दे
द्वितीय च.	चे	लू	०	ई	वा	वो	०	घ	को	०	हे	डू	मी	टा	०	टो	ष	पो	०	रे	तू	०	नी	या	यो	धा	०	भो	जे	खू	गी	०	सा	सो	०	थ	दो
तृतीय च.	चो	ले	०	उ	वी	०	क	ङ	ह	०	हो	डे	मू	टी	०	पा	ण	०	रा	रो	ते	०	नू	यी	भा	फ	०	जा	जो	खे	०	गू	सी	दा	०	झ	चा
चतुर्थ च.	ला	लो	०	ए	वू	०	की	छ	०	ही	डा	डो	मे	टू	०	पी	ठ	०	री	ता	०	तो	ने	यू	भी	ढ	०	जी	खा	खो	०	गे	सू	०	दी	ञ	ची

ध्यान दें— नामों का प्रारम्भ ङ, ञ, ण इन अक्षरों से नहीं होता। यदि नक्षत्र के आधार पर इन अक्षरों से नाम प्रारम्भ हो रहा हो तो ङ की जगह घ, ञ की जगह ट् तथा ण की जगह पृ से प्रारम्भ करें। ऐसा करने से भेद नहीं होता।

॥ १ ॥ **बहूनि यस्य नामानि नरस्य स्युः कथञ्च। ततः पश्चाद्भवं नाम ग्राह्यं स्वर-विशारदैः ॥ २ ॥ प्रसुप्तो भाषते येन येनागच्छति शब्दितः। तस्य नामाद्यवर्णो या मात्रा स स्वर एव हि ॥ ३ ॥ अथ जन्मराशि नामराश्योः प्रधानता निर्णीयते - विवाहे सर्वमांगल्ये यात्रादौ ग्रहगोचरे ॥ जन्मराशेः प्रधानत्वं नामराशिं न चिन्तयेत् ॥ ४ ॥ देशे ग्रामे गृहे युद्धे सेवायां व्यवहारके ॥ नामराशेः प्रधानत्वं जन्मराशिं न चिन्तयेत् ॥ ५ ॥ काकिण्यां वर्ग शुद्धौ च दाने द्यूते स्वरोदये। मन्त्रे पुनर्भूवरणे च नामराशेः प्रधानता ॥ ६ ॥ कुर्यात्षोडश कर्माणि जन्मराशौ बलान्विते। सर्वाण्यन्यानि कर्माणि नामराशौ बलान्विते ॥ ७ ॥ विवाह घटनं चैवं लग्नजं ग्रहजं बलम्। कामभाकृचिन्तयेत् सर्व जन्म न ज्ञायते यदा ॥ ८ ॥**

अभिजित्-निर्णय-वैश्यप्रान्त्यांघ्रिः श्रुति-तिथि-भागतोऽभिजित्स्यात् ॥

उत्तराषाढ़ा का चौथा चरण श्रवण का पहला १५वां भाग जोड़कर उसके चार भाग करो। उसको अभिजित् का एक चरण मानकर नाम रखने आदि के विचार में उपयोग करो। उत्तराषाढ़ा के तीन चरणों के ही चार भाग करके उत्तराषाढ़ा का एक-एक चरण मानो। श्रवण का १५वां भाग छोड़कर जो शेष रहे उसके चार भाग करो, उसको श्रवण के १-१ चरण मानो। इस प्रकार को प्रायः सामान्य गणक नहीं जानते, एतदर्थ यहां लिखा गया है।

राशि ज्ञानम्- चू. ल. अ मेषः, इ वो वृषः, क घ ङ छ ह मिथुनम् ॥
हीडो कर्कः, माटे सिंहः, टो प ण ठ पी कन्या ॥
रातेे तुला तो ना यू वृश्चिक ये भफढभे धनुः ॥
भोजा खागी मकरः गुशदः कुम्भः दीथझञचा मीनः ॥

उपरोक्त राशि- ज्ञान में प्रत्येक राशि के आदि और अन्त का अक्षर है और जहां जो अक्षर बदलता है, वहां वह भी ले लिया गया है। जैसे-मेष में पहला अक्षर 'चू' लेने से अश्विनी के तीन चरण (चू चे चो) का ग्रहण होता है और 'ल' से (ला ली लू ले लो) पांचों का ग्रहण हुआ अर्थात् एक चरण (चौथा चरण) अश्विनी का और चतुर्थ चरण भरणी का ग्रहण हुआ और उसे कृतिका के प्रथम चरण इन नौ चरणों की एक राशि मेष हुई। इसी तरह अन्य राशियों का ज्ञान करें।

विशेष- जहां 'ज्ञ' का उच्चारण 'ज्ञ' होता है वहां ज्ञान चन्द्र का नक्षत्र उ. षा. और जहां इसका उच्चारण 'ग्य' होता है, वहां ज्ञान चन्द्र का नक्षत्र धनिष्ठा माना जाएगा क्योंकि 'ज' और 'ग' वर्ण क्रमशः उ. षा. और धनिष्ठा नक्षत्र में पड़ते हैं।

नोट- चन्द्रमा की राशि एवं नक्षत्र के अनुसार जातक का नाम रखने से फलितज्ञ को काफी सुभीता रहता है। नाम जानने से ही ज्योतिषी जातक के जन्म समय चन्द्रमा की राशि एवं नक्षत्र जान लेता है तथा फलित-शास्त्र में काफी महत्त्वपूर्ण फलादेश चन्द्रमा की स्थिति पर ही निर्भर है। इसका एक वैज्ञानिक रहस्य भी है। निकटतम होने से चन्द्रमा का प्रभाव भू-स्थित-वनपति एवं प्राणियों पर अन्य सभी ग्रहों की अपेक्षा अधिक होता है। ज्वारभाटा लाने में भी चन्द्रमा की देन सूर्य की देन से दुगुनी है। चन्द्रमा का ज्वार-भाटांक सूर्य के ज्वार-भाटांक से दुगुना है। चन्द्रमा के भगणकाल का स्त्री के मासिक-धर्म से साक्षात् सम्बन्ध है। आजकल वैज्ञानिकों ने कुछ प्रयोग भी किए हैं, जिससे अचर-जगत् (वनस्पति आदि) पर चन्द्रमा का प्रभाव स्पष्ट रूप से ज्ञात होता है। अतः जन्म-पत्र आदि के अभाव में चन्द्रमा की स्थिति से ही फलादेश करने की पारिपाटी फलितज्ञों में है।

नवीन- फलितवेत्ता जन्म-पत्र की अंग्रेज़ी तारीखों के हिसाब से भी फलादेश करने लग गए हैं। **इस पद्धति में सायन सूर्य की राशि के आधार पर ही फलादेश होता है। चन्द्रमा की राशि के आधार पर फलादेश करना अधिक उपयुक्त है। अतः प्राचीन फलित-शास्त्रियों ने जन्म-कालीन चन्द्रमा की स्थिति को जन्म राशि के नाम से कहा है। हमारे ज्योतिष के अनुसार इसी का महत्त्व है।**

बारह राशियों का मासिक फलादेश (सम्वत् 2059 वि.)

राशि	वैशाख (13 अप्रैल से 13 मई तक,सन् 2002 ई.)	राशि	ज्येष्ठ (14 मई से 14 जून तक सन्, 2002 ई.)	राशि	आषाढ़ (15 जून से 15 जुलाई तक, सन् 2002 ई.)
मेष	स्थानान्तर व कार्यान्तर का विचार, सेहत ठीक,आय से व्यय अधिक, स्त्रीपक्ष से लाभ, वृथा विवाद से बचें। अप्रै. 20, 21, 22, 28, 29, 30, मई 8, 9 अशुभ।	मेष	रोगभय, मानसिककष्ट, कारोबार से लाभ, स्त्री व सन्तानपक्ष से चिन्ता, यात्रा में हानि व चोट भय। मई 17, 18, 19, 26, 27; जून 4, 5, 6, 13, 14 अशुभ।	मेष	सेहत ठीक, धनलाभ, निजीजन से परेशानी, शत्रु बढ़ें, स्त्रीपक्ष से मदद, कारोबार ठीक। जून 15, 22, 23; जुलाई 1, 2, 3, 11, 12 अशुभ।
वृष	कलह, कलेश, मानसिक चिन्ता, धनलाभ होकर हाथ से निकले, हिस्सेदारी में हानि, यात्रा हो। अप्रै. 13, 14, 15, 22, 23, 24, 30, मई 1, 2, 10, 11, 12 अशुभ।	वृष	सेहत ठीक, अचानक कष्टभय, शत्रु कमजोर, स्त्रीसुख, कारोबार ठीक, राजभय। मई 19, 20, 21, 28, 29; जून 6, 7, 8 अशुभ।	वृष	सेहत ठीक, धनलाभ हो, निजीजन से अनबन, अच्छे लोगों से मेल, नई योजना से हानि। जून 16, 17, 24, 25, 26; जुलाई 4, 5, 6, 13, 14 अशुभ।
मिथुन	कष्टभय, धनलाभ, बन्धुसुख, सन्तानपक्ष से सुख, स्त्रीसुख, मासान्त में विशेष व्यय। अप्रै. 16, 17, 18, 24, 25, 26, मई 3, 4, 13 अशुभ।	मिथुन	मानसिकचिन्ता, कर्जा सिर चढ़े, कारोबार में रुकावट, मित्र से मदद, शोक समाचार, दुर्घटना में चोटभय मई 14, 22, 23, 30, 31; जून 1, 9, 10, 11 अशुभ।	मिथुन	सेहत ठीक, धनलाभ होकर हाथ से निकले, बन्धुकष्ट, [illegible]म्पत्ति –विवाद, स्त्रीकष्ट। जून 18, 19, 27, 28; जुलाई 6, 7, 8, 15 अशुभ।
कर्क	सेहत ठीक, धनलाभ, भाई एवं बन्धुसुख, सन्तानकष्ट, करोबार में लाभ, चोटभय, मासान्त में अचानक कष्ट। अप्रै. 18, 19, 26, 27, 28, मई 5, 6, 7 अशुभ।	कर्क	वयुविकार, मित्रों से अनबन, सन्ततिसुख, स्त्रीकष्ट, अपमानभय, आय से व्यय अधिक। मई 15, 16, 17, 24, 25; जून 2, 3, 11, 12, 13 अशुभ।	कर्क	सेहत ठीक, उत्साह बढ़े, सन्ततिसुख, कारोबार में रुकावट, वृथाविवाद से बचें। जून 20, 21, 29, 30; जुलाई 1, 9, 10 अशुभ।
सिंह	सेहत ठीक, धनलाभ, भाई–बन्धु से मदद, मित्रकष्ट, स्त्री से अनबन, कारोबार में हानि। अप्रै. 20, 21, 22, 28, 29, 30, मई 8, 9 अशुभ ।	सिंह	चोटभय, निजीजनकष्ट, असफल योजना, अर्थहानि, शनि, मंगल, राहु का दान करें। मई 17, 18, 19, 26, 27; जून 4, 5, 6, 13, 14, अशुभ।	सिंह	सेहत ठीक, अर्थहानि–भय, यात्रा में कष्ट, करोबार अपेक्षाकृत कुछ ठीक, शत्रु बढ़ें। जून 15, 22, 23, जुला. 1, 2, 3, 11, 12 अशुभ ।
कन्या	सेहत ठीक, धनलाभ, निजी लोगों से अनबन, स्त्रीसुख, शत्रु बढ़ें, कारोबार कमजोर। अप्रै. 13, 14, 15, 22, 23, 24, 30, मई 1, 2, 10, 11, 12, अशुभ।	कन्या	सेहत ठीक, आमदन से खर्च ज्यादा, अच्छे आदमी से मेल, शत्रु प्रबल,व्यापार में हानि। मई 19, 20, 21, 28, 29; जून 6, 7, 8 अशुभ।	कन्या	उदरविकार, स्त्रीकष्ट, गुप्त चिन्ता, आमदन से खर्च अधिक, गुप्तशत्रु से सावधान। जून 16, 17, 24, 25, 26; जुला 4, 5, 6, 13, 14 अशुभ।
तुला	सेहत ठीक, कर्जा चढ़े, अपने लोगों से मदद, सन्तानपक्ष से चिन्ता, चोटभय, मासान्त में कुछ लाभ। अप्रै. 16, 17, 24, 25, 26; मई 3, 4, 13, अशुभ ।	तुला	उदरविकार, आग व दुर्घटना से हानि, प्रिय व्यक्ति का वियोग, दुर्गा पाठ करें। श. मं. रा. का दान करें। मई 14, 22, 23, 30, 31; जून 1, 9, 10, 11, अशुभ।	तुला	सेहत ठीक, आमदन से खर्च अधिक, सन्तान व स्त्रीपक्ष से चिन्ता, गृहक्लेश। जून 18, 19, 27, 28; जुला. 6, 7, 8, 15 अशुभ।
वृश्चिक	उदरविकार, नेत्रकष्ट, धनलाभ, गुप्त शत्रु से भय, कारोबार ठीक, मासान्त में विवाद से हानि। अप्रै. 18, 19, 26, 27, 28; मई 5, 6, 7 अशुभ।	वृश्चिक	सेहत ठीक, सम्पत्तिविवाद, निजी लोगों से अनबन, स्त्रीसुख, कार्यान्तर व स्थानान्तर से लाभ। मई 15, 16, 17, 24, 25; जून 2, 3, 11, 12,13 अशुभ।	वृश्चिक	द्रव्यलाभ, सम्पत्तिविवाद, परेशानी बढ़े, अच्छे व्यक्ति से लाभ, कारोबार अपेक्षाकृत ठीक। जून 20, 21, 29, 30; जुला. 1, 9, 10 अशुभ।
धनु	सेहत ठीक, निजी लोगों से अनबन, सन्ततिसुख, शत्रु बढ़ें, स्त्रीपक्ष से लाभ, कारोबार ठीक। अप्रै. 20, 21, 22, 28, 29, 30, मई 8, 9 अशुभ।	धनु	अचानक कष्टभय, नई योजना व परीक्षा में असफलता, निजीजनों से हानि,कारोबार में वृद्धि। मई 17, 18, 19, 26, 27; जून 4, 5, 6, 13, 14 अशुभ।	धनु	चिन्ता बढ़े, जमीन जायदाद सम्बन्धी विवाद, धनलाभ हो, कार्यान्तर व स्थानान्तर का विचार बनें। जून 15, 22, 23;जुला.1, 2, 3, 11, 12, अशुभ।
मकर	वायुविकार, अर्थहानि, नई योजना असफल, कर्जा चढ़े, कारोबार कुछ ठीक। अप्रै. 13, 14, 15, 22, 23, 24, 30; मई 1, 2, 10, 11, 12 अशुभ।	मकर	कफ–वायु विकार, धनलाभ, मित्र–बन्धुकष्ट, सन्तानसुख, कारोबार में कुछ लाभ। मई 19, 20, 21, 28, 29; जून 6, 7, 8 अशुभ।	मकर	उलझे हुए मसले सुलझें, निजीजन–विरोध, सन्तान व स्त्रीपक्ष से सुख, कारोबार ठीक। जून 16, 17, 24, 25, 26; जुला 4, 5, 6, 13, 14 अशुभ ।
कुम्भ	शरीरकष्ट, बन्धुसुख, मित्रों से अनबन, सन्तानपक्ष शुभ, कार्यान्तर का विचार। अप्रै. 16, 17, 24, 25, 26; मई 3, 4, 13 अशुभ।	कुम्भ	निजीजनों से अनबन, कर्जा चढ़े, अच्छे लोगों से मेल हो, शत्रु प्रबल, अपमान भय। मई 14, 22, 23, 30, 31; जून 1, 9, 10, 11 अशुभ।	कुम्भ	सेहत ठीक, कर्जे से परेशानी, निजी लोगों से मदद, स्त्रीसुख, कारोबार में रुकावट। जून 18, 19, 27, 28; जुला.6, 7, 8, 15 अशुभ।
मीन	वायुविकार, धनलाभ, शत्रुप्रबल, स्त्रीसुख, आमदन से खर्च ज्यादा, मासान्त में नई योजना से लाभ। अप्रै. 18, 19, 26, 27, 28; मई 5, 6, 7 अशुभ।	मीन	कर्जे से परेशान , बन्धु से मदद, मासमध्य में लाभ, चोटभय, अचानक अर्थहानि। मई 15, 16, 17, 24, 25; जून 2, 3, 11, 12, 13 अशुभ।	मीन	शरीरकष्ट, क्रोध बढ़े, अच्छे लोगों से मेल, सन्ततिपक्ष से चिन्ता, स्त्रीकष्ट कारोबार में रद्दोबदल। जून 20, 21, 29, 30; जुला.1, 9, 10 अशुभ।

बारह राशियों का मासिक फलादेश (सम्वत् 2059 वि.)

राशि	श्रावण (16 जुलाई से 15 अगस्त तक, सन् 2002 ई.)	राशि	भाद्रपद (16 अग. से 15 सितं. तक, सन् 2002 ई.)	राशि	आश्विन (16 सितं. से 16 अक्तू. तक, सन् 2002 ई.)
मेष	स्थानान्तर व कार्यान्तर का विचार, क्रोध बढ़े, धनलाभ, गुप्त चिन्ता, स्त्रीकष्ट, मासान्त में धनहानि। जुला.19, 20, 21, 29, 30; अग. 7, 8, 9, 15 अशुभ।	मेष	सेहत ठीक, धनलाभ, गुप्तचिन्ता, कारोबार में कुछ रुकावट, मासान्त में हानिभय, मंगल का दान करें। अग. 16, 17, 25, 26, 27; सितं. 4, 5, 12, 13 अशुभ।	मेष	सेहत ठीक, धनलाभ, उत्साह बढ़े, अच्छे लोगों से मेल, स्त्री एवं सन्ततिसुख, कारोबार में रुकावट। सितं. 21, 22, 23; अक्तू. 1, 2, 9, 10, 11 अशुभ।
वृष	विरोधीपक्ष कमजोर, अर्थचिन्ता, निजीजनों से अनबन, स्त्रीसुख, कारोबार में रुकावट, जुला. 21, 22, 23, 31; अग.1, 2, 9, 10, 11 अशुभ।	वृष	सेहत ठीक, मानसिक परेशानी रहे, निजी लोगों से अनबन, स्त्रीसुख, कार्यान्तर व नई योजना से हानि। अग. 18, 19, 27, 28, 29; सितं. 6, 7, 14, 15 अशुभ।	वृष	वायुविकार, धनहानि, निजीजन से लाभ, नई योजना, कारोबार से लाभ। सितं. 16, 24, 25, 26; अक्तू. 3, 4, 11, 12, 13 अशुभ।
मिथुन	लाभयोग, उत्साह बढ़े, निजीजन सहयोग, सन्ततिचिन्ता, कारोबार में रुकावट, गुप्तशत्रु-भय। जुला. 16, 24, 25; अग. 3, 4, 11 12, 13 अशुभ।	मिथुन	वायुविकार, अर्थचिन्ता, सन्तानपक्ष से चिन्ता, स्त्रीकष्ट, कारोबार में रुकावट। अग. 20, 21, 22, 30, 31, सितं. 1, 8, 9, अशुभ।	मिथुन	उदरविकार, अर्थलाभ, बन्धुसुख, सन्तानपक्ष से खुशी, स्त्रीकष्ट, कारोबार से लाभ। सितं. 16, 17, 18, 26, 27, 28; अक्तू. 5, 6, 14, 15 अशुभ।
कर्क	मन चिन्तित, अर्थहानि, सम्पत्तिविवाद, नई योजना, स्त्रीपक्ष से चिन्ता, कारोबार गड़बड़। जुला. 17, 18, 19, 26, 27, 28 अग. 5, 6, 7, 13, 14, 15 अशुभ।	कर्क	कफ-वायु विकार, नई योजना, स्त्रीकष्ट, कारोबार कमजोर, मासान्त में अचानक राजभय। अग. 22, 23, 24; सितं. 1, 2, 3, 10, 11 अशुभ।	कर्क	कफ-वायुविकार, अर्थलाभ होकर हानि हो, निजीजन वैमनस्य, शत्रु कमजोर, गुप्त चिन्ता, कारोबार ठीक। सितं. 19, 20, 29, 30; अक्तू. 7, 8, 16 अशुभ।
सिंह	उदरविकार, धनलाभ होकर हानि, नई योजना, गुप्त चिन्ता, नीच से भय, कारोबार मध्यम। जुला. 19, 20, 21, 29, 30 अग. 7, 8, 9, 15 अशुभ।	सिंह	सेहत ठीक, आर्थिक स्थिति कमजोर, अकारण क्लेश, सन्तानपक्ष से चिन्ता, मासान्त में कारोबार ठीक। अग. 16, 17, 25, 26, 27; सितं. 4, 5, 12, 13, अशुभ।	सिंह	वायुविकार, बन्धुसुख, खर्चविशेष, यात्रा में कष्ट, स्त्रीसुख, कारोबार में रुकावट। सितं. 21, 22, 23; अक्तू. 1, 2, 9, 10, 11, अशुभ।
कन्या	सेहत ठीक, धनलाभ, निजीजन-सहयोग, सन्ततिकष्ट, शत्रु हतप्रभ, अचानक कष्टयोग। जुला. 21, 22, 23, 31 अग. 1, 2, 9, 10, 11 अशुभ।	कन्या	क्रोध बढ़े, स्थिरसम्पत्ति-विवाद, स्त्रीपक्ष से चिन्ता, वृथाविवाद से दूर रहें। अग. 18, 19, 27, 28, 29; सितं. 6, 7, 14, 15 अशुभ।	कन्या	क्रोध बढ़े, अर्थलाभ, बन्धुसुख, सम्पत्तिविवाद, गुप्त चिन्ता, कार्यान्तर व स्थानान्तर का विचार। सितं. 16, 24, 25, 26;अक्तू. 3, 4, 11, 12, 13 अशुभ।
तुला	क्रोध बढ़े, असफल योजना, अपमानभय, आय से व्यय अधिक, कारोबार अपेक्षाकृत ठीक। जुला. 16, 24, 25; अग. 3, 4, 11, 12, 13 अशुभ।	तुला	सम्पत्ति सम्बन्धी विवाद, यात्रा में कष्ट, स्त्रीसुख, कार्यान्तर व नई योजना सम्बन्धी चिन्ता। अग. 20, 21, 22, 30, 31; सितं. 1, 8, 9 अशुभ।	तुला	सेहत ठीक, धनहानि-भय, उत्साह बढ़े, सम्पत्तिविवाद, स्त्री व सन्ततिसुख, कारोबार ठीक। सितं.16, 17, 18, 26, 27, 28, अक्तू. 5, 6, 14, 15 अशुभ।
वृश्चिक	सम्पत्तिविवाद, अच्छे लोगों से मेल, शत्रु बढ़ें, कारोबार कुछ ठीक , मं. श. रा. दान करें। जुला. 17, 18, 19, 26, 27, 28; अग. 5, 6, 7, 13, 14, 15 अशुभ।	वृश्चिक	सेहत ठीक, उत्साह बढ़े, असफल योजना, स्त्रीसुख, गुप्त चिन्ता, अर्थलाभ होकर हानिभय। अग. 22, 23, 24; सितं. 1, 2, 3, 10, 11 अशुभ।	वृश्चिक	कफ-पित्तविकार, अर्थहानि, मित्र से मदद, स्त्रीसुख, कारोबार ठीक। सितं. 19, 20, 29, 30, अक्तू. 7, 8, 16, अशुभ।
धनु	सेहत ठीक, धनहानि-भय, निजीजनों से अनबन, सन्ततिकष्ट, स्त्रीसुख, कारोबार ठीक। जुला. 19, 20, 21, 29, 30; अग. 7, 8, 9, 15 अशुभ।	धनु	क्रोध बढ़े, कर्जे से मन परेशान, निजीजनों से अनबन, सन्तानसुख, गुप्त शत्रु से भय। अग. 16, 17, 25, 26, 27; सितं 4, 5, 12, 13 अशुभ।	धनु	उदरविकार, कर्जा चढ़े, भाई व बन्धु से मदद, सन्तान हेतु खर्च, स्त्री से अनबन। सितं. 21, 22, 23; अक्तू. 1, 2, 9, 10, 11 अशुभ।
मकर	क्रोध बढ़े, आर्थिक स्थिति कमजोर, मित्रकष्ट, सन्ततिसुख, स्त्रीसुख, कारोबार में रुकावट। जुला. 21, 22, 23, 31; अग.1, 2, 9, 10, 11 अशुभ।	मकर	उदरविकार, स्त्रीकष्ट, वृथाव्यय, अच्छे लोगों से मेल, कारोबार में कुछ वृद्धि। अग. 18, 19, 27, 28, 29; सितं. 6, 7, 14, 15 अशुभ।	मकर	शरीरकष्ट, अर्थलाभ, सम्पत्तिविवाद सुलझें, स्त्रीसुख, कारोबार अपेक्षाकृत ठीक। सितं. 16, 24, 25, 26; अक्तू. 3, 4, 11, 12, 13 अशुभ।
कुम्भ	शत्रु बढ़ें, मन परेशान रहे, मास मध्य में अर्थलाभ, स्थिरसम्पत्ति विवाद, स्त्रीकष्ट। जुला.16, 24, 25; अग. 3, 4, 11, 12, 13 अशुभ।	कुम्भ	रक्त-पित्तविकार, अर्थहानि, मित्र से मदद, शत्रु प्रबल, स्त्रीसुख, कारोबार ठीक। अग. 20, 21, 22, 30, 31; सितं. 1, 8, 9 अशुभ।	कुम्भ	अर्थहानि, सेहत ठीक, बन्धुसुख, असफल योजना, स्त्रीपक्ष से लाभ, कारोबार ठीक। सितं. 16, 17, 18, 26, 27, 28; अक्तू. 5, 6, 14, 15 अशुभ।
मीन	मन प्रसन्न रहे, कारोबार कुछ ठीक, अर्थलाभ होकर हानि, स्त्रीपक्ष से लाभ, कारोबार अपेक्षाकृत ठीक। जुला. 17, 18, 19, 26, 27, 28; अग. 5, 6, 7, 13, 14, 15, अशुभ।	मीन	शरीरपीड़ा, अर्थलाभ, भ्रातृसुख, सन्तान पक्ष से चिन्ता, स्त्रीसुख, कारोबार ठीक। अग. 22, 23, 24; सितं. 1, 2, 3, 10, 11 अशुभ।	मीन	क्रोध बढ़े, अर्थलाभ, निजीजनों से अनबन, सन्तान हेतु खर्चविशेष, स्त्री से अनबन, कार्यान्तर का विचार। सितं. 19, 20, 29, 30; अक्तू. 7, 8, 16 अशुभ।

बारह राशियों का मासिक फलादेश (सम्वत् 2059 वि.)

राशि	कार्तिक (17 अक्तू. से 15 नवं. तक, सन् 2002 ई.)	राशि	मार्गशीर्ष (16 नवं. से 14 दिसं. तक, सन् 2002 ई.)	राशि	पौष (15 दिसं., सन् 2002 ई. से 13 जन. सन् 2003 ई. तक)
मेष	सेहत ठीक, अर्थहानि, बन्धुसुख, स्त्रीकष्ट, कारोबार ठीक परन्तु आय से व्यय अधिक। अक्तू. 18, 19, 20, 28, 29, 30; नवं. 7, 8, 15 अशुभ।	मेष	बन्धनभय, मित्रबन्धु से मदद मिले, नई योजना, स्त्रीकष्ट, कारोबार ठीक। नवं. 16, 17, 25, 26, दिसं. 3, 4, 12, 13, 14, अशुभ।	मेष	सेहत ठीक, अर्थलाभ, सन्तानपक्ष से खुशी, स्त्रीपक्ष से चिन्ता, मासान्त में खर्चविशेष। दिसं. 22, 23, 30, 31, जन. 1, 8, 9, 10 अशुभ।
वृष	कफ–वायु विकार, निजीजन से मेल, सन्तानपक्ष शुभ, स्त्रीरोगी, कारोबार ठीक, खर्चविशेष। अक्तू. 21, 22, 23, 31; नवं. 1, 8, 9 अशुभ।	वृष	सेहत ठीक, धनलाभ, अच्छे लोगों से मेल, स्त्रीकष्ट, कारोबार ठीक। नवं. 17, 18, 19, 27, 28, दिसं. 5, 6, 7, अशुभ।	वृष	कफविकार, बन्धुसुख, शत्रु कमजोर, स्त्रीसुख, कारोबार ठीक, खर्चविशेष। दिसं. 15, 16, 24, 25; जन. 1, 2, 3, 11, 12, 13, अशुभ।
मिथुन	कफ–वायुविकार, धनलाभ, मित्रों से मेल, शत्रु प्रबल, स्त्री से अनबन, कारोबार में हानि। अक्तू. 24, 25; नवं. 2, 3, 10, 11, 12 अशुभ।	मिथुन	नई योजना से लाभ, स्त्रीसुख, कारोबार में रद्दोबदल, सन्तान हेतु खर्चविशेष। नवं. 20, 21, 29, 30; दिसं. 7, 8, 9 अशुभ।	मिथुन	सेहत गड़बड़, अर्थलाभ, बन्धुसुख, सन्तानपक्ष से चिन्ता, कारोबार ठीक। दिसं. 17, 18, 19, 26, 27, 28; जन. 4, 5, 13 अशुभ।
कर्क	सेहत ठीक, अर्थलाभ, असफल योजना, अचानक कष्ट, स्त्रीसुख, कारोबार कमजोर। अक्तू. 17, 18, 26, 27, 28; नवं. 4, 5, 12, 13, 14 अशुभ।	कर्क	कफ–वायुविकार, धनलाभ होकर हानि हो, वृथाकलह, कारोबार में रुकावट। नवं. 22, 23, 24, दिसं. 1, 2, 10, 11 अशुभ।	कर्क	मन प्रसन्न, अर्थलाभ, उत्साह बढ़े, शुभ समाचार, कार्यान्तर से लाभ, वृथाकलह। दिसं. 20, 21, 28, 29, 30; जन. 6, 7, 8, अशुभ।
सिंह	कफ–वायुविकार, धनलाभ, मित्र से अनबन, गुप्त शत्रु से भय, कार्यान्तर का विचार। अक्तू. 18, 19, 20, 28, 29, 30; नवं. 7, 8, 15, अशुभ।	सिंह	सेहत ठीक, धनलाभ, निजीजन से अनबन, कार्यान्तर से लाभ, सम्पत्तिविवाद। नवं. 16, 17, 25, 26, दिसं. 3, 4, 12, 13, 14 अशुभ।	सिंह	सेहत ठीक, अर्थहानि–भय, शत्रु कमजोर, अच्छे लोगों से मदद, स्त्रीसुख, कारोबार ठीक। दिसं. 22, 23, 30, 31, जन. 1, 8, 9, 10 अशुभ।
कन्या	क्रोध बढे, अर्थलाभ, शत्रु कमजोर, नई योजना से लाभ, स्त्रीसुख, मासान्त में खर्चविशेष। अक्तू. 21, 22, 23, 31, नवं. 1, 8, 9 अशुभ।	कन्या	सेहत ठीक, धनहानि–भय, भ्रातृकष्ट, अच्छे लोगों से गेल, स्त्रीसुख, कारोबार ठीक। नवं. 17, 18, 19, 27, 28; दिसं. 5, 6, 7 अशुभ।	कन्या	उदरविकार, कर्जा चढ़े, बन्धु से मदद, स्त्रीकष्ट, कारोबार कुछ ठीक। दिसं. 15, 16, 24, 25; जन. 1, 2, 3, 11, 12, 13 अशुभ।
तुला	सेहत ठीक, अर्थलाभ होकर हानि, भ्रातृकष्ट, मित्रों से मदद, सन्तानपक्ष से चिन्ता। अक्तू. 24, 25; नवं. 2, 3, 10, 11, 12 अशुभ।	तुला	सेहत खराब, अर्थहानि, रोगभय, असफल योजना, गुप्त चिन्ता, कारोबार कुछ ठीक। नवं. 20, 21, 29, 30, दिसं. 7, 8, 9 अशुभ।	तुला	सेहत गड़बड़, अर्थलाभ, सन्तानपक्ष शुभ, स्त्रीसुख, मासान्त में कष्टभय। दिसं. 17, 18, 19, 26, 27, 28; जन. 4, 5, 13 अशुभ।
वृश्चिक	उदरविकार, धनहानि, भ्रातृसुख, शत्रु प्रबल, गुप्त चिन्ता, कार्यान्तर की योजना। अक्तू. 17, 18, 26, 27, 28, नवं. 4, 5, 12, 13, 14 अशुभ।	वृश्चिक	वायुरोग, धनलाभ, सम्पत्तिलाभ, कारोबार ठीक, शत्रु से भय। नवं. 22, 23, 24; दिसं. 1, 2, 10, 11 अशुभ।	वृश्चिक	सेहत ठीक, अच्छे लोगों से मेल, अर्थलाभ होकर हानि हो, मासान्त में गुप्तशत्रु–भय। दिसं. 20, 21, 28, 29, 30; जन. 6, 7, 8 अशुभ।
धनु	नेत्रकष्ट, कारोबार ठीक, अर्थलाभ, सन्तान हेतु विशेष खर्च, मासान्त में हानि। अक्तू. 18, 19, 20, 28, 29, 30, नवं. 7, 8, 15 अशुभ।	धनु	बिगड़े काम बनें, उत्साह बढ़े, सम्पत्तिलाभ, स्त्रीकष्ट, कारोबार बेहतर। नवं. 16, 17, 25, 26; दिसं. 3, 4, 12, 13, 14 अशुभ।	धनु	कफ–वायुविकार, निजीजन सहयोग, वृथाकलह, नई योजना, मन अशान्त, मासान्त में कष्ट। दिसं. 22, 23, 30, 31, जन. 1, 8, 9, 10 अशुभ।
मकर	सेहत ठीक, कर्जा चढ़े, सम्पत्तिविवाद, असफल योजना, स्त्रीसुख, कारोबार ठीक। अक्तू. 21, 22, 23, 31; नवं. 1, 8, 9 अशुभ।	मकर	वायुविकार, निजीलोगों से अनबन, धनलाभ, बन्धुसुख, कार्यान्तर की योजना। नवं. 17, 18, 19, 27, 28; दिसं. 5, 6, 7, अशुभ।	मकर	सेहत ठीक, धनलाभ, निजीजन से मनमुटाव, सम्पत्तिलाभ, स्त्रीसुख कारोबार कमजोर। दिसं. 15, 16, 24, 25; जन. 1, 2, 3, 11, 12, 13 अशुभ।
कुम्भ	सेहत गड़बड़, अर्थलाभ, निजीजन विवाद, यात्रा में कष्ट, स्त्रीसुख, कार्यान्तर से लाभ। अक्तू. 24, 25; नवं. 2, 3, 10, 11, 12 अशुभ।	कुम्भ	क्रोध बढे, अर्थलाभ, निजीजन से अनबन, स्त्रीसुख, कारोबार में रद्दोबदल हो। नवं. 20, 21, 29, 30; दिसं. 7, 8, 9 अशुभ।	कुम्भ	कफ–वायुविकार, अर्थहानि, बन्धुसुख, स्त्रीसुख, कारोबार ठीक। दिसं. 17, 18, 19, 26, 27, 28; जन. 4, 5, 13 अशुभ।
मीन	बिगड़े काम बनें, अर्थलाभ होकर हानि, शत्रु बढ़े, कार्यान्तर व स्थानान्तर का विचार। अक्तू. 17, 18, 26, 27, 28; नवं. 4, 5, 12, 13, 14 अशुभ।	मीन	कफ–वायुविकार, अर्थहानि, शत्रु प्रबल, स्त्रीसुख, कारोबार में लाभ। नवं. 22, 23, 24; दिसं. 1, 2, 10, 11 अशुभ।	मीन	सेहत में बिगाड़, अर्थहानि भय, सन्तानपक्ष शुभ, स्त्रीकलह, मासान्त अच्छा। दिसं. 20, 21, 28, 29, 30, जन. 6, 7, 8 अशुभ।

बारह राशियों का मासिक फलादेश (सम्वत् 2059 वि.)

राशि	माघ (14 जन. से 11 फर. तक, सन् 2003 ई.)	राशि	फाल्गुन (12 फर. से 13 मार्च तक, सन् 2003 ई.)	राशि	चैत्र (14 मार्च से 13 अप्रैल तक, सन् 2003 ई.)
मेष	सेहत ठीक, अर्थलाभ, गु५., चिन्ता, स्त्रीसुख, कारोबार में अड़चनें। जन.(2003 ई.) 18,19, 20, 27, 28; फर. 5, 6, 7 अशुभ।	मेष	वायुविकार, धनलाभ, सम्पत्तिविवाद, स्त्रीसुख, कारोबार में रुकावट। फर. 15, 16, 23, 24; मार्च 4, 5, 6 अशुभ।	मेष	कारोबार ठीक, उत्साह बढ़े, विद्या, बुद्धि में प्रगति, स्त्री हेतु खर्च, कारोबार ठीक। मार्च 14, 15, 22, 23, 24; अप्रै. 1, 2, 10, 11, 12 अशुभ।
वृष	उदरविकार, घरेलू झंझट बढ़ें, कार्यान्तर से लाभ, निजीलोगों से अनबन। जन. 20, 21, 22, 29, 30; फर. 7, 8, 9 अशुभ।	वृष	सेहत ठीक, अर्थहानि, चोटभय, निजीजन वैमनस्य, नई योजना व सन्तानपक्ष शुभ। फर. 17, 18, 25, 26, 27, मार्च 7, 8, अशुभ।	वृष	अर्थसंकट, अच्छे मित्रों से मेल, स्त्रीसुख, कारोबार ठीक। मार्च 16, 17, 24, 25, 26; अप्रै. 3, 4, 5, 13, 14 अशुभ।
मिथुन	सेहत ठीक, अर्थलाभ होकर हानि हो, चोटभय, सन्तानसुख, कारोबार में रुकावट। जन. 14, 15, 22, 23, 24; फर. 1, 2, 10, 11 अशुभ।	मिथुन	क्रोध बढ़े, अर्थहानि, चोटभय, मित्रों से मदद, आय से व्यय अधिक। फर. 12, 19, 20, 27, 28, 29; मार्च 9, 10, 11 अशुभ।	मिथुन	सेहत गड़बड़, निजीजन सहयोग, सन्तान हेतु विशेष खर्च, स्त्रीकष्ट, कारोबार ठीक। मार्च 18, 19, 27, 28; अप्रै. 5, 6, 7 अशुभ।
कर्क	सेहत गड़बड़, कर्जा बढ़े, अच्छे लोगों से मेल, कारोबार ठीक, अचानक चोटभय। जन. 16, 17, 25, 26; फर. 2, 3, 4 अशुभ।	कर्क	सेहत गड़बड़, शत्रु प्रबल, कार्यान्तर से लाभ, नीच व्यक्ति से भय, कारोबार कमजोर। फर. 12, 13, 14, 21, 22, मार्च 2, 3, 12, 13 अशुभ।	कर्क	धनलाभ, मित्रसहयोग, स्त्रीसुख, कारोबार में रुकावट। मार्च 20, 21, 22, 29, 30, 31; अप्रै. 8, 9, 10, अशुभ।
सिंह	सेहत बिगड़े, गुप्त शत्रु से भय, भाई से मदद, दुर्घटनाभय, कारोबार ठीक। जन. 18, 19, 20, 27, 28; फर. 5, 6, 7 अशुभ।	सिंह	सेहत ठीक, अर्थलाभ, मित्र-बन्धु से मेल, स्त्रीसुख, कारोबार असन्तोषजनक। फर. 15, 16, 23, 24; मार्च 4, 5, 6 अशुभ।	सिंह	सेहत ठीक, सन्तानपक्ष शुभ, स्त्रीपक्ष से लाभ, मासान्त में विशेष खर्च। मार्च 14, 15, 22, 23, 24; अप्रै. 1, 2, 10, 11, 12, अशुभ।
कन्या	सेहत ठीक, सम्पत्तिलाभ, स्त्रीसुख, शत्रु बढ़ें, कारोबार अच्छा। जन. 20, 21, 22, 29, 30; फर 7, 8, 9 अशुभ।	कन्या	गुप्त चिन्ता, स्त्रीसुख, कर्जा बढ़े, कारोबार चिन्ताजनक, मासान्त कुछ ठीक। फर. 17, 18, 25, 26, 27; मार्च 7, 8 अशुभ।	कन्या	सेहत ठीक, अर्थलाभ होकर हाथ से निकले, सन्ततिकष्ट, कारोबार बिगड़े। मार्च 16, 17, 24, 25, 26, अप्रै. 3, 4, 5, 13, 14, अशुभ।
तुला	शुभ समाचार, सन्तानपक्ष से चिन्ता, स्त्री से अनबन, कारोबार में रुकाबट। जन. 14, 15, 22, 23, 24; फर 1, 2, 10, 11 अशुभ।	तुला	सेहत ठीक, सम्पत्तिविवाद, स्त्रीकष्ट, कारोबार में हानि। फर. 12, 19, 20, 27, 28, 29 मार्च 9, 10, 11, अशुभ।	तुला	सेहत गड़बड़, निजीजनों से अनबन, स्त्रीकष्ट, कर्चाचढ़े। मार्च 18, 19, 27, 28, अप्रै. 4, 6, 7, अशुभ।
वृश्चिक	शरीरकष्ट, वृथाकलह, सम्पत्तिविवाद, कारोबार में हानि, स्त्रीकष्ट। जन. 16, 17, 25, 26; फर. 2, 3, 4 अशुभ।	वृश्चिक	मानसिक चिन्ता, बनते काम में रुकावट, अर्थचिन्ता, राजभय। फर. 12, 13, 14, 21, 22; मार्च 2, 3, 12, 13 अशुभ।	वृश्चिक	मन अशान्त, अर्थहानि, बन्धु से मदद, स्त्रीसुख, कष्ट भय। मार्च 20, 21, 22, 29, 30, 31; अप्रै. 8, 9, 10, अशुभ।
धनु	वायुविकार, निजीजनों से अनबन, स्त्रीसुख, कार्यान्तर व स्थानान्तर का विचार। जन. 18, 19, 20, 27, 28; फर. 5, 6, 7 अशुभ।	धनु	सेहत ठीक, कारोबार में नुकसान, यात्रासुख, गुप्त शत्रु से भय, कारोबार ठीक। फर. 15, 16, 23, 24, मार्च 4, 5, 6 अशुभ।	धनु	उदरविकार, अर्थहानि, भाईबन्धु से मदद, गुप्त शत्रु से भय, कारोबार ठीक। मार्च 14, 15, 22, 23, 24, अप्रै. 1, 2, 10, 11, 12 अशुभ।
मकर	शत्रु बढ़ें, आर्थिक स्थिति कमजोर, अपने ही पराए बनें, चोटभय। जन. 20, 21, 22, 29, 30; फर. 7, 8, 9, अशुभ।	मकर	उदरविकार, अर्थलाभ, भ्रातृसुख, गुप्त चिन्ता, स्त्रीकष्ट, मासान्त ठीक। फर. 17, 18, 25, 26, 27, मार्च 7, 8, अशुभ।	मकर	क्रोध बढ़े, धनलाभ, अच्छे लोगों से मेल, शत्रु कमजोर, कारोबार ठीक। मार्च 16, 17, 24, 25, 26; अप्रै. 3, 4, 5, 13, 14 अशुभ।
कुम्भ	रोग/चोटभय, आर्थिकलाभ, अपमानभय, स्त्रीकष्ट, मासान्त शुभ। जन. 14, 15, 22 23, 24; फर. 1, 2, 10, 11 अशुभ।	कुम्भ	पित्तविकार, धनलाभ, निजीलोगों से अनबन, सन्तान हेतु विशेष खर्च। फर. 12, 19, 20, 27, 28, 29, मार्च 9, 10, 11 अशुभ	कुम्भ	सेहत ठीक, धनलाभ, असफल योजना, स्त्रीपक्ष से लाभ, कारोबार ठीक। मार्च 18, 19, 27, 28; अप्रै. 5, 6, 7 अशुभ।
मीन	सेहत ठीक, अर्थलाभ होकर हानि, स्त्री सुख, मासान्त में राजभय। जन. 16, 17, 25, 26; फर. 2, 3, 4 अशुभ।	मीन	सेहत ठीक, अर्थसंकट, असफल योजना, स्त्रीसुख, कारोबार ठीक। फर. 12, 13, 14, 21, 22, मार्च 2, 3, 12, 13, अशुभ।	मीन	वायुविकार, धनलाभ होकर हानि, यात्रा में कष्ट, घरेलूकलह, कारोबार कुछ गड़बड़। मार्च 20, 21, 22, 29, 30, 31; अप्रै. 8, 9, 10 अशुभ।

इसवर्ष (सं. 2059 वि.) का मन्त्री एवम् धान्येश कौन हैं ?

लेखक– प्रियव्रत शर्मा

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा जिसदिन सूर्योदय के बाद समाप्त हो अथवा जिसदिन पूरे अहोरात्र को वह व्याप्त करे, उसदिन के वार का स्वामी ग्रह संवत् का राजा और जिसवार में मेष संक्रान्ति (सूर्य का मेष राशि में संक्रमण) घटित हो, उस वार का स्वामी संवत्सर का मन्त्री होता है। इसी प्रकार कर्क–सिंह–कन्या–तुला–धनु–मकर एवं मीन की संक्रान्तियों के वारों के स्वामी क्रमशः संवत्सर के सस्येश, दुर्गेश, धनेश, रसेश, धान्येश, नीरसेश और फलेश माने जाते हैं। **किञ्च,** जिस दिन सूर्य आर्द्रानक्षत्र में प्रवेश करता है, उसदिन के वार का स्वामी ग्रह संवत्सर का मेघेश कहलाता है। वर्ष (संवत्सर) के ये राजा, मन्त्री, सस्येश आदि दस अधिकारी माने जाते हैं। पंचांगों में इनका शुभाशुभ फल प्रतिवर्ष दिया रहता है।

क्योंकि तिथियों का प्रारम्भ एवं समाप्तिकाल तथा सूर्य आदि का मेषादि राशियों में संक्रान्तिकाल स्थानभेद से बिल्कुल नही बदलता। लेकिन वार स्थानभेद से बदल जाता है। अतः वर्ष के उपरोक्त दस अधिकारी भी कई बार स्थानभेद से बदल जाते हैं, जिससे देश के एकभाग में वर्ष का राजा या मन्त्री आदि कोई एक ग्रह और दूसरे भाग में कोई दूसरा ग्रह बन जाता है। ऐसी स्थिति भारत में सामान्यतः दो–तीन वर्षों में एक–दो बार उत्पन्न हो ही जाती है। इसवर्ष (सं. 2059 वि. में) भी वर्ष के मन्त्री एवं धान्येश के बारे में इस प्रकार की दुविधाजनक स्थिति उत्पन्न हुई है, जिस से भारत के एक भाग में वर्ष का मन्त्री सूर्य एवं दूसरे भाग में मन्त्री शनि तथा एक भाग में धान्येश सूर्य और दूसरे भाग में धान्येश चन्द्र होगा। इस प्रकार की दुविधावाली स्थिति की उत्पत्ति का कारण सामान्य पाठकों को स्पष्ट करने के लिए नीचे विस्तृत विवरण दिया जा रहा है।

पाश्चात्य प्रणाली के अनुसार वार का प्रारम्भ अंग्रेजी तारीख की भान्ति रात्रि के 12 बजे ही हो जाता है, जबकि भारतीय ज्योतिष के अनुसार वार का प्रारम्भ सूर्योदय के समय होता है। जैसे-14 अप्रैल सन् 2002 ई. को रविवार का प्रारम्भ, पाश्चात्य प्रणाली के अनुसार 14 अप्रैल को सूर्योदय से पहिले रात्रि के 12 बजे तभी मान लिया जाएगा, जबकि अप्रैल की 14 तारीख प्रारम्भ होगी। लेकिन भारतीय ज्योतिष के अनुसार इस दिन रविवार का प्रारम्भ 14 अप्रैल के सूर्योदय के समय ही माना जाएगा। इससे पहिले तो इस प्रणाली के अनुसार शनिवार ही होगा। क्योंकि सूर्योदय प्रत्येक स्थल पर भिन्न–भिन्न काल में होता है, अतः भारतीय प्रणाली के अनुसार प्रत्येक दिन वार का प्रारम्भ स्थानीय सूर्योदय के अनुसार, भिन्न–भिन्न स्थलों पर भिन्न–भिन्न समय पर हुआ करता है – यह स्पष्ट है। जैसे – 14 अप्रैल (सन् 2002 ई.) को शनिवार की समाप्ति व रविवार का प्रारम्भ चण्डीगढ में चण्डीगढ़ीय सूर्योदयकाल {6 घं. 01 मि. (भा. स्टैं. टा.)} पर होगा लेकिन वाराणसी में तो वह इससे पहिले ही वाराणसी के सूर्योदयकाल {5 घं. 41 मि. (भा. स्टैं. टा.)} पर प्रारम्भ हो जाएगा।

भारतीय ज्योतिष में (या हमारे पंचांगों में) स्थानीय सूर्योदय पर प्रारम्भ होने वाले वारों का ही प्रयोग होता है। कौन सी तिथि किस वार में प्रारम्भ या समाप्त हुई ? जातक का जन्म किस वार में हुआ ? सूर्य या चन्द्र ने राशि–नक्षत्र किस वार में बदला ? आदि सभी विषयों में स्थानीय सूर्योदय पर प्रारम्भ होने वाले वार का ही हमारे पञ्चांगों में प्रयोग होता है

ध्यान रहे– तिथि, नक्षत्र, योग की समाप्ति–प्रारम्भ, सूर्यादि ग्रहों का राशि–नक्षत्र, नक्षत्रचरण में प्रवेश आदि का काल (स्टैं. टा.) स्थानभेद से देश में कदापि बदलता नहीं है। वह देश के प्रत्येक स्थल (नगर–ग्राम) के लिए एक ही रहता है। **जैसे–** 24 अप्रै. (सन् 2002 ई.) बुधवार को चैत्र शुक्ल द्वादशी का समाप्तिकाल 18 घं. 58 मि. (भा. स्टैं. टा.) है। यह समाप्तिकाल चण्डीगढ़, जयपुर, जम्मू, वाराणसी, मुंबई आदि सभी भारतीयनगरों के लिए है। अर्थात् इन सभी नगरों में चैत्र शुक्ल द्वादशी की समाप्ति भा.स्टैं.टा. के अनुसार 18 घं. 58 मि. पर ही होगी। लेकिन स्थानीय सूर्योदयानुसार प्रारम्भ–समाप्त होने वाला वार स्थानभेद से बदलता है। जिसके परिणाम स्वरूप ऐसा तिथ्यादि का प्रारम्भ–समाप्तिकाल तथा ग्रह का राशि–नक्षत्रादि प्रवेशकाल, जो सूर्योदय के आसन्न घटित हो रहा हो, कई बार देश के विभिन्न स्थलों पर दो (पूर्वापरवर्ती) भिन्न–भिन्न वारों में चला जाता है। **जैसे**–18 अप्रैल 2002 ई. को शुक्र का कृत्तिका में प्रवेशकाल (भा.स्टैं.टा.) 5 घं. 40 मि. (प्रातः) है। इस 18 अप्रैल के दिन सूर्योदय पर भारतीय प्रणाली के अनुसार गुरुवार प्रारम्भ होगा। चण्डीगढ़, दिल्ली व जयपुर में इसदिन सूर्योदय 5 घं. 40 मि. (भा.स्टैं.टा.) के बाद ही होगा। अतः शुक्र का कृत्तिका में प्रवेश इन नगरों में बुधवार को ही माना जाएगा। लेकिन वाराणसी, कलकत्ता आदि में इसदिन सूर्योदय 5 घं. 40 मि. (भा.स्टै.टा.) से पहिले ही हो जाएगा, अतः वहां इस समय गुरुवार होगा।

अब देखिए इसवर्ष (सं. 2059 वि.) में सूर्य की मेष संक्रान्ति 14 अप्रैल (सन् 2002 ई.) को प्रातः 5 घं. 49 मि. (भा.स्टैं.टा.) पर हो रही है। मेष संक्रान्ति का यह काल भारत के प्रत्येक नगर–ग्राम के लिए है। अर्थात् भारत के प्रत्येक नगर–ग्राम में इसवर्ष मेष–संक्रान्ति भा.स्टैं.टा. के अनुसार प्रातः 5 घं. 49 मि. पर ही होगी। लेकिन सूर्योदय तो प्रत्येक नगर–ग्राम में भिन्न–भिन्न काल में होगा; अतः जहां सूर्योदय 5 घं. 49 मि. (भा.स्टैं.टा.) से पहले हो जाएगा, वहां मेष–संक्रान्ति के समय रविवार होगा और तदनुसार वहां संवत् का मन्त्री सूर्य माना जाएगा। जहां सूर्योदय मेष संक्रान्तिकाल के बाद होगा, वहां मेष संक्रान्ति के समय शनिवार होगा, तदनुसार वहां संवत् का मन्त्री शनि माना जाएगा।

अगले पृष्ठ पर दिए गए भारत के मानचित्र में खींची गई **'क–ख'** रेखा से दाईं ओर स्थित देश के भाग में 14 अप्रैल 2002 ई. को सूर्योदय 5 घं. 49 मि. (भा.स्टैं.टा.) से पहिले हो जाएगा; अतः भारत के इस भाग में 2059 वि. संवत् का मन्त्री सूर्य होगा। क्योंकि देश के इस भाग में मेष–संक्रान्ति रविवार में होगी। इसीप्रकार इस **'क–ख'** रेखा से बाईं ओर स्थित देश के भाग में इसदिन (14 अप्रैल को) सूर्योदय 5 घं. 49 मि. (भा.स्टैं.टा.) के बाद होगा; अतः देश के इस भाग में सं. 2059 वि. का मन्त्री शनि ही माना जाएगा; क्योंकि देश के इस भाग में मेष–संक्रान्ति के समय शनिवार होगा।

इसी प्रकार इसवर्ष धनु सक्रान्ति भी भारत के दो अलग-अलग भागों में दो अलग-अलग वारों में घटित हो रही है। देखिए-इसवर्ष धनु संक्रान्ति 16 दिसम्बर (2002 ई.) को (भा.स्टैं.टा.) के अनुसार प्रातः 6 घं. 44 मि. पर हो रही है। जहां सूर्योदय इस दिन (16 दिसं. को) 6 घं. 44 मि.(भा.स्टैं.टा.)से पहिले हो जाएगा, वहां इस धनु संक्रान्ति के समय चन्द्रवार होगा और तदनुसार वहां इसवर्ष का धान्येश चन्द्रमा माना जाएगा। जहां इस दिन सूर्योदय 6 घं. 44 मि. (भा.स्टैं.टा.) के बाद होगा, वहां धनु संक्रान्ति के समय रविवार होने से धान्येश सूर्य होगा। यहां दाईं ओर दिए गए भारत के मानचित्र में खींची गई **'च-छ'** रेखा से दाईं ओर वाले भाग में इसदिन सूर्योदय 6 घं. 44 मि. (भा.स्टैं.टा.) से पहिले हो जाएगा, जिससे देश के इस भाग में धान्येश चन्द्रमा ही माना जाएगा। इस रेखा से बाईं ओर स्थित भाग में सूर्योदय 6 घं. 44 मि. के बाद होगा, अतः देश के इस भाग में धान्येश-सूर्य ही माना जाएगा।

इस विवेचन का सारांश यह है, कि- वर्ष के इन दस अधिकारियों का निर्धारण स्थानीय वारों पर ही निर्भर करता है। अतः स्पष्ट है;- किसी वर्ष का राजा, मन्त्री, रसेश किंवा अन्य अधिकारी भारत में जो ग्रह होगा, जापान, अमेरीका, इंग्लैण्ड आदि अन्य सभी देशों में भी वही हो;-ऐसा नहीं होता। विश्व के लगभग पचास प्रतिशत देशों में वर्षेश आदि के बारे में प्रतिवर्ष मतभेद अनिवार्यतः रहता ही है। भारत में भी ऐसा मतभेद दो-तीन वर्षों में एक-आध बार किसी न किसी वर्षाधिकारी के बारे में उत्पन्न होता ही रहता है।

मन्त्री और धान्येश के क्षेत्र
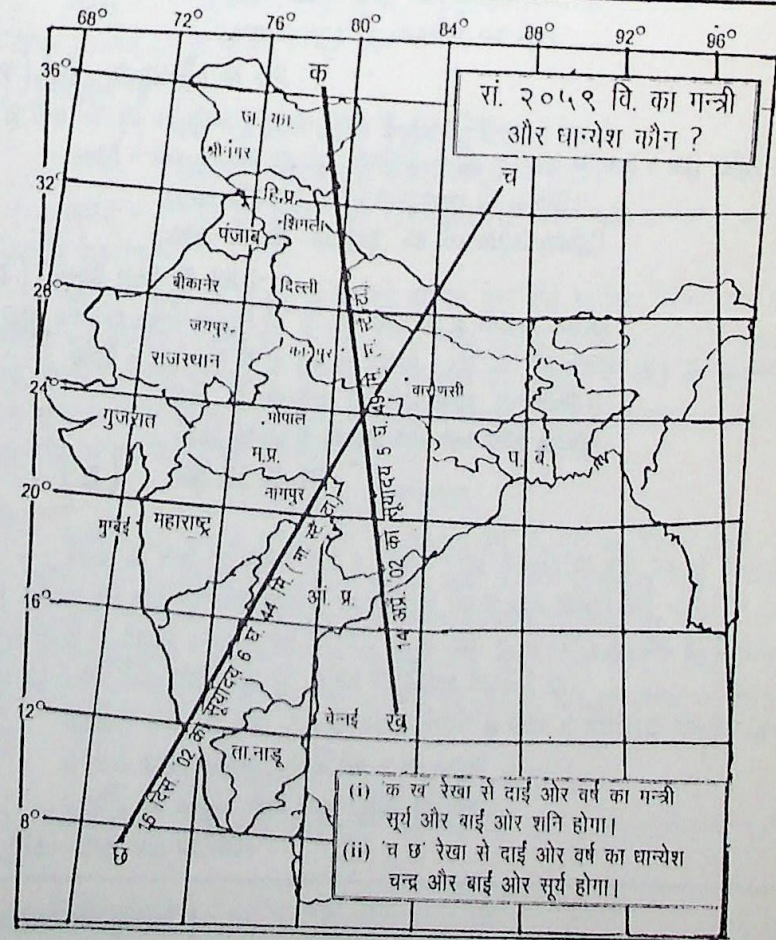
अथ वर्षराजादि फल विचार (सं. २०५९ वि.)

(सन् २००२-२००३ ई. की ग्रहपरिषद् का विवरण)

कल्पादि से गतवर्ष १९७२९४९१०३, सृष्टिसंवत् १९५५८८५१०३, **श्री विक्रम संवत् २०५९,** शक संवत् १९२४, श्रीकृष्णजन्म संवत् ५२३८, कलिसंवत् ५१०३, श्रीजैनमहावीर निर्वाण संवत् २५२७-२८, श्रीबुद्ध सवत् २६२५-२६, हिजरी सन् १४२२-२३, फसली सन् १४०९-१४१०, **ईस्वी सन् २००२-०३ ई.।**

वर्षारम्भ में गुरुमान से विष्णुविंशति का **'मन्मथ'** नामक संवत्सर है; इसका फल शास्त्रों में इस प्रकार लिखा है:-

"मन्मथाब्देऽखिला लोकाः तस्करा अति लोलुपाः।
शालीक्षु - यव - गोधूमैर्नयनाभिनवा धरा ।।"

अर्थात् - प्रजा में नीच-मानसिकता वाले चोर,अतिलोभी व्यक्तियों की बहुलता रहे। धान, ईख, जौ एवं गेहूं आदि धान्यों से पृथ्वी पूर्ण रहे।

किञ्च - "मन्मथे शुक्रः स्वामी; राजविरोष; पूर्वदेशे लोकपीड़ा परं अतिवृष्टिः, रोग-बाहुल्यम्, धान्य-संग्रहः, चैत्रे वर्षा, भूमिकम्पः, वैशाखे समर्घता, ज्येष्ठाषाढ़योर्महर्घता, धान्ये षड्-गुणो लाभः। श्रावणेऽल्प-मेघः, भाद्रे महामेघोऽवृष्टिर्दिन१४। आश्विने रोगपीड़ा, अन्नं महर्घम्, धान्यमणं प्रतिद्रामा ६० लभ्यते; सर्वधातु-महर्घता। कार्त्तिके सुभिक्षं; गुर्जर देशापेक्षयान्न-समता। मार्गशीर्षादि मासत्रयेऽन्नं समर्घं, लोकसुखं, राजा सुस्थः, सर्वधातु समर्घं, वस्त्र महर्घता।"

इस संवत् का राजा (ग्रहपरिषद् के प्रधान) शनि, मन्त्री शनि, सस्येश (चौमासी फसलों के स्वामी) भौम, धान्येश (शीतकालीन फसलों के स्वामी) सूर्य,मेघेश (मौसम-वर्षा-पानी के स्वामी) शनि, रसेश (गुड़-खाण्ड-रसकस आदि के स्वामी) गुरु,नीरसेश (सर्वविध धातु आदि व्यापार के स्वामी) मंगल, फलेश (फल-फूल आदि के स्वामी) शुक्र,धनेश (धन-दौलत एवम् खजाना के स्वामी) चन्द्र एवं दुर्गेश (सुरक्षा एवं प्रतिरक्षा के स्वामी) शुक्र हैं। वर्ष के उल्लिखित पदाधिकारियों का फल निम्नांकित है:-

(१) राजा शनि का फलः-

"शनैश्चरे भूमिपतौ सकृज्जलं प्रभूत रोगैःपरिपीड्यते जनः।
युद्धं नृपाणां गदतस्कराद्यैः भ्रमन्ति लोकाः क्षुधिताश्च देशान्।।"

अर्थात् - वर्षाकम हो, नानाविध रोगों से जनता पीड़ित हो। राजनीतिज्ञों में परस्पर वैमत्य किंवा राजाओं में युद्ध हो, रोग- चोर आदि से अशान्ति, कहीं अकाल की स्थिति से जनता स्थानान्तरण के लिए विवश हो।

(२) (क) मन्त्री शनि का फल-

"रविसुते यदि मन्त्रिणि पार्थिवा विनय-संरहिता बहुदुःखदाः।
न जलदा जलदा जनतापदा जनपदेषु सुखं न धनं क्वचित् ।।"

अर्थात् - शासकों के कठोर किंवा निर्दयतापूर्ण व्यवहार से जनता में दुःख किंवा असन्तोष रहे। वर्षा न होने से कुछ भूभाग अकाल-ग्रस्त हो, निर्धनता एवं दुःखमय वातावरण रहे।

विभिन्न स्थानों पर सूर्योदय में अन्तर होने से स्थान भेद से 'वार' में भी अन्तर हो जाता है। इसप्रकार इसवर्ष भारत के कुछ भागों (वाराणसी आदि) में वर्ष का मन्त्री सूर्य ही माना जाएगा। (पढ़ें -पृष्ठ 124 पर लेख — "**इसवर्ष का मन्त्री एवं धान्येश कौन है ?**")अतः यहां मन्त्रीसूर्य का फल देना भी प्रासंगिक समझते हैं।

(ख) - मन्त्री सूर्य का फल -

" नृपभयं गदतोपि हि तस्करात् प्रचुर धान्य धनादि महीतले।
रसचयं हि समर्घतमं तदा रविरमात्यपदं हि समागतः।। "

अर्थात् - सूर्य मन्त्री हो तो प्रजा में राजभय , चौर, ठग एवं नानाविध रोगों से भय व्याप्त हो। लेकिन धन-धान्य समृद्धि भी रहे। दूध, घी, गुड़ आदि रसों के संग्रह से लाभ रहे।

(३) सस्येश मंगल का फल :-

"प्रथम धान्यपतौ धरणीपतौ गज तुरग-खरोष्ट्र-गवामपि।
प्रभवदा बहुरोगघनो जलं न समसौख्यकरं तुष धान्यहृत्।।"

अर्थात् - हाथी-घोड़े-गधे-ऊँट और गाय-बैलों में रोग फैले, वर्षा की कमी व कहीं अवृष्टि रहे, गर्मी के धान्य (जौ, गेहूं एवं चावल आदि) की फसल को हानि पहुंचे।

(४) (क) - धान्येश-सूर्य का फल :-

"पश्चाद्धान्याधिपे सूर्ये पश्चाद्धान्यं तदा नहि।
विग्रहः भूभृतां धान्यं महर्घं ज्वरपीड़नम्।।"

अर्थात् - शरद् धान्यों (मूंग,मोठ,बाजरा आदि अनाजों) की फसल को हानि पहुंचे, राजनीतिज्ञों में परस्पर मतभेद किंवा देशों में परस्पर युद्ध का वातावरण रहे। धान्य मंहगे हों, प्रजा रोगों से पीड़ित रहे।

इसवर्ष विभिन्न प्रदेशों में सूर्योदय भेद से बार विभिन्नता के कारण धान्येश में भी अन्तर होने से उत्तरी भारत (पंजाब, हि.प्र.आदि) में तो धान्येश सूर्य ही माना जाएगा; लेकिन जहां धनु संक्रान्ति के दिन सूर्योदय ६ घं. ४४ मि. (भा.स्टैं.टा.) से पहिले होगा, वहां धनु संक्रान्ति के समय चन्द्रवार होने से धान्येश चन्द्र ही माना जाएगा। (पढ़ें पृ. 124 पर लेख **"इस वर्ष का मन्त्री एवम् धान्येश कौन ?"**) अतः इस दुविधा का अपाकरण करने के लिए हम धान्येश चन्द्र का फल दे देना भी प्रासंगिक समझतें हैं।

(४) (ख) धान्येश चन्द्र का फल :-

"चन्द्रे धान्यधिपे जाते प्रजावृद्धिः प्रजायते। गोधूमाः सर्षपाश्चैव गौषुक्षीरं तदा बहु ।।"

अर्थात् - चन्द्र के धान्याधिप होने पर प्रजा में वृद्धि, गेहूं, सरसों की फसल अच्छी हो, गऊएं अधिक दूध दें।

(५) मेघेश-शनि का फल :-

" रविसुते जलदस्य पतौ भवेद् विरलवृष्टिवती वसुधा तदा।
मनसि तापकरो नृपतिः सदा विविध रोगरता जनता मता।"

अर्थात् - वर्षा की बहुत कमी किंवा कहीं-कहीं अपर्याप्त वर्षा हो। शासकवर्ग चिन्ताग्रस्त (परेशान) रहें, जनता में अनेकविध रोग व्याप्त हों।

(६) रसेश-गुरु का फल :-

" यदि गुरु रसपो जन सौख्यदः कमलवन्ति सरांसि तृणानि च।
जनपदा द्विज-पूजन तत्परा गज सुवाजि-रथोष्ट्रयुता नृपाः।।"

अर्थात् - जनता सुखी रहे, कमल-तृणादि की उत्पत्ति अच्छी रहे। राष्ट्र (नगर-मण्डलों) में योग्य बुद्धिमान् व्यक्तियों का सम्मान हो, शासकवर्ग नानाविध वाहन व पशुधन से सुसज्जित रहें।

(७) नीरसेश-मंगल का फल :-

"नीरसेशो यदा भौमः प्रवाल-रक्त-वाससाम्। रक्तचन्दन ताम्राणामर्घ वृद्धिर्दिने-दिने।।"

अर्थात् - मूंगा, लालवस्त्र, लालचन्दन एवं ताम्बा आदि लालरंग की चीजों में प्रतिदिन मंहगाई का वातावरण रहे।

(८) फलेश शुक्र का फल :-

"यदि फलस्य पतौ भृगुजे धरा मृदुकुमार महीरुह राशयः।
बहुफला नरनाथ सुभोगदा द्विजवराः श्रुतिपाठ परायणाः।।"

अर्थात् - कोमल घास-फल-फूल-पौधे अधिक हों। राजालोग ऐश्वर्ययुक्त जीवन व्यतीत करें। वेद पुराण आदि के चिन्तन-पठन-पाठन की तरफ पण्डितों की प्रवृत्ति रहे।

(९) धनेश चन्द्र का फल :-

"धनपतिर्मृगलांछनको यदा रसचय-क्रय-विक्रयतो धनम्।
वसन-शालि-सुगन्ध रसं बहु द्रविण तैलयुतं नृपसौख्यदम्।।"

अर्थात् - रस (गुड़ आदि) के क्रय-विक्रय से धनलाभ हो। वस्त्र-चावल, सुगन्धित तेल-घी एवं रस के व्यापार से अच्छा लाभ हो, शासकों को सुख मिले।

(१०) दुर्गेश शुक्र का फल :-

" नगर देश विशेष पतिर्यदा भृगुसुतो बहु सौख्यकरो मतः।
विनयवणिज-गेहसमः सुखो नगवने निकटेऽपि च दूरतः।।"

अर्थात् - नगराधिप एवं देशाधिप सुखी रहें, व्यापारिक-क्षेत्र(विदेश), पर्वत एवं वनों में भी घर जैसा आनन्दप्रद वातावरण रहे।

सूचना - यद्यपि वर्ष के इन दशाधिकारियों का फल सर्वत्र होता है। किन्तु विशेषतः राजा का फल काश्मीर, अफगानिस्तान एवं वराड़ देश में; मन्त्री का फल आन्ध्र, वाल्हीक, उज्जैन एवं मालवा में; सस्येश का पौण्ड्र, विदर्भ में; धान्येश का गुजरात, नर्मदा के तटवर्ती प्रदेश एवं मध्यप्रदेश में; मेघेश का मगध एवं बंगाल में; रसेश का कोंकण एवं गोवा में; नीरसेश का मालवा व बिहार में; धनेश का राजस्थान एवं बाड़मेर में; फलेश-दुर्गेश एवं राजा का फल सब जगह विशेष होता है।

वर्षा आदि के विश्वामान

वर्षाविश्वा १३, धान्य ७, तृण ६, शीत १५, तेज ११, वायु १३, वृद्धि १५, क्षय १५, विग्रह २, क्षुधा ६, तृषा ३, निद्रा १५, आलस्य ११, उद्यम ११, शांति ७, क्रोध १३, दम्भ ५, लोभ ३, मैथुन १५, रस ६, फल १३, उत्साह ११, उग्रता ५, पाप १, पुण्य ३, व्याधि १७, व्याधिनाश १३, आचार ११, अनाचार १५, मृत्यु ११, जन्म १, देशोपद्रव ५, देशस्वास्थ्य ६, चौर १५, चौरनाश ७, अग्नि ३, अग्निशांति ५, उद्भिज्ज ७, जरायुज ३, अण्डज १३, स्वेदज ६, टिड्डी ११, तोता १३, मूषक १३, सोना ५, तांबा १७, स्वचक्र १५, परचक्र १७, वृष्टि १६, वृष्टिनाश ६, एवं संवत् विश्वा ८ है।

आवर्तकादि चतुर्मेघ - चतुर्मेघों में **'पुष्कर'** नामक मेघ है।

फल- वर्षा अधिक हो, **"पुष्करे बहुलं तोयम्"**। बाढ़ आदि से विनाश लीला का दृश्य उपस्थित हो।

नवमेघ विचार - नौ मेघों में **'संवर्त'** नामक मेघ का फल :-

"कामाधिक्यं स्वल्पता धर्मकार्ये पृथ्वीपालास्तत्परा नान्यकार्ये।
संवर्ताख्यो नीरदः स्याद्धि यत्र प्राचो वायुर्वाति सर्वत्र तत्र।।"

अर्थात् - वासना जन्य अनैतिक घटनाएं अधिक हों, धर्मकर्म में रुचि कम हो, शासकवर्ग स्वकार्य किंवा आत्मतोषण में ही संल्लग्न रहें, अन्यकार्य में रुचि न लें। पूर्वदिशा में वायुवेग अधिक रहे।

अनन्तादि अष्टनाग - अनन्तादि अष्टनागों में **'शंख'** नामक नाग है।

फल :- जल-वायु एवं प्राकृतिक-प्रकोप से कहीं हानि हो। कहीं अकाल की स्थिति से जनजीवन अस्त-व्यस्त रहे।

सुबुध्नादि बारह नाग - सुबुध्नादि बारह नागों में **'तक्षक'** नामक नाग का फल:-

"तक्षकाभिष नागेन्द्रो जायते यत्र वर्षके। तत्र तु मध्यमा वृष्टिः विग्रहो मरणं ध्रुवम्।।"

अर्थात् - वर्षा मध्यम हो, कुछ देशों में युद्ध से वातावरण अशान्त रहे, किसी विशिष्ट-व्यक्ति के निधन से शोक व्याप्त हो।

सप्तवायु ज्ञान - आवह आदि वायु-सप्तक में इस वर्ष **'वायु'** नामक वायु है।

फल:- भयंकर वायुवेग से कहीं जनधनहानि हो। खड़ी फसलों को हानि पहुंचे।

इसवर्ष का वाहन - वर्षेश शनि होने से इसवर्ष का वाहन **'महिष (भैंसा)'** है।

फल:- पूर्व-दक्षिण दिशाओं में स्थित-प्रान्तों एवं देशों में कहीं भयंकर रेल-वायुयान दुर्घटना व भूकम्प आदि प्राकृतिक-प्रकोप से भारी जनधन हानि के योग हैं। उड़ीसा-आसाम-बिहार-गुजरात एवं पूर्वी देशों के लिए यह वर्ष नेष्ट प्रतीत होता है।

इस वर्ष के चार स्तम्भ

(१) **जलस्तम्भ** - (चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को रेवती नक्षत्र) ६ प्रतिशत है।

(२) **वायुस्तम्भ** - (ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिपदा को मृगशिर नक्षत्र) ८३ प्रतिशत है।

(३) **तृणस्तम्भ** - (वैशाख शुक्ल प्रतिपदा को भरणी नक्षत्र) का अभाव है।

(४) **अन्नस्तम्भ** - (आषाढ़ शुक्ल प्रतिपदा को पुनर्वसु नक्षत्र) ७२ प्रतिशत है।

उल्लिखित चार स्तम्भ देश के कुशल-क्षेम ज्ञानार्थ विशेष महत्व रखते हैं। क्योंकि सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड की सत्ता जल, वायु, अन्न एवं तृण (जड़ी-बूटियों) आदि पर ही निर्भर है। संवत् का शुभाशुभ भी इन्हीं स्तम्भों के आधार पर जाना जा सकता है। जनमानस एवं देश-विशेष की खुशहाली के मूल ये चार स्तम्भ ही हैं। अतः इन चार स्तम्भों का प्रतिशतता के आधार पर सामूहिक फल इस प्रकार होगा :-

फल - इसवर्ष जलस्तम्भ केवल ६ प्रतिशत है एवं तृणस्तम्भ का अभाव है। अतः जल एवं तृण स्तम्भ विचार से यह वर्ष काफी कमजोर है। वायु एवं अन्नस्तम्भ प्रवल हैं। तृणस्तम्भ के अभाव से पूर्व-दक्षिणवर्ती भूभाग पर कहीं अकाल की छाया एवं पशुचारा भी उपलब्ध न होगा। जलस्तम्भ क्षीण होने से इसवर्ष अनेकत्र वर्षा की कमी होगी। अन्न एवं वायु स्तम्भ के सशक्त होने से यह वर्ष अनाज भण्डारण के लिए सुखद रहेगा। वायु सुखद एवं पर्याप्त सुख-समृद्धिप्रद रहेगी।

आर्षमान विचार (वर्षरक्षा के लिए चार दुर्ग) :-

(१) **प्रथम आर्ष** - (अक्षय तृतीया को रोहिणी नक्षत्र) का अभाव है।

(२) **द्वितीय आर्ष** - (सं. २०५८ वि. में पौष अमा को मूल नक्षत्र) का अभाव है।

(३) **तृतीय आर्ष** - (श्रावण पूर्णिमा को श्रवण नक्षत्र) ५ प्रतिशत है।

(४) **चतुर्थ आर्ष** - (कार्त्तिक पूर्णिमा को कृत्तिका नक्षत्र) ५३ प्रतिशत है।

फल - इसवर्ष की रक्षा के संकेतक तीन दुर्ग बहुत ही क्षीण हैं। राजनैतिक-दृष्टि से देश को अनेकविध आपदाओं का सामना करना पड़ेगा। राजनीतिज्ञ नए शक्ति परीक्षण की तरफ बढ़ेंगे। कहीं धार्मिक उन्माद- जन्य एवं प्रान्तीय-समस्याएं उलझ कर सामने आएंगी। कहीं विरोधी देश की सीमाओं पर युद्धमय वातावरण से अशान्ति, किसी प्रान्त में भूकम्प-अग्निकाण्ड आदि प्राकृतिक-प्रकोप से जनधनहानि भी होगी।

दोहा :-

"अखैतीज रोहिणी न होई, पौष अमावस मूल न जोई।
राखी श्रवणों हीन विचारो, कार्तिक पुण्यों कृत्तिका टारो।
महीमाह खलबली प्रकाशै, कहै भड्डली साख विनाशै।। "

रोहिणी का वास

इसवर्ष **रोहिणी** का वास **'तट'** पर है।

फल - **'तटेवृष्टिः सुशोभना'** वर्षा पर्याप्त हो। इसवर्ष बहुजलीय अन्न-चावल आदि की फसल अधिक होगी। न्यूनवर्षा वाले बागड़ादि प्रान्तों में भी आगे-पीछे वर्षा होने से कृषक लोगों को सहारा मिलेगा।

समय का वास - इसवर्ष समय का वास **'धोबी'** के घर है। तालाब, नदी, नाले एवं वावड़ियां जल से परिपूर्ण रहें। राजस्थान आदि में भी वर्षा हो।

शनि की दृष्टि

संवत् के प्रारम्भ से २२ जुलाई २००२ ई. तक शनि वृष राशि में ही रहेगा; तत्पश्चात् २३ जुलाई (२००२ ई.) से ७ जनवरी सन् २००३ ई. तक शनि मिथुन राशि में संचरण करेगा। इसके बाद ८ जनवरी सन् (२००३ ई.) से संवत् के अन्त तक शनि वक्र स्थिति में पुनः वृष राशि में आ जाता है और संवत् २०५९ वि. के अन्त तक वृष राशि में ही रहता है। वृष-मिथुन राशिस्थ शनि की दृष्टि पूर्वदिशा की तरफ ही रहती है।

फल - पूर्वी गोलार्ध स्थित देशों एवं प्रान्तों में कहीं राजनैतिक अस्थिरता, समुद्री तूफान, सत्ता परिवर्तन हो। कहीं दो देशों में युद्ध-ज्वाला से बड़े देश चिन्तित हों, आन्दोलन, हत्याकाण्ड, भयंकर रोग

से मृत्युदर बढ़े। कहीं भूकम्प, तूफान आदि प्राकृतिक प्रकोप से भारी जन-धन हानि हो। पूर्व में शनिदृष्टि होने से मेष, मिथुन, वृष, मकर, कन्या, तुला नामराशि वाले देशों में विशेषतः मुस्लिम देशों में अघटित घटनाचक्र चलेगा।

शरत्सस्य जातक - इसवर्ष १४/१५ मई (सन् २००२ ई.) को ५२ घटी ५१ पल तदनुसार २६ घण्टा ४० मिनट पर सूर्यदेव वृषराशि में प्रविष्ट होंगे।

फल - यहां वृषराशि को ही लग्न मानकर विचार किया जाएगा। वृषराशिस्थ सूर्य के साथ शनि-मंगल-बुध- शुक्र-राहु एवं चन्द्र-ये ६ ग्रह एकत्र हैं। सूर्य का क्रूर-ग्रहों के साथ सम्बन्ध होने से शारद-धान्य, मूंग-मोठ-बाजरा आदि की फसल को भारी हानि होगी; ये अनाज बाजार में सुलभ न होंगे, व्यापारी लोग इन चीजों का स्टॉक करके कार्तिक मास तक भारी लाभ लें सकेंगे। संक्रान्तिकालीन कुण्डली में, लग्नेश-दशमेश गुरु की, दशम-भाव पर दृष्टि होने से, शासन शरद् ऋतु के धान्यों पर अंकुश लगाकर, मंहगाई को कम करने का प्रयास करेगा।

शरत्सस्य जातक कुण्डली

ग्रीष्मसस्य जातक - इसवर्ष १६ नवम्बर (सन् २००२ ई.) को २२ घटी ५७ पल तदनुसार १६ घण्टा ५ मिनट पर सूर्यदेव वृश्चिक राशि में प्रविष्ट होंगे।

फल -संक्रान्तिकालीन लग्न मेष पर लग्नेश मंगल की विशेष दृष्टि है तथा वृश्चिक स्थित सूर्य-बुध-केतु पर गुरु की विशेष दृष्टि है। सूर्य से शुक्र द्वादशस्थ है। ग्रीष्मधान्य की उपज पर्याप्त होगी। इसवर्ष गेहूं, जौ, चना, दालवाना की फसल से किसान एवं व्यापारियों को पूर्णलाभ मिलेगा - **"अर्कात् सिते द्वितीये बुधेऽथवा युगपदेव वा स्थितयोः। व्ययगतयोरपि तद्वन्निष्पत्तिरतीव गुरु-दृष्ट्या।। "**
कुण्डली में चन्द्र भी गुरु दृष्ट है, अतः इसवर्ष ग्रीष्मधान्य सुलभ होंगे।

ग्रीष्मसस्य जातक कुण्डली

२ रा.		चं. १२
श. ३	१	११
४ गु.		१०
५	७ शु.	८ ९
६ मं.		के. सू. बु.

शुभ-संवत्सर (२०५९ वि.) का प्रवेश

गतसंवत् २०५८ वि. में चैत्रकृष्ण अमावस शुक्रवार तदनुसार १२ अप्रैल सन् २००२ ई. को ४७ घटी ०१ पल (अर्थात् मध्यरात्रि के बाद १३ अप्रैल को ० घण्टा ५१ मिनट) पर रेवती नक्षत्र, वैधृति योग एवं मीनरथ चन्द्र के समय धनुलग्न में नए **'संवत् २०५९ वि.'** का शुभारम्भ होगा।

नववर्ष प्रवेश कुण्डली

फल - वर्षलग्न कुण्डली में लग्नेश गुरु की लग्न पर पूर्णदृष्टि है, चन्द्र गुरु के क्षेत्र में है। यह ग्रहस्थिति संवत् के लिए शुभ है। लेकिन व्ययेश-पंचमेश मंगल तथा द्वितीयेश-तृतीयेश शनि, ये दोनों ग्रह राहु के साथ छठे भाव में स्थित हैं, विश्व में कहीं अराजकता से शान्ति भंग होगी, किसी देश व प्रान्त में गृहयुद्ध जैसी स्थिति बनेगी। राजनैतिक हत्याएं अधिक होंगी। धनुलग्न में संवत् का प्रवेश होने से फल इस प्रकार लिखा है,-

**" धनुर्लग्ने तूत्तरस्यां पूर्वस्यां च सुखं नृणाम्।
दुर्भिक्षं प्रबलावृष्टिः मध्यदेशे सरोगता ।।
पश्चिमायां घृतं धान्यं समर्घं मासपंचकात्।
दक्षिणस्यां सुखं लोके किंचित्पीड़ा चतुष्पदे।। "**

उत्तर-पूर्व में सुख समृद्धि रहे, मध्यप्रदेश में बाढ़ आदि से हानि, दुर्भिक्ष, रोगभय रहे। पश्चिम में घी-अनाज मंहगे हों, दक्षिण में सुख समृद्धि होने पर भी पशु पीड़ा हो।

वर्षेश (जगत्) लग्न

सं. २०५९ वि. में चैत्र शुक्लपक्ष प्रतिपदा शनिवार, तदनुसार १३/१४ अप्रैल, सन् २००२ ई. को भरणीनक्षत्र, प्रीतियोग एवं मेष राशिस्थ चन्द्र के समय सूर्यदेव २६ घं. ४६ मि. (५६ घ. ३०प.) पर मेष राशि में प्रविष्ट होंगे।

वर्षेश (जगत्) लग्न कुण्डली

फल - जगत्लग्न कुण्डली में लग्नेश-गुरु चतुर्थ स्थान में शुभ है। लेकिन द्वितीयेश-मंगल तृतीयस्थान में शनि-राहु के साथ मित्रक्षेत्र में है। स्पष्ट है, कि विश्व के कुछ राष्ट्रों में भारी आर्थिक-संकट उपस्थित होने पर भी समर्थ राष्ट्रों की स्वार्थपरक नीति के फलस्वरूप आर्थिक संकट हल हो जाएगा, लेकिन कुछ राष्ट्रों में सैन्यसंघर्ष की स्थिति अनिवार्य है। किसी राष्ट्र में भयंकर

भूचाल, अग्निकाण्ड से हानि के योग भी दृष्टिगोचर हो रहे हैं। राष्ट्र-विशेष में किसी नेता की हत्या व अपदस्थ होने के भी योग हैं।

ज्येष्ठ-आषाढ़, मार्गशीर्ष एवं पौष मास विशेष घटनापूर्ण रहेंगे। मेष, वृष, वृश्चिक, मकर, कुम्भ एवं मीन राशि के नेताओं के लिए समय नेष्ट है।

जगत् लग्न से व्यक्तिगत फल विचार

जन्मकुण्डली में लग्न बलवान् हो, तो जन्मराशि से जगत्लग्न् जिस राशि पर आए, वह भाव शुभग्रह या भावेश से दृष्ट या युक्त हो, तो उसवर्ष में उसभाव की वृद्धि कहनी चाहिए। यदि पापीग्रह की दृष्टि या योग हो, तो उसभाव की हानि कहें। जन्मलग्न, जन्मराशि एवं अपने वर्षलग्न से वर्षेश (जगत्) लग्न आठवें या बारहवें हो, तो वह वर्ष उस व्यक्ति के लिए शुभ नहीं होगा । इसी प्रकार देश एवं ग्राम के शुभाशुभ विचार के लिए भी समझना चाहिए।

आर्द्राप्रवेश लग्न

सं. २०५९ वि. में ज्येष्ठशुक्ल द्वादशी शनिवार, तदनुसार २२ जून सन् २००२ ई. को विशाखानक्षत्र, सिद्धियोग एवं वृश्चिकस्थ चन्द्र के समय ८ घटी ३४ पल (८ घं. ५० मि.) पर कर्क लग्नकाल में सूर्यदेव आर्द्रानक्षत्र में प्रविष्ट होंगे।

आर्द्राप्रवेश लग्न कुण्डली

५
मं. सू. ३ गु.
बु.
२ श.रा.
६
४ शु.
७
१
चं.
के. ८
१०
१२
९
११

फल – लग्नेश (जलचरराशि) का स्वामी चन्द्र नीच होकर पंचमभाव में केतु के साथ है। व्यय स्थान में सूर्य मिथुनराशि में मंगल-युत है, जलचर-राशि का स्वामी शनि वृषराशि में राहु-बुध की सन्निधि में है। अतः जलवायु विचार से इसवर्ष की स्थिति अच्छी मालूम देती है। पूर्व-उत्तर एवं दक्षिणी भूभाग पर कहीं सूखा, कहीं बाढ़ वर्षा से हानि के योग हैं। त्रयोदशी में आर्द्राप्रवेश जलप्रद लिखा है। लेकिन दिन के समय सूर्य का आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश वर्षा में अवरोधक माना गया हैं, –**"दिवार्द्रां याति चेद्भानुः जलभक्षणकारकः।"** विशाखा नक्षत्र में आर्द्राप्रवेश रोगनाशक कहा हैं।

अपि च – शनिवार को आर्द्राप्रवेश देश एवं शासकों के लिए नेष्ट है।

गुर्राफल (सन् २००२-२००३ ई.) – इस्लामी मतानुसार एक (यकम) मुहर्रम से ही नया हिजरी सन् प्रारम्भ होता है। उसदिन जो वार होता है, वही इस्लामी मतानुसार साल का राजा किंवा " गुर्रा " होता है।

गत सं. २०५८ वि. में फाल्गुन शुक्ल द्वितीया शनिवार तदनुसार १६ मार्च सन् २००२ ई. को मुहर्रम, हिजरी सन् १४२३ प्रारम्भ हुआ था। अतः इस्लामी मतानुसार हिज़्री सन् १४२३ का बादशाह शनि ही रहेगा।

फल – विश्व में कहीं भयंकर युद्ध से जनधनहानि हो, शासकवर्ग चिन्तित रहे, अनैतिक कार्य अधिक होंगे। किसी देश की राजनैतिक गतिविधि से विश्व की शान्ति भंग हो। यहवर्ष मुस्लिम राष्ट्रों के लिए भारी है। पशु रोगग्रस्त एवं जनजीवन में विशेष कठिनाइयां आएं।

वर्तमान संवत् २०५९ वि. में फाल्गुन शुक्लपक्ष द्वितीया बुधवार,तदनुसार ५ मार्च सन् २००३ ई. को मुहर्रम एक (यकम) से हिजरी सन् १४२४ प्रारम्भ होगा, अतः इस्लामी मतानुसार इस हिज़्री सन् का बादशाह बुध ही माना जाएगा।

फल – खाद्यपदार्थ गुड़, चीनी, कपास महंगे हों। केन्द्र व विश्व के प्रतिष्ठित नेताओं के लिए समय कठिन है, जनता में एवं पशुओं में रोग व्याप्त हो। नेता अपने उदेश्य में असफल रहें। रिश्वतखोरी बढ़े। वर्षा उपयुक्त समय पर न हो। दुर्घटना से जानी-माली नुक्सान हो। मेवा-दाख मंहगे हों। अग्निकाण्ड से हानि के योग हैं।

आय-व्यय चक्र (विंशोत्तरी-मतानुसार)

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
लाभ	८	२	८	२	५	८	२	८	५	१४	१४	५
व्यय	५	१४	११	८	५	११	१४	५	११	११	११	११

लाभ-व्यय देखने की रीति- अपनी राशि के लाभ-व्यय अंकों को जोड़कर, उसमें से १ घटाकर, शेष को ८ से भाग देने पर, यदि १, २, ६, ७ बचें, तो वर्ष में उत्तम लाभ होगा। ३, ४, ५, ० बचें, तो लाभ बहुत कम हो, चिन्ता भी रहे।

" इतीदं वत्सरफलं वत्सरादि - तियौ शुभम् ।
यः शृणोति नरो भक्त्या सः सुखी वत्सरं भवेत्।।"

-: ꣸꣸꣸꣸꣸ :-

संदिग्ध व्रत-पर्व व्यवस्था (सं. २०५९ वि.)

लेखक- प्रियव्रत शर्मा ५९/६ (अभिजित्) पंचकूला- १३४ १०९

(यदि इस स्तम्भ में चर्चित या अन्य किसी व्रत -पर्व की तिथि के बारे में किसी को सन्देह/ शंका हो तो पत्र देकर मुझ से स्पष्टीकरण मांग लेना चाहिए- **प्रियव्रत शर्मा**)

वैशाखी (मेष संक्रान्ति)

इसवर्ष मेष-संक्रान्ति १४ अप्रैल '०२ के सूर्योदय के काफी समीप { ५ घं. ४९ मि. (भा. स्टैं. टा.) पर } घटित हो रही है। अतः भारत के पूर्वी प्रदेशों (पूर्वी उत्तरप्रदेश ,पूर्वी मध्यप्रदेश, बिहार , बंगाल , उड़ीसा , आदि) तथा दक्षिणी भारत के कुछ स्थलों पर, जहां सूर्योदय , मेष-संक्रान्तिकाल { ५ घं ४९ मिं. (भा. स्टैं. टा.) से पहिले होगा , वहां मेष-संक्रान्ति रविवार के दिन मानी जाएगी। पंजाब , चण्डीगढ़ , हरियाणा , हिमाचल प्रदेश , जम्मू-काश्मीर , राजस्थान , दिल्ली , महाराष्ट्र , गुजरात , केरल , आन्ध्रप्रदेश एवं तामिलनाडू में यह संक्रान्ति शनिवार को ही मानी जाएगी। क्योंकि इन प्रदेशों में १४ अप्रैल को सूर्योदय इस संक्रान्तिकाल के बाद होगा। भारतीय ज्योतिषानुसार १४ अप्रैल को शनिवार स्थानीय सूर्योदय तक रहेगा और इसदिन रविवार की प्रवृत्ति स्थानीय सूर्योदय पर होगी - यह तो ज्योतिषी लोग जानते हैं। इस प्रकार स्पष्ट है, कि पंजाब आदि प्रदेशों में वैशाखी का पर्व, जो मेष-संक्रान्ति वाले वार को मनाया जाता है , वह १३ अप्रैल, २००२ ई. को शनिवार के दिन ही मनाया जाएगा।

मेष-संक्रान्ति वाले वार के स्वामी ग्रह को वर्ष का मन्त्री माना जाता है;- इस नियम के अनुसार १४ अप्रैल २००२ ई. को , जहां सूर्योदय मेष संक्रान्ति काल { ५ घं. ४९ मि. (भा. स्टैं. टा.) } से पहिले होगा , वहां इस सं. २०५९ वि. वर्ष का मन्त्री सूर्य और अन्यत्र { जहां सूर्योदय ५ घं. ४९ मि. (भा. स्टैं. टा.) के बाद होगा, वहां } संवत् का मन्त्री शनि होगा।(विशेष विवेचन के लिए देखें -पृ. १२४)।

इसवर्ष चैत्रशुक्ल प्रतिपदा के दिन ही मेष संक्रान्ति हो रही है, जिससे चान्द्र और सौर दोनों वर्ष एक ही दिन प्रारम्भ हो रहे हैं ;- यह स्थिति कभी-कभी शताब्दी में २-३ बार ही प्राप्त होती है।

नागपंचमी (चैत्रशुक्ल)

नागपंचमी व्रत में पंचमी पर (षष्ठी) विद्धा ली जाती है। यदि दूसरे दिन पंचमी ३ महूर्त्त से कम हो और वह पहले दिन ३ महूर्त्त से न्यून चतुर्थी से विद्ध हो तो पहले दिन ही नागपंचमी व्रत करने का आदेश है। धर्मसिन्धुकार का वचन है, -

" नागव्रते पंचमी परविद्धा ग्राह्या। परेद्युः त्रिमुहूर्त्तन्यूना पंचमी पूर्वेद्युः त्रिमुहूर्त्त-न्यून-चतुर्थ्या विद्धा तदा पूर्वैव। " -धर्मसिन्धुः।

इसवर्ष १७ अप्रैल को चैत्रशुक्ल चतुर्थी त्रिमुहूर्त्त न्यून है और दूसरे दिन (१८ अप्रैल को) पंचमी भी त्रिमुहूर्त्त न्यून है, अतः उपरोक्त निर्देशानुसार नागपंचमी १७ अप्रैल को ही लगाई गई है।

१७-१८ अप्रैल को त्रिमुहूर्त्त का मान ६ घ. २५ पल मात्र है।

श्रीपरशुराम जयन्ती

प्रदोष-व्यापिनी वैशाख शुक्ल तृतीया में श्रीपरशुराम जयन्ती मनाई जाती है -

" इयं रात्रि-प्रथमयाम व्यापिनी ग्राह्या,"- धर्मसिन्धुः।

इसवर्ष केवल १४ मई को ही तृतीया रात्रि प्रथम याम (प्रदोष) व्यापिनी है ; अतःयह जयन्ती १४ मई को ही लगाई गई है।

रक्षाबन्धन

श्रावण पूर्णिमा में अपराह्ण के समय रक्षाबन्धन का विधान है। भद्रा में रक्षाबन्धन का निषेध है:- **"भद्रायां द्वे न कर्त्तव्ये श्रावणी फाल्गुनी तथा।"** यदि दूसरे दिन पूर्णिमा त्रिमुहूर्त्तन्यूना हो तो पहले दिन भद्रा रहित-प्रदोषकाल में रक्षाबन्धन करना चाहिए। यदि पहले दिन प्रदोष भी भद्रा से व्याप्त हो तो दूसरे दिन अपराह्ण के समय साकल्यापादित पूर्णिमा के काल में रक्षाबन्धन करना होगा। पंजाब, हरियाणा, दिल्ली आदि प्रदेशों में दिन में विशेषतः प्रातः काल में ही रक्षाबन्धन करने की परम्परा है। वहां भद्रा की परवाह नहीं की जाती। हमारा विचार है, कि उन्हें (पंजाब आदि प्रदेश के लोगों को) रक्षाबन्धन में कम से कम भद्रामुख का तो त्याग अवश्य करना चाहिए। इसवर्ष **(सं. २०५९ वि. में) २१ अगस्त को मध्यरात्रि के बाद (२२ अगस्त में) पूर्णिमा प्रारम्भ होकर २२ अगस्त को वह पूरा दिन (२३ अगस्त के सूर्योदय से लगभग २ घण्टा पहले तक) रहती है। स्पष्ट है,- यहां २२ अगस्त को ही रक्षाबन्धन होगा। इसदिन भद्रा अपराह्ण के कुछ भाग को दूषित कर रही है। अतः शास्त्रानुसार इसदिन (२२ अगस्त को) भद्रा से अदूषित अपराह्णकाल में भा.स्टैं.टा. के अनुसार १५ घं. १६ मि. से १६ घं. १९ मि. तक रक्षाबन्धन कर लेना चाहिए।** पंजाब, दिल्ली, हरियाणा आदि में जहां भद्रा का विचार किए विना यथेष्टकाल में ही रक्षाबन्धन करने की परम्परा है, वहां २२ अगस्त को १२ घं. ७ मि. (भा.स्टैं.टा.) तक रक्षाबन्धन कर लेना चाहिए। तदनन्तर भद्रा का मुख प्रारम्भ हो जाएगा, जो १४ घं. १३ मि. (भा.स्टैं.टा.) तक रहेगा। भद्रामुख में रक्षाबन्धन नहीं करना चाहिए।

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत

श्रीमद्भागवत तथा स्कन्द आदि पुराणों के अनुसार चन्द्रोदय व्यापिनी भाद्रपद कृष्ण अष्टमी वाले दिन ही श्रीकृष्ण जन्म हुआ था। अतः चन्द्रोदय व्यापिनी भाद्रपद कृष्ण अष्टमी वाले दिन ही श्रीकृष्णजन्माष्टमी व्रत करने का निर्देश है। स्मार्तों (गृहस्थी लोगों) के लिए जन्माष्टमी व्रत का यही निर्णय शास्त्रकारों ने दिया है। ध्यान दें,-रोहिणी नक्षत्र का योग इस व्रत का निर्णायक नहीं है। इसवर्ष ३० अगस्त (शुक्रवार को ही अष्टमी चन्द्रोदय-व्यापिनी है; अतः स्मार्तों (गृहस्थियों) का श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत इसी दिन होगा।

दूर्वाष्टमी व्रत

दूर्वाष्टमी व्रत सामान्यतः भाद्रपद शुक्ल अष्टमी के दिन किया जाता है। अगस्त्य तारा के उदयकाल एवं कन्यार्क में यह वर्जित है। सिंहस्थ सूर्य के काल में यह व्रत करना श्रेष्ठ माना गया है। अगस्त्य का उदय यदि भाद्रपद शुक्ल अष्टमी से पहिले हो जाए तो यह व्रत भाद्रपद कृष्ण अष्टमी में ही करने का निर्देश है। इसवर्ष पंजाब, हरियाणा, हि.प्र. एवं दिल्ली आदि प्रदेशों में भाद्रपद कृष्ण ११ मंगलवार (३ सितम्बर) को अगस्त्य उदय होगा। अतः इन प्रदेशों में यह व्रत भाद्रपद कृष्ण अष्टमी (३१ अगस्त) को ही करना होगा।

श्रवण द्वादशी (विष्णुश्रृंखल योग)

एक मुहूर्त से अधिक भाद्रपद शुक्लपक्ष द्वादशी का जिस दिन श्रवणनक्षत्र से योग हो, उस दिन श्रवणद्वादशी व्रत होता है। यदि पहले दिन एकादशीयुता द्वादशी दूसरे दिन भी विद्यमान हो और दोनों दिन श्रवणनक्षत्र भी हो तो पहले दिन एकादशी-द्वादशी एवं श्रवण, इन तीनों के योग से "**विष्णु श्रृंखल**" योग बनता है।

यहां श्रवण नक्षत्र यदि केवल द्वादशी को ही स्पर्श कर रहा हो तो भी '**विष्णुश्रृंखल**' योग माना जाता है। रात्रि के प्रथम प्रहर तक एकादशी-द्वादशी से श्रवण योग होने पर ही **विष्णुश्रृंखल** योग माना जाता है। रात्रि के प्रथम प्रहर के बाद श्रवण नक्षण का एकादशी-द्वादशी से योग होने पर यह योग स्वीकार नहीं किया जाता। **विष्णुश्रृंखल** योग होने पर श्रवणद्वादशी का व्रत **विष्णुश्रृंखल** योग वाले दिन ही किया जाता है।

इसवर्ष भाद्रपद शुक्ल एकादशी मंगलवार (१७ सितम्बर) को **विष्णुश्रृंखल** योग है। अतः श्रवण द्वादशी का व्रत इसी दिन होगा।

श्रीगणेश चतुर्थी (फाल्गुन)

कृष्णपक्ष की चन्द्रोदय व्यापिनी चतुर्थी के दिन श्रीगणेश चतुर्थी व्रत किया जाता है। यदि चतुर्थी दोनों दिन चन्द्रोदय व्यापिनी हो तो यह व्रत पूर्व (तृतीया) युता चतुर्थी के दिन (अर्थात् पहले दिन) किया जाता है। यदि दोनों दिन चतुर्थी चन्द्रोदय का स्पर्श न करे तो इसे दूसरे दिन ही करें :- ऐसा शास्त्र-निर्देश है। इस विषय में धर्मसिन्धु का यह निर्देश है :-

"संकष्ट चतुर्थी चन्द्रोदय व्यापिनी ग्राह्या। पर दिन एव चन्द्रोदय व्याप्तौ परैव।
उभयदिने चन्द्रोदय व्यापित्वे तृतीयायुतैव ग्राह्या। दिन-द्वये चन्द्रोदय व्याप्त्यभावे परैव। " --धर्मसिन्धुः।

इसवर्ष फाल्गुन कृष्ण चतुर्थी दोनों दिन (१६-२० फरवरी को) चन्द्रोदय का स्पर्श नहीं कर रही है। अतः उपरोक्त निर्देशानुसार श्रीगणेश चतुर्थी व्रत २० फरवरी को ही लगाया गया है।

होलिका-दहन

प्रदोष-व्यापिनी फाल्गुन पूर्णिमा के दिन प्रदोषकाल में होलिका-दहन किया जाता है। भद्रा में होलिका -दहन निषिद्ध है। यदि प्रदोष के समय भद्रा हो और भद्रा निशीथ (अर्धरात्रि) से पहिले ही समाप्त हो रही हो तो भद्रा के बाद निशीथ से पहिले होलिका-दहन करने का विधान है। निशीथ के बाद होलिका-दहन निषिद्ध है। यदि भद्रा निशीथ से पहिले समाप्त न हो और दूसरे दिन प्रदोष में पूर्णिमा भी न मिले तब पहले ही दिन भद्रा का मुख छोड़कर प्रदोष में होलिका दहन कर लेना चहिए। यहां धर्मसिन्धुकार का यह वाक्य है :-

" परदिने प्रदोष स्पर्शाभावे पूर्व दिने यदि निशीथात् प्राक्भद्रा समाप्तिः तदा भद्रावसानोत्तरमेव होलिका दीपनम्। निशीथोत्तरं भद्रा समाप्तौ तु भद्रा मुखं त्यक्त्वा भद्रायामेव। " धर्मसिन्धुः।

इसवर्ष फाल्गुन पूर्णिमा केवल पहले दिन (१७ मार्च' ०३ ई. को) ही प्रदोष व्यापिनी है। लेकिन यहां पूरा प्रदोषकाल भद्रा से व्याप्त है और भद्रा निशीथ (अर्धरात्रि) के कहीं बाद जाकर समाप्त हो रही है। अतः उल्लिखित धर्मसिन्धु के नियमानुसार इसदिन (१७ मार्च को) भद्रा के मुख को छोड़कर, अवशिष्ट (भद्रामुख से रहित) काल में होलिका दहन करना होगा। इसदिन भद्रा का मुख निशीथ के कहीं बाद भा.स्टैं.टा. के अनुसार २७ घं. ८ मि. से २८ घं. ५२ मि. तक (अर्थात् १८ मार्च को ३ घं. ८ मि. से ४ घं. ५२ मि. तक) रहता है। अतः स्पष्ट है, कि यहां प्रदोषगत पूर्णिमा भद्रामुख से सर्वथा अस्पृष्ट है। इसलिए १७ मार्च को पूर्णिमा के प्रदोषव्यापी-काल में भा. स्टैं. टा. के अनुसार १६ घं. १६ मि. से २१ घं. ४४ मिनट तक की अवधि में होलिका दहन निःशंक किया जा सकता है।

श्री वि. सं. २०५९, शाक १९२४, चैत्र शुक्ल पक्ष १

(१३ से २७ अप्रैल तक,सन् २००२ ई .)

उत्तरायण, उत्तरगोल, वसन्त-ग्रीष्म ऋतु।

ग्रह दर्शन-१६ अप्रै. को बुध सायं पश्चिम में दृश्य होगा। सायं बु. शु. मं. गु. एवं श. पश्चिम क्षितिज से याम्योत्तरवृत्त की ओर क्रमशः उत्तरोत्तर ऊपर उठे नजर आएंगे। १४ से १८ अप्रै. के मध्य चन्द्र भी इन ग्रहों के बीच विचरता देखा जा सकेगा। एक ही समय में सभी ग्रहों को एक साथ देखने का यह सुअवसर लगभग मई के मध्य तक रहेगा।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	नक्षत्र	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	योग	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	करण	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	तारीखें प्र. (वैशाख)	अं. (अप्रैल)	श. (चैत्र)	मु. (मुहर्रम)	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ भा. स्टैं. टा. सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	उदयकालिक स्पष्टसूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
३१	४८	१	श.	५२	०७	अश्वि.	५६	१६	वि.	५६	२०	किं.	१६	३४	१	१३	२३	२६	मेष			६	०२	१८	४५	११	२६	०१	४५	सं. सूर्य अश्विनी मेषमें ५६/३०, मु.१५ , पुण्यकाल अगले दिन मध्याह्न (A)
३१	५२	२	र.	५६	३१	भर.	६०	००	प्री.	६०	००	बा.	२४	१६	२	१४	२४	३०	मेष			६	०१	१८	४६	०	००	००	३२	चन्द्रदर्शन मु १५, चन्द्रव्रत,
३१	५७	३	चं.	६०	००	भर.	५	०५	प्री.	०	१३	तै.	२८	१६	३	१५	२५	स.१	वृ.	२१	२०	६	००	१८	४६	०	००	५६	१७	सफर मु. प्रा.,आन्दोलन तृतीया, *गौरी तृतीया*(गणगौर), श्री मत्स्यजयन्ती,
३२	०१	३	मं.	००	०८	कृत्ति.	६	५८	आ./सौ.	०/५६	२६/४८	ग.	०	०८	४	१६	२६	२	वृष			५	५८	१८	४७	०	०१	५८	००	भ. ३१/३१ बाद, बुध भर. में५४/०६, *बुध पश्चिम में उदय ११/३५,*
३२	०५	४	बु.	२	४१	रोहि.	१३	५०	शो.	५८	१६	वि.	२	४१	५	१७	२७	३	मि.	४५	२०	५	५७	१८	४७	०	०२	५६	३६	भ. २/४१ तक, शुक्र कृत्ति. में५६/२०, नाग पंचमी, (देखें पृ. १३१), (B)
३२	०९	५	गु.	४	०२	मृग.	१६	३१	अ.	५५	४५	बा.	४	०२	६	१८	२८	४	मिथुन			५	५६	१८	४८	०	०३	५५	१७	स्कन्द षष्ठी,
३२	१४	६	शु.	३	५९	आर्द्रा	१७	४८	सु.	५२	००	तै.	३	५९	७	१९	२९	५	मिथुन			५	५५	१८	४९	०	०४	५३	५४	मंगल रोहि. में २५/०६,
३२	१८	७	श.	२	२५	पुन.	१७	३५	धृ.	४७	००	व.	२	२५	८	२०	३०	६	क.	२	४७	५	५४	१८	४९	०	०५	५२	२८	भ. २/२५ से ३१/०१ तक, शुक्र वृष में ४३/०६, राहु मृग. १, केतु (C)
अवम		८	श.	५९	१३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	*अष्टमी तिथिक्षय,*
३२	२३	९	र.	५४	३०	पुष्य	१५	४९	शू.	४०	४४	बा.	२६	५२	९	२१	वै.१	७	कर्क			५	५३	१८	५०	०	०६	५०	५६	*शक वैशाख प्रारम्भ,* अगस्त्य अस्त, श्रीरामनवमी, *नवरात्र समाप्त,*
३२	२७	१०	चं.	४८	२२	आश्ले.	१२	३१	गं.	३३	१६	तै.	२१	२६	१०	२२	२	८	सिं.	१२	३१	५	५२	१८	५१	०	०७	४९	२६	
३२	३१	११	मं.	४१	०३	मघा	९	५२	वृ.	२४	४९	व.	१४	५२	११	२३	३	९	सिंह			५	५१	१८	५१	०	०८	४७	५७	भ. १४/५२ से ४१/०३ तक, बुध कृत्ति. में ५८/१६, कामदा एकादशी व्रत (स.),
३२	३५	१२	बु.	३२	५०	पू.फा./उ.फा.	२/५५	०८/३७	ध्रु.	१५	२८	ब.	६	५६	१२	२४	४	१०	क.	१५	३२	५	५०	१८	५२	०	०९	४६	२२	प्रदोष व्रत,
३२	३९	१३	गु.	२४	०७	हस्त	४८	४८	व्या./ह.	५/५५	३०/३२	तै.	२४	०७	१३	२५	५	११	कन्या			५	४९	१८	५३	०	१०	४४	४५	अनङ्ग त्रयोदशी, श्रीमहावीर जयन्ती (जैन),
३२	४४	१४	शु.	१५	१८	चित्रा	४२	०६	व.	४५	३७	व.	१५	१८	१४	२६	६	१२	तु.	१५	२५	५	४८	१८	५३	०	११	४३	०५	भ. १५/१८ से ४०/५८ तक, बुध वृष में ०/०६, श्री सत्यनारायण व्रत,
३२	४८	१५	श.	६	४८	स्वा.	३५	५७	सि.	३६	११	ब.	६	४८	१५	२७	७	१३	तुला			५	४७	१८	५४	०	१२	४१	२४	सूर्य भर. में३६/४६, चैत्री पूर्णिमा, वैशाखस्नान प्रारम्भ,

वर्षारम्भ में गुरुमान से 'मन्मथ' नामक संवत्सर है.-अतः वर्षान्त तक संकल्प में इसे ही प्रयुक्त करें।

(A) तक, *वासन्त नवरात्र प्रारम्भ,* कलश स्थापन, चान्द्र संवत्सर प्रारम्भ, वर्षफल श्रवण, तैलाभ्यंग प्रपादान, वैशाखी (पं.-हरि.-हि. प्र.-दिल्ली) (देखें पृष्ठ १३१), (B) श्री (लक्ष्मी) पंचमी, (C) ज्येष्ठा ३ में ४२/१०, सूर्य सायन वृष में १४/५४, ग्रीष्म ऋतु प्रारम्भ, श्रीदुर्गाष्टमी, अशोकाष्टमी,

चैत्र शुक्ल ७ शनि, इष्ट ५६/००,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	३	१	०	२	१	१	१	७
०६	१२	११	२१	१५	००	१८	२६	२६
५०	४७	०३	१६	३२	१६	२६	३६	३६
०१	१५	४५	०६	३८	२६	५०	०६	०६
५८	८१८	४०	११३	०८	७३	०६	०३	०३
३४	२६	४२	४१	१८	१८	३०	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुण्डली सूर्योदये

मं. शु. २ रा.
१२
३ श.
सू. बु.
११
गु.चं.
१
४
१०
५
७
९
६
८ के.

लोक भविष्य - वर्षेश शनि है एवं शनिवार को संक्रान्ति एवं पूर्णिमा हैं, पूर्णिमा को पंचग्रही योग बन रहा है : -" एक राशौ यदा यान्ति चत्वारः पंचखेचराः।
प्लावयन्ति महीं सर्वां रुधिरेण जलेन वा।"
दक्षिण-पश्चिम के देशों में कहीं घोर अशांति, अराजकता, जनधनहानि, कहीं प्राकृतिक प्रकोप से हानि हो। यह समय प्रधान नेताओं के लिए उलझनपूर्ण है।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख- शनि-मंगल-राहु का वृष राशि में शुक्र के साथ योग रुई, कपास, सूत, घी, तेल, सरसों, सुपारी, बादाम, गुड़, खाण्ड, शक्कर, चांदी एवं सोना में तेजी एवं दालदाना में भी तेजी के बाद मन्दा करे। १६ अप्रैल को बाजार का रुख बदले। २० अप्रैल को रुई कपास में अचानक मन्दा बने।

आकाश लक्षण - अप्रैल १३, १६, १९, २०, एवं २६ को भूटान, सिक्किम, आसाम, बंगलादेश, हि.प्र., बंगाल, पू. बिहार, मुम्बई, में कहीं वर्षा, बूंदाबांदी, बादलचाल व खण्डवृष्टि के योग हैं। *नोट:-* चैत्र शुक्ल प्रति पदा के दिन नीम के कोमल पत्ते, कालीमिर्च, हींग, अजवायन, जीरा, तुलसीदल, ये सब खाण्ड या शक्कर में इच्छानुसार मिलाकर, शर्बत बनाकर, प्रातः सेवन करने से रक्तविकार, वात-पित्त एवम् कफ-जन्य कष्टों से शान्ति मिलती है।

कुण्डली सूर्योदये

मं. शु. २ रा.
१२
३ श.
सू. बु.
११
गु.
१
४
१०
५
७ चं.
९
६
८ के.

चैत्र शुक्ल १५ शनि, इष्ट ५६/१८,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	६	१	१	२	१	१	१	७
१३	२५	१५	०२	१६	०८	१६	२६	२६
३६	४३	४७	५६	३४	५१	१६	१६	१६
०२	०७	५०	४०	२५	२२	३१	५१	५१
५८	८८६	४०	८८	०६	७३	०६	०३	०३
२०	४६	३०	२४	१२	००	५४	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

श्री वि. सं. २०५९, शाक १९२४, **वैशाख कृष्ण पक्ष २**

(२८ अप्रैल से १२ मई तक, सन् २००२ ई.)
उत्तरायण, उत्तरगोल, ग्रीष्म ऋतु।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. (वैशाख)	अं. (अप्रैल)	श. (वैशाख)	मु. (सफ़र)	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ भा. स्टैं. टा. सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	उदयकालिक स्पष्टसूर्य रा.	अं.	क.	वि.
अवम		१	श.	५६	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
३२	५२	२	र.	५२	२४	विशा.	३०	४६	व्या.	२७	३३	तै.	२५	४२	१६	२८	८	१४	वृ.	१६	५७	५	४६	१८	५५	०	१३	३६	४१
३२	५६	३	चं.	४७	१८	अनु.	२६	५८	व.	२०	०३	व.	१६	३६	१७	२९	९	१५	वृश्चिक			५	४५	१८	५५	०	१४	३७	५८
३३	००	४	मं.	४३	५६	ज्ये.	२४	५२	प.	१३	५४	ब.	१५	३६	१८	३०	१०	१६	ध.	२४	५२	५	४४	१८	५६	०	१५	३६	१३
३३	०४	५	बु.	४२	३६	मूल	२४	३६	शि.	६	१७	कौ.	१३	१६	१९	म. १	११	१७	धनु			५	४३	१८	५७	०	१६	३४	२६
३३	०८	६	गु.	४३	१८	पू.षा.	२६	२५	सि.	६	१५	ग.	१२	५८	२०	२	१२	१८	म.	४२	१०	५	४२	१८	५७	०	१७	३२	३६
३३	११	७	शु.	४५	५०	उ.षा.	३०	०३	सा.	४	४६	वि.	१४	२२	२१	३	१३	१९	मकर			५	४१	१८	५८	०	१८	३०	४६
३३	१५	८	श.	४६	५७	श्रव.	३५	१६	शु.	४	४१	बा.	१७	५३	२२	४	१४	२०	मकर			५	४०	१८	५९	०	१९	२८	५६
३३	१९	९	र.	५५	१४	धनि.	४१	४७	शु.	५	४४	तै.	२२	३५	२३	५	१५	२१	कुं.	८	२५	५	४०	१८	५९	०	२०	२७	०२
३३	२३	१०	चं.	६०	००	शत.	४६	०२	ब्र.	७	३६	व.	२८	११	२४	६	१६	२२	कुम्भ			५	३९	१९	००	०	२१	२५	०८
३३	२६	१०	मं.	१	१४	पू.भा.	५६	३२	ऐं.	६	५४	वि.	१	१४	२५	७	१७	२३	मी.	३६	४०	५	३८	१९	०१	०	२२	२३	१३
३३	३०	११	बु.	७	२३	उ.भा.	६०	००	वै.	१२	१८	बा.	७	२३	२६	८	१८	२४	मीन			५	३७	१९	०१	०	२३	२१	१७
३३	३४	१२	गु.	१३	१७	उ.भा.	३	५४	वि.	१४	३१	तै.	१३	१७	२७	९	१९	२५	मीन			५	३६	१९	०२	०	२४	१६	१७
३३	३७	१३	शु.	१८	३७	रेव.	१०	४३	प्री.	१६	१७	व.	१८	३७	२८	१०	२०	२६	मे.	१०	४३	५	३६	१९	०३	०	२५	१७	१७
३३	४१	१४	श.	२३	०८	अश्वि.	१६	४७	आ.	१७	२६	श.	२३	०८	२९	११	२१	२७	मेष			५	३५	१९	०३	०	२६	१५	१७
३३	४४	३०	र.	२६	४२	भर.	२१	५७	सौ.	१७	५२	ना.	२६	४२	३०	१२	२२	२८	वृ.	३८	०५	५	३४	१९	०४	०	२७	१३	१३

ग्रह दर्शन- सायं बु., मं., श., गु. पश्चिम क्षितिज से उत्तरोत्तर ऊपर उठे दिखाई देंगे। १०, ११ एवं १२ मई को मं. और शु. परस्पर अत्यन्त पास-पास होंगे।

प्रातिपदा तिथिक्षय,
गुरु आर्द्रा ४ में ३५/२४, शुक्र रोहि. में ५५/४८,
भ. १६/३६ से ४७/१८ तक, *वक्री प्लूटो ज्येष्ठा* २ में १६/२५,
श्रीगणेश चतुर्थी व्रत,
मई प्रारम्भ,
भ. ४३/१८ बाद,
भ. १४/२२ तक, बुध रोहि. में ४२/५४,
शनि रोहि. ४ में १३/५८,
पंचक प्रारम्भ ८/२५,
भ. २८/११ बाद,
भ. १/१४ तक,
वरुथिनी एकादशी व्रत (स.), श्रीवल्लभाचार्य जयन्ती,
मंगल मृग. में १३/२२, शुक्र मृग. में ५६/२१, प्रदोष व्रत,
भ. १८/३७ से ५०/५६ तक, पंचक समाप्त १०/४३,
सूर्य कृत्ति. में २५/३६,

वैशाख कृष्ण ८ शनि, इष्ट ५६/३५,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	९	१	१	२	१	१	१	७
२०	२८	२०	११	१७	१७	२०	२५	२५
२६	१३	३०	१३	४१	२१	०५	५४	५४
३८	२८	१३	३८	३६	१५	२४	३६	३६
५८	७२६	४०	५६	०६	७२	०७	०३	०३
०६	४४	१२	३६	५४	४२	०६	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
भर. ३	धनि. २	रोहि. ४	रोहि. १	आर्द्रा ४	रोहि. ३	रोहि. ४	मृग. १	ज्ये. ३

कुण्डली सूर्योदये

मं.शु.२ रा.बु. | १२ | ३ | श. | सू. | ११ | गु. | १ | ४ | १० चं. | ५ | ७ | ९ | ६ | ८ के.

लोक भविष्य - शनि-मंगल एक राशि में एवं मं. बु. शु. श. अष्टमी को एक नक्षत्रस्थ हैं - कहीं राजनैतिक गतिरोध एवं कहीं अकल्पित घटनाचक्र चलेगा। दो देशों एवं कुछ प्रान्तों मे परस्पर तनाव एवं अशान्ति के योग हैं। कहीं सीमाप्रान्तों पर सैन्यसंघर्ष के आसार हैं; -

"युद्धदौ शनिमाहेयौ तथा दुर्भिक्ष कारकौ।"

ग्रहचाल और बाजार का रुख- कुछ दिनों में चांदी-सोना आदि धातु; अलसी, एरण्ड, सरसों, घी, तेल, गुड, खाण्ड, दाल, छुहारा, सुपारी, नारियल एवं ऊन में मन्दा बने, नमक तेज हो। अनाजों में मन्दे का वातावरण रहे। ३ मई को तेल, तिलहन, गुड़, खाण्ड, चीनी तेज; तेल, रुई में तेजी-मन्दी चले। ४ मई को सोना-चांदी एवं अजाजों में तेजी बने। ९ मई को तिल-चांदी तेज; ११ मई को धातु, तिलहन, अनाज, रुई तेज हों।

कुण्डली सूर्योदये

मं.शु.२ रा.बु. | १२ | ३ | श. | सू. चं. | ११ | गु. | १ | ४ | १० | ५ | ७ | ९ | ६ | ८ के.

वैशाख कृष्ण ३० रवि, इष्ट ५६/५०,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	१	१	१	२	१	१	१	७
२८	०४	२५	१५	१६	२७	२१	२५	२५
१०	३०	५१	४६	०४	०१	०३	२६	२६
५८	५६	०६	५३	१७	१६	२६	०६	०६
५७	७४३	४०	१६	१०	७२	०७	०३	०३
५७	५५	००	२४	४२	१७	१८	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
कृत्ति. १	कृत्ति. ३	मृग. १	रोहि. २	आर्द्रा ४	मृग. २	रोहि. ४	मृग. १	ज्ये. ३

आकाश लक्षण- अप्रैल २८, मई ३, ४, ६ एवं ११ को बम्बई, आसाम, उ.राजस्थान, हि.प्रदेश के ऊपरी भागों एवं बंगाल में वर्षा, बादलचाल व खण्डवृष्टि के योग हैं।

शकुन विचार :- वैशाख कृष्ण एकादशी को यदि आकाश मेघाच्छन्न रहे तो अनाजों का स्टॉक निकाल दें, अन्यथा हानि रहेगी।

श्री वि. सं. २०५९, शाक १९२४, वैशाख शुक्ल पक्ष ३

(१३ से २६ मई तक, सन् २००२ ई.)
उत्तरायण, उत्तरगोल, ग्रीष्म ऋतु ।

ग्रह दर्शन-१६ और २३ मई को क्रमशः बु. एवं श. पश्चिम में अस्त हो जाएंगे । मं., गु., शु.सायं पश्चिम कपाल में होंगे।

दिनमान घ.	प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	प.	योग	समाप्ति-काल घ.	प.	करण	समाप्ति-काल घ.	प.	तारीखें प्र.	अं.	श.	मु.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ भा. स्टैं. टा. सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	उदयकालिक स्पष्टसूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
३३	४८	१	चं.	२९	१५	कृत्ति.	२६	०७	शो.	१७	३१	ब.	२९	१५	३१	१३	२३	२९	वृष			५	३३	१९	०४	०	२८	११	०९	चन्द्रदर्शन मु. ४५, *नेपच्यून वक्री* ३०/२०,
३३	५१	२	मं.	३०	४३	रोहि.	२६	१६	अ.	१६	२१	कौ.	३०	४३	ज्ये.१	१४	२४	र.१	वृष			५	३३	१९	०५	०	२६	०९	०३	*सं. सूर्य वृष में* ५२/५१, मु. ३०, पुण्यकाल अगले दिन मध्याह्न (A)
३३	५४	३	बु.	३१	०७	मृग.	३१	२१	सु.	१४	२०	तै.	०	५५	२	१५	२५	२	मि.	०	२७	५	३२	१९	०६	१	००	०६	५६	*बुध वक्री* ४७/००, *शुक्र मिथुन में* २८/१६, *अक्षय तृतीया,*
३३	५७	४	गु.	३०	२४	आर्द्रा	३२	२२	धृ.	११	२७	व.	०	५४	३	१६	२६	३	मिथुन			५	३२	१९	०६	१	०१	०४	४६	भ. ०/५४ से ३०/२४ तक,
३४	००	५	शु.	२८	३५	पुन.	३२	१७	शू.	७	४२	बा.	२८	३५	४	१७	२७	४	क.	१७	२५	५	३१	१९	०७	१	०२	०२	३५	*आद्य जगद्गुरु श्रीशंकराचार्य जयन्ती,*
३४	०३	६	श.	२५	३६	पुष्य	३१	०७	गं. वृ.	३ ५७	०४ ३२	तै.	२५	३६	५	१८	२८	५	कर्क			५	३०	१९	०८	१	०३	००	२४	*गुरु पुन. १ में* ६/३७ , श्रीरामानुजाचार्य जयन्ती (उ.भा.),
३४	०६	७	र.	२१	३६	आश्ले.	२८	५३	ध्रु.	५१	११	व.	२१	३६	६	१९	२९	६	सिं.	२८	५३	५	३०	१९	०८	१	०३	५८	१०	भ. २१/३६ से ४६/१६ तक, *मंगल मिथुन में* १४/१४, बुध पश्चिम (B)
३४	०९	८	चं.	१६	३६	मघा	२५	४१	व्या.	४४	०४	ब.	१६	३६	७	२०	३०	७	सिंह			५	२९	१९	०९	१	०४	५५	५६	
३४	१२	९	मं.	१०	४७	पू.फा.	२१	३७	ह.	३६	१७	कौ.	१०	४७	८	२१	३१	८	क.	३५	३०	५	२९	१९	१०	१	०५	५३	३९	शुक्र आर्द्रा में १/१९, *सूर्य सायन मिथुन में* १३/४८, श्रीजानकी जयन्ती,
३४	१५	१०	बु.	४	१२	उ.फा.	१६	५४	व.	२८	०१	ग.	४	१२	९	२२	ज्ये.१	९	कन्या			५	२८	१९	१०	१	०६	५१	२१	भ. ३०/४२ से ५७/०६ तक, मोहिनी एकादशी व्रत (स्मा.), *शक ज्येष्ठ प्रा;*
अदम		११	बु.	५७	०६	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	*एकादशी तिथिक्षय,*
३४	१८	१२	गु.	४६	४६	हस्त	११	४५	सि.	१६	२६	ब.	२३	२८	१०	२३	२	१०	तु.	३९	०५	५	२८	१९	११	१	०७	४६	००	*शनि अस्त* ३०/१०, मोहिनी एकादशी व्रत (वै.),
३४	२०	१३	शु.	४२	३८	चित्रा	६	२८	व्य.	१०	४७	कौ.	१६	१३	११	२४	३	११	तुला			५	२७	१९	११	१	०८	४६	३८	प्रदोष व्रत,
३४	२३	१४	श.	३५	५०	स्वा. विशा.	१ ५६	२३ ४८	व. प.	२ ५४	१६ १६	ग.	६	१४	१२	२५	४	१२	वृ.	४२	५२	५	२७	१९	१२	१	०९	४४	१५	भ. ३५/५० बाद, सूर्य रोहि. में १६/२७, श्रीसत्यनारायण व्रत, (C)
३४	२५	१५	र.	२६	४७	अनु.	५३	०६	शि.	४६	५६	वि.	२	४२	१३	२६	५	१३	वृश्चिक			५	२६	१९	१३	१	१०	४१	५१	भ. २/४२ तक, श्रीकूर्म जयन्ती, *श्रीबुद्धपूर्णिमा, वैशाखी पूर्णिमा,* (D)

(A) तक, रबी उल-अव्वल मु. प्रा., श्रीपरशुराम जयन्ती (देखें पृष्ठ १३१), श्रीशिवाजी जयन्ती, (B) में "स्त १५/०८, श्रीगंगा जन्म, (C) श्रीनृसिंह जयन्ती, (D) वैशाखस्नान समाप्त,

वैशाख शुक्ल ८ चन्द्र, इष्ट ०/०३,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	४	२	१	२	२	१	१	७
०४	०७	००	१५	२०	०५	२१	२५	२५
५५	१६	३०	२५	२१	२६	५५	०६	०६
५६	५४	२३	२७	१०	३०	५८	५४	५४
५७	८५३	३६	२०	११	७२	०७	०३	०३
४४	११	४२	२५	१८	००	३६	११	११
		मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुण्डली सूर्योदये

गु. शु. मं. ३ | सू. बु. श. रा. २ | १ | १२ | ४ | चं. ५ | ११ | ६ | के. ८ | १० | ७ | ९

लोक भविष्य :- गुरु-शुक्र-मंगल तीनों मिथुन राशि में एकत्र हैं; कुछ प्रान्तों में अकालिक वर्षा से खड़ी फसलों को हानि पहुंचे। कहीं युद्ध के कारण वातावरण अशान्त हो - "गुरु शुक्रौ यदैकस्थौ नरयुद्धं तदा भवेत्। अकाले वा भवेत् वृष्टिः जगत्यां नात्र संशयः।।" पाकिस्तान, अफगानिस्तान एवं अन्य मुस्लिम देशों के लिए समय कठिन है।

ग्रहचाल और बाजार का रुख:- पक्षारम्भ में सोना, चांदी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, कपास, रुई, सूत, बादाम, सुपारी, नारियल, तिल, तिलहन तेज रहें, जौं, चना, गुड़, मटर, अरहर, मूंग, चावल में कुछ मन्दा रहे। १५ मई को बाजार का रुख बदल सकता है, अलसी, गुड़, घी में घटाबढ़ी, तेल, तिलहन, ग्वारा में काफी मन्दा संभव है। १९ मई के लगभग रुई, चांदी एवं शेयरों में जोरदार मन्दी बनेगी। लालरंग की चीजों में तेजी रहें। पक्षान्त तक बाजार कुछ नर्म रहें।

कुण्डली सूर्योदये

गु. शु. मं. ३ | सू. बु. श. रा. २ | १ | १२ | ४ | ५ | ११ | ६ | के. ८ चं. | १० | ७ | ९

वैशाख शुक्ल १५ रवि ,इष्ट ०/१०,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	७	२	१	२	२	१	१	७
१०	०४	०४	१२	२१	१२	२२	२४	२४
४१	०७	२८	४०	३०	३७	४१	४७	४७
५७	४७	२२	३७	०३	२४	४५	४६	४६
५७	८५१	३६	३३	११	७१	०७	०३	०३
३६	१७	३६	४८	४२	३५	४२	११	११
		मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

आकाश लक्षण:-- मई १४, १५, १९,२३ एवं २५ को बम्बई, भूटान, सिक्किम, आसाम एवं विहार में कहीं भारी वर्षा व बादलचाल रहे। आसाम, उड़ीसा में कहीं बाढ़ के हालात बनें।

शकुन विचार:- यदि वैशाख शुक्ल पंचमी को दिन भर बादल रहें, मेघ गरजें, तो भाद्रपद में अनाज मंहगे होंगे, तुरन्त लाभ लें।

श्री वि. सं. २०५९, शाक १९२४, ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष ४

(२७ मई से १० जून तक, सन् २००२ ई.)
उत्तरायण, उत्तरगोल, ग्रीष्म ऋतु।

ग्रह दर्शन- शनि अदृश्य है। बुध १० जून से प्रातः पूर्व में दीखने लगेगा। मं., गु., शु. सायं पश्चिम कपाल में होंगे। ४-५ जून को गुरु-शुक्र परस्पर काफी आसन्न दीखेंगे।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र.	अं.	श.	मु.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ भा. स्टै. टा. सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	उदयकालिक स्पष्टसूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
३४	२८	१	चं.	२४	४७	ज्ये.	५०	३५	सि.	४०	३३	कौ.	२४	४७	१४	२७	६	१४	ध.	५०	३५	५	२६	१९	१३	१	११	३६	२६	
३४	३०	२	मं.	२१	०९	मूल	४९	३३	सा.	३५	२०	ग.	२१	०९	१५	२८	७	१५	धनु			५	२६	१९	१४	१	१२	३७	००	म. ४६/५४ बाद,
३४	३२	३	बु.	१९	०६	पू.षा.	५०	०९	शु.	३१	२६	वि.	१९	०६	१६	२९	८	१६	धनु			५	२५	१९	१४	१	१३	३४	३२	भ. १९/०६ तक,मंगल आर्द्रा में १९/५१, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत,
३४	३५	४	गु.	१८	४७	उ.षा.	५२	३०	शु.	२८	५६	बा.	१८	४७	१७	३०	९	१७	म.	५	३५	५	२५	१९	१५	१	१४	३२	०३	वक्री बुध कृत्ति. में ५०/३०, *शनि मृग. १ में ५६/५३,*
३४	३७	५	शु.	२०	१४	श्रव.	५६	३१	ब्र.	२७	४९	तै.	२०	१४	१८	३१	१०	१८	मकर			५	२५	१९	१६	१	१५	२९	३२	
३४	३९	६	श.	२३	२०	धनि.	६०	००	ऐं.	२७	५९	व.	२३	२०	१९	जू.१	११	१९	कुं.	२९	०५	५	२५	१९	१६	१	१६	२७	०२	भ. २३/२० से ५५/२६ तक, पंचक प्रारम्भ २९/०५, शुक्र पुन. में (A)
३४	४१	७	र.	२७	४९	धनि.	२	०२	वै.	२९	११	ब.	२७	४९	२०	२	१२	२०	कुम्भ			५	२४	१९	१७	१	१७	२४	३२	
३४	४२	८	चं.	३३	१६	शत.	८	३७	वि.	३१	०७	बा.	०	३२	२१	३	१३	२१	मी.	५९	००	५	२४	१९	१७	१	१८	२२	००	*यूरेनस वक्री ०/४२,*
३४	४४	९	मं.	३९	१०	पू.भा.	१५	५१	प्री.	३३	२४	तै.	६	१३	२२	४	१४	२२	मीन			५	२४	१९	१८	१	१९	१९	२८	*गुरु पुन. २ में ११/२४,*
३४	४६	१०	बु.	४४	५९	उ.भा.	२३	११	आ.	३५	४१	व.	१२	०८	२३	५	१५	२३	मीन			५	२४	१९	१८	१	२०	१६	५५	भ. १२/०८ से ४४/५९ तक,
३४	४७	११	गु.	५०	१५	रेव.	३०	०६	सौ.	३७	३४	ब.	१७	३७	२४	६	१६	२४	मे.	३०	०६	५	२४	१९	१९	१	२१	१४	२१	पंचक समाप्त ३०/०६, अपरा एकादशी व्रत(स.), *भद्रकाली एकादशी*(पं.),
३४	४९	१२	शु.	५४	३२	अश्वि.	३६	१३	शो.	३८	४६	कौ.	२२	२४	२५	७	१७	२५	मेष			५	२४	१९	१९	१	२२	११	४७	
३४	५०	१३	श.	५७	३६	भर.	४१	१३	अ.	३९	०४	ग.	२६	०४	२६	८	१८	२६	वृ.	५७	१७	५	२३	१९	२०	१	२३	०९	१२	भ. ५७/३६ बाद, सूर्य मृग. में ११/१८, *बुध मार्गी ३८/१८, शनिप्रदोष व्रत,*
३४	५१	१४	र.	५९	२१	कृत्ति.	४४	५५	सु.	३८	२१	वि.	२८	३६	२७	९	१९	२७	वृष			५	२३	१९	२०	१	२४	०६	३६	भ. २८/३६ तक, *शुक्र कर्क में ३९/०१,*
३४	५३	३०	चं.	५९	४३	रोहि.	४७	१९	धृ.	३६	३४	च.	२९	३२	२८	१०	२०	२८	वृष			५	२३	१९	२०	१	२५	०४	००	*बुध पूर्व में उदय ६/५५, सोमवती अमा, भावुका अमा, वट सावित्री* (B)

(A) ११/५७, जून प्रारम्भ, (B) व्रत (अमापक्ष), *खण्डग्रास सूर्य ग्रहण* (पूर्वी भारत में दृश्य),

ज्येष्ठ कृष्ण ८ चन्द्र, इष्ट ००/१५,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	१०	२	१	२	२	१	१	७
१८	१८	०६	०८	२३	२२	२३	२४	२४
२२	१९	४४	३४	०५	०८	४३	२२	२२
१४	५२	१५	३०	३२	३४	४४	२३	२३
५७	७१४	३९	२०	१२	७१	०७	०३	०३
२८	५१	२४	४८	१२	०६	४२	११	११
		मा	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
रोहि. ३	शत. ४	आर्द्रा १	कृत्ति. ४	पुन. १	पुन. १	मृग. १	मृग. १	ज्ये. ३

कुण्डली सूर्योदये

गु. शु. मं. ३
सू. बु. श. रा. २
१
१२
४
५
११ चं.
६
के. ८
१०
७
९
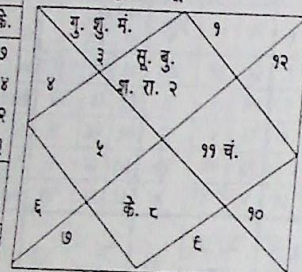
लोक भविष्य:- इस पक्ष मे सूर्य, शनि, राहु, बुध-ये चर्तुग्रह वृष राशि में है- कहीं शासन एवं शासित में संघर्ष की स्थिति बने, कहीं आन्तरिक अशान्ति, कहीं यानदुर्घटना से जनधनहानि के भी योग हैं। काश्मीर आदि सीमाप्रान्तों पर अशान्ति रहे। पक्षान्त में वृषराशि में पंचग्रही कहीं शासनसत्ता में पीरवर्तन का संकेत देती है-

"ज्येष्ठमासे रवियुता ग्रहाः यत्रैकराशिगाः। श्रावणे मेघरोधाय छत्रभंगायकुत्रचित्।।"

ग्रहचाल और बाजार का रुख:- १९ मई से रुई, सूत, कपास, अलसी, बिनौला, एरण्ड, खाण्ड, तिल, तेल,नमक एवं चावल आदि में तेजी बने। ८ जून के लगभग रुई-चांदी में घटाबढ़ी; अनाजों मे तेजी बनी रहे। तेल-तिलहन, गुड़, बिनौला, मूंगफली आदि में अचानक मन्दा आकर दो दिन में ही तेजी एवं पक्षान्त में बाजार अस्थिर रहें।

आकाश लक्षण:- मई २९, ३०, जून १, २, ४, ८ से १० तक भूटान, आसाम, सिक्किम, बिहार, मुम्बई, हि.प्र., उ.प्र. एवं पंजाब में कहीं खण्डवृष्टि, वर्षा, बादलचाल के योग है।

शकुन विचार :- यदि ज्येष्ठ कृष्ण द्वितीया को दक्षिण की हवा चले, तो घी, तिल, तेल के स्टॉक से आश्विन में लाभ मिले।

कुण्डली सूर्योदये
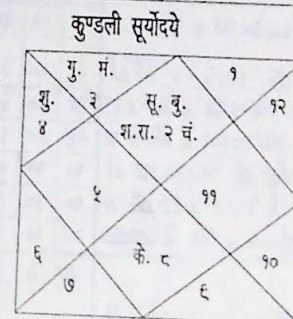
ज्येष्ठ कृष्ण ३० चन्द्र, इष्ट ००/१८,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	१	२	१	२	३	१	१	७
२५	१३	१४	०७	२४	००	२४	२४	२४
०४	१५	१९	३२	३१	२५	३८	००	००
१७	१७	२०	१३	५५	०३	१३	०८	०८
५७	७७३	३९	०८	१२	७०	०७	०३	०३
२३	०८	१८	२४	३६	४२	४८	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
मृग. १	रोहि. १	आर्द्रा ३	कृत्ति. ४	पुन. २	पुन. ४	मृग. १	मृग. १	ज्ये. ३

श्री वि. सं. २०५९, शाक १९२४, ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष ५

(११ से २४ जून तक, सन् २००२ ई.)
उत्तर-दक्षिणायन, उत्तरगोल, ग्रीष्म-वर्षा ऋतु ।

ग्रह दर्शन- शनि अस्त है। मंगल १६ जून को पश्चिम में अस्त हो जाएगा। गुरु-शुक्र सायं पश्चिम में एवं बुध प्रातः पूर्व में होगा।

दिनमान घ.	प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	प.	योग	समाप्ति-काल घ.	प.	करण	समाप्ति-काल घ.	प.	तारीखें प्र.	अं.	श.	मु.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ भा. स्टैं. टा. सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	उदयकालिक स्पष्टसूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
३४	५४	१	मं.	५८	४८	मृग.	४८	२५	शू.	३३	४४	किं.	२६	१५	२९	११	२१	२९	मि.	१८	०२	५	२३	१९	२१	१	२६	०१	२३	
३४	५५	२	बु.	५६	४४	आर्द्रा	४८	२१	गं.	२९	५६	बा.	२७	४६	३०	१२	२२	३०	मिथुन			५	२३	१९	२१	१	२६	५८	४५	चन्द्रदर्शन मु. १५, शुक्र पुष्य में २८/५५,
३४	५६	३	गु.	५३	३८	पुन.	४७	१५	वृ.	२५	१५	तै.	२५	११	३१	१३	२३	र. १	क.	३२	३७	५	२३	१९	२२	१	२७	५६	०७	*रवी-उस्मानी मु. प्रा.*, रम्भा तृतीया, श्रीप्रताप जयन्ती (राज.),
३४	५६	४	शु.	४९	४१	पुष्य	४५	१८	ध्रु.	१९	४६	व.	२१	४५	३२	१४	२४	२	कर्क			५	२३	१९	२२	१	२८	५३	२६	भ. २१/४५ से ४९/४१ तक, *शहीदी दिन श्री गुरु अर्जुनदेव जी,*
३४	५७	५	श.	४५	०४	आश्ले.	४२	३६	व्या.	१३	४६	ब.	१७	२३	आ. १	१५	२५	३	सिं.	४२	३६	५	२३	१९	२२	१	२९	५०	४७	*सं. सूर्य मिथुन में* ९/३५, मु. १५, पुण्यकाल २५/३५ तक,
३४	५८	६	र.	३६	५४	मघा	३६	२७	ह.	७	१२	कौ.	१२	२६	२	१६	२६	४	सिंह			५	२४	१९	२३	२	००	४८	०६	*मंगल अस्त* ८/०५, बुध रोहि. में ५१/३१, अरण्य षष्ठी, (A)
३४	५८	७	चं.	३४	२१	पू.फा.	३५	५३	व. सि.	० ५३	१५ ०२	ग.	७	०८	३	१७	२७	५	क.	४६	५५	५	२४	१९	२३	२	०१	४५	२५	भ. ३४/२१ बाद,
३४	५९	८	मं.	२८	३४	उ.फा.	३२	०४	व्य.	४५	३६	वि.	१	२६	४	१८	२८	६	कन्या			५	२४	१९	२३	२	०२	४२	४२	भ. १/२६ तक, मंगल पुन. में ४२/४१,
३४	५९	९	बु.	२२	४१	हस्त	२८	११	व.	३८	१४	कौ.	२२	४१	५	१९	२९	७	तु.	५६	१५	५	२४	१९	२४	२	०३	४०	००	
३४	५९	१०	गु.	१६	५१	चित्रा	२४	२१	प.	३०	५४	ग.	१६	५१	६	२०	३०	८	तुला		.	५	२४	१९	२४	२	०४	३७	१६	भ. ४४/०० बाद, गुरु पुन. ३ में ३/२८, *श्रीगंगा दशहरा,*
३४	५९	११	शु.	११	१३	स्वा.	२०	४५	शि.	२३	४६	वि.	११	१३	७	२१	३१	९	तुला			५	२४	१९	२४	२	०५	३४	३१	भ. ११/१३ तक, *सूर्य सायन कर्क में* ३३/४८, *दक्षिणायन, वर्षा* (B)
३४	५९	१२	श.	५	५८	विशा.	१७	३३	सि.	१६	५६	बा.	५	५८	८	२२	आ. १	१०	वृ.	३	१७	५	२५	१९	२४	२	०६	३१	४५	सूर्य आर्द्रा में ८/३४, *राहु रोहि.* ४, *केतु ज्येष्ठा* २ *में* ३७/३०, (C)
३४	५९	१३	र.	१	१८	अनु.	१४	५६	सा.	१०	४२	तै.	१	१८	९	२३	२	११	वृश्चिक			५	२५	१९	२४	२	०७	२९	००	भ. ५७/२४ बाद, शुक्र आश्ले. में ५३/५४, *वक्री नेपच्यून* (D)
अवम		१४	र.	५७	२४	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	*चतुर्दशी तिथिक्षय,*
३४	५९	१५	चं.	५४	२८	ज्ये.	१३	१३	शु.	५	०४	वि.	२५	४८	१०	२४	३	१२	ध.	१३	१३	५	२५	१९	२५	२	०८	२६	१४	भ. २५/४८ तक, श्रीसत्यनारायण व्रत, वट सावित्री व्रत (पूर्णिमापक्ष),

(A) विन्ध्यवासिनी पूजा, (B) ऋतु प्रारम्भ, निर्जला एकादशी व्रत(स.), (C) शनि प्रदोष व्रत, शक आषाढ़ प्रारम्भ, (D) *श्रव.* २ में ३३/५४,

ज्येष्ठ शुक्ल ८ मंगल, इष्ट ००/१५,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	५	२	१	२	३	१	१	७
०२	०२	१६	१०	२६	०६	२५	२३	२३
४३	२६	३२	४४	१३	४८	४०	३४	३४
०१	४८	२५	२५	३६	२०	३०	४२	४२
५७	८५५	३९	४३	१२	७०	०७	०३	०३
१७	०१	००	३६	४८	०६	४८	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
मृग. ३	उ.फा. २	आर्द्रा ४	रोहि. १	पुन. २	पुष्य २	मृग. १	मृग. १	ज्ये. ३

कुण्डली सूर्योदये

शु. ४ | बु. श.रा. | ३ मं. सू. गु. | २ | ५ | १ | ६ चं. | १२ | ७ | ९ | ११ | के. ८ | १० |

लोक भविष्यः- शनिवारी मिथुनसंक्रान्ति एवं मंगलवारी प्रतिपदा कहीं अतिवर्षण व कहीं सूखे से हानि का संकेत देती है। सूर्य दिन में ही आर्द्रा नक्षत्र में दाखिल होगा, जो कि कुछ प्रांतों में वर्षा की कमी से किसान वर्ग के चिन्तित होने का संकेत देता है। "दिवार्द्रा याति चेद्भानुः जलभक्षण कारकः।" जनजीवनोपयोगी वस्तुओं में मंहगाई से जनता में असन्तोष रहे।

ग्रहचाल और बाजार का रुखः- पक्षारम्भ से १८ जून तक गेहूं, अलसी, कपास, सोना -चांदी,तेल -तिलहन, चावल, गुड़, खाण्ड एवं दालवाना में तेजी का रुख रहे। २० जून को सरसों मन्दी, २२ जून को बाजार तेज एवं पक्षान्त में रुई-चावल कुछ मन्दे हों।

आकाश लक्षणः- जून १२, १५, १६ एवं २० से २३ तक उ.प्र., म.प्र., पंजाब, हरियाना, हि.प्र., मुम्बई, भूटान, शिलांग, आसाम में वायुवेग के साथ कहीं वर्षा, खण्डवृष्टि एवं बादलचाल के योग हैं। कुछ स्थानों पर गर्मी का प्रकोप भी रहे।

शकुन विचारः- ज्येष्ठ शुक्ल सप्तमी को यदि बादल गरजें और दक्षिण की हवा चले, तो तिलहन के स्टॉक से कार्त्तिक में लाभ होगा।

कुण्डली सूर्योदये

शु. ४ | बु. श.रा. | ३ मं. सू. गु. | २ | ५ | १ | ६ चं. | १२ | ७ | ९ | ११ | के. ८ | १० |

ज्येष्ठ शुक्ल १५ चन्द्र ,इष्ट ०/१३,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	७	२	१	२	३	१	१	७
०८	२७	२३	१६	२७	१६	२६	२३	२३
२६	२	२६	०५	३१	४७	२६	१५	१५
३०	२१	०६	४६	१७	१६	५३	३७	३७
५७	८१२	३८	६७	१३	६६	०७	०३	०३
१३	५४	५४	१२	००	३०	४२	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
आर्द्रा १	ज्ये. ४	पुन. २	रोहि. २	पुन. ३	आश्ले. १	मृग. १	रोहि. ४	ज्ये. २

श्री वि. सं. २०५९, शाक १९२४, आषाढ़ कृष्ण पक्ष ६

(२५ जून से १० जुलाई तक, सन् २००२ ई.)
दक्षिणायन, उत्तरगोल, वर्षा ऋतु।

ग्रह दर्शन- मं. अस्त है। श. २९ जून से प्रातः पूर्व में दिखाई देने लगेगा। गुरु ७ जुलाई को पश्चिम मे लुप्त हो जाएगा। शुक्र सायं पश्चिम में और बुध प्रातः पूर्व में होगा।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	नक्षत्र	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	योग	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	करण	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.
३४	५८	१	मं.	५२	४३	मूल	१२	३०	शु./ब्र.	०/५६	१६/२६	बा.	२३	३५
३४	५८	२	बु.	५२	१९	पू.षा.	१२	५९	ऐं.	५३	४१	तै.	२२	३१
३४	५७	३	गु.	५३	२३	उ.षा.	१४	५१	वै.	५२	०४	व.	२२	४०
३४	५७	४	शु.	५५	५४	श्रव.	१८	१०	वि.	५१	३७	ब.	२४	३९
३४	५६	५	श.	५९	४८	धनि.	२२	५३	प्री.	५२	१४	कौ.	२७	५१
३४	५५	६	र.	६०	००	शत.	२८	४९	आ.	५३	४४	ग.	३२	१७
३४	५४	६	चं.	४	४६	पू.भा.	३५	४०	सौ.	५५	४९	व.	४	४६
३४	५३	७	मं.	१०	२७	उ.भा.	४२	५६	शो.	५८	०८	ब.	१०	२७
३४	५२	८	बु.	१६	१८	रेव.	५०	०८	अ.	६०	००	कौ.	१६	१८
३४	५१	९	गु.	२१	४६	अश्वि.	५६	४०	अ.	०	१५	ग.	२१	४६
३४	५०	१०	शु.	२६	१९	भर.	६०	००	सु.	१	४६	वि.	२६	१९
३४	४८	११	श.	२९	३२	भर.	२	०४	धृ.	२	२७	बा.	२९	३२
३४	४७	१२	र.	३१	०९	कृति.	६	०१	शू.	१	५४	कौ.	०	२०
३४	४५	१३	चं.	३१	०३	रोहि.	८	२०	गं./वृ.	०/५६	०३/५२	ग.	१	०६
३४	४३	१४	मं.	२९	१७	मृग.	८	५८	ध्रु.	५२	२२	वि.	०	२१
३४	४२	३०	बु.	२६	०२	आर्द्रा	८	०४	व्या.	४६	४४	ना.	२६	०२

तिथि	तारीखें प्र.	अं.	श.	मु.	चन्द्रराशि प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ भा. स्टैं. टा. सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	उदयकालिक स्पष्टसूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
१	११	२५	४	१३	धनु			५	२५	१९	२५	२	०९	२३	२८	शनि मृग. २ में ४२/५७,
२	१२	२६	५	१४	म.	२८	२०	५	२६	१९	२५	२	१०	२०	४१	
३	१३	२७	६	१५	मकर			५	२६	१९	२५	२	११	१७	५४	
४	१४	२८	७	१६	कुं.	५०	२२	५	२६	१९	२५	२	१२	१५	०६	भ. २२/४० से ५३/२३ तक,
५	१५	२९	८	१७	कुम्भ			५	२७	१९	२५	२	१३	१२	१९	पंचक प्रारम्भ ५०/२२, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत,
६	१६	३०	९	१८	कुम्भ			५	२७	१९	२५	२	१४	०९	३२	बुध मृग. में ४३/०८, *शनि उदय ३६/४५,*
६	१७	जु.१	१०	१९	मी.	१८	५५	५	२७	१९	२५	२	१५	०६	४५	
७	१८	२	११	२०	मीन			५	२८	१९	२५	२	१६	०३	५८	भ. ४/४६ से ३७/३४ तक, *जुलाई प्रारम्भ,*
८	१९	३	१२	२१	मे.	५०	०८	५	२८	१९	२५	२	१७	०१	१२	
९	२०	४	१३	२२	मेष			५	२९	१९	२५	२	१७	५८	२५	पंचक समाप्त ५०/०८, *बुध मिथुन में ५९/३८,*
१०	२१	५	१४	२३	मेष			५	२९	१९	२५	२	१८	५५	३९	भ. ५४/१२ बाद, *मंगल कर्क में ९/०४, गुरु वार्द्धक्य प्रारम्भ २२/३०,*
११	२२	६	१५	२४	वृ.	१८	१२	५	२९	१९	२५	२	१९	५२	५१	भ. २६/१९ तक, *गुरु पुन. ४ कर्क में १७/२०, शुक्र मघा सिंह में २९/३५,*
१२	२३	७	१६	२५	वृष			५	३०	१९	२५	२	२०	५०	०६	सूर्य पुन. में ७/२२, योगिनी एकादशी व्रत (स.),
१३	२४	८	१७	२६	मि.	३८	५२	५	३०	१९	२४	२	२१	४७	२४	बुध आर्द्रा में ४४/०८, *गुरु अस्त २२/३०,* प्रदोष व्रत,
१४	२५	९	१८	२७	मिथुन			५	३१	१९	२४	२	२२	४४	४०	भ. ३१/०३ बाद,
३०	२६	१०	१९	२८	क.	५१	३२	५	३१	१९	२४	२	२३	४१	५६	भ. ०/२१ तक, मंगल पुष्य में १९/१६,

गुरु अस्त
७ जुलाई

आषाढ़ कृष्ण ८ बुध, इष्ट ०/०५,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	११	२	१	२	३	१	१	७
१७	२०	२९	२८	२९	२७	२७	२२	२२
०१	०३	१५	२१	२९	०९	३५	४७	४७
२१	४९	२३	३१	४०	१८	२२	००	००
५७	७१५	३८	६६	१३	६८	०७	०३	०३
१२	०९	४८	१२	१८	३०	२९	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		अ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
आर्द्रा ४	रेव. २	पुन. ३	मृग. २	पुन. ३	आश्ले. ४	मृग. २	रोहि. ४	ज्ये. २

कुण्डली सूर्योदये

शु. ४ | बु. श.रा. | ३ | २ | ५ | मं. सू. गु. | १ | ६ चं. | १२ | ७ | ९ | ११ | के. ८ | १० |

लोक भविष्य:- इस मास में पांच मंगलवार एवं पांच बुधवार होने से मिला-जुला फल होगा। कहीं भूकम्प, कहीं अकाल, कहीं बाढ़ से जनधन हानि हो। बम विस्फोट एवं कहीं धार्मिक-उन्माद से वातावरण अशान्त रहे। नीच-मंगल पर शनि की विशेषदृष्टि कुछ देशों में सैनिक हलचल, कहीं अवर्षण किंवा अतिवर्षण से हानि करे। मुस्लिम राष्ट्रों में आन्तरिक स्थिति खराब हो।

ग्रहचाल और बाजार का रुख:- पक्षारम्भ में बाजार अस्थिर रहें। २९ जून से मासान्त तक शेयर बाजार, तिलहन मन्दे रहें। गुड़, खाण्ड, धातुएं, लहसुन, चावल, रुई में तेजी का रुख रहे। ३ जुलाई से रुई, सोना, चान्दी, तिलहन मन्दे, अनाज, गुड़-शक्कर में तेजी बने। ५, ६ जुलाई को बाजार तेज रहेंगे। रुई में कुछ मन्दा बने। ७ जुलाई के लगभग रुई-शेयर तेज; चांदी एवं अनाजो में घटाबढ़ी, सोने में जोरदार तेजी बने।

आकाश लक्षण:- जून २८, २९, ३०, जुलाई ३ से ६ तक सिक्किम, भूटान, शिलांग, बम्बई, गोवा, कालीकट, सूरत, पंजाब, म.प्र., उड़ीसा, हरियाणा, दिल्ली, हि.प्र. में अच्छी वर्षा के योग हैं।

शकुन विचार:- आषाढ़ कृष्ण प्रतिपदा को यदि बिजली चमके एवं वर्षा हो, तो आनाज तेज होंगे, लाभ लें।

कुण्डली सूर्योदये

मं. गु. | श. रा. | ५ शु | ४ | ३ | २ | बु. सू. चं. | १ | ६ | १२ | ७ | ९ | ८ के. | १० | ११ |

आषाढ़ कृष्ण ३० बुध, इष्ट ५९/५८,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	३	३	२	३	४	१	१	७
२४	०१	०४	१३	०१	०६	२८	२२	२२
३९	५७	२४	००	१६	१४	३४	२१	२१
०९	१९	४६	४३	१५	४७	३२	३४	३४
५७	८२८	३८	११९	१३	६७	०७	०३	०३
१५	२८	३६	३०	२४	४८	१७	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		अ.	उ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पुन. २	पुन. ४	पुष्य १	आर्द्रा २	पुन. ४	मघा २	मृग. २	रोहि. ४	ज्ये. २

श्री वि. सं. २०५६, शाक १९२४, आषाढ़ शुक्ल पक्ष ७

(११ से २४ जुलाई तक, सन् २००२ ई.)
दक्षिणायन, उत्तरगोल, वर्षा ऋतु।

ग्रह दर्शन-मं. गु. अदृश्य हैं। ११ जुलाई को बुध पूर्व में अदृश्य हो जाएगा। शुक्र को सायं पश्चिम में और शनि को प्रातः पूर्व में देखें।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	नक्षत्र	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	योग	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	करण	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	तारीखें प्र. (आषा.)	तारीखें अं. (जुलाई)	तारीखें श. (आषा.)	तारीखें मु.	चन्द्रराशि प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ भा. स्टैं. टा. सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	उदयकालिक स्पष्टसूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
३४	४०	१	गु.	२१	३१	पुन.	५	५०	ह.	४०	१०	ब.	२१	३१	२७	११	२०	२६	कर्क			५	३२	१९	२४	२	२४	३९	१२	चन्द्रदर्शन मु. ३०, *बुध पूर्व में अस्त १९/४३,*
३४	३८	२	शु.	१९	०३	पुष्य आश्ले.	२ / ५८	३४ / ३४	व.	३२	५३	कौ.	१९	०३	२८	१२	२१	ज.१	सिं.	५८	३४	५	३२	१९	२४	२	२५	३६	२६	*जमद-उल अव्वल मु. प्रा., रथयात्रा (पुरी),*
३४	३६	३	श.	६	५५	मघा	५४	०६	सि.	२५	०६	ग.	६	५५	२९	१३	२२	२	सिंह			५	३३	१९	२३	२	२६	३३	४२	म. ३६/४३ बाद,
३४	३४	४	र.	३	२६	पू.फा.	४९	३७	व्य.	१७	१२	वि.	३	२६	३०	१४	२३	३	सिंह			५	३३	१९	२३	२	२७	३०	५७	म. ३/२६ तक, बुध पुन. में २३/०५,
अवम		५	र.	५६	५५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	*पंचमी तिथिक्षय,*
३४	३२	६	चं.	५०	३३	उ.फा.	४५	१३	व.	६	१४	कौ.	२३	४४	३१	१५	२४	४	क.	३	२७	५	३४	१९	२३	२	२८	२८	१३	कुमार षष्ठी,
३४	२९	७	मं.	४४	३४	हस्त	४१	११	प. / शि.	१ / ५४	२८ / ०२	ग.	१७	३४	श्रा.१	१६	२५	५	कन्या			५	३५	१९	२२	२	२९	२५	२९	म. ४४/३४ बाद, *सं. सूर्य कर्क में ३९/०६,* मु. ३०, पुण्यकाल (A)
३४	२७	८	बु.	३९	०७	चित्रा	३७	४१	सि.	४७	०५	वि.	११	४५	२	१७	२६	६	तु.	६	२०	५	३५	१९	२२	३	००	२२	४५	म. ११/४५ तक, शुक्र पू. फा. में १८/५७,
३४	२५	९	गु.	३४	१८	स्वा.	३४	४९	सा.	४०	३९	बा.	६	४२	३	१८	२७	७	तुला			५	३६	१९	२१	३	०१	२०	०१	
३४	२२	१०	शु.	३०	१२	वि.	३२	४०	शु.	३४	४९	तै.	२	१५	४	१९	२८	८	वृ.	१८	०७	५	३६	१९	२१	३	०२	१७	१७	म. ५८/२७ बाद, *बुध कर्क में ४/२३,*
३४	१९	११	श.	२६	५३	अनु.	३१	१७	शु.	२९	३६	वि.	२६	५३	५	२०	२९	९	वृश्चिक			५	३७	१९	२१	३	०३	१४	३५	म. २६/५३ तक, सूर्य पुष्य में ५/३८, बुध पुष्य में ३७/५८, (B)
३४	१७	१२	र.	२४	२२	ज्ये.	३०	४३	ब्र.	२५	०३	बा.	२४	२२	६	२१	३०	१०	ध.	३०	४३	५	३७	१९	२०	३	०४	११	५१	प्रदोष व्रत,
३४	१४	१३	चं.	२२	४४	मूल	३१	०२	ऐं.	२१	१२	तै.	२२	४४	७	२२	३१	११	धनु			५	३८	१९	२०	३	०५	०९	०८	
३४	११	१४	मं.	२२	०४	पू.षा.	३२	१७	वै.	१८	०७	व.	२२	०४	८	२३	श्रा.१	१२	म.	४७	४५	५	३९	१९	१९	३	०६	०६	२६	म. २२/०४ से ५२/०७ तक, *शनि मृग. ३ मिथुन में ५/४४,* (C)
३४	०८	१५	बु.	२२	२५	उ.षा.	३४	३३	वि.	१५	५०	ब.	२२	२५	९	२४	२	१३	मकर			५	३९	१९	१८	३	०७	०३	४४	*गुरु पूर्णिमा (व्यास पूजा),* आषाढ़ी पूर्णिमा , *चातुर्मास्य व्रत-नियम-*(D)

(A) ६/०६ बाद, विवस्वत सप्तमी, (B) गुरु पुष्य १ में १४/२४, हरिशयनी एकादशी व्रत (स.), (C) सूर्य सायन सिंह में ०/१८, श्रीसत्यनारायण व्रत, शक श्रावण प्रारम्भ, शिवशयनोत्सव, (D) प्रारम्भ, कोकिला व्रत,

आषाढ़ शुक्ल ८ बुध, इष्ट ५६/४८,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु	शु.	श.	रा.	के.
३	६	३	२	३	४	१	१	७
०१	११	०८	२७	०२	१४	२९	२१	२१
१९	५०	५४	४१	४६	०५	२४	५६	५६
५०	३०	४५	२५	५६	२२	३७	१८	१८
५७	८४५	३८	१२८	१३	६६	०६	०३	०३
१४	५८	३६	२४	२४	४२	५६	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		अ.	अ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुण्डली सूर्योदये

शु. ५ · बु. ३ · ४ मं. सू. गु. · ६ चं. · रा. २ श. · ७ · १ · के. ८ · १० · १२ · ९ · ११

लोक भविष्य:- मिथुन का बुध, सिंहस्थ शुक्र एवं इनके मध्य कर्क राशि के मंगल-सूर्य वर्षा के अवरोधक हैं, लेकिन दक्षिण में बाढ़-वर्षा से हानि के संकेत मिलते हैं। "बुध-शुक्रौ समीपस्थौ कुरुत एकार्णवां महीम्। तयोरन्तर्गतो भानुः समुद्रमपि शोषयेत्।।" पक्षान्त में मिथुनराशि में शनि का प्रवेश कहीं भयंकर दुर्भिक्ष एवं पश्चिमी देशों में भयंकर युद्ध के सूत्रपात का संकेत देता है:- "मिथुने च यदा सौरिर्दुर्भिक्षं तत्र रौरवम्। पश्चिमे दारुणं युद्धं नृपाणां च महद्भयम्।।" समय नेतावर्ग एवं राजनीतिज्ञों के लिए भारी है।

ग्रहचाल और बाजार का रुख:- ११ जुलाई के लगभग अनाज, घी आदि में मन्दा रहे, रुई में घटाबढ़ी चले । १६ जुलाई के लगभग रुई, सूत, सुपारी, बादाम, गुड़, चीनी, तेल, तिलहन, सोना, चान्दी तेज रहें। अनाज-दालवाना मन्दे रहें। १९ से २० जुलाई तक बाजारों का रुख मन्दा रहेगा। २३ जुलाई को तेल, तिलहन, गुड़-खाण्ड, रुई में अच्छी तेजी की लाईन बनने के योग हैं।

आकाश लक्षण:- जुलाई ११, १६, १९, २०, २२, २३, २४ को उत्तरी भारत में बादलचाल, वर्षा, वायु के अच्छे योग हैं, लेकिन शुक्र के सिंहस्थ होने से कुछ प्रान्तों में बादलचाल होने पर भी वर्षा का अवरोध रहेगा। ११, २० जुलाई को वायुवेग रहे।

शकुन विचार:- आषाढ़ शु. ५ को यदि पश्चिम की हवा चले, बादल-वर्षा हो एवं इन्द्रधनुष दिखाई दे, तो अनाजों का स्टॉक करने से कार्तिक में लाभ हो।

कुण्डली सूर्योदये

शु. ५ · श. ३ · ४ सू. मं. बु. गु. · ६ · २ रा. · ७ · १ · के. ८ · १० चं. · १२ · ९ · ११

आषाढ़ शुक्ल १५ बुध, इष्ट ५६/३८,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	९	३	३	३	४	२	१	७
०८	१५	१३	१२	४	२१	००	२१	२१
००	१७	२३	२९	२३	४८	१२	३७	३७
४१	५५	५०	४१	४३	२१	४८	०३	०३
५७	७६४	३८	१२४	१३	६५	०६	०३	०३
१७	४६	२४	११	२४	३६	४७	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		अ.	अ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

श्री वि. सं. २०५९, शाक १९२४, श्रावण कृष्ण पक्ष ८

(२५ जुलाई से ८ अगस्त तक, सन् २००२ ई.)
दक्षिणायन, उत्तरगोल, वर्षा ऋतु।

ग्रह दर्शन- ३१ जुलाई से गु. पूर्व में और ४ अगस्त से बुध पश्चिम में दीखने लगेगा। मंगल अदृश्य है। शु. सायं पश्चिम में और शनि प्रातः पूर्व में दिखाई देगा।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. श्रावण	अं. जुलाई	श. श्रावण	मु. ज.उ.अ.	चन्द्रराशि प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ भा. स्टैं. टा. सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	उदयकालिक स्पष्टसूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
३४	०५	१	गु.	२३	५३	श्रव.	३७	५६	प्री.	१४	२६	कौ.	२३	५३	१०	२५	३	१४	मकर			५	४०	१९	१८	३	०८	०१	०३	
३४	०२	२	शु.	२६	३१	धनि.	४२	२८	आ.	१३	५७	ग.	२६	३१	११	२६	४	१५	कुं.	१०	०२	५	४०	१९	१७	३	०८	५८	२१	भ. ५८/१७ बाद, पंचक प्रारम्भ १०/०२, श्रीकांची पीठाधीश (A)
३३	५९	३	श.	३०	१९	शत.	४८	०५	सौ.	१४	२२	वि.	३०	१९	१२	२७	५	१६	कुम्भ			५	४१	१९	१७	३	०९	५५	४०	भ. ३०/१९ तक, बुध आश्ले. में २/२५, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत,
३३	५६	४	र.	३५	०९	पू.भा.	५४	३९	शो.	१५	३६	ब.	२	४४	१३	२८	६	१७	मी.	३७	५५	५	४२	१९	१६	३	१०	५३	०२	
३३	५३	५	चं.	४०	४६	उ.भा.	६०	००	अ.	१७	३१	कौ.	७	५७	१४	२९	७	१८	मीन			५	४२	१९	१५	३	११	५०	२३	शुक्र उ.फा. में २८/२२,
३३	५०	६	मं.	४६	४६	उ.भा.	१	५१	सु.	१९	५०	ग.	१३	४६	१५	३०	८	१९	मीन			५	४३	१९	१५	३	१२	४७	४६	भ. ४६/४६ बाद, मंगल आश्ले. में ६/००,
३३	४७	७	बु.	५२	३८	रेव.	९	१८	धृ.	२२	१४	वि.	१९	४४	१६	३१	९	२०	मे.	९	१८	५	४३	१९	१४	३	१३	४५	१०	भ. १९/४४ तक, पंचक समाप्त ९/१८, गुरु उदित १५/०५,
३३	४३	८	गु.	५७	४९	अश्वि.	१६	२५	शू.	२४	१७	बा.	२५	१३	१७	अग.१	१०	२१	मेष			५	४४	१९	१३	३	१४	४२	३५	*शुक्र कन्या में ३४/५३, अगस्त प्रारम्भ,*
३३	४०	९	शु.	६०	००	भर.	२२	४१	गं.	२५	३९	तै.	२९	४६	१८	२	११	२२	वृ.	३९	०२	५	४५	१९	१३	३	१५	४०	०२	*बुध मघा सिंह में ५८/२४,*
३३	३६	९	श.	१	४३	कृत्ति.	२७	३४	वृ.	२५	४८	ग.	१	४३	१९	३	१२	२३	वृष			५	४५	१९	१२	३	१६	३७	२८	भ. ३३/०६ बाद, सूर्य आश्ले. में २/३८, *गुरु बाल्य समाप्त १५/०५,*
३३	३३	१०	र.	४	००	रोहि.	३०	४२	ध्रु.	२४	३६	वि.	४	००	२०	४	१३	२४	वृष			५	४६	१९	११	३	१७	३४	५६	भ. ४/०० तक, *बुध पश्चिम में उदित ११/२५, गुरु पुष्य २ में* (B)
३३	२९	११	चं.	४	२०	मृग.	३१	५४	व्या.	२१	५०	बा.	४	२०	२१	५	१४	२५	मि.	१	३२	५	४६	१९	१०	३	१८	३२	२६	कामिका एकादशी व्रत(स.),
३३	२६	१२	मं.	२	४१	आर्द्रा	३१	०९	ह.	१७	२९	तै.	२	४१	२२	६	१५	२६	मिथुन			५	४७	१९	०९	३	१९	२९	५६	भ. ५९/०९ बाद, *भौम प्रदोष व्रत,*
अवम		१३	मं.	५९	०९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	*त्रयोदशी तिथिक्षय,*
३३	२२	१४	बु.	५३	५५	पुन.	२८	३७	व.	११	३८	वि.	२६	४३	२३	७	१६	२७	क.	१४	२२	५	४८	१९	०८	३	२०	२७	२७	भ. २६/४३ तक,
३३	१८	३०	गु.	४७	२२	पुष्य	२४	३६	सि. व्य.	४ ५६	२९ १६	च.	२०	३८	२४	८	१७	२८	कर्क			५	४८	१९	०८	३	२१	२५	००	*हरियाली अमावस,*

गुरु उदित
३१ जुलाई

(A) जगद्गुरु शंकराचार्य श्री १००८ जयेन्द्र सरस्वती जयन्ती, (B) १३/२२,

श्रावण कृष्ण ८ गुरु, इष्ट ५९/२५,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	०	३	३	३	५	२	१	७
१५	२१	१८	२८	०६	००	०१	२१	२१
३९	५७	३०	११	१०	२६	०४	११	११
२७	१६	४९	१६	२४	०८	५३	३७	३७
५७	७२०	३८	११२	१३	६४	०६	०३	०३
२५	३५	१८	१२	१८	००	१८	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		अ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पुष्य ४	भर. ३	आश्ले. १	आश्ले. ४	पुष्य १	उ.फा. २	मृग. ३	रोहि. ४	ज्ये. २

कुण्डली सूर्योदये

५, श.
शु. ६, ४ सू., ३
मं. बु. गु., २ रा.
७, १ चं.
के., ८, १०, १२
९, ११

लोक भविष्य:- इस मास में पांच गुरुवार हैं; पश्चिमी भूभाग पर युद्धमय वातावरण से अशान्ति व्याप्त हो। नवमी को शनिवार होने से जनता में कष्ट परेशानी एवं कार्तिक तक किसी विशिष्टव्यक्ति के निधन व पदत्याग से राजनैतिक उथल-पुथल हो; –– "श्रावणे नवमी युक्तः शनिः सन्तापकारकः।
छत्रभंगं विजानीयात् आश्विनान्ते न संशयः।।"

ग्रहचाल और बाजार का रुख:- पक्षारम्भ में तिल, तेल, सरसों, मूंगफली, गुड़, खाण्ड, उड़द, मूंग में तेजी बने। ३१ जुलाई को सोना-चांदी-रुई में अच्छे तेजी-मन्दी के रिऐक्शन बनें। १ अगस्त को चावलों में विशेष तेजी का झटका बने। गुड़, खाण्ड, शक्कर, मन्दे हों। ४ अगस्त को शेयर बाजार, रुई व कपड़ों में मन्दा रहे।

कुण्डली सूर्योदये

बु., श.
शु. ५, ४ गु., ३
६, सू. चं. मं., २ रा.
७, १
८, १०, १२
९, ११

श्रावण कृष्ण ३० गुरु, इष्ट ५९/१५,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	३	३	४	३	५	२	१	७
२२	२५	२२	१०	०७	०७	०१	२०	२०
२१	०३	५९	३१	४२	४७	४७	४९	४९
४९	३१	००	२०	५९	४३	४०	२१	२१
५७	८६८	३८	१००	१३	६२	०५	०३	०३
३२	०३	१८	५९	१२	१८	५४	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		अ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
आश्ले. २	आश्ले. ३	आश्ले. २	मघा ४	पुष्य २	उ.फा. ४	मृग. ३	रोहि. ४	ज्ये. २

आकाश लक्षण:- जुलाई २७, २९, ३०, ३१ एवं अगस्त १, २, ३, ४ को हि.प्र. चण्डीगढ़, हरियाणा, पंजाब, दिल्ली, उ.प्र. आदि में सर्वत्र व्यापक बादल-वर्षा के योग हैं।

शकुन विचार:- श्रावण में यदि बिजली चमके, बादल गरजें, तो आगे सुभिक्ष रहे। यदि श्रावण में कृत्तिका नक्षत्र में वर्षा हो, तो आगे चातुर्मास्य में अच्छी वर्षा हो।

श्री वि. सं. २०५९, शाक १९२४, श्रावण शुक्ल पक्ष ६

(६ से २२ अगस्त तक, सन् २००२ ई.)
दक्षिणायन, उत्तरगोल, वर्षा ऋतु।

ग्रह दर्शन – मं. अदृश्य है। गु. श. प्रातः पूर्व में, बु. शु. सायं पश्चिम में होंगे।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	नक्षत्र	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	योग	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	करण	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	तारीखें प्र.	तारीखें अं.	तारीखें श.	तारीखें मु.	चन्द्रराशि प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ भा. स्टै. टा. सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	उदयकालिक स्पष्टसूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
३३	१५	१	शु.	३६	५३	आश्ले.	१६	२७	व.	४७	२४	किं.	१३	३८	२५	६	१८	२६	सिं.	१६	२७	५	४६	१९	०७	३	२२	२२	३३	
३३	११	२	श.	३१	५१	मघा	१३	३६	प.	३८	०६	बा.	५	५२	२६	१०	१९	३०	सिंह			५	५०	१९	०६	३	२३	२०	०७	चन्द्रदर्शन, मु. ३०, बुध पू.फा. में ४१/३६, *वक्री. यूरेनस धनि.३ में ४५/५०,*
३३	०७	३	र.	२३	४२	पू.फा.	७	२६	शि.	२८	४३	ग.	२३	४२	२७	११	२०	ज.१	क.	२१	००	५	५०	१९	०५	३	२४	१७	४३	भ. ४६/४३ बाद, शुक्र हस्त में ७/२०, *जमद -उस्सानी मु. प्रारम्भ,* (A)
३३	०३	४	चं.	१५	४६	उ.फा. हस्त	१ ५६	३१ ०६	सि.	१९	३५	वि.	१५	४६	२८	१२	२१	२	कन्या			५	५१	१९	०४	३	२५	१५	२०	भ. १५/४६ तक,
३२	५९	५	मं.	८	३२	चित्रा	५१	२८	सा.	१०	५८	बा.	८	३२	२९	१३	२२	३	तु.	२३	४०	५	५१	१९	०३	३	२६	१२	५७	श्रीकल्कि जयन्ती, *नाग पंचमी,*
३२	५५	६	बु.	२	०७	स्वा.	४७	५२	शु. शु.	३ ५६	०५ ०७	तै.	२	०७	३०	१४	२३	४	तुला			५	५२	१९	०२	३	२७	१०	३४	भ. ५६/४६ बाद, *गोस्वामी श्रीतुलसीदास जयन्ती,*
अदम		७	बु.	५६	४६	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	*सप्तमी तिथिक्षय,*
३२	५१	८	गु.	५२	४०	विशा.	४५	२८	ब्र.	५०	०५	वि.	२४	३४	३१	१५	२४	५	वृ.	३०	५५	५	५३	१९	०१	३	२८	०८	१४	भ. २४/३४ तक, *श्रीदुर्गाष्टमी,* भारत स्वतन्त्रता दिवस,
३२	४७	९	शु.	४९	४५	अनु.	४४	१६	ऐं.	४५	०४	बा.	२१	१२	भा.१	१६	२५	६	वृश्चिक			५	५३	१९	००	३	२९	०५	५६	सं. सूर्य मघा सिंह में ५६/१२, मु. १५, पुण्यकाल अगले दिन (B)
३२	४३	१०	श.	४८	०२	ज्ये.	४४	१६	वै.	४१	००	तै.	१८	५४	२	१७	२६	७	ध.	४४	१६	५	५४	१८	५९	४	००	०३	३७	
३२	३९	११	र.	४७	२७	मूल	४५	२३	वि.	३७	५१	व.	१७	३६	३	१८	२७	८	धनु			५	५४	१८	५८	४	०१	०१	२०	भ. १७/३६ से ४७/२७ तक, पवित्रा एकादशी व्रत (स.),
३२	३५	१२	चं.	४७	५६	पू.षा.	४७	३२	प्री.	३५	३२	ब.	१७	४२	४	१९	२८	९	धनु			५	५५	१८	५७	४	०१	५९	०४	मंगल मघा सिंह में ५६/२७, बुध उ.फा. में ३१/२२, *गुरु पुष्य* ३ में (C)
३२	३१	१३	मं.	४९	२३	उ.षा.	५०	३८	आ.	३४	००	कौ.	१८	४०	५	२०	२९	१०	म.	३	१०	५	५६	१८	५६	४	०२	५६	४६	*भौम प्रदोष व्रत,*
३२	२७	१४	बु.	५१	४७	श्रव.	५४	३६	सौ.	३३	१३	ग.	२०	३५	६	२१	३०	११	मकर			५	५६	१८	५५	४	०३	५४	३५	भ. ५१/४७ बाद, *बुध कन्या में* ५८/२६, ऋक् उपाकर्म,
३२	२३	१५	गु.	५५	०६	धनि.	५६	३४	शो.	३३	०८	वि.	२३	१६	७	२२	३१	१२	कुं.	२६	५७	५	५७	१८	५४	४	०४	५२	२३	भ. २३/१६ तक, पंचक प्रारम्भ २६/५७, श्रीसत्यनारायण व्रत, (D)

(A) *मधुस्रवा तृतीया (सन्धारा तीज),* (B) मध्याह्न तक, (C) ३१/३१, (D) *रक्षाबन्धन* (राखी) (१२ बजकर ७ मिनट तक) (देखें पृ. १३१), शुक्ल-कृष्ण-यजु उपाकर्म, श्रावणी पूर्णिमा,

श्रावण शुक्ल ८ गुरु, इष्ट ५९/०३,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	७	३	४	३	५	२	१	७
२६	०६	२७	२१	०९	१४	०२	२०	२०
०५	२६	२६	३४	१४	५६	२७	२७	२७
०३	२४	४७	१३	२२	००	१५	०६	०६
५७	८२६	३८	६०	१३	६०	०५	०३	०३
४०	२४	१२	००	००	१२	३०	-११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		अ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुण्डली सूर्योदये

बु. श.
शु. ५ ४ ३
६ मं. सू. गु. २ रा.
चं. ७ १
के.
८ १० १२
९ ११

तिलहन तेज रहें।

लोक भविष्य:- श्रावण शुक्लपक्ष में तिथिक्षय नेष्ट है, कार्तिक में कहीं शासन सत्ता में परिवर्तन का संकेत मिलता है;-" श्रावणे शुक्ल पक्षे च क्षीणा क्वापि तिथिर्भवेत्। तदैव कार्त्तिके मासे छत्रभंगस्तदा भवेत्।।" पक्ष के उत्तरार्ध में सू.म. पर शनि की दृष्टि होने से भूस्खलन, बाढ़, वर्षा से अनेकत्र जनधनहानि के समाचार मिलें। सभी ग्रह राहु-केतु के मध्य होने से किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति का निधन व पदरिक्त हो। कुछ राजनीतिज्ञों में परस्पर कटुता बढ़े।

ग्रहचाल और बाजार का रुख:- पक्षारम्भ से १५ अगस्त तक बाजार अस्थिर रहेंगे, अनाज मन्दे हों तो स्टाक करें, आगे लाभ रहेगा। १६ अगस्त से तेल, तिलहन, गुड़, खाण्ड, शक्कर तेज रहें। शेयर बाजार एवं अनाजों में कुछ मन्दा हों। १९ अग. के लगभग अनाज कुछ तेज, रुई में घटाबढ़ी, अनाज,धातु, तिलहन तेज रहें।

कुण्डली सूर्योदये

बु. शु. गु.
६ ४
७ मं. सू. ३ श.
के. ९ रा. २
८ ११ १
१० चं. १२

श्रावण शुक्ल १५ गुरु, इष्ट ५८/५३,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	१०	४	५	३	५	२	१	७
०५	०६	०१	०१	१०	२१	०३	२०	२०
४६	३१	५४	१९	४४	४७	०३	०४	०४
०६	४५	१६	११	०९	३५	२०	५०	५०
५७	७३८	३८	७८	१२	५७	०४	०३	०३
४७	५६	१२	३५	४२	३६	५४	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		अ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

आकाश लक्षण:- अगस्त १०, ११, १६, १९, एवं २१ को शिलांग, गोआ, लंका, आसाम, भूटान, बंगाल, सिक्किम एवं उत्तरी भारत में बादल चाल रहे। वायुवेग के साथ कहीं वर्षा हो एवं तापमान गिरे। *शकुन विचार:-* यदि श्रावण शुक्ल सप्तमी को वर्षा, हो तो सभी प्रकार के धान्य उत्तम हों।

श्री वि. सं. २०५९, शाक १९२४, भाद्रपद कृष्ण पक्ष १०

(२३ अगस्त से ७ सितम्बर तक, सन् २००२ ई.) दक्षिणायन, उत्तरगोल, वर्षा-शरद् ऋतु।

ग्रह दर्शन- मं. अस्त है। गु. श. प्रातः पूर्व में और बु. शु. सायं पश्चिम में नजर आएंगे।

दिनमान घ.	प.	तिथि	वार	समाप्तिकाल घ.	प.	नक्षत्र	समाप्तिकाल घ.	प.	योग	समाप्तिकाल घ.	प.	करण	समाप्तिकाल घ.	प.	तारीखें प्र.	अं.	श.	मु.	चन्द्रराशि प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ भा. स्टैं. टा. सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	उदयकालिक स्पष्टसूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
३२	१८	१	शु.	५६	१६	शत.	६०	००	अ.	३३	४५	बा.	२७	१२	८	२३	१	१३	कुम्भ			५	५७	१८	५३	४	०५	५०	११	*शक भाद्रपद प्रारम्भ,*
३२	१४	२	श.	६०	००	शत.	५	१८	सु.	३५	०१	तै.	३१	४६	९	२४	२	१४	मी.	५५	१०	५	५८	१८	५२	४	०६	४८	०१	शुक्र चित्रा में ३६/०६, *राहु रोहि. ३, केतु ज्येष्ठा १* में ३०/१२, (A)
३२	१०	२	र.	४	१६	पू.भा.	११	५१	धृ.	३६	५२	ग.	४	१६	१०	२५	३	१५	मीन			५	५८	१८	५०	४	०७	४५	५२	भ. ३७/०७ बाद,
३२	०५	३	चं.	१०	०३	उ.भा.	१६	०१	शू.	३६	०६	वि.	१०	०३	११	२६	४	१६	मीन			५	५९	१८	४६	४	०८	४३	४५	भ. १०/०३ तक, *शनि मृग. ४* में २६/३८, *प्लूटो मार्गी* २६/१५, (B)
३२	०१	४	मं.	१६	१३	रेव.	२६	३५	गं.	४१	३६	बा.	१६	१३	१२	२७	५	१७	मे.	२६	३५	६	००	१८	४८	४	०९	४१	३६	पंचक समाप्त २६/३५,
३१	५७	५	बु.	२२	२६	अश्वि.	३४	०८	वृ.	४४	०४	तै.	२२	२६	१३	२८	६	१८	मेष			६	००	१८	४७	४	१०	३६	३६	
३१	५२	६	गु.	२८	१५	भर.	४१	११	ध्रु.	४६	०१	व.	२८	१५	१४	२९	७	१९	वृ.	५७	४७	६	०१	१८	४६	४	११	३७	३५	भ. २८/१५ बाद,
३१	४८	७	शु.	३३	०५	कृत्ति.	४७	१३	व्या.	४७	०७	वि.	०	४८	१५	३०	८	२०	वृष			६	०१	१८	४५	४	१२	३५	३४	भ. ०/४८ तक, सूर्य पू.फा. में ४५/५७, बुध हस्त में २२/२४, (C)
३१	४४	८	श.	३६	२७	रोहि.	५१	४३	ह.	४७	०१	बा.	४	४६	१६	३१	९	२१	वृष			६	०२	१८	४३	४	१३	३३	३६	*शुक्र तुला में ५२/५७, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत,* (D)
३१	३९	९	र.	३७	५७	मृग.	५४	१६	व.	४५	२४	तै.	७	१२	१७	सि.१	१०	२२	मि.	२३	१७	६	०२	१८	४२	४	१४	३१	३६	*सितम्बर प्रारम्भ, श्रीगुग्गा नवमी,*
३१	३५	१०	चं.	३७	१६	आर्द्रा	५४	४६	सि.	४२	०५	व.	७	५४	१८	२	११	२३	मिथुन			६	०३	१८	४१	४	१५	२६	४५	भ. ७ /५४ से ३७/१६ तक,
३१	३०	११	मं.	३४	३२	पुन.	५३	१२	व्य.	३७	०४	ब.	५	५५	१९	३	१२	२४	क.	३८	४७	६	०४	१८	४०	४	१६	२७	५३	अजा एकादशी व्रत (स.), *अगस्त्य उदित,*
३१	२६	१२	बु.	२६	४४	पुष्य	४६	४०	व.	३०	२५	कौ.	२	०८	२०	४	१३	२५	कर्क			६	०४	१८	३९	४	१७	२६	०३	गुरु पुष्य ४ में ३३/११, प्रदोष व्रत,
३१	२१	१३	गु.	२३	११	आश्ले.	४४	३१	प.	२२	२०	व.	२३	१२	२१	५	१४	२६	सिं.	४४	३१	६	०५	१८	३७	४	१८	२४	१४	भ. २३/११ से ४६/२४ तक,
३१	१७	१४	शु.	१५	१७	मघा	३८	०६	शि.	१३	०६	श.	१५	१७	२२	६	१५	२७	सिंह			६	०५	१८	३६	४	१९	२२	२८	*कुशोत्पाटनी अमा,* पिठोरी अमा,
३१	१२	३०	श.	६	२६	पू.फा.	३१	०४	सि. सा.	३ ५२	०५ ४०	ना.	६	२६	२३	७	१६	२८	क.	४४	१५	६	०६	१८	३५	४	२०	२०	३२	*शनैश्चरी अमा,*

(A) सूर्य सायन कन्या में १७/०७, शरद् ऋतु प्रारम्भ, (B) श्रीगणेश (संकष्ट) चतुर्थी व्रत, बहुला चतुर्थी, (C) वक्री नेपच्यून धनि. ३ में ४५/५०, *श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत* (चन्द्रोदय व्यापिनी अष्टमी में) (चन्द्रोदय २३ घं. ०१ मि.) (स्मार्तों =गृहस्थियों के लिए), (देखें पृ. १३२), (D) (वैष्णवों = सन्यासियों के लिए), दूर्वाष्टमी (देखें पृ. १३२),

भाद्रपद कृष्ण ८ शनि, इष्ट ५८/४०,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	१	४	५	३	६	२	१	७
१४	२४	०७	११	१२	००	०३	१६	१६
३०	४७	३७	३७	३६	०५	४४	३६	३६
२०	३७	५०	२७	३१	०३	०७	१३	१३
५८	७४६	३८	५६	१२	५३	०४	०३	०३
०२	४७	०५	४७	१८	१२	१२	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		अ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पू.फा. १	मृग. १	मघा ३	हस्त १	पुष्य ३	चित्रा ३	मृग. ४	रोहि. ३	ज्ये. १

कुण्डली सूर्योदये

६ बु. | ४ गु. | शु. ७ | ५ मं. सू. | ३ श. | ८ के. | २ चं. रा. | ९ | ११ | १ | १० | १२
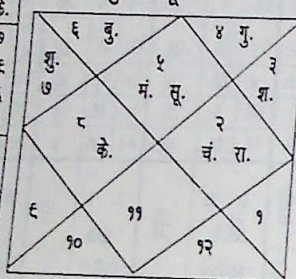
कहीं बाढ़ की स्थिति भी बने।

लोक भविष्य:- कालसर्प योग चल रहा है। विस्फोटक पदार्थों से हानिभयकारक है। कहीं अग्निकाण्ड व कहीं भूकम्प आदि प्राकृतिक- प्रकोप से भी हानि हो। ग्रहस्थिति खाद्यपदार्थों में मंहगाईकारक है। दुर्घटना में किसी गण्यमान्य व्यक्ति के निधन होने का योग है।

ग्रहचाल और बाजार का रुख:- पक्षारम्भ में रुई, सोना, चादी आदि धातु, तेल, नमक, गुड़, खाण्ड में तेजी, अनाजों में मन्दी का रुख रहे। ३० अगस्त के लगभग जीरा, सोना, गुड़-खाण्ड, तेल, तिलहन एवं अनाज तेज होंगे। मासान्त में सोना-चांदी में घटाबढ़ी चले।

आकाश लक्षण:- अगस्त २४, २६, ३०, ३१ एवं सितम्बर ३ के लगभग मैसूर, द.मद्रास, लंका, दार्जीलिंग सिक्किम, भूटान, आसाम में वर्षा के योग हैं।

शकुन विचार:- यदि भाद्रपद कृष्ण तृतीया को बादल हों, तो अनाज के स्टाक से आगे छठे मास में लाभ हों।

कुण्डली सूर्योदये

६ बु. | ४ गु. | ७ शु. | ५ मं. सू. चं. | ३ श. | ८ के. | रा. २ | ९ | ११ | १ | १० | १२
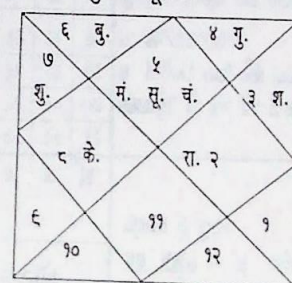
भाद्रपद कृष्ण ३० शनि, इष्ट ५८/३०,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	५	४	५	३	६	२	१	७
२१	०३	१२	१७	१४	०६	०४	१६	१६
१७	३६	०५	१२	०१	००	११	१३	१३
२८	४५	०७	०१	००	२६	००	५८	५८
५८	६०६	३८	३७	११	४८	०३	०३	०३
१५	४२	११	२३	५४	४८	३६	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		अ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पू.फा. ३	उ.फा. ३	मघा ४	हस्त ३	पुष्य ४	चित्रा ४	मृग. ४	रोहि. ३	ज्ये. १

श्री वि. सं. २०५९, शाक १९२४, भाद्रपद शुक्ल पक्ष ११

(८ से २१ सितम्बर तक, सन् २००२ ई.)
दक्षिणायन,, उत्तरगोल, शरद् ऋतु।

ग्रह दर्शन- मं. अस्त है। बु. १३ सितं. को पश्चिम में अस्त हो जाएगा। शु. सायं पश्चिम में होगा। प्रातः गु. पूर्व कपाल में और शनि याम्योत्तर वृत्तासन्त होगा।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. भाद्रपद	अं. सितंबर	श. भाद्रपद	मु. ज.उ.	चन्द्रराशि प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ भा. स्टैं. टा. सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	उदयकालिक स्पष्टसूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
अवम		१	श.	५७	०६	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	*प्रतिपदा तिथिक्षय,*
३१	०८	२	र.	४७	५०	उ.फा.	२३	४३	शु.	४२	१२	बा.	२२	३०	२४	८	१७	२९	कन्या			६	०६	१८	३४	४	२१	१८	५८	चन्द्रदर्शन मु.३०, शुक्र स्वाती में ४७/५५, *मेला बाबा गोसाईं आणां कुराली(पं.),*
३१	०३	३	चं.	३८	५८	हस्त	१६	३७	शु.	३२	०३	तै.	१३	२४	२५	९	१८	र. १	तु.	४३	२०	६	०७	१८	३२	४	२२	१७	१६	मंगल पू.फा. में ५६/१२, रजब मु. प्रा., *श्रीवराह जयन्ती,* (A)
३०	५९	४	मं.	३०	५७	चित्रा	१०	१२	ब्र.	२२	३४	व.	४	४६	२६	१०	१९	२	तुला			६	०८	१८	३१	४	२३	१५	३७	भ. ४/४६ से ३०/५७ तक, *सिद्धि विनायक व्रत, कलंक चतुर्थी* (B)
३०	५४	५	बु.	२४	०७	स्वा.	४	५१	ऐं.	१४	०२	बा.	२४	०७	२७	११	२०	३	वृ.	४६	४५	६	०८	१८	३०	४	२४	१३	५८	ऋषि पंचमी,
३०	५०	६	गु.	१८	४४	वि. अनु.	० ५८	५२ २८	वै.	६	३९	तै.	१८	४४	२८	१२	२१	४	वृश्चिक			६	०९	१८	२९	४	२५	१२	२१	सूर्यषष्ठी व्रत,
३०	४५	७	शु.	१४	५७	ज्ये.	५७	४०	वि. प्री.	० ५५	३२ ४७	व.	१४	५७	२९	१३	२२	५	ध.	५७	४०	६	०९	१८	२७	४	२६	१०	४५	भ. १४/५७ से ४३/४२ तक, सूर्य उ.फा में ३०/०३, *बुध पश्चिम में* (C)
३०	४१	८	श.	१२	५०	मूल	५८	२७	आ.	५२	१८	ब.	१२	५०	३०	१४	२३	६	धनु			६	१०	१८	२६	४	२७	०९	१०	बुध वक्री ४७/२५, *श्रीराधा अष्टमी,*
३०	३६	९	र.	१२	१८	पू.षा.	६०	००	सौ.	५०	००	कौ.	१२	१८	३१	१५	२४	७	धनु			६	१०	१८	२५	४	२८	०७	३८	*श्रीचन्द नवमी* (उदासीन सम्प्रदाय महोत्सव),
३०	३१	१०	चं.	१३	१३	पू.षा.	०	४१	शो.	४८	४४	ग.	१३	१३	आ.१	१६	२५	८	म.	१६	२७	६	११	१८	२४	४	२९	०६	०७	भ. ४४/१० बाद, *सं. सूर्य कन्या में* ५५/१५, मु. ४५, पुण्यकाल (D)
३०	२७	११	मं.	१५	२४	उ.षा.	४	१२	अ.	४८	२१	वि.	१५	२४	२	१७	२६	९	मकर			६	१२	१८	२२	५	००	०४	३८	भ. १५/२४ तक, पद्मा एकादशी व्रत(स.); श्रवण द्वादशी (E)
३०	२२	१२	बु.	१८	३६	श्रव.	८	४६	सु.	४८	४३	बा.	१८	३६	३	१८	२७	१०	कुं.	४१	२५	६	१२	१८	२१	५	०१	०३	११	पंचक प्रारम्भ ४१/२५, प्रदोष व्रत, *श्रीवामन जयन्ती,*
३०	१८	१३	गु.	२२	४८	धनि.	१४	१३	धृ.	४६	४२	तै.	२२	४८	४	१९	२८	११	कुम्भ			६	१३	१८	२०	५	०२	०१	४५	
३०	१३	१४	शु.	२७	४०	शत.	२०	२४	शू.	५१	११	व.	२७	४०	५	२०	२९	१२	कुम्भ			६	१३	१८	१८	५	०३	००	२१	भ. २७/४० बाद, *अनन्त चतुर्दशी व्रत,*
३०	०८	१५	श.	३३	०६	पू.भा.	२७	१०	गं.	५३	०६	वि.	०	२०	६	२१	३०	१३	मी.	१०	२५	६	१४	१८	१७	५	०३	५८	५८	भ. ०/२० तक, गुरु आश्ले. १ में ५७/४७, श्रीसत्यनारायण व्रत, (F)

(A) साम उपाकर्म, गौरी तृतीया, हरितालिका तृतीया, (B) (चन्द्रास्त २० घं. ५६ मि.), हरितालिका चतुर्थी, (C) *अस्त ८/३३, श्रीमहालक्ष्मी व्रत प्रारम्भ,* (D) अगले दिन मध्याह्न तक, (E) (विष्णु शृंखल योग), (दिखें पृ. १३२), (F) अथर्व उपाकर्म, प्रोष्ठपदी श्राद्ध, — पूर्णिमा श्राद्ध ,

भाद्रपद शुक्ल ८ शनि इष्ट ५८/२०,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	८	४	५	३	६	२	१	७
२८	१३	१६	१६	१५	११	०४	१८	१८
०६	१८	३२	२१	२२	१९	३३	५१	५१
००	२८	१८	११	२३	०१	१७	४३	४३
५८	७८९	३८	०२	११	४२	०२	०३	०३
२७	१२	११	००	२४	५४	५४	११	११
		मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		अ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

नोटः- भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी को चन्द्रर्शन करने से कलंक लगता है; अतः इसदिन चन्द्रमा न देखें। यदि चन्द्र दर्शन हो ही जाए; तो पूर्वोत्तर को मुंह करके जल सामने रखकर निम्नलिखित मन्त्र का जाप १०८ बार करके घर में एवं अपने शरीर पर जल के छींटे दें, कुछ जल पी लें। - मन्त्र :- "ॐ सिंहः प्रसेनमवधीत् सिंहो जाम्बवता हतः। सुकुमारक मा रोदीस्तव ह्येष स्यमन्तकः।।" ऐसा करने से चन्द्रदर्शन जन्य दोष का परिहार हो जाता है।

लोक भविष्यः- ग्रहस्थिति वरिष्ठ नेताओं के लिए उल्झन पूर्ण है। विरोधी देशों से तनाव, सन्धि-मित्रता की बातें व्यर्थ सिद्ध हों, तिल-तेल, सोना-चान्दी के व्यापारियों को लाभ मिले।

ग्रहचाल और बाजार का रुखः- पक्षारंभ से पक्षान्त तक रुई, कपास, सोना चान्दी, तेल, तिलहन, घी, सुपारी, गुड़, खाण्ड में तेजी रहे, बीच में १३ सितं. को रुई में झटके की मन्दी, अनाज भी मन्दे रहें।

आकाश लक्षणः- सितं. ९, १४, १६, २१ को आसाम, भूटान, शिलांग, मुम्बई, गोआ, कालीकट एवं सूरत में वर्षा के योग हैं। १३ सितं. को हवा का जोर रहे।

शकुन विचारः- भाद्रपद शुक्ल पूर्णिमा को यदि आकाश निर्मल रहे तो गेहूं, जौं, चना एवं चावल के स्टाक से आगे लाभ हो।

कुण्डली सूर्योदये

७ शु.
५ मं.
८
के.
६
४
बु. सू.
गु.
९
३ श.
१०
१२
२ रा.
चं.११
१

भाद्रपद शुक्ल १५ शनि, इष्ट ५८/१०,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	११	४	५	३	६	२	१	७
०४	०९	२०	१६	१६	१५	०४	१८	१८
५५	२९	५९	२७	४०	४८	५०	२९	२९
५१	३१	२३	१४	०४	४१	४०	२७	२७
५८	७१५	३८	४५	१०	३४	०२	०३	०३
३८	५७	०५	१८	५४	५९	१२	११	११
		मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		अ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

श्री वि. सं. २०५९, शाक १९२४,

आश्विन कृष्ण पक्ष १२

(२२ सितम्बर से ६ अक्तूबर तक, सन् २००२ ई.)
दक्षिणायन, उत्तर-दक्षिणगोल, शरद् ऋतु।

ग्रह दर्शन- मं. २२ सितं. से और बुध ३ अक्तू. से पूर्व में दिखाई देने लगेगा। शु. सायं पश्चिम में होगा। प्रातः गु. पूर्व कपाल में और शनि याम्योत्तर वृत्तासन्न होगा।

दिनमान घ.	प.	तिथि	वार	समाप्तिकाल घ.	प.	नक्षत्र	समाप्तिकाल घ.	प.	योग	समाप्तिकाल घ.	प.	करण	समाप्तिकाल घ.	प.	तारीखें प्र.	अं.	श.	मु.	चन्द्रराशि प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ भा. स्टै. टा. सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	उदयकालिक स्पष्टसूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
३०	०४	१	र.	३६	०६	उ.भा.	३४	२३	वृ.	५५	२०	बा.	६	०८	७	२२	३१	१४	मीन			६	१४	१८	१६	५	०४	५७	३८	*मंगल उदय ४३/०५, श्राद्ध पक्ष(महालय) प्रारम्भ, प्रतिपदा श्राद्ध,*
२९	५९	२	चं.	४५	२१	रेव.	४१	५५	ध्रु.	५७	४४	तै.	१२	१४	८	२३	आ.१	१५	मे.	४१	५५	६	१५	१८	१५	५	०५	५६	१९	पंचक समाप्त ४१/५५, *सूर्य सायन तुला में १०/२६, दक्षिण गोल प्रारम्भ,* (A)
२९	५५	३	मं.	५१	४०	अश्वि.	४६	३०	व्या.	६०	००	व.	१८	३१	९	२४	२	१६	मेष			६	१५	१८	१३	५	०६	५५	०३	भ. १८/३१ से ५१/४० तक, *तृतीया श्राद्ध,*
२९	५०	४	बु.	५७	४३	भर.	५६	५१	व्या.	०	०७	ब.	२४	४१	१०	२५	३	१७	मेष			६	१६	१८	१२	५	०७	५३	४६	श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, *चतुर्थी श्राद्ध,*
२९	४५	५	गु.	६०	००	कृत्ति.	६०	००	ह.	२	१७	कौ.	३०	२३	११	२६	४	१८	वृ.	१३	३२	६	१७	१८	११	५	०८	५२	३७	*पंचमी श्राद्ध,*
२९	४१	५	शु.	३	०३	कृत्ति.	३	३१	व.	३	५४	तै.	३	०३	१२	२७	५	१९	वृष			६	१७	१८	१०	५	०९	५१	२७	सूर्य हस्त में ८/३६, *षष्ठी श्राद्ध,*
२९	३६	६	श.	७	१७	रोहि.	९	०७	सि.	४	३६	व.	७	१७	१३	२८	६	२०	मि.	४१	२२	६	१८	१८	०८	५	१०	५०	२०	भ. ७/१७ से ३८/५१ तक, वक्री बुध उ.फा. में १६/११, *सप्तमी श्राद्ध,*
२९	३१	७	र.	९	५७	मृग.	१३	१२	व्य.	४	१३	ब.	९	५७	१४	२९	७	२१	मिथुन			६	१८	१८	०७	५	११	४९	१५	*अष्टमी श्राद्ध, श्रीमहालक्ष्मी व्रत समाप्त,*
२९	२७	८	चं.	१०	४३	आर्द्रा	१५	२५	व. प.	२ ५८	१६ ४६	कौ.	१०	४३	१५	३०	८	२२	मिथुन			६	१९	१८	०६	५	१२	४८	१२	मंगल उ.फा. में ५३/०७, *नवमी श्राद्ध, सौभाग्यवती श्राद्ध,*
२९	२२	९	मं.	९	२४	पुन.	१५	३६	शि.	५३	३७	ग.	९	२४	१६	अ. १	९	२३	क.	०	४२	६	२०	१८	०४	५	१३	४७	१२	भ. ३७/५८ बाद, शुक्र विशा. में २/०२, *अक्तूबर प्रारम्भ, दशमी श्राद्ध,*
२९	१८	१०	बु.	५	५६	पुष्य	१३	४२	सि.	४६	४६	वि.	५	५६	१७	२	१०	२४	कर्क			६	२०	१८	०३	५	१४	४६	१५	भ. ५/५६ तक, इन्दिरा एकादशी व्रत (स्मा.) *एकादशी श्राद्ध,*
२९	१३	११	गु.	०	३५	आश्ले.	९	५२	सा.	३८	२६	बा.	०	३५	१८	३	११	२५	सिं.	९	५२	६	२१	१८	०२	५	१५	४५	१९	*बुध पूर्व में उदय ५४/१३,* इन्दिरा एकादशी व्रत (वै.) त्रिस्पर्शा (B)
अवम		१२	गु.	५३	३१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	*द्वादशी तिथिक्षय,*
२९	०८	१३	शु.	४५	०५	मघा पू.फा.	४ ५७	२५ ४४	शु.	२९	००	ग.	१९	१८	१९	४	१२	२६	सिंह			६	२१	१८	०१	५	१६	४४	२५	भ. ४५/०५ बाद, प्रदोष व्रत, *त्रयोदशी श्राद्ध, मघा त्रयोदशी श्राद्ध,*
२९	०४	१४	श.	३५	४७	उ.फा.	५०	१५	शु.	१८	४०	वि.	१०	३०	२०	५	१३	२७	क.	१०	५५	६	२२	१८	००	५	१७	४३	३३	भ. १०/३० तक, *शस्त्र-विषादि से मृतों का श्राद्ध,*
२८	५९	३०	र.	२६	०२	हस्त	४२	२८	ब्र. ऐ.	७ ५६	५० ५५	च.	०	५५	२१	६	१४	२८	कन्या			६	२३	१७	५८	५	१८	४२	४३	*मंगल कन्या में ६/५५,* बुध मार्गी ४६/२३, चतुर्दशी श्राद्ध, *अमा श्राद्ध,* (C)

(A) शक आश्विन प्रारम्भ, *द्वितीया श्राद्ध,* (B) द्वादशी, *द्वादशी श्राद्ध, सन्यासियों का श्राद्ध,* (C) *सर्वपितृ श्राद्ध, नाना का श्राद्ध, श्राद्ध समाप्त, गजच्छाया योग* (१६ घं. ४८ मि. तक),

आश्विन कृष्ण ८ चंद्र, इष्ट ५७/५८,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	२	४	५	३	६	२	१	७
१३	२९	२६	७	१८	१९	०५	१८	१८
४५	२२	४३	१५	१३	५८	०५	००	००
११	२५	०४	१२	५१	३६	३३	५०	५०
५८	७९६	३८	५७	१०	२१	०१	०३	०३
५८	२४	१२	१२	००	१७	१८	११	११
		मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
हस्त २	पुन. ३	उ.फा. १	उ.फा. ४	आश्ले. १	स्वा. ४	मृ. ४	रोहि. ३	ज्ये. १

कुण्डली सूर्योदये

६ सू. बु. | ७ शु. | ५ मं. | ४ गु. | ३ श. चं. | २ रा. | १ | १२ | ११ | १० | ९ | ८ के.

लोक भविष्यः- बुध का उदय कहीं प्राकृतिक-प्रकोप का कारण बने; "नोत्पात परित्यक्तः चन्द्रजो व्रजत्युदयम्।"। मंगल का उदय एवं कन्या राशि में प्रवेश कहीं अत्याचार, उपद्रव, बंगाल-आसाम में महामारी से परेशानी का कारण बने।

ग्रहचाल और बाजार का रुखः- २२ सितं. को रुई, उड़द, तिल, तेल, अलसी, गुड़, खाण्ड, हरड़, हींग, धणिया, हल्दी, नमक तेज रहें। २८ सितं. को चान्दी मन्दी, गुड़, खाण्ड, शक्कर तेज रहें। १ से ३ अक्तू. तक रुई मन्दी, घी, तिल, लालमिर्च एवं अनाज तेज हों।

आकाश लक्षणः- सितं. २२, २७, २८, ३०, अक्तू. ३, ६ को हैदराबाद, उ.प्र., विन्ध्य प्रदेश, पंजाब, भूटान, सिक्कम में बादलचाल व वर्षा के योग हैं।

शकुन विचारः- आश्विन कृष्ण दशमी से द्वादशी तक बादल गरजें, बिजली चमके, तो गेहूं आदि अनाजों के स्टाक से आगे लाभ मि[illegible]।

कुण्डली सूर्योदये

६ सू. चं. बु. मं. | ७ शु. | ५ | ४ गु. | ३ श. | २ रा. | १ | १२ | ११ | १० | ९ | ८ के.

आश्विन कृष्ण ३०रवि, इष्ट ५७/४८,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	५	५	५	३	६	२	१	७
१९	२०	००	०४	१९	२१	०५	१७	१७
३६	१४	३२	२५	१२	२६	१०	४१	४१
४६	४१	२७	५६	०२	४४	३२	४६	४६
५९	६१८	३८	०३	०९	०६	००	०३	०३
११	४२	१७	१७	२४	३६	३६	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
हस्त ३	चित्रा २	उ.फा. २	उ.फा. ३	आश्ले. १	विशा. १	मृ. ४	रोहि. ३	ज्ये. १

श्री वि. सं. २०५९, शाक १९२४, आश्विन शुक्ल पक्ष १३

(७ से २१ अक्तूबर तक, सन् २००२ ई.)
दक्षिणायन, दक्षिणगोल, शरद् ऋतु।

ग्रह दर्शन- मं. बु. प्रातः पूर्व में और शुक्र सायं पश्चिम में होगा। प्रातः गुरु याम्योत्तर वृत्तासन्न और शनि पश्चिम कपाल में दीखेगा।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. आश्विन	तारीखें अं. अक्टू.	तारीखें श. आश्विन	तारीखें मु. रज्जब	चन्द्रराशि प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ भा. स्टैं. टा. सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	उदयकालिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
२८	५५	१	चं.	१६	२१	चित्रा	३४	५३	वै.	४६	१५	ब.	१६	२१	२२	७	१५	२९	तु.	८	३७	६	२३	१७	५७	५	१९	४१	५५	चन्द्रदर्शन मु. ३०, *शारद नवरात्र प्रारम्भ,* घट स्थापन,
२८	५०	२	मं.	७	०६	स्वा.	२७	५७	वि.	३६	१३	कौ.	७	०६	२३	८	१६	शा.१	तुला			६	२४	१७	५६	५	२०	४१	१०	*शाबान मु. प्रारम्भ,*
अवम		३	मं.	५८	५६	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	*तृतीया तिथिक्षय*
२८	४५	४	बु.	५१	५६	वि.	२२	०८	प्री.	२७	०८	व.	२५	१६	२४	९	१७	२	वृ.	८	२७	६	२५	१७	५५	५	२१	४०	२७	भ. २५/१६ से ५१/५६ तक,
२८	४१	५	गु.	४६	४०	अनु.	१७	४७	आ.	१९	१६	ब.	१९	२०	२५	१०	१८	३	वृश्चिक			६	२५	१७	५४	५	२२	३९	४६	सूर्य चित्रा में ४०/३८, शुक्र वक्री ४४/१०, उपांगललिता व्रत,
२८	३६	६	शु.	४३	११	ज्ये.	१५	०८	सौ.	१२	४९	कौ.	१४	५५	२६	११	१९	४	ध.	१५	०८	६	२६	१७	५२	५	२३	३९	०६	*शनि वक्री* ३०/१३, *सरस्वती आवाहन,*
२८	३२	७	श.	४१	३५	मूल	१४	२१	शो.	७	५२	ग.	१२	२३	२७	१२	२०	५	धनु			६	२७	१७	५१	५	२४	३८	२८	भ. ४१/३५ बाद, गुरु आश्ले. २ में १४/४५, सरस्वती पूजन,
२८	२७	८	र.	४१	५३	पू.षा.	१५	२५	अ.	४	२५	वि.	११	३०	२८	१३	२१	६	म.	३१	००	६	२७	१७	५०	५	२५	३७	५१	भ. ११/३० तक, *श्रीदुर्गाष्टमी,* महाष्टमी,
२८	२३	९	चं.	४३	५२	उ.षा.	१८	१४	सु.	२	२४	बा.	१२	५३	२९	१४	२२	७	मकर			६	२८	१७	४९	५	२६	३७	१७	*सरस्वती विसर्जन,* महानवमी, *नवरात्र समाप्त,*
२८	१८	१०	मं.	४७	१९	श्रव.	२२	३३	धृ.	१	३७	तै.	१५	३५	३०	१५	२३	८	कुं.	५५	१०	६	२९	१७	४८	५	२७	३६	४५	पंचक प्रारम्भ ५५/१०, बुध हस्त में ९/४२, *विजया दशमी,* (A)
२८	१४	११	बु.	५१	५४	धनि.	२८	०५	शू.	१	५३	व.	१९	२८	३१	१६	२४	९	कुम्भ			६	२९	१७	४७	५	२८	३६	१५	भ. १९/२८ से ५१/५४ तक, पापांकुशा एकादशी व्रत (स.), (B)
२८	०९	१२	गु.	५७	१८	शत.	३४	३०	गं.	२	५७	ब.	२४	३६	का.१	१७	२५	१०	कुम्भ			६	३०	१७	४६	५	२९	३५	४६	*सं.सूर्य तुला में* २४/२२, मु. १५, पुण्यकाल ८/२२ बाद,
२८	०५	१३	शु.	६०	००	पू.भा.	४१	३२	वृ.	४	३६	कौ.	३०	१५	२	१८	२६	११	मी.	२४	४२	६	३१	१७	४४	६	००	३५	१९	प्रदोष व्रत,
२८	००	१३	श.	३	१३	उ.भा.	४८	५३	ध्रु.	६	३७	तै.	३	१३	३	१९	२७	१२	मीन			६	३१	१७	४३	६	०१	३४	५४	वक्री शुक्र स्वाती में ५९/५८, *शुक्र वार्धक्य प्रारम्भ २५/०५,*
२७	५६	१४	र.	९	२६	रेव.	५६	२२	व्या.	८	५०	व.	९	२६	४	२०	२८	१३	मे.	५६	२२	६	३२	१७	४२	६	०२	३४	३६	भ. ९/२६ से ४२/३६ तक, पंचक समाप्त ५६/२२, *नेपच्यून मार्गी* (C)
२७	५१	१५	चं.	१५	४३	अश्वि.	६०	००	ह.	११	०५	ब.	१५	४३	५	२१	२९	१४	मेष			६	३३	१७	४१	६	०३	३४	०६	मंगल हस्त में ४७/२८, *श्रीवाल्मीकि जयन्ती, कार्त्तिक स्नान प्रारम्भ,*

(A) (*दशहरा*), अपराजिता पूजन, सीमोल्लंघन, (B) भरत मिलाप, (C) ३२/०७, श्रीसत्यनारायण व्रत, *शरत् पूर्णिमा,* कोजागर व्रत,

आश्वि. शुक्ल ८ रवि, इष्ट ५७/३८,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	९	५	५	३	६	२	१	७
२६	०५	०५	०८	२०	२१	०५	१७	१७
३४	३६	००	३७	१४	३०	११	१९	१९
५७	२८	०८	१९	४९	४२	१९	३०	३०
५९	७७०	३८	६१	०८	०६	००	०३	०३
२४	०८	११	१९	३६	३१	१२	११	११
		मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
चित्रा १	उ.षा. ३	उ.फा. ३	उ.फा. ४	आश्ले. २	विशा. १	मृग. ४	रोहि. ३	ज्ये. १

कुण्डली सूर्योदये

लोक भविष्य :- इस चान्द्र मास में पांच रविवार एवं पांच सोमवार हैं; सोमवारी चन्द्र दर्शन है, शनि-शुक्र वक्री हो रहे हैं। राजनीतिज्ञों में वैमनस्य, मतभेद एवं पश्चिमी भागों में अशान्ति का संकेत है। कहीं दुर्भिक्ष, इटली, रोम, जापान, टर्की, अमेरीका आदि में कहीं भूकम्प-प्राकृतिक-प्रकोप से हानि हो। मृगशिर नक्षत्र पर शनि के विचरण करने से नानाविध रोगों से जनता परेशान हो। इस पक्ष में दशमी को मंगलवार होने से "आश्विने दशमी भौमे भूम्यां व्याधिरनेकशः" मलेरिया आदि सांसर्गिक रोग व्यापें।

ग्रहचाल और बाजार का रुख:- १० से १४ अक्तूबर तक घी, तेल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, गेहूं, जौ, चना, तिलहन, सीमिन्ट, तमाखू तेज हों। १५ अक्तूबर से रुई, चान्दी एवं अनाजों में मन्दा-तेजी के रिएक्शन एवं घी, गुड़, खाण्ड, नमक में तेजी रहे। *आकाश लक्षण:-* अक्तू. १०, ११, १२, १७, १९ से २१ के लगभग भारत के मध्य एवं उ.पश्चिमी भागों में छिटपुट वर्षा एवं खण्डवृष्टि के योग हैं।

शकुन विचार:- यदि आश्विन शुक्ल पूर्णिमा को आकाश मेघाछन्न रहे तो धान्य के स्टाक से आगामी चैत्र में अच्छा लाभ हो। 'आश्विनी निर्मलापूर्णा शुभाय जलदोदये। धान्यस्य संग्रहं कुर्यात् चैत्रे लाभप्रदो मतः।।'

कुण्डली सूर्योदये

के. ९
मं. ६ बु.
६
सू. ७ शु.
५
१०
४ गु.
११
चं. १
३
श.
१२
२ रा.

आश्वि. शुक्ल १५ चन्द्र, इष्ट ५७/२३,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	०	५	५	३	६	२	१	७
०४	१२	१०	१९	२१	१९	०५	१६	१६
३१	०४	०६	४२	१९	१२	०५	५४	५४
१४	१९	१९	०४	१२	४६	३०	०४	०४
५९	७११	३८	६४	०७	२५	०१	०३	०३
३९	५४	१८	०६	३६	०७	०६	११	११
		मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
चित्रा ४	अश्वि. ४	हस्त १	हस्त ३	आश्ले. २	स्वा. ४	मृग. ४	रोहि. ३	ज्ये. १

श्री वि. सं. २०५९, शाक १९२४, कार्तिक कृष्ण पक्ष १४

(२२ अक्तूबर से ४ नवंबर तक, सन् २००२ ई.) दक्षिणायन, दक्षिणगोल, शरद्-हेमन्त ऋतु।

ग्रह दर्शन- ३० अक्तू. को बु.पूर्व में, और २२ अक्तू. को शु. पश्चिम में अदृश्य हो जाएगा। प्रातः मं. पूर्व में, गुरु याम्योत्तर वृत्तासन्न और श. पश्चिम कपाल में होंगे।

शुक्र अस्त २२ अक्तू.

दिनमान घ.	प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	प.	योग	समाप्ति-काल घ.	प.	करण	समाप्ति-काल घ.	प.	तारीखें प्र. (सौरमास)	अं. (अंग्रेजी)	श. (शक)	मु. (मुस्लिम)	चन्द्रराशि प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ भा. स्टैं. टा. सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	उदयकालिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
२७	४७	१	मं.	२१	५१	अश्वि.	३	४४	व.	१३	१४	कौ.	२१	५१	६	२२	३०	१५	मेष			६	३३	१७	४०	६	०४	३३	४६	*शुक्र पश्चिम में अस्त २५/०५,*
२७	४३	२	बु.	२७	३७	भर.	१०	४६	सि.	१५	०७	ग.	२७	३७	७	२३	का.१	१६	वृ.	२७	३२	६	३४	१७	३९	६	०५	३३	३२	सूर्य सायन वृश्चिक में ३३/०७, (A)
२७	३८	३	गु.	३२	४५	कृत्ति.	१७	२३	व्य.	१६	३४	व.	०	१६	८	२४	२	१७	वृष			६	३५	१७	३८	६	०६	३३	१७	म. ०/१६ से ३२/४५ तक, सूर्य स्वाती में ६/४१, बुध चित्रा में १२/३०,
२७	३४	४	शु.	३७	००	रोहि.	२३	०६	व.	१७	२४	ब.	४	५२	९	२५	३	१८	मि.	५५	४०	६	३६	१७	३७	६	०७	३३	०४	श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, *करक चतुर्थी व्रत (करवा चौथ)* (B)
२७	३०	५	श.	४०	०४	मृग.	२७	५०	प.	१७	२३	कौ.	८	३२	१०	२६	४	१९	मिथुन			६	३६	१७	३६	६	०८	३२	५४	*राहु रोहि. २, केतु अनु. ४ में २२/४०,*
२७	२५	६	र.	४१	३६	आर्द्रा	३१	०६	शि.	१६	१६	ग.	१०	५२	११	२७	५	२०	मिथुन			६	३७	१७	३५	६	०९	३२	४४	म. ४१/३६ बाद,
२७	२१	७	चं.	४१	३२	पुन.	३२	५२	सि.	१४	०१	वि.	११	४८	१२	२८	६	२१	क.	१७	३५	६	३८	१७	३४	६	१०	३२	३८	म. ११/४८ तक, *बुध तुला में १४/१५,*
२७	१७	८	मं.	३६	३७	पुष्य	३२	४६	सा.	१०	१६	बा.	१०	३५	१३	२९	७	२२	कर्क			६	३९	१७	३३	६	११	३२	३४	*अहोई अष्टमी (पं.),*
२७	१३	९	बु.	३५	५४	आश्ले.	३१	००	शु. शु.	५ ५८	११ ३६	तै.	७	४५	१४	३०	८	२३	सिं.	३१	००	६	३९	१७	३३	६	१२	३२	३३	*बुध पूर्व में अस्त ४०/००,*
२७	०९	१०	गु.	३०	२८	मघा	२७	२८	ब्र.	५०	४७	व.	३	२२	१५	३१	९	२४	सिंह			६	४०	१७	३२	६	१३	३२	३४	म. ३/२२ से ३०/२८ तक,
२७	०४	११	शु.	२३	३५	पू.फा.	२२	२८	ऐं.	४१	४६	बा.	२३	३५	१६	न.१	१०	२५	क.	३६	०२	६	४१	१७	३१	६	१४	३२	३६	बुध स्वाती में १३/५६, रमा एकादशी व्रत(स.), नवम्बर प्रारम्भ, (C)
२७	००	१२	श.	१५	३२	उ.फा.	१६	१६	वै.	३१	५६	तै.	१५	३२	१७	२	११	२६	कन्या			६	४२	१७	३०	६	१५	३२	४२	शनि प्रदोष व्रत, यम को दीपदान, *धन त्रयोदशी,*
२६	५६	१३	र.	६	४२	हस्त	६	२२	वि.	२१	३७	व.	६	४२	१८	३	१२	२७	तु.	३५	४५	६	४३	१७	२९	६	१६	३२	४७	म. ६/४२ से ३२/०८ तक, *नरक चतुर्दशी* (D)
अदम		१४	र.	५७	३१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	*चतुर्दशी तिथिक्षय,*
२६	५२	३०	चं.	४८	२३	चित्रा स्वा.	२ ५४	०४ ५४	प्री.	११	०२	च.	२२	५७	१९	४	१३	२८	तुला			६	४३	१७	२८	६	१७	३२	५६	*यूरेनस मार्गी १३/०५, सोमवती अमा., दीपावली, श्रीमहालक्ष्मी पूजन,* (E)

(A) हेमन्त ऋतु प्रारम्भ, *शक कार्तिक प्रारम्भ,* (B) (*चन्द्रोदय २०घं. १८मि.*), (C) गोवत्स द्वादशी, (D) (आगामी अरुणोदय वाली), श्रीहनुमान् जयन्ती, (E) *श्री महावीर निर्वाण* (जैन),

कार्तिक कृष्ण ८ मंगल, इष्ट ५७/०८,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	३	५	६	३	६	२	१	७
१२	२२	१५	०२	२२	१४	०४	१६	१६
२९	११	१२	५१	१४	५४	५२	२८	२८
४१	१६	५४	३६	४७	४५	५२	३८	३८
५९	८१०	३८	१००	०६	३६	०१	०३	०३
५६	०३	२४	०६	२४	००	५५	११	११
		मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
स्वा. २	आश्ले. २	हस्त २	चित्रा ३	आश्ले. २	स्वा. ३	मृग. ४	रोहि. २	अनु. ४

कुण्डली सूर्योदये

८ के. | ६ मं.
९ | ७ | ५
सू. बु. शु.
१० | चं. ४ गु.
११ | १ | ३ श.
१२ | रा. २
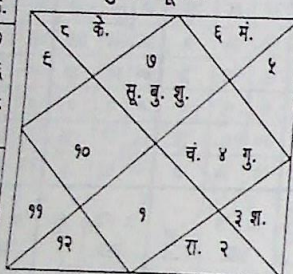
लोक भविष्य:- पक्षारम्भ में ही स्वाती नक्षत्र में वक्री शुक्र अस्त हो रहा है। इटली, रोम, जापानादि में कहीं भूकम्प से जनधन हानि होगी, रुस, भारत में सामान्यतः शान्ति रहे। उ.प्र. आदि कुछ प्रान्तों में वर्षा की भारी कमी रहे। लंका आदि में युद्धभय, बंगाल, राजिस्थान-उड़ीसा में अकाल की स्थिति बने। इस चान्द्रमास में पांच मंगलवार हैं:- "स्तोन पूरिता पृथ्वी छत्रभंगस्तदा भवेत्।" कहीं युद्धाग्नि प्रज्वलित हो एवं कहीं किसी प्रतिष्ठित नेता के निधन से शोक व्याप्त हो।

ग्रहचाल और बाजार का रुख:- २२ अक्तूबर को सोन, चीनी, गुड़, घी, तेल, अलसी, एरण्ड, बिनौला एवं मुंगफली में मन्दा बने, रुई तेज हो। २४ अक्तूबर को रुई, सूत, चीनी, गुड़, शक्कर, बिनौला, राई, हींग, गुग्गल एवं अनाज तेज हों। २८ अक्तूबर को चान्दी एवं तिलहनों में मन्दा बने। ३० अक्तूबर से बाजारों में मन्दा या घटाबढ़ी चले।

आकाश लक्षण:- अक्तूबर २२, २४, २५, २८, ३०, एवं १ से ४ नवम्बर तक पंजाब, हि.प्र., काश्मीर, आसाम, अरुणाचल प्रदेश में रुक-२ कर खण्डवृष्टि के योग हैं। शी― का प्रभाव बढ़ने लगेगा।

शकुन विचार:- कार्तिक में सूर्य के चारों ओर परिवेष दिखाई दे तो अलसी, सरसों, तिल, तेल तेज होंगे। शीघ्र ही स्टॉक करने से निस्संदेह लाभ होगा। दीपावली की शाम को यदि जोरदार वायु चले तो आगामी शीतकालीन फसलें खराब होने से तेजी जोर पकड़ेगी।

कुण्डली सूर्योदये

८ के. | मं. ६
९ | ७ सू. | ५
चं. बु. शु.
१० | ४ गु.
११ | १ | ३ श.
१२ | रा. २

कार्तिक कृष्ण ३० चन्द्र, इष्ट ५६/५८,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	६	५	६	३	६	२	१	७
१८	२०	१६	१२	२२	११	०४	१६	१६
३०	३०	०३	४६	५०	१६	३८	०६	०६
०२	४१	०५	३८	१०	०२	५७	३३	३३
६०	६०८	३८	६६	०५	३४	०२	०३	०३
०६	३५	२४	००	३०	४२	३७	११	११
		मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
स्वा. ४	विशा. १	हस्त ३	स्वा. २	आश्ले. २	स्वा. २	मृग. ४	रोहि. २	अनु. ४
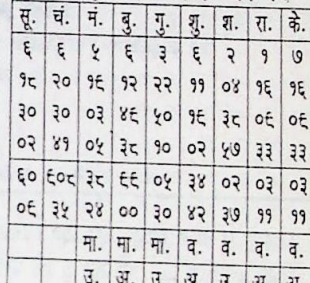
श्री वि. सं. २०५९, शाक १९२४, कार्त्तिक शुक्ल पक्ष १५

(५ से २० नवंबर तक, सन् २००२ ई.)
दक्षिणायन, दक्षिणगोल, हेमन्त ऋतु।

ग्रह दर्शन- शु. ४ नवं. से प्रातः पूर्व में दीखने लगेगा। बु. अदृश्य है। प्रातः मं. पूर्व में, गु. श. पश्चिम कपाल में होंगे।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र.	अं.	श.	मु.	चन्द्रराशि प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ भा. स्टैं. टा. सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	उदयकालिक स्पष्टसूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
२६	४८	१	मं.	३६	४३	वि.	४८	१५	आ. सौ.	० ५०	३६ ४०	किं.	१४	०३	२०	५	१४	२६	वृ.	३४	५०	६	४४	१७	२८	६	१८	३३	०७	शुक्र पूर्व में उदित १२/३०, गोवर्धनपूजा, बलि पूजा, अन्नकूट, (A)
२६	४४	२	बु.	३१	५८	अनु.	४२	३४	शो.	४१	३२	बा.	५	५०	२१	६	१५	३०	वृश्चिक			६	४५	१७	२७	६	१९	३३	२०	चन्द्रदर्शन मु. ३०, सूर्य विशा. में २६/३२, यम द्वितीया (भाई दूज),
२६	४१	३	गु.	२५	३०	ज्ये.	३८	१४	अ.	३३	२६	ग.	२५	३०	२२	७	१६	रम.१	ध.	३८	१४	६	४६	१७	२६	६	२०	३३	३५	भ. ५२/५३ बाद, रमज़ान मु. प्रारम्भ,
२६	३७	४	शु.	२०	४०	मूल	३५	३४	सु.	२६	४७	वि.	२०	४०	२३	८	१७	२	धनु			६	४७	१७	२५	६	२१	३३	५१	भ. २०/४० तक, शुक्र बाल्य समाप्त १२/३०,
२६	३३	५	श.	१७	४०	पू.षा.	३४	४६	धृ.	२१	३५	बा.	१७	४०	२४	९	१८	३	म.	४६	५२	६	४८	१७	२५	६	२२	३४	०८	बुध विशा. में १९/५३,
२६	२६	६	र.	१६	४१	उ.षा.	३५	५५	शू.	१७	५६	तै.	१६	४१	२५	१०	१९	४	मकर			६	४८	१७	२४	६	२३	३४	२७	सूर्य षष्ठी व्रत,
२६	२६	७	च.	१७	४०	श्रव.	३८	५७	गं.	१५	४६	व.	१७	४०	२६	११	२०	५	मकर			६	४९	१७	२३	६	२४	३४	४८	भ. १७/४० से ४८/५२ तक, मंगल चित्रा में ३७/५८, गुरु आश्ले. (B)
२६	२२	८	मं.	२०	२८	धनि.	४३	३६	वृ.	१५	०७	ब.	२०	२८	२७	१२	२१	६	कुं.	११	०५	६	५०	१७	२३	६	२५	३५	०६	पंचक प्रारम्भ ११/०५, गोपाष्टमी,
२६	१८	९	बु.	२४	४६	शत.	४६	४१	ध्रु.	१५	३५	कौ.	२४	४६	२८	१३	२२	७	कुम्भ			६	५१	१७	२२	६	२६	३५	३३	कूष्माण्ड नवमी, अक्षय नवमी,
२६	१५	१०	गु.	३०	१६	पू.भा.	५६	३६	व्या.	१६	५७	ग.	३०	१६	२९	१४	२३	८	मी.	३६	५०	६	५२	१७	२२	६	२७	३५	५७	
२६	११	११	शु.	३६	२६	उ.भा.	६०	००	ह.	१८	५४	व.	३	१६	३०	१५	२४	९	मीन			६	५३	१७	२१	६	२८	३६	२३	भ. ३/१९ से ३६/२६ तक, बुध वृश्चिक में ३३/२६, देवप्रबोधिनी (C)
२६	०८	१२	श.	४२	५६	उ.भा.	४	०३	व.	२१	०७	ब.	६	४३	मा.१	१६	२५	१०	मीन			६	५३	१७	२१	६	२९	३६	५०	सं. सूर्य वृश्चिक में २२/५७, मु. ३०, पुण्यकाल ६/५७ बाद, वक्री शुक्र (D)
२६	०५	१३	र.	४९	१४	रेव.	११	३५	सि.	२३	१६	कौ.	१६	०५	२	१७	२६	११	मे.	११	३५	६	५४	१७	२०	७	००	३७	२१	पंचक समाप्त ११/३५, बुध अनु. में ३६/३७, प्रदोष व्रत, (E)
२६	०१	१४	चं.	५५	०७	अश्वि.	१८	५१	व्य.	२५	१७	ग.	२२	१०	३	१८	२७	१२	मेष			६	५५	१७	२०	७	०१	३७	४६	भ. ५५/७ बाद, वैकुण्ठ चतुर्दशी,
२५	५८	१५	मं.	६०	००	भर.	२५	३६	व.	२६	४६	वि.	२७	४७	४	१९	२८	१३	वृ.	४२	१२	६	५६	१७	१९	७	०२	३८	२१	भ. २७/४७ तक, सूर्य अनु. में ४१/१५, श्रीसत्यनारायण व्रत, (F)
२५	५५	१५	बु.	०	१७	कृत्ति.	३१	३८	प.	२७	४६	ब.	०	१७	५	२०	२९	१४	वृष			६	५७	१७	१९	७	०३	३८	५३	

शुक्र उदित ५ नवंबर

(A) गोक्रीड़ा, विश्वकर्मा पूजा, (B) ३ में १/३३, (C) एकादशी व्रत (स.), भीष्म पंचक प्रारम्भ, (D) चित्रा में १८/४५, तुलसी विवाह, (E) बलिदान दिन लाला लाजपत राय, (F) कार्त्तिकपूर्णिमा, श्री गुरु नानक जयन्ती, कार्त्तिकस्नान समाप्त, चातुर्मास्य व्रत-नियम समाप्त, भीष्मपंचक समाप्त,

कार्त्तिक शुक्ल ८ मंगल, इष्ट ५६/४०,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	१०	५	६	३	६	२	१	७
२६	०६	२४	२५	२३	०७	०४	१५	१५
३२	१८	१०	४६	२८	३४	१५	४४	४४
१०	४२	२२	४३	०६	३८	०२	०७	०७
६०	७३७	३८	८६	०४	२१	०३	०३	०३
२२	२४	२४	१८	१२	१८	१८	११	११
		मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
विशा. २	धनि. १	चित्रा १	विशा. २	आश्ले. ३	स्वा. १	मृग. ४	रो. २	अनु. ४

कुण्डली सूर्योदये

८ के. | ९ मं. | ७ सू. बु. शु. | ६ | ५ | १० चं. | ४ गु. | ११ | १ | ३ श. | १२ | २ रा.

लोक भविष्य:- स्वाती नक्षत्र में शुक्र का उदय नेताओं, महापुरुषों एवं राजनीतिक व्यक्तियों के लिए शुभ नहीं। कुछ नेता निजी समस्याओं में उलझेंगे। कहीं प्राकृतिक-आपदा से हानि होगी। वृष्चिक संक्रान्ति शनिवारी होने से शीतजन्य रोगों से जनता को कष्ट हो। मंगलवारी पूर्णिमा भी जन्ता में मंहगाई एवं अग्निकाण्ड, यान-दुर्घटना आदि से जनधन हानि का संकेत देती है।

ग्रहचाल और बाजार का रुख:- ५ नवम्बर को शुक्रोदय होने पर रुई, सूत, चान्दी, चावल, घी, सोना, तेज हों। जों, चावल, गेहूं, मसूर, गुड़, खाण्ड, तिलहन में भी तेजी रहे, अलसी, चान्दी में घटाबढ़ी चले। १६ नवम्बर को बाजार गडबड़ रहें। १९ नवम्बर को अनाजों एवं धातुओं में तेजी, अलसी लालमिर्च सोना चान्दी मन्दे रहें।

कुण्डली सूर्योदये

९ | ७ शु. | ८ सू. बु. के. | ६ मं. | १० | ११ | ५ | १२ | चं. २ रा. | ४ गु. | १ | ३ श.

कार्त्तिक शुक्ल १५ बुध, इष्ट ५६/२३,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	१	५	७	३	६	२	१	७
०४	१५	२६	०८	२३	०६	०३	१५	१५
३५	०२	१८	२६	५४	०६	४५	१८	१८
४६	२३	०३	४१	४६	४३	४३	४१	८१
६०	७३०	३८	६४	०२	०२	०३	०३	०३
३३	२६	३०	०५	४१	००	५४	११	११
		मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
अनु. १	रो. २	चित्रा २	अनु. २	आश्ले. ३	चित्रा ४	मृग. ४	रो. २	अनु. ४

आकाश लक्षण:- नवम्बर ५, ६, ९, ११, १५, १६, १७, १९, को हि.प्र. जम्मू-काश्मीर व उ. भारत के अन्य पहाड़ी क्षेत्रों में खण्ड वृष्टि के योग हैं।

शकुन विचार:- कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा को सूर्य के चारों तरफ परिवेष (घेरा) दिखाई दे तो तेल के स्टाक से लाभ होगा।

श्री वि. सं. २०५९, शाक १९२४, मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष १६

(२१ नवंबर से ४ दिसम्बर तक, सन् २००२ ई.)
दक्षिणायन, दक्षिणगोल, हेमन्त ऋतु।

दिनमान घ.	प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	प.	योग	समाप्ति-काल घ.	प.	करण	समाप्ति-काल घ.	प.	तारीखें प्र.	अं.	श.	मु.	चन्द्रराशि प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ भा. स्टैं. टा. सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	उदयकालिक स्पष्टसूर्य रा.	अं.	क.	वि.
२५	५२	१	गु.	४	३९	रोहि.	३६	४७	शि.	२८	०३	कौ.	४	३९	६	२१	३०	१५	वृष			६	५८	१७	१९	७	०४	३९	२९
२५	४९	२	शु.	८	०३	मृग.	४०	५८	सि.	२७	३४	ग.	८	०३	७	२२	मा.१	१६	मि.	८	५७	६	५९	१७	१८	७	०५	४०	०५
२५	४६	३	श.	१०	२२	आर्द्रा	४४	०४	सा.	२६	१५	वि.	१०	२२	८	२३	२	१७	मिथुन			६	५९	१७	१८	७	०६	४०	४३
२५	४३	४	र.	११	३१	पुन.	४५	५९	शु.	२४	००	बा.	११	३१	९	२४	३	१८	क.	३०	३७	७	००	१७	१८	७	०७	४१	२२
२५	४०	५	चं.	११	२६	पुष्य	४६	४१	शु.	२०	४८	तै.	११	२६	१०	२५	४	१९	कर्क			७	०१	१७	१७	७	०८	४२	०३
२५	३८	६	मं.	१०	०४	आश्ले.	४६	०६	ब्र.	१६	३४	व.	१०	०४	११	२६	५	२०	सिं.	४६	०६	७	०२	१७	१७	७	०९	४२	४६
२५	३५	७	बु.	७	२२	मघा	४४	१५	ऐं.	११	१८	ब.	७	२२	१२	२७	६	२१	सिंह			७	०३	१७	१७	७	१०	४३	३०
२५	३३	८	गु.	३	२४	पू.फा.	४१	११	वै. वि.	५ ५७	०२ ५१	कौ.	३	२४	१३	२८	७	२२	क.	५५	१५	७	०४	१७	१७	७	११	४४	१६
अवम		९	गु.	५८	१८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२५	३०	१०	शु.	५२	०७	उ.फा.	३७	०३	प्री.	४६	४८	व.	२५	१८	१४	२९	८	२३	कन्या			७	०५	१७	१७	७	१२	४५	०३
२५	२८	११	श.	४५	०७	हस्त	३२	०२	आ.	४१	०५	ब.	१८	३७	१५	३०	९	२४	तु.	५६	२०	७	०५	१७	१६	७	१३	४५	५२
२५	२५	१२	र.	३७	३४	चित्रा	२६	२४	सौ.	३१	५३	कौ.	११	२०	१६	दि.१	१०	२५	तुला			७	०६	१७	१६	७	१४	४६	४३
२५	२३	१३	चं.	२९	४६	स्वाती	२०	२८	शो.	२२	२७	ग.	३	४०	१७	२	११	२६	तुला			७	०७	१७	१६	७	१५	४७	३४
२५	२१	१४	मं.	२२	०४	वि.	१४	३३	अ.	१३	०४	श.	२२	०४	१८	३	१२	२७	वृ.	१	००	७	०८	१७	१६	७	१६	४८	२७
२५	१९	३०	बु.	१४	४६	अनु.	६	०२	सु. धृ.	४ ५५	०० ३३	ना.	१४	४६	१९	४	१३	२८	वृश्चिक			७	०९	१७	१६	७	१७	४९	२२

ग्रह दर्शन- बु. अदृश्य है। प्रातः शु. मं. पूर्व में और गु. श. पश्चिम कपाल में होंगे।

शुक्र मार्गी १४/२३,
म. ३९/२२ बाद, *मंगल तुला में १/४०,* सूर्य सायन धनु में (A)
म. १०/२२ तक, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत,

म. १०/०४ से ३८/५४ तक, बुध ज्येष्ठा में १०/२६, शुक्र स्वाती में १५/५३,
वक्री शनि मृग. ३ में ७/००, कालाष्टमी (श्री भैरवाष्टमी),

नवमी तिथिक्षय,
म. २५/१८ से ५२/०७ तक,
उत्पन्ना एकादशी व्रत (स.),
दिसम्बर प्रारम्भ,
म. २९/४६ से ५५/५४ तक, सूर्य ज्येष्ठा में ५१/३६, मंगल स्वाती (B)
बुध मूल धनु में ४७/४२, गुरु वक्री २६/५०, प्लूटो ज्येष्ठा ३ में १/०७,

(A) २९/०६, शक मार्गशीर्ष प्रारम्भ, (B) में २४/२१, सोम प्रदोष व्रत,

मार्ग. कृष्ण ८ गुरु,इष्ट ५६/०५,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	५	६	७	३	६	२	१	७
१२	००	०४	२०	२४	०७	०३	१४	१४
४१	१२	२६	५६	०६	१८	१२	५३	५३
०७	००	०८	५८	४२	४६	००	१४	१४
६०	८४६	३८	६२	०१	१६	०४	०३	०३
४५	२७	३६	५४	१२	२४	२४	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
अनु. ३	उ.फा. २	चित्रा ४	ज्ये. २	आश्ले. ३	स्वा. १	मृग. ३	रोहि. २	अनु. ४

कुण्डली सूर्योदये

९
म. ७ शु.
१०
सू. बु.
के. ८
६
५
चं.
११
रा.
२
१२
४ गु.
१
श. ३

लोक भविष्यः- मंगल का तुला राशि में संक्रमण मार्गशीर्ष में किसी नेता व बड़े व्यक्ति की मृत्यु का संकेत देता है। चोरी, ठगी आदि अनैतिक-कार्यो की वृद्धि हो। किसी प्रान्त में अराजकता एवं शस्त्र भण्डारण की प्रवृत्ति बढ़े। इसमास में पांच गुरुवार है; पश्चिमी यावन देशों के कारण पडौसी देशों की स्थिति अशान्त हो। मुस्लिम देशों में आन्तरिक स्थिति विस्फोटक हो।

" विग्रहः पश्चिमे देशे खड्गयुद्धं च जायते।"

ग्रहचाल और बाजार का रुखः- २१ नवं. से चांदी मन्दी हों, रुई, सोना, कपास, मूंगफली, गुड़, खाण्ड, गेहूं एवं दालवाना में तेजी रहे। २७ नवं. को रुई, सोना, चान्दी में घटाबढ़ी, अनाजों में मन्दा बने। २ दिसं. को अनाज, गुड़, खाण्ड में तेजी, चांदी-रुई में घटाबढ़ी रहे। पक्षान्त में ४ दिसम्बर को रुई, कपास, सूत, चान्दी एवं अनाजों में कुछ तेजी रहे।

अकाश लक्षणः- नवम्बर २१, २२, २६, २७, एवं दिसम्बर २, ४ को हि.प्र., जम्मू काश्मीर एवं पंजाब के उत्तरीक्षेत्र में तेज हवाओं के साथ वर्षा के योग हैं। उ.भारत में शीतलहर अनुभव होगी।

शकुन विचारः- यदि मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष चतुर्दशी किंवा अमावस के दिन बादल हों तो अनाजों में शीघ्र तेजी आती है।

कुण्डली सूर्योदये

बु. ९
म. ७ शु.
१०
सू. चं.
८ के.
६
११
५
१२
रा. २
४
गु.
१
३ श.

मार्ग. कृष्ण ३० बुध, इष्ट ५५/५३,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	७	६	८	३	६	२	१	७
१८	२७	०८	००	२४	०६	०२	१४	१४
४६	५८	१७	१२	१२	३८	४४	३४	३४
१०	५६	३१	३३	४१	०१	२३	१०	१०
६०	८७०	३८	६२	००	२७	०४	०३	०३
५४	५६	३६	१८	०६	४२	४२	११	११
		मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
ज्ये. १	ज्ये. ४	स्वा. १	मूल १	आश्ले. ३	स्वा. १	मृग. ३	रोहि. २	अनु. ४

श्री वि. सं. २०५९, शाक १९२४, मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष १७

(५ से १९ दिसम्बर तक, सन् २००२ ई.)
दक्षिणायन, दक्षिणगोल, हेमन्त ऋतु।

दिनमान घ.	प.	तिथि	वार	समाप्तिकाल घ.	प.	नक्षत्र	समाप्तिकाल घ.	प.	योग	समाप्तिकाल घ.	प.	करण	समाप्तिकाल घ.	प.	तारीखें प्र.	अं.	श.	मु.	चन्द्रराशि प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ भा. स्टैं. टा. सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	उदयकालिक स्पष्टसूर्य रा.	अं.	क.	वि.	ग्रह दर्शन - बु. ६ दिसं. से सायं पश्चिम में दीखने लगेगा। प्रातः शु. मं. पूर्व में और गु. श. पश्चिम में दीखेंगे। ११ दिसं. के लगभग शु. मं. परस्पर काफी आसन्न होंगे।
२५	१७	१	गु.	८	२४	ज्ये.	४	१७	शू.	४७	५८	ब.	८	२४	२०	५	१४	२६	ध.	४	१७	७	६	१७	१६	७	१८	५०	१८	
२५	१६	२	शु.	३	०६	मूल पू.षा.	० ५८	४१ ३४	गं.	४१	३०	कौ.	३	०६	२१	६	१५	श.१	धनु			७	१०	१७	१६	७	१९	५१	१५	चन्द्रदर्शन मु. ३०, *शव्वाल मु. प्रा.,*
अवम		३	शु.	५६	२६	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	*तृतीया तिथिक्षय,*
२५	१४	४	श.	५७	२५	उ.षा.	५८	०८	वृ.	३६	२३	व.	२८	११	२२	७	१६	२	म.	१३	१५	७	११	१७	१७	७	२०	५२	१४	भ. २८/११ से ५७/२५ तक,
२५	१२	५	र.	५७	२०	श्रव.	५६	३४	ध्रु.	३२	४३	ब.	२७	२२	२३	८	१७	३	मकर			७	१२	१७	१७	७	२१	५३	१२	शहीदी दिन श्री गुरु तेगबहादुर जी,
२५	११	६	चं.	५६	११	धनि.	६०	००	व्या.	३०	३२	कौ.	२८	१५	२४	६	१८	४	कुं.	३०	५७	७	१२	१७	१७	७	२२	५४	११	पंचक प्रारम्भ ३०/५७, *बुध पश्चिम में उदय* १२/५५, (A)
२५	१०	७	मं.	६०	००	धनि.	२	४६	ह.	२६	४८	ग.	३०	५६	२५	१०	१६	५	कुम्भ			७	१३	१७	१७	७	२३	५५	११	मित्र सप्तमी,
२५	०८	७	बु.	२	४७	शत.	७	४८	व.	३०	१८	व.	२	४७	२६	११	२०	६	मी.	५७	२७	७	१४	१७	१७	७	२४	५६	११	भ. २/४७ से ३५/१२ तक,
२५	०७	८	गु.	७	५३	पू.भा.	१४	०८	सि.	३१	४६	ब.	७	५३	२७	१२	२१	७	मीन			७	१५	१७	१७	७	२५	५७	१३	
२५	०६	९	शु.	१३	५६	उ.भा.	२१	२२	व्य.	३३	४६	कौ.	१३	५६	२८	१३	२२	८	मीन			७	१५	१७	१८	७	२६	५८	४६	बुध पू.षा. में ३३/१७,
२५	०५	१०	श.	२०	३१	रेव.	२८	५७	व.	३६	०३	ग.	२०	३१	२९	१४	२३	९	मे.	२८	५७	७	१६	१७	१८	७	२७	५९	१८	भ. ५३/४७ बाद, पंचक समाप्त २८/५७,
२५	०४	११	र.	२६	५६	अश्वि.	३६	२२	प.	३८	०७	वि.	२६	५६	पौ.१	१५	२४	१०	मेष			७	१७	१७	१८	७	२८	००	२१	भ. २६/५६ तक, सं. सूर्य मूल धनु में ५८/३८, मु. १५, (B)
२५	०४	१२	चं.	३२	४३	भर.	४३	०७	शि.	३६	४०	बा.	३२	४३	२	१६	२५	११	वृ.	५६	४०	७	१७	१७	१९	८	००	०१	२३	
२५	०३	१३	मं.	३७	३१	कृत्ति.	४८	५४	सि.	४०	२७	कौ.	५	०७	३	१७	२६	१२	वृष			७	१८	१७	१९	८	०१	०२	२७	*भौम प्रदोष व्रत,*
२५	०३	१४	बु.	४१	०६	रोहि.	५३	३०	सा.	४०	१६	ग.	६	१६	४	१८	२७	१३	वृष			७	१८	१७	१९	८	०२	०३	३१	भ. ४१/०६ बाद,
२५	०२	१५	गु.	४३	२३	मृग.	५६	५१	शु.	३६	११	वि.	१२	२४	५	१९	२८	१४	मि.	२५	२०	७	१९	१७	२०	८	०३	०४	३५	भ. १२/२४ तक, श्रीसत्यनारायण व्रत, *श्रीदत्त जयन्ती,*

(A) चम्पा षष्ठी , गुह षष्ठी, (B) पुण्यकाल अगले दिन मध्याह्न तक, मोक्षदा एकादशी व्रत (स.), श्री गीता जयन्ती,

मार्ग. शुक्ल ८गुरु, इष्ट ५५/३८,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	११	६	८	३	६	२	१	७
२६	११	१३	१२	२४	१४	०२	१४	१४
५३	३४	२६	२३	०५	१३	०५	०८	०८
५०	३२	१२	३८	२८	५४	४०	४४	४४
६१	७१६	३८	६०	०१	३६	०४	०३	०३
००	०५	३६	१२	३६	१२	५४	११	११
		मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
४	३	३	४	३	३	३	२	४

कुण्डली सूर्योदये

लोक भविष्य:- पक्ष मध्य में मूल नक्षत्रस्थ बुध का उदय कहीं वायुवेग, बाढ़, शीतलहर से जनधनहानि का संकेत देता है:- "नोत्पात पत्यित्तोश्चन्द्रजो व्रजत्युदयम्।" कहीं भूकम्प व अन्यविध प्राकृतिक प्रकोप से हानि हो। इस पक्ष में तिथिक्षय किसी नेता की मृत्यु व परिरिक्त होने का संकेत भी देता है। प्रजा में नानाविध रोगों से भी परेशानी हो।

ग्रहचाल और बाजार का रुख:- ६ दिसम्बर से शेयर बाजार में मन्दा, रुई वस्त्र सूत में तेजी बने। १३ दिसम्बर को बिनौला में तेजी अनाजों में मन्दे का वातावरण रहे और सोना-चान्दी में विशेष मन्दे का झटका आने की संभावना है। [illegible] दिसम्बर के लगभग रुई, कपास, सूत, सोना, चान्दी अलसी में तेजी के [illegible] हो।

कुण्डली सूर्योदये

१० | ८ के. | ११ | सू. बु. | मं. | ६ | शु.७ | १२ | ६ | १ | श. ३ | ५ | च.२ रा. | गु. ४

आकाश लक्षण:- ६ दिसम्बर के लगभग उ.भारत में हवा का जोर रहे, हि.प्र. एवं काश्मीर के उन्नत श्रृंगों पर हिमपात हो,६, १३, १५, दिसम्बर को पश्चिमोत्तर भारत में कहीं तीव्र हवाओं के साथ वर्षा व औलावृष्टि भी हो। *शकुन विचार:-* यदि इस पक्ष में धनिष्ठा नक्षत्र के समय (६, १० दिसं. को) बादल गरजे तो जन्ता में संक्रमक रोगों से हानि हों। यदि इस पक्ष में इन्द्रधनुष दीखे तो आगे अच्छी वर्षा हो, बाजार मन्दे हों।

मार्ग. शुक्ल १५ गुरु, इष्ट ५५/२८,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	२	६	८	३	६	२	१	७
०४	०६	१७	२२	२३	१९	०१	१३	१३
०१	२२	५६	३१	४९	२०	३१	४६	४६
०३	२२	२६	४३	०३	२६	०३	२८	२८
६१	७५७	३८	८३	०२	४६	०५	०३	०३
०४	३६	४२	०६	५४	५४	००	११	११
		मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
२	४	४	३	३	४	३	२	४

श्री वि. सं. २०५९, शाक १९२४, पौष कृष्ण पक्ष १८

(२० दिसं. सन् २००२ ई. से २ जन. सन् २००३ ई. तक)
दक्षिण-उत्तरायण, दक्षिणगोल, हेमन्त-शिशिर ऋतु।

ग्रह दर्शन- सायं बु. पश्चिम में और श. पूर्व में होगा। प्रातः शु. मं. पूर्व में और गु. पश्चिम में दीखेगा।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	नक्षत्र	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	योग	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	करण	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.
२५	०२	१	शु.	४४	२२	आर्द्रा	५८	५६	शु.	३७	०४	बा.	१३	५२
२५	०२	२	श.	४४	०७	पुन.	५९	५३	ब्र.	३४	००	तै.	१४	१५
२५	०२	३	र.	४२	४७	पुष्य	५९	४८	ऐं.	३०	०४	व.	१३	३४
२५	०२	४	चं.	४०	२८	आश्ले.	५८	४६	वै.	२५	२२	ब.	११	३८
२५	०२	५	मं.	३७	२०	मघा	५७	०३	वि.	१९	५८	कौ.	८	५४
२५	०२	६	बु.	३३	२९	पू.फा.	५४	३८	प्री.	१३	५९	ग.	५	२५
२५	०३	७	गु.	२९	०२	उ.फा.	५१	३८	आ.	७	२९	वि.	१	१९
२५	०३	८	शु.	२४	०४	हस्त	४८	११	सौ. शो.	० ५३	३३ १६	कौ.	२४	०४
२५	०४	९	श.	१८	४१	चित्रा	४४	२२	अ.	४५	४१	ग.	१८	४१
२५	०५	१०	र.	१२	५९	स्वा.	४०	१९	सु.	३७	५४	वि.	१२	५६
२५	०६	११	चं.	७	०९	वि.	३६	११	धृ.	३०	०३	बा.	७	०९
२५	०७	१२	मं.	१	१८	अनु.	३२	१०	शू.	२२	१७	तै.	१	१८
अवम		१३	मं.	५५	४२	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२५	०८	१४	बु.	५०	३४	ज्ये.	२८	३१	गं.	१४	४६	वि.	२३	०३
२५	०९	३०	गु.	४६	११	मूल	२५	२९	वृ.	७	४२	च.	१८	२२

तिथि	तारीखें प्र.	अं.	श.	मु.	चन्द्रराशि प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ भा. स्टैं. टा. सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	उदयकालिक स्पष्टसूर्य रा.	अं.	क.	वि.
१	६	२०	२६	१५	मिथुन			७	२०	१७	२०	८	०४	०५	४०
२	७	२१	३०	१६	क.	४४	४५	७	२०	१७	२१	८	०५	०६	४५
३	८	२२	पौ.१	१७	कर्क			७	२१	१७	२१	८	०६	०७	५१
४	९	२३	२	१८	सिं.	५८	४६	७	२१	१७	२२	८	०७	०८	५६
५	१०	२४	३	१९	सिंह			७	२१	१७	२२	८	०८	१०	०४
६	११	२५	४	२०	सिंह			७	२२	१७	२३	८	०९	११	११
७	१२	२६	५	२१	क.	८	५५	७	२२	१७	२३	८	१०	१२	२०
८	१३	२७	६	२२	कन्या			७	२३	१७	२४	८	११	१३	२८
९	१४	२८	७	२३	तु.	१६	१७	७	२३	१७	२५	८	१२	१४	३८
१०	१५	२९	८	२४	तुला			७	२३	१७	२५	८	१३	१५	४७
११	१६	३०	९	२५	वृ.	२२	१२	७	२४	१७	२६	८	१४	१६	५८
१२	१७	३१	१०	२६	वृश्चिक			७	२४	१७	२७	८	१५	१८	०९
१३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१४	१८	ज. १	११	२७	ध.	२८	३१	७	२४	१७	२७	८	१६	१९	२१
३०	१९	२	१२	२८	धनु			७	२५	१७	२८	८	१७	२०	३३

शुक्र विशा. में ४५/०१,
सूर्य सायन मकर में ५८/३३, उत्तरायण, शिशिर ऋतु प्रारम्भ,
भ. १३/३४ से ४२/४७ तक, शक पौष प्रारम्भ,
मंगल विशा. में ७/११, बुध उ.षा. में ५/०२, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत,
भ. ३३/२९ बाद, *बुध मकर में ५८/५५,*
भ. १/१९ तक,
वक्री गुरु आश्ले. २ में ४०/४४,
भ.४५/५२ बाद, *राहु रोहि. १, केतु अनु. ३ में १४/४५,*
भ. १२/५९ तक, सूर्य पू.षा. में ४/०४,
सफला एकादशी व्रत (स.),
भ.५५/४२ बाद, भौम प्रदोष व्रत, *सन् २००२ ई. पूर्ण,*
त्रयोदशी तिथिक्षय,
भ. २३/०३ तक, *शुक्र वृश्चिक में ९/२८, जनवरी (सन् २००३ ई.) प्रारम्भ,*
बुध वक्री ४१/००,

पौष कृष्ण ८ शुक्र , इष्ट ५५/१८,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	५	०६	०९	३	६	२	१	७
१२	२५	२३	०१	२३	२६	००	१३	१३
०९	०१	०५	५१	१८	०६	५१	२१	२१
५३	०३	४०	१६	५६	२२	५६	०२	०२
६१	८४६	३८	५४	०४	५३	०४	०३	०३
०९	१२	४२	४७	२४	२४	५४	११	११
		मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
मूल ४	चित्रा १	विशा. १	उ.षा. २	आश्ले. २	विशा. २	मृग. ३	रोहि. २	अनु. ४

कुण्डली सूर्योदये

लोक भविष्य:- इस पक्ष में शनि-सूर्य का समसप्तक, राहु-मंगल का षडष्टक योग जनता एवं राजनीतिज्ञों को विषम - समस्याओं में उलझाएगा। कहीं यान दुर्घटना में जनधन हानि हो, कहीं अग्निकाण्ड भुकम्प से विनाश व प्राकृतिक अन्य आपदा से कष्ट बने। पक्षारम्भ में शुक्र का अजवीयि में प्रवेश भारत के व्यापारिक-वर्ग के लिए सुखकर वातावरण बनाएगा।

ग्रहचाल और बाजार का रुख:- पक्षारम्भ मे रुई एवं अनाजों में मन्दा रहें। २५ दिसम्बर के लगभग रुई, सोना, चान्दी में तेजी बने। २७ दिसम्बर के लगभग घी, तेल एवं प्रत्येक व्यापारिक-वस्तुओं में तेजी का वातावरण बने। २९ दिसम्बर से पक्षान्त तक तेल, तिलहन, खल, बिनौला गुड़, खाण्ड एवं अनाजों में तेजी, शेयर मन्दे रहें।

कुण्डली सूर्योदये

बु. १० | शु. ८ के. | ११ | सू. चं. ९ | मं. ७ | १२ | ६ | १ | श. ३ | ५ | रा. २ | गु. ४

पौष कृष्ण ३० गुरु, इष्ट ५५/१३,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	८	६	९	३	७	२	१	७
१८	२०	२६	०४	२२	०१	००	१३	१३
१६	१२	५७	३३	४९	४०	२३	०१	०१
५४	५०	४५	४३	०१	१६	४९	५७	५७
६१	८३६	३८	०२	०५	५७	०४	०३	०३
११	१६	४२	५३	२४	०६	३६	११	११
		मा.	व.	व	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पू.षा. २	पू.षा. ३	विशा. ३	उ.षा. ३	आश्ले. २	विशा. ४	मृग. ३	रोहि. १	अनु. ३

आकाश लक्षण:- दिसंबर २०, २३, २५, २७, २९, एवं १ जनवरी (सन् २००३ ई.) को पंजाब, हरियाणा, हि.प्र., जम्मू काश्मीर में वायुवेग के साथ वर्षा के योग हैं। उ. भारत में अनेकत्र धुन्द रहेगी, हि.प्र. में भारी हिमपात के समाचार मिलैगे। शीतलहर जोरों पर रहें।

शकुन विचार:- यदि पौष कृष्ण पंचमी को वर्षा हो तो आगे अच्छी वर्षा होती है। यदि इस पक्ष में अष्टमी के दिन बादलचाल एवं वर्षा हो तो आगे फरवरी में अनाज तेज हो।

श्री वि. सं. २०५९, शाक १९२४, पौष शुक्ल पक्ष १६

(३ से १८ जनवरी तक, सन् २००३ ई.)
उत्तरायण, दक्षिणगोल, शिशिर ऋतु।

ग्रह दर्शन- बु. ७ जन. को पश्चिम में लुप्त होकर १६ जन. से प्रातः पूर्व में दिखाई देने लगेगा। प्रातः शु. मं. पूर्व में और गु. पश्चिम में दीखेगा। श. सायं पूर्व में होगा।

दिनमान घ.	प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	प.	योग	समाप्ति-काल घ.	प.	करण	समाप्ति-काल घ.	प.	तारीखें प्र.	अं.	श.	मु.	चन्द्रराशि प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ भा. स्टैं. टा. सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	उदयकालिक स्पष्टसूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
२५	१०	१	शु.	४२	५०	पू.षा.	२३	२२	ध्रु. व्या.	१ ५५	१८ ४६	किं.	१४	३०	२०	३	१३	२६	म.	३८	००	७	२५	१७	२६	८	१८	२१	४५	
२५	१२	२	श.	४०	४६	उ.षा.	२२	२८	ह.	५१	२४	बा.	११	५०	२१	४	१४	३०	मकर			७	२५	१७	३०	८	१९	२२	५७	चन्द्रदर्शन मु. ३०, शुक्र अनु. में ३८/३८,
२५	१३	३	र.	४०	२२	श्रव.	२३	०२	व.	४८	१३	तै.	१०	३५	२२	५	१५	जि.१	कुं.	५३	५५	७	२५	१७	३०	८	२०	२४	०८	पंचक प्रारम्भ ५३/५५, *ज़िल्काद मु. प्रारम्भ,*
२५	१५	४	चं.	४१	३९	धनि.	२५	१३	सि.	४६	२३	व.	१०	४७	२३	६	१६	२	कुम्भ			७	२५	१७	३१	८	२१	२५	१९	भ.१० /४७ से ४१/३९ तक,
२५	१७	५	मं.	४४	४०	शत.	२६	०५	व्य.	४५	५२	ब.	१३	१०	२४	७	१७	३	कुम्भ			७	२५	१७	३२	८	२२	२६	२९	*मंगल वृश्चिक में ३७/५३, बुध पश्चिम में अस्त ३१/२०,*
२५	१८	६	बु.	४६	१६	पू.भा.	३४	३२	व.	४६	३२	कौ.	१६	५८	२५	८	१८	४	मी.	१८	०२	७	२५	१७	३३	८	२३	२७	३९	*वक्री शनि मृग. २ वृष में १६/०७,*
२५	२०	७	गु.	५५	०६	उ.भा.	४१	१४	प.	४८	०८	ग.	२२	११	२६	९	१९	५	मीन			७	२५	१७	३४	८	२४	२८	४८	भ. ५५ /०६ बाद, *वक्री बुध उ.षा. १ धनु में* ३८/१८, (A)
२५	२२	८	शु.	६०	००	रेव.	४८	४२	शि.	५०	१७	वि.	२८	१८	२७	१०	२०	६	मे.	४८	४२	७	२५	१७	३४	८	२५	२९	५७	भ. २८ /१८ तक, पंचक समाप्त ४८/४२,
२५	२४	८	श.	१	३७	अश्वि.	५६	२०	सि.	५२	३४	ब.	१	३७	२८	११	२१	७	मेष			७	२५	१७	३५	८	२६	३१	०६	सूर्य उ.षा. में ८/४३,
२५	२७	९	र.	८	१२	भर.	६०	००	सा.	५४	३१	कौ.	८	१२	२९	१२	२२	८	मेष			७	२५	१७	३६	८	२७	३२	१४	मंगल अनु. में ४८/०९, बुध पू.षा. में १३/१७,
२५	२९	१०	चं.	१४	११	भर.	३	३२	शु.	५५	४५	ग.	१४	११	३०	१३	२३	९	वृ.	२०	१२	७	२५	१७	३७	८	२८	३३	२१	भ. ४६/४७ बाद, लोहडी (पं.-हरि.-हि.प्र.),
२५	३१	११	मं.	१९	०२	कृत्ति.	६	४३	शु.	५५	५५	वि.	१९	०२	मा.१	१४	२४	१०	वृष			७	२५	१७	३८	८	२९	३४	२८	भ. १९/०२ तक, *सं. सूर्य मकर में* २५/०५, मु. ४५, पुण्यकाल (B)
२५	३४	१२	बु.	२२	२१	रोहि.	१४	३०	ब्र.	५४	५१	बा.	२२	२१	२	१५	२५	११	मि.	४६	१७	७	२५	१७	३९	९	००	३५	३३	प्रदोष व्रत,
२५	३७	१३	गु.	२३	५८	मृग.	१७	४०	ऐं.	५२	२७	तै.	२३	५८	३	१६	२६	१२	मिथुन			७	२५	१७	४०	९	०१	३६	४०	*बुध पूर्व में उदय १६/४३,*
२५	३९	१४	शु.	२३	५३	आर्द्रा	१९	११	वै.	४८	४७	व.	२३	५३	४	१७	२७	१३	मिथुन			७	२५	१७	४०	९	०२	३७	४५	भ. २३/५३ से ५३/१४ तक, शुक्र ज्येष्ठा में ४४/५३, (C)
२५	४२	१५	श.	२२	१३	पुन.	१९	०९	वि.	४३	५८	ब.	२२	१३	५	१८	२८	१४	क.	४	१७	७	२४	१७	४१	९	०३	३८	५०	पौषी पूर्णिमा, *माघ स्नान प्रारम्भ,*

(A) *अवतार दिन श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी,* (B) ९/०५ बाद, पुत्रदा एकादशी व्रत (स.), (C) श्रीसत्यनारायण व्रत,

पौष शुक्ल ८ शुक्र, इष्ट ५५/१३,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	०	७	८	३	७	१	१	७
२६	०१	०२	२८	२२	०९	२९	१२	१२
२६	१६	०७	२३	००	३४	४८	३६	३६
१३	४७	१४	२७	४२	३९	४८	३१	३१
६१	७१०	३८	७६	०६	६०	०४	०३	०३
०९	४१	४२	३०	३०	५४	१२	११	११
		मा.	व.	व.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
४ पू.षा.	१ अश्वि.	४ विशा.	१ उ.षा.	२ आश्ले.	२ अनु.	२ मृग.	१ रोहि.	३ अनु.

कुण्डली सूर्योदये

१० मं. शु. के. ८
११ सू. बु. ९ ७
चं. १२ ६
१ ३ ५
श.२ रा. गु. ४

लोक भविष्य:- बु. गु. श. वक्री हैं। मंगल वृश्चिक राशि में आकर भारत को आर्थिक विकास की तरफ प्रेरित करें; गांवों में कहीं रोग से परेशानी, नेताओं में संगठन की भावना प्रबल हो, विदेशों से व्यापारिक सम्बन्ध बनें। शनि-मंगल का समसप्तक है। यूरोप एवं मुस्लिम देशों में कहीं अकस्मात् विशेष घटना को जन्म देगा। कहीं आन्तरिक क्रान्ति, कहीं देश का विभाजन, कहीं किसी नेता की मृत्यु व अपदस्थ होने का योग बनें।

ग्रहचाल और बाजार का रुख :- २ जनवरी को घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर तेज हों। ४ जन. से गुड़, खाण्ड, चावल, नमक, पाट, हैसियन एवं शेयरों में मन्दा हो। १४ जनवरी को घी, तेल, अलसी, गुड़, शक्कर, खाण्ड, रुई तेज हों। १६ से १८ जनवरी घी, तिल, लालमिर्च, अनाज तेज हों। १२ जन. को अनाज, सोना-चान्दी मन्दे, लाल रंग की चीजे तेज हो।

कुण्डली सूर्योदये

११ बु. ९
१२ सू. १० मं ८ शु.के.
१ ७
श. २ रा. ४ गु. ६
३ चं. ५

पौष शुक्ल १५ शनि, इष्ट ५५/१५,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	३	७	८	३	७	१	१	७
०४	११	०७	१९	२१	१७	२९	१२	१२
३५	३०	१६	३५	०४	५४	१८	११	११
०१	१४	३७	५७	३५	३२	०५	०५	०५
६१	८११	३८	४१	०७	६३	०३	०३	०३
०४	३६	४२	१८	२४	३६	३६	११	११
		मा.	व.	व.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
३ उ.षा.	३ पुष्य	२ अनु.	२ पू.षा.	२ आश्ले.	१ ज्ये.	२ मृग.	१ रोहि.	३ अनु.

आकाश लक्षण:- जन. २, ४, ७, ८, १०, १२, १४, १६ को हि.प्र., जम्मू काश्मीर, पंजाब, उ.प्र., बिहार में तेज-ठण्डी हवाओं के साथ वर्षा हो, कहीं ओलावृष्टि व शीतलहर से जनजीवन प्रभावित हो। *शकुन विचार:-* यदि पौष शुक्ल पूर्णिमा को बिजली चमके या आकाश मेघाछन्न रहे तो फसल अच्छी हो। पौष शुक्ल पंचमी को यदि वर्षा हो तो आगे वर्षा अच्छी होती है।

श्री वि. सं. २०५९, शाक १९२४, माघ कृष्ण पक्ष २०

(१९ जनवरी से १ फरवरी तक, सन् २००३ ई.)
उत्तरायण, दक्षिणगोल, शिशिर ऋतु।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र.	अं.	श.	मु.
२५	४५	१	र.	१६	१३	पु.	१७	४६	प्री.	३८	११	कौ.	१६	१३	६	१९	२९	१५
२५	४८	२	चं.	१५	११	आश्ले.	१५	२७	आ.	३१	३६	ग.	१५	११	७	२०	३०	१६
२५	५१	३	मं.	१०	२५	मघा	१२	२२	सौ.	२४	३७	वि.	१०	२५	८	२१	मा.१	१७
२५	५४	४	बु.	५	१३	पू.फा.	८	५२	शो.	१७	१७	बा.	५	१३	९	२२	२	१८
अवम		५	बु.	५६	४८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२५	५७	६	गु.	५४	२६	उ.फा.	५	११	अ.	६	५०	ग.	२७	०७	१०	२३	३	१९
२६	००	७	शु.	४६	१३	हस्त चित्रा	१ ५८	३२ ०३	सु. धृ.	२ ५५	२५ ०६	वि.	२१	४८	११	२४	४	२०
२६	०३	८	श.	४४	१६	स्वा.	५४	५२	शू.	४८	०७	बा.	१६	४५	१२	२५	५	२१
२६	०७	९	र.	३६	३८	वि.	५२	००	गं.	४१	२०	तै.	११	५७	१३	२६	६	२२
२६	१०	१०	चं.	३५	२३	अनु.	४६	३०	वृ.	३४	५१	व.	७	२८	१४	२७	७	२३
२६	१४	११	मं.	३१	३२	ज्ये.	४७	२७	ध्रु.	२८	४३	ब.	३	२७	१५	२८	८	२४
२६	१७	१२	बु.	२८	१२	मूल	४५	५३	व्या.	२२	५७	तै.	२८	१२	१६	२९	९	२५
२६	२१	१३	गु.	२५	२८	पू.षा.	४४	५६	ह.	१७	४०	व.	२५	२८	१७	३०	१०	२६
२६	२४	१४	शु.	२३	३०	उ.षा.	४४	५३	व.	१२	५८	श.	२३	३०	१८	३१	११	२७
२६	२८	३०	श.	२२	३०	श्रव.	४५	४८	सि.	६	००	ना.	२२	३०	१९	फ.१	१२	२८

ग्रह दर्शन-प्रातः मं. बु. शु. पूर्व में और गु. पश्चिम में दीखेगा। श. सायं पूर्व में होगा।

तिथि	चन्द्रराशि प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ भा. स्टैं. टा. सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	उदयकालिक स्पष्टसूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
१	कर्क			७	२४	१७	४२	९	०४	३९	५३	
२	सिं.	१५	२७	७	२४	१७	४३	९	०५	४०	५६	भ. ४२/५३ बाद,यूरेनस धनि.४ में ४२/२७, *सूर्य सायन कुम्भ में २४/५६,*
३	सिंह			७	२४	१७	४४	९	०६	४१	५८	भ. १०/२५ तक, *श्री गणेश (संकष्ट चतुर्थी), चतुर्थी व्रत,* (A)
४	क.	२२	५७	७	२३	१७	४५	९	०७	४२	५६	*बुध मार्गी ५८/०८,*
५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	*पंचमी तिथिक्षय,*
६	कन्या			७	२३	१७	४६	९	०८	४४	००	भ. ५४/२६ बाद,
७	तु.	२६	४५	७	२३	१७	४७	९	०९	४५	०१	भ. २१/४८ तक, सूर्य श्रवण में १४/४७,
८	तुला			७	२२	१७	४८	९	१०	४६	०१	
९	वृ.	३७	४०	७	२२	१७	४८	९	११	४६	५६	*भारत गणतन्त्र दिवस,*
१०	वृश्चिक			७	२१	१७	४९	९	१२	४७	५८	भ. ७/२८ से ३५/२३ तक, *वक्री गुरु आश्ले. १ में २०/०४,*
११	ध.	४७	२७	७	२१	१७	५०	९	१३	४८	५६	नेपच्यून श्रव. ३ में १४/३२, षट्तिला एकादशी व्रत (स.),
१२	धनु			७	२०	१७	५१	९	१४	४९	५४	प्रदोष व्रत,
१३	म.	५६	५२	७	२०	१७	५२	९	१५	५०	५२	भ. २५/२८ से ५४/२१ तक, *शुक्र मूल धनु में १/४५,*
१४	मकर			७	१९	१७	५३	९	१६	५१	४६	
३०	मकर			७	१९	१७	५४	९	१७	५२	४४	*शनैश्चरी अमा, मौनी अमावस, फरवरी प्रारम्भ,* (B)

(A) *(चन्द्रोदय २०घं. ५३ मि.), शक माघ प्रारम्भ,* (B) *महोदय योग (१० घं. ५४ मि. से १६ घं. १८ मि. तक),*

माघ कृष्ण ८ शनि, इष्ट ५५/२०,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	६	७	८	३	७	१	१	७
११	२०	११	१८	२०	२५	२८	११	११
४२	०६	४७	५६	११	२८	५५	४८	४८
१४	३०	१८	५६	०४	१३	२८	४६	४६
६१	८४५	३८	१८	०७	६५	०२	०३	०३
००	१६	४२	१२	४८	३६	५४	११	११
		मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
श्रव. १	विशा. १	अनु. ३	पू.षा. २	आश्ले. २	ज्ये. ३	मृ. २	रोहि. १	अनु. ३

कुण्डली सूर्योदये

११ | ९ बु. | १२ | सू. १० | मं. ८ शु. के. | १ | ७ चं. | श. २ रा. | गु. ४ | ६ | ३ | ५

लोक भविष्य-शनिवारी माघीअमा एवं शनि-राहु का वृषस्थ होकर मंगल के साथ पूर्ण प्रतियोग मुस्लिम-राष्ट्रों में भयावह स्थिति को जन्म देगा। कहीं आन्तरिक क्रान्ति बमविस्फोट, सीमाप्रान्तों पर स्थित-देश के साथ युद्धमय वातावरण बनने से शान्तिप्रिय देश चिन्तित हों, किसी विशिष्ट हुक्मरान के जीवन को खतरा पैदा हो। कहीं सत्ता हस्तान्तरण का योग बने।

ग्रहचाल और बाजार का रुख:- २२ जनवरी को घी, गुड़, खाण्ड, शेयर, अनाज, सोना, चान्दी में तेजी, ३० जनवरी को रुई, सूत, कपास, पहले मन्दी होकर बाद में तेजी बनेगी। इस पक्ष में अनाज, अलसी में अच्छी तेजी संभव है।

कुण्डली सूर्योदये

११ | बु. शु. ९ | सू. चं. १० | मं. के. ८ | १२ | १ | ७ | श. रा. २ | गु. ४ | ६ | ३ | ५

माघ कृष्ण ३० शनि, इष्ट ५५/२८,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	९	७	८	३	८	१	१	७
१८	२५	१६	२३	१९	०३	२८	११	११
४६	२५	१७	३५	१५	१३	३७	२६	२६
०१	४५	५३	२६	२७	४२	२१	३४	३४
६०	७८५	३८	५२	०८	६७	०२	०३	०३
५६	५३	३६	४२	००	०६	१८	११	११
		मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
श्रव. ३	धनि. १	अनु. ४	पू.षा. ४	आश्ले. १	मूल १	मृ. २	रोहि. १	अनु. ३

आकाश लक्षण:- जनवरी २०, २२, २४, ३०, को लंका का पूर्वी छोर, शिलांग, हि.प्र., पंजाब, उ.प्र. में कहीं खण्डवर्षा व ठण्ड का प्रभाव रहेगा।

शकुन विचार :- माघ कृष्ण तृतीया को यदि मेघ गरजें, लेकिन वर्षा न हो तो गेहूँ और जौ के स्टॉक से आगे लाभ हों।

श्री वि. सं. २०५९, शाक १९२४, माघ शुक्ल पक्ष २१

(२ से १६ फरवरी तक, सन् २००३ ई.) उत्तरायण, दक्षिणगोल, शिशिर ऋतु।

ग्रह दर्शन- प्रातः मं. बु. शु. पूर्व में होंगे। सायं श. और गु. पूर्वकपाल में परस्पर ऊपर नीचे दीखेंगे।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	नक्षत्र	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	योग	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	करण	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	तारीखें प्र. माघ	अं. फरवरी	श. माघ	मु. ज़िल्हिज	चन्द्रराशि प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ भा. स्टैं. टा. सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	उदयकालिक स्पष्टसूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
२६	३२	१	र.	२२	४०	धनि.	४७	५५	व्य.	५	५४	ब.	२२	४०	२०	२	१३	२९	कुं.	१६	४२	७	१८	१७	५५	९	१८	५३	३८	चन्द्रदर्शन मु. ३०, पंचक प्रारम्भ १६/४२, मंगल ज्येष्ठा में २९/५५,
२६	३६	२	चं.	२४	१०	शत.	५१	२३	व.	३	४९	कौ.	२४	१०	२१	३	१४	जि.१	कुम्भ			७	१७	१७	५६	९	१९	५४	२९	*जिल्हिज मु. प्रारम्भ,*
२६	४०	३	मं.	२७	०९	पू.भा.	५६	१६	प.	२	४९	ग.	२७	०९	२२	४	१५	२	मी.	३९	५५	७	१७	१७	५६	९	२०	५५	२१	भ. ५९/०९ बाद, *गौरी तृतीया (गौतरी,)*
२६	४३	४	बु.	३१	३२	उ.भा.	६०	००	शि.	२	५५	वि.	३१	३२	२३	५	१६	३	मीन			७	१६	१७	५७	९	२१	५६	११	भ. ३१/३२ तक, बुध उ.षा. में २/४८, *वरद-तिल-कुन्द चतुर्थी,*
२६	४७	५	गु.	३७	१०	उ.भा.	२	२८	सि.	४	०३	ब.	४	२१	२४	६	१७	४	मीन			७	१५	१७	५८	९	२२	५६	५९	सूर्य धनिष्ठा में २२/४५, *वसन्त पञ्चमी, श्री पञ्चमी,*
२६	५१	६	शु.	४३	३८	रेव.	६	३९	सा.	५	५७	कौ.	१०	२४	२५	७	१८	५	मे.	६	३९	७	१५	१७	५९	९	२३	५७	४७	पंचक समाप्त ६/३९,
२६	५५	७	श.	५०	२३	अश्वि.	१७	२४	शु.	८	२०	ग.	१७	००	२६	८	१९	६	मेष			७	१४	१८	००	९	२४	५८	३२	भ. ५०/२३ बाद, *बुध मकर में २/३०, रथ सप्तमी,* (A)
२७	००	८	र.	५६	४५	भर.	२५	०५	शु.	१०	४४	वि.	२३	४०	२७	९	२०	७	वृ.	४१	५५	७	१३	१८	०१	९	२५	५९	१६	भ. २३/४० तक, *भीष्माष्टमी,*
२७	०४	९	चं.	६०	००	कृत्ति.	३२	०५	ब्र.	१२	४३	बा.	२९	२५	२८	१०	२१	८	वृष			७	१२	१८	०२	९	२६	५९	५८	शुक्र पू.षा. में ५१/३०,
२७	०८	९	मं.	२	०५	रोहि.	३७	४७	ऐं.	१३	४७	कौ.	२	०५	२९	११	२२	९	वृष			७	११	१८	०२	९	२८	००	३९	
२७	१२	१०	बु.	५	४८	मृग.	४१	४६	वै.	१३	३७	ग.	५	४८	फा.१	१२	२३	१०	मि.	१०	००	७	११	१८	०३	९	२९	०१	१८	भ. ३६/५६ बाद, *सं. सूर्य कुम्भ में* ५८/०६, मु. १५, पुण्यकाल (B)
२७	१६	११	गु.	७	३४	आर्द्रा	४३	४७	वि.	११	५७	वि.	७	३५	२	१३	२४	११	मिथुन			७	१०	१८	०४	१०	००	०१	५५	भ. ७/३४ तक, जया एकादशी व्रत(स.), *भीष्म द्वादशी,*
२७	२०	१२	शु.	७	१८	पुन.	४३	५०	प्री.	८	४२	बा.	७	१८	३	१४	२५	१२	क.	२९	००	७	०९	१८	०५	१०	०१	०२	३०	प्रदोष व्रत,
२७	२५	१३	श.	५	०२	पुष्य	४२	०५	आयु. / सौ.	३ / ५७	५५ / ४३	तै.	५	०२	४	१५	२६	१३	कर्क			७	०८	१८	०६	१०	०२	०३	०४	बुध श्रव. में ५३/२४,
२७	२९	१४	र.	१	०२	आश्ले.	३८	५०	शो.	५०	२५	व.	१	०२	५	१६	२७	१४	सिं.	३८	५०	७	०७	१८	०७	१०	०३	०३	३८	भ. १/०२ से २८/२८ तक, श्रीसत्यनारायण व्रत, *माघी पूर्णिमा,* (C)
अवम		१५	र.	५५	३५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	*पूर्णिमा तिथिक्षय,*

(A) (पहिले अरुणोदय वाली), आरोग्य सप्तमी, (B) अगले दिन मध्याह्न तक, (C) *माघस्नान समाप्त,* जन्मदिन *श्रीगुरु रविदास जी,*

माघ शुक्ल ८ रवि, इष्ट ५५/४३,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	१	७	९	३	८	१	१	७
२६	०२	२१	०२	१८	१२	२८	११	११
५५	४४	२६	१५	११	१६	२२	०१	०१
३८	१८	३३	२३	४९	२३	५०	०८	०८
६०	७१२	३८	७२	०७	६८	०१	०३	०३
४४	१५	२९	३६	४९	२४	३०	११	११
		मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
२ धनि.	२ कृत्ति.	२ ज्ये.	२ उ.षा.	१ आश्ले.	४ मूल	२ मृग.	१ रोहि.	३ अनु.

कुण्डली सूर्योदये

११ | ९ शु. | १२ | सू. बु. १० | मं. ८ के. | १ चं. | ७ | श. २ रा. | ४ गु. | ६ | ३ | ५

लोक भविष्यः- माघ शुक्ल प्रतिपदा को रविवार कहीं युद्ध का वातावरण बनाता है। कहीं रोगभय बने। शनि-राहु का मंगल के साथ समसप्तक योग, ब्रिटेन-आयरलैण्ड, पाकिस्तान पख्तून-सिन्ध, अफगानिस्तान आदि में वातावरण अशान्त करे। लेकिन उच्चस्थ गुरु होने से कुछ बड़े राष्ट्र-स्थिति पर नज़र रखेंगे। भारत की प्रतिष्ठा उत्तरोत्तर बढ़ेगी।

ग्रहचाल और बाजार का रुखः- पक्षारम्भ में चान्दी मन्दी, रुई में घटावढ़ी, अफीम में तेजी रहे। ६ फर के लगभग सोना, चांदी, जवाहरात, मूंग, मसूर, गेहूं आदि अनाज, अलसी व रुई में तेजी रहे। १० फर. से दालों में मन्दा, घी, तेल, नमक, सरसों एवं मूंगफली में तेजी रहे।

आकाश लक्षणः- फरवरी २, ५, ६, ८, १०, १२, १५, को भारत के उ. पश्चिमी भागों में तेज हवाएं चलें, मौसम में परिवर्तन अनुभव होगा।

शकुन विचार :- यदि माघ की पूर्णमासी के दिन बादल हों तो अन्न के संग्रह से सातवें मास अच्छा लाभ रहे। यदि इस दिन आकाश साफ रहे एवं मेघ किंवा किसी प्रकार का गर्द गुबार न हो तो आगे आषाढ़ में प्रत्येक प्रकार का अनाज सस्ता रहेगा, वर्षा खूब होगी।

कुण्डली सूर्योदये

१२ | बु. १० | १ | सू. ११ | शु. ९ | श. रा. २ | मं. के. ८ | ३ | ५ | ७ | गु. ४ चं. | ६

माघ शुक्ल १४ रवि, इष्ट ५५/५८,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	४	७	९	३	८	१	१	७
०४	०४	२५	११	१७	२०	२८	१०	१०
००	०५	५६	२६	१८	१८	१५	३८	३८
०६	००	१४	१०	३०	४६	५५	५२	५२
६०	८५१	३८	८२	०७	६९	००	०३	०३
३२	३४	२९	४२	२५	१८	४२	११	११
		मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
४ धनि.	२ मघा	३ ज्ये.	१ श्रव.	१ आश्ले.	३ पू.षा.	२ मृग.	१ रोहि.	३ अनु.

श्री वि. सं. २०५९, शाक १९२४, फाल्गुन कृष्ण पक्ष २२

(१७ फरवरी से ३ मार्च तक, सन् २००३ ई.)
उत्तरायण, दक्षिणगोल, शिशिर-वसन्त ऋतु।

ग्रह दर्शन- बु. २६ फर. को पूर्व में लुप्त हो जाएगा। प्रातः मं. शु. पूर्व कपाल में परस्पर ऊपर-नीचे पर्याप्त अन्तर पर होंगे।

दिनमान घ.	प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	प.	योग	समाप्ति-काल घ.	प.	करण	समाप्ति-काल घ.	प.	तारीखें प्र.	अं.	श.	मु.	चन्द्रराशि प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ भा. स्टैं. टा. सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	उदयकालिक स्पष्टसूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
२७	३३	१	चं.	४६	११	मघा	३४	२८	अ.	४२	१६	बा.	२२	२३	६	१७	२८	१५	सिंह			७	०६	१८	०७	१०	०४	०४	०७	
२७	३८	२	मं.	४२	१०	पू.फा.	२९	२३	सु.	३३	३५	तै.	१५	४०	७	१८	२९	१६	क.	४३	०२	७	०५	१८	०८	१०	०५	०४	३७	
२७	४२	३	बु.	३४	५८	उ.फा.	२४	०२	धृ.	२४	४२	व.	८	३६	८	१९	३०	१७	कन्या			७	०४	१८	०९	१०	०६	०५	०५	भ. ८/३६ से ३४/५८ तक, सूर्य शत. में ३४/३६, *सूर्य सायन* (A)
२७	४७	४	गु.	२७	५५	हस्त	१८	४५	शू.	१५	५४	ब.	१	०६	९	२०	फा.१	१८	तु.	४६	१५	७	०३	१८	१०	१०	०७	०५	३२	*श्रीगणेश चतुर्थी व्रत* (दिखें पृ. १३२), शक फाल्गुन प्रारम्भ,
२७	५१	५	शु.	२१	२०	चित्रा	१३	५३	गं. वृ.	७ ५९	२५ २५	तै.	२१	२०	१०	२१	२	१९	तुला			७	०२	१८	११	१०	०८	०५	५७	
२७	५६	६	श.	१५	२६	स्वा.	९	४०	ध्रु.	५२	०६	व.	१५	२६	११	२२	३	२०	वृ.	५२	०२	७	०१	१८	११	१०	०९	०६	२१	भ. १५/२६ से ४२/४६ तक, *वक्री गुरु पुष्य ४ में* २०/५७, (B)
२८	००	७	र.	१०	२२	वि.	६	१७	व्या.	४५	३१	ब.	१०	२२	१२	२३	४	२१	वृश्चिक			७	००	१८	१२	१०	१०	०६	४४	*मंगल मूल धनु में* १६/३३,
२८	०५	८	चं.	६	१४	अनु.	३	४८	ह.	३९	४१	कौ.	६	१४	१३	२४	५	२२	वृश्चिक			६	५९	१८	१३	१०	११	०७	०६	
२८	०९	९	मं.	३	०२	ज्ये.	२	१५	व.	३४	३६	ग.	३	०२	१४	२५	६	२३	ध.	२	१५	६	५८	१८	१४	१०	१२	०७	२६	भ. ३१/४५ बाद, बुध धनि. में ३/५१, *शुक्र मकर में* १६/०३,
२८	१४	१०	बु.	०	४५	मूल	१	३६	सि.	३०	१३	वि.	०	४५	१५	२६	७	२४	धनु			६	५७	१८	१४	१०	१३	०७	४५	भ. ०/४५ तक, *बुध पूर्व में अस्त* ३६/५३, विजया एकादशी व्रत (स्मा.),
अवम		११	बु.	५९	१९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	*एकादशी तिथिक्षय,*
२८	१८	१२	गु.	५८	४६	पू.षा	१	५०	व्य.	२६	३३	कौ.	२६	०४	१६	२७	८	२५	म.	१७	००	६	५६	१८	१५	१०	१४	०८	०२	विजया एकादशी व्रत (वै.),
२८	२३	१३	शु.	५९	१३	उ.षा.	२	५५	व.	२३	३४	ग.	२९	०१	१७	२८	९	२६	मकर			६	५५	१८	१६	१०	१५	०८	१९	भ. ५९/१३ बाद, प्रदोष व्रत, *श्री१००८ बाल शंकराचार्य (कांचीमठ) जयन्ती,*
२८	२७	१४	श.	६०	००	श्रव.	४	५४	प.	२१	१९	वि.	२९	४८	१८	मा.१	१०	२७	कुं.	३६	१२	६	५४	१८	१७	१०	१६	०८	३२	भ. २९/४८ तक, पंचक प्रारम्भ ३६/१२, बुध कुम्भ में १८/२७, (C)
२८	३२	१४	र.	०	३८	धनि.	७	४९	शि.	१९	४९	श.	०	३८	१९	२	११	२८	कुम्भ			६	५३	१८	१७	१०	१७	०८	४५	
२८	३७	३०	चं.	३	०४	शत.	११	४५	सि.	१९	१०	ना.	३	०४	२०	३	१२	२९	कुम्भ			६	५१	१८	१८	१०	१८	०८	५५	*सोमवती अमा,*

(A) *मीन में १/०८, वसन्त ऋतु प्रारम्भ,* (B) शुक्र उ.षा. में २४/४२, *शनि मार्गी १५/२५,* (C) राहु कृत्ति. ४, केतु अनु. २ में १०/०१, *श्रीमहाशिवरात्रि व्रत, (शिवयोग), मार्च प्रारम्भ,*

फाल्गु. कृष्ण ८ चन्द्र, इष्ट ५६/१८,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	७	८	९	३	८	१	१	७
१२	२८	०१	२३	१६	२९	२८	१०	१०
०३	३९	०३	०८	२२	३६	१४	१३	१३
४५	२६	४६	२८	३५	५७	४२	२६	२६
६०	८२३	३८	६१	०६	७०	००	०३	०३
२३	२३	२४	३०	३६	०६	१२	११	११
		मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
शत. २	ज्ये. ४	मूल १	श्रव. ४	पुष्य ४	उ.षा. १	मृग. २	रोहि. १	अनु. ३

कुण्डली सूर्योदये

१२ | १० बु. | १ | सू. ११ | मं. ९ शु. | २ श. रा. | के. ८ चं. | ३ | ५ | ७ | गु. ४ | ६
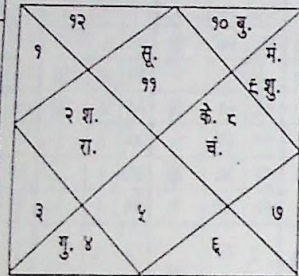
लोक भविष्य:- इस चान्द्र मास में पाच सोमवार हैं:- प्रजा में सुभिक्ष एवं धन-धान्य समृद्धि के सूचक हैं। लेकिन इसमास में पांच मंगलवार भी हैं एवं शनि-मंगल का षडष्टक योग भी बन गया है :- सीमाप्रान्तों पर कहीं सैन्यसंघर्ष से हानि एवं कहीं शासक व विशिष्ट व्यक्ति के निधन से शोक व्याप्त हो। "रक्तेन पूरिता पृथ्वी छत्रभंगस्तदा भवेत्।।" मुस्लिम-राष्ट्रों व यूरोपीय राष्ट्रों पर यह प्रभाव अधिक होगा।

ग्रहचाल और बाजार का रुख :- १९ फरवरी को कर्याणा में तेजी रहे। २२ फरवरी को गुड़, खाण्ड, सोना, चांदी एवं तिलहन मन्दे हों , रुई में घटाबढ़ी के साथ तेजी। २३ फरवरी को चावल, चना, जौं, मूंग, चांदी, सोना, शेयर, अनाज तेज रहें। २६ फरवरी को बाजार अस्थिर रहें। १ मार्च को घी, तेल, गुड़, खाण्ड तेज रहें।

कुण्डली सूर्योदये

१२ | शु. १० | १ | सू. चं. ११ बु. | मं. ९ | श. रा. २ | के. ८ | ३ | ५ | ७ | गु. ४ | ६

फाल्गु. कृष्ण ३० चन्द्र, इष्ट ५६/३८,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	१०	८	१०	३	९	१	१	७
१९	२९	०५	०४	१५	०७	२८	०९	०९
०५	१३	३२	१७	४०	५०	१९	५१	५१
४१	४६	१२	४५	०४	१४	३५	११	११
६०	७४२	३८	९८	०५	७०	०१	०३	०३
१२	१५	१२	४२	३६	४२	००	११	११
		मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
शत. ४	पू.भा. ३	मूल २	धनि. ४	पुष्य ४	उ.षा. ४	मृग. २	कृत्ति. ४	अनु. २

आकाश लक्षण :- फरवरी १९, २१, से २३ एवं फरवरी २५, २६; मार्च १ को लंका के पूर्वी भाग, शिलांग, हि.प्र. आदि में कहीं खण्डवृष्टि व बूंदाबादी के योग हैं।

शकुन विचार :- यदि फाल्गुन में बादल हों परन्तु वर्षा न हो तो आगे वर्षाऋतु में अच्छी वर्षा हो।

श्री वि. सं. २०५९, शाक १९२४, फाल्गुन शुक्ल पक्ष २३

(४ से १८ मार्च तक, सन् २००३ ई.)
उत्तरायण, दक्षिणगोल, वसन्त ऋतु।

ग्रह दर्शन- बु. अदृश्य है। प्रातः पूर्व कपाल में शु. से काफी ऊपर मं. होगा। सायं श. याम्योत्तर वृत्तासन्न और गु. पूर्व कपाल में दिखाई देगा।

दिनमान घ.	प.	तिथि	वार	समाप्तिकाल घ.	प.	नक्षत्र	समाप्तिकाल घ.	प.	योग	समाप्तिकाल घ.	प.	करण	समाप्तिकाल घ.	प.	तारीखें प्र.	अं.	श.	मु.	चन्द्रराशि प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ भा. स्टैं. टा. सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	उदयकालिक स्पष्टसूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
२८	४१	१	मं.	६	३६	पू.भा.	१६	४६	सा.	१६	२१	ब.	६	३६	२१	४	१३	३०	मी.	०	२५	६	५०	१८	१९	१०	१९	०६	०५	चन्द्रदर्शन मु. ४५, सूर्य पू.भा. में ५०/५३,
२८	४६	२	बु.	११	१५	उ.भा.	२२	५०	शु.	२०	२३	कौ.	११	१५	२२	५	१४	मु.१	मीन			६	४९	१८	२०	१०	२०	०६	११	*बुध शत. में* २२/०१, शुक्र श्रव. में ४६/४४, *मुहर्रम मु.* (A)
२८	५१	३	गु.	१६	५५	रेव.	२८	५१	शु.	२२	१०	ग.	१६	५५	२३	६	१५	२	मे.	२८	५१	६	४८	१८	२०	१०	२१	०६	१६	भ. ५०/०२ बाद, पंचक समाप्त २८/५१,
२८	५५	४	शु.	२३	२२	अश्वि.	३७	३३	ब्र.	२४	३१	वि.	२३	२२	२४	७	१६	३	मेष			६	४७	१८	२१	१०	२२	०६	१९	भ. २३/२२ तक,
२९	००	५	श.	३०	११	भर.	४५	३०	ऐं.	२७	०८	बा.	३०	११	२५	८	१७	४	मेष			६	४६	१८	२२	१०	२३	०६	२०	
२९	०४	६	र.	३६	५०	कृत्ति.	५३	०९	वै.	२८	३९	कौ.	३	३०	२६	९	१८	५	वृ.	२	३०	६	४५	१८	२२	१०	२४	०६	१७	
२९	०९	७	चं.	४२	४०	रोहि.	५९	५५	वि.	३१	३८	ग.	६	४५	२७	१०	१९	६	वृष			६	४३	१८	२३	१०	२५	०६	१३	भ. ४२/४० बाद,
२९	१४	८	मं.	४७	०७	मृग.	६०	००	प्री.	३२	३९	वि.	१५	०८	२८	११	२०	७	मि.	३२	४७	६	४२	१८	२४	१०	२६	०६	०८	भ. १५/०८ तक, *होलाष्टक प्रारम्भ,*
२९	१९	९	बु.	४९	४३	मृग.	५	१५	आयु.	३२	२०	बा.	१८	२५	२९	१२	२१	८	मिथुन			६	४१	१८	२४	१०	२७	०९	००	बुध पू.भा. में ५९/४७,
२९	२३	१०	गु.	५०	०९	आर्द्रा	८	४०	सौ.	३०	२५	तै.	१९	५६	३०	१३	२२	९	क.	५४	४१	६	४०	१८	२५	१०	२८	०८	४९	
२९	२८	११	शु.	४८	२३	पुन.	९	५८	शो.	२६	४७	व.	१९	३४	चै.१	१४	२३	१०	कर्क			६	३९	१८	२६	१०	२९	०८	३७	भ. १९/३४ से ४८/२३ तक, *सं. सूर्य मीन में* ५१/३६, मु. ३०, (B)
२९	३३	१२	श.	४४	३३	पुष्य	९	०८	अ.	२१	२७	ब.	१६	२८	२	१५	२४	११	कर्क			६	३७	१८	२६	११	००	०८	२२	*गोविन्द द्वादशी,*
२९	३७	१३	र.	३८	५५	आश्ले.	६	२०	सु.	१४	३५	कौ.	११	४४	३	१६	२५	१२	सिं.	६	२०	६	३६	१८	२७	११	०१	०८	०३	मंगल पू.षा में १३/३७ , प्रदोष व्रत,
२९	४२	१४	चं.	३१	५१	मघा पू.फा.	१ ५६	५४ ११	धृ. शू.	६ ५७	२५ १३	ग.	५	२३	४	१७	२६	१३	सिंह			६	३५	१८	२८	११	०२	०७	४४	भ. ३१/५१ से ५७/५३ तक, शुक्र धनि. में १/४८, श्रीसत्यनारायण (C)
२९	४७	१५	मं.	२३	४७	उ.फा.	४९	४४	गं.	४७	२५	ब.	२३	४७	५	१८	२७	१४	क.	६	४०	६	३४	१८	२८	११	०३	०७	२४	सूर्य उ.भा. में १२/४३, *बुध मीन में* २०/२३, *होली, होलाष्टक समाप्त,*

होलाष्टक
११ से १८ मार्च तक

(A) *(हिज़री सन् १४२४) प्रारम्भ,* (B) पुण्यकाल अगले दिन मध्याह्न तक, आमलकी एकादशी व्रत (स.), (C) *व्रत, होलिका दहन* (१९ घं. १९ मि. से २१ घं. ४५ मि. तक,) (देखें - पृष्ठ १३२),

फाल्गु. शुक्ल ८ मंगल, इष्ट ५७/००,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	२	८	१०	३	९	१	१	७
२७	०४	१०	१८	१५	१७	२८	०६	०६
०६	५८	३७	०६	००	१८	३१	२५	२५
०१	०८	३५	२६	२१	००	५१	४४	४४
५९	७३४	३८	१०७	०४	७१	०१	०३	०३
५५	०२	०६	३०	२४	११	५३	११	११
		मा.	मा	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुण्डली सूर्योदये

१२ / १० शु. / १ / बु. सू. ११ / ९ मं. / श. रा. चं. २ / के. ८ / ३ / ५ / ७ / गु. ४ / ६

लोक भविष्य:- मंगलवारी प्रतिपदा एवं मंगलवारी पूर्णिमा है; मंगल के साथ शनि-राहु का षड़ष्टक चल रहा है। कहीं अग्निकाण्ड से हानि, कहीं नानाविध रोगों से जनता परेशान हो। कहीं बम विस्फोट एवं सीमाप्रान्तों पर सैन्यसंघर्ष का वातावरण व यान दुर्घटना से जनधनहानि के भी योग हैं।

ग्रहचाल और बाजार का रुख:- ४ से १३ मार्च तक बाजारों में कुछ मन्दा रहे, १४ मार्च से तेल, तिलहन, चीनी, गुड़, खाण्ड, रुई सोना तेज, अनाजों में तेजी के बाद मन्दी बनें। १७ मार्च तक बाजार मन्दे रहें। १८ मार्च को अनाज, दालवाना, रुई, गुड़, खाण्ड, बिनौला में तेजी के चांस बने।

कुण्डली सूर्योदये

१ / ११ / २ श. रा. / बु. सू. १२ / १० शु. / ३ / ९ मं. / ४ गु. / ६ / ८ के. / ५ चं. / ७

फाल्गु. शुक्ल १५ मंगल, इष्ट ५७/२०,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	५	८	११	३	९	१	१	७
०४	११	१५	०१	१४	२५	२८	०६	०६
०४	५४	०३	११	३४	३७	४८	०३	०३
२६	३३	२८	१९	३२	४१	१४	२९	२९
५९	८९८	३७	११५	०३	७१	०२	०३	०३
४०	०१	५४	३६	१२	३५	३५	११	११
		मा.	मा	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

आकाश लक्षण:- मार्च ४, ५, ६ एवं १२ से १८ मार्च तक कहीं बादलचाल व खण्डवृष्टि हो। उ.भारत में मौसम गर्मी की तरफ बढ़ने लगेगा।

शकुन विचार :- यदि फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा के दिन वर्षा हो, तो फसल को रोली (काल अंगारी) रोग से हानि होती है। ऐसी स्थिति में अन्नसंग्रह से सातवें मास लाभ मिलता है।

श्री वि. सं. २०५९, शाक १९२४, चैत्र कृष्ण पक्ष २४

(१६ मार्च से १ अप्रैल तक, सन् २००३ ई)
उत्तरायण, दक्षिण-उत्तरगोल, वसन्त ऋतु।

ग्रह दर्शन-बु. ३१ मार्च से सायं पश्चिम में दीखने लगेगा। प्रतः शु. पूर्व कपाल में और मं. याम्योत्तर वृत्तासन्न होगा। सायं श. याम्योत्तर वृत्त से कुछ पश्चिम की ओर एवं गु. पूर्वकपाल में दिखाई देगा।

दिनमान घ.	प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	प.	योग	समाप्ति-काल घ.	प.	करण	समाप्ति-काल घ.	प.	तारीखें प्र.	अं.	श.	मु.	चन्द्रराशि प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ भा. स्टैं. टा. सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	उदयकालिक स्पष्टसूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
२९	५१	१	बु.	१५	११	हस्त	४२	५७	वृ.	३७	२१	कौ.	१५	११	६	१९	२८	१५	कन्या			६	३२	१८	२९	११	०४	०७	००	वसन्तोत्सव, *होला मेला श्री आनन्दपुर साहिब,*
२९	५६	२	गु.	६	२९	चित्रा	३६	१८	ध्रु.	२७	२१	ग.	६	२९	७	२०	२९	१६	तु.	९	३७	६	३१	१८	३०	११	०५	०६	३५	म. ३२/११ से ५८/०२ तक, बुध उ.भा. में ३/४०,
अवम		३	गु.	५८	०२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	*तृतीया तिथिक्षय,*
३०	०१	४	शु.	५०	१८	स्वा.	३०	११	व्या.	१७	४५	ब.	२४	१०	८	२१	३०	१७	तुला			६	३०	१८	३०	११	०६	०६	०८	यूरेनस शत. १ में २२/०४, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, *सूर्य सायन* (A)
३०	०५	५	श.	४३	३४	वि.	२४	५६	ह.	८	४८	कौ.	१६	५६	९	२२	चै.१	१८	वृ.	११	०७	६	२९	१८	३१	११	०७	०५	३७	*शुक्र कुम्भ में ३७/२२, शक चैत्र (शक संवत् १९२५) प्रारम्भ,*
३०	१०	६	र.	३८	०२	अनु.	२०	४६	व. सि.	० ५३	४४ ३८	ग.	१०	४८	१०	२३	२	१९	वृश्चिक			६	२७	१८	३२	११	०८	०५	०७	म. ३८/२ बाद, *प्लूटो वक्री* १०/३५,
३०	१५	७	चं.	३३	५२	ज्ये.	१८	०२	व्य.	४७	४४	वि.	५	४८	११	२४	३	२०	ध.	१८	०२	६	२६	१८	३२	११	०९	०४	३५	म. ५/४८ तक,
३०	२०	८	मं.	३१	०७	मूल	१६	३८	व.	४२	५७	बा.	२	३०	१२	२५	४	२१	धनु			६	२५	१८	३३	११	१०	०४	०२	
३०	२४	९	बु.	२९	४७	पू.षा.	१६	३९	प.	३९	१७	तै.	०	२७	१३	२६	५	२२	म.	३१	५०	६	२४	१८	३३	११	११	०३	२९	म. ५९/३६ बाद, बुध रेवती में ४३/३६,
३०	२९	१०	गु.	२९	४७	उ.षा.	१७	५८	शि.	३६	४०	वि.	२९	४७	१४	२७	६	२३	मकर			६	२३	१८	३४	११	१२	०२	४८	म. २९/४७ तक, *मेला श्री शीतला माता* कुराली(पं.),
३०	३४	११	शु.	३१	०१	श्रव.	२०	३२	सि.	३५	००	ब.	०	२४	१५	२८	७	२४	कुं.	५२	१२	६	२१	१८	३५	११	१३	०२	०६	पंचक प्रारम्भ ५२/१२ शुक्र शत. में ११/४७, पापमोचनी एकादशी व्रत(स.),
३०	३८	१२	श.	३३	२३	धनि.	२४	१२	सा.	३४	१२	कौ.	२	१२	१६	२९	८	२५	कुम्भ			६	२०	१८	३५	११	१४	०१	२८	
३०	४३	१३	र.	३६	४८	शत.	२८	५३	शु.	३४	१२	ग.	५	०५	१७	३०	९	२६	कुम्भ			६	१९	१८	३६	११	१५	००	४४	म. ३६/४८ बाद, प्रदोष व्रत, *वारुणी पर्व (१७ घं. ५२मि. तक),*
३०	४८	१४	चं.	४१	०९	पू.भा.	३४	२९	शु.	३४	५६	वि.	८	५३	१८	३१	१०	२७	मी.	१८	००	६	१८	१८	३७	११	१५	५९	५९	म. ०८/५३ तक, सूर्य रेवती में ४०/३०, बुध पश्चिम में उदय (B)
३०	५२	३०	मं.	४६	२१	उ.भा.	४०	५५	ब्र.	३६	१९	च.	१३	४५	१९	अप्रै.१	११	२८	मीन			६	१६	१८	३७	११	१६	५९	१३	भौमवती अमा, अप्रैल प्रारम्भ, *चान्द्र संवत्सर २०५९ वि. पूर्ण,*

(A) *मेष में* ०/०२, उत्तरगोल प्रारम्भ, (B) ११/०८, *मेला पिहोवा तीर्थ (हरि.)*

चैत्र कृष्ण ८ मंगल, इष्ट ५७/४३,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	८	८	११	३	१०	१	१	७
११	२२	१६	१५	१४	०३	२९	०८	०८
०१	२९	२७	०६	१७	५९	०९	४१	४१
१५	५६	५७	५५	४३	३४	३७	१३	१३
५९	८०६	३७	१२१	०१	७१	०३	०३	०३
२८	३४	४२	३६	५४	४७	१७	११	११
		मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
उ.भा. ३	पू.षा. ३	पू.षा. २	उ.भा. ४	पुष्य ४	धनि. ४	मृग. २	कृति. ४	अनु. २

कुण्डली सूर्योदये

१ — ११ शु. — २ श. रा. — बु. १२ सू. — १० — मं. चं. ९ — ३ — ४ गु. — ६ — ८ के. — ५ — ७
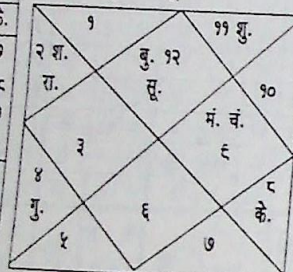
लोक भविष्य:- इस चान्द्रमास में पांच बुधवार हैं, बुध पर बृहस्पति की दृष्टि भी है। " बुधस्य पंचवाराश्चेज्जायन्ते च निरन्तरम्। प्रजानां सुखमत्यन्तं सुभिक्षं च प्रजायते।। " जनता में सुख समृद्धि रहे, सर्वत्र सुभिक्ष रहे। लेकिन शनि की दृष्टि एवं शनि-मं. के षडष्टकयोग से दक्षिणी-पश्चिमी देशों में वातावरण अशान्त रहे एवं शासकों को कठिन परिस्थिति का सामना करना पड़े। *ग्रहचाल और बाजार का रुख:-* २० मार्च को चान्दी में घटाबढ़ी; अनाजों में मन्दा रहे। २६ मार्च को केसर, मजीठ, कुसुम्भ, लालचन्दन, गेरु, लालमिर्च में तेजी रहें। गुड़, खाण्ड, तिल, तेल, सरसों, घी, चान्दी में मन्दा आकर २८ मार्च को तेजी बने। ३१ मार्च को तेल, तिलहन एवं अनाज तेज रहें; शेयरों में मन्दे की संभावना है।

कुण्डली सूर्योदये

१ — ११ शु. — २ श. रा. — बु. १२ सू. चं. — १० — ३ — ९ मं. — ४ गु. — ६ — ८ के. — ५ — ७
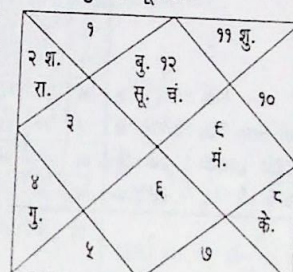
चैत्र कृष्ण ३० मंगल, इष्ट ५८/०५,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	११	८	११	३	१०	१	१	७
१७	२०	२३	२९	१४	१२	२९	०८	०८
५६	०५	५०	१४	१०	२३	३५	१८	१८
३५	११	३८	३५	१२	२७	४८	५८	५८
५९	७२०	३७	११८	००	७२	०३	०३	०३
१४	३१	२४	४१	३०	०५	५९	११	११
		मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
रे. १	रे. २	पू.षा. ४	रे. ४	पुष्य ४	शत. २	मृग. २	कृति. ४	अनु. २

आकाश लक्षण:- मार्च २२, ३१, अप्रैल १ के लगभग लंका, भूटान, सिक्किम, आसाम, हि.प्र. आदि में कहीं वायुवेग के साथ वर्षा हो, लेकिन उत्तरी भारत में मौसम प्रायः खुशक रहेगा। *शकुन विचार:-* अगर चैत्र कृष्ण अष्टमी को आकाश बादलों से ढका रहे तो गुड़, खाण्ड, गेहूँ, सोना तेज रहे। "चन्द्रमौलि शंकरचरण बार-बार सिरनाय। संवत् यह पूरण कियो गिरा-गणेश मनाय।।"

स्टैंडर्ड टाईम को ही प्रयोग में लाइए, घड़ी-पलों को तिलांजलि दीजिए।

-: प्रियव्रत शर्मा :-

प्राचीनकाल में जब स्टैं. टा. का आविष्कार नहीं हुआ था,- तिथि, नक्षत्र, योग, करणों की प्रारम्भ-समाप्ति, ग्रहों का राशि-नक्षत्र, नक्षत्रचरणों में प्रवेश आदि का काल घड़ी-पलों में ही दिया जाता था। उसी परम्परानुसार अब भी पंचांगों में घड़ी-पलों में तिथ्यादि का काल दिया रहता है। ये घड़ी-पल किसी एक (पंचांगीय) नगर के सूर्योदय से बीता काल बतलाते हैं। अतः इन्हें उसी रूप में किसी अन्य नगर में इस्तेमाल नहीं किया जा सकता। इन्हें किसी दूसरे अभीष्ट नगर में इस्तेमाल करने के लिए इनमें पंचांगीय नगर और अभीष्ट नगर के सूर्योदयकालों के अन्तर का संस्कार (जिसे "पंचांग परिवर्तन संस्कार" कहा जाता है) करना जरूरी होता है। **उदाहरणार्थ-** अमृतसर के पंचांग में दिए गए तिथ्यादि के घड़ी-पलों को केवल अमृतसर में ही प्रयोग में लाया जा सकता है। यदि हम इन्हें जम्मू में इस्तेमाल करना चाहें तो यह आवश्यक होगा कि अमृतसर तथा जम्मू के उस दिन के सूर्योदयकालों का अन्तर जानकर असे अमृतसर के पंचांग में दिए गए घड़ी-पलों में जोड़ें या घटाएं (उस दिन जम्मू में सूर्योदय अमृतसर के सूर्योदय से पहिले हुआ हो तो जोड़ें, अन्यथा घटाएं)। इसप्रकार प्राप्त तिथ्यादि के घड़ी-पल ही जम्मू में प्रयोग के योग्य होंगें। इसप्रकार स्पष्ट हैं- तिथ्यादिकालों को घड़ी-पलों में बतलाने वाला पंचांग अपने नगर से अन्यत्र प्रयोग के योग्य नहीं होता। लेकिन यदि तिथ्यादि के काल स्टैं. टा. में दिए हों तो उस पंचांग के तिथ्यादि के कालों को उस देश के (जिस देश का स्टैं. टा. उस पंचांग में प्रयुक्त किया गया है, उस देश के) सभी नगरों में बिना **" पंचांग परिवर्त्तन संस्कार "** के प्रयोग में लाया जा सकता है।

स्पष्टता के लिए यहां हम कुछ उदाहरण देते हैं :-

इसवर्ष (सं. २०५६ वि. में) २७ अप्रै. २००२ ई. को चैत्र पूर्णिमा तिथि भा.स्टैं.टा. के अनुसार ८ घं. ३० मि. पर समाप्त होगी। पूर्णिमा का यह समाप्तिकाल भारत के प्रत्येक नगर/ग्राम में बिना किसी परिवर्तन के प्रयोग में लाया जाएगा। अर्थात् चण्डीगढ़ हो या दिल्ली, कानपुर हो या बनारस, मद्रास हो या कोलकाता-सभी नगरों में इस चैत्र पूर्णिमा की समाप्ति का काल (भा.स्टैं.टा.) २७ अप्रै.'०२ को ८ घं.३० मि. (प्रातः ८ बजकर ३० मिनट) ही होगा। भारत में कहीं भी इस काल में किसी प्रकार का जोड़ - घटाव नहीं करना पड़ेगा। इसी प्रकार १५ अप्रै. '०२ ई. को चन्द्रमा का वृष राशि में प्रवेशकाल (भा.स्टैं.टा.) १४ घं. ३२ मि. लिखा है। इसका अर्थ है भारत के प्रत्येक नगर/ग्राम में चन्द्र का वृष राशि में यह प्रवेश १५ अप्रै. को दिन के २ बजकर ३२ मिनट (भा.स्टैं.टा.) पर ही माना जाएगा।

एक और उदाहरण लीजिए :- "मार्तण्ड पंचांग" में दैनिक स्पष्ट ग्रह प्रातः ५ घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.) के दिए रहते हैं। ये स्पष्ट ग्रह भी भारत के प्रत्येक नगर/ग्राम में प्रातः ५ घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.) के ही माने जाएंगे (अर्थात् इन्हें इसी टाईम के मानकर भारत के प्रत्येक नगर/ग्राम में उत्पन्न जातक के जन्मकालिक ग्रह चालन द्वारा स्पष्ट करना होगा)।

इसी प्रकार चन्द्रग्रहण का उदाहरण भी लीजिए - गतवर्ष सं. २०५८ वि. में चन्द्रग्रहण ५ जुलाई,'०१ ई. को भा. स्टैं. टा. के अनुसार १६ घं. ०६ मि. पर प्रारम्भ होकर २१ घं. ४६ मि. पर समाप्त हुआ। चन्द्रग्रहण के ये प्रारम्भ-समाप्तिकाल भारत के सभी नगरों के लिए थे, यानी भारत के सभी नगरों में इस चन्द्रग्रहण का प्रारम्भ और समाप्तिकाल उल्लिखित ही था।

आजकल घटी-पलात्मक काल को बतलाने वाले घटीयंत्र भी तो नहीं हैं। घटी-पलात्मक तिथ्यादि समाप्तिकाल एवं ग्रहों के राशि-नक्षत्र-नवांश में प्रवेश आदि का काल वस्तुतः कब पड़ता है - यह जानने के लिए भी हमें घटी-पलों के टाईम को घं., मि. में बदलकर, अन्ततः घड़ियों द्वारा बतलाए जाने वाले स्टैं. टा. की ही शरण लेनी पड़ती है। जैसा कि पहिले स्पष्ट कर चुके हैं, - घटी-पलात्मककाल से स्टैं. टा. वाला कहीं अधिक सुविधाजनक एवं देश में सर्वत्र एकरूप भी होता है। इसी लिए हम इस पंचांग में विगत ३७ वर्षों से भा.स्टैं.टा. में तिथ्यादि समाप्तिकाल, ग्रहों का राशि-नक्षत्र-नवांशप्रवेश-काल आदि पृथक् पृष्ठों पर देते आ रहे हैं। आप देख रहे हैं- सं. २०५६ वि. से "भा.स्टैं.टा. में तिथ्यादि पंचांग" हमने अधिक विस्तृतरूप में देना प्रारम्भ किया है। पहले यह भा. स्टैं. टा. वाला पंचांग केवल ८ पृष्ठों पर ही होता था, अब इसे १५ पृष्ठ दिए जा रहे हैं। **यहां चण्डीगढ़ के साथ दिल्ली, जयपुर, वाराणसी नगरों के सूर्योदयास्तकाल भी दिए गए हैं।** जिस नगर में जो तिथि, नक्षत्र या योग पूर्वापरवर्त्ती दोनों स्थानीय सूर्योदयकालों को स्पर्श न कर पाए, उस नगर में उस तिथि, नक्षत्र या योग का क्षय, किञ्च - यदि वह उस नगर में पूर्वापरवर्त्ती दोनों स्थानीय सूर्योदयकालों को स्पर्श कर ले तो उसकी उस नगर में वृद्धि मानी जाती है। **यहां तिथ्यादि की क्षय-वृद्धि का निर्णय (निर्देश) केवल चण्डीगढ़ के सूर्योदय के आधार पर ही किया गया है- यह पाठक ध्यान में रखें। कुछ स्थलों पर यह संभव है कि किसी तिथि, नक्षत्र या योग की चण्डीगढ़ के सूर्योदयानुसार तो वृद्धि या क्षय हो, लेकिन वाराणसी, जयपुर या दिल्ली के सूर्योदयानुसार वह वृद्धि-क्षय न हो।**

भा. स्टैं. टा. वाले तिथ्यादि कालों को विदेशी स्टैं. टा. में बदलना भी आसान है।

स्टैं. टा. वाले पंचांग को विश्व के किसी भी देश में इस्तेमाल करने के लिए कुछ भी परिश्रम नहीं करना पड़ता। जिस देश का पंचांग आपके पास है और जिस अभीष्ट देश के लिए आप (शेष पृ.173पर देखें)

तिथ्यादि पञ्चाङ्ग (भा. स्टैं. टा.)

मास पक्ष	जन. 2002 ई.	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा–ग्रहराशि–नक्षत्रप्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
पौष कृष्ण पक्ष	1	2	मं.	11	09	पु.	21	04	वै.	15	10	कर्क			7	24	17	28	7	18	17	31	7	20	17	41	6	48	17	15	1	म. 21/56 बाद, वक्री गुरु आर्द्रा 3 में 26/36, जनवरी (ई.सन् 2002) प्रारम्भ,
	2	3/4	बु.	8	34	आश्ले.	19	00	वि.	11	41	सिं.	19	00	7	25	17	28	7	18	17	32	7	20	17	41	6	48	17	16	2	म. 8/34 तक,
				29	47																											
	3	5	गु.	27	06	मघा	16	58	प्री.	8	11	सिंह			7	25	17	29	7	19	17	32	7	20	17	42	6	48	17	17	3	
									आ.	28	47																					
	4	6	शु.	24	36	पू.फा.	15	05	सौ.	25	32	क.	20	38	7	25	17	30	7	19	17	33	7	21	17	43	6	48	17	17	4	म. 24/36 बाद,
	5	7	श.	22	24	उ.फा.	13	26	शो.	22	31	कन्या			7	25	17	31	7	19	17	34	7	21	17	43	6	49	17	18	5	म. 11/30 तक,
	6	8	र.	20	32	हस्त	12	06	अ.	19	46	तु.	23	34	7	25	17	31	7	19	17	35	7	21	17	44	6	49	17	19	6	बुध श्रव. में 19/24,
	7	9	चं.	19	03	चित्रा	11	08	सु.	17	20	तुला			7	25	17	32	7	19	17	35	7	21	17	45	6	49	17	19	7	म. 30/31 बाद,
	8	10	मं.	17	59	स्वा.	10	35	धृ.	15	14	वृ.	28	25	7	25	17	33	7	19	17	36	7	21	17	46	6	49	17	20	8	म. 17/59 तक,
	9	11	बु.	17	20	विशा.	10	25	शू.	13	27	वृश्चिक			7	25	17	34	7	19	17	37	7	21	17	46	6	49	17	21	9	सफला एकादशी व्रत (स.),
	10	12	गु.	17	07	अनु.	10	41	गं.	12	00	वृश्चिक			7	25	17	35	7	19	17	38	7	21	17	47	6	49	17	22	10	सूर्य उ.षा. में 28/51, *मंगल मीन में 19/13*, प्रदोष व्रत,
	11	13	शु.	17	19	ज्ये.	11	21	वृ.	10	52	ध.	11	21	7	25	17	35	7	19	17	39	7	21	17	48	6	49	17	22	11	म. 17/19 से 29/38 तक, शुक्र उ.षा. में 20/50 ,
	12	14	श.	17	56	मूल	12	25	ध्रु.	10	04	धनु			7	25	17	36	7	19	17	39	7	21	17	49	6	49	17	23	12	
	13	30	र.	18	59	पू.षा.	13	53	व्या.	9	35	म.	20	19	7	25	17	37	7	19	17	40	7	21	17	49	6	49	17	24	13	*लोहड़ी* (पंजाब, जम्मू–काश्मीर),
पौष शुक्ल पक्ष	14	1	चं.	20	26	उ.षा.	15	46	ह.	9	25	मकर			7	25	17	38	7	19	17	41	7	21	17	50	6	49	17	25	14	*पौष शुक्ल पक्ष प्रारम्भ*, सं. *सूर्य मकर में 11/21*, पुण्यकाल सारा दिन, *शुक्र* (A)
	15	2	मं.	22	17	श्रव.	18	01	व.	9	33	कुं.	31	16	7	25	17	39	7	19	17	42	7	21	17	51	6	49	17	25	15	चन्द्रदर्शन, पंचक प्रारम्भ 31/16, मंगल उ.भा. में 8/46,
	16	3	बु.	24	28	धनि.	20	36	सि.	9	58	कुम्भ			7	25	17	40	7	19	17	43	7	21	17	52	6	49	17	26	16	
	17	4	गु.	26	55	शत.	23	27	व्य.	10	37	कुम्भ			7	25	17	41	7	19	17	44	7	21	17	53	6	49	17	27	17	म. 13/41 से 26/55 तक,
	18	5	शु.	29	30	पू.भा.	26	26	व.	11	26	मी.	19	41	7	24	17	41	7	19	17	44	7	21	17	53	6	49	17	28	18	बुध वक्री 13/17,
	19	6	श.	–	–	उ.भा.	29	24	प.	12	18	मीन			7	24	17	42	7	19	17	45	7	21	17	54	6	49	17	28	19	
	20	6	र.	8	02	रेव.	–	–	शि.	13	05	मीन			7	24	17	43	7	18	17	46	7	21	17	55	6	49	17	29	20	सूर्य सायन कुम्भ में 11/33,
	21	7	चं.	10	18	रेव.	8	09	सि.	13	40	मे.	8	09	7	24	17	44	7	18	17	47	7	20	17	56	6	49	17	30	21	म. 10/18 से 23/12 तक, पंचक समाप्त 8/09, *बुध पश्चिम में अस्त 9/59,*
	22	8	मं.	12	06	अश्वि.	10	28	सा.	13	52	मेष			7	23	17	45	7	18	17	48	7	20	17	57	6	49	17	31	22	शुक्र श्रव. में 11/19 ,
	23	9	बु.	13	16	भर.	12	10	शु.	13	35	वृ.	18	29	7	23	17	46	7	18	17	49	7	20	17	57	6	48	17	31	23	सूर्य श्रव. में 31/06,
	24	10	गु.	13	40	कृत्ति.	13	09	शु.	12	43	वृष			7	22	17	47	7	17	17	49	7	20	17	58	6	48	17	32	24	म. 25/27 बाद,
	25	11	शु.	13	14	रोहि.	13	20	ब्र.	11	13	मि.	25	08	7	22	17	48	7	17	17	50	7	19	17	59	6	48	17	33	25	म. 13/14 तक, पुत्रदा एकादशी व्रत (स.),
	26	12	श.	12	00	मृग.	12	44	ऐं.	9	04	मिथुन			7	22	17	49	7	16	17	51	7	19	18	00	6	47	17	34	26	शनि प्रदोष व्रत,
									वै.	30	20																					
	27	13	र.	10	01	आर्द्रा	11	24	वि.	27	05	क.	28	00	7	21	17	50	7	16	17	52	7	19	18	01	6	47	17	34	27	
	28	14/ /15	चं.	7	25	पुन.	9	28	प्री.	23	25	कर्क			7	21	17	50	7	16	17	53	7	18	18	01	6	47	17	35	28	म. 7/25 से 17/53 तक, वक्री बुध श्रव. में 8/54, यूरेनस धनि. 3 कुम्भ में (B)
				28	21	पु.	31	05																								
माघ कृ.प.	29	1	मं.	24	58	आश्ले.	28	25	आ.	19	29	सिं.	28	25	7	20	17	51	7	15	17	54	7	18	18	02	6	46	17	36	29	*माघ कृष्ण पक्ष प्रारम्भ* , वक्री गुरु आर्द्रा 2 में 10/17,
	30	2	बु.	21	27	मघा	25	37	सौ.	15	23	सिंह			7	20	17	52	7	15	17	54	7	17	18	03	6	46	17	37	30	वक्री बुध उ.षा. 4 में 26/19,
	31	3	गु	18	01	पू.फा.	22	58	शो.	11	18	क.	28	21	7	19	17	53	7	14	17	55	7	17	18	04	6	46	17	37	31	म. 7/44 से 18/01 तक, *संकष्ट चतुर्थी व्रत,*

(A) *मकर में 12/26,* (B) 14/10 , *श्रीसत्यनारायण व्रत, माघ स्नान प्रारम्भ,*

तिथ्यादि पञ्चांग (भा. स्टैं. टा.)

मास पक्ष	फर. 2002 ई.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घं.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घं.	मि.	योग	समाप्ति-काल घं.	मि.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	दिल्ली सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	जयपुर सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	वाराणसी सूर्यास्त घं.	मि.	तारीख	भद्रा–ग्रहराशि–नक्षत्रप्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
माघ कृष्ण पक्ष	1	4	शु.	14	46	उ.फा.	20	33	अ.	7	21	कन्या		7	18	17	54	7	14	17	56	7	16	18	04	6	45	17	38	1	शुक्र घनि. में 26/08,
									सु.	27	39																				
	2	5	श.	11	54	हस्त	18	32	धृ.	24	19	तु. 29	42	7	18	17	55	7	13	17	57	7	16	18	05	6	45	17	39	2	मंगल रेव. में 17/03, *बुध पूर्व में उदित 27/26,*
	3	6	र.	09	31	चित्रा	17	01	शू.	21	26	तुला		7	17	17	56	7	12	17	58	7	15	18	06	6	44	17	40	3	भ. 09/31 से 20/37 तक,
	4	7/	चं.	7	43	स्वा.	16	07	गं.	19	02	तुला		7	16	17	57	7	12	17	59	7	15	18	07	6	44	17	40	4	
		/8		30	33																										
	5	9	मं.	30	01	विशा.	15	49	वृ.	17	08	वृ. 9	50	7	16	17	58	7	11	17	59	7	14	18	08	6	43	17	41	5	शुक्र *पश्चिम में उदित 8/25,*
	6	10	बु.	30	05	अनु.	16	09	ध्रु.	15	44	वृश्चिक		7	15	17	58	7	11	18	00	7	14	18	08	6	43	17	42	6	भ. 18/03 से 30/05 तक, सूर्य घनि. में 10/21,
	7	11	गु.	30	43	ज्ये.	17	03	व्या.	14	47	ध. 17	03	7	14	17	59	7	10	18	01	7	13	18	09	6	42	17	42	7	*शुक्र कुम्भ में* 9/40, षट्तिला एकादशी व्रत (स्मा.),
	8	12	शु.	–	–	मूल	18	26	ह.	14	14	धनु		7	14	18	00	7	09	18	02	7	12	18	10	6	41	17	43	8	*बुध मार्गी* 18/20, *शुक्र बाल्य समाप्त* 8/25, *शनि मार्गी* 22/28, षट्तिला (A)
	9	12	श.	7	48	पू.षा.	20	15	व.	14	02	म. 26	45	7	13	18	01	7	08	18	03	7	12	18	11	6	41	17	44	9	शनि प्रदोष व्रत,
	10	13	र.	9	18	उ.षा.	22	23	सि.	14	06	मकर		7	12	18	02	7	08	18	03	7	11	18	11	6	40	17	44	10	भ. 09/18 से 22/12 तक,
	11	14	चं.	11	06	श्रव.	24	49	व्य.	14	25	मकर		7	11	18	03	7	07	18	04	7	10	18	12	6	40	17	45	11	महोदय योग (11/06 से 14/25 तक),
	12	30	मं.	13	11	घनि.	27	29	व.	14	55	कुं. 14	08	7	10	18	04	7	06	18	05	7	10	18	13	6	39	17	46	12	पंचक प्रारम्भ 14/08, सं. सूर्य कुम्भ में 24/22, पुण्यकाल मध्याह्न के बाद, (B)
माघ शुक्ल पक्ष	13	1	बु.	15	29	शत.	30	19	प.	15	36	कुम्भ		7	09	18	04	7	05	18	06	7	09	18	13	6	38	17	46	13	*माघ शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन,*
	14	2	गु.	17	57	पू.भा.	–	–	शि.	16	23	मी. 26	32	7	09	18	05	7	05	18	06	7	08	18	14	6	37	17	47	14	
	15	3	शु.	20	30	पू.भा.	09	17	सि.	17	15	मीन		7	08	18	06	7	04	18	07	7	07	18	15	6	37	17	48	15	गौरी तृतीया (गोंतरी),
	16	4	श.	23	02	उ.भा.	12	17	सा.	18	07	मीन		7	07	18	07	7	03	18	08	7	07	18	15	6	36	17	48	16	भ. 09/46 से 23/02 तक, *राहु मृग. 2 वृष, केतु ज्येष्ठा 4 वृश्चिक में* 24/36,
	17	5	र.	25	25	रेव.	15	12	शु.	18	54	मे. 15	12	7	06	18	08	7	02	18	09	7	06	18	16	6	35	17	49	17	पंचक समाप्त 15/12, वसन्त पंचमी,
	18	6	चं.	27	28	अश्वि.	17	51	शु.	19	28	मेष		7	05	18	08	7	01	18	09	7	05	18	17	6	35	17	50	18	सूर्य सायन मीन में 25/46, वसन्त ऋतु प्रारम्भ,
	19	7	मं.	29	00	भर.	20	05	ब्र.	19	41	वृ. 26	34	7	04	18	09	7	00	18	10	7	04	18	17	6	34	17	50	19	भ. 29/00 बाद,सूर्य शत. में 14/47, बुध श्रव. में 9/18, रथ सप्तमी, (C)
	20	8	बु.	29	52	कृत्ति.	21	44	ऐं.	19	27	वृष		7	03	18	10	6	59	18	11	7	03	18	18	6	33	17	51	20	भ. 17/26 तक, *मंगल अश्वि. मेष में* 30/15, भीष्माष्टमी,
	21	9	गु.	29	56	रोहि.	22	39	वै.	18	38	वृष		7	02	18	11	6	58	18	12	7	02	18	19	6	32	17	51	21	
	22	10	शु.	29	09	मृग.	22	45	वि.	17	10	मि. 10	48	7	01	18	12	6	58	18	12	7	02	18	19	6	31	17	52	22	
	23	11	श.	27	32	आर्द्रा	22	01	प्री.	15	03	मिथुन		7	00	18	12	6	57	18	13	7	01	18	20	6	30	17	53	23	भ. 16/20 से 27/32 तक, शुक्र पू.भा. में 9/03, जया एकादशी व्रत (स.),
	24	12	र.	25	08	पुन.	20	30	आ.	12	16	क. 14	57	6	59	18	13	6	56	18	14	7	00	18	21	6	30	17	53	24	भीष्म द्वादशी,
	25	13	चं.	22	06	पु.	18	19	सौ.	8	55	कर्क		6	58	18	14	6	55	18	14	6	59	18	21	6	29	17	54	25	सोम प्रदोष व्रत,
									शो.	29	04																				
	26	14	मं.	18	35	आश्ले.	15	38	अ.	24	53	सिं. 15	38	6	57	18	15	6	54	18	15	6	58	18	22	6	28	17	54	26	भ. 18/35 से 28/41 तक,
	27	15	बु.	14	46	मघा	12	36	सु.	20	28	सिंह		6	56	18	15	6	53	18	16	6	57	18	23	6	27	17	55	27	श्रीसत्यनारायण व्रत, *माघस्नान समाप्त,*
फाल्गु. कृ.प.	28	1	गु.	10	51	पू.फा.	09	28	धृ.	16	04	कं. 14	41	6	55	18	16	6	52	18	16	6	56	18	23	6	26	17	55	28	*फाल्गुन कृष्ण पक्ष प्रारम्भ,*
						उ.फा.	30	24																							

शुक्र उदित
5 फरवरी

(A) एकादशी व्रत (वै.), (B) शुक्र शत. में 17/19, प्लूटो ज्येष्ठा 3 में, भौमवती अमा, मौनी अमा, (C) आरोग्य सप्तमी,

तिथ्यादि पञ्चांग (भा. स्टैं. टा.)

मास पक्ष	मार्च 2002 ई.	तिथि	वार	समाप्तिकाल घं.	मि.	नक्षत्र	समाप्तिकाल घं.	मि.	योग	समाप्तिकाल घं.	मि.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	तारीख	भद्रा—ग्रहराशि—नक्षत्रप्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
फाल्गुन कृष्ण पक्ष	1	2/3	शु.	7	01	हस्त	27	36	शू.	11	46	कन्या		6	53	18	17	6	51	18	17	6	55	18	24	6	25	17	56	1	म. 17/14 से 27/28 तक, गुरु मार्गी 19/26,
				27	28																										
	2	4	श.	24	22	चित्रा	25	15	गं.	7	44	तु. 14	22	6	52	18	18	6	50	18	18	6	54	18	24	6	24	17	56	2	बुध घनि. में 29/13,
									वृ.	28	05																				
	3	5	र.	21	53	स्वा.	23	32	धु.	24	58	तुला		6	51	18	18	6	48	18	18	6	53	18	25	6	23	17	57	3	*शुक्र मीन में 9/21,*
	4	6	चं.	20	06	विशा.	22	31	व्या.	22	26	वृ. 16	42	6	50	18	19	6	47	18	19	6	52	18	25	6	22	17	58	4	म. 20/06 बाद, सूर्य पू. भा. में 21/12,
	5	7	मं.	19	07	अनु.	22	17	ह.	20	31	वृश्चिक		6	49	18	20	6	46	18	20	6	51	18	26	6	21	17	58	5	म. 7/37 तक, शुक्र उ. भा. में 25/33,
	6	8	बु.	18	54	ज्ये.	22	48	व.	19	13	ध. 22	48	6	48	18	20	6	45	18	20	6	50	18	27	6	20	17	59	6	
	7	9	गु.	19	26	मूल	24	02	सि.	18	30	धनु		6	47	18	21	6	44	18	21	6	49	18	27	6	19	17	59	7	*बुध कुम्भ में 25/33,*
	8	10	शु.	20	36	पू.षा.	25	51	व्य.	18	17	धनु		6	45	18	22	6	43	18	21	6	48	18	28	6	18	18	00	8	म. 8/01 से 20/36 तक,
	9	11	श.	22	17	उ.षा.	28	08	व.	18	27	म. 8	23	6	44	18	22	6	42	18	22	6	47	18	28	6	17	18	00	9	विजया एकादशी व्रत (स.),
	10	12	र.	24	20	श्रव.	—	—	प.	18	55	मकर		6	43	18	23	6	41	18	23	6	46	18	29	6	16	18	01	10	
	11	13	चं.	26	37	श्रव.	6	44	शि.	19	35	कुं. 20	07	6	42	18	24	6	40	18	23	6	45	18	29	6	15	18	01	11	म. 26/37 बाद,पंचक प्रारम्भ 20/07, मंगल भरणी में 25/57, सोम प्रदोष व्रत,
	12	14	मं.	29	03	घनि.	9	33	सि.	20	23	कुम्भ		6	41	18	24	6	39	18	24	6	44	18	30	6	14	18	02	12	म. 15/50 तक, बुध शत. में 13/43, *श्रीमहाशिवरात्रि व्रत,*
	13	30	बु.	—	—	शत.	12	28	सा.	21	14	कुम्भ		6	39	18	25	6	37	18	24	6	43	18	30	6	13	18	02	13	
	14	30	गु.	7	33	पू.भा.	15	26	शु.	22	07	मी. 8	42	6	38	18	26	6	36	18	25	6	42	18	31	6	12	18	02	14	*सं. सूर्य मीन में 21/17,* पुण्यकाल मध्याह्न के बाद,
फाल्गुन शुक्ल पक्ष	15	1	शु.	10	02	उ.भा.	18	23	शु.	22	58	मीन		6	37	18	26	6	35	18	26	6	40	18	31	6	11	18	03	15	फाल्गुन शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन,
	16	2	श.	12	27	रेव.	21	15	ब्र.	23	44	मे. 21	15	6	36	18	27	6	34	18	26	6	39	18	32	6	10	18	03	16	पंचक समाप्त 21/15, शुक्र रेवती में 18/51,
	17	3	र.	14	43	अश्वि.	23	56	ऐं.	24	22	मेष		6	35	18	28	6	33	18	27	6	38	18	33	6	09	18	04	17	म. 27/43 बाद, सूर्य उ.भा. में 29/35,
	18	4	चं.	16	44	भर.	26	21	वै.	24	47	मेष		6	33	18	28	6	32	18	27	6	37	18	33	6	08	18	04	18	म. 16/44 तक,
	19	5	मं.	18	23	कृत्ति.	28	21	वि.	24	53	वृ. 8	54	6	32	18	29	6	31	18	28	6	36	18	34	6	07	18	05	19	
	20	6	बु.	19	31	रोहि.	29	49	प्री.	24	34	वृष		6	31	18	30	6	29	18	28	6	35	18	34	6	06	18	05	20	बुध पू. भा. में 20/23, प्लूटो वक्री 11/17, सूर्य सायन मेष में 24/48, (A)
	21	7	गु.	20	00	मृग.	—	—	आ.	23	45	मि. 18	18	6	30	18	30	6	28	18	29	6	34	18	35	6	05	18	06	21	म. 20/00 बाद,
	22	8	शु.	19	45	मृग.	6	37	सौ.	22	20	मिथुन		6	28	18	31	6	27	18	30	6	33	18	35	6	04	18	06	22	म. 7/53 तक, शक चैत्र (शक संवत् 1924) प्रारम्भ, *होलाष्टक प्रारम्भ,*
	23	9	श.	18	43	आर्द्रा	6	40	शो.	20	18	क. 24	12	6	27	18	32	6	26	18	30	6	32	18	36	6	03	18	07	23	
						पुन.	29	57																							
	24	10	र.	16	54	पु.	28	29	अ.	17	40	कर्क		6	26	18	32	6	25	18	31	6	31	18	36	6	02	18	07	24	म. 27/38 बाद, बुध पूर्व में अस्त 18/53,
	25	11	चं.	14	23	आश्ले.	26	22	सु.	14	26	सिं. 26	22	6	25	18	33	6	24	18	31	6	30	18	37	6	01	18	07	25	म. 14/23 तक, आमला एकादशी व्रत (स.),
	26	12	मं.	11	15	मघा	23	44	धृ.	10	44	सिंह		6	23	18	34	6	22	18	32	6	28	18	37	6	00	18	08	26	*बुध मीन में 13/03,* गोविन्द द्वादशी, भौम प्रदोष व्रत,
	27	13/	बु.	7	41	पू.फा.	20	46	शू.	6	39	क. 25	59	6	22	18	34	6	21	18	32	6	27	18	38	5	59	18	08	27	म. 27/50 बाद, *शुक्र अश्वि. मेष में 13/13,*
		/14		27	50				गं.	26	20																				
	28	15	गु.	23	55	उ.फा.	17	38	वृ.	21	56	कन्या		6	21	18	35	6	20	18	33	6	26	18	38	5	58	18	09	28	म. 13/53 तक, बुध उ.भा. में 8/36, श्रीसत्यनारायण व्रत, *होलिका दहन,* (B)
चैत्र कृष्ण पक्ष	29	1	शु.	20	06	हस्त	14	34	धु.	17	36	तु. 25	07	6	20	18	35	6	19	18	33	6	25	18	39	5	57	18	09	29	चैत्र कृष्ण पक्ष प्रारम्भ,
	30	2	श.	16	35	चित्रा	11	44	व्या.	13	31	तुला		6	18	18	36	6	18	18	34	6	24	18	39	5	56	18	10	30	म. 27/00 बाद, मंगल कृति. में 28/58, यूरेनस घनि. 4 में 8/40,
	31	3	र.	13	33	स्वा.	9	21	ह.	9	49	वृ. 25	57	6	17	18	37	6	17	18	35	6	23	18	40	5	55	18	10	31	म. 13/33 तक,सूर्य रेव. में 16/29,

(A) उत्तर गोल प्रारम्भ, *महाविषुव दिन,* (B) *होलाष्टक समाप्त,*

वि. सं. 2058–2059

तिथ्यादि पञ्चांग (भा. स्टैं. टा.)

अप्रैल, सन् 2002 ई.

मास पक्ष	अप्रै. 2002 ई.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घं.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घं.	मि.	योग	समाप्ति-काल घं.	मि.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	तारीख	भद्रा–ग्रहराशि–नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
चैत्र कृष्ण पक्ष	1	4	चं.	11	8	विशा.	7	34	व.	6	36	वृश्चिक		6	16	18	37	6	16	18	35	6	22	18	40	5	54	18	11	1	
									सि.	27	59																				
	2	5	मं.	9	29	अनु.	6	32	व्य.	26	1	वृश्चिक		6	15	18	38	6	14	18	36	6	21	18	40	5	53	18	11	2	गुरु आर्द्रा 3 में 15/53,शनि रोहि. 3 में 16/29,
	3	6	बु.	8	40	ज्ये.	6	18	व.	24	44	ध. 6	18	6	14	18	39	6	13	18	36	6	20	18	41	5	52	18	11	3	भ. 8/40 से 20/41 तक, बुध रेव. में 30/7, नेपच्यून श्रव. 3 में 18/35,
	4	7	गु.	8	41	मूल	6	53	प.	24	4	धनु		6	12	18	39	6	12	18	37	6	19	18	41	5	51	18	12	4	*मंगल वृष में 25/0,*
	5	8	शु.	9	29	पू.षा.	8	14	शि.	23	58	म. 14	41	6	11	18	40	6	11	18	37	6	18	18	42	5	50	18	12	5	
	6	9	श.	10	56	उ.षा.	10	15	सि.	24	18	मकर		6	10	18	40	6	10	18	38	6	16	18	42	5	49	18	13	6	भ. 23/56 बाद,
	7	10	र.	12	55	श्रव.	12	45	सा.	24	58	कुं. 26	08	6	09	18	41	6	09	18	38	6	15	18	43	5	48	18	13	7	भ. 12/55 तक, पंचक प्रारम्भ 26/08, शुक्र भरणी में 8/49,
	8	11	चं.	15	13	धनि.	15	34	शु.	25	49	कुम्भ		6	08	18	42	6	08	18	39	6	14	18	43	5	47	18	14	8	पापमोचनी एकादशी व्रत (स.),
	9	12	मं.	17	42	शत.	18	33	शु.	26	45	कुम्भ		6	06	18	42	6	07	18	40	6	13	18	44	5	46	18	14	9	वारुणीयोग (17/42 से 18/33 तक), भौम प्रदोष व्रत,
	10	13	बु.	20	12	पू.भा.	21	33	ब्र.	27	41	मी. 14	48	6	05	18	43	6	05	18	40	6	12	18	44	5	45	18	15	10	भ. 20/12 बाद, *बुध अश्वि. मेष में 17/36,*
	11	14	गु.	22	36	उ.भा.	24	28	ऐं.	28	31	मीन		6	04	18	44	6	04	18	41	6	11	18	45	5	44	18	15	11	भ. 9/24 तक,
	12	30	शु.	24	51	रेव.	27	13	वै.	29	14	मे. 27	13	6	03	18	44	6	03	18	41	6	10	18	45	5	43	18	15	12	पंचक समाप्त 27/13, चांद्र संवत्सर 2058 विक्रमी पूर्ण ,
चैत्र शुक्ल पक्ष	13	1	श.	26	53	अश्वि.	29	45	वि.	29	46	मेष		6	02	18	45	6	02	18	42	6	09	18	46	5	42	18	16	13	चैत्र शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, *सं. सूर्य अश्वि. मेष में 29/49,* पुण्यकाल अगले (A)
	14	2	र.	28	37	भर.	–	–	प्री.	–	–			6	01	18	46	6	01	18	42	6	08	18	46	5	41	18	16	14	चन्द्रदर्शन,
	15	3	चं.	–	–	भर.	8	01	प्री.	6	05	वृ. 14	32	6	00	18	46	6	00	18	43	6	07	18	47	5	40	18	17	15	गौरी तृतीया (गणगौर), श्रीमत्स्य जयन्ती,
	16	3	मं.	6	02	कृत्ति.	9	57	आ.	6	09	वृष		5	58	18	47	5	59	18	43	6	06	18	47	5	39	18	17	16	भ. 18/35 बाद, बुध भर. में 27/36, *बुध पश्चिम में उदय 10/36,*
									सौ.	29	54																				
	17	4	बु.	7	02	रोहि.	11	29	शो.	29	17	मि. 24	05	5	57	18	47	5	58	18	44	6	05	18	48	5	38	18	18	17	भ. 7/02 तक, शुक्र कृत्ति. में 29/40,
	18	5	गु.	7	33	मृग.	12	32	अ.	28	14	मिथुन		5	56	18	48	5	57	18	44	6	04	18	48	5	37	18	18	18	
	19	6	शु.	7	31	आर्द्रा	13	02	सु.	26	43	मिथुन		5	55	18	49	5	56	18	45	6	03	18	49	5	36	18	19	19	मंगल रोहि. में 15/56,
	20	7/8	श.	6	52	पुन.	12	56	धृ.	24	42	क. 7	01	5	54	18	49	5	55	18	46	6	02	18	49	5	35	18	19	20	भ. 6/52 से 18/18 तक, *शुक्र वृष में 23/07,* राहु मृग. 1, केतु ज्येष्ठा (B)
				29	35																										
	21	9	र.	27	41	पु.	12	12	शू.	22	10	कर्क		5	53	18	50	5	54	18	46	6	01	18	50	5	34	18	20	21	अगस्त्य अस्त, *श्रीराम नवमी, नवरात्र समाप्त,*
	22	10	चं.	25	13	आश्ले.	10	52	गं.	19	10	सिं. 10	52	5	52	18	51	5	53	18	47	6	00	18	51	5	33	18	20	22	
	23	11	मं.	22	16	मघा	9	00	वृ.	15	45	सिंह		5	51	18	51	5	52	18	47	5	59	18	51	5	32	18	21	23	भ. 11/48 से 22/16 तक, बुध कृत्ति. में 29/08, कामदा एकादशी व्रत (स.),
	24	12	बु.	18	58	पू.फा.	6	41	ध्रु.	12	01	क. 12	03	5	50	18	52	5	51	18	48	5	59	18	52	5	32	18	21	24	प्रदोष व्रत,
						उ.फा.	28	05																							
	25	13	गु.	15	28	हस्त	25	20	व्या.	8	04	कन्या		5	49	18	53	5	50	18	49	5	58	18	52	5	31	18	21	25	श्रीमहावीर जयन्ती (जैन),
									ह.	28	02																				
	26	14	शु.	11	55	चित्रा	22	38	व.	24	03	तु. 11	58	5	48	18	53	5	49	18	49	5	57	18	53	5	30	18	22	26	भ. 11/55 से 22/11 तक, *बुध वृष में 5/50,* श्रीसत्यनारायण व्रत,
	27	15/	श.	8	30	स्वा.	20	10	सि.	20	15	तुला		5	47	18	54	5	48	18	50	5	56	18	53	5	29	18	22	27	सूर्य भरणी में 21/40, वैशाखस्नान प्रारम्भ,
		/1		29	23																										
वैशाख कृ.प.	28	2	र.	26	43	विशा.	18	04	व्य.	16	47	वृ. 12	33	5	46	18	55	5	47	18	50	5	55	18	54	5	28	18	23	28	वैशाख कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, गुरु आर्द्रा 4 में 19/55,शुक्र रोहि. में 28/04,
	29	3	चं.	24	40	अनु.	16	32	व.	13	46	वृश्चिक		5	45	18	55	5	46	18	51	5	54	18	54	5	27	18	23	29	भ. 13/37 से 24/40 तक, वक्री प्लूटो ज्येष्ठा 2 में 13/30,
	30	4	मं.	23	20	ज्ये.	15	41	प.	11	18	ध. 15	41	5	44	18	56	5	45	18	51	5	53	18	55	5	26	18	24	30	श्रीगणेश चतुर्थी व्रत,

(A) दिन मध्याह्न तक, वासन्त नवरात्र प्रारम्भ, वैशाखी (पं.), (B) 3 में 22/46, सायन सूर्य वृष में 11/52, ग्रीष्म ऋतु प्रारम्भ, श्रीदुर्गाष्टमी,

तिथ्यादि पञ्चांग (भा. स्टैं. टा.)

मई, सन् 2002 ई.

मास पक्ष	मई 2002 ई.	तिथि	वार	समाप्ति काल घं.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	मि.	योग	समाप्ति काल घं.	मि.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	दिल्ली सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	जयपुर सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	वाराणसी सूर्यास्त घं.	मि.	तारीख	भद्रा--ग्रहराशि--नक्षत्र--प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
वैशाख कृष्ण पक्ष	1	5	बु.	22	47	मूल	15	35	शि.	9	26	धनु		5	43	18	57	5	45	18	52	5	53	18	55	5	25	18	24	1	वैशाख कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, मई प्रारम्भ,
	2	6	गु.	23	01	पू.षा.	16	16	सि.	8	12	म. 22	34	5	42	18	57	5	44	18	53	5	52	18	56	5	25	18	25	2	भ. 23/01 बाद,
	3	7	शु.	24	01	उ.षा.	17	43	सा.	7	36	मकर		5	41	18	58	5	43	18	53	5	51	18	56	5	24	18	25	3	भ. 11/26 तक, बुध रोहि. में 22/50,
	4	8	श.	25	39	श्रव.	19	48	शु.	7	33	मकर		5	40	18	59	5	42	18	54	5	50	18	57	5	23	18	26	4	शनि रोहि. 4 में 11/15,
	5	9	र.	27	45	धनि.	22	23	शु.	7	57	कुं. 9	02	5	40	18	59	5	41	18	54	5	50	18	57	5	23	18	26	5	पंचक प्रारम्भ 9/02,
	6	10	चं.	--	--	शत.	25	15	ब्र.	8	41	कुम्भ		5	39	19	00	5	41	18	55	5	49	18	58	5	22	18	27	6	भ. 16/55 बाद,
	7	10	मं.	6	07	पू.भा.	28	15	ऐं.	9	36	मी. 21	30	5	38	19	01	5	40	18	56	5	48	18	59	5	21	18	27	7	भ. 6/07 तक,
	8	11	बु.	8	34	उ.भा.	—	—	वै.	10	33	मीन		5	37	19	01	5	39	18	56	5	47	18	59	5	21	18	28	8	वरुथिनी एकादशी व्रत (स.), *श्रीवल्लभाचार्य जयन्ती,*
	9	12	गु.	10	55	उ.भा.	7	10	वि.	11	25	मीन		5	36	19	02	5	38	18	57	5	47	19	00	5	20	18	28	9	मंगल मृग. में 10/56, शुक्र मृग. में 28/08, प्रदोष व्रत,
	10	13	शु.	13	02	रेव.	9	53	प्री.	12	06	मे. 9	53	5	36	19	03	5	38	18	57	5	46	19	00	5	19	18	29	10	भ. 13/02 से 25/59 तक, पंचक समाप्त 9/53,
	11	14	श.	14	50	अश्वि.	12	18	आ.	12	33	मेष		5	35	19	03	5	37	18	58	5	46	19	01	5	19	18	29	11	सूर्य कृति. में 15/50,
	12	30	र.	16	15	भर.	14	21	सौ.	12	43	वृ. 20	48	5	34	19	04	5	36	18	59	5	45	19	01	5	18	18	30	12	
वैशाख शुक्ल पक्ष	13	1	चं.	17	15	कृति.	16	00	शो.	12	34	वृष		5	33	19	04	5	36	18	59	5	44	19	02	5	18	18	31	13	वैशाख शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन, नेपच्यून वक्री 17/41,
	14	2	मं.	17	50	रोहि.	17	15	अ.	12	05	वृष		5	33	19	05	5	35	19	00	5	44	19	02	5	17	18	31	14	सं सूर्य वृष में 26/40, पुण्यकाल अगले दिन मध्याह्न तक, *श्रीपरशुराम जयंती* (A)
	15	3	बु.	17	59	मृग.	18	05	सु.	11	16	मि. 5	43	5	32	19	06	5	35	19	00	5	43	19	03	5	17	18	32	15	बुध वक्री 24/20, *शुक्र मिथुन में 16/50,* अक्षय तृतीया,
	16	4	गु.	17	41	आर्द्रा	18	28	धृ.	10	07	मिथुन		5	32	19	06	5	34	19	01	5	43	19	04	5	16	18	32	16	भ. 5/53 से 17/41 तक,
	17	5	शु.	16	57	पुन.	18	26	शू.	8	36	क. 12	29	5	31	19	07	5	33	19	02	5	42	19	04	5	16	18	33	17	आद्य जगद्गुरु श्रीशंकराचार्य जयन्ती,
	18	6	श.	15	46	पु.	17	57	गं.	6	44	कर्क		5	30	19	08	5	33	19	02	5	42	19	05	5	15	18	33	18	गुरु पुन. 1 में 8/09, श्रीरामानुजाचार्य जयन्ती (उ.भा.),
									वृ.	28	31																				
	19	7	र.	14	10	आश्ले.	17	03	ध्रु.	25	58	सिं. 17	03	5	30	19	08	5	32	19	03	5	41	19	05	5	15	18	34	19	भ. 14/10 से 25/12 तक, *मंगल मिथुन में 11/11,* बुध पश्चिम में अस्त (B)
	20	8	चं.	12	09	मघा	15	46	व्या.	23	07	सिंह		5	29	19	09	5	32	19	03	5	41	19	06	5	15	18	34	20	
	21	9	मं.	9	47	पू.फा.	14	08	ह.	20	00	क. 19	41	5	29	19	10	5	31	19	04	5	40	19	06	5	14	18	35	21	शुक्र आर्द्रा में 6/00, सायन सूर्य मिथुन में 11/00, श्रीजानकी जयन्ती,
	22	10/	बु.	7	09	उ.फा.	12	14	व.	16	41	कन्या		5	28	19	10	5	31	19	05	5	40	19	07	5	14	18	35	22	भ. 17/45 से 28/19 तक, मोहिनी एकादशी व्रत, (स्मा.),
		/11		28	19																										
	23	12	गु.	25	24	हस्त	10	10	सि.	13	14	तु. 21	06	5	28	19	11	5	31	19	05	5	40	19	07	5	14	18	36	23	शनि अस्त 17/32, मोहिनी एकादशी व्रत (वै.),
	24	13	शु.	22	30	चित्रा	8	03	व्य.	9	46	तुला		5	27	19	11	5	30	19	06	5	39	19	08	5	13	18	36	24	प्रदोष व्रत,
	25	14	श.	19	47	स्वा.	6	00	व.	6	22	वृ. 22	36	5	27	19	12	5	30	19	06	5	39	19	08	5	13	18	37	25	भ. 19/47 बाद, सूर्य रोहि. में 12/01, श्रीसत्यनारायण व्रत, श्रीनृसिंह जयन्ती,
						विशा.	28	10	प.	27	09																				
	26	15	र.	17	21	अनु.	26	41	शि.	24	13	वृश्चिक		5	26	19	13	5	29	19	07	5	39	19	09	5	13	18	37	26	भ. 6/31 तक, श्रीकूर्म जयन्ती, श्रीबुद्ध पूर्णिमा, वैशाखस्नान समाप्त,
ज्ये. कृ. प.	27	1	चं.	15	21	ज्ये.	25	40	सि.	21	39	ध. 25	40	5	26	19	13	5	29	19	07	5	38	19	10	5	12	18	38	27	ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष प्रारम्भ,
	28	2	मं.	13	53	मूल	25	15	सा.	19	34	धनु		5	26	19	14	5	29	19	08	5	38	19	10	5	12	18	38	28	भ. 25/23 बाद,
	29	3	बु.	13	04	पू.षा.	25	29	शु.	18	00	धनु		5	25	19	14	5	28	19	08	5	38	19	11	5	12	18	39	29	भ. 13/04 तक, मंगल आर्द्रा में 13/21, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत,
	30	4	गु.	12	56	उ.षा.	26	25	शु.	17	00	म. 7	39	5	25	19	15	5	28	19	09	5	37	19	11	5	12	18	39	30	वक्री बुध कृति. 4 में 25/37, शनि मृग. 1 में 28/10,
	31	5	शु.	13	30	श्रव.	28	01	ब्र.	16	33	मकर		5	25	19	16	5	28	19	09	5	37	19	12	5	12	18	40	31	

(A) (देखें पृष्ठ 131), श्रीशिवाजी जयन्ती, (B) 11/33, श्रीगंगा जन्म,

तिथ्यादि पञ्चांग (भा. स्टैं. टा.)

मास पक्ष	जून 2002 ई.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घं.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	मि.	योग	समाप्ति-काल घं.	मि.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	दिल्ली सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	जयपुर सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	वाराणसी सूर्यास्त घं.	मि.	तारीख	भद्रा–ग्रहराशि–नक्षत्रप्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	1	6	श.	14	45	घनि.	–	–	ऐं.	16	36	कुं. 17	03	5	25	19	16	5	28	19	10	5	37	19	12	5	11	18	40	1	ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, भ. 14/45 से 27/35 तक, पंचक प्रारम्भ 17/03, (A)
	2	7	र.	16	32	घनि.	6	13	वै.	17	05	कुम्भ		5	24	19	17	5	28	19	10	5	37	19	12	5	11	18	40	2	यूरेनस वक्री 29/41,
	3	8	चं.	18	43	शत.	8	51	वि.	17	51	मी. 29	00	5	24	19	17	5	27	19	11	5	37	19	13	5	11	18	41	3	
	4	9	मं.	21	04	पू.भा.	11	44	प्री.	18	46	मीन		5	24	19	18	5	27	19	11	5	37	19	13	5	11	18	41	4	गुरु पुन. 2 में 9/58,
	5	10	बु.	23	24	उ.भा.	14	40	आ.	19	40	मीन		5	24	19	18	5	27	19	12	5	36	19	14	5	11	18	42	5	भ. 10/15 से 23/24 तक,
	6	11	गु.	25	29	रेव.	17	26	सौ.	20	25	मेष 17	26	5	24	19	19	5	27	19	12	5	36	19	14	5	11	18	42	6	पंचक समाप्त 17/26, अपरा एकादशी व्रत (स.), भद्रकाली एकादशी (पं.)
	7	12	शु.	27	12	अश्वि.	19	53	शो.	20	54	मेष		5	24	19	19	5	27	19	13	5	36	19	15	5	11	18	43	7	
	8	13	श.	28	26	भर.	21	52	अ.	21	01	वृ. 28	18	5	23	19	20	5	27	19	13	5	36	19	15	5	11	18	43	8	भ. 28/26 बाद, सूर्य मृग. मे 9/54, बुध मार्गी 20/42, प्रदोष व्रत,
	9	14	र.	29	08	कृत्ति.	23	22	सु.	20	44	वृष		5	23	19	20	5	27	19	14	5	36	19	16	5	11	18	43	9	भ. 16/51 तक, *शुक्र कर्क में 21/00,*
	10	30	चं.	29	17	रोहि.	24	19	धृ.	20	01	वृष		5	23	19	20	5	27	19	14	5	36	19	16	5	11	18	44	10	बुध पूर्व में उदय 8/09, सोमवती अमा, वट सावित्री व्रत (अमापक्ष). (B)
ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष	11	1	मं.	28	55	मृग.	24	45	शू.	18	53	मि. 12	36	5	23	19	21	5	27	19	14	5	36	19	16	5	11	18	44	11	*ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष प्रारम्भ,*
	12	2	बु.	28	05	आर्द्रा	24	44	गं.	17	22	मिथुन		5	23	19	21	5	27	19	15	5	36	19	17	5	11	18	44	12	चन्द्रदर्शन, शुक्र पुष्य में 16/57,
	13	3	गु.	26	51	पुन.	24	17	वृ.	15	29	क. 18	26	5	23	19	22	5	27	19	15	5	36	19	17	5	11	18	45	13	रम्भा तृतीया, श्रीप्रताप जयन्ती (राज.),
	14	4	शु.	25	16	पु.	23	31	ध्रु.	13	19	कर्क		5	23	19	22	5	27	19	16	5	36	19	17	5	11	18	45	14	भ. 14/06 से 25/16 तक, शहीदी दिन श्री गुरु अर्जुनदेव जी,
	15	5	श.	23	25	आश्ले.	22	27	व्या.	10	54	सिं. 22	27	5	23	19	22	5	27	19	16	5	37	19	18	5	11	18	45	15	*सं.सूर्य मिथुन में 9/14,* पुण्यकाल 15/37 तक,
	16	6	र.	21	21	मघा	21	10	ह.	8	16	सिंह		5	24	19	23	5	27	19	16	5	37	19	18	5	12	18	46	16	बुध रोहि. में 26/00, मंगल अस्त 8/38,
	17	7	चं.	19	08	पू.फा.	19	45	व.	5	30	क. 25	22	5	24	19	23	5	27	19	17	5	37	19	18	5	12	18	46	17	भ. 19/08 बाद,
									सि.	26	36																				
	18	8	मं.	16	49	उ.फा.	18	14	व्य.	23	40	कन्या		5	24	19	23	5	27	19	17	5	37	19	19	5	12	18	46	18	भ. 5/59 तक, मंगल पुन. में 22/28,
	19	9	बु.	14	28	हस्त	16	40	व.	20	42	तु. 27	54	5	24	19	24	5	27	19	17	5	37	19	19	5	12	18	47	19	
	20	10	गु.	12	09	चित्रा	15	08	प.	17	46	तुला		5	24	19	24	5	28	19	17	5	37	19	19	5	12	18	47	20	भ. 23/00 बाद, गुरु पुन. 3 मे 6/48, *श्रीगंगा दशहरा,*
	21	11	शु.	9	54	स्वा.	13	42	शि.	14	55	तुला		5	24	19	24	5	28	19	18	5	37	19	19	5	12	18	47	21	भ. 9/54 तक, सूर्य सायन कर्क मे 18/56, दक्षिणायन, वर्षा ऋतु प्रारम्भ, (C)
	22	12	श.	7	48	विशा.	12	26	सि.	12	12	वृ. 6	44	5	25	19	24	5	28	19	18	5	38	19	19	5	13	18	47	22	सूर्य आर्द्रा में 8/50, राहु रोहि. 4, केतु ज्येष्ठा 2 में 20/25, शनि प्रदोष व्रत,
	23	13/	र.	5	56	अनु.	11	24	सा.	9	42	वृश्चिक		5	25	19	24	5	28	19	18	5	38	19	20	5	13	18	47	23	भ. 28/22 बाद, शुक्र आश्ले. में 26/59, वक्री नेपच्यून श्रव. 2 में 18/59,
		/14		28	22																										
	24	15	चं.	27	12	ज्ये.	10	42	शु.	7	27	ध. 10	42	5	25	19	25	5	29	19	18	5	38	19	20	5	13	18	48	24	भ. 15/44 तक, श्रीसत्यनारायण व्रत, वट सावित्री व्रत (पूर्णिमा पक्ष),
आषाढ़ कृष्ण पक्ष	25	1	मं.	26	31	मूल	10	25	शु.	5	32	धनु		5	25	19	25	5	29	19	18	5	38	19	20	5	13	18	48	25	*आषाढ़ कृष्ण पक्ष प्रारम्भ,* शनि मृग. 2 में 22/36,
									ब्र.	28	00																				
	26	2	बु.	26	21	पू.षा.	10	37	ऐं.	26	54	म. 16	46	5	26	19	25	5	29	19	18	5	39	19	20	5	14	18	48	26	
	27	3	गु.	26	47	उ.षा.	11	23	वै.	26	16	मकर		5	26	19	25	5	29	19	18	5	39	19	20	5	14	18	48	27	भ. 14/30 से 26/47 तक,
	28	4	शु.	27	48	श्रव.	12	42	वि.	26	05	कुं. 25	35	5	26	19	25	5	30	19	19	5	39	19	20	5	14	18	48	28	पंचक प्रारम्भ 25/35, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत,
	29	5	श.	29	22	घनि.	14	36	प्री.	26	20	कुम्भ		5	27	19	25	5	30	19	19	5	40	19	20	5	15	18	48	29	बुध मृग. में 22/42, शनि उदय 20/09,
	30	6	र.	–	–	शत.	16	59	आ.	26	57	कुम्भ		5	27	19	25	5	30	19	19	5	40	19	20	5	15	18	48	30	

(A) शुक्र पुन.में 10/11, जून प्रारम्भ, (B) *खण्डग्रास सूर्यग्रहण (पूर्वी भारत में दृश्य),* (C) निर्जला एकादशी व्रत (स.),

जुलाई, सन् 2002 ई.

मास पक्ष	जुला. 2002 ई.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घं.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घं.	मि.	योग	समाप्ति-काल घं.	मि.	चन्द्रराशि प्रवेशकाल घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	दिल्ली सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	जयपुर सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	वाराणसी सूर्यास्त घं.	मि.	तारीख	भद्रा–ग्रहराशि–नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
आषाढ़ कृष्ण पक्ष	1	6	चं.	7	22	पू.भा.	19	43	सौ.	27	47	मी. 13	01	5	27	19	25	5	31	19	19	5	40	19	21	5	15	18	48	1	*आषाढ़ कृष्ण पक्ष प्रारम्भ,* भ. 7/22 से 20/29 तक, जुलाई प्रारम्भ,
	2	7	मं.	9	39	उ.भा.	22	38	शो.	28	43	मीन		5	28	19	25	5	31	19	19	5	41	19	21	5	16	18	48	2	
	3	8	बु.	11	59	रेव.	25	31	अ.	–	–	मे. 25	31	5	28	19	25	5	32	19	19	5	41	19	21	5	16	18	48	3	पंचक समाप्त 25/31, बुध मिथुन में 29/20,
	4	9	गु.	14	11	अश्वि.	28	09	अ.	5	35	मेष		5	29	19	25	5	32	19	19	5	41	19	20	5	16	18	48	4	भ. 27/09 बाद, *मंगल कर्क में 9/06, गुरु वार्धक्य प्रारम्भ 14/30,*
	5	10	शु.	16	01	भर.	–	–	सु.	6	12	मेष		5	29	19	25	5	32	19	19	5	42	19	20	5	17	18	48	5	भ. 16/01 तक, *गुरु पुन. 4 कर्क में 12/26,* शुक्र मघा सिंह में 17/19,
	6	11	श.	17	18	भर.	6	19	घृ.	6	28	वृ. 12	46	5	29	19	25	5	33	19	18	5	42	19	20	5	17	18	48	6	सूर्य पुन. में 8/27, योगिनी एकादशी व्रत (स.),
	7	12	र.	17	57	कृत्ति.	7	54	शू.	6	16	वृष		5	30	19	25	5	33	19	18	5	43	19	20	5	18	18	48	7	बुध आर्द्रा में 23/09, *गुरु अस्त 14/30,* प्रदोष व्रत,
	8	13	चं.	17	55	रोहि.	8	50	गं.	5	32	मि. 21	03	5	30	19	24	5	34	19	18	5	43	19	20	5	18	18	48	8	भ. 17/56 बाद,
									वृ.	28	15																				
	9	14	मं.	17	14	मृग.	9	06	ध्रु.	26	28	मिथुन		5	31	19	24	5	34	19	18	5	43	19	20	5	18	18	48	9	भ. 5/39 तक, मंगल पुष्य में 13/14,
	10	30	बु.	15	56	आर्द्रा	8	45	व्या.	24	13	क. 26	08	5	31	19	24	5	35	19	18	5	44	19	20	5	19	18	48	10	
आषाढ़ शुक्ल पक्ष	11	1	गु.	14	08	पुन.	7	52	ह.	21	36	कर्क		5	32	19	24	5	35	19	18	5	44	19	20	5	19	18	48	11	*आषाढ़ शुक्ल पक्ष प्रारम्भ,* चन्द्रदर्शन, बुध पूर्व में अस्त 13/25,
	12	2	शु.	11	57	पु.	6	34	व.	18	42	सिं. 28	58	5	32	19	24	5	36	19	17	5	45	19	20	5	20	18	48	12	*रथयात्रा (पुरी),*
						आश्ले.	28	58																							
	13	3	श.	9	31	मघा	27	12	सि.	15	37	सिंह		5	33	19	23	5	36	19	17	5	45	19	19	5	20	18	47	13	भ. 20/14 बाद,
	14	4/5	र.	6	56	पू.फा.	25	24	व्य.	12	26	सिंह		5	33	19	23	5	37	19	17	5	46	19	19	5	21	18	47	14	भ. 6/56 तक, बुध पुन. में 14/48,
				28	19																										
	15	6	चं.	25	47	उ.फा.	23	39	व.	9	16	क. 6	57	5	34	19	23	5	37	19	17	5	46	19	19	5	21	18	47	15	कुमारषष्ठी,
	16	7	मं.	23	24	हस्त	22	03	प.	6	10	कन्या		5	35	19	22	5	38	19	16	5	47	19	18	5	22	18	47	16	भ. 23/24 बाद, *सं. सूर्य कर्क में 20/01,* पुण्यकाल 8/02 बाद, विवस्वत् सप्तमी,
									शि.	27	12																				
	17	8	बु.	21	14	चित्रा	20	39	सि.	24	25	तु. 9	19	5	35	19	22	5	38	19	16	5	47	19	18	5	22	18	46	17	भ. 10/17 तक, शुक्र पू. फा. में 13/11,
	18	9	गु.	19	19	स्वा.	19	31	सा.	21	51	तुला		5	36	19	21	5	39	19	16	5	48	19	18	5	23	18	46	18	
	19	10	शु.	17	41	विशा.	18	40	शु.	19	32	वृ. 12	51	5	36	19	21	5	39	19	15	5	48	19	17	5	23	18	46	19	भ. 28/59 बाद, *बुध कर्क में 7/22,*
	20	11	श.	16	22	अनु.	18	08	शु.	17	27	वृश्चिक		5	37	19	21	5	40	19	15	5	49	19	17	5	23	18	45	20	भ. 16/22 तक, सूर्य पुष्य में 7/53, बुध पुष्य में 20/49, गुरु पुष्य 1 में (A)
	21	12	र.	15	22	ज्ये.	17	55	ब्र.	15	39	ध. 17	55	5	37	19	20	5	40	19	14	5	49	19	17	5	24	18	45	21	प्रदोष व्रत,
	22	13	चं.	14	44	मूल	18	03	ऐं.	14	07	धनु		5	38	19	20	5	41	19	14	5	50	19	16	5	24	18	45	22	
	23	14	मं.	14	28	पू.षा.	18	33	वै.	12	53	म. 24	45	5	39	19	19	5	41	19	13	5	50	19	16	5	25	18	44	23	भ. 14/28 से 26/29 तक, *शनि मृग. 3 मिथुन में 7/57,* सूर्य सायन सिंह में,(B)
	24	15	बु.	14	37	उ.षा.	19	28	वि.	11	59	मकर		5	39	19	18	5	42	19	13	5	51	19	15	5	25	18	44	24	गुरु पूर्णिमा (व्यास पूजा), चातुर्मास्य व्रत–नियम प्रारम्भ,
श्रावण कृष्ण पक्ष	25	1	गु.	15	13	श्रव.	20	50	प्री.	11	26	मकर		5	40	19	18	5	42	19	12	5	51	19	15	5	26	18	43	25	*श्रावण कृष्ण पक्ष प्रारम्भ,*
	26	2	शु.	16	17	धनि.	22	39	आ.	11	15	कुं. 9	41	5	40	19	17	5	43	19	12	5	52	19	14	5	26	18	43	26	भ. 28/59 बाद, पंचक प्रारम्भ 9/41,
	27	3	श.	17	48	शत.	24	55	सौ.	11	26	कुम्भ		5	41	19	17	5	43	19	11	5	52	19	14	5	26	18	42	27	भ. 17/48 तक, बुध आश्ले. में 6/40, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत,
	28	4	र.	19	45	पू.भा.	27	33	शो.	11	56	मी. 20	52	5	42	19	16	5	44	19	11	5	53	19	13	5	27	18	42	28	
	29	5	चं.	22	00	उ.भा.	–	–	अ.	12	42	मीन		5	42	19	15	5	45	19	10	5	53	19	13	5	27	18	41	29	शुक्र उ.फा. में 17/04,
	30	6	मं.	24	25	उ.भा.	6	27	सु.	13	39	मीन		5	43	19	15	5	45	19	09	5	54	19	12	5	28	18	41	30	भ. 24/25 बाद, मंगल आश्ले. में 8/07,
	31	7	बु.	26	47	रेव.	9	26	धृ.	14	37	मे. 9	26	5	43	19	14	5	46	19	09	5	54	19	12	5	28	18	40	31	भ. 13/37 तक, पंचक समाप्त 9/26, *गुरु उदित 11/45,*

गुरु अस्त
7 जुलाई

गुरु उदित
31 जुलाई

(A) 11/23, हरिशयनी एकादशी व्रत (स.), (B) 5/46, श्रीसत्यनारायण व्रत, शिवशयनोत्सव,

तिथ्यादि पञ्चांग (भा. स्टैं. टा.)

मास पक्ष	अग. 2002 ई.	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि-प्रवेशकाल		चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा–ग्रहराशि–नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.		
श्रावण कृष्ण पक्ष	1	8	गु.	28	52	अश्वि.	12	18	शू.	15	27	मेष		5	44	19	13	5	46	19	08	5	55	19	11	5	29	18	40	1	*शुक्र कन्या में 19/42,* अगस्त प्रारम्भ,
	2	9	शु.	–	–	भर.	14	49	गं.	15	59	वृ. 21	22	5	45	19	13	5	47	19	07	5	55	19	10	5	29	18	39	2	*बुध मघा सिंह में 29/07,*
	3	9	श.	6	27	कृत्ति.	16	47	वृ.	16	04	वृष		5	45	19	12	5	47	19	07	5	56	19	10	5	30	18	38	3	भ. 19/00 बाद, सूर्य आश्ले. में 6/49, *गुरु बाल्य समाप्त 11/45,*
	4	10	र.	7	22	रोहि.	18	03	ध्रु.	15	36	वृष		5	46	19	11	5	48	19	06	5	56	19	09	5	30	18	38	4	भ. 7/22 तक, गुरु पुष्य 2 में 11/07, *बुध पश्चिम में उदय* 10/20,
	5	11	चं.	7	30	मृग.	18	32	व्या.	14	30	मि. 6	23	5	46	19	10	5	48	19	05	5	57	19	08	5	31	18	37	5	कामिका एकादशी व्रत (स.),
	6	12/	मं.	6	51	आर्द्रा	18	15	ह.	12	47	मिथुन		5	47	19	09	5	49	19	04	5	57	19	08	5	31	18	36	6	भ. 29/27 बाद, भौम प्रदोष व्रत,
		/13		29	27																										
	7	14	बु.	27	22	पुन.	17	15	व.	10	27	क. 11	33	5	48	19	08	5	50	19	04	5	58	19	07	5	32	18	36	7	भ. 16/29 तक,
	8	30	गु.	24	45	पु.	15	39	सि.	7	38	कर्क		5	48	19	08	5	50	19	03	5	58	19	06	5	32	18	35	8	हरियाली अमावस,
									व्य.	28	20																				
श्रावण शुक्ल पक्ष	9	1	शु.	21	46	आश्ले.	13	36	व.	24	47	सिं. 13	36	5	49	19	07	5	51	19	02	5	59	19	05	5	32	18	34	9	*श्रावण शुक्ल पक्ष प्रारम्भ,*
	10	2	श.	18	34	मघा	11	16	प.	21	04	सिंह		5	50	19	06	5	51	19	01	5	59	19	04	5	33	18	34	10	चन्द्रदर्शन, बुध पू.फा. में 22/30, वक्री यूरेनस धनि. 3 में 24/10,
	11	3	र.	15	19	पू.फा.	8	50	शि.	17	19	क. 14	14	5	50	19	05	5	52	19	00	6	00	19	04	5	33	18	33	11	भ. 25/43 बाद, शुक्र हस्त में 8/47, मधुश्रवा तृतीया (*सन्धारा तीज*),
	12	4	चं.	12	10	उ.फा.	6	27	सि.	13	41	कन्या		5	51	19	04	5	52	19	00	6	00	19	03	5	34	18	32	12	भ. 12/10 तक,
						हस्त	28	17																							
	13	5	मं.	9	16	चित्रा	26	26	सा.	10	15	तु. 15	19	5	51	19	03	5	53	18	59	6	01	19	02	5	34	18	31	13	श्रीकल्कि जयन्ती,
	14	6/	बु.	6	43	स्वा.	25	01	शु.	7	06	तुला		5	52	19	02	5	53	18	58	6	01	19	01	5	35	18	30	14	भ. 28/35 बाद,गोस्वामी श्रीतुलसीदास जयन्ती,
		/7		28	35				शु.	28	19																				
	15	8	गु.	26	57	विशा.	24	04	ब्र.	25	55	वृ. 18	15	5	53	19	01	5	54	18	57	6	02	19	00	5	35	18	30	15	भ. 15/42 तक, *श्रीदुर्गाष्टमी,* भारत स्वतन्त्रता दिवस,
	16	9	शु.	25	47	अनु.	23	36	ऐं.	23	55	वृश्चिक		5	53	19	00	5	54	18	56	6	02	18	59	5	36	18	29	16	*सं. सूर्य मघा सिंह में 26/23,* पुण्यकाल अगले दिन मध्याह्न तक,
	17	10	श.	25	07	ज्ये.	23	36	वै.	22	18	ध. 23	36	5	54	18	59	5	55	18	55	6	03	18	58	5	36	18	28	17	
	18	11	र.	24	53	मूल	24	03	वि.	21	03	धनु		5	54	18	58	5	56	18	54	6	03	18	58	5	36	18	27	18	भ. 12/57 से 24/53 तक, पवित्रा एकादशी व्रत (स.),
	19	12	चं.	25	05	पू.षा.	24	56	प्री.	20	08	धनु		5	55	18	57	5	56	18	53	6	04	18	57	5	37	18	26	19	*मंगल मघा सिंह में 29/43,* बुध उ.फा. में 18/29, गुरु पुष्य 3 में 18/32,
	20	13	मं.	25	41	उ.षा	26	11	आ.	19	32	म. 7	12	5	56	18	56	5	57	18	52	6	04	18	56	5	37	18	25	20	भौम प्रदोष व्रत,
	21	14	बु.	26	39	श्रव.	27	48	सौ.	19	13	मकर		5	56	18	55	5	57	18	51	6	05	18	55	5	38	18	24	21	भ. 26/39 बाद, *बुध कन्या में 29/19,*
	22	15	गु.	27	59	धनि.	29	46	शो.	19	12	कुं. 16	44	5	57	18	54	5	58	18	50	6	05	18	54	5	38	18	23	22	भ. 15/16 तक, पंचक प्रारम्भ 16/44, श्रीसत्यनारायण व्रत, रक्षाबन्धन (राखी) (A)
भाद्रपद कृष्ण पक्ष	23	1	शु.	29	41	शत.	–	–	अ.	19	27	कुम्भ		5	57	18	53	5	58	18	49	6	06	18	53	5	39	18	22	23	*भाद्रपद कृष्ण पक्ष प्रारम्भ,* सूर्य सायन कन्या में 12/48, *शरद् ऋतु प्रारम्भ,*
	24	2	श.	–	–	शत.	8	05	सु.	19	58	मी. 28	02	5	58	18	52	5	59	18	48	6	06	18	52	5	39	18	22	24	शुक्र चित्रा में 20/25, राहु रोहि. 3, केतु ज्येष्ठा 1 में 18/03,
	25	2	र.	7	42	पू.भा.	10	43	धृ.	20	43	मीन		5	58	18	50	5	59	18	47	6	07	18	51	5	39	18	21	25	भ. 20/49 बाद,
	26	3	चं.	10	00	उ.भा.	13	36	शू.	21	39	मीन		5	59	18	49	6	00	18	46	6	07	18	50	5	40	18	20	26	भ. 10/00 तक, शनि मृग. 4 में 17/51, प्लूटो मार्गी 16/29, श्रीगणेश (B)
	27	4	मं.	12	29	रेव.	16	38	गं.	22	39	मे. 16	38	6	00	18	48	6	00	18	45	6	07	18	49	5	40	18	19	27	पंचक समाप्त 16/38,
	28	5	बु.	14	59	अश्वि.	19	39	वृ.	23	38	मेष		6	00	18	47	6	01	18	44	6	08	18	48	5	41	18	18	28	
	29	6	गु.	17	19	भर.	22	29	ध्रु.	24	25	वृ. 29	08	6	01	18	46	6	01	18	42	6	08	18	47	5	41	18	17	29	भ. 17/19 बाद,
	30	7	शु.	19	15	कृत्ति.	24	54	व्या.	24	52	वृष		6	01	18	45	6	02	18	41	6	09	18	46	5	41	18	16	30	भ. 6/21 तक, सूर्य पू.फा. में 24/25, बुध हस्त में 14/59, (C)
	31	8	श.	20	37	रोहि.	26	43	ह.	24	50	वृष		6	02	18	43	6	02	18	40	6	09	18	45	5	42	18	15	31	*शुक्र तुला में 27/13,* श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत, (वैष्णवों=सन्यासियों के लिए).

(A) (12 बजकर 07 मिनट तक,– देखें पृष्ठ 131), (B) (संकष्ट) चतुर्थी व्रत, (C) श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत (स्मार्तों=गृहस्थियों के लिए), (चन्द्रोदय व्यापिनी अष्टमी में), (चन्द्रोदय रात्रि 11घं. 1 मि.), (देखें पृष्ठ 132),

तिथ्यादि पञ्चांग (भा. स्टैं. टा.)

मास पक्ष	सितं. 2002 ई.	तिथि	वार	समाप्तिकाल घं. मि.	नक्षत्र	समाप्तिकाल घं. मि.	योग	समाप्तिकाल घं. मि.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल घं. मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मि.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मि.	दिल्ली सूर्योदय घं. मि.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मि.	जयपुर सूर्योदय घं. मि.	जयपुर सूर्यास्त घं. मि.	वाराणसी सूर्योदय घं. मि.	वाराणसी सूर्यास्त घं. मि.	तारीख	भद्रा–ग्रहराशि–नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
भाद्रपद कृष्ण पक्ष	1	9	र	21 13	मृग.	27 46	व.	24 12	मि. 15 21	6 02	18 42	6 03	18 39	6 10	18 44	5 42	18 14	1	*सितम्बर प्रारम्भ, श्रीगुग्गा नवमी,*
	2	10	चं.	20 59	आर्द्रा	27 59	सि.	22 53	मिथुन	6 03	18 41	6 03	18 38	6 10	18 42	5 42	18 13	2	भ. 9/13 से 20/59 तक,
	3	11	मं.	19 53	पुन.	27 21	व्य.	20 53	क. 21 35	6 04	18 40	6 04	18 37	6 11	18 41	5 43	18 12	3	अजा एकादशी व्रत (स.), *अगस्त्य उदित,*
	4	12	बु.	17 58	पु.	25 56	व.	18 14	कर्क	6 04	18 39	6 04	18 36	6 11	18 40	5 43	18 11	4	गुरु पुष्य 4 में 19/21, प्रदोष व्रत,
	5	13	गु.	15 21	आश्ले.	23 53	प.	15 01	सिं. 23 53	6 05	18 37	6 05	18 35	6 11	18 39	5 44	18 10	5	भ. 15/21 से 25/50 तक,
	6	14	शु.	12 12	मघा	21 21	शि.	11 20	सिंह	6 05	18 36	6 05	18 33	6 12	18 38	5 44	18 09	6	कुशोत्पाटिनी अमा,
	7	30/	श.	08 40	पू.फा.	18 31	सि.	7 20	क. 23 48	6 06	18 35	6 06	18 32	6 12	18 37	5 44	18 07	7	*शनैश्चरी अमा,*
		/1		28 57			सा.	27 10											
भाद्रपद शुक्ल पक्ष	8	2	र	25 15	उ.फा.	15 36	शु.	22 59	कन्या	6 06	18 34	6 06	18 31	6 13	18 36	5 45	18 06	8	*भाद्रपद शुक्ल पक्ष प्रारम्भ,* चन्द्रदर्शन, शुक्र स्वाती में 25/17, (A)
	9	3	चं.	21 42	हस्त	12 46	शु.	18 56	तु. 23 27	6 07	18 32	6 07	18 30	6 13	18 35	5 45	18 05	9	मंगल पू.फा. में 28/36, श्रीवराह जयन्ती,
	10	4	मं.	18 30	चित्रा	10 12	ब्र.	15 09	तुला	6 08	18 31	6 07	18 29	6 14	18 34	5 46	18 04	10	भ. 8/03 से 18/30 तक, सिद्धि विनायक व्रत, *कलंक चतुर्थी* (चन्द्रास्त 20घं. 59मि.),
	11	5	बु.	15 47	स्वा.	8 05	ऐं.	11 45	वृ. 24 50	6 08	18 30	6 08	18 28	6 14	18 33	5 46	18 03	11	ऋषि पंचमी,
	12	6	गु.	13 38	विशा.	6 30	वै.	8 48	वृश्चिक	6 09	18 29	6 08	18 26	6 14	18 31	5 46	18 02	12	
					अनु.	29 32													
	13	7	शु.	12 08	ज्ये.	29 13	वि.	6 22	ध. 29 13	6 09	18 27	6 09	18 25	6 15	18 30	5 47	18 01	13	भ. 12/08 से 23/38 तक, सूर्य उ.फा. में 18/11, *बुध पश्चिम में अस्त* 9/34,(B)
							प्री.	28 28											
	14	8	श.	11 18	मूल	29 33	आ.	27 05	धनु	6 10	18 26	6 09	18 24	6 15	18 29	5 47	18 00	14	*बुध वक्री* 25/08, श्रीराधाष्टमी,
	15	9	र.	11 05	पू.षा.	– –	सौ.	26 10	धनु	6 10	18 25	6 10	18 23	6 16	18 28	5 47	17 59	15	श्रीचन्द नवमी,
	16	10	चं.	11 28	पू.षा.	6 27	शो.	25 41	म. 12 46	6 11	18 24	6 10	18 22	6 16	18 27	5 48	17 58	16	भ. 23/51 बाद, सं. सूर्य कन्या में 28/17, पुण्यकाल अगले दिन मध्याह्न तक,
	17	11	मं.	12 21	उ.षा.	7 52	अ.	25 32	मकर	6 12	18 22	6 11	18 20	6 17	18 26	5 48	17 57	17	भ. 12/21 तक, पद्मा एकादशी व्रत (स.),
	18	12	बु.	13 40	श्रव.	9 43	सु.	25 41	कुं. 22 46	6 12	18 21	6 11	18 19	6 17	18 25	5 49	17 56	18	पंचक प्रारम्भ 22/46, प्रदोष व्रत, *श्रीवामन जयन्ती,*
	19	13	गु.	15 20	धनि.	11 54	धृ.	26 05	कुम्भ	6 13	18 20	6 11	18 18	6 17	18 23	5 49	17 55	19	
	20	14	शु.	17 17	शत.	14 23	शू.	26 42	कुम्भ	6 13	18 18	6 12	18 17	6 18	18 22	5 49	17 53	20	भ. 17/17 बाद, अनन्त चतुर्दशी व्रत,
	21	15	श.	19 29	पू.भा.	17 06	गं.	27 28	मी. 10 24	6 14	18 17	6 12	18 16	6 18	18 21	5 50	17 52	21	भ. 06/22 तक, गुरु आश्ले. 1 में 29/21, श्रीसत्यनारायण व्रत, पूर्णिमा श्राद्ध .
आश्विन कृष्ण पक्ष	22	1	र.	21 53	उ.भा.	20 00	वृ.	28 22	मीन	6 14	18 16	6 13	18 14	6 19	18 20	5 50	17 51	22	*आश्विन कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, मंगल उदय* 23/28, *श्राद्धपक्ष (महालय) प्रारम्भ,*
	23	2	चं.	24 23	रेव.	23 01	ध्रु.	29 21	मे. 23 01	6 15	18 15	6 13	18 13	6 19	18 19	5 50	17 50	23	पंचक समाप्त 23/01, सूर्य सायन तुला में 10/27, दक्षिण गोल प्रारम्भ,
	24	3	मं.	26 56	अश्वि.	26 04	व्या.	– –	मेष	6 15	18 13	6 14	18 12	6 20	18 18	5 51	17 49	24	भ. 13/40 से 26/56 तक,
	25	4	बु.	29 21	भर.	29 00	व्या.	6 19	मेष	6 16	18 12	6 14	18 11	6 20	18 17	5 51	17 48	25	श्रीगणेश चतुर्थी व्रत,
	26	5	गु.	– –	कृत्ति.	– –	ह.	7 11	वृ. 11 42	6 17	18 11	6 15	18 10	6 20	18 15	5 52	17 47	26	
	27	5	शु.	7 31	कृत्ति.	7 41	व.	7 51	वृष	6 17	18 10	6 15	18 08	6 21	18 14	5 52	17 46	27	सूर्य हस्त में 9/45,
	28	6	श.	9 13	रोहि.	9 56	सि.	8 09	मि. 22 51	6 18	18 08	6 16	18 07	6 21	18 13	5 52	17 45	28	भ. 9/13 से 21/50 तक, वक्री बुध उ.फा. 4 में 12/47,
	29	7	र.	10 17	मृग.	11 35	व्य.	7 59	मिथुन	6 18	18 07	6 16	18 06	6 22	18 12	5 53	17 44	29	*श्रीमहालक्ष्मी व्रत समाप्त,*
	30	8	चं.	10 36	आर्द्रा	12 29	व.	7 15	मिथुन	6 19	18 06	6 17	18 05	6 22	18 11	5 53	17 43	30	मंगल उ.फा. में 27/34,
							प.	29 51											

(A) मेला बाबा गोसाई ' आणां–कुराली (पं.), (B) *श्रीमहालक्ष्मी व्रत प्रारम्भ,*

वि. सं. 2059

तिथ्यादि पञ्चांग (भा. स्टैं. टा.)

अक्तूबर सन् 2002 ई.

मास पक्ष	अक्तू. 2002 ई.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घं.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घं.	मि.	योग	समाप्ति-काल घं.	मि.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	तारीख	भद्रा–ग्रहराशि–नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
आश्विन कृष्ण पक्ष	1	9	मं.	10	05	पुन.	12	34	शि.	27	46	क. 6	37	6	20	18	04	6	18	18	04	6	23	18	10	5	54	17	42	1	भ. 21/31 बाद, शुक्र विशा. में 7/09, *अक्तूबर प्रारम्भ,*
	2	10	बु.	8	44	पु.	11	49	सि.	25	03	कर्क		6	20	18	03	6	18	18	02	6	23	18	09	5	54	17	40	2	भ. 8/44 तक, इन्दिरा एकादशी व्रत (स्मा.),
	3	11/	गु.	6	35	आश्ले.	10	18	सा.	21	44	सिं. 10	18	6	21	18	02	6	19	18	01	6	24	18	08	5	54	17	39	3	*बुध पूर्व में उदय* 28/02, इन्दिरा एकादशी व्रत (वै.),
		/12		27	45																										
	4	13	शु.	24	24	मघा	8	07	शु.	17	58	सिंह		6	21	18	01	6	19	18	00	6	24	18	06	5	55	17	38	4	भ. 24/24 बाद, प्रदोष व्रत,
						पू.फा.	29	27																							
	5	14	श.	20	41	उ.फा.	26	28	शु.	13	50	क. 10	44	6	22	18	00	6	20	17	59	6	25	18	05	5	55	17	37	5	भ. 10/34 तक,
	6	30	र.	16	48	हस्त	23	22	ब्र.	9	31	कन्या		6	23	17	58	6	20	17	58	6	25	18	04	5	56	17	36	6	*मंगल कन्या में 9/9,* बुध मार्गी 24/56, सर्वपितृश्राद्ध, *श्राद्ध समाप्त,* (A)
									ऐं.	29	09																				
आश्विन शुक्ल पक्ष	7	1	चं.	12	56	चित्रा	20	20	वै.	24	53	तु. 9	50	6	23	17	57	6	21	17	57	6	26	18	03	5	56	17	35	7	*आश्विन शुक्ल पक्ष प्रारम्भ,* चन्द्रदर्शन, *शारद नवरात्र प्रारम्भ,*
	8	2/3	मं.	9	16	स्वा.	17	35	वि.	20	53	तुला		6	24	17	56	6	21	17	56	6	26	18	02	5	57	17	34	8	
				29	58																										
	9	4	बु.	27	12	विशा.	15	16	प्री.	17	16	वृ. 9	48	6	25	17	55	6	22	17	54	6	27	18	01	5	57	17	33	9	भ. 16/31 से 27/12 तक,
	10	5	गु.	25	05	अनु.	13	32	आ.	14	08	वृश्चिक		6	25	17	54	6	22	17	53	6	27	18	00	5	57	17	32	10	सूर्य चित्रा में 22/41, शुक्र वक्री 24/05, उपांगललिता व्रत,
	11	6	शु.	23	42	ज्ये.	12	29	सौ.	11	34	ध. 12	29	6	26	17	52	6	23	17	52	6	28	17	59	5	58	17	31	11	*शनि वक्री* 18/31, *सरस्वती आवाहन,*
	12	7	श.	23	05	मूल	12	11	शो.	9	35	धनु		6	27	17	51	6	24	17	51	6	28	17	58	5	58	17	30	12	भ. 23/05 बाद, गुरु आश्ले. 2 में 12/21, *सरस्वती पूजन,*
	13	8	र.	23	12	पू.षा.	12	37	अ.	8	13	म. 18	51	6	27	17	50	6	24	17	50	6	29	17	57	5	59	17	29	13	भ. 11/03 तक,*श्रीदुर्गाष्टमी, महाष्टमी,*
	14	9	चं.	24	01	उ.षा.	13	45	सु.	7	25	मकर		6	28	17	49	6	25	17	49	6	29	17	56	5	59	17	28	14	*सरस्वती विसर्जन, महानवमी, नवरात्र समाप्त,*
	15	10	मं.	25	24	श्रव.	15	30	धृ.	7	07	कुं. 28	33	6	29	17	48	6	25	17	48	6	30	17	55	6	00	17	27	15	पंचक प्रारम्भ 28/33,बुध हस्त में 10/22, *विजयादशमी (दशहरा),* अपराजिता (B)
	16	11	बु.	27	15	धनि.	17	43	शू.	7	14	कुम्भ		6	29	17	47	6	26	17	47	6	30	17	54	6	00	17	27	16	भ. 14/16 से 27/15 तक, पापांकुशा एकादशी व्रत (स.), भरत मिलाप,
	17	12	गु.	29	25	शत.	20	18	गं.	7	41	कुम्भ		6	30	17	46	6	27	17	46	6	31	17	53	6	01	17	26	17	*सं. सूर्य तुला में 16/15,* पुण्यकाल 9/52 बाद,
	18	13	शु.	–	–	पू.भा.	23	07	वृ.	8	21	मी. 16	24	6	31	17	44	6	27	17	45	6	31	17	52	6	01	17	25	18	प्रदोष व्रत,
	19	13	श.	7	49	उ.भा.	26	05	ध्रु.	9	10	मीन		6	31	17	43	6	28	17	44	6	32	17	51	6	02	17	24	19	वक्री शुक्र स्वाती 4 में 30/31, *शुक्र वार्धक्य प्रारम्भ 16/36,*
	20	14	र.	10	19	रेव.	29	05	व्या.	10	04	मे. 29	05	6	32	17	42	6	29	17	43	6	33	17	50	6	02	17	23	20	भ. 10/19 से 23/14 तक, पंचक समाप्त 29/05,नेपच्यून मार्गी 19/23, (C)
	21	15	चं.	12	50	अश्वि.	–	–	ह.	10	59	मेष		6	33	17	41	6	29	17	42	6	33	17	49	6	03	17	22	21	मंगल हस्त में 25/32, श्रीवाल्मीकि जयन्ती, *कार्तिक स्नान प्रारम्भ,*
कार्तिक कृष्ण पक्ष	22	1	मं.	15	18	अश्वि.	8	03	व.	11	51	मेष		6	33	17	40	6	30	17	41	6	34	17	48	6	03	17	21	22	*कार्तिक कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, शुक्र पश्चिम में अस्त 16/36,*
	23	2	बु.	17	37	भर.	10	54	सि.	12	37	वृ. 17	35	6	34	17	39	6	30	17	40	6	34	17	47	6	04	17	20	23	*सूर्य सायन वृश्चिक* में 19/49, हेमन्त ऋतु प्रारम्भ,
	24	3	गु.	19	41	कृत्ति.	13	32	व्य.	13	13	वृष		6	35	17	38	6	31	17	39	6	35	17	47	6	05	17	20	24	भ. 6/41 से 19/41 तक, सूर्य स्वाती में 9/16, बुध चित्रा में 11/36,
	25	4	शु.	21	24	रोहि.	15	51	व.	13	33	मि. 28	52	6	36	17	37	6	32	17	38	6	36	17	46	6	05	17	19	25	श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, *करक चतुर्थी* (करवा चौथ) (चन्द्रोदय 20 घं.18 मि.),
	26	5	श.	22	38	मृग.	17	45	प.	13	34	मिथुन		6	36	17	36	6	32	17	37	6	36	17	45	6	06	17	18	26	राहु रोहि. 2, केतु अनु. 4 में 15/40,
	27	6	र.	23	17	आर्द्रा	19	05	शि.	13	09	मिथुन		6	37	17	35	6	33	17	36	6	37	17	44	6	06	17	17	27	भ. 23/17 बाद,
	28	7	चं.	23	15	पुन.	19	47	सि.	12	14	क. 13	40	6	38	17	34	6	34	17	36	6	37	17	43	6	07	17	16	28	भ. 11/21 तक, बुध तुला में 12/21,
	29	8	मं.	22	30	पु.	19	46	सा.	10	46	कर्क		6	39	17	33	6	35	17	35	6	38	17	42	6	07	17	16	29	अहोई अष्टमी (पं.),
	30	9	बु.	21	01	आश्ले.	19	03	शु.	08	44	सिं. 19	03	6	39	17	33	6	35	17	34	6	39	17	42	6	08	17	15	30	*बुध पूर्व में अस्त 22/39,*
									शु.	30	07																				
	31	10	गु.	18	51	मघा	17	40	ब्र.	26	59	सिंह		6	40	17	32	6	36	17	33	6	39	17	41	6	09	17	14	31	भ. 8/01 से 18/51 तक,

शुक्र अस्त
22 अक्तू.

(A) गजच्छाया योग (16 घं. 48 मि. तक), (B) पूजन, सीमोल्लंघन, (C) श्रीसत्यनारायण व्रत, शरत्पूर्णिमा,

तिथ्यादि पञ्चांग (भा. स्टैं. टा.)

मास पक्ष	नवं. 2002 ई.	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि-प्रवेशकाल		चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा–ग्रहराशि–नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.		
कार्तिक कृष्ण पक्ष	1	11	शु.	16	7	पू.फा.	15	40	ऐं.	23	25	क. 21	06	6	41	17	31	6	37	17	32	6	40	17	40	6	09	17	14	1	बुध स्वाती में 12/16, रमा एकादशी व्रत(स.), *नवम्बर प्रारम्भ,*
	2	12	श.	12	54	उ.फा.	13	13	वै.	19	30	कन्या		6	42	17	30	6	37	17	31	6	41	17	39	6	10	17	13	2	शनि प्रदोष व्रत, यम को दीपदान, धन त्रयोदशी,
	3	13/	र.	8	23	हस्त	10	27	वि.	15	21	तु. 21	01	6	43	17	29	6	38	17	31	6	41	17	39	6	11	17	12	3	भ. 9/23 से 19/34 तक, *नरक चतुर्दशी,* (आगामी अरुणोदय वाली), श्रीहनुमान्(A)
		/14		29	43																										
	4	30	चं.	26	04	चित्रा	07	33	प्री.	11	08	तुला		6	43	17	28	6	39	17	30	6	42	17	38	6	11	17	12	4	यूरेनस मार्गी 11/57, सोमवती अमा, दीपावली, श्रीमहालक्ष्मी पूजन, (B)
						स्वा.	28	41																							
कार्तिक शुक्ल पक्ष	5	1	मं.	22	37	विशा.	26	02	आ.	06	58	वृ. 20	40	6	44	17	28	6	40	17	29	6	43	17	37	6	12	17	11	5	*कार्तिक शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, शुक्र पूर्व में उदित 11/44,* गोवर्धनपूजन,बलिपूजा, (C)
									सौ.	27	00																				
	6	2	बु.	19	32	अनु.	23	47	शो.	23	22	वृश्चिक		6	45	17	27	6	40	17	29	6	44	17	37	6	12	17	10	6	चन्द्रदर्शन, सूर्य विशा. में 17/23, *यम द्वितीया (भाईदूज),*
	7	3	गु.	16	58	ज्ये.	22	03	अ.	20	10	ध. 22	03	6	46	17	26	6	41	17	28	6	44	17	36	6	13	17	10	7	भ. 27/55 बाद,
	8	4	शु.	15	03	मूल	21	00	सु.	17	30	धनु		6	47	17	25	6	42	17	27	6	45	17	36	6	14	17	09	8	भ. 15/03 तक, *शुक्र बाल्य समाप्त 11/44,*
	9	5	श.	13	52	पू.षा.	20	42	धृ.	15	25	म. 26	45	6	48	17	25	6	43	17	27	6	46	17	35	6	15	17	09	9	बुध विशा. में 14/46,
	10	6	र.	13	29	उ.षा.	21	10	शू.	13	59	मकर		6	48	17	24	6	43	17	26	6	46	17	35	6	15	17	08	10	
	11	7	चं.	13	53	श्रव.	22	24	गं.	13	09	मकर		6	49	17	23	6	44	17	26	6	47	17	34	6	16	17	08	11	भ. 13/53 से 26/22 तक, मंगल चित्रा में 22/01, गुरु आश्ले. 3 में 7/27,
	12	8	मं.	15	01	धनि.	24	18	वृ.	12	53	कुं. 11	16	6	50	17	23	6	45	17	25	6	48	17	33	6	17	17	07	12	पंचक प्रारम्भ 11/16, गोपाष्टमी,
	13	9	बु.	16	47	शत.	26	43	ध्रु.	13	05	कुम्भ		6	51	17	22	6	46	17	24	6	49	17	33	6	17	17	07	13	अक्षय नवमी,
	14	10	गु.	18	59	पू.भा.	29	31	व्या.	13	39	मी. 22	48	6	52	17	22	6	47	17	24	6	49	17	33	6	18	17	06	14	
	15	11	शु.	21	28	उ.भा.	–	–	ह.	14	26	मीन		6	53	17	21	6	47	17	23	6	50	17	32	6	19	17	06	15	भ. 8/12 से 21/28 तक, बुध वृश्चिक में 20/16, देवप्रबोधिनी एकादशीव्रत (D)
	16	12	श.	24	04	उ.भा.	8	31	व.	15	20	मीन		6	53	17	21	6	48	17	23	6	51	17	32	6	19	17	06	16	*सं. सूर्य वृश्चिक में 16/05,* पुण्यकाल 09/40 बाद, वक्री शुक्र चित्रा 4 में (E)
	17	13	र.	26	36	रेव.	11	32	सि.	16	14	मे. 11	32	6	54	17	20	6	49	17	23	6	52	17	31	6	20	17	05	17	पंचक समाप्त 11/32, बुध अनु. में 22/46, प्रदोष व्रत, बलिदान दिन ला.लाजपतराय,
	18	14	चं.	28	58	अश्वि.	14	28	व्य.	17	02	मेष		6	55	17	20	6	50	17	22	6	52	17	31	6	21	17	05	18	भ. 28/58 बाद, वैकुण्ठ चतुर्दशी,
	19	15	मं.	–	–	भर.	17	10	व.	17	40	वृ. 23	49	6	56	17	19	6	51	17	22	6	53	17	31	6	22	17	05	19	भ. 18/03 तक, सूर्य अनु. में 23/27, श्रीसत्यनारायणव्रत, *श्रीगुरुनानक* (F)
	20	15	बु.	7	04	कृत्ति.	19	36	प.	18	03	वृष		6	57	17	19	6	51	17	22	6	54	17	30	6	22	17	05	20	
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष	21	1	गु.	8	49	रोहि.	21	41	शि.	18	11	वृष		6	58	17	19	6	52	17	21	6	55	17	30	6	23	17	04	21	*मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष प्रारम्भ,* शुक्र मार्गी 12/43,
	22	2	शु.	10	12	मृग.	23	22	सि.	18	00	मि. 10	34	6	59	17	18	6	53	17	21	6	55	17	30	6	24	17	04	22	भ. 22/43 बाद, *मंगल तुला में 7/39,* सूर्य सायन धनु में ;7/25,
	23	3	श.	11	08	आर्द्रा	24	37	सा.	17	29	मिथुन		6	59	17	18	6	54	17	21	6	56	17	30	6	24	17	04	23	भ. 11/08 तक, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत,
	24	4	र.	11	37	पुन.	25	24	शु.	16	36	क. 19	15	7	00	17	18	6	55	17	20	6	57	17	29	6	25	17	04	24	
	25	5	चं.	11	36	पु.	25	42	शु.	15	20	कर्क		7	01	17	17	6	55	17	20	6	58	17	29	6	26	17	04	25	
	26	6	मं.	11	03	आश्ले.	25	28	ब्र.	13	40	सिं. 25	28	7	02	17	17	6	56	17	20	6	58	17	29	6	27	17	03	26	भ. 11/03 से 22/36 तक, बुध ज्येष्ठा में 11/13, शुक्र स्वाती में 13/24,
	27	7	बु.	10	00	मघा	24	45	ऐं.	11	34	सिंह		7	03	17	17	6	57	17	20	6	59	17	29	6	27	17	03	27	वक्री शनि मृग. 3 में 9/52, कालाष्टमी (श्री भैरवाष्टमी),
	28	8/9	गु.	8	26	पू.फा.	23	32	वै.	09	05	क. 29	10	7	04	17	17	6	58	17	20	7	00	17	29	6	28	17	03	28	
				30	23				वि.	30	12																				
	29	10	शु.	27	55	उ.फा.	21	54	प्री.	27	00	कन्या		7	05	17	17	6	59	17	20	7	01	17	29	6	29	17	03	29	भ. 17/12 से 27/55 तक,
	30	11	श.	25	08	हस्त	19	54	आ.	23	31	तु. 30	49	7	05	17	16	6	59	17	20	7	02	17	29	6	30	17	03	30	उत्पन्ना एकादशी व्रत (स.),

शुक्र उदित
5 नवम्बर

(A) जयन्ती, (B) श्रीमहावीर निर्वाण (जैन), (C) अन्नकूट, विश्वकर्मापूजा, (D) (स.), *भीष्म पंचक प्रारम्भ,* (E) 14/24 , तुलसी विवाह, (F) जयन्ती, कार्तिक स्नान समाप्त, चातुर्मास्य व्रत–नियम समाप्त, *भीष्म पंचक समाप्त,*

मास पक्ष	दिसं. 2002 ई.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घं.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घं.	मि.	योग	समाप्ति-काल घं.	मि.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	तारीख	भद्रा–ग्रहराशि–नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
मार्ग. कृ. प.	1	12	र.	22	08	चित्रा	17	40	सौ.	19	51	तुला			7	06	17	16	7	00	17	20	7	02	17	29	6	30	17	03	1	*दिसम्बर प्रारम्भ,*
	2	13	चं.	19	01	स्वा.	15	18	शो.	16	06	तुला			7	07	17	16	7	01	17	19	7	03	17	29	6	31	17	03	2	म. 19/01 से 29/29 तक,सूर्य ज्येष्ठा में 27/46,मंगल स्वाती में 16/52,सोम प्रदोष व्रत,
	3	14	मं.	15	57	विशा.	12	57	अ.	12	21	वृ.	7	32	7	08	17	16	7	02	17	20	7	04	17	29	6	32	17	03	3	
	4	30	बु.	13	04	अनु.	10	45	सु.	8	44	वृश्चिक			7	09	17	16	7	02	17	20	7	04	17	29	6	32	17	03	4	*बुध मूल धनु में 26/14,* गुरु वक्री 17/53, प्लूटो ज्येष्ठा 3 में 7/36,
									धृ.	29	22																					
मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष	5	1	गु.	10	31	ज्ये.	8	52	शू.	26	21	ध.	6	52	7	09	17	16	7	03	17	20	7	05	17	29	6	33	17	04	5	*मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष प्रारम्भ,* चन्द्रदर्शन,
	6	2/3	शु.	8	26	मूल	7	27	गं.	23	46	धनु			7	10	17	16	7	04	17	20	7	06	17	29	6	34	17	04	6	
				30	56	पू.षा.	30	36																								
	7	4	श.	30	09	उ.षा.	30	26	वृ.	21	44	म.	12	29	7	11	17	17	7	05	17	20	7	07	17	29	6	35	17	04	7	म. 18/27 से 30/09 तक,
	8	5	र.	30	08	श्रव.	31	01	ध्रु.	20	17	मकर			7	12	17	17	7	05	17	20	7	07	17	29	6	35	17	04	8	शहीदी दिन श्री गुरु तेगबहादुर जी,
	9	6	चं.	30	53	धनि.	–	–	व्या.	19	25	कुं.	19	35	7	12	17	17	7	06	17	20	7	08	17	30	6	36	17	04	9	पंचक प्रारम्भ 19/35, *बुध पश्चिम में उदय* 12/22, चम्पा षष्ठी, गुह षष्ठी,
	10	7	मं.	–	–	धनि.	8	21	ह.	19	08	कुम्भ			7	13	17	17	7	07	17	20	7	09	17	30	6	37	17	05	10	
	11	7	बु.	8	21	शत.	10	21	व.	19	21	मी.	30	13	7	14	17	17	7	08	17	21	7	09	17	30	6	37	17	05	11	म. 8/21 से 21/19 तक,
	12	8	गु.	10	24	पू.भा.	12	54	सि.	19	57	मीन			7	15	17	17	7	08	17	21	7	10	17	30	6	38	17	05	12	
	13	9	शु.	12	51	उ.भा.	15	48	व्य.	20	47	मीन			7	15	17	18	7	09	17	21	7	11	17	31	6	38	17	05	13	बुध पू.षा. में 20/35,
	14	10	श.	15	28	रेव.	18	51	व.	21	41	मे.	18	51	7	16	17	18	7	10	17	21	7	11	17	31	6	39	17	06	14	म. 28/47 बाद, पंचक समाप्त 18/51,
	15	11	र.	18	03	अश्वि.	21	49	प.	22	31	मेष			7	17	17	18	7	10	17	22	7	12	17	31	6	40	17	06	15	म. 18/03 तक,सं. *सूर्य धनु में 30/44,* पुण्यकाल अगले दिन मध्याह्न तक, (A)
	16	12	चं.	20	22	भर.	24	32	शि.	23	09	वृ.	31	09	7	17	17	19	7	11	17	22	7	13	17	32	6	40	17	06	16	
	17	13	मं.	22	18	कृत्ति.	26	52	सि.	23	28	वृष			7	18	17	19	7	11	17	23	7	13	17	32	6	41	17	07	17	भौम प्रदोष व्रत,
	18	14	बु.	23	45	रोहि.	28	42	सा.	23	26	वृष			7	18	17	19	7	12	17	23	7	14	17	32	6	41	17	07	18	म. 23/45 बाद,
	19	15	गु.	24	40	मृग.	30	03	शु.	23	00	मि.	17	27	7	19	17	20	7	13	17	23	7	14	17	33	6	42	17	08	19	म. 12/17 तक, श्रीसत्यनारायण व्रत, श्रीदत्त जयन्ती,
पौष कृष्ण पक्ष	20	1	शु.	25	04	आर्द्रा	30	54	शु.	22	09	मिथुन			7	20	17	20	7	13	17	24	7	15	17	33	6	43	17	08	20	*पौष कृष्ण पक्ष प्रारम्भ,* शुक्र विशा. में 25/20,
	21	2	श.	24	59	पुन.	31	17	ब्र.	20	56	क.	25	14	7	20	17	21	7	14	17	24	7	15	17	34	6	43	17	09	21	सूर्य सायन मकर में 30/45, उत्तरायण शिशिर ऋतु प्रारम्भ,
	22	3	र.	24	27	पु.	31	16	ऐं.	19	22	कर्क			7	21	17	21	7	14	17	25	7	16	17	34	6	44	17	09	22	म. 12/46 से 24/27 तक,
	23	4	चं.	23	32	आश्ले.	30	53	वै.	17	30	सिं.	30	53	7	21	17	22	7	15	17	25	7	16	17	35	6	44	17	10	23	मंगल विशा. में 10/14, बुध उ.षा. में 9/22, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत,
	24	5	मं.	22	18	मघा	30	11	वि.	15	21	सिंह			7	21	17	22	7	15	17	26	7	17	17	35	6	45	17	10	24	
	25	6	बु.	20	46	पू.फा.	29	13	प्री.	12	58	सिंह			7	22	17	23	7	15	17	26	7	17	17	36	6	45	17	11	25	म. 20/46 बाद, बुध मकर में 30/56,
	26	7	गु.	18	59	उ.फा.	28	02	आ.	10	22	क.	10	56	7	22	17	23	7	16	17	27	7	18	17	37	6	45	17	11	26	म. 7/54 तक,
	27	8	शु.	17	00	हस्त	26	39	सौ.	7	36	कन्या			7	23	17	24	7	16	17	28	7	18	17	37	6	46	17	12	27	वक्री गुरु आश्ले. 2 में 23/41,
									शो.	28	41																					
	28	9	श.	14	51	चित्रा	25	06	अ.	25	40	तु.	13	54	7	23	17	25	7	17	17	28	7	18	17	38	6	46	17	12	28	म. 25/44 बाद, राहु रोहि. 1, केतु अनु. 3 में 13/17,
	29	10	र.	12	35	स्वा.	23	31	सु.	22	33	तुला			7	23	17	25	7	17	17	29	7	19	17	38	6	47	17	13	29	म. 12/35 तक, सूर्य पू.षा. में 9/01,
	30	11	चं.	10	15	विशा.	21	52	धृ.	19	25	वृ.	16	17	7	24	17	26	7	17	17	29	7	19	17	39	6	47	17	14	30	सफला एकादशी व्रत (स.),
	31	12/	मं.	7	55	अनु.	20	16	शू.	16	19	वृश्चिक			7	24	17	27	7	18	17	30	7	20	17	40	6	47	17	14	31	म. 29/41 बाद, भौम प्रदोष व्रत, सन् 2002 ई. पूर्ण,
		/13		29	41																											

(A) मोक्षदा एकादशी व्रत (स.), श्रीगीता जयन्ती,

तिथ्यादि पञ्चांग (भा. स्टैं. टा.)

मास पक्ष	जन. 2003 ई.	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा–ग्रहराशि–नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
पौष कृ.	1	14	बु.	27	38	ज्ये.	18	49	गं.	13	19	ध.	18	49	7	24	17	27	7	18	17	31	7	20	17	40	6	48	17	15	1	म. 16/38 तक, *शुक्र वृश्चिक में 11/12, जनवरी (सन् 2003 ई.) प्रारम्भ,*
	2	30	गु.	25	53	मूल	17	36	वृ.	10	29	धनु			7	25	17	28	7	18	17	32	7	20	17	41	6	48	17	16	2	बुध वक्री 23/49,
पौष शुक्ल पक्ष	3	1	शु.	24	33	पू.षा.	16	46	ध्रु.	7	56	म.	22	37	7	25	17	29	7	18	17	32	7	20	17	42	6	48	17	16	3	पौष शुक्ल पक्ष प्रारम्भ,
									व्या.	29	44																					
	4	2	श.	23	45	उ.षा.	16	24	ह.	27	58	मकर			7	25	17	30	7	19	17	33	7	21	17	42	6	48	17	17	4	चन्द्रदर्शन, शुक्र अनु. में 22/52,
	5	3	र.	23	34	श्रव.	16	38	व.	26	42	कुं.	28	59	7	25	17	30	7	19	17	34	7	21	17	43	6	49	17	18	5	पंचक प्रारम्भ 28/59,
	6	4	चं.	24	05	धनि.	17	30	सि.	25	58	कुम्भ			7	25	17	31	7	19	17	34	7	21	17	44	6	49	17	18	6	म. 11/44 से 24/05 तक,
	7	5	मं.	25	17	शत.	19	04	व्य.	25	46	कुम्भ			7	25	17	32	7	19	17	35	7	21	17	45	6	49	17	19	7	*मंगल वृश्चिक में 22/35,* बुध पश्चिम में अस्त 19/57,
	8	6	बु.	27	08	पू.भा.	21	14	व.	26	02	मी.	14	38	7	25	17	33	7	19	17	36	7	21	17	45	6	49	17	20	8	*वक्री शनि मृग. 2 वृष में 13/52,*
	9	7	गु.	29	28	उ.भा.	23	55	प.	26	40	मीन			7	25	17	34	7	19	17	37	7	21	17	46	6	49	17	21	9	म. 29/28 बाद, वक्री बुध उ.षा. 1 धनु में 22/44, (A)
	10	8	शु.	—	—	रेव.	26	54	शि.	27	32	मे.	26	54	7	25	17	34	7	19	17	38	7	21	17	47	6	49	17	21	10	म. 18/43 तक, पंचक समाप्त 26/54,
	11	8	श.	8	04	अश्वि.	29	58	सि.	28	27	मेष			7	25	17	35	7	19	17	38	7	21	17	48	6	49	17	22	11	सूर्य उ.षा. में 10/55,
	12	9	र.	10	42	भर.	—	—	सा.	29	14	मेष			7	25	17	36	7	19	17	39	7	21	17	48	6	49	17	23	12	मंगल अनु. में 26/41, वक्री बुध पू.षा. 4 में 12/44,
	13	10	चं.	13	06	भर.	8	50	शु.	29	43	वृ.	15	30	7	25	17	37	7	19	17	40	7	21	17	49	6	49	17	24	13	म. 26/08 बाद, लोहड़ी (पं., हरि., हि. प्र.),
	14	11	मं.	15	02	कृत्ति.	11	19	शु.	29	47	वृष			7	25	17	38	7	19	17	41	7	21	17	50	6	49	17	24	14	म. 15/02 तक, *सं. सूर्य मकर में 17/27,* पुण्यकाल 11/03 बाद, (B)
	15	12	बु.	16	22	रोहि.	13	13	ब्र.	29	21	मि.	25	56	7	25	17	39	7	19	17	42	7	21	17	51	6	49	17	25	15	प्रदोष व्रत,
	16	13	गु.	17	00	मृग.	14	29	ऐं.	28	24	मिथुन			7	25	17	40	7	19	17	42	7	21	17	52	6	49	17	26	16	बुध पूर्व में उदय 14/06,
	17	14	शु.	16	58	आर्द्रा	15	05	वै.	26	56	मिथुन			7	25	17	40	7	19	17	43	7	21	17	52	6	49	17	27	17	म. 16/58 से 28/42 तक, शुक्र ज्येष्ठा में 25/22, श्रीसत्यनारायण व्रत,
	18	15	श.	16	18	पुन.	15	04	वि.	25	00	क.	9	07	7	24	17	41	7	19	17	44	7	21	17	53	6	49	17	27	18	माघ स्नान प्रारम्भ,
माघ कृष्ण पक्ष	19	1	र.	15	06	पु.	14	32	प्री.	22	40	कर्क			7	24	17	42	7	19	17	45	7	21	17	54	6	49	17	28	19	माघ कृष्ण पक्ष प्रारम्भ,
	20	2	चं.	13	29	आश्ले.	13	35	आ.	20	04	सिं.	13	35	7	24	17	43	7	18	17	46	7	21	17	55	6	49	17	29	20	म. 24/33 बाद, यूरेनस घनि. 4 में 24/22, सूर्य सायन कुम्भ में 17/23,
	21	3	मं.	11	34	मघा	12	21	सौ.	17	14	सिंह			7	24	17	44	7	18	17	47	7	20	17	55	6	49	17	30	21	म. 11/34 तक, श्रीगणेश (संकष्ट) चतुर्थी व्रत (चन्द्रोदय 20घं. 53मि.),
	22	4/5	बु.	9	29	पू.फा.	10	56	शो.	14	18	क.	16	34	7	23	17	45	7	18	17	47	7	20	17	56	6	49	17	30	22	बुध मार्गी 30/38,
				31	19																											
	23	6	गु.	29	09	उ.फा.	9	27	अ.	11	19	कन्या			7	23	17	46	7	17	17	48	7	20	17	57	6	48	17	31	23	म. 29/09 बाद,
	24	7	शु.	27	04	हस्त	8	00	सु.	8	21	तु.	19	17	7	23	17	47	7	17	17	49	7	20	17	58	6	48	17	32	24	म. 16/06 तक, सूर्य श्रवण में 13/17,
						चित्रा	30	36	धृ.	29	26																					
	25	8	श.	25	04	स्वा.	29	19	शू.	26	37	तुला			7	22	17	48	7	17	17	50	7	19	17	59	6	48	17	33	25	
	26	9	र.	23	13	विशा.	28	10	गं.	23	54	वृ.	22	26	7	22	17	48	7	16	17	51	7	19	17	59	6	48	17	33	26	भारत गणतन्त्र दिवस,
	27	10	चं.	21	30	अनु.	27	09	वृ.	21	18	वृश्चिक			7	21	17	49	7	16	17	52	7	19	18	00	6	47	17	34	27	म. 10/21 से 21/30 तक, वक्री गुरु आश्ले. 1 में 15/22,
	28	11	मं.	19	58	ज्ये.	26	19	ध्रु.	18	50	ध.	26	19	7	21	17	50	7	16	17	52	7	18	18	01	6	47	17	35	28	नेपच्यून श्रव. 3 में 13/09, षट्तिला एकादशी व्रत (स.),
	29	12	बु.	18	37	मूल	25	42	व्या.	16	31	धनु			7	20	17	51	7	15	17	53	7	18	18	02	6	46	17	36	29	प्रदोष व्रत,
	30	13	गु.	17	31	पू.षा.	25	19	ह.	14	24	म.	31	17	7	20	17	52	7	15	17	54	7	17	18	03	6	46	17	36	30	म. 17/31 से 29/04 तक, *शुक्र मूल धनु में 8/01,*
	31	14	शु.	16	43	उ.षा.	25	16	व.	12	30	मकर			7	19	17	53	7	14	17	55	7	17	18	03	6	46	17	37	31	

(A) *अवतार दिन श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी,* (B) पुत्रदा एकादशी व्रत (स.),

वि. सं. 2059

तिथ्यादि पञ्चांग (भा. स्टैं. टा.)

फरवरी, सन् 2003 ई.

मास पक्ष	फर. 2003 ई.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घं.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घं.	मि.	योग	समाप्ति-काल घं.	मि.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	तारीख	भद्रा–ग्रहराशि–नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
मा. कृ. प.	1	30	श.	16	18	श्रव.	25	38	सि.	10	54	मकर		7	19	17	54	7	14	17	56	7	16	18	04	6	45	17	38	1	*फरवरी प्रारम्भ,* शनैश्चरी अमा, मौनी अमा, महोदय योग (A)
माघ शुक्ल पक्ष	2	1	र.	16	22	धनि.	26	28	व्य.	9	40	कु. 13	59	7	18	17	55	7	13	17	57	7	16	18	05	6	45	17	39	2	माघ शुक्ल पक्ष प्रारम्भ,चन्द्रदर्शन,पंचक प्रारम्भ 13/59,मंगल ज्येष्ठा में 19/15,
	3	2	चं.	16	57	शत.	27	51	व.	8	49	कुम्भ		7	17	17	56	7	12	17	57	7	15	18	06	6	44	17	39	3	
	4	3	मं.	18	08	पू.भा.	29	47	प.	8	24	मी. 23	15	7	17	17	56	7	12	17	58	7	15	18	07	6	44	17	40	4	भ. 30/56 बाद,गौरीतृतीया (गोंतरी),
	5	4	बु.	19	53	उ.भा.	–	–	शि.	8	26	मीन		7	16	17	57	7	11	17	59	7	14	18	07	6	43	17	41	5	भ. 19/53 तक,बुध उ.षा. में 8/23,वरद–तिल–कुन्द चतुर्थी,
	6	5	गु.	22	07	उ.भा.	8	14	सि.	8	52	मीन		7	15	17	58	7	11	18	00	7	14	18	08	6	43	17	42	6	सूर्य धनि. में 16/21, *वसन्त पंचमी* (श्रीपंचमी),
	7	6	शु.	24	42	रेव.	11	06	सा.	9	37	मे. 11	06	7	15	17	59	7	10	18	01	7	13	18	09	6	42	17	42	7	पंचक समाप्त 11/06,
	8	7	श.	27	23	अश्वि.	14	11	शु.	10	34	मेष		7	14	18	00	7	09	18	01	7	12	18	10	6	42	17	43	8	भ. 27/23 बाद, *बुध मकर में 8/13,* रथ सप्तमी(पहले अरुणोदय वाली), (B)
	9	8	र.	29	55	भर.	17	15	शु.	11	31	वृ. 23	59	7	13	18	01	7	09	18	02	7	12	18	10	6	41	17	44	9	भ. 16/41 तक, भीष्माष्टमी,
	10	9	चं.	–	–	कृत्ति.	20	02	ब्र.	12	17	वृष		7	12	18	02	7	08	18	03	7	11	18	11	6	40	17	44	10	शुक्र पू.षा. में 27/47,
	11	9	मं.	8	01	रोहि.	22	18	ऐं.	12	42	वृष		7	11	18	02	7	07	18	04	7	10	18	12	6	40	17	45	11	
	12	10	बु.	09	30	मृग.	23	53	वै.	12	37	मि. 11	11	7	11	18	03	7	06	18	05	7	10	18	12	6	39	17	46	12	भ. 21/57 बाद, सं. *सूर्य कुम्भ में 30/24,* पुण्यकाल अगले दिन मध्याह्न तक,
	13	11	गु.	10	12	आर्द्रा	24	40	वि.	11	57	मिथुन		7	10	18	04	7	05	18	05	7	09	18	13	6	38	17	46	13	भ. 10/12 तक, जया एकादशी व्रत (स.), भीष्म द्वादशी,
	14	12	शु.	10	04	पुन.	24	41	प्री.	10	38	क. 18	45	7	09	18	05	7	05	18	06	7	08	18	14	6	38	17	47	14	प्रदोष व्रत,
	15	13	श.	9	09	पु.	23	58	आ.	8	42	कर्क		7	08	18	06	7	04	18	07	7	08	18	15	6	37	17	48	15	बुध श्रवण में 28/29,
									सौ.	30	13																				
	16	14/	र.	7	32	आश्ले	22	39	शो.	27	17	सिं. 22	39	7	07	18	07	7	03	18	08	7	07	18	15	6	36	17	48	16	भ. 7/32 से 18/30 तक, श्रीसत्यनारायण व्रत, *माघस्नान समाप्त,* (C)
		/15		29	21																										
फाल्गुन कृष्ण पक्ष	17	1	चं.	26	46	मघा	20	53	अ.	24	00	सिंह		7	06	18	07	7	02	18	08	7	06	18	16	6	35	17	49	17	*फाल्गुन कृष्ण पक्ष प्रारम्भ,*
	18	2	मं.	23	57	पू.फा.	18	50	सु.	20	31	क. 24	18	7	05	18	08	7	01	18	09	7	05	18	17	6	35	17	49	18	
	19	3	बु.	21	03	उ.फा.	16	41	धृ.	16	57	कन्या		7	04	18	09	7	00	18	10	7	04	18	17	6	34	17	50	19	भ. 10/30 से 21/03 तक, सूर्य शत. में 20/55, सूर्य सायन मीन में (D)
	20	4	गु.	18	13	हस्त	14	33	शू.	13	25	तु. 25	33	7	03	18	10	6	59	18	11	7	03	18	18	6	33	17	51	20	श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, (देखें–पृष्ठ 132),
	21	5	शु.	15	34	चित्रा	12	35	गं.	10	00	तुला		7	02	18	11	6	59	18	11	7	03	18	19	6	32	17	51	21	
									वृ.	30	48																				
	22	6	श.	13	11	स्वा.	10	53	ध्रु.	27	52	वृ. 27	50	7	01	18	11	6	58	18	12	7	02	18	19	6	32	17	52	22	भ. 13/11 से 24/07 तक, वक्री गुरु पुष्य 4 में 15/23, शुक्र उ.षा. में (E)
	23	7	र.	11	09	विशा.	9	31	व्या.	25	13	वृश्चिक		7	00	18	12	6	57	18	13	7	01	18	20	6	31	17	52	23	*मंगल मूल धनु में 13/36,*
	24	8	चं.	9	29	अनु.	8	30	ह.	22	52	वृश्चिक		6	59	18	13	6	56	18	13	7	00	18	20	6	30	17	53	24	
	25	9	मं.	8	11	ज्ये.	7	52	व.	20	48	ध. 7	52	6	58	18	14	6	55	18	14	6	59	18	21	6	29	17	54	25	भ. 19/40 बाद, बुध धनि. में 8/30, *शुक्र मकर में 13/22*
	26	10/	बु.	7	15	मूल	7	35	सि.	19	02	धनु		6	57	18	14	6	54	18	15	6	58	18	22	6	28	17	54	26	भ. 7/15 तक, बुध पूर्व में अस्त 21/42, विजया एकादशी व्रत (स्मा.),
		/11		30	40																										
	27	12	गु.	30	27	पू.षा.	7	40	व्य.	17	33	म. 13	44	6	56	18	15	6	53	18	15	6	57	18	22	6	27	17	55	27	विजया एकादशी व्रत (वै.),
	28	13	शु.	30	36	उ.षा.	8	05	व.	16	20	मकर		6	55	18	16	6	52	18	16	6	56	18	23	6	26	17	55	28	भ. 30/36 बाद, प्रदोष व्रत,

(A) (10 घं. 54 मि. से 16 घं. 18 मि. तक), **(B)** आरोग्य सप्तमी, **(C)** *जन्मदिन श्रीगुरु रविदास जी,* **(D)** 7/31, वसन्त ऋतु प्रारम्भ, **(E)** 16/53, शनि मार्गी 13/11.

तिथ्यादि पञ्चांग (भा. स्टैं. टा.)

मार्च, सन् 2003 ई.

मास पक्ष	मार्च 2003 ई.	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि-प्रवेशकाल		चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा–ग्रहराशि–नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.		
फा. कृ. प.	1	14	श.	—	—	श्रव.	8	51	प.	15	25	कुं. 21	23	6	54	18	17	6	51	18	17	6	55	18	24	6	25	17	56	1	म. 18/49 तक, पंचक प्रारम्भ 21/23, *बुध कुम्भ में 14/15,* राहु कृत्ति.4,केतु (A)
	2	14	र.	7	08	धनि.	10	00	शि.	14	48	कुम्भ		6	53	18	17	6	50	18	17	6	54	18	24	6	24	17	56	2	
	3	30	चं.	8	05	शत.	11	34	सि.	14	31	कुम्भ		6	51	18	18	6	49	18	18	6	53	18	25	6	23	17	57	3	सोमवती अमा,
फाल्गुन शुक्ल पक्ष	4	1	मं.	9	29	पू.भा.	13	33	सा.	14	35	मी. 7	00	6	50	18	19	6	48	18	19	6	52	18	25	6	23	17	57	4	*फाल्गुन शुक्ल पक्ष प्रारम्भ,* चन्द्रदर्शन, सूर्य पू.भा. में 27/10,
	5	2	बु.	11	19	उ.भा.	15	57	शु.	14	58	मीन		6	49	18	20	6	46	18	19	6	51	18	26	6	22	17	58	5	बुध शत. में 15/36, शुक्र श्रवण में 25/30,
	6	3	गु.	13	34	रेव.	18	45	शु.	15	40	मे. 18	45	6	48	18	20	6	45	18	20	6	50	18	26	6	21	17	58	6	म. 26/49 बाद, पंचक समाप्त 18/45,
	7	4	शु.	16	08	अश्वि.	21	48	ब्र.	16	35	मेष		6	47	18	21	6	44	18	21	6	49	18	27	6	20	17	59	7	भ. 16/08 तक,
	8	5	श.	18	50	भर.	24	51	ऐं.	17	37	मेष		6	46	18	22	6	43	18	21	6	48	18	28	6	19	17	59	8	
	9	6	र.	21	28	कृत्ति.	28	00	वै.	18	36	वृ. 7	45	6	45	18	22	6	42	18	22	6	47	18	28	6	18	18	00	9	
	10	7	चं.	23	47	रोहि.	30	41	वि.	19	23	वृष		6	43	18	23	6	41	18	22	6	46	18	29	6	17	18	00	10	म. 23/47 बाद,
	11	8	मं.	25	33	मृग.	—	—	प्री.	19	46	मि. 19	49	6	42	18	24	6	40	18	23	6	45	18	29	6	16	18	01	11	भ. 12/45 तक, *होलाष्टक प्रारम्भ,*
	12	9	बु.	26	34	मृग.	8	47	आ.	19	37	मिथुन		6	41	18	24	6	39	18	24	6	44	18	30	6	15	18	01	12	बुध पू.भा. में 30/34,
	13	10	गु.	26	43	आर्द्रा	10	08	सौ.	18	50	क. 28	35	6	40	18	25	6	38	18	24	6	43	18	30	6	14	18	02	13	
	14	11	शु.	26	00	पुन.	10	38	शो.	17	21	कर्क		6	39	18	26	6	37	18	25	6	42	18	31	6	13	18	02	14	म. 14/28 से 26/00 तक, सं. *सूर्य मीन में 27/16,* पुण्यकाल अगले दिन (B)
	15	12	श.	24	27	पु.	10	16	अ.	15	12	कर्क		6	37	18	26	6	35	18	25	6	41	18	31	6	12	18	03	15	गोविन्द द्वादशी,
	16	13	र.	22	10	आश्ले.	9	08	सु.	12	26	सिं. 9	08	6	36	18	27	6	34	18	26	6	40	18	32	6	11	18	03	16	मंगल पू.षा. में 12/02, प्रदोष व्रत,
	17	14	चं.	19	19	मघा	7	21	धृ.	09	09	सिंह		6	35	18	28	6	33	18	26	6	39	18	32	6	10	18	04	17	म. 19/19 से 29/44 तक,शुक्र धनि. में 7/17, श्रीसत्यनारायण व्रत, (C)
						पू.फा.	29	03	शू.	29	28																				
	18	15	मं.	16	05	उ.फा.	26	27	गं.	25	32	क. 10	26	6	34	18	28	6	32	18	27	6	37	18	33	6	09	18	04	18	सूर्य उ.भा. में 11/38, *बुध मीन में 14/42* , होली, होलाष्टक समाप्त,
चैत्र कृष्ण पक्ष	19	1	बु.	12	37	हस्त	23	43	वृ.	21	29	कन्या		6	32	18	29	6	31	18	28	6	36	18	33	6	08	18	05	19	*चैत्र कृष्ण पक्ष प्रारम्भ,* होला मेला (श्री आनन्दपुर साहिब) , वसन्तोत्सव,
	20	2/3	गु.	9	07	चित्रा	21	02	ध्रु.	17	28	तु. 10	22	6	31	18	30	6	30	18	28	6	35	18	34	6	06	18	05	20	म. 19/24 से 29/44 तक, बुध उ.भा. में 7/58,
				29	44																										
	21	4	शु.	26	37	स्वा.	18	34	व्या.	13	36	तुला		6	30	18	30	6	28	18	29	6	34	18	34	6	05	18	06	21	यूरेनस शत. 1 में 15/18, सूर्य सायन मेष में 6/31, उत्तरगोल प्रारम्भ, (D)
	22	5	श.	23	54	विशा.	16	27	ह.	10	00	वृ. 10	56	6	29	18	31	6	27	18	29	6	33	18	35	6	04	18	06	22	*शुक्र कुम्भ में 21/24,*
	23	6	र.	21	40	अनु.	14	47	व.	06	45	वृश्चिक		6	27	18	32	6	26	18	30	6	32	18	35	6	03	18	07	23	म. 21/40 बाद, *प्लूटो वक्री* 10/41,
									सि.	27	55																				
	24	7	चं.	19	59	ज्ये.	13	39	व्य.	25	32	ध. 13	39	6	26	18	32	6	25	18	30	6	31	18	36	6	02	18	07	24	म. 8/45 तक,
	25	8	मं.	18	52	मूल	13	04	व.	23	36	धनु		6	25	18	33	6	24	18	31	6	30	18	36	6	01	18	07	25	
	26	9	बु.	18	19	पू.षा.	13	03	प.	22	07	म. 19	08	6	24	18	33	6	23	18	32	6	29	18	37	6	00	18	08	26	म. 30/14 बाद, बुध रेवती में 23/49,
	27	10	गु.	18	17	उ.षा.	13	34	शि.	21	03	मकर		6	23	18	34	6	22	18	32	6	28	18	37	5	59	18	08	27	म. 18/17 तक, मेला श्रीशीतला माता, कुराली (पं.),
	28	11	शु.	18	46	श्रव.	14	34	सि.	20	21	कुं. 27	14	6	21	18	35	6	20	18	33	6	26	18	38	5	58	18	09	28	पंचक प्रारम्भ 27/14, शुक्र शत. में 11/03, पापमोचनी एकादशी व्रत (स.),
	29	12	श.	19	41	धनि.	16	01	सा.	20	01	कुम्भ		6	20	18	35	6	19	18	33	6	25	18	38	5	57	18	09	29	
	30	13	र.	21	02	शत.	17	52	शु.	20	00	कुम्भ		6	19	18	36	6	18	18	34	6	24	18	39	5	56	18	10	30	म. 21/02 बाद, प्रदोष व्रत, *वारुणी पर्व* (17 घं. 52 मि. तक),
	31	14	चं.	22	45	पू.भा.	20	05	शु.	20	16	मी. 13	30	6	18	18	37	6	17	18	34	6	23	18	39	5	55	18	10	31	म. 9/51 तक, सूर्य रेवती में 22/28, *बुध पश्चिम में उदय* 10/45, (E)

होलाष्टक
11 से 18 मार्च

(A) अनु. 2 में 10/54, श्रीमहाशिवरात्रि व्रत (शिवयोग), मार्च प्रारम्भ, (B) मध्याह्न तक, आमलकी एकादशी व्रत (स.), (C) *होलिका* दहन (19 घं. 19 मि. से 21घं. 45मि. तक), (देखें पृष्ठ 132), (D) श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, (E) मेला पिहोवा तीर्थ (हरि),

तिथ्यादि पञ्चांग (भा. स्टैं. टा.)

मास पक्ष	अप्रै. 2003 ई.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घं.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घं.	मि.	योग	समाप्ति-काल घं.	मि.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घं. मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	दिल्ली सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	जयपुर सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	वाराणसी सूर्यास्त घं.	मि.	तारीख	भद्रा–ग्रहराशि–नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि, (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
चै.कृ.प	1	30	मं.	24	49	उ.भा.	22	38	ब्र.	20	48	मीन		6	16	18	37	6	16	18	35	6	22	18	40	5	54	18	10	1	भौमवती अमा, अप्रैल प्रारम्भ, चान्द्र संवत्सर (2059 वि.) पूर्ण,

(पृ. 157 का शेष) उसे इस्तेमाल करना चाहते हैं–उन दोनों देशों के स्टैं. टाइमों का अन्तर जानिए (पृ.213/2058 पर भा.स्टैं.टा. से विश्व के अन्य देशों के स्टैं. टा. का अन्तर दिया हुआ है)। आपके पंचांगीय देश के स्टैं.टा. से यदि अभीष्ट देश का स्टैं. टा. आगे हो तो पंचांगीय देश के स्टैं.टा. में यह अन्तर जोड़ दें, अन्यथा घटा दें। इस प्रकार वह अभीष्ट देशीय स्टैं.टा. बन जाएगा। नीचे दिए गए उदाहरणों से इसे स्पष्ट कर देते हैं :–

उदाहरण (1) – 2 नवं. '02 ई. को कार्तिक कृष्ण द्वादशी भा.स्टैं.टा. के अनुसार 12 घं. 54 मि. पर समाप्त होगी। ' हांगकांग ' में यह तिथि हांगकांग के स्टैं.टा. के अनुसार कब समाप्त होगी ? – यह जानने के लिए हांगकांग और भारत के स्टैं. टाईमों के अन्तर 2 घं. 30 मि. को 12 घं. 54 मि. में जोड़ने पर 15 घं. 24 मि. मिला। यह हांगकांग में वहां के स्टैं. टा. के अनुसार कार्तिक कृष्ण द्वादशी का समाप्तिकाल हुआ। क्योंकि हांगकांग का स्टैं.टा., भा.स्टैं.टा. से 2 घं. 30 मि. आगे रहता है, अतः यहां 2 घं. 30 मि. जोड़े गए हैं।

उदाहरण (2) – 26 अप्रै. '02 ई. को 5 घं. 50 मि. (भा.स्टैं.टा.) पर बुध वृष में प्रवेश करेगा। इंग्लैण्ड में वहां के स्टैं.टा. (जिसे ळण्डण्ज्ज कहा जाता है) के अनुसार बुध का वृष में प्रवेश 26 अप्रै. को 0 घं. 20 मि. पर होगा (ळण्डण्ज्ज भा.स्टैं.टा. से 5 घं. 30 मि. पीछे रहता है)।

उदाहरण (3)–टोकियो (जापान) में बसे, श्री अरुण मिश्र के घर 21 अप्रै. '02 ई. को जापान स्टैं.टा. के अनुसार 14 घं. 20 मि. पर, पुत्र का जन्म हुआ। ज्ञात कीजिए – क्या यह बच्चा गण्डमूल में पैदा हुआ है। क्योंकि गण्डमूल नक्षत्र 'आश्लेषा' 21 अप्रै. '02 ई. को भा. स्टैं. टा. के अनुसार 12 घं. 12 मि. पर प्रारम्भ हो रहा है। जापानी स्टैं.टा. – भा.स्टैं.टा. से 3 घं. 30 मि. आगे रहता है। अतः जापानी स्टैं.टा. के अनुसार इस (आश्लेषा) नक्षत्र का प्रारम्भ 15 घं. 42 मि. पर होगा। अतः स्पष्ट है, श्री अरुण मिश्र जी के पुत्र का जन्म गण्डमूल में नहीं हुआ है। अतः उन्हें गण्डमूल शान्ति नहीं करवानी पड़ेगी।

उदाहरण (4) – केन्या (अफ्रीका) में 15 अप्रै. '02 ई. को केन्या स्टैं.टा. अनुसार दिन के 7 घं. 50 मि. पर जन्म लेने वाले जातक का जन्मनक्षत्र (जन्मकालिक चन्द्रनक्षत्र) कौन सा होगा ? – ज्ञात करें । क्योंकि भा.स्टैं.टा. केन्या के स्टैं.टा. से 2 घं. 30 मि. आगे है, अतः इस जातक का जन्म भा.स्टैं.टा. के अनुसार 15 अप्रै. '02 ई. को दिन के 10 घं. 20 मिनट पर माना जाएगा। " श्रीमार्त्तण्ड पंचांग (सं. 2059 वि.) " से ज्ञात होता है कि कृत्तिका नक्षत्र 15 अप्रै. '02 ई. को भा. स्टैं. टा. के अनुसार दिन के 8 घं. 01 मि. पर ही प्रारम्भ हो जाता है। अतः स्पष्ट है कि इस जातक का जन्म (चन्द्र) नक्षत्र कृत्तिका होगा।

उदाहरण (5) – 2 मई '02 ई. को न्यूजीलेण्ड में, न्यूजीलैण्ड स्टैं.टा. के अनुसार 23 घं. 40 मि. पर पैदा होने वाले जातक की जन्मराशि (जन्मकालिक चन्द्रराशि) बतलाइए ? क्योंकि भा. स्टैं.टा.– न्यूजीलैण्ड स्टैं. टा. से 6 घं. 30 मि. पीछे है, अतः जातक का जन्मकाल भा. स्टैं. टा. के अनुसार 2 मई '02 ई. को 17 घं. 10 मि. होगा। श्रीमार्त्तण्ड पंचांग (2059 वि.) देखिए – 2 मई '02 ई. को चन्द्रमा धनु राशि में भा.स्टैं.टा. के अनुसार 22 घं. 34 मि. तक रहता है। अतः स्पष्ट है इस जातक की जन्मराशि (जन्मकालिक चन्द्रराशि) धनु ही होगी। "

उपरोक्त विवरण से पाठक समझ गए होंगे कि स्टैं. टा. के प्रयोग से पंचांग के तिथ्यादि के काल विश्वजनीन (Universal) बन जाते हैं। स्टैं. टा. वाले पंचांग को विश्व के किसी भी देश में आप तुरन्त (मौखिक जोड़–घटाव द्वारा ही) इस्तेमाल करने योग्य बना सकते हैं। घड़ी–पल वाले पंचांग को तो विदेश की बात तो दूर रही, आप अपने ही देश के अन्य नगरों में भी आसानी से इस्तेमाल नहीं कर सकते। इसलिए घड़ी–पलों के झंझट को नमस्कार कीजिए, स्टैं. टा. को अपनाइए। इसके प्रयोग से, दैवज्ञ लोग देखेंगे, कि जन्मपत्र, वर्षफल आदि की गणित सरल एवं अल्पकाल–साध्य बन जाती है।

अन्त में पाठकों को हम यह बतला देना आवश्यक समझते हैं कि किसी नगर के सूर्यादि–ग्रहों के उदयास्त, लग्नों की प्रारम्भ–समाप्ति एवं सूर्यग्रहण के स्पर्श–मोक्ष का काल स्टैं.टा. में भले ही क्यों न हो, इन्हें तिथ्यादि के स्टैं. टा. की भान्ति दूसरे नगर में इस्तेमाल नहीं किया जा सकता। इन्हें स्टैं. टा. के अन्तर का संस्कार करके दूसरे देशों में भी इस्तेमाल नहीं करना चाहिए। इन्हें तो उसी नगर में इस्तेमाल किया जा सकता है, जिस नगर के लिए इन्हें स्पष्ट किया (बनाया गया) है। अन्य नगरों के लिए इन्हें स्पष्ट करना हो तो इसके लिए उन नगरों के अपने–अपने, अक्षांश–रेखांशों के अनुसार ही विशेष गणित प्रक्रिया करनी पड़ती है।

अमृतसर और जम्मू के सूर्योदयास्त (1 जनवरी से 31 दिसम्बर 2002 ई. तक)

तारीख	जनवरी								फरवरी							
	अमृतसर				जम्मू				अमृतसर				जम्मू			
	सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त	
	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
1	7	34	17	33	7	37	17	30	7	28	18	00	7	30	17	58
2	7	35	17	34	7	37	17	31	7	27	18	01	7	29	17	59
3	7	35	17	35	7	37	17	32	7	27	18	02	7	29	18	00
4	7	35	17	36	7	38	17	33	7	26	18	03	7	28	18	01
5	7	35	17	36	7	38	17	33	7	25	18	04	7	27	18	02
6	7	35	17	37	7	38	17	34	7	25	18	05	7	26	18	03
7	7	35	17	38	7	38	17	35	7	24	18	06	7	25	18	04
8	7	35	17	39	7	38	17	36	7	23	18	07	7	25	18	05
9	7	35	17	40	7	38	17	37	7	22	18	08	7	24	18	06
10	7	35	17	40	7	38	17	38	7	21	18	08	7	23	18	07
11	7	35	17	41	7	38	17	39	7	20	18	09	7	22	18	08
12	7	35	17	42	7	38	17	39	7	20	18	10	7	21	18	08
13	7	35	17	43	7	38	17	40	7	19	18	11	7	20	18	09
14	7	35	17	44	7	38	17	41	7	18	18	12	7	19	18	10
15	7	35	17	45	7	37	17	42	7	17	18	13	7	18	18	11
16	7	35	17	46	7	37	17	43	7	16	18	14	7	17	18	12
17	7	34	17	47	7	37	17	44	7	15	18	14	7	16	18	13
18	7	34	17	47	7	37	17	45	7	14	18	15	7	15	18	14
19	7	34	17	48	7	36	17	46	7	13	18	16	7	14	18	15
20	7	34	17	49	7	36	17	47	7	12	18	17	7	13	18	16
21	7	33	17	50	7	36	17	48	7	11	18	18	7	12	18	16
22	7	33	17	51	7	35	17	49	7	10	18	18	7	11	18	17
23	7	33	17	52	7	35	17	50	7	09	18	19	7	10	18	18
24	7	32	17	53	7	34	17	51	7	08	18	20	7	09	18	19
25	7	32	17	54	7	34	17	51	7	07	18	21	7	08	18	20
26	7	31	17	55	7	33	17	52	7	06	18	22	7	07	18	21
27	7	31	17	56	7	33	17	53	7	05	18	22	7	05	18	21
28	7	30	17	57	7	32	17	54	7	03	18	23	7	04	18	22
29	7	30	17	58	7	32	17	55								
30	7	29	17	58	7	31	17	56								
31	7	29	17	59	7	31	17	57								

तारीख	मार्च								अप्रैल							
	अमृतसर				जम्मू				अमृतसर				जम्मू			
	सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त	
	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
1	7	02	18	24	7	03	18	23	6	24	18	46	6	23	18	46
2	7	01	18	25	7	02	18	24	6	22	18	46	6	22	18	47
3	7	00	18	26	7	00	18	25	6	21	18	47	6	20	18	47
4	6	58	18	26	6	59	18	26	6	20	18	48	6	19	18	48
5	6	57	18	27	6	58	18	26	6	19	18	48	6	18	18	49
6	6	56	18	28	6	57	18	27	6	17	18	49	6	17	18	50
7	6	55	18	29	6	55	18	28	6	16	18	50	6	15	18	50
8	6	54	18	29	6	54	18	29	6	15	18	50	6	14	18	51
9	6	53	18	30	6	53	18	29	6	14	18	51	6	13	18	52
10	6	51	18	31	6	52	18	30	6	13	18	52	6	12	18	52
11	6	50	18	31	6	50	18	31	6	11	18	52	6	10	18	53
12	6	49	18	32	6	49	18	32	6	10	18	53	6	09	18	54
13	6	48	18	33	6	48	18	32	6	09	18	54	6	08	18	55
14	6	46	18	34	6	47	18	33	6	08	18	54	6	07	18	55
15	6	45	18	34	6	45	18	34	6	07	18	55	6	05	18	56
16	6	44	18	35	6	44	18	35	6	05	18	56	6	04	18	57
17	6	43	18	36	6	43	18	35	6	04	18	56	6	03	18	57
18	6	41	18	36	6	41	18	36	6	03	18	57	6	02	18	58
19	6	40	18	37	6	40	18	37	6	02	18	58	6	01	18	59
20	6	39	18	38	6	39	18	38	6	01	18	58	6	00	19	00
21	6	38	18	38	6	37	18	38	6	00	18	59	5	58	19	00
22	6	36	18	39	6	36	18	39	5	59	19	00	5	57	19	01
23	6	35	18	40	6	35	18	40	5	58	19	00	5	56	19	02
24	6	34	18	40	6	34	18	40	5	57	19	01	5	55	19	02
25	6	32	18	41	6	32	18	41	5	56	19	02	5	54	19	03
26	6	31	18	42	6	31	18	42	5	55	19	02	5	53	19	04
27	6	30	18	42	6	30	18	43	5	54	19	03	5	52	19	05
28	6	29	18	43	6	28	18	43	5	53	19	04	5	51	19	05
29	6	27	18	44	6	27	18	44	5	52	19	04	5	50	19	06
30	6	26	18	44	6	26	18	45	5	51	19	05	5	49	19	07
31	6	25	18	45	6	24	18	45								

तारीख	मई								जून							
	अमृतसर				जम्मू				अमृतसर				जम्मू			
	सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त	
	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
1	5	50	19	06	5	48	19	07	5	31	19	26	5	28	19	29
2	5	49	19	06	5	47	19	08	5	30	19	27	5	28	19	29
3	5	48	19	07	5	46	19	09	5	30	19	27	5	27	19	30
4	5	47	19	08	5	45	19	10	5	30	19	28	5	27	19	30
5	5	46	19	09	5	44	19	10	5	30	19	28	5	27	19	31
6	5	45	19	09	5	43	19	11	5	30	19	29	5	27	19	31
7	5	44	19	10	5	42	19	12	5	29	19	29	5	27	19	32
8	5	44	19	11	5	42	19	13	5	29	19	30	5	27	19	32
9	5	43	19	11	5	41	19	13	5	29	19	30	5	26	19	33
10	5	42	19	12	5	40	19	14	5	29	19	30	5	26	19	33
11	5	41	19	13	5	39	19	15	5	29	19	31	5	26	19	34
12	5	41	19	13	5	38	19	15	5	29	19	31	5	26	19	34
13	5	40	19	14	5	38	19	16	5	29	19	32	5	26	19	34
14	5	39	19	15	5	37	19	17	5	29	19	32	5	26	19	35
15	5	38	19	15	5	36	19	18	5	29	19	32	5	26	19	35
16	5	38	19	16	5	35	19	18	5	29	19	33	5	26	19	35
17	5	37	19	17	5	35	19	19	5	30	19	33	5	27	19	36
18	5	37	19	17	5	34	19	20	5	30	19	33	5	27	19	36
19	5	36	19	18	5	34	19	20	5	30	19	34	5	27	19	36
20	5	35	19	19	5	33	19	21	5	30	19	34	5	27	19	37
21	5	35	19	19	5	32	19	22	5	30	19	34	5	27	19	37
22	5	34	19	20	5	32	19	22	5	30	19	34	5	27	19	37
23	5	34	19	21	5	31	19	23	5	31	19	34	5	28	19	37
24	5	33	19	21	5	31	19	24	5	31	19	35	5	28	19	37
25	5	33	19	22	5	30	19	24	5	31	19	35	5	28	19	38
26	5	33	19	22	5	30	19	25	5	31	19	35	5	29	19	38
27	5	32	19	23	5	30	19	26	5	32	19	35	5	29	19	38
28	5	32	19	24	5	29	19	26	5	32	19	35	5	29	19	38
29	5	31	19	24	5	29	19	27	5	32	19	35	5	30	19	38
30	5	31	19	25	5	28	19	27	5	33	19	35	5	30	19	38
31	5	31	19	25	5	28	19	28								

अमृतसर और जम्मू के सूर्योदयास्त (1 जनवरी से 31 दिसम्बर 2002 ई. तक)

तारीख	जुलाई								अगस्त								सितम्बर							
	अमृतसर				जम्मू				अमृतसर				जम्मू				अमृतसर				जम्मू			
	सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त	
	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
1	5	33	19	35	5	30	19	38	5	50	19	23	5	48	19	25	6	10	18	51	6	09	18	52
2	5	34	19	35	5	31	19	38	5	51	19	22	5	49	19	24	6	10	18	50	6	09	18	50
3	5	34	19	35	5	31	19	38	5	52	19	21	5	50	19	23	6	11	18	48	6	10	18	49
4	5	34	19	35	5	32	19	38	5	52	19	20	5	50	19	22	6	12	18	47	6	11	18	48
5	5	35	19	35	5	32	19	38	5	53	19	20	5	51	19	21	6	12	18	46	6	11	18	47
6	5	35	19	35	5	32	19	37	5	54	19	19	5	52	19	21	6	13	18	45	6	12	18	45
7	5	36	19	35	5	33	19	37	5	54	19	18	5	52	19	20	6	13	18	43	6	13	18	44
8	5	36	19	34	5	33	19	37	5	55	19	17	5	53	19	19	6	14	18	42	6	13	18	43
9	5	37	19	34	5	34	19	37	5	55	19	16	5	54	19	18	6	15	18	41	6	14	18	41
10	5	37	19	34	5	35	19	37	5	56	19	15	5	54	19	17	6	15	18	39	6	14	18	40
11	5	38	19	34	5	35	19	36	5	57	19	14	5	55	19	16	6	16	18	38	6	15	18	39
12	5	38	19	33	5	36	19	36	5	57	19	13	5	56	19	15	6	16	18	37	6	16	18	37
13	5	39	19	33	5	36	19	36	5	58	19	12	5	56	19	14	6	17	18	36	6	16	18	36
14	5	39	19	33	5	37	19	35	5	59	19	11	5	57	19	13	6	17	18	34	6	17	18	35
15	5	40	19	32	5	37	19	35	5	59	19	10	5	58	19	12	6	18	18	33	6	18	18	33
16	5	41	19	32	5	38	19	35	6	00	19	09	5	58	19	11	6	19	18	32	6	18	18	32
17	5	41	19	32	5	39	19	34	6	01	19	08	5	59	19	10	6	19	18	30	6	19	18	31
18	5	42	19	31	5	39	19	34	6	01	19	07	6	00	19	08	6	20	18	29	6	20	18	29
19	5	42	19	31	5	40	19	33	6	02	19	06	6	00	19	07	6	20	18	28	6	20	18	28
20	5	43	19	30	5	40	19	33	6	02	19	05	6	01	19	06	6	21	18	26	6	21	18	26
21	5	44	19	30	5	41	19	32	6	03	19	04	6	02	19	05	6	22	18	25	6	21	18	25
22	5	44	19	29	5	42	19	32	6	04	19	03	6	02	19	04	6	22	18	24	6	22	18	24
23	5	45	19	29	5	42	19	31	6	04	19	02	6	03	19	03	6	23	18	23	6	23	18	22
24	5	45	19	28	5	43	19	30	6	05	19	00	6	04	19	02	6	23	18	21	6	23	18	21
25	5	46	19	28	5	44	19	30	6	06	18	59	6	04	19	00	6	24	18	20	6	24	18	20
26	5	47	19	27	5	44	19	29	6	06	18	58	6	05	18	59	6	25	18	19	6	25	18	18
27	5	47	19	26	5	45	19	29	6	07	18	57	6	06	18	58	6	25	18	17	6	25	18	17
28	5	48	19	26	5	45	19	28	6	07	18	56	6	06	18	57	6	26	18	16	6	26	18	16
29	5	48	19	25	5	46	19	27	6	08	18	54	6	07	18	55	6	27	18	15	6	27	18	14
30	5	49	19	24	5	47	19	26	6	09	18	53	6	07	18	54	6	27	18	13	6	27	18	13
31	5	50	19	23	5	47	19	26	6	09	18	52	6	08	18	53								

अक्तूबर								नवम्बर								दिसम्बर								तारीख
अमृतसर				जम्मू				अमृतसर				जम्मू				अमृतसर				जम्मू				
सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		
घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	
6	28	18	12	6	28	18	12	6	50	17	38	6	52	17	36	7	16	17	22	7	19	17	20	1
6	28	18	11	6	29	18	10	6	51	17	37	6	53	17	35	7	17	17	22	7	19	17	20	2
6	29	18	10	6	29	18	09	6	52	17	36	6	53	17	34	7	18	17	22	7	20	17	20	3
6	30	18	08	6	30	18	08	6	53	17	35	6	54	17	33	7	19	17	22	7	21	17	20	4
6	30	18	07	6	31	18	06	6	53	17	34	6	55	17	32	7	19	17	22	7	22	17	20	5
6	31	18	06	6	32	18	05	6	54	17	33	6	56	17	31	7	20	17	22	7	23	17	20	6
6	32	18	05	6	32	18	04	6	55	17	33	6	57	17	31	7	21	17	22	7	24	17	20	7
6	32	18	03	6	33	18	03	6	56	17	32	6	58	17	30	7	22	17	23	7	24	17	20	8
6	33	18	02	6	34	18	01	6	57	17	31	6	59	17	29	7	22	17	23	7	25	17	20	9
6	34	18	01	6	34	18	00	6	58	17	31	7	00	17	28	7	23	17	23	7	26	17	20	10
6	34	18	00	6	35	17	59	6	59	17	30	7	01	17	28	7	24	17	23	7	27	17	20	11
6	35	17	59	6	36	17	58	7	00	17	29	7	02	17	27	7	25	17	23	7	27	17	20	12
6	36	17	57	6	37	17	56	7	00	17	29	7	02	17	26	7	25	17	24	7	28	17	21	13
6	36	17	56	6	37	17	55	7	01	17	28	7	03	17	26	7	26	17	24	7	29	17	21	14
6	37	17	55	6	38	17	54	7	02	17	28	7	04	17	25	7	27	17	24	7	29	17	21	15
6	38	17	54	6	39	17	53	7	03	17	27	7	05	17	25	7	27	17	25	7	30	17	22	16
6	39	17	53	6	40	17	52	7	04	17	26	7	06	17	24	7	28	17	25	7	31	17	22	17
6	39	17	52	6	40	17	50	7	05	17	26	7	07	17	24	7	28	17	25	7	31	17	22	18
6	40	17	50	6	41	17	49	7	06	17	26	7	08	17	23	7	29	17	26	7	32	17	23	19
6	41	17	49	6	42	17	48	7	07	17	25	7	09	17	23	7	30	17	26	7	32	17	23	20
6	42	17	48	6	43	17	47	7	07	17	25	7	10	17	22	7	30	17	27	7	33	17	24	21
6	42	17	47	6	43	17	46	7	08	17	24	7	11	17	22	7	31	17	27	7	33	17	24	22
6	43	17	46	6	44	17	45	7	09	17	24	7	12	17	22	7	31	17	28	7	34	17	25	23
6	44	17	45	6	45	17	44	7	10	17	24	7	12	17	21	7	32	17	28	7	34	17	25	24
6	45	17	44	6	46	17	43	7	11	17	23	7	13	17	21	7	32	17	29	7	35	17	26	25
6	45	17	43	6	47	17	42	7	12	17	23	7	14	17	21	7	32	17	29	7	35	17	26	26
6	46	17	42	6	48	17	41	7	13	17	23	7	15	17	20	7	33	17	30	7	36	17	27	27
6	47	17	41	6	48	17	40	7	14	17	23	7	16	17	20	7	33	17	31	7	36	17	28	28
6	48	17	40	6	49	17	39	7	14	17	23	7	17	17	20	7	33	17	31	7	36	17	28	29
6	49	17	39	6	50	17	38	7	15	17	23	7	18	17	20	7	34	17	32	7	37	17	29	30
6	49	17	38	6	51	17	37									7	34	17	33	7	37	17	30	31

चन्द्रमा का नक्षत्र चरणों में प्रवेश काल (भा. स्टैं. टा.)

चंद्र नक्षत्र चरण :		1	2	3	4
जनवरी 2002 ई.	नक्षत्र	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
31/ 1	पुष्य	23 02	4 33	10 04	15 34
1/ 2	आश्ले.	21 04	2 33	8 02	13 31
2/ 3	मघा	19 00	0 29	5 58	11 28
3/ 4	पूर्वा.	16 58	22 28	4 00	9 32
4/ 5	उत्तरा	15 04	20 38	2 13	7 49
5/ 6	हस्त	13 26	19 04	0 43	6 24
6/ 7	चित्रा	12 06	17 49	23 34	5 20
7/ 8	स्वाती	11 08	16 58	22 48	4 41
8/ 9	विशा.	10 35	16 30	22 27	4 25
9/10	अनुरा.	10 25	16 27	22 30	4 35
10/11	ज्येष्ठा	10 41	16 49	22 58	5 09
11/12	मूळ	11 21	17 35	23 50	6 07
12/13	पू.षा.	12 25	18 45	1 06	7 29
13/14	उ.षा.	13 53	20 19	2 46	9 15
14/15	श्रवण	15 46	22 17	4 50	11 25
15/16	धनि.	18 01	0 38	7 16	13 55
16/17	शतता.	20 36	3 17	10 00	16 43
17/18	पू.भा.	23 27	6 11	12 56	19 41
19	उ.भा.	2 26	9 11	15 56	22 40
20/21	रेवती	5 24	12 07	18 49	1 29
21/22	अश्विनी	8 09	14 46	21 22	3 56
22/23	भरणी	10 28	16 57	23 24	5 49
23/24	कृत्तिका	12 10	18 29	0 46	6 59
24/25	रोहिणी	13 09	19 16	1 21	7 22
25/26	मृग.	13 20	19 15	1 08	6 57
26/27	आर्द्रा	12 44	18 28	0 09	5 48
27/28	पुनर्व.	11 24	16 58	22 30	4 00
28/29	पुष्य	9 28	14 54	20 19	1 43
29	आश्ले.	7 05	12 26	17 46	23 06
30	मघा	4 25	9 44	15 02	20 21
31	पूर्वा.	1 39	6 58	12 18	17 38

चंद्र नक्षत्र चरण :		1	2	3	4
फरवरी 2002 ई.	नक्षत्र	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
31/ 1	उत्तरा.	22 59	4 21	9 43	15 08
1/ 2	हस्त	20 33	2 00	7 29	12 59
2/ 3	चित्रा	18 32	0 06	5 42	11 21
3/ 4	स्वाती	17 01	22 44	4 29	10 17
4/ 5	विशा.	16 06	21 59	3 53	9 50
5/ 6	अनुरा.	15 49	21 51	3 55	10 01
6/ 7	ज्येष्ठा	16 09	22 19	4 32	10 46
7/ 8	मूळ	17 03	23 21	5 41	12 03
8/ 9	पू.षा.	18 26	0 51	7 18	13 45
9/10	उ.षा.	20 15	2 45	9 17	15 49
10/11	श्रवण	22 23	4 58	11 34	18 11
12	धनि.	0 49	7 28	14 07	20 48
13	शतता	3 29	10 11	16 53	23 36
14/15	पू.भा.	6 19	13 03	19 48	2 32
15/16	उ.भा.	9 17	16 02	22 47	5 32
16/17	रेवती	12 17	19 02	1 45	8 29
17/18	अश्विनी	15 11	21 53	4 34	11 13
18/19	भरणी	17 51	0 27	7 02	13 35
19/20	कृत्तिका	20 05	2 34	9 00	15 23
20/21	रोहिणी	21 44	4 02	10 17	16 29
21/22	मृग.	22 39	4 45	10 48	16 48
22/23	आर्द्रा	22 44	4 38	10 29	16 16
23/24	पुनर्व.	22 01	3 42	9 21	14 57
24/25	पुष्य	20 30	2 01	7 29	12 55
25/26	आश्ले.	18 19	23 41	5 02	10 21
26/27	मघा	15 38	20 54	2 09	7 23
27/28	पूर्वा.	12 37	17 50	23 03	4 15

चंद्र नक्षत्र चरण :		1	2	3	4
मार्च 2002 ई.	नक्षत्र	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
28/ 1	उत्तरा	9 28	14 41	19 54	1 09
1	हस्त	6 24	11 40	16 57	22 16
2	चित्रा	3 36	8 58	14 22	19 48
3	स्वाती	1 16	6 46	12 19	17 54
3/ 4	विशा.	23 32	5 12	10 56	16 42
4/ 5	अनुरा.	22 31	4 23	10 18	16 16
5/ 6	ज्येष्ठा	22 16	4 20	10 27	16 36
6/ 7	मूळ	22 48	5 03	11 20	17 40
8	पू.षा.	0 02	6 26	12 53	19 21
9	उ.षा.	1 51	8 23	14 57	21 32
10/11	श्रवण	4 08	10 45	17 24	0 04
11/12	धनि.	6 44	13 26	20 07	2 50
12/13	शतता.	9 33	16 16	23 00	5 44
13/14	पू.भा.	12 28	19 13	1 57	8 42
14/15	उ.भा.	15 26	22 11	4 55	11 39
15/16	रेवती	18 23	1 07	7 50	14 33
16/17	अश्विनी	21 15	3 56	10 37	17 17
17/18	भरणी	23 56	6 34	13 11	19 47
19	कृत्तिका	2 21	8 54	15 25	21 54
20	रोहिणी	4 21	10 46	17 10	23 30
21/22	मृग.	5 49	12 05	18 18	0 29
22/23	आर्द्रा	6 37	12 42	18 44	0 44
23/24	पुनर्व.	6 40	12 34	18 24	0 12
24	पुष्य	5 57	11 39	17 18	22 55
25	आश्ले.	4 29	10 01	15 30	20 57
26	मघा	2 22	7 45	13 07	18 26
26/27	पूर्वा	23 44	5 01	10 17	15 32
27/28	उत्तरा	20 46	1 59	7 13	12 26
28/29	हस्त	17 38	22 51	4 05	9 19
29/30	चित्रा	14 34	19 49	1 06	6 24
30/31	स्वाती	11 44	17 06	22 29	3 54

चन्द्रमा का नक्षत्र चरणों में प्रवेश काल (भा. स्टैं. टा.)

चंद्र नक्षत्र चरण :		1	2	3	4
अप्रैल 2002 ई.	नक्षत्र	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
31/ 1	विशा.	9 21	14 51	20 23	1 57
1/ 2	अनुरा	7 34	13 14	18 57	0 43
2/ 3	ज्येष्ठा	6 32	12 24	18 18	0 17
3/ 4	मूळ	6 18	12 22	18 29	0 40
4/ 5	पू.षा.	6 53	13 09	19 28	1 50
5/ 6	उ.षा.	8 14	14 41	21 10	3 41
6/ 7	श्रवण	10 15	16 50	23 27	6 05
7/ 8	धनि.	12 45	19 26	2 08	8 51
8/ 9	शतता	15 34	22 18	5 03	11 48
9/10	पू.भा.	18 33	1 18	8 03	14 48
10/11	उ.भा.	21 33	4 17	11 01	17 45
12	रेवती	0 28	7 10	13 52	20 33
13	अश्विनी	3 13	9 53	16 31	23 09
14/15	भरणी	5 45	12 21	18 56	1 29
15/16	कृत्तिका	8 01	14 32	21 02	3 30
16/17	रोहिणी	9 57	16 23	22 47	5 09
17/18	मृग.	11 29	17 48	0 05	6 20
18/19	आर्द्रा	12 32	18 43	0 52	6 58
19/20	पुनर्व.	13 02	19 04	1 04	7 01
20/21	पुष्य	12 56	18 49	0 39	6 27
21/22	आश्ले.	12 12	17 56	23 37	5 15
22/23	मघा	10 52	16 27	22 00	3 30
23/24	पूर्वा.	9 00	14 27	19 53	1 18
24	उत्तरा	6 41	12 03	17 25	22 45
25	हस्त	4 05	9 24	14 43	20 02
26	चित्रा	1 20	6 39	11 58	17 18
26/27	स्वाती	22 38	3 59	9 22	14 45
27/28	विशा.	20 10	1 36	7 03	12 33
28/29	अनुरा.	18 04	23 38	5 14	10 52
29/30	ज्येष्ठा	16 32	22 15	4 01	9 49

चंद्र नक्षत्र चरण :		1	2	3	4
मई 2002 ई.	नक्षत्र	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
30/ 1	मूळ	15 41	21 35	3 32	9 32
1/ 2	पू.षा.	15 35	21 41	3 50	10 01
2/ 3	उ.षा.	16 16	22 34	4 54	11 17
3/ 4	श्रवण	17 43	0 11	6 41	13 13
4/ 5	धनि.	19 48	2 24	9 02	15 42
5/ 6	शतता	22 23	5 05	11 47	18 31
7	पू.भा.	1 15	8 00	14 45	21 30
8/ 9	उ.भा.	4 15	10 59	17 43	0 27
9/10	रेवती	7 10	13 52	20 33	3 14
10/11	अश्विनी	9 53	16 31	23 08	5 43
11/12	भरणी	12 18	18 51	1 22	7 52
12/13	कृत्तिका	14 21	20 48	3 14	9 38
13/14	रोहिणी	16 00	22 21	4 41	10 59
14/15	मृग.	17 15	23 30	5 43	11 55
15/16	आर्द्रा	18 05	0 13	6 20	12 25
16/17	पुनर्व	18 28	0 30	6 30	12 29
17/18	पुष्य	18 26	0 21	6 15	12 07
18/19	आश्ले.	17 57	23 46	5 33	11 19
19/20	मघा	17 03	22 46	4 27	10 07
20/21	पूर्वा	15 46	21 23	2 59	8 34
21/22	उत्तरा.	14 08	19 41	1 12	6 44
22/23	हस्त	12 14	17 44	23 13	4 41
23/24	चित्रा	10 10	15 38	21 06	2 34
24/25	स्वाती	8 03	13 31	19 00	0 30
25	विशा.	6 00	11 31	17 03	22 36
26	अनुरा.	4 10	9 45	15 22	21 01
27	ज्येष्ठा	2 41	8 23	14 07	19 52
28	मूळ	1 40	7 30	13 23	19 18
29	पू.षा.	1 15	7 15	13 17	19 22
30	उ.षा.	1 29	7 39	13 52	20 07
31	श्रवण	2 25	8 46	15 08	21 34

चंद्र नक्षत्र चरण :		1	2	3	4
जून 2002 ई.	नक्षत्र	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
1	धनि.	4 01	10 31	17 03	23 37
2/ 3	शतता	6 13	12 50	19 29	2 10
3/ 4	पू.भा.	8 51	15 33	22 17	5 00
4/ 5	उ.भा.	11 44	18 28	1 13	7 57
5/ 6	रेवती	14 40	21 23	4 05	10 46
6/ 7	अश्विनी	17 26	0 05	6 42	13 18
7/ 8	भरणी	19 53	2 25	8 56	15 25
8/ 9	कृत्तिका	21 52	4 18	10 41	17 02
9/10	रोहिणी	23 22	5 39	11 54	18 07
11	मृग.	0 19	6 28	12 36	18 41
12	आर्द्रा	0 45	6 47	12 48	18 46
13	पुनर्व.	0 44	6 39	12 33	18 26
14	पुष्य	0 17	6 07	11 56	17 44
14/15	आश्ले.	23 31	5 16	11 01	16 44
15/16	मघा	22 27	4 09	9 50	15 31
16/17	पूर्वा	21 10	2 50	8 29	14 07
17/18	उत्तरा	19 45	1 22	7 00	12 37
18/19	हस्त	18 14	23 50	5 27	11 04
19/20	चित्रा	16 40	22 17	3 54	9 31
20/21	स्वाती	15 08	20 46	2 24	8 03
21/22	विशा.	13 42	19 22	1 03	6 44
22/23	अनुरा.	12 26	18 09	23 53	5 38
23/24	ज्येष्ठा	11 24	17 12	23 01	4 51
24/25	मूळ	10 42	16 36	22 30	4 27
25/26	पू.षा.	10 25	16 25	22 27	4 31
26/27	उ.षा.	10 37	16 46	22 56	5 08
27/28	श्रवण	11 23	17 39	23 58	6 19
28/29	धनि.	12 42	19 08	1 35	8 04
29/30	शतता.	14 36	21 09	3 44	10 20

चन्द्रमा का नक्षत्र चरणों में प्रवेश काल (भा. स्टैं. टा.)

चंद्र नक्षत्र चरण :		1	2	3	4
जुलाई 2002 ई.	नक्षत्र	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
30/ 1	पू.भा.	16 59	23 38	6 19	13 01
1/ 2	उ.भा.	19 43	2 26	9 10	15 54
2/ 3	रेवती	22 38	5 22	12 06	18 49
4	अश्विनी	1 31	8 12	14 53	21 31
5	भरणी	4 09	10 44	17 18	23 49
6/ 7	कृत्तिका	6 19	12 46	19 11	1 34
7/ 8	रोहिणी	7 54	14 12	20 27	2 40
8/ 9	मृग.	8 50	14 58	21 03	3 06
9/10	आर्द्रा	9 06	15 04	21 00	2 54
10/11	पुनर्व.	8 45	14 35	20 22	2 08
11/12	पुष्य	7 52	13 35	19 16	0 55
12	आश्ले.	6 34	12 11	17 48	23 23
13	मघा	4 58	10 32	16 06	21 39
14	पूर्वा.	3 12	8 45	14 18	19 51
15	उत्तरा	1 24	6 57	12 31	18 05
15/16	हस्त	23 39	5 14	10 50	16 26
16/17	चित्रा	22 03	3 41	9 19	14 59
17/18	स्वाती	20 39	2 21	8 03	13 47
18/19	विशा.	19 31	1 17	7 04	12 51
19/20	अनुरा.	18 40	0 30	6 22	12 14
20/21	ज्येष्ठा	18 08	0 02	5 59	11 56
21/22	मूळ	17 55	23 55	5 56	11 59
22/23	पू.षा.	18 03	0 08	6 15	12 23
23/24	उ.षा.	18 33	0 45	6 58	13 12
24/25	श्रवण	19 28	1 46	8 06	14 27
25/26	धनि.	20 50	3 15	9 41	16 10
26/27	शतता.	22 39	5 11	11 44	18 19
28	पू.भा.	0 55	7 33	14 12	20 52
29	उ.भा.	3 33	10 16	16 59	23 43
30/31	रेवती	6 27	13 12	19 57	2 42

चंद्र नक्षत्र चरण :		1	2	3	4
अगस्त 2002 ई.	नक्षत्र	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
31/ 1	अश्विनी	9 26	16 11	22 54	5 37
1/ 2	भरणी	12 18	18 58	1 37	8 14
2/ 3	कृत्तिका	14 49	21 22	3 53	10 21
3/ 4	रोहिणी	16 47	23 10	5 30	11 48
4/ 5	मृग.	18 03	0 15	6 23	12 29
5/ 6	आर्द्रा	18 32	0 32	6 29	12 23
6/ 7	पुनर्व.	18 15	0 03	5 50	11 33
7/ 8	पुष्य	17 15	22 54	4 30	10 05
8/ 9	आश्ले.	15 39	21 10	2 40	8 08
9/10	मघा	13 36	19 02	0 27	5 52
10/11	पूर्वा.	11 16	16 40	22 03	3 26
11/12	उत्तरा.	8 50	14 14	19 38	1 02
12	हस्त	6 27	11 53	17 20	22 48
13	चित्रा	4 17	9 47	15 19	20 52
14	स्वाती	2 26	8 03	13 40	19 20
15	विशा.	1 01	6 44	12 29	18 15
16	अनुरा.	0 04	5 54	11 46	17 40
16/17	ज्येष्ठा	23 36	5 33	11 32	17 33
17/18	मूळ	23 36	5 40	11 46	17 54
19	पू.षा.	0 03	6 14	12 27	18 40
20	उ.षा.	0 56	7 12	13 30	19 50
21	श्रवण	2 11	8 33	14 57	21 22
22	धनि.	3 48	10 15	16 44	23 15
23/24	शतता.	5 46	12 19	18 53	1 28
24/25	पू.भा.	8 05	14 43	21 22	4 02
25/26	उ.भा.	10 43	17 25	0 08	6 51
26/27	रेवती	13 36	20 21	3 06	9 52
27/28	अश्विनी	16 38	23 24	6 09	12 55
28/29	भरणी	19 39	2 24	9 07	15 49
29/30	कृत्तिका	22 29	5 08	11 46	18 21
31	रोहिणी	0 54	7 25	13 54	20 20

चंद्र नक्षत्र चरण :		1	2	3	4
सितम्बर 2002 ई.	नक्षत्र	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
1	मृग.	2 43	9 03	15 21	21 35
2	आर्द्रा	3 46	9 54	15 59	22 00
3	पुनर्व.	3 59	9 54	15 46	21 35
4	पुष्य	3 21	9 04	14 44	20 21
5	आश्ले.	1 56	7 29	12 59	18 27
5/ 6	मघा	23 53	5 17	10 40	16 01
6/ 7	पूर्वा.	21 21	2 40	7 58	13 15
7/ 8	उत्तरा	18 31	23 48	5 04	10 20
8/ 9	हस्त	15 36	20 52	2 09	7 27
9/10	चित्रा	12 46	18 06	23 27	4 49
10/11	स्वाती	10 12	15 38	21 05	2 34
11/12	विशा.	8 05	13 38	19 13	0 50
12	अनुरा.	6 30	12 12	17 56	23 43
13	ज्येष्ठा	5 32	11 24	17 18	23 14
14	मूळ	5 13	11 15	17 18	23 25
15/16	पू.षा.	5 33	11 43	17 56	0 11
16/17	उ.षा.	6 27	12 46	19 06	1 28
17/18	श्रवण	7 52	14 18	20 44	3 13
18/19	धनि.	9 43	16 14	22 46	5 19
19/20	शतता.	11 54	18 30	1 06	7 44
20/21	पू.भा.	14 23	21 02	3 43	10 24
21/22	उ.भा.	17 06	23 48	6 31	13 15
22/23	रेवती	20 00	2 44	9 30	16 15
23/24	अश्विनी	23 01	5 47	12 32	19 18
25	भरणी	2 04	8 49	15 33	22 17
26/27	कृत्तिका	5 00	11 42	18 23	1 03
27/28	रोहिणी	7 41	14 18	20 53	3 26
28/29	मृग.	9 56	16 25	22 51	5 14
29/30	आर्द्रा	11 35	17 53	0 08	6 20

चन्द्रमा का नक्षत्र चरणों में प्रवेश काल (भा. स्टैं. टा.)

चंद्र नक्षत्र चरण :		1	2	3	4
अक्तूबर 2002 ई.	नक्षत्र	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
30/ 1	पुनर्व.	12 29	18 35	0 38	6 37
1/ 2	पुष्य	12 34	18 27	0 17	6 05
2/ 3	आश्ले.	11 49	17 30	23 09	4 45
3/ 4	मघा	10 18	15 49	21 17	2 43
4/ 5	पूर्वा.	8 07	13 30	18 50	0 09
5	उत्तरा.	5 27	10 44	15 59	21 14
6	हस्त	2 28	7 42	12 55	18 08
6/ 7	चित्रा	23 22	4 36	9 50	15 05
7/ 8	स्वाती	20 20	1 37	6 55	12 14
8/ 9	विशा.	17 35	22 57	4 22	9 48
9/10	अनुरा.	15 16	20 46	2 19	7 54
10/11	ज्येष्ठा	13 32	19 12	0 55	6 41
11/12	मूळ	12 29	18 20	0 14	6 11
12/13	पू.षा.	12 11	18 13	0 19	6 27
13/14	उ.षा.	12 37	18 51	1 06	7 25
14/15	श्रवण	13 45	20 08	2 33	9 01
15/16	धनि.	15 30	22 01	4 33	11 08
16/17	शतता.	17 43	0 20	6 58	13 38
17/18	पू.भा.	20 18	2 59	9 41	16 24
18/19	उ.भा.	23 07	5 51	12 35	19 20
20	रेवती	2 05	8 50	15 35	22 20
21/22	अश्विनी	5 05	11 50	18 34	1 19
22/23	भरणी	8 03	14 46	21 30	4 12
23/24	कृत्तिका	10 54	17 35	0 15	6 54
24/25	रोहिणी	13 32	20 09	2 44	9 19
25/26	मृग.	15 51	22 22	4 52	11 19
26/27	आर्द्रा	17 45	0 08	6 29	12 48
27/28	पुनर्व.	19 05	1 19	7 31	13 40
28/29	पुष्य	19 47	1 51	7 52	13 51
29/30	आश्ले.	19 46	1 40	7 30	13 18
30/31	मघा	19 03	0 46	6 26	12 04

चंद्र नक्षत्र चरण :		1	2	3	4
नवम्बर 2002 ई.	नक्षत्र	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
31/ 1	पूर्वा.	17 40	23 13	4 44	10 13
1/ 2	उत्तरा.	15 40	21 06	2 30	7 52
2/ 3	हस्त	13 13	18 33	23 52	5 10
3/ 4	चित्रा	10 27	15 44	21 01	2 17
4	स्वाती	7 33	12 50	18 06	23 23
5	विशा.	4 41	10 00	15 19	20 40
6	अनुरा	2 02	7 26	12 51	18 18
6/ 7	ज्येष्ठा	23 47	5 17	10 50	16 26
7/ 8	मूळ	22 03	3 44	9 26	15 12
8/ 9	पू.षा.	21 00	2 51	8 45	14 42
9/10	उ.षा.	20 42	2 45	8 50	14 59
10/11	श्रवण	21 10	3 25	9 42	16 01
11/12	धनि.	22 24	4 49	11 16	17 46
13	शतता.	0 18	6 51	13 27	20 05
14	पू.भा.	2 43	9 24	16 05	22 48
15/16	उ.भा.	5 31	12 16	19 00	1 45
16/17	रेवती	8 31	15 16	22 02	4 47
17/18	अश्विनी	11 32	18 17	1 01	7 45
18/19	भरणी	14 28	21 10	3 51	10 31
19/20	कृत्तिका	17 10	23 49	6 26	13 01
20/21	रोहिणी	19 36	2 09	8 41	15 12
21/22	मृग.	21 41	4 08	10 34	16 59
22/23	आर्द्रा	23 22	5 43	12 03	18 21
24	पुनर्व.	0 37	6 51	13 04	19 15
25	पुष्य	1 24	7 31	13 37	19 40
26	आश्ले.	1 42	7 41	13 39	19 35
27	मघा	1 28	7 20	13 10	18 58
28	पूर्वा.	0 45	6 29	12 12	17 53
28/29	उत्तरा.	23 32	5 10	10 46	16 21
29/30	हस्त	21 54	3 26	8 56	14 26

चंद्र नक्षत्र चरण :		1	2	3	4
दिसम्बर 2002 ई.	नक्षत्र	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
30/ 1	चित्रा	19 54	1 22	6 49	12 15
1/ 2	स्वाती	17 40	23 05	4 29	9 54
2/ 3	विशा.	15 18	20 42	2 07	7 32
3/ 4	अनुरा.	12 57	18 23	23 49	5 17
4/ 5	ज्येष्ठा	10 45	16 15	21 46	3 18
5/ 6	मूळ	8 52	14 28	20 05	1 45
6/ 7	पू.षा.	7 27	13 10	18 56	0 45
7/ 8	उ.षा.	6 36	12 29	18 26	0 24
8/ 9	श्रवण	6 26	12 31	18 38	0 48
9/10	धनि.	7 01	13 17	19 35	1 57
10/11	शतता.	8 21	14 47	21 16	3 47
11/12	पू.भा.	10 21	16 56	23 34	6 13
12/13	उ.भा.	12 54	19 36	2 19	9 03
13/14	रेवती	15 48	22 34	5 19	12 05
14/15	अश्विनी	18 51	1 36	8 21	15 06
15/16	भरणी	21 49	4 32	11 13	17 53
17	कृत्तिका	0 32	7 09	13 45	20 19
18	रोहिणी	2 52	9 22	15 51	22 18
19	मृग.	4 42	11 05	17 27	23 46
20/21	आर्द्रा	6 03	12 19	18 32	0 44
21/22	पुनर्व.	6 54	13 02	19 09	1 14
22/23	पुष्य	7 17	13 19	19 20	1 18
23/24	आश्ले.	7 16	13 12	19 07	1 00
24/25	मघा	6 53	12 44	18 34	0 23
25	पूर्वा.	6 11	11 58	17 44	23 29
26	उत्तरा.	5 13	10 56	16 39	22 21
27	हस्त	4 02	9 42	15 22	21 01
28	चित्रा	2 39	8 17	13 54	19 31
29	स्वाती	1 08	6 44	12 20	17 56
29/30	विशा.	23 31	5 06	10 42	16 17
30/31	अनुरा.	21 52	3 28	9 03	14 40

चन्द्रमा का नक्षत्र चरणों में प्रवेश काल (भा. स्टैं. टा.)

चंद्र नक्षत्र चरण :		1	2	3	4
जनवरी 2003 ई.	नक्षत्र	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
31/ 1	ज्येष्ठा	20 16	1 53	7 31	13 09
1/ 2	मूळ	18 49	0 29	6 10	11 52
2/ 3	पू.षा.	17 36	23 21	5 08	10 56
3/ 4	उ.षा.	16 46	22 37	4 31	10 26
4/ 5	श्रवण	16 24	22 24	4 26	10 31
5/ 6	धनि.	16 38	22 47	4 59	11 13
6/ 7	शतता.	17 30	23 50	6 12	12 37
7/ 8	पू.भा.	19 04	1 33	8 04	14 38
8/ 9	उ.भा.	21 14	3 52	10 31	17 12
9/10	रेवती	23 55	6 38	13 23	20 08
11	अश्विनी	2 54	9 40	16 26	23 12
12/13	भरणी	5 58	12 42	19 26	2 09
13/14	कृत्तिका	8 50	15 30	22 08	4 44
14/15	रोहिणी	11 19	17 51	0 20	6 48
15/16	मृग.	13 13	19 36	1 56	8 14
16/17	आर्द्रा	14 29	20 42	2 52	9 00
17/18	पुनर्व.	15 05	21 08	3 09	9 07
18/19	पुष्य	15 04	20 59	2 51	8 42
19/20	आश्ले.	14 32	20 20	2 06	7 51
20/21	मघा	13 35	19 18	0 59	6 40
21/22	पूर्वा.	12 21	18 00	23 39	5 18
22/23	उत्तरा.	10 56	16 34	22 12	3 50
23/24	हस्त	9 27	15 05	20 43	2 21
24/25	चित्रा	8 00	13 38	19 17	0 56
25	स्वाती	6 36	12 16	17 56	23 37
26	विशा.	5 19	11 01	16 43	22 26
27	अनुरा.	4 10	9 54	15 38	21 24
28	ज्येष्ठा	3 09	8 56	14 43	20 31
29	मूळ	2 19	8 09	13 59	19 50
30	पू.षा.	1 42	7 34	13 28	19 23
31	उ.षा.	1 19	7 17	13 15	19 15

चंद्र नक्षत्र चरण :		1	2	3	4
फरवरी 2003 ई.	नक्षत्र	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
1	श्रवण	1 16	7 19	13 24	19 30
2	धनि.	1 38	7 47	13 59	20 13
3	शतता.	2 28	8 46	15 05	21 27
4	पू.भा.	3 51	10 17	16 45	23 15
5/ 6	उ.भा.	5 47	12 21	18 57	1 35
6/ 7	रेवती	8 14	14 55	21 38	4 21
7/ 8	अश्विनी	11 06	17 52	0 38	7 24
8/ 9	भरणी	14 11	20 58	3 44	10 30
9/10	कृत्तिका	17 15	23 59	6 42	13 23
10/11	रोहिणी	20 02	2 40	9 15	15 48
11/12	मृग.	22 18	4 46	11 11	17 33
12/13	आर्द्रा	23 53	6 09	12 23	18 33
14	पुनर्व.	0 40	6 45	12 46	18 45
15	पुष्य	0 41	6 34	12 24	18 12
15/16	आश्ले.	23 58	5 41	11 22	17 02
16/17	मघा	22 39	4 15	9 49	15 22
17/18	पूर्वा.	20 53	2 24	7 53	13 22
18/19	उत्तरा	18 50	0 18	5 46	11 13
19/20	हस्त	16 41	22 08	3 36	9 04
20/21	चित्रा	14 33	20 03	1 33	7 04
21/22	स्वाती	12 35	18 08	23 42	5 17
22/23	विशा.	10 53	16 31	22 10	3 50
23/24	अनुरा.	9 31	15 14	20 58	2 44
24/25	ज्येष्ठा	8 30	14 19	20 09	2 00
25/26	मूळ	7 52	13 46	19 41	1 38
26/27	पू.षा.	7 35	13 35	19 35	1 37
27/28	उ.षा.	7 40	13 44	19 50	1 57

चंद्र नक्षत्र चरण :		1	2	3	4
मार्च 2003 ई.	नक्षत्र	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
28/ 1	श्रवण	8 05	14 14	20 25	2 38
1/ 2	धनि.	8 51	15 06	21 23	3 41
2/ 3	शतता.	10 00	16 21	22 44	5 08
3/ 4	पू.भा.	11 34	18 01	0 30	7 00
4/ 5	उ.भा.	13 33	20 06	2 42	9 19
5/ 6	रेवती	15 57	22 37	5 18	12 01
6/ 7	अश्विनी	18 45	1 29	8 15	15 01
7/ 8	भरणी	21 48	4 35	11 23	18 10
9	कृत्तिका	0 58	7 45	14 31	21 16
10/11	रोहिणी	4 00	10 43	17 24	0 04
11/12	मृग.	6 41	13 16	19 49	2 19
12/13	आर्द्रा	8 47	15 12	21 34	3 52
13/14	पुनर्व.	10 08	16 20	22 29	4 35
14/15	पुष्य	10 38	16 37	22 33	4 26
15/16	आश्ले.	10 16	16 04	21 48	3 29
16/17	मघा	9 08	14 45	20 19	1 51
17	पूर्वा.	7 21	12 49	18 15	23 40
18	उत्तरा.	5 03	10 26	15 47	21 07
19	हस्त	2 27	7 46	13 05	18 24
19/20	चित्रा	23 43	5 02	10 22	15 42
20/21	स्वाती	21 02	2 24	7 46	13 09
21/22	विशा.	18 34	0 00	5 28	10 56
22/23	अनुरा.	16 27	21 59	3 33	9 09
23/24	ज्येष्ठा	14 47	20 27	2 09	7 53
24/25	मूळ	13 39	19 27	1 18	7 10
25/26	पू.षा.	13 04	19 01	1 00	7 00
26/27	उ.षा.	13 03	19 08	1 15	7 23
27/28	श्रवण	13 34	19 46	2 00	8 16
28/29	धनि.	14 34	20 53	3 14	9 37
29/30	शतता.	16 01	22 26	4 53	11 22
30/31	पू.भा.	17 52	0 23	6 56	13 30

चन्द्रमा का नक्षत्र चरणों में प्रवेश काल (भा. स्टैं. टा.)

चंद्र नक्षत्र चरण :		1	2	3	4
अप्रैल 2003 ई.	नक्षत्र	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
31/ 1	उ.भा.	20 05	2 42	9 20	15 58
1/ 2	रेवती	22 38	5 20	12 02	18 45
3	अश्विनी	1 29	8 14	14 59	21 45
4/ 5	भरणी	4 32	11 19	18 06	0 54
5/ 6	कृत्तिका	7 42	14 29	21 16	4 03
6/ 7	रोहिणी	10 49	17 34	0 18	7 02
7/ 8	मृग	13 43	20 23	3 02	9 39
8/ 9	आर्द्रा	16 13	22 45	5 15	11 42
9/10	पुनर्व.	18 07	0 29	6 48	13 04
10/11	पुष्य	19 17	1 26	7 33	13 37
11/12	आश्ले	19 37	1 34	7 28	13 19
12/13	मघा	19 07	0 53	6 35	12 14

नक्षत्र चरण-प्रवेशकाल से भुक्तदशा का ज्ञान

चन्द्र के नक्षत्र में प्रवेशकाल द्वारा जन्मकालिक दशा का लगभग भुक्तकाल बड़ी ही आसानी से इस प्रकार जाना जा सकता है:-

नीचे नं. (१) एवं (२) भुक्त-दशा-साधन सारणियां दी गई हैं। जन्मकालिक नक्षत्र के चरण का भुक्तकाल (घं.मि.)ज्ञात करें। सारणी (१) से जन्मकालिक नक्षत्र के चरण के नीचे लिखे वर्ष ,मास उठा लें। इनमें सारणी (२)से नक्षत्र-चरण के भुक्तकाल के आगे दशेश ग्रह क नीचे लिखे गए वर्ण, मास जोड़ दीजिए। बस यही जन्मकालिक दशा का भुक्तकाल होगा। दशेश का ज्ञान सारणी (१) से हो जाता है।

उदाहरण :- मान लीजिए, कि किसी बच्चे का जन्म ३० मार्च सन् २००१ को ११ घं. ३२ मि. पर हुआ है। स्पष्ट है कि इसका जन्म रोहिणी के तीसरे चरण में हुआ है। जन्म के समय रोहिणी का तृतीय चरण २ घं. ४ मि. भुक्त है। 'भुक्तदशा साधन सारणी(१)' में रोहिणी के तृतीय चरण के नीचे ५ वर्ष ० मास लिखा है। इसी सारणी में रोहिणी का 'दशेश' चन्द्र भी लिखा है। 'भुक्तदशा साधन सारणी (२)' में रोहिणी के तृतीय चरण के भुक्तकाल २ घं. ०. के आगे 'दशेश' चन्द्र वाले कालम में ० वर्ष १० मास लिखे हैं। इन्हें ५ वर्ष ० मास में जोड़ने पर ५ वर्ष १० मास हुए। यही इस बच्चे के जन्म के समय चन्द्र की दशा का लगभग भुक्तकाल है।

भुक्त-दशा -साधन सारणी (१)

नक्षत्र			दशेश	१ चरण		२ चरण		३ चरण		४ चरण	
				वर्ष	मास	वर्ष	मास	वर्ष	मास	वर्ष	मास
अश्वि	मघा	मूल	के	००	००	१	९	३	६	५	३
भ.	पू.फा.	पू.षा.	शु.	००	००	५	००	१०	००	१५	००
कृ.	उ.फा.	उ.षा.	सू.	००	००	१	६	३	००	४	६
रो.	हस्त	श्रव.	चं.	००	००	२	६	५	००	७	६
मृ.	चित्रा	ध.	मं.	००	००	१	९	३	६	५	३
आर्द्रा	स्वा.	शत.	रा.	००	००	[illegible]	६	९	००	१३	६
पुन.	विशा.	पू.भा.	गु.	००	००	४	००	८	००	१२	००
पुष्य	अनु.	उ.भा.	श.	००	००	४	९	९	६	१४	३
आश्ले.	ज्येष्ठा	रेव.	बु.	००	००	४	३	८	६	१२	९

भुक्त-दशा -साधन सारणी (२)

नक्षत्र चरण का भुक्त काल		दशेश सूर्य		दशेश चन्द्र		दशेश भौम, केतु		दशेश बुध		दशेश गुरु		दशेश शुक्र		दशेश शनि		दशेश राहु	
घं.	मि.	व.	मा.	व.	मा.	व.	मा.	व.	मा.	व.	मा.	व.	मा.	व.	मा.	व.	मा.
००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००
०	३०	०	१	०	२	०	२	०	४	०	४	०	५	०	५	०	४
१	००	०	३	०	५	०	३	०	८	०	८	०	१०	०	९	०	९
१	३०	०	४	०	७	०	५	१	१	१	०	१	३	१	२	१	१
२	००	०	६	०	१०	०	७	१	५	१	४	१	८	१	७	१	६
२	३०	०	७	१	००	०	९	१	९	१	८	२	१	२	००	१	१०
३	००	०	९	१	३	०	१०	२	१	२	००	२	६	२	४	२	३
३	३०	०	१०	१	५	१	०	२	६	२	४	२	११	२	९	२	७
४	००	१	०	१	८	१	२	२	१०	२	८	३	४	३	२	३	००
४	३०	१	१	१	१०	१	४	३	२	३	०	३	९	३	७	३	४
५	००	१	३	२	१	१	५	३	६	३	४	४	२	३	१	३	९
५	३०	१	४	२	३	१	७	३	११	३	८	४	७	४	४	१	१
६	००	१	६	२	६	१	९	४	३	४	००	५	००	४	९	१	६
*७	३०	१	६	२	६	१	९	४	३	४	००	५	००	४	९	४	६

* ६ घं.०० मि.और ७ घं.३० मि. के आगे इस सारणी में वर्ष-मास एक से ही हैं। सारणी में लगभग (मध्यम) मान का प्रयोग करने के कारण ऐसा लिखना आवश्यक था। पाठक इसे गलत न सम .।

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.) (1 जनवरी 2002 ई. को अयनांश 23°/52′/49″)

तारीख 2002 ई. जनवरी	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य क्रां.	चंद्र क्रां.	चन्द्रशर	तारीख 2002 ई. जनवरी
	रा. अ. कं. वि.	रा. अ. कं. वि.	रा. अ. कं. वि.	रा. अ. कं. वि.	रा. अ. कं. वि.	रा. अ. कं. वि.	रा. अ. कं. वि.	रा. अ. कं. वि.	अ. कं.	अ. कं.	अ. कं.	
1	8 16 30 12	3 07 14 12	10 23 00 06	9 01 42 15	2 16 47 10	8 13 16 50	1 15 26 34	2 02 28 51	-23 02	+22 47	+ 2 57	1
2	8 17 31 20	3 21 47 26	10 23 44 00	9 03 14 38	2 16 39 04	8 14 32 20	1 15 22 52	2 02 25 41	-22 57	+19 54	+ 3 57	2
3	8 18 32 28	4 06 22 49	10 24 27 54	9 04 45 56	2 16 30 58	8 15 47 50	1 15 19 04	2 02 22 30	-22 51	+15 46	+ 4 41	3
4	8 19 33 36	4 20 54 27	10 25 11 48	9 06 15 56	2 16 22 52	8 17 03 19	1 15 15 28	2 02 19 19	-22 45	+10 44	+ 5 08	4
5	8 20 34 45	5 05 17 27	10 25 55 36	9 07 44 26	2 16 14 46	8 18 18 49	1 15 11 58	2 02 16 08	-22 39	+ 5 09	+ 5 15	5
6	8 21 35 54	5 19 28 25	10 26 39 30	9 09 10 56	2 16 06 40	8 19 34 19	1 15 08 28	2 02 12 57	-22 32	- 0 37	+ 5 03	6
7	8 22 37 02	6 03 25 29	10 27 23 24	9 10 35 01	2 15 58 33	8 20 49 49	1 15 05 04	2 02 09 47	-22 25	- 6 16	+ 4 33	7
8	8 23 38 11	6 17 07 56	10 28 07 18	9 11 56 25	2 15 50 33	8 22 05 19	1 15 01 45	2 02 06 36	-22 17	-11 32	+ 3 47	8
9	8 24 39 21	7 00 35 58	10 28 51 05	9 13 14 31	2 15 42 39	8 23 20 49	1 14 58 33	2 02 03 25	-22 09	-16 08	+ 2 50	9
10	8 25 40 30	7 13 50 16	10 29 34 59	9 14 28 42	2 15 34 45	8 24 36 19	1 14 55 21	2 02 00 14	-22 01	-19 52	+ 1 45	10
11	8 26 41 40	7 26 51 34	11 00 18 47	9 15 38 24	2 15 26 51	8 25 51 48	1 14 52 21	2 01 57 04	-21 52	-22 32	+ 0 35	11
12	8 27 42 49	8 09 40 34	11 01 02 41	9 16 42 48	2 15 19 03	8 27 07 18	1 14 49 27	2 01 53 53	-21 42	-23 59	- 0 35	12
13	8 28 43 59	8 22 17 55	11 01 46 29	9 17 41 11	2 15 11 21	8 28 22 42	1 14 46 33	2 01 50 42	-21 32	-24 09	- 1 43	13
14	8 29 45 07	9 04 44 12	11 02 30 17	9 18 32 41	2 15 03 38	8 29 38 12	1 14 43 51	2 01 47 31	-21 22	-23 07	- 2 44	14
15	9 00 46 15	9 17 00 09	11 03 14 05	9 19 16 16	2 14 56 02	9 00 53 42	1 14 41 09	2 01 44 21	-21 11	-20 59	- 3 37	15
16	9 01 47 23	9 29 06 52	11 03 57 52	9 19 51 22	2 14 48 32	9 02 09 12	1 14 38 32	2 01 41 10	-21 00	-17 56	- 4 19	16
17	9 02 48 30	10 11 05 55	11 04 41 40	9 20 16 51	2 14 41 08	9 03 24 36	1 14 36 08	2 01 37 59	-20 49	-14 10	- 4 49	17
18	9 03 49 36	10 22 59 33	11 05 25 22	9 20 31 57	2 14 33 50	9 04 40 06	1 14 33 44	2 01 34 48	-20 37	- 9 54	- 5 07	18
19	9 04 50 42	11 04 50 40	11 06 09 10	9 20 36 08	2 14 26 38	9 05 55 29	1 14 31 32	2 01 31 37	-20 25	- 5 16	- 5 11	19
20	9 05 51 47	11 16 42 54	11 06 52 52	9 20 28 49	2 14 19 32	9 07 10 53	1 14 29 20	2 01 28 27	-20 12	- 0 27	- 5 02	20
21	9 06 52 50	11 28 40 27	11 07 36 34	9 20 09 49	2 14 12 32	9 08 26 23	1 14 27 20	2 01 25 16	-19 59	+ 4 26	- 4 40	21
22	9 07 53 53	0 10 47 58	11 08 20 16	9 19 39 18	2 14 05 43	9 09 41 47	1 14 25 20	2 01 22 05	-19 45	+ 9 13	- 4 05	22
23	9 08 54 55	0 23 10 20	11 09 03 57	9 18 57 48	2 13 58 55	9 10 57 11	1 14 23 31	2 01 18 54	-19 32	+13 45	- 3 19	23
24	9 09 55 57	1 05 52 17	11 09 47 33	9 18 06 11	2 13 52 19	9 12 12 35	1 14 21 43	2 01 15 44	-19 18	+17 48	- 2 21	24
25	9 10 56 57	1 18 57 53	11 10 31 09	9 17 05 47	2 13 45 49	9 13 27 59	1 14 20 07	2 01 12 33	-19 03	+21 07	- 1 14	25
26	9 11 57 56	2 02 30 00	11 11 14 45	9 15 58 22	2 13 39 25	9 14 43 16	1 14 18 37	2 01 09 22	-18 48	+23 22	- 0 01	26
27	9 12 58 54	2 16 29 32	11 11 58 21	9 14 46 04	2 13 33 13	9 15 58 40	1 14 17 13	2 01 06 11	-18 33	+24 16	+ 1 14	27
28	9 13 59 51	3 00 54 46	11 12 41 51	9 13 30 52	2 13 27 07	9 17 13 58	1 14 15 55	2 01 03 00	-18 17	+23 34	+ 2 26	28
29	9 15 00 47	3 15 40 59	11 13 25 21	9 12 15 15	2 13 21 12	9 18 29 22	1 14 14 43	2 00 59 50	-18 02	+21 15	+ 3 31	29
30	9 16 01 42	4 00 40 43	11 14 08 50	9 11 01 21	2 13 15 24	9 19 44 40	1 14 13 37	2 00 56 39	-17 45	+17 27	+ 4 22	30
31	9 17 02 36	4 15 44 37	11 14 52 20	9 09 51 04	2 13 09 48	9 20 59 58	1 14 12 42	2 00 53 28	-17 29	+12 31	+ 4 55	31

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.) (1 फरवरी 2002 ई. को अयनांश 23°/52'/53")

तारीख 2002 ई. फरवरी	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य क्रां.	चंद्र क्रां.	चन्द्रशर	तारीख 2002 ई. फरवरी
	रा. अ. कं. वि.	रा. अ. कं. वि.	रा. अ. कं. वि.	रा. अ. कं. वि.	रा. अ. कं. वि.	रा. अ. कं. वि.	रा. अ. कं. वि.	रा. अ. कं. वि.	अ. कं.	अ. कं.	अ. कं.	
1	9 18 03 30	5 00 43 05	11 15 35 44	9 08 45 58	2 13 04 18	9 22 15 16	1 14 11 48	2 00 50 17	-17 12	+6 51	+5 08	1
2	9 19 04 22	5 15 27 45	11 16 19 08	9 07 47 34	2 12 59 00	9 23 30 33	1 14 11 06	2 00 47 07	-16 55	+0 54	+5 00	2
3	9 20 05 14	5 29 52 44	11 17 02 32	9 06 56 40	2 12 53 48	9 24 45 51	1 14 10 24	2 00 43 56	-16 38	-5 00	+4 33	3
4	9 21 06 05	6 13 55 04	11 17 45 56	9 06 13 52	2 12 48 48	9 26 01 09	1 14 09 54	2 00 40 45	-16 20	-10 29	+3 50	4
5	9 22 06 54	6 27 34 22	11 18 29 14	9 05 39 34	2 12 44 00	9 27 16 27	1 14 09 30	2 00 37 34	-16 02	-15 18	+2 55	5
6	9 23 07 44	7 10 52 09	11 19 12 31	9 05 13 47	2 12 39 23	9 28 31 39	1 14 09 12	2 00 34 24	-15 44	-19 15	+1 52	6
7	9 24 08 32	7 23 51 04	11 19 55 49	9 04 56 17	2 12 34 53	9 29 46 57	1 14 09 05	2 00 31 13	-15 25	-22 08	+0 44	7
8	9 25 09 20	8 06 34 10	11 20 39 01	9 04 46 53	2 12 30 35	10 01 02 09	1 14 08 59	2 00 28 02	-15 06	-23 50	-0 24	8
9	9 26 10 07	8 19 04 24	11 21 22 19	9 04 45 11	2 12 26 29	10 02 17 26	1 14 08 59	2 00 24 51	-14 47	-24 18	-1 30	9
10	9 27 10 52	9 01 24 21	11 22 05 31	9 04 50 05	2 12 22 35	10 03 32 38	1 14 09 11	2 00 21 40	-14 28	-23 32	-2 30	10
11	9 28 11 36	9 13 35 59	11 22 48 37	9 05 03 00	2 12 18 47	10 04 47 50	1 14 09 29	2 00 18 30	-14 09	-21 40	-3 23	11
12	9 29 12 18	9 25 40 55	11 23 31 49	9 05 21 36	2 12 15 17	10 06 03 02	1 14 09 53	2 00 15 19	-13 49	-18 50	-4 06	12
13	10 00 13 00	10 07 40 22	11 24 14 55	9 05 46 06	2 12 11 53	10 07 18 14	1 14 10 23	2 00 12 08	-13 29	-15 14	-4 37	13
14	10 01 13 40	10 19 35 31	11 24 58 00	9 06 15 54	2 12 08 40	10 08 33 20	1 14 10 59	2 00 08 57	-13 09	-11 03	-4 56	14
15	10 02 14 18	11 01 27 45	11 25 41 00	9 06 50 36	2 12 05 40	10 09 48 32	1 14 11 40	2 00 05 47	-12 48	-6 29	-5 03	15
16	10 03 14 55	11 13 18 51	11 26 24 06	9 07 29 54	2 12 02 52	10 11 03 37	1 14 12 34	2 00 02 36	-12 28	-1 41	-4 56	16
17	10 04 15 30	11 25 11 16	11 27 07 06	9 08 13 24	2 12 00 16	10 12 18 43	1 14 13 28	1 29 59 25	-12 07	+3 12	-4 36	17
18	10 05 16 04	0 07 08 07	11 27 50 00	9 09 00 42	2 11 57 52	10 13 33 49	1 14 14 34	1 29 56 14	-11 46	+8 00	-4 04	18
19	10 06 16 35	0 19 13 16	11 28 33 00	9 09 51 36	2 11 55 40	10 14 48 55	1 14 15 46	1 29 53 03	-11 24	+12 34	-3 21	19
20	10 07 17 05	1 01 31 12	11 29 15 54	9 10 45 42	2 11 53 40	10 16 03 55	1 14 17 04	1 29 49 53	-11 03	+16 43	-2 28	20
21	10 08 17 33	1 14 06 47	11 29 58 41	9 11 42 54	2 11 51 51	10 17 18 55	1 14 18 28	1 29 46 42	-10 42	+20 13	-1 27	21
22	10 09 18 00	1 27 04 49	0 00 41 35	9 12 42 48	2 11 50 15	10 18 33 55	1 14 19 57	1 29 43 31	-10 20	+22 49	-0 19	22
23	10 10 18 24	2 10 29 31	0 01 24 17	9 13 45 18	2 11 48 51	10 19 48 55	1 14 21 33	1 29 40 20	-9 58	+24 14	+0 52	23
24	10 11 18 47	2 24 23 35	0 02 07 05	9 14 50 18	2 11 47 33	10 21 03 54	1 14 23 21	1 29 37 10	-9 36	+24 13	+2 02	24
25	10 12 19 08	3 08 47 20	0 02 49 47	9 15 57 30	2 11 46 33	10 22 18 48	1 14 25 09	1 29 33 59	-9 14	+22 36	+3 07	25
26	10 13 19 26	3 23 37 41	0 03 32 29	9 17 06 48	2 11 45 45	10 23 33 48	1 14 27 09	1 29 30 48	-8 51	+19 25	+4 02	26
27	10 14 19 42	4 08 47 52	0 04 15 11	9 18 18 00	2 11 45 09	10 24 48 42	1 14 29 09	1 29 27 37	-8 29	+14 52	+4 40	27
28	10 15 19 58	4 24 07 52	0 04 57 46	9 19 31 12	2 11 44 45	10 26 03 30	1 14 31 21	1 29 24 27	-8 06	+9 19	+4 59	28

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.) (1 मार्च 2002 ई. को अयनांश 23°/52′/57″)

तारीख 2002 ई. मार्च	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य क्रां.	चंद्र क्रां.	चन्द्रशर	तारीख 2002 ई. मार्च
	रा. अ. कं. वि.	रा. अ. कं. वि.	रा. अ. कं. वि.	रा. अ. कं. वि.	रा. अ. कं. वि.	रा. अ. कं. वि.	रा. अ. कं. वि.	रा. अ. कं. वि.	अ. कं.	अ. कं.	अ. कं.	
1	10 16 20 11	5 09 26 00	0 05 40 16	9 20 46 06	2 11 44 26	10 27 18 24	1 14 33 33	1 29 21 16	- 7 44	+ 3 13	+ 4 56	1
2	10 17 20 23	5 24 31 02	0 06 22 52	9 22 02 42	2 11 44 26	10 28 33 12	1 14 35 56	1 29 18 05	- 7 21	- 3 00	+ 4 33	2
3	10 18 20 33	6 09 14 13	0 07 05 22	9 23 21 00	2 11 44 38	10 29 47 59	1 14 38 26	1 29 14 54	- 6 58	- 8 55	+ 3 52	3
4	10 19 20 42	6 23 30 22	0 07 47 46	9 24 40 42	2 11 45 02	11 01 02 47	1 14 41 02	1 29 11 43	- 6 35	-14 11	+ 2 58	4
5	10 20 20 48	7 07 17 55	0 08 30 16	9 26 01 59	2 11 45 32	11 02 17 35	1 14 43 44	1 29 08 33	- 6 12	-18 32	+ 1 54	5
6	10 21 20 54	7 20 38 13	0 09 12 40	9 27 24 35	2 11 46 20	11 03 32 17	1 14 46 32	1 29 05 22	- 5 49	-21 46	+ 0 47	6
7	10 22 20 58	8 03 34 28	0 09 54 57	9 28 48 41	2 11 47 20	11 04 47 05	1 14 49 26	1 29 02 11	- 5 25	-23 46	- 0 22	7
8	10 23 21 01	8 16 10 52	0 10 37 21	10 00 14 05	2 11 48 26	11 06 01 47	1 14 52 26	1 28 59 00	- 5 02	-24 30	- 1 27	8
9	10 24 21 02	8 28 31 47	0 11 19 39	10 01 40 53	2 11 49 49	11 07 16 29	1 14 55 31	1 28 55 50	- 4 39	-23 59	- 2 27	9
10	10 25 21 01	9 10 41 20	0 12 01 51	10 03 08 53	2 11 51 19	11 08 31 04	1 14 58 43	1 28 52 39	- 4 15	-22 20	- 3 19	10
11	10 26 20 58	9 22 42 57	0 12 44 09	10 04 38 11	2 11 53 01	11 09 45 46	1 15 02 01	1 28 49 28	- 3 52	-19 42	- 4 01	11
12	10 27 20 54	10 04 39 28	0 13 26 15	10 06 08 41	2 11 55 01	11 11 00 22	1 15 05 25	1 28 46 17	- 3 28	-16 14	- 4 33	12
13	10 28 20 47	10 16 33 00	0 14 08 27	10 07 40 29	2 11 57 07	11 12 14 58	1 15 08 55	1 28 43 07	- 3 04	-12 09	- 4 52	13
14	10 29 20 39	10 28 25 09	0 14 50 32	10 09 13 29	2 11 59 25	11 13 29 28	1 15 12 25	1 28 39 56	- 2 41	- 7 38	- 4 59	14
15	11 00 20 29	11 10 17 15	0 15 32 38	10 10 47 41	2 12 01 55	11 14 44 04	1 15 16 07	1 28 36 45	- 2 17	- 2 49	- 4 52	15
16	11 01 20 17	11 22 10 36	0 16 14 44	10 12 23 05	2 12 04 37	11 15 58 34	1 15 19 55	1 28 33 34	- 1 53	+ 2 07	- 4 33	16
17	11 02 20 03	0 04 06 44	0 16 56 44	10 13 59 46	2 12 07 30	11 17 13 03	1 15 23 48	1 28 30 23	- 1 30	+ 6 59	- 4 02	17
18	11 03 19 47	0 16 07 42	0 17 38 44	10 15 37 40	2 12 10 30	11 18 27 27	1 15 27 42	1 28 27 13	- 1 06	+11 39	- 3 20	18
19	11 04 19 28	0 28 16 13	0 18 20 38	10 17 16 46	2 12 13 48	11 19 41 51	1 15 31 48	1 28 24 02	- 0 42	+15 55	- 2 28	19
20	11 05 19 07	1 10 35 38	0 19 02 32	10 18 57 04	2 12 17 12	11 20 56 15	1 15 36 00	1 28 20 51	- 0 19	+19 35	- 1 28	20
21	11 06 18 44	1 23 09 59	0 19 44 25	10 20 38 40	2 12 20 48	11 22 10 39	1 15 40 12	1 28 17 40	+ 0 05	+22 25	- 0 23	21
22	11 07 18 19	2 06 03 33	0 20 26 13	10 22 21 34	2 12 24 36	11 23 24 57	1 15 44 30	1 28 14 30	+ 0 29	+24 11	+ 0 45	22
23	11 08 17 52	2 19 20 34	0 21 08 01	10 24 05 40	2 12 28 30	11 24 39 15	1 15 48 54	1 28 11 19	+ 0 52	+24 39	+ 1 52	23
24	11 09 17 23	3 03 04 23	0 21 49 49	10 25 51 04	2 12 32 41	11 25 53 32	1 15 53 23	1 28 08 08	+ 1 16	+23 38	+ 2 56	24
25	11 10 16 51	3 17 16 38	0 22 31 31	10 27 37 46	2 12 36 59	11 27 07 44	1 15 57 59	1 28 04 57	+ 1 40	+21 07	+ 3 51	25
26	11 11 16 17	4 01 56 06	0 23 13 13	10 29 25 46	2 12 41 29	11 28 21 56	1 16 02 41	1 28 01 46	+ 2 03	+17 11	+ 4 32	26
27	11 12 15 39	4 16 58 07	0 23 54 49	11 01 14 58	2 12 46 05	11 29 36 08	1 16 07 23	1 27 58 36	+ 2 27	+12 04	+ 4 56	27
28	11 13 15 00	5 02 14 28	0 24 36 25	11 03 05 40	2 12 50 59	0 00 50 14	1 16 12 17	1 27 55 25	+ 2 50	+ 6 07	+ 4 59	28
29	11 14 14 19	5 17 34 14	0 25 17 54	11 04 57 33	2 12 55 59	0 02 04 20	1 16 17 11	1 27 52 14	+ 3 14	- 0 12	+ 4 42	29
30	11 15 13 36	6 02 45 48	0 25 59 24	11 06 50 51	2 13 01 05	0 03 18 26	1 16 22 11	1 27 49 03	+ 3 37	- 6 29	+ 4 04	30
31	11 16 12 52	6 17 38 55	0 26 40 54	11 08 45 27	2 13 06 23	0 04 32 26	1 16 27 11	1 27 45 53	+ 4 00	-12 17	+ 3 10	31

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.) (1 अप्रैल 2002 ई. को अयनांश 23°/53'/02")

तारीख 2002 ई. अप्रैल	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य क्रां.	चंद्र क्रां.	चन्द्रशर	तारीख 2002 ई. अप्रैल
	रा. अ. कं. वि.	रा. अ. कं. वि.	रा. अ. कं. वि.	रा. अ. कं. वि.	रा. अ. कं. वि.	रा. अ. कं. वि.	रा. अ. कं. वि.	रा. अ. कं. वि.	अ. कं.	अ. कं.	अ. कं.	
1	11 17 12 05	7 02 06 25	0 27 22 24	11 10 41 21	2 13 11 52	0 05 46 25	1 16 32 22	1 27 42 42	+ 4 24	-17 13	+ 2 05	1
2	11 18 11 17	7 16 04 44	0 28 03 48	11 12 38 39	2 13 17 28	0 07 00 25	1 16 37 34	1 27 39 31	+ 4 47	-21 02	+ 0 55	2
3	11 19 10 26	7 29 33 41	0 28 45 06	11 14 37 09	2 13 23 16	0 08 14 19	1 16 42 52	1 27 36 20	+ 5 10	-23 33	- 0 17	3
4	11 20 09 34	8 12 35 41	0 29 26 30	11 16 36 51	2 13 29 16	0 09 28 13	1 16 48 16	1 27 33 10	+ 5 33	-24 41	- 1 25	4
5	11 21 08 40	8 25 14 39	1 00 07 47	11 18 37 45	2 13 35 22	0 10 42 07	1 16 53 40	1 27 29 59	+ 5 56	-24 30	- 2 27	5
6	11 22 07 45	9 07 35 17	1 00 48 59	11 20 39 45	2 13 41 40	0 11 56 01	1 16 59 10	1 27 26 48	+ 6 18	-23 05	- 3 20	6
7	11 23 06 48	9 19 42 23	1 01 30 17	11 22 42 45	2 13 48 04	0 13 09 49	1 17 04 46	1 27 23 37	+ 6 41	-20 38	- 4 04	7
8	11 24 05 49	10 01 40 26	1 02 11 29	11 24 46 45	2 13 54 33	0 14 23 36	1 17 10 27	1 27 20 26	+ 7 04	-17 20	- 4 36	8
9	11 25 04 48	10 13 33 20	1 02 52 35	11 26 51 20	2 14 01 15	0 15 37 18	1 17 16 09	1 27 17 16	+ 7 26	-13 21	- 4 56	9
10	11 26 03 44	10 25 24 20	1 03 33 41	11 28 56 38	2 14 08 09	0 16 51 00	1 17 21 57	1 27 14 05	+ 7 48	- 8 53	- 5 03	10
11	11 27 02 39	11 07 15 57	1 04 14 47	0 01 02 14	2 14 15 09	0 18 04 42	1 17 27 51	1 27 10 54	+ 8 10	- 4 05	- 4 57	11
12	11 28 01 33	11 19 10 10	1 04 55 52	0 03 08 02	2 14 22 15	0 19 18 24	1 17 33 45	1 27 07 43	+ 8 32	+ 0 53	- 4 38	12
13	11 29 00 24	0 01 08 29	1 05 36 52	0 05 13 44	2 14 29 33	0 20 32 00	1 17 39 45	1 27 04 33	+ 8 54	+ 5 51	- 4 07	13
14	11 29 59 14	0 13 12 14	1 06 17 52	0 07 19 02	2 14 36 57	0 21 45 30	1 17 45 45	1 27 01 22	+ 9 16	+10 39	- 3 24	14
15	0 00 58 01	0 25 22 46	1 06 58 46	0 09 23 44	2 14 44 33	0 22 59 05	1 17 51 50	1 26 58 11	+ 9 38	+15 06	- 2 32	15
16	0 01 56 47	1 07 41 42	1 07 39 46	0 11 27 25	2 14 52 14	0 24 12 35	1 17 58 02	1 26 55 00	+ 9 59	+18 59	- 1 32	16
17	0 02 55 29	1 20 11 06	1 08 20 34	0 13 29 43	2 15 00 02	0 25 25 59	1 18 04 20	1 26 51 49	+10 20	+22 03	- 0 26	17
18	0 03 54 10	2 02 53 28	1 09 01 28	0 15 30 25	2 15 08 02	0 26 39 29	1 18 10 38	1 26 48 39	+10 41	+24 06	+ 0 42	18
19	0 04 52 50	2 15 51 42	1 09 42 15	0 17 29 07	2 15 16 08	0 27 52 53	1 18 16 56	1 26 45 28	+11 02	+24 54	+ 1 49	19
20	0 05 51 27	2 29 08 46	1 10 23 03	0 19 25 25	2 15 24 20	0 29 06 11	1 18 23 20	1 26 42 17	+11 23	+24 19	+ 2 53	20
21	0 06 50 01	3 12 47 15	1 11 03 45	0 21 19 06	2 15 32 38	1 00 19 29	1 18 29 50	1 26 39 06	+11 44	+22 17	+ 3 48	21
22	0 07 48 34	3 26 48 37	1 11 44 27	0 23 09 54	2 15 41 08	1 01 32 46	1 18 36 20	1 26 35 56	+12 04	+18 53	+ 4 31	22
23	0 08 47 04	4 11 12 30	1 12 25 09	0 24 57 30	2 15 49 43	1 02 45 58	1 18 42 55	1 26 32 45	+12 24	+14 17	+ 4 59	23
24	0 09 45 32	4 25 56 00	1 13 05 45	0 26 41 35	2 15 58 25	1 03 59 10	1 18 49 31	1 26 29 34	+12 44	+ 8 45	+ 5 08	24
25	0 10 43 57	5 10 53 26	1 13 46 21	0 28 22 05	2 16 07 13	1 05 12 16	1 18 56 13	1 26 26 23	+13 04	+ 2 38	+ 4 56	25
26	0 11 42 20	5 25 56 41	1 14 26 50	0 29 58 41	2 16 16 13	1 06 25 22	1 19 02 55	1 26 23 13	+13 23	- 3 41	+ 4 24	26
27	0 12 40 42	6 10 56 18	1 15 07 20	1 01 31 16	2 16 25 13	1 07 38 22	1 19 09 37	1 26 20 02	+13 43	- 9 46	+ 3 33	27
28	0 13 39 02	6 25 43 07	1 15 47 50	1 02 59 40	2 16 34 25	1 08 51 22	1 19 16 31	1 26 16 51	+14 02	-15 14	+ 2 29	28
29	0 14 37 21	7 10 09 42	1 16 28 20	1 04 23 52	2 16 43 43	1 10 04 21	1 19 23 19	1 26 13 40	+14 20	-19 42	+ 1 17	29
30	0 15 35 38	7 24 11 14	1 17 08 44	1 05 43 39	2 16 53 01	1 11 17 15	1 19 30 12	1 26 10 29	+14 39	-22 53	+ 0 02	30

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.) (1 मई 2002 ई. को अयनांश 23°/53'/06")

तारीख 2002 ई. मई	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य क्रां.	चंद्र क्रां.	चन्द्रशर	तारीख 2002 ई. मई
	रा. अ. कं. वि.	रा. अ. कं. वि.	रा. अ. कं. वि.	रा. अ. कं. वि.	रा. अ. कं. वि.	रा. अ. कं. वि.	रा. अ. कं. वि.	रा. अ. कं. वि.	अ. कं.	अ. कं.	अ. कं.	
1	0 16 33 53	8 07 45 49	1 17 49 08	1 06 58 57	2 17 02 30	1 12 30 09	1 19 37 12	1 26 07 19	+14 57	-24 37	- 1 11	1
2	0 17 32 06	8 20 54 08	1 18 29 26	1 08 09 39	2 17 12 06	1 13 42 57	1 19 44 12	1 26 04 08	+15 16	-24 55	- 2 18	2
3	0 18 30 18	9 03 38 49	1 19 09 43	1 09 15 44	2 17 21 48	1 14 55 45	1 19 51 12	1 26 00 57	+15 33	-23 52	- 3 17	3
4	0 19 28 29	9 16 03 44	1 19 50 01	1 10 17 02	2 17 31 42	1 16 08 33	1 19 58 18	1 25 57 46	+15 51	-21 40	- 4 04	4
5	0 20 26 38	9 28 13 28	1 20 30 13	1 11 13 38	2 17 41 36	1 17 21 15	1 20 05 24	1 25 54 36	+16 08	-18 32	- 4 39	5
6	0 21 24 46	10 10 12 39	1 21 10 31	1 12 05 19	2 17 51 36	1 18 33 56	1 20 12 30	1 25 51 25	+16 25	-14 41	- 5 02	6
7	0 22 22 52	10 22 05 52	1 21 50 43	1 12 52 07	2 18 01 42	1 19 46 32	1 20 19 41	1 25 48 14	+16 42	-10 18	- 5 11	7
8	0 23 20 57	11 03 57 16	1 22 30 49	1 13 33 55	2 18 11 53	1 20 59 08	1 20 26 53	1 25 45 03	+16 59	- 5 33	- 5 07	8
9	0 24 18 59	11 15 50 26	1 23 10 55	1 14 10 42	2 18 22 11	1 22 11 38	1 20 34 11	1 25 41 52	+17 15	- 0 35	- 4 50	9
10	0 25 17 01	11 27 48 18	1 23 51 00	1 14 42 24	2 18 32 29	1 23 24 08	1 20 41 29	1 25 38 42	+17 31	+ 4 26	- 4 20	10
11	0 26 15 02	0 09 53 15	1 24 31 06	1 15 09 00	2 18 42 59	1 24 36 38	1 20 48 47	1 25 35 31	+17 47	+ 9 21	- 3 38	11
12	0 27 13 01	0 22 07 01	1 25 11 06	1 15 30 29	2 18 53 35	1 25 49 02	1 20 56 11	1 25 32 20	+18 02	+13 59	- 2 46	12
13	0 28 10 58	1 04 30 56	1 25 51 06	1 15 46 53	2 19 04 17	1 27 01 19	1 21 03 29	1 25 29 09	+18 17	+18 06	- 1 45	13
14	0 29 08 54	1 17 05 58	1 26 31 06	1 15 58 17	2 19 14 59	1 28 13 43	1 21 10 59	1 25 25 59	+18 32	+21 28	- 0 38	14
15	1 00 06 49	1 29 53 00	1 27 11 06	1 16 04 34	2 19 25 47	1 29 25 55	1 21 18 22	1 25 22 48	+18 46	+23 50	+ 0 32	15
16	1 01 04 41	2 12 52 54	1 27 51 00	1 16 05 58	2 19 36 40	2 00 38 07	1 21 25 52	1 25 19 37	+19 00	+24 58	+ 1 42	16
17	1 02 02 32	2 26 06 30	1 28 30 54	1 16 02 34	2 19 47 40	2 01 50 19	1 21 33 22	1 25 16 26	+19 14	+24 42	+ 2 47	17
18	1 03 00 22	3 09 34 43	1 29 10 41	1 15 54 27	2 19 58 46	2 03 02 25	1 21 40 52	1 25 13 16	+19 28	+23 01	+ 3 45	18
19	1 03 58 09	3 23 18 09	1 29 50 35	1 15 42 03	2 20 09 58	2 04 14 31	1 21 48 28	1 25 10 05	+19 41	+19 59	+ 4 31	19
20	1 04 55 56	4 07 16 54	2 00 30 23	1 15 25 27	2 20 21 10	2 05 26 30	1 21 55 58	1 25 06 54	+19 54	+15 45	+ 5 01	20
21	1 05 53 40	4 21 30 05	2 01 10 05	1 15 05 02	2 20 32 28	2 06 38 30	1 22 03 34	1 25 03 43	+20 06	+10 35	+ 5 14	21
22	1 06 51 23	5 05 55 33	2 01 49 47	1 14 41 08	2 20 43 52	2 07 50 24	1 22 11 09	1 25 00 32	+20 18	+ 4 47	+ 5 08	22
23	1 07 49 03	5 20 29 33	2 02 29 29	1 14 14 14	2 20 55 15	2 09 02 12	1 22 18 51	1 24 57 22	+20 30	- 1 20	+ 4 42	23
24	1 08 46 42	6 05 07 01	2 03 09 11	1 13 44 49	2 21 06 45	2 10 14 00	1 22 26 27	1 24 54 11	+20 42	- 7 25	+ 3 57	24
25	1 09 44 20	6 19 41 51	2 03 48 46	1 13 13 25	2 21 18 21	2 11 25 42	1 22 34 09	1 24 51 00	+20 53	-13 05	+ 2 58	25
26	1 10 41 57	7 04 07 47	2 04 28 22	1 12 40 37	2 21 30 03	2 12 37 24	1 22 41 45	1 24 47 49	+21 03	-17 58	+ 1 47	26
27	1 11 39 33	7 18 19 04	2 05 07 58	1 12 06 49	2 21 41 45	2 13 48 59	1 22 49 27	1 24 44 39	+21 14	-21 44	+ 0 31	27
28	1 12 37 08	8 02 11 21	2 05 47 34	1 11 32 49	2 21 53 33	2 15 00 29	1 22 57 15	1 24 41 28	+21 24	-24 08	- 0 45	28
29	1 13 34 41	8 15 42 01	2 06 27 04	1 10 59 07	2 22 05 21	2 16 11 59	1 23 04 56	1 24 38 17	+21 33	-25 03	- 1 57	29
30	1 14 32 13	8 28 50 21	2 07 06 34	1 10 26 19	2 22 17 14	2 17 23 23	1 23 12 38	1 24 35 06	+21 43	-24 30	- 3 01	30
31	1 15 29 44	9 11 37 22	2 07 46 04	1 09 54 55	2 22 29 14	2 18 34 47	1 23 20 26	1 24 31 55	+21 51	-22 40	- 3 54	31

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.) (1 जून 2002 ई. को अयनांश 23°/53'/10")

तारीख 2002 ई. जून	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य क्रां.	चंद्र क्रां.	चन्द्रशर	तारीख 2003 ई. जून
	रा. अ. कं. वि.	रा. अ. कं. वि.	रा. अ. क. वि.	रा. अ. कं. वि.	रा. अ. कं. वि.	रा. अ. कं. वि.	रा. अ. कं. वि.	रा. अ. कं. वि.	अ. कं.	अ. कं.	अ. कं.	
1	1 16 27 15	9 24 05 32	2 08 25 27	1 09 25 30	2 22 41 14	2 19 46 05	1 23 28 08	1 24 28 45	+22 00	-19 47	- 4 34	1
2	1 17 24 45	10 06 18 18	2 09 04 51	1 08 58 30	2 22 53 20	2 20 57 23	1 23 35 56	1 24 25 34	+22 08	-16 06	- 5 01	2
3	1 18 22 14	10 18 19 52	2 09 44 15	1 08 34 30	2 23 05 32	2 22 08 34	1 23 43 44	1 24 22 23	+22 16	-11 49	- 5 15	3
4	1 19 19 42	11 00 14 43	2 10 23 39	1 08 13 42	2 23 17 44	2 23 19 40	1 23 51 26	1 24 19 12	+22 23	- 7 08	- 5 14	4
5	1 20 17 10	11 12 07 25	2 11 03 03	1 07 56 30	2 23 29 56	2 24 30 46	1 23 59 13	1 24 16 02	+22 30	- 2 13	- 5 01	5
6	1 21 14 36	11 24 02 20	2 11 42 21	1 07 43 13	2 23 42 14	2 25 41 46	1 24 07 01	1 24 12 51	+22 37	+ 2 48	- 4 34	6
7	1 22 12 02	0 06 03 29	2 12 21 39	1 07 33 55	2 23 54 37	2 26 52 40	1 24 14 49	1 24 09 40	+22 43	+ 7 47	- 3 55	7
8	1 23 09 28	0 18 14 21	2 13 00 56	1 07 28 55	2 24 07 01	2 28 03 34	1 24 22 37	1 24 06 29	+22 48	+12 32	- 3 05	8
9	1 24 06 52	1 00 37 38	2 13 40 08	1 07 28 25	2 24 19 25	2 29 14 22	1 24 30 25	1 24 03 19	+22 54	+16 52	- 2 06	9
10	1 25 04 17	1 13 15 17	2 14 19 20	1 07 32 13	2 24 31 55	3 00 25 03	1 24 38 13	1 24 00 08	+22 59	+20 32	- 0 59	10
11	1 26 01 40	1 26 08 25	2 14 58 38	1 07 40 37	2 24 44 31	3 01 35 45	1 24 46 01	1 23 56 57	+23 03	+23 16	+ 0 12	11
12	1 26 59 03	2 09 17 12	2 15 37 44	1 07 53 31	2 24 57 07	3 02 46 21	1 24 53 49	1 23 53 46	+23 07	+24 48	+ 1 24	12
13	1 27 56 25	2 22 41 00	2 16 16 56	1 08 11 01	2 25 09 43	3 03 56 51	1 25 01 36	1 23 50 35	+23 11	+24 56	+ 2 32	13
14	1 28 53 45	3 06 18 33	2 16 56 02	1 08 32 55	2 25 22 24	3 05 07 21	1 25 09 24	1 23 47 25	+23 15	+23 35	+ 3 33	14
15	1 29 51 06	3 20 08 06	2 17 35 13	1 08 59 19	2 25 35 12	3 06 17 45	1 25 17 12	1 23 44 14	+23 17	+20 49	+ 4 23	15
16	2 00 48 25	4 04 07 31	2 18 14 19	1 09 30 01	2 25 47 54	3 07 28 03	1 25 25 00	1 23 41 03	+23 20	+16 49	+ 4 57	16
17	2 01 45 44	4 18 14 32	2 18 53 19	1 10 05 07	2 26 00 42	3 08 38 14	1 25 32 48	1 23 37 52	+23 22	+11 51	+ 5 14	17
18	2 02 43 01	5 02 26 48	2 19 32 25	1 10 44 25	2 26 13 36	3 09 48 20	1 25 40 30	1 23 34 42	+23 24	+ 6 14	+ 5 13	18
19	2 03 40 18	5 16 41 49	2 20 11 25	1 11 28 01	2 26 26 24	3 10 58 26	1 25 48 18	1 23 31 31	+23 25	+ 0 17	+ 4 51	19
20	2 04 37 34	6 00 57 03	2 20 50 25	1 12 15 37	2 26 39 18	3 12 08 26	1 25 55 59	1 23 28 20	+23 26	- 5 42	+ 4 13	20
21	2 05 34 48	6 15 09 41	2 21 29 25	1 13 07 13	2 26 52 17	3 13 18 14	1 26 03 47	1 23 25 09	+23 26	-11 23	+ 3 18	21
22	2 06 32 02	6 29 16 47	2 22 08 18	1 14 02 55	2 27 05 11	3 14 28 02	1 26 11 29	1 23 21 58	+23 26	-16 26	+ 2 12	22
23	2 07 29 16	7 13 15 20	2 22 47 12	1 15 02 25	2 27 18 11	3 15 37 44	1 26 19 11	1 23 18 48	+23 26	-20 32	+ 0 59	23
24	2 08 26 30	7 27 02 21	2 23 26 06	1 16 05 49	2 27 31 17	3 16 47 19	1 26 26 53	1 23 15 37	+23 25	-23 24	- 0 17	24
25	2 09 23 43	8 10 35 15	2 24 05 00	1 17 13 01	2 27 44 17	3 17 56 49	1 26 34 35	1 23 12 26	+23 24	-24 52	- 1 30	25
26	2 10 20 56	8 23 52 05	2 24 43 54	1 18 23 55	2 27 57 23	3 19 06 13	1 26 42 11	1 23 09 15	+23 22	-24 51	- 2 37	26
27	2 11 18 08	9 06 51 46	2 25 22 42	1 19 38 31	2 28 10 29	3 20 15 31	1 26 49 52	1 23 06 05	+23 20	-23 29	- 3 34	27
28	2 12 15 19	9 19 34 18	2 26 01 36	1 20 56 49	2 28 23 40	3 21 24 43	1 26 57 28	1 23 02 54	+23 18	-20 56	- 4 20	28
29	2 13 12 32	10 02 00 52	2 26 40 23	1 22 18 43	2 28 36 46	3 22 33 49	1 27 05 04	1 22 59 43	+23 15	-17 27	- 4 52	29
30	2 14 09 44	10 14 13 36	2 27 19 11	1 23 44 13	2 28 49 58	3 23 42 55	1 27 12 40	1 22 56 32	+23 12	-13 19	- 5 10	30

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.) (1 जुलाई 2002 ई. को अयनांश 23°/53′/14″)

तारीख 2002 ई. जुलाई	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य क्रां.	चंद्र क्रां.	चन्द्रशर	तारीख 2002 ई. जुलाई
	रा. अ. क. वि.	रा. अ. क. वि.	रा. अ. क. वि.	रा. अ. क. वि.	रा. अ. क. वि.	रा. अ. क. वि.	रा. अ. क. वि.	रा. अ. क. वि.	अ. क.	अ. क.	अ. क.	
1	2 15 06 56	10 26 15 39	2 27 57 59	1 25 13 07	2 29 03 10	3 24 51 48	1 27 20 16	1 22 53 21	+23 08	- 8 42	- 5 14	1
2	2 16 04 08	11 08 10 56	2 28 36 41	1 26 45 37	2 29 16 22	3 26 00 36	1 27 27 46	1 22 50 11	+23 04	- 3 50	- 5 04	2
3	2 17 01 21	11 20 03 49	2 29 15 23	1 28 21 31	2 29 29 40	3 27 09 18	1 27 35 22	1 22 47 00	+22 59	+ 1 10	- 4 42	3
4	2 17 58 33	0 01 58 58	2 29 54 11	2 00 00 43	2 29 42 58	3 28 17 48	1 27 42 51	1 22 43 49	+22 55	+ 6 09	- 4 07	4
5	2 18 55 45	0 14 01 07	3 00 32 53	2 01 43 13	2 29 56 10	3 29 26 18	1 27 50 15	1 22 40 38	+22 49	+10 58	- 3 21	5
6	2 19 52 59	0 26 14 47	3 01 11 34	2 03 29 01	3 00 09 27	4 00 34 42	1 27 57 45	1 22 37 28	+22 44	+15 26	- 2 25	6
7	2 20 50 12	1 08 43 55	3 01 50 16	2 05 17 49	3 00 22 51	4 01 43 00	1 28 05 09	1 22 34 17	+22 38	+19 21	- 1 22	7
8	2 21 47 26	1 21 31 38	3 02 28 52	2 07 09 31	3 00 36 09	4 02 51 05	1 28 12 33	1 22 31 06	+22 31	+22 26	- 0 13	8
9	2 22 44 40	2 04 39 49	3 03 07 34	2 09 04 01	3 00 49 27	4 03 59 05	1 28 19 57	1 22 27 55	+22 24	+24 25	+ 0 59	9
10	2 23 41 54	2 18 08 51	3 03 46 10	2 11 01 13	3 01 02 51	4 05 06 59	1 28 27 15	1 22 24 45	+22 17	+25 02	+ 2 09	10
11	2 24 39 09	3 01 57 19	3 04 24 46	2 13 00 43	3 01 16 15	4 06 14 47	1 28 34 32	1 22 21 34	+22 09	+24 08	+ 3 13	11
12	2 25 36 22	3 16 02 12	3 05 03 28	2 15 02 19	3 01 29 33	4 07 22 29	1 28 41 50	1 22 18 23	+22 01	+21 43	+ 4 07	12
13	2 26 33 37	4 00 19 02	3 05 41 57	2 17 05 55	3 01 42 56	4 08 29 59	1 28 49 02	1 22 15 12	+21 53	+17 56	+ 4 46	13
14	2 27 30 51	4 14 42 36	3 06 20 33	2 19 11 01	3 01 56 20	4 09 37 23	1 28 56 14	1 22 12 01	+21 44	+13 05	+ 5 07	14
15	2 28 28 06	4 29 07 38	3 06 59 09	2 21 17 25	3 02 09 44	4 10 44 34	1 29 03 26	1 22 08 51	+21 35	+ 7 30	+ 5 09	15
16	2 29 25 21	5 13 29 27	3 07 37 39	2 23 24 55	3 02 23 08	4 11 51 40	1 29 10 32	1 22 05 40	+21 26	+ 1 33	+ 4 52	16
17	3 00 22 36	5 27 44 32	3 08 16 09	2 25 33 01	3 02 36 32	4 12 58 40	1 29 17 38	1 22 02 29	+21 16	- 4 27	+ 4 17	17
18	3 01 19 50	6 11 50 30	3 08 54 45	2 27 41 25	3 02 49 56	4 14 05 22	1 29 24 37	1 21 59 18	+21 06	-10 11	+ 3 26	18
19	3 02 17 04	6 25 46 06	3 09 33 15	2 29 50 01	3 03 03 20	4 15 12 04	1 29 31 37	1 21 56 08	+20 55	-15 20	+ 2 24	19
20	3 03 14 20	7 09 30 40	3 10 11 39	3 01 58 24	3 03 16 43	4 16 18 34	1 29 38 37	1 21 52 57	+20 44	-19 37	+ 1 15	20
21	3 04 11 35	7 23 03 58	3 10 50 08	3 04 06 18	3 03 30 07	4 17 24 52	1 29 45 31	1 21 49 46	+20 33	-22 46	+ 0 02	21
22	3 05 08 51	8 06 25 43	3 11 28 38	3 06 13 36	3 03 43 31	4 18 30 57	1 29 52 25	1 21 46 35	+20 21	-24 36	- 1 10	22
23	3 06 06 07	8 19 35 34	3 12 07 02	3 08 20 06	3 03 56 55	4 19 36 57	1 29 59 19	1 21 43 24	+20 09	-25 01	- 2 16	23
24	3 07 03 24	9 02 33 06	3 12 45 26	3 10 25 30	3 04 10 19	4 20 42 45	2 00 06 01	1 21 40 14	+19 57	-24 03	- 3 15	24
25	3 08 00 41	9 15 17 55	3 13 23 50	3 12 29 41	3 04 23 43	4 21 48 21	2 00 12 48	1 21 37 03	+19 44	-21 51	- 4 03	25
26	3 08 57 58	9 27 49 57	3 14 02 20	3 14 32 41	3 04 37 01	4 22 53 45	2 00 19 30	1 21 33 52	+19 31	-18 38	- 4 38	26
27	3 09 55 16	10 10 09 42	3 14 40 38	3 16 34 11	3 04 50 24	4 23 58 57	2 00 26 06	1 21 30 41	+19 18	-14 40	- 4 59	27
28	3 10 52 36	10 22 18 22	3 15 19 01	3 18 34 17	3 05 03 48	4 25 04 03	2 00 32 42	1 21 27 31	+19 05	-10 09	- 5 06	28
29	3 11 49 56	11 04 18 03	3 15 57 25	3 20 32 53	3 05 17 06	4 26 08 50	2 00 39 18	1 21 24 20	+18 51	- 5 19	- 5 00	29
30	3 12 47 17	11 16 11 44	3 16 35 49	3 22 29 52	3 05 30 24	4 27 13 32	2 00 45 48	1 21 21 09	+18 36	- 0 19	- 4 41	30
31	3 13 44 39	11 28 03 08	3 17 14 07	3 24 25 16	3 05 43 48	4 28 17 56	2 00 52 12	1 21 17 58	+18 22	+ 4 41	- 4 10	31

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.) (1 अगस्त 2002 ई. को अयनांश 23°/53'/19")

तारीख 2002 ई. अगस्त	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य क्रां.	चंद्र क्रां.	चन्द्रशर	तारीख 2002 ई. अगस्त
	रा. अ. कं. वि.	रा. अ. कं. वि.	रा. अ. कं. वि.	रा. अ. कं. वि.	रा. अ. कं. वि.	रा. अ. कं. वि.	रा. अ. कं. वि.	रा. अ. कं. वि.	अ. कं.	अ. कं.	अ. कं.	
1	3 14 42 02	0 09 56 41	3 17 52 31	3 26 19 04	3 05 57 06	4 29 22 08	2 00 58 35	1 21 14 47	+18 07	+ 9 32	- 3 28	1
2	3 15 39 27	0 21 57 16	3 18 30 49	3 28 11 16	3 06 10 24	5 00 26 08	2 01 04 53	1 21 11 37	+17 52	+14 05	- 2 36	2
3	3 16 36 51	1 04 09 59	3 19 09 07	4 00 01 46	3 06 23 41	5 01 29 56	2 01 11 11	1 21 08 26	+17 36	+18 09	- 1 37	3
4	3 17 34 18	1 16 39 46	3 19 47 30	4 01 50 45	3 06 36 53	5 02 33 31	2 01 17 23	1 21 05 15	+17 21	+21 31	- 0 31	4
5	3 18 31 46	1 29 30 58	3 20 25 48	4 03 38 03	3 06 50 11	5 03 36 49	2 01 23 35	1 21 02 04	+17 05	+23 54	+ 0 37	5
6	3 19 29 15	2 12 46 48	3 21 04 06	4 05 23 45	3 07 03 23	5 04 39 55	2 01 29 41	1 20 58 54	+16 49	+25 02	+ 1 46	6
7	3 20 26 45	2 26 28 38	3 21 42 24	4 07 07 51	3 07 16 35	5 05 42 49	2 01 35 47	1 20 55 43	+16 32	+24 42	+ 2 51	7
8	3 21 24 17	3 10 35 28	3 22 20 42	4 08 50 21	3 07 29 47	5 06 45 25	2 01 41 46	1 20 52 32	+16 15	+22 49	+ 3 47	8
9	3 22 21 49	3 25 03 31	3 22 59 00	4 10 31 20	3 07 42 59	5 07 47 43	2 01 47 40	1 20 49 21	+15 58	+19 25	+ 4 30	9
10	3 23 19 22	4 09 46 31	3 23 37 18	4 12 10 44	3 07 56 04	5 08 49 49	2 01 53 28	1 20 46 11	+15 41	+14 46	+ 4 56	10
11	3 24 16 56	4 24 36 25	3 24 15 35	4 13 48 32	3 08 09 16	5 09 51 36	2 01 59 16	1 20 43 00	+15 23	+ 9 11	+ 5 03	11
12	3 25 14 32	5 09 24 50	3 24 53 47	4 15 24 44	3 08 22 16	5 10 53 06	2 02 05 04	1 20 39 49	+15 05	+ 3 06	+ 4 49	12
13	3 26 12 08	5 24 04 16	3 25 32 05	4 16 59 26	3 08 35 22	5 11 54 18	2 02 10 40	1 20 36 38	+14 47	- 3 06	+ 4 16	13
14	3 27 09 45	6 08 29 20	3 26 10 17	4 18 32 37	3 08 48 22	5 12 55 12	2 02 16 16	1 20 33 27	+14 29	- 9 03	+ 3 28	14
15	3 28 07 23	6 22 37 00	3 26 48 35	4 20 04 13	3 09 01 22	5 13 55 48	2 02 21 45	1 20 30 17	+14 11	-14 25	+ 2 27	15
16	3 29 05 03	7 06 26 24	3 27 26 47	4 21 34 13	3 09 14 22	5 14 56 00	2 02 27 15	1 20 27 06	+13 52	-18 55	+ 1 20	16
17	4 00 02 42	7 19 58 18	3 28 05 05	4 23 02 37	3 09 27 15	5 15 55 54	2 02 32 39	1 20 23 55	+13 33	-22 19	+ 0 09	17
18	4 01 00 23	8 03 14 16	3 28 43 16	4 24 29 30	3 09 40 09	5 16 55 29	2 02 37 57	1 20 20 44	+13 14	-24 26	- 1 01	18
19	4 01 58 05	8 16 16 12	3 29 21 28	4 25 54 48	3 09 53 03	5 17 54 41	2 02 43 09	1 20 17 34	+12 54	-25 09	- 2 07	19
20	4 02 55 49	8 29 05 46	3 29 59 40	4 27 18 24	3 10 05 51	5 18 53 29	2 02 48 21	1 20 14 23	+12 35	-24 31	- 3 04	20
21	4 03 53 33	9 11 44 20	4 00 37 52	4 28 40 24	3 10 18 39	5 19 51 53	2 02 53 27	1 20 11 12	+12 15	-22 37	- 3 52	21
22	4 04 51 19	9 24 12 46	4 01 16 04	5 00 00 36	3 10 31 27	5 20 49 59	2 02 58 26	1 20 08 01	+11 55	-19 39	- 4 28	22
23	4 05 49 06	10 06 31 45	4 01 54 16	5 01 19 11	3 10 44 09	5 21 47 35	2 03 03 20	1 20 04 50	+11 35	-15 51	- 4 51	23
24	4 06 46 54	10 18 41 53	4 02 32 28	5 02 35 53	3 10 56 44	5 22 44 46	2 03 08 14	1 20 01 40	+11 14	-11 27	- 5 00	24
25	4 07 44 44	11 00 44 06	4 03 10 39	5 03 50 53	3 11 09 26	5 23 41 28	2 03 12 56	1 19 58 29	+10 54	- 6 39	- 4 55	25
26	4 08 42 35	11 12 39 45	4 03 48 51	5 05 03 53	3 11 22 02	5 24 37 46	2 03 17 38	1 19 55 18	+10 33	- 1 39	- 4 38	26
27	4 09 40 28	11 24 30 58	4 04 26 57	5 06 14 53	3 11 34 32	5 25 33 34	2 03 22 14	1 19 52 07	+10 12	+ 3 23	- 4 08	27
28	4 10 38 23	0 06 20 38	4 05 05 09	5 07 23 52	3 11 47 02	5 26 28 52	2 03 26 50	1 19 48 57	+ 9 51	+ 8 18	- 3 28	28
29	4 11 36 20	0 18 12 27	4 05 43 21	5 08 30 46	3 11 59 26	5 27 23 46	2 03 31 13	1 19 45 46	+ 9 30	+12 56	- 2 39	29
30	4 12 34 18	1 00 10 51	4 06 21 33	5 09 35 22	3 12 11 50	5 28 18 03	2 03 35 37	1 19 42 35	+ 9 09	+17 08	- 1 42	30
31	4 13 32 18	1 12 20 50	4 06 59 45	5 10 37 40	3 12 24 13	5 29 11 51	2 03 39 55	1 19 39 24	+ 8 47	+20 41	- 0 40	31

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.) (1 सितम्बर 2002 ई. को अयनांश 23°/53′/23″)

तारीख 2002 ई. सितम्बर	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य क्रां.	चंद्र क्रां.	चन्द्रशर	तारीख 2002 ई. सितम्बर
	रा. अ. कं. वि.	रा. अ. कं. वि.	रा. अ. कं. वि.	रा. अ. कं. वि.	रा. अ. कं. वि.	रा. अ. कं. वि.	रा. अ. कं. वि.	रा. अ. कं. वि.	अ. कं.	अ. कं.	अ. कं.	
1	4 14 30 20	1 24 47 37	4 07 37 50	5 11 37 27	3 12 36 31	6 00 05 03	2 03 44 07	1 19 36 13	+ 8 26	+23 23	+ 0 26	1
2	4 15 28 24	2 07 36 21	4 08 16 02	5 12 34 33	3 12 48 43	6 00 57 45	2 03 48 13	1 19 33 03	+ 8 04	+24 58	+ 1 32	2
3	4 16 26 31	2 20 51 19	4 08 54 14	5 13 28 57	3 13 00 55	6 01 49 45	2 03 52 13	1 19 29 52	+ 7 42	+25 12	+ 2 35	3
4	4 17 24 39	3 04 35 17	4 09 32 26	5 14 20 21	3 13 13 01	6 02 41 15	2 03 56 13	1 19 26 41	+ 7 20	+23 55	+ 3 32	4
5	4 18 22 49	3 18 48 26	4 10 10 38	5 15 08 32	3 13 25 07	6 03 32 02	2 04 00 00	1 19 23 30	+ 6 58	+21 07	+ 4 18	5
6	4 19 21 01	4 03 27 51	4 10 48 44	5 15 53 20	3 13 37 07	6 04 22 08	2 04 03 48	1 19 20 20	+ 6 35	+16 54	+ 4 48	6
7	4 20 19 13	4 18 27 03	4 11 26 56	5 16 34 38	3 13 49 06	6 05 11 38	2 04 07 24	1 19 17 09	+ 6 13	+11 32	+ 5 00	7
8	4 21 17 28	5 03 36 45	4 12 05 07	5 17 12 01	3 14 01 00	6 06 00 26	2 04 11 00	1 19 13 58	+ 5 51	+ 5 26	+ 4 50	8
9	4 22 15 45	5 18 46 17	4 12 43 19	5 17 45 19	3 14 12 48	6 06 48 26	2 04 14 24	1 19 10 47	+ 5 28	- 1 00	+ 4 21	9
10	4 23 14 04	6 03 45 31	4 13 21 25	5 18 14 13	3 14 24 36	6 07 35 38	2 04 17 48	1 19 07 36	+ 5 05	- 7 19	+ 3 33	10
11	4 24 12 24	6 18 26 39	4 13 59 37	5 18 38 18	3 14 36 18	6 08 22 01	2 04 21 06	1 19 04 26	+ 4 43	-13 07	+ 2 32	11
12	4 25 10 46	7 02 44 59	4 14 37 49	5 18 57 24	3 14 47 54	6 09 07 37	2 04 24 17	1 19 01 15	+ 4 20	-18 03	+ 1 23	12
13	4 26 09 09	7 16 38 55	4 15 15 55	5 19 11 12	3 14 59 30	6 09 52 19	2 04 27 23	1 18 58 04	+ 3 57	-21 51	+ 0 11	13
14	4 27 07 33	8 00 09 16	4 15 54 07	5 19 19 11	3 15 10 59	6 10 36 07	2 04 30 23	1 18 54 53	+ 3 34	-24 18	- 1 00	14
15	4 28 06 00	8 13 18 28	4 16 32 18	5 19 21 11	3 15 22 23	6 11 19 01	2 04 33 17	1 18 51 43	+ 3 11	-25 20	- 2 06	15
16	4 29 04 28	8 26 09 40	4 17 10 24	5 19 16 46	3 15 33 41	6 12 00 48	2 04 36 05	1 18 48 32	+ 2 48	-24 58	- 3 04	16
17	5 00 02 57	9 08 46 01	4 17 48 36	5 19 05 46	3 15 44 59	6 12 41 36	2 04 38 41	1 18 45 21	+ 2 25	-23 19	- 3 51	17
18	5 01 01 29	9 21 10 28	4 18 26 48	5 18 47 57	3 15 56 11	6 13 21 24	2 04 41 17	1 18 42 10	+ 2 01	-20 34	- 4 27	18
19	5 02 00 02	10 03 25 23	4 19 04 54	5 18 23 03	3 16 07 17	6 14 00 00	2 04 43 46	1 18 39 00	+ 1 38	-16 56	- 4 50	19
20	5 02 58 37	10 15 32 36	4 19 43 06	5 17 51 15	3 16 18 17	6 14 37 30	2 04 46 10	1 18 35 49	+ 1 15	-12 39	- 5 00	20
21	5 03 57 13	10 27 33 34	4 20 21 18	5 17 12 32	3 16 29 10	6 15 13 42	2 04 48 28	1 18 32 38	+ 0 52	- 7 55	- 4 56	21
22	5 04 55 51	11 09 29 31	4 20 59 23	5 16 27 14	3 16 40 04	6 15 48 41	2 04 50 40	1 18 29 27	+ 0 28	- 2 55	- 4 39	22
23	5 05 54 31	11 21 21 44	4 21 37 35	5 15 35 43	3 16 50 52	6 16 22 23	2 04 52 40	1 18 26 16	+ 0 05	+ 2 10	- 4 10	23
24	5 06 53 13	0 03 11 49	4 22 15 47	5 14 38 49	3 17 01 34	6 16 54 41	2 04 54 40	1 18 23 06	- 0 18	+ 7 10	- 3 30	24
25	5 07 51 58	0 15 01 54	4 22 53 59	5 13 37 31	3 17 12 10	6 17 25 41	2 04 56 33	1 18 19 55	- 0 42	+11 55	- 2 41	25
26	5 08 50 45	0 26 54 45	4 23 32 05	5 12 32 54	3 17 22 40	6 17 55 11	2 04 58 15	1 18 16 44	- 1 05	+16 16	- 1 45	26
27	5 09 49 34	1 08 53 53	4 24 10 17	5 11 26 30	3 17 33 10	6 18 23 04	2 04 59 57	1 18 13 33	- 1 29	+20 01	- 0 43	27
28	5 10 48 25	1 21 03 29	4 24 48 29	5 10 19 48	3 17 43 27	6 18 49 28	2 05 01 33	1 18 10 23	- 1 52	+22 57	+ 0 21	28
29	5 11 47 18	2 03 28 13	4 25 26 41	5 09 14 30	3 17 53 39	6 19 14 16	2 05 02 57	1 18 07 12	- 2 15	+24 51	+ 1 26	29
30	5 12 46 13	2 16 13 01	4 26 04 52	5 08 12 24	3 18 03 51	6 19 37 22	2 05 04 15	1 18 04 01	- 2 39	+25 32	+ 2 29	30

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.) (1 अक्तूबर 2002 ई. को अयनांश 23°/53'/27")

तारीख 2002 ई. अक्तूबर	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य क्रां.	चंद्र क्रां.	चन्द्रशर	तारीख 2002 ई. अक्तूबर
	रा. अ. कं. वि.	रा. अ. कं. वि.	रा. अ. कं. वि.	रा. अ. कं. वि.	रा. अ. कं. वि.	रा. अ. कं. वि.	रा. अ. कं. वि.	रा. अ. कं. वि.	अ. कं.	अ. कं.	अ. कं.	
1	5 13 45 11	2 29 22 25	4 26 43 04	5 07 15 12	3 18 13 51	6 19 58 39	2 05 05 33	1 18 00 50	- 3 02	+24 48	+ 3 25	1
2	5 14 44 12	3 12 59 56	4 27 21 22	5 06 24 24	3 18 23 51	6 20 18 15	2 05 06 38	1 17 57 39	- 3 25	+22 37	+ 4 13	2
3	5 15 43 15	3 27 07 09	4 27 59 34	5 05 41 25	3 18 33 45	6 20 35 51	2 05 07 38	1 17 54 29	- 3 48	+19 01	+ 4 46	3
4	5 16 42 19	4 11 42 42	4 28 37 46	5 05 07 25	3 18 43 27	6 20 51 39	2 05 08 32	1 17 51 18	- 4 12	+14 09	+ 5 03	4
5	5 17 41 26	4 26 41 46	4 29 15 58	5 04 43 07	3 18 53 02	6 21 05 27	2 05 09 14	1 17 48 07	- 4 35	+ 8 19	+ 4 59	5
6	5 18 40 35	5 11 55 59	4 29 54 10	5 04 29 13	3 19 02 38	6 21 17 08	2 05 09 56	1 17 44 56	- 4 58	+ 1 54	+ 4 35	6
7	5 19 39 46	5 27 14 41	5 00 32 27	5 04 25 56	3 19 12 02	6 21 26 44	2 05 10 32	1 17 41 46	- 5 21	- 4 41	+ 3 51	7
8	5 20 38 59	6 12 26 39	5 01 10 39	5 04 33 14	3 19 21 20	6 21 34 14	2 05 10 56	1 17 38 35	- 5 44	-10 57	+ 2 50	8
9	5 21 38 14	6 27 22 04	5 01 48 57	5 04 50 56	3 19 30 32	6 21 39 26	2 05 11 19	1 17 35 24	- 6 07	-16 29	+ 1 39	9
10	5 22 37 32	7 11 54 04	5 02 27 09	5 05 18 45	3 19 39 38	6 21 42 25	2 05 11 31	1 17 32 13	- 6 30	-20 54	+ 0 23	10
11	5 23 36 51	7 25 59 11	5 03 05 21	5 05 55 57	3 19 48 38	6 21 43 01	2 05 11 37	1 17 29 02	- 6 52	-23 56	- 0 53	11
12	5 24 36 11	8 09 36 59	5 03 43 39	5 06 41 57	3 19 57 31	6 21 41 19	2 05 11 37	1 17 25 52	- 7 15	-25 26	- 2 03	12
13	5 25 35 33	8 22 49 20	5 04 21 57	5 07 35 57	3 20 06 13	6 21 37 13	2 05 11 31	1 17 22 41	- 7 37	-25 26	- 3 04	13
14	5 26 34 57	9 05 39 28	5 05 00 08	5 08 37 16	3 20 14 49	6 21 30 42	2 05 11 19	1 17 19 30	- 8 00	-24 03	- 3 54	14
15	5 27 34 23	9 18 11 19	5 05 38 26	5 09 45 04	3 20 23 19	6 21 21 42	2 05 11 01	1 17 16 19	- 8 22	-21 31	- 4 32	15
16	5 28 33 51	10 00 28 49	5 06 16 38	5 10 58 40	3 20 31 43	6 21 10 18	2 05 10 30	1 17 13 09	- 8 44	-18 03	- 4 56	16
17	5 29 33 20	10 12 35 38	5 06 54 56	5 12 17 10	3 20 39 55	6 20 56 30	2 05 10 00	1 17 09 58	- 9 06	-13 52	- 5 06	17
18	6 00 32 51	10 24 35 00	5 07 33 14	5 13 39 58	3 20 48 01	6 20 40 17	2 05 09 18	1 17 06 47	- 9 28	- 9 13	- 5 03	18
19	6 01 32 24	11 06 29 32	5 08 11 26	5 15 06 22	3 20 56 00	6 20 21 41	2 05 08 30	1 17 03 36	- 9 50	- 4 15	- 4 47	19
20	6 02 31 58	11 18 21 24	5 08 49 44	5 16 35 52	3 21 03 54	6 20 00 53	2 05 07 36	1 17 00 25	-10 12	+ 0 52	- 4 19	20
21	6 03 31 35	0 00 12 25	5 09 28 01	5 18 07 58	3 21 11 36	6 19 37 53	2 05 06 36	1 16 57 15	-10 33	+ 5 57	- 3 39	21
22	6 04 31 14	0 12 04 19	5 10 06 19	5 19 42 04	3 21 19 12	6 19 12 46	2 05 05 30	1 16 54 04	-10 55	+10 50	- 2 50	22
23	6 05 30 55	0 23 58 47	5 10 44 37	5 21 17 52	3 21 26 36	6 18 45 40	2 05 04 17	1 16 50 53	-11 16	+15 21	- 1 52	23
24	6 06 30 38	1 05 57 50	5 11 22 55	5 22 55 04	3 21 33 54	6 18 16 40	2 05 02 59	1 16 47 42	-11 37	+19 18	- 0 50	24
25	6 07 30 23	1 18 03 53	5 12 01 13	5 24 33 15	3 21 41 05	6 17 46 04	2 05 01 35	1 16 44 32	-11 58	+22 29	+ 0 16	25
26	6 08 30 11	2 00 19 45	5 12 39 31	5 26 12 09	3 21 48 05	6 17 13 58	2 05 00 05	1 16 41 21	-12 18	+24 40	+ 1 22	26
27	6 09 29 59	2 12 48 51	5 13 17 49	5 27 51 39	3 21 54 59	6 16 40 33	2 04 58 23	1 16 38 10	-12 39	+25 41	+ 2 25	27
28	6 10 29 51	2 25 34 47	5 13 56 12	5 29 31 27	3 22 01 47	6 16 06 03	2 04 56 41	1 16 34 59	-12 59	+25 22	+ 3 22	28
29	6 11 29 45	3 08 41 13	5 14 34 30	6 01 11 33	3 22 08 23	6 15 30 45	2 04 54 47	1 16 31 48	-13 19	+23 39	+ 4 11	29
30	6 12 29 41	3 22 11 16	5 15 12 54	6 02 51 39	3 22 14 47	6 14 54 45	2 04 52 52	1 16 28 38	-13 39	+20 35	+ 4 47	30
31	6 13 29 40	4 06 06 51	5 15 51 12	6 04 31 51	3 22 21 05	6 14 18 21	2 04 50 46	1 16 25 27	-13 59	+16 16	+ 5 08	31

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.) (1 नवम्बर 2002 ई. को अयनांश 23°/53′/32″)

तारीख 2002 ई. नवम्बर	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य क्रां.	चंद्र क्रां.	चन्द्रशर	तारीख 2002 ई. नवम्बर
	रा. अ. कं. वि.	रा. अ. कं. वि.	रा. अ. कं. वि.	रा. अ. कं. वि.	रा. अ. कं. वि.	रा. अ. कं. वि.	रा. अ. कं. वि.	रा. अ. कं. वि.	अ. कं.	अ. कं.	अ. कं.	
1	6 14 29 40	4 20 27 54	5 16 29 36	6 06 11 50	3 22 27 10	6 13 41 45	2 04 48 40	1 16 22 16	-14 18	+10 56	+ 5 11	1
2	6 15 29 43	5 05 11 41	5 17 08 00	6 07 51 38	3 22 33 10	6 13 05 20	2 04 46 22	1 16 19 05	-14 37	+ 4 51	+ 4 53	2
3	6 16 29 46	5 20 12 30	5 17 46 24	6 09 31 14	3 22 38 58	6 12 29 14	2 04 43 58	1 16 15 55	-14 56	- 1 38	+ 4 16	3
4	6 17 29 53	6 05 22 06	5 18 24 41	6 11 10 38	3 22 44 40	6 11 53 44	2 04 41 34	1 16 12 44	-15 15	- 8 05	+ 3 20	4
5	6 18 30 02	6 20 30 41	5 19 03 05	6 12 49 38	3 22 50 10	6 11 19 02	2 04 38 57	1 16 09 33	-15 33	-14 05	+ 2 10	5
6	6 19 30 12	7 05 28 33	5 19 41 29	6 14 28 20	3 22 55 28	6 10 45 20	2 04 36 21	1 16 06 22	-15 52	-19 10	+ 0 52	6
7	6 20 30 25	7 20 07 34	5 20 19 53	6 16 06 44	3 23 00 40	6 10 12 56	2 04 33 33	1 16 03 11	-16 10	-22 57	- 0 29	7
8	6 21 30 39	8 04 22 13	5 20 58 17	6 17 44 49	3 23 05 39	6 09 42 02	2 04 30 39	1 16 00 01	-16 27	-25 11	- 1 45	8
9	6 22 30 54	8 18 09 55	5 21 36 47	6 19 22 25	3 23 10 27	6 09 12 38	2 04 27 45	1 15 56 50	-16 45	-25 46	- 2 53	9
10	6 23 31 10	9 01 30 42	5 22 15 11	6 20 59 49	3 23 15 09	6 08 45 08	2 04 24 45	1 15 53 39	-17 02	-24 48	- 3 49	10
11	6 24 31 29	9 14 26 41	5 22 53 34	6 22 36 43	3 23 19 39	6 08 19 32	2 04 21 33	1 15 50 28	-17 19	-22 33	- 4 31	11
12	6 25 31 48	9 27 01 18	5 23 31 58	6 24 13 25	3 23 23 57	6 07 55 56	2 04 18 20	1 15 47 18	-17 35	-19 15	- 5 00	12
13	6 26 32 10	10 09 18 42	5 24 10 22	6 25 49 43	3 23 28 09	6 07 34 38	2 04 15 02	1 15 44 07	-17 51	-15 12	- 5 13	13
14	6 27 32 32	10 21 23 17	5 24 48 52	6 27 25 36	3 23 32 02	6 07 15 32	2 04 11 38	1 15 40 56	-18 07	-10 36	- 5 13	14
15	6 28 32 56	11 03 19 20	5 25 27 16	6 29 01 18	3 23 35 50	6 06 58 43	2 04 08 14	1 15 37 45	-18 23	- 5 41	- 4 59	15
16	6 29 33 21	11 15 10 47	5 26 05 46	7 00 36 42	3 23 39 32	6 06 44 25	2 04 04 38	1 15 34 35	-18 38	- 0 35	- 4 32	16
17	7 00 33 47	11 27 01 04	5 26 44 10	7 02 11 48	3 23 42 56	6 06 32 31	2 04 01 02	1 15 31 24	-18 53	+ 4 33	- 3 54	17
18	7 01 34 15	0 08 53 08	5 27 22 39	7 03 46 36	3 23 46 08	6 06 23 07	2 03 57 20	1 15 28 13	-19 08	+ 9 32	- 3 05	18
19	7 02 34 45	0 20 49 26	5 28 01 03	7 05 21 12	3 23 49 14	6 06 16 07	2 03 53 31	1 15 25 02	-19 22	+14 12	- 2 08	19
20	7 03 35 16	1 02 51 57	5 28 39 33	7 06 55 36	3 23 52 08	6 06 11 43	2 03 49 37	1 15 21 51	-19 36	+18 22	- 1 05	20
21	7 04 35 49	1 15 02 23	5 29 18 03	7 08 29 41	3 23 54 49	6 06 09 43	2 03 45 43	1 15 18 41	-19 50	+21 49	+ 0 02	21
22	7 05 36 23	1 27 22 16	5 29 56 33	7 10 03 41	3 23 57 19	6 06 10 13	2 03 41 43	1 15 15 30	-20 03	+24 18	+ 1 09	22
23	7 06 36 59	2 09 53 07	6 00 34 57	7 11 37 29	3 23 59 43	6 06 13 07	2 03 37 43	1 15 12 19	-20 16	+25 38	+ 2 15	23
24	7 07 37 36	2 22 36 25	6 01 13 33	7 13 11 05	3 24 01 49	6 06 18 25	2 03 33 31	1 15 09 08	-20 28	+25 38	+ 3 15	24
25	7 08 38 15	3 05 33 49	6 01 52 02	7 14 44 29	3 24 03 49	6 06 26 01	2 03 29 19	1 15 05 58	-20 40	+24 16	+ 4 06	25
26	7 09 38 56	3 18 46 55	6 02 30 32	7 16 17 47	3 24 05 31	6 06 36 01	2 03 25 06	1 15 02 47	-20 52	+21 33	+ 4 45	26
27	7 10 39 38	4 02 17 12	6 03 09 02	7 17 50 58	3 24 07 07	6 06 48 07	2 03 20 48	1 14 59 36	-21 03	+17 38	+ 5 09	27
28	7 11 40 22	4 16 05 33	6 03 47 32	7 19 24 04	3 24 08 30	6 07 02 25	2 03 16 24	1 14 56 25	-21 14	+12 42	+ 5 17	28
29	7 12 41 07	5 00 12 00	6 04 26 08	7 20 56 58	3 24 09 42	6 07 18 49	2 03 12 00	1 14 53 14	-21 25	+ 7 01	+ 5 06	29
30	7 13 41 54	5 14 35 09	6 05 04 38	7 22 29 52	3 24 [illegible]0 42	6 07 37 19	2 03 07 30	1 14 50 04	-21 35	+ 0 51	+ 4 35	30

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.) (1 दिसम्बर 2002 ई. को अयनांश 23°/53'/36")

तारीख 2002 ई. दिसम्बर	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य क्रां.	चंद्र क्रां.	चन्द्रशर	तारीख 2002 ई. दिसम्बर
	रा. अ. कं. वि.	रा. अ. कं. वि.	रा. अ. कं. वि.	रा. अ. कं. वि.	रा. अ. कं. वि.	रा. अ. कं. वि.	रा. अ. कं. वि.	रा. अ. कं. वि.	अ. कं.	अ. कं.	अ. कं.	
1	7 14 42 43	5 29 11 53	6 05 43 14	7 24 02 34	3 24 11 30	6 07 57 49	2 03 03 00	1 14 46 53	-21 44	- 5 28	+ 3 47	1
2	7 15 43 32	6 13 57 21	6 06 21 43	7 25 35 16	3 24 12 00	6 08 20 07	2 02 58 24	1 14 43 42	-21 54	-11 33	+ 2 43	2
3	7 16 44 23	6 28 45 09	6 07 00 19	7 27 07 46	3 24 12 24	6 08 44 19	2 02 53 41	1 14 40 31	-22 03	-17 01	+ 1 28	3
4	7 17 45 16	7 13 28 03	6 07 38 55	7 28 40 15	3 24 12 35	6 09 10 19	2 02 49 05	1 14 37 21	-22 11	-21 25	+ 0 07	4
5	7 18 46 10	7 27 58 59	6 08 17 31	8 00 12 33	3 24 12 41	6 09 38 01	2 02 44 23	1 14 34 10	-22 19	-24 24	- 1 12	5
6	7 19 47 05	8 12 11 54	6 08 56 01	8 01 44 45	3 24 12 29	6 10 07 18	2 02 39 35	1 14 30 59	-22 27	-25 44	- 2 26	6
7	7 20 48 01	8 26 02 35	6 09 34 37	8 03 16 51	3 24 12 05	6 10 38 18	2 02 34 53	1 14 27 48	-22 34	-25 24	- 3 29	7
8	7 21 48 57	9 09 29 02	6 10 13 13	8 04 48 39	3 24 11 29	6 11 10 42	2 02 30 05	1 14 24 37	-22 40	-23 35	- 4 19	8
9	7 22 49 54	9 22 31 17	6 10 51 48	8 06 20 21	3 24 10 41	6 11 44 36	2 02 25 11	1 14 21 27	-22 47	-20 34	- 4 53	9
10	7 23 50 52	10 05 11 16	6 11 30 24	8 07 51 45	3 24 09 41	6 12 20 00	2 02 20 22	1 14 18 16	-22 52	-16 40	- 5 12	10
11	7 24 51 50	10 17 32 15	6 12 09 00	8 09 22 44	3 24 08 28	6 12 56 42	2 02 15 28	1 14 15 05	-22 58	-12 09	- 5 16	11
12	7 25 52 50	10 29 38 27	6 12 47 36	8 10 53 26	3 24 07 04	6 13 34 42	2 02 10 34	1 14 11 54	-23 03	- 7 15	- 5 06	12
13	7 26 53 50	11 11 34 32	6 13 26 12	8 12 23 38	3 24 05 28	6 14 13 54	2 02 05 40	1 14 08 44	-23 07	- 2 09	- 4 42	13
14	7 27 54 50	11 23 25 17	6 14 04 48	8 13 53 20	3 24 03 46	6 14 54 24	2 02 00 46	1 14 05 33	-23 11	+ 2 59	- 4 07	14
15	7 28 55 51	0 05 15 21	6 14 43 24	8 15 22 20	3 24 01 46	6 15 36 06	2 01 55 46	1 14 02 22	-23 15	+ 8 02	- 3 22	15
16	7 29 56 51	0 17 08 58	6 15 21 59	8 16 50 32	3 23 59 34	6 16 18 54	2 01 50 52	1 13 59 11	-23 18	+12 49	- 2 27	16
17	8 00 57 53	0 29 09 52	6 16 00 35	8 18 17 49	3 23 57 15	6 17 02 42	2 01 45 57	1 13 56 00	-23 20	+17 09	- 1 25	17
18	8 01 58 56	1 11 21 03	6 16 39 11	8 19 43 55	3 23 54 39	6 17 47 41	2 01 40 57	1 13 52 50	-23 22	+20 52	- 0 19	18
19	8 02 59 59	1 23 44 46	6 17 17 47	8 21 08 37	3 23 51 57	6 18 33 35	2 01 36 03	1 13 49 39	-23 24	+23 41	+ 0 49	19
20	8 04 01 03	2 06 22 22	6 17 56 29	8 22 31 43	3 23 49 03	6 19 20 29	2 01 31 03	1 13 46 28	-23 25	+25 22	+ 1 56	20
21	8 05 02 07	2 19 14 27	6 18 35 05	8 23 52 54	3 23 45 51	6 20 08 17	2 01 26 09	1 13 43 17	-23 26	+25 45	+ 2 58	21
22	8 06 03 12	3 02 20 47	6 19 13 47	8 25 11 54	3 23 42 33	6 20 56 59	2 01 21 15	1 13 40 07	-23 26	+24 42	+ 3 52	22
23	8 07 04 16	3 15 40 41	6 19 52 22	8 26 28 12	3 23 39 09	6 21 46 35	2 01 16 21	1 13 36 56	-23 26	+22 16	+ 4 34	23
24	8 08 05 23	3 29 13 00	6 20 31 04	8 27 41 18	3 23 35 26	6 22 36 59	2 01 11 26	1 13 33 45	-23 25	+18 34	+ 5 02	24
25	8 09 06 29	4 12 56 29	6 21 09 40	8 28 50 47	3 23 31 32	6 23 28 17	2 01 06 32	1 13 30 34	-23 24	+13 51	+ 5 13	25
26	8 10 07 37	4 26 49 50	6 21 48 22	8 29 56 05	3 23 27 32	6 24 20 11	2 01 01 38	1 13 27 23	-23 23	+ 8 22	+ 5 06	26
27	8 11 08 44	5 10 51 50	6 22 26 58	9 00 56 29	3 23 23 20	6 25 12 58	2 00 56 50	1 13 24 13	-23 20	+ 2 25	+ 4 41	27
28	8 12 09 53	5 25 01 03	6 23 05 40	9 01 51 16	3 23 18 56	6 26 06 22	2 00 51 56	1 13 21 02	-23 18	- 3 43	+ 3 59	28
29	8 13 11 01	6 09 15 53	6 23 44 22	9 02 39 34	3 23 14 20	6 27 00 28	2 00 47 14	1 13 17 51	-23 15	- 9 43	+ 3 01	29
30	8 14 12 11	6 23 34 08	6 24 23 03	9 03 20 33	3 23 09 38	6 27 55 10	2 00 42 26	1 13 14 40	-23 11	-15 14	+ 1 53	30
31	8 15 13 21	7 07 52 53	6 25 01 45	9 03 53 27	3 23 04 43	6 28 50 34	2 00 37 43	1 13 11 30	-23 07	-19 55	+ 0 37	31

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.) (1 जनवरी 2003 ई. को अयनांश 23°/53′/40″)

तारीख 2003 ई. जनवरी	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य क्रां.	चंद्र क्रां.	चन्द्रशर
	रा. अ. कं. वि.	रा. अ. कं. वि.	रा. अ. कं. वि.	रा. अ. कं. वि.	रा. अ. कं. वि.	रा. अ. कं. वि.	रा. अ. कं. वि.	रा. अ. कं. वि.	अ. कं.	अ. कं.	अ. कं.
1	8 16 14 32	7 22 08 28	6 25 40 21	9 04 17 08	3 22 59 37	6 29 46 34	2 00 33 01	1 13 08 19	-23 03	-23 23	- 0 41
2	8 17 15 43	8 06 16 34	6 26 19 03	9 04 30 50	3 22 54 25	7 00 43 10	2 00 28 25	1 13 05 08	-22 58	-25 22	- 1 55
3	8 18 16 54	8 20 12 50	6 26 57 45	9 04 33 43	3 22 49 01	7 01 40 16	2 00 23 49	1 13 01 57	-22 53	-25 42	- 3 02
4	8 19 18 05	9 03 53 19	6 27 36 27	9 04 25 19	3 22 43 31	7 02 37 52	2 00 19 13	1 12 58 47	-22 47	-24 28	- 3 56
5	8 20 19 16	9 17 15 03	6 28 15 09	9 04 05 00	3 22 37 49	7 03 36 04	2 00 14 43	1 12 55 36	-22 41	-21 51	- 4 36
6	8 21 20 26	10 00 16 35	6 28 53 51	9 03 32 47	3 22 32 01	7 04 34 39	2 00 10 19	1 12 52 25	-22 34	-18 11	- 5 01
7	8 22 21 36	10 12 58 03	6 29 32 32	9 02 49 11	3 22 26 00	7 05 33 45	2 00 05 55	1 12 49 14	-22 27	-13 47	- 5 10
8	8 23 22 46	10 25 21 14	7 00 11 08	9 01 54 52	3 22 19 54	7 06 33 21	2 00 01 30	1 12 46 03	-22 19	- 8 55	- 5 04
9	8 24 23 55	11 07 29 12	7 00 49 50	9 00 51 09	3 22 13 36	7 07 33 21	1 29 57 12	1 12 42 53	-22 11	- 3 48	- 4 44
10	8 25 25 04	11 19 26 06	7 01 28 32	8 29 39 57	3 22 07 12	7 08 33 45	1 29 53 00	1 12 39 42	-22 03	+ 1 23	- 4 13
11	8 26 26 13	0 01 16 47	7 02 07 14	8 28 23 27	3 22 00 42	7 09 34 39	1 29 48 48	1 12 36 31	-21 54	+ 6 28	- 3 30
12	8 27 27 21	0 13 06 24	7 02 45 56	8 27 04 02	3 21 54 06	7 10 35 51	1 29 44 48	1 12 33 20	-21 44	+11 20	- 2 39
13	8 28 28 28	0 25 00 12	7 03 24 32	8 25 44 20	3 21 47 18	7 11 37 27	1 29 40 42	1 12 30 10	-21 35	+15 49	- 1 41
14	8 29 29 35	1 07 03 08	7 04 03 13	8 24 26 50	3 21 40 23	7 12 39 26	1 29 36 48	1 12 26 59	-21 24	+19 44	- 0 37
15	9 00 30 41	1 19 19 38	7 04 41 55	8 23 13 44	3 21 33 29	7 13 41 50	1 29 32 53	1 12 23 48	-21 14	+22 52	+ 0 29
16	9 01 31 47	2 01 53 08	7 05 20 31	8 22 06 51	3 21 26 23	7 14 44 32	1 29 29 05	1 12 20 37	-21 03	+24 57	+ 1 35
17	9 02 32 52	2 14 45 53	7 05 59 13	8 21 07 39	3 21 19 11	7 15 47 32	1 29 25 23	1 12 17 26	-20 52	+25 47	+ 2 38
18	9 03 33 57	2 27 58 35	7 06 37 55	8 20 17 15	3 21 11 59	7 16 50 56	1 29 21 41	1 12 14 16	-20 40	+25 11	+ 3 34
19	9 04 35 01	3 11 30 14	7 07 16 37	8 19 35 57	3 21 04 35	7 17 54 32	1 29 18 05	1 12 11 05	-20 28	+23 06	+ 4 19
20	9 05 36 04	3 25 18 12	7 07 55 12	8 19 04 10	3 20 57 10	7 18 58 32	1 29 14 35	1 12 07 54	-20 15	+19 39	+ 4 50
21	9 06 37 07	4 09 18 42	7 08 33 54	8 18 41 52	3 20 49 40	7 20 02 49	1 29 11 11	1 12 04 43	-20 02	+15 03	+ 5 04
22	9 07 38 09	4 23 27 14	7 09 12 36	8 18 28 34	3 20 42 04	7 21 07 19	1 29 07 52	1 12 01 33	-19 49	+ 9 36	+ 5 00
23	9 08 39 11	5 07 39 25	7 09 51 18	8 18 23 58	3 20 34 22	7 22 12 13	1 29 04 40	1 11 58 22	-19 35	+ 3 38	+ 4 38
24	9 09 40 13	5 21 51 37	7 10 29 54	8 18 27 35	3 20 26 40	7 23 17 19	1 29 01 28	1 11 55 11	-19 21	- 2 32	+ 3 58
25	9 10 41 14	6 06 01 11	7 11 08 36	8 18 38 47	3 20 18 52	7 24 22 37	1 28 58 22	1 11 52 00	-19 07	- 8 34	+ 3 04
26	9 11 42 14	6 20 06 30	7 11 47 18	8 18 56 59	3 20 11 04	7 25 28 13	1 28 55 28	1 11 48 49	-18 52	-14 08	+ 1 59
27	9 12 43 14	7 04 06 41	7 12 25 59	8 19 21 35	3 20 03 15	7 26 34 07	1 28 52 34	1 11 45 39	-18 37	-18 56	+ 0 48
28	9 13 44 13	7 18 01 10	7 13 04 35	8 19 52 05	3 19 55 21	7 27 40 13	1 28 49 46	1 11 42 28	-18 21	-22 39	- 0 26
29	9 14 45 12	8 01 49 10	7 13 43 17	8 20 27 53	3 19 47 21	7 28 46 30	1 28 47 03	1 11 39 17	-18 05	-25 00	- 1 38
30	9 15 46 11	8 15 29 31	7 14 21 59	8 21 08 35	3 19 39 27	7 29 53 00	1 28 44 33	1 11 36 06	-17 49	-25 49	- 2 43
31	9 16 47 09	8 29 00 26	7 15 00 35	8 21 53 41	3 19 31 27	8 00 59 42	1 28 42 03	1 11 32 56	-17 33	-25 05	- 3 39

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.) (1 फरवरी 2003 ई. को अयनांश 23°/53'/45")

तारीख 2003 ई. फरवरी	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य क्रां.	चंद्र क्रां.	चन्द्रशर	तारीख 2003 ई. फरवरी
	रा. अ. कं. वि.	रा. अ. कं. वि.	रा. अ. कं. वि.	रा. अ. कं. वि.	रा. अ. कं. वि.	रा. अ. कं. वि.	रा. अ. कं. वि.	रा. अ. कं. वि.	अ. कं.	अ. कं.	अ. कं.	
1	9 17 48 05	9 12 19 52	7 15 39 17	8 22 42 47	3 19 23 27	8 02 06 36	1 28 39 39	1 11 29 45	-17 16	-22 55	- 4 21	1
2	9 18 49 01	9 25 25 45	7 16 17 53	8 23 35 29	3 19 15 27	8 03 13 42	1 28 37 21	1 11 26 34	-16 59	-19 35	- 4 48	2
3	9 19 49 54	10 08 16 32	7 16 56 28	8 24 31 29	3 19 07 26	8 04 20 54	1 28 35 09	1 11 23 23	-16 42	-15 22	- 5 01	3
4	9 20 50 48	10 20 51 34	7 17 35 04	8 25 30 35	3 18 59 26	8 05 28 24	1 28 33 03	1 11 20 12	-16 24	-10 35	- 4 58	4
5	9 21 51 40	11 03 11 23	7 18 13 40	8 26 32 17	3 18 51 26	8 06 35 59	1 28 31 08	1 11 17 02	-16 06	- 5 28	- 4 41	5
6	9 22 52 30	11 15 17 50	7 18 52 16	8 27 36 41	3 18 43 26	8 07 43 47	1 28 29 14	1 11 13 51	-15 48	- 0 13	- 4 12	6
7	9 23 53 20	11 27 13 55	7 19 30 52	8 28 43 17	3 18 35 26	8 08 51 41	1 28 27 32	1 11 10 40	-15 30	+ 4 58	- 3 32	7
8	9 24 54 07	0 09 03 42	7 20 09 28	8 29 51 59	3 18 27 32	8 09 59 47	1 28 25 50	1 11 07 29	-15 11	+ 9 56	- 2 43	8
9	9 25 54 54	0 20 52 03	7 20 48 04	9 01 02 47	3 18 19 38	8 11 07 59	1 28 24 20	1 11 04 18	-14 52	+14 33	- 1 47	9
10	9 26 55 38	1 02 44 18	7 21 26 33	9 02 15 23	3 18 11 49	8 12 16 23	1 28 22 50	1 11 01 08	-14 33	+18 39	- 0 47	10
11	9 27 56 21	1 14 46 03	7 22 05 09	9 03 29 41	3 18 04 01	8 13 24 53	1 28 21 32	1 10 57 57	-14 13	+22 01	+ 0 17	11
12	9 28 57 03	1 27 02 43	7 22 43 39	9 04 45 35	3 17 56 13	8 14 33 34	1 28 20 19	1 10 54 46	-13 54	+24 28	+ 1 21	12
13	9 29 57 43	2 09 39 05	7 23 22 15	9 06 02 59	3 17 48 31	8 15 42 22	1 28 19 13	1 10 51 35	-13 34	+25 46	+ 2 23	13
14	10 00 58 21	2 22 38 47	7 24 00 45	9 07 21 47	3 17 40 55	8 16 51 16	1 28 18 13	1 10 48 25	-13 13	+25 42	+ 3 19	14
15	10 01 58 58	3 06 03 42	7 24 39 15	9 08 41 59	3 17 33 25	8 18 00 16	1 28 17 19	1 10 45 14	-12 53	+24 09	+ 4 06	15
16	10 02 59 34	3 19 53 26	7 25 17 45	9 10 03 28	3 17 25 55	8 19 09 28	1 28 16 37	1 10 42 03	-12 33	+21 09	+ 4 40	16
17	10 04 00 06	4 04 05 00	7 25 56 14	9 11 26 10	3 17 18 30	8 20 18 46	1 28 15 55	1 10 38 52	-12 12	+16 49	+ 4 57	17
18	10 05 00 39	4 18 32 59	7 26 34 44	9 12 50 04	3 17 11 12	8 21 28 10	1 28 15 25	1 10 35 41	-11 51	+11 27	+ 4 57	18
19	10 06 01 09	5 03 10 18	7 27 13 14	9 14 15 10	3 17 03 54	8 22 37 39	1 28 14 54	1 10 32 31	-11 30	+ 5 24	+ 4 37	19
20	10 07 01 39	5 17 49 23	7 27 51 44	9 15 41 22	3 16 56 48	8 23 47 15	1 28 14 36	1 10 29 20	-11 08	- 0 58	+ 3 59	20
21	10 08 02 07	6 02 23 31	7 28 30 08	9 17 08 40	3 16 49 42	8 24 57 03	1 28 14 24	1 10 26 09	-10 47	- 7 16	+ 3 05	21
22	10 09 02 33	6 16 47 40	7 29 08 38	9 18 37 04	3 16 42 48	8 26 06 51	1 28 14 18	1 10 22 58	-10 25	-13 08	+ 2 00	22
23	10 10 02 58	7 00 58 52	7 29 47 02	9 20 06 28	3 16 36 00	8 27 16 45	1 28 14 18	1 10 19 48	-10 03	-18 12	+ 0 48	23
24	10 11 03 22	7 14 56 03	8 00 25 25	9 21 36 58	3 16 29 11	8 28 26 51	1 28 14 30	1 10 16 37	- 9 41	-22 11	- 0 25	24
25	10 12 03 45	7 28 39 26	8 01 03 49	9 23 08 28	3 16 22 35	8 29 36 57	1 28 14 42	1 10 13 26	- 9 19	-24 49	- 1 36	25
26	10 13 04 06	8 12 09 57	8 01 42 13	9 24 40 57	3 16 16 11	9 00 47 14	1 28 15 05	1 10 10 15	- 8 57	-25 58	- 2 40	26
27	10 14 04 26	8 25 28 35	8 02 20 37	9 26 14 33	3 16 09 47	9 01 57 32	1 28 15 35	1 10 07 04	- 8 34	-25 34	- 3 34	27
28	10 15 04 45	9 08 35 59	8 02 59 01	9 27 49 09	3 16 03 35	9 03 07 56	1 28 16 05	1 10 03 54	- 8 12	-23 46	- 4 16	28

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.) (1 मार्च 2003 ई. को अयनांश 23°/53′/49″)

तारीख 2003 ई. मार्च	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य क्रां.	चंद्र क्रां.	चन्द्रशर	तारीख 2003 ई. मार्च
	रा. अ. कं. वि.	रा. अ. कं. वि.	रा. अ. कं. वि.	रा. अ. कं. वि.	रा. अ. कं. वि.	रा. अ. कं. वि.	रा. अ. कं. वि.	रा. अ. कं. वि.	अ. कं.	अ. कं.	अ. कं.	
1	10 16 05 01	9 21 32 25	8 03 37 19	9 29 24 45	3 15 57 29	9 04 18 20	1 28 16 47	1 10 00 43	- 7 49	-20 44	- 4 44	1
2	10 17 05 16	10 04 17 42	8 04 15 42	10 01 01 21	3 15 51 29	9 05 28 56	1 28 17 41	1 09 57 32	- 7 26	-16 45	- 4 58	2
3	10 18 05 29	10 16 51 31	8 04 54 00	10 02 39 03	3 15 45 40	9 06 39 32	1 28 18 35	1 09 54 21	- 7 03	-12 06	- 4 57	3
4	10 19 05 41	10 29 13 46	8 05 32 12	10 04 17 45	3 15 40 04	9 07 50 14	1 28 19 35	1 09 51 11	- 6 40	- 7 02	- 4 41	4
5	10 20 05 50	11 11 24 47	8 06 10 30	10 05 57 33	3 15 34 28	9 09 01 01	1 28 20 46	1 09 48 00	- 6 17	- 1 46	- 4 13	5
6	10 21 05 58	11 23 25 45	8 06 48 42	10 07 38 21	3 15 29 10	9 10 11 49	1 28 21 58	1 09 44 49	- 5 54	+ 3 30	- 3 34	6
7	10 22 06 04	0 05 18 45	8 07 26 54	10 09 20 15	3 15 23 58	9 11 22 43	1 28 23 22	1 09 41 38	- 5 31	+ 8 36	- 2 46	7
8	10 23 06 08	0 17 06 48	8 08 05 06	10 11 03 14	3 15 18 52	9 12 33 37	1 28 24 52	1 09 38 27	- 5 08	+13 23	- 1 50	8
9	10 24 06 08	0 28 53 49	8 08 43 17	10 12 47 20	3 15 13 58	9 13 44 37	1 28 26 28	1 09 35 17	- 4 44	+17 39	- 0 50	9
10	10 25 06 08	1 10 44 30	8 09 21 23	10 14 32 38	3 15 09 15	9 14 55 43	1 28 28 10	1 09 32 06	- 4 21	+21 16	+ 0 12	10
11	10 26 06 06	1 22 44 06	8 09 59 29	10 16 18 56	3 15 04 45	9 16 06 49	1 28 29 58	1 09 28 55	- 3 57	+24 01	+ 1 15	11
12	10 27 06 01	2 04 58 08	8 10 37 35	10 18 06 26	3 15 00 21	9 17 18 00	1 28 31 51	1 09 25 44	- 3 34	+25 42	+ 2 16	12
13	10 28 05 54	2 17 31 56	8 11 15 41	10 19 55 08	3 14 56 09	9 18 29 12	1 28 33 51	1 09 22 34	- 3 10	+26 08	+ 3 12	13
14	10 29 05 45	3 00 30 14	8 11 53 41	10 21 44 56	3 14 52 09	9 19 40 30	1 28 36 03	1 09 19 23	- 2 47	+25 10	+ 3 59	14
15	11 00 05 34	3 13 56 13	8 12 31 41	10 23 35 56	3 14 48 15	9 20 51 54	1 28 38 15	1 09 16 12	- 2 23	+22 45	+ 4 36	15
16	11 01 05 19	3 27 51 00	8 13 09 40	10 25 28 02	3 14 44 33	9 22 03 12	1 28 40 39	1 09 13 01	- 1 59	+18 57	+ 4 58	16
17	11 02 05 03	4 12 12 47	8 13 47 40	10 27 21 20	3 14 41 02	9 23 14 42	1 28 43 03	1 09 09 50	- 1 36	+13 56	+ 5 01	17
18	11 03 04 46	4 26 56 32	8 14 25 34	10 29 15 43	3 14 37 44	9 24 26 06	1 28 45 39	1 09 06 40	- 1 12	+ 8 00	+ 4 46	18
19	11 04 04 26	5 11 54 33	8 15 03 28	11 01 11 19	3 14 34 32	9 25 37 41	1 28 48 14	1 09 03 29	- 0 48	+ 1 32	+ 4 10	19
20	11 05 04 04	5 26 57 23	8 15 41 22	11 03 07 55	3 14 31 38	9 26 49 11	1 28 51 02	1 09 00 18	- 0 24	- 5 05	+ 3 18	20
21	11 06 03 40	6 11 55 40	8 16 19 10	11 05 05 37	3 14 28 50	9 28 00 53	1 28 53 50	1 08 57 07	- 0 01	-11 24	+ 2 11	21
22	11 07 03 13	6 26 41 31	8 16 57 04	11 07 04 19	3 14 26 14	9 29 12 29	1 28 56 50	1 08 53 56	+ 0 23	-16 59	+ 0 57	22
23	11 08 02 46	7 11 09 32	8 17 34 51	11 09 03 55	3 14 23 50	10 00 24 11	1 28 59 56	1 08 50 46	+ 0 47	-21 28	- 0 20	23
24	11 09 02 17	7 25 16 59	8 18 12 33	11 11 04 13	3 14 21 38	10 01 35 59	1 29 03 02	1 08 47 35	+ 1 10	-24 34	- 1 34	24
25	11 10 01 47	8 09 03 25	8 18 50 15	11 13 05 19	3 14 19 37	10 02 47 47	1 29 06 20	1 08 44 24	+ 1 34	-26 05	- 2 41	25
26	11 11 01 15	8 22 29 59	8 19 27 57	11 15 06 55	3 14 17 43	10 03 59 34	1 29 09 37	1 08 41 13	+ 1 58	-26 01	- 3 37	26
27	11 12 00 40	9 05 38 38	8 20 05 39	11 17 08 54	3 14 16 07	10 05 11 28	1 29 13 07	1 08 38 03	+ 2 21	-24 29	- 4 20	27
28	11 13 00 04	9 18 31 38	8 20 43 15	11 19 11 00	3 14 14 37	10 06 23 22	1 29 16 43	1 08 34 52	+ 2 45	-21 42	- 4 49	28
29	11 13 59 26	10 01 11 06	8 21 20 51	11 21 13 06	3 14 13 25	10 07 35 22	1 29 20 19	1 08 31 41	+ 3 08	-17 55	- 5 04	29
30	11 14 58 46	10 13 38 49	8 21 58 20	11 23 14 48	3 14 12 19	10 08 47 22	1 29 24 01	1 08 28 30	+ 3 31	-13 25	- 5 03	30
31	11 15 58 04	10 25 56 16	8 22 35 50	11 25 15 48	3 14 11 25	10 09 59 22	1 29 27 55	1 08 25 19	+ 3 55	- 8 27	- 4 49	31

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.) (1 अप्रैल 2003 ई. को अयनांश 23°/53'/54")

तारीख 2003 ई. अप्रैल	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहू	सूर्य क्रां.	चंद्र क्रां.	चन्द्रशर	तारीख 2003 ई. अप्रैल
	रा. अ. कं. वि.	रा. अ. कं. वि.	रा. अ. कं. वि.	रा. अ. कं. वि.	रा. अ. कं. वि.	रा. अ. कं. वि.	रा. अ. कं. वि.	रा. अ. कं. वि.	अ. कं.	अ. कं.	अ. कं.	
1	11 16 57 21	11 08 04 40	8 23 13 14	11 27 15 54	3 14 10 42	10 11 11 22	1 29 31 49	1 08 22 09	+ 4 18	- 3 13	- 4 21	1
2	11 17 56 35	11 20 05 11	8 23 50 38	11 29 14 35	3 14 10 12	10 12 23 27	1 29 35 48	1 08 18 58	+ 4 41	+ 2 06	- 3 42	2
3	11 18 55 48	0 01 59 14	8 24 27 56	0 01 11 35	3 14 09 54	10 13 35 33	1 29 39 54	1 08 15 47	+ 5 04	+ 7 18	- 2 54	3
4	11 19 54 58	0 13 48 34	8 25 05 14	0 03 06 29	3 14 09 48	10 14 47 39	1 29 44 06	1 08 12 36	+ 5 27	+12 13	- 1 58	4
5	11 20 54 05	0 25 35 28	8 25 42 25	0 04 58 59	3 14 09 48	10 15 59 45	1 29 48 24	1 08 09 26	+ 5 50	+16 41	- 0 57	5
6	11 21 53 11	1 07 22 54	8 26 19 37	0 06 48 34	3 14 10 06	10 17 11 57	1 29 52 48	1 08 06 15	+ 6 13	+20 31	+ 0 06	6
7	11 22 52 15	1 19 14 31	8 26 56 43	0 08 34 58	3 14 10 30	10 18 24 09	1 29 57 12	1 08 03 04	+ 6 35	+23 32	+ 1 10	7
8	11 23 51 16	2 01 14 33	8 27 33 49	0 10 17 40	3 14 11 11	10 19 36 21	2 00 01 48	1 07 59 53	+ 6 58	+25 32	+ 2 11	8
9	11 24 50 16	2 13 27 42	8 28 10 49	0 11 56 33	3 14 11 59	10 20 48 32	2 00 06 23	1 07 56 42	+ 7 20	+26 22	+ 3 08	9
10	11 25 49 13	2 25 58 52	8 28 47 49	0 13 31 09	3 14 12 59	10 22 00 50	2 00 11 05	1 07 53 32	+ 7 43	+25 52	+ 3 57	10
11	11 26 48 07	3 08 52 41	8 29 24 43	0 15 01 21	3 14 14 11	10 23 13 08	2 00 15 53	1 07 50 21	+ 8 05	+24 01	+ 4 36	11
12	11 27 46 59	3 22 12 59	9 00 01 30	0 16 26 38	3 14 15 35	10 24 25 20	2 00 20 47	1 07 47 10	+ 8 27	+20 48	+ 5 01	12
13	11 28 45 49	4 06 02 02	9 00 38 18	0 17 47 02	3 14 17 11	10 25 37 44	2 00 25 41	1 07 43 59	+ 8 49	+16 20	+ 5 10	13
14	11 29 44 37	4 20 19 42	9 01 15 00	0 19 02 14	3 14 18 59	10 26 50 02	2 00 30 47	1 07 40 49	+ 9 11	+10 50	+ 5 01	14
15	0 00 43 22	5 05 02 50	9 01 51 36	0 20 12 01	3 14 20 52	10 28 02 20	2 00 35 53	1 07 37 38	+ 9 32	+ 4 35	+ 4 32	15
16	0 01 42 06	5 20 05 10	9 02 28 12	0 21 16 19	3 14 23 04	10 29 14 43	2 00 40 58	1 07 34 27	+ 9 54	- 2 05	+ 3 43	16
17	0 02 40 47	6 05 17 50	9 03 04 48	0 22 15 01	3 14 25 22	11 00 27 07	2 00 46 16	1 07 31 16	+10 15	- 8 43	+ 2 39	17
18	0 03 39 26	6 20 30 42	9 03 41 12	0 23 07 54	3 14 27 46	11 01 39 31	2 00 51 34	1 07 28 05	+10 36	-14 51	+ 1 23	18
19	0 04 38 03	7 05 34 03	9 04 17 35	0 23 55 00	3 14 30 28	11 02 51 55	2 00 56 58	1 07 24 55	+10 57	-20 01	+ 0 01	19
20	0 05 36 39	7 20 19 59	9 04 53 53	0 24 36 17	3 14 33 16	11 04 04 25	2 01 02 28	1 07 21 44	+11 18	-23 48	- 1 18	20
21	0 06 35 14	8 04 43 15	9 05 30 11	0 25 11 29	3 14 36 22	11 05 16 49	2 01 08 04	1 07 18 33	+11 39	-25 57	- 2 31	21
22	0 07 33 46	8 18 41 28	9 06 06 23	0 25 40 46	3 14 39 33	11 06 29 18	2 01 13 40	1 07 15 22	+11 59	-26 23	- 3 33	22
23	0 08 32 17	9 02 14 34	9 06 42 29	0 26 04 04	3 14 42 51	11 07 41 48	2 01 19 21	1 07 12 11	+12 19	-25 12	- 4 21	23
24	0 09 30 47	9 15 24 16	9 07 18 29	0 26 21 28	3 14 46 27	11 08 54 18	2 01 25 03	1 07 09 01	+12 39	-22 38	- 4 54	24
25	0 10 29 14	9 28 13 18	9 07 54 22	0 26 32 51	3 14 50 09	11 10 06 54	2 01 30 51	1 07 05 50	+12 59	-19 02	- 5 11	25
26	0 11 27 40	10 10 44 53	9 08 30 16	0 26 38 33	3 14 53 57	11 11 19 24	2 01 36 45	1 07 02 39	+13 19	-14 39	- 5 12	26
27	0 12 26 04	10 23 02 19	9 09 05 58	0 26 38 32	3 14 58 03	11 12 32 00	2 01 42 45	1 06 59 28	+13 38	- 9 45	- 4 59	27
28	0 13 24 27	11 05 08 43	9 09 41 40	0 26 33 08	3 15 02 15	11 13 44 36	2 01 48 45	1 06 56 18	+13 57	- 4 34	- 4 33	28
29	0 14 22 48	11 17 06 51	9 10 17 10	0 26 22 26	3 15 06 38	11 14 57 11	2 01 54 51	1 06 53 07	+14 16	+ 0 45	- 3 56	29
30	0 15 21 07	11 28 59 14	9 10 52 40	0 26 06 49	3 15 11 08	11 16 09 47	2 02 00 56	1 06 49 56	+14 35	+ 5 59	- 3 08	30

स्पष्ट राहु के भोगांश (सं. 2059 वि.) , (सन् 2002 ई.)

महीना→	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल	मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	←महीना
तारीख↓	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	↓तारीख
1	2 03 17 23	2 02 16 18	1 29 52 26	1 26 28 40	1 24 29 06	1 23 59 32	1 23 45 09	1 22 30 17	1 19 56 31	1
2	2 03 15 40	2 02 10 36	1 29 42 50	1 26 26 16	1 24 30 36	1 23 59 56	1 23 43 51	1 22 30 17	1 19 55 43	2
3	2 03 13 46	2 02 06 42	1 29 35 26	1 26 25 52	1 24 32 06	1 23 59 55	1 23 43 27	1 22 31 11	1 19 53 06	3
4	2 03 11 52	2 02 04 42	1 29 30 38	1 26 26 16	1 24 32 54	1 23 59 37	1 23 43 57	1 22 31 59	1 19 48 06	4
5	2 03 10 34	2 02 04 30	1 29 28 26	1 26 26 28	1 24 32 35	1 23 59 13	1 23 45 09	1 22 31 59	1 19 40 24	5
6	2 03 10 04	2 02 05 24	1 29 27 56	1 26 25 15	1 24 30 53	1 23 58 43	1 23 46 45	1 22 30 10	1 19 30 36	6
7	2 03 10 22	2 02 06 24	1 29 27 56	1 26 21 57	1 24 27 41	1 23 58 25	1 23 48 15	1 22 26 10	1 19 19 29	7
8	2 03 11 22	2 02 06 35	1 29 27 19	1 26 16 09	1 24 23 17	1 23 58 13	1 23 49 09	1 22 19 58	1 19 08 29	8
9	2 03 12 52	2 02 04 53	1 29 24 43	1 26 07 51	1 24 18 11	1 23 58 13	1 23 48 56	1 22 11 52	1 18 58 35	9
10	2 03 14 15	2 02 00 47	1 29 19 31	1 25 57 38	1 24 12 59	1 23 58 24	1 23 47 20	1 22 02 46	1 18 50 59	10
11	2 03 15 03	2 01 53 59	1 29 11 13	1 25 46 14	1 24 08 04	1 23 58 30	1 23 44 26	1 21 53 39	1 18 46 05	11
12	2 03 14 51	2 01 44 46	1 29 00 00	1 25 34 38	1 24 04 10	1 23 58 36	1 23 40 20	1 21 45 51	1 18 43 47	12
13	2 03 13 21	2 01 33 40	1 28 46 30	1 25 23 56	1 24 01 28	1 23 58 24	1 23 35 38	1 21 39 57	1 18 43 17	13
14	2 03 10 27	2 01 21 34	1 28 31 42	1 25 14 56	1 24 00 10	1 23 58 06	1 23 31 02	1 21 36 27	1 18 43 23	14
15	2 03 06 14	2 01 09 40	1 28 16 48	1 25 08 20	1 24 00 04	1 23 57 30	1 23 27 13	1 21 35 09	1 18 42 53	15
16	2 03 01 08	2 00 58 46	1 28 03 06	1 25 04 14	1 24 01 04	1 23 56 48	1 23 24 37	1 21 35 21	1 18 40 29	16
17	2 02 55 38	2 00 49 58	1 27 51 36	1 25 02 38	1 24 02 34	1 23 56 11	1 23 23 37	1 21 35 51	1 18 35 34	17
18	2 02 50 20	2 00 43 34	1 27 42 54	1 25 02 56	1 24 04 04	1 23 55 53	1 23 23 55	1 21 35 33	1 18 27 40	18
19	2 02 45 50	2 00 39 52	1 27 37 24	1 25 04 02	1 24 05 04	1 23 55 53	1 23 25 13	1 21 33 14	1 18 17 04	19
20	2 02 42 38	2 00 38 28	1 27 34 36	1 25 05 14	1 24 05 21	1 23 56 23	1 23 26 37	1 21 28 14	1 18 04 28	20
21	2 02 40 50	2 00 38 28	1 27 33 54	1 25 05 19	1 24 04 39	1 23 57 11	1 23 27 19	1 21 20 20	1 17 50 51	21
22	2 02 40 32	2 00 38 51	1 27 34 06	1 25 03 43	1 24 03 21	1 23 58 05	1 23 26 37	1 21 09 50	1 17 37 33	22
23	2 02 41 26	2 00 38 27	1 27 33 47	1 25 00 13	1 24 01 27	1 23 58 47	1 23 23 54	1 20 57 20	1 17 25 33	23
24	2 02 42 55	2 00 36 09	1 27 31 53	1 24 55 01	1 23 59 27	1 23 58 58	1 23 19 12	1 20 44 01	1 17 15 45	24
25	2 02 44 19	2 00 31 21	1 27 27 41	1 24 48 37	1 23 57 51	1 23 58 28	1 23 12 36	1 20 30 55	1 17 08 33	25
26	2 02 44 55	2 00 23 50	1 27 20 47	1 24 42 06	1 23 56 39	1 23 57 16	1 23 04 42	1 20 19 19	1 17 04 15	26
27	2 02 44 01	2 00 14 08	1 27 11 34	1 24 36 18	1 23 56 14	1 23 55 16	1 22 56 12	1 20 09 49	1 17 02 21	27
28	2 02 41 07	2 00 03 14	1 27 01 10	1 24 31 48	1 23 56 26	1 23 52 40	1 22 48 05	1 20 02 55	1 17 02 09	28
29	2 02 36 24		1 26 50 28	1 24 29 12	1 23 57 08	1 23 49 58	1 22 40 53	1 19 58 49	1 17 02 39	29
30	2 02 30 06		1 26 40 58	1 24 28 30	1 23 58 02	1 23 47 22	1 22 35 29	1 19 56 55	1 17 02 45	30
31	2 02 23 06		1 26 33 28		1 23 58 56		1 22 31 53	1 19 56 31		31

स्पष्ट राहु के भोगांश (सं. 2059 वि.), (सन् 2002–2003 ई.)

महीना→	अक्तूबर	नवम्बर	दिसम्बर	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल
तारीख↓	रा. अं. क. वि.	रा. अ. क. वि.	रा. अ. क. वि.	रा. अ. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अ. क. वि.	रा. अं. क. वि.
1	1 17 01 32	1 15 09 52	1 14 47 42	1 14 35 02	1 12 40 09	1 09 44 58	1 06 38 06
2	1 16 58 08	1 15 06 04	1 14 47 42	1 14 33 07	1 12 28 32	1 09 32 04	1 06 29 18
3	1 16 52 38	1 15 01 58	1 14 47 48	1 14 29 31	1 12 16 02	1 09 18 04	1 06 22 06
4	1 16 45 08	1 14 58 16	1 14 47 53	1 14 24 25	1 12 04 02	1 09 04 10	1 06 17 06
5	1 16 36 20	1 14 55 34	1 14 47 41	1 14 18 19	1 11 53 20	1 08 51 40	1 06 14 18
6	1 16 27 31	1 14 54 03	1 14 47 17	1 14 11 49	1 11 44 56	1 08 41 28	1 06 13 36
7	1 16 19 37	1 14 53 51	1 14 46 41	1 14 05 48	1 11 39 02	1 08 34 04	1 06 14 24
8	1 16 13 31	1 14 54 33	1 14 45 47	1 14 00 54	1 11 35 44	1 08 29 34	1 06 15 59
9	1 16 09 43	1 14 55 51	1 14 44 53	1 13 57 36	1 11 34 26	1 08 27 28	1 06 17 23
10	1 16 08 07	1 14 57 15	1 14 44 11	1 13 55 54	1 11 34 20	1 08 27 04	1 06 18 05
11	1 16 08 13	1 14 58 15	1 14 43 46	1 13 55 48	1 11 34 26	1 08 27 22	1 06 17 23
12	1 16 09 07	1 14 58 39	1 14 43 46	1 13 56 48	1 11 33 25	1 08 27 09	1 06 15 05
13	1 16 09 55	1 14 58 02	1 14 44 22	1 13 58 18	1 11 30 25	1 08 25 27	1 06 11 10
14	1 16 09 31	1 14 56 44	1 14 45 22	1 13 59 30	1 11 24 49	1 08 21 27	1 06 06 16
15	1 16 07 18	1 14 54 44	1 14 46 46	1 13 59 30	1 11 16 31	1 08 15 03	1 06 00 58
16	1 16 03 00	1 14 52 26	1 14 48 10	1 13 57 41	1 11 05 48	1 08 06 26	1 05 56 04
17	1 15 56 42	1 14 50 08	1 14 49 22	1 13 53 41	1 10 53 36	1 07 56 20	1 05 52 10
18	1 15 48 48	1 14 48 02	1 14 49 57	1 13 47 29	1 10 41 18	1 07 45 56	1 05 49 52
19	1 15 40 12	1 14 46 26	1 14 49 39	1 13 39 23	1 10 30 06	1 07 36 20	1 05 49 04
20	1 15 31 42	1 14 45 31	1 14 48 21	1 13 30 22	1 10 21 12	1 07 28 38	1 05 49 40
21	1 15 23 59	1 14 45 07	1 14 46 09	1 13 21 16	1 10 15 06	1 07 23 26	1 05 51 04
22	1 15 17 41	1 14 45 13	1 14 43 03	1 13 13 16	1 10 11 48	1 07 20 56	1 05 52 33
23	1 15 13 23	1 14 45 43	1 14 39 33	1 13 07 10	1 10 10 42	1 07 20 26	1 05 53 33
24	1 15 11 05	1 14 46 19	1 14 36 08	1 13 03 28	1 10 10 42	1 07 21 02	1 05 53 39
25	1 15 10 35	1 14 46 55	1 14 33 20	1 13 01 58	1 10 10 18	1 07 21 43	1 05 52 27
26	1 15 11 29	1 14 47 25	1 14 31 32	1 13 02 04	1 10 08 17	1 07 21 13	1 05 50 09
27	1 15 12 59	1 14 47 42	1 14 30 56	1 13 02 46	1 10 03 29	1 07 18 49	1 05 46 50
28	1 15 14 29	1 14 47 42	1 14 31 32	1 13 02 52	1 09 55 41	1 07 14 01	1 05 43 08
29	1 15 15 11	1 14 47 42	1 14 32 50	1 13 01 09	× × × ×	1 07 06 49	1 05 39 20
30	1 15 14 46	1 14 47 36	1 14 34 20	1 12 56 57		1 06 57 54	1 05 36 02
31	1 15 12 58	× × × ×	1 14 35 14	1 12 49 51		1 06 48 00	× × × ×

राहु एवं केतु की मार्गी गति क्यों ?

वक्रता दो प्रकार की होती हैं:–

1. पृथ्वी की गति के कारण पृथ्वी पर स्थित द्रष्टा के लिए प्रतीतिमात्र।
2. स्वाभाविक कक्रता– यह तब होती हैं जब पिण्ड की कक्षा का क्रान्तिवृत्त के साथ विनामकोण (परम विक्षेप) 90 अंश से अधिक होता है। इस कोटी मे काफी धूमकेतु आते हैं।

चन्द्रमा की कक्षा के पात (राहु और केतु) स्वाभाविक तौर पर वक्री हैं, परन्तु सूर्य के आकर्षण के कारण ऊर्ध्वाधर उन्नाम व अधोंनमन (**Tilt**) से गति कुछ समय के लिए मार्गी होताती है। इस स्थिति में चन्द्रमा के लम्बन में बहूत परिवर्तन आता है। विनाम के फलस्वरूप कक्षा का विक्षोभ अधिक होने से गति मार्गी हो जाती है।

यूरेनस, नेपच्यून, वेंकटेश (प्लूटो) के निरयण भोगांश और भौमादि ग्रहों के क्रान्ति–शर (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.)

तारीख सन 2002 ई.	यूरेनस रा. अं. क.	नेपच्यून रा. अं. क.	वेंकटेश रा. अं. क.	मंगल क्रान्ति अं. क.	मंगल शर अं. क.	बुध क्रान्ति अं. क.	बुध शर अं. क.	गुरु क्रान्ति अं. क.	गुरु शर अं. क.	शुक्र क्रान्ति अं. क.	शुक्र शर अं. क.	शनि क्रान्ति अं. क.	शनि शर अं. क.	यूरेनस क्रान्ति अं. क.	यूरेनस शर अं. क.	नेपच्यून क्रान्ति अं. क.	नेपच्यून शर अं. क.	वेंकटेश(प्लूटो) क्रान्ति अं. क.	वेंकटेश(प्लूटो) शर अं. क.
जन. 1	9 28 34	9 13 33	7 22 09	-5 48	-0 42	-23 01	-2 03	+23 01	+0 01	-23 39	-0 25	+20 03	-1 48	-14 43	-0 42	-18 19	+0 06	-13 03	+9 38
4	9 28 43	9 13 40	7 22 15	-4 53	-0 38	-21 54	-1 50	+23 04	+0 01	-23 30	-0 31	+20 02	-1 48	-14 40	-0 42	-18 18	+0 06	-13 04	+9 38
7	9 28 51	9 13 46	7 22 21	-3 58	-0 35	-20 36	-1 30	+23 06	+0 02	-23 15	-0 38	+20 01	-1 47	-14 37	-0 42	-18 16	+0 06	-13 04	+9 38
10	9 29 00	9 13 53	7 22 28	-3 03	-0 31	-19 10	-1 02	+23 08	+0 02	-22 53	-0 44	+20 00	-1 46	-14 34	-0 42	-18 14	+0 06	-13 04	+9 39
13	9 29 10	9 13 59	7 22 34	-2 08	-0 28	-17 43	-0 26	+23 10	+0 02	-22 25	-0 50	+19 59	-1 46	-14 31	-0 42	-18 13	+0 06	-13 05	+9 39
16	9 29 19	9 14 06	7 22 39	-1 13	-0 25	-16 23	+0 20	+23 12	+0 03	-21 51	-0 56	+19 59	-1 45	-14 28	-0 42	-18 11	+0 06	-13 05	+9 39
19	9 29 29	9 14 13	7 22 45	-0 18	-0 21	-15 20	+1 13	+23 14	+0 03	-21 11	-1 01	+19 58	-1 44	-14 25	-0 42	-18 09	+0 06	-13 05	+9 40
22	9 29 38	9 14 19	7 22 50	+0 37	-0 18	-14 44	+2 08	+23 16	+0 04	-20 25	-1 06	+19 58	-1 43	-14 22	-0 42	-18 08	+0 05	-13 05	+9 40
25	9 29 48	9 14 26	7 22 55	+1 32	-0 15	-14 41	+2 56	+23 17	+0 04	-19 34	-1 10	+19 58	-1 43	-14 18	-0 42	-18 06	+0 05	-13 05	+9 41
28	9 29 58	9 14 33	7 23 00	+2 26	-0 12	-15 05	+3 28	+23 19	+0 04	-18 37	-1 14	+19 58	-1 42	-14 15	-0 42	-18 04	+0 05	-13 05	+9 41
31	10 00 08	9 14 40	7 23 05	+3 21	-0 09	-15 48	+3 38	+23 20	+0 05	-17 36	-1 18	+19 59	-1 41	-14 12	-0 42	-18 03	+0 05	-13 05	+9 41
फर. 1	10 00 12	9 14 42	7 23 07	+3 39	-0 08	-16 04	+3 37	+23 20	+0 05	-17 15	-1 19	+19 59	-1 41	-14 10	-0 42	-18 02	+0 05	-13 05	+9 42
4	10 00 22	9 14 49	7 23 11	+4 32	-0 06	-16 52	+3 21	+23 22	+0 05	-16 07	-1 22	+19 59	-1 40	-14 07	-0 42	-18 00	+0 05	-13 05	+9 42
7	10 00 33	9 14 56	7 23 15	+5 25	-0 03	-17 36	+2 53	+23 23	+0 06	-14 56	-1 24	+20 00	-1 39	-14 04	-0 42	-17 58	+0 05	-13 05	+9 43
10	10 00 43	9 15 02	7 23 19	+6 18	-0 00	-18 10	+2 18	+23 24	+0 06	-13 42	-1 26	+20 01	-1 39	-14 00	-0 42	-17 57	+0 05	-13 05	+9 43
13	10 00 53	9 15 09	7 23 23	+7 10	+0 03	-18 34	+1 42	+23 24	+0 06	-12 24	-1 27	+20 02	-1 38	-13 57	-0 42	-17 55	+0 05	-13 04	+9 44
16	10 01 04	9 15 16	7 23 26	+8 01	+0 05	-18 47	+1 06	+23 25	+0 07	-11 03	-1 27	+20 03	-1 37	-13 53	-0 42	-17 53	+0 05	-13 04	+9 45
19	10 01 14	9 15 22	7 23 29	+8 52	+0 08	-18 48	+0 32	+23 26	+0 07	-9 39	-1 27	+20 04	-1 36	-13 50	-0 42	-17 52	+0 05	-13 04	+9 45
22	10 01 24	9 15 29	7 23 32	+9 41	+0 10	-18 37	+0 01	+23 26	+0 07	-8 13	-1 27	+20 05	-1 36	-13 46	-0 42	-17 50	+0 05	-13 03	+9 46
25	10 01 35	9 15 35	7 23 35	+10 30	+0 12	-18 14	-0 28	+23 27	+0 08	-6 45	-1 26	+20 07	-1 35	-13 43	-0 42	-17 48	+0 05	-13 03	+9 47
28	10 01 45	9 15 41	7 23 37	+11 18	+0 15	-17 39	-0 53	+23 27	+0 08	-5 16	-1 24	+20 09	-1 34	-13 39	-0 42	-17 47	+0 05	-13 02	+9 47
मार्च 1	10 01 48	9 15 43	7 23 38	+11 34	+0 15	-17 25	-1 01	+23 27	+0 08	-4 46	-1 23	+20 09	-1 34	-13 38	-0 42	-17 46	+0 05	-13 02	+9 48
4	10 01 58	9 15 49	7 23 40	+12 21	+0 18	-16 34	-1 22	+23 28	+0 08	-3 14	-1 21	+20 11	-1 33	-13 35	-0 42	-17 45	+0 05	-13 02	+9 48
7	10 02 08	9 15 55	7 23 41	+13 06	+0 20	-15 32	-1 40	+23 28	+0 09	-1 43	-1 17	+20 13	-1 32	-13 32	-0 42	-17 43	+0 05	-13 01	+9 49
10	10 02 18	9 16 01	7 23 42	+13 51	+0 22	-14 18	-1 55	+23 28	+0 09	-0 10	-1 14	+20 15	-1 32	-13 28	-0 42	-17 42	+0 05	-13 00	+9 50
13	10 02 28	9 16 06	7 23 43	+14 34	+0 24	-12 53	-2 06	+23 28	+0 09	+1 22	-1 10	+20 18	-1 31	-13 25	-0 42	-17 40	+0 05	-13 00	+9 50
16	10 02 38	9 16 12	7 23 44	+15 16	+0 26	-11 17	-2 13	+23 28	+0 10	+2 55	-1 05	+20 20	-1 30	-13 22	-0 42	-17 39	+0 05	-12 59	+9 51
19	10 02 47	9 16 17	7 23 44	+15 57	+0 28	-9 30	-2 16	+23 28	+0 10	+4 27	-1 00	+20 23	-1 29	-13 19	-0 42	-17 37	+0 05	-12 58	+9 52
22	10 02 56	9 16 22	7 23 44	+16 37	+0 30	-7 32	-2 15	+23 27	+0 10	+5 58	-0 54	+20 25	-1 29	-13 16	-0 42	-17 36	+0 05	-12 58	+9 53
25	10 03 05	9 16 26	7 23 44	+17 15	+0 32	-5 23	-2 10	+23 27	+0 10	+7 28	-0 48	+20 28	-1 28	-13 13	-0 42	-17 35	+0 05	-12 57	+9 53
28	10 03 13	9 16 31	7 23 43	+17 52	+0 33	-3 04	-2 01	+23 27	+0 11	+8 56	-0 42	+20 30	-1 27	-13 10	-0 42	-17 34	+0 05	-12 56	+9 54
31	10 03 22	9 16 35	7 23 42	+18 27	+0 35	-0 36	-1 47	+23 26	+0 11	+10 22	-0 35	+20 33	-1 27	-13 07	-0 42	-17 33	+0 05	-12 55	+9 55

यूरेनस, नेपच्यून, वेंकटेश (प्लूटो) के निरयण भोगांश और भौमादि ग्रहों के क्रान्ति–शर (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.

तारीख सन 2002 ई.	यूरेनस	नेपच्यून	वेंकटेश	मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		यूरेनस		नेपच्यून		वेंकटेश(प्लूटो)	
	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर
				अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
अप्रै. 1	10 03 25	9 16 36	7 23 42	+18 39	+ 0 36	+ 0 15	- 1 42	+23 26	+ 0 11	+10 51	- 0 32	+20 34	- 1 27	-13 06	- 0 42	-17 32	+ 0 05	-12 55	+ 9 55
4	10 03 33	9 16 40	7 23 41	+19 12	+ 0 37	+ 2 54	- 1 22	+23 25	+ 0 11	+12 14	- 0 25	+20 37	- 1 26	-13 03	- 0 43	-17 31	+ 0 05	-12 54	+ 9 55
7	10 03 40	9 16 44	7 23 39	+19 44	+ 0 39	+ 5 39	- 0 57	+23 24	+ 0 11	+13 35	- 0 18	+20 40	- 1 25	-13 01	- 0 43	-17 30	+ 0 05	-12 54	+ 9 56
10	10 03 48	9 16 47	7 23 37	+20 15	+ 0 40	+ 8 27	- 0 29	+23 23	+ 0 12	+14 53	- 0 10	+20 43	- 1 25	-12 58	- 0 43	-17 29	+ 0 05	-12 53	+ 9 57
13	10 03 55	9 16 50	7 23 35	+20 43	+ 0 42	+11 14	+ 0 03	+23 22	+ 0 12	+16 08	- 0 02	+20 46	- 1 24	-12 56	- 0 43	-17 29	+ 0 05	-12 52	+ 9 57
16	10 04 02	9 16 53	7 23 33	+21 10	+ 0 43	+13 54	+ 0 36	+23 21	+ 0 12	+17 19	+ 0 06	+20 49	- 1 24	-12 54	- 0 43	-17 28	+ 0 05	-12 51	+ 9 58
19	10 04 08	9 16 55	7 23 30	+21 36	+ 0 45	+16 22	+ 1 09	+23 20	+ 0 12	+18 26	+ 0 14	+20 52	- 1 23	-12 52	- 0 43	-17 27	+ 0 05	-12 51	+ 9 58
22	10 04 14	9 16 58	7 23 27	+22 00	+ 0 46	+18 33	+ 1 39	+23 18	+ 0 12	+19 29	+ 0 22	+20 55	- 1 23	-12 50	- 0 43	-17 27	+ 0 05	-12 50	+ 9 59
25	10 04 20	9 17 00	7 23 24	+22 22	+ 0 47	+20 23	+ 2 04	+23 16	+ 0 13	+20 27	+ 0 30	+20 58	- 1 22	-12 48	- 0 43	-17 26	+ 0 05	-12 49	+ 9 59
28	10 04 25	9 17 01	7 23 21	+22 42	+ 0 48	+21 50	+ 2 23	+23 15	+ 0 13	+21 20	+ 0 38	+21 01	- 1 22	-12 46	- 0 43	-17 26	+ 0 05	-12 49	+10 00
मई 1	10 04 30	9 17 03	7 23 18	+23 00	+ 0 50	+22 54	+ 2 35	+23 12	+ 0 13	+22 09	+ 0 46	+21 04	- 1 21	-12 44	- 0 43	-17 25	+ 0 05	-12 48	+10 00
4	10 04 35	9 17 04	7 23 14	+23 17	+ 0 51	+23 37	+ 2 38	+23 10	+ 0 13	+22 51	+ 0 54	+21 07	- 1 21	-12 43	- 0 44	-17 25	+ 0 05	-12 47	+10 00
7	10 04 39	9 17 05	7 23 10	+23 32	+ 0 52	+23 59	+ 2 33	+23 08	+ 0 14	+23 28	+ 1 02	+21 10	- 1 21	-12 42	- 0 44	-17 25	+ 0 05	-12 47	+10 00
10	10 04 42	9 17 05	7 23 06	+23 45	+ 0 53	+24 01	+ 2 17	+23 05	+ 0 14	+23 59	+ 1 09	+21 13	- 1 20	-12 41	- 0 44	-17 25	+ 0 04	-12 46	+10 01
13	10 04 46	9 17 05	7 23 02	+23 56	+ 0 54	+23 46	+ 1 52	+23 02	+ 0 14	+24 24	+ 1 16	+21 16	- 1 20	-12 40	- 0 44	-17 25	+ 0 04	-12 46	+10 01
16	10 04 49	9 17 05	7 22 57	+24 06	+ 0 55	+23 14	+ 1 17	+22 59	+ 0 14	+24 42	+ 1 23	+21 18	- 1 19	-12 39	- 0 44	-17 25	+ 0 04	-12 45	+10 01
19	10 04 51	9 17 05	7 22 53	+24 13	+ 0 56	+22 27	+ 0 33	+22 56	+ 0 14	+24 55	+ 1 29	+21 21	- 1 19	-12 38	- 0 44	-17 25	+ 0 04	-12 45	+10 01
22	10 04 53	9 17 04	7 22 48	+24 19	+ 0 57	+21 29	- 0 16	+22 53	+ 0 15	+25 00	+ 1 35	+21 24	- 1 19	-12 37	- 0 44	-17 25	+ 0 04	-12 44	+10 01
25	10 04 54	9 17 03	7 22 44	+24 23	+ 0 58	+20 22	- 1 09	+22 49	+ 0 15	+25 00	+ 1 40	+21 27	- 1 18	-12 37	- 0 44	-17 25	+ 0 04	-12 44	+10 01
28	10 04 56	9 17 02	7 22 39	+24 25	+ 0 58	+19 14	- 2 01	+22 45	+ 0 15	+24 53	+ 1 45	+21 29	- 1 18	-12 37	- 0 44	-17 26	+ 0 04	-12 43	+10 01
31	10 04 56	9 17 00	7 22 34	+24 25	+ 0 59	+18 10	- 2 47	+22 41	+ 0 15	+24 39	+ 1 49	+21 32	- 1 18	-12 37	- 0 45	-17 26	+ 0 04	-12 43	+10 01
जून 1	10 04 56	9 17 00	7 22 33	+24 25	+ 0 59	+17 51	- 3 00	+22 40	+ 0 15	+24 34	+ 1 50	+21 33	- 1 18	-12 37	- 0 45	-17 26	+ 0 04	-12 43	+10 01
4	10 04 56	9 16 58	7 22 28	+24 22	+ 1 00	+17 03	- 3 35	+22 36	+ 0 15	+24 12	+ 1 53	+21 35	- 1 17	-12 37	- 0 45	-17 27	+ 0 04	-12 43	+10 00
7	10 04 56	9 16 56	7 22 23	+24 18	+ 1 01	+16 33	- 3 58	+22 31	+ 0 16	+23 44	+ 1 56	+21 37	- 1 17	-12 37	- 0 45	-17 28	+ 0 04	-12 42	+10 00
10	10 04 55	9 16 53	7 22 18	+24 13	+ 1 02	+16 20	- 4 09	+22 26	+ 0 16	+23 11	+ 1 58	+21 40	- 1 17	-12 37	- 0 45	-17 28	+ 0 04	-12 42	+10 00
13	10 04 54	9 16 51	7 22 14	+24 05	+ 1 02	+16 27	- 4 10	+22 21	+ 0 16	+22 32	+ 1 59	+21 42	- 1 17	-12 38	- 0 45	-17 29	+ 0 04	-12 42	+ 9 59
16	10 04 52	9 16 48	7 22 09	+23 56	+ 1 03	+16 50	- 4 02	+22 16	+ 0 16	+21 47	+ 1 59	+21 44	- 1 17	-12 39	- 0 45	-17 30	+ 0 04	-12 42	+ 9 59
19	10 04 50	9 16 45	7 22 04	+23 45	+ 1 03	+17 27	- 3 46	+22 11	+ 0 17	+20 58	+ 1 59	+21 46	- 1 16	-12 39	- 0 45	-17 31	+ 0 04	-12 42	+ 9 59
22	10 04 48	9 16 41	7 21 59	+23 32	+ 1 04	+18 16	- 3 23	+22 05	+ 0 17	+20 03	+ 1 57	+21 48	- 1 16	-12 40	- 0 45	-17 32	+ 0 04	-12 42	+ 9 58
25	10 04 45	9 16 38	7 21 55	+23 18	+ 1 05	+19 12	- 2 55	+21 59	+ 0 17	+19 04	+ 1 55	+21 50	- 1 16	-12 41	- 0 46	-17 33	+ 0 04	-12 42	+ 9 57
28	10 04 42	9 16 34	7 21 50	+23 02	+ 1 05	+20 13	- 2 22	+21 53	+ 0 17	+18 01	+ 1 52	+21 51	- 1 16	-12 43	- 0 46	-17 34	+ 0 04	-12 43	+ 9 57

यूरेनस, नेपच्यून, वेंकटेश (प्लूटो) के निरयण भोगांश और भौमादि ग्रहों के क्रान्ति–शर (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.)

तारीख सन 2002 ई.	यूरेनस	नेपच्यून	वेंकटेश	मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		यूरेनस		नेपच्यून		वेंकटेश(प्लूटो)	
	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर
				अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
जूला. 1	10 04 38	9 16 30	7 21 46	+22 45	+ 1 05	+21 13	- 1 47	+21 47	+ 0 18	+16 54	+ 1 48	+21 53	- 1 16	-12 44	- 0 46	-17 35	+ 0 04	-12 43	+ 9 56
4	10 04 34	9 16 26	7 21 42	+22 26	+ 1 06	+22 08	- 1 10	+21 40	+ 0 18	+15 44	+ 1 43	+21 54	- 1 16	-12 46	- 0 46	-17 36	+ 0 04	-12 43	+ 9 55
7	10 04 30	9 16 22	7 21 37	+22 06	+ 1 06	+22 54	- 0 32	+21 34	+ 0 18	+14 30	+ 1 37	+21 56	- 1 16	-12 47	- 0 46	-17 37	+ 0 04	-12 44	+ 9 55
10	10 04 25	9 16 18	7 21 33	+21 44	+ 1 07	+23 24	+ 0 04	+21 27	+ 0 18	+13 13	+ 1 30	+21 57	- 1 16	-12 49	- 0 46	-17 38	+ 0 04	-12 44	+ 9 54
13	10 04 20	9 16 13	7 21 30	+21 20	+ 1 07	+23 35	+ 0 36	+21 20	+ 0 19	+11 54	+ 1 22	+21 59	- 1 16	-12 51	- 0 46	-17 39	+ 0 04	-12 44	+ 9 53
16	10 04 15	9 16 09	7 21 26	+20 56	+ 1 07	+23 21	+ 1 03	+21 13	+ 0 19	+10 33	+ 1 13	+22 00	- 1 16	-12 53	- 0 46	-17 41	+ 0 04	-12 45	+ 9 52
19	10 04 09	9 16 04	7 21 23	+20 30	+ 1 08	+22 44	+ 1 24	+21 05	+ 0 19	+ 9 09	+ 1 04	+22 01	- 1 16	-12 55	- 0 46	-17 42	+ 0 04	-12 46	+ 9 51
22	10 04 03	9 15 59	7 21 19	+20 02	+ 1 08	+21 43	+ 1 39	+20 58	+ 0 19	+ 7 44	+ 0 53	+22 02	- 1 16	-12 57	- 0 46	-17 43	+ 0 04	-12 46	+ 9 50
25	10 03 57	9 15 54	7 21 16	+19 34	+ 1 08	+20 22	+ 1 46	+20 50	+ 0 20	+ 6 17	+ 0 42	+22 03	- 1 16	-12 59	- 0 46	-17 45	+ 0 04	-12 47	+ 9 49
28	10 03 51	9 15 49	7 21 14	+19 04	+ 1 08	+18 46	+ 1 47	+20 42	+ 0 20	+ 4 49	+ 0 29	+22 04	- 1 16	-13 01	- 0 46	-17 46	+ 0 04	-12 48	+ 9 48
31	10 03 44	9 15 45	7 21 11	+18 33	+ 1 08	+16 57	+ 1 42	+20 34	+ 0 20	+ 3 21	+ 0 16	+22 04	- 1 16	-13 03	- 0 46	-17 47	+ 0 04	-12 49	+ 9 47
अग. 1	10 03 42	9 15 43	7 21 10	+18 22	+ 1 08	+16 19	+ 1 39	+20 31	+ 0 20	+ 2 51	+ 0 11	+22 05	- 1 16	-13 04	- 0 47	-17 48	+ 0 04	-12 49	+ 9 46
4	10 03 35	9 15 38	7 21 08	+17 50	+ 1 09	+14 19	+ 1 28	+20 23	+ 0 21	+ 1 22	- 0 03	+22 05	- 1 16	-13 07	- 0 47	-17 49	+ 0 04	-12 50	+ 9 45
7	10 03 28	9 15 33	7 21 06	+17 16	+ 1 09	+12 15	+ 1 13	+20 15	+ 0 21	- 0 07	- 0 19	+22 06	- 1 16	-13 09	- 0 47	-17 50	+ 0 04	-12 51	+ 9 44
10	10 03 21	9 15 28	7 21 04	+16 42	+ 1 09	+10 08	+ 0 54	+20 06	+ 0 21	- 1 37	- 0 35	+22 06	- 1 16	-13 11	- 0 47	-17 52	+ 0 04	-12 52	+ 9 43
13	10 03 14	9 15 23	7 21 03	+16 06	+ 1 09	+ 8 00	+ 0 32	+19 58	+ 0 21	- 3 05	- 0 52	+22 07	- 1 16	-13 14	- 0 47	-17 53	+ 0 04	-12 53	+ 9 42
16	10 03 07	9 15 19	7 21 02	+15 30	+ 1 09	+ 5 52	+ 0 08	+19 49	+ 0 22	- 4 33	- 1 09	+22 07	- 1 16	-13 16	- 0 47	-17 54	+ 0 03	-12 54	+ 9 41
19	10 03 00	9 15 14	7 21 01	+14 53	+ 1 09	+ 3 47	- 0 17	+19 41	+ 0 22	- 6 01	- 1 28	+22 08	- 1 16	-13 19	- 0 47	-17 56	+ 0 03	-12 55	+ 9 39
22	10 02 53	9 15 09	7 21 00	+14 14	+ 1 09	+ 1 45	- 0 44	+19 32	+ 0 22	- 7 27	- 1 47	+22 08	- 1 16	-13 21	- 0 47	-17 57	+ 0 03	-12 56	+ 9 38
25	10 02 46	9 15 05	7 21 00	+13 35	+ 1 09	- 0 13	- 1 12	+19 23	+ 0 23	- 8 51	- 2 06	+22 08	- 1 16	-13 24	- 0 47	-17 58	+ 0 03	-12 57	+ 9 37
28	10 02 38	9 15 01	7 21 00	+12 56	+ 1 09	- 2 04	- 1 40	+19 14	+ 0 23	-10 14	- 2 26	+22 08	- 1 16	-13 26	- 0 47	-17 59	+ 0 03	-12 59	+ 9 36
31	10 02 31	9 14 56	7 21 00	+12 15	+ 1 09	- 3 48	- 2 09	+19 05	+ 0 24	-11 34	- 2 47	+22 08	- 1 16	-13 28	- 0 47	-18 00	+ 0 03	-13 00	+ 9 34
सितं. 1	10 02 29	9 14 55	7 21 01	+12 02	+ 1 09	- 4 20	- 2 18	+19 02	+ 0 24	-12 01	- 2 54	+22 08	- 1 17	-13 29	- 0 47	-18 01	+ 0 03	-13 00	+ 9 34
4	10 02 22	9 14 51	7 21 01	+11 20	+ 1 09	- 5 50	- 2 45	+18 54	+ 0 24	-13 18	- 3 15	+22 09	- 1 17	-13 32	- 0 47	-18 02	+ 0 03	-13 02	+ 9 33
7	10 02 15	9 14 47	7 21 02	+10 38	+ 1 08	- 7 07	- 3 11	+18 45	+ 0 24	-14 33	- 3 37	+22 09	- 1 17	-13 34	- 0 47	-18 03	+ 0 03	-13 03	+ 9 32
10	10 02 09	9 14 43	7 21 04	+ 9 56	+ 1 08	- 8 07	- 3 33	+18 36	+ 0 25	-15 44	- 3 58	+22 09	- 1 17	-13 36	- 0 47	-18 04	+ 0 03	-13 04	+ 9 30
13	10 02 02	9 14 40	7 21 05	+ 9 13	+ 1 08	- 8 46	- 3 51	+18 27	+ 0 25	-16 53	- 4 20	+22 08	- 1 17	-13 38	- 0 47	-18 05	+ 0 03	-13 06	+ 9 29
16	10 01 56	9 14 37	7 21 07	+ 8 29	+ 1 08	- 8 59	- 4 02	+18 19	+ 0 26	-17 57	- 4 42	+22 08	- 1 17	-13 40	- 0 46	-18 06	+ 0 03	-13 07	+ 9 28
19	10 01 50	9 14 34	7 21 09	+ 7 46	+ 1 08	- 8 38	- 4 02	+18 10	+ 0 26	-18 58	- 5 04	+22 08	- 1 18	-13 42	- 0 46	-18 06	+ 0 03	-13 09	+ 9 27
22	10 01 44	9 14 31	7 21 12	+ 7 01	+ 1 07	- 7 39	- 3 48	+18 02	+ 0 26	-19 53	- 5 25	+22 08	- 1 18	-13 44	- 0 46	-18 07	+ 0 03	-13 10	+ 9 25
25	10 01 39	9 14 28	7 21 14	+ 6 16	+ 1 07	- 6 03	- 3 18	+17 53	+ 0 27	-20 44	- 5 45	+22 08	- 1 18	-13 46	- 0 46	-18 08	+ 0 03	-13 12	+ 9 24
28	10 01 34	9 14 26	7 21 17	+ 5 31	+ 1 07	- 4 00	- 2 31	+17 45	+ 0 27	-21 29	- 6 05	+22 08	- 1 18	-13 48	- 0 46	-18 08	+ 0 03	-13 13	+ 9 23

यूरेनस, नेपच्यून, वेंकटेश (प्लूटो) के निरयण भोगांश और भौमादि ग्रहों के क्रान्ति–शर (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.)

तारीख सन 2002 ई.		यूरेनस	नेपच्यून	वेंकटेश	मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		यूरेनस		नेपच्यून		वेंकटेश(प्लूटो)	
		रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर
					अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
अक्तू.	1	10 01 29	9 14 24	7 21 21	+ 4 46	+ 1 06	- 1 52	- 1 33	+17 37	+ 0 28	-22 08	- 6 23	+22 08	- 1 18	-13 49	- 0 46	-18 09	+ 0 03	-13 15	+ 9 22
	4	10 01 24	9 14 22	7 21 24	+ 4 01	+ 1 06	- 0 05	- 0 32	+17 29	+ 0 28	-22 40	- 6 40	+22 08	- 1 18	-13 51	- 0 46	-18 10	+ 0 03	-13 16	+ 9 21
	7	10 01 20	9 14 21	7 21 28	+ 3 15	+ 1 06	+ 1 03	+ 0 23	+17 22	+ 0 29	-23 05	- 6 54	+22 08	- 1 19	-13 52	- 0 46	-18 10	+ 0 03	-13 18	+ 9 20
	10	10 01 16	9 14 20	7 21 32	+ 2 29	+ 1 05	+ 1 22	+ 1 07	+17 14	+ 0 29	-23 20	- 7 05	+22 07	- 1 19	-13 53	- 0 46	-18 10	+ 0 03	-13 19	+ 9 19
	13	10 01 13	9 14 19	7 21 36	+ 1 43	+ 1 05	+ 0 56	+ 1 37	+17 07	+ 0 30	-23 25	- 7 12	+22 07	- 1 19	-13 54	- 0 46	-18 11	+ 0 03	-13 21	+ 9 18
	16	10 01 10	9 14 18	7 21 41	+ 0 57	+ 1 04	- 0 09	+ 1 55	+17 00	+ 0 30	-23 19	- 7 14	+22 07	- 1 19	-13 55	- 0 46	-18 11	+ 0 03	-13 22	+ 9 16
	19	10 01 07	9 14 18	7 21 46	+ 0 11	+ 1 04	- 1 40	+ 2 02	+16 54	+ 0 31	-23 01	- 7 11	+22 07	- 1 19	-13 56	- 0 46	-18 11	+ 0 03	-13 24	+ 9 16
	22	10 01 05	9 14 18	7 21 51	- 0 35	+ 1 03	- 3 29	+ 2 00	+16 47	+ 0 31	-22 30	- 7 01	+22 07	- 1 19	-13 56	- 0 46	-18 11	+ 0 03	-13 25	+ 9 15
	25	10 01 03	9 14 18	7 21 56	- 1 22	+ 1 03	- 5 28	+ 1 52	+16 42	+ 0 32	-21 47	- 6 44	+22 07	- 1 19	-13 57	- 0 45	-18 11	+ 0 03	-13 27	+ 9 14
	28	10 01 02	9 14 19	7 22 01	- 2 08	+ 1 02	- 7 31	+ 1 40	+16 36	+ 0 33	-20 52	- 6 19	+22 06	- 1 20	-13 57	- 0 45	-18 11	+ 0 03	-13 28	+ 9 13
	31	10 01 01	9 14 20	7 22 07	- 2 53	+ 1 02	- 9 34	+ 1 24	+16 31	+ 0 33	-19 46	- 5 48	+22 06	- 1 20	-13 57	- 0 45	-18 11	+ 0 03	-13 29	+ 9 12
नवं.	1	10 01 01	9 14 20	7 22 09	- 3 09	+ 1 01	-10 15	+ 1 18	+16 29	+ 0 33	-19 23	- 5 36	+22 06	- 1 20	-13 58	- 0 45	-18 10	+ 0 03	-13 30	+ 9 12
	4	10 01 00	9 14 21	7 22 14	- 3 54	+ 1 01	-12 15	+ 1 00	+16 24	+ 0 34	-18 09	- 4 57	+22 06	- 1 20	-13 57	- 0 45	-18 10	+ 0 02	-13 31	+ 9 11
	7	10 01 01	9 14 23	7 22 20	- 4 40	+ 1 00	-14 09	+ 0 40	+16 20	+ 0 35	-16 54	- 4 14	+22 06	- 1 20	-13 57	- 0 45	-18 10	+ 0 02	-13 33	+ 9 10
	10	10 01 01	9 14 25	7 22 27	- 5 25	+ 0 59	-15 58	+ 0 20	+16 16	+ 0 35	-15 40	- 3 28	+22 06	- 1 20	-13 57	- 0 45	-18 09	+ 0 02	-13 34	+ 9 09
	13	10 01 02	9 14 27	7 22 33	- 6 09	+ 0 59	-17 40	- 0 00	+16 13	+ 0 36	-14 32	- 2 41	+22 06	- 1 20	-13 56	- 0 45	-18 09	+ 0 02	-13 35	+ 9 09
	16	10 01 04	9 14 29	7 22 39	- 6 54	+ 0 58	-19 13	- 0 20	+16 10	+ 0 36	-13 31	- 1 56	+22 05	- 1 20	-13 56	- 0 45	-18 08	+ 0 02	-13 37	+ 9 08
	19	10 01 06	9 14 32	7 22 46	- 7 38	+ 0 57	-20 38	- 0 40	+16 08	+ 0 37	-12 40	- 1 12	+22 05	- 1 20	-13 55	- 0 45	-18 07	+ 0 02	-13 38	+ 9 07
	22	10 01 09	9 14 35	7 22 52	- 8 21	+ 0 56	-21 54	- 0 58	+16 06	+ 0 38	-12 00	- 0 31	+22 05	- 1 20	-13 54	- 0 44	-18 07	+ 0 02	-13 39	+ 9 07
	25	10 01 11	9 14 39	7 22 59	- 9 04	+ 0 55	-23 00	- 1 16	+16 05	+ 0 38	-11 30	+ 0 06	+22 05	- 1 20	-13 53	- 0 44	-18 06	+ 0 02	-13 40	+ 9 06
	28	10 01 15	9 14 42	7 23 06	- 9 47	+ 0 54	-23 55	- 1 32	+16 04	+ 0 39	-11 10	+ 0 40	+22 05	- 1 20	-13 52	- 0 44	-18 05	+ 0 02	-13 41	+ 9 06
दिसं.	1	10 01 19	9 14 46	7 23 13	-10 29	+ 0 53	-24 39	- 1 46	+16 04	+ 0 40	-11 01	+ 1 11	+22 05	- 1 20	-13 50	- 0 44	-18 04	+ 0 02	-13 42	+ 9 05
	4	10 01 23	9 14 50	7 23 19	-11 10	+ 0 52	-25 12	- 1 58	+16 04	+ 0 40	-11 00	+ 1 38	+22 04	- 1 19	-13 49	- 0 44	-18 03	+ 0 02	-13 43	+ 9 05
	7	10 01 28	9 14 55	7 23 26	-11 51	+ 0 51	-25 32	- 2 08	+16 05	+ 0 41	-11 07	+ 2 02	+22 04	- 1 19	-13 47	- 0 44	-18 02	+ 0 02	-13 44	+ 9 05
	10	10 01 33	9 14 59	7 23 33	-12 31	+ 0 50	-25 40	- 2 14	+16 06	+ 0 42	-11 21	+ 2 22	+22 04	- 1 19	-13 45	- 0 44	-18 01	+ 0 02	-13 45	+ 9 04
	13	10 01 38	9 15 04	7 23 40	-13 10	+ 0 49	-25 34	- 2 17	+16 08	+ 0 42	-11 41	+ 2 40	+22 04	- 1 19	-13 43	- 0 44	-17 59	+ 0 02	-13 46	+ 9 04
	16	10 01 44	9 15 09	7 23 47	-13 48	+ 0 48	-25 15	- 2 16	+16 11	+ 0 43	-12 06	+ 2 55	+22 04	- 1 19	-13 41	- 0 44	-17 58	+ 0 02	-13 47	+ 9 04
	19	10 01 50	9 15 15	7 23 54	-14 26	+ 0 47	-24 43	- 2 09	+16 14	+ 0 44	-12 35	+ 3 07	+22 03	- 1 18	-13 39	- 0 44	-17 57	+ 0 02	-13 48	+ 9 04
	22	10 01 57	9 15 20	7 24 00	-15 02	+ 0 45	-23 59	- 1 56	+16 17	+ 0 45	-13 08	+ 3 17	+22 03	- 1 18	-13 37	- 0 43	-17 55	+ 0 02	-13 48	+ 9 04
	25	10 02 04	9 15 26	7 24 07	-15 38	+ 0 44	-23 05	- 1 36	+16 21	+ 0 45	-13 44	+ 3 24	+22 03	- 1 18	-13 34	- 0 43	-17 54	+ 0 02	-13 49	+ 9 03
	28	10 02 11	9 15 32	7 24 14	-16 13	+ 0 43	-22 04	- 1 06	+16 26	+ 0 46	-14 21	+ 3 30	+22 03	- 1 17	-13 31	- 0 43	-17 52	+ 0 02	-13 50	+ 9 03
	31	10 02 19	9 15 38	7 24 20	-16 47	+ 0 41	-21 02	- 0 26	+16 31	+ 0 47	-15 00	+ 3 33	+22 03	- 1 17	-13 29	- 0 43	-17 50	+ 0 02	-13 51	+ 9 03

यूरेनस, नेपच्यून, वेंकटेश (प्लूटो) के निरयण भोगांश और भौमादि ग्रहों के क्रान्ति–शर (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.)

तारीख सन 2003 ई.	यूरेनस	नेपच्यून	वेंकटेश	मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		यूरेनस		नेपच्यून		वेंकटेश(प्लूटो)	
	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर
				अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
जन. 1	10 02 22	9 15 40	7 24 23	-16 58	+ 0 41	-20 42	- 0 10	+16 32	+ 0 47	-15 13	+ 3 34	+22 03	- 1 17	-13 28	- 0 43	-17 50	+ 0 02	-13 51	+ 9 03
4	10 02 30	9 15 46	7 24 29	-17 30	+ 0 39	-19 49	+ 0 42	+16 38	+ 0 47	-15 52	+ 3 35	+22 02	- 1 16	-13 25	- 0 43	-17 48	+ 0 02	-13 51	+ 9 04
7	10 02 38	9 15 52	7 24 35	-18 01	+ 0 38	-19 12	+ 1 40	+16 44	+ 0 48	-16 31	+ 3 35	+22 02	- 1 16	-13 22	- 0 43	-17 47	+ 0 02	-13 52	+ 9 04
10	10 02 47	9 15 59	7 24 42	-18 31	+ 0 36	-18 53	+ 2 33	+16 50	+ 0 49	-17 09	+ 3 33	+22 02	- 1 15	-13 19	- 0 43	-17 45	+ 0 02	-13 52	+ 9 04
13	10 02 56	9 16 05	7 24 48	-18 59	+ 0 35	-18 52	+ 3 11	+16 56	+ 0 49	-17 46	+ 3 30	+22 02	- 1 15	-13 16	- 0 43	-17 43	+ 0 02	-13 52	+ 9 04
16	10 03 05	9 16 12	7 24 53	-19 27	+ 0 33	-19 05	+ 3 27	+17 03	+ 0 50	-18 21	+ 3 25	+22 02	- 1 14	-13 13	- 0 43	-17 41	+ 0 02	-13 52	+ 9 04
19	10 03 14	9 16 18	7 24 59	-19 53	+ 0 31	-19 26	+ 3 21	+17 10	+ 0 50	-18 53	+ 3 20	+22 02	- 1 14	-13 10	- 0 43	-17 40	+ 0 02	-13 53	+ 9 05
22	10 03 23	9 16 25	7 25 05	-20 18	+ 0 29	-19 51	+ 3 02	+17 17	+ 0 51	-19 23	+ 3 13	+22 02	- 1 13	-13 06	- 0 43	-17 38	+ 0 02	-13 53	+ 9 05
25	10 03 33	9 16 32	7 25 10	-20 41	+ 0 27	-20 18	+ 2 34	+17 24	+ 0 51	-19 50	+ 3 06	+22 02	- 1 13	-13 03	- 0 43	-17 36	+ 0 02	-13 53	+ 9 05
28	10 03 43	9 16 39	7 25 15	-21 03	+ 0 25	-20 42	+ 2 02	+17 31	+ 0 52	-20 13	+ 2 57	+22 02	- 1 12	-13 00	- 0 43	-17 34	+ 0 01	-13 53	+ 9 06
31	10 03 53	9 16 46	7 25 20	-21 24	+ 0 23	-21 01	+ 1 30	+17 39	+ 0 52	-20 32	+ 2 48	+22 02	- 1 11	-12 56	- 0 43	-17 32	+ 0 01	-13 53	+ 9 06
फर. 1	10 03 56	9 16 48	7 25 22	-21 31	+ 0 22	-21 06	+ 1 19	+17 41	+ 0 52	-20 38	+ 2 45	+22 03	- 1 11	-12 55	- 0 43	-17 32	+ 0 01	-13 53	+ 9 06
4	10 04 06	9 16 55	7 25 26	-21 49	+ 0 20	-21 15	+ 0 48	+17 48	+ 0 52	-20 51	+ 2 35	+22 03	- 1 11	-12 51	- 0 43	-17 30	+ 0 01	-13 53	+ 9 07
7	10 04 17	9 17 02	7 25 31	-22 07	+ 0 18	-21 15	+ 0 18	+17 55	+ 0 53	-21 01	+ 2 24	+22 03	- 1 10	-12 48	- 0 43	-17 28	+ 0 01	-13 53	+ 9 07
10	10 04 27	9 17 08	7 25 35	-22 22	+ 0 16	-21 05	- 0 09	+18 02	+ 0 53	-21 05	+ 2 13	+22 03	- 1 09	-12 44	- 0 43	-17 26	+ 0 01	-13 52	+ 9 08
13	10 04 37	9 17 15	7 25 39	-22 37	+ 0 13	-20 44	- 0 35	+18 09	+ 0 53	-21 04	+ 2 02	+22 04	- 1 09	-12 41	- 0 43	-17 25	+ 0 01	-13 52	+ 9 08
16	10 04 48	9 17 22	7 25 42	-22 49	+ 0 11	-20 12	- 0 57	+18 15	+ 0 53	-20 59	+ 1 50	+22 04	- 1 08	-12 37	- 0 43	-17 23	+ 0 01	-13 52	+ 9 09
19	10 04 58	9 17 28	7 25 45	-23 00	+ 0 08	-19 28	- 1 17	+18 21	+ 0 53	-20 48	+ 1 38	+22 05	- 1 07	-12 34	- 0 43	-17 21	+ 0 01	-13 51	+ 9 09
22	10 05 08	9 17 35	7 25 49	-23 10	+ 0 05	-18 33	- 1 34	+18 27	+ 0 54	-20 32	+ 1 26	+22 05	- 1 07	-12 30	0 43	-17 19	+ 0 01	-13 51	+ 9 10
25	10 05 19	9 17 41	7 25 51	-23 18	+ 0 03	-17 27	- 1 48	+18 33	+ 0 54	-20 11	+ 1 14	+22 06	- 1 06	-12 26	- 0 43	-17 18	+ 0 01	-13 51	+ 9 10
28	10 05 29	9 17 47	7 25 54	-23 24	- 0 00	-16 09	- 1 59	+18 38	+ 0 54	-19 44	+ 1 02	+22 07	- 1 05	-12 23	- 0 43	-17 16	+ 0 01	-13 50	+ 9 11
मार्च 1	10 05 32	9 17 50	7 25 54	-23 26	- 0 01	-15 40	- 2 02	+18 40	+ 0 54	-19 35	+ 0 58	+22 07	- 1 05	-12 22	- 0 43	-17 15	+ 0 01	-13 50	+ 9 11
4	10 05 43	9 17 56	7 25 56	-23 31	- 0 04	-14 07	- 2 08	+18 44	+ 0 54	-19 02	+ 0 46	+22 08	- 1 05	-12 18	- 0 43	-17 14	+ 0 01	-13 50	+ 9 12
7	10 05 53	9 18 02	7 25 58	-23 33	- 0 07	-12 22	- 2 11	+18 49	+ 0 54	-18 24	+ 0 34	+22 09	- 1 04	-12 14	- 0 43	-17 12	+ 0 01	-13 49	+ 9 13
10	10 06 03	9 18 07	7 26 00	-23 35	- 0 11	-10 25	- 2 09	+18 53	+ 0 54	-17 41	+ 0 22	+22 10	- 1 03	-12 11	- 0 43	-17 10	+ 0 01	-13 49	+ 9 13
13	10 06 13	9 18 13	7 26 01	-23 34	- 0 14	- 8 17	- 2 04	+18 56	+ 0 54	-16 54	+ 0 11	+22 11	- 1 03	-12 08	- 0 43	-17 09	+ 0 01	-13 48	+ 9 14
16	10 06 22	9 18 19	7 26 02	-23 33	- 0 18	- 5 58	- 1 54	+18 59	+ 0 54	-16 03	+ 0 00	+22 12	- 1 02	-12 04	- 0 43	-17 07	+ 0 01	-13 47	+ 9 15
19	10 06 32	9 18 24	7 26 02	-23 29	- 0 21	- 3 29	- 1 40	+19 01	+ 0 53	-15 07	- 0 10	+22 13	- 1 02	-12 01	- 0 43	-17 06	+ 0 01	-13 47	+ 9 15
22	10 06 41	9 18 29	7 26 03	-23 24	- 0 25	- 0 51	- 1 20	+19 03	+ 0 53	-14 08	- 0 21	+22 14	- 1 01	-11 58	- 0 43	-17 05	+ 0 01	-13 46	+ 9 16
25	10 06 51	9 18 34	7 26 03	-23 18	- 0 29	+ 1 55	- 0 56	+19 05	+ 0 53	-13 05	- 0 30	+22 15	- 1 00	-11 54	- 0 43	-17 03	+ 0 01	-13 46	+ 9 16
28	10 07 00	9 18 38	7 26 02	-23 11	- 0 33	+ 4 45	- 0 28	+19 06	+ 0 53	-11 59	- 0 39	+22 16	- 1 00	-11 51	- 0 43	-17 02	+ 0 01	-13 45	+ 9 17
31	10 07 08	9 18 43	7 26 02	-23 02	- 0 37	+ 7 36	+ 0 04	+19 07	+ 0 53	-10 49	- 0 48	+22 17	- 0 59	-11 48	- 0 43	-17 01	+ 0 01	-13 44	+ 9 18

यूरेनस, नेपच्यून, वेंकटेश (प्लूटो) के निरयण भोगांश और भौमादि ग्रहों के क्रान्ति–शर (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. ठा.)

तारीख सन 2003 ई.	यूरेनस	नेपच्यून	वेंकटेश	मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		यूरेनस		नेपच्यून		वेंकटेश(प्लूटो)	
	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर
				अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
अप्रै. 1	10 07 11	9 18 44	7 26 01	-22 58	- 0 39	+ 8 32	+ 0 16	+19 07	+ 0 53	-10 26	- 0 51	+22 17	- 0 59	-11 47	- 0 43	-17 00	+ 0 01	-13 44	+ 9 18
4	10 07 20	9 18 48	7 26 00	-22 48	- 0 43	+11 14	+ 0 51	+19 07	+ 0 53	- 9 13	- 0 59	+22 19	- 0 58	-11 44	- 0 43	-16 59	+ 0 01	-13 43	+ 9 18
7	10 07 28	9 18 52	7 25 59	-22 36	- 0 48	+13 43	+ 1 25	+19 07	+ 0 52	- 7 57	- 1 06	+22 20	- 0 58	-11 41	- 0 43	-16 58	+ 0 01	-13 43	+ 9 19
10	10 07 35	9 18 56	7 25 57	-22 22	- 0 52	+15 52	+ 1 57	+19 06	+ 0 52	- 6 40	- 1 13	+22 21	- 0 57	-11 39	- 0 43	-16 57	+ 0 01	-13 42	+ 9 20
13	10 07 43	9 18 59	7 25 55	-22 08	- 0 57	+17 40	+ 2 23	+19 04	+ 0 52	- 5 21	- 1 18	+22 22	- 0 57	-11 36	- 0 44	-16 56	+ 0 01	-13 41	+ 9 20
16	10 07 50	9 19 02	7 25 53	-21 53	- 1 02	+19 02	+ 2 43	+19 03	+ 0 52	- 4 00	- 1 24	+22 23	- 0 56	-11 34	- 0 44	-16 55	+ 0 01	-13 41	+ 9 21
19	10 07 57	9 19 05	7 25 51	-21 36	- 1 07	+19 59	+ 2 54	+19 01	+ 0 52	- 2 38	- 1 28	+22 24	- 0 56	-11 31	- 0 44	-16 55	+ 0 01	-13 40	+ 9 21
22	10 08 04	9 19 07	7 25 48	-21 19	- 1 13	+20 29	+ 2 54	+18 58	+ 0 51	- 1 15	- 1 32	+22 26	- 0 55	-11 29	- 0 44	-16 54	+ 0 01	-13 39	+ 9 22
25	10 08 10	9 19 10	7 25 46	-21 00	- 1 18	+20 33	+ 2 44	+18 55	+ 0 51	+ 0 08	- 1 35	+22 27	- 0 55	-11 27	- 0 44	-16 53	+ 0 01	-13 39	+ 9 22
28	10 08 16	9 19 11	7 25 42	-20 41	- 1 24	+20 12	+ 2 22	+18 52	+ 0 51	+ 1 32	- 1 38	+22 28	- 0 54	-11 25	- 0 44	-16 53	+ 0 01	-13 38	+ 9 22

ग्रहों की क्रान्ति

ग्रहों की क्रान्ति दो प्रकार की है- (i) *मध्यम क्रान्तिः* (ग्रह के क्रान्तिवृत्तीय स्थान की क्रान्ति)। (ii) *स्पष्ट क्रान्ति* (ग्रह के बिम्ब की क्रान्ति)। जातकपद्धतिकारों ने अयनबल साधन के लिए ग्रहों की मध्यमक्रान्ति का ही प्रयोग किया है। अतः हमने भी यहां नीचे कोष्ठक में ग्रहों की मध्यमक्रान्ति ही दी है।

अभीष्ट ग्रह के भोगांशों (स्पष्ट राश्यादि) में उस दिन के अयनांश जोड़कर उसके सायन भोगांशों द्वारा इस निम्नांकित कोष्ठक से ग्रह की मध्यमक्रान्ति उठा लीजिए। कोष्ठक ५-५ अंशों के अन्तर पर बनाया गया है। बीच में अनुपात कीजिए। **जैसे-** १३ मार्च सन् २००१ ई को प्रातः ५ घं. ३० मि. पर बुध की मध्यमक्रान्ति ज्ञात करनी है। इस समय बुध के राश्यादि भोगांश १०/१/१३ हैं। इसमें इसदिन का अयनांश २३ अं. ५२ क. जोड़ने पर बुध के सायन राश्यादि भोगांश १०/२५/५ हुए। इस कोष्ठक से सायन राश्यादि भोगांश १०/२५/५ की मध्यम क्रान्ति १३ अं. १० क. (दक्षिण) मिली। यही बुध की इस समय की मध्यम क्रान्ति है। *सूर्य की मध्यम क्रान्ति और स्पष्ट क्रान्ति में कोई अन्तर नहीं होता।*

ग्रहों की मध्यम क्रान्ति

सायन भोगांश		क्रान्ति		सायन भोगांश		क्रान्ति		सायन भोगांश		क्रान्ति		सायन भोगांश		क्रान्ति		सायन भोगांश		क्रान्ति		सायन भोगांश		क्रान्ति	
रा.	अं.	अं.	क.	रा.	अं.	अं.	क.	रा.	अं.	अं.	क.	रा.	अं.	अं.	क.	रा.	अं.	अं.	क.	रा.	अं.	अं.	क.
०	००	००	००	२	००	उ.२०	१०	४	००	उ.२०	१०	६	००	००	००	८	००	द.२०	१०	१०	००	द.२०	१०
०	०५	उ.०१	५९	२	०५	२१	०९	४	०५	१९	०२	६	०५	द.०१	५९	८	०५	२१	०९	१०	०५	१९	०२
०	१०	०३	५८	२	१०	२१	५८	४	१०	१७	४५	६	१०	०३	५८	८	१०	२१	५८	१०	१०	१७	४५
०	१५	०५	५५	२	१५	२२	३७	४	१५	१६	२१	६	१५	०५	५५	८	१५	२२	३७	१०	१५	१६	२१
०	२०	०७	४९	२	२०	२३	०५	४	२०	१४	४९	६	२०	०७	४९	८	२०	२३	०५	१०	२०	१४	४९
०	२५	०९	४१	२	२५	२३	२२	४	२५	१३	१२	६	२५	०९	४१	८	२५	२३	२२	१०	२५	१३	१२
१	००	११	२९	३	००	२३	२६	५	००	११	२९	७	००	११	२९	९	००	२३	२६	११	००	११	२९
१	०५	१३	१२	३	०५	२३	२२	५	०५	०९	४१	७	०५	११	१२	९	०५	२३	२२	११	०५	०९	४१
१	१०	१४	४९	३	१०	२३	०५	५	१०	०७	४९	७	१०	१४	४९	९	१०	२३	०५	११	१०	०७	४१
१	१५	१६	२१	३	१५	२२	३७	५	१५	०५	५५	७	१५	१६	२१	९	१५	२२	३७	११	१५	०५	५५
१	२०	१७	४५	३	२०	२१	५८	५	२०	०३	५८	७	२०	१७	४५	९	२०	२१	५८	११	२०	०३	५८
१	२५	१९	०२	३	२५	२१	०९	५	२५	उ.०१	५९	७	२५	१९	०२	९	२५	२१	०९	११	२५	द.०१	५९
२	००	उ.२०	१०	४	००	उ.२०	१०	६	००	००	००	८	००	द.२०	१०	१०	००	द.२०	१०	००	००	००	००

साभिजित् नक्षत्र–गणनानुसार उ.षा., अभिजित् और श्रवण के चरण

प्रियव्रत शर्मा

अश्विनी आदि नक्षत्रों की संख्या सामान्यतः 27 मानी गई है। लेकिन कुछ स्थलों पर (पञ्च–सप्त–शलाकावेध, वृषवास्तुचक्र, अवकहड़ाचक्र आदि में) 28 नक्षत्रों के प्रयोग का भी निर्देश है, वहां अभिजित् नाम का एक अतिरिक्त नक्षत्र इन अश्विनी आदि 27 नक्षत्रों में समाविष्ट किया गया है। यह अतिरिक्त नक्षत्र उ.षा. के अन्तिम (चतुर्थ) चरण और श्रवण के प्रारम्भिक (पहिले) 15 वें भाग को मिलाकर बनाया गया है । 27 नक्षत्र-गणना-पद्धति को "निरभिजित् नक्षत्र गणना " और 28 नक्षत्र-गणना-पद्धति को " साभिजित् नक्षत्र–गणना " पद्धति कहा जाता है। निरभिजित् गणना पद्धति में सभी (27) नक्षत्रों के भोगांश और चरणों के मान परस्पर समान (क्रमशः 13°–20′ और 3°–20′ के) हैं। साभजित् नक्षत्र- गणना पद्धति में भी उ.षा. और श्रवण को छोड़कर शेष सभी नक्षत्रों के भोगांश और चरण निरभिजित् नक्षत्र-गणना-पद्धति के समान ही हैं। साभजित् नक्षत्र-गणना-पद्धति में उ.षा. और श्रवण दोनों का मान अन्य नक्षत्रों के मान से छोटा होता है। यहां उ.षा. का मान केवल 10° और श्रवण का मान केवल 12°– 26′– 40″ है। इस गणना पद्धति में उ.षा. और श्रवण के इन्हीं भोगांशों के बराबर–बराबर चार–चार भाग ही, इन दोनों नक्षत्रों के अपने–अपने चरणों के मान हैं। **किञ्च**– उ.षा. के अन्तिम चतुर्थांश और श्रवण के पहिले 15 वें भाग के योग से उत्पन्न अभिजित् नक्षत्र का जो पूर्ण गोग बनता है, उसके समान चार भाग उसके चार चरण माने गए हैं।

निरभिजित् और साभिजित् नक्षत्र-गणनानुसार उ.षा., श्रवण के चरणों के प्रारम्भ बिन्दुओं के राश्यादि, जो भिन्न–भिन्न हैं ,नीचे कोष्ठक में दिए गए हैं। अभिजित् नक्षत्र के चरणों के प्रारम्भ बिन्दुओं के राश्यादि भी इसी कोष्ठक में निर्दिष्ट हैं।

निरभिजित्–साभिजित् नक्षत्र-गणनानुसार उ.षा., अभिजित्, श्रवण के चरणों का प्रारम्भ

	निरभिजित् नक्षत्र- गणनानुसार			साभिजित् नक्षत्र-गणनानुसार			
नक्षत्र चरण	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	वि.
उ.षा. 1	8	26	40	8	26	40	00
उ.षा. 2	9	00	00	8	29	10	00
उ.षा. 3	9	03	20	9	01	40	00
उ.षा. 4	9	06	40	9	04	10	00
अभिजित् 1	–	–	–	9	06	40	00
अभिजित् 2	–	–	–	9	07	43	20
अभिजित् 3	–	–	–	9	08	46	40
अभिजित् 4	–	–	–	9	09	50	00
श्रवण 1	9	10	00	9	10	53	20
श्रवण 2	9	13	20	9	14	00	00
श्रवण 3	9	16	40	9	17	06	40
श्रवण 4	9	20	00	9	20	13	20

जातक एवं मुहूर्त्तग्रन्थों में जहां निरभिजित् नक्षत्र-गणना के प्रयोग का निर्देश है, वहां निरभिजित् नक्षत्र- गणना वाले उ.षा., श्रवण के चरणों का और जहां साभिजित् नक्षत्र-गणना के प्रयोग का निर्देश है, वहां साभिजित् नक्षत्र-गणना वाले उ.षा., अभिजित् एवं श्रवण के चरणों का निर्धारण इस उपरोक्त कोष्ठकानुसार करना नितान्त आवश्यक है। **जैसे**– जातक के नाम के आदि अक्षर के निर्धारण के लिए अवकहड़ाचक्र का प्रयोग साभिजित् नक्षत्र-गणनानुसार करने का निर्देश है। अतः जातक के जन्म–कालिक चन्द्र के भोगांशों (स्पष्ट राश्यादि) के अनुसार जातक के जन्मनक्षत्रचरण का निर्धारण करते हुए, यह आवश्यक है कि उ.षा. और श्रवण के चरणों का निश्चय इस उपरोक्त कोष्ठक में निर्दिष्ट साभिजित्–नक्षत्र–गणनानुसार ही किया जाए और यहां अभिजित् नक्षत्र एवं उसके चरणों को भी ध्यान में रखना होगा। एतदनुसार उ.षा.;अभिजित् या श्रवण के जिस चरण में जातक का जन्म सिद्ध हो, उसी के अनुसार जातक के नाम का आदि अक्षर निश्चित करना होगा।

ध्यान रहे–अधिकतर (लगभग शतप्रतिशत) ज्योतिषी लोग जातक के नाम का आदि अक्षर निर्धारित करने के लिए जातक के नक्षत्र–चरण का निर्णय अन्य नक्षत्रों की भांति उ.षा. और श्रवण के प्रत्येक चरण का मान 3°–20′ ही मानकर कर लेते हैं और अभिजित् नक्षत्र को वे कोई मान्यता ही नहीं देते। यह सर्वथा गलत है। अवकहड़ाचक्र में साभिजित् नक्षत्र-गणना है। अतः यह आवश्यक है कि इस के अनुसार जातक के नाम का आदि अक्षर निश्चित करने के लिए उ.षा. के अन्तिम चतुर्थांश और श्रवण के पहिले पन्द्रहवें भाग को जोड़कर, उसे अभिजित् नक्षत्र माना जाए और शेष बचे उ.षा. और श्रवण को पूर्ण नक्षत्र मानते हुए, उन के समान चार–चार भाग करके, उन्हें उन के वास्तविक चरण मानकर, उन के अनुसार अवकहडाचक्र द्वारा जातक के नाम का आदि अक्षर निर्धारित किया जाए। यहां जातक का जन्म यदि उ.षा., श्रवण के मध्य स्थित अभिजित् वाले भाग में पड़े तो अभिजित् के भी समान चार भाग (चरण) बनाए जाएं और अभिजित् के जिस चरण में जातक का जन्म हुआ हो, अवकहड़ाचक्र में निर्दिष्ट उस चरण के अक्षरानुसार जातक के नाम का आदि अक्षर निश्चित किया जाए।

जातक यदि उ.षा. या श्रवण नक्षत्र में पैदा हुआ हो तो दैवज्ञ को चाहिए कि वह जातक का जन्मकालिक चन्द्र स्पष्ट करे और तब उसके राश्यादि के अनुसार उपरोक्त कोष्ठक में दिए गए, उ.षा., अभिजित् और श्रवण के साभिजित्–नक्षत्र–गणनानुसारी राश्यादि द्वारा वह यह निर्णय करे कि जातक का जन्म उ.षा., अभिजित् या श्रवण के किस चरण में हुआ है।

फ्च–सप्तशलाका वेध आदि के निर्णय के लिए सूर्यादि ग्रहों की उ.षा., श्रवण नक्षत्रों तथा इनके चरणों में स्थिति का निर्णय भी साभिजित् नक्षत्र-गणनानुसार ही (ऊपर कोष्टकोक्त) राश्यादि के अनुसार ही करना होगा। यह बहुत ज़रूरी है। इन स्थलों पर उ.षा. और श्रवण के भोगांश 13°–20′ मानकर तदनुसार फ्च–सप्तशलाका वेध आदि का निर्णय बहुधा भ्रामक होगा –यह ध्यान रहे।

यहां ——पर वि. सं. 2059 के लिए साभिजित् नक्षत्र-गणनानुसार चन्द्रमा एवं सूर्यादि ग्रहों का उ.षा., अभिजित् एवं श्रवण नक्षत्र के चरणों में प्रवेशकाल (भा.स्टै.टा.) दिया गया है, ताकि साभिजित् नक्षत्रगणना-स्थलों पर, इन नक्षत्रों के चरणों का प्रारम्भिककाल ज्ञात करने में दैवज्ञों को कठिनाई न हो और वे साभिजित् नक्षत्रगणना वाले स्थलों पर उ.षा., अभिजित् और श्रवण में सूर्यादि ग्रहों की स्थिति का यथार्थ निर्णय कर सकें।

साभिजित् नक्षत्र–गणनानुसारी उ.षा., अभिजित् और श्रवण के चरणों में चन्द्रमा का प्रवेशकाल (भा. स्टैं. टा.), (सन् 2002–2003 ई.)

नक्षत्र चरण →	उ.षा. 1		उ.षा. 2		उ.षा. 3		उ.षा. 4		अभि.1		अभि. 2		अभि. 3		अभि. 4		श्रव. 1		श्रव. 2		श्रव. 3		श्रव. 4	
तारीख ↓	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
जन.13,14,15 (सन् 2002ई.)	13	53	18	43	23	34	4	24	9	15	11	19	13	23	15	27	17	31	23	38	5	46	11	53
फर. 9,10,11	20	15	1	09	6	03	10	57	15	50	17	55	20	00	22	05	0	09	6	19	12	29	18	39
मार्च 9,10,11	1	51	6	46	11	41	16	36	21	32	23	37	1	43	3	48	5	54	12	06	18	19	0	31
अप्रै. 5,6,7	8	14	13	06	17	58	22	50	3	41	5	46	7	51	9	56	12	01	18	12	0	23	6	34
मई 2,3,4	16	16	21	01	1	46	6	31	11	17	13	19	15	22	17	24	19	27	1	32	7	37	13	42
मई 30,31	1	29	6	08	10	48	15	27	20	07	22	07	0	07	2	07	4	07	10	06	16	04	22	03
जून 26,27,28	10	37	15	15	19	53	0	31	5	08	7	07	9	06	11	05	13	04	18	58	0	53	6	47
जुला. 23,24,25	18	33	23	13	3	53	8	33	13	12	15	11	17	10	19	09	21	09	3	04	8	59	14	54
अग. 20,21	0	56	05	39	10	23	15	06	19	50	21	51	23	52	1	53	3	53	9	52	15	51	21	50
सितं. 16,17,18	6	27	11	12	15	57	20	42	1	28	3	30	5	32	7	34	9	35	15	37	21	39	3	41
अक्तू. 13,14,15	12	37	17	19	22	01	2	43	7	25	9	26	11	27	13	28	15	29	21	29	3	29	9	29
नवं. 9,10,11	20	42	1	16	5	50	10	24	14	59	16	57	18	55	20	53	22	51	4	44	10	37	16	30
दिसं. 7,8,9	6	36	11	03	15	30	19	57	0	24	2	19	4	14	6	09	8	04	13	48	19	32	1	16
जन. 3,4,5 (सन् 2003 ई.)	16	46	21	11	1	36	6	01	10	26	12	20	14	14	16	08	18	01	23	40	5	19	10	58
जन. 31/फर.1	1	19	5	48	10	17	14	46	19	15	21	09	23	04	0	58	2	53	8	34	14	15	19	56
फर. 27,28/– मार्च 1,	7	40	12	14	16	48	21	22	1	57	3	54	5	51	7	48	9	44	15	31	21	18	3	05
मार्च 26,27,28	13	03	17	38	22	13	2	48	7	23	9	21	11	19	13	17	15	14	21	04	2	54	8	44

साभिजित् नक्षत्र–गणनानुसारी उ.षा., अभिजित् और श्रवण के चरणों में सूर्य, बुध, शुक्र का प्रवेशकाल (भा. स्टैं. टा.) सं. 2059 वि. (सन् 2002–2003 ई.)

सूर्य

नक्षत्र चरण	तारीख (2003 ई.)	प्रवेशकाल घं.	मि.
उ.षा. 1	11 जन.	10	55
उ.षा. 2	13 जन.	21	49
उ.षा. 3	16 जन.	8	43
उ.षा. 4	18 जन.	19	40
अभि. 1	21 जन.	6	38
अभि. 2	22 जन.	7	32
अभि. 3	23 जन.	8	27
अभि. 4	24 जन.	9	21
श्रव. 1	25 जन.	10	16
श्रव. 2	28 जन	11	43
श्रव. 3	31 जन.	13	11
श्रव. 4	3 फर.	14	44

बुध (सन् 2002–2003 ई.)

नक्षत्र चरण	तारीख	प्रवेशकाल घं.	मि.
उ.षा. 1	23 दिसं.	9	23
उ. षा. 2	25 दिसं.	12	33
उ. षा. 3	28 दिसं.	0	33
उ. षा. 4	31 दिसं.	22	15
व. उ.षा. 3	4 जन.'03	23	35
व. उ.षा. 2	8 जन.	11	06
व. उ.षा. 1	10 जन.	11	45
उ. षा. 1	5 फर.	8	22
उ. षा. 2	7 फर.	14	49
उ. षा. 3	9 फर.	17	48
उ. षा. 4	11 फर.	18	15
अभि. 1	13 फर.	16	46

बुध (सन्–2003 ई.)

नक्षत्र चरण	तारीख (2003 ई.)	प्रवेशकाल घं.	मि.
अभि. 2	14 फर.	11	57
अभि. 3	15 फर.	6	53
अभि. 4	16 फर.	1	31
श्रव. 1	16 फर.	19	58
श्रव. 2	19 फर.	1	13
श्रव. 3	21 फर.	4	57
श्रव. 4	23 फर.	7	19

शुक्र (2003 ई.)

नक्षत्र चरण	तारीख	प्रवेशकाल घं.	मि.
उ.षा. 1	22 फर.	16	53
उ.षा. 2	24 फर.	20	16
उ.षा. 3	26 फर.	23	31
उ.षा. 4	1 मार्च	2	40
अभि. 1	3 मार्च	5	39
अभि. 2	4 मार्च	3	09
अभि. 3	5 मार्च	0	37
अभि. 4	5 मार्च	22	07
श्रव. 1	6 मार्च	19	33
श्रव. 2	9 मार्च	10	42
श्रव. 3	12 मार्च	1	40
श्रव. 4	14 मार्च	16	32

व. = वक्रगति से चरण में प्रवेश

इसवर्ष मंगल, गुरु और शनि–तीनों ग्रहों ने उ.षा. और श्रवण नक्षत्रों में संचार नहीं किया है।

ग्रहों के निरयण राशि–नक्षत्र चरण–चार (संवत् 2059 वि.)

सूर्य–चार (सन् 2002–03 ई.)

तारीख 2002 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
अप्रैल 14	मेष	अश्विनी	1	5 49
17			2	15 32
21			3	1 24
24			4	11 26
27		भरणी	1	21 40
मई 1			2	8 01
4			3	18 30
8			4	5 06
11		कृत्तिका	1	15 50
15	वृष		2	2 40
18			3	13 39
22			4	0 46
25		रोहिणी	1	12 01
28			2	23 23
जून 1			3	10 49
4			4	22 20
8		मृग	1	9 54
11			2	21 32
15	मिथुन		3	9 14
18			4	21 00
22		आर्द्रा	1	8 50
25			2	20 43
29			3	8 38
जुलाई 2			4	20 33
6		पुनर्वसु	1	8 27
9			2	20 19
13			3	8 11
16	कर्क		4	20 01
20		पुष्य	1	7 53
23			2	19 42
27			3	7 29
30			4	19 11

तारीख 2002 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
अगस्त 3	कर्क	आश्ले.	1	6 49
6			2	18 20
10			3	5 46
13			4	17 06
17	सिंह	मघा	1	4 23
20			2	15 33
24			3	2 38
27			4	13 36
31		पू. फा.	1	0 25
सितंबर 3			2	11 04
6			3	21 35
10			4	7 57
13		उ. फा.	1	18 11
17	कन्या		2	4 17
20			3	14 16
24			4	0 06
27		हस्त	1	9 45
30			2	19 15
अक्तूबर 4			3	4 34
7			4	13 42
10		चित्रा	1	22 41
14			2	07 32
17	तुला		3	16 15
21			4	0 50
24		स्वाती	1	9 16
27			2	17 32
31			3	1 38
नवंबर 3			4	9 35
6		विशाखा	1	17 23
10			2	1 03
13			3	8 37
16	वृश्चिक		4	16 05

तारीख 2002 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
नवंबर 19	वृश्चिक	अनुराधा	1	23 27
23			2	6 42
26			3	13 50
29			4	20 51
दिसंबर 3		ज्येष्ठा	1	3 46
6			2	10 35
9			3	17 21
13			4	0 03
16	धनु	मूल	1	6 44
19			2	13 22
22			3	19 58
26			4	2 31
29		पू. षा.	1	9 01

सन् 2003 ई.

तारीख	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि.
जनवरी 1	धनु	पू. षा.	2	15 29
4			3	21 56
8			4	4 25
11		उ. षा.	1	10 55
14	मकर		2	17 27
18			3	0 01
21			4	6 38
24		श्रवण	1	13 17
27			2	19 58
31			3	2 41
फरवरी 3			4	9 29
6		धनिष्ठा	1	16 21
9			2	23 19
13	कुम्भ		3	6 24
16			4	13 36
19		शत.	1	20 55
23			2	4 19
26			3	11 50

तारीख 2003 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
मार्च 1	कुम्भ	शत.	4	19 26
5		पू. भा.	1	3 10
8			2	11 03
11			3	19 05
15	मीन		4	3 16
18		उ. भा.	1	11 38
21			2	20 09
25			3	4 47
28			4	13 33
31		रेवती	1	22 28

मंगल–चार (सन् 2002 ई.)

तारीख	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि.
अप्रैल 14	वृष	कृत्तिका	4	18 29
19		रोहिणी	1	15 56
24			2	13 55
29			3	12 26
मई 4			4	11 28
9		मृग.	1	10 56
14			2	10 50
19	मिथुन		3	11 11
24			4	12 03
29		आर्द्रा	1	13 21
जून 3			2	15 06
8			3	17 10
13			4	19 40
18		पुनर्वसु	1	22 28
24			2	1 44
29			3	5 16
जुलाई 4	कर्क		4	9 06
9		पुष्य	1	13 14
14			2	17 36

ग्रहों के निरयण राशि–नक्षत्र चरण–चार (संवत् 2059 वि.)

मंगल–चार (सन् 2002–03 ई.)

तारीख 2002 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
जुलाई 19	कर्क	पुष्य	3	22 13
25			4	3 06
30		आश्ले.	1	8 07
अगस्त 4			2	13 20
9			3	18 40
15			4	0 07
20	सिंह	मघा	1	5 43
25			2	11 22
30			3	17 05
सितंबर 4			4	22 49
10		पू. फा.	1	4 36
15			2	10 21
20			3	16 07
25			4	21 53
अक्तूबर 1		उ. फा.	1	3 34
6	कन्या		2	9 09
11			3	14 41
16			4	20 09
22		हस्त	1	1 32
27			2	6 52
नवंबर 1			3	12 00
6			4	17 04
11		चित्रा	1	22 01
17			2	2 54
22	तुला		3	7 39
27			4	12 20
दिसंबर 2		स्वाती	1	16 52
7			2	21 17
13			3	1 39
18			4	6 00
23		विशाखा	1	10 14
28			2	14 23

तारीख 2003 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
जनवरी 2	तुला	विशाखा	3	18 30
7	वृश्चिक		4	22 35
13		अनुराधा	1	2 41
18			2	6 48
23			3	10 55
28			4	15 04
फरवरी 2		ज्येष्ठा	1	19 15
7			2	23 37
13			3	4 06
18			4	8 47
23	धनु	मूल	1	13 36
28			2	18 39
मार्च 6			3	0 02
11			4	5 50
16		पू. षा.	1	12 02
21			2	18 42
27			3	1 54
अप्रैल 1			4	9 51

बुध–चार सन् 2002 ई.

तारीख	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि.
अप्रैल 13	मेष	अश्विनी	3	22 01
15			4	12 32
17		भरणी	1	3 36
18			2	19 34
20			3	12 48
22			4	7 45
24		कृत्तिका	1	5 08
26	वृष		2	5 50
28			3	11 18
30			4	23 28
मई 3		रोहिणी	1	22 50

बुध–चार (सन् 2002 ई.)

तारीख 2002 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
मई 7	वृष	रोहिणी	2	21 31
16	वक्री			0 20
25			1	0 28
31		कृत्तिका	4	1 37
जून 8	मार्गी			20 42
17		रोहिणी	1	2 00
21			2	11 00
24			3	17 42
27			4	12 05
29		मृग.	1	22 42
जुलाई 2			2	4 03
4	मिथुन		3	5 20
6			4	3 27
7		आर्द्रा	1	23 09
9			2	16 58
11			3	9 18
13			4	0 28
14		पुनर्वसु	1	14 48
16			2	4 34
17			3	18 01
19	कर्क		4	7 22
20		पुष्य	1	20 49
22			2	10 31
24			3	0 37
25			4	15 19
27		आश्ले.	1	6 40
28			2	22 51
30			3	15 56
अगस्त 1			4	9 59
3	सिंह	मघा	1	5 07
5			2	1 28
6			3	23 05

तारीख 2002 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
अगस्त 8	सिंह	मघा	4	22 03
10		पू. फा.	1	22 30
13			2	0 34
15			3	4 24
17			4	10 18
19		उ. फा.	1	18 29
22	कन्या		2	5 19
24			3	19 37
27			4	14 14
30		हस्त	1	14 59
सितंबर 3			2	1 33
7			3	8 57
15	वक्री			1 08
21			2	22 44
25			1	12 00
28		उ.फा.	4	12 47
अक्तूबर 1			3	22 08
7	मार्गी			0 56
12			4	4 29
15		हस्त	1	10 22
17			2	23 43
20			3	6 35
22			4	10 00
24		चित्रा	1	11 36
26			2	12 13
28	तुला		3	12 21
30			4	12 17
नवंबर 1		स्वाती	1	12 16
3			2	12 27
5			3	12 53
7			4	13 38
9		विशाखा	1	14 46

ग्रहों के निरयण राशि–नक्षत्र चरण–चार (संवत् 2059 वि.)

बुध–चार

तारीख 2002 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
नवंबर 11	तुला	विशाखा	2	16 15
13			3	18 05
15	वृश्चिक		4	20 16
17		अनुराधा	1	22 46
20			2	1 32
22			3	4 34
24			4	7 47
26		ज्येष्ठा	1	11 13
28			2	14 47
30			3	18 29
दिसंबर 2			4	22 18
5	धनु	मूल	1	2 14
7			2	6 19
9			3	10 40
11			4	15 22
13		पू.षा.	1	20 35
16			2	2 38
18			3	10 03
20			4	19 46
23		उ.षा.	1	9 22
26	मकर		2	6 56
30			3	5 11
सन् 2003 ई.				
जनवरी 2	वक्री			23 49
6	मकर	उ.षा.	2	12 32
9	धनु		1	22 44
12		पू.षा.	4	12 44
15			3	3 27
18			2	15 31
23	मार्गी			6 38
28			3	10 48
फरवरी 1			4	22 27
फरवरी 5	धनु	उ.षा.	1	8 23
8	मकर		2	8 13
11			3	2 22
13			4	16 46
16		श्रवण	1	4 29
18			2	13 57
20			3	21 37
23			4	3 46
25		धनिष्ठा	1	8 30
27			2	11 57
मार्च 1	कुम्भ		3	14 15
3			4	15 27
5		शत.	1	15 36
7			2	14 46
9			3	12 57
11			4	10 12
13		पू.भा.	1	6 34
15			2	2 03
16			3	20 45
18	मीन		4	14 42
20		उ.भा.	1	7 58
22			2	0 35
23			3	16 41
25			4	8 24
26		रेवती	1	23 49
28			2	15 08
30			3	6 32
31			4	22 20

गुरु–चार सन् 2002 ई.

तारीख	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि.
अप्रैल 28	मिथुन	आर्द्रा	4	19 55
मई 18		पुनर्वसु	1	09

गुरु–चार

तारीख 2002 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
जून 4	मिथुन	पुनर्वसु	2	9 58
20			3	6 48
जुलाई 5	कर्क		4	12 26
20		पुष्य	1	11 23
अगस्त 4			2	11 07
19			3	18 32
सितंबर 4			4	19 21
22		आश्ले.	1	5 21
अक्तूबर 12			2	12 21
नवंबर 11			3	7 27
दिसंबर 4	वक्री			17 53
27			2	23 41
सन् 2003 ई.				
जनवरी 27	कर्क	आश्ले.	1	15 22
फरवरी 22		पुष्य	4	15 23

शुक्र–चार सन् 2002 ई.

तारीख 2002 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
अप्रैल 15	मेष	भरणी	4	12 20
18		कृत्तिका	1	5 40
20	वृष		2	23 07
23			3	16 39
26			4	10 19
29		रोहिणी	1	4 04
मई 1			2	21 56
4			3	15 53
7			4	9 57
10		मृग.	1	4 08
12			2	22 25
15	मिथुन		3	16 50
18			4	11 21
21		आर्द्रा	1	6 00
मई 24	मिथुन	आर्द्रा	2	0 49
26			3	19 47
29			4	14 55
जून 1		पुनर्वसु	1	10 11
4			2	5 37
7			3	1 13
9	कर्क		4	21 00
12		पुष्य	1	16 57
15			2	13 06
18			3	9 30
21			4	6 06
24		आश्लेषा	1	2 59
27			2	0 08
29			3	21 32
जुलाई 2			4	19 16
5	सिंह	मघा	1	17 19
8			2	15 42
11			3	14 26
14			4	13 35
17		पू. फा.	1	13 11
20			2	13 16
23			3	13 54
26			4	15 10
29		उ. फा.	1	17 04
अगस्त 1	कन्या		2	19 42
4			3	23 07
8			4	3 25
11		हस्त	1	8 47
14			2	15 19
17			3	23 16
21			4	8 51
24		चित्रा	1	20 25

ग्रहों के निरयण राशि–नक्षत्र चरण–चार (संवत् 2059 वि.)

शुक्र–चार

तारीख 2002 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)	तारीख 2003 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
अगस्त 28	कन्या	चित्रा	2	10 22	जनवरी 30	धनु	मूल	1	8 01
सितंबर 1	तुला		3	3 13	फरवरी 2			2	7 45
4			4	23 49	5			3	6 56
9		स्वाती	1	1 17	8			4	5 35
13			2	9 43	11		पू. षा.	1	3 47
18			3	4 39	14			2	1 35
23			4	18 35	16			3	23 00
अक्तूबर 1		विशाखा	1	7 09	19			4	20 06
11	वक्री			0 05	22		उ. षा.	1	16 53
20		स्वाती	4	6 31	25	मकर		2	13 22
27			3	5 54	28			3	9 37
नवंबर 1			2	19 50	मार्च 3			4	5 40
7			1	15 33	6		श्रवण	1	1 30
16		चित्रा	4	14 24	8			2	21 11
21	मार्गी			12 43	11			3	16 41
26		स्वाती	1	13 24	14			4	12 03
दिसंबर 5			2	23 31	17		धनिष्ठा	1	7 17
11			3	20 13	20			2	2 25
16			4	17 04	22	कुम्भ		3	21 24
21		विशाखा	1	1 20	25			4	16 16
25			2	1 37	28		शत.	1	11 03
28			3	20 25	31			2	5 43

सन् 2003 ई.

तारीख	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि.
जनवरी 1	वृश्चिक	विशाखा	4	11 12
4		अनुराधा	1	22 52
8			2	8 10
11			3	15 26
14			4	21 06
18		ज्येष्ठा	1	1 22
21			2	4 27
24			3	6 29
27			4	7 38

शनि–चार (सन् 2002–03 ई.)

तारीख	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि.
मई 4	वृष	रोहिणी	4	11 15
31		मृग.	1	4 10
जून 25			2	22 36
जुलाई 23	मिथुन		3	7 57
अगस्त 26			4	17 51
अक्तूबर 11	वक्री			18 31
नवंबर 27			3	9 52
जन.'03, 8	वृष		2	13 52
फरवरी 22	मार्गी			13 11

राहु–चार (सन् 2002–03 ई.)

तारीख 2002–03 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
अप्रैल 20	वृष	मृग.	1	22 46
जून 22		रोहिणी	4	20 25
अगस्त 24			3	18 03
अक्तूबर 26			2	15 40
दिसंबर 28			1	13 17
मार्च 1		कृत्तिका	4	10 54

केतु–चार (सन् 2002–03 ई.)

तारीख	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि.
अप्रैल 20	वृश्चिक	ज्येष्ठा	3	22 46
जून 22			2	20 25
अगस्त 24			1	18 03
अक्तूबर 26		अनुराधा	4	15 40
दिसंबर 28			3	13 17
मार्च 1			2	10 54

यूरेनस–चार (सन् 2002–03 ई.)

तारीख	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि.
जून 3	वक्री			5 41
अगस्त 11	कुम्भ	धनि.	3	0 10
नवंबर 4	मार्गी			11 57
जनवरी 21			4	0 22
मार्च 21		शत.	1	15 18

नेपच्यून–चार (सन् 2002–03 ई.)

तारीख	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि.
मई 13	वक्री			17 41
जून 23	मकर	श्रवण	2	18 59
अक्तूबर 20	मार्गी			19 23
जनवरी 28			3	13 09

प्लूटो–चार (सन् 2002–03 ई.)

तारीख	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि.
अप्रैल 29	वृश्चिक	ज्येष्ठा	2	13 30
अगस्त 26	मार्गी			16 29
दिसंबर 4			3	7 36
मार्च 23	वक्री			10 41

ग्रहों के वक्र मार्ग (सन् 2002–03 ई.)

ग्रह	वक्री मार्गी	तारीख
मंगल वर्ष भर मार्गी ही रहेगा		
बुध	वक्री	15 मई
बुध	मार्गी	8 जून
बुध	वक्री	14 सितं.
बुध	मार्गी	6 अक्तू.
बुध	वक्री	2 जन.
बुध	मार्गी	22 जन.
गुरु	वक्री	4 दिसं.
शुक्र	वक्री	10 अक्तू.
शुक्र	मार्गी	21 नवं.
शनि	वक्री	11 अक्तू.
शनि	मार्गी	22 फर.
यूरे.	वक्री	2 जून
यूरे.	मार्गी	4 नवं.
नेप.	वक्री	13 मई
नेप.	मार्गी	20 अक्तू.
प्लू.	मार्गी	26 अग.
प्लू.	वक्री	23 मार्च

ग्रहों का उदय-अस्त (सन् 2002–03 ई.)

ग्रह	तारीख	उदय /अस्त
मंगल	16 जून	अस्त
मंगल	22 सितं.	उदय
बुध	16 अप्रै.	प. उ.
बुध	19 मई	प. अ.
बुध	10 जून	पू. उ.
बुध	11 जुला.	पू. अ.
बुध	4 अग.	प. उ.
बुध	13 सितं.	प. अ.
बुध	3 अक्तू.	पू. उ.
बुध	30 अक्तू.	पू. अ.
बुध	9 दिसं.	प. उ.
बुध	7 जन.	प. अ.
बुध	16 जन.	पू. उ.
बुध	26 फर.	पू. अ.
बुध	31 मार्च	प. उ.
गुरु	7 जुला.	अस्त
गुरु	31 जुला.	उदय
शुक्र	22 अक्तू.	अस्त
शुक्र	5 नवं.	उदय
शनि	23 मई	अस्त
शनि	29 जून	उदय

प. उ. = पश्चिम उदय।
प. अ. = पश्चिम अस्त।
पू. उ. = पूर्व उदय।
पू. अ. = पूर्व अस्त।

चण्डीगढ़ में चन्द्रोदयास्तकाल (सं.2059 वि.) (भा. स्टैं. टा.)

सन् 2002 ई.	चैत्र शु.	चन्द्रास्त घं.	मि.
अप्रै. 13	1	19	20
14	2	20	15
15	3	21	12
16	3	22	11
17	4	23	10
18	5	—	—
19	6	0	08
20	7	1	04
21	9	1	55
22	10	2	42
23	11	3	24
24	12	4	03
25	13	4	40
26	14	5	16
27	15	5	54

सन् 2002 ई.	वैशाख कृ.	चन्द्रोदय घं.	मि.
अप्रै. 28	2	20	27
29	3	21	35
30	4	22	40
मई 1	5	23	38
2	6	—	—
3	7	0	31
4	8	1	16
5	9	1	55
6	10	2	29
7	10	3	01
8	11	3	29
9	12	3	57
10	13	4	25
11	14	4	54
12	30	5	26

सन् 2002 ई.	वैशाख शु.	चन्द्रास्त घं.	मि
मई 13	1	20	04
14	2	21	04
15	3	22	03
16	4	23	00
17	5	23	53
18	6	—	—
19	7	0	40
20	8	1	23
21	9	2	02
22	10	2	38
23	12	3	13
24	13	3	48
25	14	4	26
26	15	5	07

सन् 2002 ई.	ज्येष्ठ कृ.	चन्द्रोदय घं.	मि.
मई 27	1	20	20
28	2	21	23
29	3	22	20
30	4	23	09
31	5	23	52
जून 1	6	—	—
2	7	0	29
3	8	1	01
4	9	1	31
5	10	1	59
6	11	2	27
7	12	2	55
8	13	3	26
9	14	3	59
10	30	4	37

सन् 2002 ई.	ज्येष्ठ शु.	चन्द्रास्त घं.	मि.
जून 11	1	19	55
12	2	20	54
13	3	21	49
14	4	22	39
15	5	23	24
16	6	—	—
17	7	0	03
18	8	0	39
19	9	1	14
20	10	1	48
21	11	2	24
22	12	3	02
23	13	3	44
24	15	4	32

सन् 2002 ई.	आषाढ़ कृ.	चन्द्रोदय घं.	मि.
जून 25	1	20	07
26	2	21	00
27	3	21	46
28	4	22	25
29	5	23	00
30	6	23	31
जुला. 1	6	24	00
2	7	—	—
3	8	0	28
4	9	0	55
5	10	1	25
6	11	1	56
7	12	2	32
8	13	3	14
9	14	4	02
10	30	4	57

सन् 2002 ई.	आषाढ़ शु.	चन्द्रास्त घं.	मि.
जुला. 11	1	20	33
12	2	21	21
13	3	22	03
14	4	22	41
15	6	23	16
16	7	23	50
17	8	—	—
18	9	0	25
19	10	1	01
20	11	1	41
21	12	2	26
22	13	3	16
23	14	4	11
24	15	5	09

सन् 2002 ई.	श्रावण कृ.	चन्द्रोदय घं.	मि.
जुला. 25	1	20	22
26	2	20	58
27	3	21	31
28	4	22	00
29	5	22	28
30	6	22	56
31	7	23	24
अग. 1	8	23	54
2	9	—	—
3	9	0	28
4	10	1	06
5	11	1	50
6	12	2	42
7	14	3	41
8	30	4	47

सन् 2002 ई.	श्रावण शु.	चन्द्रास्त घं.	मि.
अग. 9	1	19	57
10	2	20	38
11	3	21	15
12	4	21	50
13	5	22	25
14	6	23	02
15	8	23	41
16	9	—	—
17	10	0	24
18	11	1	12
19	12	2	05
20	13	3	01
21	14	3	59
22	15	4	58

सन् 2002 ई.	भाद्रपद कृ.	चन्द्रोदय घं.	मि.
अग. 23	1	19	31
24	2	20	01
25	2	20	30
26	3	20	57
27	4	21	25
28	5	21	54
29	6	22	25
30	7	23	01
31	8	23	41
सितं. 1	9	—	—
2	10	0	29
3	11	1	24
4	12	2	25
5	13	3	32
6	14	4	42
7	30	5	53

सन् 2002 ई.	भाद्रपद शु.	चन्द्रास्त घं.	मि.
सितं. 8	2	19	46
9	3	20	22
10	4	20	59
11	5	21	38
12	6	22	21
13	7	23	08
14	8	24	00
15	9	—	—
16	10	0	56
17	11	1	54
18	12	2	52
19	13	3	49
20	14	4	45
21	15	5	40

सन् 2002 ई.	आश्विन कृ.	चन्द्रोदय घं.	मि.
सितं. 22	1	19	0
23	2	19	27
24	3	19	56
25	4	20	26
26	5	20	59
27	5	21	37
28	6	22	21
29	7	23	11
30	8	—	—
अक्तू. 1	9	0	9
2	10	1	12
3	11	2	19
4	13	3	28
5	14	4	38
6	30	5	48

सन् 2002 ई.	आश्विन शु.	चन्द्रास्त घं.	मि.
अक्तू. 7	1	18	52
8	2	19	31
9	4	20	13
10	5	21	00
11	6	21	52
12	7	22	48
13	8	23	47
14	9	—	—
15	10	0	46
16	11	1	44
17	12	2	40
18	13	3	35
19	13	4	28
20	14	5	21
21	15	6	14

सन् 2002 ई.	कार्तिक कृ.	चन्द्रोदय घं.	मि.
अक्तू. 22	1	18	28
23	2	19	00
24	3	19	37
25	4	20	18
26	5	21	06
27	6	22	00
28	7	22	59
29	8	—	—
30	9	0	03
31	10	1	09
नवं. 1	11	2	16
2	12	3	24
3	13	4	32
4	30	5	42

सन् 2002 ई.	कार्तिक शु.	चन्द्रास्त घं.	मि.
नवं. 5	1	18	02
6	2	18	47
7	3	19	38
8	4	20	35
9	5	21	34
10	6	22	35
11	7	23	35
12	8	—	—
13	9	0	33
14	10	1	29
15	11	2	23
16	12	3	16
17	13	4	08
18	14	5	02
19	15	5	57
20	15	6	53

सन् 2002 ई.	मार्गशीर्ष कृ.	चन्द्रोदय घं.	मि.
नवं. 21	1	18	17
22	2	19	03
23	3	19	55
24	4	20	53
25	5	21	55
26	6	22	58
27	7	—	—
28	8	0	03
29	10	1	08
30	11	2	14
दिसं. 1	12	3	20
2	13	4	29
3	14	5	39
4	30	6	50

चण्डीगढ़ में चन्द्रोदयास्तकाल (सं.2059 वि.) (भा. स्टैं. टा.)

सन् 2002 ई.	मार्गशीर्ष शु.	चन्द्रास्त घं.	मि.	सन् 2002 ई.	पौष कृ.	चन्द्रोदय घं.	मि.	सन् 2003 ई.	पौष शु.	चन्द्रास्त घं.	मि.	सन् 2003 ई.	माघ कृ.	चन्द्रोदय घं.	मि.
दिसं. 5	1	18	17	दिसं. 20	1	17	49	जन. 3	1	17	59	जन. 19	1	18	40
6	2	19	16	21	2	18	46	4	2	19	02	20	2	19	47
7	4	20	18	22	3	19	48	5	3	20	05	21	3	20	53
8	5	21	21	23	4	20	52	6	4	21	05	22	4	21	58
9	6	22	21	24	5	21	57	7	5	22	03	23	6	23	03
10	7	23	19	25	6	23	01	8	6	22	58	24	7	—	—
11	7	—	—	26	7	—	—	9	7	23	51	25	8	0	07
12	8	0	14	27	8	0	05	10	8	—	—	26	9	1	13
13	9	1	08	28	9	1	09	11	8	0	44	27	10	2	20
14	10	2	01	29	10	2	14	12	9	1	38	28	11	3	27
15	11	2	54	30	11	3	21	13	10	2	32	29	12	4	32
16	12	3	48	31	12	4	30	14	11	3	29	30	13	5	34
17	13	4	44	जन.'03, 1	14	5	39	15	12	4	27	31	14	6	30
18	14	5	41	2	30	6	45	16	13	5	26	फर. 1	30	7	18
19	15	6	40					17	14	6	24				
								18	15	7	19				

सन् 2003 ई.	माघ शु.	चन्द्रास्त घं.	मि.	सन् 2003 ई.	फाल्गुन कृ.	चन्द्रोदय घं.	मि.	सन् 2003 ई.	फाल्गुन शु.	चन्द्रास्त घं.	मि.	सन् 2003 ई.	चैत्र कृ.	चन्द्रोदय घं.	मि.
फर. 2	1	18	51	फर. 17	1	18	36	मार्च 4	1	19	32	मार्च 19	1	19	39
3	2	19	50	18	2	19	44	5	2	20	26	20	2	20	49
4	3	20	46	19	3	20	51	6	3	21	19	21	4	21	59
5	4	21	41	20	4	21	58	7	4	22	13	22	5	23	09
6	5	22	34	21	5	23	05	8	5	23	08	23	6	—	—
7	6	23	28	22	6	—	—	9	6	—	—	24	7	0	18
8	7	—	—	23	7	0	13	10	7	0	03	25	8	1	23
9	8	0	22	24	8	1	20	11	8	1	00	26	9	2	22
10	9	1	17	25	9	2	26	12	9	1	57	27	10	3	14
11	9	2	14	26	10	3	28	13	10	2	53	28	11	3	58
12	10	3	12	27	12	4	25	14	11	3	46	29	12	4	36
13	11	4	10	28	13	5	15	15	12	4	34	30	13	5	10
14	12	5	06	मार्च 1	14	5	58	16	13	5	18	31	14	5	40
15	13	5	58	2	14	6	35	17	14	5	58	अप्रै. 1	30	6	08
16	14	6	45	3	30	7	07	18	15	6	35				

अक्षांश भेद से भारत में चन्द्रदर्शन की तारीखें और चन्द्र के उन्नत श्रृंग की दिशा तथा अंश (सं. 2059 वि.)

मास	चैत्र		वैशाख		ज्येष्ठ		आषाढ़		श्रावण		भाद्रपद	
भारतीय अक्षांश	चन्द्रदर्शन (2002 ई.)	उन्नत श्रृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (2002 ई.)	उन्नत श्रृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (2002 ई.)	उन्नत श्रृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (2002 ई.)	उन्नत श्रृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (2002 ई.)	उन्नत श्रृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (2002 ई.)	उन्नत श्रृंग (अंश)
+ 5°	14 अप्रै.	द. 7	13 मई	द. 3	12 जून	द. 5	11 जुला.	द. 4	10 अग.	उ. 11	8 सित.	उ. 15
+ 15°	14 अप्रै.	उ. 3	13 मई	उ. 7	12 जून	उ. 5	11 जुला.	उ. 6	10 अग.	उ. 22	8 सित.	उ. 25
+ 25°	14 अप्रै.	उ. 14	13 मई	उ. 17	12 जून	उ. 16	11 जुला.	उ. 16	10 अग.	उ. 32	8 सित.	उ. 35
+ 35°	14 अप्रै.	उ. 24	*13 मई	उ. 27	12 जून	उ. 26	11 जुला.	उ. 26	10 अग.	उ. 42	8 सित.	उ. 45

मास	आश्विन		कार्तिक		मार्गशीर्ष		पौष		माघ		फाल्गुन	
भारतीय अक्षांश	चन्द्रदर्शन (2002 ई.)	उन्नत श्रृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (2002 ई.)	उन्नत श्रृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (2002 ई.)	उन्नत श्रृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (2003 ई.)	उन्नत श्रृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (2003 ई.)	उन्नत श्रृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (2003 ई.)	उन्नत श्रृंग (अंश)
+ 5°	7 अक्तू.	उ. 16	6 नवं.	उ. 24	5 दिसं.	उ. 20	4 जन.	उ. 13	2 फर.	उ. 12	4 मार्च	द. 1
+ 15°	7 अक्तू.	उ. 26	6 नवं.	उ. 34	5 दिसं.	उ. 30	4 जन.	उ. 23	2 फर.	उ. 23	4 मार्च	उ. 9
+ 25°	7 अक्तू.	उ. 37	6 नवं.	उ. 45	5 दिसं.	उ. 40	4 जन.	उ. 33	⊙2 फर.	उ. 33	4 मार्च	उ. 19
+ 35°	8 अक्तू.	उ. 57	6 नवं.	उ. 55	6 दिसं.	उ. 51	4 जन.	उ. 43	3 फर.	उ. 32	4 मार्च	उ. 30

*सम्भवतः 35 अक्षांशीय स्थलों पर 13 मई को चन्द्रदर्शन न हो। ⊙ 25 अक्षांशीय स्थलों पर भी 2 फरवरी को चन्द्रदर्शन शायद न हो सके।

'मार्तण्ड पंचांग' में दिये चण्डीगढ़ीय चन्द्रोदयास्त से प्रमुख कुछ शहरों में चन्द्रोदयास्त जानने की विधि

लेखक -डा. शक्तिधर शर्मा

इस पंचांग में लग्न, सूर्योदयास्तादि के परिवर्तन की सारणियां पिछले समय से दी जाती रही हैं। चन्द्रोदयास्त के परिवर्तन की सारणी इस बार सैद्धान्तिक उपपत्ति से विचार कर बनाई गई है। जो पंचांगप्रेमियों के हितार्थ यहां दी जा रही हैं । वस्तुतः शुद्ध चन्द्रोदयास्त गणित अपेक्षाकृत कठिन है और यह समझा जाता है कि इसके लिए सूक्ष्म परिणाम देने वाली सारणियां बनाना कठिन है । इस सारणी में विशेषता यह है कि केवल एक फल में ही सभी संस्कार समाविष्ट कर दिये गये हैं, इस प्रकार इसका उपयोग अत्यन्त ही सरल है। आप देखेंगे कि सारणी में उपकरण केवलमात्र चन्द्रक्रान्ति है, जो कि चण्डीगढ़ीय चन्द्रोदय या चन्द्रास्त के समय की ही लेनी होगी। निरयण ग्रह स्पष्टों वाले पृष्ठों पर इसी पंचांग में राहु के भोगांश के बाद सूर्य की क्रान्ति, तदनन्तर चन्द्रक्रान्ति एवं चन्द्रशर के कालम हैं, जिनसे चन्द्रमा की क्रान्ति किसी भी अभीष्ट समय के लिए सरलता से अनुपात द्वारा जानी जा सकती हैं। इससे अभीष्ट तारीख के चण्डीगढ़ीय चन्द्रोदयास्त के समय की तात्कालिक चन्द्रक्रान्ति ज्ञात कर लीजिए,और इसे उपकरण मानकर मद्रास, बंगलौर, कलकत्ता, शिमला, जयपुर, बम्बई व देहली में चन्द्रोदयास्त जानने के लिए निम्नलिखित निर्देश अनुसार प्रथम या द्वितीय फल ज्ञात करें -

यदि क्रान्ति धन हो तो अस्त के लिए 'प्रथम फल ' उदय के लिए 'द्वितीय फल'।

यदि क्रान्ति ऋण हो तो अस्त के लिए 'द्वितीय फल' और उदय के लिए 'प्रथम फल'।

इस फल को चिह्नानुसार चण्डीगढ़ीय उदय या अस्त में जोड़ने, घटाने से अभीष्ट स्थानीय चन्द्रोदयास्त ज्ञात हो जाएगा। इस चन्द्रोदयास्त में कभी ही १ या २ मिनट की अशुद्धि हो सकती है। वस्तुतः इस सारणी से प्राप्त परिणाम काफी सूक्ष्म होगें। चन्द्रोदयास्त गणित में विषुवकाल एवं क्रान्ति से असकृत्कर्म करना पड़ता है। इस कठिन परिश्रम के बिना ही पर्याप्त सूक्ष्म परिणाम इस एकमात्र सारणी की सहायता से सहज ही प्राप्त होगें। नीचे दिये उदाहरणों से यह प्रक्रिया स्पष्ट हो जाएगी-

कल्पना करो कि हमें तारीख २५ अगस्त १९८७ को चन्द्रास्त कलकत्ता के लिए मालूम करना है । इस पंचांग में २५ अगस्त को चण्डीगढ़ीय चन्द्रास्त १९ घं. ३१ मि. पर है। स्पष्ट निरयण ग्रहों वाले पृष्ठों पर २५ अगस्त को चन्द्रक्रान्ति तथा २६ अगस्त को भी इसका मान देखिये -

२५ अगस्त १९८७ को चन्द्रक्रान्ति = +११।६'

२६ ,, ,, ,, ,, = +५°।२९'

ये दोनों प्रातः ५ घं. ३० मि. भा. स्टैं. टा. की हैं। क्योंकि चण्डीगढ़ में चन्द्रास्त १९ घं. ३१ मिनट पर है तो हमें इस समय की चन्द्रक्रान्ति जानने के लिए अनुपात करना होगा।

यह स्पष्ट है कि एक दिन में चन्द्रक्रान्ति की गति =११°।६'−५°।२९' = ५°।३७' है। हमारे अभीष्ट समय १९ घं. ३१ मि. का ५ घं. ३० मि. से अन्तर १४ घं. १ मि. आया। इससे क्रान्तिगति से अनुपात करने पर अनुपात फल ३°।१६' आया। क्योंकि २५ के बाद २६ अगस्त को क्रान्ति घटी है अतः इसे ११°।६ में से घटाने पर तात्कालिक चन्द्रक्रान्ति =+७°।५०' प्राप्त हुई। इसके अंश मात्र ही सारणी से फल प्राप्त करने के लिए पर्याप्त होंगे। अतः चन्द्रक्रान्ति ८° के सम्मुख कलकत्ता के नीचे हमें प्रथमफल प्राप्त करना होगा (क्योंकि क्रान्ति धन है) । सारणी में देखने से यह फल -५४ मिनट प्राप्त हुआ। अतः १९ घं. ३१ मि. से ५४ मिनट घटाने पर १८ घं. ३७ मि. भा. स्टैं. टा. चन्द्रास्त का समय आया। यदि चन्द्रोदय ज्ञात करना हो तो द्वितीय फल लेना होगा। परन्तु शुक्ल पक्ष होने से इस दिन पञ्चांग में चन्द्रोदय नहीं दिया । अतः चन्द्रोदय के उदाहरण के रुप में हम यहां ता. २४ अगस्त' ८७ के दिन बम्बई में चन्द्रोदय ज्ञात करेंगे। इस दिन चण्डीगढ़ में चन्द्रोदय ५ घं. २९ मि. है इस समय की क्रान्ति हमें (निरयणस्पष्ट ग्रहों वाले पृष्ठों से) +१६°।१५' प्राप्त हुई (यहां अनुपात करने की भी आवश्यकता नहीं पड़ी क्योंकि चन्द्रक्रान्ति ५ घ. ३० मिनट की ही है।) अतः क्रान्ति१६° के आगे सारणी में बम्बई के कालम में से हमें द्वितीयफल लेना होगा (क्योंकि क्रान्ति धन है।) सारणी से देखने पर द्वितीयफल +३४ मि. प्राप्त हुआ। अतः ५ घं. २९ मि. में ३४ मिनट जोड़ने पर इस दिन बम्बई में चन्द्रोदय ६ घं. ३ मिनट आया।

स्थानीय चन्द्रोदयास्त का ज्ञान कृष्णजन्माष्टमी, श्रीगणेश चतुर्थी तथा करक चतुर्थी आदि व्रतों के लिए अत्यन्त आवश्यक है। चण्डीगढ़ से दूर कलकत्ता आदि नगरों में रहने वाले श्री मार्तण्ड पंचांग के प्रेमी लोग भी इस सारणी की मदद से इन व्रत-पर्वो के दिन चन्द्रोदयास्त काल सरलता से जान सकते हैं।

चन्द्रोदयास्त – परिवर्तन – सारिणी

चन्द्र-क्रान्ति	कलकत्ता		बम्बई		मद्रास		बंगलौर		दिल्ली		जयपुर		शिमला	
	प्रथम फल	द्वितीय फल	प्रथम फल	द्वितीय फल	प्रथम फल	द्वितीय फल	प्रथम फल	द्वितीय फल	प्रथम फल	द्वितीय फल	प्रथम फल	द्वितीय फल	प्रथम फल	द्वितीय फल
अंश	मिनट	मिनट	मिनट	मिनट	मिनट	मिनट	मिनट	मिनट	मिनट	मिनट	मिनट	मिनट	मिनट	मिनट
०	-४८	-४८	+१७	+१७	-१४	-१४	-३	-३	-१	-१	+४	+४	-१	-१
१	-४९	-४८	+१६	+१८	-१५	-१२	-५	-२	-१	-१	+४	+४	-१	-२
२	-५०	-४७	+१४	+१९	-१७	-११	-६	०	-२	-१	+३	+५	-१	-२
३	-५०	-४७	+१३	+२०	-१९	-९	-७	+१	-२	-१	+३	+५	-१	-२
४	-५१	-४५	+१२	+२१	-२१	-८	-९	+३	-२	०	+३	+५	-१	-२
५	-५२	-४४	+११	+२२	-२२	-६	-१०	+४	-२	०	+२	+६	-१	-२
६	-५३	-४३	+१०	+२३	-२३	-५	-१२	+६	-३	०	+२	+६	-१	-२
७	-५३	-४२	+९	+२४	-२५	-३	-१३	+७	-३	०	+२	+६	-१	-२
८	-५४	-४१	+८	+२५	-२६	-२	-१५	+९	-३	०	+१	+७	-१	-२
९	-५५	-४१	+७	+२६	-२८	-१	-१७	+१०	-३	०	+१	+७	-१	-२
१०	-५५	-४०	+६	+२७	-३०	+१	-१९	+१२	-३	+१	०	+८	-१	-२
११	-५६	-३९	+५	+२८	-३१	+३	-२०	+१३	-४	+१	०	+८	-१	-२
१२	-५७	-३८	+४	+२९	-३२	+४	-२१	+१५	-४	+१	०	+८	-१	-२
१३	-५८	-३८	+३	+३०	-३४	+६	-२३	+१७	-४	+१	-१	+९	-१	-२
१४	-५८	-३७	+१	+३१	-३६	+७	-२५	+१९	-४	+१	-१	+९	-१	-२
१५	-५९	-३६	०	+३२	-३७	+९	-२६	+२०	-४	+२	-१	+९	-१	-२
१६	-६०	-३५	-१	+३४	-३९	+१०	-२८	+२२	-५	+२	-२	+१०	-१	-२
१७	-६१	-३४	-२	+३५	-४०	+१२	-३०	+२४	-५	+२	-२	+१०	-१	-२
१८	-६२	-३४	-३	+३६	-४२	+१४	-३१	+२५	-५	+२	-३	+११	-१	-२
१९	-६३	-३३	-४	+३७	-४४	+१६	-३३	+२७	-५	+३	-३	+११	-१	-२
२०	-६३	-३२	-५	+३८	-४६	+१८	-३५	+२९	-६	+३	-३	+११	-१	-२
२१	-६४	-३१	-७	+३९	-४८	+२०	-३६	+३०	-६	+३	-४	+१२	-१	-२
२२	-६५	-३०	-८	+४०	-५०	+२१	-३८	+३२	-६	+३	-४	+१२	-१	-२
२३	-६६	-२९	-९	+४२	-५१	+२३	-४०	+३४	-६	+४	-५	+१३	-१	-२
२४	-६७	-२८	-१०	+४३	-५३	+२५	-४२	+३६	-६	+४	-५	+१३	०	-३
२५	-६८	-२७	-१२	+४४	-५५	+२७	-४४	+३७	-७	+४	-६	+१४	०	-३
२६	-६९	-२६	-१३	+४६	-५७	+२९	-४६	+३९	-७	+४	-६	+१४	०	-३
२७	-७०	-२६	-१५	+४८	-५९	+३१	-४८	+४१	-७	+५	-७	+१५	०	-३
२८	-७१	-२४	-१७	+५०	-६१	+३३	-५०	+४३	-८	+५	-७	+१६	०	-३
२९	-७२	-२३	-१८	+५१	-६३	+३५	-५२	+४५	-८	+५	-८	+१७	०	-३
३०	-७३	-२३	-२०	+५२	-६५	+३७	-५५	+४८	-८	+६	-८	+१७	०	-३

यदि चन्द्रक्रान्ति धन हो तो अस्त के लिए प्रथमफल और उदय के लिए द्वितीयफल लें, यदि चन्द्रक्रान्ति ऋण हो तो अस्त के लिए द्वितीय फल तथा उदय के लिए प्रथमफल लें ।

दैनिक लग्नसारणी, चंडीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समासिकाल [भा. स्टै.टा.]

वैशाख

अंग्रेजी तारीखें	वैशाख प्रविष्टे	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.
अप्रैल १३	१	७ ३६	९ ३०	११ ४४	१४ ७	१६ २७	१८ ४४	२१ ६	२३ २६	१ ३१	३ १२	४ ३७	५ ५९
१४	२	७ ३२	९ २६	११ ४०	१४ ३	१६ २३	१८ ४०	२१ २	२३ २२	१ २७	३ ८	४ ३३	५ ५५
१५	३	७ २८	९ २२	११ ३७	१३ ५९	१६ १९	१८ ३६	२० ५८	२३ १८	१ २३	३ ४	४ २९	५ ५१
१६	४	७ २४	९ १८	११ ३३	१३ ५५	१६ १५	१८ ३३	२० ५४	२३ १४	१ १९	३ ०	४ २५	५ ४७
१७	५	७ २०	९ १४	११ २९	१३ ५१	१६ ११	१८ २९	२० ५०	२३ १०	१ १५	२ ५६	४ २१	५ ४३
१८	६	७ १६	९ ११	११ २५	१३ ४७	१६ ७	१८ २५	२० ४६	२३ ६	१ ११	२ ५२	४ १७	५ ३९
१९	७	७ १२	९ ७	११ २१	१३ ४३	१६ ३	१८ २१	२० ४२	२३ २	१ ७	२ ४८	४ १३	५ ३५
२०	८	७ ८	९ ३	११ १७	१३ ३९	१५ ५९	१८ १७	२० ३८	२२ ५८	१ ३	२ ४४	४ ९	५ ३१
२१	९	७ ४	८ ५९	११ १३	१३ ३५	१५ ५५	१८ १३	२० ३४	२२ ५४	० ५९	२ ४०	४ ५	५ २८
२२	१०	७ ०	८ ५५	११ ९	१३ ३१	१५ ५१	१८ ९	२० ३०	२२ ५१	० ५५	२ ३६	४ १	५ २४
२३	११	६ ५६	८ ५१	११ ५	१३ २७	१५ ४७	१८ ५	२० २७	२२ ४७	० ५१	२ ३२	३ ५७	५ २०
२४	१२	६ ५२	८ ४७	११ १	१३ २३	१५ ४३	१८ १	२० २३	२२ ४३	० ४७	२ २८	३ ५३	५ १६
२५	१३	६ ४८	८ ४३	१० ५७	१३ १९	१५ ३९	१७ ५७	२० १९	२२ ३९	० ४३	२ २४	३ ४९	५ १२
२६	१४	६ ४४	८ ३९	१० ५३	१३ १६	१५ ३६	१७ ५३	२० १५	२२ ३५	० ३९	२ २०	३ ४५	५ ८
२७	१५	६ ४१	८ ३५	१० ४९	१३ १२	१५ ३२	१७ ४९	२० ११	२२ ३१	० ३५	२ १६	३ ४२	५ ४
२८	१६	६ ३७	८ ३१	१० ४५	१३ ८	१५ २८	१७ ४५	२० ७	२२ २७	० ३२	२ १३	३ ३८	५ ०
२९	१७	६ ३३	८ २७	१० ४२	१३ ४	१५ २४	१७ ४१	२० ३	२२ २३	० २८	२ ९	३ ३४	४ ५६
३०	१८	६ २९	८ २३	१० ३८	१३ ०	१५ २०	१७ ३७	१९ ५९	२२ १९	० २४	२ ५	३ ३०	४ ५२
मई १	१९	६ २५	८ १९	१० ३४	१२ ५६	१५ १६	१७ ३४	१९ ५५	२२ १५	० २०	२ १	३ २६	४ ४८
२	२०	६ २१	८ १६	१० ३०	१२ ५२	१५ १२	१७ ३०	१९ ५१	२२ ११	० १६	१ ५७	३ २२	४ ४४
३	२१	६ १७	८ १२	१० २६	१२ ४८	१५ ८	१७ २६	१९ ४७	२२ ७	० १२	१ ५३	३ १८	४ ४०
४	२२	६ १३	८ ८	१० २२	१२ ४४	१५ ४	१७ २२	१९ ४३	२२ ३	० ८	१ ४९	३ १४	४ ३६
५	२३	६ ९	८ ४	१० १८	१२ ४०	१५ ०	१७ १८	१९ ३९	२१ ५९	० ४	१ ४५	३ १०	४ ३२
६	२४	६ ५	८ ०	१० १४	१२ ३६	१४ ५६	१७ १४	१९ ३५	२१ ५६	० ०	१ ४१	३ ६	४ २९
७	२५	६ १	७ ५६	१० १०	१२ ३२	१४ ५२	१७ १०	१९ ३२	२१ ५२	२३ ५६	१ ३७	३ २	४ २५
८	२६	५ ५७	७ ५२	१० ६	१२ २८	१४ ४८	१७ ६	१९ २८	२१ ४८	२३ ५२	१ ३३	२ ५८	४ २१
९	२७	५ ५३	७ ४८	१० २	१२ २४	१४ ४४	१७ २	१९ २४	२१ ४४	२३ ४८	१ २९	२ ५४	४ १७
१०	२८	५ ४९	७ ४४	९ ५८	१२ २०	१४ ४०	१६ ५८	१९ २०	२१ ४०	२३ ४४	१ २५	२ ५०	४ १३
११	२९	५ ४६	७ ४०	९ ५४	१२ १७	१४ ३६	१६ ५४	१९ १६	२१ ३६	२३ ४०	१ २१	२ ४६	४ ९
१२	३०	५ ४२	७ ३६	९ ५०	१२ १३	१४ ३३	१६ ५०	१९ १२	२१ ३२	२३ ३७	१ १८	२ ४३	४ ५
१३	३१	५ ३८	७ ३२	९ ४६	१२ ९	१४ २९	१६ ४६	१९ ८	२१ २८	२३ ३३	१ १४	२ ३९	४ १
२४ मई		५ ३४											

ज्येष्ठ

अंग्रेजी तारीखें	ज्येष्ठ प्रविष्टे	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.
मई १४	१	७ २८	९ ४३	१२ ५	१४ २५	१६ ४२	१९ ४	२१ २४	२३ २९	१ १०	२ ३५	३ ५७	५ ३०
१५	२	७ २४	९ ३९	१२ १	१४ २१	१६ ३९	१९ ०	२१ २०	२३ २५	१ ६	२ ३१	३ ५३	५ २६
१६	३	७ २०	९ ३५	११ ५७	१४ १७	१६ ३५	१८ ५६	२१ १६	२३ २१	१ २	२ २७	३ ४९	५ २२
१७	४	७ १७	९ ३१	११ ५३	१४ १३	१६ ३१	१८ ५२	२१ १२	२३ १७	० ५८	२ २३	३ ४५	५ १८
१८	५	७ १३	९ २७	११ ४९	१४ ९	१६ २७	१८ ४८	२१ ८	२३ १३	० ५४	२ १९	३ ४१	५ १४
१९	६	७ ९	९ २३	११ ४५	१४ ५	१६ २३	१८ ४४	२१ ४	२३ ९	० ५०	२ १५	३ ३७	५ १०
२०	७	७ ५	९ १९	११ ४१	१४ १	१६ १९	१८ ४०	२१ १	२३ ५	० ४६	२ ११	३ ३४	५ ६
२१	८	७ १	९ १५	११ ३७	१३ ५७	१६ १५	१८ ३६	२० ५७	२३ १	० ४२	२ ७	३ ३०	५ २
२२	९	६ ५७	९ ११	११ ३३	१३ ५३	१६ ११	१८ ३३	२० ५३	२२ ५७	० ३८	२ ३	३ २६	४ ५८
२३	१०	६ ५३	९ ७	११ २९	१३ ४९	१६ ७	१८ २९	२० ४९	२२ ५३	० ३४	१ ५९	३ २२	४ ५४
२४	११	६ ४९	९ ३	११ २५	१३ ४५	१६ ३	१८ २५	२० ४५	२२ ४९	० ३०	१ ५५	३ १८	४ ५०
२५	१२	६ ४५	८ ५९	११ २२	१३ ४१	१५ ५९	१८ २१	२० ४१	२२ ४२	० २६	१ ५१	३ १४	४ ४७
२६	१३	६ ४१	८ ५५	११ १८	१३ ३८	१५ ५५	१८ १७	२० ३७	२२ ४२	० २२	१ ४८	३ १०	४ ४३
२७	१४	६ ३७	८ ५१	११ १४	१३ ३४	१५ ५१	१८ १३	२० ३३	२२ ३८	० १९	१ ४४	३ ६	४ ३९
२८	१५	६ ३३	८ ४७	११ १०	१३ ३०	१५ ४७	१८ ९	२० २९	२२ ३४	० १५	१ ४०	३ २	४ ३५
२९	१६	६ २९	८ ४४	११ ६	१३ २६	१५ ४३	१८ ५	२० २५	२२ ३०	० ११	१ ३६	२ ५८	४ ३१
३०	१७	६ २५	८ ४०	११ २	१३ २२	१५ ४०	१८ १	२० २१	२२ २६	० ७	१ ३२	२ ५४	४ २७
३१	१८	६ २२	८ ३६	१० ५८	१३ १८	१५ ३६	१७ ५७	२० १७	२२ २२	० ३	१ २८	२ ५०	४ २३
जून १	१९	६ १८	८ ३२	१० ५४	१३ १४	१५ ३२	१७ ५३	२० १३	२२ १८	२३ ५९	१ २४	२ ४६	४ १९
२	२०	६ १४	८ २८	१० ५०	१३ १०	१५ २८	१७ ४९	२० ९	२२ १४	२३ ५५	१ २०	२ ४२	४ १५
३	२१	६ १०	८ २४	१० ४६	१३ ६	१५ २४	१७ ४५	२० ५	२२ १०	२३ ५१	१ १६	२ ३८	४ ११
४	२२	६ ६	८ २०	१० ४२	१३ २	१५ २०	१७ ४१	२० २	२२ ६	२३ ४७	१ १२	२ ३४	४ ७
५	२३	६ २	८ १६	१० ३८	१२ ५८	१५ १६	१७ ३७	१९ ५८	२२ २	२३ ४३	१ ८	२ ३१	४ ३
६	२४	५ ५८	८ १२	१० ३४	१२ ५४	१५ १२	१७ ३४	१९ ५४	२१ ५८	२३ ३९	१ ४	२ २७	३ ५९
७	२५	५ ५४	८ ८	१० ३०	१२ ५०	१५ ८	१७ ३०	१९ ५०	२१ ५४	२३ ३५	१ ०	२ २३	३ ५५
८	२६	५ ५०	८ ४	१० २६	१२ ४६	१५ ४	१७ २६	१९ ४६	२१ ५०	२३ ३१	० ५६	२ १९	३ ५१
९	२७	५ ४६	८ ०	१० २३	१२ ४३	१५ ०	१७ २२	१९ ४२	२१ ४६	२३ २७	० ५२	२ १५	३ ४८
१०	२८	५ ४२	७ ५६	१० १९	१२ ३९	१४ ५६	१७ १८	१९ ३८	२१ ४३	२३ २३	० ४९	२ ११	३ ४४
११	२९	५ ३८	७ ५२	१० १५	१२ ३५	१४ ५२	१७ १४	१९ ३४	२१ ३९	२३ २०	० ४५	२ ७	३ ४०
१२	३०	५ ३४	७ ४९	१० ११	१२ ३१	१४ ४८	१७ १०	१९ ३०	२१ ३५	२३ १६	० ४१	२ ३	३ ३६
१३	३१	५ ३०	७ ४५	१० ७	१२ २७	१४ ४५	१७ ६	१९ २६	२१ ३१	२३ १२	० ३७	१ ५९	३ ३२
१४ जून		५ २६											

दैनिक लग्नसारणी, चंडीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा.स्टैं.टा.]

आषाढ़

मास	अंग्रेजी तारीखें	आषाढ़ प्रविष्टे	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.
	१४	१	७ ४१	१० ३	१२ २३	१४ ४१	१७ २	१९ २२	२१ २७	२३ ८	० ३३	१ ५५	३ २८	५ २३
	१५	२	७ ३७	९ ५९	१२ १९	१४ ३७	१६ ५८	१९ १८	२१ २३	२३ ४	० २९	१ ५१	३ २४	५ १९
	१६	३	७ ३३	९ ५५	१२ १५	१४ ३३	१६ ५४	१९ १४	२१ १९	२३ ०	० २५	१ ४७	३ २०	५ १५
	१७	४	७ २९	९ ५१	१२ ११	१४ २९	१६ ५०	१९ १०	२१ १५	२२ ५६	० २१	१ ४३	३ १६	५ ११
	१८	५	७ २५	९ ४७	१२ ७	१४ २५	१६ ४६	१९ ६	२१ ११	२२ ५२	० १७	१ ३९	३ १२	५ ७
	१९	६	७ २१	९ ४३	१२ ३	१४ २१	१६ ४२	१९ ३	२१ ७	२२ ४८	० १३	१ ३६	३ ८	५ ३
	२०	७	७ १७	९ ३९	११ ५९	१४ १७	१६ ३९	१८ ५९	२१ ३	२२ ४४	० ९	१ ३२	३ ४	४ ५९
	२१	८	७ १३	९ ३५	११ ५५	१४ १३	१६ ३५	१८ ५५	२० ५९	२२ ४०	० ५	१ २८	३ ०	४ ५५
	२२	९	७ ९	९ ३१	११ ५१	१४ ९	१६ ३१	१८ ५१	२० ५५	२२ ३६	० १	१ २४	२ ५६	४ ५१
जून	२३	१०	७ ५	९ २७	११ ४७	१४ ५	१६ २७	१८ ४७	२० ५१	२२ ३२	२३ ५७	१ २०	२ ५३	४ ४७
	२४	११	७ १	९ २४	११ ४४	१४ १	१६ २३	१८ ४३	२० ४८	२२ २८	२३ ५४	१ १६	२ ४९	४ ४३
	२५	१२	६ ५७	९ २०	११ ४०	१३ ५७	१६ १९	१८ ३९	२० ४४	२२ २५	२३ ५०	१ १२	२ ४५	४ ३९
	२६	१३	६ ५३	९ १६	११ ३६	१३ ५३	१६ १५	१८ ३५	२० ४०	२२ २१	२३ ४६	१ ८	२ ४१	४ ३५
	२७	१४	६ ५०	९ १२	११ ३२	१३ ४९	१६ ११	१८ ३१	२० ३६	२२ १७	२३ ४२	१ ४	२ ३७	४ ३१
	२८	१५	६ ४६	९ ८	११ २८	१३ ४६	१६ ७	१८ २७	२० ३२	२२ १३	२३ ३८	१ ०	२ ३३	४ २७
	२९	१६	६ ४२	९ ४	११ २४	१३ ४२	१६ ३	१८ २३	२० २८	२२ ९	२३ ३४	० ५६	२ २९	४ २४
	३०	१७	६ ३८	९ ०	११ २०	१३ ३८	१५ ५९	१८ १९	२० २४	२२ ५	२३ ३०	० ५२	२ २५	४ २०
	१	१८	६ ३४	८ ५६	११ १६	१३ ३४	१५ ५५	१८ १५	२० २०	२२ १	२३ २६	० ४८	२ २१	४ १६
	२	१९	६ ३०	८ ५२	११ १२	१३ ३०	१५ ५१	१८ ११	२० १६	२१ ५७	२३ २२	० ४४	: १७	४ १२
	३	२०	६ २६	८ ४८	११ ८	१३ २६	१५ ४७	१८ ८	२० १२	२१ ५३	२३ १८	० ४१	२ १३	४ ८
	४	२१	६ २२	८ ४४	११ ४	१३ २२	१५ ४३	१८ ४	२० ८	२१ ४९	२३ १४	० ३७	२ ९	४ ४
	५	२२	६ १८	८ ४०	११ ०	१३ १८	१५ ४०	१८ ०	२० ४	२१ ४५	२३ १०	० ३३	२ ५	४ ०
जुलाई	६	२३	६ १४	८ ३६	१० ५६	१३ १४	१५ ३६	१७ ५६	२० ०	२१ ४१	२३ ६	० २९	२ १	३ ५६
	७	२४	६ १०	८ ३२	१० ५२	१३ १०	१५ ३२	१७ ५२	१९ ५६	२१ ३७	२३ २	० २५	१ ५७	३ ५५
	८	२५	६ ६	८ २९	१० ४९	१३ ६	१५ २८	१७ ४८	१९ ५२	२१ ३३	२२ ५८	० २१	१ ५४	३ ४८
	९	२६	६ २	८ २५	१० ४५	१३ २	१५ २४	१७ ४४	१९ ४९	२१ २९	२२ ५५	० १७	१ ५०	३ ४४
	१०	२७	५ ५८	८ २१	१० ४१	१२ ५८	१५ २०	१७ ४०	१९ ४५	२१ २६	२२ ५१	० १३	१ ४६	३ ४०
	११	२८	५ ५५	८ १७	१० ३७	१२ ५४	१५ १६	१७ ३६	१९ ४१	२१ २२	२२ ४७	० ९	१ ४२	३ ३६
	१२	२९	५ ५१	८ १३	१० ३३	१२ ५०	१५ १२	१७ ३२	१९ ३७	२१ १८	२२ ४३	० ५	१ ३८	३ ३२
	१३	३०	५ ४७	८ ९	१० २९	१२ ४७	१५ ८	१७ २८	१९ ३३	२१ १४	२२ ३९	० १	१ ३४	३ २९
	१४	३१	५ ४३	८ ५	१० २५	१२ ४३	१५ ४	१७ २४	१९ २९	२१ १०	२२ ३५	२३ ५७	१ ३०	३ २५
	१५	३२	५ ३९	८ १	१० २१	१२ ३९	१५ ०	१७ २०	१९ २५	२१ ६	२२ ३१	२३ ५३	१ २६	३ २१
	१६	श्रा१	५ ३५											

श्रावण

मास	अंग्रेजी तारीखें	श्रावण प्रविष्टे	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन. घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.
	१६	१	७ ५७	१० १७	१२ ३५	१४ ५६	१७ १६	१९ २१	२१ २	२२ २७	२३ ४९	१ २२	३ १७	५ ३१
	१७	२	७ ५३	१० १३	१२ ३१	१४ ५२	१७ १२	१९ १७	२० ५८	२२ २३	२३ ४५	१ १८	३ १३	५ २७
	१८	३	७ ४९	१० ९	१२ २७	१४ ४८	१७ ९	१९ १३	२० ५४	२२ १९	२३ ४१	१ १४	३ ९	५ २३
	१९	४	७ ४५	१० ५	१२ २३	१४ ४५	१७ ५	१९ ९	२० ५०	२२ १५	२३ ३८	१ १०	३ ५	५ १९
	२०	५	७ ४१	१० १	१२ १९	१४ ४१	१७ १	१९ ५	२० ४६	२२ ११	२३ ३४	१ ६	३ १	५ १५
	२१	६	७ ३७	९ ५७	१२ १५	१४ ३७	१६ ५७	१९ १	२० ४२	२२ ७	२३ ३०	१ २	२ ५७	५ ११
	२२	७	७ ३३	९ ५३	१२ ११	१४ ३३	१६ ५३	१८ ५७	२० ३८	२२ ३	२३ २६	० ५८	२ ५३	५ ७
	२३	८	७ ३०	९ ५०	१२ ७	१४ २९	१६ ४९	१८ ५३	२० ३४	२१ ५९	२३ २२	० ५५	२ ४९	५ ३
जुलाई	२४	९	७ २६	९ ४६	१२ ३	१४ २५	१६ ४५	१८ ५०	२० ३०	२१ ५६	२३ १८	० ५१	२ ४५	४ ५९
	२५	१०	७ २२	९ ४२	११ ५९	१४ २१	१६ ४१	१८ ४६	२० २७	२१ ५२	२३ १४	० ४७	२ ४१	४ ५६
	२६	११	७ १८	९ ३८	११ ५५	१४ १७	१६ ३७	१८ ४२	२० २३	२१ ४८	२३ १०	० ४३	२ ३७	४ ५२
	२७	१२	७ १४	९ ३४	११ ५२	१४ १३	१६ ३३	१८ ३८	२० १९	२१ ४४	२३ ६	० ३९	२ ३३	४ ४८
	२८	१३	७ १०	९ ३०	११ ४८	१४ ९	१६ २९	१८ ३४	२० १५	२१ ४०	२३ २	० ३५	२ ३०	४ ४४
	२९	१४	७ ६	९ २६	११ ४४	१४ ५	१६ २५	१८ ३०	२० ११	२१ ३६	२२ ५८	० ३१	२ २६	४ ४०
	३०	१५	७ २	९ २२	११ ४०	१४ १	१६ २१	१८ २६	२० ७	२१ ३२	२२ ५४	० २७	२ २२	४ ३६
	३१	१६	६ ५८	९ १८	११ ३६	१३ ५७	१६ १७	१८ २२	२० ३	२१ २८	२२ ५०	० २३	२ १८	४ ३१
	१	१७	६ ५४	९ १४	११ ३२	१३ ५३	१६ १३	१८ १८	१९ ५९	२१ २४	२२ ४७	० १९	२ १४	४ २८
	२	१८	६ ५०	९ १०	११ २८	१३ ४९	१६ १०	१८ १४	१९ ५५	२१ २०	२२ ४३	० १५	२ १०	४ २४
	३	१९	६ ४६	९ ६	११ २४	१३ ४६	१६ ६	१८ १०	१९ ५१	२१ १६	२२ ३९	० ११	२ ६	४ २०
	४	२०	६ ४२	९ ?	११ २०	१३ ४२	१६ २	१८ ६	१९ ४७	२१ १२	२२ ३५	० ७	२ २	४ १६
	५	२१	६ ३८	८ ५८	११ १६	१३ ३८	१५ ५८	१८ २	१९ ४३	२१ ८	२२ ३१	० ३	१ ५८	४ १२
अगस्त	६	२२	६ ३४	८ ५४	११ १२	१३ ३४	१५ ५४	१७ ५८	१९ ३९	२१ ४	२२ २७	० ०	१ ५४	४ ८
	७	२३	६ ३१	८ ५१	११ ८	१३ ३०	१५ ५०	१७ ५५	१९ ३५	२१ १	२२ २३	२३ ५६	१ ५०	४ ४
	८	२४	६ २७	८ ४७	११ ४	१३ २६	१५ ४६	१७ ५१	१९ ३२	२० ५७	२२ १९	२३ ५२	१ ४६	४ ०
	९	२५	६ २३	८ ४३	११ ०	१३ २२	१५ ४२	१७ ४७	१९ २८	२० ५३	२२ १५	२३ ४८	१ ४२	३ ५७
	१०	२६	६ १९	८ ३९	१० ५६	१३ १८	१५ ३८	१७ ४३	१९ २४	२० ४९	२२ ११	२३ ४४	१ ३८	३ ५३
	११	२७	६ १५	८ ३५	१० ५३	१३ १४	१५ ३४	१७ ३९	१९ २०	२० ४५	२२ ७	२३ ४०	१ ३४	३ ४९
	१२	२८	६ ११	८ ३१	१० ४९	१३ १०	१५ ३०	१७ ३५	१९ १६	२० ४१	२२ ३	२३ ३६	१ ३१	३ ४५
	१३	२९	६ ७	८ २७	१० ४५	१३ ६	१५ २६	१७ ३१	१९ १२	२० ३७	२१ ५९	२३ ३२	१ २७	३ ४१
	१४	३०	६ ३	८ २३	१० ४१	१३ २	१५ २२	१७ २७	१९ ८	२० ३३	२१ ५५	२३ २८	१ २३	३ ३७
	१५	३१	५ ५९	८ १९	१० ३७	१२ ५८	१५ १८	१७ २३	१९ ४	२० २९	२१ ५१	२३ २४	१ १९	३ ३३
	१६	भा१	५ ५५											

दैनिक लग्न सारणी, चंडीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा.स्टैं. टा.]

भाद्रपद

मास	अंग्रेजी तारीखें	भाद्रपद प्रविष्टे	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.
अगस्त	१६	१	८ १५	१० ३३	१२ ५४	१५ १५	१७ १९	१९ ०	२० २५	२१ ४८	२३ २०	१ १५	३ २९	५ ५१
	१७	२	८ ११	१० २९	१२ ५०	१५ ११	१७ १५	१८ ५६	२० २१	२१ ४४	२३ १६	१ ११	३ २५	५ ४७
	१८	३	८ ७	१० २५	१२ ४७	१५ ७	१७ ११	१८ ५२	२० १७	२१ ४०	२३ १२	१ ७	३ २१	५ ४३
	१९	४	८ ३	१० २१	१२ ४३	१५ ३	१७ ७	१८ ४८	२० १३	२१ ३६	२३ ८	१ ३	३ १७	५ ३९
	२०	५	७ ५९	१० १७	१२ ३९	१४ ५९	१७ ३	१८ ४४	२० ९	२१ ३२	२३ ४	० ५९	३ १३	५ ३६
	२१	६	७ ५६	१० १३	१२ ३५	१४ ५५	१६ ५९	१८ ४०	२० '१	२१ २८	२३ १	० ५५	३ ९	५ ३२
	२२	७	७ ५२	१० ९	१२ ३१	१४ ५१	१६ ५६	१८ ३६	२० २	२१ २४	२२ ५७	० ५१	३ ५	५ २८
	२३	८	७ ४८	१० ५	१२ २७	१४ ४७	१६ ५२	१८ ३३	१९ ५८	२१ २०	२२ ५३	० ४७	३ २	५ २४
	२४	९	७ ४४	१० १	१२ २३	१४ ४३	१६ ४८	१८ २९	१९ ५४	२१ १६	२२ ४९	० ४३	२ ५८	५ २०
	२५	१०	७ ४०	९ ५७	१२ १९	१४ ३९	१६ ४४	१८ २५	१९ ५०	२१ १२	२२ ४५	० ३९	२ ५४	५ १६
	२६	११	७ ३६	९ ५४	१२ १५	१४ ३५	१६ ४०	१८ २१	१९ ४६	२१ ८	२२ ४१	० ३६	२ ५०	५ १२
	२७	१२	७ ३२	९ ५०	१२ ११	१४ ३१	१६ ३६	१८ १७	१९ ४२	२१ ४	२२ ३७	० ३२	२ ४६	५ ८
	२८	१३	७ २८	९ ४६	१२ ७	१४ २७	१६ ३२	१८ १३	१९ ३८	२१ ०	२२ ३३	० २८	२ ४२	५ ४
	२९	१४	७ २४	९ ४२	१२ ३	१४ २३	१६ २८	१८ ९	१९ ३४	२० ५६	२२ २९	० २४	२ ३८	५ ०
	३०	१५	७ २०	९ ३८	११ ५९	१४ १९	१६ २४	१८ ५	१९ ३०	२० ५२	२२ २५	० २०	२ ३४	४ ५६
	३१	१६	७ १६	९ ३४	११ ५५	१४ १६	१६ २०	१८ १	१९ २६	२० ४९	२२ २१	० १६	२ ३०	४ ५२
सितम्बर	१	१७	७ १२	९ ३०	११ ५२	१४ १२	१६ १६	१७ ५७	१९ २२	२० ४५	२२ १७	० १२	२ २६	४ ४८
	२	१८	७ ८	९ २६	११ ४८	१४ ८	१६ १२	१७ ५३	१९ १८	२० ४१	२२ १३	० ८	२ २२	४ ४४
	३	१९	७ ४	९ २२	११ ४४	१४ ४	१६ ८	१७ ४९	१९ १४	२० ३७	२२ ९	० ४	२ १८	४ ४०
	४	२०	७ ०	९ १८	११ ४०	१४ ०	१६ ४	१७ ४५	१९ १०	२० ३३	२२ ६	० ०	२ १४	४ ३७
	५	२१	६ ५७	९ १४	११ ३६	१३ ५६	१६ ०	१७ ४१	१९ ६	२० २९	२२ २	२३ ५६	२ १०	४ ३३
	६	२२	६ ५३	९ १०	११ ३२	१३ ५२	१५ ५७	१७ ३८	१९ ३	२० २५	२१ ५८	२३ ५२	२ ६	४ २९
	७	२३	६ ४९	९ ६	११ २८	१३ ४८	१५ ५३	१७ ३४	१८ ५९	२० २१	२१ ५४	२३ ४८	२ ३	४ २५
	८	२४	६ ४५	९ २	११ २४	१३ ४४	१५ ४९	१७ ३०	१८ ५५	२० १७	२१ ५०	२३ ४४	१ ५९	४ २१
	९	२५	६ ४१	८ ५९	११ २०	१३ ४०	१५ ४५	१७ २६	१८ ५१	२० १३	२१ ४६	२३ ४०	१ ५५	४ १७
	१०	२६	६ ३७	८ ५५	११ १६	१३ ३६	१५ ४१	१७ २२	१८ ४७	२० ९	२१ ४२	२३ ३७	१ ५१	४ १३
	११	२७	६ ३३	८ ५१	११ १२	१३ ३२	१५ ३७	१७ १८	१८ ४३	२० ५	२१ ३८	२३ ३३	१ ४७	४ ९
	१२	२८	६ २९	८ ४७	११ ८	१३ २८	१५ ३३	१७ १४	१८ ३९	२० १	२१ ३४	२३ २९	१ ४३	४ ५
	१३	२९	६ २५	८ ४३	११ ४	१३ २४	१५ २९	१७ १०	१८ ३५	१९ ५७	२१ ३०	२३ २५	१ ३९	४ १
	१४	३०	६ २१	८ ३९	११ ०	१३ २१	१५ २५	१७ ६	१८ ३१	१९ ५४	२१ २६	२३ २१	१ ३५	३ ५७
	१५	३१	६ १७	८ ३५	१० ५६	१३ १७	१५ २१	१७ २	१८ २७	१९ ५०	२१ २२	२३ १७	१ ३१	३ ५३
	१६	आश्र	६ १३											

आश्विन

मास	अंग्रेजी तारीखें	आश्विन प्रविष्टे	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.
सितम्बर	१६	१	८ ३१	१० ५३	१३ १३	१५ १७	१६ ५८	१८ २३	१९ ४६	२१ १८	१३	१ २७	३ ४९	६ ९
	१७	२	८ २७	१० ४९	१३ ९	१५ १३	१६ ५४	१८ १९	१९ ४२	२१ १४	२३ ९	१ २३	३ ४५	६ ५
	१८	३	८ २३	१० ४५	१३ ५	१५ ९	१६ ५०	१८ १५	१९ ३८	२१ १०	२३ ५	१ १९	३ ४२	६ १
	१९	४	८ १९	१० ४१	१३ १	१५ ५	१६ ४६	१८ ११	१९ ३४	२१ ७	२३ १	१ १५	३ ३८	५ ५८
	२०	५	८ १५	१० ३७	१२ ५७	१५ २	१६ ४२	१८ ८	१९ ३०	२१ ३	२२ ५७	१ ११	३ ३४	५ ५४
	२१	६	८ ११	१० ३३	१२ ५३	१४ ५८	१६ ३९	१८ ४	१९ २६	२० ५९	२२ ५३	१ ७	३ ३०	५ ५०
	२२	७	८ ७	१० २९	१२ ४९	१४ ५४	१६ ३५	१८ ०	१९ २२	२० ५५	२२ ४९	१ ४	३ २६	५ ४६
	२३	८	८ ३	१० २५	१२ ४५	१४ ५०	१६ ३१	१७ ५६	१९ १८	२० ५१	२२ ४५	१ ०	३ २२	५ ४२
	२४	९	८ ०	१० २१	१२ ४१	१४ ४६	१६ २७	१७ ५२	१९ १४	२० ४७	२२ ४१	० ५६	३ १८	५ ३८
	२५	१०	७ ५६	१० १७	१२ ३७	१४ ४२	१६ २३	१७ ४८	१९ १०	२० ४३	२२ ३८	० ५२	३ १४	५ ३४
	२६	११	७ ५२	१० १३	१२ ३३	१४ ३८	१६ १९	१७ ४४	१९ ६	२० ३९	२२ ३४	० ४८	३ १०	५ ३०
	२७	१२	७ ४८	१० ९	१२ २९	१४ ३४	१६ १५	१७ ४०	१९ २	२० ३५	२२ ३०	० ४४	३ ६	५ २६
	२८	१३	७ ४४	१० ५	१२ २५	१४ ३०	१६ ११	१७ ३६	१८ ५८	२० ३१	२२ २६	० ४०	३ २	५ २२
	२९	१४	७ ४०	१० १	१२ २२	१४ २६	१६ ७	१७ ३२	१८ ५५	२० २७	२२ २२	० ३६	२ ५८	५ १८
	३०	१५	७ ३६	९ ५७	१२ १८	१४ २२	१६ ३	१७ २८	१८ ५१	२० २३	२२ १८	० ३२	२ ५४	५ १४
अक्तूबर	१	१६	७ ३२	९ ५४	१२ १४	१४ १८	१५ ५९	१७ २४	१८ ४७	२० १९	२२ १४	० २८	२ ५०	५ १०
	२	१७	७ २८	९ ५०	१२ १०	१४ १४	१५ ५५	१७ २०	१८ ४३	२० १५	२२ १०	० २४	२ ४६	५ ६
	३	१८	७ २४	९ ४६	१२ ६	१४ १०	१५ ५१	१७ १६	१८ ३९	२० ११	२२ ६	० २०	२ ४३	५ ३
	४	१९	७ २०	९ ४२	१२ २	१४ ६	१५ ४७	१७ १२	१८ ३५	२० ८	२२ २	० १६	२ ३९	४ ५९
	५	२०	७ १६	९ ३८	११ ५८	१४ ३	१५ ४३	१७ ९	१८ ३१	२० ४	२१ ५८	० १२	२ ३५	४ ५५
	६	२१	७ १२	९ ३४	११ ५४	१३ ५९	१५ ४०	१७ ५	१८ २७	२० ०	२१ ५४	० ८	२ ३१	४ ५१
	७	२२	७ ८	९ ३०	११ ५०	१३ ५५	१५ ३६	१७ १	१८ २३	१९ ५६	२१ ५०	० ५	२ २७	४ ४७
	८	२३	७ ५	९ २६	११ ४६	१३ ५१	१५ ३२	१६ ५७	१८ १९	१९ ५२	२१ ४६	० १	२ २३	४ ४३
	९	२४	७ १	९ २२	११ ४२	१३ ४७	१५ २८	१६ ५३	१८ १५	१९ ४८	२१ ४३	२३ ५७	२ १९	४ ३९
	१०	२५	६ ५७	९ १८	११ ३८	१३ ४३	१५ २४	१६ ४९	१८ ११	१९ ४४	२१ ३९	२३ ५३	२ १५	४ ३५
	११	२६	६ ५३	९ १४	११ ३४	१३ ३९	१५ २०	१६ ४५	१८ ७	१९ ४०	२१ ३५	२३ ४९	२ ११	४ ३१
	१२	२७	६ ४९	९ १०	११ ३०	१३ ३५	१५ १६	१६ ४१	१८ ३	१९ ३६	२१ ३१	२३ ४५	२ ७	४ २७
	१३	२८	६ ४५	९ ६	११ २६	१३ ३१	१५ १२	१६ ३७	१७ ५९	१९ ३२	२१ २७	२३ ४१	२ ३	४ २३
	१४	२९	६ ४१	९ २	११ २३	१३ २७	१५ ८	१६ ३३	१७ ५६	१९ २८	२१ २३	२३ ३७	१ ५९	४ १९
	१५	३०	६ ३७	८ ५९	११ १९	१३ २३	१५ ४	१६ २९	१७ ५२	१९ २४	२१ १९	२३ ३३	१ ५५	४ १५
	१६	का १	६ ३३											

दैनिक लग्न सारणी, चंडीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा.स्टैं. टा.]

कार्तिक

अंग्रेज़ी तारीखें	कार्तिक प्रविष्टे	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुंभ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.
अक्तूबर १६	१	८ ५५	११ १५	१३ १९	१५ ०	१६ २५	१७ ४८	१९ २०	२१ १५	२३ २९	१ ५१	४ ११	६ २९
१७	२	८ ५१	११ ११	१३ १५	१४ ५६	१६ २१	१७ ४४	१९ १६	२१ ११	२३ २५	१ ४७	४ ७	६ २५
१८	३	८ ४७	११ ७	१३ ११	१४ ५२	१६ १७	१७ ४०	१९ १३	२१ ७	२३ २१	१ ४४	४ ४	६ २१
१९	४	८ ४३	११ ३	१३ ८	१४ ४८	१६ १४	१७ ३६	१९ ९	२१ ३	२३ १७	१ ४०	४ ०	६ १७
२०	५	८ ३९	१० ५९	१३ ४	१४ ४५	१६ १०	१७ ३२	१९ ५	२० ५९	२३ १३	१ ३६	३ ५६	६ १३
२१	६	८ ३५	१० ५५	१३ ०	१४ ४१	१६ ६	१७ २८	१९ १	२० ५५	२३ ९	१ ३२	३ ५२	६ ९
२२	७	८ ३१	१० ५१	१२ ५६	१४ ३७	१६ २	१७ २४	१८ ५७	२० ५१	२३ ६	१ २८	३ ४८	६ ६
२३	८	८ २७	१० ४७	१२ ५२	१४ ३३	१५ ५८	१७ २०	१८ ५३	२० ४७	२३ २	१ २४	३ ४४	६ २
२४	९	८ २३	१० ४३	१२ ४८	१४ २९	१५ ५४	१७ १६	१८ ४९	२० ४४	२२ ५८	१ २०	३ ४०	५ ५८
२५	१०	८ १९	१० ३९	१२ ४४	१४ २५	१५ ५०	१७ १२	१८ ४५	२० ४०	२२ ५४	१ १६	३ ३६	५ ५४
२६	११	८ १५	१० ३५	१२ ४०	१४ २२	१५ ४६	१७ ८	१८ ४१	२० ३६	२२ ५०	१ १२	३ ३२	५ ५०
२७	१२	८ ११	१० ३१	१२ ३६	१४ १७	१५ ४२	१७ ४	१८ ३७	२० ३२	२२ ४६	१ ८	३ २८	५ ४६
२८	१३	८ ७	१० २८	१२ ३२	१४ १३	१५ ३८	१७ १	१८ ३३	२० २८	२२ ४२	१ ४	३ २४	५ ४२
२९	१४	८ ३	१० २४	१२ २८	१४ ९	१५ ३४	१६ ५७	१८ २९	२० २४	२२ ३८	१ ०	३ २०	५ ३८
३०	१५	८ ०	१० २०	१२ २४	१४ ५	१५ ३०	१६ ५३	१८ २५	२० २०	२२ ३४	० ५६	३ १६	५ ३४
३१	१६	७ ५६	१० १६	१२ २०	१४ १	१५ २६	१६ ४९	१८ २१	२० १६	२२ ३०	० ५२	३ १२	५ ३०
नवम्बर १	१७	७ ५२	१० १२	१२ १६	१३ ५७	१५ २२	१६ ४५	१८ १७	२० १२	२२ २६	० ४८	३ ९	५ २६
२	१८	७ ४८	१० ८	१२ १२	१३ ५३	१५ १८	१६ ४१	१८ १३	२० ८	२२ २२	० ४५	३ [illegible]	५ २२
३	१९	७ ४४	१० ४	१२ ९	१३ ४९	१५ १५	१६ ३७	१८ ९	२० ४	२२ १८	० ४१	३ १	५ १८
४	२०	७ ४०	१० ०	१२ ५	१३ ४६	१५ ११	१६ ३३	१८ ६	२० ०	२२ १५	० ३७	२ ५७	५ १४
५	२१	७ ३६	९ ५६	१२ १	१३ ४२	१५ ७	१६ २९	१८ २	१९ ५६	२२ ११	० ३३	२ ५३	५ १०
६	२२	७ ३२	९ ५२	११ ५७	१३ ३८	१५ ३	१६ २५	१७ ५८	१९ ५२	२२ ७	० २९	२ ४९	५ ७
७	२३	७ २८	९ ४८	११ ५३	१३ ३४	१४ ५९	१६ २१	१७ ५४	१९ ४९	२२ ३	० २५	२ ४५	५ ३
८	२४	७ २४	९ ४४	११ ४९	१३ ३०	१४ ५५	१६ १७	१७ ५०	१९ ४५	२१ ५९	० २१	२ ४१	४ ५९
९	२५	७ २०	९ ४०	११ ४५	१३ २६	१४ ५१	१६ १३	१७ ४६	१९ ४१	२१ ५५	० १७	२ ३७	४ ५५
१०	२६	७ १६	९ ३६	११ ४१	१३ २२	१४ ४७	१६ ९	१७ ४२	१९ ३७	२१ ५१	० १३	२ ३३	४ ५१
११	२७	७ १२	९ ३२	११ ३७	१३ १८	१४ ४३	१६ ५	१७ ३८	१९ ३३	२१ ४७	० ९	२ २९	४ ४७
१२	२८	७ ८	९ २९	११ ३३	१३ १४	१४ ३९	१६ २	१७ ३४	१९ २९	२१ ४३	० ५	२ २५	४ ४३
१३	२९	७ ५	९ २५	११ २९	१३ १०	१४ ३५	१५ ५८	१७ ३०	१९ २५	२१ ३९	० १	२ २१	४ ३९
१४	३०	७ १	९ २१	११ २५	१३ ६	१४ ३१	१५ ५४	१७ २६	१९ २१	२१ ३५	२३ ५७	२ १७	४ ३५
१५	मा.१	६ ५७											

मार्गशीर्ष

अंग्रेज़ी तारीखें	मार्गशीर्ष प्रविष्टे	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुंभ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.
नवम्बर १५	१	९ १७	११ २१	१३ २	१४ २७	१५ ५०	१७ २२	१९ १७	२१ ३१	२३ ५३	२ १३	४ ३१	६ ५३
१६	२	९ १३	११ १७	१२ ५८	१४ २३	१५ ४६	१७ १८	१९ १३	२१ २७	२३ ५०	२ १०	४ २७	६ ४९
१७	३	९ ९	११ १३	१२ ५४	१४ १९	१५ ४२	१७ १५	१९ ९	२१ २३	२३ ४६	२ ६	४ २३	६ ४५
१८	४	९ ५	११ १०	१२ ५०	१४ १६	१५ ३८	१७ ११	१९ ५	२१ १९	२३ ४२	२ २	४ १९	६ ४१
१९	५	९ १	११ ६	१२ ४७	१४ १२	१५ ३४	१७ ७	१९ १	२१ १६	२३ ३८	१ ५८	४ १५	६ ३७
२०	६	८ ५७	११ २	१२ ४३	१४ ८	१५ ३०	१७ ३	१८ ५७	२१ १२	२३ ३४	१ ५४	४ १२	६ ३३
२१	७	८ ५३	१० ५८	१२ ३९	१४ ४	१५ २६	१६ ५९	१८ ५३	२१ ८	२३ ३०	१ ५०	४ ८	६ २९
२२	८	८ ४९	१० ५४	१२ ३५	१४ ०	१५ २२	१६ ५५	१८ ५०	२१ ४	२३ २६	१ ४६	४ ४	६ २५
२३	९	८ ४५	१० ५०	१२ ३१	१३ ५६	१५ १८	१६ ५१	१८ ४६	२१ ०	२३ २२	१ ४२	४ ०	६ २१
२४	१०	८ ४१	१० ४६	१२ २७	१३ ५२	१५ १४	१६ ४७	१८ ४२	२० ५६	२३ १८	१ ३८	३ ५६	६ १७
२५	११	८ ३७	१० ४२	१२ २३	१३ ४८	१५ १०	१६ ४३	१८ ३८	२० ५२	२३ १४	१ ३४	३ ५२	६ १३
२६	१२	८ ३३	१० ३८	१२ १९	१३ ४४	१५ ७	१६ ३९	१८ ३४	२० ४८	२३ १०	१ ३०	३ ४८	६ ९
२७	१३	८ ३०	१० ३४	१२ १५	१३ ४०	१५ ३	१६ ३५	१८ ३०	२० ४४	२३ ६	१ २६	३ ४४	६ ६
२८	१४	८ २६	१० ३०	१२ ११	१३ ३६	१४ ५९	१६ ३१	१८ २६	२० ४०	२३ २	१ २२	३ ४०	६ २
२९	१५	८ २२	१० २६	१२ ७	१३ ३२	१४ ५५	१६ २७	१८ २२	२० ३६	२२ ५८	१ १८	३ ३६	५ ५८
३०	१६	८ १८	१० २२	१२ ३	१३ २८	१४ ५१	१६ २३	१८ १८	२० ३२	२२ ५४	१ १४	३ ३२	५ ५४
दिसम्बर १	१७	८ १४	१० १८	११ ५९	१३ २४	१४ ४७	१६ २०	१८ १४	२० २८	२२ ५१	१ ११	३ २८	५ ५०
२	१८	८ १०	१० १५	११ ५५	१३ २१	१४ ४३	१६ १६	१८ १०	२० २४	२२ ४७	१ ७	३ २४	५ ४६
३	१९	८ ६	१० ११	११ ५२	१३ १७	१४ ३९	१६ १२	१८ ६	२० २०	२२ ४३	१ ३	३ २०	५ ४२
४	२०	८ २	१० ७	११ ४८	१३ १३	१४ ३५	१६ ८	१८ २	२० १७	२२ ३९	० ५९	३ १६	५ ३८
५	२१	७ ५८	१० ३	११ ४४	१३ ९	१४ ३१	१६ ४	१७ ५८	२० १३	२२ ३५	० ५५	३ १३	५ ३४
६	२२	७ ५४	९ ५९	११ ४०	१३ ५	१४ २७	१६ ०	१७ ५४	२० ९	२२ ३१	० ५१	३ ९	५ ३०
७	२३	७ ५०	९ ५५	११ ३६	१३ १	१४ २३	१५ ५६	१७ ५१	२० ५	२२ २७	० ४७	३ ५	५ २६
८	२४	७ ४६	९ ५१	११ ३२	१२ ५७	१४ १९	१५ ५२	१७ ४७	२० १	२२ २३	० ४३	३ १	५ २२
९	२५	७ ४२	९ ४७	११ २८	१२ ५३	१४ १५	१५ ४८	१७ ४३	१९ ५७	२२ १९	० ३९	२ ५७	५ १८
१०	२६	७ ३८	९ ४३	११ २४	१२ ४९	१४ ११	१५ ४४	१७ ३९	१९ ५३	२२ १५	० ३५	२ ५३	५ १४
११	२७	७ ३५	९ ३९	११ २०	१२ ४५	१४ ८	१५ ४०	१७ ३५	१९ ४९	२२ ११	० ३१	२ ४९	५ १०
१२	२८	७ ३१	९ ३५	११ १६	१२ ४१	१४ ४	१५ ३६	१७ ३१	१९ ४५	२२ ७	० २७	२ ४५	५ ७
१३	२९	७ २७	९ ३१	११ १२	१२ ३७	१४ ०	१५ ३२	१७ २७	१९ ४१	२२ ३	० २३	२ ४१	५ ३
१४	३०	७ २३	९ २७	११ ८	१२ ३३	१३ ५६	१५ २८	१७ २३	१९ ३७	२१ ५९	० १९	२ ३७	४ ५९
१५	पौ.१	७ १९											

दैनिक लग्न सारणी, चंडीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा.स्टैं. टा.]

पौष

मास	अंग्रेज़ी तारीखें	पौष प्रविष्टे	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.
दिसम्बर	१५	१	९ २३	११ ४	१२ २९	१३ ५२	१५ २४	१७ १९	१९ ३३	२१ ५६	० १६	२ ३३	४ ५५	७ १५
	१६	२	९ १९	११ ०	१२ २५	१३ ४८	१५ २१	१७ १५	१९ २९	२१ ५२	० १२	२ २९	४ ५१	७ ११
	१७	३	९ १६	१० ५६	१२ २२	१३ ४४	१५ १७	१७ ११	१९ २५	२१ ४८	० ८	२ २५	४ ४७	७ ७
	१८	४	९ १२	१० ५३	१२ १८	१३ ४०	१५ १३	१७ ७	१९ २२	२१ ४४	० ४	२ २१	४ ४३	७ ३
	१९	५	९ ८	१० ४९	१२ १४	१३ ३६	१५ ९	१७ ३	१९ १८	२१ ४०	० ००	२ १७	४ ३९	६ ५९
	२०	६	९ ४	१० ४५	१२ १०	१३ ३२	१५ ५	१६ ५९	१९ १४	२१ ३६	२३ ५६	२ १४	४ ३५	६ ५५
	२१	७	९ ०	१० ४१	१२ ६	१३ २८	१५ १	१६ ५६	१९ १०	२१ ३२	२३ ५२	२ १०	४ ३१	६ ५१
	२२	८	८ ५६	१० ३७	१२ २	१३ २४	१४ ५७	१६ ५२	१९ ६	२१ २८	२३ ४८	२ ६	४ २७	६ ४७
	२३	९	८ ५२	१० ३३	११ ५८	१३ २०	१४ ५३	१६ ४८	१९ २	२१ २४	२३ ४४	२ २	४ २३	६ ४३
	२४	१०	८ ४८	०२ ९	११ ५४	१३ १६	१४ ४९	१६ ४४	१८ ५८	२१ २०	२३ ४०	१ ५८	४ १९	६ ३९
	२५	११	८ ४४	१० २५	११ ५०	१३ १२	१४ ४५	१६ ४०	१८ ५४	२१ १६	२३ ३६	१ ५४	४ १५	६ ३६
	२६	१२	८ ४०	१० २१	११ ४६	१३ ९	१४ ४१	१६ ३६	१८ ५०	२१ १२	२३ ३२	१ ५०	४ १२	६ ३२
	२७	१३	८ ३६	१० १७	११ ४२	१३ ५	१४ ३७	१६ ३२	१८ ४६	२१ ८	२३ २८	१ ४६	४ ८	६ २८
	२८	१४	८ ३२	१० १३	११ ३८	१३ १	१४ ३३	१६ २८	१८ ४२	२१ ४	२३ २४	१ ४२	४ ४	६ २४
	२९	१५	८ २८	१० ९	११ ३४	१२ ५७	१४ २९	१६ २४	१८ ३८	२१ ०	२३ २०	१ ३८	४ ०	६ २०
	३०	१६	८ २४	१० ५	११ ३०	१२ ५३	१४ २६	१६ २०	१८ ३४	२० ५७	२३ १७	१ ३४	३ ५६	६ १६
	३१	१७	८ २०	१० १	११ २६	१२ ४९	१४ २२	१६ १६	१८ ३०	२० ५३	२३ १३	१ ३०	३ ५२	६ १२
जनवरी	१	१८	८ १६	९ ५७	११ २२	१२ ४४	१४ १७	१६ ११	१८ २६	२० ४८	२३ ८	१ २५	३ ४७	६ ७
	२	१९	८ १२	९ ५३	११ १८	१२ ४०	१४ १३	१६ ७	१८ २२	२० ४४	२३ ४	१ २१	३ ४३	६ ३
	३	२०	८ ८	९ ४९	११ १४	१२ ३६	१४ ९	१६ ३	१८ १८	२० ४०	२३ ०	१ १७	३ ३९	५ ५९
	४	२१	८ ४	९ ४५	११ १०	१२ ३२	१४ ५	१५ ५९	१८ १४	२० ३६	२२ ५६	१ १४	३ ३५	५ ५५
	५	२२	८ ०	९ ४१	११ ६	१२ २८	१४ १	१५ ५६	१८ १०	२० ३२	२२ ५२	१ १०	३ ३१	५ ५१
	६	२३	७ ५६	९ ३७	११ २	१२ २४	१३ ५७	१५ ५२	१८ ६	२० २८	२२ ४८	१ ६	३ २७	५ ४७
	७	२४	७ ५२	९ ३३	१० ५८	१२ २०	१३ ५३	१५ ४८	१८ २	२० २४	२२ ४४	१ २	३ २३	५ ४३
	८	२५	७ ४८	९ २९	१० ५४	१२ १६	१३ ४९	१५ ४४	१७ ५८	२० २०	२२ ४०	० ५८	३ १९	५ ३९
	९	२६	७ ४४	९ २५	१० ५०	१२ १३	१३ ४५	१५ ४०	१७ ५४	२० १६	२२ ३६	० ५४	३ १५	५ ३६
	१०	२७	७ ४०	९ २१	१० ४६	१२ ९	१३ ४१	१५ ३६	१७ ५०	२० १२	२२ ३२	० ५०	३ १२	५ ३२
	११	२८	७ ३६	९ १७	१० ४२	१२ ५	१३ ३७	१५ ३२	१७ ४६	२० ८	२२ २८	० ४६	३ ८	५ २८
	१२	२९	७ ३२	९ १३	१० ३८	१२ १	१३ ३३	१५ २८	१७ ४२	२० ४	२२ २४	० ४२	३ ४	५ २४
	१३	मा. १	७ २८											

माघ

मास	अंग्रेज़ी तारीखें	माघ प्रविष्टे	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.
जनवरी	१३	१	९ ९	१० ३४	११ ५७	१३ २९	१५ २४	१७ ३८	२० ०	२२ २०	० ३८	३ ०	५ २०	७ २४
	१४	२	९ ५	१० ३०	११ ५३	१३ २६	१५ २०	१७ ३४	१९ ५७	२२ १७	० ३४	२ ५६	५ १६	७ २०
	१५	३	९ १	१० २७	११ ४९	१३ २२	१५ १६	१७ ३०	१९ ५३	२२ १३	० ३०	२ ५२	५ १२	७ १७
	१६	४	८ ५८	१० २३	११ ४५	१३ १८	१५ १२	१७ २६	१९ ४९	२२ ९	० २६	२ ४८	५ ८	७ १३
	१७	५	८ ५४	१० १९	११ ४१	१३ १४	१५ ८	१७ २३	१९ ४५	२२ ५	० २२	२ ४४	५ ४	७ ९
	१८	६	८ ५०	१० १५	११ ३७	१३ १०	१५ ४	१७ १९	१९ ४१	२२ १	० १९	२ ४०	५ ०	७ ५
	१९	७	८ ४६	१० ११	११ ३३	१३ ६	१५ १	१७ १५	१९ ३७	२१ ५७	० १५	२ ३६	४ ५६	७ १
	२०	८	८ ४२	१० ७	११ २९	१३ २	१४ ५७	१७ ११	१९ ३३	२१ ५३	० ११	२ ३२	४ ५२	६ ५७
	२१	९	८ ३८	१० ३	११ २५	१२ ५८	१४ ५३	१७ ७	१९ २९	२१ ४९	० ७	२ २८	४ ४८	६ ५३
	२२	१०	८ ३४	९ ५९	११ २१	१२ ५४	१४ ४९	१७ ३	१९ २५	२१ ४५	० ३	२ २४	४ ४४	६ ४९
	२३	११	८ ३०	९ ५५	११ १७	१२ ५०	१४ ४५	१६ ५९	१९ २१	२१ ४१	२३ ५९	२ २०	४ ४१	६ ४५
	२४	१२	८ २६	९ ५१	११ १४	१२ ४६	१४ ४१	१६ ५५	१९ १७	२१ ३७	२३ ५५	२ १६	४ ३७	६ ४१
	२५	१३	८ २२	९ ४७	११ १०	१२ ४२	१४ ३७	१६ ५१	१९ १३	२१ ३३	२३ ५१	२ १३	४ ३३	६ ३७
	२६	१४	८ १८	९ ४३	११ ६	१२ ३८	१४ ३३	१६ ४७	१९ ९	२१ २९	२३ ४७	२ ९	४ २९	६ ३३
	२७	१५	८ १४	९ ३९	११ २	१२ ३४	१४ २९	१६ ४३	१९ ५	२१ २५	२३ ४३	२ ५	४ २५	६ २९
	२८	१६	८ १०	९ ३५	१० ५८	१२ ३०	१४ २५	१६ ३९	१९ २	२१ २२	२३ ३९	२ १	४ २१	६ २५
	२९	१७	८ ६	९ ३१	१० ५४	१२ २७	१४ २१	१६ ३५	१८ ५८	२१ १८	२३ ३५	१ ५७	४ १७	६ २२
	३०	१८	८ २	९ २८	१० ५०	१२ २३	१४ १७	१६ ३१	१८ ५४	२१ १४	२३ ३१	१ ५३	४ १३	६ १८
	३१	१९	७ ५९	९ २४	१० ४६	१२ १९	१४ १३	१६ २८	१८ ५०	२१ १०	२३ २७	१ ४९	४ ९	६ १४
फरवरी	१	२०	७ ५५	९ २०	१० ४२	१२ १५	१४ ९	१६ २४	१८ ४६	२१ ६	२३ २३	१ ४५	४ ५	६ १०
	२	२१	७ ५१	९ १६	१० ३८	१२ ११	१४ ५	१६ २०	१८ ४२	२१ २	२३ २०	१ ४१	४ १	६ ६
	३	२२	७ ४७	९ १२	१० ३४	१२ ७	१४ २	१६ १६	१८ ३८	२० ५८	२३ १६	१ ३७	३ ५७	६ २
	४	२३	७ ४३	९ ८	१० ३०	१२ ३	१३ ५८	१६ १२	१८ ३४	२० ५४	२३ १२	१ ३३	३ ५३	५ ५८
	५	२४	७ ३९	९ ४	१० २६	११ ५९	१३ ५४	१६ ८	१८ ३०	२० ५०	२३ ८	१ २९	३ ४९	५ ५४
	६	२५	७ ३५	९ ०	१० २२	११ ५५	१३ ५०	१६ ४	१८ २६	२० ४६	२३ ४	१ २५	३ ४५	५ ५०
	७	२६	७ ३१	८ ५६	१० १९	११ ५१	१३ ४६	१६ ०	१८ २२	२० ४२	२३ ०	१ २१	३ ४२	५ ४६
	८	२७	७ २७	८ ५२	१० १५	११ ४७	१३ ४२	१५ ५६	१८ १८	२० ३८	२२ ५६	१ १७	३ ३८	५ ४२
	९	२८	७ २३	८ ४८	१० ११	११ ४३	१३ ३८	१५ ५२	१८ १४	२० ३४	२२ ५२	१ १४	३ ३४	५ ३८
	१०	२९	७ १९	८ ४४	१० ७	११ ३९	१३ ३४	१५ ४८	१८ १०	२० ३०	२२ ४८	१ १०	३ ३०	५ ३४
	११	३०	७ १५	८ ४०	१० ३	११ ३५	१३ ३०	१५ ४४	१८ ६	२० २६	२२ ४४	१ ६	३ २६	५ ३०
	१२	फा. १	७ ११											

दैनिक लग्न सारणी, चंडीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा.स्टैं. टा.]

फाल्गुन

अंग्रेज़ी तारीखें		फाल्गुन प्रविष्टे	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.
फरवरी	१२	१	८ ३६	९ ५९	११ ३२	१३ २६	१५ ४०	१८ ३	२० २३	२२ ४०	१ २	३ २२	५ २६	७ ७
	१३	२	८ ३३	९ ५५	११ २८	१३ २२	१५ ३६	१७ ५९	२० १९	२२ ३६	० ५८	३ १८	५ २३	७ ४
	१४	३	८ २९	९ ५१	११ २४	१३ १८	१५ ३२	१७ ५५	२० १५	२२ ३२	० ५४	३ १४	५ १९	७ ०
	१५	४	८ २५	९ ४७	११ २०	१३ १४	१५ २९	१७ ५१	२० ११	२२ २८	० ५०	३ १०	५ १५	६ ५६
	१६	५	८ २१	९ ४३	११ १६	१३ १०	१५ २५	१७ ४७	२० ७	२२ २५	० ४६	३ ६	५ ११	६ ५२
	१७	६	८ १७	९ ३९	११ १२	१३ ६	१५ २१	१७ ४३	२० ३	२२ २१	० ४२	३ २	५ ७	६ ४८
	१८	७	८ १३	९ ३५	११ ८	१३ ३	१५ १७	१७ ३९	१९ ५९	२२ १७	० ३८	२ ५८	५ ३	६ ४४
	१९	८	८ ९	९ ३१	११ ४	१२ ५९	१५ १३	१७ ३५	१९ ५५	२२ १३	० ३४	२ ५४	४ ५९	६ ४०
	२०	९	८ ५	९ २७	११ ०	१२ ५५	१५ ९	१७ ३१	१९ ५१	२२ ९	० ३०	२ ५०	४ ५५	६ ३६
	२१	१०	८ १	९ २३	१० ५६	१२ ५१	१५ ५	१७ २७	१९ ४७	२२ ५	० २६	२ ४६	४ ५१	६ ३२
	२२	११	७ ५७	९ २०	१० ५२	१२ ४७	१५ १	१७ २३	१९ ४३	२२ १	० २२	२ ४३	४ ४७	६ २८
	२३	१२	७ ५३	९ १६	१० ४८	१२ ४३	१४ ५७	१७ १९	१९ ३९	२१ ५७	० १९	२ ३९	४ ४३	६ २४
	२४	१३	७ ४९	९ १२	१० ४४	१२ ३९	१४ ५३	१७ १५	१९ ३५	२१ ५३	० १५	२ ३५	४ ३९	६ २०
	२५	१४	७ ४५	९ ८	१० ४०	१२ ३५	१४ ४९	१७ ११	१९ ३१	२१ ४९	० ११	२ ३१	४ ३५	६ १६
	२६	१५	७ ४१	९ ४	१० ३६	१२ ३२	१४ ४५	१७ ७	१९ २७	२१ ४५	० ७	२ २७	४ ३१	६ १२
	२७	१६	७ ३७	९ ०	१० ३३	१२ २७	१४ ४१	१७ ४	१९ २४	२१ ४१	० ३	२ २३	४ २८	६ ८
	२८	१७	७ ३४	८ ५६	१० २९	१२ २३	१४ ३७	१७ ०	१९ २०	२१ ३७	२३ ५९	२ १९	४ २४	६ ५
मार्च	१	१८	७ ३०	८ ५२	१० २५	१२ १९	१४ ३३	१६ ५६	१९ १६	२१ ३३	२३ ५५	२ १५	४ २०	६ १
	२	१९	७ २६	८ ४८	१० २१	१२ १५	१४ ३०	१६ ५२	१९ १२	२१ २९	२३ ५१	२ ११	४ १६	५ ५७
	३	२०	७ २२	८ ४४	१० १७	१२ ११	१४ २६	१६ ४८	१९ ८	२१ २६	२३ ४७	२ ७	४ १२	५ ५३
	४	२१	७ १८	८ ४०	१० १३	१२ ८	१४ २२	१६ ४४	१९ ४	२१ २२	२३ ४३	२ ३	४ ८	५ ४९
	५	२२	७ १४	८ ३६	१० ९	१२ ४	१४ १८	१६ ४०	१९ ०	२१ १८	२३ ३९	१ ५९	४ ४	५ ४५
	६	२३	७ १०	८ ३२	१० ५	१२ ०	१४ १४	१६ ३६	१८ ५६	२१ १४	२३ ३५	१ ५५	४ ०	५ ४१
	७	२४	७ ६	८ २८	१० १	११ ५६	१४ १०	१६ ३२	१८ ५२	२१ १०	२३ ३१	१ ५१	३ ५६	५ ३७
	८	२५	७ २	८ २४	९ ५७	११ ५२	१४ ६	१६ २८	१८ ४८	२१ ६	२३ २७	१ ४८	३ ५२	५ ३३
	९	२६	६ ५८	८ २१	९ ५३	११ ४८	१४ २	१६ २४	१८ ४४	२१ २	२३ २३	१ ४४	३ ४८	५ २९
	१०	२७	६ ५४	८ १७	९ ४९	११ ४४	१३ ५८	१६ २०	१८ ४०	२० ५८	२३ २०	१ ४०	३ ४४	५ २५
	११	२८	६ ५०	८ १३	९ ४५	११ ४०	१३ ५४	१६ १६	१८ ३६	२० ५४	२३ १६	१ ३६	३ ४०	५ २१
	१२	२९	६ ४६	८ ९	९ ४१	११ ३६	१३ ५०	१६ १२	१८ ३२	२० ५०	२३ १२	१ ३२	३ ३६	५ १७
	१३	३०	६ ४२	८ ५	९ ३८	११ ३२	१३ ४६	१६ ९	१८ २९	२० ४६	२३ ८	१ २८	३ ३२	५ १३
	१४	चैत्र	६ ३८											

चैत्र

अंग्रेज़ी तारीखें		चैत्र प्रविष्टे	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुंभ घं. मि.
मार्च	१४	१	८ १	९ ३४	११ २८	१३ ४२	१६ ५	१८ २५	२० ४२	२३ ४	१ २४	३ २९	५ ९	६ ३५
	१५	२	७ ५७	९ ३०	११ २४	१३ ३८	१६ १	१८ २१	२० ३८	२३ ०	१ २०	३ २५	५ ६	६ ३१
	१६	३	७ ५३	९ २६	११ २०	१३ ३४	१५ ५७	१८ १७	२० ३४	२२ ५६	१ १६	३ २१	५ २	६ २७
	१७	४	७ ४९	९ २२	११ १६	१३ ३१	१५ ५३	१८ १३	२० ३०	२२ ५२	१ १२	३ १७	४ ५८	६ २३
	१८	५	७ ४५	९ १८	११ १२	१३ २७	१५ ४९	१८ ९	२० २७	२२ ४८	१ ८	३ १३	४ ५४	६ १९
	१९	६	७ ४१	९ १४	११ ९	१३ २३	१५ ४५	१८ ५	२० २३	२२ ४४	१ ४	३ ९	४ ५०	६ १५
	२०	७	७ ३७	९ १०	११ ५	१३ १९	१५ ४१	१८ १	२० १९	२२ ४०	१ ०	३ ५	४ ४६	६ ११
	२१	८	७ ३३	९ ६	११ १	१३ १५	१५ ३७	१७ ५७	२० १५	२२ ३६	० ५६	३ १	४ ४२	६ ७
	२२	९	७ २९	९ २	१० ५७	१३ ११	१५ ३३	१७ ५३	२० ११	२२ ३२	० ५२	२ ५७	४ ३८	६ ३
	२३	१०	७ २५	८ ५८	१० ५३	१३ ७	१५ २९	१७ ४९	२० ७	२२ २८	० ४९	२ ५३	४ ३४	५ ५९
	२४	११	७ २२	८ ५४	१० ४९	१३ ३	१५ २५	१७ ४५	२० ३	२२ २५	० ४५	२ ४९	४ ३०	५ ५५
	२५	१२	७ १८	८ ५०	१० ४५	१२ ५९	१५ २१	१७ ४१	१९ ५९	२२ २१	० ४१	२ ४५	४ २६	५ ५१
	२६	१३	७ १४	८ ४६	१० ४१	१२ ५५	१५ १७	१७ ३७	१९ ५५	२२ १७	० ३७	२ ४१	४ २२	५ ४७
	२७	१४	७ १०	८ ४२	१० ३७	१२ ५१	१५ १३	१७ ३३	१९ ५१	२२ १३	० ३३	२ ३७	४ १८	५ ४३
	२८	१५	७ ६	८ ३८	१० ३३	१२ ४७	१५ १०	१७ ३०	१९ ४७	२२ ९	० २९	२ ३३	४ १४	५ ३९
	२९	१६	७ २	८ ३५	१० २९	१२ ४३	१५ ६	१७ २६	१९ ४३	२२ ५	० २५	२ ३०	४ १०	५ ३६
	३०	१७	६ ५८	८ ३१	१० २५	१२ ३९	१५ २	१७ २२	१९ ४०	२२ १	० २१	२ २६	४ ७	५ ३२
	३१	१८	६ ५४	८ २७	१० २१	१२ ३६	१४ ५८	१७ १८	१९ ३६	२१ ५७	० १७	२ २२	४ ३	५ २८
अप्रैल	१	१९	६ ५०	८ २३	१० १७	१२ ३२	१४ ५४	१७ १४	१९ ३२	२१ ५३	० १३	२ १८	३ ५९	५ २४
	२	२०	६ ४६	८ १९	१० १३	१२ २८	१४ ५०	१७ १०	१९ २८	२१ ४९	० ९	२ १४	३ ५५	५ २०
	३	२१	६ ४२	८ १५	१० १०	१२ २४	१४ ४६	१७ ६	१९ २४	२१ ४५	० ५	२ १०	३ ५१	५ १६
	४	२२	६ ३८	८ ११	१० ६	१२ २०	१४ ४२	१७ २	१९ २०	२१ ४१	० १	२ ६	३ ४७	५ १२
	५	२३	६ ३४	८ ७	१० २	१२ १६	१४ ३८	१६ ५८	१९ १६	२१ ३७	२३ ५७	२ २	३ ४३	५ ८
	६	२४	६ ३०	८ ३	९ ५८	१२ १२	१४ ३४	१६ ५४	१९ १२	२१ ३३	२३ ५३	१ ५८	३ ३९	५ ४
	७	२५	६ २७	७ ५९	९ ५४	१२ ८	१४ ३०	१६ ५०	१९ ८	२१ २९	२३ ५०	१ ५४	३ ३५	५ ०
	८	२६	६ २३	७ ५५	९ ५०	१२ ४	१४ २६	१६ ४६	१९ ४	२१ २६	२३ ४६	१ ५०	३ ३१	४ ५६
	९	२७	६ १९	७ ५१	९ ४६	१२ ०	१४ २२	१६ ४२	१९ ०	२१ २२	२३ ४२	१ ४६	३ २७	४ ५२
	१०	२८	६ १५	७ ४७	९ ४२	११ ५६	१४ १८	१६ ३८	१८ ५६	२१ १८	२३ ३८	१ ४२	३ २३	४ ४८
	११	२९	६ ११	७ ४३	९ ३८	११ ५२	१४ १४	१६ ३४	१८ ५२	२१ १४	२३ ३४	१ ३८	३ १९	४ ४४
	१२	३०	६ ७	७ ४०	९ ३४	११ ४८	१४ ११	१६ ३१	१८ ४८	२१ १०	२३ ३०	१ ३५	३ १५	४ ४१
	१३	वै१	६ ३											

भारत के प्रमुख-प्रमुख नगरों में लग्नों का समाप्तिकाल

इस पंचाग में जो दैनिक लग्नसारणी दी गई है, वह चण्डीगढ़ में लग्नों का समाप्तिकाल (भा.स्टै.टा.) बतलाती है। इसी लग्नसारणी से नीचे दिए गए कोष्ठक की सहायता से भारत के प्रमुख-प्रमुख नगरों में लग्नों का समाप्तिकाल (भा.स्टै.टा.) आसानी से इस प्रकार जाना जा सकता है :-दैनिक लग्नसारणी से अपनी अभीष्ट तारीख को चण्डीगढ़ में लग्न का समाप्तिकाल जान लीजिए और उसमें अपने नगर के आगे और लग्न के नीचे इस कोष्ठक में लिखे मिनटों को चिह्न के अनुसार जोड़ने या घटाने से उस नगर में लग्न का समाप्ति काल मालूम हो जाएगा। **जैसे**-मद्रास में ९ अप्रैल को मिथुन लग्न का समाप्ति काल जानना है। ९ अप्रैल को चण्डीगढ़ में मिथुन का समाप्तिकाल १२ घं. ० मि. है, यह हमने दैनिक लग्नसारणी से ज्ञात किया। नीचे कोष्ठक में मद्रास, के आगे मिथुन के नीचे + १९ मिनट लिखे हैं। + होने से १९ मिनटों को १२ घं. ० मिनट में जोड़ने पर १२ घं. १९ मिनट मद्रास में ९ अप्रैल को मिथुनलग्न का समाप्तिकाल (भा.स्टै.टा.) बन गया।

लग्न / नगर	मेष मि.	वृष मि.	मिथुन मि.	कर्क मि.	सिंह मि.	कन्या मि.	तुला मि.	वृश्चिक मि.	धनु मि.	मकर मि.	कुंभ मि.	मीन मि.
अजमेर	+१७	+१८	+१७	+१४	+१०	+६	+१	-१	०	+४	+८	+१२
अम्बाला	०	०	०	०	०	०	-१	-१	-१	०	०	०
अमृतसर	+७	+६	+६	+७	+८	+९	+१०	+१०	+१०	+९	+८	+७
अलवर	+७	+८	+७	+५	+२	-२	-५	-६	-६	-३	०	+४
अलीगढ़	+१	+२	+१	-१	-४	-८	-११	-१२	-१२	-९	-६	-२
अहमदाबाद	+३०	+३३	+३१	+२५	+१८	+११	+४	-१	+१	+८	+१५	+२३
आगरा	+१	+३	+२	-१	-४	-८	-११	-१३	-१३	-९	-६	-२
उज्जैन	+१८	+२१	+१९	+१३	+६	-१	-८	-१३	-११	-४	+३	+११
उदयपुर	+२४	+२६	+२५	+२०	+१४	+८	+२	-२	०	+५	+१२	+१८
इन्दौर	+१८	+२२	+२०	+१४	+५	-३	-१०	-१५	-१३	-६	+३	+१०
करनाल	+१	+१	+१	०	०	-१	-२	-२	-२	-१	-१	०
कलकत्ता	-३२	-२८	-३०	-३६	-४५	-५३	-६०	-६५	-६३	-५६	-४७	-४०
कांगड़ा	०	-१	-१	+१	+२	+३	+५	+६	+५	+४	+३	+१
कानपुर	-६	-५	-६	-९	-१३	-१७	-२२	-२४	-२३	-१९	-१५	-११
काशी	-१५	-१३	-१४	-१८	-२४	-२९	-३४	-३७	-३६	-३१	-२५	-२०
कुरुक्षेत्र	+२	+२	+२	+१	+१	०	-१	-१	-१	०	०	+१
कोटा	१४	+१६	+१५	+११	+५	०	-५	-८	-७	-२	+४	+९
गुड़गांव	+४	+४	+४	+२	०	-२	-४	-५	-५	-३	-१	+१
गुरदासपुर	+३	+२	+२	+४	+५	+६	+८	+९	+८	+७	+६	+४
गोरखपुर	-१८	-१७	-१८	-२१	-२५	-२९	-३४	-३६	-३५	-३१	-२७	-२३
ग्वालियर	+३	+५	+४	०	-४	-९	-१३	-१६	-१५	-११	-६	-२
चम्बा	-१	-२	-१	०	+२	+५	+७	+८	+७	+६	+३	+१
जम्मू	+४	+३	+४	+५	+७	+१०	+१२	+१३	+१२	+११	+८	+६
जयपुर	+११	+१२	+११	+८	+५	+१	-३	-५	-४	०	+३	+७
जालन्धर	+५	+५	+५	+६	+६	+६	+६	+६	+६	+६	+६	+५
जीन्द	+५	+६	+५	+४	+३	+१	०	-१	-१	+१	+२	+४
जैसलमेर	+३१	+३२	+३१	+२८	+२५	+२१	+१७	+१५	+१६	+२०	+२३	+२७
जोधपुर	+२३	+२५	+२४	+२०	+१६	+११	+७	+४	+५	+९	+१४	+१८
झांसी	+३	+५	+४	०	-६	-११	-१६	-१९	-१८	-१३	-७	-२
दिल्ली	+३	+३	+३	+१	-१	-३	-५	-६	-६	-४	-२	०
देहरादून	-५	-५	-५	-५	-५	-५	-६	-६	-६	-५	-५	-५
नागपुर	+८	+११	+१०	+२	-७	-१७	-२६	-३१	-३९	-२०	-११	-२
नाभा	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+२	+२	+२	+३	+३	३

लग्न / नगर	मेष मि.	वृष मि.	मिथुन मि.	कर्क मि.	सिंह मि.	कन्या मि.	तुला मि.	वृश्चिक मि.	धनु मि.	मकर मि.	कुंभ मि.	मीन मि.
नैनीताल	-८	-७	-८	-९	-१०	-१२	-१३	-१४	-१४	-१२	-११	-९
पटियाला	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+१	+१	+१	+२	+२	+२
पठानकोट	+१	+१	+१	+३	+४	+६	+८	+९	+८	+७	+५	+३
पटना	-२४	-२२	-२३	-२७	-३२	-३८	-४२	-४५	-४४	-३९	-३४	-२९
पुंछ	+४	+३	+४	+७	+१०	+१४	+१८	+२०	+१९	+१५	+१२	+८
प्रयाग	-११	-९	-१०	-१४	-१९	-२४	-२९	-३१	-३१	-२६	-२१	-१६
फरीदकोट	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८
फिरोजपुर	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९
बम्बई	+३६	+४१	+३८	+२९	+१८	+७	-४	-१०	-८	+३	+१४	+२५
बरेली	-६	-६	-६	-८	-१०	-१२	-१४	-१५	-१५	-१३	-११	-९
बंगलौर	+२६	+३३	+३०	+१७	०	-१६	-३२	-४०	-३७	-२२	-६	+११
बुलन्दशहर	०	०	०	-२	-४	-६	-८	-९	-९	-७	-५	-३
भटिण्डा	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+७	+७	+७	+८	+८	+८
भरतपुर	+३	+५	+४	+१	-२	-६	-९	-११	-११	-७	-४	०
भुवनेश्वर	-१८	-१४	-१६	-२४	-३४	-४४	-५४	-५८	-५७	-४८	-३८	-२८
भोपाल	+११	+१४	+१२	+६	-१	-८	-१५	-२०	-१८	-११	-४	+४
मद्रास	+१५	+२२	+१९	+६	-११	-२७	-४३	-५१	-४८	-३३	-१७	०
मथुरा	+३	+४	+३	+१	-२	-६	-९	-१०	-१०	-७	-४	०
मण्डी (हि.प्र.)	-२	-३	-३	-२	-१	०	+२	+२	+२	+१	०	-१
मलेरकोटला	+४	+४	+४	+४	+४	+४	+३	+३	+३	+४	+४	+४
मेरठ	-१	०	-१	-२	-३	-५	-६	-७	-७	-५	-४	-२
रोपड	+१	+१	+१	+१	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+१
रोहतक	+४	+५	+४	+३	+१	०	-२	-३	-३	-१	+१	+२
लखनऊ	-९	-८	-९	-१२	-१५	-१९	-२३	-२५	-२४	-२०	-१७	-१३
लुधियाना	+३	+३	+३	+३	+४	+४	+४	+४	+४	+४	+४	+३
शिमला	-२	-२	-२	-२	-१	-१	-१	-१	-१	-१	-१	-२
श्रीनगर (का.)	+१	०	+१	+४	+७	+११	+१५	+१७	+१६	+१२	+९	+५
सहारनपुर	-१	-१	-१	-२	-२	-३	-४	-४	-४	-३	-३	-२
हरिद्वार	-४	-४	-४	-५	-५	-६	-७	-७	-७	-६	-६	-५
हिसार	+७	+८	+७	+६	+५	+३	+२	+१	+१	+३	+४	+६
हैदराबाद	+१५	+२१	+१८	+८	-५	-१७	-२९	-३५	-३३	-२२	-९	+३
होशियारपुर	+२	+१	+१	+२	+३	+४	+५	+५	+५	+४	+३	+२

प्राचीन पद्धति द्वारा लग्न एवं दशम का साधन

जन्मपत्री एवं वर्षफल आदि की गणित में शुद्ध लग्न का साधन सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण एवं श्रमसाध्य विषय है। इसके लिए ज्योतिषी को स्थानीय-काल का ज्ञान होना चाहिए, नगरों के अक्षांश-रेखाओं की प्रामाणिक सूची भी उसके पास होनी चाहिए, किंच भिन्न-भिन्न अक्षांशों की लग्न सारणियां उसके पास होना नितान्त आवश्यक है,क्योंकि किसी स्थान पर लग्न स्पष्ट करने के लिए उस स्थान के अक्षांश की लग्न सारणी का ही प्रयोग होता है। आगे हमने साम्पातिक काल द्वारा लग्न एवं दशम लग्न स्पष्ट करने की नवीन विधि दी है। यह विधि अपेक्षाकृत अधिक सूक्ष्म और सुविधाजनक है। इस विधि में अभीष्ट नगर का सूर्योदय, सूर्योदयात् इष्ट काल, दिनमान और इष्ट कालिक सूर्य की जरूरत नहीं होती, जबकि प्राचीन विधि में इन सबकी जरूरत रहती है। यहां हम लग्न एवं दशम साधन की प्राचीन विधि दे रहे हैं।

लग्न-साधन विधि

जिस नगर में लग्न स्पष्ट करना है, उस नगर में उस दिन का सूक्ष्म सूर्योदय काल ज्ञात कीजिए। सूर्योदय काल से अभीष्ट समय का सूर्योदयात् इष्ट (घ.प.) बना लीजिए और इष्ट कालिक सूर्य स्पष्ट कर लीजिए। इस पंचाग में दी गई ''अक्षांशादि सारणी'' से अपने अभीष्ट नगर का अक्षांश ज्ञात कीजिए। अभीष्ट नगर के अक्षांश वाली लग्न सारणी द्वारा इस प्रकार लग्न स्पष्ट कीजिए:-

आगे २९,३०, ३१ अक्षांशों की तीन लग्न सारणियां दी गई हैं जो दिल्ली, पंजाब तथा हरियाणा के लगभग सभी नगरों के लिए पर्याप्त हैं। अपने अभीष्ट नगर के अक्षांश वाली लग्न सारणी में इष्ट कालिक स्पष्ट सूर्य की राशि के आगे और अंश के नीचे लिखे घड़ी, पलों को लेकर अलग लिख लीजिए। सारणी में इन घड़ी पलों के दाई ओर अगले अंश के नीचे जो घड़ी - पल दिए गए हैं, उनसे इन अलग लिखे गए घड़ी, पलों का अन्तर जानिये। अन्तर के इन पलों को ''सहायक सारणी'' (जो आगे दी गई है) के बाई ओर पहले कालम में देखिये। इसके आगे इस सारणी में जहां स्पष्ट सूर्य की कला-विकलाओं के बराबर या लगभग बराबर कला-विकलाएं लिखी हों उनके बिल्कुल ऊपर सारणी की पहली लाईन में जो पल लिखे हों उन्हे लेकर अलग लिखे हुए घड़ी, पलों में जोड़ दीजिए और उसमें इष्ट काल के घड़ी पल भी जोड़ दीजिए। इसे हम ''अभीष्ट घड़ी पल'' कहेंगे ''अभीष्ट घड़ी पल '' यदि ६० घड़ी से अधिक हों तो उनमें से ६० घड़ी घटाकर शेष ग्रहण करना चाहिए। ''अभीष्ट घड़ी पलों'' के बराबर (बराबर न मिले तो उनसे कुछ कम) घड़ी पल लग्न सारणी में ढूढ़िये, जिन्हे **''सारणीस्थ घड़ी पल''** कहा जाएगा। ''सारणीस्थ घड़ी पलों'' के बाई ओर लग्न सारणी के पहले कालम में लिखी राशि और सबसे ऊपर लिखे अंशों को अलग लिख लीजिए। ''सारणीस्थ घड़ी पलों'' के दाई ओर सारणी के अगले अंश के नीचे दिये गए घड़ी पलों का ''सारणीस्थ घड़ी पलों'' से अन्तर कीजिए। इसे ''सारणीस्थ अन्तर'' कहेंगे। ''सारणीस्थ घड़ी पलों'' और ''अभीष्ट घड़ी पलों'' का भी अन्तर कीजिए। अन्तर के ये पल ''सहायक सारणी'' के बिल्कुल ऊपर वाली लाईन में जहाँ लिखें हैं, उसके नीचे ''सारणीस्थ अन्तर'' के बराबर पलों के आगे जो कला-विकला मिलें, उन्हें अलग लिखे राशि अंशों मे जोड़ दें। अब इसमें आगे दी गई ''अयनाँश संस्कार सारणी'' से अपने संवत् के आगे दी गई कलाओं को लेकर चिह्न के अनुसार जोड़ने या घटाने पर निरयण लग्न स्पष्ट हो जाएगा।

उदाहरण- मान लीजिए- वि. स. २०२९ के वैशाख प्रविष्टे ३ को ५८ घ. ४५ प. इष्ट पर शिमला (हि.प्र.) में लग्न स्पष्ट करना है। इस समय स्पष्ट सूर्य ० रा., २ अंश ३७ क. ४७ वि. है। शिमला के अक्षांश ३१ अंश ६क. (उत्तर) हैं, अतः ३१ अक्षांश वाली लग्न सारणी में स्पष्ट सूर्य की ० (मेष) राशि के आगे २ अंश के नीचे २ घ. ५५ प. हैं, इन्हे अलग लिखा। सारणी में २ घ. ५५ प. के दाई ओर ३ अंश के नीचे ३ घ. २ प. लिखे हैं। इनका २ घ. ५५ पल. से अन्तर ७ पल है। ''सहायक सारणी'' के बाई ओर पहले कालम में लिखे हुए ७ पल के आगे वाली पंक्ति में स्पष्ट सूर्य की ३७ क. ४७ वि. नहीं मिली। अतः सारणी में इनके लगभग बराबर ३४ क. १७ वि. देखें जिनके बिल्कुल ऊपर ४ प. लिखें हैं। इन्हे अलग लिखे २ घ. ५५ प. में जोड़ा और इष्ट काल के घ. प. भी इसमें जोड़े तो ६१ घ. ४४ प. (६० घड़ी घटाने पर १ घ. ४४ प.) 'अभीष्ट घड़ी पलं' हुए। लग्न सारणी में 'अभीष्ट घड़ी पल' १घ. ४४ प. नहीं हैं, अतः इससे कुछ कम १ घ. ४० पल सारणी में देखें जो ''सारणीस्थ घड़ी पल'' हैं। इनके बाई ओर सारणी के पहले कालम में ११ राशि और बिल्कुल ऊपर की लाईन में २१ अंश लिखें है। इन ११ रा. २१ अं. को अलग लिखा। लग्न सारणी में ''सारणीस्थ घड़ी पलों'' (१ घ. ४० प.) के दाई ओर २२ अंश के नीचे १ घ. ४६ प. का १ घ. ४० पल. से अन्तर ६ प. सारणीस्थ अन्तर है। ''अभीष्ट घड़ी पल'' (१ घ. ४४ प.) ओर सारणीस्थ घड़ी पल (१ घ. ४४ प.) का अन्तर ४ पल है। सहायक सारणी की ऊपर वाली लाइन में लिखे गए ४ पल के नीचे सारणीस्थ अन्तर के बराबर ६ प. के आगे ४० क. ० वि. लिखा है। इन्हे ११ रा. २१ अं. में जोड़ने पर ११ रा. और २१ अ. ४०क. ० वि. हुआ। ''अयनांश संस्कार सारणी '' में वि. सं. २०२९ के आगे + १ कला लिखा है। इसे चिह्नानुसार ११ रा. २१ अं. ४० क. ० वि. में जोड़ने पर ११ रा. २१ अं. ४१ क. ० वि. निरयण लग्न स्पष्ट हुआ।

दशम लग्न साधन

आगे साम्पातिक काल द्वारा दशम लग्न साधन की सरल पद्धति दी है, जिससे अभीष्ट स्थल का सूर्योदय, दिनमान तथा तात्कालिक सूर्य स्पष्ट जानने की आवश्यकता नहीं होती है। प्राचीन पद्धति से, जिसका निर्देश यहां किया जा रहा है, इन सबकी आवश्यकता रहती है।

दशम साधन विधि-इष्ट काल के घ .प. में से दिनार्ध (अभीष्ट नगर के दिनमान का आधा) घटाएं। यदि दिनार्ध से इष्ट कम हो तो इष्ट में ६० घड़ी जोड़कर दिनार्ध घटाएं, जो शेष बचे वह नतकाल होगा। नतकाल के घ. प. को इष्ट के घ. प. समझकर तात्कालिक स्पष्ट सूर्य द्वारा दशम लग्न सारणी से ठीक उसी तरह दशम लग्न स्पष्ट कीजिए, जैसे कि ऊपर लग्न सारणी से लग्न स्पष्ट किया गया है। दशम लग्न सारणी सभी नगरों के लिए एक ही होती है।

सारणी (अक्षांश २९° उत्तर) (पलभा ६।३९।६)

दिल्ली, मेरठ, रोहतक, हिसार, जींद, नैनीताल, मुरादाबाद आदि के लिए।

अंश→	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष घ.	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६
० प.	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३८	४६	५४	२	११	१९	२७	३५	४४	५२	०	८	१७	२५	३३	४२	५०	५८	६	१५	२३	३१	३९	४८
वृष घ.	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११
१ प.	४८	५६	४	१२	२१	२९	३७	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७
मि. घ.	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७
२ प.	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४८	५९	१०	२२	३३	४५	५६	८	१९	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	२	१४	२५	३७	४८	०	११
क. घ.	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३
३ प.	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१७	२८	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	०
सिं. घ.	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
४ प.	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४४	५६	७	१९	३०	४१	५३	४	१६	२७	३८	५०	१	१३	२४	३५	४७	५८	१०	२१	३२	४४
क. घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
५ प.	४४	५५	७	१८	२९	४१	५२	४	१५	२६	३८	४९	१	१२	२३	३५	४६	५८	९	२०	३२	४३	५५	६	१७	२९	४०	५२	३	१४	२६
तु. घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
६ प.	२६	३७	४९	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२१	३२	४४	५६	७	१९	३१	४२	५४	६	१७	२९	४१	५२	४	१६	२७	३९	५१	२	१४
वृ. घ.	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५
७ प.	१४	२६	३७	४९	१	१२	२४	३६	४७	५८	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३०	४२	५३	५	१६	२८	३९	५०	२	१३	२५	३६	४८	५९
धनु घ.	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१
८ प.	५९	११	२२	३४	४५	५७	८	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११
म. घ.	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५
९ प.	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२२	३०	३८	४६	५५	३	११	१९	२८	३६	४४	५२	१	९	१७	२६	३४	४२	५०	५९	७	१५	२३	३२
कु. घ.	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
१० प.	३२	४०	४८	५६	५	१३	२१	३०	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२७	३४	४१	४८	५५	२	९	१७	२४	३१	३८	४५	५२	५९	६	१४
मी. घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२
११ प.	१४	२१	२८	३५	४२	४९	५६	४	११	१८	२५	३२	३९	४६	५३	१	८	१५	२२	२९	३६	४३	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४०	४८

लग्न सारणी ३०° उत्तर (पलभा ६।५५।४२)

अम्बाला, करनाल, कुरुक्षेत्र, देहरादून, नाभा, पटियाला, भटिण्डा, जैसलमेर, अल्मोड़ा, सहारनपुर और हरिद्वार आदि के लिए।

अंश→	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष घ.	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६
० प.	४४	५१	५८	५	१२	१९	२६	३२	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	४०
वृष घ.	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
१ प.	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६
मि. घ.	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७
२ प.	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४८	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	२९	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२
क. घ.	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
३ प.	२	१३	२५	३६	४८	५९	११	२२	३४	४६	५८	१०	२१	३३	४५	५७	९	२०	३२	४४	५६	८	१९	३१	४३	५५	७	१८	३०	४२	५४
सिं. घ.	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
४ प.	५४	६	१७	२९	४१	५३	५	१६	२८	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५६	८	१९	३१	४३
क. घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
५ प.	४३	५४	६	१७	२९	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	१	१३	२४	३६	४८	५९	११	२२	३४	४५	५७	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	३०
तु. घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
६ प.	३०	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२	१४	२६	३८	४९	१	१३	२५	३७	४८	०	१२	२४	३६	४७	५९	११	२३	३५	४६	५८	१०	२२
वृ. घ.	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६
७ प.	२२	३४	४५	५७	९	२१	३३	४४	५६	८	१९	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०
धनु घ.	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१
८ प.	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०
म. घ.	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५
९ प.	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	३९	४७	५५	३	११	१९	२७	३६	४४	५२	०	८	१६	२४	३२	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	३८
कु. घ.	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९
१० प.	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४०	४७	५४	१	८	१५
मी. घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
११ प.	१५	२२	२९	३६	४३	५०	५७	३	१०	१७	२४	३१	३८	४५	५२	५९	३	१३	२०	२७	३४	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३७	४४

लग्न सारणी (अक्षांश ३१ उत्तर) (पलभा ७।१२।३७)

कपूरथला, चण्डीगढ़ , जालंधर, फरीदकोट, फिरोजपुर, रोपड़, लुधियाना, शिमला आदि के लिए

अंश →	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष घ	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६
० प	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४२	५०	५८	६	१४	२२	३०	३८	४७	५५	३	११	१९	२७	३५
वृष घ	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
१ प	३५	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१
मि. घ	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६
२ प	२१	३१	४१	५१	१	१०	२०	३०	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	३	१५	२६	३८	४९	१	१२	२४	३५	४७	५९	१०	२२	३३	४५	५६
क. घ	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
३ प	५६	८	२०	३१	४३	५४	६	१७	२९	४१	५३	५	१७	२९	४०	५२	४	१६	२८	४०	५२	४	१५	२७	३९	५१	३	१५	२७	३८	५०
सिं. घ	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
४ प	५०	२	१४	२६	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५७	८	२०	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२
क. घ	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
५ प	४२	५३	५	१७	२८	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५७	८	२०	३२
तु. घ	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०
६ प	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१७	२९	४१	५३	५	१६	२८	४०	५२	४	१६	२८	४०	५१	३	१५	२७	३९	५१	३	१४	२६
वृ. घ	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६
७ प	२६	३८	५०	२	१४	२६	३८	४९	१	१३	२४	३६	४७	५९	१०	२२	३४	४५	५७	८	२०	३१	४३	५४	६	१८	२९	४१	५२	४	१५
धनु घ	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१
८ प	१५	२७	३९	५०	२	१३	२५	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६
म. घ	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५
९ प	२६	३६	४६	५६	६	१५	२५	३५	४४	५२	०	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४४	५३	१	९	१७	२५	३३	४१
कु. घ	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९
१० प	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२५	३२	३९	४६	५३	०	७	१४	२०	२७	३४	४१	४८	५५	२	८	१५
मी. घ	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
११ प	१५	२२	२९	३६	४३	५०	५७	३	१०	१७	२४	३१	३८	४५	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४०	४६	५३	०	७	१४	२१	२८	३४	४१

दशम लग्न सारणी (सर्वत्र उपयोगी)

अंश →	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष घ	३	३	३	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८
० प	३८	४७	५६	६	१५	२४	३३	४३	५३	३	१३	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२
वृष घ	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३
१ प	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१९	२९	४०	५१	२	१२	२३	३४	४५	५५	६	१७	२८	३८	४९
मि. घ	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९
२ प	४९	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१५	२६	३७	४८	५८	९	२०	३१	४२	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१८	२९	४०	५१	१	१२
क. घ	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४
३ प	१२	२३	३४	४५	५५	६	१७	२८	३८	४८	५८	७	१७	२७	३६	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७
सिं. घ	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८	२८	२९
४ प	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३६	४५	५४	४	१३	२२	३१	४०	५०	५९	९	१८	२७	३६	४६	५५	४	१३	२३	३२	४१	५०	०
क. घ	२९	२९	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३
५ प	०	९	१८	२८	३७	४६	५५	५	१४	२३	३२	४२	५१	०	९	१९	२८	३७	४७	५६	५	१४	२४	३३	४२	५१	१	१०	१९	२८	३८
तु. घ	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८
६ प	३८	४७	५६	६	१५	२४	३३	४३	५३	३	१३	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२
वृ. घ	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३
७ प	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	३	१४	२४	३५	४६	५७	८	१९	२९	४०	५१	२	१२	२३	३४	४५	५५	६	१७	२८	३८	४९
धनु घ	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९
८ प	४९	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१५	२६	३७	४८	५८	९	२०	३१	४२	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१८	२९	४०	५१	१	१२
म. घ	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४
९ प	१२	२३	३४	४५	५५	६	१७	२८	३८	४८	५८	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७
कु. घ	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९
१० प	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३६	४५	५४	४	१३	२२	३१	४१	५०	५९	९	१८	२७	३६	४६	५५	४	१३	२३	३२	४१	५०	०
मी. घ	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३
११ प	०	९	१८	२८	३७	४६	५५	५	१४	२३	३२	४२	५१	०	९	१९	२८	३७	४७	५६	५	१४	२४	३३	४२	५१	१	१०	१९	२८	३८

दशमलग्न साधन का उदाहरण:-वि.सं. २०२९ के वैशाख प्रविष्टे ३ को शिमला में ५८ घ. ४५ प. इष्ट पर दशमलग्न स्पष्ट करना है। इस समय स्पष्ट सूर्य ० रा. २ अं.३७ क. ४७ वि. है। इस दिन शिमला में दिनमान ३१ घ. ५९ प. हैं अतः दिनार्ध १६ घ. ० प. हुआ। इष्ट काल ५८ घ. ४५ प. में से दिनार्ध घटाने पर ४२ घ. ४५ प. नतकाल हुआ, जो दशमसाधन के लिए इष्टकाल है।

दशमलग्न सारणी में स्पष्ट सूर्य की ० राशि के आगे २ अंश के नीचे ३ घ. ५६ प.मिला। इसे पृथक् लिखा। सारिणी में ३ घ. ५६ प. के दाईं ओर (३ अं. के नीचे) ४ घ. ६ प. लिखा है। ३।५६ और ४।६ का अन्तर १० पल है। सहायक सारिणी में १० पल के आगे स्पष्ट सूर्य की ३७ क. ४७ वि. के लगभग बराबर ३६ क.० वि. है। इसके ऊपर सारिणी में ६ पल लिखा है। इन ६ पलों को अलग लिखे ३ घ. ५६ प.में जोड़कर इसमें नतकाल जोड़ा तो ४६ घ. ४७ प.'अभीष्ट घड़ी-पल' हुए । ''दशमलग्न सारणी'' में इन '' अभीष्ट घड़ी पलों '' से कुछ कम घ.प. ४६।४२'सारणीस्थ घ.पल'. धनु (८)राशि के आगे १६ अंश के नीचे लिखे हैं ।अतः ८ रा. १६ अं. को अलग लिखा। सारिणी में ४६। ४२ के दाईं ओर(१७ अं. के नीचे) लिखे ४६।५२ का ४६।४२ से अन्तर १० पल का ''सारणीस्थ अन्तर'' हुआ। ''सारणीस्थ घड़ी पल'' ४६।४२ और अभीष्ट घड़ी पल ४६।४७ का अन्तर ५पल है। अब 'सहायक सारणी' में १० पल के आगे ५ पल के नीचे ३०क. ० वि. मिली, इन्हें अलग लिखे ८ रा. १६ अं.में जोड़ने पर ८ रा. १६ अं. ३० क. ०.वि.हुई। इसमें ''अयनांश संस्कार सारणी'' में वि.सं. २०२९ के आगे दिया गया,अयनांश संस्कार+१क. चिह्नानुसार जोड़ने पर ८ रा. १६ अं. ३१ क. ० वि. निरयण दशमलग्न स्पष्ट हुआ।

सहायक सारणी

पल → ↓	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.
६	१०।०	२०।०	३०।०	४०।०	५०।०	६०।०							
७	८।३४	१७।९	२५।४३	३४।१७	४२।५१	५१।२६	६०।०						
८	७।३०	१५।०	२२।३०	३०।०	३७।३०	४५।०	५२।३०	६०।०					
९	६।४०	१३।२०	२०।०	२६।४०	३३।२०	४०।०	४६।४०	५३।२०	६०।०				
१०	६।०	१२।०	१८।०	२४।०	३०।०	३६।०	४२।०	४८।०	५४।०	६०।०			
११	५।२७	१०।५५	१६।२२	२१।४९	२७।१६	३२।४४	३८।११	४३।३८	४९।५	५४।३३	६०।०		
१२	५।०	१०।०	१५।०	२०।०	२५।०	३०।०	३५।०	४०।०	४५।०	५०।०	५५।०	६०।०	
१३	४।३७	९।१४	१३।५१	१८।२८	२३।५	२७।४२	३२।१९	३६।५६	४१।३३	४६।१०	५०।४७	५५।२३	६०।०

अयनांश संस्कार सारणी

विक्रम संवत्	संस्कार कला	वि. संवत्	संस्कार कला	वि. सवंत्	संस्कार कला	वि. संवत्	संस्कार कला	वि. संवत्	संस्कार कला	वि. संवत्	संस्कार कला
२०२२	+ ७	२०२८	+२	२०३४	-३	२०४०	-८	२०४६	-१३	२०५२	-१८
२०२३	+ ७	२०२९	+१	२०३५	- ४	२०४१	-९	२०४७	-१३	२०५३	-१८
२०२४	+ ६	२०३०	+१	२०३६	- ४	२०४२	-९	२०४८	-१४	२०५४	-१९
२०२५	+ ५	२०३१	०	२०३७	- ५	२०४३	-१०	२०४९	-१५	२०५५	-२०
२०२६	+ ४	२०३२	-१	२०३८	- ६	२०४४	-११	२०५०	-१६	२०५६	-२१
२०२७	+ ३	२०३३	-२	२०३९	- ७	२०४५	-१२	२०५१	-१७	२०५७	-२२

सूक्ष्म लग्न एवं दशमलग्न स्पष्ट करने की नवीन सरल विधि

यहां हम सूक्ष्म लग्न एवं दशमलग्न स्पष्ट करने की एक नवीन सरल विधी दे रहे है । स्पष्ट सूर्य द्वारा लग्न स्पस्ट करने में अधिक परिश्रम होता है, इसलिए इस विषय में पाश्चात्य ज्योतिषियों ने 'साम्पातिककाल' की पद्धति को अपनाया है । यहां हम "साम्पातिककाल क्या है"- इस विषय का कुछ सैद्धान्तिक- विवेचन न करते हुए, इससे लग्न स्पष्ट-करने की सर्व- साधारणोपयोगी विधि प्रस्तुत कर रहे हैं ।

विधिः- सां. का. (साम्पतिककाल)से लग्न स्पष्ट करने के लिए सर्वप्रथम नीचे लिखे उपकरण (चीजें), जो इस पंचांग में दिए गए कोष्ठकों (सारणियों)से बिना किसी परिश्रम के तैयार किए जा सकते है , तैयार करें -

(१) अभीष्ट नगर के अक्षांश (उत्तर या दक्षिण)
(२) अभीष्ट नगर के रेखांश (पूर्व या पश्चिम)
(३) अभीष्ट नगर का स्टैण्डर्ड अन्तर(+या-)

ये तीनों उपकरण 'अक्षांशादि सारणी 'से उठाइये।

विशेष- यदि "अक्षांशादि सारणी " में अभीष्ट नगर न मिले तो उसके निकटतम किसी अन्य नगर के अक्षांशादि प्रयोग में लाए जा सकते है ।

ध्यान रहे- भारत के सभी नगरों के अक्षांश उत्तर और रेखांश पूर्व ही है ।

(४) अभीष्ट नगर का स्थानीयमध्यमकाल- जिस समय लग्न स्पष्ट करना हो उस समय के स्वदेशीय स्टैण्डर्ड - टाईम में अभीष्ट नगर (जहां का लग्न स्पष्ट करना हो, वहां) के स्टैण्डर्ड - अन्तर के मिनटादि(या घण्टादि) को चिन्हानुसार जोड़ने या घटाने से अभीष्ट नगर का "**स्थानीयमध्यमकाल**" बन जाता है + यह चिह्न जोड़ने की एवं- यह चिह्न घटाने की प्रक्रिया को बतलाता है ।

जैसे- चण्डीगढ में दोपहर के १२घं. ५७ मि. (भा. स्टैं टा.) पर स्थानीयमध्यकाल जानने के लिए इस (भा. स्टैं टा.)में से चण्डीगढ का स्टैण्डर्ड अन्तर -२२ मिनट ३२ सेकण्ड चिन्हानुसार घटाया, तो १२ घं. ३४ मि. २८ सें. स्थानीयमध्यमकाल बना।

१सितं.१९४२ ई. से १५ अक्तू १९४५ ई. तक भारत में युद्ध के कारण घड़ियां एक घण्टा आगे की गई थी । अतः इन दिनों में घड़ियों द्वारा जाने गए टाईम में से १ घण्टा घटा कर उसे भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम समझना चाहिए।

जैसे- सन्१९४४ की २० अग. को काई बच्चा भारत में युद्ध के समयानुसार दिन में १२ बज कर ४५ मि. पर पैदा हुआ । इसका जन्मपत्र बनाने के लिए हमें इस बच्चे का जन्म काल भा. स्टै.टा. के अनुसार ११ घं ४५ मि. मानना होगा ।

(५) अभीष्ट तारीख का अयनांश - आगे दो [नं.(१) और नं.(२)]अयनांशसारणियां दी गई है । अयनांशसारणी नं.(१) में से अभीष्ट सन् के आगे लिखा अंशादि अयनांश लें, और अयनांशसारणी नं. (२) में से अभीष्ट मास की अभीष्ट तारीख का विकलादि फल लेकर उसमें जोड़ दें; - यह अभीष्ट तारीख का अयनांश होगा ।

जैसे - १५ जुलाई १९६९ ई. को अयनांश जानने के लिए अयनांशसारणी नं.(१) में से सन् १९६९ ई. के आगे लिखा अयनांश २३अं.२५ क २६ वि. प्राप्त किया । इसमें अयनांशसारणी नं.(२)से प्राप्त की गई १५ जुलाई की २७ वि. जोडने पर २३ अं.२५क. ५६ वि. हमारा अभीष्ट अयनांश हुआ ।

(६) इष्टकालिक साम्पातिककाल - आगे साम्पातिककाल के चार कोष्ठक दिए गये है । इनके आधार पर इष्टकालिक साम्पातिककाल इस प्रकार सरलता से बनाया जा सकता है-

सां. का. कोष्ठक नं. (१) में से अभीष्ट सन् का सां. का. उठाएं। उसमें साम्पातिक काल कोष्ठक नं.(२)से अभीष्टमास की अभीष्ट तारीख का (लीप ईयर हो तो केवल फरवरी के बाद के महीनों में अभीष्ट तारीख की जगह उससे एक आगे की तारीख का) सां. का. लेकर जोड़ें । इसमें सां. का. कोष्ठक नं.(३)से अभीष्ट नगर के रेखांशों द्वारा सैकण्डात्मक संस्कार उठा कर चिन्हानुसार जोडें या घटाएं । इस प्रकार मिले सां. का के घं. मि. में अभीष्ट स्थानीयमध्यमकाल(जिसका साधन पहले बताया जा चुका है) के घण्टा- मिनटादि जोडें और फिर इस योगफल में स्थानीयमध्यमकाल के घण्टा- मिनटों द्वारा सां. का. कोष्ठक नं.(४)से प्राप्त किए गए मिनटादि जोड़ देने से इष्टसमय का घण्टादि सां. का बन जाएगा । इस प्रकार बना सां. का. यदि २४ घं. से अधिक हो तो उसमें से २४ घटा कर शेष ही ग्रहण करना चाहिए ।

साम्पातिककाल साधन का उदाहरण - यहां हम १५ जुलाई १९६९ को भा. स्टै.टा. के अनुसार प्रातः १०घं.४५मि. पर चम्बा (हि. प्र.)में सां. का. स्पष्ट करेगें । अक्षांशादि सारणी में चम्बा के अक्षांश ३२ अं. २९ क. (उत्तर), रेखांश ७६ अं. १०क.(पूर्व)एंव स्टैं. अन्तर - २५ मि. २० से. है । स्टैण्डर्ड अन्तर ऋण चिह्न वाला है, अतः इसे १० घण्टे४५ मि. में से घटाने पर १० घं. १९ मि. ४० से. चम्बा का स्थानीयमध्यमकाल हुआ । सां. का . कोष्ठक नं. (१)से सन् १९६९ ई. का सां. का. (६घं.४१ मि. २ से.) लिया । इसमें कोष्ठक नं.(२)से लिया गया १५ जुला. का सां का. (१२घं. ४८ मि. ४९ से.)जोड़ा तो १९ घं.२९ मि. ५१ सै. हुआ । चम्बा के रेखांश ७६अं.१० क. के लिए कोष्टक नं.(३)वाला संस्कार तो० है। अब १९घं. २९ मि. ५१सैं. चम्बा का स्थानीयमध्यमकाल १०घं.१९मि ४० सै. जोडा तो २९घं. ४९मि. ३१ सै. हुए। इसमें कोष्ठक न. (४)से स्थानीयमध्यमकाल के १०घं. २० मि. उठाए गए १ मि. ४२सै. जोड़ने पर २९ घं. ५१ मि. १३ से. हुए । क्योकि यहां घण्टे२४से अधिक हैं अतः२४ घं. घटाए तो ५घं. ५१मि. १३से. अभीष्ट साम्पातिककाल हुआ ।

साम्पातिककाल बनाते समय नीचे लिखी इन बातों को भी ध्यान में रखेंः-

(१)यदि धन (+)चिह्न वाले स्टैण्डर्डअन्तर (स्टैं. अं.)के मिनटों को स्टैण्डर्ड टाईम में जोड़ने पर स्थानीयमध्यमकाल २४ घं. या इससे ज्यादा हो जाए तब उसमें से २४ घण्टा घटा दें और ऊपर बतलाई विधि से प्राप्त साम्पातिककाल में ४ मि. जोड कर उसे शुद्ध साम्पातिककाल समझें । जैसे - कलकता में २जन. १९७४ ई. को २३ घंटा ५५ मि. (रात के ११ बज कर ५५ मि.)भा. स्टै. टा. पर साम्पातिककाल ज्ञात करना है । कलकता का रेखांश ८८अं. २४ क, (पूर्व)और स्टैं. अन्तर +२३ मि. ३६ से. है। **स्थानीयमध्यमकाल** बनाने के लिए२३ घं. ५५ मि. में २३ मि. ३६ सै. जोड़े तो २४ घं. १८ मि. ३६से. हुए यह २४ घं. से ज्यादा हो गया है , अतः इसमें से २४ घं. घटाने पर ० घं. १८ मि. ३६ से.

स्थानीयमध्यमकाल हुआ । अब सां. का. बनाने के लिए कोष्ठक नं.(१) से १९७४ केआगे लिखे ६ घं. ४० मि. १२ से. में कोष्ठक नं.(२) से लिए गए २ जन. के ० घं. ३ मि. ५७ से. जोडने पर ६ घं. ४४ मि. ९ से. हुए। इसमें कोष्ठक नं. (३) से कलकता के रेखांश ८८ से प्राप्त −८ से. चिह्न के अनुसार घटाए, तो ६ घं. ४४ मि. १ से. हुए । इसमें स्थानीयमध्यमकाल जोड़ने पर ७ घं., २ मि. ३७ से. हुए । इसमें कोष्ठक नं.(४) से स्थानीयमध्यमकाल के ० घं. १९ मि. द्वारा प्राप्त ३ से. जोडने पर ७घं. २ मि. ४० से. हुए । क्योंकि स्टैं .टा. में स्टैं. अन्तर के मिनट जोडने पर स्थानीयमध्यमकाल २४ घं. से ज्यादा हो गया था । अतः उपरोक्त नियमानुसार इसमें ४ मि. और जोड़ने पर ७ घं. ६ मि. ४० से. हमारा अभीष्ट साम्पातिककाल बना । लग्न और दशम को स्पष्ट करने के लिए इसी सां. का. को प्रयोग में लाइए ।

(२)सां. का. बनाते समय दूसरी बात यह भी ध्यान में रखें कि यदि स्टैं. टा. से ऋण चिह्न वाले स्टैं. अन्तर के मिनटादि अधिक हों तो स्थानीयमध्यमकाल बनाने के लिए स्टैं. टा. में २४ घंटे जोड कर स्टैं. अन्तर घटाना चाहिए और ऐसी स्थिति में सा.का. कोष्ठक नं. (४)का प्रयोग नहीं करना चाहिए । जैसे- जयपुर में १५ मार्च १९७० को ०घं. १५ मि.(भा. स्टै. टा.) पर साम्पातिककाल ज्ञात करना है । जयपुर के रेखांश ७५ अं. ५२ क. (पूर्व)और स्टैं अं.- २६ मि. ३२ से. है । यहां स्टैं टा. के घं. मि. में से स्टैं. अं. ज्यादा है, अतः स्टै. टा. में २४ घं. जोड़ कर स्टैं अं. घटाने पर २३ घं. ४८ मि. २८ से. स्थानीयमध्यमकाल बना । सां. का. के कोष्ठक नं.(१)से प्राप्त १९७० ई. के ६ घं. ४० मि. ५ से. में कोष्ठक नं. (२) से प्राप्त १५ मार्च के ४ घं. ४७ मि. ४९ से जोड़ने पर ११ घं. २७ मि. ५४ से. हुए । जयपुर के रेखांश ७६ (पूर्व) का कोष्ठक नं. ३ वाला संस्कार लगभग ० है । अब ११ घं. २७ मि. ५४ से. में स्थानीयमध्यमकाल जोड़ा तो ३५ घं. १६ मि. २२ से. हुए । क्योंकि हमारा स्टैं. टा. हमारे नगर के ऋण स्टैं. अं. से कम था अतः यहां साम्पातिककाल कोष्ठक नं.(४)का प्रयोग हम नहीं करेगें । इसलिए हमारा अभीष्ट साम्पातिककाल ११घं. १६ मि. २२ से. ही हुआ । यहां घंटे २४ से अधिक होने से उसमें से २४ घंटे घटा दिए गए हैं।

(३)जैसाकि हम पहिले भी लिख चुके हैं - लीप इयर (२९ फरवरी वाले साल)में फरवरी के बाद के महीनों की किसी तारीख का सां. का. बनाना हो तो उस तारीख में एक जोड़ कर साम्पातिककाल कोष्ठक नं. (२) को प्रयोग में लाना चाहिए। जैसे -मान लीजिए, १५ मार्च सन् १९४४ को किसी नगर में सां. का. स्पष्ट करना है। साम्पातिककाल कोष्ठक नं. (१) में सन् १९४४ के आगे लिखे ६ घं. ३७ मि. १७ से. मिलें । क्योंकि हमारा सन् लीप इयर है और हमारी तारीख (१५ मार्च)फरवरी के बाद की भी है, इसलिए ''साम्पातिककाल कोष्ठक नं. (२)'' में से हम १५ मार्च की जगह १६ मार्च के घं. मि. सै. (४ घं.५१ मि. ४५ से.)ही लेगें और इन्हें ही ६ घं. ३७मि. १७ से. में जोड़ेंगे । ध्यान रहे- यदि सन् १९४४ की १० फर. को हमें सां. का. स्पष्ट करना हो तो ''साम्पातिककाल कोष्ठक नं.(२)''से १० फर.के ही घं. मि. से. उठाने होगें ।

साम्पातिककाल से लग्नसाधन की विधिः-

उपर दी गई विधि से जाने गए अभीष्ट सां. का. (साम्पातिककाल) के घं. मि. को आगे दी गई लग्नसारणी के बाई और वाले पहिले कालम में देखें । इसके आगे अभीष्ट नगर के अक्षांश के नीचे जो लग्न की अंश कला लिखी हैं, उन्हें अलग नोट कर लें। क्योंकि सारणी में सां. का. ३०-३० मिनटों के अन्तर पर और लग्नसारणी ३-३ अक्षांशों के अन्तर पर दी हुई है । अतः अधिकतर यहां सम्भव है कि आपको लग्न सारणी में अभीष्ट सां. का. के घं. मिं. न मिले और यह भी अधिकतर सभव है कि आपको लग्नसारणी में अभीष्ठ सां का. के घं. मि. न मिलें और यह भी सम्भव है कि अभीष्ट अक्षांश वाली लग्नसारणी भी न मिले । ऐसी स्थिति में सारणी में अभीष्ट सां. का. के समीपतम (अभीष्ट सां. का. से कम)सां. का. के आगे और अपने अभीष्ट अक्षांश के समीपतम(अभीष्ट अक्षांश से कम) अक्षांश वाली लग्नसारणी में लिखीं लग्न की अंश - कलाएं नोट करें - यह ''स्थूलतम लग्न''है । अब ३० मि. में लग्न की गति सारणी से ही ज्ञात कीजिए, (अर्थात् यह ज्ञात कीजिए कि ३०मि. में लग्न कितना आगे बढ़ता है) ३० मि. की लग्नगति की कलाओं को सां. का. के शेष मिनटों से गुणा करके ३० से भाग देने पर कलाएं मिलेंगी । इन्हें ''स्थूलतम लग्न'' में जोड़ देने से ''स्थूललग्न'' बन जाएगा। अब सारणी से ही ३ अक्षांशों की लग्न की गति मालूम करें । ३ अक्षांशों में लग्न घटता है तो यह ''३ अक्षाशों की लग्नगति'' ऋण, अन्यथा धन होगी । अपने अक्षांश की शेष अंश-कलाओं की कलाएं बना कर उन्हें ''३ अक्षाशों की लग्नगति '' की कलाओं से गुणा करके १८० से भाग देने पर कलाएं मिलेंगी । इन्हें ''३ अक्षाशों की लग्नगति'' के धन,ऋण चिह्न के अनुसार स्थूललग्न में जोड़ने या घटाने से सायनलग्न स्पष्ट होगा । इसमें से उस दिन के अयनांश घटा देने पर फलितोपयोगी निरयण लग्न स्पष्ट हो जाएगा।

दशमलग्न स्पष्ट करने की विधि :- लग्नसारणी के दूसरे कालम में दशम (दशमलग्न)दिया गया है । इससे सभी नगरों में दशमलग्न स्पष्ट किया जा सकता है (अर्थात् -दशम स्पष्ट करने के लिए अंक्षाशों की जरूरत नहीं होती।) अभीष्ट सां. का. के घं. मि. के आगे सारणी में दशम (दशमलग्न)की अंश-कलाएं उठा लें। यह ''स्थूलदशमलग्न'' है। सां.का. के शेष मिनटों से दशमलग्न की ३० मि. की गति की कलाओं को गुणा करके ३०से भाग देने पर कलाएं मिलेगी। इन्हें ''स्थूलदशमलग्न'' में जोड़ने पर इष्टकालिक सायनदशम होगा । इसमें से उसदिन का अयनांश घटा देने पर निरयण दशमलग्न स्पष्ट हो जाएगा।

लग्नसाधन का उदाहरण:-चम्बा (हि.प्र.) में १५ जुलाई सन् १९६९ को प्रातः १० घं. ४५ मि. (भा. स्टै. टा.)पर लग्न स्पष्ट करना है ।

ऊपर हमने चम्बा में १५ जुलाई १९६९ को प्रातः १० घंटे ४५मि. (भा. स्टै. टा.)पर सां.का. ५ घं. ५१ मि. १३ सै. स्पष्ट किया है । चम्बा के अक्षांश ३२ अं.२९ क. है। लग्नसारणी में अक्षांश ३२ के नीचे सां. का. ५ घं. ३० मि. के आगे लग्न १७३ अं. ३४ क. लिखा है । यह ''स्थूलतम लग्न''है। लग्नसारणी में अक्षांश ३२ के नीचे सां. का. ५ घं. ३० मि. के आगे १७३ अं. ३४ क. और सां. का.६घं. ० मि. के आगे १८० अं.० क. लिखा है । इन दोनों का अन्तर ६अं. २६ क. (=३८६क.) लग्न की ३० मि. की गति है । हमारे अभीष्ट सां. का. ५ घं. ५१ मि. और ५ घं. ३० मि. का अन्तर २१ मि. है । इन २१ मि. (सा.का.के शेष मिनटों) से लग्न की ३० मिनट की गति कलाओं (३८६) को गुणा करके ३० का भाग देने पर २७० क. (= ४ अं. ३० क.) मिलीं। इन्हें '' स्थूलतम लग्न '' में जोड़ने पर १७८ अं. ४ क. ''स्थूल लग्न '' हुआ ।

लग्न सारणी (पूरे भारत के लिए) [भाग १ म]

साम्पातिक काल		सभी स्थलों के लिए		अक्षांश ८°(उ.)		अक्षांश ११°(उ.)		अक्षांश १४°(उ.)		अक्षांश १७°(उ.)		अक्षांश २०°(उ.)	
		दशम		लग्न		लग्न		लग्न		लग्न		लग्न	
घं.	मि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
०	०	०	०	९३	१२	९४	२५	९५	४०	९६	५६	९८	१४
०	३०	८	१०	१००	३	१०१	१५	१०२	२७	१०३	४१	१०४	५७
१	०	१६	१७	१०६	५४	१०८	३	१०९	१३	११०	२४	१११	३६
१	३०	२४	२८	११३	४७	११४	५३	११५	५९	११७	६	११८	१४
२	०	३२	११	१२०	४३	१२१	४५	१२२	४७	१२३	५०	१२४	५२
२	३०	३९	५५	१२७	४५	१२८	४३	१२९	४०	१३०	३६	१३१	३३
३	०	४७	२८	१३४	५४	१३५	४५	१३६	३६	१३७	२७	१३८	१८
३	३०	५४	५१	१४२	१०	१४२	५५	१४३	३९	१४४	२२	१४५	६
४	०	६२	५	१४९	३३	१५०	१०	१५०	४६	१५१	२३	१५१	५८
४	३०	६९	१२	१५७	३	१५७	३१	१५८	०	१५८	२७	१५८	५५
५	०	७६	११	१६४	३८	१६४	५८	१६५	१७	१६५	३६	१६५	५४
५	३०	८३	७	१७२	१८	१७२	२८	१७२	३८	१७२	४७	१७२	५७
६	०	९०	०	१८०	०	१८०	०	१८०	०	१८०	०	१८०	०
६	३०	९६	५३	१८७	४२	१८७	३२	१८७	२२	१८७	१३	१८७	३
७	०	१०३	४९	१९५	२२	१९५	२	१९४	४३	१९४	२४	१९४	६
७	३०	११०	४८	२०२	५७	२०२	२९	२०२	०	२०१	३३	२०१	५
८	०	११७	५५	२१०	२७	२०९	५०	२०९	१४	२०८	३७	२०८	२
८	३०	१२५	९	२१७	५०	२१७	५	२१६	२१	२१५	३८	२१४	५४
९	०	१३२	३२	२२५	६	२२४	१५	२२३	२४	२२२	३३	२२१	४२
९	३०	१४०	५	२३२	१५	२३१	१७	२३०	२०	२२९	२४	२२८	२७
१०	०	१४७	४९	२३९	१७	२३८	१५	२३७	१३	२३६	१०	२३५	८
१०	३०	१५५	४२	२४६	१३	२४५	७	२४४	१	२४२	५४	२४१	४६
११	०	१६३	४३	२५३	६	२५१	५७	२५०	४७	२४९	३६	२४८	२४
११	३०	१७१	५०	२५९	५७	२५८	४५	२५७	३३	२५६	१९	२५५	३
१२	०	१८०	०	२६६	४८	२६५	३५	२६४	२०	२६३	४	२६१	४६

साम्पातिक काल		सभी स्थलों के लिए		अक्षांश ८°(उ.)		अक्षांश ११°(उ.)		अक्षांश १४°(उ.)		अक्षांश १७°(उ.)		अक्षांश २०°(उ.)	
		दशम		लग्न		लग्न		लग्न		लग्न		लग्न	
घं.	मि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
१२	०	१८०	०	२६६	४८	२६५	३५	२६४	२०	२६३	४	२६१	४६
१२	३०	१८८	१०	२७३	४१	२७२	२७	२७१	११	२६९	५३	२६८	३३
१३	०	१९६	१७	२८०	३९	२७९	२५	२७८	९	२७६	५०	२७५	२९
१३	३०	२०४	१८	२८७	४३	२८६	३०	२८५	१५	२८३	५७	२८२	३५
१४	०	२१२	११	२९४	५७	२९३	४६	२९२	३३	२९१	१६	२८९	५५
१४	३०	२१९	५५	३०२	२१	३०१	१४	३००	४	२९८	५०	२९७	३२
१५	०	२२७	२८	३०९	५८	३०८	५६	३०७	५१	३०६	४२	३०५	२८
१५	३०	२३४	५१	३१७	४९	३१६	५४	३१५	५५	३१४	५३	३१३	४५
१६	०	२४२	५	३२५	५४	३२५	७	३२४	१७	३२३	२३	३२२	२५
१६	३०	२४९	१२	३३४	१२	३३३	३५	३३२	५५	३३२	१२	३३१	२६
१७	०	२५६	११	३४२	४१	३४२	१५	३४१	४८	३४१	१८	३४०	४५
१७	३०	२६३	७	३५१	१८	३५१	५	३५०	५१	३५०	३६	३५०	१९
१८	०	२७०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१८	३०	२७६	५३	८	४१	८	५५	९	९	९	२४	९	४१
१९	०	२८३	४९	१७	१९	१७	४५	१८	१२	१८	४२	१९	१५
१९	३०	२९०	४८	२५	४८	२६	२५	२७	५	२७	४८	२८	३४
२०	०	२९७	५५	३४	६	३४	५३	३५	४३	३६	३७	३७	३५
२०	३०	३०५	९	४२	११	४३	६	४४	५	४५	७	४६	१४
२१	०	३१२	३२	५०	२	५१	४	५२	९	५३	१८	५४	३२
२१	३०	३२०	५	५७	३९	५८	४६	५९	५६	६१	१०	६२	२८
२२	०	३२७	४९	६५	३	६६	१४	६७	२७	६८	४४	७०	५
२२	३०	३३५	४२	७२	१७	७३	३०	७४	४५	७६	३	७७	२५
२३	०	३४३	४३	७९	२१	८०	३५	८१	५१	८३	१०	८४	३१
२३	३०	३५१	५०	८६	१९	८७	३३	८८	४९	९०	७	९१	२७
२४	०	०	०	९३	१२	९४	२५	९५	४०	९६	५६	९८	१४

अब लग्न सारणी में ३२ अक्षांश और ३५ अक्षांश वाले कालमों में सां.का. ५घं. ३० मि. के आगे क्रमशः १७३ अं. ३४ क. और १७३ अं. ४४ क. लिखा है। इन दोनों का अन्तर १० क. हुआ। यह लग्न की "३ अक्षांश की गति" है। क्योंकि लग्न ३५ अक्षांश में बढ़ रहा है। अतः यह गति धन है। ३२ अक्षांश और चम्बा के अक्षांश ३२ अं. २९ क. का अन्तर २९ क. है। इससे ३ अक्षांश की लग्न की गति कलाओं (१०) को गुणा करके १८० से भाग देने पर लब्धि १ क. मिली। क्योंकि ३ अक्षांशों की लग्न गति धन है अतः इसे "स्थूल लग्न" में जोड़ने पर १७८ अं. ५ क. सायन लग्न हुआ। इसमें से इस दिन का अयनांश २३अं. २६क. घटा देने पर १५४ अं. ३९ क. (= ५ रा ४ अं. ३९ क.) नियरणलग्न बन गया।

दशमलग्न साधन का उदाहरण- १५ जुला. १९६९ ई. को प्रातः १० घं. ४५ मि. (भा.स्टै.टा.) पर ही चम्बा, हि.प्र. में दशमलग्न स्पष्ट करना है। इस समय चम्बा में सां का ५ घं. ५१ मि. है। लग्नसारणी के दूसरे कालम में सां.का. ५ घं. ३० मिनट के आगे दशमलग्न८३ अं.७क. है, यह "स्थूल दशमलग्न" है। सारणी में सां.का. ५ घं.३०मि. और ६ घं. ० मि. के आगे क्रमशः ८३ अं. ७ क. एवं ९० अं. ० क. है इन दोनों का अन्तर ६ अं. ५३ क. (= ४१३ क.) है, यह ३० मि. की दशमलग्न की गति है। इन कलाओं को सां. का. के शेष मि. (५ घं. ५१ मि.- ५घं. ३० मि.= २१ मि.) से गुणा करके ३० का भाग देने पर २८९ क. (= ४अं.४९क.) मिली। इन्हें "स्थूलदशमलग्न" में जोड़ने पर ८७ अं. ५६ क. सायन दशमलग्न स्पष्ट हुआ। इसमें से इस दिन का अयनांश २३ अं. २६ क. घटा देने पर ६४ अं.३० क. (= २ रा.४अं. ३०क.) इष्टकालिक निरयण दशम लग्न हुआ।

ध्यान दें- यहां हमने सां.का. के सेकण्ड और अयनांश की विकलाओं को अनावश्यक समझकर छोड़ दिया है। क्योंकि लग्न और दशम में विकलाओं तक की सूक्ष्मता लाने का प्रयास वस्तुतः अर्थहीन है। कला तक की सूक्ष्मता भी लग्न में संभव नहीं है; इस तथ्य का विस्तार पूर्वक स्पष्टीकरण गणित द्वारा "गणकमार्तण्ड" में हमने किया है वहाँ पढ़ें।

लग्न सारणी (पूरे भारत के लिए) [भाग २ य]

साम्पातिक काल घं.	मि.	सभी स्थलों के लिए दशम अं.	क.	अंक्षाश २३° (उ.) लग्न अं.	क.	अंक्षाश २६° (उ.) लग्न अं.	कं.	अंक्षाश २९° (उ.) लग्न अं.	क.	अंक्षाश ३२° (उ.) लग्न अं.	क.	अंक्षाश ३५° (उ.) लग्न अं.	क.
०	०	०	०	९९	३५	१००	५९	१०२	२६	१०३	५७	१०५	३४
०	३०	८	१०	१०६	१४	१०७	३४	१०८	५७	११०	२४	१११	५३
१	०	१६	१७	११२	४९	११४	४	११५	२२	११६	४३	११८	७
१	३०	२४	१८	११९	२२	१२०	३३	१२१	४५	१२३	०	१२४	१७
२	०	३२	११	१२५	५६	१२७	०	१२८	७	१२९	१७	१३०	२५
२	३०	३९	५५	१३२	३१	१३३	२९	१३४	२९	१३५	३०	१३६	३२
३	०	४७	२८	१३९	३	१४०	००	१४०	५२	१४१	४५	२४२	४०
३	३०	५४	५१	१४५	५०	१४६	३४	१४७	१८	१४८	४	१४८	५०
४	०	६२	५	१५२	३४	१५३	१०	१५३	४७	१५४	२४	१५५	१
४	३०	६९	१२	१५९	२२	१५९	५०	१६०	१७	१६०	४६	१६१	१४
५	०	७६	११	१६६	१३	१६६	३२	१६६	५०	१६७	९	१६७	२८
५	३०	८३	७	१७३	६	१७३	१५	१७३	२५	१७३	३४	१७३	४४
६	०	९०	०	१८०	००	१८०	००	१८०	०	१८०	०	१८०	०
६	३०	९६	५३	१८६	५४	१८६	४५	१८६	३५	१८६	२६	१८६	१६
७	०	१०३	४९	१९३	४७	१९३	२८	१९३	१०	१९२	५१	१९२	३२
७	३०	११०	४८	२००	३८	२००	१०	१९९	४३	१९९	१४	१९८	४६
८	०	११७	५५	२०७	२६	२०६	५०	२०६	१३	२०५	३६	२०४	५९
८	३०	१२५	५९	२१४	१०	२१३	२६	२१२	४२	२११	५६	२११	१०
९	०	१३२	३२	२२०	५१	२२०	००	२१९	८	२१८	१५	२१७	२०
९	३०	१४०	५	२२७	२९	२२६	३१	२२५	३१	२२४	३०	२२३	२८
१०	००	१४७	४९	२३४	४	२३३	०	२३१	५३	२३०	४५	२२९	३५
१०	३०	१५५	४२	२४०	३८	२३९	२७	२३८	१५	२३७	०	२३५	४३
११	०	१६३	४३	२४७	११	२४५	५६	२४४	३८	२४३	१७	२४१	५३
११	३०	१७१	५०	२५३	४६	२५२	२६	२५१	३	२४९	३६	२४८	७
१२	०	१८०	००	२६०	२५	२५९	३	२५७	३४	२५६	३	२५४	२६

साम्पातिक काल घं.	मि.	सभीस्थलों के लिए दशम अं.	क.	अंक्षाश २३° (उ.) लग्न अं.	क.	अंक्षाश २६° (उ.) लग्न अं.	कं.	अंक्षाश २९° (उ.) लग्न अं.	क.	अंक्षाश ३२° (उ.) लग्न अं.	क.	अंक्षाश ३५° (उ.) लग्न अं.	क.
१२	०	१८०	००	२६०	२५	२५९	१	२५७	३४	२५६	३	२५४	२६
१२	३०	१८८	१०	२६७	१०	२६५	४३	२६४	१२	२६२	३६	२६०	५४
१३	०	१९६	१७	२७४	३	२७२	३४	२७१	०	२६९	२१	२६७	३३
१३	३०	२०४	१८	२८१	९	२७९	३९	२७८	२	२७६	१९	२७४	२९
१४	०	२१२	११	२८८	३०	२८६	५९	२८५	२२	२८३	३६	२८१	४५
१४	३०	२१९	५५	२९६	९	२९४	४०	२९३	४	२९१	२०	२८९	२६
१५	००	२२७	२८	३०४	१०	३०२	४४	३०१	१२	२९९	२८	२९७	३८
१५	३०	२३४	५१	३१२	३३	३११	१५	३०९	४८	३०८	१३	३०६	२५
१६	०	२४२	५	३२१	२२	३२०	१३	३१८	५६	३१७	३०	३१५	५४
१६	३०	२४९	१२	३३०	३५	३२९	३९	३२८	३६	३२७	२५	३२६	४
१७	०	२५६	११	३४०	९	३३९	३०	३३८	४५	३३७	५४	३३६	५५
१७	३०	२६३	७	३५०	००	३४९	४०	३४९	१६	३४८	४९	३४८	१९
१८	०	२७०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१८	३०	२७६	५३	१०	०	१४	२०	१०	४४	११	११	११	४१
१९	०	२८३	४९	१९	५१	२०	३०	२१	१५	२२	६	२३	४
१९	३०	२९०	४८	२९	२५	३०	२१	३१	२४	३२	३५	३३	५६
२०	०	२९७	५५	३८	३८	३९	४७	४१	४	४२	३०	४४	६
२०	३०	३०५	९	४७	२७	४८	४५	५०	१२	५१	४७	५३	३५
२१	०	३१२	३२	५५	५०	५७	१६	५८	४८	६०	३२	६२	२२
२१	३०	३२०	५	६३	५१	६५	२०	६६	५६	६८	४०	७०	३४
२२	०	३२७	४९	७१	३०	७३	१	७४	३८	७६	२४	७८	१५
२२	३०	३३५	४२	७८	५१	८०	२१	८१	५८	८३	४१	८५	३१
२३	०	३४३	४३	८५	५६	८७	२६	८९	०	९०	३९	९२	२६
२३	३०	३५१	५०	९२	५०	९४	१७	९५	४८	९७	२४	९९	६
२४	०	०००	०	९९	३५	१००	५९	१०२	२६	१०३	५७	१०५	३४

साम्पातिककाल कोष्ठक नं. १

सन्	घं. मि.से.	सन	घं. मि.से.	सन्	घं. मि.से.	सन्	घं.मि.से.	सन्	घं.मि.से.	सन्	घं. मि.से.	सन्	घं. मि. से.	सन्	घं. मि. से.
१९५०	६ ३९ २७	१९५७	६ ४० ४०	१९६४	६ ३७ ५६	१९७१	६ ३९ ७	१९७८	६ ४० १९	१९८५	६ ४१ ३२	१९९२	६ ३८ ४७	१९९९	६।३९।५९
१९५१	६ ३८ ३०	१९५८	६ ३९ ४३	१९६५	६ ४० ५५	१९७२	६ ३८ १०	१९७९	६ ३९ २२	१९८६	६ ४० ३५	१९९३	६ ४१ ४६	२०००	६।३९।०२
१९५२	६ ३७ ३३	१९५९	६ ३८ ४५	१९६६	६ ३९ ५७	१९७३	६ ४१ १०	१९८०	६ ३८ २४	१९८७	६ ३९ ३८	१९९४	६ ४० ४९	२००१	६।४२।०१
१९५३	६ ४० ३३	१९६०	६ ३७ ४७	१९६७	६ ३९ ००	१९७४	६ ४० १२	१९८१	६ ४१ २३	१९८८	६ ३८ ४०	१९९५	६ ३९ ५२	२००२	६।४१।०४
१९५४	६ ३९ ३५	१९६१	६ ४० ४७	१९६८	६ ३८ ३	१९७५	६ ३९ १५	१९८२	६ ४० २६	१९८९	६ ४१ ३९	१९९६	६ ३८ ५४	२००३	६।४०।०७
१९५५	६ ३८ ३८	१९६२	६ ३९ ५०	१९६९	६ ४१ २	१९७६	६ ३८ १७	१९८३	६ ३९ २९	१९९०	६ ४० ४१	१९९७	६ ४१ ५३	२००४	६।३९।१०
१९५६	६ ३७ ४१	१९६३	६ ३८ ५३	१९७०	६ ४० ५	१९७७	६ ४१ १६	१९८४	६ ३८ ३२	१९९१	६ ३९ ४४	१९९८	६ ४० ५६	२००५	६।४२।०९

साम्पातिक काल कोष्ठक नं० २

ता.	जनवरी			फरवरी			मार्च			अप्रैल		
↓	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.
१	०	०	०	२	२	१३	३	५२	३७	५	५४	५१
२	०	३	५७	२	६	९	३	५६	३३	५	५८	४७
३	०	७	५३	२	१०	६	४	०	३०	६	२	४३
४	०	११	५०	२	१४	२	४	४	२६	६	६	४०
५	०	१५	४६	२	१७	५९	४	८	२३	६	१०	३६
६	०	१९	४३	२	२१	५५	४	१२	१९	६	१४	३३
७	०	२३	३९	२	२५	५२	४	१६	१६	६	१८	२९
८	०	२७	३६	२	२९	४८	४	२०	१२	६	२२	२६
९	०	३१	३२	२	३३	४५	४	२४	९	६	२६	२२
१०	०	३५	२९	२	३७	४२	४	२८	५	६	३०	१९
११	०	३९	२५	२	४१	३९	४	३२	२	६	३४	१६
१२	०	४३	२२	२	४५	३५	४	३५	५९	६	३८	१३
१३	०	४७	१८	२	४९	३२	४	३९	५५	६	४२	९
१४	०	५१	१५	२	५३	२८	४	४३	५२	६	४६	६
१५	०	५५	१२	२	५७	२५	४	४७	४९	६	५०	२
१६	०	५९	८	३	१	२१	४	५१	४५	६	५३	५९
१७	१	३	४	३	५	१८	४	५५	४२	६	५७	५५
१८	१	७	१	३	९	१४	४	५९	३८	७	१	५२
१९	१	१०	५७	३	१३	११	५	३	३५	७	५	४८
२०	१	१४	५४	३	१७	८	५	७	३१	७	९	४५
२१	१	१८	५१	३	२१	५	५	११	२८	७	१३	४१
२२	१	२२	४८	३	२५	१	५	१५	२५	७	१७	३८
२३	१	२६	४४	३	२८	५८	५	१९	२२	७	२१	३४
२४	१	३०	४१	३	३२	५४	५	२३	१८	७	२५	३१
२५	१	३४	३७	३	३६	५१	५	२७	१५	७	२९	२८
२६	१	३८	३४	३	४०	४७	५	३१	११	७	३३	२४
२७	१	४२	३०	३	४४	४४	५	३५	८	७	३७	२०
२८	१	४६	२७	३	४८	४०	५	३९	५	७	४१	१७
२९	१	५०	२३	३	५२	३७	५	४३	१	७	४५	१३
३०	१	५४	२०				५	४६	५८	७	४९	१०
३१	१	५८	१६				५	५०	५४			
३२												

ता.	मई			जून			जुलाई			अगस्त		
↓	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.
१	७	५३	७	९	५५	२१	११	५३	३८	१३	५५	५०
२	७	५७	४	९	५९	१७	११	५७	३४	१३	५९	४७
३	८	१	०	१०	३	१४	१२	१	३१	१४	३	४४
४	८	४	५७	१०	७	१०	१२	५	२७	१४	७	४०
५	८	८	५३	१०	११	७	१२	९	२४	१४	११	३६
६	८	१२	५०	१०	१५	३	१२	१३	२१	१४	१५	३३
७	८	१६	४६	१०	१९	०	१२	१७	१७	१४	१९	२९
८	८	२०	४३	१०	२२	५६	१२	२१	१४	१४	२३	२६
९	८	२४	३९	१०	२६	५३	१२	२५	१०	१४	२७	२३
१०	८	२८	३६	१०	३०	४९	१२	२९	६	१४	३१	२०
११	८	३२	३२	१०	३४	४६	१२	३३	३	१४	३५	१६
१२	८	३६	२९	१०	३८	४२	१२	३६	५९	१४	३९	१३
१३	८	४०	२५	१०	४२	३९	१२	४०	५६	१४	४३	९
१४	८	४४	४२	१०	४६	३५	१२	४४	५२	१४	४७	६
१५	८	४८	१८	१०	५०	३२	१२	४८	४९	१४	५१	२
१६	८	५२	१५	१०	५४	२८	१२	५२	४५	१४	५४	५९
१७	८	५६	११	१०	५८	२५	१२	५६	४२	१४	५८	५५
१८	९	०	८	११	२	२१	१३	०	३८	१५	२	५२
१९	९	४	४	११	६	१८	१३	४	३५	१५	६	४८
२०	९	८	१	११	१०	१५	१३	८	३२	१५	१०	४५
२१	९	११	५८	११	१४	१२	१३	१२	२९	१५	१४	४१
२२	९	१५	५५	११	१८	८	१३	१६	२५	१५	१८	३८
२३	९	१९	५१	११	२२	५	१३	२०	२२	१५	२२	३४
२४	९	२३	४८	११	२६	१	१३	२४	१८	१५	२६	३१
२५	९	२७	४४	११	२९	५८	१३	२८	१५	१५	३०	२७
२६	९	३१	४१	११	३३	५४	१३	३२	११	१५	३४	२४
२७	९	३५	३७	११	३७	५१	१३	३६	८	१५	३८	२०
२८	९	३९	३४	११	४१	४७	१३	४०	४	१५	४२	१७
२९	९	४३	३०	११	४५	४४	१३	४४	१	१५	४६	१४
३०	९	४७	२७	११	४९	४१	१३	४७	५७	१५	५०	११
३१	९	५१	२४				१३	५१	५४	१५	५४	७
३२												

ता.	सितम्बर			अक्तूबर			नवम्बर			दिसम्बर		
↓	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.
१	१५	५०	४	१७	५६	२१	१९	५८	३४	२१	५६	५०
२	१६	२	०	१८	०	१७	२०	२	३१	२२	०	४७
३	१६	५	५७	१८	४	१४	२०	६	२७	२२	४	४३
४	१६	९	५३	१८	८	१	२०	१०	२४	२२	८	४०
५	१६	१३	५०	१८	१२	७	२०	१४	२०	२२	१२	३६
६	१६	१७	४६	१८	१६	३	२०	१८	१७	२२	१६	३३
७	१६	२१	४३	१८	२०	०	२०	२२	१३	२२	२०	३०
८	१६	२५	४०	१८	२३	५७	२०	२६	१०	२२	२४	२७
९	१६	२९	३७	१८	२७	५४	२०	३०	६	२२	२८	२३
१०	१६	३३	३३	१८	३१	५०	२०	३४	३	२२	३२	२०
११	१६	३७	३०	१८	३५	४७	२०	३८	०	२२	३६	१६
१२	१६	४१	२६	१८	३९	४३	२०	४१	५६	२२	४०	१३
१३	१६	४५	२३	१८	४३	४०	२०	४५	५२	२२	४४	९
१४	१६	४९	१९	१८	४७	३७	२०	४९	४९	२२	४८	६
१५	१६	५३	१६	१८	५१	३३	२०	५३	४५	२२	५२	२
१६	१६	५७	१२	१८	५५	३०	२०	५७	४२	२२	५५	५९
१७	१७	१	९	१८	५९	२६	२१	१	३९	२२	५९	५६
१८	१७	५	५	१९	३	२२	२१	५	३६	२३	३	५३
१९	१७	९	२	१९	७	१९	२१	९	३२	२३	७	४९
२०	१७	१२	५८	१९	११	१५	२१	१३	२९	२३	११	४६
२१	१७	१६	५५	१९	१५	१२	२१	१७	२५	२३	१५	४२
२२	१७	२०	५१	१९	१९	८	२१	२१	२२	२३	१९	३९
२३	१७	२४	४८	१९	२३	५	२१	२५	१८	२३	२३	३५
२४	१७	२८	४४	१९	२७	१	२१	२९	१५	२३	२७	३२
२५	१७	३२	४१	१९	३०	५८	२१	३३	११	२३	३१	२८
२६	१७	३६	३७	१९	३४	५४	२१	३७	८	२३	३५	२५
२७	१७	४०	३४	१९	३८	५१	२१	४१	४	२३	३९	२१
२८	१७	४४	३१	१९	४२	४८	२१	४५	१	२३	४३	१८
२९	१७	४८	२८	१९	४६	४५	२१	४८	५७	२३	४७	१४
३०	१७	५२	२४	१९	५०	४१	२१	५२	५४	२३	५१	११
३१				१९	५४	३८				२३	५५	७
३२										२३	५९	३

लीप इयर हो तो केवल फरवरी के बाद के महीनों में अभीष्ट तारीख में एक जोड़ कर कोष्ठक नं० २ को प्रयोग में लाइए ।

साम्पातिक काल कोष्ठक नं० ३

रेखांश	०°	पू.२०°	पू.४०°	पू.६०°	पू.८०°	पू.१००°	पू.१२०°	पू.१४०°	पू.१६०°
संस्कार सेकण्ड	+५०	+३७	+२४	+११	-२	-१५	-२८	-४१	-५४
रेखांश	१८०°	प.१६०°	प.१४०°	प.१२०°	प.१००°	प.८०°	प.६०°	प.४०°	प.२०°
संस्कार सेकण्ड	-६७/+१६९	+१५६	+१४३	+१३०	+११७	+१०४	+९१	+७८	+६५

साम्पातिक काल कोष्ठक नं. ४

मि.	०	५	१०	१५	२०	२५	३०	३५	४०	४५	५०	५५
घं.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.
०	० ००	० १	० २	० २	० ३	० ४	० ५	० ६	० ७	० ७	० ८	० ९
१	० १०	० ११	० ११	० १२	० १३	० १४	० १५	० १६	० १६	० १७	० १८	० १९
२	० २०	० २१	० २१	० २२	० २३	० २४	० २५	० २५	० २६	० २७	० २८	० २९
३	० ३०	० ३०	० ३१	० ३२	० ३३	० ३४	० ३४	० ३५	० ३६	० ३७	० ३८	० ३९
४	० ३९	० ४०	० ४१	० ४२	० ४३	० ४४	० ४४	० ४५	० ४६	० ४७	० ४८	० ४८
५	० ४९	० ५०	० ५१	० ५२	० ५३	० ५३	० ५४	० ५५	० ५६	० ५७	० ५७	० ५८
६	० ५९	१ ००	१ १	१ २	१ २	१ ३	१ ४	१ ५	१ ६	१ ७	१ ७	१ ८
७	१ ९	१ १०	१ ११	१ ११	१ १२	१ १३	१ १४	१ १५	१ १६	१ १६	१ १७	१ १८
८	१ १९	१ २०	१ २०	१ २१	१ २२	१ २३	१ २४	१ २५	१ २५	१ २६	१ २७	१ २८
९	१ २९	१ ३०	१ ३०	१ ३१	१ ३२	१ ३३	१ ३४	१ ३४	१ ३५	१ ३६	१ ३७	१ ३८
१०	१ ३९	१ ३९	१ ४०	१ ४१	१ ४२	१ ४३	१ ४३	१ ४४	१ ४५	१ ४६	१ ४७	१ ४८
११	१ ४८	१ ४९	१ ५०	१ ५१	१ ५२	१ ५३	१ ५३	१ ५४	१ ५५	१ ५६	१ ५७	१ ५७
१२	१ ५८	१ ५९	२ ०	२ १	२ २	२ २	२ ३	२ ४	२ ५	२ ६	२ ६	२ ७
१३	२ ८	२ ९	२ १०	२ ११	२ ११	२ १२	२ १३	२ १४	२ १५	२ १६	२ १६	२ १७
१४	२ १८	२ १९	२ २०	२ २०	२ २१	२ २२	२ २३	२ २४	२ २५	२ २५	२ २६	२ २७
१५	२ २८	२ २९	२ २९	२ ३०	२ ३१	२ ३२	२ ३३	२ ३४	२ ३४	२ ३५	२ ३६	२ ३७
१६	२ ३८	२ ३९	२ ३९	२ ४०	२ ४१	२ ४२	२ ४३	२ ४३	२ ४४	२ ४५	२ ४६	२ ४७
१७	२ ४८	२ ४८	२ ४९	२ ५०	२ ५१	२ ५२	२ ५२	२ ५३	२ ५४	२ ५५	२ ५६	२ ५७
१८	२ ५७	२ ५८	२ ५९	३ ०	३ १	३ २	३ २	३ ३	३ ४	३ ५	३ ६	३ ६
१९	३ ७	३ ८	३ ९	३ १०	३ ११	३ ११	३ १२	३ १३	३ १४	३ १५	३ १५	३ १६
२०	३ १७	३ १८	३ १९	३ २०	३ २०	३ २१	३ २२	३ २३	३ २४	३ २५	३ २५	३ २६
२१	३ २७	३ २८	३ २९	३ २९	३ ३०	३ ३१	३ ३२	३ ३३	३ ३४	३ ३४	३ ३५	३ ३६
२२	३ ३७	३ ३८	३ ३८	३ ३९	३ ४०	३ ४१	३ ४२	३ ४३	३ ४३	३ ४४	३ ४५	३ ४६
२३	३ ४७	३ ४८	३ ४८	३ ४९	३ ५०	३ ५१	३ ५२	३ ५२	३ ५३	३ ५४	३ ५५	३ ५६

अयनांश सारणी नं. १

ईस्वी	अयनांश	ईस्वी	अयनांश	ईस्वी	अयनांश
सन्	अं. क. वि.	सन्	अं. क. वि.	सन्	अं. क. वि.
१९२९	२२ ५१ ५५	१९५३	२३ १२ २	१९७७	२३ ३२ ८
१९३०	२२ ५२ ४५	१९५४	२३ १२ ५२	१९७८	२३ ३२ ५८
१९३१	२२ ५३ ३६	१९५५	२३ १३ ४२	१९७९	२३ ३३ ४८
१९३२	२२ ५४ २६	१९५६	२३ १४ ३२	१९८०	२३ ३४ ३९
१९३३	२२ ५५ १६	१९५७	२३ १५ २३	१९८१	२३ ३५ २९
१९३४	२२ ५६ ७	१९५८	२३ १६ १३	१९८२	२३ ३६ १९
१९३५	२२ ५६ ५७	१९५९	२३ १७ ३	१९८३	२३ ३७ ९
१९३६	२२ ५७ ४७	१९६०	२३ १७ ५३	१९८४	२३ ३८ ०
१९३७	२२ ५८ ३७	१९६१	२३ १८ ४४	१९८५	२३ ३८ ५०
१९३८	२२ ५९ २८	१९६२	२३ १९ ३४	१९८६	२३ ३९ ४०
१९३९	२३ ० १८	१९६३	२३ २० २४	१९८७	२३ ४० ३०
१९४०	२३ १ ८	१९६४	२३ २१ १५	१९८८	२३ ४१ २०
१९४१	२३ १ ५८	१९६५	२३ २२ ५	१९८९	२३ ४२ ११
१९४२	२३ २ ४९	१९६६	२३ २२ ५५	१९९०	२३ ४३ १
१९४३	२३ ३ ३९	१९६७	२३ २३ ४५	१९९१	२३ ४३ ५२
१९४४	२३ ४ २९	१९६८	२३ २४ ३६	१९९२	२३ ४४ ४२
१९४५	२३ ५ १९	१९६९	२३ २५ २६	१९९३	२३ ४५ ३३
१९४६	२३ ६ १०	१९७०	२३ २६ १६	१९९४	२३ ४६ २२
१९४७	२३ ७ ०	१९७१	२३ २७ ६	१९९५	२३ ४७ १३
१९४८	२३ ७ ५०	१९७२	२३ २७ ५७	१९९६	२३ ४८ ०३
१९४९	२३ ८ ४१	१९७३	२३ २८ ४७	१९९७	२३ ४८ ५३
१९५०	२३ ९ ३१	१९७४	२३ २९ ३७	१९९८	२३ ४९ ४४
१९५१	२३ १० २१	१९७५	२३ ३० २७	१९९९	२३ ५० ३४
१९५२	२३ ११ ११	१९७६	२३ ३१ १८	२०००	२३ ५१ २४

अयनांश सारणी नं. २

तारीख	१	४	७	१०	१३	१६	१९	२२	२५	२८	तारीख	१	४	७	१०	१३	१६	१९	२२	२५	२८
	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.		वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.
जनवरी	०	१	१	१	२	२	३	३	३	४	जुलाई	२५	२५	२६	२६	२७	२७	२८	२८	२८	२९
फरवरी	४	५	५	६	६	६	७	७	८	८	अगस्त	२९	३०	३०	३१	३१	३१	३२	३२	३३	३३
मार्च	८	९	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	सितम्बर	३४	३४	३४	३५	३५	३६	३६	३६	३७	३७
अप्रैल	१३	१३	१३	१४	१४	१५	१५	१५	१६	१६	अक्तूबर	३८	३८	३९	३९	३९	४०	४०	४१	४१	४१
मई	१७	१७	१७	१८	१८	१९	१९	२०	२०	२०	नवम्बर	४२	४२	४३	४३	४४	४४	४४	४५	४५	४६
जून	२१	२१	२२	२२	२३	२३	२३	२४	२४	२५	दिसम्बर	४६	४७	४७	४७	४८	४८	४९	४९	४९	५०

महर्षि-पराशरोक्त विंशोत्तरी महादशान्तर्दशा ज्ञान-चक्र

सूर्यदशा वर्ष ६ एक घड़ी में ३६ दिन	चंद्र दशा वर्ष १० एक घड़ी में ६० दिन	भौमदशा वर्ष ७ एक घड़ी में ४२ दिन	राहुदशा वर्ष १८ एक घड़ी में १०८ दिन	गुरु दशा वर्ष १६ एक घड़ी में ९६ दिन	शनि दशा वर्ष १९ एक घड़ी में ११४ दिन	बुध दशा वर्ष १७ एक घड़ी में १०२ दिन	केतुदशा वर्ष ७ एक घड़ी में ४२ दिन	शुक्रदशा वर्ष २० एक घड़ी में १२० दिन
कृ. उ. फा. उ. षा.	रो. ह. श्रवण	मृ. चि. ध.	आर्द्रा स्वा. श.	पुन. वि. पू. भा.	पुष्य अनु. उ. भा	आश्ले. ज्ये. रे.	म. मू. अश्वि.	पू. फा. पूषा. भ.
तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्
ग्रह व. मा. दि.	ग्रह व. मा. दि.	ग्रह व. मा. दि.	ग्रह व. मा. दि.	ग्रह व. मा. दि.	ग्रह व. मा. दि.	ग्रह व. मा. दि.	ग्रह व. मा. दि.	ग्रह व. मा. दि.
र ० ३ १८	चं. ० १० ०	मं. ० ४ २७	रा. २ ८ १२	बृ. २ १ १८	श. ३ ० ३	बु. २ ४ २७	के. ० ४ २७	शु. ३ ४ ०
चं. ० ६ ०	मं. ० ७ ०	रा. १ ० १८	बृ. २ ४ २४	श. २ ६ १२	बु. २ ८ ९	के ० ११ २७	शु. १ २ ०	र. १ ० ०
मं. ० ४ ६	रा. १ ६ ०	बृ. ० ११ ६	श. २ १० ६	बु. २ ३ ६	के. १ १ ९	शु. २ १० ०	र. ० ४ ६	च. १ ८ ०
रा. ० १० २४	बृ. १ ४ ०	श. १ १ ९	बु. २ ६ १८	के. ० ११ ६	शु. ३ २ ०	र. ० १० ६	चं. ० ७ ०	म. १ २ ०
वृ. ० ९ १८	श. १ ७ ०	बु. ० ११ २७	के. १ ० १८	शु. २ ८ ०	र. ० ११ १२	चं. १ ५ ०	मं. ० ४ २७	रा. ३ ० ०
श. ० ११ १२	बु. १ ५ ०	के. ० ४ २७	शु. ३ ० ०	र. ० ९ १८	चं. १ ७ ०	मं. ० ११ २७	रा. १ ० १८	बृ. २ ८ ०
बु. ० १० ६	के. ० ७ ०	शु. १ २ ०	र. ० १० २४	चं. १ ४ ०	मं. १ १ ९	रा. २ ६ १८	बृ. ० ११ ६	श. ३ २ ०
के. ० ४ ६	शु. १ ८ ०	र. ० ४ ६	चं. १ ६ ०	मं. ० ११ ६	रा. २ १० ६	बृ. २ ३ ६	श. १ १ ९	बु. २ १० ०
शु. १ ० ०	र. ० ६ ०	चं. ० ७ ०	मं. १ ० १८	रा. २ ४ २४	बृ. २ ६ १२	श. २ ८ ९	बु. ० ११ २७	के. १ २ ०

शिवोक्त योगिनी-दशाऽन्तर्दशा ज्ञानार्थ चक्र

मंगला व. १	पिंगला व. २	धान्या व. ३	भ्रामरी व. ४	भ्रद्रा व. ५	उल्का व. ६	सिद्धा व. ७	संकटा व. ८	दशा तथा वर्ष
चन्द्र	सूर्य	गुरु	मंगल	बुध	शनि	शुक्र	केतु	दशेश ग्रहा
आर्द्रा चि. श्र.	पुन. स्वा. ध.	पुष्य. वि.श.	आश्ले. अनु.पू.भा.	भ.म.ज्ये.उभा	कृ. पू. फा. मू.रे.	रो.उ.फा.पू.षा.	मृ. ह. उ.षा	जन्म नक्षत्र
मं. ० १०	पिं. १ १०	धा. ३ ०	भ्रा. ५ १०	भ. ८ १०	उ. १२ ०	सि. १६ १०	सं. २१ १०	अन्तर्दशा के मास, दिन।
पिं. ० २०	धा. २ ०	भ्रा. ४ ०	भ. ६ २०	उ. १० ०	सि. १४ ०	सं. १८ २०	म. २ २०	
धा. १ ०	भ्रा. २ २०	भ. ५ ०	उ ८ ०	सि. ११ २०	सं. १६ ०	मं. २ १०	पि ५ १०	
भ्रा. १ १०	भ ३ १०	उ ६ ०	सि. ९ १०	सं १३ १०	मं. २	पिं. ४ २०	धा. ८ ०	
भ. १ २०	उ. ४ ०	सि. ७ ०	स. १० २०	मं. १ २०	पिं. ४ ०	धा. ७ ०	भ्रा. १० २०	
उ. २ ०	सि. ४ २०	सं. ८ ०	मं. १ १०	पिं. ३ १०	धा. ६ ०	भ्रा. ९ १०	भ. १३ १०	
सि. २ १०	सं ५ १०	मं. १ ०	पिं. २ २०	धा. ५ ०	भ्रा. ८ ०	भ. ११ २०	उ. १६ ०	
सं. २ २०	मं. ० २०	पिं. २ ०	धा. ४ ०	भ्रा ६ २०	भ. १० ०	उ. १४ ०	सि. १८ २०	

दशा का भुक्तभोग्य

गत नक्षत्र की घट्यादि को ६० में से घटाकर इष्ट घटी पल जोड़ने से भयात होता है। ६० में से घटाए हुए अंकों में प्रवेश नक्षत्र के घट्यादि जोड़ने से भभोग होता है। भयात और भभोग की घटियों को ६० से गुणा कर पल बना लें। भयात के पलों को दशा के वर्षों से गुणाकर भभोग के पलों से भाग दें, लब्ध अंक वर्ष, फिर शेषांक को १२ से गुणा करें, भभोग के पलों से भाग दें, लब्ध मास, फिर शेषांक को ३० से गुणाकर भभोग के पलों से भाग दें, लब्ध दिन, फिर शेषांक को ६० से गुणाकर भभोग के पलों का भाग दें. लब्धांक घटी, फिर शेषांक को ६० से गुणाकर भभोग के पलों का भाग दें, लब्ध पल होगें। यह वर्षादि दशा का भुक्त होता है। इसको दशा के वर्षों में से घटाने पर भोग्य दशा होगी।

वर्षकुंडली में तनु आदि भावों में स्थित ग्रहों का फल

ग्रह	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्य	चिन्ता	नृप भी:	धनलाभ:	हानि:	कष्टम्	शत्रुनाश	पीड़ा	कष्टम्	धर्म नाश	सुखम्	धनला.	पीड़ा
चन्द्र	पीड़ा	धनलाभ:	हर्ष	शत्रुनाश	सुखम्	पीड़ा	कष्टम्	दु:खम्	भाग्योदय:	विजय	धनला.	व्यय
भौम	व्रज:	धननाश:	जय:	व्यसन	दुर्गति:	शत्रुनाश	स्त्रीकष्टम्	पीड़ा	पुण्योदय:	राज्यला.	धनला.	विरोध
बुध	सौख्यम्	धनलाभ:	सुखम्	द्रव्यलाभ	पुत्रलाभ	कलह	धनलाभ्	व्यग्रता	सुखम्	मानला.	सुखला.	विग्रह
गुरु	सुखम्	धनलाभ:	जय:	वाहन ला.	पुत्रलाभ	कष्टम्	सुखम्	रोग	धर्मलाभ	राज्यला.	धनला.	शोक
शुक्र	मानप्रा.	धनप्राप्ति	कीर्तिला	सुखलाभ	धनलाभ:	शत्रुभीति	स्त्रीसुखम्	कष्टम्	धर्मोदय	मानला.	धनला.	व्यय
शनि	वातार्ति	पीड़ा	धनलाभ:	दु:खम्	पुत्रप्री.	जय:	स्त्रीकष्टम्	रोग	भाग्यहा.	धनहा.	धनला.	चिंता
राहु	शिरोर्ति	राजभी	सुखम्	दु:खम्	बुद्धिनाश	शत्रुनाश	रोगभी:	कष्टम्	हानि	विजय.	सुलाभ.	व्याधि
केतु	चिन्ता	क्लेश	आरोग्य	राजभी:	दुर्बुद्धि	सुखम्	क्लेश:	पीड़ा	भाग्यना.	धनला.	लाभ	शोक
मुन्था	सुखम	यश,अर्थ	पुष्टि	दुखम्:	सुखाप्ति:	कष्टम्	व्यसनम्	दु:खम्	भाग्योदय	राज्यप्रा.	लाभ	कष्टम्

सूर्यसिद्धान्तीय वर्षप्रवेश-सारणी

गताब्द	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
बार	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४
घटी	१५	३१	४६	२	१७	३३	४८	४	१९	३५	५०	६	२१	३७	५२	८	२३	३९	५४	१०
पल	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गताब्द	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
बार	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१
घटी	२६	४१	५७	१२	२८	४३	५९	१४	३०	४५	१	१६	३२	४७	३	१८	३४	४९	५	२१
पल	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गताब्द	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
बार	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	३	४	५
घटी	३६	५२	७	२३	३८	५४	९	२५	४०	५६	११	२७	४२	५८	१३	२९	४४	०	१५	३१
पल	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गताब्द	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०
बार	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२
घटी	४७	२	१८	३३	४९	४	२०	३५	५१	६	२२	३७	५३	८	२४	३९	५५	१०	२६	४२
पल	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

सूचना- वेधसिद्धि वर्षमान सूर्य सिद्धान्तीय वर्षमान से ८.५ पल कम है। अत: सूक्ष्म-वर्ष प्रवेश-कालिक इष्ट निकालने के लिए गताब्दों को ८.५ से गुणा करके पलात्मक फल को सारणी से साधित इष्ट में से घटा देना चाहिए। यही सूक्ष्म-वर्ष मानानुसारी इष्ट होगा, चाहो तो इस इष्ट पर भी फल अनुभव करें।

वर्षफल साधन प्रकार:- (१.)अभीष्ट संवत् (जिस संवत् का वर्ष निकालना हो) में से जन्म समय का संवत् हीन करने से जो शेष बचे वह गतवर्ष, (गताब्द) जाने। स्मरण रहे, कि-मेषार्क प्रवेश के प्रथम और चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के अनन्तर का यदि वर्ष करना हो तो पिछले संवत् से करना (**वर्षायन्र्तुयुगपूर्वकमत्र सौरात्**)। इस प्रकार गताब्द निकालकर उसी गताब्द अंक के नीचे सारणी में जो वारादि अंक हैं उनमें जन्म का वार, इष्ट घड़ी पल जोड़ने से वर्ष प्रवेश कालिक वारादि इष्ट ज्ञात हो जाता है। यदि नीचे घट्यादि अंक साठ से अधिक हों तो ६० का भाग/देने से लब्धांक को ऊपर युक्त करते जाना। ऊपर से वारांक में सात से अधिक आजाय तो सात का भाग देकर लब्ध त्याग देने से वर्षप्रवेश समय का स्पष्ट वारादि इष्ट होगा। (२.) जिस दिन जन्म समय के स्पष्ट सूर्य तुल्य वर्ष में सूर्य मिले उसी दिन वर्ष प्रवेश जानना। प्रविष्टों के अनुसार कभी-कभी बार नहीं मिलता। वहाँ पर बार को ठीक जाने। इस इष्ट के अनुसार स्वदेशीय लग्न सारणी से लग्न साधन करके वर्ष कुण्डली लगाना। **मुन्थानयनप्रकार-** गताब्द संख्या में जन्म लग्न जोड़कर उसमें १२ का भाग देना जो शेष बचे वह मुन्था जानना। यह मुन्था प्रतिदिन पांच कला चलती है।

मुद्दा दशा- गत वर्ष में जन्म नक्षत्र जोड़कर उसमें दो घटायें, ९ का भाग देने से जो शेष बचे सो दशा जाननी १ बचे तो सूर्य, २ से चन्द्रमा, ३ से मंगल, ४ से राहु, ५ से गुरु, ६ से शनि, ७ से बुध, ८से केतु, ९ से शुक्र की दशा जानें।

दशा दिनादि- सूर्य के १८ दिन, चन्द्रमा के ३०, मंगल २१,राहु ५४, गुरु ४८, शनि ५७, बुध ५१, केतु २१, शुक्र ६०,यह दशा के दिन हैं।

हर्ष स्थान बल- सूर्य वर्ष लग्नन से ९ चन्द्रमा ३, मंगल ६, बुध १, गुरु ११वें, शुक्र ५वें, शनि. १२वें स्थान में हो तो ५ हर्ष बल देते हैं।

स्वोच्च बल- सू. १।५ च. २।४, मं. १।८।१०, बु. ३।६, गुरु. ९।१२।४, शु. २। ७।१२, श. १०।११।७, इन स्थानों में ५ बल देते हैं। **पुरुषस्त्री- ग्रह- बल-**स्त्रीग्रह (चं.बु.शु.श.) १।२।३।७।८।९ और पुरुष ग्रह (सू. मं. बृ.) ४।५।६।१०।११।१२वें स्थानों में ५ बल देते हैं। **दिनरात्रि बल-** दिन के वर्षेष्ट में पुरुषग्रह ५ बल देते हैं और रात्रि के इष्ट में स्त्रीग्रह ५ बल देते हैं।

त्रिराशिपति चक्र

मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	राशि
सू.	शु.	श.	शु.	गु.	चं.	बु.	मं.	श.	मं.	बृ.	चं.	दिनलग्नपति
बृ.	चं.	बु.	मं.	सू.	शु.	श.	शु.	श.	मं.	गु.	चं.	रात्रिलग्नपति

वर्ष में दृष्टि ज्ञान और फल

वर्ष में जो ग्रह जिस भाव में पडा हो उस भाव से पांचवे ९वें भाग को प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि से देखता है। फल - कार्य में शीघ्र सफलता, सुख, प्रेम, लाभ ओर जिन मनुष्यों के साथ पहले शत्रुता होती है, उनसे प्रेम होता है। तीसरे , ग्यारहवें गुप्त मित्र दृष्टि से देखता है। कार्य कठिनता से एंव गुप्त भाव से सफल हो , पहले सातवें प्रत्यक्ष शत्रु दृष्टि होती है । फल- शत्रुता उत्पन्न करे, मित्र से बैर , धन हानि , बनते काम को बिगाडना आदि फल होते है ।४-१० गुप्तशत्रु दृष्टि से देखते है । फल - कार्य बडी कठिनता से सफल हो , गुप्तरूप से शत्रु भी उत्पन्न होते हैं।

अथ वर्षेश निर्णय :- जन्म लग्नेश १ , वर्ष लग्नेश २ , मुन्थेश ३ त्रैराशींश ४ समयेश ५ (दिन में वर्ष प्रवेश हो तो सूर्य जिसे राशि पर हो उस राशि का स्वामी और रात्रि में हो तो चन्द्रराशि का स्वामी) इन पांचों अधिकारियों में से जो सबसे बलवान हो और लग्न को देखेंवह वर्षेश होगा, । यदि पाँचों में से कोई भी लग्न को न देखता हो तो उन में से अधिक बलवान हो वही वर्षवेश्वर होगा । कई ग्रहों का बल समान हो तो जिसकी लग्न पर अधिक दृष्टि हो वह बल. दृष्टि. अधिकार यह तीनों समान हो तो मुन्थेश ही वर्षेश हो । यदि चन्द्रमा वर्षेश प्राप्त हो तो जिससे वह इत्यशाल करे या जिसकी राशि में बैठा हो वही वर्षेश हो ॥ फल - वर्षेश ६।८।१२ व अस्तंगत हीन बली हो तो वर्ष में दुःख शोक , चिन्ता , भय विशेष होगा । यदि बलिष्ठ होकर शुभ स्थान में सुयोग के साथ बैठा हो तो वर्ष में सुखैश्वर्य की वृद्धि हो ।

वर्ष में तबदीली का योग- वर्ष कुण्डली में लग्नेश - तृतीयेश वा चतर्थेश-नवमेश एक घर में हो या एक दूसरे को मित्र दृष्टि से देखें तो उस वर्ष तबदीली होगी । अगर वर्ष- लग्नेश वक्री हो और वह मित्रग्रह से दृष्ट हो तो भी तबदीली होगी ।

सूक्ष्म, शुद्ध वर्षमान के अनुसार वर्षप्रवेश काल

वेध द्वारा यह सिद्ध हो चुका है कि सूर्यसिद्धान्तीय वर्षमान वास्तविक (शुद्ध) वर्षमान से ३½ मिनट अधिक है। शुद्ध वर्षफल बनाने के लिए सूक्ष्म वर्षप्रवेशकाल का होना आवश्यक है। हम यहां "सूक्ष्म वर्ष-प्रवेश-सारणी" दे रहे हैं। जो दैवज्ञ वर्षफल के लिए सूक्ष्म वर्षप्रवेशकाल जानना चाहते हैं, उन्हें इसी सारणी का प्रयोग करना चाहिए।

इस सारणी में घं.मि. का प्रयोग है, अत: इससे वर्षप्रवेशकाल जानने के लिए जातक के जन्म का स्टैं.टा. ही यहां प्रयोग में लाना होगा। जैसे- मान लीजिए किसी व्यक्ति के दसवें वर्ष का प्रवेशकाल जानना है। उस व्यक्ति के जन्म का वार चन्द्र और जन्मकाल (भा.स्टैं. टा.) ८ घं. २० मि. (प्रात:) है। उसके वारादि जन्मकाल (२ वा.८घं.२० मि.)में सारणी से गताब्द ९ द्वारा प्राप्त वारादि काल ४ वा. ७घं. २२ मि. जोड़ने पर ६ वा. १५ घं. ४२ मि. मिले। इसका अर्थ हुआ कि इस व्यक्ति के दसवें वर्ष का प्रवेश शुक्रवार को १५ घं. ४२ मि. (भा.स्टैं.टा.) पर होगा।

ध्यान रहे- इस सारणी के प्रयोग से प्राप्त वार रात्रि के १२ बजे बदलने वाला होगा। अत: यहां प्रयोग में लाया जाने वाला जन्मकालिक वार भी इसी प्रकार का होना चाहिए।

सूक्ष्म वर्ष प्रवेश सारणी

गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.
१	१/६/९	१३	२/७/५९	२५	३/९/४९	३७	४/११/३९	४९	५/१३/२९	६१	६/१५/१९	७३	०/१७/९	८५	१/१८/५९	९७	२/२०/४९	१०९	३/२२/३९
२	२/१२/१८	१४	३/१४/८	२६	४/१५/५८	३८	५/१७/४८	५०	६/१९/३८	६२	०/२१/२८	७४	१/२३/१८	८६	३/१/८	९८	४/२/५८	११०	५/४/४८
३	३/१८/२७	१५	४/२०/१७	२७	५/२२/७	३९	६/२३/५७	५१	१/१/४७	६३	२/३/३७	७५	३/५/२७	८७	४/७/१७	९९	५/९/७	१११	६/१०/५७
४	५/०/३७	१६	६/२/२७	२८	०/४/१६	४०	१/६/६	५२	२/७/५६	६४	३/९/४६	७६	४/११/३६	८८	५/१३/२६	१००	६/१५/१६	११२	०/१७/६
५	६/६/४६	१७	०/८/३६	२९	१/१०,२६	४१	२/१२/१६	५३	३/१४/६	६५	४/१५/५६	७७	५/१७/४५	८९	६/१९/३५	१०१	०/२१/२५	११३	१/२३/१५
६	०/१२/५५	१८	१/१४/४५	३०	२/१६/३५	४२	३/१८/२५	५४	४/२०/१५	६६	५/२२/५	७८	६/२३/५५	९०	१/१/४५	१०२	२/३/३४	११४	३/५/२४
७	१/१९/४	१९	२/२०/५४	३१	३/२२/४४	४३	५/०/३४	५५	६/२/२४	६७	०/४/१४	७९	१/६/४	९१	२/७/५४	१०३	३/९/४४	११५	४/११/३४
८	३/१/१३	२०	४/३/३	३२	५/४/५३	४४	६/६/४३	५६	०/८/३३	६८	१/१०/२३	८०	२/१२/१३	९२	३/१४/३	१०४	४/१५/५३	११६	५/१७/४३
९	४/७/२२	२१	५/९/१२	३३	६/११/२	४५	०/१२/५२	५७	१/१४/४२	६९	२/१६/३२	८१	३/१८/२२	९३	४/२०/१२	१०५	५/२२/२	११७	६/२३/५२
१०	५/१३/३२	२२	६/१५/२२	३४	०/१७/११	४६	१/१९/१	५८	२/२०/५१	७०	३/२२/४१	८२	५/०/३१	९४	६/२/२१	१०६	०/४/११	११८	१/६/१
११	६/१९/४१	२३	०/२१/३१	३५	१/२३/२१	४७	३/१/११	५९	४/३/०१	७१	५/४/५०	८३	६/६/४०	९५	०/८/३०	१०७	१/१०/२०	११९	२/१२/१०
१२	१/१/५०	२४	२/३/४०	३६	३/५/३०	४८	४/७/२०	६०	५/९/१०	७२	६/११/०	८४	०/१२/५०	९६	१/१४/४०	१०८	२/१६/२९	१२०	३/१८/१९

-वर्षप्रवेश का लग्न किस स्थान का होना चाहिए।

जिस प्रकार जातक का जन्म जिस स्थान पर होता है उसी स्थान के अक्षांश-रेखांशानुसार ही लग्न का निर्णय किया जाता है, ठीक उसी प्रकार वर्षप्रवेश के समय जातक जिस स्थान पर हो उसी स्थान के अक्षांश -रेखांशानुसार ही वर्षप्रवेश का लग्न होना चाहिए, क्योंकि वर्ष प्रवेश भी जातक का एक 'उपजन्म' ही है। इस प्रकार न्यूयार्क (अमेरिका) में जन्म लेने वाला जातक यदि अपने किसी वर्ष के प्रवेश के समय दिल्ली (भारत) में मौजूद है तो उसके उस वर्ष का प्रवेशकालीन लग्न दिल्ली के अक्षांश-रेखांशानुसार ही लगाना चाहिए। इसी तरह यदि दिल्ली में जन्म लेने वाला जातक वर्षप्रवेश के समय न्यूयार्क में हो तो उसके उस वर्ष का प्रवेशकालीन लग्न न्यूयार्क के अक्षांश-रेखांशानुसार ही होना चाहिए। क्योंकि प्राचीन काल में अधिकतर लोग अपने जन्मस्थान को छोड़कर बहुत कम दूसरे स्थान पर जाते थे, अत: ज्योतिषी लोगों में वर्षप्रवेश के लग्न को जन्मस्थान से ही जोड़ने की परम्परा बन गई, जो तर्कसंगत नहीं है।

इस विषय को स्पष्टता से समझने के लिए 'सं २०५२ वि. के '"श्री मार्त्तण्ड पंचांग" में पृ. ४१ -४२ पर छपा मेरा लेख "**वर्षप्रवेश का लग्न किस स्थान का होना चाहिए?**" पढें।

मास प्रवेशकाल

भिन्न भिन्न राशियों में संचार करता हुआ सूर्य जब-जब जातक के जन्म-कालिक स्पष्ट सूर्य की अंश, कला, विकलाओं के तुल्य अंश,कला, विकलाओं पर आता है तब-तब जातक के मासों का प्रारम्भ (मास प्रवेश)होता है। उदाहरणार्थ- यदि जातक का जन्मकालिक स्पष्ट सूर्य २ रा. १० अं. २५ क. ४० वि. है, तो जब जब वह (सूर्य) जातक की आयु के विभिन्न वर्षों मे मेष आदि राशियों के १० अं. २५ क. ४० वि. पर पहुँचेगा, तब -तब जातक के तत्तद् वर्षों के मासों का प्रारम्भ माना जाएगा। सूर्य अमुक राशि के अमुक अं.क. वि. पर कब पहुँचेगा -इसका निर्णय सूर्य की मास-प्रवेश वाले दिन की गति और उस दिन के पंचांगस्थ दैनिक सूर्य तथा मास-प्रवेशकालिक सूर्य के अन्तर से त्रैराशिक द्वारा किया जा सकता है। (इसके लिए सं. २०५० वि. के "मार्त्तण्ड पंचांग" में पृष्ठ ४१ पर दिया गया मेरा लेख "**स्पष्टमान से मास प्रवेश काल**" पढें।)

— प्रियव्रत शर्मा

ग्रहशील-चक्र

रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	
३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	०	३।१०	३।१०	ग्रहाणां एकपाददृष्टि:
५।९	५।९	५।९	५।९	०	५।९	५।९	५।९	५।९	द्विपाददृष्टि
४।८	४।८	०	४।८	४।८	४।८	४।८	४।८	४।८	त्रिपाददृष्टि
७	७	४।७।८	७	५।७।९	७	३।७।१०	७	७	सम्पूर्ण दृष्टि
चं.मं. गु.	र. बु.	र. बृ. चं.	र. रा. शु.	र. चं. मं.	बु. रा. श.	बु. रा. शु.	बु. श.शु.	बु.	मित्र-ग्रहा:
बु.	मं.श. गु.शु.	शु. श.	मं. गु. श.	रा. श.	मं. गु.	गु.	गु.	०	समग्रहा:
श. रा. शु.	रा.	बु. रा.	चं.	बु. शु.	र. चं.	र. चं. मं.	र. चं. मं.	०	शत्रुग्रहा:
मेष	वृष	मकर	कन्या	कर्क	मीन	तुला	मिथुन	धनु	उच्चराशय:
१०	३	२८	१५	५	२७	२०	१५	१५	परमोच्चांशा:
तुला	वृश्चिक	कर्क	मीन	मकर	कन्या	मेष	धनु	मिथुन	नीचराशय:
१०	३	२८	१५	५	२७	२०	१५	१५	नीचांशा:
सिंह	कर्क	मे. वृश्चि.	मि. कं.	ध. मी.	वृष, तुला	म. कुं.	कन्या	मीन	स्वगृहाणि
सिंह	वृष	मेष	कन्या	धनु	तुला	कुम्भ	कर्क	मकर	मूलत्रिकोण
क्षत्रिय	वैश्य	क्षत्रिय	शूद्र	विप्र	विप्र	शूद्र निषाद	निषाद	निषाद	वर्ण
पुरुष	स्त्री	पुरुष	नपुंसक	पुरुष	स्त्री	नपुंसक	पुरुष	पुरुष	पु.स्त्री.नपुंसक
मध्याह्न	अपराह्न	मध्याह्न	प्रभात	प्रभात	अपराह्न	अपराह्न	अपराह्न	अपराह्न	समय
पूर्व	वायव्य	दक्षिण	उत्तर	ईशान	आग्नेय	पश्चिम	नैर्ऋत्य	नैर्ऋत्य	दिशा
सुवर्ण	रौप्य	सुवर्ण	कांस्य	सुवर्ण	रौप्य	लोह	लोह	लोह	धातु
चतुष्पद	बहुपद	चतुष्पद	द्विपद	द्विपद	द्विपद	भुजंगपद	अपद	अपद	पाद
उग्र	सौम्य	उग्र	शुभ	शुभ	शुभ	पाप	पाप	पाप	सौम्यादि
सत्व	सत्व	तम	रज	सत्व	रज	तम	तम	तम	गुण
स्थिर	चर	चर	द्विस्व.	स्थिर	चर	पक्षी, स्थिर	चर	पक्षी	चरादि
तिक्त	क्षार	कटु	सर्व रस	मधुर	अम्ल	कषाय	कषाय	कषाय	रस
पशु	जलभु	दुग्ध	श्मशान	वाणी	जल	उत्कट	ऊषर	ऊषर	भूमि
पित्त	श्लेष्म	पित्त	समधातु	समधातु	कफशुक्र	वायु	धूम्र	वायु	पित्तादि
वृद्ध	युवा	युवा	युवा	वृद्ध	युवा	अतिवृद्ध	वृद्ध	वृद्ध	अवस्था
पाटल	गौरश्वेत	रक्त	नील	पीत	श्वेत	नील	धूम्र	धूम्र	रंग
मूल	जीव	धातु	जीव	जीव	मूल	मूल	धातु	धातु	धात्वादि
वन	जल	वन	ग्राम	ग्राम	ग्राम	सन्धि	विवर	विवर	स्थान

वर्ष में योगिनी के लिए जन्म नक्षत्र संख्या में गताब्द जोड़ें ३ और जोड़ें ८ से शेष करें तो मंगलादि योगिनी दशा होती है

वर्षयोगिनीमतेन मुद्दादशा (मास-दिन)

मं.	पिं.	धा.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.	सं.
०	०	१	१	१	२	२	२
१०	२०	०	१०	२०	०	१०	२०

गर्भ योग - वर्ष कुण्डली में लग्नेश पांचवे या सातवें पड़ा हो वा पंचमेश और सप्तमेश लग्न में पड़े हों तो उस वर्ष गर्भयोग होता है । मुंथेश और चन्द्रमा बली होकर पांचवे हो और पंचमेश भी बली हो तो गर्भ होता है ।

जन्मपत्री न हो तो वर्ष बनाने की रीति

स्पष्ट प्रश्न लग्न की राशि को छोड़कर अंशादिक की कला करना, फिर उसमें १५० (डेढ़ सौ)का भाग देना । लब्ध जो राश्यादि चार फल आवे उसकी राशि के अंक में प्रश्न लग्न की राशि अंक मिलाना, यह मुंथा का स्पष्ट लग्न जानना। और प्रश्न लग्न से चतुर्थ राशि का स्वामी जन्म लग्नेश जानना अर्थात् पंचाधिकारियों में जन्म लग्न पति के स्थान में प्रश्नलग्न से चतुर्थ राशि का स्वामी जो हो वह लिखना। प्रश्न पत्र पर वर्ष बनाने में इतना ही विशेष जानना। अन्य सर्व रीति में कुछ न्यूनाधिक नहीं है ।

अरिष्ट योग :

यदि जन्म लग्न ही वर्ष लग्न होऔर जन्म नक्षत्र भी वर्ष में वहीं आ जाये तो यह द्विजन्मा वर्ष अशुभ है । वर्ष में गुरु चन्द्र शुभ न हो तो अशुभ कष्ट भय होता है। वर्ष में गुरु चन्द्र शुभ हो तो अशुभ फल नहीं होगा ।

आवश्यक मुहूर्त

कोई भी कार्य वह शास्त्र- सम्मत शुभ-मुहूर्त में करें तो अवश्य सफल होकर सुखप्रद होता है। गुरु शुक्रास्त में गया-गोदावरी यात्रा में नवरात्र कृत्य में एवं चातुर्मास्य व्रत में गुरु - शुक्रास्त का दोष नहीं होता।

गर्भाधान संस्कार का मुहूर्त

शुभ तिथियां- १,२,३,५,७,१०,११,१२,१३। **शुभ नक्षत्र**- तीनों उत्तरा मृ.ह.अनु.रो.स्वा.श्र.ध.श.। **शुभ लग्न**-जब लग्न और ४,५,७,९,१० स्थानों में शुभग्रह हों,३,६,११ स्थानों में पापग्रह हों सूर्य मंगल या गुरु लग्न हो देखते हों,विषम राशि के नवांशक में चन्द्रमा हो, रजोदर्शनकाल से पहली चार रात्रि छोड़ कर १६ रात्रि तक समरात्रि में गर्भ हो तो पुत्र, विषम में कन्या होती है।

चित्रा, पुन., पुष्य, अश्विनी गर्भाधान के लिए मध्यम है।

गर्भाधान के लिए अशुभ-काल

भद्रा ४,६,८,९,१४,१५, ३० तिथियां, संक्रान्ति का दिन। सन्ध्याकाल, मंगल, रवि, शनिवार, रजोदर्शनकाल की पहली चार रात्रियां, ज्येष्ठा, रेवती और आश्रेषा नक्षत्रों के अन्त की दो घड़ी, मूल अश्विनी और मघा के आदि की २ घड़ी ४,८,१२, लग्नों के अन्त की आधी घड़ी ५,९,१ लग्नों की आधी घड़ी ५,९,१५ तिथियों के अन्त की एक घड़ी,६,११,१ तिथियों के आदि की एक घड़ी, निर्बल तारा, जन्म नक्षत्र मूल, भरणी, अश्विनी,रेवती, मघा-नक्षत्र, ग्रहण के दिन व्यतिपात वैधृतियोग माता-पिता के श्राद्ध का दिन, दिन का समय, परिघ योग का आधा भाग, उत्पात से हत नक्षत्र, जन्मराशि से अष्टमलग्न, पापयुक्त लग्न तथा नक्षत्र गर्भाधान के लिए वर्जित है।

गर्भ मासों के स्वामी

मास	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
स्वामी	शुक्र	मंगल	गुरु	सूर्य	चन्द्रमा	शनि	बुध	गर्भाधान समय का लग्नेश	चन्द्रमा	सूर्य

स्त्री पुरुष के चन्द्रबल की विशेषता

गर्भाधान संस्कार में स्त्री का चन्द्रबल देखना चाहिए, और अन्य कर्मों में पति का चन्द्रबल देखना चाहिए, यह सदा स्मरण रखें।

पुंसवन का मुहूर्त - यह गर्भाधान के तीसरे मास में गुरु. रवि. मंगलवार को मृ, पुन, पु, ह, मूल और श्रवण नक्षत्रों में १,२,३,५,७,१०,११,१३,१५,तिथियों में जब लग्न से १,४,५,७,९, और १० स्थानों में शुभग्रह और ३,६,११ स्थान में पापग्रह हों तो तब शुभ होता है। तीनों उत्तरा, रोहिणी और रेवती नक्षत्र तथा सोम, बुध, और शुक्रवार भी शुभ है।

सीमान्त संस्कार का मुहूर्त - गर्भाधान के छठे या आठवें मास में, जब मास का स्वामी बली हो तब पुंसवन के मुहूर्त में निर्दिष्ट तिथियों, वारों, नक्षत्रों और लग्नों में सीमान्त शुभ होता है।

सीमन्त जातकदीनि प्राशनान्तानि यानि वै । न दोषो मलमासस्य मौढ्यस्य गुरुशुक्रयोः ॥

गर्भ-रक्षा के लिए विष्णुपूजा - गर्भाधान के आठवें मास में श्रवण, रोहिणी और पुष्य नक्षत्र में शुभ लग्न, वार और तिथियों में जब लग्न से आठवां स्थान शुद्ध हो तब विष्णु की पूजा करनी चाहिए।

मेधा-जनन संस्कार - बालक उत्पन्न होने के अनन्तर नाल काटने से पहले दाहिने हाथ की अनामिका अंगुली के अग्रभाग में सुवर्ण लगाकर सुवर्ण सहित अंगुली से शहद और गौ के घी को मिलाकर **''ॐ भूस्त्वयि दधामि, ॐ भुवस्त्वयि दधामि, ॐ स्वस्त्वयि दधामि, ॐ भूर्भुव स्वः सर्वं त्वयि दधामि''** इन चारों मन्त्रों से बालक को थोड़ा-थोड़ा चार बार मधु चटावें, ऐसा करने से बालक बुद्धिमान और यशस्वी होता है।

स्तनपान कराने व सूतिका पथ्य का मुहूर्त - रिक्तामा. भद्रा, व्यातिपात एवं वैधृति को छोडकर शुभ तिथियां हों. वार चं. बु. गु. श. हों. नक्षत्र मृग. पुन. पु. श्र. रे. म. हो. तब स्तनपान कराना शुभ है । आगे अन्नप्राशन में कही गई तिथि नक्षत्रों में सूतिकापथ्य शुभ है ।

प्रसूता स्त्री के स्नान का मुहूर्त - रेवती तीनों उत्तरा . रो. मृ. ह. स्वा. अश्विनी और अनुराधा नक्षत्रों में रवि गुरु और भौम वारों में. १.२.३.५.७.१०.११.१३.१५. तिथियां शुभ है । आर्द्रा पुन. पु. श्र. म. भ. कृ. वि. मू. और चित्रा नक्षत्र तथा शनि और बुधवार त्याज्य है। अन्य नक्षत्र और वार मध्यम है।

प्रसूता स्त्री के जलपूजन का मुहूर्त - मास समाप्त होने पर बुध . गुरु या चन्द्रवार की ४.९.१४. तिथियों को छोडकर अन्य तिथियों में श्र. पुन. पु. मृ. ह. मू. अनु. नक्षत्रों में जलपूजन उत्तम है । परन्तु गुरु और शुक्र के अस्त में चैत्र . पौष या अधिक मास में (मास पूरा होने पर भी) जलपूजन नहीं करना चाहिए।

जातकर्म और नामकरण का मुहूर्त - संक्रान्ति का दिन. भद्रा और व्यतिपात को छोडकर १.२.३.५.७.१०.११.१२.१३ तिथियों में जन्मकाल से ११ वें या १२ वें दिन सोम. बुध और शुक्रवार को मृ. रे. चि. अनु. तीनों उत्तरा . रो. ह. अश्विनी पुष्य . अभि . स्वा. पुन. श्र. ध. श. नक्षत्रों में जब लग्न से १,४,५,७,१० स्थनों में शुभग्रह तथा ३.६.११ स्थानों में पापग्रह हो तब शुभ होता है ।

अथ दोला (झूला) आरोहण मुहूर्त

जन्म दिन से १०।१२।१६। १८।३२ दिन शुक्रवार में मृ. रे. चि. अनु. ह. अश्वि . पुष्य. अभि. तीनों उत्तरा. रो. नक्षत्रों में ४।९।१४।३० इनसे रहित तिथियों में १।४।७।१० इन लग्नों में शुभग्रह से युक्त होने पर १।४।५।६।७।९।१०।११ वें शुभग्रह हों ३।६। ११वें पापग्रह हो तो उत्तम होता है ।

सूर्य नक्षत्र से चन्द्रनक्षत्र तक गिनें				
५	५	५	५	७
नैरुज्य	मरण	कृशता	व्याधि	सौख्य

निष्क्रमण मुहूर्त - स्वा. अश्वि. पुन. ह.मू. पु. अनु. श्र. रो. ध. नक्षत्रों में भौम . शनि को छोडकर अन्य वारों में, रिक्ता अमा. भद्रादि से रहित शुभ दिन में, तीसरे चौथे मास में शुभ है। शीघ्रता होवे तो १२ वें दिन बालक का निष्क्रमण करें। इसी दिन सूर्य और नक्षत्र पूजन पूर्वक सूर्य नक्षत्रों का दर्शन करावें।

भूम्युपवेशन मुहूर्त-पांचवे महीने में पृथ्वी वाराह का पूजन करके भौम के पूर्ण बल में तीनों उत्तरा.रो.मृ.ज्ये.अनु.अश्वि.ह.पुष्य.अभि.इन नक्षत्रों में ४।९।१४।३० इन तिथियों को छोड़कर स्थिर लग्न में शुभ दिन में बालक के करधनी का त्रिसूत्र- बांध कर पृथ्वी पर बिठावें।

भूम्युपवेशन के लिए मंत्र-''रक्षैनं वसुधे देवि सदा सर्वगतं शुभे। आयु: प्रमाणं सकलं निक्षिपस्व हरिप्रिये!'' इति॥ इसी समय बालक के सामने पुस्तक, कलम, वस्त्र, शस्त्र, स्वर्ण, चांदी, तुला आदि वस्तु रखें, जिसको बालक ग्रहण करे उससे उसकी जीविका होती है।

अन्नप्राशन का मुहूर्त-जन्ममास से ६,८,१० या १२ वें मास में पुत्र का और ५,७,९ या ११वें मास में कन्या का भद्रादि- दोष रहित १,३,५,७,१०,१३,१५ तिथियों में सोम,बुध,गुरु ,और शुक्रवार को म.रे.चि.अनु.ह.अश्वि.पु.अभि.स्वा.पुन.श्र.ध.श.तीनों उत्तरा, रोहिणी नक्षत्रों में जन्मराशि या जन्मलग्न से आठवें लग्न या नवांशक तथा मेष,वृश्चिक और मीन लग्न को छोड़कर ऐसे लग्न में १,३,४,५,७,९,१० स्थानों में शुभ ग्रह हो या शुभ ग्रह की दृष्टि हो,३,६,११ स्थानों में पापग्रह हों दशम स्थान पापग्रह रहित हो ,१,६,८ स्थान में चन्द्रमा न हो तो शुभ होता है किसी-किसी के मत से जन्मनक्षत्र अनु.शत-तारिका और स्वाती अशुभ है।

कर्णवेध का मुहूर्त-चैत्र पौष देवशयन (आषाढ़ शुक्ल ११ से कार्तिक शुक्ल ११ तक)जन्ममास, जन्मनक्षत्र ४,९,१४ तिथियां, जन्मतारा क्षय तिथि और सम वर्षो को छोड़कर जन्म के १२वें दिन या १६वें दिन,६वें, ७वें, ८वें मास या विषम वर्षों में सोम,बुध,गुरु ,शुक्रवार को श्र.ध.पुन.मृ.रे.चि.अनु.ह.अश्वि.पुष्य.अभि. नक्षत्रों में जब लग्न से अष्टम स्थान शुद्ध हो,१,४,५,७,९,१०,स्थानों में शुभ ग्रह हों,३,६,११,स्थानों में पाप ग्रह हों तुला,वृष,धनु,या मीन लग्न में वृहस्पतिवार हो तो कर्णछेदन श्रेष्ठ है। इस संस्कार के समय पर करने से मनुष्य के हर्निया (अंत्रवृद्धि) जैसे भयानक रोग की जड़ ही कट जाती है।

कन्या की नासिका छेदन का मुहूर्त-कर्णवेधोक्त नक्षत्रों में तथा उत्तरा ३, शत.स्वा. में शुभ तिथ्यादिक शुक्लपक्ष में दिन के प्रथम प्रहर के समय नासिका वेध शुभ है।

मुण्डन मुहूर्त-गर्भाधानकाल से या जन्मकाल से विषम अर्थात् ३रे,५ वे,७ वे वर्ष में (मनु जी के मत से प्रथम वर्ष में भी)चैत्र को छोड़कर उत्तरायण सूर्य में चन्द्र,बुध,गुरु,और शुक्रवार, लग्न तथा नवांशक में, जन्मराशि या जन्मलग्न से अष्टम लग्न को छोड़ २,३,५,७,१०,११,१३ तिथियों में संक्रान्ति के दिन को छोड़कर जब लग्न से आठवां स्थान शुद्ध (ग्रहरहित)हो, ३,६,११,स्थानों में पापग्रह हो ज्ये.मृ.रे.चि.स्वा.पुन.श्र.ध.शत.ह.अश्वि.पुष्य और अभिजित नक्षत्रों में शुभ है। **लड़के की माता को पांच मास का गर्भ हो तो मुण्डन निषिद्ध है, परन्तु पांच वर्ष से अधिक अवस्था के बालक के लिए निषेध नहीं है।जेठे लड़के का मुण्डन ज्येष्ठ मास में नहीं करना चाहिए।**

मुण्डन कर्म में विशेष-स्व-कुल शिष्टाचारानुसार पूर्वोक्त नक्षत्र तिथ्यादि शुभ समय में अपने-अपने इष्टदेव के स्थानों में मुण्डन तथा कर्णवेध का होना देखा जाता है। सो ''यथाकुलधर्म व:'' इस स्मृति के स्मरण से ठीक ही है॥

क्षौर बनवाने का मुहूर्त-मुण्डन के लिए जो तिथियां और नक्षत्र शुभ बतलाये गये हैं वे ही हजामत बनवाने के लिए शुभ है-वर्जित काल शनि.रवि.भौमवार, हजामत में नौवें दिन, संध्याकाल, ४,८,९,१४,१५,३, तिथियां संक्रान्ति का दिन, रात्रि में, बिना आसन, संग्राम में,यात्रा करने के दिन, स्नान करके, शरीर में उबटन लगवाकर और भोजन के पीछे हजामत बनवाना अशुभ है।

विशेष फल-यज्ञ विवाह, मृतक कर्म में, कारागार से छूटने पर, ब्राह्मण और राजा की आज्ञा से किसी भी समय हजामत बनवाई जा सकती है। किसी-किसी आचार्य का मत है कि जो लोग राजकार्य में नियुक्त हैं वे रुपजीवी जैसे नट-भांड आदि किसी भी दिन हजामत बनवा सकते हैं।

कर्णवेध और क्षौर का वार--ब्राह्मण को रविवार, क्षत्रिय सोमवार को,वैश्य और शूद्र शनिवार को क्षौरोक्त तिथ्यादि में हजामत बनवा सकते हैं।

अक्षरारम्भ का मुहूर्त-जन्म से ५वें या ७वें वर्ष में उत्तरायण सूर्य में गणेश, विष्णु,सरस्वती और लक्ष्मी का पूजन करके सोम, बुध, गुरु और शुक्रवार को ह.अश्वि.पुष्य.अभि.श्र.स्वा.रे.पुन. आर्द्रा.चित्रा.अनुराधा नक्षत्रों में बुरे योगों और भद्रा को छोड़कर २,३,५,६,१०,११,१२ तिथियों में (शुक्लपक्ष उत्तम) अक्षरारम्भ शुभ होता है, लग्न में मेष,कर्क, तुला,और मकर राशियां नहीं होनी चाहिए।

विद्यारम्भ का मुहूर्त-उत्तरायण में (कुम्भ का सूर्य छोड़कर)रवि,बुध,गुरु और शुक्रवार को २,३,५,६,१०,११,१२ तिथियों में म. आर्द्रा पुन., हस्त,चि.,स्वा. श्र.ध. शत.,अश्विनी ,म. तीनों पूर्वा , तीनों उत्तरा , रो. पुष्य, आश्ले., अनु. ,रेवती,नक्षत्रों में , जब लग्न से १,४,५,७,९,१० स्थान में शुभ ग्रह हों तो विद्यारम्भ शुभ है ।

फारसी, अंग्रेजी विद्यारम्भ का मुहूर्त - सूर्य , भौम , शनिवार हों ,४।९।१४ तिथि हों, ज्ये. आश्ले., म. तीनों पूर्वा . भ.कृ.वि.आर्द्रा उ. षा. शत. नक्षत्र शुभ है ।

सीने पिरोने(सूचिकर्म)का मुहूर्त - अश्वि.पु. चि. अनु. ध. ये नक्षत्र , सूर्य, बुध,चन्द्र,गु., श.ये वार ,१।२।३।४।५।६ ।७ ।८।९।१०।११ ।१३ ।१५-ये तिथियां शुभ हैं।

यज्ञोपवीत संस्कार का मुहूर्त - यज्ञ और उपवीत इन दो शब्दों से यज्ञोपवीत बना है देवताओं की पूजा, संगति(सम्मेलन या कान्फ्रेंस)और जिसमें दान हों , उसे यज्ञ कहते है । उपवीत का अर्थ है पिरो देने वाला अर्थात् देव पूजा, सम्मेलन और दान के साथ पुरूष को मिला देने वाला संस्कृत (तन्तु- धागा - विशेष)यह यज्ञोपवीत का अर्थ हुआ । बालक को गुरु चन्द्र शुद्धि देखकर जन्म से या गर्भ से(गर्भाष्टमेवा इति पारस्करमन्वादीनां मते विकल्प:) ब्रह्मण आठवें वर्ष, क्षत्रिय ११ वे. वैश्य १२वें, इन वर्षों में यदि न किया जाये तो ब्राह्मण १६ तक, क्षत्रिय २२ तक और वैश्य २५ तक संस्कार कर सकते हैं, उसके बाद सावित्री पतित व्रात्य संज्ञा वाले होते है। माघादि पांच मासों में देवशयनी से पूर्व ह. अश्वि. पुष्य. अभि. ३ उत्तरा, रो., आश्ले., स्वा., श्र., ध., मू., मृ., रे., चि., अनु., तीनों पूर्वा, आर्द्रा वेध रहित इन नक्षत्रों में (क्षत्रीय वैश्यों के लिए पुनर्वसु भी ग्राह्य है) सू., चं. बु. (बुधास्त हो तो बुधवार त्याज्य) श. गुरुवार को, शुक्ल २।३।१०।११।१२ तथा कृष्ण २।३।५ तिथियों में शुभ है। किंतु सोपपदा तिथि जैसे आषाढ़ शुक्ल १०, ज्येष्ठ शुक्ल २, पौष शुक्ल ११, माघशुक्ल १२ को और संक्राति दिन को तथा रोगबाण को छोड़कर मध्याह्न से पहले शुभ है। शु.गु.चं. और लग्नेश ६।८ स्थान में, चं., शु. १२वें स्थान में और १।५।८ वें, में, पापग्रह अशुभ है। शुभ ग्रह ६।८।१२ स्थानों के सिवाय अन्य स्थानों में पाप ग्रह ३।६।११ स्थानों, वृष या कर्क का पूर्ण चन्द्रमा लग्न में हो तो शुभ होता है। गुरु, शुक्र, के बाल्य वृद्धत्व, अस्त के समय को छोड़ कर उपन्यन शुभ है। यदि गोचराष्टक वर्ग से बालक के उपनयन संस्कार के लिये समय शुद्धि न मिले अथवा सिंह, मकर किंवा अशुभ स्थान में गुरु हो तो सौर चैत्र में उपनयन संस्कार किया जा सकता है-ऐसी शास्त्र की आज्ञा है।

मेलापक सारणी देखने की रीति और अष्टकूट दोषों के परिहार

लेखकः- प्रियव्रत शर्मा

आगे चार पृष्ठों पर 'मेलापक सारणी' दी गई है । इसके बाई ओर पहिले,दूसरे कालमों में लड़की की और सबसे ऊपर वाली पहिली,दूसरी पंक्तियों में लड़के की राशियां तथा चरण-नक्षत्र दिए गए हैं । लड़की के नक्षत्र चरण के आगे लड़के के नक्षत्र-चरण के नीचे वर्ण आदि अष्टकूटों के गुण और मिलान में होने वाले वर्ण आदि दोषों का निर्देश है । वर्ण आदि दोषों के लिए नीचे लिखे सांकेतिक अक्षरों का इस सारणी में प्रयोग किया गया है:-

वर्ण दोष के लिए	= ब	राशीश दोष के लिए	= र
वश्य दोष के लिए	= व	गण दोष के लिए	= ग
तारा दोष के लिए	= त	भकूट दोष के लिए	= भ
योनि दोष के लिए	= य	नाडी दोष के लिए	= न

उदाहरणार्थ - यदि लड़की का जन्म चित्रा के ४ र्थ चरण में और लड़के का पू. भा. के ३ य चरण में हुआ हो तो इनके मिलान में इस मेलापक सारणीसे अष्टकूटों के गुण १८ ½ मिले, और ज्ञात हुआ कि इस मिलान में त (तारा), य (योनि), ग (गण), तथा भ (भकूट) दोष हैं ।

अष्टकूट दोषों के परिहार-

वर, कन्या के राशीशों अथवा नवमांशेशों की मैत्री तथा राशीशों , नवशांशेशों की एकता द्वारा नाड़ी दोष के अलावा शेष सभी दोषों का परिहार हो जाता है । राशीश-नवमांशेशों की मैत्री-एकता के अलावा अन्य और भी अनेक परिहार हैं, जिनसे वर्ण आदि दोष दूर हो जाते हैं। इनका विवरण नीचे दिया जा रहा है -

(१) वर्ण दोष का परिवार:- वर की राशि के वर्ण से कन्या की राशि का वर्ण उत्तम होने पर वर्ण दोष होता है । लेकिन यदि वर के राशीश का वर्ण कन्या के राशीश के वर्ण से उत्तम हो तो वर्ण दोष का परिहार हो जाता है । सभी ग्रहों के वर्ण इस प्रकार हैं:-

रवि का वर्ण क्षत्रिय,चन्द्र का वैश्य,मंगल का क्षत्रिय,बुध का शूद्र, गुरु का ब्राह्मण, शुक्र का ब्राह्मण और शनि का शूद्र है ।

(२) वश्य दोष का परिहार:- वर कन्या की राशियों की योनिमैत्री होने पर वश्य दोष दूर हो जाता है ।

(३) तारा दोष का परिहार:-वर कन्या के राशीशों, नवमांशेशों की मैत्री या एकता के अलावा तारा दोष का दूसरा कोई परिहार नहीं है ।

(४) योनि दोष का परिहार:- भकूट और वश्य कूटों में से कोई एक भी यदि शुभ(ठीक) हो तो योनिदोष का परिहार हो जाता है ।

(५) राशीश दोष का परिहार:- भकूट शुभ होने पर (यानि द्विर्द्वादश, नवपंचम और षडष्टक का अभाव होने पर) राशीश दोष दूर हो जाता है ।

(६) गण दोष का परिहार:- वर -कन्या की राशि एक और नक्षत्र भिन्न-भिन्न हों या भकूट दोष न हों तो गण दोष दूर हो जाता है।

(७) भकूट दोष का परिहार :- वर कन्या के राशीशों, नवांशेशों की मैत्री या एकता ही भकूट दोष का प्रमुख परिहार है । यदि इसके साथ ताराशुद्धि या वश्यशुद्धि भी हो तो भकूट दोष का उत्तम परिहार माना जाता है ।

(८) नाड़ी दोष का परिहार :- वर,कन्या की राशि एक और नक्षत्र भिन्न-भिन्न हों, अथवा नक्षत्र एक और राशियां, भिन्न-भिन्न हों तो नाड़ी दोष दूर हो जाता है । दोनों के नक्षत्रों के चरणों का वेध न होने की स्थिति में भी नाड़ी दोष का परिहार माना जाता है ।

नाड़ी दोष के परिहार के प्रसंगमें वर-कन्या में से किसी एक का जन्म नक्षत्र के प्रथम चरण में और दूसरे का चतुर्थ चरण में अथवा एक का द्वितीय चरण में और दूसरे का तृतीय चरण में हुआ हो तो पादवेध मान लिया जाता है । लेकिन यह नियम सर्वत्र लागू नहीं होता । इसके स्पष्टीकरण के लिए सं. २०४७ के '**श्री मार्त्तण्ड पंचांग**' में पृष्ठ ३४ पर दिया गया मेरा लेख "**पाद वेध द्वारा नाड़ी दोष के परिहार में परम्परागत एक भ्रांति**" पढ़ना चाहिए । यह लेख मेरी पुस्तक '**ग्रहयोग एवं दाम्पत्य जीवन**' में भी है ।

ध्यान दें:-जैसा कि ऊपर भी बता चुके हैं,वर,कन्या के राशीशों,नवमांशों की मैत्री और एकता तो वर्ण,वश्य,तारा,योनि,राशीश,गण और भकूट दोषों का परिहार कर देती है,लेकिन नाड़ी दोष का परिहार इनसे नहीं होता । नाड़ी दोष का परिहार तो केवल उपरोक्त स्थितियों में ही होता है ।

दैवज्ञ को यह विशेष रूप से ध्यान में रखना चाहिए,कि नाड़ीदोष का यदि परिहार नहीं मिले तो किसी भी स्थिति में (भले ही अन्य सातों कूट शुद्ध क्यों न हों, मिलान में गुण अठाईस भी क्यों न प्राप्त हों), सम्बन्ध करने की अनुमति नहीं देनी चाहिए । इस बारे में मुहूर्तशास्त्रकारों का यही स्पष्ट निर्णय है ।

'नाड़ीदोषस्तु विप्राणाम्'-वाक्य को संहिताकारों ने मान्यता नहीं दी है । 'मुहूर्त चिन्तामणि' आदि अन्य प्रामाणिक मुहूर्तग्रन्थों ने भी इसकी उपेक्षा की है,अतः इसे मान्यता नहीं दी जा सकती।

'एकनक्षत्र जातानां नाड़ीदोषो न विद्यते'- वाक्य भी प्रामाणिक नहीं है । एक ही नक्षत्र में उत्पन्न वर,कन्या को नाड़ी दोष तब नहीं माना जाता, जबकि उनका जन्म भिन्न-भिन्न चरणों में हुआ हो । 'मुहूर्तचिन्तामणि' का वाक्य है -**'नक्षत्रैक्ये पादभेदे शुभं स्यात्'** (अर्थात् दोनों का नक्षत्र एक होने पर दोष (नाड़ीदोष) की निवृत्ति तभी होती है,जबकि दोनों के चरण भिन्न-भिन्न हों)। **ध्यान रहे**, दोनों का जन्म एक ही नक्षत्र के एक ही चरण में होने पर नाड़ी दोष परमाधिक माना जाता है। एक ही नक्षत्र में पादवेध भी नहीं माना जाता ।

दोषपूर्ण अष्टकूटों के ,परिहारों को प्रमाणित करने वाले शास्त्रवाक्य बहुत हैं,उनको विस्तारभय से यहां उद्धृत नहीं किया गया। उन्हें मेरी पुस्तक "**ग्रहयोग एवं दाम्पत्यजीवन**" में आप देख सकते हैं)

सरलता पूर्वक एक ही दृष्टि में सभी अष्टकूटों के परिहार आ जाएं- इसके लिए नीचे दिया गया यह कोष्ठक देखें :-

अष्टकूट परिहार कोष्ठक

कूट	परिहार
वर्ण	१ राशीशों या नवमाशेशों की मैत्री या एकता हो। २ वर के राशीश का वर्ण कन्या के राशीश के वर्ण से उत्तम हो।
वश्य	१ राशीशों या नवमांशेशों की मैत्री या एकता हो। २ योनिमैत्री हो ।
तारा	१ राशीशों या नवमांशेशों की मैत्री या एकता हो।
योनि	१ राशीशों या नवमांशेशों की मैत्री या एकता हो। २ वश्यशुद्धि हो। ३ सद्भकूट हो।
राशीश	१ दोनों के नवमांशेशों में मैत्री या एकता हो। २ भकूट दोष न हो।
गण	१ राशीशों या नवमांशेशों की मैत्री या एकता हो। २ भकूट दोष न हो। ३ दोनों की राशि एक और नक्षत्र भिन्न-भिन्न हों ।
भकूट	१ राशीशों या नवमांशेशों की मैत्री या एकता हो।*
नाडी	१ दोनों की राशि एक और नक्षत्र भिन्न - भिन्न हों । २ दोनों का नक्षत्र एक और राशियां भिन्न-भिन्न हों । ३ दोनों का नक्षत्र एक और चरण भिन्न - भिन्न हों । ४ पाद वेध न हो।

** यदि इस परिहार के साथ ताराशुद्धि , वश्यशुद्धि में से कोई एक भी हो तो यह परिहार उत्तम माना जाता है।*

परिहृत कूट के गुण

वर्ण आदि जो कूट दोषपूर्ण होता है, उसके लिए निर्धारित पूरे गुणों को छोड़ दिया जाता है। जब उस दोषपूर्ण कूट का कोई उपरोक्त परिहार मिल जाए तब उसके पूरे गुणों को पुन: स्वीकार कर उन्हें मेलापक सारणी से प्राप्त गुण संख्या में जोड़कर उस गुणसंख्या को वास्तविक गुणसंख्या माना जाए- ऐसा कुछ आचार्यों का मत है । कुछ आचार्यों का मत है कि परिहार द्वारा दोष का पूरा नहीं, अपितु आंशिक निवारण होता है,अत: परिहृत कूट के आधे गुणों को ही स्वीकार करना चाहिए । यह (दूसरा) मत तर्कसंगत है। इसके अनुसार परिहृत कूट के आधे गुण(उस कूट के लिए निर्धारित पूरे गुणों का आधा भाग) मेलापक सारणी से मिली गुणसंख्या में जोड़कर उसे ही यथार्थ गुणसंख्या मानना युक्तियुक्त है ।

कितने गुण मिलने पर सम्बन्ध कर देना चाहिए ?

परिहृत कूटों की आधी गुणसंख्या को मेलापक सारणी में उपलब्ध गुणसंख्या में जोड़ने. पर मिली गुणसंख्या यदि १६ $\frac{१}{२}$ से कम है तो सम्बन्ध नहीं करना चाहिए । यदि षडष्टक भकूट का परिहार न मिल रहा हो तब २० से कम गुण संख्या होने पर सम्बन्ध नहीं करना चाहिए । ध्यान रहे- यहां प्रत्येक स्थिति में नाड़ी दोष का परिहार मिलना नितान्त आवश्यक है। यदि नाड़ी दोष के उपरोक्त परिहारों में से कोई एक भी परिहार न मिल रहा हो तब तो २८ गुण मिलने पर भी सम्बन्ध करने की अनुमति शास्त्रकारों ने नहीं दी है ।

यदि किसी विशेष कारण (विवशता) वश सम्बन्ध करना आवश्यक (अपरिहार्य)हो जाए, तब १६ से कम गुणों और षडष्टक तथा नाड़ीदोष के अपरिहार की स्थिति में भी गाय,अन्न,वस्त्र,सुवर्ण का यथाशक्ति दान, तथा जप -शान्ति करके सम्बन्ध किया जा सकता है । इस स्थिति में कन्या का नाम बदलकर मिलान को अनुकूल बनाने की भी परम्परा है । लेकिन दान,जप,शान्ति करना भी इस स्थिति में अत्यन्त आवश्यक है । साधाराण स्थिति में (नितान्त विवशता की स्थिति के अभाव में) लड़की का नाम बदलकर मिलान को अनुकूल बनाना सर्वथा अशास्त्रीय है । नाम बदलकर मिलान को अनुकूल बनाने का 'सिद्धान्त' अपनाने पर तो किसी भी लड़की का किसी भी लड़के के साथ और किसी भी लड़के का किसी भी लड़की के साथ सम्बन्ध बेरोक-टोक किया जा सकता है और वहां अष्टकूटों के गुण इच्छानुसार अधिकाधिक प्राप्त किए जा सकते हैं, जिससे दोषपूर्ण कूटों का परिहार बतलाने वाले सभी शास्त्रवाक्य अर्थहीन हो जायेंगे।

मिलान में कुछ और विचार्य विषय

यद्यपि संहिताओं में इन आठ कूटों के अतिरिक्त अनेक और भी विचार्य विषय मिलते हैं, लेकिन वर्गमैत्री और नृदूर का भी विचार करने की भी कुछ दैवज्ञों में परम्परा हैं,इन दोनों का विवेचन इस प्रकार है-

वर्गमैत्री-

वर्गमैत्री का विचार वर,कन्या के नाम के आदिम वर्णो से सम्बद्ध है। हिन्दी वर्णमाला के अकार आदि स्वर 'अवर्ग', 'क' आदि पांच वर्ण 'कवर्ग', 'च' आदि पांच वर्ण 'चवर्ग', 'ट' आदि पाँच वर्ण 'टवर्ग' त आदि पांच वर्ण 'तवर्ग','प'आदि पांच वर्ण 'पवर्ग', 'य' आदि पांच वर्ण 'यवर्ग' तथा 'श' आदि पांच वर्ण 'शवर्ग' कहलाते हैं। इन अवर्ग आदि आठ वर्गों को उपरोक्त क्रमानुसार क्रमशः प्रथम वर्ग, द्वितीय वर्ग, आदि संज्ञाएं दी गई हैं। इन आठ वर्गों केस्वामी क्रमशः गरुड़, मार्जार,सिंह, श्वान,

सर्प, मूषक, मृग और मेष माने गये हैं । प्रत्येक वर्गेश अपने से पंचम वर्ग के स्वामी का शत्रु माना गया है । जैसे :- गरुड़ और सर्प तथा मूषक और मार्जार परस्पर शत्रु हैं ।

नामाक्षरों से वर्ग ज्ञान कोष्ठक :

वर्ग	अवर्ग	कवर्ग	चवर्ग	टवर्ग	तवर्ग	पवर्ग	यवर्ग	शवर्ग
वर्ग के	अ, इ,	क, ख, ग,	च,छ,ज,	ट,ठ,ड,	त,थ,द,	प, फ,ब,	य,र,	श,ष,
वर्ण	उ,ए	घ,ङ	झ,ञ	ढ,ण	ध,न	भ,म	ल,व	स,ह
वर्गेश	गरुड	मार्जार	सिंह	श्वान	सर्प	मूषक	मृग	मेष

वर, कन्या के नामों के आदिम वर्णों के वर्गों के स्वामी परस्पर शत्रु हों तो अच्छा नहीं माना जाता, उनका जीवन दुःखमय रहता है ।

यदि वर्गेशों में शत्रुता है तो अष्टकूटों से प्राप्त गुण १७ से अधिक होने पर ही सम्बन्ध करना चाहिए। यदि मिलान में अष्टकूटों से प्राप्त गुण लगभग १४,१५ ही हों और नाडी दोष न हो तब वर्गेश की एकता (अभिन्नता) होने पर सम्बन्ध किया जा सकता है-ऐसा कुछ लोगों का मत है

नृदूर

वर का नक्षत्र या नक्षत्र चरण यदि कन्या के नक्षत्र या नक्षत्र चरण से तुरन्त परवर्ती हो तो 'नृदूर' दोष कहलाता है। जैसे - कन्या का जन्म नक्षत्र अश्विनी और वर का भरणी, अथवा कन्या का जन्म अश्विनी के प्रथम चरण में और वर का अश्विनी के द्वितीय चरण में हो तो भी नृदूर दोष होगा। 'नृदूर' दोष का फल मुहूर्त्त शास्त्रों में बहुत अशुभ लिखा है।

दोनों (वर ,कन्या) की राशि एक और नक्षत्र भिन्न-भिन्न या दोनों का नक्षत्र एक और राशियां भिन्न-भिन्न हों तों नृदूर का परिहार हो जाता है।

अष्टकूटों से प्राप्त गुण लगभग १६ $\frac{१}{२}$,१७,१८ हों और 'नृदूर' दोष का परिहार न मिले, तब नाड़ी दोष के अभाव में भी मिलान को कुछ मुहूर्त्तकार अच्छा नहीं मानते । १८ से अधिक गुण होने पर 'नृदूर' की उपेक्षा की जा सकती है।

नामराशि से अष्टकूटों का निर्णय

वर और कन्या-दोनों का यदि जन्मकाल ज्ञात न हो, तब दोनों की नामराशि, नामनक्षत्रों (नामों के आदिम अक्षरों से अबकहड़ा चक्र द्वारा निर्णीत राशि और नक्षत्रों) के आधार पर ही मेलापक सारणी से अष्ट कूटों के गुणों का निर्णय करना चाहिए। अपिच यदि वर, कन्या-दोनों में से किसी एक का जन्मकाल ज्ञात न हो तो भी दोनों की नामराशि, नामनक्षत्रों के आधार पर ही अष्टकूटों का निर्णय करना चाहिए। एक की जन्मराशि, जन्मनक्षत्र और दूसरे की नामराशि, नाम नक्षत्र के आधार पर अष्टकूटों का निर्णय करने की अनुमति शास्त्र नहीं देते।

कुज (मंगली) दोष-

निम्नलिखित स्थितियों में कुजदोष (मंगली दोष) माना गया है -

(१) जन्म कुण्डली में १,४,७,८,१२ वें भावमें मंगल या अन्य कोई क्रूर ग्रह हो।
(२) चन्द्र कुण्डली में १,४,७,८,१२ वें भाव में मंगल या कोई क्रूर ग्रह हो ।
(३) शुक्र से १,४,७,८,१२ वें भाव में मंगल या अन्य कोई क्रूर ग्रह हो ।

कुजदोष बनाने वाला ग्रह अस्त, नीचस्थ या शत्रुराशिस्थ हो तो कुजदोष का फल अधिक माना गया है । कुजदोष दाम्पत्य जीवन के लिए अच्छा नहीं माना जाता ।

कुजदोष के सामान्य कुछ परिहार -

इन स्थितियों में वर, कन्या का कुज दोष दूर हो जाता है -

(१) कुजदोष बनाने वाला ग्रह (क्रूरग्रह) उच्चस्थ स्वराशिस्थ, स्वनवांशस्थ, मित्रराशिस्थ, उच्चनवांश या मित्रनवांश में हो।
(२) कुजदोष बनाने वाले ग्रह पर वृहस्पति की पूर्णदृष्टि हो ।
(३) वर-कन्या दोनों की कुण्डलियों में कुजदोष विद्यमान हो तो दोनों के कुजदोष समाप्त हो जाते हैं।

ध्यान रहे, कुजदोष वाले वर और कन्या दोनों की कुण्डलियों में कुजदोषों का परिहार मिलने पर कुजदोष का कुफल समाप्त हो जाता है । दोनों की कुण्डलियों में से किसी एक की कुण्डली में ही कुजदोष परिहार हो तो कुजदोष का कुप्रभाव रहता है ।

कुण्डली मिलान की प्रामाणिकता

हमारे ज्योतिष के मानक ग्रन्थों (संहिता, जातक, मुहूर्त्त ग्रन्थों) में वर, कन्या का सम्बन्ध करने से पूर्व उनकी कुण्डलियों में ग्रहस्थितियों के मिलान द्वारा कुजदोष के परिहार की चर्चा कहीं भी नहीं की गई है। पुनरपि कुण्डली मिलान की परम्परा सभी भारतीय प्रदेशों में प्रचलित है । इसका शास्त्रीय मूल अभी तक अज्ञात है। आश्चर्य है- सभी वशिष्ठ, नारद, गर्ग आदि की संहिताओं, मुहूर्त्तमार्तण्ड, मुहूर्त्तचिन्तामणि आदि मुहूर्त्तग्रन्थों तथा वर-कन्या के सम्बन्ध की अनुकूलता के परीक्षण के लिए रचित 'विवाहवृन्दावन' आदि सभी ग्रन्थों में वर-कन्या के सम्बन्ध के लिए केवल अष्टकूटों के परीक्षण का ही निर्देश है, कुण्डली मिलान का कहीं भी नहीं ।

षट्कूट चक्र

वर्ण, वश्य, योनि, राशीश, गण और नाड़ी ज्ञापक चक्र।

राशि	मेष			वृष			मिथुन		
नक्षत्र	अश्वि.	भर	कृ.	कृ.	रो.	मृ.	मृ.	आर्द्रा	पुन.
चरण	१, २ ३,४	१,२ ३,४	१	२,३ ४	१,२ ३,४	१,२	३,४	१,२ ३,४	१,२ ३
वर्ण	क्ष.	क्ष.	क्ष.	वै.	वै.	वै.	शू.	शू.	शू.
वश्य	च.	च.	च.	च.	च.	च.	द्वि.	द्वि.	द्वि.
योनि	अ.	ग.	मे.	मे.	स.	स.	स.	श्वा.	मा.
राशीश	म.	म.	म.	शु.	शु.	शु.	बु.	बु.	बु.
गण	दे.	म.	रा.	रा.	म.	दे.	दे.	म.	दे.
नाड़ी	आ.	म.	अ.	अ.	अ.	म.	म.	आ.	आ.

राशि	कर्क			सिंह			कन्या		
नक्षत्र	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	उ.फा.	ह.	चि.
चरण	४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१	२,३ ४	१,२ ३,४	१,२
वर्ण	ब्रा.	ब्रा.	ब्रा.	क्ष.	क्ष.	क्ष.	वै.	वै.	वै.
वश्य	ज.	ज.	ज.	व.	व.	व.	द्वि.	द्वि.	द्वि.
योनि	मा.	मे.	मा.	मू.	मू.	गौ.	गौ.	म	व्या.
राशीश	चं.	च.	च.	सू.	सू.	सू.	बु.	बु.	बु.
गण	दे.	दे.	रा.	रा.	म.	म.	म.	दे.	रा.
नाड़ी	आ.	म.	अं.	अं.	म.	आ.	आ.	आ.	म.

राशि	तुला			वृश्चिक			धनु		
नक्षत्र	चि.	स्वा	वि.	वि.	अनु.	ज्ये.	मू.	पू.षा.	उ.षा.
चरण	३,४	१,२ ३,४	१,२ ३	४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१
वर्ण	शू.	शू.	शू.	ब्रा.	ब्रा.	ब्रा.	क्ष.	क्ष.	क्ष.
वश्य	द्वि.	द्वि.	द्वि.	की.	की.	की.	द्वि.	द्वि.	द्वि.
योनि	व्या.	म.	व्या.	व्या.	मृ.	मृ.	श्वा.	वा.	न.
राशीश	शु.	शु.	शु.	मं.	मं.	मं.	गु.	गु.	गु.
गण	रा.	दे.	रा.	रा.	दे.	रा.	रा.	म.	म.
नाड़ी	म.	अं.	अं.	अं.	म.	आ.	आ.	म.	अं.

राशि	मकर			कुम्भ			मीन		
नक्षत्र	उ.षा.	श्रव.	ध.	ध.	श.	पू.भा.	पू.भा.	उ.भा	रेव.
चरण	२,३ ४	१,२ ३,४	१,२	३,४	१,२ ३,४	१,२ ३	४	१,२ ३,४	१,२ ३,४
वर्ण	वै.	वै.	वै.	शू.	शू.	शू.	ब्रा.	ब्रा.	ब्रा.
वश्य	ज.	ज.	ज.	द्वि.	द्वि.	द्वि.	ज.	ज.	ज.
योनि	न.	वा.	सिं.	सिं.	अ.	सिं.	सिं	गौ.	ग.
राशीश	श.	श.	श.	श.	श.	श.	गु.	गु.	गु.
गण	म.	दे.	रा.	रा.	रा.	म.	म.	म.	दे.
नाड़ी	अं.	अं.	म.	म.	आ.	आ.	आ.	म.	अं.

वर्ण- ब्रा.= ब्राह्मण, क्ष= क्षत्रिय, वै= वैश्य, शू.=शूद्र

योनि- अ.=अश्व, ग=गज, मे=मेष, स=सर्प, श्वा.=श्वान, मा.=मार्जार, मू = मूषक,म=महिष, व्या=व्याघ्र, मृ=मृग, वा=वानर, न=नकुल, सिं=सिंह

गण- दे=देव. म=मनुष्य, रा=राक्षस

वश्य- च=चतुष्पद, की=कीट, व= वनचर, द्वि=द्विपद, ज=जलचर

राशीश-सू=सूर्य, चं=चन्द्र, मं.=मंगल, बु=बुध, गु=गुरु, शु=शुक्र, श=शनि

नाड़ी- आ=आद्य. म=मध्य, अं=अन्त्य

मेलापक सारणी (भाग १)

कन्या \ वर		मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
		अश्वि. १,२,३,४	भर. १,२,३,४	कृत्ति. १	कृत्ति. २,३,४	रोहि. १,२,३,४	मृग. १,२,	मृग. ३,४	आर्द्रा १,२,३,४	पुन. १,२,३	पुन. ४	पुष्य १,२,३,४	आश्ले. १,२,३,४	मघा १,२,३,४	पू.फा. १,२,३,४	उ.फा. १	उ.फा. २,३,४	हस्त १,२,३,४	चित्रा १,२
मेष	अश्वि. १,२,३,४	२८ न	३३	२८½ त	१८½ ब भ त	२१½ ब भ त	२२½ ब भ त	२६ ब त र	१७ ब न त र	१९ बन त र	२३½ न त	३१½ त	२८ ग	२१ व भ ग	२५ व भ	१५½ व भ न त	११ ब भ न तर	९ तवभ यनर	१३ व भ त र
	भर. १,२,३,४	३४	२८ न	२९ ग	१९ ब ग भ	२१½ ब भ त	१४½ ब भ तन	१८ न ब त र	२६ ब त र	२७ ब त र	३१½ त	२३½ न त	२५½ ग त	२० ग व भ	१८ व भ न	२६ व भ	२१½ ब भ र	२० ब भ त	४ बभग नतर
	कृत्ति. १	२७½ ग त	२९ ग	२८ न	१८ ब भ न	१० ग ब न भ	१६½ ग ब भ त	२० ग ब त	२० ग ब त	२१ ग ब त र	२५½ ग त	२६½ ग त	२३½ न त	१६½ व भ न त	२० ग व भ	२० ग व भ	१५½ ग ब भ	१५½ ग ब भ र	१८ ब भ त
वृष	कृत्ति. २,३,४	१८½ ग भ त	२० ग भ	१९ भ न	२८ न	२० ग न	२६½ ग त	१७½ ग ब भ त	१७½ ब ग भ त	१८½ ग ब भ त	२२ ग त र	२३ ग त र	२० न त र	१८½ न व र त	२२ र व ग	२२ र व ग	२१ ग भ	२१ ग भ	२३½ भ त
	रोहि. १,२,३,४	२३½ भ त	२३½ भ त	११ ग भ न	२० ग न	२८ न	३६	२७½ ब भ	२३½ ब भ त	२२½ भ ब त य	२६ त र य	२७ त र	१२ ग न तरय	१०½ रवग नतय	२४½ र व त य	२७ र व	२६ भ	२६ भ	२० ग भ
	मृग. १,२	२३½ भ त	१४½ भ न त	१८½ भ त ग	२७½ त ग	३५	२८ न	१९ ब भ न	२४ ब भ	२२½ ब भ त य	२६ त य र	१९ त र न	२१ त र य ग	१९½ गरव त य	१५½ र व नतय	२४½ र व त	२३½ भ त	२६ भ	१३ भ न ग
मिथुन	मृग. ३,४	२७ त र	१८ न तर	२२ तर ग	१९½ भ ग त	२७ भ	२० भ न	२८ न	३३	३१½ त य	१९ भ व तयर	१२ भ न वतर	१४ भवत यरग	२३½ व त य ग	१९½ व न त य	२८½ व त	३१½ त	३४	२१ न ग
	आर्द्रा १,२,३,४	१९ त र न	२७ त र	२१ त रग	१८½ ग भ त	२४½ भ त	२६ भ	३४	२८ न	२५ न य	१२½ भ न तयर	२० भ व त र	१३ गभर वतय	२३½ ग त व	२९½ व त	२१½ न व त	२४½ न त	२४½ न त	२७ ग य
	पुन. १,२,३	२० न त र	२७ त र	२३ त र	२०½ भ त ग	२२½ भ त	२३½ भ त य	३१½ त य	२४ न य	२८ न	१५½ न भ व र	२२½ भ व र	१७ भ व तरग	२२½ य व त ग	२६½ य व त	२१½ न व त	२४½ न त	२५½ न त	२७½ त ग
कर्क	पुन. ४	२२½ ब न त	२९½ ब त	२५½ ब त ग	२२ ब ग त र	२४ ब त य र	२५ ब त य र	१८ बभव रतय	१०½ बभव नयर	१४½ बभ रनत	२८ न	३५	२९½ त ग	१६½ बभय गत	२०½ ब भ त य	१५½ ब भ न त	१८ न ब त र	१९ न ब वतर	२१ ब ग वतर
	पुष्य १,२,३,४	३०½ ब त	२१½ ब न त	२६½ ब त ग	२३ ब त र ग	२५ ब त र	१८ ब न त र	११ बभन बतर	१८ बभ वतर	२१½ ब भ व र	३५	२८ न	३० ग	१९½ ब भ ग त	१५½ ब भ न त	२३½ ब भ त	२६ ब व त र	२७ ब व त र	१२ नबवय तरग
	आश्ले. १,२,३,४	२६ ब ग	२४½ ब ग त	२२½ न ब त	१९ न ब त र	११ गबत नयर	१९ गब तयर	१२ गबत भवयर	१२ गबभ वतयर	१५ गबत भवर	२८½ ग त	२९ ग	२८ न	१५ य ब भ न	१५½ गबय भत	१८½ ग ब भ त	२१ ग ब वतर	२१ ग ब वतर	२६ बवत र
सिंह	मघा १,२,३,४	२० ग व भ	२० ग व भ	१६½ वभ न त	१७½ वब रनत	९½ वबत गरनय	१७½ वबत गरय	२१½ वव गतय	२२½ व ब ग त	२०½ वब गयत	१६½ ग भ य त	१९½ गभ त	१६ न भ य	२८ न	३० ग	२७½ ग त	१६½ व ब गभत	१६½ व ब गभत	२१½ व ब भ त
	पू.फा. १,२,३,४	२६ वभ	१८ व भ न	२० ग व भ	२१ ब व र ग	२३½ व ब रतय	१५½ वबन रतय	१९½ व ब नतय	२८½ व ब त	२६½ व ब त य	२२½ य भ त	१७½ भ न त	१६½ ग भ य त	३० ग	२८ न	३५	२४ व ब भ	२२½ व ब भ त	७½ वबत गनभ
	उ.फा. १	१६½ व भ न त	२६ वभ	२० व ग भ	२१ ब व ग र	२६ व ब र	२४½ व ब र त	२८½ व ब त	२०½ व ब न त	२१½ व ब न त	१७½ भ न त	२५½ भ त	१९½ गभ त	२७½ ग त	३५	२८ न	१७ व ब भ न	१६ व ब भ न	१३½ वयब तगभ
कन्या	उ.फा. २,३,४	१३ भ न त र	२२½ भ र	१६½ ग भ र	२१ ग भ	२६ भ	२४½ भ त	३१½ ब त	२३½ न ब त	२४½ न ब त	२० न व त र	२८ व त र	२२ ग व त र	१७½ ग व भ त	२५ भ व	१८ व भ न	२८ न	२७ न	२४½ य ग त
	हस्त १,२,३,४	१० य भ नतर	२० भ त र	१७½ भ र ग	२२ भ ग	२५ भ	२६ भ	३३ ब	२२½ न ब त	२४½ न ब त	२० न व त र	२८ व त र	२३ व त र ग	१८½ व भ त ग	२२½ व भ त	१६ व भ न	२६ न	२८ न	२८ य ग
	चित्रा १,२	१३ गभत	५ गभन तयर	१९ भ त य र	२३½ भत य	२० ग भ	१२ ग भ न	१९ ग ब न	२६ ग ब य	२५½ ग ब त	२१ ग व त र	१२ गनव तयर	२७ व त र	२२½ व भ त	८½ ग व भनत	१४½ व य गभत	२४½ ग य त	२७ ग य	२८ न

... न=नाडी दोष।)

मेलापक सारणी (भाग २)

कन्या \ वर		तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
		चित्रा ३,४	स्वाती १,२,३,४	विशा. १,२,३	विशा ४	अनु. १,२,३,४	ज्येष्ठा १,२,३,४	मूल १,२,३,४	पू.षा. १,२,३,४	उ.पा. १	उषा. २,३,४	श्रव. १,२,३,४	धनि. १,२,	धनि. ३,४	शत. १,२,३,४	पू.भा. १,२,३	पू.भा. ४	उ.भा. १,२,३,४	रेव. १,२,३,४
मेष	अश्वि. १,२,३,४	२२½ बय तग	२६½ बय त	२२½ तब यग	१८½ गभ तय	२५½ भ त	१४ भन ग	१३½ भन ग	२५ भ	२३½ भ त	२५ ब तर	२६ बत र	२० बत यरग	२० बत यरग	१५ बन तरग	१६ बन तयर	१४½ नभ तय	२४½ भ त	२६ भ
	भर. १,२,३,४	१३½ बगन तय	२९½ ब त	२१½ गब तय	१७½ गभ तय	१७½ नभ त	१९½ गभ त	२० गभ	१८ नभ	२६ भ	२७½ ब र	२६ ब तर	१० बय गनतर	१० बय गनतर	२० गब तर	२४ बय तर	२२½ तभ य	१७½ नभ त	२६½ भ त
	कृत्ति. १	२७½ ब तय	१५½ बग नत	१९½ बन तय	१५½ भन तय	१९½ गभ त	२५½ भ त	२४½ भ त	१८ गभ य	१२ गभ न	१३½ बग नर	११½ बय रगन	२५ बत यर	२५ बत यर	२७ बत र	१९ बग तयर	१७½ गभ तय	१९½ गभ त	११½ गभ तन
वृष	कृत्ति. २,३,४	२२½ बभ तय	१०½ गब भनत	१४½ बभ तनय	२०½ न तय	२४½ ग त	३०½ त	२० भ तर	१३½ यग भर	७½ गभ नर	१२ गभ न	१० यग भन	२३½ भ तय	२९½ ब तय	३१½ ब त	२३½ गब तय	२० गत यर	२२ ग तर	१४ गन तर
	रोहि. १,२,३,४	१९ गब भ	१५½ बभ नत	९½ तबग नभ	१५½ गन त	२९½ त	२३½ ग त	१४ गभ तर	१९ रभ तय	११½ यभन र	१६ भय न	१७ नभ य	२० गभ	२६½ गब	२४½ गब त	३०½ ब त	२७ तर	२७ तर	१९ र नत
	मृग. १,२	१२ बभ नग	२५ बभ	१८½ बभ तग	२४½ त ग	२१½ न त	२४½ तग	१५ भ तरग	१० नभ तयर	१७ यभ तर	२१½ भय त	२५ भ य	१३ नभ ग	१९ ब गन	२७ बग	२९½ ब त	२६ त र	१८ न तर	२७ त र
मिथुन	मृग. ३,४	१४ नभ ग	२७ भ	२०½ भ तग	१४ भव तरग	११ भवन तर	१४ भव तरग	२३ तर ग	१८ नतय र	२५ यतर	२० भय वत	२३½ भ यव	११½ नभ वग	१३ नभ ग	२१ भ ग	२३½ भ त	२५½ तव र	१७½ नव तर	२६½ वत र
	आर्द्रा १,२,३,४	२० गभ य	२७ भ	२० गभ य	१३½ रगव भय	१७ तभव यर	३ यतगव भनर	१६ गन तर	२८ तर	२८ तर	२३ भ वत	२३ भ वत	१७½ गभ वय	१९ गभ य	१२ गभ न	१७ नभ य	१९ नर वय	२६½ वत र	२६½ वत र
	पुन. १,२,३	२०½ भ तग	२८ भ	२२ भ ग	१५½ वभ रग	२१½ वभ र	७ रगवभ नत	१४ यरतन ग	२७ तर	२७ तर	२२ व त भ	२३ वत भ	१७ व त भयग	१८½ भग तय	१४ नभ ग	१६ नभ य	१८ रन यव	२८ रव	२७½ वत र
कर्क	पुन. ४	२०½ बतर ग	२८ वरब	२२ वरब ग	२० गभ	२६ भ	११½ तग भन	८ वतब भगनय	२१ बभ वत	२१ बभ वत	२६ वत र	२७ बत र	२१ बगत यर	१२½ बभव तयगर	८ बभव नगर	१० बभर नवय	१६ नभ य	२६ भ	२५½ भ त
	पुष्य १,२,३,४	११½ गनबव तयर	२६½ ब वतर	२१ रबग वय	१९ भ यग	१८ भन	२१ भग	१७ गबभ वत	११ यबभ तनव	२१ बभ वत	२६ ब तर	२५ बय तर	१३ गबन तयर	४½ भबगय वनतर	१४½ बवत रगभ	१८ बभ वयर	२४ भ य	१८ नभ	२७ भ
	आश्ले. १,२,३,४	२५½ बव तर	१२½ गबव तरन	१७½ नब वतर	१५½ नभ त	२० गभ	२६ भ	२२½ बभ वय	१६ गबव भत	८ गबव भनत	१३ गबर नत	१३ बगत नर	२६ यत यर	१७½ बभव तरय	१९½ बभ वतर	११½ गबभ वतयर	१७½ गभ तय	२१ गभ	१३ गभ न
सिंह	मघा १,२,३,४	२४½ बव तर	११½ बवत रगन	१६½ बवत रन	२२½ नव त	२५½ गव त	३३ व	२५ भव	१९ गवभ	८½ वगभ नतय	३½ बरतय गभन	४½ बरत गभन	१८½ बरत भ	२४½ बव तर	२५½ बव तर	१८½ बव रगत	१८½ गभ त	१९½ गभ त	१३ गभ न
	पू.फा. १,२,३,४	१०½ बवत रगन	२५½ बव तर	१८½ बव रगत	२४½ गव त	२३½ नव त	२५½ गव त	१९ ग व भ	१७ भव न	२४ भव य	१७ बर भय	१८½ बर भत	४½ बरत गभन	१०½ बवत रगन	१९½ बव रगत	२४½ बव रत	२४½ भ त	१७½ नभ त	२५½ भत
	उ.फा. १	१६½ बवत यगर	२५½ बव तर	१६½ बवय गरत	२२½ यव गत	३१½ वत	१७½ गव नत	९½ गव नभत	२५ भव	२५ भव	२० बर भ	२० बर भ	११½ बरत गभय	१७½ बवत गरय	११½ बवत गनर	१५½ बवत नरय	१५½ नभ तय	२६½ भ त	२५½ भ त
कन्या	उ.फा. २,३,४	१६½ गबय भत	२५½ बभ त	१६½ गबय भत	१८ यवत गर	२७ व तर	१३ गव तनर	१४ गन तर	२९½ र	२९½ र	२४½ भ व	२४½ भ व	१६ गभ वतय	१६½ गब भतय	१०½ गब नभत	१४½ बभ नतय	१७½ तनब यर	२८½ वतर	२७½ वतर
	हस्त १,२,३,४	२० बभ यग	२६½ बभ त	१८½ बभ तयग	२० वग तयर	२६ वतर	१३ नवत रग	१५ नत रग	२७ तर	२८½ र	२३½ भव	२४½ भव	१८½ भग वर	१९ बभ यग	८½ बयभ नतग	१३½ बभ नतय	१६½ वनत यर	२६½ वतर	२७½ वतर
	चित्रा १.२	२० बभ न	१९ गव भय	२६½ बभ त	२८ व तर	११ गवन तयर	२५ वत यर	२७ तयर	१४ गन तर	२२ ग तर	१७ गभ त	१८½ गभ व	१५½ भ वनय	१६ बय भन	२४ बभ य	१६½ गबत भय	१९½ गव तयर	१०½ गयव नतर	१९½ वगत यर

(ब=वर्णदोष। व=वश्यदोष । त=तारादोष । य=योनिदोष । र=राशीश दोष। ग=गणदोष। भ=भकूट दोष। न=नाडी दोष।)

मेलापक सारणी (भाग ३)

कन्या \ वर		मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
		अश्वि. १,२,३,४	भर. १,२,३,४	कृत्ति. १	कृत्ति २,३,४	रोहि. १,२,३,४	मृग. १,२	मृग. ३,४	आर्द्रा १,२,३,४	पुन. १,२,३	पुन. ४	पुष्य १,२,३,४	आश्ले. १,२,३,४	मघा १,२,३,४	पू.फा. १,२,३,४	उ.फा १	उ.फा. २.३,४	हस्त १,२ ३,४	चित्रा १,२
तुला	चित्रा ३,४	२२½ ग तय	१४½ गन तय	२८½ तय	२३½ भ तय	२० गभ	१२ गभ न	१३ गभ न	२१ गभ	१९½ गभ त	२०½ गर वत	११½ गनय वरत	२६½ वत र	२५½ वर त	११½ वर गनत	१७½ वय गरत	१७½ यग भत	२० गभ य	२१ भन
	स्वाती १,२,३,४	२७½ यत	२९½ त	१७½ न त	१२½ भन त	१५½ भन त	२६ भ	२७ भ	२६ भ	२८ भ	२९ वर	२७½ व तर	१४½ नव तर	१३½ वन तग	२५½ वर त	२५½ वर त	२५½ भ त	२७½ भ त	२१ भ यग
	विशा. १,२,३	२२½ तय ग	२२½ तय ग	२०½ तय न	१५½ तभ नय	१०½ गभ तन	१८½ गभ त	१९½ गभ त	२० गभ य	२१ गभ	२२ ग वर	२१ ग तर	१८½ नव तर	१७½ वर तन	१९½ वर तग	१७½ वय रगत	१७½ यग भत	१८½ गभ तय	२७½ भ त
वृश्चिक	विशा. ४	१६½ बग भयत	१६½ बग भयत	१४½ बभ नयत	१९½ बन तय	१४½ बग नत	२२½ बग त	१२ बवर गभत	१२½ वबय गभर	१३½ बव गभर	१९ गभ	१८ गभ य	१५½ भन त	२१½ बव नत	२३½ बव गत	२१½ बव गयत	१७ तबव गयर	१८ बवग तयर	२७ बव तर
	अनु. १,२,३,४	२४½ बभ त	१५½ बभ नत	१९½ बभ तग	२४½ बत ग	२७½ ब त	२०½ बन त	१० बवत नभर	१५ तबव रभय	२०½ बव भर	२६ भ	१८ भन	२१ भग	२४½ बव तग	२०½ बव तन	२९½ बव त	२५ बव तर	२६ बव त	११ बरव नतय
	ज्येष्ठा १,२,३,४	१२ बग भन	१८½ बग तभ	२४½ बभ त	२९½ ब त	२२½ बग त	२२½ बग त	१२ तबव गभर	२ तवबय गभनर	५ तबवर गभन	१०½ त गभन	२० ग भ	२६ भ	३१ बव	२३½ बव गत	१६½ तबव गन	१२ तबव गनर	१२ तबव गनर	२४ बव तयर
धनु	मूल १,२,३,४	१२ गभ न	२० गभ	२४½ भ त	१९ बभ तर	१३ बग तभर	१३ रबग तभ	२१ बग तर	१५ बगन तर	१२ रबग तनय	८ यगभ वनत	१७ गभ वत	२३½ भ वय	२५ वभ	१९ वग भ	९½ तवग भन	१३ तरब गन	१३ बग तनर	२६ रब तय
	पू.षा. १,२,३,४	२६ भ	१८ भन	१८ गभ य	१२½ बय गभर	१८ बभ तयर	१० रबभ तनय	१८ बन तयर	२७ ब तर	२७ ब तर	२३ भ वत	१३ यभन वत	१७ गभ वत	१९ वग भ	१७ वभ न	२५ वभ	२८½ बर	२७ बत र	१३ तबग नर
	उ.षा. १	२४½ भत	२६ भ	१२ गभ न	६½ रगब भन	१०½ बयर भन	१७ बय तभर	२५ बय तर	२७ बत र	२७ बत र	२३ भ वत	२३ भ वत	९ गभ वनत	८½ तगव यभन	२४ वभ य	२५ वभ	२८½ ब र	२८½ ब र	२१ गब तर
मकर	उ.षा. २,३,४	२७ तर	२८½ र	१४½ गन र	१२ गभ न	१६ भन य	२२½ यभ त	२० बय तभ	२२ बभ त	२२ बभ वत	२८ त र	२८ तर	१४ गन तर	४½ तयर गभन	२० रभ य	२१ रभ	२४½ भ त	२४½ वभ	१७ गभ वत
	श्रव. १,२,३,४	२७ तर	२६ तर	१३½ यन र	११ यभ गन	१६ भन य	२५ भ य	२२½ बभ वय	२१ बभ वत	२२ बभ वत	२८ त	२६ यत र	१५ नत र	६½ तगर भन	१८½ रभ त	२० भर	२३½ भ व	२४½ भ व	१९½ भ व
	धनि. १,२	२० गत यर	११ यग नरत	२६ तय र	२३½ भ तय	२० गभ	१२ गभ न	९½ बबग भन	१६½ वयब गभ	१६ बग वतभ	२२ ग तर	१३ रगन तय	२८ तर	१९½ रभ त	५½ तगर भन	१२½ तयर गभ	१६ गभ वतय	१७½ गभ व	१५½ भन वय
कुम्भ	धनि. ३,४	२० तग यर	११ यग तनर	२६ तय र	३०½ तय	२७ ग	१९ गन	१२ गभ न	१९ गभ य	१८½ गभ त	१३½ गभ वतर	४½ तयर गभनव	१९½ भव तर	२५½ वर त	११½ वतर गन	१८½ वर गतय	१७½ गभ तय	१९ गभ य	१७ यभ न
	शत. १,२,३,४	१५ गन तर	२१ ग तर	२८ तर	३२½ त	२५½ गत	२७ ग	२० गभ	१२ गभ न	१३ गभ न	८ गभ वनर	१४½ गभ वतर	२०½ वभ तर	२६½ वर त	२०½ वर गत	१२½ वरत गन	११½ तग नभ	८½ तयग भन	२५ भ य
	पू.भा. १,२,३	१८ नत यर	२५ य तर	२० गर तय	२४½ ग तय	३१½ त	३१½ त	२४½ भत	१७ भन य	१८ भन	१३ भन व	२० भर वय	१३½ गभ वतर	१९½ वर तग	२५½ वर त	१६½ वर यनत	१५½ भन त	१५½ भन तय	१७½ गभ तय
मीन	पू.भा. ४	१४½ बभ तनय	२१½ बय तभ	१६½ गब तभय	१९ गब तयर	२६ ब तर	२६ ब तर	२५½ बव तर	१८ बन वयर	१९ नब वर	१८ नभ	२५ भ य	१८½ गभ त	१७½ बग तभ	२३½ बभ त	१४½ बभ तनय	१६½ रबन वतय	१६½ रनब वतय	१८½ रबग वतय
	उ.भा. १,२,३,४	२४½ बभ त	१६½ बभ तन	१८½ गब तभ	२१ गब तर	२६ बत र	१८ नब तर	१७½ नब वतर	२५½ बर वत	२८ ब वर	२७ भ	१९ भन	२१ गभ	१८½ गब तभ	१६½ बभ न	२५½ बभ त	२७½ बव तर	२६½ बव तर	९½ वतर वयगन
	रेव. १,२,३,४	२५ बभ	२४½ बभ त	११½ तगब भन	१४ गबन तर	१७ वन तर	२६ ब तर	२५½ बर वत	२४½ रब वत	२६½ रब वत	२५½ भ त	२७ भ	१४ भन ग	१३ बभ गन	२३½ बभ त	२३½ बभ त	२५½ बर वत	२६½ बर वत	१९½ बयर वतग

(ब=वर्णदोष। व=वश्यदोष । त=तारादोष । य=योनिदोष । र=राशीश दोष। ग=गणदोष। भ=भ कूट दोष। न=नाडी दोष।)

मेलापक सारणी (भाग ४)

कन्या \ वर		तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
		चित्रा ३,४	स्वाती १,२,३,४	विशा. १,२,३	विशा ४	अनु. १,२,३,४	ज्येष्ठा १,२,३,४	मूल १,२,३,४	पू.षा. १,२,३,४	उ.षा. १	उषा. २,३,४	श्रव. १,२,३,४	धनि. १,२,	धनि. ३,४	शत. १,२,३,४	पू.भा. १,२,३	पू.भा. ४	उ.भा. १,२,३,४	रेव. १,२,३,४
	चित्रा ३,४	२८ न	२७ ग य	३४½ त	२३½ भव त	६½ य गवत नभ	२०½ भ व त य	२७ तय र	१४ गभ तर	२२ ग त र	२५ ग त व	२६½ ग व	२३½ न व य	१८ नभ य	२६ भ य	१८½ ग भ त य	१२½ गभव तयर	३½ वत यग भनर	१२½ यर गभ वत
तुला	स्वाती १,२,३,४	२८ य ग	२८ न	२० न य ग	९ भवय नग	२१½ भव त	१६½ भव त ग	२३ तर ग	२७ त र ग	१९ तन र	२२ नव त	२३ न व त	२६½ व य ग	२१ य ग भ	२० ग य भ	२५ य भ	१९ व भ य र	१९½ व त भर	१२½ व त भनर
	विशा. १,२,३	३४½ त	१९ ग न य	२८ न	१७ भ व न	१६ ग व भय	२०½ भ व त य	२७ त य र	२२ ग त र	१४ ग न त र	१७ ग न व त	१७ ग न व त	३० व त य	२४½ भ त य	२६ भ य	२० ग भ य	१४ ग भ वयर	१३ ग य भतर	४½ गभव नतयर
	विशा. ४	२२½ ब व भ त	७ बवग नभय	१६ ब व नभ	२८ न	२७ ग य	३१½ त य	२१½ ब व तयभ	१६½ ब व गभत	८½ बवग नभत	१२ गबन तर	१२ ब न गतर	२५ ब त यर	२४ ब व तयर	२५½ ब व यर	१९½ ब व गयर	१९ ग भ य	१८ ग य भ	९½ ग भ नतय
वृश्चिक	अनु. १,२,३,४	६½ बवत भयगन	२१½ ब व भत	१६ ब व भयग	२८ य ग	२८ न	३१ ग	१५½ बवत गयभ	१३½ तबव नभ	२१½ ब व तभ	२५ ब त र	२६ ब त र	१२ तयब नरग	११ तयब वनरग	२१ बव तरग	२४½ बव यर	२४ भ य	१८ नभ	२७ भ
	ज्येष्ठा १,२,३,४	१९½ बव तभय	१५½ तबव गभ	१९½ बव भतय	३१½ त य	३० ग	२८ न	१४ ब व नभय	१६½ ब व तगभ	१६½ ब व तगभ	२० ग ब तर	२० गब तर	२५ बत यर	२४ बव तयर	१८ बव नरत	१० तबव यगनर	९½ गभ तनय	२१ गभ	२१ गभ
	मूल १,२,३,४	२६ त ब य र	२१ ग ब त र	२६ त ब य र	२२½ भव त य	१५½ ग व भयत	१५ यव नभ	२८ न	२८ ग	२६½ ग त	१५ ग ब भवत	१५ गब भवत	२० बभव तय	२८½ ब व य	२१½ ब न त	१४½ ग न बतय	१६ ग न वतय	२५ ग व त	२६ ग व
धनु	पू.षा. १,२,३,४	१३ ग ब तनर	२७ ब त र	२१ ग ब त र	१७½ ग व भ त	१५½ भव न त	१७½ ग व भ त	२८ ग	२८ न	३४	२२½ बभ व	२३ बभ व त	६ गबव भनतय	१४½ ग ब तनय	२३½ गब त	२८½ ब त य	३० व त य	२३ न व त	३१ व त
	उ.षा. १	२१ गब तर	१९ न ब त र	१३ ग ब नतर	९½ ग व भनत	२३½ भव त	१७½ ग व भ त	२६½ ग त	३४	२८ न	१६½ बभ व न	१४½ ब भ व न	१५ गबव भ त	२३½ गब त	२३½ गब त	२९½ ब त	३१ व त	३१ व त	२३ न ब त
	उ.षा. २,३,४	२४ गब त	२२ न ब व त	१६ ग ब न त	१३ ग न त र	२७ त र	२१ ग त र	१६ गभ वत	२३½ भ व	१७½ नभ व	२८ न	२६ न	२६½ ग त	१७ गब भवत	१७ गबव भ त	२३ ब भ व त	३०½ त	३०½ त	२२½ न त
मकर	श्रव. १,२,३,४	२६½ ब व ग	२२ नब व त	१७ न ब गवत	१४ न त र	२७ त र	२२ त र	१७ भ व त ग	२३ भ व त	१४½ नभ व	२५ न	२८ न	२८ य ग	१८½ ब भ वयग	१८ बभव त ग	२१ बभ वतय	२८½ त य	२९½ त	२२½ न त
	धनि. १,२	२२½ न ब व य	२४½ ग ब व य	२९ ब व त य	२६ त य र	१२ ग न तयर	२६ त य र	२१ भ व त य	७ गभय वनत	१६ गभ वत	२६½ ग त	२७ ग य	२८ न	१८½ बभ न व	२३½ बभ व य	१९ गब वतभ	२६½ ग त	१५½ गन त य	२२½ ग य त
	धनि. ३,४	१८ नभ य	२० ग भ य	२४½ भ त य	२५ त व य र	११ गवय तनर	२५ त व य र	२९½ त य	१५½ ग त न य	२४½ त ग	१८ गभ व त	१८½ गभ व य	१९½ भ व न	२८ न	३३ य	२८½ ग त	१८ गभ व त	७ तगभ वनय	१४ गयव भत
कुम्भ	शत. १,२,३,४	२६ भ य	१९ भय ग	२६ भ य	२६½ य व र	२१ ग व त र	१९ न व त र	२२½ न त	२४½ ग त	२४½ ग त	१८ गभ व त	१८ गभ व त	२४½ भ व य	३३ य	२८ न	१९ गन य	८½ गभ वनय	१७ गभ व त	१६ गभ व त
	पू.भा. १,२,३	१८½ गभ त य	२६ भ य	२० ग भ य	२०½ गव य र	२६½ व य र	११ गवत यनर	१५½ नग तय	२९½ त य	३०½ त	२४ भ व त	२३ भ व त य	२० भग व त	२८½ ग त	१९ नग य	२८ न	१७½ न भ व	२२½ भ व य	२० भय व त
	पू.भा. ४	११½ गबव भतयर	१९ बभ वयर	१३ गबव भयर	१९ ग भ य	२५ भ य	९½ गभ नतय	१५ गव तनय	२९ ब व त य	३० ब व त	२९½ ब त	२८½ ब त य	२५½ गब त	१७ ग ब भ त	७½ गबय भतन	१६½ बभ त न	२८ न	३३ य	३०½ य त
मीन	उ.भा. १,२,३,४	२½ यवबर गभनत	१९½ भवब त र	१२ गवर भयब	१८ गय भ	१९ नभ	२१ गभ	२४ गब वत	२२ नव वत	३० ब वत	२९½ ब त	२९½ ब त	१४½ गब तनय	६ गबव नभतय	१६ गबव भत	२१½ बभ त य	३३ य	२८ न	३५
	रेव. १,२,३,४	१२½ बभव तयर	११½ बभत वनर	४½ बभवन तगयर	१०½ नभ तयग	२७ भ	२२ भ ग	२६½ बग व	२९ ब व त	२१ नव वत	२०½ न ब त	२१½ न ब त	२२½ ब य त ग	१४ बवय भतग	१६ बभ वतग	१८ बय भवत	२९½ य त	३४	२८ न

(ब=वर्णदोष। व=वश्यदोष। त=तारादोष। य=योनिदोष। र=राशीश दोष। ग=गणदोष। भ=भकूट ...

लग्न-गण्डान्त-कर्क सिंह वृश्चिक धनु मीन और मेष के अन्त एवं आदि की आधी घड़ी लग्न गण्डान्त होता है। वह भी जन्म में भयप्रद होता है।

अथ विवाहमासा : आचार्य चूड़ामणौ-"माङ्गल्येषु विवाहेषु कन्या-संवरणेषु च। दशमासाः प्रशस्यन्ते चैत्र-पौष-विवर्जिताः ॥" वर्षासु पाणिग्रहणं न केचित् केचिद् वदन्तीत्यपरो विशेषः। तस्मात्सदाचार इह प्रमाणं देशे यथा यत्र तथैव तत्र ॥ केशवेन यदि नोररीकृतं श्रावणादिषु च पाणिपीडनम्। तेन चोक्तमपरैरुदाहृतं तद्विकल्प इति मन्यते मया ॥ २ ॥

अथ जन्म-मासादिषु निषेधः-सबसे बड़े (जेठे) लड़के अथवा सबसे बड़ी लड़की (जेठी) के जन्ममास (अर्थात् जन्मतिथि से ३० दिन) जन्मनक्षत्र अथवा जन्म तिथि में विवाह करना शुभ नहीं है। द्वितीयादि गर्भोत्पन्न का दोष नहीं। अत्यावश्यके परिहारः-जातं दिनं दूषयते वसिष्टः पञ्चैव गर्गास्त्रिदिनं तथात्रिः। तज्जन्मपक्षं किल भागुरिश्च व्रते विवाहे गमने क्षुरे च ॥

यदि दो कार्यों की आवश्यकता हो तो-एक घर में दो शुभ काम करना मना है परन्तु अति आवश्यकता में ९ दिन का अन्तर देकर दो घरों में अलग-अलग मण्डप गाड़कर और जो पुरोहित पहला कार्य करा चुका है उसी से दूसरा कार्य न करावें, दूसरे आचार्य से करावें। इसी प्रकार जिस गृह में पहला कार्य हुआ हो तो दूसरे कार्य में दूसरे घर में मण्डप गाड़कर कार्य को करें।

अथ ज्येष्ठ विचारः-ज्येष्ठ पुत्र व कन्या का ज्येष्ठ मास में विवाह करना अशुभ है। अत्यावश्यकता में कृत्तिका सूर्य को छोड़कर दानादिपूर्वक करें

षट्मास के भीतर दो विवाह आदि का निर्णय-दो सगी बहनों का विवाह एक साथ या छः मास के अन्दर करें तो निस्संदेह ३ वर्ष के अन्दर अशुभ फल हो। पुत्र के विवाह के पीछे षट्मास तक कन्या का विवाह न करें और कन्या व पुत्र के पीछे छः मास तक यज्ञोपवीत न करें अर्थात् पहले कर लें और मंगल कार्य के पीछे अमंगल अर्थात् श्राद्ध तिलतर्पण भी न करें मुण्डन भी विवाह जनेऊ के पीछे न करें। वर्ष पलटने पर फिर भले ही शुभ कार्य कर लें। वहाँ छः मास का विचार नहीं है। यह ६ महीने का निषेध तीन पीढ़ी तक ही है।

विवाहादि शुभ कार्यों में मरणाशौच-साहे चिट्ठी (कुंकुम पत्रिका) आने पर विवाह दिन निश्चय हो जाने पर किसी की मृत्यु हो जावे तो माता के मरण से ६ मास, पिता के मरण से एक साल, स्त्री के मरण से तीन मास, भाई व पुत्र के मरण से १ ॥ मास कुल वालों के मरण से २२ ॥ दिन तक कोई शुभ कार्य न करें। अति संकट में ३० दिन के बाद शान्ति करके अथवा विशेष शान्ति और गोदान करके अशौच के बाद करें।

विवाह के शुद्ध मुहूर्त पंचांग के अन्त में दिये गये हैं। उनमें से उत्तम मुहूर्त देखकर और उसी **दिन वर की राशि से सूर्य चन्द्र देखिए और कन्या राशि से चन्द्र गुरु देखिये, बस इसी को त्रिबलशुद्धि कहते हैं।** यह त्रिबलशुद्धि जिस उत्तम विवाहलग्न के दिन मिले वही विवाह-दिन उत्तम है। यदि रवि, गुरु पूज्य हो तो मध्यम है, यदि सूर्य नेष्ट हो तो विवाह नहीं बनेगा - ऐसा कहना। इसी प्रकार कुमार के उपनयन में भी त्रिबल (गु.सू.चं) शुद्धि प्रथम देखें। "झष-चाप-कुलीरस्थो जीवोप्यशुभगोचरः अतिशोभनतां दद्याद्विवाहोपनयनादिषु ॥ (बृहस्पतिः) ॥ अत्यावश्यकता में "द्विरष्ट्यौ द्वादशस्तुर्योऽथाष्टम-स्त्रिगुणार्चनात्। उर्च्च उच्चांशके ग्राह्य : चन्द्रादष्टमगो रविः। नीचे नीचांशके त्याज्यः अरिलाभादिगोऽपि चेत् ॥

तुलाराशौ अपूज्यः रविः-धर्म-धी-धन-गतो दिवाकरस्तौलिराशि-जनितस्य शोभनः।

आवश्यके पूज्य रवि परिहारः-गार्ग्याङ्गिरोवत्स वशिष्ठ गौतम पराशराद्या मुनयो वदन्ति। द्वितीयपञ्चांकगतो दिवाकरस्त्रयोदशाहात्परतः शुभावह ॥ (मु०प्र०सा०)।

विवाहादौ त्रिबल-शोधनम्

पूज्यगुरुः—१० ।६ ।३ ।१
श्रेष्ठगुरु :—९ ।५ ।११ ।२ ।७
नेष्टगुरु—४ ।८ ।१२
श्रेष्ठरविः—३ ।६ ।१० ।११
पूज्यरविः—२ ।५ ।९
विशेष पूज्य रविः—१ ।७
नेष्टरविः-४ ।८ ।१२
नेष्टचन्द्रः—४ ।८
श्रेष्ठचन्द्रः-१ ।२ ।३ ।५ ।६ ।७ ।९ ।१० ।११ ।१२

कन्या-वरयोः तैलादि-लापन (बन्न) दिन संख्या

राशि	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
तैल्य सं.	७	१०	५	११	५	७	७	५	५	५	५	७

अथ विवाहे तिथि वार नक्षत्राणि -रो. मृ. उत्तरा ३. म. ह. स्वा. अनु. मू. रे. एतद्वेध-रहितेषु शुभेऽह्नि अमाक्षय-रहित-तिथिषु कात्यायन-मते अश्वि. चि. श्र. धनिष्ठास्वपि शुभम् ॥

अथ विवाहांगकृत्यारम्भ मुहूर्त- वर कन्या की चन्द्रशुद्धि विचार कर विवाह दिन से पहिले ३। ६। ९ इन दिनों को छोड़कर विवाह के नक्षत्रों में चन्द्रशुद्धि वाली सौभाग्यवती स्त्री के प्रथमोद्योग से हल्दी हाथ, दलना, पीसना, कूटना, मंगलकशादि स्थापन करना, घर लीपना, आंगन सफाई भूषण गढ़ाना, वस्त्र सिलाना, वेदी रचना, चन्दोया बांधना, गणेशादि पूजन और नान्दीश्राद्ध, मंगल स्नानादि सर्व कार्य का आरम्भ करना शुभ होता है।

विवाह-मुहूर्त में दस दोषों का विचार

विवाह के मुहूर्त में लता, पात, युति, वेध, जामित्र, पञ्चबाण, एकार्गल, उपग्रह, क्रान्तिसाम्य और दग्धातिथि- इन दस दोषों का विचार करना आवश्यक है। इन सबका विचार करके इस वर्ष के विवाह मुहूर्त लग्न दिये हुए हैं। इन दसों दोषों में जो दोष जिस मुहूर्त में हैं वे क्रमानुसार टेढ़ी रेखा से सूचित किये गये हैं। उक्त दसों दोषों का विचार इस प्रकार किया जाता है।

(१) लत्तादोष ज्ञानाय चक्रम्

सूर्य	पूर्णचन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	ग्रहाः
१२	२२	३	७	६	५	८	९	लग्न नक्षत्र
दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दिशा
धननाशः	भयम्	मृत्यु	भयम्	बन्धुनाश	कार्यहानिः	कुलक्षयः	मरणं	फलम्

यथा-सूर्य अश्विनी नक्षत्र पर हो और विवाह उ.फा. का हो, सूर्यस्थित अश्विनी नक्षत्र से गिना तो, उ.फा. १२वाँ हुआ यह सूर्य की लत्तादोषयुक्त साहा हुआ। इसी प्रकार अन्य ग्रहों की लत्ता भी जाने।

(२) पातदोष ज्ञानचक्र

रो.	मृ.	मघा.	उफा.	ह.	स्वा.	अनु.	मू.	उषा.	उभा.	रे	वि. नक्ष.	हर्षणवैधति साध्य व्यतिपात, गंड और शूल योगों का अन्त जिस नक्षत्र में हो वह पात से दूषित होता है। इन नक्षत्रों में विवाह करने से पात दोष होता है।
आर्द्रा	मृ	अ	कृ.	भ	कृ.	अ.	रो.	भ.	भ.	अ	पातदूषित नक्षत्र	
पुन	आ	मृ	आ	मृ	श्र.	आ.	ज्यं.	पुन.	श.	ज्ये		
श	ज्ये	ज्ये	वि	श	ध.	उषा.	ध	श.	वि.	ध.		
पूफा	ध	पुष्य	पूफा	पूभ.	पुष्य.	पूभा.	श्रे.	वि.	उफा.	म.		
चि	म	ह	उ.भा.	स्वा.	ह.	पूषा.	मू.	ऽनु	पूफा.	पूफा		
मू.	ह	रे	पूभा.	म.	रे	पूफा.	उभा.	उषा.	मू.	स्वा.		

(३) युति :-जिस नक्षत्र का विवाह हो उसी नक्षत्र में यदि कोई ग्रह हो तो उस ग्रह की युति का दोष समझा जाता है। चन्द्र उच्च, मित्र वा स्वक्षेत्री हो तो युति दोष नहीं होता, किन्तु श्रेष्ठ है। सू.मं.शु.श.रा.के. की युति दारिद्र्य मृत्यु आदि भयप्रद मानी गई है। शुक्र की युति विशेष करके वर्जित है।

(४) वेध दोष चक्रम्

रो.	म.	मृ.	उफा.	ह.	स्वा.	अनु.	मू.	उषा.	उभा.	रे.
अभि	उषा	श्रवण	रे.	उभा.	श.	भ.	पुन.	मृग.	ह.	उफा.

ऊपर के नक्षत्र का विवाह हो और नीचे के नक्षत्र पर ग्रह हो तो वेध दोष होता है। यह सर्वत्र अवश्य ही त्याग करना चाहिए।

(५) जामित्र दोष चक्रम्

रो	मृ	म.	उ. फा	ह.	स्वा	ऽनु	मू.	उ. षा.	उ. भा.	रे	वि. न.
अनु	ज्ये	ध.	पू. भा.	उ. भा.	अ.	कृ.	मृ.	पुन.	उ. फा.	ह.	नक्षत्र

विवाह लग्न से सातवें ग्रह होने पर जामित्र दोष होता है। ऊपर वैवाहिक नक्षत्र और नीचे ग्रह नक्षत्र है। याने १४वें नक्षत्र में पापीग्रह का जामित्र दोष वर्जनीय हैं।

(७) एकार्गल-दोष

व्याघात, गण्ड, व्यतिपात, विष्कम्भ, शूल, वैधृति, वज्र, परिध, अतिगण्ड ये योग हों और सूर्य के नक्षत्र से विवाह का नक्षत्र अभिजित् सहित गिनने से विषम हो तो एकार्गल दोष होता है।

(८) उपग्रह

सूर्य के नक्षत्र से ५वें, ७वें, ८वें, १०वे, १४वें, १५वें, १८वें, १९वें, २१वें, २२वें, २३वें, २४वें और २५ वे नक्षत्रपर चन्द्रमा हो तो उपग्रह दोष होता है।

(९) स्थूल-क्रांतिसाम्य-दोष चक्रम्

मे.	वृ.	मि	कर्क	कन्या	तुला
सिंह.	म.	ध.	वृश्चि.	मी.	कुं

नीचे और ऊपर की राशि पर सूर्य एवं चन्द्रमा हो तो स्थूल रूप से क्रांतिसाम्य दोष होता है यह सर्वत्र वर्जित है। जैसे मेष के सूर्य सिंह के चन्द्रमा में या सिंह के सूर्य, मेष के चन्द्रमा में। सूक्ष्म क्रांतिसाम्य ही सर्वत्र वर्जित है। जिसका निर्णय महापातगणित से करना चाहिए।

(६) बाणज्ञान चक्रम्

बाण नाम	गतांशाःप्रति राशौ अर्कस्य	कर्मसु वर्ज्याः	वारे वर्ज्याः	समयपरत्वेन वर्ज्याः
रोग	८।१७।२६	व्रतबंध	रवौ	रात्रौ त्याज्यम्
अग्नि	२।११।२०।२९	गेहगोपे	भौमे	सदैव वर्ज्यम्
नृप	४।१३।२२	नृप सेवा	मन्दे	दिवा त्याज्यम्
चोर	६।१५।२४	यात्रायां	भौमे	रात्रौ वर्ज्यम्
मृत्यु	१।१०।१९।२८	विवाहे	बुधे	संध्ययोःवर्ज्यम्

(१०) दग्धातिथि दोषः

९	२	४	६	५	१०	सूर्य
१२	११	१	३	८	७	राशयः
२	४	६	८	१०	१२	तिथयः

इन संक्रांतियों में ये तिथियां दग्धा होती हैं। विशेषतः ये मध्य प्रदेश में ही वर्ज्य हैं।-कश्यप

भुजंगं क्रान्तिसाम्यञ्च बाणवेधं तथैव च। लग्नहीन विवाहन्तु कलौ पञ्च विवर्जयेत्॥

लत्तादि-दोषाणां परिहार वाक्यानि-लता मालवके (उज्जैन प्रान्त) देशे, पातश्च कुरु (कुरुक्षेत्र बागर) जांगले (फिरोजपुर भटिण्डा प्रान्त)। एकार्गलं च काश्मीरे वेधं सर्वत्र वर्जयेत्। ॥ उपग्रहर्क्षं कुरु वाह्लिकेषु (आगरा प्रान्त) कलिंगबंगेषु (जगन्नाथपुरी बंगाल अयोध्या) च पातितं भम्। सौराष्ट्र (काठियावाड़) शाल्वे (उज्जैन प्रान्ते) च लत्तितं भं त्यजेत्तु विद्धं किल सर्वदेशे॥ युतिदोषो भवेद् गौडे (बंगाले) जामित्रस्य च यामुने (मथुरा प्रान्ते)। मासदग्धाश्च तिथियो मध्यदेशे विवर्जिताः॥

विशेष परिहार-चित्रां गते पातविचित्रदेशे मैत्रे मघा मालवके निषिद्धाः पौष्णश्रुतिश्चोत्तरदेशजातः सर्वत्र वर्ज्यश्च भुजंगपातः॥

युति परिहार-स्वक्षेत्रगः स्वोच्चगो वा मित्रक्षेत्रगतो विधुः। युतिदोषाय न भवेद्दम्पत्योः श्रेयसे तदा।। **अत्यावश्यके बेधपरिहारः**-पादमेकं शुभैर्विद्धमशुभैनेव कृत्स्नतः (नारद)॥ ग्रह प्रथम चरण में हो तो दूसरे नक्षत्र के चतुर्थ चरण में बेध होता है, यदि चतुर्थ चरण में हो तो प्रथम चरण विद्ध होता है। द्वितीय में हो तृतीय, तथा तृतीय चरण में ग्रह हो तो द्वितीय चरण विद्ध होता है। आवश्यकता में चरण मात्र का त्याग किया जाता है। भुक्तं भोग्यं तथाक्रान्तं विद्धं पापग्रहेण च। शुभाशुभेषु कार्येषु वर्जनीयं प्रयत्नतः॥ **अस्यापवादः**-ऋक्षाणि क्रूरविद्धानि क्रूरयुक्तादिकानि च। भुक्त्वा चन्द्रेण युक्तानि शुभार्हाणि प्रचक्षते। एकार्गलोपग्रह पात लत्ता-जामित्रकर्तर्युदयास्त दोषाः। नश्यन्ति चन्द्रार्क बलोपपन्ने लग्ने यथार्काभ्युदये तु दोषा॥ मु.चि.।

उक्तानुक्ताश्च ये दोषास्तान्निहन्ति बली गुरुः।
केन्द्रसंस्थः सितो वापि पन्नगान् गरुडो यथा॥

विवाहे लग्न -शुद्धि चक्रम्

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	भावाः
चं. पाप.	०	शु.	रा.	०	चं. शु. लग्नेश	सर्वे	चं. मं. शुभाः लग्नेश	०	मं.	०	श.	त्याज्याः
चं. मं.	कुलिकं क्रातिसाम्यञ्च				चं.	मं.	चं. मं.	विद्धभञ्च				गोधूलौ त्याज्याः

लग्न भंग-योगा-व्यये शनि: खेऽवनिजस्तृतीये भृगुस्तनौ चन्द्रखला न शस्ता: । लग्नट् कविग्लौ च रिपौ मृतौ ग्लौ लग्नेट् शुभाराश्च मदे न सर्वे (अस्तेऽब्जगुरू समौ) ॥ वर्गोत्तमं विनान्त्यांशो विवाहे न शुभप्रद: । वर्गोत्तमश्चेदन्त्यांश: पुत्रपौत्रादिवृद्धिद: ॥ दम्पत्योरष्टमं लग्नं त्वष्टमो राशिरेव च । यदि लग्नगत: सोऽपि दम्पत्योर्निधनप्रद: ॥ पंग्वन्धादिलग्नानां गौडमालवयोरेव त्याग: । बादरायण- मासशून्याह्वयास्तारा राशयो वधिरादय: । गौडमालवयोस्त्याज्यास्त्वन्यदेशे न गर्हिता: ।

कर्तरी दोष:-लग्नस्य पृष्ठाग्रगयोश्च सा‍‍ध्वो: सा कर्तरी स्यादृजुवक्रगत्यो: । तावेव शीघ्रौ यदि वक्रचारौ न कर्तरी चेति पितामहोक्ति: ॥ इय कर्तरी चन्द्रस्यापि द्रष्टव्या । **केषाञ्चिल्लग्नदोषाणां परिहार:**-पापौ कर्तरिकारकौ रिपुगृहनीचास्तगौ कर्तरी दोषो नैव सितेऽरिनीचगृहगे तत्षष्ठदोषोऽपि न । भौमेऽस्ते रिपुनीचगे नहि भवेद् भौमोऽष्टमो दोषकृन्नीचे नीचनवांशके शशिनि रि:फाष्टारिदोषोऽपि न ।।

दोषापवादा: ज्योतिर्निबन्धे-दोषाश्च बहव सन्ति गुणा: स्वल्पा: कलौ युगे । तथापि दोषा नश्यन्ति स्वापवादगुणै: सह ।। **अपवादान्तरम्**-उक्तानुक्ताश्च ये दोषास्तान्निहन्ति बली गुरु: । केन्द्र संस्थ: सितो वापि पन्नगान्गरुडो यथा ॥ मुहूर्तलग्नषड्वर्गकुनवांश ग्रहोद्भवा: । ये दोषास्तान्निहन्त्येव यत्रैकादशग:शशी ॥ अब्दायनर्तुमासोत्था: पक्षतिथ्यृक्षसम्भवा: । ते सर्वे नाशमायान्ति केन्द्रसंस्थे शुभग्रहे ॥ लग्नाधिपो यदा केन्द्रे लग्नादेकादशालये । सर्वग्रहकृतं रिष्टमेकोपि विलयं नयेत् ॥ बलवान् केन्द्रग: सौम्यो हन्ति दोषशतत्रयम् । घूनं विहाय दैत्येज्य: सहस्रं लक्षमंगिरा: ॥ स्मरण रहे, कि- पूर्वोक्त अपवाद वाक्यों में सप्तमरहित केन्द्र (१।४। १०)ही ग्रहण करना।

विवाहे ग्रहाणां रेखाप्रद स्थानानि

र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	केतु	ग्रहा.	मुहूर्त्त गणपतौ
३ ६ ८ ११	२ ३ ११	३ ६ ११	१ २ ३ ४ ५ ६ ९ १० ११	१ २ ३ ४ ५ ६ ९ १० ११	१ २ ४ ५ ९ १० ११	३ ६ ८ ११	३ ६ ८ ११	३ ६ ८ ११		लग्नं शुभं विवाहे स्याद् दशविंशोपकाधिकंम्,
३॥	५	१॥	२	३	२	१॥	१॥	१॥		विंशोपका बलम्

अथ गोधूलि लग्न विचार-लग्नशुद्धिर्यदा नास्ति कन्या यौवनशालिनी । तदा वै सर्ववर्णानां लग्नं गोधूलिकं शुभम् ॥ लग्नं यदा नास्ति विशुद्धमन्यद् गोधूलिकं साधु तदा वदन्ति । लग्ने विशुद्धे सति वीर्य्ययुक्ते गोधूलिकं नैव फलं विधत्ते ॥ मार्ग, माघ, फाल्गुन में संध्यासमय सूर्य गोलक समान दृष्टिगोचर होने पर चै. वै. में गौओं को धूली से आकाश आच्छादित होने पर, ज्येष्ठ, आषाढ़ में सूर्य आधा अस्त होने पर, श्रा. भा.आश्वि. का. में सूर्य पूर्ण अस्त होने पर गोधूलि लग्न होता है ।

गोधूलिके त्याज्या दोषा:-कुलिकं क्रातिसाम्यञ्च लग्ने षष्ठेऽष्टमे शशी । तथा गोधूलिकं त्याज्यं पञ्चदोषैस्तु दूषितम् । अस्तं याते गुरुदिवसे सौरे सार्के । अर्थात् बृहस्पतिवार को सूर्य अस्त होने केपीछे । क्योंकि सूर्य अस्त से पहले वारबेला होगी और शनिवार को सूर्य अस्त से पहले (क्योंकि सूर्य अस्त हो जाने में कुलिकं मुहूर्त्त होगा) गोधूलि समझना ।

संकीर्ण वर्णसंकर चाण्डालादि जाति का विवाह मुहूर्त्त :- कृष्णपक्ष क्रूरवार निषिद्ध नक्षत्र योगों में संकीर्ण जाति वालों का विवाह धन, पुत्र , आयु प्रीति लाभ देता है । ऐसा शौनकादि मुनि कहते हैं ।

पुनर्विवाहे (रीत) सूर्यभात् शुभाशुभज्ञानाय चक्रम् ।

३	३	३	३	३	३	३	३	नक्षत्र
मृत्यु	धन	मरण	मृत्यु	पुत्र	दुर्भग	श्री	उन्नति	फल

अन्यच्च :- सूर्यभात् ४ । ११ । १८ । २५ संख्यकसाभिजिद्भेषु पुनर्विवाहे मृत्यु: । अत्र तिथि- मासवेध भृगु-गुर्वस्तादि दोषोऽपि नावलोकनीय: ।

वधू प्रवेश का मूहूर्त- जब वधू विवाह हाने पर पति केघर पहले आती है वह वधू प्रवेश कह ाजाता है । विवाह से १६ दिन के भीतर सम दिनों में अथवा ५,७,९वे दिन,इनके उपरान्त एक मास तक विषम दिनों में, एकवर्ष के भीतर विषम मास में एक वर्ष के उपरांत ३ रे, ५वेंवर्ष में भी स्थिर लग्न में वधू प्रवेश शुभ है । ५वर्ष के उपरांत जब चाहे तब शुभ मुहूर्त्त में हो सकता है । १६ दिन के भीतर पूर्वोक्त दिनों में तिथ्यादि पंचागशुद्धि चन्द्रवल गुरुशुक्र के मूढत्व का भी विचार नहीं करना । व्यतिपाते क्षयतिथौ ग्रहणे वैधृतौ तथा । अमासंक्राति - तिथ्यादौ प्राप्तकालेऽपि नाचरेत् ॥ रे, अश्वि रो, मृ. श्र. ध. ह. चि. स्वा. म. मू. उत्तरा ३ , पुष्य, अनु. इन नक्षत्रों में और च बु. वृ. शु. श. इन वारों में १ । २ । ३ । ५ । ६ । ७ । ८ । १० । ११ । १२ । १३ । १५ तिथियों में ५ । ८ । ११ लग्नों में चतुर्थाष्टम शुद्ध हो तो वधू प्रवेश शुभ है ।

वधू-प्रवेश-समय- वधूप्रवेशो न दिवा प्रशस्त: राजप्रवेशो न निशि प्रशस्त: ।
दिवा च रात्रौ च गृहप्रवेश: सत्कीर्तिद: स्यान्त्रिविध: प्रवेश: ॥

विवाहत: प्रथम वर्षे वधू-निवास फलम् - विवाह के बाद आषाढ़ मास में कन्या पति के घर रहे तो अपनी सास को क्षय मास में अपने शरीर को ज्येष्ठ में ज्येष्ठ को, पौष में श्वसुर को, अधिक मास में पति को नाश करती है । विवाह के बाद चैत्र मास में पिता के घर रहे तो पिता को अशुभ है, सास आदि के अभाव में उस मास का कोई दोष नहीं ।

द्विरागमन का मुहूर्त्त- प्योके (पितृगृह) से दूसरी बार पति के घर जाने को द्विरागमन कहते हैं । विवाह से एक वर्ष के भीतर अथवा तीसरे या पांचवे वर्ष वृश्चिक कुभ, मेष के सूर्य में जब सूर्य और बृहस्पति शुद्ध हो तब सोम, बुध, गुरु, शुक्रवार को २,३,६,७ या १२ वीं राशि के लग्न में ह., अश्वि., पुष्य, अभिजित्, तीनों उत्तरा, रो., स्वा., पुन., श्र., ध., श., मू., मृ., रे., चि., अनुराधा नक्षत्रों में शुभ है । शुक्र सामने या दाहिने हो तो अशुभ है ।

विशेषः— द्विरागमं षोडषवासरान्त एकादशाहे समवासरेषु । न चात्र ऋक्षं न तिथिर्न योगो न वार शुद्ध्यादि विचारणीयम्।

शुक्र के सम्मुख व दक्षिण में निषेध—सम्मुख या दक्षिण शुक्र में यदि नूतन वधू जावे तो वन्ध्या हो, छोटे बालक को साथ लेकर जावे तो बालक की मृत्यु हो, गर्भिणी जावे तो गर्भ का सुख न पावे । यदि ऐसे समय राजविद्रोह-राजपीड़न आदि उपद्रव या दुर्भिक्ष के दुःख से यात्रा करनी पड़े एवम् विवाह सम्बन्धी यात्रा में या देवतीर्थ यात्रा के सम्बन्ध में जाना पड़े तो सम्मुख या दक्षिण शुक्र का दोष नहीं होता। यदि रेवती से मृगशिर तक के चन्द्रमा में भी जावे तो दोष नहीं, क्योंकि तब तक शुक्र अन्धा होता है ।

विशेषः— सिंहस्थे वा गुरौ शुक्रे सम्मुखेऽस्तंगतेऽपि वा। शुभो दीपोत्सवे वध्वाः प्रवेशः पतिमन्दिरे ॥ **अत्यावश्यकेऽभिमुखे शुक्रदोषनाशाय शान्तिः—** राजते वाथ सौवर्णे कांस्य पात्रेऽथवा पुनः । शुक्लपुष्पांवरयुते श्वेततण्डुलपूरिते ॥ निधाय राजतं शुक्रं शुचिमुक्ता फलान्वितम्। महाश्वेत गवायुक्तं सामगाय निवेदयेत्।

प्रथम स्त्री संगम मुहूर्त्त— रजोदर्शनानंतर १६ रात्रि पर्यन्त, ४ रात्रि के बाद समरात्रि में, (पञ्चदशवर्षोपरि रजोदर्शनाभावेऽपि) रो., मृ., पुष्य, ह., चि., अनु., ध., उत्तरा. ३, रिक्ता - अमावस रहित तिथि में, शुभवार, रात्रि के प्रथम पहर को छोड़कर। शुभ समय में चित्त को प्रसन्न कर, प्रथम दिन स्त्री संगम करें। **मनुष्य का स्त्री के प्रति कर्त्तव्य—**स्त्री का अपमान या तिरस्कार न करें, आदर सत्कार करें। विशेष गुप्त बात न कहें, और विशेषाधिकार भी न दें, क्योंकि स्त्री जाति पुरुष की समान कोटि में नहीं आ सकती । अपवाद में एक-दो हो सकती है। प्रभुकृत शरीर रचना भी कोई वस्तु है, उसे समझना चाहिए। उसका दिल और दिमाग तथा ओज प्रकृति ने पुरुष से न्यून बनाया है। पशुओं में भी घोड़े, हाथी, सांड, भैंस आदि अपनी स्त्री जाति पर पूर्ण प्रभुत्व रखते हैं।

नव वधु द्वारा पाक कर्म मुहूर्त्त— द्विरागमनोत्तरं मृ., उत्तरा.३, पुष्य, कृ., ज्ये.,श्रव., ध., श., रो., वि., रे., एषु नक्षत्रेषु शुभवासरे (रविभौमवर्जिते) , रिक्ताक्षयरहित तिथौ, २।५।८। ११ लग्रेषु, चतुर्थाष्टशुद्धे सप्तमभावे च बलान्विते सति पाक्कर्म शुभम्।

सधवा स्त्री का वस्त्रसुवर्णरत्नभूषणादिधारण करने का मुहुर्त्त — ह., चि., स्वा., अनु., धनि., रे., अश्वि., एषु भेषु, बु., गु., शु. वारेषु रिक्तामावस्या रहित तिथिषु, नूतन वस्त्रसौवर्णरत्नरजत दन्तादि भूषणानां धारणं प्रशस्तम्॥

चूड़ीचक्र में विशेष— सूर्य नक्षत्र से गणना ८ अशुभ। ३ शुभ । ४ शुभ। ७ अशुभ। २ अशुभ। १ शुभ । २ शुभ। १ अशुभ। गुरुशुक्रोदय में शुभ।

वस्त्र धारणे विशेषः— विप्रादेशात्तथोद्वाहे क्ष्मापालने समर्पितम्। निन्द्येपि धिष्ण्ये वारादौ धारयेच्च नवाम्बरम्।

आभूषण बनवाने का मुहूर्त्त—ह., अ., पुष्य, अभि., स्वा., पुन., श्र., ध.,श.,उत्तरा. ३, रो. एषु नक्षत्रेषुरिक्तामाक्षयरहित तिथौ, शुभवासरे द्विपुष्करत्रिपुष्करयोगे वा भूषणं कार्यम्॥

दुकान खोलने का मुहूर्त्त — ह., चि., रो., रे., उत्तरा. ३, पुष्य, अश्वि., अभि. इन नक्षत्रों में ४ । ९ । १४ । ३० इन तिथियों को छोड़कर अन्य तिथियों में, मंगलवार को छोड़कर अन्य वारों में, कुम्भ लग्न को छोड़कर अन्य लग्नों में, २ । १० । ११ स्थानों में शुभ ग्रह बैठे हों, ३। ६ में पापग्रह हों, ८ । १२ वां स्थान पाप रहित हो, शुभ दशा भी हो तो दुकान करना शुभ है, चन्द्र लग्न में हो तो अत्यन्त शुभ है।

भर्तृ गृह से पितृ गृहागमन मुहूर्त्त— पूर्वा., ३, भ., मू., म., ज्ये., आ., आश्ले., एतद्भिन्नेषु,चं., बु., शु., वारेषु सत्तिथौ शुभलग्ने कुयोगादिराहित्ये प्रशस्तः॥

घोड़े पर चढ़ने का मुहूर्त्त— भ., आर्द्रा, आश्ले., म., पूर्वा. ३, ज्ये., मू. इन नक्षत्रों को छोड़कर, शेष नक्षत्रों में रविवार को शुभ है ।

हट्टचक्र — सूर्य नक्षत्र से दुकान खोलने के दिन तक, नक्षत्र गिनकर चक्र से शुभाशुभ फल जानें।

नक्षत्र	२	३	४	४	३	४	४	४
स्थान	आसन	मुख	अग्नि	नैर्ऋत	सम्मुख	वायव्य	ईशान	मध्य
फल	सौख्य	विक्रयनाश	अर्थनाश	सुख	महाश्रेष्ठ	चोरभय	सर्वहानि	शुभप्रद

सेवाकर्म (नौकरी) मुहूर्त्त— अ.,मृ., चि., ह., पुष्य, अनु., रे. एषु भेषु रिक्तामारहिततिथौ, र.,बु., बृ., शु. वारेषु शुभः । लग्नस्थे, १० । ११ सूर्ये -भौमे वा स्वामिसेवकयोः राशीशयोनिमैत्रायां सत्यां शुभः ।

व्यवहार (बही) पत्रारम्भ मुहूर्त्त- अश्वि., रो., मृ., पुन.,पु., उत्तरा. 3, ह., चि., अनु.,श्र. रे. एषु भेषु रिक्तामारहिततिथौ, सू., चं., बु., बृ. श. वारेषु शुभे युते शुभे लग्ने चरे द्विस्वभावे च व्यायाष्ट रहिते पापैः केन्द्रकोणगैः शुभैः स्यात्॥

द्रव्यप्रयोगमुहूर्त्त— पुन., स्वा., मृग., रे., चि., अनु., वि., पुष्य., श्र., ध., श., अश्वि. एषु नक्षत्रेषु, १। ४ । ७। १० लग्नेषु ९। ८। ५ शुद्धिरहिते द्रव्य प्रयोगः शुभः । अत्रावसरे ९। ५ शुभग्रहाणां तु न कोऽपि दोषः॥

ऋण लेने के लिए वर्जितकाल — मंगलवार, संक्रान्ति दिन, वृद्धियोग, हस्तनक्षत्रयुक्त रविवार को ऋण ले तो कभी मुक्त न हो। मंगलवार को ऋण चुकाना अच्छा है। बुधवार को धन न देना चाहिए। कृ., रो., आर्द्रा, श्ले., उ. ३, वि., ज्ये., मू. नक्षत्रों में भद्रा, व्यतिपात और अमावस में गया धन फिर मिलता नहीं या झगड़े आदि पर उतारू होना पड़ता है ।

श्रीकाशीनाथ के मत से क्रयविक्रय मुहूर्त्त— पुष्य, पू.भा., अनु., श्र., ह., म., स्वा., उत्तरा. ३, आश्ले., रे. एषु भेषु, सत्तिथौ, शुभदिने उत्तमशकुनं विचार्य क्रयविक्रयणं कार्यम्।

वस्तु खरीदने के नक्षत्र— रे., शत., अश्वि., स्वा., श्र., चि., वारों में बुध, रवि श्रेष्ठ माना गया है ।

वस्तु बेचने के नक्षत्र—पू.फा., पू.षा., पू.भा., वि., कृ., आश्ले., भ. ये ७ नक्षत्र और गुरुवार, चन्द्रवार श्रेष्ठ माने गए हैं।

नोट — बेचने के नक्षत्रों में खरीदना और खरीदने के नक्षत्रों में बेचने वालों को ९५ फीसदी नुकसान रहेगा, इसमें संशय नहीं। इसी कारण खरीदने-बेचने के नक्षत्र दिखाये गये हैं, परन्तु सम्प्रति प्रचलित सट्टे जैसे भयानक व्यापार में तो धैर्य का काम ही नहीं, सिवाय घबराहट के दिन भर में १० बार बेचना, २० बार खरीदना। ऐसे व्यापारी क्या करेंगे, इन नक्षत्रों को । लेकिन हमारा कहना है कि विश्वास करके परीक्षा तो कीजिये, बात कहां तक सच है। सट्टे में भी प्रथम बार व्यापार करने वाले व्यापारी अवश्य ध्यान करें तभी मालूम होगा कि ऋषियों के वाक्य कहां तक सत्य हैं।

प्रार्थनापत्र (अर्जी) देने का मुहूर्त्त— ४। ९। १४ तिथि हों, मं., श. वार हों, कृ., आर्द्रा, भ., अ., श्ले., म., ज्ये., मू., वि., पूर्वा. ३ नक्षत्र हो, भद्रा होवे तो अत्युत्तम है।

गृहादि निर्माण में आय विचार

ग्रामभात् वासकर्तुः नक्षत्रं यावद् साभिजित् गणना कार्या		
स्थान	नक्षत्र	फलम्
मस्तके	७	धनलाभः
पृष्ठे	७	हानिःनैस्वम्
हृदये	७	मुखलाभः
पादे	७	पर्यटनम्

गृहस्वामी के हस्तादि लम्बाई-चौड़ाई को परस्पर गुणाकर, आठ का भाग देवें, जो शेष रहे वह क्रम से ध्वजादि आय होते हैं। १ ध्वज, २ धूम्र, ३ सिंह, ४ श्वान, ५ वृषभ, ६ गर्दभ, ७ हस्ति, ८ (०)। इनमें एकादि विषम संख्या की आय शुभ ओर २ आदि सम संख्या को अशुभ जानना । गृह की भूमि को अन्दर से मापना चाहिए और देवस्थान की भूमि को बाहर से मापना चाहिये। ३२ हाथ लम्बे चौड़े घर में आयादि विचार की आवश्यकता नहीं है और न चार द्वार वाले घर में ही । ब्राह्मण को ध्वजाय, क्षत्रिय को सिंहाय, वैश्य को गजाय और शूद्र को वृषभाय विशेष शुभ होती है । अन्य आय नीच जाति के लिए शुभ है ।

घर का नक्षत्र और व्यय ज्ञान

घर के क्षेत्रफल (हस्तादि लम्बाई-चौड़ाई के गुणन) को आठ से गुणाकर २७ का भाग दें। जो अंक शेष रहे, तदनुसार अश्विन्यादि गृह का नक्षत्र जानें। इस नक्षत्र को ८ से भाग देवें । शेषांक तुल्य व्यय जानें। आय से व्यय कम हो तो शुभ अन्यथा अशुभ।

वास्तुभूमि का शुभाशुभ जानना

नई बस्ती में गृहादि बनाना हो तो भूमिपूजन पूर्वक ग्राम को एक हाथ चौड़ा-एक हाथ लम्बा-एक हाथ गहरा गड्ढा बनाकर, उसको जल से भर देवें। प्रातःकाल उसको देखें यदि जलयुक्त हो तो शुभ, निर्जल मध्यम, निर्जल फटा हुआ हो तो अशुभ है ।

मकान बनाने के लिए पृथ्वी की शुभाशुभ परीक्षा

मकान की नींव को इतना गहरा खोदें कि जल दीखने लगे अथवा दूसरी मिट्टी जब तक निकले अथवा साढे तीन हाथ गहरी खोदें अर्थात् मनुष्य के बराबर खोदें। खोदते समय जो जमीन में पत्थर निकले तो धन-आयु की वृद्धि हो और जो गुठली निकले तो धननाश हो और जो अस्थि, राख,बाल निकले तो मकान बनाने वाले को व्याधि-पीड़ा हो ।

गृहारम्भमुहूर्त्त — वैशा., श्रा., मार्ग., माघ, फाल्गुन सौर महीने गृहारम्भ में श्रेष्ठ कहे हैं, भाद्रपद और कार्तिक मास मध्यम हैं। २। ३। ५। ६। ७। १०। ११। १२। १३। १५ और कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा इन तिथियों में चं., बु., गु., शु., श. वारों में ,रो., मृ., चि., ह., स्वा., अनु., उत्तरा. ३, ध., श., रे. वेधरहित नक्षत्रों में, २। ३। ५। ६। ८। ११। १२ लग्नों में, पञ्चवाण और भूमिशयन से रहित दिनों में, लग्न से केन्द्र त्रिकोण स्थानों में शुभग्रह और ३। ६। ११ वें स्थान में पापग्रह तथा अष्टम स्थान शुद्ध होने पर गृहारम्भ मुहूर्त्त शुभ होता है। केवल तृणमय गृहारम्भ में वत्सचक्र व मासादि का विचार नहीं करना ।

गृहारम्भे वत्सचक्रम्		
सूर्यनक्षत्र से गृहारम्भ नक्षत्र तक अभिजित् सहित गणना करें।		
स्थानानि	न.	फलानि
शीर्षे	३	अग्निदाहः
अ.पादे	४	शून्यमसत्
पृ.पादे	४	स्थिरता
पृष्ठे	३	लक्ष्मीप्राप्तिः
द. कुक्षौ	४	लाभःशुभम्
पुच्छे	३	स्वामिनाशः
वामकुक्षौ	४	निर्धनता
मुखे	३	पीड़ा असत्

विशेष— पुष्य, उत्तरा. ३, रो., म., आश्ले., पू.षा., इनमें से जिस पर बृहस्पति हो, उस नक्षत्र में बृहस्पतिवार को गृहारम्भ हो तो पुत्र और सम्पत्तिदायक होता है। रो., ह., अ., उ.फा., चि. इनमें से जिस पर बुध हो उस नक्षत्र में बुधवार को गृहारम्भ हो तो सुख और पुत्र होते हैं। वि., अ., चि., ध., श., आर्द्रा इनमें से जिस पर शुक्र हो उस नक्षत्र में और शुक्रवार को गृहारम्भ हो तो धनधान्यदायक होता है ।

भूमिप्रसुप्तज्ञानम्— "संक्रांति मिति दिन पांचवें सप्तम नवम जोय। १०/२१/२४ में षड्दिन पृथ्वी सोय। तत्रात्यावश्यके क्रमात् ५। ११। ७। ६। २। १० एताघटिका भूमिकर्मण्यवश्यं वर्जनीयाः"। **अन्यच्च** - सूर्य के नक्षत्र से ५। ७। ९। १२। १९। २६ इतनी संख्या के नक्षत्रों में पृथ्वी शयन के कारण मकान की नींव, तड़ाग,वापी, कूपादि का खोदना उत्तम नहीं होता ।

गृहमध्य में कूपविचार

मध्य	ई.	पू.	आ.	द.	नै.	प.	उ.	वा.
अर्थहानि	सुपुष्टि	सुप्राप्ति	पुत्रनाश	स्त्रीनाश	गृहेशनाश	संपत्	सुख	शत्रुभय

अथ चुल्लिचक्र-विचार

सूर्य के नक्षत्र से ४ नक्षत्र पीठ के सुखप्रद । ४ मस्तक के मृत्युप्रद। ८ बाहू के सुन्दर-सुख-भोगदायक। ५ गर्भ के नाशक। २ भुज के भोगदायक । २ चरण के नाशक । यह चुल्लिचक्र गर्गाचार्य ने कहा है, पण्डित जन विचार करें। उपरोक्त शुभ नक्षत्रों में चुल्हा बनावें तथा इन्हीं शुभ नक्षत्रों में प्रथम अग्नि जलावें।

नूतनगृह प्रवेश मुहूर्त्त

माघ-फाल्गुन-वैशाख-ज्येष्ठ मासेषु शोभना:। प्रवेशो मध्यमो ज्ञेयः सौम्य (मार्ग.) कार्त्तिक मासयोः ॥ (यहां चान्द्रमास लेना) उत्तरा. ३, अनु., रो., मृ., चि., रे. इन नक्षत्रों में रिक्तामाऱहित तिथियों में । चं., बृ., श. इन वारों में। २।५।८।११ लग्नों में, **अत्यावश्यके** ३।६।९।१२ लग्नों में भी, लग्न से १।२।३।५।७।९।१० इन स्थानों में शुभग्रह हों, ३।६।११ में क्रूर हों, १।६।८।१२ वें चन्द्रमा न हो, चौथा, ८ वाँ स्थान शुद्ध हो, जन्म लग्न या जन्म राशि से ८ वीं राशि लग्न में न हो, चन्द्र- तारा शुभ हो और कुम्भ चक्र की भी शुद्धि हो, तो आगे गौ, कन्या, जलपूर्ण-पुष्पमाला युक्त कलश, शंखध्वनि व मंगलगान के साथ दम्पत्ति का गृह प्रवेश शुभ है ।

गृहप्रवेश का विशेष मुहूर्त्त— पुराने अर्थात् जीर्ण या तृणकुटीर अथवा अग्नि-वर्षा इत्यादि के भय से बनवाये हुए नए घर में भी वै., श्रा., का., मार्गशीर्ष और फा. मास में शत., पुष्य, स्वा. और धनि. नक्षत्रों तथा गुरु, शक्र के अस्त में भी गृह प्रवेश हो सकता है ।

सूर्यराशिवशात् खातज्ञानम्

खाते राहोर्मुखात्पृष्ठदिग्भागः शुभदो भवेत्

राहुमुखम्	ऐशान्यां	वायव्यां	नैर्ऋत्यां	आग्नेय्यां
देवालयारम्भे सूर्यः	मी.,मेष, वृष	मि., क., सिंह	कन्या, तुला, वृश्चिक	धनु, मकर, कुम्भ
गृहारम्भे सूर्यः	सिं.,क., तु.	वृश्चि.,ध., मकर	कुम्भ,मीन, मेष	वृष,मिथुन, कर्क
जलाशयारम्भे सूर्यः	म.,कुं., मी.	मे.,वृष, मिथुन	कर्क,सिंह, कन्या	तुला,वृश्चिक धनु
खातदिशाज्ञानम्	आग्नेय्यां	ऐशान्यां	वायव्याम्	नैर्ऋत्यां

द्वारशाखाचक्रम्

सूर्यनक्षत्रात्

स्थान.	न	फलानि
शिरसि	४	श्रीप्राप्तिः
कोणे	८	उद्वसनं
शाखा.	८	सौख्यम्
देहल्यां	३	गृहेशनाशः
मध्ये	४	सौख्यम्

चक्रमिदं विलोक्य सुधिया द्वारं विधेयं शुभम् ।

गृहप्रवेशे कुम्भचक्रम्

सूर्यभात्

५	८	८	६
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ

कूप, तालाब और बावड़ी खुदवाने का मुहूर्त्त — अनु., ह., उत्तरा.३, रो., ध., श., म., पू.षा., रे., पुष्य, मृ. नक्षत्र हों व चन्द्रमा मकर के उत्तरार्ध, मीन या कर्क में हो, लग्न में बुध या गुरु हो, शुक्र १० वें स्थान में हो और पापग्रह निर्बल हों तो शुभ है । यदि २।१०।४।११।१२ लग्न हों तो अत्युत्तम है।

सूर्यनक्षत्रात्कूप-नलचक्रम्

ईशान ३ क्षार जल	पूर्व ३ खण्डितजल	आग्ने.३ सुजल
उत्तर ३ उत्तम जल	मध्य ३ स्वादु तथा शीघ्रजल	दक्षिण ३ निर्जल
वायव्य ३ मिश्रितजल	पश्चिम ३ जल	नैर्ऋत्य ३ अमृतजल

सूर्यभात्तड़ागचक्रम्

ई. २ जलनाश	पूर्व २ शोक	आ. २ जलाधिक्य
उत्तर २ अमृतजल	मध्य ५ बहुजल	द. २ जलनाश
वायव्य २ जलनाश	पश्चिम २ बहुजल	नैर्ऋत्य २ अमृतजल

गणनाक्रमः- मध्य-पूर्व -आग्नेय -दक्षिणादिक्रमेण बोध्यम्- अवशिष्टानि ६ नक्षत्राणि 'वारिवाह' संज्ञकानि सन्ति। **तत्फलम्—वारिवाहे वारिहानिः**। गणनाक्रमः—पूर्व, आग्नेय ,द.,नै.,प., वा., उ., ई. मध्य वारिवाहः।

रोहिणीभात् वापीचक्रम्

ईशान अ.,भ., कृ. मध्यजलम्	पूर्व पुन., पु., श्ले. जलाभावः	आग्नेय म.,पू. फा.,उ. षा. मध्यजलम्
उत्तर पू.भा.,उ.भा.,रे. मिष्ठजलम्	मध्य रो.,मृ.,आर्द्रा शीघ्रजलम्	दक्षिण ह., चि.,स्वा. जलाभावः
वायव्य श्र.,ध., श. क्षारजलम्	पश्चिम मू.,पू.षा.,उ षा. अमृतजलम्	नैर्ऋत्य वि.,अनु.,ज्ये. बहुजलम्

जलाशयरामदेवप्रतिष्ठामुहूर्त्त

देवतारामवाप्यादिप्रतिष्ठामुत्तरायणे।
माघादिपञ्चमासेषु कृष्णेऽप्यापञ्चमीदिने ॥
मातृभैरववाराहनारसिंहत्रिविक्रमाः।
महिषासुरहंत्री च स्थाप्या वै दक्षिणायने॥

अश्वि.,रो.,मृ.,पुष्य, ह., चि.,स्वा., अनु.,श्र., ध., श., उत्तरा. ३, रे. एषु भेषु कुजशनि-वर्जितवारेषु २।३।५।७।८।१०।११।१२।१३ तिथिषु शुक्ले १।२।३।५तिथिषु कृष्णे,गुरुशुक्रयोः नीचनिर्बलास्तादिरहित-काले, कर्तुः सूर्यचन्द्रतारानुकूल्ये सति जन्मलग्नयोरष्टमराशिलग्नरहिते स्थिर (२।५।८।११) लग्नेषु लग्नात् १।४।७।१०॥९।५।२।११ स्थानेषु शुभैः, ६।११ सेन्दुभिः पापैः पूर्वाह्णे देवप्रतिष्ठा कार्या।

देवता-विशेषेण लग्नम्— सिंहे सूर्यः शिवो द्वन्द्वे लग्ने स्थाप्यः स्त्रियां हरिः। कुम्भे वेधाश्चरे क्षुद्राद्यंगदेव्यः स्थिरेऽखिलाः ॥ यस्य देवस्य यत्तिथिवारनक्षत्रादिकं तद्दिनेयदि तस्य प्रतिष्ठा मुहूर्त्तो भवेत्तदा अत्युत्तमः ॥

वास्तुशान्तिमुहूर्त्त— श्र., ध., मृ., मू., अनु., रे., ह., चि., स्वा., उत्तरा. ३., पुन., पु., रो., अश्वि. एषु भेषु शुभेऽहि सत्तिथौ बलिदानपुरस्सरं वास्त्वर्चनं कार्यम्।

अग्नि का वास किस लोक में है— जिस दिन हवन करना हो, उस दिन तिथि और वार की संख्या जोड़कर एक ओर जोड़ना, पुनः ४ का भाग देना। यदि पूरा भाग लग जाय, (0 -शेष रहे) अथवा तीन शेष रहे, तब अग्नि का वास पृथ्वी पर सुखकारक होता है, शेष १ बचने पर आकाश में प्राणहानिकारक, शेष २ बचने पर पाताल में धनहानि करता है। तिथि की गणना शुक्ल प्रतिपदा से तथा वार की गणना रविवार से करनी। इसके बाद आहुतिचक्र जरूर देखिए।

विशेषः— यात्राविवाहव्रतगोचरेषु चौलोपनीताद्यखिलव्रतेषु। दुर्गाविधानेषु सुतप्रसूतौ नैवाग्निचक्रं परिचिन्तनीयम् ॥ महारुद्रेव्रतेऽमायां ग्रस्तेन्द्वर्कास्तराहुणा। नित्यनैमित्तिके कार्ये अग्निचक्रं न दर्शयेत् ॥ दिग्दाहेप्यथवा घोर ग्रहास्ते भूमिकम्पने। केतूनामुदये शान्तौ चक्रं यत्नेन चिन्तयेत् ॥ लक्षकोटिहवने मखेऽखिले चातिरुद्रकरणे महाविधौ। देवखातभवने सराल ये अग्निचक्रम-वलोकयेत्सुधीः ॥ दुर्गभंगे गृहे वाऽपि विवादे शत्रुविग्रहे। शान्तिकर्म नृपक्रोधे चक्रं तत्र निरीक्षयेत् ॥

ग्रहमुखे होमाहुतिज्ञानाय चक्रम्

(सूर्य नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनना)

सू.	बु.	शु.	श.	चं.	मं.	गु.	रा.	के.	ग्रहाः
३	३	३	३	३	३	३	३	३	नक्षत्र
नेष्ट	श्रेष्ठ	श्रेष्ठ	नेष्ट	श्रेष्ठ	नेष्ट	श्रेष्ठ	नेष्ट	नेष्ट	फलम्

पापग्रहमुखे-हवने कृते शान्तिः— क्रूरग्रहमुखे चैव सञ्जाते हवने शुभे। शान्तिं विधाय गां दद्याद् ब्राह्मणाय कुटुम्बिने। आयसीं प्रतिमां कृत्वा निक्षिपेत्तामधोमुखीम्। गोमूत्र मधुगन्धाद्यैरर्चितां प्रतिमां ततः। कुण्डे निधाय सम्पूज्य तत्र होमो विधीयते ॥

अथ ऋणी -धनी विचार— स्ववर्गं द्विगुणं कृत्वा परवर्गेण योजयेत्। अष्टभिश्च हरेद् भागं योऽधिकः स ऋणी भवेत् ॥ (अर्थात् अपने वर्ग को दूना कर, दूसरे के वर्ग में जोड़ना, फिर ८ का भाग देना। फिर दूसरे का वर्ग दूना करके, अपना वर्ग जोड़ना, फिर 8 का भाग देना। जिसका - शेषांक अधिक बचे, वह दूसरे का ऋणी होगा।), लेकिन वशिष्ठ आदि का मत है कि जिसका शेषांक कम बचे, वह दूसरे का ऋणी होता है - यही प्रामाणिक है।

हलप्रवहण मुहूर्त्त—मृ., रे., चि., अनु., रो., उत्तरा. ३, ह., अश्वि., पुष्य, अभि., स्वा., पुन., श्र., ध., श., मू., म., वि., एषु भेषु रिक्तामाषष्ठयष्ठमीरहित सत्तिथौ शुभग्रहस्य वासरे, १।५।७।१०।११ लग्नेषु भूमिशयनभद्रादीन् वर्जयित्वा हलचक्रशुद्धौ सत्यां हलप्रवहणं शुभम्।

हलचक्रम्

सूर्यभुक्तनक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनें

३	८	९	८	नक्षत्र
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	फल

बीजवपने राहुचक्रम्

राहुनक्षत्रात् दिनभं यावत् गणना कार्या

८	३	१	३	१	३	१	३	४
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ

बीजवपने मुहूर्त्तः— ह., अश्वि., पुष्य, उत्तरा. ३, चि., अनु., मृ., रे., स्वा., ध., म., मू., एषु भेषु सत्तिथौ भौमातिरिक्तवारेषु सुशकुने राहुचक्रशुद्धौ सत्यां शुभः।

विशेषः— रवौ रौद्रा (आर्द्रा) द्यपादस्थे भूमेः संजायते रजः।
तस्माद्दिनत्रयं तत्तु बीजवापे परित्यजेत् ॥

नवान्न-भक्षण-मुहूर्त्त —मृ., रे., चि., अनु., ह., अश्वि., पुष्य, अभि., स्वा., पुन., श्र., ध., श. एवं विषघटी रहित नक्षत्रों में शुभ है, नन्दा- रिक्ता तिथियों और पौष-चैत्र को छोड़कर अन्य मासों में सू., बु., गु., शुक्रवार शुभ है।

गौ आदि पशु लेने का मुहूर्त्त— अश्वि., पुन., पु., ह., वि., ज्ये., धनि., शत., रे. नक्षत्र में गौ लेना-बेचना। अन्य पशु पुन., पूर्वा. ३, ह., अनु., ज्ये., मू., धनि., रे. में लेना-बेचना शुभ है। गाय लेनी हो तो उ.फा. से दिन नक्षत्र तक गिने, ३ तक लाभदायक, ५ तक हानि, ११ तक अर्थलाभ, १६ तक सुख, २२ तक महालाभ, २३ तक वृद्धि, २७ तक भय होता है। वृषभ (बैल) लेना हो तो ६ नक्षत्र लाभदायक। फिर दो-दो के क्रम से गाय के समानफल जानें। महिषी (भैंस) लेनी हो तो भी गौ नक्षत्रगणना क्रम से शुभाशुभफल हेतु सूर्य नक्षत्र तक गिनें (नौमी चौदस चौथ चौपाया। मंगल हान करे घर आया)

सूर्यनक्षत्रात्काष्ठादि (गुहारा आदि) संस्थापनचक्रम्

६	२	४	४	४	४	४	नक्षत्र
उत्तमपाक	शवदहन	सर्पभय	मित्रलाभ	रोगभय	क्वाथकर्म	सुख	संख्या
शुभ	नेष्ट	नेष्ट	शुभ	नेष्ट	नेष्ट	शुभ	फल

लतावृक्षाद्यारोपण मुहूर्त्त—मृ., रे., चि., अनु., उत्तरा. ३, रो., ह., पुष्य, अश्वि., श., मू., वि. नक्षत्रों में रिक्तामारहित शुभ तिथियों में और चं., बु., बृ., शुक्रवार हों, शुक्लपक्ष में ४।१०।११।१२ लग्न में शुभ है। **तृणकाष्टादिसंग्रहे निषेधः—** तृण-काष्ठ का सञ्चय और पलंग बनवाना आदि कर्म कुम्भ-मीन के चन्द्रमा (पञ्चककाल) में नहीं करना चाहिए।

औषध का मुहूर्त्त— ह., अ., पुष्य, अभि., मृ., रे., चि., अनु., स्वा., पुन., श्र., ध., श. व मूल में जन्मनक्षत्र को छोड़कर, इन नक्षत्रों में ४।९।१४ को छोड़कर, शुभ तिथियों में, भौम-शनि को छोड़कर, अन्यवारों में शुभ है।

अथ यात्रा मुहूर्त्तः

ह., म., श्र., अश्वि., पुष्य, पु., धनि., अनु., रे. एषु भेषु यात्रा अत्युत्तमा; रो., उत्तरा. ३, पूर्वा. ३ एषु भेषु मध्या; भ., कृ., आर्द्रा, आश्ले., म., चि., स्वा., वि., ज्ये. एतद्भेषु निन्द्याः। तत्रात्यावश्यकत्वेऽपि यात्रायां भरण्यादिभानां क्रमात् ७। २१। १४। १४। ११। ४०। १४। १४। १४ एता घटिका गमन कर्मण्यवश्यं वर्जनीयाः, २। ३। ५। ७। १०। ११। १२ कृष्णपक्षस्य प्रतिपत्सु द्विग्द्वारलग्नेषु वा यात्रा शुभा।

द्विग्द्वारलग्नानि

पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	दिशा
१। ५। ९	२। ६। १०	३। ७। २	४। ८। १२	शुभम्
२। २। १०	३। ७। ११	४। ८। ११	१। ५। ९	मध्यम
४। ६। १२	१। ५। ९	२। ६। १०	३। ७। ११	भयम्
३। ७। ११	४। ८। १२	१। ५। ९	२। ६। १०	म. भ.

यात्रा में शुभाशुभ लग्न — जन्म लग्न और जन्म राशि से अष्टमलग्न तथा कुम्भ या कुम्भ के नवांश में यात्रा कदापि न करें। शुभलग्न वह है जब १। ४। ५। ७। ९। १० स्थानों में शुभ ग्रह और ३। ६। १०। ११ वें पापग्रह हों। अशुभ लग्न वह है जब १। ६। ८। १२ वें चन्द्रमा, १० वें शनि, ६ वें शुक्र, १२। ६। ८ वें लग्नेश हो। **अन्यच्च** -यात्रायामष्टमं शुद्धं विवाहे सप्तमं तथा। दशमं तु गृहारम्भे चतुर्थं तु प्रवेशने॥

जन्म लग्नेश-दशेश अस्त हों व मारक दशा हो तो सुमुहूर्त्त में भी दूर की यात्रा न करें, प्रथम तीर्थयात्रा व देवदर्शन गुरुशुक्रास्त में वर्जित है ।

दिक्शूलज्ञानायचक्रम्									नक्षत्रशूलचक्रम्			
पूर्व	आ.	दक्षि.	नैर्ऋ.	पश्चि.	वाय.	उत्तर	ईशा.	दिशा.	पू.	द.	प.	उ.
चं., श	चं., बृ	गुरु	सू., शु.	सू., शु.	भौम	मं.	बु., श.	वार	ज्ये.	पू. भा.	रोहि.	उ. फा.

दिक्शूलपरिहारः— न वारदोषाः प्रभवन्ति रात्रौ देवेज्यदैत्येज्यदिवाकराणाम्। दिवा शशांकार्कजभूसुतानां सर्वत्र निन्द्यो बुधवार दोषः ॥ १॥ सूर्यवारे घृतं प्राश्य चन्द्रवारे पयस्तथा। गुड़मंगारके वारे बुधवारे तिलानपि। गुरुवारे दधि प्राश्यं शुक्रवारे यवानपि। माषान्भुक्त्वा शनवरि शूले गच्छञ्छूले न दोषभाक् ॥ २॥

यात्रा में काल ज्ञान						
शनौ	शुक्रे	गुरौ	बुधे	भौमे	चन्द्रे	रवौ सम्मुखे
पूर्वे	आग्नेय्यां	दक्षिणे	नैर्ऋत्यां	पश्चिमे	वायव्ये	उत्तरे नेष्टः

योगिनीवासचक्रम्

पू.	आग्ने.	दक्षि.	नैर्ऋ.	पश्चिम	वाय.	उत्तर	ईशा.	दिशा
१। ९	३। ११	५। १३	४। १२	६। १४	७। १५	२। १०	८। ३०	तिथि

योगिनी साधारण यात्रा में सामने और दाहिने अशुभ होती है, पीछे और बायें की शुभ, युद्ध यात्रा में बाँये ओर की और सम्मुख की विशेष त्याज्य है। **समयशूल**-उषाकाल में पूर्व को, गोधूलि में पश्चिम को, अर्द्धरात्रि में उत्तर को और मध्याह्नकाल में दक्षिण को नहीं जाना चाहिए। **गर्ग-गुरु-अङ्गिरामत** - गर्ग जी के मत से ५ या ४ घड़ी रात रहें तो गमन करें। बृहस्पति के मत से अच्छा शकुन मिलने पर यात्रा करें। अङ्गिरा के मत से जब मन प्रफुल्लित हो तब ही चला जाये। भगवान् के मत से ब्राह्मण की आज्ञा लेकर, यात्रा करने से शुभ होता है। पंच-पंच (५५) उषाकालः सप्तपञ्चाशद (५७) रुणोदयःअष्ट पंच (५८) भवेत्प्रातः शेषः सूर्योदयोभवेत्॥

चन्द्रवासचक्रम्			
पूर्वे	दक्षि.	पश्चि.	उत्तरे
मेष	वृष	मिथुन	कर्क
सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.
धनु	मकर	कुम्भ	मीन

एकस्मिन् राशौ आवश्यके-तात्कालिक यात्रायां घट्यात्मक चद्रवासचक्रम्

पू.	द.	प.	उ.	पू.	द.	प.	उ.	दिशा
१७	१५	२१	१६	१७	१५	२०	१४	घटी

घट्यात्मक चन्द्रवास

जिस दिशा का चन्द्र होवे उस दिशा से गिनना चाहिए।

कुम्भ और मीन के चन्द्रमा में दक्षिण को कदापि न जावे।

चन्द्रफलम्— सम्मुखे अर्थलाभाय दक्षिणे सुख सम्पदः । पृष्ठतो मरणं चैव वामे चन्द्रे धनक्षयः ॥१॥ सर्वे दोषाःलयं यान्ति पूर्णचन्द्रे हि सम्मुखे ॥ इति॥ सम्मुखे चन्द्र प्रशंसा-भगणदोषं, वार-संक्रान्ति-दोषं, कुतिथिकुलिकदोषं यामयामार्धदोषम्। कुजशनिरविदोषं, राहुकेत्वादिदोषं, हरति सकलदोषं चन्द्रमाः सम्मुखस्थः॥

सर्वाङ्कसिद्धियोग— शुक्लादि तिथि तथा वार की संख्या को जोड़ कर तीन जगह रखें, क्रमशः ७। ८। ३ का भाग दें। शेष प्रथम स्थान में शून्य हो तो क्लेश, मध्य में हो तो धनक्षति और अन्त में हो तो मृत्यु होती है। सर्वत्र अङ्क आने से सौख्य जय लाभ हो। विजयादशमी को बिना सर्वांकादि मुहूर्त्त के भी यात्रा सफल होती है। बायां स्वर चलते समय पूर्व व ईशान को, दायां चलते समय दक्षिण व नैर्ऋत को मत जाओ, हानि होती है। जाने वाले का अच्छे मुहूर्त्त और अच्छे शकुन में भी, जाने को मन न चाहे तो कदापि न जावे, क्योंकि मुहूर्त्त- शकुन से मन की इच्छा प्रबल है ।

वर्ण के क्रम से प्रस्थान का विधान— यदि यात्रा मुहूर्त्त में किसी अत्यावश्यक

कार्यवश विलम्ब हो जाय, तो उसी मुहूर्त्त में ब्राह्मण जनेऊ माला, क्षत्रिय शस्त्र, वैश्य मधु-घृत व रुपया और शूद्र फल को अपने वस्त्र में बांध, किसी घर के या नगर के बाहर जाने की दिशा में प्रस्थान के समय रक्खें। अथवा मन की सबसे प्यारी वस्तु को रख देना चाहिए।

यात्रा के पहले त्याज्य वस्तु— यात्रा के तीन दिन पहले दूध त्याग दें, पांच दिन पूर्व हजामत, तीन दिन पूर्व तैल, सात दिन पूर्व मैथुन, समर्थ न हो तो एक दिन पहले तो सब त्याज्य वस्तुओं का त्याग अवश्य करें।

दिने चतुर्घटिका मुहूर्त्तम्		रात्रौ चतुर्घटिका मुहूर्त्तम्
सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु., शुक्र, शनि	घटि.	सू., चं., मं., बु., गु., शु., श.
उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर, काल	३॥।	शु., च., का., उ., अ., रो., ला.
चर, काल, उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ	७॥	अ., रो., ला., शु., च., का., उ.
लाभ, शुभ, चर, काल, उद्वेग, अमृत, रोग	११।	च., का., उ., अ., रो., ला., शु.
अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर, काल, उद्वेग	१५	रो., ला., शु., च., का., उ., अ.
काल, उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर	१८॥।	का., उ., अ., रो., ला., शु., च.
शुभ, चर, काले, उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ	२२॥	ला., शु., च., का., उ., अ., रो.
रोग, लाभ, शुभ, चर, काल, उद्वेग,अमृत	२६।	उ., अ., रो., ला., शु., च., का.
उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर, काले	३०	शु., च., का., उ., अ., रो., ला.

सूचना— यदि ३० घटी से न्यूनाधिक दिन या रात्रि का मान हो तो उसमें ८ का भाग देने से एक भाग के घटी पल ज्ञात होंगे ।

यात्रायां शुभशकुनानि— मृग बांये ते दाहिने जो आवे तत्काल। अन्न धन लक्ष्मी बहु मिले चलते प्रात:काल ॥ विप्र, दी अश्व, गजमद, फल, अन्न, दुग्ध, गोदधि, सर्षप, कमल, निर्मल, वस्त्र, वाद्य , वेश्या, मयूर, नकुल, सिंहासन, शस्त्र, मांस, दीप्ताग्नि, मत्स्य, ससुतस्त्री, गोरी कन्या, धोबी, कार्यसिद्धि वाक्य, जलपूर्णघट। यात्रा पश्चात् रिक्त घट यात्रा के समय देखने में शुभ है । **अशुभ शकुनानि**- वन्ध्या स्त्री, चर्म, अस्थि, इन्धन, संन्यासी, भैंसों का युद्ध, सर्प, शत्रु, मार्जार, युद्ध, कुटुम्बकलह, विधवा, जातिभ्रष्ट, अङ्गहीन, छिका, दुष्टवाणी यात्रा के समय देखना अशुभ तथा कष्टप्रद है ।

रामदैवज्ञोक्त आवश्यके यात्रा मुहूर्त्तचक्रम्

पौ.	मा.	फा.	चै.	वै.	ज्ये.	आ.	श्रा.	भा.	आ.	का.	मा.	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	सौख्य	क्लेश	भीति	लाभ
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	शून्य	दारिद्र्य	दारिद्र्य	मिश्र
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	हानि	दु:ख	लाभ	लाभ
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	लाभ	सौख्य	शुभ	लाभ
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	लाभ	लाभ	लाभ	सौख्य
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	भय	लाभ	मृत्यु	लाभ
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	लाभ	कष्ट	लाभ	सुख
८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	कष्ट	सौख्य	क्लेश	सुख
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	सौख्य	लाभ	सिद्धि	कष्ट
१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	क्लेश	सिद्धि	लाभ	धन
११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	मृत्यु	लाभ	लाभ	शुभ
१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	शुभ	सौख्य	मृत्यु	कष्ट

तृतीया-त्रयोदशी, चतुर्थी-चतुर्दशी, पञ्चमी-पूर्णमासी का फल समान जानना । अमावस्या में यात्रा वर्जित है, पक्ष का विचार नहीं है ।

यात्रा में सदैव चल रही नासिका के श्वास की ओर का पांव आगे उठाकर चले, इसी तरह सवारी पर चढ़े, कार्य सिद्धि, यात्रा सफल होगी।

नौका यात्रा मुहूर्त्तः— चि., ह., पु., मृ., पूर्वा. ३, अनु., श्र., ध. एषु भेषु सत्तिथौ शुभेऽह्नि चन्द्र-तारानुकूल्ये सति शुभः।

यात्रानिवृत्तौ प्रवेशमुहूर्त्तः— मृ., रे., अनु., रो., उत्तरा.३, ह.,अ., पुष्य, स्वा., श्र., ध. एषु भेषु चं., बु., बृ., शु., श. वारेषु १।२। ३।५।७।१०।११।१३ तिथिषु, ३।५।३।८।९। ११।१२ एषु लग्नेषु, १।४।७।१०।५।९ स्थानेषु शुभैः ३।६।११ स्थानेषु पापैः ४।८ शुद्धौ शुभ; वि., कृ., पूर्वा. ३, भ., म., मू., ज्ये., आर्द्रा, आश्ले., नक्षत्राणि; ४।९।१४।६ १२।८।३० तिथयः ।सू., मं. वारौ, १।४।७।१० लग्नानि सर्वदा वर्जनीयानि । मंगलवार को मिलाप कष्टप्रद सिद्ध होता है। विशेष :- प्रवेशान्निर्गमश्चैव निर्गमाच्च प्रवेशनम् । नवमे जातु नो कुर्याद्दिने वारे तिथाविति ।

अथ घातचन्द्रवारादीनां चक्रम्

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	राशयः
मे.	क.	कुं.	सिं.	म.	मि.	ध.	वृष	मी.	सिंह	ध.	कुम्भ	घात चन्द्र
र.	श.	चं.	बु.	श.	श.	बृ.	श.	शु.	मं.	बृ.	श.	घात वार
म.	ह.	स्वा.	ऽनु.	मू.	श्र.	श.	रे.	भ.	रो.	आ.	श्लेषा.	घात नक्षत्र
मे.	ध.	ध.	मि.	वृश्चि.	वृश्चि.	मी.	ध.	कन्या	वृश्चि.	मि.	मेष	स्त्री चन्द्र घात
का.	मार्ग.	पौ.	मा.	फा.	चैत्र	वै.	ज्ये.	आ.	श्रावण	भाद्र.	आ.	घातमास
वि.	सु.	प.	धृ.	प्रीः	सु.	अ.गं.	वृ.	वै.	गं.	व्या.	वै.	घातयोग
१	२	४	७	१०	१२	६	८	९	११	३	५	घातलग्न
१	५	२	२	३	५	४	१	३	४	३	५	घाततिथि
६	१०	७	७	८	१०	९	६	८	९	८	१०	,,
११	१५	१२	१२	१३	१५	१४	११	१३	४	१३	१५	,,

युद्ध, विवाद, राजसेवा, वाहन रोगादि कार्यों में घातचक्र देखना और तीर्थयात्रा तथा विवाहादि शुभ कार्यों में घाततिथि आदि देखने की आवश्यकता नहीं है । ''घाततिथिर्घा-वारघातनक्षत्रमेव च । यात्रायां वर्जयेत्प्राज्ञैरवन्यकर्मसु शोभनम्।''

वाम -दक्षिण निर्देश

अग्रे चक्रोक्त सर्व फल पुरुषों के दक्षिण अंग में और स्त्रियों के वामांग में विचार करना, पुरुषों के वाम भाग में और स्त्रियों के दक्षिण भाग में विपरीत अशुभ भयकारी फल होता है । जो फल पल्लीपात का कहा है, वही सरट (गिरगिट) के चढ़ने का जाने । सरट के गिरने का तथा पल्ली के चढ़ने का फल वृथा होता है ।

अथाङ्गविभाग में पल्ली- (छिपकली, कोढ़किरली) पतन का फल

स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्
शिरसि	राज्यलाभः	भ्रूमध्ये	राज्यसंबंधः	वामपादे	नाशः
नासाग्रे	व्याधिः	वामकर्णे	बहुलाभः	अधरोष्ठे	ऐश्वर्यलाभः
वामभुजे	राज्यभयः	स्तनयोः	दौर्भाग्यम्	दक्षिणभुजे	नृपतुल्यता
जानुद्वये	शुभागमः	हस्तयोः	वस्त्रलाभः	पृष्ठदेशे	बुद्धिनाशः

स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्
कटिभागे	अश्वलाभः	वा. मणिबंधे	कीर्तिनाशः	नाभौ	बहुधनम्
गुल्फद्वये	बन्धनम्	दक्षिणपादे	गमनम्	मुखे	मिष्ठान्नभोजनं
ललाटे	बन्धुदर्शनं	उत्तरोष्ठे	धननाशः	पादमध्ये	स्त्रीनाशः
दक्षिणकर्णे	आयुवृद्धिः	नेत्रयोः	धनप्राप्तिः	पादान्ते	मृत्युः
कण्ठे	शत्रुनाशः	उदरे	भूषणलाभः	केशान्ते	रणम्
जंघयोः	शुभम्	स्कन्धयोः	विजयः	नखेपु	धान्यलाभः
द. मणिबंधे	मनस्तापः	हृदये	धनलाभः	दक्षिणांगुष्ठे	धनलाभः

पल्लीपतने प्रशस्तवारतिथ्यर्क्षाणि— यदि छिपकली १। २। ३। ५। ६। १०। ११। १२। १३ इन तिथियों में गिरे तो श्रेष्ठ फलदायक है। तथा चं., बु., गु., शु. इन वारों में भी शुभ फल देती है। पु., अश्वि., रो., मू., पुन., उ.फा., ह., चि., स्वा., ध., रे., अनु., श. ये नक्षत्र शुभ फलदायक हैं। **अतोऽन्यद्भेषु निन्द्याः** ॥

पल्लीपाते कर्त्तव्यकर्म विधानम्— पल्ली (किरली) तथा सरट (गिरगिट) स्पर्श होने पर वस्त्र सहित स्नान करें। जन्म नक्षत्र, मृत्युयोग, दग्धा-तिथि,भद्रा आदि से दूषित दिन को पापग्रहयुक्त लग्न में तथा अष्टमचन्द्रमा से पल्ली आदि के स्पर्श होने से अरिष्ट होता है । उसकी शान्ति के लिए जप, होम, मृत्युञ्जय का जप वा तिल-स्वर्ण दान पञ्चगण्य से स्नान तथा घृत का छायापात्र दान भी करना उत्तम है ।

छिक्का फलम्— छिक्का प्रायः सब दिशाओं की नेष्ट होती है, गौ की छिक्का मरण करती है । **मदिरा के योग अथवा छींक सूंघनी छल कर लीन्हीं, पीन सरदी घास फल हीनी। छींक पीठि की कुशवाल उचारे; बाईं कारज सवै सवारे ॥१॥ सम्मुख छींक लड़ाई भापै;छींक दाहिनी द्रव्य विनाशै ॥ २॥ ऊंची छींक कहे जयकारी;नीची छींक होय भयकारी । अपनी छींक महा दुखदाई; ऐसे छींक विचारो भाई ॥**

॥ कन्या, विधवा, मालिन, धोबिन, रजस्वला, वैश्या, चमारी की छींक विशेष अशुभप्रद होती है। भोजनान्त में छींक होय तो दूसरे दिन प्रिय भोजन मिले।

अथ शुभ छिक्का :— आसने शयने शौचे दाने चैव तु भोजने । वामांगे पृष्ठतश्चैव षट् छिक्कास्तु शुभावहाः । एक नाक दो छींक; काम बने सब ठीक ॥

तीर्थ में मुण्डन विचारः — मुण्डनं चोपवासञ्च सर्वतीथेष्वयं विधिः, वर्जयित्वा कुरुक्षेत्रं विशालां (उज्जयिनीं) गिरिजां गयाम्।

विवाहादि मुहूर्त्त (सं. २०५९ वि.)

प्रो. प्रियव्रत शर्मा, ५९/६ (अभिजित्) पंचकूला १३४१०९

-: समय शुद्धि :-

गुरु अस्त :- इसवर्ष गुरु आषाढ़ कृष्ण १२ रविवार (७ जुलाई '०२) से श्रावण कृष्ण ६ मंगलवार (३० जुलाई '०२) तक अस्त रहेगा।

शुक्र अस्त :- इसवर्ष शुक्र कार्तिक कृष्ण १ मंगलवार (२२ अक्तू. '०२) से कार्तिक कृष्ण ३० चंद्रवार (४ नवं. '०२) तक अस्त रहेगा।

गुरु, शुक्र के अस्त से ३ दिन पहिले वार्धक्यदोष के कारण एवं उदय होने के ३ दिन बाद भी बाल्यदोष के कारण शुभ कृत्य नहीं होते।

अक्षांशभेद से भारत के विभिन्न स्थलों पर गुरु-शुक्र का उदय-अस्त

अक्षांश →	+१०°	+२०°	+३०°	+३५°
गुरु अस्त	६ जुलाई २००२	८ जुलाई २००२	७ जुलाई २००२	६ जुलाई २००२
गुरु उदय	३० जुलाई २००२	३० जुलाई २००२	३१ जुलाई २००२	३१ जुलाई २००२
शुक्र अस्त (पश्चिम)	२५ अक्तूबर २००२	२४ अक्तूबर २००२	२२ अक्तूबर २००२	२१ अक्तूबर २००२
शुक्र उदय (पूर्व)	३ नवंबर २००२	४ नवंबर २००२	५ नवंबर २००२	५ नवंबर २००२

ध्यान रहे - यहां नीचे दिए गए विवाहादि मुहूर्तों में गुरु-शुक्रास्त की तारीखें पंजाब, हरियाणा, हि.प्र. दिल्ली आदि की ही ली गई हैं। अन्य प्रान्तों के लिए विवाहादि मुहूर्तों का विचार करते समय स्थानीय अक्षांश के आधार पर उन प्रान्तों में गुरु-शुक्र के उदयास्त की तारीखों का, बाईं ओर दिए गए कोष्ठक के अनुसार, ध्यान रखना जरूरी है।

मुहूर्तों में जिस लग्न का कुछ भाग किसी विशेष दोष के कारण वर्जित है, उस लग्न के आगे कोष्ठक में भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम के अनुसार यह निर्देश दिया गया है कि इस लग्न को इस टाईम के बाद अथवा पहले ही मुहूर्तों में स्वीकार करें।

यहां मुहूर्तों में क्रान्तिसाम्य (महापात) दोष का विचार सूक्ष्म गणित से किया गया है। सूर्य एवं चन्द्र की राशियों के आधार पर निर्णीत क्रान्तिसाम्य नितांत स्थूल होता है। भास्कर आदि आचार्यों ने इसके निर्णय के लिए एक विशेष गणित प्रक्रिया, (महापात-गणित) निर्दिष्ट की है। कई पंचांगकार इसकी जटिल गणित-प्रक्रिया से डरकर स्थूल क्रान्तिसाम्य के आधार पर ही मुहूर्तों का निर्णय कर देते हैं, जो सर्वथा भ्रामक है। क्रान्तिसाम्य दोष का प्रारम्भ और समाप्तिकाल पृष्ठ 63 पर दिया गया है। वहां देखें। यहां दिए गए मुहूर्तों में जहां युति, वेध, कर्त्तरी दग्धा तिथि, अष्टमस्थ भौम, षष्ठाष्टमस्थ, चन्द्र-शुक्र आदि दोषों के परिहार मिल गए हैं, उन मुहूर्तों को शास्त्रानुसार शुद्ध माना गया है और वहां विवाहलग्न लगा दिए गए हैं।

ध्यान दें - यहां मुहूर्तों में दी गई अंग्रेजी तारीखें सूर्योदय कालिक हैं। जो मुहूर्तकाल (लग्न) रात के १२ बजे के बाद और सूर्योदय से पहिले पड़ता है, वहां अंग्रेजी तारीख अग्रिम (परवर्ती) समझनी चाहिए।

शुद्ध विवाह मुहूर्त्त (सं. २०५९ वि.)

मास-तिथि-वार			प्रविष्टा	तारीख २००२ ई.	विवाह नक्षत्र	विवाह लग्न के समय			लत्ता आदि दस दोष-रेखाएं	शुद्धलग्न,ग्रह-दान-पूजा आदि विवरण (सर्वत्र भा.स्टैं.टा. दिया गया है)
						चन्द्रराशि	सूर्यराशि	गुरुराशि		
चैत्र शु.	३	मं.	वैशा. ४	अप्रै. १६	रोहि.	वृष	मेष	मिथुन	।। ऽश. ।। ऽअ. ।। ।।	दि.ल. ३ (६/५७ बाद) (श.दा.), ४, ५ (मं.दा.),
चैत्र शु.	४	बु.	वैशा. ५	अप्रै. १७	रोहि.	वृष	मेष	मिथुन	।। ऽश. ।। ।। ।। ।	दि.ल. ३ (१०/१७ तक) (श.दा.),
चैत्र शु.	४	बु.	वैशा. ५	अप्रै. १७	मृग.	वृष/मिथुन	मेष	मिथुन	ऽमं.। ऽरा.। ऽके. । ऽऽ ।।	दि.ल. ४ (११/२६ बाद), ५ (मं.दा.), रा.ल. ६ (२४/०५ बाद) (गु.चं.दा.), ११ (रा.दा), १२ (२६/१७ तक),
चैत्र शु.	१०	चं.	वैशा. १०	अप्रै. २२	मघा	सिंह	मेष	मिथुन	।ऽ ।। । ऽरो. । ऽ।।	दि.ल. ४ (११/४० बाद),गोधू, रा.ल. ११ (चं.रा.दा.),
चैत्र शु.	१२	बु.	वैशा. १२	अप्रै. २४	उ.फा.	सिंह	मेष	मिथुन	ऽसू.।। ।। ।। ।। ।	दि.ल. ३ (श.दा.), ४ (११/२० तक), (११/२० बाद मृत्युबाण),
चैत्र शु.	१३	गु.	वैशा. १३	अप्रै. २५	हस्त	कन्या	मेष	मिथुन	ऽरा. ।। ।। ऽअ. ऽ । ।।	दि.ल. ४ (१२/०५ बाद), ५ (मं.दा.), गोधू., (१२/०५ तक मृत्युबाण),
चैत्र शु.	१३	गु.	वैशा. १३	अप्रै. २५	चित्रा	कन्या	मेष	मिथुन	।। ।। । ऽअ. । ऽ ।।	ल. १० (२५/२० बाद), १२ (चं.शु.दा.),
चैत्र शु.	१४	शु.	वैशा. १४	अप्रै. २६	चित्रा	कन्या	मेष	मिथुन	।। ।। । ऽअ. । ऽ ।।	दि.ल. ३ (श.दा.), ४ (११/५५ तक),
चैत्र शु.	१४	शु.	वैशा. १४	अप्रै. २६	स्वा.	तुला	मेष	मिथुन	।। ।। ऽसू. । ऽऽ ।।	ल. १०, ११ (रा.दा.),
चैत्र शु.	१५	श.	वैशा. १५	अप्रै. २७	स्वा.	तुला	मेष	मिथुन	।। ।। ऽसू. । ऽऽ ।।	दि.ल. ३ (श.दा.), ४, ५ (मं.दा.), ६,
वैशा. कृ.	४	मं.	वैशा. १८	अप्रै. ३०	मूल	धनु	मेष	मिथुन	।। ।। ऽरा. ।। ऽ ।।	दि.ल. ६ (१६/२६ बाद), गोधू, रा.ल. १०, ११ (रा.दा.), १२ (शु.दा.),
वैशा. कृ.	५	बु.	वैशा. १९	मई १	मूल	धनु	मेष	मिथुन	।। ।। ऽरा. ।। ऽ ।।	दि.ल. ३ (चं.श.दा.), ५ (१४/२३ तक) (मं.दा.),
वैशा. कृ.	८	श.	वैशा. २२	मई ४	धनि.	मकर	मेष	मिथुन	।। ।। । ऽअ. ऽऽ ।।	ल. ११ (रा.दा.), १२ (शु.दा.),
वैशा. कृ.	९	र.	वैशा. २३	मई ५	धनि.	कुम्भ	मेष	मिथुन	।। ।। । ऽअ. ऽऽ ।।	दि.ल. ३ (६/०२ बाद) (श.दा.), ५ (चं.मं.दा.),(१६/४६ बाद क्रान्तिसाम्य),

शुद्ध विवाह मुहूर्त (सं. २०५९ वि.)

मास	तिथि	वार	प्रविष्टा	तारीख २००२ ई.	विवाह नक्षत्र	विवाह लग्न के समय चन्द्रराशि	सूर्यराशि	गुरुराशि	लत्ता आदि दस दोष-रेखाएं	शुद्धलग्न,ग्रह-दान-पूजा आदि विवरण (सर्वत्र भा.स्टैं.टा. दिया गया है)
वैशा. कृ.	११	बु.	वैशा. २६	मई ८	उ.भा.	मीन	मेष	मिथुन	। S ॥ । Sचौ. । S ॥	दि.ल. ४ (११/४५ बाद), ६ (चं.दा.), रा.ल. १०, ११(रा.दा.),
वैशा. कृ.	१२	गु.	वैशा. २७	मई ९	रेव.	मीन	मेष	मिथुन	Sशु. ॥ ॥ Sचौ. S ॥ ।	दि.ल. ३ (श.दा.), ४ (१०/५५ तक),
वैशा. शु	३	बु.	ज्ये. २	मई १५	मृग.	मिथुन	वृष	मिथुन	॥ Sमं.शु.रा. । Sके. । S ॥ ।	दि.ल. ४, ५ (मं.दा.), ६,
वैशा. शु	७	र.	ज्ये. ६	मई १९	मघा	सिंह	वृष	मिथुन	॥ ॥ । Sनृ. । S ॥	ल. ११ (२५/१२ से २५/५८ तक) (चं.रा.दा.),
वैशा. शु	८	चं.	ज्ये. ७	मई २०	मघा	सिंह	वृष	मिथुन	॥ ॥ ॥ । S ॥	दि.ल. ४, ६ (१४/३२ तक),
वैशा. शु	९	मं.	ज्ये. ८	मई २१	उ.फा.	सिंह/कन्या	वृष	मिथुन	Sशु. S ॥ । Sचौ. । S ॥	दि.ल. ६ (१४/८ बाद), ७, गोधू., रा.ल. १२ (चं.दा.),
वैशा. शु	१०	बु.	ज्ये. ९	मई २२	उ.फा.	कन्या	वृष	मिथुन	Sशु. S॥ ॥ ।S ॥	दि.ल. ४ (११/०२ तक),
वैशा. शु	१०	बु.	ज्ये. ९	मई २२	हस्त	कन्या	वृष	मिथुन	Sरा. ॥ ॥ । S ॥ ।	दि.ल. ५ (१२/१४ बाद), ७ (१७/४५ तक),
वैशा. शु	१२	गु.	ज्ये. १०	मई २३	चित्रा	कन्या	वृष	मिथुन	Sसू. ॥ ॥ Sरो. ॥ ॥	दि.ल. ४ (१०/१० बाद), ५ (१३/१४ तक),
वैशा. शु	१३	शु.	ज्ये. ११	मई २४	स्वा.	तुला	वृष	मिथुन	। S ॥ । Sरो. S ॥ ।	दि.ल. ४ (९/४६ बाद), ५, ६, गोधू., रा.ल. ११ (रा.दा.), १ (२८/४८ तक) (चं.दा.) ,
वैशा. शु	१५	र.	ज्ये. १३	मई २६	अनु.	वृश्चिक	वृष	मिथुन	॥ ॥ । Sअ. । S ॥	दि.ल. ५ (१३/०२ बाद), ६, ७, रा.ल. ११ (२५/२६ तक) (रा.दा.), (१३/०२ तक मृत्युबाण),
ज्ये. कृ.	१	चं.	ज्ये. १४	मई २७	मूल	धनु	वृष	मिथुन	। S । Sशु. Sमं.रा. ॥ ॥ ।	ल. १२ (२६/२८ बाद), १,
ज्ये. कृ.	२	मं.	ज्ये. १५	मई २८	मूल	धनु	वृष	मिथुन	। S । Sशु. Sमं.रा. ॥ ॥ ।	दि.ल. ५, ६, ७, (१९/१८ बाद गुरु पादवेध),
ज्ये. कृ.	४	गु.	ज्ये. १७	मई ३०	श्रव.	मकर	वृष	मिथुन	॥ ॥ । Sचौ. । S ॥	ल. १२ (२६/२५ बाद), १, .
ज्ये. कृ.	५	शु.	ज्ये. १८	मई ३१	श्रव.	मकर	वृष	मिथुन	॥ ॥ । Sचौ. । S ॥	दि.ल. ७ (१७/०७ बाद), गोधू. रा.ल. ११(रा.दा.,), १२(२६/४६ तक),(८/०५ से १७/०७ तक क्रां. सा.),
ज्ये. कृ.	५	शु.	ज्ये. १८	मई ३१	धनि.	मकर	वृष	मिथुन	Sवं. ॥ ॥ । S ॥ ।	ल. १ (२८/०१ बाद),
ज्ये. कृ.	६	श.	ज्ये. १९	जून १	धनि.	मकर	वृष	मिथुन	Sवं. ॥ ॥ । S ॥ ।	दि.ल. ४ (चं.दा.), ६, (१४/४५ तक),
ज्ये. कृ.	९	मं.	ज्ये. २२	जून ४	उ.भा.	मीन	वृष	मिथुन	॥ ॥ । Sअ. । S ॥	ल. ११ (रा.दा.), १, (२२/२० तक मृत्युबाण),
ज्ये. कृ.	१०	बु.	ज्ये. २३	जून ५	उ.भा.	मीन	वृष	मिथुन	॥ ॥ । Sअ. । S ॥	दि.ल. ४ (१०/१५ तक),
ज्ये. कृ.	१०	बु.	ज्ये. २३	जून ५	रेव.	मीन	वृष	मिथुन	॥ ॥ ॥ SS ॥	ल. ११ (रा.दा.), १,
ज्ये. कृ.	११	गु.	ज्ये. २४	जून ६	रेव.	मीन	वृष	मिथुन	॥ ॥ ॥ SS ॥	दि.ल. ४, ६ (१५/१४ तक) (चं.दा.),
ज्ये. कृ.	११	गु.	ज्ये. २४	जून ६	अश्वि.	मेष	वृष	मिथुन	॥ ॥ । Sनृ. । S ॥	ल. ११ (रा.दा.), १२,
ज्ये. कृ.	१२	शु.	ज्ये. २५	जून ७	अश्वि.	मेष	वृष	मिथुन	॥ ॥ । Sनृ. । S ॥	दि.ल. ४, ५, ७ (चं. दा.),
ज्ये. शु.	६	र.	आषा. २	जून १६	मघा	सिंह	मिथुन	मिथुन	। S ॥ ॥ ॥ ॥	दि.ल. ४ (८/१६ तक,६/२८ बाद), (१०/१८ बाद मृत्युबाण),
ज्ये. शु	८	मं.	आषा. ४	जून १८	हस्त	कन्या	मिथुन	मिथुन	Sरा. S ॥ S । S ॥ ।	ल. १२ (चं दा.),
ज्ये. शु.	९	बु.	आषा. ५	जून १९	हस्त	कन्या	मिथुन	मिथुन	Sरा. S ॥ S । S ॥ ।	दि.ल. ४, ५, ७ (१५/२८ तक),
ज्ये. शु.	९	बु.	आषा. ५	जून १९	चित्रा	कन्या	मिथुन	मिथुन	॥ ॥ । Sनृ. । S ॥	ल. गोधू.,
ज्ये. शु.	१०	गु.	आषा. ६	जून २०	चित्रा	तुला	मिथुन	मिथुन	॥ ॥ । Sनृ. । S ॥	दि.ल. ४ (७/१४ बाद), ५, ६ (१३/५६ तक) (मं. दा.),
ज्ये. शु.	१०	गु.	आषा. ६	जून २०	स्वा.	तुला	मिथुन	मिथुन	॥ ॥ । Sनृ. S ॥ ।	ल. गोधू.,
ज्ये. शु.	११	शु.	आषा. ७	जून २१	स्वा.	तुला	मिथुन	मिथुन	॥ ॥ ॥ S ॥ ।	दि.ल. ५ (६/५४ बाद), ६ (१२/३० तक) (मं. दा.),
ज्ये. शु.	१२	श.	आषा. ८	जून २२	अनु.	वृश्चिक	मिथुन	मिथुन	Sसू. S ॥ ॥ ॥ ॥	दि.ल. ६ (१२/२६ बाद) (मं. दा.), ७, गोधू., रा.ल.११ (रा.दा.,), १२,

शुद्ध विवाह मुहूर्त्त (सं. २०५९ वि.)

मास-तिथि-वार			प्रविष्टा	तारीख २००२ ई.	विवाह नक्षत्र	विवाह लग्न के समय			लत्ता आदि दस दोष-रेखाएं	शुद्धलग्न,ग्रह-दान-पूजा आदि विवरण (सर्वत्र भा.स्टै.टा. दिया गया है)
						चन्द्रराशि	सूर्यराशि	गुरुराशि		
ज्ये. शु.	१३	र.	आषा. ६	जून २३	अनु.	वृश्चिक	मिथुन	मिथुन	ऽसू. ऽ ॥ ॥ ॥ ॥	दि.ल. ४, ५ (१०/१२ तक),
आषा. कृ.	४	शु.	आषा. १४	जून २८	श्रव.	मकर	मिथुन	मिथुन	। ऽ ॥ ॥ ॥ ॥	दि.ल. ४ (चं.दा.),
आषा. कृ.	४	शु.	आषा. १४	जून २८	धनि.	मकर	मिथुन	मिथुन	॥ । ऽशु. ऽशु. ऽनृ. ऽ । ॥	दि.ल. ६ (१२/४२ बाद) (मं.दा.), ७, गोधू.,रा.ल. ११(रा.दा.),१२, १(२५/३५ तक), (२५/३५ बाद शुक्रपाद वेध),
आषा. कृ.	५	श.	आषा. १५	जून २९	धनि.	कुम्भ	मिथुन	मिथुन	॥ । ऽशु. ऽशु. ऽनृ. ऽ । ॥	दि.ल. ५ (चं.दा.), (८/०४ तक शुक्रपाद वेध),
आषा. कृ.	६	चं.	आषा. १७	जुला. १	उ.भा.	मीन	मिथुन	मिथुन	ऽबु. ॥ ॥ ऽचौ. ॥ ॥	ल. ११ (रा.दा.), १,
आषा. कृ.	७	मं.	आषा. १८	जुला. २	उ.भा.	मीन	मिथुन	मिथुन	ऽबु. ॥ ॥ ॥ ॥ ऽ	दि.ल. ४, ६ (चं.मं.दा.), गोधू.,
आषा. कृ.	७	मं.	आषा. १८	जुला. २	रेव.	मीन	मिथुन	मिथुन	॥ ॥ ॥ ऽ ॥ ऽ	ल. १,
आषा. कृ.	८	बु.	आषा. १९	जुला. ३	रेव.	मीन	मिथुन	मिथुन	॥ ॥ । ऽरो. ऽ ॥ ऽ	दि.ल. ४, ६ (चं.मं.दा.), गोधू.,
आषा. कृ.	९	गु.	आषा. २०	जुला. ४	अश्वि.	मेष	मिथुन	मिथुन	॥ ॥ ॥ । ऽ ॥	दि.ल. ४, ५, ७ (१४/३० तक) (चं.दा.),
श्राव. कृ.	१०	र.	श्राव. २०	अग. ४	रोहि.	वृष	कर्क	कर्क	ऽबु.। ऽरा. ऽचं. । ऽरो. । ऽ ॥	दि.ल. ५ (७/२२ बाद), ६, (चन्द्रमा का पादवेध नहीं है)
श्राव. कृ.	११	चं.	श्राव. २१	अग. ५	मृग.	मिथुन	कर्क	कर्क	॥ ऽश. ऽचं. ऽके. । ऽऽ ॥	दि.ल. ५, ६, ७ (मं.दा.), (चन्द्रमा का पादवेध नहीं है)
श्राव. शु.	१	शु.	श्राव. २५	अग. ९	मघा	सिंह	कर्क	कर्क	॥ ऽबु. । ॥ ॥ ॥	ल. १,
श्राव. शु.	३	र.	श्राव. २७	अग. ११	उ.फा.	सिंह/कन्या	कर्क	कर्क	ऽश.रा. ॥ ॥ ऽचौ. ॥ ॥	दि.ल. ६ (८/५० बाद), ७ (मं.दा.), गोधू.,
श्राव. शु.	४	चं.	श्राव. २८	अग. १२	हस्त	कन्या	कर्क	कर्क	ऽगु. । ऽशु. । ॥ ऽऽ ॥	दि.ल. ७ (१२/१० बाद) (मं.दा.), गोधू.,
श्राव. शु.	५	मं.	श्राव. २९	अग. १३	चित्रा	कन्या/तुला	कर्क	कर्क	। ऽ ॥ । ऽरो. ॥ । ऽ	दि.ल. ५, ७ (मं.दा.), गोधू., १ (चं.दा.),
श्राव. शु.	६	बु.	श्राव. ३०	अग. १४	स्वा.	तुला	कर्क	कर्क	॥ ॥ ॥ ऽऽ ॥	दि.ल. ५, ६, गोधू., १ (चं.दा.),
श्राव. शु.	१५	गु.	भाद्र. ७	अग. २२	धनि.	कुम्भ	सिंह	कर्क	॥ ॥ ॥ ऽऽ ॥	ल.१ (२१/३६ बाद),
भाद्र. कृ.	२	र.	भाद्र. १०	अग. २५	उ.भा.	मीन	सिंह	कर्क	॥ ॥ ऽबु. ऽरो. ॥ ॥	ल. गोधू.,
भाद्र. कृ.	७	शु.	भाद्र. १५	अग. ३०	रोहि.	वृष	सिंह	कर्क	। ऽ ऽरा. ॥ ऽनृ. ॥ ॥	ल. ४ (शु.श.दा.),
भाद्र. कृ.	८	श.	भाद्र. १६	अग. ३१	रोहि.	वृष	सिंह	कर्क	। ऽ ऽरा. ॥ ऽनृ. ॥ ॥	दि.ल. ६, गोधू., १,
भाद्र. कृ.	८	श.	भाद्र. १६	अग. ३१	मृग.	वृष	सिंह	कर्क	॥ ऽश. । ऽके. ॥ ऽ ॥	ल. ४ (२६/४३ बाद) (श.दा.),
भाद्र. कृ.	९	र.	भाद्र. १७	सितं. १	मृग.	वृष/मिथुन	सिंह	कर्क	॥ ऽश. । ऽके. ॥ ऽ ॥	दि.ल. ६, गोधू.,
भाद्र. शु.	२	र.	भाद्र. २४	सितं. ८	उ.फा.	कन्या	सिंह	कर्क	ऽमं.श.रा. ऽ ॥ ॥ ॥ ॥	दि.ल. ७,
भाद्र. शु.	२	र.	भाद्र. २४	सितं. ८	हस्त	कन्या	सिंह	कर्क	ऽगु. । ऽबु. ॥ ऽनृ. ऽ। ॥	ल. ४ (श.दा.),
भाद्र. कृ.	३	चं.	भाद्र. २५	सितं. ९	हस्त	कन्या	सिंह	कर्क	ऽगु. । ऽबु. ॥ ऽनृ. ऽ। ॥	दि.ल. ७,
भाद्र. शु.	३	चं.	भाद्र. २५	सितं. ९	चित्रा	तुला	सिंह	कर्क	॥ ॥ ॥ ॥ ॥	ल. ४ (श.दा.), (१९/२८ से २३/१८ तक क्रान्तिसाम्य),
भाद्र. शु.	४	मं.	भाद्र. २६	सितं. १०	चित्रा	तुला	सिंह	कर्क	॥ ॥ ॥ ॥ ॥	दि.ल. ६ (८/०३ तक),
भाद्र. शु.	४	मं.	भाद्र. २६	सितं. १०	स्वा.	तुला	सिंह	कर्क	॥ ऽशु. ॥ ऽचौ. ऽऽ ॥	ल. गोधू., ४ (श.दा.),
भाद्र. शु.	५	बु.	भाद्र. २७	सितं. ११	स्वा.	तुला	सिंह	कर्क	॥ ऽशु. ॥ ऽचौ. ऽऽ ॥	दि.ल. ६ (६/५३ तक),
भाद्र. शु.	६	गु.	भाद्र. २८	सितं. १२	अनु.	वृश्चिक	सिंह	कर्क	। ऽ ॥ । ऽरो. ऽऽ ॥	दि.ल. ७ (१०/० बाद), गोधू., ४ (श.दा.),
भाद्र. शु.	८	श.	भाद्र. ३०	सितं. १४	मूल	धनु	सिंह	कर्क	॥ ॥ ऽश. ॥ ऽ ॥	दि.ल. ६, ७, गोधू., (२७/०० बाद मृत्युबाण),
भाद्र. शु.	११	मं.	आश्वि. २	सितं. १७	श्रव.	मकर	कन्या	कर्क	॥ ॥ ऽगु. । ॥ ॥	ल. गोधू., ४ (चं.श.दा.), (२८/५२ बाद मृत्युबाण),

शुद्ध विवाह मुहूर्त (सं. २०५९ वि.)

मास-तिथि-वार			प्रविष्टा	तारीख २००२-०३ ई.	विवाह नक्षत्र	विवाह लग्न के समय			लत्ता आदि दस दोष-रेखाएं	शुद्धलग्न,ग्रह-दान-पूजा आदि विवरण (सर्वत्र भा.स्टै.टा. दिया गया है)
						चन्द्रराशि	सूर्यराशि	गुरुराशि		
भाद्र. शु.	१३	गु.	आश्वि. ४	सितं. १९	धनि.	कुम्भ	कन्या	कर्क	ऽसू. ।। ।। ऽअ. ऽ ।। ।	दि.ल. ७ (१०/४२ तक),
आश्वि. शु.	१	चं.	आश्वि. २२	अक्तू. ७	स्वा.	तुला	कन्या	कर्क	। ऽ ।। । ऽअ. ऽ । ।।	ल. ४ (२६/०५ बाद) (श.दा.), (सिंह लग्न निर्बल है),
आश्वि. शु.	२	मं.	आश्वि. २३	अक्तू. ८	स्वा.	तुला	कन्या	कर्क	। ऽ ।। ।। ऽ ।। ।	दि.ल. ११ (१६/२३ तक) (रा.दा.),
आश्वि. शु.	४	बु.	आश्वि. २४	अक्तू. ९	अनु.	वृश्चिक	कन्या	कर्क	।। ।। । ऽनृ. ऽऽ ।।	दि.ल. ११ (१६/३१ तक) (रा.दा.), (सिंह लग्न निर्बल है),
आश्वि. शु.	५	गु.	आश्वि. २५	अक्तू. १०	अनु.	वृश्चिक	कन्या	कर्क	।। ।। । ऽनृ. ऽऽ ।।	दि.ल. ७,
आश्वि. शु.	६	शु.	आश्वि. २६	अक्तू. ११	मूल	धनु	कन्या	कर्क	।। ।। ऽश. ऽचौ. ।। ।।	दि.ल. ११ (रा.दा.), गोधू., (सिंह लग्न निर्बल है),
आश्वि. शु.	७	श.	आश्वि. २७	अक्तू. १२	मूल	धनु	कन्या	कर्क	।। ।। ऽश. ऽचौ. ।। ।।	दि.ल. ७,
आश्वि. शु.	९	चं.	आश्वि. २९	अक्तू. १४	श्रव.	मकर	कन्या	कर्क	।। ।। ।। ।। ।।	ल. गोधू., ४ (चं.श.दा.),
आश्वि. शु.	१०	मं.	आश्वि. ३०	अक्तू. १५	श्रव.	मकर	कन्या	कर्क	।। ।। ।। ।। ।।	दि.ल. ७ (७/०७ तक),
कार्ति. शु.	४	शु.	कार्ति. २३	नवं. ८	मूल	धनु	तुला	कर्क	।। ।। ऽश. ऽनृ. ।। ।।	ल. गोधू.,
कार्ति. शु.	६	र.	कार्ति. २५	नवं. १०	श्रव.	मकर	तुला	कर्क	। ऽ । ।। ऽचौ. । ऽ ।।	ल. ४ (चं.श.दा.),
कार्ति. शु.	७	चं.	कार्ति. २६	नवं. ११	श्रव.	मकर	तुला	कर्क	। ऽ । ।। ऽचौ. । ऽ ।।	दि.ल. ११ (१३/५३ तक) (रा.दा.),
कार्ति. शु.	१३	र.	मार्ग. २	नवं. १७	अश्वि.	मेष	वृश्चिक	कर्क	।। ।। ऽमं. । ।। ।।	दि.ल.११ (रा.दा.),
कार्ति. शु.	१५	बु.	मार्ग. ५	नवं. २०	रोहि.	वृष	वृश्चिक	कर्क	।। ऽरा. । ऽसू.बु. ऽनृ. । ऽ ।।	ल. ४ (श.दा.), (सिंह लग्न निर्बल है),
मार्ग. कृ.	१	गु.	मार्ग. ६	नवं. २१	रोहि.	वृष	वृश्चिक	कर्क	।। ऽरा. । ऽसू.बु. ।। ऽ ।।	दि.ल. ११ (रा.दा.),
मार्ग. कृ.	१	गु.	मार्ग. ६	नवं. २१	मृग.	वृष	वृश्चिक	कर्क	।। ऽश. । ।। ।। ।।	ल. ४ (२१/४१ बाद) (श.दा.), (सिंह लग्न निर्बल है),
मार्ग. कृ.	२	शु.	मार्ग. ७	नवं. २२	मृग.	मिथुन	वृश्चिक	कर्क	।। ऽश. ।। ऽचौ. ।। ।।	दि.ल. ११ (रा.दा.), ४ (२२/१० तक) (श.दा.),
मार्ग. कृ.	८	गु.	मार्ग. १३	नवं. २८	उ.फा.	सिंह	वृश्चिक	कर्क	ऽबु.श.रा. ।। ।। ।। ऽ।।	ल. ६ (अत्यावश्यकता में),
मार्ग. कृ.	११	श.	मार्ग. १५	नवं. ३०	हस्त	कन्या	वृश्चिक	कर्क	।। ।। ।। ऽऽ ।।	ल. गोधू.,
मार्ग. कृ.	११	श.	मार्ग. १५	नवं. ३०	चित्रा	कन्या	वृश्चिक	कर्क	ऽगु. । ऽमं. ।। ।। ऽ ।।	ल. ४ (श.दा), ५ (शु.दा.),
मार्ग. कृ.	१२	र.	मार्ग. १६	दिसं. १	स्वा.	तुला	वृश्चिक	कर्क	।। ऽशु. ।। ऽचौ. ऽ । ।।	ल. ४ (२२/०८ तक) (श.दा.),
मार्ग. शु.	५	र.	मार्ग. २३	दिसं. ८	श्रव.	मकर	वृश्चिक	कर्क	।। ।। । ऽनृ. । ऽ ।।	ल. ४ (२०/१७ तक) (चं.श.दा.), ६, (८/५७ से १७/३८ तक क्रान्तिसाम्य),
मार्ग. शु.	६	चं.	मार्ग. २४	दिसं. ९	धनि.	मकर/कुम्भ	वृश्चिक	कर्क	।। । ऽगु. ऽगु. । ऽ । ।।	दि.ल. ११ (रा.दा.), ५ (चं.शु.दा.), (१३/१७ से १९/३५ तक गुरुपाद वेध),
मार्ग. शु.	८	गु.	मार्ग. २७	दिसं. १२	उ.भा.	मीन	वृश्चिक	कर्क	।। ।। । ऽरो. ।। ।।	ल. गोधू., ४ (१९/५७ तक), (श.दा.),
मार्ग. शु.	९	शु.	मार्ग. २८	दिसं. १३	रेव.	मीन	वृश्चिक	कर्क	। ऽ ।। ।। ऽऽ । ऽ	ल.४ (२०/४७ बाद) (श.दा.), ६ (चं.दा.),
पौष. शु.	१२	बु.	माघ २	जन. १५	रोहि.	वृष	मकर	कर्क	।। ऽरा. । ऽमं.शु.के. ।। ।। ऽ	दि.ल. ११, १२,
माघ कृ.	२	चं.	माघ ७	जन. २०	मघा	सिंह	मकर	कर्क	। ।। ।। ऽचौ. ।। ।।	ल. गोधू., ६ (शु.दा.), ७ (२४/३३ तक),
माघ कृ.	४	बु.	माघ ९	जन. २२	उ.फा.	कन्या	मकर	कर्क	ऽश.रा. ।। ।। ऽरो. । ऽ ।।	ल. गोधू., ७,
माघ कृ.	६	गु.	माघ १०	जन. २३	हस्त	कन्या	मकर	कर्क	।। ।। ।। ऽ । ।।	दि.ल. १२ (चं.दा.), गोधू., ७,
माघ कृ.	१२	बु.	माघ १६	जन. २९	मूल	धनु	मकर	कर्क	ऽमं. । ।। ऽश. । ऽऽ । ऽ	दि.ल. ११, १२,
माघ शु.	४	बु.	माघ २३	फर. ५	उ.भा.	मीन	मकर	कर्क	।। ।। ।ऽनृ. ऽऽ ।।	ल. ६ (चं.दा.),

शुद्ध विवाह मुहूर्त्त (सं. २०५९ वि.)

मास-तिथि-वार			प्रविष्टा	तारीख सन् २००३ ई.	विवाह नक्षत्र	विवाह लग्न के समय			लत्ता आदि दस दोष-रेखाएं	शुद्धलग्न, ग्रह-दान-पूजा आदि विवरण (सर्वत्र भा.स्टै.टा. दिया गया है)
						चन्द्रराशि	सूर्यराशि	गुरुराशि		
माघ शु.	५	गु.	माघ २४	फर. ६	रेव.	मीन	मकर	कर्क	। ऽ ।। ।। ऽऽ ।।	ल. गोधू., ६ (चं.दा.), (कुम्भ लग्न निर्बल है),
माघ शु.	६	शु.	माघ २५	फर. ७	रेव.	मीन	मकर	कर्क	। ऽ ।। । ऽचौ. ऽऽ ।।	ल. ११ (अत्यावश्यकता में),
माघ शु.	६	शु.	माघ २५	फर. ७	अश्वि.	मेष	मकर	कर्क	।। ।। । ऽ चौ. ।। ।।	ल. गोधू., ७ (चं.शु.दा.),
माघ शु.	७	श.	माघ २६	फर. ८	अश्वि.	मेष	मकर	कर्क	।। ।। ।। ।। ।।	दि.ल. १२,
माघ शु.	९	चं.	माघ २८	फर. १०	रोहि.	वृष	मकर	कर्क	।। ।। ऽके. । ऽ ।। ।	ल. ६,
माघ शु.	१४	र.	फाल्गु. ५	फर. १६	मघा	सिंह	कुम्भ	कर्क	।। । ऽबु. ऽसू. । ऽऽ ।।	ल. ७ (२३/२७ बाद) (शु.दा.),
फाल्गु. कृ.	२	मं.	फाल्गु. ७	फर. १८	उ.फा.	सिंह/कन्या	कुम्भ	कर्क	ऽश.रा.।। ।। । ऽ ।। ।	ल. ६, ७ (शु.दा.), १० (गु.दा.),
फाल्गु. कृ.	३	बु.	फाल्गु. ८	फर. १९	उ.फा.	कन्या	कुम्भ	कर्क	ऽश.रा. ।। ।। ऽचौ. ऽ ।। ।	दि.ल. १२ (चं.दा.),
फाल्गु. कृ.	४	गु.	फाल्गु. ९	फर. २०	चित्रा	कन्या/तुला	कुम्भ	कर्क	ऽगु. ऽ ।। ।। । ऽ ।।	ल. गोधू., ७ (शु.दा.), १० (गु.दा.),
फाल्गु. शु.	१	मं.	फाल्गु. २१	मार्च ४	उ.भा.	मीन	कुम्भ	कर्क	। ऽ ।। । ऽअ. ऽ ।। ।	ल. १० (गु.दा.), (२७/१० तक मृत्युबाण),
फाल्गु. शु.	२	बु.	फाल्गु. २२	मार्च ५	उ.भा.	मीन	कुम्भ	कर्क	।। ।। । ऽअ. ।। ।।	दि.ल. १,
फाल्गु. शु.	२	बु.	फाल्गु. २२	मार्च ५	रेव.	मीन	कुम्भ	कर्क	।। ।। ।। ऽ ।। ।	ल. १० (गु.दा.),
फाल्गु. शु.	३	गु.	फाल्गु. २३	मार्च ६	रेव.	मीन	कुम्भ	कर्क	।। ।। ।। ऽ ।। ।	दि.ल. १ (१३/३३ बाद क्रान्तिसाम्य),
फाल्गु. शु.	३	गु.	फाल्गु. २३	मार्च ६	अश्वि.	मेष	कुम्भ	कर्क	।। ।। ।। ।। । ऽ	ल. ७ (चं.दा.),
फाल्गु. शु.	४	शु.	फाल्गु. २४	मार्च ७	अश्वि.	मेष	कुम्भ	कर्क	।। ।। । ऽनृ. ।। ।।	ल. गोधू.,
फाल्गु. शु	६	र.	फाल्गु. २६	मार्च ९	रोहि.	वृष	कुम्भ	कर्क	।। ।। ऽके. ।। ऽ ।।	ल. १० (२८/० बाद) (गु.दा.),
फाल्गु. शु.	७	चं.	फाल्गु. २७	मार्च १०	रोहि.	वृष	कुम्भ	कर्क	।। ।। ऽके. ।। ऽ ।।	दि.ल. १२, १, गोधू.,

सं. २०६० वि. में गुरु-शुक्र अस्तः-आगामी वर्ष (सं. २०६० वि.) में लगभग श्रावण कृ. १२ (**२६ जुला. '०३ ई.**) से आश्वि. शु. १० (**५ अक्टू. '०३ ई.**) तक **शुक्र** और लगभग श्रावण शु. १५(**१२ अग. '०३ ई.**) से भाद्र. शु. ८ (**४ सितं. '०३ ई.**) तक **गुरु अस्त** रहेगा। इस वर्ष अधिकमास नहीं होगा।

लत्ता आदि दस दोष-रेखाएं

शुद्धविवाहलग्न बतलाने वाले ऊपर दिए गए कोष्ठक में "लत्ता आदि दस दोष रेखाएं" शीर्षक वाला एक स्तम्भ दिया रहता है। इसमें जो दस रेखाएं दी जाती हैं, उनका स्पष्टीकरण पाठकों के लिए नीचे दिया जा रहा है -

शुद्ध विवाहकाल (लग्न) जानने के लिए तिथि, नक्षत्र, योग, भद्रा, गुरु-शुक्रास्त, संक्रांति, अधिकमास आदि के विचार के अलावा (१) लत्ता, (२) पात, (३) युति, (४) वेध, (५) यामित्र, (६) बाण, (७) एकार्गल, (८) उपग्रह, (९) क्रान्तिसाम्य, (१०) दग्धातिथि- इन दस दोषों का विचार भी सूर्य आदि ग्रहों के नक्षत्रादि के आधार पर किया जाता है। ये दस रेखाएँ क्रमशः दस दोषों के भाव (अस्तित्व) एवं अभाव को विवाहलग्न के समय दर्शाती हैं। पहली रेखा लत्तादोष का, दूसरी पात का, तीसरी युति का, इसी प्रकार शेष चौथी आदि रेखाएं भी यथाक्रम वेध आदि दोषों का विवाहलग्न के समय भाव या अभाव बतलाती हैं। सीधी (।) रेखा दोष का अभाव और टेढ़ी (ऽ) रेखा दोष का अस्तित्व प्रकट करती है। **जैसे** - इस वर्ष (सं. २०५९ वि. में) कार्ति. शु. १३ र. को अश्विनी वाले शुद्ध विवाहमुहूर्त्त में (पृष्ठ 260 पर) "लत्ता आदि दसदोष रेखाएं" इस प्रकार हैं- ।। ।। ऽमं.। ।। ।।, इसका अभिप्राय है कि इस विवाहमुहूर्त्त (लग्न) में लत्ता आदि दस दोषों में पांचवें (यामित्र) दोष को छोड़ कर शेष कोई दोष नहीं है, और यहां यामित्र दोष मंगल द्वारा उत्पन्न है, **ध्यान रहे** - इन दस दोषों में पात, युति, वेध, बाण, क्रांतिसाम्य, और दग्धातिथि दोषों को अपेक्षाकृत अधिक अमंगलकारी माना गया है। इनमें से 'भुजंग' नामक पात, मृत्युनामक बाण और क्रांतिसाम्य दोषों का कोई परिहार नहीं है। जबकि क्रूरग्रह की युति, सौम्य ग्रह के वेध एवं दग्धातिथि का परिहार कई ग्रह स्थितियों में हो जाता है। इनका परिहार हो जाने की स्थिति में विवाहमुहूर्त्त ग्राह्य माना जाता है। लेकिन इन परिहृत दोषों कि टेढ़ी रेखाओं को सीधी रेखाओं में बदलने की परम्परा नहीं हैं। अर्थात् दोष का परिहार हो जाने पर भी उस दोष की रेखा टेढ़ी ही रखी जाती है।

सं. २०५६ वि. में भिन्न-भिन्न राशि वाले वरों और कन्याओं के विवाह-निर्णय के लिए त्रिबल-शुद्धि

(अर्थात् किस राशि वाले वर और कन्या के लिए सं. २०५६ वि. में कुल कितने विवाह मुहूर्त्त किन-किन तारीखों को बनते है?)

लोग अपनी सुविधा के अनुसार किसी खास महीने में या किसी खास तारीख के आस-पास ही विवाह-मुहूर्त (साहा) निकालने के लिए ज्योतिषियों से अनुरोध किया करते हैं। ऐसी स्थिति में ज्योतिषी को विवाह मुहूर्तों में जगह-जगह त्रिबल-शुद्धि जानने का झंझट करना पड़ता है। इस झंझट से ज्योतिषियों को छुटकारा दिलाने के लिए हम यहां नीचे 'त्रिबलशुद्धि कोष्ठक' दे रहे हैं। संवत् २०५६ वि. के शुद्ध विवाह-मुहूर्त्त इस पंचाग में पृ. 257पर दिए गए हैं। किस-किस महीने में किस-किस तारीख वाले विवाहमुहूर्त में, किस-किस राशि वाले लड़के-लड़कियों के विवाह हो सकते है-यह त्रिबलशुद्धि के अनुसार नीचे दिए गए 'त्रिबल-शुद्धि कोष्ठक' में लिख दिया गया है। अमुक राशि वाले लड़के (वर) और अमुक राशि वाली कन्या के लिए इसवर्ष कुल कितने विवाहमुहूर्त किन-किन तारीखों को बनते है- इस कोष्ठक द्वारा साधारण व्यक्ति एक ही नजर में तुरन्त जान सकता है। इस कोष्ठक से यह भी तुरन्त जाना जा सकता है, कि अमुक राशि वाली लड़कियों और लड़कों का विवाह इसवर्ष किन-किन तारीखों को हो सकता है। वर के लिए 'सूर्य की पूजा' और कन्या के लिए 'गुरु की पूजा'वाले दिन भी इस कोष्ठक में दिए गए हैं।

लड़का-लड़की की राशियों वाले कालमों में जो-जो तारीखें समान रूप से मिलती हों, उन तारीखों में उस लड़के-लड़की का विवाह हो सकता है। जैसे- मिथुन राशि वाले लड़के और मेष राशि वाली लड़की का विवाह सं. २०५६ वि. में मई (२००२ ई.) के महीने में किन-किन तारीखों को हो सकता है-यह मालूम करना है। नीचे 'त्रिबल-शुद्धि कोष्ठक' देखें,-लड़के वाले कालम में मिथुन के आगे मई की केवल १, ५, ८, ९ तारीखें हैं, जबकि लड़की वाले कालम में मेष के आगे मई की १, ४, ५, ८, ९, १५, १६, २०, २१, २२, २३, २४, २७, २८, ३०, ३१ तारीखें है। इसलिए यह समझना चाहिए कि मई में मिथुन राशि वाले लड़के और मेष राशि वाली लड़की का विवाह मई की केवल १, ५, ८, ९ तारीखों को ही हो सकता है, क्योंकि मई की केवल यही तारीखें, दोनों (वर-कन्या) की राशियों (मिथुन-मेष) में एक-सी मिलती हैं। इस प्रकार विवाह की तारीखों का निश्चय करके शुद्ध विवाह-मुहूर्तों से उस दिन विवाह के लग्न का निर्णय कर लीजिए। क्योंकि आजकल लड़कियों का विवाह बड़ी अवस्था में होता है, अतः चतुर्थ-अष्टम-द्वादश गुरु को शास्त्र निर्देशानुसार नेष्ट न मानकर पूज्य ही माना गया है।

ध्यान दें-लड़के की राशि से १, २, ५, ७, ९वें स्थित सूर्य एवं कन्या की राशि से १, ३, ४, ६, ८, १०, १२ वें स्थित गुरु यदि स्वराशि, मित्रराशि या स्वोच्चराशि में हो तो उन्हें शास्त्र-निर्देशानुसार यहां पूज्य न मानकर शुभ ही माना गया है।

त्रिबल-शुद्धि कोष्ठक (सं. २०५६ वि.) (१३ अप्रैल सन् २००२ ई. से १ अप्रैल सन् २००३ ई. तक)

(कोष्ठकों में दिया गया काल भा. स्टैं. टा. है)

नाम/जन्म-राशि	लड़का	सौर मास जिनमें लड़के के लिए सूर्य पूज्य है।	लड़की	जिस राशि में स्थित गुरु लड़की के लिए पूज्य है।
मेष	अप्रै. १६,१७,२२,२४,२५,२६,२७,३०, मई १,४,५,८,९,१५,१६,२०,२१,२२,२३,२४,२७,२८,३०,३१, जून १,४,५,६,७,१६,१८,१९,२०,२१,२८,२९, जुला. १,२,३,४, अग. २२,२५,३०,३१, सितं. १,८,९, १०,११,१४,१७,१९, अक्तू. ७,८,११,१२,१४,१५, नवं. ८,१०,११, जन. १५,२०,२२,२३,२९, फर. ५,६, ७,८,१०,१६,१८,१९,२०, मार्च ४,५,६,७,९,१०,	ज्येष्ठ , कार्तिक ,	अप्रै. १६,१७,२२,२४,२५,२६,२७,३०, मई १,४,५,८,९,१५,१६,२०,२१,२२,२३,२४,२७,२८,३०, ३१, जून १, ४, ५,६,७,१६,१८,१९,२०,२१,२८,२९, जुला. १,२,३,४, अग. ४,५,९,११,१२,१३, १४,२२,२५,३०,३१, सितं. १,८,९, १०,११,१४,१७,१९, अक्तू. ७,८,११,१२,१४,१५, नवं. ८, १०,११,१७,२०,२१,२२,२८,३०, दिसं. १,८,९,१२,१३, जन. १५,२०,२२,२३,२९, फर. ५,६,७, ८,१०,१६,१८,१९,२०, मार्च ४,५,६,७,९,१०,	मिथुन
वृष	मई १५,२१(१९/४१ बाद),२२,२३,२४,२६,३०,३१, जून १,४,५,६,७,१८,१९,२०,२१,२२,२३,२८, २९, जुला. १,२,३,४, अग. ४,५,११ (१४/१४ बाद), १२,१३,१४, सितं. १७,१९, अक्तू. ७,८,९,१०, १४,१५, नवं. १०, ११,१७, २०,२१,२२,३०, दिसं. १,८,९,१२,१३, जन. १५,२२,२३, फर. ५,६, ७,८,१०,१८ (२४/१८ बाद), १९,२०, मार्च ४,५,६,७,९,१०,	ज्येष्ठ , आषाढ़ , आश्विन , माघ ,	अप्रै. १६,१७,,२५,२६,२७, मई ४,५,८,९,१५,२१ (१९/४१ बाद), २२,२३,२४,२६,३०,३१, जून १,४,५,६, ७, १८,१९,२०,२१,२२,२३,२८,२९, जुला. १,२,३,४, अग. ४,५,११ (१४/१४ बाद), १२,१३,१४,२२,२५,३०, ३१, सितं. १,८,९,१०,११,१२,१७,१९, अक्तू. ७,८,९,१०,१४,१५, नवं. १०,११,१७,२०,२१,२२,३०, दिसं. १, ८,९,१२,१३, जन. १५,२२,२३, फर. ५,६,७,८,१०,१८ (२४/१८ बाद),१९,२०, मार्च ४,५,६,७,९,१०,	- -
मिथुन	अप्रै. १६,१७,२२,२४,२६,२७,३०, मई १,५,८,९, जून १६,२०,२१,२२,२३,२९, जुला. १,२,३,४, अग. ४,५, ९, ११(१४/१४ तक), १३(१५/१९ बाद), १४,२२,२५,३०,३१; सितं. १,९,१०,११,१२,१४, नवं. ८,१७, २०, २१,२२,२८, दिसं. १,९(१९/३५ बाद),१२,१३, फर. १६,१८ (२४/१८ तक), २० (२५/३३ बाद), मार्च ४, ५,६,७,९,१०,	आषाढ़ , कार्तिक, फाल्गुन ,	अप्रै. १६,१७,२२,२४,२६,२७,३०, मई १,५,८,९,१५,१६,२०,२१ (१९/४१ तक), २४,२६,२७,२८, जून ४,५, ६,७,१६,२०,२१,२२,२३,२९, जूला. १,२,३,४, अग. ४,५,९,११ (१४/१४ तक), १३ (१५/१९ बाद), १४,२२, २५,३०,३१, सितं. १,९,१०,११,१२,१४,१९, अक्तू. ७,८,९,१०,११,१२, नवं. ८,१७,२०,२१,२२,२८, दिसं. १,९ (१९/३५ बाद), १२,१३, जन. १५,२०,२९, फर. ५,६,७,८,१०,१६,१८ (२४/१८ तक), २०(२५/३३ बाद), मार्च ४,५,६,७,९,१०,	मिथुन
कर्क	अप्रै. १६,१७,२२,२४,२५,२६,३०, मई १,४,८,९,१५,१९,२०,२१,२२,२३,२६,२७,२८, ३०,३१, जून १,४, ५,६,७, अग. ४,५,९,११,१२,१३(१५/१९ तक), २५,३०,३१, सितं. १,८,९,१२,१४,१७, अक्तू. ९, १०,११, १२,१४,१५, नवं. १७,२०,२१,२२,२८,३०, दिसं. ८, ९(१९/३५ तक),१२,१३, जन. १५,२०, २२,२३,२९, फर ५,,६,७,८,१०,	माघ	अप्रै. १६,१७,२२,२४,२५,२६,३०, मई १,४,८,९,१५,१९,२०,२१,२२,२३,२६,२७,२८,३०,३१, जून १,४,५,६ ७,१६,१८,१९,२२,२३,२८, जुला. १,२,३,४, अग. ४,५,९,११,१२,१३(१५/१९ तक), २५,३०,३१, सितं. १,८ ९,१२,१४,१७, अक्तू. ९,१०,११,१२,१४,१५, नवं. ८,१०,११,१७,२०,२१,२२,२८,३०, दिसं. ८,९(१९/३५ तक) १२,१३, जन. १५,२०,२२,२३,२९, फर. ५,६,७,८,१०,१६,१८,१९, २०(२५/३३ तक), मार्च ४,५,६,७ ९,१०,	मिथुन

त्रिबल-शुद्धि कोष्ठक (सं. २०५९ वि.) (१३ अप्रैल सन् २००२ ई. से १ अप्रैल सन् २००३ ई. तक)
(कोष्ठकों में दिया गया काल भा. स्टैं. टा. है)

नाम/जन्म-राशि	लड़का	सौर मास जिनमें लड़के के लिए सूर्य पूज्य है।	लड़की	जिस राशि में स्थित गुरु लड़की के लिए पूज्य है।
सिंह	अप्रै. १६,१७,२२,२४,२५,२६,२७,३०, मई १,४,५,१५,१६,२०,२१,२२,२३,२४,२७,२८,३०,३१, जून १,६,७,१६,१८,१९,२०,२१,२८,२९, जुला. ४ अग. २२,३०,३१ सितं. १,८,९,१०,११,१४,१७,१९, अक्तू. ७,८,११,१२,१४,१५, नवं. ८,१०,११, जन. १५,२०,२२,२३,२९, फर. ७,८,१०,१६,१८,१९,२०, मार्च ६,७,९,१०,	आश्विन फाल्गुन	अप्रै. १६,१७,२२,२४,२५,२६,२७,३०, मई १,४,५,१५,१६,२०,२१,२२,२३,२४,२७,२८,३०,३१, जून १,६,७,१६,१८,१९,२०,२१,२८,२९, जुला. ४, अग. ४,५,९,११,१२,१३,१४,२२,३०,३१, सितं. १,८,९,१०,११,१४,१७,१९, अक्तू. ७,८,११,१२,१४,१५, नवं. ८,१०,११,१७,२०,२१,२२,२८,३०, दिसं. १,८,९, जन. १५,२०,२२, २३,२९, फर. ७,८,१०,१६,१८, १९,२०, मार्च ६,७,९,१०	- -
कन्या	मई १५,१९,२०,२१,२२,२३,२४,२६,३०,३१, जून १,४,५,६,१६,१८,१९,२०,२१,२२,२३,२८,२९, अग. ४,५,९, ११,१२,१३,१४, सितं. १७,१९, अक्तू. ७,८,९,१०,१४,१५, नवं. १०,११,१७,२०,२१,२२,२८,३०, दिसं. १,८,९, १२,१३, जन. १५,२०,२२,२३, फर. ५,६,७,१०,१६,१८,१९,२०, मार्च ४,५,६,८,१०,	ज्येष्ठ, आश्विन कार्त्तिक, माघ	अप्रै. १६,१७,२२,२४,२५,२६,२७, मई ४,५,८,९,१५,१९,२०,२१,२२,२३,२४,२६,३०,३१, जून १,४,५,६,१६,१८,१९, २०,२१,२२,२३,२८,२९, अग. १,२,३,४,५,९,११,१२,१३,१४,२२,२५,३०,३१ सितं. १,८,९,१०,११, १२,१७,१९, अक्तू. ७,८,९,१०,१४,१५, नवं. १०,११,१७,२०,२१,२२,२८,३०, दिसं. १,८,९,१२,१३ जन. १५,२०,२२,२३, फर. ५, ६,७,१०,१६,१८,१९,२०, मार्च ४,५,६,९,१०,	मिथुन
तुला	अप्रै. १७(२४/०५ बाद), २२,२४,२५,२६,२७,३०, मई. १,५,८,९, जून १६,१८,१९,२०,२१,२२,२३,२९, जुला. १,२,३,४, अग. ५,९,११,१२,१३,१४,२२,२५, सितं. १(१५/२१ बाद),८,९,१०,११,१२,१४, नवं. ८,१७, २२,२८,३०, दिसं. १,९(१९/३५ बाद),१२,१३, फर. १६,१८,१९,२०, मार्च ४,५,६,७,	आषाढ़, कार्त्तिक, फाल्गुन	अप्रै. १७ (२४/०५ बाद),२२,२४,२५,२६,२७,३०, मई १,५,८,९,१५,१९,२०,२१,२२,२३,२४,२६,२७,२८, जून ४, ५,६,७,१६,१८,१९,२०,२१,२२,२३,२९, जुला. १,२,३,४, अग. ५,९,११,१२,१३,१४,२२,२५, सितं. १ (१५/२१ बाद), ८,९,१०,११,१२,१४,१९, अक्तू. ७,८,९,१०,११,१२, नवं. ८,१७,२२,२८,३०, दिसं. १,९ (१९/३५ बाद),१२,१३, जन. २०, २२,२३,२९, फर. ५,६,७,८,१६,१८,१९,२०, मार्च ४,५,६,७	- -
वृश्चिक	अप्रै. १६,१७(२४/०५ तक),२२,२४,२५,२६,२७,३०, मई १,४,८,९,१९,२०,२१,२२,२३,२४,२६,२७,२८, ३०,३१; जून १,४,५,६,७, अग. ४,९,११,१२,१३,१४,२५,३०,३१, सितं. १(१५/२१ तक),८,९,१०,११, १२,१४,१७, अक्तू. ७,८, ९,१०,११,१२,१४,१५, नवं. १७,२०,२१,२८,३०, दिसं. १,८,९(१९/३५ तक), १२,१३, जन. १५,२०,२२,२३,२९, फर. ५,६,७,८,१०,	ज्येष्ठ	अप्रै. १६,१७ (२४/०५ तक),२२,२४,२५,२६,२७,३०, मई १,४,८,९,१९,२०,२१,२२,२३,२४,२६,२७,२८,३०,३१, जून १,४,५,६,७,१६,१८,१९,२०,२१,२२,२३,२८, जुला. १,२,३,४, अग. ४,९,११,१२,१३,१४,२५,३०,३१, सितं. १(१५/२१ तक),८,९,१०,११,१२,१४,१७, अक्तू. ७,८,९,१०,११,१२,१४,१५. नवं. ८,१०,११,१७,२०,२१,२८,३०, दिसं. १,८,९(१९/३५ तक),१२,१३, जन. १५,२०,२२,२३,२९, फर. ५,६,७,८,१०,१६,१८,१९,२०, मार्च ४,५,६,७,९,१०,	मिथुन
धनु	अप्रै. १६,१७,२२,२४,२५,२६,२७,३०, मई १,४,५,१५,१९,२०,२१,२२,२३,२४,२६,२७,२८,३०,३१, जून १,६, ७,१६,१८,१९,२०,२१,२२,२३,२८,२९, जुला. ४, अग. २२,३०,३१, सितं. १,८,९,१०,११,१२,१४,१७,१९, अक्तू. ७,८,९,१०,११,१२,१४,१५, नवं. ८,१०,११, जन. १५,२०,२२,२३,२९, फर. ७,८,१०, १६,१८,१९,२०, मार्च ६,७, ९,१०,	आषाढ़, माघ	अप्रै. १६,१७,२२,२४,२५,२६,२७,३०, मई १,४,५,१५,१९,२०,२१,२२,२३,२४,२६,२७,२८,३०,३१, जून १,६,७,१६, १८,१९,२०,२१,२२,२३,२८,२९, जुला. ४, अग. ४,५,९,११,१२,१३,१४,२२,३०,३१, सितं. १,८,९,१०,११,१२,१४, १७,१९, अक्तू. ७,८,९,१०,११,१२,१४,१५, नवं. ८,१०,११,१७,२०,२१,२२,२८,३०, दिसं. १,८,९, जन. १५,२०,२२, २३,२९, फर. ७,८,१०,१६,१८,१९,२०, मार्च ६,७,९,१०,	- -
मकर	मई १५,२१(१९/४१ बाद),२२,२३,२४,२६,२७,२८,३०,३१, जून १,४,५,६,१८,१९,२०,२१,२२,२३,२८,२९ जुला. १,२,३, अग. ४,५,११(१४/१४ बाद),१२,१३,१४, सितं. १७,१९, अक्तू. ७,८,९,१०,११,१२,१४,१५, नवं.८, १०,११,२०,२१,२२,३०, दिसं. १,८,९,१२,१३, जन. १५,२२,२३,२९, फर. ५,६,७,१०,१८(२४/१८बाद),१९,२० मार्च ४,५,६,९,१०,	ज्येष्ठ, आश्विन माघ, फाल्गुन	अप्रै. १६,१७,२५,२६,२७,३०, मई १,४,५,८,९,१५,२१(१९/४१ बाद),२२,२३,२४,२६,२७,२८,३०,३१, जून १,४,५,६, १८,१९,२०,२१,२२,२३,२८,२९, जुला. १,२,३, अग. ४,५,११(१४/१४ बाद), १२,१३,१४,२२,२५,३०, ३१, सितं. १, ८,९,१०,११,१२,१४,१७,१९, अक्तू. ७,८,९,१०,११,१२,१४,१५, नवं. ८,१०,११,२०,२१,२२,३०, दिसं. १,८,९,१२,१३, जन. १५,२२,२३,२९, फर. ५,६,७,१०,१८(२४/१८ बाद),१९,२०, मार्च ४,५,६,९,१०,	- -
कुम्भ	अप्रै. १७(२४/०५ बाद),२२,२४,२६,२७,३०, मई १,४,५,८,९, जून १६,२०,२१,२२,२३,२८,२९, जुला. १,२,३, ४, अग. ५,९,११(१४/१४ तक),१३(१५/१९ बाद),१४,२२,२५, सितं. १(१५/२१ बाद),९,१०,११,१२,१४, नवं.८, १०, ११,१७,२२,२८, दिसं. १,८,९,१२,१३, फर. १६,१८(२४/१८ तक),२०(२५/३३ बाद), मार्च ४,५,६,७,	आषाढ़, कार्त्तिक, फाल्गुन	अप्रै.१७ (२४/०५ बाद),२२,२४,२६,२७,३०, मई १,४,५,८,९,१५,१९,२०,२१ (१९/४१ तक),२४,२६,२७,२८,३०,३१, जून १, ४,५,६,७,१६,२०,२१,२२,२३,२८,२९, जुला. १,२,३,४, अग. ५,९,११ (१४/१४ तक),१३ (१५/१९ बाद),१४, २२,२५, सितं. १(१५/२१ बाद),९,१०,११,१२,१४,१७,१९, अक्तू. ७,८,९,१०,११,१२, १४,१५, नवं. ८,१०,११,१७, २२,२८, दिसं. १,८,९, १२,१३, जन. २०,२९, फर. ५,६,७,८,१६,१८(२४/१८ तक),२०,(२५/३३ बाद), मार्च ४,५,६,७.	- -
मीन	अप्रै. १६,१७(२४/०५ तक),२२,२४,२५,२६,३०, मई १,४,५,८,९,१९,२०,२१,२२,२३,२६,२७,२८,३०,३१, जून १,४,५,६,७, अग. ४,९,११,१२,१३(१५/१९ तक),२२,२५,३०,३१, सितं. १(१५/२१ तक),८, ९,१२, १४,१७,१९, अक्तू. ९,१०,११,१२,१४,१५, नवं. १७,२०,२१,२८,३०, दिसं. ८,९,१२,१३, जन. १५,२०, २२,२३,२९, फर. ५,६,७,८,१०,	आश्विन	अप्रै. १६,१७, (२४/०५ तक),२२,२४,२५,२६,३०, मई १,४,५,८,९,१९,२०,२१,२२,२३,२६,२७,२८,३०,३१, जून १,४, ५,६,७, १६,१८,१९,२२,२३,२८,२९, जुला. १,२,३,४, अग. ४,९,११,१२,१३ (१५/१९ तक),२२,२५,३०,३१, सितं. १(१५/२१ तक),८, ९,१२,१४.१७,१९, अक्तू. ९,१०,११,१२,१४,१५, नवं. ८,१०,११,१७,२०,२१,२८, ३०, दिसं. ८,९, १२,१३, जन. १५,२०,२२, २३,२९. फर. ५,६,७,८,१०,१६,१८,१९,२० (२५/३३ तक), मार्च ४, ५,६,७,९,१०,	मिथुन

अशुद्ध विवाह मुहूर्त्त (सं. २०५९ वि.)

प्रतिवर्ष हमें ज्योतिषियों एवं अन्य लोगों के ऐसे अनेकों पत्र उपलब्ध होते हैं, जिनमें वे ऐसे अनेक विवाह मुहूर्त्तों के बारे में हमसे स्पष्टीकरण चाहते हैं, जिन्हें हमने अपने पंचांग में तो अशुद्ध विवाह मुहूर्त्तों की कोटि में रखा होता है, लेकिन किसी अन्य पंचांग में उन्हें शुद्ध विवाह मुहूर्त्त मानकर, उनमें विवाहलग्न लगाए होते हैं। इस समस्या को दृष्टि में रखकर अशुद्ध विवाह मुहूर्त्तों का स्पष्टीकरण हम इस स्तम्भ में दिया करते हैं। यह स्तम्भ ज्योतिषियों को शुद्ध और अशुद्ध विवाह मुहूर्त्तसम्बन्धी दुविधा से मुक्त कराने में काफी हद तक समर्थ सिद्ध हुआ है और इससे ज्योतिषी लोग स्वयं यह भलीभांति जान लेते हैं,कि अमुक दिन या अमुक समय में विवाह करना शास्त्रविरुद्ध क्यों है। यहां साथ-साथ उन दोषों का निर्देश भी किया गया है, जिनके कारण विवाह नक्षत्र होते हुए भी, वहां विवाह नहीं किया जा सकता। जहां भद्रा, व्यतीपात, क्रूरग्रहवेध आदि दोषों से रहित होने से विवाहनक्षत्र का काल शुद्ध होने पर भी षष्ठाष्टमस्थ शुक्र, चन्द्र, भौम और लग्नेश आदि के कारण शुद्ध लग्न नहीं बन सका, वहां लग्नाभावदोष लिखा गया है। ध्यान रहे-यहां जिन युति, वेध आदि दोषों का निर्देश किया गया है, वे सभी ऐसे हैं जिनका कोई परिहार नहीं है। नीचे सं. २०५९ वि. के अशुद्ध विवाह मुहूर्त्त दिए जा रहे हैं,- प्रियव्रत शर्मा

तिथि-वार	तारीख २००२ ई.	विवाह नक्षत्र	दोष
चैत्र शु. १ श.	अप्रै. १३	अश्वि.	संक्रान्ति दिन,
चैत्र शु. ५ गु.	अप्रै. १८	मृग.	लग्नाभाव,
चैत्र शु. ११ मं.	अप्रै. २३	मघा	लग्नाभाव,
चैत्र शु. १२ बु.	अप्रै. २४	हस्त	मृत्युबाण,
वैशा. कृ. २ र.	अप्रै. २८	अनु.	सूर्यवेध,
वैशा. कृ. ३ चं.	अप्रै. २९	अनु.	सूर्यवेध,
वैशा. कृ. ६ गु.	मई २	उ.षा.	राहुवेध,
वैशा. कृ. ७ शु.	मई ३	उ.षा.	राहुवेध,
वैशा. कृ. ७ शु.	मई ३	श्रव.	मृत्युबाण,
वैशा. कृ. ८ श.	मई ४	श्रव.	मृत्युबाण,
वैशा. कृ. १० मं.	मई ७	उ.भा.	वैधृति,
वैशा.शु. १ चं.	मई १३	रोहि.	मासान्त,
वैशा.शु. २ मं.	मई १४	रोहि.	संक्रान्ति दिन,
वैशा.शु. २ मं.	मई १४	मृग.	संक्रान्ति दिन,
वैशा.शु. १२ गु.	मई २३	हस्त	लग्नाभाव,
वैशा.शु. १३ शु.	मई २४	चित्रा	व्यतिपात,
वैशा.शु. १४ श.	मई २५	स्वा.	नक्षत्रान्त,
वैशा.शु. १४ श.	मई २५	अनु.	मृत्युबाण,
ज्ये. कृ. ३ बु.	मई २९	उ.षा.	राहुवेध,
ज्ये. कृ. ४ गु.	मई ३०	उ.षा.	राहुवेध,
ज्ये. कृ. ७ र.	जून २	धनि.	नक्षत्रान्त,वैधृति ,
ज्ये. शु. १ मं.	जून ११	मृग.	क्षीणचन्द्र, भुजंगपात,
ज्ये. शु. ५ श.	जून १५	मघा	संक्रान्ति दिन,
ज्ये. शु. ७ चं.	जून १७	उ.फा.	भद्रा,

तिथि-वार	तारीख २००२ ई.	विवाह नक्षत्र	दोष
ज्ये. शु. ८ मं.	जून १८	उ.फा.	व्यतिपात,
ज्ये. शु. १५ चं.	जून २४	मूल	भौमवेध,
आषा. कृ. १ मं.	जून २५	मूल	भौमवेध,
आषा. कृ. २ बु.	जून २६	उ.षा.	शनिवेध,
आषा. कृ. ३ गु.	जून २७	उ.षा.	वैधृति,
आषा. कृ. ३ गु.	जून २७	श्रव.	लग्नाभाव,
आषा. कृ. ८ बु.	जुला. ३	अश्वि.	लग्नाभाव,
आषाढ़ कृ. ९ गु. (४ जुला.'०२) से श्रावण कृ. ९ श. (३ अग.'०२) तक गुरु का वार्द्धक्य, अस्त एवं बाल्यदोष।			
श्राव. कृ. ९ श.	अग. ३	रोहि.	लग्नाभाव,
श्राव. कृ. १० र.	अग. ४	मृग.	चन्द्रपादवेध,लग्नाभाव,
श्राव. शु. २ श.	अग. १०	मघा	परिघार्ध,नक्षत्रान्त,
श्राव. शु. ४ चं.	अग. १२	उ.फा.	भद्रा,नक्षत्रान्त,
श्राव. शु. ४ चं.	अग. १२	चित्रा	लग्नाभाव,
श्राव. शु. ५ मं.	अग. १३	स्वा.	लग्नाभाव,
श्राव. शु. ८ गु.	अग. १५	अनु.	मासान्त,
श्राव. शु. ९ शु.	अग. १६	अनु.	संक्रान्ति दिन,
श्राव. शु. १० श.	अग. १७	मूल	लग्नाभाव,
श्राव. शु. ११ र.	अग. १८	मूल	मृत्युबाण,
श्राव. शु. १२ चं.	अग. १९	उ.षा.	शनिवेध,
श्राव. शु. १३ मं.	अग. २०	उ.षा.	शनिवेध,
श्राव. शु. १३ मं.	अग. २०	श्रव.	भौम, सूर्यवेध,
श्राव. शु. १४ बु.	अग. २१	श्रव.	भौम, सूर्यवेध,
श्राव. शु. १४ बु.	अग. २१	धनि.	भद्रा,

तिथि-वार	तारीख २००२ ई.	विवाह नक्षत्र	दोष
भाद्र. कृ. ३ चं.	अग. २६	उ.भा.	लग्नाभाव,
भाद्र. कृ. ३ चं.	अग. २६	रेव.	भुजंगपात,
भाद्र. कृ. ४ मं.	अग. २७	रेव.	भुजंगपात,
भाद्र. कृ. ४ मं.	अग. २७	अश्वि.	मृत्युबाण,
भाद्र. कृ. ५ बु.	अग. २८	अश्वि.	लग्नाभाव, १५/२१ तक क्रां. सा., मृत्युबाण,
भाद्र शु. ७ शु.	सितं. १३	मूल	मूलाद्यघटीद्वय दोष,
भाद्र शु. १० चं.	सितं. १६	उ.षा.	संक्रान्ति दिन,शनिवेध,
भाद्र शु. ११ मं.	सितं. १७	उ.षा.	भद्रा, शनिवेध,
भाद्र शु. १२ बु.	सितं. १८	श्रव.	मृत्युबाण,
भाद्र शु. १२ बु.	सितं. १८	धनि.	मृत्युबाण,
भाद्र शु. १५ श.	सितं. २१	उ.भा.	प्रोष्ठपदीश्राद्ध,
श्राद्धपक्ष(२२ सितं. से ६ अक्तू. २००२ ई. तक)			
आश्वि. शु. १ चं.	अक्तू. ७	चित्रा	क्षीणचन्द्र,वैधृति,मृत्युबाण,
आश्वि. शु. ८ र.	अक्तू. १३	उ.षा.	शनिवेध,
आश्वि. शु. ९ चं.	अक्तू. १४	उ.षा.	शनिवेध,
आश्वि. शु. १० मं.	अक्तू. १५	धनि.	भुजंगपात,
आश्वि. शु. ११ बु.	अक्तू. १६	धनि.	मासान्त,भुजंगपात,
आश्वि. शु. १३ शु.	अक्तू. १८	उ.भा.	मृत्युबाण,
आश्वि. शु. १३ श.	अक्तू. १९	उ.भा.	मृत्युबाण,
आश्वि. शु. १३ श.(१९ अक्तू.'०२) से कार्तिक शु. ४ शु. (८ नवं. '०२) तक शुक्र का वार्द्धक्य, अस्त एवं बाल्यदोष।			
कार्त्ति. शु. ५ श.	नवं. ९	उ.षा.	शनिवेध, भुजंगपात,
कार्त्ति. शु. ६ र.	नवं. १०	उ.षा.	शनिवेध, भुजंगपात,
कार्त्ति. शु. ७ चं.	नवं. ११	धनि.	लग्नाभाव,

तिथि-वार	तारीख २००२ ई.	विवाह नक्षत्र	दोष
कार्ति. शु. ८ मं.	नवं. १२	धनि.	लग्नाभाव +
कार्ति. शु. १० गु.	नवं. १४	उ.भा.	मृत्युबाण,
कार्ति. शु. ११ शु.	नवं. १५	उ.भा.	मासान्त,भद्रा,
कार्ति. शु. १२ श.	नवं. १६	उ.भा., रेव.	संक्रान्ति दिन,
कार्ति. शु. १३ र.	नवं. १७	रेव.	लग्नाभाव,
कार्ति. शु. १४ चं.	नवं. १८	अश्वि.	व्यतिपात,
मार्ग. कृ. ६ मं.	नवं. २६	मघा	मृत्युबाण,
मार्ग. कृ. ७ बु.	नवं. २७	मघा	मृत्युबाण,
मार्ग. कृ. १० शु.	नवं. २९	उ.फा.	लग्नाभाव,
मार्ग. कृ. १० शु.	नवं. २९	हस्त	लग्नाभाव,
मार्ग. कृ. १२ र.	दिसं. १	चित्रा	भौमयुति (अपरिहार्या),
मार्ग. शु. १ गु.	दिसं. ५	मूल	भुजंगपात,मृत्युबाण,
मार्ग. शु. २ शु.	दिसं. ६	मूल	भुजंगपात,मृत्युबाण,
मार्ग. शु. २ शु.	दिसं. ६	उ.षा.	शनिवेध,
मार्ग. शु. ४ श.	दिसं. ७	उ.षा.	शनिवेध,
मार्ग. शु. ४ श.	दिसं. ७	श्रव.	लग्नाभाव,
मार्ग. शु. ७ मं.	दिसं. १०	धनि.	नक्षत्रान्त,
+ (११/१६ तक गुरुपादवेध, १२/०६ से १८/०८ तक क्रां. सा.),			

तिथि-वार	तारीख २००२-०३ई.	विवाह नक्षत्र	दोष
मार्ग. शु. ९ शु.	दिसं. १३	उ.भा.	व्यतिपात,
मार्ग. शु. १० श.	दिसं. १४	रेव.	मासान्त,मृत्युबाण,
मार्ग. शु. १० श.	दिसं. १४	अश्वि.	मासान्त,
मार्ग. शु. ११ र.	दिसं. १५	अश्वि.	संक्रान्ति दिन,
मार्ग. शुक्ल ११ र. (१५ दिसं.'०२) से पौष शु. ११ मं.(१४ जन.'०३) तक धनुःस्थ रवि			
पौष शु. १२ बु.	जन. १५	मृग.	सूर्यवेध,मृत्युबाण,
पौष शु. १३ गु.	जन. १६	मृग.	सूर्यवेध,मृत्युबाण,
माघ कृ. ३ मं.	जन. २१	मघा	भद्रा,
माघ कृ. ६ गु.	जन. २३	उ.फा.	लग्नाभाव,
माघ कृ. ७ शु.	जन. २४	हस्त	भद्रा,
माघ कृ. ७ शु.	जन. २४	चित्रा	मृत्युबाण,
माघ कृ. ७ शु.	जन. २४	स्वा.	भुजंगपात,
माघ कृ. ८ श.	जन. २५	स्वा.	भुजंगपात,
माघ कृ. ९ र.	जन. २६	अनु.	भौम-केतुयुति (अपरिहार्या),
माघ कृ. १० चं.	जन. २७	अनु.	भौम-केतुयुति (अपरिहार्या),
माघ कृ. ११ मं.	जन. २८	मूल	लग्नाभाव,
माघ शु. १ र.	फर. २	धनि.	मृत्युबाण,
माघ शु. ३ मं.	फर. ४	उ.भा.	लग्नाभाव,

तिथि-वार	तारीख २००३ ई.	विवाह नक्षत्र	दोष
माघ शु. ५ गु.	फर. ६	उ.भा.	नक्षत्रान्त,
माघ शु. ९ मं.	फर. ११	रोहि.	मृत्युबाण,
माघ शु. ९ मं.	फर. ११	मृग.	वैधृति,मासान्त,मृत्युबाण,
माघ शु. १० बु.	फर. १२	मृग.	संक्रान्ति दिन,वैधृति,
फाल्गु. कृ. १ चं.	फर. १७	मघा	लग्नाभाव(१५/२२बाद बुधपादवेध),
फाल्गु. कृ. ३ बु.	फर. १९	हस्त	भुजंगपात,
फाल्गु. कृ. ४ गु.	फर. २०	हस्त	भुजंगपात,
फाल्गु. कृ. ५ शु.	फर. २१	चित्रा	लग्नाभाव,
फाल्गु. कृ. ५ शु.	फर. २१	स्वा.	सूर्यवेध,
फाल्गु. कृ. ६ श.	फर. २२	स्वा.	सूर्यवेध,
फाल्गु. कृ. ७ र.	फर. २३	अनु.	केतुयुति,
फाल्गु. कृ. ८ चं.	फर. २४	अनु.	केतुयुति,
फाल्गु. कृ. ९ मं.	फर. २५	मूल	भौमयुति (अपरिहार्या),
फाल्गु. कृ. १० बु.	फर. २६	मूल	नक्षत्रान्त,भद्रा,
फाल्गु. कृ. १२ गु.	फर. २७	उ.षा.	शनिवेध,
फाल्गुन शुक्ल ८ मं. (११ मार्च '०३) से वर्षान्त तक होलाष्टक एवं मीनस्थ रवि।			

विवाह मुहूर्त्तों के शोधन में वेध-युति आदि दोषों के शास्त्रीय-परिहार

इस पंचांग में दिए जाने वाले विवाह मुहूर्त्तों में जहां वेध, युति, कर्त्तरी, दग्धातिथि, षष्ठाष्टमस्थ-चन्द्र, भौम, शुक्र के दोषों के परिहार मिल जाते हैं, वहां उन मुहूर्त्तों को शुद्ध मान लिया जाता है और वहां विवाह लग्न लगा दिए जाते हैं। इन दोषों के परिहार निम्नांकित स्थितियों में माने गए हैं:-

वेध परिहार- सप्तशलाका एवं पंचशलाका वेध में क्रूरग्रह द्वारा विद्ध नक्षत्र के तो चारों चरण दूषित माने जाते हैं, वेध का वहां परिहार नहीं है। सौम्य ग्रह द्वारा वेध होने पर पादवेध पद्धति से केवल विद्ध चरण को ही दूषित माना जाता है। वहां शेष तीनों चरण वेधदोष से मुक्त रहते हैं। पादवेध पद्धति में वेधक सौम्यग्रह नक्षत्र के पहिले चरण में है तो वह वेध्य नक्षत्र के चौथे चरण को, चतुर्थ चरण में स्थित वेधक सौम्य ग्रह वेध्य-नक्षत्र के पहिले चरण को, द्वितीय चरणस्थ ग्रह वेध्य-नक्षत्र के तृतीय चरण को एवं तृतीय चरणस्थ ग्रह वेध्य नक्षत्र के द्वितीय चरण को विद्ध करता है। *युति दोष का परिहार-* नक्षत्र के साथ सौम्यग्रह की युति का दोष सामान्य माना जाता है, लेकिन क्रूरग्रह की युति बहुत ही अशुभ फलप्रद मानी जाती है। यदि चन्द्रमा अपनी उच्च राशि (वृष) या मित्र राशि (सिंह, मिथुन, कन्या) में हो, तो क्रूरग्रह की युति का दोष भी समाप्त हो जाता है। *कर्त्तरीदोष का परिहार-* मुहूर्त्त के लग्न से सप्तम रहित केन्द्र या त्रिकोण में गुरु, शुक्र या बुध स्थित हो तो कर्त्तरीदोष का परिहार हो जाता है। कर्त्तरी बनाने वाले ग्रह यदि शत्रुराशि या अपनी नीचराशि में हों या दोनों अस्त हों, तो भी कर्त्तरीदोष नहीं रहता, यदि मुहूर्त्त लग्न से द्वितीय भाव में कोई शुभ ग्रह बैठा हो अथवा बारहवें भाव में गुरु बैठा हो तो भी कर्त्तरीदोष निष्प्रभाव हो जाता है और ऐसा कर्त्तरीदोष विवाह मुहूर्त्त को अग्राह्य नहीं बना सकता। चन्द्र कर्त्तरीदोष का परिहार भी चन्द्रमा के स्थान को लग्न समझकर इन्हीं योगों से देखना चाहिए। *दग्धातिथि का परिहार-* मुहूर्त्त के लग्न से सप्तम रहित केन्द्र या त्रिकोण में गुरु, शुक्र या बुध बैठा हो, तो दग्धातिथि का परिहार हो जाता है, इस परिहार की स्थिति में दग्धातिथि में विवाह लग्न शुद्ध माना जाता है। *षष्ठाष्टमस्थ चन्द्र का परिहार-* नीच राशि (वृश्चिक) में चन्द्रमा हो तो वह लग्न से छठे या आठवें भाव में होने पर भी दोषकारक नहीं होता। यदि चन्द्रमा लग्नेश होकर षष्ठाष्टमस्थ हो, तब तो उसका कोई परिहार शास्त्रों में नहीं मिलता। *अष्टमस्थ मंगल का परिहार-* मंगल अस्त (अदृश्य) हो या वह नीचराशि (कर्क) अथवा शत्रु राशि (मिथुन या कन्या) में हो, तो लग्न से अष्टमस्थ होने पर भी दोषकारक नहीं होता। यदि मंगल लग्नेश होकर अष्टम में हो, तो किसी भी स्थिति में उसके दोष का परिहार नहीं माना जाता। *षष्ठाष्टमस्थ शुक्र का परिहार-* शुक्र यदि नीचराशि (कन्या) अथवा शत्रु राशि (कर्क या सिंह) में हो तो वह षष्ठाष्टमस्थ होने पर भी अशुभ फल नहीं करता। यदि शुक्र लग्नेश होकर षष्ठाष्टमस्थ हो, तो उसका भी कोई परिहार नहीं है- मार्त्तण्ड पंचांग में दिए जाने वाले मुहूर्त्तों में उपरोक्त सभी दोषों के परिहारों का प्रयोग किया जाता है।

विवाहादि मुहूर्त्तों की शुद्धि-अशुद्धि के बारे में उत्पन्न शंका के समाधान के लिए मुझे जवाबी पत्र दीजिए- प्रियव्रत शर्मा , ५९/६,(अभिजित्), पंचकूला - १३४१०९

मुण्डनादि मुहूर्त्त (सं. २०५९ वि.) (सर्वत्र भा.स्टैं.टा. दिया गया है)

मुण्डन मुहूर्त्त (२००२-०३ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
चैत्र शु. ४ बु.	वैशा. ५	अप्रै.१७	मृग.	११/२६ बाद,
चैत्र शु. ६ शु.	वैशा. ७	अप्रै.१९	पुन.	१३/०२ बाद,
चैत्र शु. १३ गु.	वैशा. १३	अप्रै.२५	हस्त	१५/२८ तक,
वैशा. कृ १० चं.	वैशा. २४	मई ६	शत.	१६/५५ तक,
वैशा. कृ १२ गु.	वैशा. २७	मई ९	रेव.	१०/५५ बाद,
वैशा. कृ १३ शु.	वैशा. २८	मई १०	रेव.	८/४१ तक,
वैशा. कृ १३ शु.	वैशा. २८	मई १०	अश्वि.	९/५३ से १३/०२ तक,
वैशा. शु. ३ बु.	ज्ये. २	मई १५	मृग.	१६/५३ तक,
वैशा. शु. ५ शु.	ज्ये. ४	मई १७	पुन.	८/३६ तक, ११/०० से १६/५७ तक,
वैशा. शु. १० बु.	ज्ये. ९	मई २२	हस्त	१२/१४ से १७/४५ तक,
वैशा. शु. १३ शु.	ज्ये. ११	मई २४	स्वा.	९/४६ बाद,
ज्ये. कृ. ५ शु.	ज्ये. १८	मई ३१	श्रव.	८/०५ तक,
ज्ये. कृ. ११ गु.	ज्ये. २४	जून ६	रेव.	१६/१४ तक,
ज्ये. शु. ३ गु.	ज्ये. ३१	जून १३	पुन.	
ज्ये. शु. १० गु.	आषा. ६	जून २०	चित्रा	७/१४ से १३/५६ तक,
माघ शु. २ चं.	माघ २१	फर. ३	शत.	८/४९ तक,
माघ शु. ५ गु.	माघ २४	फर. ६	रेव.	८/१४ बाद,
माघ शु. १२ गु.	फाल्गु.३	फर. १४	पुन.	१०/०४ बाद,
फाल्गु. कृ.५ शु.	फाल्गु.१०	फर. २१	चित्रा	११/२३ तक,
फाल्गु. शु. २ बु.	फाल्गु.२२	मार्च ५	रेव.	१५/५७ बाद,
फाल्गु. शु. ३ गु.	फाल्गु.२३	मार्च ६	रेव.	१३/३३ तक,
फाल्गु. शु. ४ शु.	फाल्गु.२४	मार्च ७	अश्वि.	१६/०८ बाद

मुण्डन में विशेष- किसी देवस्थल तीर्थ पर बिना मुहूर्त के भी मुण्डन करवाना शुभ माना गया है। नवरात्रों के दिनों में भी शक्तिपीठों, (देवी-मन्दिरों) के समीप मुण्डन करवाने की पंजाब, हि.प्र. आदि प्रदेशों में पुरानी परम्परा है।

उपनयन मुहूर्त्त (सन् २००२ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
चैत्र शु. ४ बु.	वैशा. ५	अप्रै.१७	रोहि.	७/०२ से १०/१७ तक,

उपनयन मुहूर्त्त (सन् २००२-०३ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
चैत्र शु. ४ बु.	वैशा. ५	अप्रै.१७	मृग.	११/२६ बाद,
चैत्र शु. ५ गु.	वैशा. ६	अप्रै.१८	मृग.	११/२० तक,
चैत्र शु. १२ बु.	वैशा. १२	अप्रै.२४	उ.फा.	६/४१ से १२/०१ तक,
वैशा. कृ. ३ चं.	वैशा. १७	अप्रै.२९	अनु.	
वैशा. शु. ३ बु.	ज्ये. २	मई १५	मृग.	
वैशा. शु. ५ शु.	ज्ये. ४	मई १७	पुन	८/३६ तक, ११/०० बाद,
वैशा. शु. १२गु.	ज्ये. १०	मई २३	ह.	८/५२ तक,
ज्ये. कृ. ५ शु.	ज्ये. १८	मई ३१	श्रव.	८/०५ तक,
ज्ये. शु. ३ गु.	ज्ये. ३१	जून १३	पुन.	
ज्ये. शु. १० गु.	आषा. ६	जून २०	चित्रा	७/१४ बाद,
माघ कृ. ४ बु.	माघ ९	जन.२२	उ.फा.	१०/५६ बाद,
माघ शु. ५ गु.	माघ २४	फर. ६	रेव.	८/१४ बाद,
माघ शु. ६ शु.	माघ २५	फर. ७	रेव.	९/५४ तक,
फाल्गु. कृ. ३बु.	फाल्गु. ८	फर. १९	उ.फा.	१०/३० तक,
फाल्गु. शु. ३ गु.	फाल्गु.२३	मर्च ६	रेव.	

अक्षरारम्भ मुहूर्त्त (२००२ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
चैत्र शु. ६ शु.	वैशा. ७	अप्रै. १९	आर्द्रा	७/३१ तक,
वैशा. कृ. ३ चं.	वैशा. १७	अप्रै. २९	अनु.	१३/३७ तक,
वैशा. कृ. १२ गु	वैशा. २७	मई ९	रेव.	७/१० से १०/५५ तक,
वैशा. शु. ५ शु.	ज्ये. ४	मई १७	पुन.	८/३६ तक,११/०० बाद,
वैशा. शु. १० बु.	ज्ये. ९	मई २२	हस्त	१२/१४ से, १७/४५ तक,
वैशा. शु. १२ गु.	ज्ये. १०	मई २३	हस्त.	८/५८ तक,
ज्ये. कृ. ५ शु.	ज्ये. १८	मई ३१	श्रव.	८/०५ तक,
ज्ये. कृ. ११ गु.	ज्ये. २४	जून ६	रेव.	१६/१४ तक,
ज्ये. कृ. १२ शु.	ज्ये. २५	जून ७	अश्वि.	१८/४१ तक,
ज्ये. शु. २ बु.	ज्ये. ३०	जून १२	आर्द्रा	
ज्ये. शु. ३ गु.	ज्ये. ३१	जून १३	पुन.	
ज्ये. शु. १० गु.	आषा. ६	जून २०	चित्रा	७/१४ से १३/५६ तक,

अक्षरारम्भ मुहूर्त्त (२००३ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
माघ कृ. ६ गु.	माघ १०	जन. २३	हस्त	९/२७ बाद,
माघ शु. ५ गु.	माघ २४	फर. ६	रेव.	८/१४ बाद,
माघ शु. ६ शु.	माघ २५	फर. ७	रेव.	९/५४ तक,
माघ शु. ६ शु.	माघ २५	फर. ७	अश्वि.	११/०६ बाद,
माघ शु. ११ गु.	फाल्गु .२	फर. १३	आर्द्रा	१०/१२ बाद,
माघ शु. १२ शु.	फाल्गु. ३	फर. १४	पुन.	१०/०४ तक,
फाल्गु. कृ.५ शु.	फाल्गु.१०	फर. २१	चित्रा	११/२३ तक,
फाल्गु. शु. २ बु.	फाल्गु.२२	मार्च ५	रेव.	१५/५७ बाद,
फाल्गु. शु. ३ गु.	फाल्गु.२३	मार्च ६	रेव.	१३/३३ तक,

विद्यारम्भ मुहूर्त्त (सन् २००२-०३ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
चैत्र शु. ५ गु.	वैशा. ६	अप्रै. १८	मृग.	११/२० तक,
चैत्र शु. ५ गु.	वैशा. ६	अप्रै. १८	आर्द्रा	१२/३२ बाद,
चैत्र शु. ६ शु.	वैशा. ७	अप्रै. १९	आर्द्रा	७/३१ तक,
चैत्र शु. १३ गु.	वैशा. १३	अप्रै. २५	हस्त.	१५/२८ तक,
वैशा. कृ.६ गु.	वैशा. २०	मई २	पू.षा.	१५/०४ तक,
वैशा. शु. ५ शु.	ज्ये. ४	मई १७	पुन.	८/३६ तक, ११/०० से १७/१४ तक,
वैशा. शु. १२ गु.	ज्ये.१०	मई २३	हस्त	८/५८ तक,
वैशा. शु. १२ गु.	ज्ये.१०	मई २३	चित्रा	१०/१० से १३/१४ तक,
ज्ये. कृ. ५ शु.	ज्ये. १८	मई ३१	श्रव.	८/०५ तक,
ज्ये. कृ. १२ शु.	ज्ये. २५	जून ७	अश्वि.	
ज्ये. शु. ३ गु.	ज्ये. ३१	जून १३	पुन.	
ज्ये. शु. १० गु.	आषा. ६	जून २०	चित्रा	७/१४ से १३/५६ तक,
पौष शु.१३ गु.	माघ ३	जन. १६	मृग.	१३/१७ तक,
माघ कृ. ६ गु.	माघ १०	जन. २३	हस्त	९/२७ बाद,
माघ कृ. १३ गु.	माघ १७	जन. ३०	पूषा.	१४/२४ तक,
माघ शु.. ६ शु.	माघ २५	फर. ७	अश्वि.	११/०६ बाद,

अक्षरारम्भ और विद्यारम्भ के मुहूर्त्तों का प्रयोग बच्चे को वर्णमाला का ज्ञान करवाने के लिए अक्षारम्भ के और संस्कृत,अंग्रेजी, गणित, रसायन आदि विषयों का अध्ययन प्रारम्भ करने के लिए विद्यारम्भ के मुहूर्त्तों का प्रयोग करना चाहिए।

द्विरागमन मुहूर्त्त (सन् २००२-०३ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
चैत्र शु. ४ बु.	वैशा. ५	अप्रै. १७	रोहि.	७/०२ से १०/१७ तक,
चैत्र शु. ४ बु.	वैशा. ५	अप्रै. १७	मृग.	११/२६ बाद,
चैत्र शु. ६ शु.	वैशा. ७	अप्रै. १९	पुन.	१३/०२ बाद,
चैत्र शु. १२ बु.	वैशा. १२	अप्रै. २४	उ.फा.	६/४१ से १२/०१ तक,
				१५/३७ बाद,
चैत्र शु. १३ गु.	वैशा. १३	अप्रै. २५	हस्त	१५/२८ तक,
वैशा. कृ. ३ चं.	वैशा. १७	अप्रै. २९	अनु.	१३/३७ तक,
वैशा. कृ. ५ बु.	वैशा. १९	मई १	मूल	१४/२३ तक,
वैशा. कृ. ७ शु.	वैशा. २१	मई ३	श्रवण	१७/४३ से २४/०१ तक,
वैशा. कृ. १० चं.	वैशा. २४	मई ६	शत.	१६/५५ तक,
वैशा. कृ. ११ बु.	वैशा. २६	मई ८	उ.भा.	११/४५ बाद,
वैशा. कृ. १२ गु.	वैशा. २७	मई ९	रेवती	७/१० बाद,
मार्ग. कृ. ५ चं.	मार्ग. १०	नवं. २५	पुष्य	११/३६ तक,
मार्ग. कृ. १० शु.	मार्ग. १४	नवं. २९	उ.फा.	१७/१२ तक,
मार्ग. कृ.१३ चं.	मार्ग. १७	दिसं. २	स्वा.	१४/०६ तक,
मार्ग. शु. १ गु.	मार्ग. २०	दिसं. ५	मूल.	८/५२ बाद,
माघ शु. १२ शु.	फाल्गु. ३	फर. १४	पुन.	२३/२६ तक,
फाल्गु. कृ. ३ बु.	फाल्गु. ८	फर. १९	उ.फा.	१०/३० तक,
फाल्गु. कृ ५ शु.	फाल्गु. १०	फर. २१	चित्रा	११/२३ तक,
फाल्गु. शु. २ बु.	फाल्गु. २२	मार्च ५	उ.भा.	१४/४५ तक,
फाल्गु. शु. २ बु.	फाल्गु. २२	मार्च ५	रेव.	१५/५७ बाद,
फाल्गु. शु. ३ गु.	फाल्गु. २३	मार्च ६	रेव.	१३/३३ तक,
फाल्गु. शु. ७ चं.	फाल्गु. २७	मार्च १०	रोहि.	२३/४७ तक,

द्विरागमन में विशेष- विवाह के दिन से १६ दिन के भीतर द्विरागमन के उपरोक्त मुहूर्तों के बिना भी द्विरागमन हो सकता है। यदि नव-विवाहित वधू का द्विरागमन दिवाली के दिन प्रदोष के समय दीपकों के प्रकाश में हो, तो अच्छा माना जाता है।

गृहारम्भ मुहूर्त्त (सन् २००२ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
वैशा. कृ. ३ चं.	वैशा. १७	अप्रै. २९	अनु.	१३/३७ तक,
वैशा. शु. १० बु.	ज्ये. ६	मई २२	उ.फा.	११/०२ तक,

गृहारम्भ मुहूर्त्त (सन् २००२-०३ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
वैशा. शु. १० बु.	ज्ये. ६	मई २२	हस्त	१२/१४ से १७/४५ तक,
वैशा. शु. १२ गु.	ज्ये. १०	मई २३	हस्त	८/५८ तक,
वैशा. शु. १३ श.	ज्ये. ११	मई २४	स्वा.	६/४६ बाद,
ज्ये. शु. ९ बु.	आषा. ५	जून १९	चित्रा	१६/४० से २०/४२ तक,
ज्ये. शु. १० गु.	आषा. ६	जून २०	चित्रा	७/१४ से १३/५६ तक,
ज्ये. शु. १० गु.	आषा. ६	जून २०	स्वा.	१५/०८ बाद,
ज्ये. शु. ११ शु.	आषा. ७	जून २१	स्वा.	६/५४ से १२/३० तक,
मार्ग कृ. १ गु.	मार्ग. ६	नवं. २१	रोहि.	
मार्ग कृ. २ शु.	मार्ग. ७	नवं. २२	मृग.	
पौष शु. १२ बु.	माघ २	जन. १५	रोहि.	१२/०१ तक,
पौष शु. १५ श.	माघ ५	जन. १८	पुष्य	१५/०४ बाद,
फाल्गु. कृ. ३ बु.	फाल्गु. ८	फर. १९	उ.फा.	१०/३० तक,
फाल्गु. कृ. ५ शु.	फाल्गु. १०	फर. २१	चित्रा	११/२३ तक,

नूतन-गृह प्रवेश मुहूर्त्त (सन् २००२ -०३ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
वैशा. कृ. ११ बु.	वैशा. २६	मई ८	उ.भा.	११/४५ बाद,
वैशा. कृ. १२ गु.	वैशा. २७	मई ९	रेव.	७/१० बाद,
वैशा. कृ. १३ शु.	वैशा. २८	मई १०	रेव.	८/४१ तक,
वैशा. कृ. १३ शु.	वैशा. २८	मई १०	अश्वि.	९/५३ से १३/०२ तक,
वैशा. शु. १० बु.	ज्ये. ६	मई २२	उ.फा.	११/०२ तक,
वैशा. शु. १२ गु.	ज्ये. १०	मई २३	चित्रा	१०/१० से १३/१४ तक,
वैशा. शु. १३ शु.	ज्ये. ११	मई २४	स्वा.	६/४६ से २२/३० तक,
ज्ये. कृ. १० बु.	ज्ये. २३	जून ५	उ.भा.	१०/१५ तक,
ज्ये कृ. १० बु.	ज्ये. २३	जून ५	रेव.	२३/२४ बाद,
ज्ये कृ. ११ गु.	ज्ये. २४	जून ६	रेव.	१६/१४ तक,
ज्ये शु. ७ चं.	आषा. ३	जून १७	उ.फा.	१९/४५ से २६/३६ तक,
ज्ये. शु. ९ बु.	आषा. ५	जून १९	चित्रा	१६/४० से २०/४२ तक,
ज्ये शु. १० गु.	आषा. ६	जून २०	चित्रा	७/ १४ से १३/५६ तक,
माघ शु. ५ गु.	माघ २४	फर. ६	रेव.	८/१४ से १६/२१ तक,
फाल्गु. शु. ७ चं.	फाल्गु. २७	मार्च १०	रोहि.	२३/४७ तक,

पुरातन गृह प्रवेश मुहूर्त्त (सन २००२-०३ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
वैशा शु. ३ बु.	ज्ये. २	मई १५	मृग.	१६/५३ तक,
श्राव कृ. १ गु.	श्राव. १०	जुला. २५	धनि.	२०/५० बाद,
श्राव कृ. २ शु.	श्राव. ११	जुला. २६	धनि.	२१/२७ तक,
श्राव कृ. २ शु.	श्राव. ११	जुला. २६	शत.	२२/३९ से २८/५९ तक,
श्राव कृ. ५ चं.	श्राव. १४	जुला. २९	उ.भा.	
श्राव कृ. ९ श.	श्राव. १८	अग. २	रोहि.	१६/४७ से १९/०० तक,
श्राव कृ. ११ चं.	श्राव. २१	अग. ५	मृग.	१६/२० तक,
श्राव. शु. ६ बु.	श्राव. ३०	अग. १४	स्वा.	२३/४९ तक,
कार्त्ति. कृ. ४ शु.	कार्त्ति. ९	अक्तू. २५	मृग.	२५/३४ बाद,
कार्त्ति. कृ. ५ श.	कार्त्ति. १०	अक्तू. २६	मृग.	१६/३३ तक,
कार्त्ति. कृ. ७ चं.	कार्त्ति. १२	अक्तू. २८	पुष्य	१९/४७ बाद,
कार्त्ति. कृ. ११ शु.	कार्त्ति. १६	नवं. १	उ.फा.	१५/४० से २३/२५ तक,
कार्त्ति. शु. २ बु.	कार्त्ति. २१	नवं. ६	अनु.	२२/३५ तक,
कार्त्ति. शु. ९ बु.	कार्त्ति. २८	नवं. १३	शत.	१६/४७ से २५/३१ तक,
मार्ग. कृ. १ गु.	मार्ग. ६	नवं. २१	रोहि.	२०/२९ तक,
मार्ग. कृ. १ गु.	मार्ग. ६	नवं. २१	मृग.	२१/४१ बाद,
मार्ग. कृ. २ शु.	मार्ग. ७	नवं. २२	मृग.	२२/१० तक,
मार्ग. कृ. ५ चं.	मार्ग. १०	नवं. २५	पुष्य	२४/३० तक,
मार्ग. कृ. १० शु.	मार्ग. १४	नवं. २९	उ.फा.	१७/१२ तक,
मार्ग. कृ. ११ श.	मार्ग. १५	नवं. ३०	चित्रा	१९/५४ बाद,
मार्ग. कृ. १३ चं.	मार्ग. १७	दिसं. २	स्वा.	१४/०६ तक,
मार्ग. शु. ६ चं.	मार्ग. २४	दिसं. ९	धनि.	
मार्ग. शु. ७ बु.	मार्ग. २६	दिसं. ११	शत.	८/२१ तक,
मार्ग. शु. ९ शु.	मार्ग. २८	दिसं. १३	रेव.	२०/२७ बाद,
माघ कृ. ४ बु.	माघ ९	जन. २२	उ.फा.	१०/५६ से १४/१८ तक,
				१६/४२ बाद,
माघ कृ. ६ गु.	माघ १०	जन. २३	उ.फा.	८/१[illegible] तक,
माघ कृ. ७ शु.	माघ ११	जन. २४	चित्रा	१६/०६ से २९/२४ तक,
माघ शु. ६ शु.	माघ २५	फर. ७	रेव.	९/५४ तक,

पुरातन गृह प्रवेश मुहूर्त्त (सन् २००३ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
फाल्गु. कृ. ३ बु.	फाल्गु. ८	फर. १९	उ.फा.	१०/३० तक,
फाल्गु. कृ. ४ गु.	फाल्गु. ९	फर.२०	चित्रा	१८/१३ बाद,
फाल्गु. कृ. ५ शु.	फाल्गु. १०	फर. २१	चित्रा	११/२३ तक,
फाल्गु. शु. २ बु.	फाल्गु. २२	मार्च ५	उ.भा.	१४/४५ तक,
फाल्गु. शु. २ बु.	फाल्गु. २२	मार्च ५	रेव.	१५/५७ बाद,
फाल्गु. शु. ३ गु.	फाल्गु. २३	मार्च ६	रेव.	१३/३४ तक,

नोट :- सरकारी या अन्य नौकरी वाले तथा दूसरे लोग भी ट्रांस्फर आदि के कारण अक्सर किराये वाले पुराने मकानों में यदा-कदा प्रवेश करते रहते है। ऐसे लोगों के लिए ही ये पुरातन गृह प्रवेश मुहूर्त्त हैं। इन मुहूर्त्तों में गुरु-शुक्र अस्त और अधिकमास का दोष नहीं माना जाता। इसलिए इनका इन मुहूर्तों में विचार नहीं किया गया है। कलश चक्र का विचार भी यहां नहीं किया जाता ।

सात्त्विक देव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (२००२ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल
चैत्र शु. ४ बु.	वैशा. ५	अप्रै. १७	रोहि.	७/०२ से१०/१७ तक,
चैत्र शु. ५ गु.	वैशा. ६	अप्रै. १८	मृग.	११/२० तक,
चैत्र शु. १२ बु.	वैशा. १२	अप्रै. २४	उ.फा.	६/४१ से १२/०१ तक,
चैत्र शु. १३ गु.	वैशा. १३	अप्रै. २५	ह.	
वैशा. कृ. ३ चं.	वैशा. १७	अप्रै. २९	अनु.	
वैशा. कृ. १० चं.	वैशा. २४	मई ६	शत.	
वैशा. कृ. १३ शु.	वैशा. २८	मई १०	रेव.	८/४१ तक,
वैशा. शु. ३ बु.	ज्ये. २	मई १५	मृग.	
वैशा. शु. ५ शु.	ज्ये. ४	मई १७	पुन.	८/३६ तक, ११/०० बाद,
वैशा. शु. १० बु.	ज्ये. ९	मई २२	उ.फा.	११/०२ तक,
वैशा. शु. १२ गु.	ज्ये. १०	मई २३	ह.	८/५८ तक,
वैशा. शु. १२ गु.	ज्ये. १०	मई २३	चित्रा	१०/१० बाद,
वैशा. शु. १३ शु.	ज्ये. ११	मई २४	स्वा.	६/४६ बाद,
वैशा. शु. १५ र.	ज्ये. १३	मई २६	अनु.	६/३१ बाद,
ज्ये. कृ. ५ शु.	ज्ये. १८	मई ३१	श्रव.	८/०५ तक,
ज्ये. कृ. ८ चं.	ज्ये. २१	जून ३	शत.	७/३६ तक,

सात्त्विक देव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (२००२-०३ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
ज्ये. कृ. १० बु.	ज्ये. २३	जून ५	उ.भा.	१०/१५ तक,
ज्ये. कृ. ११ गु.	ज्ये. २४	जून ६	रेव.	
ज्ये. शु. ३ गु.	ज्ये. ३१	जून १३	पुन.	
ज्ये. शु. १० गु.	आषा. ६	जून २०	चित्रा	७/१४ बाद,
पौष शु १२ बु.	माघ २	जन. १५	रोहि.	
माघ कृ. १ र.	माघ ६	जन. १९	पुष्य	
माघ कृ. ४ बु.	माघ ९	जन. २२	उ.फा.	१०/५६ बाद,
माघ कृ. ६ शु.	माघ १०	जन. २३	उ.फा.	८/१५ तक,
माघ कृ. ६ शु.	माघ १०	जन. २३	ह.	६/२७ बाद,
माघ शु. १ र.	माघ २०	फर. २	धनि.	६/४० बाद,
माघ शु. २ चं.	माघ २१	फर. ३	शत.	८/४६ तक,
माघ शु. ५ गु.	माघ २४	फर. ६	रेव.	८/१४ तक,
माघ शु. ६ शु.	माघ २५	फर. ७	रेव.	६/५४ तक,
माघ शु. १२ शु.	फाल्गु. ३	फर. १४	पुन.	
फाल्गु. कृ. ३ बु.	फाल्गु. ८	फर. १९	उ.फा.	१०/३० तक,
फाल्गु. कृ. ५ शु.	फाल्गु. १०	फर. २१	चित्रा	११/२३ तक,
फाल्गु. कृ. ७ र.	फाल्गु. १२	फर. २३	अनु.	६/३१ बाद,
फाल्गु. शु. २ बु.	फाल्गु. २२	मार्च ५	उ.भा.	
फाल्गु. शु. ३ गु.	फाल्गु. २३	मार्च ६	रेव.	
फाल्गु. शु. ७ चं.	फाल्गु. २७	मार्च १०	रोहि.	

तामसदेव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (सन् २००२ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल
आषा. कृ. ६ र.	आषा. १६	जून ३०	शत.	
आषा. कृ. ८ बु.	आषा. १९	जुला. ३	रेव.	११/५६ तक,
कार्ति. शु. १३ र.	मार्ग. २	नवं. १७	रेव.	१०/२० तक,
मार्ग. कृ. १ गु.	मार्ग. ६	नवं. २१	रोहि.	
मार्ग. कृ. २ शु.	मार्ग. ७	नवं. २२	मृग.	
मार्ग. कृ. ५ चं.	मार्ग. १०	नवं. २५	पुष्य	
मार्ग. कृ. १० शु.	मार्ग. १४	नवं. २९	उ.फा.	

तामसदेव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (सन् २००२ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
मार्ग. कृ. १२ र.	मार्ग. १६	दिसं. १	चित्रा	
मार्ग. कृ. १३ चं.	मार्ग. १७	दिसं. २	स्वा.	
मार्ग. शु. ५ र.	मार्ग. २३	दिसं ८	श्रव.	८/५७ तक,
मार्ग. शु. ६ चं.	मार्ग. २४	दिसं. ९	धनि.	

देव प्रतिष्ठा के विशेष मुहूर्तों के बारे में स्पष्टीकरण

श्री विष्णु, राम, कृष्ण, शिव, गणेश, गौरी आदि सात्विक देवता हैं, इसलिए इनकी प्रतिष्ठा यद्यपि उपरोक्त " सात्विक देव प्रतिष्ठा " वाले मुहूर्तों में हो सकती है, फिर भी मुहूर्तशास्त्रों में इनकी प्रतिष्ठा के लिए विशेष मुहूर्त्त काल बताए गए हैं, जिनका निर्देश हमने यहां नीचे अलग से किया है। यहां यह समझ लेना चाहिए कि सात्त्विक देव प्रतिष्ठा वाले मुहूर्त्त श्री विष्णु, राम, कृष्ण,गणेश,शिव, सरस्वती आदि सभी सत्वप्रधान प्रकृति वाले देवी-देवताओं के लिए समान रूप से प्रयोग में लाये जा सकते हैं, जबकि श्री गणेश, दुर्गा, गौरी, शिव आदि देवी- देवताओं के लिए यहां पृथक् रूप में लिखे गए प्रतिष्ठामुहूर्त्त केवल इन्हीं के लिए हैं। सभी देवताओं की प्रतिष्ठा पूर्वह्कालमें(मध्याह से पूर्व) ही की जाती है। ध्यान दें- गौरी,गणेश, दुर्गा और शिव की प्रतिष्ठा के मुहूर्त्त के लिए शास्त्रों में क्रमशः शुक्ल तृतीया, कृष्ण चतुर्थी, शुक्ल नवमी और कृष्ण चतुर्दशी तिथियां शुभ मानी गई हैं, तदुनसार ही यहां इनके विशेष मुहूर्तों में केवल इन तिथियों का निर्देश किया गया है, नक्षत्रों का नहीं। हां जहां कहीं इन तिथियों के समय कोई देवप्रतिष्ठा मुहूर्त्त का नक्षत्र भी मिल गया है, वहां उस तिथि के साथ उसका भी निर्देश कर दिया गया है। शिव प्रतिष्ठा के लिए आर्द्रा नक्षत्र भी शुभ माना जाता है, अतः यहां आर्द्रा नक्षत्र में भी शिवप्रतिष्ठा मुहूर्त्त लगाए गए हैं । इन मुहूर्तों में भी गुरु-शुक्रास्त काल को वर्जित किया जाता है।

श्रीगणेश प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (सन् २००२-०३ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख		
वैशा. कृ. ४ मं.	वैशा. १८	अप्रै. ३०		
ज्ये. कृ. ३ बु.	ज्ये. १६	मई २९		
माघ कृ. ३ मं.	माघ ८	जन. २१		
फाल्गु. कृ. ४ गु.	फाल्गु. ९	फर. २०		

दशावतार प्रतिष्ठा

श्रीराम,कृष्ण,आदि देवताओं की मूर्त्ति- प्रतिष्ठा, इन देवताओं की अपनी -अपनी अवतार तिथियों (श्रीरामनवमी आदि) के दिन पूर्वाह्नकाल में बिना पंचांग - शुद्धि के भी की जा सकती है। अवतार की तिथि यदि गुरु-शुक्रास्तकाल में पड़े ,तब तो उस दिन मूर्ति-प्रतिष्ठा नहीं करनी चाहिए।

श्रीदुर्गा प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (सन् २००२-०३ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
चैत्र शु. ६ र.	वैशा. ६	अप्रै. २१		
वैशा. शु. ६ शु.	ज्ये. ८	मई २१		
ज्ये. शु. ६ बु.	आषा. ५	जून १६	हस्त	
माघ शु. ६ चं.	माघ २८	फर. १०		

श्रीशिव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (सन् २००२-०३ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
चैत्र शु. ६ शु.	वैशा. ७	अप्रै. १६	आर्द्रा	
वैशा. कृ. १३ शु.	वैशा. २८	मई १०	अश्वि.	६/५३ बाद,
ज्ये. शु. २ बु.	ज्ये. ३०	जून १२	आर्द्रा	
माघ कृ. १३ गु.	माघ १७	जन. ३०		
माघ शु. ११ गु.	फाल्गु. २	फर. १३	आर्द्रा	१०/१२ बाद,

श्रीगौरी प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (सन् २००२-०३ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
चैत्र शु. ३ चं.	वैशा. ३	अप्रै. १५		
वैशा. शु. ३ बु.	ज्ये. २	मई १५	मृग.	
ज्ये. शु. ३ गु.	ज्ये. ३१	जून १३	पुन.	
माघ शु. ३ मं.	माघ २२	फर. ४		

विपणि मुहूर्त्त (सन् २००२ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
चैत्र शु. ४ बु.	वैशा. ५	अप्रै. १७	रोहि.	७/०२ से १०/१७ तक,
चैत्र शु. ४ बु.	वैशा. ५	अप्रै. १७	मृग.	११/२६ बाद,
चैत्र शु. ५ गु.	वैशा. ६	अप्रै. १८	मृग.	७/३३ तक,
चैत्र शु. १२ बु.	वैशा. १२	अप्रै. २४	उ.फा.	६/४१ से १२/०१ तक, १५/३७ बाद
चैत्र शु. १३ गु.	वैशा. १३	अप्रै. २५	हस्त	१५/२८ तक,
वैशा. कृ. ३ चं.	वैशा. १७	अप्रै. २६	अनु.	१३/३७ तक,
वैशा. कृ. ११ बु.	वैशा. २६	मई ८	उ.भा.	११/४५ बाद,
वैशा. कृ. १२ गु.	वैशा. २७	मई ६	रेव.	७/१० बाद,
वैशा. कृ. १३ शु.	वैशा. २८	मई १०	रेव.	८/४१ तक,
वैशा. शु. ३ बु.	ज्ये. २	मई १५	मृग.	१६/५३ तक,
वैशा. शु. १२ गु.	ज्ये. १०	मई २३	हस्त	८/५८ तक,

विपणि मुहूर्त्त (सन् २००२-०३ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
वैशा. शु. १२ गु.	ज्ये. १०	मई २३	चित्रा	११/१० से १३/१४ तक,
ज्ये. कृ १० बु.	ज्ये. २३	जून ५	उ.भा.	१०/१५ तक,
ज्ये. कृ. १२ शु.	ज्ये. २५	जून ७	अश्वि.	१८/४१ तक,
ज्ये. शु. ६ बु.	आषा. ५	जून १६	हस्त	१४/२८ से १५/२८ तक,
ज्ये. शु. ६ बु.	आषा. ५	जून १६	चित्रा	१६/४० से २०/४२ तक,
ज्ये. शु.१० गु.	आषा. ६	जून २०	चित्रा	७/१४ से १२/०६ तक,
ज्ये. शु. १२ श.	आषा. ८	जून २२	अनु.	१२/२६ बाद,
श्राव. कृ. १० र.	श्राव. २०	अग. ४	रोहि.	७/२२ से १५/३६ तक,
श्राव. कृ. ११ चं.	श्राव. २१	अग. ५	मृग.	७/३० से १७/२० तक,
श्राव. शु. ३ र.	श्राव. २७	अग. ११	उ.फा.	८/५० से १५/१६ तक,
श्राव. शु. ४ चं.	श्राव. २८	अग. १२	हस्त	१२/१० बाद,
भाद्र. कृ. २ र.	भाद्र. १०	अग. २५	उ.भा.	१०/४३ बाद,
भाद्र. कृ. ५ बु.	भाद्र. १३	अग. २८	अश्वि.	१०/१८ तक,
भाद्र. शु. २ र.	भाद्र. २४	सितं. ८	उ.फा.	१४/२४ तक,
भाद्र. शु. २ र.	भाद्र. २४	सितं. ८	हस्त	१५/३६ बाद,
भाद्र. शु. ३ चं.	भाद्र. २५	सितं. ६	हस्त	११/३४ तक,
भाद्र. शु. ३ चं.	भाद्र. २५	सितं. ६	चित्रा	१२/४६ तक,
भाद्र. शु. ६ गु.	भाद्र. २८	सितं.१२	अनु.	१३/३८ बाद,
आश्वि. शु. ५ गु.	आश्वि. २५	अक्तू. १०	अनु.	१२/२० तक,
कार्त्ति. शु. १३ र.	मार्ग. २	नवं. १७	रेव.	१०/२० तक,
मार्ग. कृ. १ गु.	मार्ग. ६	नवं. २१	रोहि.	८/४६ बाद,
मार्ग. कृ. २ शु.	मार्ग. ७	नवं. २२	मृग.	
मार्ग. कृ. ५ चं.	मार्ग. १०	नवं. २५	पुष्य	११/३६ तक,
मार्ग. कृ. १० शु.	मार्ग. १४	नवं. २६	उ.फा.	१७/१२ तक,
मार्ग. कृ. १२ र.	मार्ग. १६	दिसं. १	चित्रा	१६/२८ तक,
पौष शु. १२ बु.	माघ २	जन. १५	रोहि.	१२/०१ तक,
माघ कृ.७ शु.	माघ ११	जन. २४	चित्रा	१६/०६ बाद,
माघ शु. ५ गु.	माघ २४	फर. ६	रेव.	८/१४ बाद,
माघ शु. ७ श.	माघ २६	फर. ८	अश्वि.	१२/५६ तक,

विपणि मुहूर्त्त (सन् २००२-०३ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
फाल्गु. कृ. ३ बु.	फाल्गु. ८	फर. १६	उ.फा.	१०/१० तक,
फाल्गु. कृ ५ शु.	फाल्गु. १०	फर. २१	चित्रा	११/२३ तक,
फाल्गु. कृ ७ र.	फाल्गु. १२	फर. २३	अनु.	६/३१ से ११/०६ तक,
फाल्गु. शु. २ बु.	फाल्गु. २२	मार्च ५	उ.भा.	१४/४५ तक,
फाल्गु. शु. ७ चं.	फाल्गु. २७	मर्च १०́	रोहि.	

अभिजित् मुहूर्त्त

स्थानीय दिनमानार्ध के घं. मि. को स्थानीय सूर्योदयकाल में जोड़ने पर 'स्पष्ट दिनार्ध' होता है, दिनमान का ३०वां भाग मुहूर्त्तार्ध कहलाता है। मुहूर्त्तार्ध को स्पष्ट दिनार्ध में घटाने और जोड़ने पर अभिजित् मुहूर्त्त का क्रमशः प्रारम्भ और समाप्तिकाल ज्ञात हो जाता है। इस काल में लगभग सभी दोषों को समाप्त कर डालने की अद्भुत शक्ति मानी गयी है। जब मुण्डन, अक्षरारम्भ आदि मुहूर्त्तों में शुद्ध लग्न न मिल रहा हो, तब अभिजित् मुहूर्त्तों को प्रयोग में लाना चाहिए।

सर्वार्थसिद्धि योग (सं. २०५९ वि.) (भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ		समाप्त	
२००२ ई.	घं. मि.	२००२ ई.	घं. मि.
१६ अप्रै.	सू. उ.	१६ अप्रै.	६ ५७
१७ अप्रै.	सू. उ.	१८ अप्रै.	सू. उ.
१९ अप्रै.	१३ ०२	२० अप्रै.	सू. उ.
२१ अप्रै.	सू. उ.	२१ अप्रै.	१२ १२
२५ अप्रै.	४ ०५	२५ अप्रै.	सू. उ.
२७ अप्रै.	सू. उ.	२७ अप्रै.	२० ००
३ मई	१७ ४३	४ मई	सू. उ.
४ मई	सू. उ.	४ मई	१९ ४८
८ मई	४ १५	८ मई	सू. उ.
९ मई	७ १०	१० मई	सू. उ.
(१० मई	सू. उ.	१० मई	९ ५३) शु.
१३ मई	१६ ००	१४ मई	सू. उ.
१५ मई	सू. उ.	१५ मई	१८ ०५
१६ मई	१८ २८	१७ मई	सू. उ.
१७ मई	सू. उ.	१७ मई	१८ २६
२२ मई	१२ १४	२३ मई	सू. उ.
२५ मई	सू. उ.	२५ मई	६ ००
३१ मई	सू. उ.	१ जून	४ ०१
४ जून	११ ४४	५ जून	सू. उ.
६ जून	सू. उ.	६ जून	१७ ३६
७ जून	सू. उ.	७ जून	१६ ५३
१० जून	सू. उ.	११ जून	० १६
(११ जून	० १६	११ जून	सू. उ.) चं.
१३ जून	सू. उ.	१४ जून	० १७
(१४ जून	० १७	१४ जून	सू. उ.) गु.
१९ जून	सू. उ.	१९ जून	१६ ४०
२८ जून	सू. उ.	२८ जून	१२ ४०
२ जुला.	सू. उ.	२ जुला.	२२ ३८
४ जुला.	सू. उ.	५ जुला.	४ ०६
८ जुला.	सू. उ.	८ जुला.	८ ५०
(८ जुला.	८ ५०	९ जुला.	सू. उ.) चं.
११ जुला.	सू. उ.	११ जुला.	७ ५२
(११ जुला.	७ ५२	१२ जुला.	सू. उ.) गु.
२१ जुला.	१७ ५५	२२ जुला.	सू. उ.

प्रारम्भ		समाप्त	
२००२ ई.	घं. मि.	२००२ ई.	घं. मि.
२९ जुला.	३ ३३	२९ जुला.	सू. उ.
१ अग.	सू. उ.	१ अग.	१२ १८
(३ अग.	१६ ४७	४ अग.	सू. उ.) श.
(५ अग.	सू. उ.	५ अग.	१८ ३२) चं.
(८ अग.	सू. उ.	८ अग.	१५ ३६) गु.
११ अग.	८ ५०	१२ अग.	सू. उ.
१६ अग.	० ०४	१६ अग.	सू. उ.
१८ अग.	सू. उ.	१९ अग.	० ०३
२५ अग.	१० १३	२६ अग.	सू. उ.
(३१ अग.	सू. उ.	१ सितं.	२ ४३) श.
६ सितं.	२१ २१	७ सितं.	सू. उ.
८ सितं.	सू. उ.	८ सितं.	१५ ३६
(८ सितं.	१५ ३६	९ सितं.	सू. उ.) र.
१२ सितं.	६ ३०	१३ सितं.	५ ३२
२२ सितं.	सू. उ.	२२ सितं.	२० ००
(२४ सितं.	सू. उ.	२५ सितं.	२ ०४) मं.
२६ सितं.	५ ००	२६ सितं.	सू. उ.
(२८ सितं.	सू. उ.	२८ सितं.	९ ५६) श.
४ अक्तू.	८ ०७	५ अक्तू.	५ २७
(६ अक्तू.	सू. उ.	६ अक्तू.	२३ २२) र.
(९ अक्तू.	१५ १६	१० अक्तू.	सू. उ.) बु.
१० अक्तू.	सू. उ.	१० अक्तू.	१३ ३२
१३ अक्तू.	१२ ३७	१४ अक्तू.	सू. उ.
१४ अक्तू.	१३ ४५	१५ अक्तू.	सू. उ.
२१ अक्तू.	५ ०५	२१ अक्तू.	सू. उ.
(२२ अक्तू.	सू. उ.	२२ अक्तू.	८ ०३) मं.
२३ अक्तू.	१० ५४	२४ अक्तू.	सू. उ.
२८ अक्तू.	१९ ४७	२९ अक्तू.	सू. उ.
२९ अक्तू.	१९ ४६	३० अक्तू.	सू. उ.
१ नवं.	सू. उ.	१ नवं.	१५ ४०
(३ नवं.	सू. उ.	३ नवं.	१० २७) र.
(६ नवं.	सू. उ.	६ नवं.	२३ ४७) बु.
१० नवं.	सू. उ.	१० नवं.	२१ १०
११ नवं.	सू. उ.	११ नवं.	२२ २४

प्रारम्भ		समाप्त	
२००२ ई.	घं. मि.	२००२ ई.	घं. मि.
१७ नवं.	११ ३२	१८ नवं.	सू. उ.
१९ नवं.	१७ १०	२० नवं.	सू. उ.
२० नवं.	सू. उ.	२१ नवं.	सू. उ.
२५ नवं.	सू. उ.	२६ नवं.	१ ४२
२६ नवं.	सू. उ.	२७ नवं.	१ २८
(४ दिसं.	सू. उ.	४ दिसं.	१० ४५) बु.
१५ दिसं.	सू. उ.	१५ दिसं.	२१ ४६
१७ दिसं.	सू. उ.	१८ दिसं.	२ ५२
१८ दिसं.	सू. उ.	१९ दिसं.	सू. उ.
२१ दिसं.	६ ५४	२१ दिसं.	सू. उ.
२२ दिसं.	सू. उ.	२३ दिसं.	७ १६
२९ दिसं.	१ ०८	२९ दिसं.	सू. उ.
३० दिसं.	२१ ५२	३१ दिसं.	सू. उ.
सन् २००३ ई.			
४ जन.	१६ २४	५ जन.	सू. उ.
९ जन.	२३ ५५	१० जन.	सू. उ.
(१० जन.	सू. उ.	११ जन.	२ ५४) शु.
११ जन.	२ ५४	११ जन.	सू. उ.
१४ जन.	सू. उ.	१४ जन.	११ १९
१५ जन.	सू. उ.	१६ जन.	सू. उ.
१९ जन.	सू. उ.	१९ जन.	१४ ३२
२५ जन.	सू. उ.	२६ जन.	५ १९
२७ जन.	सू. उ.	२८ जन.	३ ०९
१ फर.	१ १६	१ फर.	सू. उ.
१ फर.	सू. उ.	२ फर.	१ ३८
५ फर.	५ ४७	५ फर.	सू. उ.
६ फर.	८ १४	७ फर.	सू. उ.
(७ फर.	सू. उ.	७ फर.	११ ०६) शु.
१२ फर.	सू. उ.	१२ फर.	२३ ५३
१४ फर.	० ४०	१४ फर.	सू. उ.
१४ फर.	सू. उ.	१५ फर.	० ४१
१६ फर.	१६ ४१	२० फर.	सू. उ.
२२ फर.	सू. उ.	२२ फर.	१० ५३

प्रारम्भ		समाप्त	
२००३ ई.	घं. मि.	२००३ ई.	घं. मि.
२८ फर.	८ ०५	१ मार्च	सू. उ.
१ मार्च	सू. उ.	१ मार्च	८ ५१
४ मार्च	१३ ३३	५ मार्च	सू. उ.
६ मार्च	सू. उ.	७ मार्च	सू. उ.
७ मार्च	सू. उ.	७ मार्च	२१ ४८
१० मार्च	सू. उ.	११ मार्च	६ ४१
१२ मार्च	सू. उ.	१२ मार्च	८ ४७
१३ मार्च	१० ०८	१४ मार्च	सू. उ.
१४ मार्च	सू. उ.	१४ मार्च	१० ३८
१९ मार्च	सू. उ.	१९ मार्च	२३ ४३
२८ मार्च	सू. उ.	२८ मार्च	१४ २४
१ अप्रै.	सू. उ.	१ अप्रै.	२२ ३८

रवियोग (२०५९ वि.) सन् २००२ ई.

प्रारम्भ		समाप्त	
१६ अप्रै.	६ ५७	१७ अप्रै.	११ २९
१८ अप्रै.	१२ ३२	१९ अप्रै.	१३ ०९
२१ अप्रै.	१२ १२	२३ अप्रै.	६ ००
२५ अप्रै.	४ ०५	२६ अप्रै.	१ २०
२ मई	१६ १६	३ मई	१७ ४३
१५ मई	१८ ०५	१६ मई	१८ २८
१७ मई	१८ २६	१८ मई	१७ ५७
२० मई	१५ ४६	२२ मई	१२ १४
२४ मई	८ ०३	२५ मई	६ ००
२५ मई	१२ ०१	२६ मई	४ १०
१ जून	४ ०१	२ जून	६ १३
१४ जून	० १७	१४ जून	२३ ३१
१५ जून	२२ २७	१६ जून	२१ १०
१८ जून	१८ १४	२० जून	१५ ०८
२३ जून	११ २४	२४ जून	१० ४२
३० जून	१६ ५९	१ जुला.	१६ ४३
१३ जुला.	४ ५८	१४ जुला.	३ १२
१५ जुला.	१ २४	१५ जुला.	२३ ३९
१७ जुला.	२० ३६	१९ जुला.	१८ ४०
२२ जुला.	१८ ०३	२३ जुला.	१८ ३३

रवियोग (सं. २०५६ वि.)

प्रारम्भ		समाप्त	
२००२ ई.	घं. मि.	२००२ ई.	घं. मि.
३० जुला.	६ २७	३१ जुला.	६ २६
११ अग.	८ ५०	१२ अग.	६ २७
१३ अग.	४ १७	१४ अग.	२ २६
१६ अग.	० ०४	१६ अग.	० ०३
२१ अग.	२ ११	२२ अग.	३ ४८
२८ अग.	१९ ३६	२६ अग.	२२ २९
६ सितं.	१२ ४६	१० सितं.	१० १२
११ सितं.	८ ०५	१२ सितं.	६ ३०
१५ सितं.	५ ३३	१७ सितं.	७ ५२
१९ सितं.	११ ५४	२० सितं.	१४ २३
२७ सितं.	७ ४१	२७ सितं.	६ ४५
२८ सितं.	६ ५६	२६ सितं.	११ ३५
८ अक्तू.	१७ ३५	६ अक्तू.	१५ १६
१० अक्तू.	१३ ३२	१० अक्तू.	२२ ४१
११ अक्तू.	१२ २६	१२ अक्तू.	१२ ११
१४ अक्तू.	१३ ४५	१६ अक्तू.	१७ ४३
१८ अक्तू.	२३ ०७	२० अक्तू.	२ ०५
२७ अक्तू.	१९ ०५	२८ अक्तू.	१९ ४७
७ नवं.	२२ ०३	८ नवं.	२१ ००
९ नवं.	२० ४२	१० नवं.	२१ १०
१३ नवं.	० १८	१५ नवं.	५ ३१
१७ नवं.	११ ३२	१८ नवं.	१४ २८
२६ नवं.	१ ४२	२७ नवं.	१ २८
७ दिसं.	६ ३६	८ दिसं.	६ २६
९ दिसं.	७ ०१	१० दिसं.	८ २१
१२ दिसं.	१२ ५४	१४ दिसं.	१८ ५१
१८ दिसं.	२ ५२	१९ दिसं.	४ ४२
२५ दिसं.	६ ४१	२६ दिसं.	५ १३

सन् २००३ ई.

प्रारम्भ		समाप्त	
२००३ ई.	घं. मि.	२००३ ई.	घं. मि.
५ जन.	१६ ३८	६ जन.	१७ ३०
७ जन.	१९ ०४	८ जन.	२१ १४
११ जन.	२ ५४	११ जन.	१० ५५
१२ जन.	५ ५८	१४ जन.	११ १९
१६ जन.	१४ २९	१७ जन.	१५ ०५
२३ जन.	९ २७	२४ जन.	८ ००
२४ जन.	१३ १७	२५ जन.	६ ३६
४ फर.	३ ५१	५ फर.	५ ४७
७ फर.	११ ०६	८ फर.	१४ ११
१० फर.	२० ०२	१२ फर.	२३ ५४
१५ फर.	० ४१	१५ फर.	२३ ५८
२२ फर.	१० ५३	२३ फर.	६ ३१
६ मार्च	१८ ४५	७ मार्च	२१ ४८
९ मार्च	० ५१	१० मार्च	४ ००
१२ मार्च	८ ४७	१४ मार्च	१० ३४
१६ मार्च	६ ०८	१७ मार्च	७ २१
२३ मार्च	१४ ४७	२४ मार्च	१३ ३६

*सिद्धियोग (सं. २०५९ वि.) सन् २००२ ई.

प्रारम्भ		समाप्त	
२७ अप्रै.	सू. उ.	२७ अप्रै.	२० ००
८ मई	४ १५	८ मई	सू. उ.
१६ मई	१८ २८	१७ मई	सू. उ.
२५ मई	सू. उ.	२५ मई	६ ००
४ जून	११ ४४	५ जून	सू. उ.
१३ जून	सू. उ.	१४ जून	० १७
२ जुला.	सू. उ.	२ जुला.	२२ ३८
११ जुला.	सू. उ.	११ जुला.	७ ५२
१८ अग.	सू. उ.	१९ अग.	० ०३
६ सितं.	२१ २१	७ सितं.	सू. उ.
२६ सितं.	५ ००	२६ सितं.	सू. उ.
४ अक्तू.	८ ०७	५ अक्तू.	५ २७
१४ अक्तू.	१३ ४५	१५ अक्तू.	सू. उ.
२३ अक्तू.	१० ५४	२४ अक्तू.	सू. उ.
१ नवं.	सू. उ.	१ नवं.	१५ ४०
११ नवं.	सू. उ.	११ नवं.	२२ २४
२९ दिसं.	१ ०८	२९ दिसं.	सू. उ.

सिद्धियोग (सं. २०५९ वि.)

प्रारम्भ		समाप्त	
२००३ ई.	घं. मि.	२००३ ई.	घं. मि.
२५ जन.	सू. उ.	२६ जन.	५ १९
५ फर.	५ ४७	५ फर.	सू. उ.
१४ फर.	० ४०	१४ फर.	सू. उ.
२२ फर.	सू. उ.	२२ फर.	१० ५३
४ मार्च	१३ ३३	५ मार्च	सू. उ.
१३ मार्च	१० ०८	१४ मार्च	सू. उ.
१ अप्रै.	सू. उ.	१ अप्रै.	२२ ३८

*रविवार का मूल. चन्द्रवार का श्रव., मंगल का उ.भा; बुध का कृत्ति., गुरु का पुन., शुक्र का पू.फा. और शनिवार का स्वाती नक्षत्र से योग होने पर, जो सर्वार्थसिद्धि योग बनते हैं; उन्हीं को सिद्धियोग की संज्ञा दी गई है। इन्हें विशेष शुभफलप्रद माना गया है।

त्रिपुष्करयोग (सं. २०५९ वि.) सन् २००२ ई.

प्रारम्भ		समाप्त	
२० अप्रै.	सू. उ.	२० अप्रै.	६ ५२
२४ अग.	८ ०५	२५ अग.	सू. उ.
२५ अग.	सू. उ.	२५ अग.	७ ४२
३ सितं.	१९ ५३	४ सितं.	३ २१
८ सितं.	सू. उ.	८ सितं.	१५ ३६
२ नवं.	सू. उ.	२ नवं.	१२ ५४
२१ दिसं.	सू. उ.	२२ दिसं.	० ५९

सन् २००३ ई.

प्रारम्भ		समाप्त	
४ जन.	सू. उ.	४ जन.	१६ २४
१८ फर.	१८ ५०	१८ फर.	२३ ५७
२२ फर.	१३ ११	२३ फर.	सू. उ.
२३ फर.	सू. उ.	२३ फर.	६ ३१
४ मार्च	६ २६	४ मार्च	१३ ३३
९ मार्च	२१ २८	१० मार्च	४ ००

द्विपुष्करयोग (सं. २०५९ वि.) सन् २००२ ई.

प्रारम्भ		समाप्त	
१४ मई	१७ १५	१४ मई	१७ ५०

द्विपुष्कर योग (सं. २०५९ वि.) सन् २००२-०३ ई.

प्रारम्भ		समाप्त	
२००२-०३ ई.	घं. मि.	२००२-०३ ई.	घं. मि.
१ जून	१४ ४५	२ जून	सू. उ.
२ जून	सू. उ.	२ जून	६ १३
१६ जुला.	२२ ०३	१६ जुला.	२३ २४
२८ सितं.	६ ५६	२९ सितं.	सू. उ.
१ दिसं.	१ ०८	१ दिसं.	सू. उ.
१ दिसं.	सू. उ.	१ दिसं.	१७ ४०
२ फर.	१६ २२	३ फर.	२ २८
२९ मार्च	सू. उ.	२९ मार्च	१६ ०१

अमृतसिद्धि योग

(सं. २०५९ वि.) (सन् २००२ ई.)

प्रारम्भ		समाप्त	
१० मई	सू. उ.	१० मई	६ ५३ शु.
११ जून	० १९	११ जून	सू. उ. चं.
१४ जून	० १७	१४ जून	सू. उ. गु.
८ जुला.	८ ५०	९ जुला.	सू. उ. चं.
११ जुला.	७ ५२	१२ जुला.	सू. उ. गु.
३ अग.	१६ ४७	४ अग.	सू. उ. श.
५ अग.	सू. उ.	५ अग.	१८ ३२ चं.
८ अग.	सू. उ.	८ अग.	१५ ३९ गु.
३१ अग.	सू. उ.	१ सितं.	२ ४३ श.
८ सितं.	१५ ३६	९ सितं.	सू. उ. र.
२४ सितं.	सू. उ.	२५ सितं.	२ ०४ मं.
२८ सितं.	सू. उ.	२८ सितं.	६ ५६ श.
६ अक्तू.	सू. उ.	६ अक्तू.	२३ २२ र.
९ अक्तू.	१५ १६	१० अक्तू.	सू. उ. बु.
२२ अक्तू.	सू. उ.	२२ अक्तू.	८ ०३ मं.
३ नवं.	सू. उ.	३ नवं.	१० २७ र.
६ नवं.	सू. उ.	६ नवं.	२३ ४७ बु.
४ दिसं.	सू. उ.	४ दिसं.	१० ४५ बु.

सन् २००३ ई.

प्रारम्भ		समाप्त	
१० जन.	सू. उ.	११ जन.	२ ५४ शु.
७ फर.	सू. उ.	७ फर.	११ ०६ शु.

विश्व लग्नसारणी

बिना गणित किए मौखिक जोड़–घटाव द्वारा ही इष्टकालिक सूक्ष्मातिसूक्ष्म लग्न, दशम आदि स्पष्ट करने के लिए हिन्दी भाषा में अपनी ही तरह का एक युगप्रवर्त्तक

सर्वप्रथम प्रकाशन

लेखक - प्रो. प्रियव्रत शर्मा,

इस पुस्तक में प्रत्येक ज्योतिषी के लिए अनिवार्य यह महत्त्वपूर्ण सामग्री आप पाएंगे–

(1) 0° से 66° अक्षांश तक आधा-आधा अक्षांश के अन्तर पर लग्न के सूक्ष्मातिसूक्ष्म राशि-अंशादि बतलाने वाली लग्नसारणियां दी गई हैं। लगभग 400 पृष्ठों की ये सारणियां साम्पातिक काल के 1-1 मिनट के अन्तर पर बनाई गई हैं। इनसे किसी भी उत्तरी या दक्षिणी अक्षांश के स्थल का इष्टकालिक सूक्ष्मतम लग्न (राशि -अंश - कला) जानने के लिए तनिक भी गणित नहीं करनी पड़ती। इन्हें Electronic Computer द्वारा बनाया तथा मुद्रित किया गया है, जिससे इनमें गणित एवं मुद्रण की अशुद्धि की कोई गुंजायश ही नहीं है।

(2) सर्वत्र उपयोगी दशमलग्न सारणी ।

(3) विश्व के प्रत्येक नगर में मेष आदि बारह लग्नों का दैनिक प्रारम्भ–समाप्ति काल बतलाने वाली विलक्षण सारणियां, जिनके द्वारा आप विश्व के किसी भी नगर में किसी भी दिन (तारीख को) किसी भी सायन या निरयण लग्न का प्रारम्भ या समाप्तिकाल (अभीष्ट देश के स्टैण्डर्ड टाईम में) केवल दो मिनटों में सिर्फ-जोड़ घटाव की साधारण प्रक्रिया द्वारा जान सकते हैं।

(4) सन् 1900 से 2100 ई. तक के लिए सेकण्ड तक शुद्ध साम्पातिक काल तथा अयनांश ।

(5) भारत के सभी छोटे–बड़े लगभग 3200 नगर–उपनगरों तथा विश्व के अन्य देशों के सभी प्रसिद्ध लगभग 7500 महत्त्वपूर्ण एवं बड़े नगरों के अक्षांश, रेखांश तथा स्टैण्डर्ड अन्तर।

(6) विश्व के सभी लगभग (600) देशों, द्वीपों, उपद्वीपों की स्टैण्डर्ड मेरिडियन्स।

(7) विश्व के सभी लगभग (600) देशों, द्वीपों, उपद्वीपों के स्टैण्डर्ड टाईमों का G.M.T. तथा भा.स्टैं.टा. से अन्तर।

(8) 0° से 66° अक्षांश तक के सभी उत्तरी एवं दक्षिणी स्थलों का सूक्ष्म दैनिक सूर्योदयास्त काल।

(9) 0° से 66° अक्षांश तक की सेकण्ड तक सूक्ष्म चरसारणी भी दी गई है। यह सारणी सूक्ष्म सूर्योदयास्तकाल, लग्न आदि के साधन के लिए परम उपयोगी है।

(10) अमेरिका, कनाडा आदि देशों के अलग–अलग टाईम ज़ोन्स (कालक्षेत्रों) में पड़ने वाले प्रान्तों (राज्यों) की लम्बी सूची तथा विभिन्न देशों मे हुए समय-परिवर्तन के वर्ष (ई.सन्)।

(11) अमेरिका, कनाडा, यू.के. आस्ट्रेलिया आदि में प्रचलित समरटाइम (ग्रीष्मकाल) के प्रारम्भ और समाप्ति की तारीखें।

इसके अतिरिक्त अन्य अनेक उपयोगी कोष्ठक एवं लग्न तथा द्वादश भावों से सम्बद्ध ज्ञानवर्धक ऐसे मौलिक लेख आपको इसमें मिलेंगे जो आपको अन्यत्र उपलब्ध नहीं होंगे।

हमारी प्रतिज्ञा है - लग्न पर ऐसी व्यापक जानकारी देने वाली परिपूर्ण प्रामाणिक पुस्तक अभी तक किसी भाषा में सचमुच नहीं छपी है।

यह पुस्तक हम अप्रै.'2001 ई. तक out करने का इरादा रखते थे, लेकिन 'श्रीमार्त्तण्डपंचांग' के 'हीरकजयन्ती अंक' तथा 'गणकमार्त्तण्ड' जैसे विशाल प्रकाशन के निर्माण, सम्पादन और मुद्रण में भारी व्यस्तता के कारण हम ऐसा नहीं कर सके। अब यह प्रकाशन अप्रै.'2002 ई. तक पाठकों तक पहुँच जाएगा- यह हमारा निश्चय है। थोड़ी और प्रतीक्षा कीजिए। अभी कृपया Advance मत भेजिए। अपना Order अवश्य भेजिए। जो लोग अपने Orders पहिले ही भेज चुके हैं, उन्हें अब दुबारा भेजने की जरूरत नहीं है । अपना पता साफ-साफ लिखिए। आपका नाम हम ग्राहक सूची में दर्ज कर लेंगे। पुस्तक छपने पर हम आपको इसका मूल्य भेजने के लिए लिखेंगे।

इसके लिए नीचे लिखे पते पर सम्पर्क कीजिए-

पृष्ठ संख्या लगभग 600 — मूल्य लगभग Rs.650/--

साईज 24 x18 सें.मी. (श्रीमार्त्तण्ड पंचाग के बराबर) — (डाक व्यय पृथक्)

श्रीमती वीना चतुर्वेदी,
अभिजित् प्रकाशन,
59/6 (अभिजित्),
P.O. पंचकूला-134 109,
Phone 0172-565303

'श्रीमार्त्तण्डपंचांग' की हीरकजयन्ती के उपलक्ष्य में प्रिय पाठकों को सप्रेम समर्पित

विशेष सामग्री

सम्पादक – प्रियव्रत शर्मा

[देखें – विस्तृत विज्ञापन पृष्ठ 275 पर]

अभिनन्दन एवम् आभार के दो शब्द

'श्री मार्त्तण्डपंचांग' इसवर्ष (सं. 2059 वि. मं.) अपने गौरवशाली प्रकाशन के 75 वें वर्ष में पदार्पण कर हीरकजयन्ती मनाने जा रहा है। इस मांगल्यवेला पर सम्पादकमण्डल अपने असंख्य प्रियपाठकों का शत-शत अभिनन्दन करता है। श्रीमार्त्तण्डपंचांग ने इन 74 वर्षों में क्या कुछ ज्योतिषजगत् को दिया, इसने कहां तक प्रगति की – यह सब कुछ पाठकों के सम्मुख है। इस बारे में कुछ लिखने की हम आवश्यकता नहीं समझते।

इस शुभावसर पर हम अपनी विगतवर्षीय प्रतिज्ञानुसार अपने प्रिय पाठकों को इन अगले लगभग 150 पृष्ठों पर कुछ 'विशेषसामग्री' उपहार के रूप में दे रहे हैं ,जो उनके ज्योतिषव्यवसाय एवम् ज्ञानवर्धन में पर्याप्त सहायक सिद्ध होगी।

इस 'विशेष सामग्री' में ग्रहराशिचार को छोडकर शेष पूरी सामग्री मेरे **'गणकमार्त्तण्ड'** के प्रथम-द्वितीय अध्यायों से उद्धृत की गई है। "भौमादि ग्रहों के राशिचार" मेरे अनुज **डॉ. शक्तिधर शर्मा** के आत्मजों **चि. सुबोधशर्मा,** M.E.Electronics & Tele-communications, Deputy Manager, Indian Air lines, **चि. संजयशर्मा,** M. Tech. Computer science द्वारा विकासित Computer programming का परिणाम है। इन दोनों सुयोग्य सहोदरों, मेरे प्रिय भ्रातृजों को पंचांगगणित में इस स्पृहणीय सर्वप्रथम योगदान के लिए मेरा हार्दिक आशीर्वाद है। इस विषय में इनकी रुचिभरी प्रवृत्ति और क्षमता देखकर, इस क्षेत्र में इनसे मुझे भविष्य में अनेक आशाएं हैं।

मेरे अनुज **चि. इन्दुशेखर शर्मा** के विद्या-विनय सम्पन्न पुत्रों, मेरे भ्रातृजों **डॉ. आशुतोष शर्मा,** M.B.B.S., M.D. और **चि. संयमी शर्मा,** M.A. संस्कृत-छात्र, को भी आशीर्वाद देना मेरा कर्त्तव्य बनता है, क्योंकि विगत अनेक वर्षों से **चि. संयमी शर्मा** भी ज्योतिष एवम् पंचांगकार्य में रुचि के कारण, अपने अध्ययनक्षणों से कुछ समय निकालकर प्रूफरीडिंग आदि पंचांगकार्यों में यथाशक्ति योगदान करता आ रहा है। **चि. डॉ. आशुतोष शर्मा,** भी चिकित्साव्यवसाय में व्यस्तता के बावजूद, विशेषकर पंचांग-सम्पादन के दिनों में हमारे अन्य पारिवारिक कार्यों के निर्वहण का पूरा उत्तरदायित्व क्षमतापूर्वक निभाता है, इसलिए यह भी हमारे आशीर्वाद का पूर्ण अधिकारी है।

मैं अपनी प्रिय बेटी सौ. **वीना चतुर्वेदी,** M.A., M. Phil को भी इस विषय में अपने आशीर्वाद से वंचित नहीं रख सकता। मेरे चंचल एवम् सुदक्ष प्रिय बाल दौहित्रों (चि. प्रांशु चतुर्वेदी, चि. प्रांजल चतुर्वेदी) से उलझी रहती हुई भी वह मेरे लेखन-पठन कार्य में अनादिष्ट सहयोगिनी रहती है। यहां दी जा रही **'विशेष सामग्री'** के लेखन में इसका भारी सहयोग मुझे मिला है। ईश्वर इसे सुस्वस्थ, समृद्ध एवम् सुख-सुविधासम्पन्न आयु प्रदान करे।

मैं अपनी हृदय से समवेत दिवंगत उस प्रिय धर्मपत्नी **श्रीमती प्रकाश कुमारी** को इस हीरक जयन्ती पर्व पर धन्यवाद देने की अभिलाषा लिए हुए हूँ , जिसने प्रिय सहचरी के रूप में मेरी सुख-सुविधाओं के हार्दिक सम्पादन से बचे अपने जीवनक्षणों में निरन्तर लगभग 35 वर्ष तक अपनी **'उर्दू जन्त्री'** के अनुवाद आदि का पूरा कार्यभार बड़े उत्साह-उल्लास से क्षमतापूर्वक उठाया। उस अभावस्वरूपा सुस्मिता को अपने ये हार्दिक धन्यवाद कहां , कैसे पंहुचाऊँ- समझ में नहीं आता।

श्रीमार्त्तण्डपंचांग के इस पुनीत पर्व पर अपने निःस्वार्थ सहयोगी **स्व. सन्त लछमण सिंह जी, कुराली** और **स्व. स. कुलदीप सिंह जी** {सुपरिण्टेंडेण्ट, स्टेशनरी एण्ड प्रिंटिंग, चण्डीगढ (यू.टी.)} को भी हम साभार याद करते हैं, जो दशाब्दियों तक **'मार्त्तण्ड आलम जन्त्री'**,और **'शिरोमणि तिथपत्रिका'** के अनुवाद आदि का कार्य नितान्त सौहार्दभरे हृदय से करते रहे।

अन्त में मैं कुराली निवासी **श्री श्रुतिकान्त गुप्ता जी** के सुपुत्र प्रिय **चि. मनीषकान्त गुप्ता** को आशीर्वाद एवम् शाबाश दूँगा। इस सौम्यप्रकृति, मधुरयुवा की दक्षता और लगन के कारण ही अंकजाल से उलझे श्रीमार्त्तण्डपंचांग के 400 पृष्ठों की श्रमापेक्षी Photo Type-setting हमारे मित्र **श्री ज्ञानी करतार सिंह** जी के तत्त्वावधान में यथासमय सम्यक्तया सम्पन्न हो सकी है।

59/6 , अभिजित् ,
पंचकूला (हरि.)
पिन- 134109 फोन 0172 – 565303

प्रियव्रत शर्मा
सम्पादक-'विशेष सामग्री'
14 अक्तूबर, 2001

गणकमार्त्तण्ड

भारतीय ज्योतिष जगत् में नया कीर्तिमान स्थापित करने वाला प्रामाणिक एवम् परम उपयोगी चिरप्रतीक्षित महान् ज्योतिषप्रकाशन

लेखक– प्रियव्रत शर्मा, एम.ए., सिद्धान्त ज्योतिषाचार्य, साहित्याचार्य (सम्पादक – श्रीमार्त्तण्डपंचांग),

दो भागों (जिल्दों) में विभाजित इस ग्रन्थरत्न में पांच अध्याय हैं। इनमें दिए गए ज्योतिषियों के लिए नितान्त उपयोगी अनेक विषयों में से कुछेक इस प्रकार हैं ,–

1. भारत के सभी (35) प्रान्तों के महत्त्वपूर्ण प्रसिद्ध छोटे–बड़े लगभग सवा तीन हजार नगर–उपनगरों के अक्षांश, रेखांश और स्टैण्डर्ड अन्तर (स्था. म. का. और भा. स्टैं. टा. का अन्तर) ।
2. विश्व के लगभग सभी देशों के प्रमुख–प्रमुख 400 नगरों के अक्षांश, रेखांश, स्टैण्डर्ड अन्तर तथा G.M.T. और भा. स्टैं. टा. से उनके स्टैण्डर्ड टाईमों का अन्तर।
3. विश्व के लगभग सभी (120) देशों की स्टैण्डर्ड मेरिडियन्स, उनके स्टैं. टा. का G.M.T. और भा. स्टैं. टा. से अन्तर ।
4. 0° से 60° अक्षांश तक के दैनिक सूर्योदयास्तकाल। उत्तर एवम् दक्षिण अक्षांशीय नगरों का स्वदेशीय स्टैं. टा. में सूर्योदयास्तकाल जानने की सोदाहरण विधि ।
5. विदेश में उत्पन्न जातक की जन्मपत्री बनाने की सोदाहरण विस्तृत, सरल विधि।
6. प्राचीन एवम् नवीन पद्धतियों से पंचांगपरिवर्तन का विस्तृत विवेचन और तत्सम्बद्ध अनेक सारणियां ।
7. इष्टकालिक सूर्यादि ग्रह स्पष्ट करने की अनेक सरल पद्धतियों का सोदाहरण निर्देश एवम् तदर्थ अनेक मौलिक सारणियां।
8. 'अन्तर्न्यास पद्धति' द्वारा चन्द्र एवम् बुध जैसे द्रुतगति ग्रहों को सूक्ष्मतापूर्वक इष्टकालिक बनाने की नवीन प्रकिया को अत्यन्त सरल बना देने वाली सारणियां और उनका सोदाहरण स्पष्टीकरण।
9. प्राचीनपद्धति (इष्टकाल और स्पष्टसूर्य) से इष्टकालिक लग्न स्पष्ट करने के लिए सम्पूर्ण भारत (8° से 35° अक्षांश) की आधा–आधा अक्षांशान्तर पर लग्नसारणियां एवम् सोदाहरण विस्तृत स्पष्टीकरण।
10. नवीन पद्धति (साम्पातिककाल पद्धति) से लग्नसाधन के लिए अखिलभारतीय लग्नसारणियां। सन् 1900 से 2050 ई. तक का सूक्ष्म साम्पातिककाल एवम् अयनांश तथा तदनुसार लग्नसाधन की सोदाहरण विधि।
11. समस्त भारत के नगरों के लिए मेषादि लग्नों का प्रारम्भकाल बतलाने वाली तीन अद्भुत मौलिक सारणियां, जिनकी मदद से भारत के किसी भी नगर/ग्राम में किसी भी दिन अभीष्ट लग्न का प्रारम्भकाल (भा.स्टैं. टा.) 2 मिनटों में ही केवल मौखिक जोड़–घटाव द्वारा जाना जा सकता है। अनेकों उदाहरण दिए गए हैं।
12. ***सन् 1941 से 2050 ई. तक (110 वर्षों) का चन्द्रसहित सभी ग्रहों का सूक्ष्म राशिप्रवेशकाल (भा. स्टैं. टा.) 92 पृष्ठों पर दिया गया है। ऊपर (नं. 11) में निर्दिष्ट विधि से जन्मस्थानीय लग्न जानकर ग्रहों के इस राशिप्रवेशकाल द्वारा 110 वर्ष की इस अवधि में उत्पन्न जातक की जन्मकुण्डली बनाने में 2–3 मिनट से अधिक समय नहीं लगता।***
13. ***220 पृष्ठों पर सन् 1941 से 2050 ई. तक के तिथि–नक्षत्र और योगों का अत्यन्त सूक्ष्म दैनिक समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.) दिया गया है। चैत्रादि चान्द्रमास और कृष्ण–शुक्लपक्षों का स्पष्ट निर्देश है। विक्रमी संवत्सर भी अंकित है।***
14. ***220 पृष्ठों पर नितान्त सूक्ष्म दैनिक स्पष्ट सूर्य और चन्द्रमा विकलान्त दिए गए हैं।***

(कृपया पन्ना उलटिए)

(गत पृष्ठ के विज्ञापन का शेष)

15. **110 पृष्ठों पर साप्ताहिक स्पष्ट मंगल बुध, गुरु, शुक्र, शनि एवम् राहु के राश्यादि मान दिए गए हैं। यहां एक विशेष कोष्ठक भी दिया गया है, जिसकी मदद से साप्ताहिक स्पष्ट ग्रह को अनायास ही इष्टकालिक बनाया जा सकता है।**
16. सन् 1941 से 2050 ई. तक की अवधि में कौन सा ग्रह कब वक्री व मार्गी हुआ, इसका भी स्पष्ट निर्देश किया गया है।
17. सन् 2001 से 2050 ई. तक के सूर्य–चन्द्रग्रहणों की सूचि, जिसमें इस पचास वर्ष की अवधि में भूगोल पर घटित होने वाले कंकण,खग्रास एवम् खण्डग्रास सूर्य–चन्द्रग्रहणों की तारीखें दी गईं हैं।
18. सन् 2001 से 2050 ई. तक की अवधि में गुरु एवम् शुक्र के अस्तोदय (लोप–दर्शन) की तारीखें।
19. सन् 2001 से 2050 ई. तक के 50 वर्षों में पड़ने वाले श्रीरामनवमी, जन्माष्टमी, दीपमाला आदि प्रमुख–प्रमुख मासिक पर्व, एवम् प्रयाग, हरिद्वार ,नासिक तथा उज्जैन के कुम्भपर्व आदि की तारीखें।

पाठकों को यह जान लेना चाहिए, कि इस ग्रन्थ में दिए गए उल्लिखित ग्रहराशि–चार, तिथ्यादि एवम् ग्रहों के भोगांशों (स्पष्ट राश्यादि) की गणित दृक्सिद्ध गणनानुसारी है। इनकी गणना (Calculation) में सभी अपेक्षित सूक्ष्मसंस्कार समाविष्ट किए गए हैं, अतः इनकी तुलना किसी भी वैदेशिक Nautical Almanacs, Ephemeris के ग्रहभोगांशादि से की जा सकती है। इस प्रकार की सूक्ष्मतम गणना पर आधारित 110 वर्ष के तिथ्यादि, ग्रहभोगांशों का मुद्रित संग्रह, जहां तक हमें मालूम है, भारत में आजतक प्रकाशित नहीं हुआ हैं।

यह भी बतला देना आवश्यक है, कि ग्रहराशिचार, तिथ्यादि और ग्रहभोगांश, जो इस पुस्तक में दिए गए है, उनकी गणित और मुद्रण दोनों कम्प्यूटर द्वारा किए गए हैं, जिससे इनमें मुद्रण या अन्य किसी भी प्रकार की तनिक भी अशुद्धि की आशंका नहीं होनी चाहिए।

इस प्रकार पाठक समझ गए होंगे कि गणकमार्त्तण्ड ज्योतिष के क्षेत्र में एक आसामान्य कृति है।

इसका मुद्रण अच्छे, उत्कृष्टकोटि के पेपर पर फोटोटाईप सेटिंग (PhotoTypesetting) द्वारा किया है। दोनों भाग (जिल्दें) आकर्षक, बहुरंगे, मज़बूत, बहुमूल्य टाईटिल में निबद्ध हैं।

इस ग्रन्थ का वास्तविक (मुद्रित) मूल्य Rs 1000/– (एक हजार रुपए) है, लेकिन श्रीमार्त्तण्डपंचांग की हीरकजयन्ती के उपलक्ष्य में हम अपने पाठकों को इस पर 30 प्रतिशत की छूट देंगे, जिससे इसका मूल्य Rs 700/– होगा। इस पर डाकव्यय Rs.60/– ग्राहक को अलग से देना होगा। इस प्रकार डाक से मंगाने वाले ग्राहकों को यह ग्रन्थ Rs 760/– में पड़ेगा। **ध्यान रहे , यह छूट केवल 21 जून 2002 ई. तक ही दी जाएगी। इसके बाद ग्राहक को इसका वास्तविक मूल्य Rs 1000/– (एक हजार रुपए) देना होगा।** पुस्तक का मूल्य M.O. द्वारा नीचे लिखे पते पर भेजिए। ''श्रीमती वीना चतुर्वेदी'' के नाम D.D. भी भेजा जा सकता है। **ध्यान रहे ,** V.P.P. से पुस्तक कदापि नहीं भेजी जाएगी।

ग्राहकों को सूचित किया जाता है, कि **यह पुस्तक केवल हमारे यहां से निम्न पते पर ही उपलब्ध हो सकेगी।**

पुस्तक का मूल्य (21 जून 2002 ई. तक) – Rs. 700/- + डाक व्यय Rs. 60/-
पुस्तक का मूल्य (21 जून 2002 ई. के बाद) – Rs. 1,000/- + डाक व्यय Rs. 60/-

पृष्ठ संख्या 826 **साईज 24×18 सें. मी.** ('श्रीमार्त्तण्डपंचांग' के बराबर)

M.O. या D.D. भेजने के बाद पुस्तक प्रेषणार्थ हमें कृपया एक मास का समय अवश्य दीजिए।
ग्राहकों को अपना पता अपने नगर के पिन कोड के साथ साफ–साफ लिखना चाहिए।

Phone 0172-565303

श्रीमती वीना चतुर्वेदी,
अभिजित् प्रकाशन,
59/6 (अभिजित्),
P.O पंचकूला (हरि.), Pin - 134109

विश्व के नगरों का सूर्योदयास्तकाल

आज के इस वैज्ञानिक युग में जहां वायुयान जैसे द्रुतगति वाहनों ,रेडियो, टी. वी. Wireless, Fax आदि के प्रयोग ने राष्ट्र के नगरों, ग्रामों की दूरी को लगभग समाप्त ही कर डाला है, वहां स्थानीयकाल (या स्थानीय मध्यमकाल L.M.T.) का प्रयोग अनेक समस्याएं उत्पन्न करता है। क्योंकि यह काल प्रत्येक स्थान (नगर–ग्राम) के लिए लगभग भिन्न–भिन्न होता है अतः आज के वैज्ञानिक नक्षत्रविदों ने एक ऐसे काल का सिद्धान्त अपनाया है जो एक राष्ट्र के नगरों, ग्रामों मे एकरूप में प्रयुक्त होता है। इसी काल को स्टैण्डर्ड टाईम का नाम दिया गया है। अब विश्व के सभी राष्ट्रों मे स्टैं. टा. (स्टैण्डर्ड टाईम) का ही सर्वत्र प्रयोग होता है। प्रत्येक राष्ट्र अपने क्षेत्र(Area) के किसी लगभग मध्यस्थान (केन्द्रस्थल) के स्थानीयकाल(स्था.म.का.) को, जिसे उस देश का स्टैण्डर्ड टाईम कहा जाता है, अपने समस्त प्रान्तों, नगरों, ग्रामों में सभी जगह एकरूप में प्रयोग में लाता है और उसी काल को उस देश की सभी घड़ियां बतलाती हैं। जैसे–भारत का केन्द्रस्थल, जहां का स्था. म. का. (स्थानीय मध्यमकाल) पूरे भारत में भा. स्टैं. टा. के रूप में प्रयुक्त होता है, 82° / 30′ (पूर्व) रेखांश वाला स्थल है। जिस स्थल का स्था. म. का. स्टैण्डर्ड टाईम के रूप में इस्तेमाल किया जाता है , उस स्थल के रेखांश (Longitude) को उस देश की स्टैण्डर्ड मेरिडियन (Standard Meridian) कहा जाता है । इस प्रकार भारत की स्टैण्डर्ड मेरिडियन का रेखांश 82°/ 30′ (पूर्व) है।

क्योंकि सभी जनव्यवहार स्टैं. टा. के अनुसार ही होता है, रेलगाड़ियां, वायुयान, टी.वी., रेडियो, आफिस, कालेज, स्कूल आदि से सम्बद्ध शत प्रतिशत कालव्यवहार में इसी (स्टैं.टा.) को ही सरकार एवं जनसाधारण प्रयोग में लाते हैं, अतः यह भी आवश्यक है कि सूर्योदय, सूर्यास्त को बतलाने वाला काल भी, भले ही वह किसी स्थान (नगर, ग्राम) विशेष से ही सम्बन्ध रखता है, इसी स्टैं. टा. में ही प्रयुक्त किया जाए, अन्यथा इस के लिए स्था.म.का. को प्रयुक्त करने पर इसके (सूर्योदयास्त के) काल का स्टैं.टा. से (जिसे हमारी सभी घड़ियां बतलाती हैं) समन्वय (co-ordination) नहीं हो पाएगा। उदाहरणार्थ – यदि हम प्रत्येक नगर–ग्राम का सूर्योदय, सूर्यास्त उस नगर–ग्राम के स्थानीयकाल में ही इस्तेमाल करने लग जाएं तो हम स्टैं. टा. बतलाने वाली अपनी घड़ी से उस काल को समझ नहीं सकेंगे; अतः सूर्योदय, सूर्यास्त जैसी स्थानीय घटनाओं को भी हम स्टैं. टा. में ही प्रकट करते हैं, ताकि हम इन स्थानीय आकाशीय घटनाओं के काल को भी अपनी इन (स्टैं. टा. बतलाने वाली) घड़ियों से जान सकें । प्रत्येक देश में रहने वाले लोगों द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली घड़ियां उस देश के स्टैं. टा. को ही बतलाया करती हैं,– यह ध्यान में रखें । जैसे–भारतीय जनता द्वारा प्रयोग में लाई जा रही घड़ियां भा.स्टैं.टा. को और जापान की जनता द्वारा प्रयोग में लाई जा रही घड़ियां जापानी स्टैं. टा. को बतलाती हैं।

विश्व के किसी भी नगर का सूर्योदय, सूर्यास्तकाल स्टैं. टा. में जानने के लिए सबसे पहले हमें निम्नलिखित तीन पदार्थ ज्ञात होने चाहिएं–

(1) अभीष्ट नगर के अक्षांश,रेखांश ।
(2) अभीष्ट नगर, जिस देश में स्थित है, उस देश की स्टैण्डर्ड मेरिडियन।
(3) अभीष्ट नगर का स्टैण्डर्ड अन्तर ।

इन तीनों पदार्थों को ज्ञात करने का प्रकार यह है :–

(1) **नगर के अक्षांश–रेखांश** :– अपने अभीष्ट नगर के अक्षांश–रेखांश किसी प्रामाणिक एटलस से ज्ञात करने होंगे। इसके लिए ऑक्सफोर्ड , मैकमिलन, Britannica,या Philip's आदि के एटलसों का प्रयोग किया जा सकता है। इन एटलसों के अन्त में विश्व के प्रसिद्ध–प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांशों की सूची दी रहती है।यहां हमने पृष्ठ 301से 331तक भारत के लगभग सभी प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश दिए हैं। पृष्ठ 332 और 336पर विदेशी प्रसिद्ध कुछ नगरों के अक्षांश, रेखांश भी दिए गए हैं।

(2) **देश की स्टैण्डर्ड मेरिडियन** :– यहां हमने पृष्ठ 337पर 'स्टैण्डर्ड मेरिडियन सारणी' दी है। इसमें विश्व के खास–खास अनेक देशों के स्टैण्डर्ड मेरिडियनों के रेखांश दिए गए हैं। इससे अपने अभीष्ट देश की स्टै. मेरिडियन के रेखांश ज्ञात कर लें । जैसे–जापान की स्टैण्डर्ड मेरिडियन के रेखांश, जैसा कि सारणी में लिखा है, 135 अंश 00 कला (पूर्व) हैं। अर्थात् जापान में सर्वत्र प्रयोग में लाया जाने वाला जापानी स्टैं. टा. इसी रेखांश वाले स्थान का स्था.म.का. है।

अमेरिका, कनाडा, आस्ट्रेलिया आदि बड़े–बड़े देशों को सुविधार्थ चार–चार, पांच–पांच आदि कालक्षेत्रों (Time Zones)में बांटा गया है। इन कालक्षेत्रों में अलग–अलग स्टैं.टा. प्रयोग में आते हैं। जैसे– अमेरिका 4 कालक्षेत्रों में बंटा है। इन कालक्षेत्रों में इस्तेमाल होने वाले कालों (स्टैं.टा.) के नाम ये हैं :–

(1) E.T.(Eastern Time)
(2) C.T. (Central Time)
(3) M.T. (Mountain Time)
(4) P.T. (Pacific Time)

यहां दी गई 'स्टैण्डर्ड मेरिडियन सारणी' में इन बड़े देशों के कालक्षेत्रों की स्टैण्डर्ड मेरिडियनों के रेखांश अलग–अलग दिए गए हैं। किस कालक्षेत्र में कौन–कौन से नगर/प्रदेश पड़ते हैं, यह जानना भी जरूरी है। जैसे–अमेरिका के कैलिफोर्निया, नेवाड़ा आदि राज्य 'P.T.' कालक्षेत्र में और डेलविअर, फ्लोरिडा आदि 'E.T.' कालक्षेत्र मे पड़ते हैं। सभी बड़े देशों (अमेरिका, कनाडा, आस्ट्रेलिया आदि) के भिन्न–भिन्न कालक्षेत्रों में पडने वाले प्रदेशों का विस्तृत विवरण हमने अपनी **'विश्वलग्न सारणी'** पुस्तक में दिया है। इन बड़े देशों मे उत्पन्न बच्चे की जन्मपत्री

आदि बनाने हेतु वहां के सूर्योदयास्त आदि का स्टैं. टा. जानने के लिए यह ज्ञात करना जरूरी है कि वह नगर उस बड़े देश के किस कालक्षेत्र ' में पड़ता है। उसका कालक्षेत्र जानकर उस कालक्षेत्र की स्टैण्डर्ड मेरिडियन के रेखांश ' स्टैण्डर्ड मेरिडियन सारणी ' से ज्ञात कर लेने चाहिएं। **जैसे**–कोई बच्चा न्यूयार्क (अमेरिका) में उत्पन्न हुआ है। न्यूयार्क E.T. (ईस्टर्न टाईम) वाले कालक्षेत्र में पड़ता है, अतः इस बच्चे की जन्मपत्री बनाने के लिए ' स्टैण्डर्ड मेरिडियन सारणी ' से इस नगर के कालक्षेत्र (E.T.) की स्टैण्डर्ड मेरिडियन के रेखांश 75°/00' (प.) लेने होंगे। स्टैं. टा. में न्यूयार्क का सूर्योदयास्त जानने के लिए इसी को प्रयोग में लाया जाएगा । इस ' स्टैण्डर्ड मेरिडियन सारणी 'में यह भी बतलाया गया है कि इस देश या देश के कालक्षेत्र के टाईम से भा. स्टैं. टा. कितना आगे (+)या पीछे (–) रहता है। इन कालक्षेत्रों के किसी भी नगर में उत्पन्न बच्चे का जन्मकाल (E.T.,P.T. आदि) बतलाने वाला व्यक्ति यह भी आपको (दैवज्ञ को) बतलाएगा (अथवा आप स्वयं भी उससे यह पूछ सकते हैं) कि बच्चे के जन्म का यह विदेशीकाल भा. स्टैं. टा. से कितना आगे या पीछे रहता है। यह ज्ञात हो जाने पर आप 'स्टैण्डर्ड मेरिडियन सारणी' में दिए गए उस विदेशी काल और भा.स्टैं.टा. के अन्तर से यह जान सकेंगे कि उस बच्चे के जन्म का समय उस देश के किस कालक्षेत्र का है। उदाहरणार्थ – मान लीजिए–कोई बच्चा अमेरिका के सेनफ्रांसिस्को (कैलिफोर्निया) में उत्पन्न हुआ। कैलिफोर्निया अमेरिका के किस कालक्षेत्र में पड़ता है , यह हमें मालूम नहीं है। लेकिन यह हमें ज्ञात है कि सेनफ्रांसिस्को में इस्तेमाल होने वाला टाईम भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम से 13 घण्टा 30 मिनट पीछे है। इतना ज्ञात होने से हमें मालूम हो जाएगा, कि सेनफ्रांसिस्को शहर "P.T."(Pacific Time) के कालक्षेत्र में है, क्योंकि यहां दी गई 'स्टैण्डर्ड मेरिडियन सारणी' में लिखा है कि अमेरिका देश के "P.T."कालक्षेत्र के टाईम से भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम 13 घण्टा 30 मिनट आगे है।

(3) **नगर का स्टैण्डर्ड अन्तर** :–अभीष्ट देश या कालक्षेत्र के स्टैण्डर्ड मेरिडियन ज्ञात हो जाने पर उस देश या कालक्षेत्र के किसी भी नगर का " स्टैण्डर्ड अन्तर " जानना आसान है। अभीष्ट नगर के रेखांश और उस नगर के देश या कालक्षेत्र की स्टैण्डर्ड मेरिडियन के रेखांशों का अन्तर करने पर जो अंश–कलाएं मिलें, उन्हें 4 से गुणा करें। गुणनफल मिनट और सेकण्ड होंगे। (अंशों को 4 से गुणा करने पर मिनट और कलाओं को 4 से गुणा करने पर सैकण्ड मिलेंगे)।

जैसे–टोकियो(जापान) का स्टैण्डर्ड अन्तर ज्ञात करना है । टोकियो के रेखांश 139 अंश 33 कला (पूर्व) हैं और स्टैण्डर्ड मेरिडियन सारणी में जापान की स्टैण्डर्ड मेरिडियन के रेखांश 135 अंश 00 कला (पूर्व) हैं। इन दोनों रेखांशों का अन्तर 4 अंश 33 कला है । इसे 4 से गुणा करने पर 18 मिनट 12 सेकण्ड मिले। यह टोकियो का स्टैं. अन्तर है। यदि नगर स्टैण्डर्ड मेरिडियन से पूर्व में है तो उसका स्टैण्डर्ड अन्तर धन (+) चिह्न वाला अन्यथा ऋण (–) चिह्न वाला होगा। नगर स्टैण्डर्ड मेरिडियन से पूर्व में है या पश्चिम में, इसका निर्णय मानचित्र(नक्शा) देखकर किया जा सकता है। वैसे इसे जानने का दूसरा प्रकार यह भी है– यदि नगर के रेखांश पूर्व दिशा वाले हैं और वे रेखांश स्टैण्डर्ड मेरिडियन के रेखांश से अधिक हों तो वह नगर स्टैण्डर्ड मेरिडियन से पूर्व में होगा, अन्यथा पश्चिम में। पश्चिम रेखांश वाले नगरों के लिए इससे उलटा समझना चाहिए। इस नियम से स्पष्ट है कि टोकियो अपने देश (जापान) की स्टैण्डर्ड मेरिडियन से पूर्व में है, क्योंकि इसके रेखांश पूर्व हैं और ये जापान की स्टैण्डर्ड मेरिडियन से अधिक हैं अतः इसका स्टैण्डर्ड अन्तर धन (+)चिह्न वाला होगा ।

स्टैण्डर्ड अन्तर जानने का एक और उदाहरण – उस नगर का ले लेते हैं, जो अनेक कालक्षेत्रों में बंटी अमेरिका का है। हम यहां लॉसएंजलस का स्टैं. अन्तर निकालेंगे। यह शहर अमेरिका के कैलिफोर्निया स्टेट में स्थित है। इस स्टेट में "P.T." (Pacific Time) प्रयोग में आता है। अर्थात् यह नगर "P.T." कालक्षेत्र में पड़ता है। 'स्टैण्डर्ड मेरिडियन सारणी' में "P.T." कालक्षेत्र की स्टैण्डर्ड मेरिडियन के रेखांश 120 अंश 00 कला (प.) हैं । लॉसएंजलस के रेखांश 118 अंश 17 कला (प.) हैं। इन दोनों का अन्तर 1 अंश 43 कला है। इसे 4 से गुणा करने पर 6 मिनट 52 सेकण्ड मिले । यह लॉसएंजलस का स्टैं. अन्तर है। क्योंकि लॉसएंजलस अपने कालक्षेत्र की स्टैं. मेरिडियन से पूर्व में स्थित है, अतः इसके स्टैं. अन्तर का चिह्न **धन (+)**होगा।

यहां हमने 'स्थानीय मध्यम काल' (L.M.T.) और क्षेत्रीय स्टैं. टा. के अन्तर को 'स्टैण्डर्ड अन्तर' की संज्ञा दी है। भारत के सभी प्रसिद्ध नगरों के स्टैं. अन्तर पृष्ठ 301 पर तथा विदेशों के प्रसिद्ध नगरों के पृष्ठ 332 पर दिए गए हैं।

स्टैं. टा. में सूर्योदयास्तकाल जानना

उपरोक्त तीन पदार्थ (अक्षांश, स्टैं. मेरिडियन, स्टैं. अन्तर) ज्ञात हो जाने पर अभीष्ट नगर का सूर्योदय एवं सूर्यास्तकाल उस देश या कालक्षेत्र के स्टैं. टाईम में नीचे लिखे प्रकार से सरलतापूर्वक जाना जा सकता है।

यहां पृष्ठ 280 से 297 तक विश्व के सभी अक्षांशों के दैनिक सूर्योदय और सूर्यास्त का स्थानीय मध्यमकाल (स्था. म. का.) बतलाने वाली सूर्योदय एवं सूर्यास्तसारणी दी गई है। इसमें कुछ सूर्योदयास्तकाल 10–10 अक्षांशों के अन्तर पर और कुछ 5–5 तथा अन्य 2–2 अक्षांशो के अन्तर पर दिए गए हैं। इस सारणी से आप अपने अभीष्ट अक्षांश का सूर्योदय–सूर्यास्त मौखिक त्रैराशिक (अनुपात) द्वारा ज्ञात कर सकते हैं।

इस सारणी से प्राप्त होने वाला सूर्योदय–सूर्यास्तकाल स्था.म.का. में होगा, जो जनव्यवहार में नहीं आता। अतः इनमें स्टैं. अन्तर का संस्कार (जोड़, घटाव) करके उन्हें स्टैं. टाईम मे बदलना जरूरी है। क्योंकि जनव्यवहार में सभी जगह स्टैं. टाईम से ही काम होता है, अतः हमारी घड़ियां भी हमेशा स्टैं. टा. ही बतलाती हैं। यदि अभीष्ट नगर का स्टैण्डर्ड अन्तर धन (+) चिह्न वाला है तो उसे सूर्योदय, सूर्यास्त के स्था. म. का. में से घटाने अन्यथा जोड़ने पर सूर्योदय, सूर्यास्तकाल स्थानीय (उस देश / कालक्षेत्र की) स्टैं. टा. में बदल जाएंगे।

सूर्योदय, सूर्यास्त के इस स्टैं टाईम में एक और छोटा सा संस्कार करना होगा। यहां पृष्ठ 298 पर एक **'सूर्य केन्द्र उदयास्त संस्कार–**

–सारणी ' दी गई है। इस सारणी से अपनी अभीष्ट तारीख, मास और नगर के अक्षांशों द्वारा संस्कार–मिनट प्राप्त करें। इन्हें सूर्योदयकाल में जोड़ें और सूर्यास्तकाल में से घटाएं। इस प्रकार प्राप्त होने वाला सूर्योदय–सूर्यास्तकाल ज्योतिष–शास्त्रीय (जन्मपत्र आदि की) गणित में इस्तेमाल करने योग्य हो जाएगा, इसी सूर्योदय–सूर्यास्त से जन्मकालिक इष्टकाल आदि बनाना चाहिए।

इस उपरोक्त विधि से उत्तर अक्षांश वाले नगरों का सूर्योदय, सूर्यास्तकाल ज्ञात होता है। दक्षिणी अक्षांश वाले स्थलों का सूर्योदयास्तकाल जानने के लिए पृष्ठ २९९और ३००पर दिया गया कोष्ठक प्रयोग में लाइए। जिस तारीख के लिए दक्षिण अक्षांशीय नगर का सूर्योदयास्त जानना है, उस 'दक्षिण अक्षांशीय तारीख' के आगे इस कोष्ठक में लिखी 'उ. अक्षांशीय तारीख ' का सूर्योदयास्त पृष्ठ २८० से ज्ञात कर लें। इसमें इस कोष्ठक से प्राप्त संस्कार के मिनटों को चिह्नानुसार जोड़ने या घटाने से आपकी अभीष्ट तारीख का अभीष्ट द. अक्षांशीय नगर के सूर्योदयास्त का स्था.म.का. ज्ञात हो जाएगा। इसमें अभीष्ट नगर के स्टैण्डर्ड अन्तर का संस्कार (जोड़–घटाव) पूर्वोक्तवत् कर देने पर सूर्योदयास्त का स्था. म. काल, स्टैं. टा. में बदल जाएगा। इनमें 'सूर्यकेंद्रोदयास्त संस्कार सारणी' से प्राप्त मिनटों का भी उपरोक्त प्रकार से संस्कार करना होगा।

स्पष्टता के लिए हम नीचे कुछ उदाहरण दे रहे हैं—

उदाहरण (1) :–लुधियाना (पंजाब) में 1 मार्च को भा. स्टैं. टा. के अनुसार सूर्योदय और सूर्यास्तकाल जानना है। लुधियाना के अक्षांश 30°–55' (उ.) और रेखांश 75°– 54' (पू) तथा स्टैं. अन्तर –26 मि. 24 से. है। 1 मार्च को अक्षांश 30°–55' (उ.) का सूर्योदय 6 घं. 27 मि. 43 से. और सूर्यास्त 17 घं. 57 मि. 27 से. , सूर्योदय–सूर्यास्तसारणी (पृ.२८०) से प्राप्त किये, ये स्था. म. का. में हैं । लुधियाना का स्टैं. अन्तर 26 मि. 24 से. **ऋण (–)** है। अतः स्था. म. का. वाले सूर्योदय एवं सूर्यास्तकाल में इसे चिह्न के विपरीत जोड़ देने पर 6 घं 54 मि. 7 से. और 18 घं. 23 मि. 51 से. मिले, जो लुधियाना में 1 मार्च को भा. स्टैं. टा. के अनुसार क्रमशः सूर्योदय एवं सूर्यास्तकाल हैं। 'सूर्योकेंद्रोदयास्त संस्कारसारणी' (पृ. 298) से 1 मार्च को 30° अक्षांश का संस्कार 3 मि. 41 से. मिला, इसे सूर्योदयकाल में जोड़ने और सूर्योस्तकाल में से घटा देने पर 6 घं. 57 मि. 48से. और 18 घं. 20 मि.10 से. मिले। जो ज्योतिषशास्त्रीय (इष्टकाल/लग्नादि साधन के लिए उपयोगी) सूर्योदय एवं सूर्यास्तकाल हैं।

उदाहरण (2) :– काबुल (अफगानिस्तान) में 10 अप्रैल को सूर्योदय–सूर्यास्तकाल (अफगान स्टैं. टा.) में जनना है। काबुल के अक्षांश 34 अंश 33 कला (उत्तर) और रेखांश 69 अंश 12 कला (पूर्वी) हैं। काबुल का स्टैं. अन्तर +6 मिनट 48 से. है (काबुल का यह स्टैं. अं. काबुल के रेखांश और अफगानिस्तान की स्टैं. मेरिडियन के रेखांशों के अन्तर से पूर्वोक्त विधि द्वारा बनाया गया है)। सूर्योदयास्तसारणी से 10 अप्रैल को 34 अंश 33 कला का सूर्योदय 5 घं. 36 मि. 27 से. और सूर्यास्त 18 घं. 27 मि. 38 से. मिला । यह **स्था. मध्यमकाल** है। इसमें से काबुल का स्टैं. अन्तर 6 मि. 48 से. **धन (+)** होने से चिह्न के विपरीत घटाया, तो 5 घं. 29 मि. 39 से. और 18 घं. 20 मि. 50 से. क्रमशः सूर्योदय एवं सूर्यास्तकाल हुए। **'सूर्यकेन्द्रोदय संस्कारसारणी'** से काबुल के अक्षांश 35 अंश और 10 अप्रैल द्वारा प्राप्त 3 मि. 52 से. सूर्योदय में जोड़ने और सूर्यास्त में से घटाने पर काबुल में 10 अप्रैल को 5 घं. 33 मि. 31 से. और 18 घं. 16 मि. 58 से. क्रमशः सूर्योदय एवं सूर्यास्तकाल प्राप्त हुए। यह काल अफगानिस्तान के स्टैं. टाईम में है।

उदाहरण (3) :– न्यूयार्क (U.S.A.) में 1 मार्च को सूर्योदयास्तकाल ज्ञात करना है।न्यूयार्क के अक्षांश 40°/43'(उ.) रेखांश 74°/00' (प.) हैं। न्यूयार्क (अमेरिका) E.T. (Eastern Time) वाले कालक्षेत्र में पड़ता है। **E.T.** के कालक्षेत्र की स्टैं. मेरिडियन के रेखांश 75°।00' (प.) हैं। न्यूयार्क और E.T. की स्टैण्डर्ड मेरिडियन के रेखांशों का अन्तर 1 अंश 0 कला है। इसे 4 से गुणा करने पर 4 मि. 00 से. न्यूयार्क का स्टैण्डर्ड अन्तर हुआ। न्यूयार्क शहर E.T. (Eastern Time) की स्टैण्डर्ड मेरिडियन के रेखांश से पूर्व में स्थित है। इसलिए इसका स्टैं. अन्तर **धन (+)** चिह्न वाला होगा।

अब सूर्योदयास्तसारणी से अक्षांश 40 अंश 43 कला और तारीख 1 मार्च द्वारा सूर्योदय एवं सूर्यास्तकाल क्रमशः 6 घं. 35 मि. 43 से. और 17 घं. 50मि. 17 से. प्राप्त किए। इनमें न्यूयार्क का स्टैण्डर्ड अन्तर +4 मिनट चिह्न के विपरीत घटाने पर सूर्योदय और सूर्यास्तकाल क्रमशः 6 घं. 31 मि. 43 से. तथा 17 घं. 46 मि. 17 से. हुए। न्यूयार्क के अक्षांश 41° और 1 मार्च द्वारा 'केन्द्रोदय संस्कार सारणी' से प्राप्त 4 मि. 14 से. उपरोक्तनियमानुसार सूर्योदयकाल में जोड़ने और सूर्यास्तकाल में घटाने पर ज्योतिषगणितोपयोगी सूर्योदय एवं सूर्यास्त क्रमशः 6 घं. 35 मि. 57 से. तथा 17 घं. 42 मि. 03 से. हुए। ये काल E.T. (Eastern Standard Time) में हैं।

उदाहरण (4) नैरोबी (केन्या, पूर्वी अफ्रीका) में 6 मई को सूर्योदय सूर्यास्तकाल (केन्या स्टैं. टाईम में) जानना है। नैरोबी के अक्षांश 1°/18' (द.) और रेखांश 36°/ 52' (पू.) हैं। इसका स्टैं. अं. –32 मि. 32 से. है। सूर्योदयास्तसारणी से 1 अंश 18 कला अक्षांश और 8 नव.से सूर्योदय और सूर्यास्त क्रमशः 5 घं. 41 मि. 34 से. और 17 घं. 45 मि. 26 से. मिले। (ध्यान दें, क्योंकि नैरोबी के अक्षांश दक्षिण दिशा के हैं, अतः पृष्ठ पर दी गई '' दक्षिण अक्षांशीय सूर्योदयास्तसाधन सहायक सारणी'' के अनुसार यहां 6 मई के स्थान पर 8 नवं. को प्रयोग में लाया गया है।) अतः इन दोनों उदयास्तकालों में 6 मई का दक्षिण अक्षांश सस्कार +13 मि. चिह्नानुसार जोड़ा तो उदय और अस्तकाल क्रमशः 5 घं. 54 मि. 34 से. और 17 घं. 58मि. 26 से. हुए। इनमें नैरोबी का स्टैण्डर्ड अन्तर –32मि. 32 से. चिह्न के विपरीत जोड़ने पर 6 घं. 27 मि. 6 से. और 18 घं. 30 मि. 58 से. केन्या स्टै. टा. में क्रमशः उदय एवं अस्तकाल हुए। इनमें नैरोबी के अक्षांश 1 अंश और 6 मई द्वारा ''सूर्य–केन्द्रोदयास्त संस्कारसारणी'' से प्राप्त 3 मि. 17 से. उदयकाल में जोड़ने और अस्तकाल में से घटाने पर 6 घं. 30 मि. 23 से. और 18 घं. 27 मि. 41 से. नैरोबी मे 6 मई को लग्नादि साधनोपयोगी सूर्योदय एवं सूर्यास्तकाल निकल आए।

सूर्योदय सारणी

सूर्योदय काल (स्था. म. का.) (बिम्बशीर्ष दृश्य)

अक्षांश / तारीख	0° घं. मि.	+10° घं. मि.	+20° घं. मि.	+30° घं. मि.	+35° घं. मि.	+40° घं. मि.	+45° घं. मि.	+50° घं. मि.	+52° घं. मि.	+54° घं. मि.	+56° घं. मि.	+58° घं. मि.	+60° घं. मि.
जन. 1	5 59	6 17	6 35	6 56	7 08	7 22	7 38	7 59	8 08	8 19	8 32	8 46	9 03
2	6 00	6 17	6 35	6 56	7 08	7 22	7 39	7 59	8 08	8 19	8 32	8 46	9 03
3	6 00	6 18	6 36	6 56	7 08	7 22	7 39	7 59	8 08	8 19	8 31	8 46	9 02
4	6 01	6 18	6 36	6 57	7 09	7 22	7 39	7 59	8 08	8 19	8 31	8 45	9 02
5	6 01	6 18	6 36	6 57	7 09	7 22	7 38	7 58	8 08	8 18	8 30	8 44	9 01
6	6 02	6 19	6 36	6 57	7 09	7 22	7 38	7 58	8 08	8 18	8 30	8 44	9 00
7	6 02	6 19	6 37	6 57	7 09	7 22	7 38	7 58	8 07	8 18	8 30	8 43	8 59
8	6 03	6 19	6 37	6 57	7 09	7 22	7 38	7 58	8 07	8 17	8 29	8 42	8 58
9	6 03	6 20	6 37	6 57	7 09	7 22	7 38	7 57	8 06	8 16	8 28	8 42	8 57
10	6 04	6 20	6 37	6 57	7 09	7 22	7 38	7 57	8 06	8 16	8 28	8 41	8 56
11	6 04	6 20	6 38	6 57	7 09	7 22	7 37	7 56	8 05	8 15	8 27	8 40	8 55
12	6 04	6 20	6 38	6 57	7 09	7 22	7 37	7 56	8 05	8 14	8 26	8 39	8 54
13	6 05	6 21	6 38	6 57	7 08	7 21	7 36	7 55	8 04	8 14	8 25	8 38	8 52
14	6 05	6 21	6 38	6 57	7 08	7 21	7 36	7 54	8 03	8 13	8 24	8 36	8 51
15	6 06	6 21	6 38	6 57	7 08	7 21	7 36	7 54	8 02	8 12	8 23	8 35	8 50
16	6 06	6 21	6 38	6 57	7 08	7 20	7 35	7 53	8 02	8 11	8 22	8 34	8 48
17	6 06	6 22	6 38	6 57	7 08	7 20	7 34	7 52	8 01	8 10	8 21	8 33	8 47
18	6 07	6 22	6 38	6 56	7 07	7 19	7 34	7 51	8 00	8 09	8 19	8 31	8 45
19	6 07	6 22	6 38	6 56	7 07	7 19	7 33	7 50	7 59	8 08	8 18	8 30	8 43
20	6 07	6 22	6 38	6 56	7 06	7 18	7 32	7 49	7 58	8 06	8 17	8 28	8 42
21	6 08	6 22	6 38	6 56	7 06	7 18	7 32	7 48	7 57	8 05	8 15	8 27	8 40
22	6 08	6 22	6 38	6 56	7 06	7 17	7 31	7 47	7 56	8 04	8 14	8 25	8 38
23	6 08	6 23	6 38	6 55	7 05	7 17	7 30	7 46	7 54	8 03	8 12	8 23	8 36
24	6 08	6 23	6 38	6 55	7 05	7 16	7 29	7 45	7 53	8 01	8 11	8 22	8 34
25	6 09	6 23	6 38	6 54	7 04	7 15	7 28	7 44	7 52	8 00	8 09	8 20	8 32
26	6 09	6 23	6 37	6 54	7 04	7 15	7 28	7 43	7 50	7 59	8 08	8 18	8 30
27	6 09	6 23	6 37	6 54	7 03	7 14	7 27	7 42	7 49	7 57	8 06	8 16	8 28
28	6 09	6 23	6 37	6 53	7 02	7 13	7 26	7 41	7 48	7 56	8 04	8 14	8 26
29	6 10	6 23	6 37	6 53	7 02	7 12	7 25	7 40	7 46	7 54	8 03	8 12	8 24
30	6 10	6 23	6 36	6 52	7 01	7 12	7 24	7 38	7 45	7 52	8 01	8 10	8 21
31	6 10	6 23	6 36	6 52	7 00	7 11	7 22	7 37	7 43	7 51	7 59	8 08	8 19
फर. 1	6 10	6 23	6 36	6 51	7 00	7 10	7 21	7 35	7 42	7 49	7 57	8 06	8 17
2	6 10	6 22	6 36	6 50	6 59	7 09	7 20	7 34	7 40	7 47	7 55	8 04	8 14
3	6 10	6 22	6 35	6 50	6 58	7 08	7 19	7 32	7 39	7 46	7 53	8 02	8 12
4	6 10	6 22	6 35	6 49	6 58	7 07	7 18	7 31	7 37	7 44	7 51	8 00	8 10
5	6 10	6 22	6 35	6 49	6 57	7 06	7 17	7 30	7 36	7 42	7 49	7 58	8 07
6	6 10	6 22	6 34	6 48	6 56	7 05	7 15	7 28	7 34	7 40	7 47	7 56	8 05
7	6 11	6 22	6 34	6 47	6 55	7 04	7 14	7 26	7 32	7 38	7 45	7 53	8 02
8	6 11	6 22	6 33	6 47	6 54	7 03	7 13	7 25	7 30	7 36	7 43	7 51	8 00
9	6 11	6 22	6 33	6 46	6 53	7 02	7 11	7 23	7 28	7 34	7 41	7 49	7 57
10	6 11	6 21	6 32	6 45	6 52	7 00	7 10	7 22	7 27	7 33	7 39	7 46	7 55
11	6 11	6 21	6 32	6 44	6 51	6 59	7 09	7 20	7 25	7 31	7 37	7 44	7 52
12	6 11	6 21	6 32	6 44	6 50	6 58	7 07	7 18	7 23	7 28	7 35	7 42	7 49
13	6 11	6 21	6 31	6 43	6 49	6 57	7 06	7 16	7 21	7 26	7 32	7 39	7 47

सूर्योदय सारणी

सूर्योदय काल (स्था. म. का.) (बिम्बशीर्ष दृश्य)

अक्षांश	0°	+10°	+20°	+30°	+35°	+40°	+45°	+50°	+52°	+54°	+56°	+58°	+60°
तारीख	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
फर. 13	6 11	6 21	6 31	6 43	6 49	6 57	7 06	7 16	7 21	7 26	7 32	7 39	7 47
14	6 11	6 20	6 30	6 42	6 48	6 56	7 04	7 15	7 19	7 24	7 30	7 37	7 44
15	6 11	6 20	6 30	6 41	6 47	6 54	7 03	7 13	7 17	7 22	7 28	7 34	7 41
16	6 11	6 20	6 29	6 40	6 46	6 53	7 01	7 11	7 15	7 20	7 26	7 32	7 39
17	6 11	6 20	6 29	6 39	6 45	6 52	7 00	7 09	7 14	7 18	7 23	7 29	7 36
18	6 11	6 19	6 28	6 38	6 44	6 51	6 58	7 07	7 12	7 16	7 21	7 27	7 33
19	6 11	6 19	6 28	6 37	6 43	6 49	6 57	7 05	7 10	7 14	7 19	7 24	7 30
20	6 10	6 19	6 27	6 36	6 42	6 48	6 55	7 04	7 07	7 12	7 16	7 22	7 28
21	6 10	6 18	6 26	6 36	6 41	6 47	6 54	7 02	7 05	7 10	7 14	7 19	7 25
22	6 10	6 18	6 26	6 35	6 40	6 45	6 52	7 00	7 03	7 07	7 12	7 17	7 22
23	6 10	6 17	6 25	6 34	6 38	6 44	6 50	6 58	7 01	7 05	7 09	7 14	7 19
24	6 10	6 17	6 24	6 33	6 37	6 42	6 48	6 56	6 59	7 03	7 07	7 11	7 16
25	6 10	6 17	6 24	6 32	6 36	6 41	6 47	6 54	6 57	7 00	7 04	7 09	7 14
26	6 10	6 16	6 23	6 30	6 35	6 40	6 45	6 52	6 55	6 58	7 02	7 06	7 11
27	6 10	6 16	6 22	6 29	6 34	6 38	6 44	6 50	6 53	6 56	6 59	7 03	7 08
28	6 09	6 15	6 22	6 28	6 32	6 37	6 42	6 48	6 51	6 54	6 57	7 01	7 05
मार्च 1	6 09	6 15	6 21	6 27	6 31	6 35	6 40	6 46	6 48	6 51	6 54	6 58	7 02
2	6 09	6 14	6 20	6 26	6 30	6 34	6 38	6 44	6 46	6 49	6 52	6 55	6 59
3	6 09	6 14	6 19	6 25	6 28	6 32	6 37	6 42	6 44	6 47	6 49	6 53	6 56
4	6 09	6 14	6 18	6 24	6 27	6 31	6 35	6 40	6 42	6 44	6 47	6 50	6 53
5	6 08	6 13	6 18	6 23	6 26	6 29	6 33	6 38	6 40	6 42	6 44	6 47	6 50
6	6 08	6 12	6 17	6 22	6 25	6 28	6 31	6 36	6 37	6 40	6 42	6 44	6 47
7	6 08	6 12	6 16	6 21	6 23	6 26	6 30	6 33	6 35	6 37	6 39	6 42	6 44
8	6 08	6 12	6 15	6 20	6 22	6 25	6 28	6 31	6 33	6 35	6 37	6 39	6 41
9	6 07	6 11	6 14	6 18	6 20	6 23	6 26	6 29	6 30	6 32	6 34	6 36	6 38
10	6 07	6 10	6 14	6 17	6 19	6 21	6 24	6 27	6 28	6 30	6 31	6 33	6 35
11	6 07	6 10	6 13	6 16	6 18	6 20	6 22	6 25	6 26	6 27	6 29	6 30	6 32
12	6 07	6 09	6 12	6 15	6 16	6 18	6 20	6 23	6 24	6 25	6 26	6 28	6 29
13	6 06	6 09	6 11	6 14	6 15	6 17	6 18	6 20	6 21	6 22	6 24	6 25	6 26
14	6 06	6 08	6 10	6 13	6 14	6 15	6 17	6 18	6 19	6 20	6 21	6 22	6 23
15	6 06	6 08	6 09	6 11	6 12	6 14	6 15	6 16	6 17	6 18	6 18	6 19	6 20
16	6 06	6 07	6 09	6 10	6 11	6 12	6 13	6 14	6 15	6 15	6 16	6 16	6 17
17	6 05	6 06	6 08	6 09	6 10	6 10	6 11	6 12	6 12	6 13	6 13	6 14	6 14
18	6 05	6 06	6 07	6 08	6 08	6 09	6 09	6 10	6 10	6 10	6 11	6 11	6 11
19	6 05	6 05	6 06	6 07	6 07	6 07	6 07	6 08	6 08	6 08	6 08	6 08	6 08
20	6 04	6 05	6 05	6 05	6 05	6 06	6 05	6 05	6 05	6 05	6 05	6 05	6 05
21	6 04	6 04	6 04	6 04	6 04	6 04	6 04	6 03	6 03	6 03	6 03	6 02	6 02
22	6 04	6 04	6 03	6 03	6 03	6 02	6 02	6 01	6 01	6 00	6 00	6 00	5 59
23	6 04	6 03	6 02	6 02	6 01	6 01	6 00	5 59	5 58	5 58	5 57	5 57	5 56
24	6 03	6 02	6 02	6 00	6 00	5 59	5 58	5 57	5 56	5 55	5 55	5 54	5 53
25	6 03	6 02	6 01	5 59	5 58	5 57	5 56	5 54	5 54	5 53	5 52	5 51	5 50
26	6 03	6 01	6 00	5 58	5 57	5 56	5 54	5 52	5 52	5 50	5 50	5 48	5 47
27	6 02	6 01	5 59	5 57	5 56	5 54	5 52	5 50	5 49	5 48	5 47	5 46	5 44

सूर्योदय सारणी

सूर्योदय काल (स्था. म. का.) (बिम्बशीर्ष दृश्य)

अक्षांश / तारीख	0° घं. मि.	+10° घं. मि.	+20° घं. मि.	+30° घं. मि.	+35° घं. मि.	+40° घं. मि.	+45° घं. मि.	+50° घं. मि.	+52° घं. मि.	+54° घं. मि.	+56° घं. मि.	+58° घं. मि.	+60° घं. मि.
मार्च 27	6 02	6 01	5 59	5 57	5 56	5 54	5 52	5 50	5 49	5 48	5 47	5 46	5 44
28	6 02	6 00	5 58	5 56	5 54	5 52	5 50	5 48	5 47	5 46	5 44	5 43	5 41
29	6 02	6 00	5 57	5 54	5 53	5 51	5 48	5 46	5 44	5 43	5 41	5 40	5 38
30	6 02	5 59	5 56	5 53	5 51	5 49	5 47	5 44	5 42	5 41	5 39	5 37	5 35
31	6 01	5 58	5 56	5 52	5 50	5 48	5 45	5 41	5 40	5 38	5 36	5 34	5 32
अप्रै.1	6 01	5 58	5 55	5 51	5 48	5 46	5 43	5 39	5 38	5 36	5 34	5 31	5 29
2	6 01	5 57	5 54	5 50	5 47	5 44	5 41	5 37	5 35	5 33	5 31	5 28	5 26
3	6 00	5 57	5 53	5 48	5 46	5 43	5 39	5 35	5 33	5 31	5 28	5 26	5 23
4	6 00	5 56	5 52	5 47	5 44	5 41	5 37	5 33	5 31	5 28	5 26	5 23	5 20
5	5 59	5 56	5 51	5 46	5 43	5 40	5 35	5 30	5 28	5 26	5 23	5 20	5 17
6	5 59	5 55	5 50	5 45	5 42	5 38	5 34	5 28	5 26	5 23	5 20	5 17	5 14
7	5 59	5 54	5 50	5 44	5 40	5 36	5 32	5 26	5 24	5 21	5 18	5 14	5 10
8	5 59	5 54	5 49	5 42	5 39	5 35	5 30	5 24	5 22	5 18	5 15	5 12	5 07
9	5 58	5 53	5 48	5 41	5 38	5 33	5 28	5 22	5 19	5 16	5 13	5 09	5 04
10	5 58	5 53	5 47	5 41	5 36	5 32	5 26	5 20	5 17	5 14	5 10	5 06	5 02
11	5 58	5 52	5 46	5 39	5 35	5 30	5 24	5 18	5 15	5 11	5 08	5 03	4 59
12	5 58	5 52	5 45	5 38	5 34	5 29	5 23	5 16	5 12	5 09	5 05	5 01	4 56
13	5 57	5 51	5 45	5 37	5 32	5 27	5 21	5 14	5 10	5 07	5 02	4 58	4 53
14	5 57	5 51	5 44	5 36	5 31	5 26	5 19	5 12	5 08	5 04	5 00	4 55	4 50
15	5 57	5 50	5 43	5 34	5 30	5 24	5 17	5 10	5 06	5 02	4 57	4 52	4 47
16	5 57	5 50	5 42	5 33	5 28	5 22	5 16	5 08	5 04	5 00	4 55	4 50	4 44
17	5 56	5 49	5 41	5 32	5 27	5 21	5 14	5 05	5 01	4 57	4 52	4 47	4 41
18	5 56	5 49	5 41	5 31	5 26	5 20	5 12	5 03	4 59	4 55	4 50	4 44	4 38
19	5 56	5 48	5 40	5 30	5 24	5 18	5 10	5 01	4 57	4 52	4 47	4 42	4 35
20	5 56	5 48	5 39	5 29	5 23	5 16	5 09	4 59	4 55	4 50	4 45	4 39	4 32
21	5 55	5 47	5 38	5 28	5 22	5 15	5 07	4 57	4 53	4 48	4 42	4 36	4 29
22	5 55	5 47	5 38	5 27	5 21	5 14	5 05	4 55	4 51	4 46	4 40	4 34	4 26
23	5 55	5 46	5 37	5 26	5 20	5 12	5 04	4 53	4 49	4 43	4 37	4 31	4 23
24	5 55	5 46	5 36	5 25	5 18	5 11	5 02	4 51	4 46	4 41	4 35	4 28	4 20
25	5 55	5 45	5 35	5 24	5 17	5 10	5 00	4 50	4 44	4 39	4 33	4 26	4 18
26	5 54	5 45	5 35	5 23	5 16	5 08	4 59	4 48	4 42	4 37	4 30	4 23	4 15
27	5 54	5 45	5 34	5 22	5 15	5 07	4 57	4 46	4 40	4 34	4 28	4 20	4 12
28	5 54	5 44	5 33	5 21	5 14	5 05	4 56	4 44	4 38	4 32	4 25	4 18	4 09
29	5 54	5 44	5 33	5 20	5 13	5 04	4 54	4 42	4 36	4 30	4 23	4 15	4 06
30	5 54	5 43	5 32	5 19	5 11	5 03	4 52	4 40	4 34	4 28	4 21	4 13	4 04
मई 1	5 54	5 43	5 32	5 18	5 10	5 02	4 51	4 38	4 32	4 26	4 18	4 10	4 01
2	5 54	5 43	5 31	5 17	5 09	5 00	4 50	4 37	4 30	4 24	4 16	4 08	3 58
3	5 54	5 42	5 30	5 16	5 08	4 59	4 48	4 35	4 29	4 22	4 14	4 05	3 55
4	5 53	5 42	5 30	5 16	5 07	4 58	4 46	4 33	4 27	4 20	4 12	4 03	3 53
5	5 53	5 42	5 29	5 15	5 06	4 57	4 45	4 31	4 25	4 18	4 10	4 00	3 50
6	5 53	5 41	5 28	5 14	5 05	4 55	4 44	4 30	4 23	4 16	4 07	3 58	3 47
7	5 53	5 41	5 28	5 13	5 04	4 54	4 42	4 28	4 21	4 14	4 05	3 56	3 45
8	5 53	5 41	5 28	5 12	5 03	4 53	4 41	4 26	4 19	4 12	4 03	3 53	3 42
9	5 53	5 40	5 27	5 11	5 02	4 52	4 40	4 25	4 18	4 10	4 01	3 51	3 40

सूर्योदय सारणी

सूर्योदय काल (स्था. म. का.) (बिम्बशीर्ष दृश्य)

अक्षांश / तारीख	0° घं. मि.	+10° घं. मि.	+20° घं. मि.	+30° घं. मि.	+35° घं. मि.	+40° घं. मि.	+45° घं. मि.	+50° घं. मि.	+52° घं. मि.	+54° घं. मि.	+56° घं. मि.	+58° घं. मि.	+60° घं. मि.
मई 9	5 53	5 40	5 27	5 11	5 02	4 52	4 40	4 25	4 18	4 10	4 01	3 51	3 40
10	5 53	5 40	5 26	5 11	5 01	4 51	4 38	4 23	4 16	4 08	3 59	3 49	3 37
11	5 53	5 40	5 26	5 10	5 00	4 50	4 37	4 22	4 14	4 06	3 57	3 46	3 34
12	5 53	5 40	5 26	5 09	5 00	4 49	4 36	4 20	4 12	4 04	3 55	3 44	3 32
13	5 53	5 40	5 26	5 09	4 59	4 48	4 34	4 18	4 11	4 02	3 53	3 42	3 29
14	5 53	5 39	5 25	5 08	4 58	4 47	4 33	4 17	4 09	4 01	3 51	3 40	3 27
15	5 53	5 39	5 24	5 07	4 57	4 46	4 32	4 16	4 08	3 59	3 49	3 38	3 25
16	5 53	5 39	5 24	5 07	4 56	4 45	4 31	4 14	4 06	3 57	3 47	3 36	3 22
17	5 53	5 39	5 24	5 06	4 56	4 44	4 30	4 13	4 05	3 56	3 45	3 34	3 20
18	5 53	5 38	5 23	5 05	4 55	4 43	4 29	4 11	4 03	3 54	3 44	3 32	3 18
19	5 53	5 38	5 23	5 05	4 54	4 42	4 28	4 10	4 02	3 52	3 42	3 30	3 16
20	5 53	5 38	5 22	5 04	4 54	4 41	4 27	4 09	4 00	3 51	3 40	3 28	3 13
21	5 53	5 38	5 22	5 04	4 53	4 40	4 26	4 08	3 59	3 49	3 38	3 26	3 11
22	5 53	5 38	5 22	5 03	4 52	4 40	4 25	4 06	3 58	3 48	3 37	3 24	3 09
23	5 53	5 38	5 22	5 03	4 52	4 39	4 24	4 05	3 56	3 46	3 35	3 22	3 07
24	5 53	5 38	5 21	5 02	4 51	4 38	4 23	4 04	3 55	3 45	3 34	3 20	3 05
25	5 53	5 38	5 21	5 02	4 50	4 38	4 22	4 03	3 54	3 44	3 32	3 19	3 03
26	5 53	5 38	5 21	5 01	4 50	4 37	4 21	4 02	3 53	3 42	3 31	3 17	3 01
27	5 53	5 38	5 21	5 01	4 50	4 36	4 20	4 01	3 52	3 41	3 29	3 15	2 59
28	5 53	5 38	5 20	5 01	4 49	4 36	4 20	4 00	3 51	3 40	3 28	3 14	2 57
29	5 54	5 38	5 20	5 00	4 49	4 35	4 19	3 59	3 50	3 39	3 27	3 12	2 56
30	5 54	5 38	5 20	5 00	4 48	4 35	4 18	3 58	3 49	3 38	3 25	3 11	2 54
31	5 54	5 38	5 20	5 00	4 48	4 34	4 18	3 57	3 48	3 37	3 24	3 10	2 52
जून 1	5 54	5 38	5 20	4 59	4 47	4 34	4 17	3 56	3 47	3 36	3 23	3 08	2 50
2	5 54	5 38	5 20	4 59	4 47	4 33	4 16	3 56	3 46	3 35	3 22	3 07	2 49
3	5 54	5 38	5 20	4 59	4 47	4 33	4 16	3 55	3 45	3 34	3 21	3 06	2 48
4	5 54	5 38	5 20	4 59	4 46	4 32	4 16	3 54	3 44	3 33	3 20	3 05	2 46
5	5 54	5 38	5 20	4 59	4 46	4 32	4 15	3 54	3 44	3 32	3 19	3 04	2 45
6	5 55	5 38	5 20	4 58	4 46	4 32	4 15	3 53	3 43	3 31	3 18	3 03	2 44
7	5 55	5 38	5 20	4 58	4 46	4 31	4 14	3 53	3 42	3 31	3 17	3 02	2 43
8	5 55	5 38	5 20	4 58	4 46	4 31	4 14	3 52	3 42	3 30	3 16	3 01	2 42
9	5 55	5 38	5 20	4 58	4 46	4 31	4 14	3 52	3 41	3 30	3 16	3 00	2 41
10	5 55	5 38	5 20	4 58	4 45	4 31	4 13	3 51	3 41	3 29	3 15	2 59	2 40
11	5 56	5 38	5 20	4 58	4 45	4 31	4 13	3 51	3 40	3 28	3 15	2 58	2 39
12	5 56	5 38	5 20	4 58	4 45	4 30	4 13	3 51	3 40	3 28	3 14	2 58	2 38
13	5 56	5 39	5 20	4 58	4 45	4 30	4 13	3 50	3 40	3 28	3 14	2 57	2 37
14	5 56	5 39	5 20	4 58	4 45	4 30	4 12	3 50	3 40	3 27	3 13	2 57	2 37
15	5 56	5 39	5 20	4 58	4 45	4 30	4 12	3 50	3 39	3 27	3 13	2 56	2 36
16	5 56	5 39	5 20	4 58	4 45	4 30	4 12	3 50	3 39	3 27	3 13	2 56	2 36
17	5 57	5 39	5 20	4 58	4 45	4 30	4 12	3 50	3 39	3 27	3 13	2 56	2 36
18	5 57	5 40	5 20	4 59	4 45	4 30	4 12	3 50	3 39	3 27	3 12	2 56	2 35
19	5 57	5 40	5 21	4 59	4 46	4 30	4 13	3 50	3 39	3 27	3 12	2 56	2 35
20	5 57	5 40	5 21	4 59	4 46	4 31	4 13	3 50	3 39	3 27	3 12	2 56	2 35

सूर्योदय सारणी

सूर्योदय काल (स्था. म. का.) (बिम्बशीर्ष दृश्य)

अक्षांश / तारीख	0° घं. मि.	+10° घं. मि.	+20° घं. मि.	+30° घं. मि.	+35° घं. मि.	+40° घं. मि	+45° घं. मि.	+50° घं. मि.	+52° घं. मि.	+54° घं. मि.	+56° घं. मि.	+58° घं. मि.	+60° घं. मि.
जून 20	5 57	5 40	5 21	4 59	4 46	4 31	4 13	3 50	3 39	3 27	3 12	2 56	2 35
21	5 58	5 40	5 21	4 59	4 46	4 31	4 13	3 50	3 39	3 27	3 13	2 56	2 35
22	5 58	5 40	5 21	4 59	4 46	4 31	4 13	3 50	3 39	3 27	3 13	2 56	2 35
23	5 58	5 40	5 22	4 59	4 46	4 31	4 13	3 51	3 40	3 27	3 13	2 56	2 36
24	5 58	5 41	5 22	5 00	4 46	4 31	4 13	3 51	3 40	3 28	3 13	2 56	2 36
25	5 58	5 41	5 22	5 00	4 47	4 32	4 14	3 51	3 40	3 28	3 14	2 57	2 36
26	5 59	5 41	5 22	5 00	4 47	4 32	4 14	3 52	3 41	3 28	3 14	2 57	2 37
27	5 59	5 41	5 22	5 00	4 48	4 32	4 14	3 52	3 41	3 29	3 15	2 58	2 38
28	5 59	5 42	5 23	5 01	4 48	4 33	4 15	3 52	3 42	3 29	3 15	2 58	2 38
29	5 59	5 42	5 23	5 01	4 48	4 33	4 15	3 53	3 42	3 30	3 16	2 59	2 39
30	6 00	5 42	5 23	5 01	4 48	4 34	4 16	3 53	3 43	3 30	3 16	3 00	2 40
जुला.1	6 00	5 42	5 24	5 02	4 49	4 34	4 16	3 54	3 43	3 31	3 17	3 01	2 41
2	6 00	5 43	5 24	5 02	4 49	4 34	4 17	3 55	3 44	3 32	3 18	3 02	2 42
3	6 00	5 43	5 24	5 02	4 50	4 35	4 17	3 55	3 45	3 33	3 19	3 03	2 43
4	6 00	5 43	5 25	5 03	4 50	4 36	4 18	3 56	3 45	3 34	3 20	3 04	2 44
5	6 00	5 43	5 25	5 03	4 51	4 36	4 19	3 57	3 46	3 34	3 21	3 05	2 45
6	6 01	5 44	5 25	5 04	4 51	4 37	4 19	3 58	3 47	3 35	3 22	3 06	2 46
7	6 01	5 44	5 26	5 04	4 52	4 37	4 20	3 58	3 48	3 36	3 23	3 07	2 48
8	6 01	5 44	5 26	5 05	4 52	4 38	4 21	3 59	3 49	3 37	3 24	3 08	2 49
9	6 01	5 44	5 26	5 05	4 53	4 38	4 21	4 00	3 50	3 38	3 25	3 10	2 51
10	6 01	5 45	5 27	5 06	4 53	4 39	4 22	4 01	3 51	3 39	3 26	3 11	2 52
11	6 02	5 45	5 27	5 06	4 54	4 40	4 23	4 02	3 52	3 40	3 27	3 12	2 54
12	6 02	5 45	5 27	5 07	4 54	4 40	4 24	4 03	3 53	3 42	3 29	3 14	2 56
13	6 02	5 45	5 28	5 07	4 55	4 41	4 24	4 04	3 54	3 43	3 30	3 15	2 57
14	6 02	5 46	5 28	5 08	4 56	4 42	4 25	4 05	3 55	3 44	3 32	3 17	2 59
15	6 02	5 46	5 28	5 08	4 56	4 43	4 26	4 06	3 56	3 45	3 33	3 18	3 01
16	6 02	5 46	5 29	5 09	4 57	4 43	4 27	4 07	3 58	3 47	3 34	3 20	3 03
17	6 02	5 46	5 29	5 09	4 58	4 44	4 28	4 08	3 59	3 48	3 36	3 22	3 05
18	6 02	5 47	5 30	5 10	4 58	4 45	4 29	4 09	4 00	3 49	3 37	3 24	3 07
19	6 02	5 47	5 30	5 10	4 59	4 46	4 30	4 10	4 01	3 51	3 39	3 25	3 09
20	6 02	5 47	5 30	5 11	5 00	4 46	4 31	4 12	4 02	3 52	3 41	3 27	3 11
21	6 03	5 47	5 31	5 12	5 00	4 47	4 32	4 13	4 04	3 54	3 42	3 29	3 13
22	6 03	5 48	5 31	5 12	5 01	4 48	4 33	4 14	4 05	3 55	3 44	3 31	3 15
23	6 03	5 48	5 32	5 13	5 02	4 49	4 34	4 15	4 07	3 57	3 45	3 33	3 17
24	6 03	5 48	5 32	5 13	5 02	4 50	4 35	4 17	4 08	3 58	3 47	3 34	3 20
25	6 03	5 48	5 32	5 14	5 03	4 51	4 36	4 18	4 09	4 00	3 49	3 36	3 22
26	6 03	5 48	5 33	5 14	5 04	4 52	4 37	4 19	4 11	4 01	3 51	3 38	3 24
27	6 03	5 48	5 33	5 15	5 05	4 52	4 38	4 20	4 12	4 03	3 52	3 40	3 26
28	6 03	5 49	5 33	5 16	5 05	4 53	4 39	4 22	4 14	4 05	3 54	3 42	3 28
29	6 03	5 49	5 34	5 16	5 06	4 54	4 40	4 23	4 15	4 06	3 56	3 44	3 31
30	6 03	5 49	5 34	5 17	5 07	4 55	4 42	4 25	4 17	4 08	3 58	3 46	3 33
31	6 03	5 49	5 34	5 18	5 08	4 56	4 43	4 26	4 18	4 10	4 00	3 48	3 35
अग. 1	6 03	5 49	5 35	5 18	5 08	4 57	4 44	4 27	4 20	4 11	4 01	3 51	3 38

सूर्योदय सारणी

सूर्योदय काल (स्था. म. का.) (बिम्बशीर्ष दृश्य)

अक्षांश / तारीख	0° घं. मि.	+10° घं. मि.	+20° घं. मि.	+30° घं. मि.	+35° घं. मि.	+40° घं. मि.	+45° घं. मि.	+50° घं. मि.	+52° घं. मि.	+54° घं. मि.	+56° घं. मि.	+58° घं. मि.	+60° घं. मि.
अग. 1	6 03	5 49	5 35	5 18	5 08	4 57	4 44	4 27	4 20	4 11	4 01	3 51	3 38
2	6 03	5 50	5 35	5 19	5 09	4 58	4 45	4 29	4 21	4 13	4 03	3 53	3 40
3	6 03	5 50	5 36	5 19	5 10	4 59	4 46	4 30	4 23	4 15	4 05	3 55	3 42
4	6 03	5 50	5 36	5 20	5 10	5 00	4 47	4 32	4 24	4 16	4 07	3 57	3 45
5	6 02	5 50	5 36	5 20	5 11	5 01	4 48	4 [illegible]	4 26	4 18	4 09	3 59	3 47
6	6 02	5 50	5 36	5 21	5 12	5 02	4 50	4 34	4 28	4 20	4 11	4 01	3 50
7	6 02	5 50	5 37	5 22	5 13	5 03	4 51	4 36	4 29	4 21	4 13	4 03	3 52
8	6 02	5 50	5 37	5 22	5 14	5 04	4 52	4 37	4 31	4 23	4 15	4 05	3 54
9	6 02	5 50	5 38	5 23	5 14	5 05	4 53	4 39	4 32	4 25	4 17	4 08	3 57
10	6 02	5 50	5 38	5 24	5 15	5 06	4 54	4 40	4 34	4 27	4 19	4 10	3 59
11	6 02	5 50	5 38	5 24	5 16	5 06	4 55	4 42	4 36	4 28	4 21	4 12	4 02
12	6 02	5 51	5 38	5 25	5 17	5 07	4 57	4 43	4 37	4 30	4 23	4 14	4 04
13	6 02	5 51	5 39	5 25	5 17	5 08	4 58	4 45	4 39	4 32	4 24	4 16	4 06
14	6 01	5 51	5 39	5 26	5 18	5 09	4 59	4 47	4 40	4 34	4 26	4 18	4 09
15	6 01	5 51	5 40	5 26	5 19	5 10	5 00	4 48	4 42	4 36	4 28	4 20	4 11
16	6 01	5 51	5 40	5 27	5 20	5 11	5 01	4 49	4 44	4 37	4 30	4 22	4 14
17	6 01	5 51	5 40	5 28	5 20	5 12	5 02	4 51	4 45	4 39	4 32	4 25	4 16
18	6 01	5 51	5 40	5 28	5 21	5 13	5 04	4 52	4 47	4 41	4 34	4 27	4 18
19	6 00	5 51	5 41	5 29	5 22	5 14	5 05	4 54	4 48	4 43	4 36	4 29	4 21
20	6 00	5 51	5 41	5 29	5 23	5 15	5 06	4 55	4 50	4 44	4 38	4 31	4 23
21	6 00	5 51	5 41	5 30	5 23	5 16	5 07	4 57	4 52	4 46	4 40	4 33	4 26
22	6 00	5 51	5 42	5 31	5 24	5 17	5 08	4 58	4 53	4 48	4 42	4 36	4 28
23	5 59	5 51	5 42	5 31	5 25	5 18	5 10	5 00	4 55	4 50	4 44	4 38	4 30
24	5 59	5 51	5 42	5 32	5 26	5 19	5 11	5 01	4 57	4 52	4 46	4 40	4 33
25	5 59	5 51	5 42	5 32	5 26	5 20	5 12	5 03	4 58	4 53	4 48	4 42	4 35
26	5 59	5 51	5 42	5 33	5 27	5 21	5 13	5 04	5 00	4 55	4 50	4 44	4 38
27	5 58	5 51	5 43	5 33	5 28	5 22	5 14	5 06	5 02	4 57	4 52	4 46	4 40
28	5 58	5 51	5 43	5 34	5 29	5 23	5 16	5 07	5 03	4 59	4 54	4 48	4 42
29	5 58	5 51	5 43	5 34	5 29	5 24	5 17	5 08	5 05	5 00	4 56	4 51	4 45
30	5 58	5 51	5 44	5 35	5 30	5 24	5 18	5 10	5 06	5 02	4 58	4 53	4 47
31	5 57	5 51	5 44	5 36	5 31	5 25	5 19	5 12	5 08	5 04	5 00	4 55	4 50
सित. 1	5 57	5 51	5 44	5 36	5 32	5 26	5 20	5 13	5 10	5 06	5 02	4 57	4 52
2	5 57	5 51	5 44	5 37	5 32	5 27	5 22	5 14	5 11	5 08	5 04	4 59	4 54
3	5 56	5 51	5 44	5 37	5 33	5 28	5 23	5 16	5 13	5 09	5 06	5 01	4 57
4	5 56	5 51	5 45	5 38	5 34	5 29	5 24	5 18	5 14	5 11	5 08	5 04	4 59
5	5 56	5 50	5 45	5 38	5 34	5 30	5 25	5 19	5 16	5 13	5 10	5 06	5 02
6	5 55	5 50	5 45	5 39	5 35	5 31	5 26	5 20	5 18	5 15	5 12	5 08	5 04
7	5 55	5 50	5 45	5 40	5 36	5 32	5 28	5 22	5 19	5 17	5 14	5 10	5 06
8	5 55	5 50	5 46	5 40	5 37	5 33	5 29	5 24	5 21	5 18	5 15	5 12	5 08
9	5 54	5 50	5 46	5 41	5 38	5 34	5 30	5 25	5 23	5 20	5 17	5 14	5 11
10	5 54	5 50	5 46	5 41	5 38	5 35	5 31	5 26	5 24	5 22	5 19	5 16	5 13
11	5 54	5 50	5 46	5 42	5 39	5 36	5 32	5 28	5 26	5 24	5 21	5 19	5 16
12	5 53	5 50	5 46	5 42	5 40	5 37	5 34	5 29	5 28	5 26	5 23	5 21	5 18
13	5 53	5 50	5 47	5 43	5 40	5 38	5 35	5 31	5 29	5 27	5 25	5 23	5 20
14	5 53	5 50	5 47	5 43	5 41	5 39	5 36	5 32	5 31	5 29	5 27	5 25	5 23

सूर्योदय सारणी

सूर्योदय काल (स्था. म. का.) (बिम्बशीर्ष दृश्य)

अक्षांश / तारीख	0° घं. मि.	+10° घं. मि.	+20° घं. मि.	+30° घं. मि.	+35° घं. मि.	+40° घं. मि.	+45° घं. मि.	+50° घं. मि.	+52° घं. मि.	+54° घं. मि.	+56° घं. मि.	+58° घं. मि.	+60° घं. मि.
सितं. 14	5 53	5 50	5 47	5 43	5 41	5 39	5 36	5 32	5 31	5 29	5 27	5 25	5 23
15	5 52	5 50	5 47	5 44	5 42	5 40	5 37	5 34	5 32	5 31	5 29	5 27	5 25
16	5 52	5 50	5 47	5 44	5 43	5 41	5 38	5 35	5 34	5 33	5 31	5 29	5 27
17	5 52	5 50	5 48	5 45	5 43	5 42	5 40	5 37	5 36	5 34	5 33	5 31	5 30
18	5 51	5 50	5 48	5 46	5 44	5 43	5 41	5 38	5 38	5 36	5 35	5 34	5 32
19	5 51	5 50	5 48	5 46	5 45	5 44	5 42	5 40	5 39	5 38	5 37	5 36	5 34
20	5 50	5 49	5 48	5 46	5 46	5 44	5 43	5 41	5 41	5 40	5 39	5 38	5 37
21	5 50	5 49	5 48	5 47	5 46	5 45	5 44	5 43	5 42	5 42	5 41	5 40	5 39
22	5 50	5 49	5 49	5 48	5 47	5 46	5 46	5 44	5 44	5 43	5 43	5 42	5 41
23	5 50	5 49	5 49	5 48	5 48	5 47	5 47	5' 46	5 46	5 45	5 45	5 44	5 44
24	5 49	5 49	5 49	5 49	5 48	5 48	5 48	5 47	5 47	5 47	5 47	5 46	5 46
25	5 49	5 49	5 49	5 49	5 49	5 49	5 49	5 49	5 49	5 49	5 49	5 48	5 48
26	5 48	5 49	5 49	5 50	5 50	5 50	5 50	5 50	5 50	5 51	5 51	5 51	5 51
27	5 48	5 49	5 50	5 50	5 51	5 51	5 52	5 52	5 52	5 52	5 53	5 53	5 53
28	5 48	5 49	5 50	5 51	5 52	5 52	5 53	5 54	5 54	5 54	5 55	5 55	5 56
29	5 47	5 49	5 50	5 52	5 52	5 53	5 54	5 55	5 56	5 56	5 57	5 57	5 58
30	5 47	5 49	5 50	5 52	5 53	5 54	5 55	5 57	5 57	5 58	5 59	5 59	6 00
अक्तू. 1	5 47	5 49	5 51	5 53	5 54	5 55	5 56	5 58	5 59	6 00	6 01	6 02	6 03
2	5 46	5 49	5 51	5 53	5 55	5 56	5 58	6 00	6 00	6 02	6 03	6 04	6 05
3	5 46	5 49	5 51	5 54	5 55	5 57	5 59	6 01	6 02	6 03	6 05	6 06	6 08
4	5 46	5 49	5 51	5 54	5 56	5 58	6 00	6 03	6 04	6 05	6 07	6 08	6 10
5	5 46	5 48	5 52	5 55	5 57	5 59	6 01	6 04	6 06	6 07	6 09	6 10	6 12
6	5 45	5 48	5 52	5 56	5 58	6 00	6 03	6 06	6 07	6 09	6 11	6 12	6 15
7	5 45	5 48	5 52	5 56	5 58	6 01	6 04	6 07	6 09	6 11	6 13	6 15	6 17
8	5 45	5 48	5 52	5 57	5 59	6 02	6 05	6 09	6 11	6 13	6 15	6 17	6 19
9	5 44	5 48	5 53	5 57	6 00	6 03	6 06	6 11	6 12	6 14	6 17	6 19	6 22
10	5 44	5 48	5 53	5 58	6 01	6 04	6 08	6 12	6 14	6 16	6 19	6 21	6 24
11	5 44	5 48	5 53	5 58	6 02	6 05	6 09	6 14	6 16	6 18	6 21	6 24	6 27
12	5 44	5 48	5 54	5 59	6 02	6 06	6 10	6 15	6 18	6 20	6 23	6 26	6 29
13	5 43	5 48	5 54	6 00	6 03	6 07	6 12	6 17	6 19	6 22	6 25	6 28	6 32
14	5 43	5 48	5 54	6 00	6 04	6 08	6 13	6 18	6 21	6 24	6 27	6 30	6 34
15	5 43	5 48	5 54	6 01	6 05	6 09	6 14	6 20	6 23	6 26	6 29	6 32	6 36
16	5 43	5 49	5 55	6 02	6 06	6 10	6 16	6 22	6 24	6 28	6 31	6 35	6 39
17	5 42	5 49	5 55	6 02	6 07	6 11	6 17	6 23	6 26	6 29	6 33	6 37	6 41
18	5 42	5 49	5 56	6 03	6 08	6 12	6 18	6 25	6 28	6 31	6 35	6 39	6 44
19	5 42	5 49	5 56	6 04	6 08	6 13	6 19	6 26	6 30	6 33	6 37	6 42	6 46
20	5 42	5 49	5 56	6 04	6 09	6 14	6 21	6 28	6 31	6 35	6 39	6 44	6 49
21	5 42	5 49	5 57	6 05	6 10	6 16	6 22	6 30	6 33	6 37	6 41	6 46	6 51
22	5 41	5 49	5 57	6 06	6 11	6 17	6 23	6 31	6 35	6 39	6 43	6 48	6 54
23	5 41	5 49	5 57	6 06	6 12	6 18	6 25	6 33	6 37	6 41	6 45	6 51	6 56
24	5 41	5 49	5 58	6 07	6 13	6 19	6 26	6 35	6 38	6 43	6 48	6 53	6 59
25	5 41	5 50	5 58	6 08	6 14	6 20	6 28	6 36	6 40	6 45	6 50	6 55	7 02
26	5 41	5 50	5 59	6 09	6 14	6 21	6 29	6 38	6 42	6 47	6 52	6 58	7 04
27	5 41	5 50	5 59	6 10	6 15	6 22	6 30	6 40	6 44	6 49	6 54	7 00	7 06

सूर्योदय सारणी

सूर्योदय काल (स्था. म. का.) (बिम्बशीर्ष दृश्य)

अक्षांश / तारीख	0° घं. मि.	+10° घं. मि.	+20° घं. मि.	+30° घं. मि.	+35° घं. मि.	+40° घं. मि.	+45° घं. मि.	+50° घं. मि.	+52° घं. मि.	+54° घं. मि.	+56° घं. मि.	+58° घं. मि.	+60° घं. मि.
अक्तू. 27	5 41	5 50	5 59	6 10	6 15	6 22	6 30	6 40	6 44	6 49	6 54	7 00	7 06
28	5 41	5 50	5 59	6 10	6 16	6 23	6 32	6 41	6 46	6 51	6 56	7 02	7 09
29	5 40	5 50	6 00	6 11	6 17	6 24	6 33	6 43	6 47	6 53	6 58	7 04	7 12
30	5 40	5 50	6 00	6 12	6 18	6 26	6 34	6 44	6 49	6 55	7 00	7 07	7 14
31	5 40	5 50	6 01	6 12	6 19	6 27	6 36	6 46	6 51	6 56	7 02	7 09	7 17
नवं.. 1	5 40	5 50	6 01	6 13	6 20	6 28	6 37	6 48	6 53	6 58	7 05	7 12	7 19
2	5 40	5 51	6 02	6 14	6 21	6 29	6 38	6 50	6 55	7 00	7 07	7 14	7 22
3	5 40	5 51	6 02	6 15	6 22	6 30	6 40	6 51	6 56	7 02	7 09	7 16	7 24
4	5 40	5 51	6 02	6 16	6 23	6 31	6 41	6 53	6 58	7 04	7 11	7 18	7 27
5	5 40	5 51	6 03	6 16	6 24	6 32	6 42	6 54	7 00	7 06	7 13	7 21	7 30
6	5 40	5 52	6 04	6 17	6 25	6 34	6 44	6 56	7 02	7 08	7 15	7 23	7 32
7	5 40	5 52	6 04	6 18	6 26	6 35	6 45	6 58	7 04	7 10	7 17	7 26	7 35
8	5 40	5 52	6 04	6 19	6 27	6 36	6 47	7 00	7 06	7 12	7 20	7 28	7 37
9	5 40	5 52	6 05	6 19	6 28	6 37	6 48	7 01	7 07	7 14	7 22	7 30	7 40
10	5 40	5 53	6 06	6 20	6 29	6 38	6 49	7 03	7 09	7 16	7 24	7 32	7 42
11	5 41	5 53	6 06	6 21	6 30	6 39	6 51	7 04	7 11	7 18	7 26	7 35	7 45
12	5 41	5 53	6 06	6 22	6 31	6 40	6 52	7 06	7 13	7 20	7 28	7 37	7 48
13	5 41	5 54	6 07	6 23	6 32	6 42	6 53	7 08	7 14	7 22	7 30	7 39	7 50
14	5 41	5 54	6 08	6 24	6 33	6 43	6 55	7 09	7 16	7 24	7 32	7 42	7 53
15	5 41	5 54	6 08	6 24	6 34	6 44	6 56	7 11	7 18	7 26	7 34	7 44	7 55
16	5 41	5 55	6 09	6 25	6 34	6 45	6 58	7 13	7 20	7 28	7 36	7 46	7 58
17	5 41	5 55	6 10	6 26	6 35	6 46	6 59	7 14	7 22	7 29	7 38	7 48	8 00
18	5 42	5 56	6 10	6 27	6 36	6 47	7 00	7 16	7 23	7 31	7 40	7 51	8 03
19	5 42	5 56	6 11	6 28	6 37	6 48	7 02	7 18	7 25	7 33	7 42	7 53	8 05
20	5 42	5 56	6 11	6 28	6 38	6 50	7 03	7 19	7 27	7 35	7 44	7 55	8 08
21	5 42	5 57	6 12	6 29	6 39	6 51	7 04	7 21	7 28	7 37	7 46	7 57	8 10
22	5 42	5 57	6 13	6 30	6 40	6 52	7 06	7 22	7 30	7 39	7 48	8 00	8 12
23	5 43	5 58	6 13	6 31	6 41	6 53	7 07	7 24	7 32	7 40	7 50	8 02	8 15
24	5 43	5 58	6 14	6 32	6 42	6 54	7 08	7 25	7 33	7 42	7 52	8 04	8 17
25	5 43	5 58	6 14	6 33	6 43	6 55	7 09	7 27	7 35	7 44	7 54	8 06	8 20
26	5 44	5 59	6 15	6 34	6 44	6 56	7 11	7 28	7 37	7 46	7 56	8 08	8 22
27	5 44	5 59	6 16	6 34	6 45	6 57	7 12	7 30	7 38	7 47	7 58	8 10	8 24
28	5 44	6 00	6 16	6 35	6 46	6 58	7 13	7 31	7 40	7 49	8 00	8 12	8 26
29	5 44	6 00	6 17	6 36	6 47	7 00	7 14	7 33	7 41	7 51	8 02	8 14	8 29
30	5 45	6 01	6 18	6 37	6 48	7 01	7 16	7 34	7 43	7 52	8 03	8 16	8 31
दिसं. 1	5 45	6 01	6 18	6 38	6 49	7 02	7 17	7 35	7 44	7 54	8 05	8 18	8 33
2	5 46	6 02	6 19	6 38	6 50	7 03	7 18	7 37	7 46	7 56	8 07	8 20	8 35
3	5 46	6 02	6 20	6 39	6 51	7 04	7 19	7 38	7 47	7 57	8 08	8 22	8 37
4	5 46	6 03	6 20	6 40	6 51	7 05	7 20	7 39	7 48	7 58	8 10	8 23	8 39
5	5 47	6 03	6 21	6 41	6 52	7 06	7 21	7 41	7 50	8 00	8 12	8 25	8 41
6	5 47	6 04	6 21	6 42	6 53	7 07	7 22	7 42	7 51	8 01	8 13	8 27	8 43
7	5 48	6 04	6 22	6 42	6 54	7 08	7 24	7 43	7 52	8 03	8 14	8 28	8 44
8	5 48	6 05	6 23	6 43	6 55	7 08	7 25	7 44	7 54	8 04	8 16	8 30	8 46
9	5 48	6 05	6 23	6 44	6 56	7 09	7 26	7 45	7 55	8 05	8 17	8 31	8 48
10	5 49	6 06	6 24	6 44	6 56	7 10	7 27	7 46	7 56	8 07	8 19	8 33	8 49

सूर्योदय सारणी

सूर्योदय काल (स्था. म. का.) (बिम्बशीर्ष दृश्य)

अक्षांश / तारीख	0° घं. मि.	+10° घं. मि.	+20° घं. मि.	+30° घं. मि.	+35° घं. मि.	+40° घं. मि.	+45° घं. मि.	+50° घं. मि.	+52° घं. मि.	+54° घं. मि.	+56° घं. मि.	+58° घं. मि.	+60° घं. मि.
दिसं. 10	5 49	6 06	6 24	6 44	6 56	7 10	7 27	7 46	7 56	8 07	8 19	8 33	8 49
11	5 49	6 06	6 24	6 45	6 57	7 11	7 27	7 47	7 57	8 08	8 20	8 34	8 51
12	5 50	6 07	6 25	6 46	6 58	7 12	7 28	7 48	7 58	8 09	8 21	8 35	8 52
13	5 50	6 07	6 26	6 46	6 59	7 13	7 29	7 49	7 59	8 10	8 22	8 37	8 54
14	5 51	6 08	6 26	6 47	6 59	7 13	7 30	7 50	8 00	8 11	8 23	8 38	8 55
15	5 51	6 08	6 27	6 48	7 00	7 14	7 31	7 51	8 01	8 12	8 24	8 39	8 56
16	5 52	6 09	6 27	6 48	7 01	7 15	7 32	7 52	8 02	8 13	8 25	8 40	8 57
17	5 52	6 10	6 28	6 49	7 01	7 16	7 32	7 53	8 03	8 14	8 26	8 41	8 58
18	5 53	6 10	6 28	6 50	7 02	7 16	7 33	7 54	8 04	8 14	8 27	8 42	8 59
19	5 53	6 10	6 29	6 50	7 03	7 17	7 34	7 54	8 04	8 15	8 28	8 43	9 00
20	5 54	6 11	6 30	6 51	7 03	7 17	7 34	7 55	8 05	8 16	8 29	8 43	9 01
21	5 54	6 12	6 30	6 51	7 04	7 18	7 35	7 56	8 06	8 17	8 29	8 44	9 02
22	5 55	6 12	6 31	6 52	7 04	7 18	7 35	7 56	8 06	8 17	8 30	8 45	9 02
23	5 55	6 12	6 31	6 52	7 05	7 19	7 36	7 57	8 07	8 18	8 30	8 45	9 03
24	5 56	6 13	6 32	6 53	7 05	7 19	7 36	7 57	8 07	8 18	8 31	8 46	9 03
25	5 56	6 13	6 32	6 53	7 06	7 20	7 37	7 57	8 07	8 18	8 31	8 46	9 04
26	5 57	6 14	6 32	6 54	7 06	7 20	7 37	7 58	8 08	8 19	8 32	8 46	9 04
27	5 57	6 14	6 33	6 54	7 06	7 21	7 37	7 58	8 08	8 19	8 32	8 46	9 04
28	5 58	6 15	6 33	6 55	7 07	7 21	7 38	7 58	8 08	8 19	8 32	8 47	9 04
29	5 58	6 15	6 34	6 55	7 07	7 21	7 38	7 59	8 08	8 20	8 32	8 47	9 04
30	5 58	6 16	6 34	6 55	7 08	7 22	7 38	7 59	8 08	8 20	8 32	8 47	9 04
31	5 59	6 16	6 35	6 56	7 08	7 22	7 38	7 59	8 08	8 20	8 32	8 46	9 04
32	6 00	6 17	6 35	6 56	7 08	7 22	7 39	7 59	8 08	8 20	8 32	8 46	9 03

यहां दी गई इन सूर्योदय और सूर्यास्तसारणियों से ज्ञात सूर्योदय–सूर्यास्तकाल में एक मिनट से ज्यादा का अन्तर नहीं आता। सैकण्ड तक शुद्ध सूर्योदयास्त जानने के लिए सूर्यक्रान्ति , चर और वेलान्तर की अपेक्षा होती है। इनसे जाना गया सूर्योदयास्तकाल सैकिण्ड तक शुद्ध होता है। सूर्यक्रान्ति, चर और वेलान्तर की सारणियां और उनसे सूक्ष्म सूर्योदयास्त जानने की विधि 'गणकमार्त्तण्ड' में दी गई है , वहां देखिए ।

सूर्यास्त सारणी

सूर्यास्त काल (स्था. म. का.) (बिम्बशीर्ष दृश्य)

अक्षांश	0°	+10°	+20°	+30°	+35°	+40°	+45°	+50°	+52°	+54°	+56°	+58°	+60°
तारीख	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
जन. 1	18 07	17 50	17 32	17 11	16 59	16 45	16 28	16 08	15 58	15 48	15 35	15 21	15 04
2	18 08	17 51	17 32	17 12	17 00	16 46	16 29	16 09	15 59	15 49	15 36	15 22	15 05
3	18 08	17 51	17 33	17 12	17 00	16 46	16 30	16 10	16 00	15 50	15 38	15 24	15 07
4	18 08	17 51	17 34	17 13	17 01	16 47	16 31	16 11	16 02	15 51	15 39	15 25	15 08
5	18 09	17 52	17 34	17 14	17 02	16 48	16 32	16 12	16 03	15 52	15 40	15 26	15 10
6	18 09	17 53	17 35	17 14	17 03	16 49	16 33	16 13	16 04	15 54	15 42	15 28	15 12
7	18 10	17 53	17 36	17 15	17 04	16 50	16 34	16 14	16 05	15 55	15 43	15 30	15 14
8	18 10	17 54	17 36	17 16	17 04	16 51	16 35	16 16	16 07	15 56	15 45	15 31	15 15
9	18 11	17 54	17 37	17 17	17 05	16 52	16 36	16 17	16 08	15 58	15 46	15 33	15 17
10	18 11	17 55	17 38	17 18	17 06	16 53	16 38	16 18	16 09	15 59	15 48	15 35	15 19
11	18 12	17 55	17 38	17 18	17 07	16 54	16 39	16 20	16 11	16 01	15 50	15 36	15 21
12	18 12	17 56	17 39	17 19	17 08	16 55	16 40	16 21	16 12	16 02	15 51	15 38	15 23
13	18 12	17 56	17 39	17 20	17 09	16 56	16 41	16 22	16 14	16 04	15 53	15 40	15 26
14	18 13	17 57	17 40	17 21	17 10	16 57	16 42	16 24	16 15	16 06	15 55	15 42	15 28
15	18 13	17 57	17 41	17 22	17 11	16 58	16 43	16 25	16 17	16 07	15 56	15 44	15 30
16	18 13	17 58	17 41	17 23	17 12	16 59	16 45	16 27	16 18	16 09	15 58	15 46	15 32
17	18 14	17 58	17 42	17 24	17 13	17 00	16 46	16 28	16 20	16 11	16 00	15 48	15 34
18	18 14	17 59	17 43	17 24	17 14	17 02	16 47	16 30	16 22	16 12	16 02	15 50	15 37
19	18 14	17 59	17 43	17 25	17 15	17 03	16 49	16 31	16 23	16 14	16 04	15 52	15 39
20	18 14	18 00	17 44	17 26	17 16	17 04	16 50	16 33	16 25	16 16	16 06	15 55	15 41
21	18 15	18 00	17 45	17 27	17 17	17 05	16 51	16 34	16 26	16 18	16 08	15 57	15 44
22	18 15	18 01	17 45	17 28	17 18	17 06	16 52	16 36	16 28	16 20	16 10	15 59	15 46
23	18 16	18 01	17 46	17 29	17 19	17 07	16 54	16 38	16 30	16 22	16 12	16 01	15 49
24	18 16	18 02	17 47	17 30	17 20	17 08	16 55	16 39	16 32	16 24	16 14	16 04	15 51
25	18 16	18 02	17 47	17 30	17 21	17 10	16 57	16 41	16 34	16 25	16 16	16 06	15 54
26	18 16	18 02	17 48	17 31	17 22	17 11	16 58	16 43	16 35	16 27	16 18	16 08	15 56
27	18 16	18 03	17 48	17 32	17 23	17 12	16 59	16 44	16 37	16 29	16 20	16 10	15 59
28	18 17	18 03	17 49	17 33	17 24	17 13	17 01	16 46	16 39	16 31	16 22	16 13	16 01
29	18 17	18 04	17 50	17 34	17 25	17 14	17 02	16 48	16 41	16 33	16 24	16 15	16 04
30	18 17	18 04	17 50	17 35	17 26	17 16	17 04	16 49	16 42	16 35	16 27	16 17	16 06
31	18 17	18 04	17 51	17 36	17 27	17 17	17 05	16 51	16 44	16 37	16 29	16 20	16 09
फर. 1	18 17	18 05	17 52	17 36	17 28	17 18	17 06	16 53	16 46	16 39	16 31	16 22	16 12
2	18 17	18 05	17 52	17 37	17 29	17 19	17 08	16 54	16 48	16 41	16 33	16 24	16 14
3	18 18	18 05	17 53	17 38	17 30	17 20	17 09	16 56	16 50	16 43	16 35	16 27	16 17
4	18 18	18 06	17 53	17 39	17 31	17 22	17 11	16 58	16 52	16 45	16 38	16 29	16 20
5	18 18	18 06	17 54	17 40	17 32	17 23	17 12	17 00	16 54	16 47	16 40	16 32	16 22
6	18 18	18 06	17 54	17 41	17 33	17 24	17 14	17 01	16 55	16 49	16 42	16 34	16 25
7	18 18	18 07	17 55	17 42	17 34	17 25	17 15	17 03	16 57	16 51	16 44	16 36	16 28
8	18 18	18 07	17 55	17 42	17 35	17 26	17 16	17 05	16 59	16 53	16 46	16 39	16 30
9	18 18	18 07	17 56	17 43	17 36	17 28	17 18	17 06	17 01	16 55	16 49	16 41	16 33
10	18 18	18 08	17 56	17 44	17 37	17 29	17 19	17 08	17 03	16 57	16 51	16 44	16 35
11	18 18	18 08	17 57	17 45	17 38	17 30	17 21	17 10	17 05	16 59	16 53	16 46	16 38
12	18 18	18 08	17 58	17 46	17 39	17 31	17 22	17 12	17 07	17 01	16 55	16 48	16 41
13	18 18	18 08	17 58	17 46	17 40	17 32	17 24	17 13	17 08	17 03	16 57	16 51	16 43

सूर्यास्त सारणी

सूर्यास्त काल (स्था. म. का.) (बिम्बशीर्ष दृश्य)

अक्षांश / तारीख	0° घं. मि.	+10° घं. मि.	+20° घं. मि.	+30° घं. मि.	+35° घं. मि.	+40° घं. मि.	+45° घं. मि.	+50° घं. मि.	+52° घं. मि.	+54° घं. मि.	+56° घं. मि.	+58° घं. मि.	+60° घं. मि.
फर 13	18 18	18 08	17 58	17 46	17 40	17 32	17 24	17 13	17 08	17 03	16 57	16 51	16 43
14	18 18	18 08	17 58	17 47	17 41	17 34	17 25	17 15	17 10	17 05	17 00	16 53	16 46
15	18 18	18 08	17 59	17 48	17 42	17 35	17 26	17 17	17 12	17 07	17 02	16 56	16 49
16	18 18	18 09	17 59	17 49	17 43	17 36	17 28	17 18	17 14	17 09	17 04	16 58	16 51
17	18 18	18 09	18 00	17 50	17 44	17 37	17 29	17 20	17 16	17 11	17 06	17 00	16 54
18	18 18	18 09	18 00	17 50	17 45	17 38	17 31	17 22	17 18	17 13	17 08	17 03	16 56
19	18 18	18 09	18 01	17 51	17 46	17 40	17 32	17 24	17 20	17 15	17 10	17 05	16 59
20	18 17	18 10	18 01	17 52	17 47	17 41	17 34	17 25	17 22	17 17	17 13	17 07	17 02
21	18 17	18 10	18 02	17 53	17 48	17 42	17 35	17 27	17 23	17 19	17 15	17 10	17 04
22	18 17	18 10	18 02	17 53	17 48	17 43	17 36	17 29	17 25	17 21	17 17	17 12	17 07
23	18 17	18 10	18 03	17 54	17 49	17 44	17 38	17 30	17 27	17 23	17 19	17 14	17 09
24	18 17	18 10	18 03	17 55	17 50	17 45	17 39	17 32	17 29	17 25	17 21	17 17	17 12
25	18 17	18 10	18 03	17 56	17 51	17 46	17 40	17 34	17 31	17 27	17 23	17 19	17 14
26	18 17	18 10	18 04	17 56	17 52	17 47	17 42	17 35	17 32	17 29	17 26	17 22	17 17
27	18 16	18 10	18 04	17 57	17 53	17 49	17 43	17 37	17 34	17 31	17 28	17 24	17 20
28	18 16	18 10	18 04	17 58	17 54	17 50	17 44	17 39	17 36	17 33	17 30	17 26	17 22
मार्च 1	18 16	18 10	18 05	17 58	17 55	17 51	17 46	17 40	17 38	17 35	17 32	17 28	17 25
2	18 16	18 10	18 05	17 59	17 56	17 52	17 47	17 42	17 40	17 37	17 34	17 31	17 27
3	18 16	18 11	18 06	18 00	17 56	17 53	17 49	17 44	17 42	17 39	17 36	17 33	17 30
4	18 15	18 11	18 06	18 00	17 57	17 54	17 50	17 45	17 43	17 41	17 38	17 35	17 32
5	18 15	18 11	18 06	18 01	17 58	17 55	17 51	17 47	17 45	17 43	17 40	17 38	17 35
6	18 15	18 11	18 07	18 02	17 59	17 56	17 53	17 49	17 47	17 45	17 43	17 40	17 37
7	18 15	18 11	18 07	18 03	18 00	17 57	17 54	17 50	17 49	17 47	17 45	17 42	17 40
8	18 14	18 11	18 07	18 03	18 01	17 58	17 55	17 52	17 50	17 49	17 47	17 45	17 42
9	18 14	18 11	18 08	18 04	18 02	17 59	17 57	17 54	17 52	17 51	17 49	17 47	17 45
10	18 14	18 11	18 08	18 04	18 02	18 00	17 58	17 55	17 54	17 52	17 51	17 49	17 47
11	18 14	18 11	18 08	18 05	18 03	18 01	17 59	17 57	17 56	17 54	17 53	17 51	17 50
12	18 13	18 11	18 08	18 06	18 04	18 02	18 01	17 58	17 57	17 56	17 55	17 54	17 52
13	18 13	18 11	18 09	18 06	18 05	18 04	18 02	18 00	17 59	17 58	17 57	17 56	17 55
14	18 13	18 11	18 09	18 07	18 06	18 05	18 03	18 02	18 01	18 00	17 59	17 58	17 57
15	18 13	18 11	18 10	18 08	18 07	18 06	18 05	18 03	18 03	18 02	18 01	18 01	18 00
16	18 12	18 11	18 10	18 08	18 08	18 07	18 06	18 05	18 04	18 04	18 03	18 03	18 02
17	18 12	18 11	18 10	18 09	18 08	18 08	18 07	18 06	18 06	18 06	18 05	18 05	18 04
18	18 12	18 11	18 10	18 10	18 09	18 09	18 08	18 08	18 08	18 08	18 08	18 07	18 07
19	18 12	18 11	18 11	18 10	18 10	18 10	18 10	18 10	18 10	18 10	18 10	18 10	18 09
20	18 11	18 11	18 11	18 11	18 11	18 11	18 11	18 11	18 11	18 12	18 12	18 12	18 12
21	18 11	18 11	18 11	18 11	18 12	18 12	18 12	18 13	18 13	18 13	18 14	18 14	18 14
22	18 10	18 11	18 11	18 12	18 12	18 13	18 14	18 14	18 15	18 15	18 16	18 16	18 17
23	18 10	18 11	18 12	18 13	18 13	18 14	18 15	18 16	18 16	18 17	18 18	18 18	18 19
24	18 10	18 11	18 12	18 13	18 14	18 15	18 16	18 18	18 18	18 19	18 20	18 21	18 22
25	18 10	18 11	18 12	18 14	18 15	18 16	18 17	18 19	18 20	18 21	18 22	18 23	18 24
26	18 09	18 11	18 12	18 14	18 16	18 17	18 19	18 21	18 22	18 23	18 24	18 25	18 26
27	18 09	18 11	18 13	18 15	18 16	18 18	18 20	18 22	18 23	18 25	18 26	18 27	18 29

सूर्यास्त सारणी

सूर्यास्त काल (स्था. म. का.) (बिम्बशीर्ष दृश्य)

अक्षांश	0°	+10°	+20°	+30°	+35°	+40°	+45°	+50°	+52°	+54°	+56°	+58°	+60°
तारीख	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
मार्च 27	18 09	18 11	18 13	18 15	18 16	18 18	18 20	18 22	18 23	18 25	18 26	18 27	18 29
28	18 09	18 11	18 13	18 16	18 17	18 19	18 21	18 24	18 25	18 26	18 28	18 30	18 31
29	18 08	18 11	18 13	18 16	18 18	18 20	18 22	18 25	18 27	18 28	18 30	18 32	18 34
30	18 08	18 11	18 14	18 17	18 19	18 21	18 24	18 27	18 28	18 30	18 32	18 34	18 36
31	18 08	18 11	18 14	18 18	18 20	18 22	18 25	18 28	18 30	18 32	18 34	18 36	18 39
अप्रै. 1	18 08	18 11	18 14	18 18	18 20	18 23	18 26	18 30	18 32	18 34	18 36	18 38	18 41
2	18 07	18 10	18 14	18 19	18 21	18 24	18 28	18 32	18 34	18 36	18 38	18 41	18 44
3	18 07	18 10	18 15	18 19	18 22	18 25	18 29	18 33	18 35	18 38	18 40	18 43	18 46
4	18 07	18 10	18 15	18 20	18 23	18 26	18 30	18 35	18 37	18 40	18 42	18 45	18 48
5	18 06	18 10	18 15	18 20	18 24	18 27	18 31	18 36	18 39	18 41	18 44	18 47	18 51
6	18 06	18 10	18 15	18 21	18 24	18 28	18 33	18 38	18 40	18 43	18 46	18 50	18 53
7	18 06	18 10	18 16	18 22	18 25	18 29	18 34	18 39	18 42	18 45	18 48	18 52	18 56
8	18 06	18 10	18 16	18 22	18 26	18 30	18 35	18 41	18 44	18 47	18 50	18 54	18 58
9	18 05	18 10	18 16	18 23	18 27	18 31	18 36	18 43	18 46	18 49	18 52	18 56	19 01
10	18 05	18 10	18 16	18 24	18 28	18 32	18 38	18 44	18 47	18 50	18 54	18 58	19 03
11	18 05	18 10	18 17	18 24	18 28	18 33	18 39	18 46	18 49	18 52	18 56	19 01	19 06
12	18 04	18 10	18 17	18 25	18 29	18 34	18 40	18 47	18 51	18 54	18 58	19 03	19 08
13	18 04	18 10	18 17	18 25	18 30	18 35	18 42	18 49	18 52	18 56	19 00	19 05	19 10
14	18 04	18 10	18 18	18 26	18 31	18 36	18 43	18 50	18 54	18 58	19 02	19 07	19 13
15	18 04	18 10	18 18	18 26	18 32	18 37	18 44	18 52	18 56	19 00	19 04	19 09	19 15
16	18 03	18 10	18 18	18 27	18 32	18 38	18 45	18 54	18 58	19 02	19 06	19 12	19 18
17	18 03	18 10	18 18	18 28	18 33	18 39	18 46	18 55	18 59	19 04	19 08	19 14	19 20
18	18 03	18 10	18 19	18 28	18 34	18 40	18 48	18 57	19 01	19 05	19 10	19 16	19 23
19	18 03	18 11	18 19	18 29	18 35	18 41	18 49	18 58	19 03	19 07	19 12	19 18	19 25
20	18 02	18 11	18 19	18 30	18 36	18 42	18 50	19 00	19 04	19 09	19 14	19 21	19 28
21	18 02	18 11	18 20	18 30	18 36	18 43	18 52	19 01	19 06	19 11	19 17	19 23	19 30
22	18 02	18 11	18 20	18 31	18 37	18 44	18 53	19 03	19 08	19 13	19 19	19 25	19 33
23	18 02	18 11	18 20	18 31	18 38	18 45	18 54	19 04	19 09	19 15	19 21	19 27	19 35
24	18 02	18 11	18 21	18 32	18 39	18 46	18 55	19 06	19 11	19 17	19 23	19 30	19 38
25	18 02	18 11	18 21	18 33	18 40	18 47	18 57	19 08	19 13	19 18	19 25	19 32	19 40
26	18 01	18 11	18 21	18 33	18 40	18 48	18 58	19 09	19 14	19 20	19 27	19 34	19 42
27	18 01	18 11	18 22	18 34	18 41	18 49	18 59	19 11	19 16	19 22	19 29	19 36	19 45
28	18 01	18 11	18 22	18 35	18 42	18 50	19 00	19 12	19 18	19 24	19 31	19 39	19 47
29	18 01	18 11	18 22	18 35	18 43	18 51	19 02	19 14	19 19	19 26	19 33	19 41	19 50
30	18 01	18 11	18 23	18 36	18 44	18 52	19 03	19 15	19 21	19 28	19 35	19 43	19 52
मई 1	18 01	18 12	18 23	18 37	18 44	18 53	19 04	19 17	19 23	19 30	19 37	19 45	19 55
2	18 00	18 12	18 23	18 37	18 45	18 54	19 05	19 18	19 24	19 31	19 39	19 48	19 57
3	18 00	18 12	18 24	18 38	18 46	18 55	19 07	19 20	19 26	19 33	19 41	19 50	20 00
4	18 00	18 12	18 24	18 38	18 47	18 56	19 08	19 21	19 28	19 35	19 43	19 52	20 02
5	18 00	18 12	18 25	18 39	18 48	18 57	19 09	19 23	19 30	19 37	19 45	19 54	20 05
6	18 00	18 12	18 25	18 40	18 49	18 58	19 10	19 24	19 31	19 39	19 47	19 56	20 07
7	18 00	18 12	18 25	18 40	18 49	18 59	19 12	19 26	19 33	19 40	19 49	19 58	20 10
8	18 00	18 12	18 26	18 41	18 50	19 00	19 13	19 28	19 34	19 42	19 51	20 01	20 12
9	18 00	18 12	18 26	18 42	18 51	19 01	19 14	19 29	19 36	19 44	19 53	20 03	20 15

सूर्यास्त सारणी

सूर्यास्त काल (स्था. म. का.) (बिम्बशीर्ष दृश्य)

अक्षांश / तारीख	0° घं. मि.	+10° घं. मि.	+20° घं. मि.	+30° घं. मि.	+35° घं. मि.	+40° घं. मि.	+45° घं. मि.	+50° घं. मि.	+52° घं. मि.	+54° घं. मि.	+56° घं. मि.	+58° घं. मि.	+60° घं. मि.
मई 9	18 00	18 12	18 26	18 42	18 51	19 01	19 14	19 29	19 36	19 44	19 53	20 03	20 15
10	18 00	18 13	18 26	18 42	18 52	19 02	19 15	19 30	19 38	19 46	19 55	20 05	20 17
11	18 00	18 13	18 27	18 43	18 53	19 03	19 16	19 32	19 39	19 48	19 57	20 07	20 20
12	18 00	18 13	18 27	18 44	18 53	19 04	19 17	19 33	19 41	19 49	19 59	20 09	20 22
13	18 00	18 13	18 28	18 44	18 54	19 05	19 19	19 35	19 42	19 51	20 01	20 12	20 24
14	18 00	18 13	18 28	18 45	18 55	19 06	19 20	19 36	19 44	19 53	20 02	20 14	20 27
15	18 00	18 14	18 28	18 46	18 56	19 07	19 21	19 38	19 46	19 54	20 04	20 16	20 29
16	18 00	18 14	18 29	18 46	18 56	19 08	19 22	19 39	19 47	19 56	20 06	20 18	20 31
17	18 00	18 14	18 29	18 47	18 57	19 09	19 23	19 40	19 49	19 58	20 08	20 20	20 34
18	18 00	18 14	18 30	18 48	18 58	19 10	19 24	19 42	19 50	19 59	20 10	20 22	20 36
19	18 00	18 14	18 30	18 48	18 59	19 11	19 25	19 43	19 52	20 01	20 12	20 24	20 38
20	18 00	18 15	18 30	18 49	19 00	19 12	19 26	19 44	19 53	20 03	20 14	20 26	20 40
21	18 00	18 15	18 31	18 49	19 00	19 13	19 28	19 46	19 55	20 04	20 15	20 28	20 43
22	18 00	18 15	18 31	18 50	19 01	19 14	19 29	19 47	19 56	20 06	20 17	20 30	20 45
23	18 00	18 15	18 32	18 51	19 02	19 15	19 30	19 48	19 57	20 07	20 19	20 32	20 47
24	18 00	18 16	18 32	18 51	19 02	19 15	19 31	19 50	19 59	20 09	20 20	20 34	20 49
25	18 00	18 16	18 32	18 52	19 03	19 16	19 32	19 51	20 00	20 10	20 22	20 36	20 52
26	18 00	18 16	18 33	18 52	19 04	19 17	19 33	19 52	20 02	20 12	20 24	20 37	20 54
27	18 00	18 16	18 33	18 53	19 05	19 18	19 34	19 53	20 03	20 13	20 25	20 39	20 56
28	18 01	18 17	18 34	18 54	19 05	19 19	19 35	19 55	20 04	20 15	20 27	20 41	20 58
29	18 01	18 17	18 34	18 54	19 06	19 20	19 36	19 56	20 05	20 16	20 28	20 43	21 00
30	18 01	18 17	18 34	18 55	19 07	19 20	19 36	19 57	20 06	20 17	20 30	20 44	21 02
31	18 01	18 17	18 35	18 55	19 07	19 21	19 37	19 58	20 08	20 19	20 31	20 46	21 04
जून 1	18 01	18 18	18 35	18 56	19 08	19 22	19 38	19 59	20 09	20 20	20 33	20 48	21 05
2	18 01	18 18	18 36	18 56	19 08	19 22	19 39	20 00	20 10	20 21	20 34	20 49	21 07
3	18 01	18 18	18 36	18 56	19 09	19 23	19 40	20 01	20 11	20 22	20 35	20 50	21 09
4	18 02	18 18	18 36	18 57	19 10	19 24	19 41	20 02	20 12	20 24	20 37	20 52	21 10
5	18 02	18 18	18 37	18 58	19 10	19 24	19 42	20 03	20 13	20 25	20 38	20 53	21 12
6	18 02	18 19	18 37	18 58	19 11	19 25	19 42	20 04	20 14	20 26	20 39	20 55	21 14
7	18 02	18 19	18 38	18 59	19 11	19 26	19 43	20 05	20 15	20 27	20 40	20 56	21 15
8	18 02	18 20	18 38	18 59	19 12	19 26	19 44	20 06	20 16	20 28	20 41	20 57	21 16
9	18 02	18 20	18 38	19 00	19 12	19 27	19 44	20 06	20 17	20 29	20 42	20 58	21 18
10	18 03	18 20	18 38	19 00	19 13	19 28	19 45	20 07	20 18	20 30	20 43	20 59	21 19
11	18 03	18 20	18 39	19 01	19 13	19 28	19 46	20 08	20 18	20 30	20 44	21 01	21 20
12	18 03	18 20	18 39	19 01	19 14	19 29	19 46	20 08	20 19	20 31	20 45	21 02	21 21
13	18 03	18 21	18 40	19 01	19 14	19 29	19 47	20 09	20 20	20 32	20 46	21 02	21 22
14	18 04	18 21	18 40	19 02	19 15	19 30	19 47	20 10	20 20	20 33	20 47	21 03	21 23
15	18 04	18 21	18 40	19 02	19 15	19 30	19 48	20 10	20 21	20 33	20 47	21 04	21 24
16	18 04	18 22	18 40	19 02	19 15	19 30	19 48	20 11	20 22	20 34	20 48	21 05	21 25
17	18 04	18 22	18 41	19 03	19 16	19 31	19 49	20 11	20 22	20 34	20 49	21 05	21 26
18	18 04	18 22	18 41	19 03	19 16	19 31	19 49	20 12	20 22	20 35	20 49	21 06	21 26
19	18 05	18 22	18 41	19 03	19 16	19 31	19 49	20 12	20 23	20 35	20 50	21 06	21 27
20	18 05	18 22	18 41	19 04	19 17	19 32	19 50	20 12	20 23	20 36	20 50	21 07	21 27

सूर्यास्त सारणी

सूर्यास्त काल (स्था. म. का.) (बिम्बशीर्ष दृश्य)

अक्षांश / तारीख	0° घं. मि.	+10° घं. मि.	+20° घं. मि.	+30° घं. मि.	+35° घं. मि.	+40° घं. मि.	+45° घं. मि.	+50° घं. मि.	+52° घं. मि.	+54° घं. मि.	+56° घं. मि.	+58° घं. मि.	+60° घं. मि.
जून 20	18 05	18 22	18 41	19 04	19 17	19 32	19 50	20 12	20 23	20 36	20 50	21 07	21 27
21	18 05	18 23	18 42	19 04	19 17	19 32	19 50	20 12	20 24	20 36	20 50	21 07	21 28
22	18 05	18 23	18 42	19 04	19 17	19 32	19 50	20 13	20 24	20 36	20 50	21 07	21 28
23	18 05	18 23	18 42	19 04	19 17	19 32	19 50	20 13	20 24	20 36	20 50	21 07	21 28
24	18 06	18 23	18 42	19 04	19 17	19 32	19 50	20 13	20 24	20 36	20 51	21 07	21 28
25	18 06	18 24	18 42	19 04	19 18	19 32	19 50	20 13	20 24	20 36	20 51	21 07	21 28
26	18 06	18 24	18 43	19 05	19 18	19 33	19 51	20 13	20 24	20 36	20 51	21 07	21 28
27	18 06	18 24	18 43	19 05	19 18	19 33	19 51	20 13	20 24	20 36	20 50	21 07	21 28
28	18 06	18 24	18 43	19 05	19 18	19 33	19 51	20 13	20 24	20 36	20 50	21 07	21 27
29	18 07	18 24	18 43	19 05	19 18	19 33	19 50	20 13	20 24	20 36	20 50	21 07	21 27
30	18 07	18 24	18 43	19 05	19 18	19 33	19 50	20 13	20 24	20 36	20 50	21 06	21 26
जुला. 1	18 07	18 24	18 43	19 05	19 18	19 33	19 50	20 13	20 23	20 35	20 49	21 06	21 26
2	18 07	18 25	18 43	19 05	19 18	19 33	19 50	20 12	20 23	20 35	20 49	21 05	21 25
3	18 08	18 25	18 43	19 05	19 18	19 32	19 50	20 12	20 23	20 35	20 48	21 05	21 24
4	18 08	18 25	18 43	19 05	19 18	19 32	19 50	20 12	20 22	20 34	20 48	21 04	21 24
5	18 08	18 25	18 43	19 05	19 18	19 32	19 50	20 11	20 22	20 34	20 47	21 03	21 23
6	18 08	18 25	18 43	19 05	19 17	19 32	19 49	20 11	20 21	20 33	20 47	21 02	21 22
7	18 08	18 25	18 43	19 05	19 17	19 32	19 49	20 10	20 21	20 32	20 46	21 01	21 20
8	18 08	18 25	18 43	19 04	19 17	19 31	19 48	20 10	20 20	20 32	20 45	21 00	21 19
9	18 08	18 25	18 43	19 04	19 17	19 31	19 48	20 09	20 19	20 31	20 44	20 59	21 18
10	18 09	18 25	18 43	19 04	19 16	19 31	19 48	20 09	20 19	20 30	20 43	20 58	21 17
11	18 09	18 25	18 43	19 04	19 16	19 30	19 47	20 08	20 18	20 29	20 42	20 57	21 16
12	18 09	18 25	18 43	19 04	19 16	19 30	19 46	20 07	20 17	20 28	20 41	20 56	21 14
13	18 09	18 25	18 43	19 03	19 16	19 29	19 46	20 06	20 16	20 27	20 40	20 55	21 12
14	18 09	18 25	18 43	19 03	19 15	19 29	19 45	20 06	20 15	20 26	20 39	20 53	21 11
15	18 09	18 25	18 43	19 03	19 15	19 28	19 45	20 05	20 14	20 25	20 38	20 52	21 09
16	18 09	18 25	18 42	19 02	19 14	19 28	19 44	20 04	20 13	20 24	20 36	20 51	21 08
17	18 09	18 25	18 42	19 02	19 14	19 27	19 43	20 03	20 12	20 23	20 35	20 49	21 06
18	18 09	18 25	18 42	19 02	19 13	19 27	19 42	20 02	20 11	20 22	20 34	20 47	21 04
19	18 10	18 25	18 42	19 01	19 13	19 26	19 42	20 01	20 10	20 20	20 32	20 46	21 02
20	18 10	18 25	18 42	19 01	19 12	19 25	19 41	20 00	20 09	20 19	20 31	20 44	21 00
21	18 10	18 25	18 41	19 00	19 12	19 25	19 40	19 59	20 08	20 18	20 29	02 42	20 58
22	18 10	18 25	18 41	19 00	19 11	19 24	19 39	19 58	20 06	20 16	20 28	20 41	20 56
23	18 10	18 25	18 41	18 59	19 10	19 23	19 38	19 56	20 05	20 15	20 26	20 39	20 54
24	18 10	18 24	18 40	18 59	19 10	19 22	19 37	19 55	20 04	20 13	20 24	20 37	20 52
25	18 10	18 24	18 40	18 58	19 09	19 21	19 36	19 54	20 02	20 12	20 23	20 35	20 50
26	18 10	18 24	18 40	18 58	19 08	19 21	19 35	19 53	20 01	20 10	20 21	20 33	20 48
27	18 10	18 24	18 39	18 57	19 08	19 20	19 34	19 51	20 00	20 09	20 19	20 31	20 45
28	18 10	18 24	18 39	18 56	19 07	19 19	19 33	19 50	19 58	20 07	20 18	20 29	20 43
29	18 10	18 24	18 39	18 56	19 06	19 18	19 32	19 49	19 56	20 05	20 16	20 27	20 40
30	18 10	18 23	18 38	18 55	19 05	19 17	19 30	19 47	19 55	20 04	20 14	20 25	20 38
31	18 10	18 23	18 38	18 55	19 04	19 16	19 29	19 46	19 54	20 02	20 12	20 23	20 36
अग. 1	18 10	18 23	18 37	18 54	19 04	19 15	19 28	19 44	19 52	20 00	20 10	20 21	20 33

सूर्यास्त सारणी

सूर्यास्त काल (स्था. म. का.) (बिम्बशीर्ष दृश्य)

अक्षांश	0°	+10°	+20°	+30°	+35°	+40°	+45°	+50°	+52°	+54°	+56°	+58°	+60°
तारीख	घं. मि.	घं. मि	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
अग. 1	18 10	18 23	18 37	18 54	19 04	19 15	19 28	19 44	19 52	20 00	20 10	20 21	20 33
2	18 09	18 23	18 37	18 53	19 03	19 14	19 27	19 43	19 50	19 58	20 08	20 18	20 31
3	18 09	18 22	18 36	18 52	19 02	19 13	19 26	19 41	19 48	19 57	20 06	20 16	20 28
4	18 09	18 22	18 36	18 52	19 01	19 12	19 24	19 40	19 47	19 55	20 04	20 14	20 26
5	18 09	18 22	18 35	18 51	19 00	19 10	19 23	19 38	19 45	19 53	20 02	20 12	20 23
6	18 09	18 22	18 35	18 50	18 59	19 09	19 21	19 36	19 43	19 51	20 00	20 09	20 21
7	18 09	18 21	18 34	18 49	18 58	19 08	19 20	19 35	19 41	19 49	19 58	20 07	20 18
8	18 09	18 21	18 34	18 48	18 57	19 07	19 19	19 33	19 40	19 47	19 55	20 05	20 15
9	18 09	18 20	18 33	18 48	18 56	19 06	19 17	19 31	19 38	19 45	19 53	20 02	20 13
10	18 09	18 20	18 32	18 47	18 55	19 05	19 16	19 29	19 36	19 43	19 51	20 00	20 10
11	18 08	18 20	18 32	18 46	18 54	19 03	19 14	19 28	19 34	19 41	19 49	19 57	20 07
12	18 08	18 19	18 31	18 45	18 53	19 02	19 13	19 26	19 32	19 39	19 46	19 55	20 05
13	18 08	18 19	18 30	18 44	18 52	19 01	19 11	19 24	19 30	19 37	19 44	19 52	20 02
14	18 08	18 18	18 30	18 43	18 51	19 00	19 10	19 22	19 28	19 35	19 42	19 50	19 59
15	18 08	18 18	18 29	18 42	18 50	18 58	19 08	19 20	19 26	19 32	19 40	19 47	19 56
16	18 08	18 18	18 28	18 41	18 48	18 57	19 06	19 18	19 24	19 30	19 37	19 45	19 54
17	18 07	18 17	18 28	18 40	18 47	18 56	19 05	19 17	19 22	19 28	19 35	19 42	19 51
18	18 07	18 17	18 27	18 39	18 46	18 54	19 03	19 15	19 20	19 26	19 32	19 40	19 48
19	18 07	18 16	18 26	18 38	18 45	18 53	19 02	19 13	19 18	19 24	19 30	19 37	19 45
20	18 07	18 16	18 26	18 37	18 44	18 51	19 00	19 11	19 16	19 21	19 28	19 34	19 42
21	18 06	18 15	18 25	18 36	18 42	18 50	18 58	19 09	19 14	19 19	19 25	19 32	19 39
22	18 06	18 15	18 24	18 35	18 41	18 48	18 57	19 07	19 12	19 17	19 23	19 29	19 36
23	18 06	18 14	18 23	18 34	18 40	18 47	18 55	19 05	19 10	19 15	19 20	19 27	19 34
24	18 06	18 14	18 23	18 33	18 39	18 46	18 53	19 03	19 08	19 12	19 18	19 24	19 31
25	18 06	18 13	18 22	18 32	18 38	18 44	18 52	19 01	19 05	19 10	19 15	19 21	19 28
26	18 05	18 13	18 21	18 31	18 36	18 43	18 50	18 59	19 03	19 08	19 13	19 18	19 25
27	18 05	18 12	18 20	18 29	18 35	18 41	18 48	18 57	19 01	19 05	19 10	19 16	19 22
28	18 05	18 12	18 19	18 28	18 34	18 40	18 46	18 55	18 59	19 03	19 08	19 13	19 19
29	18 04	18 11	18 18	18 27	18 32	18 38	18 45	18 53	18 56	19 00	19 05	19 10	19 16
30	18 04	18 10	18 18	18 26	18 31	18 36	18 43	18 51	18 54	18 58	19 02	19 08	19 13
31	18 04	18 10	18 17	18 25	18 30	18 35	18 41	18 48	18 52	18 56	19 00	19 05	19 10
सितं. 1	18 03	18 09	18 16	18 24	18 28	18 33	18 39	18 46	18 50	18 53	18 57	19 02	19 07
2	18 03	18 09	18 15	18 22	18 27	18 32	18 37	18 44	18 48	18 51	18 55	18 59	19 04
3	18 03	18 08	18 14	18 21	18 26	18 30	18 36	18 42	18 45	18 49	18 52	18 56	19 01
4	18 02	18 08	18 13	18 20	18 24	18 28	18 34	18 40	18 43	18 46	18 50	18 54	18 58
5	18 02	18 07	18 13	18 19	18 23	18 27	18 32	18 38	18 41	18 44	18 47	18 51	18 55
6	18 02	18 06	18 12	18 18	18 21	18 25	18 30	18 36	18 38	18 41	18 44	18 48	18 52
7	18 02	18 06	18 11	18 16	18 20	18 24	18 28	18 34	18 36	18 39	18 42	18 45	18 49
8	18 01	18 05	18 10	18 15	18 18	18 22	18 26	18 31	18 34	18 36	18 39	18 42	18 46
9	18 01	18 05	18 09	18 14	18 17	18 20	18 24	18 29	18 31	18 34	18 36	18 40	18 43
10	18 00	18 04	18 08	18 13	18 16	18 19	18 22	18 27	18 29	18 31	18 34	18 37	18 40
11	18 00	18 03	18 07	18 12	18 14	18 17	18 21	18 25	18 27	18 29	18 31	18 34	18 37
12	18 00	18 03	18 06	18 10	18 13	18 16	18 19	18 23	18 24	18 26	18 29	18 31	18 34
13	17 59	18 02	18 05	18 09	18 11	18 14	18 17	18 21	18 22	18 24	18 26	18 28	18 31
14	17 59	18 02	18 04	18 08	18 10	18 12	18 15	18 18	18 20	18 22	18 23	18 26	18 28

सूर्यास्त सारणी

सूर्यास्त काल (स्था. म. का.) (बिम्बशीर्ष दृश्य)

अक्षांश	0°	+10°	+20°	+30°	+35°	+40°	+45°	+50°	+52°	+54°	+56°	+58°	+60°
तारीख	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
सितं. 14	17 59	18 02	18 04	18 08	18 10	18 12	18 15	18 18	18 20	18 22	18 23	18 26	18 28
15	17 59	18 01	18 04	18 07	18 09	18 11	18 13	18 16	18 18	18 19	18 21	18 23	18 25
16	17 58	18 00	18 03	18 05	18 07	18 09	18 11	18 14	18 15	18 16	18 18	18 20	18 22
17	17 58	18 00	18 02	18 04	18 06	18 07	18 09	18 12	18 13	18 14	18 15	18 17	18 18
18	17 58	17 59	18 01	18 03	18 04	18 06	18 07	18 10	18 10	18 11	18 13	18 14	18 15
19	17 57	17 58	18 00	18 02	18 03	18 04	18 05	18 07	18 08	18 09	18 10	18 11	18 12
20	17 57	17 58	17 59	18 00	18 01	18 02	18 04	18 05	18 06	18 06	18 07	18 08	18 09
21	17 56	17 57	17 58	17 59	18 00	18 01	18 02	18 03	18 03	18 04	18 04	18 06	18 06
22	17 56	17 57	17 57	17 58	17 58	17 59	18 00	18 01	18 01	18 02	18 02	18 03	18 03
23	17 56	17 56	17 56	17 57	17 57	17 57	17 58	17 58	17 59	17 59	17 59	18 00	18 00
24	17 56	17 55	17 55	17 56	17 56	17 56	17 56	17 56	17 56	17 56	17 57	17 57	17 57
25	17 55	17 55	17 54	17 54	17 54	17 54	17 54	17 54	17 54	17 54	17 54	17 54	17 54
26	17 55	17 54	17 54	17 53	17 53	17 52	17 52	17 52	17 52	17 52	17 51	17 51	17 51
27	17 54	17 54	17 53	17 52	17 51	17 51	17 50	17 50	17 49	17 49	17 49	17 48	17 48
28	17 54	17 53	17 52	17 50	17 50	17 49	17 48	17 47	17 47	17 46	17 46	17 46	17 45
29	17 54	17 52	17 51	17 49	17 48	17 48	17 46	17 45	17 45	17 44	17 43	17 43	17 42
30	17 54	17 52	17 50	17 48	17 47	17 46	17 44	17 43	17 42	17 42	17 41	17 40	17 39
अक्तू. 1	17 53	17 51	17 49	17 47	17 46	17 44	17 43	17 41	17 40	17 39	17 38	17 37	17 36
2	17 53	17 50	17 48	17 46	17 44	17 43	17 41	17 39	17 38	17 37	17 36	17 34	17 33
3	17 52	17 50	17 47	17 44	17 43	17 41	17 39	17 36	17 35	17 34	17 33	17 32	17 30
4	17 52	17 49	17 46	17 43	17 42	17 39	17 37	17 34	17 33	17 32	17 30	17 29	17 27
5	17 52	17 49	17 46	17 42	17 40	17 38	17 35	17 32	17 31	17 29	17 28	17 26	17 24
6	17 52	17 48	17 45	17 41	17 39	17 36	17 33	17 30	17 28	17 27	17 25	17 23	17 21
7	17 51	17 48	17 44	17 40	17 37	17 35	17 32	17 28	17 26	17 24	17 22	17 20	17 18
8	17 51	17 47	17 43	17 38	17 36	17 33	17 30	17 26	17 24	17 22	17 20	17 18	17 15
9	17 51	17 46	17 42	17 37	17 34	17 31	17 28	17 24	17 22	17 20	17 17	17 15	17 12
10	17 50	17 46	17 41	17 36	17 33	17 30	17 26	17 22	17 20	17 17	17 15	17 12	17 09
11	17 50	17 45	17 40	17 35	17 32	17 28	17 24	17 19	17 17	17 15	17 12	17 09	17 06
12	17 50	17 45	17 40	17 34	17 30	17 27	17 22	17 17	17 15	17 12	17 10	17 06	17 03
13	17 50	17 44	17 39	17 33	17 29	17 25	17 21	17 15	17 13	17 10	17 07	17 04	17 00
14	17 50	17 44	17 38	17 32	17 28	17 24	17 19	17 13	17 11	17 08	17 05	17 01	16 57
15	17 49	17 43	17 37	17 30	17 27	17 22	17 17	17 11	17 08	17 05	17 02	16 58	16 54
16	17 49	17 43	17 37	17 29	17 25	17 21	17 15	17 09	17 06	17 03	17 00	16 56	16 51
17	17 49	17 42	17 36	17 28	17 24	17 19	17 14	17 07	17 04	17 01	16 57	16 53	16 48
18	17 49	17 42	17 35	17 27	17 23	17 18	17 12	17 05	17 02	16 58	16 55	16 50	16 46
19	17 48	17 42	17 34	17 26	17 22	17 16	17 10	17 03	17 00	16 56	16 52	16 48	16 43
20	17 48	17 41	17 34	17 25	17 20	17 15	17 08	17 01	16 58	16 54	16 50	16 45	16 40
21	17 48	17 41	17 33	17 24	17 19	17 13	17 07	16 59	16 56	16 52	16 47	16 42	16 37
22	17 48	17 40	17 32	17 23	17 18	17 12	17 05	16 57	16 53	16 49	16 45	16 40	16 34
23	17 48	17 40	17 32	17 22	17 17	17 11	17 04	16 55	16 51	16 47	16 42	16 37	16 31
24	17 48	17 39	17 31	17 21	17 16	17 09	17 02	16 53	16 49	16 45	16 40	16 35	16 28
25	17 48	17 39	17 30	17 20	17 14	17 08	17 00	16 51	16 47	16 43	16 38	16 32	16 26
26	17 47	17 39	17 30	17 19	17 13	17 07	16 59	16 50	16 45	16 40	16 35	16 30	16 23
27	17 47	17 38	17 29	17 18	17 12	17 05	16 57	16 48	16 43	16 38	16 33	16 27	16 20

सूर्यास्त सारणी

सूर्यास्त काल (स्था. म. का.) (बिम्बशीर्ष दृश्य)

अक्षांश	0°	+10°	+20°	+30°	+35°	+40°	+45°	+50°	+52°	+54°	+56°	+58°	+60°
तारीख	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
अक्तू. 27	17 47	17 38	17 29	17 18	17 12	17 05	16 57	16 48	16 43	16 38	16 33	16 27	16 20
28	17 47	17 38	17 28	17 17	17 11	17 04	16 56	16 46	16 41	16 36	16 31	16 24	16 18
29	17 47	17 38	17 28	17 16	17 10	17 03	16 54	16 44	16 39	16 34	16 28	16 22	16 15
30	17 47	17 37	17 27	17 16	17 09	17 02	16 53	16 42	16 38	16 32	16 26	16 20	16 12
31	17 47	17 37	17 27	17 15	17 08	17 00	16 51	16 40	16 36	16 30	16 24	16 17	16 10
नवं. 1	17 47	17 37	17 26	17 14	17 07	16 59	16 50	16 39	16 34	16 28	16 22	16 15	16 07
2	17 47	17 37	17 26	17 13	17 06	16 58	16 48	16 37	16 32	16 26	16 20	16 12	16 04
3	17 47	17 36	17 25	17 12	17 05	16 57	16 47	16 35	16 30	16 24	16 18	16 10	16 02
4	17 47	17 36	17 25	17 12	17 04	16 56	16 46	16 34	16 28	16 22	16 15	16 08	15 59
5	17 47	17 36	17 24	17 11	17 03	16 54	16 44	16 32	16 26	16 20	16 13	16 05	15 56
6	17 47	17 36	17 24	17 10	17 02	16 53	16 43	16 30	16 25	16 18	16 11	16 03	15 54
7	17 47	17 36	17 23	17 09	17 01	16 52	16 42	16 29	16 23	16 16	16 09	16 01	15 52
8	17 47	17 35	17 23	17 09	17 00	16 51	16 40	16 27	16 21	16 15	16 07	15 59	15 49
9	17 47	17 35	17 22	17 08	17 00	16 50	16 39	16 26	16 20	16 13	16 05	15 56	15 47
10	17 48	17 35	17 22	17 07	16 59	16 49	16 38	16 24	16 18	16 11	16 03	15 54	15 44
11	17 48	17 35	17 22	17 07	16 58	16 48	16 37	16 23	16 16	16 09	16 01	15 52	15 42
12	17 48	17 35	17 21	17 06	16 57	16 47	16 36	16 21	16 15	16 08	15 59	15 50	15 40
13	17 48	17 35	17 21	17 06	16 57	16 46	16 34	16 20	16 13	16 06	15 58	15 48	15 37
14	17 48	17 35	17 21	17 05	16 56	16 46	16 33	16 19	16 12	16 04	15 56	15 46	15 35
15	17 48	17 35	17 20	17 04	16 55	16 45	16 32	16 17	16 10	16 03	15 54	15 44	15 33
16	17 48	17 35	17 20	17 04	16 55	16 44	16 31	16 16	16 09	16 01	15 52	15 42	15 31
17	17 48	17 35	17 20	17 04	16 54	16 43	16 30	16 15	16 08	16 00	15 51	15 40	15 28
18	17 49	17 35	17 20	17 03	16 53	16 42	16 29	16 14	16 06	15 58	15 49	15 38	15 26
19	17 49	17 35	17 20	17 03	16 53	16 42	16 28	16 12	16 05	15 57	15 47	15 37	15 24
20	17 49	17 35	17 20	17 02	16 52	16 41	16 28	16 11	16 04	15 55	15 46	15 35	15 22
21	17 49	17 35	17 20	17 02	16 52	16 40	16 27	16 10	16 02	15 54	15 44	15 33	15 20
22	17 50	17 35	17 19	17 02	16 51	16 40	16 26	16 09	16 01	15 53	15 43	15 32	15 19
23	17 50	17 35	17 19	17 01	16 51	16 39	16 25	16 08	16 00	15 51	15 41	15 30	15 17
24	17 50	17 35	17 19	17 01	16 50	16 39	16 24	16 07	15 59	15 50	15 40	15 28	15 15
25	17 51	17 35	17 19	17 01	16 50	16 38	16 24	16 06	15 58	15 49	15 39	15 27	15 13
26	17 51	17 35	17 19	17 01	16 50	16 38	16 23	16 06	15 57	15 48	15 38	15 26	15 12
27	17 51	17 36	17 19	17 00	16 50	16 37	16 22	16 05	15 56	15 47	15 36	15 24	15 10
28	17 51	17 36	17 19	17 00	16 49	16 37	16 22	16 04	15 55	15 46	15 35	15 23	15 08
29	17 52	17 36	17 19	17 00	16 49	16 36	16 21	16 03	15 54	15 45	15 34	15 22	15 07
30	17 52	17 36	17 19	17 00	16 49	16 36	16 21	16 02	15 54	15 44	15 33	15 20	15 05
दिसं. 1	17 52	17 36	17 19	17 00	16 49	16 36	16 20	16 02	15 53	15 43	15 32	15 19	15 04
2	17 53	17 37	17 20	17 00	16 48	16 36	16 20	16 01	15 52	15 42	15 31	15 18	15 03
3	17 53	17 37	17 20	17 00	16 48	16 35	16 20	16 01	15 52	15 42	15 30	15 17	15 02
4	17 54	17 37	17 20	17 00	16 48	16 35	16 19	16 00	15 51	15 41	15 30	15 16	15 00
5	17 54	17 38	17 20	17 00	16 48	16 35	16 19	16 00	15 51	15 40	15 29	15 15	14 59
6	17 54	17 38	17 20	17 00	16 48	16 35	16 19	15 59	15 50	15 40	15 28	15 14	14 58
7	17 55	17 38	17 20	17 00	16 48	16 35	16 19	15 59	15 50	15 39	15 27	15 14	14 57
8	17 55	17 38	17 21	17 00	16 48	16 35	16 18	15 59	15 49	15 39	15 27	15 13	14 57
9	17 56	17 39	17 21	17 00	16 48	16 35	16 18	15 58	15 49	15 38	15 26	15 12	14 56
10	17 56	17 39	17 21	17 00	16 48	16 35	16 18	16 58	15 49	15 38	15 26	15 12	14 55

सूर्यास्त सारणी

सूर्यास्त काल (स्था. म. का.) (बिम्बशीर्ष दृश्य)

अक्षांश / तारीख	0° घं. मि.	+10° घं. मि.	+20° घं. मि.	+30° घं. मि.	+35° घं. मि.	+40° घं. मि.	+45° घं. मि.	+50° घं. मि.	+52° घं. मि.	+54° घं. मि.	+56° घं. मि.	+58° घं. मि.	+60° घं. मि.
दिसं. 10	17 56	17 39	17 21	17 00	16 48	16 35	16 18	15 58	15 49	15 38	15 26	15 12	14 55
11	17 57	17 40	17 22	17 01	16 49	16 35	16 18	15 58	15 49	15 38	15 26	15 11	14 55
12	17 57	17 40	17 22	17 01	16 49	16 35	16 18	15 58	15 48	15 38	15 25	15 11	14 54
13	17 58	17 40	17 22	17 01	16 49	16 35	16 18	15 58	15 48	15 38	15 25	15 11	14 54
14	17 58	17 41	17 22	17 02	16 49	16 35	16 19	15 58	15 48	15 38	15 25	15 11	14 54
15	17 58	17 41	17 23	17 02	16 50	16 36	16 19	15 58	15 48	15 38	15 25	15 10	14 53
16	17 59	17 42	17 23	17 02	16 50	16 36	16 19	15 58	15 49	15 38	15 25	15 10	14 53
17	18 00	17 42	17 24	17 02	16 50	16 36	16 19	15 59	15 49	15 38	15 25	15 10	14 53
18	18 00	17 42	17 24	17 03	16 50	16 36	16 20	15 59	15 49	15 38	15 25	15 10	14 53
19	18 00	17 43	17 25	17 03	16 51	16 37	16 20	15 59	15 49	15 38	15 25	15 11	14 53
20	18 01	17 44	17 25	17 04	16 51	16 37	16 20	16 00	15 50	15 38	15 26	15 11	14 53
21	18 02	17 44	17 26	17 04	16 52	16 38	16 21	16 00	15 50	15 39	15 26	15 11	14 54
22	18 02	17 44	17 26	17 05	16 52	16 38	16 21	16 00	15 50	15 39	15 27	15 12	14 54
23	18 02	17 45	17 26	17 05	16 53	16 39	16 22	16 01	15 51	15 40	15 27	15 12	14 55
24	18 03	17 46	17 27	17 06	16 53	16 39	16 22	16 02	15 52	15 40	15 28	15 13	14 55
25	18 03	17 46	17 28	17 06	16 54	16 40	16 23	16 02	15 52	15 41	15 28	15 14	14 56
26	18 04	17 47	17 28	17 07	16 54	16 40	16 24	16 03	15 53	15 42	15 29	15 14	14 57
27	18 04	17 47	17 29	17 07	16 55	16 41	16 24	16 04	15 54	15 43	15 30	15 15	14 58
28	18 05	17 48	17 29	17 08	16 56	16 42	16 25	16 04	15 54	15 43	15 31	15 16	14 59
29	18 06	17 48	17 30	17 09	16 56	16 42	16 26	16 05	15 55	15 44	15 32	15 17	15 00
30	18 06	17 49	17 30	17 09	16 57	16 43	16 26	16 06	15 56	15 45	15 33	15 18	15 01
31	18 06	17 49	17 31	17 10	16 58	16 44	16 27	16 07	15 57	15 46	15 34	15 19	15 02
32	18 07	17 50	17 32	17 11	16 59	16 45	16 28	16 08	15 58	15 47	15 35	15 21	15 04

ध्यान रहें – यहां दी गई इन सूर्योदय और सूर्यास्तसारणियों से ज्ञात सूर्योदय–सूर्यास्तकाल में एक मिनट से ज्यादा का अन्तर नहीं आता। सैकण्ड तक शुद्ध सूर्योदयास्त जानने के लिए सूर्यक्रान्ति , चर और वेलान्तर की अपेक्षा होती है। इनसे जाना गया सूर्योदयास्तकाल सैकिण्ड तक शुद्ध होता है। सूर्यक्रान्ति, चर और वेलान्तर की सारणियां और उनसे सूक्ष्म सूर्योदयास्त जानने की विधि 'गणकमार्त्तण्ड' में दी गई है , वहां देखिए ।

सूर्यकेन्द्रोदयास्त-संस्कार सारणी

उत्तर या दक्षिण अक्षांश→	0°	10°	20°	30°	35°	40°	45°	50°	52°	54°	56°	58°	60°
तारीख	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.
22 दिसं.	3 25	3 29	3 41	4 05	4 22	4 47	5 22	6 13	6 41	7 16	8 01	9 01	10 29
21 जन.	3 20	3 24	3 35	3 56	4 13	4 34	5 04	5 46	6 07	6 33	7 05	7 44	8 35
9 फर.	3 15	3 18	3 28	3 47	4 02	4 21	4 46	5 19	5 36	5 57	6 19	6 47	7 20
24 फर.	3 11	3 14	3 24	3 42	3 55	4 12	4 34	5 04	5 18	5 35	5 54	6 16	6 41
8 मार्च	3 09	3 12	3 21	3 38	3 51	4 07	4 28	4 55	5 08	5 24	5 41	5 59	6 22
21 मार्च	3 08	3 11	3 20	3 37	3 50	4 05	4 26	4 53	5 05	5 20	5 36	5 55	6 16
2 अप्रै.	3 09	3 12	3 21	3 38	3 51	4 07	4 28	4 55	5 08	5 24	5 41	5 59	6 22
16 अप्रै.	3 11	3 14	3 24	3 42	3 55	4 12	4 34	5 04	5 18	5 35	5 54	6 16	6 41
1 मई	3 15	3 18	3 28	3 47	4 02	4 21	4 46	5 19	5 36	5 57	6 19	6 47	7 20
20 मई	3 20	3 24	3 35	3 56	4 13	4 34	5 04	5 46	6 07	6 33	7 05	7 44	8 35
21 जून	3 25	3 29	3 41	4 05	4 22	4 47	5 22	6 13	6 41	7 16	8 01	9 01	10 29
23 जुला.	3 20	3 24	3 35	3 56	4 13	4 34	5 04	5 46	6 07	6 33	7 05	7 44	8 35
12 अग.	3 15	3 18	3 28	3 47	4 02	4 21	4 46	5 19	5 36	5 57	6 19	6 47	7 20
27 अग.	3 11	3 14	3 24	3 42	3 55	4 12	4 34	5 04	5 18	5 35	5 54	6 16	6 41
10 सितं.	3 09	3 12	3 21	3 38	3 51	4 07	4 28	4 55	5 08	5 24	5 41	5 59	6 22
23 सितं.	3 08	3 11	3 20	3 37	3 50	4 05	4 26	4 53	5 05	5 20	5 36	5 55	6 16
6 अक्तू.	3 09	3 12	3 21	3 38	3 51	4 07	4 28	4 55	5 08	5 24	5 41	5 59	6 22
19 अक्तू.	3 11	3 14	3 24	3 42	3 55	4 12	4 34	5 04	5 18	5 35	5 54	6 16	6 41
3 नवं.	3 15	3 18	3 28	3 47	4 02	4 21	4 46	5 19	5 36	5 57	6 19	6 47	7 20
22 नवं.	3 20	3 24	3 35	3 56	4 13	4 34	5 04	5 46	6 07	6 33	7 05	7 44	8 35
22 दिसं.	3 25	3 29	3 41	4 05	4 22	4 47	5 22	6 13	6 41	7 16	8 01	9 01	10 29

पृ. 280 पर दी गई सूर्योदय–सूर्यास्तसारणी से सूर्यबिम्ब के उपरी कोर का उदयास्त ज्ञात होता है, इसलिए इसे 'बिम्बशीर्ष दृश्य' उदयास्तकाल कहा जाता है। यह उदयास्तकाल किरणवक्रीभवन संस्कार से संस्कृत भी है। पृथ्वी के वातावरण के कारण उत्पन्न किरणवक्रीभवन (Refraction) से सूर्य का बिम्ब वास्तविक सूर्योदयकाल से कुछ मिनट पहले ही पूर्वीक्षितिज में दीखने लग जाता है और इसी कारण वह वास्तविक सूर्यास्तकाल के कुछ मिनट बाद तक पश्चिमीक्षितिज में भी दीखता रहता है। किरणवक्रीभवन के कारण सूर्यबिम्ब की उपरी कोर जब पूर्वी एवं पश्चिमीक्षितिज में दिखाई पड़ रही होती है तब सूर्यबिम्ब का केन्द्र वस्तुतः क्षितिज से लगभग 47 कला नीचे होता है। लग्नआदि साधन के लिए , इष्टकाल बनाने के लिए वास्तविक सूर्यबिम्ब के केन्द्रोदयास्त का काल अपेक्षित होता है। इस 'सूर्यकेन्द्रोदयास्त संस्कार सारणी' में दिया गया संस्कार किरणवक्रीभवन संस्कार युक्त सूर्योदयास्तकाल (पृ. 280 पर सूर्योदयास्त सारणी में दिए गए सूर्योदयास्तकाल) में कर देने से वास्तविक सूर्यकेन्द्रोदयास्तकाल ज्ञात हो जाता है। यह संस्कार सूर्योदय में जोड़ा और सूर्यास्त में से घटाया जाता है। इस प्रकार प्राप्त सूर्योदयास्तकाल को गणितागत अथवा ज्योतिषशास्त्रीय सूर्योदयास्तकाल भी कहते हैं।

दक्षिण अक्षांशीय सूर्योदयास्तसाधन सहायकसारणी (भाग 1)

दक्षिण अक्षांश तारीख	उत्तर अक्षांश तारीख	संस्कार मिनट	दक्षिण अक्षांश तारीख	उत्तर अक्षांश तारीख	संस्कार मिनट	दक्षिण अक्षांश तारीख	उत्तर अक्षांश तारीख	संस्कार मिनट	दक्षिण अक्षांश तारीख	उत्तर अक्षांश तारीख	संस्कार मिनट	दक्षिण अक्षांश तारीख	उत्तर अक्षांश तारीख	संस्कार मिनट
जन. 1	जुला. 3	00	फर. 11	अग. 15	+10	मार्च 24	सितं. 26	+15	मई 4	नवं. 6	+13	जून 14	दिसं.15	+05
2	4	00	12	16	10	25	27	15	5	7	13	15	16	05
3	5	00	13	17	10	26	29	15	6	8	13	16	17	04
4	6	00	14	18	10	27	30	15	7	9	13	17	18	04
5	7	+01	15	19	11	28	अक्तू. 1	15	8	10	12	18	19	04
6	8	01	16	20	11	29	2	15	9	11	12	19	20	04
7	9	01	17	21	11	30	3	15	10	12	12	20	21	04
8	10	02	18	22	11	31	4	15	11	13	12	21	21	03
9	11	02	19	23	11	अप्रै. 1	5	15	12	14	12	22	22	03
10	12	02	20	25	12	2	6	15	13	15	12	23	23	03
11	13	02	21	26	12	3	7	15	14	16	12	24	24	03
12	14	02	22	27	12	4	7	15	15	17	11	25	25	02
13	15	03	23	28	12	5	8	15	16	17	11	26	26	02
14	16	03	24	29	12	6	9	15	17	18	11	27	27	02
15	17	03	25	30	13	7	10	15	18	19	11	28	28	01
16	19	03	26	31	13	8	11	15	19	20	11	29	29	01
17	20	04	27	सितं. 1	13	9	12	15	20	21	11	30	30	01
18	21	04	28	2	13	10	13	15	21	22	10	जुला. 1	31	01
19	22	04	मार्च 1	3	13	11	14	15	22	23	10	2	जन. 1	+01
20	23	05	2	4	13	12	15	15	23	24	10	3	1	00
21	24	05	3	5	13	13	16	15	24	25	10	4	2	00
22	25	05	4	6	13	14	17	15	25	26	10	5	3	00
23	26	06	5	7	13	15	18	15	26	27	09	6	4	−01
24	27	06	6	8	14	16	19	15	27	28	09	7	5	01
25	28	06	7	9	14	17	20	15	28	29	09	8	6	01
26	29	06	8	10	14	18	21	15	29	30	09	9	7	01
27	30	07	9	11	14	19	22	15	30	दिसं. 1	09	10	8	02
28	31	07	10	12	14	20	23	15	31	2	08	11	9	02
29	अग. 1	07	11	13	14	21	24	14	जून 1	3	08	12	10	02
30	2	07	12	14	14	22	25	14	2	4	08	13	11	02
31	3	07	13	15	14	23	26	14	3	5	07	14	12	03
फर. 1	5	08	14	16	14	24	27	14	4	5	07	15	13	03
2	6	08	15	17	14	25	28	14	5	6	07	16	14	03
3	7	08	16	18	15	26	29	14	6	7	07	17	15	03
4	8	08	17	19	15	27	30	14	7	8	07	18	15	03
5	9	09	18	20	15	28	31	14	8	9	07	19	16	04
6	10	09	19	21	15	29	नवं. 1	14	9	10	06	20	17	04
7	11	09	20	22	15	30	2	14	10	11	06	21	18	04
8	12	09	21	23	15	मई 1	3	13	11	12	06	22	19	04
9	13	09	22	24	15	2	4	13	12	13	06	23	20	05
10	14	+10	23	25	+15	3	5	+13	13	14	+05	24	21	−05

दक्षिण अक्षांशीय सूर्योदयास्तसाधन सहायकसारणी (भाग 2)

दक्षिण अक्षांश तारीख	उत्तर अक्षांश तारीख	संस्कार मिनट	दक्षिण अक्षांश तारीख	उत्तर अक्षांश तारीख	संस्कार मिनट	दक्षिण अक्षांश तारीख	उत्तर अक्षांश तारीख	संस्कार मिनट	दक्षिण अक्षांश तारीख	उत्तर अक्षांश तारीख	संस्कार मिनट	दक्षिण अक्षांश तारीख	उत्तर अक्षांश तारीख	संस्कार मिनट
जुला.24	जन. 21	−05	अग. 26	फर. 21	−12	सितं.28	मार्च 26	−15	अक्तू.31	अप्रै. 28	−14	दिसं. 3	जून 1	−08
25	22	05	27	22	12	29	26	15	नवं. 1	29	14	4	2	08
26	23	06	28	23	12	30	27	15	2	30	14	5	3	07
27	24	06	29	24	12	अक्तू.1	28	15	3	मई 1	13	6	4	07
28	25	06	30	25	13	2	29	15	4	2	13	7	6	07
29	26	06	31	26	13	3	31	15	5	3	13	8	7	07
30	27	07	सितं. 1	27	13	4	31	15	6	4	13	9	8	07
31	28	07	2	28	13	5	अप्रै. 1	15	7	5	13	10	9	07
अग. 1	29	07	3	मार्च 1	13	6	2	15	8	6	13	11	10	06
2	30	07	4	2	13	7	3	15	9	7	13	12	11	06
3	30	07	5	3	13	8	4	15	10	8	12	13	12	06
4	31	08	6	4	14	9	5	15	11	9	12	14	13	05
5	फर. 1	08	7	5	14	10	6	15	12	10	12	15	14	05
6	2	08	8	6	14	11	7	15	13	11	12	16	15	05
7	3	08	9	7	14	12	9	15	14	12	12	17	16	04
8	4	08	10	8	14	13	10	15	15	13	12	18	17	04
9	5	09	11	9	14	14	11	15	16	14	11	19	18	04
10	6	09	12	10	14	15	12	15	17	15	11	20	19	04
11	7	09	13	11	14	16	13	15	18	17	11	21	21	03
12	8	09	14	12	14	17	14	15	19	18	11	22	22	03
13	9	09	15	13	14	18	15	15	20	19	11	23	23	03
14	10	10	16	14	14	19	16	15	21	20	11	24	24	03
15	11	10	17	15	15	20	17	15	22	21	10	25	25	02
16	12	10	18	16	15	21	18	15	23	22	10	26	26	02
17	13	10	19	17	15	22	19	15	24	23	10	27	27	02
18	14	10	20	18	15	23	20	15	25	24	10	28	28	02
19	15	11	21	19	15	24	21	14	26	25	10	29	29	01
20	16	11	22	20	15	25	22	14	27	26	09	30	30	01
21	17	11	23	21	15	26	23	14	28	27	09	31	जुला.1	−01
22	18	11	24	22	15	27	24	14	29	28	09	32	2	00
23	19	11	25	23	15	28	25	14	30	29	09			
24	19	12	26	24	15	29	26	14	दिसं.1	30	08			
25	20	12	27	25	15	30	27	14	2	31	−08			

पृष्ठ 280 पर सूर्योदयसारणी एवं सूर्यास्तसारणी में दिया गया सूर्योदयास्तकाल केवल उत्तरी अक्षांशों के लिए है। दक्षिण अक्षांश वाले स्थलों का सूर्योदयास्तकाल जानने के लिए ऊपर दिए गए इस कोष्ठक का प्रयोग कीजिए । जिस तारीख के लिए दक्षिण अक्षांश का सूर्योदयास्तकाल जानना है, उस 'द. अक्षांशीय तारीख' के आगे इस कोष्ठक में लिखी 'उ.अक्षांशीय तारीख' का सूर्योदयास्त पृष्ठ 280 पर दी गई सूर्योदय–सूर्यास्तसारणी से ही ज्ञात कर लें। इसमें इस कोष्ठक से प्राप्त संस्कार के मिनटों को चिह्नानुसार जोड़ने या घटाने से आपके अभीष्ट तारीख का अभीष्ट द.अक्षांशीय सूर्योदयास्तकाल (स्था. म. का.) ज्ञात हो जाएगा। जैसे :– 10 मार्च को द. अक्षांश 20° के स्थल का सूर्योदयास्त जानने के लिए इस कोष्ठक के अनुसार हमें 12 सितम्बर का सूर्योदयास्त पृष्ठ 280 से लेना होगा। जो कि क्रमशः 5 घं 46 मि. और 18 घं 6 मि. है। इन दोनो में इस कोष्ठक से प्राप्त संस्कार मिनट +14 चिह्नानुसार जोड़ने पर 10 मार्च को 20° द. अक्षांश का सूर्योदयास्तकाल (स्था. म. काल) क्रमशः 6 घं. 00 मि. और 18 घं. 20 मि. प्राप्त हुआ। इन में अभीष्ट नगर का स्टैण्डर्ड अन्तर जोड़ने या घटाने से यह सूर्योदयास्तकाल क्षेत्रीय स्टैं. टा. में बदल जाएगा।

अक्षांशादि सारणी

(भारत के सभी प्रान्तों के प्रसिद्ध एवं महत्त्वपूर्ण नगर–उपनगरों के अक्षांश, रेखांश तथा स्टैण्डर्ड अन्तर)

अण्डेमान एवं निकोबार द्वीपसमूह (Andaman&Nicobar Islands) (U.T.)

द्वीप / नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर (धन)	द्वीप / नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर (धन)	द्वीप / नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर (धन)
	अं. क.	अं. क.	मि. से.		अं. क.	अं. क.	मि. से.		अं. क.	अं. क.	मि. से.
ककाना	09 07	92 49	41 16	नचुग	10 45	92 22	39 28	निकोबार छोटा (द्वी.)	07 20	93 40	44 40
कोयहोआ	08 12	93 29	43 56	पोर्टब्लेअर	11 41	92 43	40 52	बनागा	06 56	93 54	45 36
कारनिकोबार (द्वी.)	09 10	92 47	41 08	टिल्लानचांग (द्वी.)	08 30	93 37	44 28	हैवलॉक (द्वी.)	11 58	93 00	42 00
चनुम्ला	08 19	93 05	42 20	डाकोआंक	07 02	93 43	44 52				

अरुणाचल प्रदेश (ARUNACHAL PRADESH)

नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर (धन)	नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर (धन)	नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर (धन)
	अं. क.	अं. क.	मि. से.		अं. क.	अं. क.	मि. से.		अं. क.	अं. क.	मि. से.
Along	28 12	94 46	49 04	Kalaktang	27 07	92 07	38 28	Seppa	27 21	93 04	42 16
Anini	28 50	95 54	53 36	Karko	28 33	95 04	50 16	Tali	28 03	93 39	44 36
Basar	27 58	94 42	48 48	Kherewa	27 37	93 03	42 12	Tato	28 38	94 19	47 16
Bomdila	27 19	92 25	39 40	Khonsa	26 58	95 32	52 08	Tawal	27 46	96 50	57 20
Bomdo	28 43	94 52	49 28	Kimin	27 20	93 58	45 52	Tawang	27 35	91 52	37 28
Bruini	29 10	96 11	54 44	Minutang	28 13	96 32	56 08	Tezu	27 55	96 10	54 40
Changlang	27 05	95 38	52 32	Palin	27 42	93 35	44 20	Tuting	28 59	94 48	49 12
Daporijo	28 01	94 10	46 40	Pangin	28 14	94 58	49 52	Walong	28 07	96 58	57 52
Gocham	27 44	94 12	46 48	Pasighat	28 05	95 20	51 20	Ziro	27 32	93 47	45 08
Itanagar	27 05	93 35	44 20	Riang	27 32	92 55	41 40				

आन्ध्रप्रदेश (ANDHRA PRADESH)

नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर	नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर	नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर
	अं. क.	अं. क.	मि. से.		अं. क.	अं. क.	मि. से.		अं. क.	अं. क.	मि. से.
Addanki	15 50	80 00	-10 00	Avanigadda	16 03	80 59	-06 04	Bobbili	18 32	83 29	+03 56
Addatigala	17 31	82 03	-01 48	Badvel	14 46	79 02	-13 52	Bodhan	18 40	77 51	-18 36
Adilabad	19 40	78 31	-15 56	Balkonda	19 05	78 20	-16 40	Bukkapatnam	14 12	77 46	-18 56
Adoni	15 38	77 16	-20 56	Bandamurlanka	16 28	82 03	-01 48	Chagalamurry	15 00	78 35	-15 40
Alampur	15 55	78 06	-17 36	Banganapalle	15 19	78 17	-16 52	Chandragiri	13 36	79 20	-12 40
Allagadda	15 08	78 30	-16 00	Banswada	18 20	77 54	-18 24	Chandrupatia	18 34	80 23	-08 28
Allur	14 41	80 04	-09 44	Bapatla	15 54	80 28	-08 08	Cherial	17 59	79 00	-14 00
Alur	15 24	77 15	-21 00	(Parkasam)				Cherla	18 05	80 55	-06 20
Amalapuram	16 36	82 03	-01 48	Baruva	18 54	84 40	+08 40	Chinna Ganjam	15 43	80 26	-08 16
Amaravati	16 35	80 20	-08 40	Bellamkonda	16 35	80 04	-09 44	Chinnur	18 53	79 49	-10 44
Anakapalle	17 42	83 06	+02 24	Bhadrachalam	17 42	80 59	-06 04	Chipurupalle,	17 34	83 10	+02 40
Ananthapur	14 42	77 05	-21 40	Bhainsa	19 08	77 59	-18 04	(Vishakhapatnam)			
Andod	17 49	78 03	-17 48	Bhaisa	19 08	77 59	-18 04	Chirala	15 50	80 21	-08 36
Armagon	13 55	80 14	-09 04	Bhimavaram	16 34	81 35	-03 40	Chittoor	13 12	79 07	-13 32
Armur	18 49	78 15	-17 00	Bhongir	17 33	78 55	-14 20	Chodavaram	17 28	81 50	-02 40
Atmakur (Kurnool)	15 56	78 43	-15 08	Bimgal	18 46	78 26	-16 16	Coringa	16 52	82 19	-00 44
Atmakur (Nellore)	14 39	79 43	-11 08	Bimlipatam	17 54	83 31	+04 04	Cuddapah	14 30	78 50	-14 40

आन्ध्रप्रदेश (ANDHRA PRADESH)

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. से.
Cumbum	15 39	79 09	- 13 24
Dachepalle	16 37	79 45	- 11 00
Dharmaraopet	18 23	79 54	- 10 24
Darsi	15 47	79 43	- 11 08
Devalpalli	16 57	79 28	- 12 08
Devarkonda	16 43	78 58	- 14 08
Dharmavaram	14 27	77 44	- 19 04
Dhone	15 28	77 52	- 18 32
Diviport	15 59	81 14	- 05 04
Dornakal	17 26	80 13	- 09 08
Dowlishwaram	16 57	81 53	- 02 28
Dummagudem	17 51	80 57	- 06 12
Elamanchlli	17 33	82 55	+01 40
Elluru	16 45	81 10	- 05 20
Emmiganurh	15 44	77 29	- 20 04
Gadwal	16 15	77 50	- 18 40
Gajapathinagaram	18 20	83 29	+03 56
Giddalur	15 23	78 56	- 14 16
GodavariCape	16 41	82 25	- 00 20
Golkonda	17 24	78 23	- 16 28
Gooty	15 08	77 36	- 19 36
Gudivada	16 27	81 00	- 06 00
Gudur (Kurnood)	14 10	79 51	- 10 36
Gudur(Nellore)	15 45	78 30	- 16 00
Guntakal	15 11	77 24	- 20 24
Guntur	16 20	80 27	- 08 12
Guruzala	16 32	79 38	- 11 28
Hanamkonda	18 04	79 34	- 11 44
Hasanparti	18 08	79 33	- 11 48
Hindupur	13 49	77 29	- 20 04
Huzurabad	18 13	79 22	- 12 32
Huzurnagar	17 02	79 58	- 10 08
Hyderabad	17 22	78 26	- 16 16
Jad cherla	16 46	78 05	- 17 40
Jaggayyapeta	16 56	80 08	- 09 28
Jagtial	18 48	78 56	- 14 16
Jammalamadugu	14 51	78 21	- 16 36
Jangaon (Warrangal)	17 44	79 10	- 13 20
Jangaon(adilabad)	19 22	79 21	- 12 36
Kaddam	19 07	78 46	- 14 56
Kadiri	14 08	78 07	- 17 32
Kakinada	16 59	82 20	- 00 40
Kalabgur	17 39	78 02	- 17 52
Kalahasti	13 48	79 42	- 11 12
Kaligiri	14 51	79 40	- 11 20
Kalingapatnam	18 21	84 11	+06 44
Kalwakurthi	16 39	78 27	- 16 12

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. से.
Kalyan Durg	14 33	77 05	- 21 40
Kamalpuram	14 38	78 40	- 15 20
Kamareddi	18 19	78 22	- 16 32
Kandukur	15 15	79 47	- 10 52
Kanigiri	15 25	79 30	- 12 00
Karim Nagar	18 27	79 06	- 13 36
Karvetnagar	13 27	79 25	- 12 20
Kaulas	18 19	77 38	- 19 28
Kavali	14 57	80 03	- 09 48
Khammam	17 16	80 13	- 09 08
Kodad	17 00	79 58	- 10 08
Koduru	14 53	78 08	- 17 28
Kohir	17 36	77 38	- 19 38
Koilkonda	16 45	77 50	- 18 40
Koilkuntla	15 15	78 16	- 16 56
Kolhapur	16 06	78 16	- 16 56
Konada	18 02	83 41	+04 44
Kondapalle	16 38	80 36	- 07 36
Kondavid	16 17	80 16	- 08 56
Korangal	17 08	77 36	- 19 36
Koratla	18 51	78 41	- 15 16
Kosgi (Mehboobnagar)	17 01	77 43	- 19 08
Kosgi (Kurnool)	15 51	77 16	- 20 56
Kotipalle	16 44	82 03	- 01 48
Kottagudom	17 32	80 39	- 07 24
Kovvur	17 01	81 44	- 03 04
Kuppam	12 45	78 20	- 16 40
Kuppiti	18 13	83 58	+05 52
Kurnool	15 50	78 03	- 17 48
Kurupam	18 56	83 37	+04 28
Lingampeth	18 13	78 05	- 17 40
Lingamparthi	17 20	82 11	- 01 16
Lingapur	19 03	78 08	- 17 28
Machilipatnam	16 10	81 08	- 05 28
Machkund dam	18 32	82 34	+00 16
Madanapalle	13 33	78 30	- 16 00
Madhra	16 54	80 25	- 08 20
Madnur	18 31	77 37	- 19 32
Madugula	17 53	82 54	+01 36
Mahabubabad	17 37	80 01	- 09 56
Mahabubnagar	16 44	77 59	- 18 04
Mahadeopur	18 44	80 04	- 09 44
Makhtal	16 30	77 28	- 20 08
Mancheral	18 52	79 26	- 12 16
Mandasa	18 53	84 31	+08 04
Mangahpett	18 16	80 33	- 07 48

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. से.
Mangalagiri	16 29	80 35	- 07 40
Manthani	18 40	79 40	- 11 20
Markapur	15 44	79 17	- 12 52
Medak	18 03	78 15	- 17 00
Medchal	17 41	78 27	- 16 12
Mirij Guda	16 53	79 33	- 11 48
Mudbol	19 00	77 54	- 18 24
Mulug	18 14	79 57	- 10 12
Mungod	17 06	79 00	- 14 00
Muttuku ru	14 17	80 08	- 09 38
Nagar Karn ul	16 29	78 20	- 16 40
Nagar Kurn ool	16 30	78 19	- 16 44
Nagari	13 20	79 33	- 11 48
Nagari Hills	13 40	79 50	- 10 40
Nagarju nsaga r-Dam	16 35	79 17	- 12 52
Nagawaram	17 16	81 22	- 04 32
Nalgonda	17 04	79 15	- 13 00
Nandigama	16 48	80 19	- 08 44
NandikanamaPass	15 26	78 45	- 15 00
Nandikotkur	15 54	78 17	- 16 52
Nandyal	15 30	78 28	- 16 08
Narasannapeta	18 25	84 03	+06 12
Narasapur	16 27	81 40	- 03 20
Narasaraopet	16 17	80 03	- 09 48
Narayanpet	16 46	77 27	- 20 12
Narsapur	19 03	78 10	- 17 20
Narsipatnam	17 40	82 37	+00 28
Naupada	18 33	84 14	+06 56
Nayudupet	13 56	80 00	- 10 00
Nellore	14 29	80 00	- 10 00
Nidadavolu	16 56	81 42	- 03 12
Nidagunda	17 46	79 15	- 13 00
Nirmal	19 06	78 21	- 16 36
NizamSagarlake	18 10	77 58	- 18 08
Nizamabad	18 40	78 05	- 17 40
Nizampatnam	15 56	80 44	- 07 04
Nuzvid	16 47	80 51	- 06 36
Ongole	15 30	80 06	- 09 36
Pakala	13 25	79 05	- 13 40
Pakhal Lake	17 59	82 02	- 01 52
Palakollu	16 34	81 48	- 02 48
Palkonda	18 36	83 45	+05 00
Palmaner	13 13	78 44	- 15 04
Paloncha	17 35	80 44	- 07 04
Pangal (Mehboob Nagar)	16 17	78 05	- 17 40
Pangal(Nalgonda)	17 10	79 18	- 12 48

आन्ध्रप्रदेश (ANDHRA PRADESH)

नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर
	अं. क.	अं.	मि. से.
Pargi	17 12	77 49	- 18 44
Parkal	18 15	79 42	- 11 12
Parkasam	15 30	80 06	- 09 36
Parvathipuram	18 48	83 28	+03 52
Patancheru	17 37	78 20	- 16 40
Pedapalli	18 40	79 25	- 12 20
Peddapuram	17 06	82 13	- 01 08
Pentakota	17 10	82 42	+00 48
Penugonda	16 40	81 44	- 03 04
Penukonda	14 05	77 35	- 19 40
Peruru	14 21	77 20	- 20 40
Piler	13 39	78 58	- 14 08
Pithapuram	17 07	82 20	- 00 40
Podile	15 36	79 39	- 11 24
Polavaram	17 15	81 43	- 03 08
Porumamilla	15 01	79 00	- 14 00
Proddatur	14 45	78 34	- 15 44
Pulivendla	14 29	78 13	- 17 08
Pullampet	14 10	79 15	- 13 00
Punganuru	13 22	78 35	- 15 40
Puttaparthy	14 15	77 45	- 19 00
Pyapali	15 14	77 47	- 18 52
Rajahmundry	17 01	81 52	- 02 32
Rajam	18 29	83 48	+05 12
Rajampet	14 11	79 10	- 13 20
Ramachandrapuram	16 54	82 03	- 01 48
Ramalakotta	15 37	78 02	- 17 52
Ramayampet	18 05	78 25	- 16 20
Rapur	14 15	79 30	- 12 00
Rayachoti	14 04	78 46	- 14 56
Rayadurg	14 42	76 48	- 22 48
Razam	18 27	83 48	+05 12
Razole	16 36	81 48	- 02 48
Rekapalle	17 33	81 27	- 04 12

नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर
	अं. क.	अं. क.	मि. से.
Relli	17 53	83 17	+03 08
Renigunta	13 40	79 31	- 11 56
Repalle	16 02	80 53	- 06 28
Repur	14 12	79 36	- 11 36
Sadaseopet	17 38	77 59	- 18 04
Salur	18 31	83 16	+03 04
Samalkot	17 03	82 15	- 01 00
Sangareddipet	17 37	78 04	- 17 44
Santapilly	18 05	83 47	+05 08
Sattenapalle	16 27	80 10	- 09 20
Secunderabad	17 27	78 30	- 16 00
Shahabad	17 08	76 56	- 22 16
Shamsabad	17 13	78 42	- 15 12
Siddhavattam	14 28	79 01	- 13 56
Siddipet	18 07	78 51	- 14 36
Singareni	17 33	80 19	- 08 44
Sirpur	19 21	79 36	- 11 36
Sirsilla	18 24	78 48	- 14 48
Sirvel	15 20	78 32	- 15 52
Sitarampuram	15 11	79 10	- 13 20
Sompeta	18 58	84 39	+08 36
Sri Harikota	13 45	80 15	- 09 00
Srikakulam	18 19	84 00	+06 00
Srikalahasti Sri	13 48	79 42	- 11 12
Sailam	16 02	78 56	- 14 16
Sri Sailam	16 06	78 54	- 14 24
SrungavarapuKota	18 05	83 15	+03 00
Suluru	13 42	80 01	- 09 56
Suriapet	17 09	79 37	- 11 32
Tadpatri	14 55	77 59	- 18 04
Takapalle	15 55	79 16	- 12 56
Tandur (Karim-Nagar)	19 10	79 25	- 12 20
Tandur (Hyd.)	17 17	77 33	- 19 48

नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर
	अं. क.	अं. क.	मि. से.
Tanuku	16 48	81 45	- 03 00
Tekkali	18 37	84 15	+07 00
Tekmal	17 59	78 02	- 17 52
Tenali	16 13	80 36	- 07 36
Tirupati	13 39	79 25	- 12 20
Tiruttani	13 12	79 35	- 11 40
Tiruvur	17 06	80 38	- 07 28
Tudaram	18 51	79 30	- 12 00
Tuni	17 21	82 33	+00 12
Udayagiri	14 54	79 18	- 12 48
Uravakonda	14 57	77 15	- 21 00
Vardannapet	17 47	79 34	- 11 44
Vayalpad	13 38	78 32	- 15 52
Vayalpao	13 38	78 37	- 15 32
Veldurti	15 35	77 55	- 18 20
Velpura	16 53	81 38	- 03 28
Vemalwada	18 30	78 53	- 14 28
Vempalle	14 20	78 26	- 16 16
Venktagiri	13 59	79 35	- 11 40
Venkatagiri (Kota)	13 00	78 34	- 15 44
Vishakhapatnam	17 42	83 18	+03 12
Vijayavada	16 31	80 39	- 07 24
Vizianagarom	18 07	83 25	+03 40
Vontimitta	14 24	79 00	- 14 00
Vuyyuru	16 23	80 51	- 06 36
Wanparti	16 22	78 04	- 17 44
Warangal	18 00	79 35	- 11 40
Yadiki	15 04	77 54	- 18 24
Yellandu	17 39	80 23	- 08 28
Yallareddi	18 31	78 00	- 18 00
Yanam	16 44	82 13	- 01 08
Yernagudeon	17 01	81 34	- 03 44
Zahirabad	17 41	77 37	- 19 32

आसाम (Assam)

नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर (धन)
	अं. क.	अं. क.	मि. से.
Abhaypuri	26 20	90 40	32 40
Along	28 12	94 52	49 28
Amatulla	26 59	92 06	38 24
Ameengaon	26 13	91 45	37 00
Amring	25 43	92 54	41 36
Asnoli	28 44	95 35	52 20
Baladhan	25 00	93 06	42 24
Balipada	26 09	92 09	38 36

नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर (धन)
	अं. क.	अं. क.	मि. से.
Barapeta	26 20	91 03	34 12
Barpathar	26 16	93 50	45 20
Barpeta	26 20	91 02	34 08
Bihpuriagaon	27 03	93 54	45 36
Bijni	26 31	90 40	32 40
Bishemnagar	28 02	96 01	54 04
Bishnath	26 37	93 11	42 44
Boga	28 25	94 39	48 36

नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर (धन)
	अं. क.	अं. क.	मि. से.
Bomdilla	27 15	92 25	39 40
Bongaigaon	26 30	90 35	32 20
Brahmkund	27 52	96 23	55 32
Bruint	29 00	96 08	54 32
Buha	27 44	93 59	45 56
Chabua	27 30	95 09	50 36
Chengele	28 44	96 18	55 12
Chonkham	27 48	96 03	54 12

आसाम (Assam)

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर (धन) मि. से.
Chutia	26 45	93 00	42 00
Cosigon	26 50	94 17	47 08
Damorh	28 24	95 17	51 08
Darnga	26 51	91 26	35 44
Datma	26 30	90 10	30 40
Dhakuakhana	17 13	94 26	47 44
Dhekijuli	26 49	92 28	39 52
Dhemoji	27 28	94 37	44 28
Dhuburi	26 02	89 58	29 52
Dibrugarh	27 29	94 56	49 44
Digboi	27 22	95 34	52 16
Dimapur	25 54	93 45	45 00
Diphu	25 50	93 25	43 40
Dudhnai	25 59	90 43	32 52
Dullabchara	24 25	92 22	39 28
Dumduma	22 35	88 23	23 32
Fakirgram	26 22	90 15	31 00
Gauhati	26 10	91 45	37 00
Goalpara	26 10	90 38	32 32
Golaghat	26 30	93 59	45 56
Guwahati	देखें –Gauhati		
Gyarisingh	28 59	95 44	52 56
Haflong	25 11	93 02	42 08
Hailakandi	24 41	92 34	40 16
Hajo	26 16	91 35	36 20
Hapoli	27 43	93 50	45 20
Harangajo	25 07	92 51	41 24
Helam	27 50	93 20	43 20
Helem	26 52	93 30	44 00
Ilong	27 31	93 51	45 24
Jaipur	27 14	95 24	51 36
Jaram	28 02	94 10	46 40

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर (धन) मि. से.
Jogighopa	26 14	90 35	32 20
Jorhat	26 45	94 12	46 28
Kalkalighat	24 31	92 16	39 04
Kambang	28 12	94 40	48 40
Karimganj	24 48	92 30	40 00
Kebang	28 09	95 01	50 04
Kokrajhar	26 25	90 18	31 12
Kronli	28 25	95 50	53 20
Ladu Mt.	27 55	93 44	44 56
Laimkuri	27 42	95 01	50 04
Laju	26 55	94 36	52 24
Lakhimpur	27 14	94 15	47 00
Langting	25 28	93 10	42 40
Lumding	25 46	93 10	42 40
Mahur	25 11	93 07	42 28
Maibang	25 16	93 10	42 40
Mairabari	26 28	92 26	39 44
Makum	27 28	95 28	51 52
Mancachar	25 35	89 54	29 36
Mara	28 11	94 14	46 56
Mangaldai	26 28	92 02	38 08
Marigaon	26 15	92 19	39 16
Margherita	27 17	95 40	52 40
Minutang	28 14	96 32	56 08
Minzong	27 57	96 58	57 52
Mukki	28 04	94 16	47 04
Murkong Selek	27 49	95 16	51 04
Nagaon	26 21	92 42	40 48
Nakhola	26 07	92 11	38 44
Nalbari	26 26	91 30	36 00
Namrup	27 12	95 20	51 20
Ninging	28 58	94 49	49 16

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर (धन) मि. से.
N. Lakhimpur	27 14	94 07	46 28
Pasighat	28 01	95 20	51 20
Patakata	25 50	90 00	30 00
Patharughat	26 21	91 54	37 36
Pointong	27 33	92 30	40 00
Raha	26 19	92 30	40 00
Ramsing	28 40	94 58	49 52
Rangapara	26 50	92 44	40 56
Rangia	26 28	91 35	36 20
Riang	27 32	92 56	41 44
Rikor	28 50	94 51	49 24
Ripu	26 45	90 09	30 36
Rupa	27 19	92 21	39 24
Rushon	28 50	95 59	53 56
Sadiya	27 49	95 38	52 32
Saikoha Ghat	27 46	95 38	52 32
Sepon	27 08	94 51	49 24
Shaluni Mt.	28 58	96 02	54 08
Sibsagar	26 58	94 39	48 36
Silchar	24 49	92 47	41 08
Silghat	26 36	92 56	41 44
Singrimari	25 45	89 57	29 48
Sonari	27 00	95 04	50 16
Tangla	26 40	91 57	37 48
Tawang	27 34	91 54	37 36
Taxpur	26 37	92 58	41 52
Tejpur	26 38	92 49	41 16
Tezpur	26 38	92 49	41 16
Tinsukia	27 28	95 20	51 20
Udalguri	26 46	92 08	38 32
Umlaiteng	25 48	92 03	38 12
Vorjing Mt.	28 19	94 20	47 20

उड़ीसा(ORISSA)

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. से.
Ambo	21 08	86 16	+15 04
Ampam	19 37	82 40	+00 40
Anandapur	21 14	86 10	+14 40
Angul	20 48	85 04	+10 16
Athamallik	20 55	84 30	+08 00
Athgarh	20 31	85 41	+12 44
Badamgarh	21 50	85 22	+11 28
Badampaharh	22 04	86 06	+14 24
Bahalda	22 22	86 10	+14 40
Balangir	20 43	83 29	+03 56
Balasore	21 31	86 59	+17 56

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. से.
Baleshwar	21 31	86 59	+17 56
Balliguda	20 12	82 58	+01 52
Bamanghati	22 13	86 15	+15 00
Banapur	19 50	85 15	+11 00
Banei	21 47	85 02	+10 08
Bangriposi	22 10	86 32	+16 08
Banki	20 20	85 35	+12 20
Baragarh	21 25	83 35	+04 20
Barakot	21 33	85 01	+10 04
Barhamba	20 24	85 22	+11 28
Baripada	21 52	86 48	+17 12

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. से.
Batiguda	20 12	83 58	+05 52
Bauda	20 50	84 22	+07 28
Berhampur	19 21	84 51	+09 24
Bhadrakh	21 05	86 36	+16 24
Bhanjanagar	19 58	84 35	+08 20
Bhawanipatna	19 54	83 10	+02 40
Bhuban	20 52	85 51	+13 24
Bhubaneshwar	20 13	85 50	+13 20
Binika	21 02	83 51	+05 24
Bissamcuttack	19 34	83 32	+04 08
Bolangir	20 41	83 30	+04 00

उड़ीसा(ORISSA)

नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्वी)	स्टैण्डर्ड अन्तर
	अं. क.	अं. क.	मि. से.
Borasambar	20 58	83 00	+02 00
Champua	22 05	85 40	+12 40
Chhatrapur	19 24	85 00	+10 00
Chilkalake	19 35	85 20	+11 20
Cuttack	20 26	85 56	+13 44
Daspalla	20 20	84 58	+09 52
Deogarh	21 32	84 46	+09 04
Dhamra	20 49	86 58	+17 52
Dharakota	19 41	84 36	+08 24
Dharamsala	20 45	86 13	+14 52
Dhenkanal	20 40	85 39	+12 36
Dholpur	20 38	84 27	+07 48
Digaphandi	19 25	84 36	+08 24
Digupud	19 12	84 34	+08 16
False Pt.	20 22	86 52	+17 28
Galleri	20 06	84 36	+08 24
Ganjam	19 28	85 00	+10 00
Gantapara	20 34	83 42	+04 48
Gopalpur	19 20	85 00	+10 00
Gorumahisani	22 21	86 22	+15 28
Gorna	20 20	83 00	+02 00
Gudari	19 24	83 45	+05 00
Gunupur	19 04	83 52	+05 28
Hindala	20 40	8510	+10 40
Hirakund Dam	21 31	83 57	+05 48
Honda	21 22	85 39	+12 36
Ichchapuram	19 10	84 43	+08 52
Jagatsinghpur	20 15	86 10	+14 40
Jajpur	20 50	86 25	+15 40
Jaleshwar	21 48	87 14	+18 56
Jeypore	18 52	82 38	+00 32
Jharsuguda	21 56	84 04	+06 16
Joda	22 02	85 22	+11 28
Junagarh	19 50	83 00	+02 00
Kankhyanagar	20 52	85 30	+12 00
Kanpur	20 25	85 15	+11 00
Kantilo	20 20	85 16	+11 04
Karanjia	21 52	85 59	+13 56

नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्वी)	स्टैण्डर्ड अन्तर
	अं. क.	अं. क.	मि. से.
Kendrapara	20 30	86 25	+15 40
Kendujhargarh	21 38	85 35	+12 20
Khallikota	19 38	85 08	+10 32
Khandgiri Hills	20 20	85 50	+13 20
Khandparah	20 15	85 11	+10 44
Khariar	20 19	82 50	+01 20
Khichina	21 54	85 54	+13 36
Khordha	20 10	85 42	+12 48
Khurda	20 10	85 42	+12 48
Kodala	19 36	84 55	+09 40
Kolabira	21 49	84 14	+06 56
Konark	19 54	86 07	+14 28
Koraput	18 48	82 41	+00 44
Kotapad	19 06	82 26	- 00 16
Kotagar	19 53	83 46	+05 04
Kujang	20 12	86 38	+16 32
Kumritar Mt.	21 43	85 12	+10 48
Kumund	20 31	82 43	+00 52
Kunjabar	20 26	84 53	+09 32
Laichanpur	21 12	86 42	+16 48
Madanpur	20 20	83 35	+04 20
Mahendragiri Mt.	19 00	84 19	+07 16
Malkanagiri	18 22	81 57	- 02 12
Mankarnacha Mt.	21 46	85 16	+11 04
Meghasani Hills	21 38	86 26	+15 44
Milsika	20 19	83 50	+05 20
Mundagor	20 01	83 30	+04 00
Nabarangapur	19 15	82 39	+00 36
Nandapur	18 32	82 52	+01 28
Naraj Dam	20 25	85 46	+13 04
Narasinghapura	20 28	85 08	+10 32
Nawapara	20 46	82 33	+00 12
Nayagarh	20 10	85 08	+10 32
Nilgiri	21 29	86 49	+17 16
Nunkapasi	20 54	84 40	+08 40
Pala Lahara	21 25	85 12	+10 48
Palasuni	21 08	85 30	+12 00

नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्वी)	स्टैण्डर्ड अन्तर
	अं. क.	अं. क.	मि. से.
Pallahara	21 28	85 10	+10 40
Palmyras Pt.	20 46	87 02	+18 08
Pappadahandi	19 22	82 34	+00 16
Paradevip	20 17	86 42	+16 48
ParalaKhemundi	18 45	84 10	+06 40
Patnagarh	20 43	83 09	+02 36
Phulbani	20 30	84 18	+07 12
Pottangi	18 35	83 03	+02 12
Puri	19 48	85 52	+13 28
Raigarh	19 51	82 06	- 01 36
Raja Ranapur	20 08	85 22	+11 28
Ramagiri Udayagiri	19 10	84 11	+06 44
Rampur	21 05	84 22	+07 28
Raurkela	22 13	84 53	+09 32
Rayagada	19 10	83 28	+03 52
Remuna	21 33	86 54	+17 36
Rhambha	19 31	85 10	+10 40
Sambalpur	21 28	84 04	+06 16
Sarada	19 45	84 29	+07 56
Sohela	21 20	83 24	+03 36
Sonapur	20 50	83 58	+05 52
Sonepur	20 51	83 55	+05 40
Sorada	19 45	84 26	+07 44
Soro	21 18	86 49	+17 16
Sundargarh	22 07	84 02	+06 08
Surada	19 46	84 29	+07 56
Talcher	21 00	85 18	+11 12
Talsara	22 20	84 05	+06 20
Tigiria	20 28	85 34	+12 16
Tikarpara Dam	20 32	84 56	+09 44
Tirtol	20 17	86 22	+15 28
Titilagarh	20 18	83 11	+02 44
Tumudibandh	19 59	83 46	+05 04
Udayagiri	19 08	84 10	+06 40
Umarkot	19 39	82 18	- 00 48
Uperbada	22 10	86 07	+14 28
Venkatapalem	18 05	81 40	- 03 20

उत्तरप्रदेश और उत्तरांचल

नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्वी)	स्टैण्डर्ड अन्तर
	अं. क.	अं. क.	मि. से.
अकबरपुर	26 25	82 33	+00 12
अगोरी	24 34	82 57	+01 48
अच्छनेरा	27 11	77 46	–18 56
अतरौली	28 02	78 17	–16 52
अनूपशहर	28 22	78 16	–16 56
अफजलगढ	29 24	78 41	–15 16

नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्वी)	स्टैण्डर्ड अन्तर
	अं. क.	अं. क.	मि. से.
अमरोहा	28 54	78 29	–16 04
अमेठी	26 08	81 50	–02 40
अम्बाह	26 43	78 15	–17 00
अयोध्या	26 48	82 12	–01 12
अल्लापुर	27 54	79 19	–12 44
अलीगंज	27 30	79 11	–13 16

नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्वी)	स्टैण्डर्ड अन्तर
	अं. क.	अं. क.	मि. से.
अलीगढ	27 53	78 05	–17 40
अल्मोड़ा	29 37	79 40	–11 20
अहरौरा	25 01	83 01	+02 04
आगरा	27 11	78 01	–17 56
आजमगढ	26 04	83 11	+02 44
इटावा	26 47	79 02	–13 52

उत्तरप्रदेश और उत्तरांचल

नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर	नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर	नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर
	अं. क.	अं. क.	मि. से.		अं. क.	अं. क.	मि. से.		अं. क.	अं. क.	मि. से.
इतवा	27 20	82 42	+00 48	कोटद्वारा	29 45	78 32	−15 52	जंघई	25 34	82 17	−00 52
इतिमादपुर	27 15	78 12	−17 12	कौपागंज	26 01	83 34	+04 16	जपिया	24 33	84 01	+06 04
इलाहाबाद	25 28	81 54	−02 24	कोरा	26 05	80 26	−08 16	जमनोत्तरी	31 01	78 27	−16 12
ईसानगर	27 54	81 13	−05 08	कोरियालाघाट	28 22	81 04	−05 44	जरवा	27 39	82 31	+00 04
उझानी	28 01	79 01	−13 56	कोसी	27 48	77 26	−20 16	जलालपुर	26 19	82 44	+00 56
उत्तर काशी	30 44	78 27	−16 12	खतौली	29 17	77 43	−19 08	जलालाबाद	27 43	79 40	−11 20
उतरौला	27 19	82 25	−00 20	खागा	25 47	81 06	−05 36	जलेसर	27 29	78 19	−16 40
उन्नाव	26 32	80 30	−08 00	खिलचीपुर	24 02	76 34	−23 44	जसरा	25 17	81 48	−02 48
उरई	25 59	79 28	−12 08	खुर्जा	28 13	77 50	−18 40	जसराना	27 14	78 41	−15 16
उस्का	27 10	83 10	+02 40	खेडी	27 54	80 48	−06 48	जसवन्त नगर	26 53	78 55	−14 20
ऋषिकेश	30 07	78 18	−15 12	खैर	27 57	77 50	−18 40	जहांगीराबाद	28 25	78 06	−17 36
एटा	27 38	78 40	−15 20	खैरागढ़	26 56	77 52	−18 32	जहानाबाद	25 13	84 59	+09 56
ऐत	25 55	79 13	−13 08	खैराबाद	27 32	80 45	−07 00	जाईस	26 15	81 32	−03 52
ओरैया	26 28	79 31	−11 56	गंगापुर	26 29	76 43	−23 08	जानसठ	29 20	77 51	−18 36
औरंगाबाद	24 45	84 22	+07 28	गंगोत्तरी	30 36	79 02	−13 52	जालौन	26 09	79 21	−12 36
कच्छवा	25 13	82 43	+00 52	गंगोह	29 46	77 15	−21 00	जिगनी	25 45	79 25	−12 20
कटारनियां घाट	28 20	81 09	−05 24	गंजडुण्डवाड़ा	27 44	78 57	−14 12	जोशीमठ	30 34	79 34	−11 44
कदौरा	25 59	79 52	−10 32	गढमुक्तेश्वर	28 48	78 06	−17 36	जौनपुर	25 44	82 41	+00 44
कन्नौज	27 04	79 55	−10 20	गरौठा	25 34	79 18	−12 48	झवानी	27 36	84 31	+08 04
कमसिन	25 31	80 56	−06 16	गाजियाबाद	28 40	77 26	−20 16	झांसी	25 26	78 35	−15 40
करहल	27 01	78 57	−14 12	गाजीपुर	25 35	83 34	+04 16	टनकपुर	29 05	80 07	−09 32
कर्ण प्रयाग	30 13	79 17	−12 52	गुन्नौर	28 14	78 28	−16 08	टप्पल	28 03	77 35	−19 40
कर्वी	25 12	80 54	−06 24	गुरसराए	25 37	79 11	−13 16	टाण्डा	26 33	82 39	+00 36
कसिया	26 45	83 55	+05 40	गुलावठी	28 36	77 47	−18 52	टाण्डा	28 59	78 56	−14 16
काठगोदाम	29 16	79 32	−11 52	गोण्डा	27 08	82 01	−01 56	टूण्डला	27 12	78 17	−16 52
कांठ	29 04	78 38	−15 28	गोरखपुर	26 45	83 22	+03 28	टैकाडी	24 56	84 50	+09 20
कादीपुर	26 10	82 23	−00 28	गोलागोकर्णनाथ	28 05	80 28	−08 08	ठाकुरद्वारा	29 12	78 51	−14 36
कानपुर	26 28	80 21	−08 36	गोवर्धन	27 30	77 28	−20 08	डिबाई	28 13	78 15	−17 00
कान्धला	29 19	77 16	−20 56	गौरीफण्टा	28 41	80 33	−07 48	डुमराओं	25 33	84 09	+06 36
काम्पिल	27 37	79 17	−12 52	चकराता	30 42	77 51	−18 36	डेरापुर	26 26	79 48	−10 48
काल्पी	26 07	79 44	−11 04	चकला	25 04	83 12	+02 48	ताजपुर	29 10	78 29	−16 04
काशीपुर	29 13	78 57	−14 12	चकिया	26 25	85 03	+10 12	तालबाहट	25 03	78 27	−16 12
कसिवा	26 45	83 55	+05 40	चन्दनचौकी	28 33	80 47	−06 52	तिहार	27 58	79 44	−11 04
कासगंज	27 49	78 39	−15 24	चन्दौसी	28 27	78 46	−14 56	तेजम	29 57	80 08	−09 28
किच्छौच्छा	26 24	82 50	+01 20	चमौली	30 24	79 21	−12 36	दरयाबाद	26 53	81 33	−03 48
कीरतपुर	29 31	78 12	−17 12	चम्पावत	29 20	80 06	−09 36	दाऊदनगर	25 02	84 24	+07 36
कुञ्छा	28 08	84 20	+07 20	चरखाड़ी	25 24	79 45	−11 00	दानापुर	25 38	85 03	+10 12
कुण्डा	25 43	81 31	−03 56	चित्रकूटधाम	25 11	80 52	−06 32	दालमऊ	26 04	81 02	−05 52
कुराओं	24 59	82 05	−01 40	चिरगांव	25 35	78 49	−14 44	दूधी	24 13	83 15	+03 00
कुरौली	27 24	78 59	−14 04	चुनार	25 08	82 56	+01 44	देवगांव	25 45	83 00	+02 00
कुलपहाड़	25 19	79 39	−11 24	चोपां	24 31	83 02	+02 08	देवबन्द	29 42	77 41	−19 16
कूंच	25 58	79 08	−13 28	छतरपुर	24 55	79 35	−11 40	देवरिया	26 31	83 47	+05 08
केदारनाथ	30 44	79 04	−13 44	छपरा	24 40	76 50	−22 40	देहरादून	30 19	78 02	−17 52
कैसरगंज	27 18	81 33	−03 48	छाटा	27 44	77 28	−20 08	देहरी	24 52	84 11	+06 44
कैप्टनगंज	26 55	83 42	+04 48	छितौनी	27 09	83 58	+05 52	दोहरीघाट	26 16	83 31	+04 04
कैराना	29 24	77 12	−21 12	छिब्रामऊ	27 09	79 31	−11 56	धनौरा	28 58	78 15	−17 00
कैमगंज	27 34	79 21	−12 36	जगदीशपुर	25 29	84 25	+07 40	धामपुर	29 19	78 31	−15 56

उत्तरप्रदेश और उत्तरांचल

नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर	नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर	नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर
	अं. क.	अं. क.	मि. से.		अं. क.	अं. क.	मि. से.		अं. क.	अं. क.	मि. से.
नकूर	29 55	77 18	−20 48	बहजोई	28 24	78 37	−15 32	मऊरानीपुर	25 15	79 08	−13 28
नगीना	29 27	78 27	−16 12	बहराइच	27 35	81 36	−03 36	मखदूमनगर	26 28	82 46	+01 04
नजीबाबाद	29 38	78 20	−16 40	बहादुरगंज	27 32	82 50	+01 20	मंगलौर	29 48	77 52	−18 32
नरेन्द्रनगर	30 10	78 20	−16 40	बहेड़ी	28 47	79 30	−12 00	मछलीशहर	25 41	82 25	−00 20
नरैनी	25 11	80 29	−08 04	बरवासागर	25 23	78 44	−15 04	मथुरा	27 30	77 41	−19 16
नवाबगंज	28 33	79 38	−11 28	बरहज	26 16	83 45	+05 00	मन्दावर	29 30	78 08	−17 28
नवाबगंज	26 52	82 08	−01 28	बरौट	29 06	77 16	−20 56	मवाना	29 06	77 55	−18 20
नवाबगंज	26 56	81 13	−05 08	बलिया	25 45	84 10	+06 40	मलीहाबाद	26 55	80 43	−07 08
नानपाड़ा	27 52	81 30	−04 00	बरेली	28 22	79 27	−12 12	मसूरी	30 27	78 07	−17 32
निघासन	28 14	80 52	−06 32	बलरामपुर	27 26	82 11	−01 16	महमूदाबाद	27 18	81 07	−05 32
निहतौर	29 20	78 23	−16 28	बस्ती	26 48	82 43	+00 52	महरौनी	24 35	78 43	−15 08
नैनीताल	29 23	79 27	−12 12	बाघपत	28 57	77 13	−21 08	महाराजगंज	26 07	84 29	+07 56
नौतांवा	27 26	83 25	+03 40	बाड़ी	26 39	77 36	−19 36	महोबा	25 17	79 52	−10 32
पट्टी	25 55	82 12	−01 12	बादशाहपुर	25 47	82 49	+01 16	माणिकपुर	25 04	81 07	−05 32
पदरौना	26 55	83 59	+05 56	बान्दा	25 29	80 20	−08 40	मिर्जापुर	25 09	82 35	+00 20
पयागपुर	27 25	81 48	−02 48	बाराबांकी	26 55	81 12	−05 12	मिसरिख	27 27	80 31	−07 56
पवायां	28 04	80 06	−09 36	बालामऊ	27 15	80 23	−08 28	मुंगराबादशाहपुर	25 40	82 11	−01 16
पिठोरागढ़	29 35	80 13	−09 08	बांसगांव	26 32	83 27	+03 48	मुज़फ्फरनगर	29 28	77 41	−19 16
पिलखुआं	28 43	77 39	−19 24	बांसडीह	25 55	84 14	+06 56	मुगलसराय	25 18	83 07	+02 28
पिहानी	27 38	80 12	−09 12	बांसी	27 11	82 56	+01 44	मुबारकपुर	26 05	83 18	+03 12
पीपल कौटी	30 26	79 27	−12 12	बाह	26 53	78 36	−15 36	मुरादाबाद	28 50	78 47	−14 52
पीलीभीत	28 38	79 48	−10 48	बिजनौर	29 22	78 08	−17 28	मुसाफिरखाना	26 22	81 47	−02 52
पुखरायां	26 14	79 51	−10 36	बिजोरी	28 06	82 20	−00 40	मुस्किरा	25 40	79 48	−10 48
पुरवा	26 28	80 50	−06 40	बिधूना	26 49	79 31	−11 56	मुहम्मदाबाद	26 02	83 23	+03 32
पूरनपुर	28 31	80 09	−09 24	बिलग्राम	27 11	80 02	−09 52	मुहम्मदी	27 57	80 13	−09 08
पैलानी	25 44	80 23	−08 28	बिलसी	28 08	78 55	−14 20	मेजा	25 09	82 05	−01 40
पौड़ीगढ़वाल	30 09	78 47	−14 52	बिलारी	28 38	78 48	−14 48	मेरठ	28 59	77 42	−19 12
प्रतापगढ़	25 50	81 59	−02 04	बिलासपुर	28 53	79 16	−12 56	मेहनगर	25 53	83 07	+02 28
फतेहपुर	25 56	80 52	−06 32	बीसलपुर	28 18	79 48	−10 48	मेहन्दाबाल	26 59	83 07	+02 28
फतेहपुर	27 10	81 13	−05 08	बीरगंज	27 00	84 52	+09 28	मैनपुरी	27 14	79 01	−13 56
फतेहपुरसीकरी	27 06	77 40	−19 20	बुलन्दशहर	28 24	77 51	−18 36	मैलानी	28 17	80 21	−08 36
फतेहाबाद	27 01	78 19	−16 44	बेरी	28 42	76 35	−23 40	मोहनलालगंज	26 41	81 02	−05 52
फरीदनगर	28 46	77 37	−19 32	बेलागंज	25 56	81 59	−02 04	मौडहा	25 41	80 07	−09 32
फरीदपुर	28 13	79 33	−11 48	बेला (प्रतापगढ़)	25 54	82 01	−01 56	मौरवाँ	26 25	80 55	−06 20
फर्रुखाबाद	27 24	79 34	−11 44	बैजनाथ	29 55	79 37	−11 32	रसरा	25 51	83 51	+05 24
फिरोजाबाद	27 09	78 24	−16 24	भदोही	25 25	82 34	+00 16	राजाखेड़ा	26 55	78 11	−17 16
फूलपुर	25 33	82 06	−01 36	भरथाना	26 45	79 14	−13 04	राथ	25 35	79 34	−11 44
फैजाबाद	26 47	82 08	−01 28	भाण्डेर	25 44	78 45	−15 00	रानीखेत	29 39	79 25	−12 20
बक्सर	25 35	83 59	+05 56	भींगा	27 43	81 56	−02 16	राबर्ट्सगंज	24 42	83 04	+02 16
बगहा	27 06	84 05	+06 20	भैरावा	27 31	83 24	−03 36	रामनगर	29 24	79 07	−13 32
बदायूं	28 03	79 07	−13 32	भोनगांव	27 15	79 11	−13 16	रामनगर	25 17	83 02	+02 08
बद्रीनाथ	30 44	79 29	−12 04	भोवाली	29 23	79 31	−11 56	रामपुर	28 49	79 02	−13 52
बनारस	25 20	83 00	+02 00	मऊ	25 17	81 23	−04 28	रामसनेहीघाट	26 45	81 30	−04 00
बबीना	25 15	78 28	−16 08	मऊऐम्मा	25 42	81 55	−02 20	रायपुर	30 19	78 06	−17 36
बबेरू	25 34	80 43	−07 08	मऊनाथभंजन	25 57	83 33	+04 12	रायबरेली	26 14	81 16	−04 56

उत्तरप्रदेश और उत्तरांचल

नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर	नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर	नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर
	अं. क.	अं. क.	मि. से.		अं. क.	अं. क.	मि. से.		अं. क.	अं. क.	मि. से.
रुडकी	29 52	77 53	–18 28	श्रीनगर (गढ़वाल)	30 13	78 47	–14 52	सीतापुर	27 34	80 41	–07 16
रुदौली	26 45	81 45	–03 00	सगरी	26 08	83 19	+03 16	सुआर	29 02	79 03	–13 48
लक्सर	29 48	78 02	–17 52	सदाबाद	27 27	78 03	–17 48	सुल्तानपुर	26 16	82 04	–01 44
लखनऊ	26 51	80 55	–06 20	संभल	28 35	78 33	–15 48	सेमरिआ	24 16	79 54	–10 24
लखीमपुर	27 57	80 49	–06 44	सरधना	29 09	77 37	–19 32	सैदपुर	25 33	83 11	+02 44
लखीमपुर (खेडी)	27 57	80 46	–06 56	सरीला	25 47	79 42	–11 12	सोनवां	27 40	81 45	–03 00
लखेडी	25 40	76 10	–25 20	सलौन	26 03	81 25	–04 20	हमीरपुर	25 57	80 09	–09 24
ललितपुर	24 41	78 25	–16 20	सहसवां	28 05	78 45	–15 00	हरदोई	27 25	80 07	–09 32
लहरपुर	27 38	80 57	–06 12	सहारनपुर	29 58	77 33	–19 48	हरपालपुर	25 17	79 20	–12 40
लहार	26 12	78 57	–14 12	साफीपुर	26 47	80 23	–08 28	हरिद्वार	29 58	78 10	–17 20
लालकुआं	29 04	79 33	–11 48	साण्डिला	27 05	80 31	–07 56	हरिनागब	27 09	84 19	+07 16
लूसा	24 53	82 53	+01 32	सारनाथ	25 24	83 01	+02 04	हरैया	26 47	82 36	+00 24
लैंस डाऊन	29 50	78 41	–15 16	सासनी	27 43	78 05	–17 40	हल्द्वानी	29 13	79 31	–11 56
वराणसी	25 20	83 00	+02 00	सिकन्दराबाद	28 27	77 42	–19 12	हलिया	24 48	82 20	–00 40
शाहगढ	24 19	79 08	–13 28	सिकन्दराराऊ	27 42	78 27	–16 12	हसनपुर	28 43	78 17	–16 52
शाहगंज	26 03	82 41	+00 44	सिंगरामऊ	25 57	82 23	–00 28	हाजीपुर	25 41	85 13	+10 52
शाहजहांपुर	27 53	79 55	–10 20	सिधौली	27 15	80 54	–06 24	हाता	26 43	83 48	+05 12
शाहाबाद	27 39	79 57	–10 12	सिरसागंज	27 03	78 42	–15 12	हाथरस	27 36	78 03	–17 48
शिकोहाबाद	27 06	78 36	–15 36	सिराथू	25 40	81 17	–04 52	हापुड़	28 43	77 47	–18 52
शेरकोट	29 21	78 38	–15 28	सिसवाबाजार	27 09	83 46	+05 04	हैदरगढ़	26 37	81 22	–04 32

कर्णाटक(KARNATKA)

नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण)	नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण)	नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण)
	अं. क.	अं. क.	मि. से.		अं. क.	अं. क.	मि. से.		अं. क.	अं. क.	मि. से.
Agumbe	13 30	75 02	29 52	Bankapur	14 55	75 23	28 28	Chincholi	16 29	77 26	20 16
Aimangula	14 09	76 30	24 00	Bantwal	12 54	75 00	30 00	Chintamani	13 26	78 05	17 40
Aland	17 35	76 38	23 28	Belgaum	15 54	74 36	31 36	Chitnadurga	14 14	76 24	24 24
Alikhar	17 47	77 16	20 56	Bellary	15 11	76 54	22 24	Coondapoor	13 38	74 42	31 12
Allikher	18 10	77 14	21 04	Belur	13 08	75 51	26 36	Dalwad	16 35	74 38	31 28
Andola	16 55	76 47	22 52	Bhadravati	13 52	75 43	27 08	Dandeli	15 15	74 37	31 32
Anekal	12 44	77 41	19 16	Bhalki	18 04	77 10	21 20	Devangere	14 30	75 52	26 32
AnjidipIsland	14 46	74 07	33 32	Bidar	17 56	77 35	19 40	Devadurga	16 25	76 53	22 28
Ankola	14 40	74 18	32 48	Bijapur	16 50	75 45	27 00	Devanhalli	13 14	77 40	19 20
Arkalgud	12 47	76 03	25 48	Birur	13 38	76 00	26 00	Dharwar	15 30	75 04	29 44
Arsikere	13 20	76 13	25 08	Byadgi	14 38	75 31	27 56	Dod Ballapur	13 18	77 32	19 52
Athni	16 44	75 07	29 32	Castle rock	15 25	74 22	32 32	Gadag	15 26	75 42	27 12
Atnur	17 16	76 27	24 12	Challakere	14 19	76 40	23 20	Gangawati	15 30	76 36	23 36
Aurad	18 17	77 27	20 12	Chamrajnagar	11 58	76 54	22 24	Gauribidanur	13 37	77 30	20 00
Badami	15 58	75 45	27 00	Channagiri	14 03	75 54	26 24	Gokak	16 13	74 54	30 24
Bagalkot	16 14	75 47	26 52	Channapatna	12 43	77 14	21 04	Gokarn	14 34	74 21	32 36
Bagepalli	13 46	77 48	18 48	Channaraya patna	12 54	76 22	24 32	Gubbi	13 20	76 56	22 16
Bagevadi	16 34	76 04	25 44	Chick Ballapur	13 28	77 44	19 04	Gugi	16 43	76 42	23 12
Bainduru	13 53	74 38	31 28	Chikmagalur	13 19	75 47	26 52	Gulbarga	17 20	76 50	22 40
Bangalore	13 00	77 35	19 40	Chiknayakanhalli	13 26	76 37	23 32	Gunderi	13 59	76 09	25 24
Bangarapet	12 58	78 12	17 12	Chikodi	16 27	74 37	3132	Gundlupet	11 48	76 41	23 16

कर्णाटक(KARNATKA)

नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्वी)	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण)
	अं. क.	अं. क.	मि. से.
Gurmatkal	16 55	77 25	20 20
Hadgalli	15 04	75 54	26 24
Haliyal	15 21	74 51	30 36
Hampi	15 20	76 25	24 20
Hangal	14 49	75 14	29 04
Harihar	14 33	75 44	27 04
Hariharpur	13 31	75 14	29 04
Harnahalli	13 15	76 13	25 08
Harpanahalli	14 48	75 56	26 16
Hassan	13 01	76 03	25 48
Haveri	14 46	75 26	28 16
HeggadadevanKote	12 05	76 18	24 48
Hirekerur	14 29	75 26	28 16
Hiriyur	13 56	76 35	23 40
Holalkere	14 02	76 11	25 16
Hole Narsipur	12 47	76 15	25 00
Homnabad	17 44	77 11	21 16
Honavar	14 19	74 27	32 12
Honawalli	13 20	76 22	24 32
Honnali	14 15	75 35	27 40
Honwad	16 49	75 30	28 00
Hosanagara	13 56	75 00	30 00
Hosdurga	13 49	76 14	25 04
Hoskote	13 06	77 47	18 52
Hospet	15 16	76 20	24 40
Hubli	15 20	75 14	29 04
Hungund	16 04	76 09	25 24
Ilkal	15 58	75 08	25 28
Indi	17 13	76 01	25 56
Jagalur	14 32	76 18	24 48
Jaldrug	16 17	76 29	24 04
Jalsur	12 35	75 20	28 40
Jamkhandi	16 31	75 21	28 36
Janwada	18 01	77 32	29 52
Kadur	13 34	76 01	25 56
Kaladgi	16 12	75 35	27 40
Kalghatgi	15 11	75 00	30 00
Kalyani	17 53	76 57	22 12
Karnalnagar	18 13	77 15	21 00
Kampli	15 24	76 34	23 44
Kanakapura	12 33	77 25	20 20
Karkal	13 12	74 59	30 04
Karwar	14 50	74 09	33 24
Kerur	16 01	75 36	27 36
Khanpur	15 41	74 38	31 28
Kittur	15 38	74 53	30 28
Kod	14 33	75 27	28 12
Kolar	13 10	78 10	17 20
Kolar Gold Fields	12 54	78 16	16 56
Kollegal	12 08	77 06	21 36
Koppa	13 31	75 20	28 40
Koppal	15 21	76 09	25 24
Kotturu	14 49	76 13	25 08
Krishnarajpet	12 40	76 25	24 20
Kudchi	16 39	74 54	30 24
Kudligi	14 55	76 22	24 32
Kudremukh mount	13 09	75 12	29 12
Kumta	14 25	74 25	32 20
Kundgol	15 15	75 19	28 44
Kunigal	13 01	76 59	22 04
Kushtagi	15 44	76 10	25 20
Lakshmeshwar	15 08	75 24	28 24
Linbugur	16 11	76 33	23 48
Maddur	12 36	77 00	22 00
Madhugiri	13 40	77 12	21 12
Madikeri	12 29	75 40	27 20
Malavalli	12 23	77 05	21 40
Mandya	12 34	76 55	22 20
Mangalore	12 54	74 51	30 36
Manjarabad	12 56	75 41	27 16
Manvi	15 57	76 59	22 04
Mercara	12 25	75 44	27 04
Molakmuru	14 45	76 48	22 48
Mudabidri	13 05	74 57	30 12
Mudde Bihal	16 20	76 10	25 20
Mudgal	16 01	76 27	24 12
Mudhol	16 21	75 18	28 48
Mudigere	13 11	75 36	27 36
Mullbagal	13 10	78 24	16 24
Mundargi	15 16	75 53	26 28
Mysore	12 18	76 37	23 32
Nagamangala	12 50	76 45	23 00
Nagar	13 49	74 59	30 04
Nandi	13 22	77 44	19 04
Nanjangud	12 07	76 40	23 20
Naregal	15 40	75 53	26 28
Nelamangala	13 04	77 24	20 24
Nimbal	17 07	75 56	26 16
Nipani	16 27	74 28	32 08
Nullur	11 54	77 27	20 12
Oyster Rocks	14 52	74 06	32 36
Pandavapura	12 29	76 40	23 20
Pavagada	14 06	77 15	21 00
Ponnampet	12 08	75 58	26 08
Puttur	12 44	75 10	29 20
Raichur	16 15	77 20	20 40
Ramanagaram	12 45	77 16	20 56
Ramandrug	15 07	76 25	24 20
Ramdurg	15 57	75 24	28 24
Ranibennur	14 33	75 40	27 20
Robert Sonepat	12 58	78 16	16 56
Ron	15 44	75 47	26 52
Sagar (Gulbarga)	16 37	76 45	23 00
Sagar (Shimoga)	14 07	75 00	30 00
Sakleshpur	12 59	75 43	27 08
Sandur	15 06	76 31	23 56
Sankeshwar	16 20	74 32	31 52
Saundatti	15 47	75 10	29 20
Sawanur	14 58	75 27	28 12
Seram	17 13	77 14	21 04
Seringapatam	12 25	76 42	23 12
Shahabad	17 07	76 58	22 08
Shahapur	15 51	74 38	31 28
Shahpur	16 42	76 47	22 52
Shiggaon	15 00	75 28	28 08
Shikarpur	14 16	7518	28 48
Shimoga	13 56	75 31	27 56
Shorapur	16 31	76 45	23 00
Shrirangapatta nam	12 25	76 41	23 16
Sidlaghatta	13 25	77 53	18 28
Sindhnur	15 46	76 44	23 04
Sira	13 45	76 53	22 28
Sirsi	14 40	74 51	30 36
Siruguppa	15 41	76 53	22 28
Sirur	16 08	75 51	26 36
Sivasamudram-Island	12 16	77 08	21 28
Somvarpet	12 38	75 46	26 56
Sorab	14 28	75 09	29 24
Sringeri	13 26	75 13	29 08
Talikota	16 31	76 20	24 40
Taliparamba	12 03	75 21	28 36
Tarikere	13 43	75 49	26 44
Tiptur	13 16	76 29	24 04
Tirthapalli	13 41	75 10	29 20
Tumkur	13 21	77 05	21 40
Tungabhadra Dam	15 00	75 50	26 40
Turuvanur	14 27	76 26	24 16
Udipi	13 23	74 45	31 00
Uppinangadi	12 50	75 13	29 08
Virarajendrapet	12 12	75 46	26 56
Wadi	17 00	77 00	22 00
Yadgir	16 46	77 08	21 28
Yalvigi	15 10	75 16	28 56
Yedatore	12 28	76 22	24 32
Yelandur	12 03	77 00	22 00
Yellapur	14 59	74 46	30 56
Yergara	16 05	77 27	20 12
Zalki	17 18	75 50	26 40

केरल (Kerala)

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण) मि. से.
Adur	09 10	76 46	22 56
Alappuzha	09 30	76 23	24 28
Alleppey	09 30	76 22	24 32
Alwaye	10 07	76 21	24 36
Ambalapulai	09 27	76 24	24 24
Angadipwam	10 58	76 15	25 00
Anjengo	08 40	76 47	22 52
Attingal	08 42	76 51	22 36
Azhikode	11 59	75 21	28 36
Badagava	11 36	75 34	27 44
Bekal	12 24	75 04	29 44
Beypore	11 11	75 49	26 44
Calicut	देखें	Kozhikode	
Cannanore	11 51	75 22	28 32
Changanacheri	09 28	76 33	23 48
Chirayinkil	08 40	76 50	22 40
Chittur	10 42	76 46	22 56
Cochin	09 58	76 14	25 04
Cranganur	10 12	76 11	25 16
Ernakulam	10 00	76 16	24 56
Ettumanur	09 39	76 34	23 44
Ferokh	11 10	75 50	26 40
Haripad	09 18	76 28	24 08
Idukki	09 55	76 58	22 08
Irinjalakkuda	10 22	76 14	25 04
Kalfratta	11 30	76 07	25 32
Kannur	11 52	75 25	28 20
Karunagapalli	09 03	76 33	23 48
Kasaragod	12 30	75 00	30 00
Kayankulam	09 10	76 31	23 56
Kokkaniserri	12 08	75 13	29 08
Kollam	08 54	76 38	23 28
Kollangod	10 36	76 43	23 08
Kottamkara	08 59	76 45	23 00
Kottayam	09 34	76 31	23 56
Kottayam (Malabar)	11 49	75 32	27 52
Kozhikode	11 15	75 46	26 56
Kumbla	12 37	74 57	30 12
Kuttyadi	11 38	75 43	27 08
Lalam	09 42	76 46	22 56
Malappuram	11 00	76 02	25 52
Mambat	11 15	76 11	25 16
Manjeshwara	12 42	74 53	30 28
MattanCheri	09 51	76 16	24 56
Mavelikara	09 14	76 33	23 48
Mundakayam	09 32	76 52	22 32
Neyyattinkan	08 26	77 06	21 36
Nilambun	11 17	76 15	25 00
Nileshwaram	12 18	75 07	29 32
Olavakkod	10 49	76 37	23 32
Ottappalam	10 46	76 23	24 28
palakkad	10 46	76 42	23 12
Palghat	10 46	76 42	23 12
Pallivasal	09 55	77 02	21 52
Parui	08 48	76 41	23 16
Parur	10 10	76 13	25 08
Pathanama chitha	09 19	76 49	22 44
Pattanapuram	09 10	76 46	22 56
Periyar Lake	09 30	77 20	20 40
Pirawad	09 30	77 02	21 52
Pirawam	09 49	76 38	23 28
Ponnani	10 46	75 57	26 12
Punalur	09 02	76 55	22 20
Quilon	08 54	76 38	23 28
Shertally	09 42	76 20	24 40
Shoranur	10 46	76 15	25 00
Tanur	10 59	75 52	26 32
Tellicherry	11 45	75 32	27 52
Thiruvanantha-puram	08 30	76 58	22 08
Tiruvalla	09 23	76 34	23 44
Travancore	09 00	77 00	22 00
Trichur	10 32	76 14	25 04
Thrissur	देखें –Trichur		
Trivendrum	देखें – Thiruvananthapuram		
Vaikam	09 46	76 24	24 24
Vayittiri	11 31	76 02	25 52

गुजरात

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण) मि. से.
अकलेश्वर	21 38	73 02	37 52
अजार	23 06	70 01	49 56
अढोई	23 25	70 32	47 52
अदेसार	23 36	70 58	46 08
अमरापुर	21 45	70 02	49 52
अमरेली	21 36	71 18	44 48
अमोद	21 59	72 54	38 24
अरामदा	22 28	69 08	53 28
अहमदाबाद	23 03	72 40	39 20
अहवा	20 44	73 41	35 16
आनन्द	22 34	73 01	37 56
आनन्दपुर	22 10	71 08	45 28
ईदर	23 47	73 03	37 48
उझा	23 48	72 24	40 24
उपलेटा	21 47	70 17	48 52
उमरपाडा	21 26	73 33	35 48
उमरेठ	22 42	73 07	37 32
ओखा	22 26	69 02	53 52
ओलपाड	21 20	72 49	38 44
कच्छ (भुज)	22 50	70 25	48 20
कटाना	22 17	72 49	38 44
कटोसन	23 30	72 18	40 48
कडी	23 20	72 22	40 32
कपडवज	23 03	73 09	37 24
कलोल (महेसाणा)	23 15	72 32	39 52
कलोल(पंचमहल)	22 38	73 32	35 52
काटपुर	21 29	72 46	38 56
काडला	23 03	70 11	49 16
कादना	23 22	73 52	34 32
कावि	22 11	72 41	39 16
केशोद	21 18	70 15	49 00
कुकावाव	21 38	71 05	45 40
कुटियाना	21 38	69 59	50 04
कुडा	23 08	71 30	44 00
कुण्डला	21 20	71 22	44 32
कुरंगा	22 07	69 12	53 12
कैम्बे	22 19	72 39	39 24
कोटरापीठा	20 57	71 18	44 48
कोडिनार	20 47	70 42	47 12
कोरल	21 55	73 12	37 12
खगरेडा	24 03	72 04	41 44
खम्भात	22 19	72 39	39 24
खम्भालिया	22 12	69 39	51 24
खावड़ा	23 50	69 43	51 08
खिजारिया	21 44	71 14	45 04

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

गुजरात

नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्वी)	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण)
	अं. क.	अं. क.	मि. से.
खेडब्रह्मा	24 03	73 03	37 48
खेडा	22 45	72 45	39 00
खेरालू	23 57	72 38	39 28
गढदा (भावनगर)	21 59	71 40	43 20
गढदा (कच्छ)	23 50	70 25	48 20
गढिया	21 11	71 13	45 08
गढका	22 08	69 28	52 08
गधरा	20 53	71 00	46 00
गान्धीधाम	23 06	70 08	49 28
गान्धीनगर	23 15	72 45	39 00
गोगोलापोर्ट	20 43	71 08	45 28
गोघा	21 40	72 20	40 40
गोंडल	21 56	70 50	46 40
गोध्रा	22 49	73 40	35 20
घंटवार	20 56	70 50	46 40
घंटिला	23 10	71 19	44 44
चन्दोद	22 00	73 30	36 00
चरकरादोई	23 57	69 20	52 40
चित्रोद	23 25	70 42	47 12
चोटीला	22 23	71 18	44 48
चोरवाड़	21 00	70 19	48 44
छोटाउदेपुर	22 19	73 13	37 08
जखाऊ	23 15	68 48	54 48
जम्बूसार	22 00	72 50	38 40
जलालपुर	20 58	72 59	38 04
जसदान	22 04	71 19	44 44
जाफराबाद	20 51	71 27	44 12
जामनगर	22 28	70 06	49 36
जारोद	22 25	73 21	36 36
जूनागढ	21 32	70 34	47 44
जेतपुर	21 43	70 42	47 12
जेतलसार	21 42	70 40	47 20
जोडिया	22 42	70 18	48 48
झिंजूवाडा	23 29	71 39	43 24
झुड	23 10	71 58	42 08
टूना	22 59	70 04	49 44
डाकोर	22 48	73 13	37 08
डीसा	24 14	72 13	41 08
ढोला	20 50	71 49	42 44
ढोलेरा	22 16	72 18	40 48
ढोल्का	22 42	72 38	39 28
तनखला	21 58	72 50	38 40
तारा	24 00	71 51	42 36
तालाजा	21 20	72 08	41 28
तालाला (जूनागढ)	21 00	70 39	47 24

नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्वी)	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण)
	अं. क.	अं. क.	मि. से.
तेरवाडा	24 02	71 43	43 08
थराड	24 26	71 40	43 20
दभोई	22 08	73 28	36 08
दाथा	21 10	72 01	41 56
दान्ता	24 13	72 50	38 40
दासदा	23 18	71 55	42 20
देदान	21 01	71 22	44 32
देलवाडा	20 46	71 15	45 00
देहज	21 42	72 40	39 20
देवदार	24 08	71 50	42 40
देवगढवाडिया	22 42	73 54	34 24
दोहाद	22 48	74 18	32 48
दोलिया	22 30	71 24	44 24
द्राफा	21 59	70 10	49 20
द्वारिका	22 14	69 02	53 52
धनेरा	24 29	72 08	41 28
धरोल	22 33	70 30	48 00
धर्मपुर	20 31	73 16	36 56
धान्दुका	22 22	72 05	41 40
धारी	21 20	71 00	46 00
धासा	21 49	71 38	43 28
धुले	20 54	74 47	30 52
धोराजी	21 42	70 32	47 52
धोरी	23 25	69 46	50 56
ध्रागध्रा	22 59	71 29	44 04
नखतराना	23 26	69 15	53 00
नडियाद	22 42	72 55	38 20
नवसारी	20 52	72 56	38 16
नवालखी	22 56	70 30	48 00
नवीबन्दर	21 26	69 52	50 32
नान्दोड	21 52	73 32	35 52
नारा	23 40	69 10	53 20
नालिया	23 19	68 51	54 36
नेत्रंग	21 36	73 22	36 32
न्यूकांडला	23 00	70 11	49 16
पडाना	22 22	69 54	50 24
पदरा	22 15	73 06	37 36
परांतीज	23 26	72 55	38 20
पाटन	23 50	72 09	41 24
पाटरी	23 10	71 10	45 20
पानीकोटासिम्बर	20 46	71 21	44 36
पालनपुर	24 12	72 29	40 04
पालिताणा	21 30	71 50	42 40
पालियाड	22 16	71 39	43 24
पितार	22 42	70 35	47 40

नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्वी)	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण)
	अं. क.	अं. क.	मि. से.
पिम्परी	20 54	73 42	35 12
पिहिज	22 40	72 52	38 32
पेटलाद	22 28	72 48	38 48
पैकरी	21 13	73 14	37 04
पोरबन्दर	21 40	69 40	51 20
पोर्ट एल्वर्टविक्टर	21 00	71 35	43 40
पोल	24 00	73 20	36 40
प्राचीरोड	20 56	70 55	46 20
फोर्ट सगाद	21 12	73 42	35 12
बगासरा	20 59	70 57	46 12
बचाऊ	23 22	70 20	48 40
बजाना	23 06	71 47	42 52
बडदोलि	21 07	73 07	37 32
बडोदा	22 18	73 13	37 08
बन्दर	21 48	72 14	41 04
बरूच	21 40	72 58	38 08
बरोच	21 40	72 58	38 08
बांटवा	21 31	70 09	49 24
बावलियारी	22 02	72 16	40 56
बिलिमोरा	20 45	72 57	38 12
बुलसार	20 36	72 56	38 16
बेदी	22 32	70 02	49 52
बेयट	22 27	69 12	53 12
बेर	23 24	68 38	55 28
बोताड	22 12	71 44	43 04
बोरसाद	22 24	72 59	38 04
भंगोर	22 03	69 55	50 20
भचाऊ	23 12	71 20	44 40
भरूच	21 40	72 58	38 08
भाभर	24 08	71 42	43 12
भावनगर	21 46	72 10	41 20
भिल्डि	24 13	72 04	41 44
भुज	23 16	69 40	51 20
भोगत	21 59	69 16	52 56
महेसाणा	23 37	72 28	40 08
महुआ	21 05	71 48	42 48
मागोरी	23 17	73 23	36 28
मागरोल	21 07	70 08	49 28
माडवी (कच्छ)	22 50	79 28	52 08
मांडवी (सूरत)	21 16	73 22	36 32
माधवपुर	21 18	70 01	49 56
मानसा	23 24	72 42	39 12
मानेकवाड़ा	21 28	70 56	46 16
मालपुर	23 20	73 26	36 16
मालसार	22 00	73 22	36 32

गुजरात

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण) मि. से.	नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण) मि. से.	नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण) मि. से.
मालिया	23 03	70 48	46 48	लिम्बडी	22 36	71 48	42 48	सचिन	21 03	72 59	38 04
मियानी	21 50	69 26	52 16	लूनावाड़ा	23 08	73 37	35 32	सदरा	23 20	72 48	38 48
मुंजपुर	23 34	71 57	42 12	लोदरानी	23 52	70 40	47 20	सन्तालपुर	23 45	71 10	45 20
मुंदरा	22 50	69 48	50 48	लोधिका	22 05	70 41	47 16	समराए	23 01	69 11	53 16
मुलिला	20 05	70 21	48 36	वडोदरा	22 18	73 13	37 08	समई	24 08	72 53	38 28
मूली	22 40	71 34	43 44	वनसदा	20 47	73 25	36 20	सरदिया	21 38	70 03	49 48
मेदारदा	21 19	70 26	48 16	वल्लभीपुर	20 52	71 58	42 08	सरोत्रा	24 24	72 36	39 36
मोदासा	23 28	73 20	36 40	वल्साड	20 40	72 55	38 20	सलाया	22 20	79 40	51 20
मोभा	22 05	73 00	38 00	वाकानेर	22 35	71 00	46 00	सानन्द	22 59	72 23	40 28
मोरवी	22 50	70 50	46 40	वागरा	21 46	72 48	38 48	सावली	22 33	73 16	36 56
रतनपुर	21 43	73 16	36 56	वाजपुर	21 21	73 43	35 08	सुईगांव	24 10	71 23	44 28
राजकोट	22 18	70 53	46 28	वादनगर	23 48	72 40	39 20	सुथरी	23 02	68 56	54 16
राजपिपला	21 49	73 36	35 36	वाराही	23 48	71 29	44 04	सुरेन्द्रनगर	22 42	71 41	43 16
राजुला	21 01	71 34	43 44	वाव	24 22	71 32	43 52	सूरत	21 10	72 50	38 40
राधनपुर	23 52	71 49	42 44	विन्झन	23 04	69 02	53 52	सिद्धापुर	23 55	72 26	40 16
रांदेड़	21 15	72 50	38 40	विरपुर	21 51	70 46	46 56	सिलवासा	20 17	73 00	38 00
रापा	23 32	70 40	47 20	विरामग्राम	23 08	72 04	41 44	सिहोर (भावनगर)	21 43	71 59	42 04
रापर	23 33	70 38	47 28	विसनगर	23 41	72 36	39 36	सोनगढ	21 42	71 58	42 08
रामपुर	23 11	73 56	34 16	विसवादार	21 22	70 52	46 32	सोमनाथ	21 00	70 30	48 00
लखतार	22 53	70 53	46 28	वीजापुर	23 34	72 45	39 00	हडोल	23 55	73 13	37 08
लखपत	23 49	68 47	54 52	वेरावल	20 53	70 28	48 08	हरजी	23 45	71 56	42 16
लाठी	21 45	71 28	44 08	वेलाछा	21 26	73 06	37 36	हलवाड़	23 02	71 18	44 48
लिम्बडा	21 49	71 43	43 08	व्यांरा	21 09	73 28	36 08	हिम्मतनगर	23 35	73 00	38 00

गोवा(Goa)

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण) मि. से.	नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण) मि. से.	नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण) मि. से.
पंजिम	15 29	73 50	34 40	मडगांव	15 18	73 57	34 12	मरमागाओ	15 25	73 43	35 08
पानाजि	देखें	पंजिम									

चण्डीगढ़(U.T.)(सभी सैक्टरों के अक्षांशादि)

सैक्टर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण) मि. से.	सैक्टर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण) मि. से.	सैक्टर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण) मि. से.
1 (N)	30 46	76 48	22 48	7	30 45	76 48	22 48	15	30 46	76 46	22 56
1 (S)	30 45	76 49	22 44	8	30 45	76 48	22 48	16	30 45	76 47	22 52
2	30 46	76 47	22 52	9	30 45	76 48	22 48	17	30 45	76 47	22 52
3	30 46	76 48	22 48	10	30 46	76 47	22 52	18	30 45	76 47	22 52
4	30 45	76 48	22 48	11	30 46	76 47	22 52	19	30 44	76 48	22 48
5	30 45	76 48	22 48	12	30 46	76 47	22 52	20	30 44	76 47	22 52
6	30 45	76 49	22 44	14	30 46	76 46	22 56	21	30 44	76 47	22 52

चण्डीगढ़(U.T.)(सभी सैक्टरों के अक्षांशादि)

सैक्टर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्वी)	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण)	सैक्टर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्वी)	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण)	सैक्टर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्वी)	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण)
	अं. क.	अं. क.	मि. से.		अं. क.	अं. क.	मि. से.		अं. क.	अं. क.	मि. से.
22	30 44	76 46	22 56	34	30 44	76 46	22 56	45	30 43	76 45	23 00
23	30 45	76 46	22 56	35	30 44	76 45	23 00	46	30 43	76 46	22 56
24	30 45	76 45	23 00	36	30 44	76 45	23 00	47	30 42	76 46	22 56
25 (E)	30 46	76 45	23 00	37	30 45	76 45	23 00	48	30 42	76 45	23 00
25 (W)	30 46	76 45	23 00	38 (E)	30 45	76 45	23 00	49	30 42	76 45	23 00
26	30 44	76 49	22 44	38 (W)	30 44	76 44	23 04	50	30 42	76 45	23 00
27	30 44	76 48	22 48	39	30 45	76 44	23 04	51	30 43	76 44	23 04
28	30 43	76 48	22 48	40	30 45	76 44	23 04	52	30 43	76 44	23 04
29	30 43	76 48	22 48	41	30 44	76 44	23 04	53	30 44	76 44	23 04
30	30 43	76 47	22 52	42	30 44	76 44	23 04	54	30 44	76 43	23 08
31	30 43	76 47	22 52	43	30 44	76 45	23 00	55	30 44	76 43	23 08
32	30 43	76 47	22 52	44	30 43	76 45	23 00	56	30 45	76 43	23 08
33	30 43	76 46	22 56								

चण्डीगढ़ (U.T.) के अन्य क्षेत्र (ग्रामादि) जो सैकटरों के अन्तर्गत नहीं हैं।

क्षेत्र / ग्राम	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्वी)	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण)	क्षेत्र / ग्राम	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्वी)	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण)	क्षेत्र / ग्राम	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्वी)	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण)
	अं. क.	अं. क.	मि. से.		अं. क.	अं. क.	मि. से.		अं. क.	अं. क.	मि. से.
इण्डस्ट्रियल एरिया (फेज 1)	30 43	76 48	22 48	टिम्बर मार्केट	30 44	76 49	22 44	रायपुर कलां (ग्राम)	30 42	76 50	22 40
इण्डस्ट्रियल एरिया (फेज 2)	30 42	76 47	22 52	ट्रांस्पोर्ट एरिया	30 44	76 49	22 44	रायपुर खुर्द (ग्राम)	30 41	76 49	22 44
इन्दिरा कॉलोनी	30 44	76 50	22 40	डड्डूमाजरा (ग्राम)	30 46	76 44	23 04	रेल्वेकॉलोनी	30 43	76 50	22 40
एअर पोर्ट	30 41	76 48	22 48	दरिया (ग्राम)	30 42	76 49	22 44	रेल्वे स्टेशन	30 43	76 49	22 44
कर्सान (ग्राम)	30 42	76 47	22 52	धनाश (ग्राम)	30 47	76 45	23 00	लहोरा (ग्राम)	30 47	76 46	22 56
कलाग्राम	30 43	76 50	22 40	पल्सोरा (ग्राम)	30 44	76 43	23 08	लोइन्कम ग्रुप (L.I.G.) फ्लैट्स	30 46	76 44	23 04
किशनगढ (ग्राम)	30 44	76 50	22 40	बहलाना (ग्राम)	30 41	76 48	22 48	सारगपुर (ग्राम)	30 47	76 45	23 00
कजहेडी (ग्राम)	30 43	76 44	23 04	भगवान् पुरा (ग्राम)	30 50	76 45	23 00	सुखना झील(S-1)	30 45	76 49	22 44
केहरडेरा	30 42	76 44	23 04	मखन माजरा(ग्राम)	30 41	76 49	22 44	राकगार्डन (S-1)	30 46	76 48	22 48
कैम्बवाला (ग्राम)	30 46	76 49	22 44	मनीमाजरा (ग्राम)	30 43	76 51	22 36	हल्लो माजरा(ग्राम)	30 42	76 48	22 48
खुड्डाअलीशेर (ग्राम)	30 47	76 49	22 44	मलोया (ग्राम)	30 46	76 43	23 08	हाईइन्कम ग्रुप (H.I.G.) फ्लैट्स	30 45	76 44	23 04
खुड्डाजस्सू (ग्राम)	30 47	76 46	22 56	मिडलइन्कमग्रुप (M.I.G.) फ्लैट्स	30 46	76 44	23 04	हाईकोर्ट (पंजाब,हरियाणा)	30 46	76 48	22 48
ग्रेनमार्केट	30 44	76 49	22 44	मौली जगरां (ग्राम)	30 42	76 50	22 40				
चुगिया (ग्राम)	30 46	76 50	22 40	रामदरबार	30 42	76 47	22 52				

जम्मू – काश्मीर

नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्वी)	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण)	नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्वी)	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण)	नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्वी)	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण)
	अं. क.	अं. क.	मि. से.		अं. क.	अं. क.	मि. से.		अं. क.	अं. क.	मि. से.
अखनूर	32 53	74 45	31 00	अमरनाथगुफा	34 13	75 32	27 52	उडी	34 05	74 01	33 56
अच्छी बाल	33 41	75 14	29 04	अवन्तिपुरा	33 57	75 01	29 56	उपशी	33 52	77 50	18 40
अनन्तनाग	33 44	75 10	29 20	अस्तोर	35 22	74 51	30 36	उधमपुर	32 54	75 06	29 36
अबरिंग	33 42	76 36	23 36	इश्कुमान	36 35	73 50	34 40	कटरा	32 59	74 57	30 12

जम्मू – काश्मीर

नगर	अक्षांश (उत्तर) अ. क.	रेखांश (पूर्वी) अ. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण) मि. से.	नगर	अक्षांश (उत्तर) अ. क.	रेखांश (पूर्वी) अ. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण) मि. से.	नगर	अक्षांश (उत्तर) अ. क.	रेखांश (पूर्वी) अ. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण) मि. से.
कठुआ	32 22	75 32	27 52	टोलटी	35 03	76 04	25 44	मरोल	34 43	76 18	24 48
करगिया	33 00	77 17	20 52	डोडा	33 10	75 35	27 40	मिनिमर्ग	34 48	75 03	29 48
करजोक	32 59	78 16	16 56	तेरू	36 11	72 45	39 00	मीरपुर	33 32	73 56	34 16
काजीगुण्ड	33 37	75 09	29 24	दास	35 05	75 05	29 40	मीरवाली	36 33	73 25	36 20
कारगिल	34 31	76 13	25 08	देमचौक	32 40	79 27	12 12	मुजपफराबाद	34 23	73 30	36 00
कार्त्से	34 18	76 04	25 44	द्रास	34 27	75 46	26 56	मुलबेख	34 22	76 22	24 32
किजिलजिल्गा	35 18	78 48	14 48	नवांशहर	32 37	74 44	31 04	मेन्धर	33 39	74 09	33 24
किश्तवाड	33 19	75 48	26 48	नागिर	36 15	74 46	30 56	यासिन	36 21	73 22	36 32
कुद	33 05	75 17	28 52	नुनकुन	33 59	76 01	25 56	राजौरी	33 22	74 17	32 52
कुमदोक	33 32	78 10	17 20	नोशेरा	33 10	74 15	33 00	रामनगर	32 48	75 21	28 36
कुलगाम	33 41	75 03	29 48	न्योमा	33 12	78 40	15 20	रामबन	33 15	75 15	29 00
केरन	34 39	73 58	34 08	पदम	33 28	76 53	22 28	रियासी	33 03	74 52	30 32
कोटली	33 30	73 55	34 20	पम्जल	34 17	78 49	14 44	रोन्दा	35 35	75 15	29 00
कोलाहोई	34 12	75 21	28 36	परकुट्टा	35 07	76 00	26 00	रोन्दू	35 37	75 06	29 36
खपलू	35 10	76 20	24 40	पलन्द्री	33 44	73 42	35 12	लाथो	33 42	77 43	19 08
खरताक्षो	34 53	76 14	25 04	पहलग्राम	34 01	75 25	28 20	लेह	34 09	77 35	19 40
खरना	33 36	77 31	19 56	पामपुर	34 01	74 56	30 16	वैष्णोदेवी	33 02	74 57	30 12
खलात्से	34 23	76 50	22 40	पासु	36 30	74 52	30 32	शक्सगम	36 08	76 31	23 56
गिलगित	35 55	74 21	32 36	पिंगल	36 09	73 11	37 16	शरडी	34 47	74 14	33 04
गुफिस	36 13	73 30	36 00	पुंछ	33 51	74 06	33 36	शिंगशल	36 29	75 19	28 44
गुराईस	34 38	74 56	30 16	बनिहाल	33 30	75 18	28 48	शुकपाकुजंग	34 24	78 21	16 36
गुलमर्ग	34 05	74 25	32 20	बटोटी	33 06	75 19	28 44	शुपियां	33 42	74 52	30 32
गोम्पा	35 02	77 20	20 40	बडगाम	34 01	74 42	31 12	शुशोत	34 03	77 40	19 20
गोर	35 34	74 31	31 56	बसोली	32 29	75 50	26 40	शेरकिला	36 06	74 04	33 44
चार	33 15	77 09	21 24	बाओ	32 41	74 55	30 20	श्योक	34 13	78 10	17 20
चिनेनी	33 01	75 20	28 40	बाघ	33 59	73 50	34 40	श्रीनगर	34 07	74 50	30 40
चिलास	35 26	74 07	33 32	बारामूला	34 12	74 24	32 24	साम्बा	32 32	75 08	29 28
चुगतास	35 37	78 37	15 32	बाल्टिट	36 22	74 38	31 28	सियारी	34 55	76 43	23 08
चुशुल	33 34	78 38	15 28	बिजबिआड़ा	33 48	75 06	29 36	सूतक	33 11	77 28	20 08
चूमर	32 38	78 35	15 40	बुंजी	35 40	74 40	31 20	सोनामर्ग	34 18	75 18	28 48
जगला	33 40	77 01	21 56	भद्रबाह	32 59	75 43	27 08	सोन्दर	33 28	75 55	26 20
जम्मू	32 43	74 54	30 24	भिम्बर	33 00	74 05	33 40	सोपुर	34 19	74 30	32 00
जसरोटा	32 29	75 27	28 12	मनावर	32 47	74 23	32 28	स्कार्दू	35 17	75 44	27 04
टक्से	34 03	78 13	17 08	मरखा	33 51	77 23	20 28	हान्ले	32 46	79 01	13 56
टिथवाल	34 24	73 47	34 52								

झारखंड – देखें पृष्ठ

तामिलनाडु (Tamil Nadu)

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण) मि. से.	नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण) मि. से.	नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण) मि. से.
Alangudi	10 22	78 59	14 04	Ambaturai	10 18	77 57	18 12	Andiyur	11 36	77 37	19 32
Alapakkam	11 36	79 44	11 04	Ambur	12 48	78 44	15 04	Arakkonam	13 05	79 40	11 20
Ambasamudram	08 45	77 27	20 12	Anamalai	10 34	76 50	22 40	Arani	12 40	79 17	12 52

तामिलनाडु (Tamil Nadu)

नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्वी)	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण)
	अं. क.	अं. क.	मि. से.
Arantangi	10 10	79 00	14 00
Arcot(North)	12 54	79 20	12 40
Ariyalur	11 08	79 04	13 44
Arkonam	13 05	79 40	11 20
Arkot	12 56	79 20	12 40
Arni	12 41	79 17	12 52
Aruppukottai	09 31	78 06	17 36
Attur(Madurai)	10 19	77 52	18 32
Atur(Salem)	11 36	78 35	15 40
Bargur	11 49	77 33	19 48
Bhavani	11 28	77 41	19 16
Bhuvanagiri	11 28	79 38	11 28
Bodinayakkanur	10 01	77 21	20 36
Chengam	12 20	78 46	14 56
Chennai	13 05	80 18	08 48
Cheyur	12 22	80 01	09 56
Chidambaram	11 25	79 42	11 12
Chingalput	12 42	80 01	09 56
Chinnamanur	09 50	77 24	20 24
Coimbatore	11 00	76 58	22 08
Comorin Cape	08 04	77 35	19 40
Conoor	11 21	76 46	22 56
Coonoor	11 21	76 46	22 56
Covelong Beach	12 46	80 15	09 00
Cuddalore	11 43	79 46	10 56
Cuddappa	14 28	78 50	14 40
Devakottai	09 55	78 55	14 20
Devipattinam	09 29	78 55	14 20
Dhanushkod i	09 12	79 25	12 20
Dharapuram	10 45	77 33	19 48
Dharmapuri	12 11	78 07	17 32
Dindigul	10 23	78 00	18 00
Erode	11 21	77 43	19 08
Ettaiyapuram	09 09	78 01	17 56
Fort St.David	11 46	79 46	10 56
Fort St. George	13 03	80 17	08 52
Gingee	12 16	79 24	12 24
Gudalur (Madurai)	09 41	77 18	20 48
Gudalur (Nilgiris)	11 30	76 30	24 00
Gudiyattam	13 00	78 51	14 36
Hasanur	11 40	77 06	21 36
Hosur	12 45	77 51	18 36
Ilaiyankudi	09 38	78 38	15 28
Iluppur	10 32	78 37	15 32
Jalarpet	12 35	78 33	15 48
Jolarpettai	12 34	78 35	15 40
Kalidaikurichchi	08 41	77 29	20 04
Kallakkurichchi	11 44	78 58	14 08
Kambam	09 44	77 19	20 44
Kamudi	09 25	78 23	16 28
Kanchipuram	12 50	79 44	11 04
Kangayam	11 01	77 35	19 40
Kanniyakumari	08 05	77 34	19 44
Karaikal	10 58	79 50	10 40
Karaikkudi	10 04	78 47	14 52
Kardikal	10 55	79 52	10 32
Karur	10 58	78 03	17 48
Kattuputtur	11 00	78 13	17 08
Kayalpatnam	08 34	78 07	17 32
Kodaikanal	10 14	77 29	20 04
Kodaiyanallur	09 05	77 21	20 36
Kodiapattam	08 07	77 21	20 36
Konnur	13 06	80 13	09 08
Kotagiri	11 26	76 54	22 44
Kottaipattinam	09 57	79 11	13 16
Krishnagiri	12 32	78 14	17 04
Kulasekhrapatinam	08 23	78 05	17 40
Kumbakonam	10 59	79 24	12 24
Kuttalam	08 55	77 17	20 52
Lalgudi	10 52	78 52	14 32
Madurai	09 58	78 10	17 20
Madurantakam	12 31	79 54	10 24
Mahabalipuram	12 37	80 12	09 12
Manamdurai	09 40	78 27	16 12
Manapparai	10 36	78 25	16 20
Maniyachi	08 51	77 56	18 16
Mannargudi	10 40	79 26	12 16
Mayuroam	11 08	79 40	11 20
Melur	10 04	78 23	16 28
Metoor	11 47	77 48	18 48
Mettuppalayam	11 18	76 57	22 12
Mettur	11 50	77 51	18 36
Mimisal	09 55	79 09	13 24
Morappur	12 09	78 23	16 28
Musiri	10 58	78 26	16 16
Mutupet	10 24	79 32	11 52
Nagapattinam	10 45	79 50	10 40
Nagercoil	08 10	77 26	20 16
Nagore	10 49	79 50	10 40
Namakkal	11 12	78 10	17 20
Nanguneri	08 29	77 42	19 12
Nattam	10 14	78 11	17 16
Nazareth	08 34	77 58	18 08
Nellikuppam	11 46	79 40	11 20
Nilakottai	10 07	77 53	18 28
Olakur	12 21	79 46	10 56
Ootacamund	11 28	76 42	23 12
Ottapidaram	08 55	78 05	17 40
Padmanabha puram	08 14	77 20	20 40
Palayamkottai	08 42	77 46	18 56
Palladam	10 59	77 18	20 48
Pallavaram	12 56	80 11	09 16
Palni	10 27	77 31	19 56
Pamban	09 18	79 15	13 00
Panruti	11 49	79 31	11 56
Papanasam, (Thanjavur)	10 54	79 12	13 12
Papanasam, (Tirunelvelli)	08 46	77 23	20 28
Pattukkottai	10 26	79 19	12 44
Perambalur	11 14	78 53	14 28
Perambar	13 10	80 16	08 56
Periyakulam	10 07	77 33	19 48
Podanur	10 57	77 00	22 00
Pollachi	10 38	77 00	22 00
Polur	12 30	79 08	13 28
Ponneri	13 21	80 10	09 20
Poonamalle	13 02	80 04	09 44
PortoNova	11 30	79 45	11 00
Proddattur	14 45	78 35	15 40
Pudukkottai	10 23	78 49	14 44
Puliyangudi	09 10	77 25	20 20
Radhapuram	08 16	77 43	19 08
Rajamatam	10 18	79 21	12 36
Rajapalayam	09 26	77 36	19 36
Ramanathapuram	09 23	78 53	14 28
Rameswaram	09 18	79 19	12 44
Rasipuram	11 28	78 10	17 20
Sadras	12 33	80 10	09 20
Saidapet	13 01	80 13	09 08
Salem	11 38	78 08	17 28
Salem Junction	11 41	78 06	17 36
Sankaranayin-arkovil	09 10	77 32	19 48
Sankandrug	11 30	77 52	18 32
Sattur	09 23	77 56	18 16
Satyamangalam	11 31	77 15	21 00
Sembiem	13 07	80 15	09 00
Shencottah	08 59	77 15	21 00
Shivaganga	09 51	78 32	15 52
Singanallur	11 01	77 02	21 52
Sivaganga	09 50	78 30	16 00
Sivakasi	09 26	77 50	18 40
Srirangam	10 52	78 40	15 20
Srivilliputtur	09 31	77 38	19 28
Tambram	12 55	80 07	19 32
Tenkasi	08 58	77 22	20 32

तामिलनाडु (Tamil Nadu)

नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्वी)	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण)
	अं. क.	अं. क.	मि. से.
Tevaram	09 55	77 18	20 48
Thanjavur	10 46	79 08	[illegible]
Tindivanam	12 15	79 41	[illegible]
Tirubannamalai	12 43	79 04	13 44
Tiruchchirappalli	10 49	78 41	15 16
Tiruchendur	08 29	78 07	17 32
Tiruchengodu	11 23	77 56	18 16
Tirukkoyilur	11 59	79 13	13 08
Tirumangalam	09 50	78 10	17 20
Tirumayam	10 15	78 46	14 56
Tirunelvelli	08 45	77 43	19 08
Tirupattur (Ramnad)	10 07	78 39	15 24
Tirupattur (N.Arcot)	12 29	78 34	15 44
Tiruppur	11 05	77 20	20 40
Tirutturaippundi	10 32	79 39	11 24
Tiruvalur	10 45	79 40	11 20
Tiruvallur	13 07	79 54	10 24
Tiruvannamalai	12 15	79 05	13 40
Tiruvettipuram	12 40	79 33	11 48
Tisatyanvilai	08 20	77 53	18 28
Tondi	09 44	79 00	14 00
Tuticorin	08 48	78 11	17 16
Turaiyur	11 13	78 35	15 40
Udagamandalam	11 28	76 42	23 12
Udaiyarpalayam	11 15	79 20	12 40
Uttamapalaiyam	09 48	77 20	20 40
Vaniyambadi	12 43	78 37	15 32
Vedaranniyan	10 22	79 51	10 36
Vedasandur	10 33	77 58	18 08
Vellore	12 56	79 09	13 24
Vilattikulam	09 10	78 11	17 16
Villupuram	11 56	79 29	12 04
Virudunagar	09 36	77 58	18 08
Vriddhachalam	11 30	79 20	12 40
Walajapet	12 56	79 23	12 28

त्रिपुरा (TRIPURA)

नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्वी)	स्टैण्डर्ड अन्तर (धन)
	अं. क.	अं. क.	मि.से.
Agartala	23 48	91 15	35 00
Amarpur	23 29	91 38	36 32
Ambasa	23 51	91 52	37 28
AmpiBazar	23 40	91 38	36 32
Barjala	23 37	91 21	35 24
Bisalgarh	23 42	91 17	35 08
Belonia	23 15	91 28	35 52
Dharma Nagar	24 22	92 10	38 40
Dumbur	23 27	91 42	36 48
Jatrapur	23 24	91 17	35 08
Kamalpur	24 12	91 50	37 20
Kailashahr	24 18	92 01	38 04
Khowai	24 04	91 36	36 24
Kumarghat	24 07	92 02	38 08
Lungthung	23 13	91 33	36 12
ManuBazar	23 03	91 37	36 28
Melaghar	23 29	91 20	35 20
Narayanpur	23 54	91 14	34 56
Puran Rajbari	23 10	91 21	35 24
Rabiraipara	23 42	92 03	38 12
Radhakishorepur	23 32	91 30	36 00
Sabrom	23 01	91 43	36 52
Sidhai	23 58	91 27	35 48
Teliamura	23 51	91 37	36 28
Tirathamukh	23 20	91 47	37 08
Udaipur	23 32	91 29	35 56

दादरा और नागर हवेली (U.T.)

नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्वी)	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण)
	अं. क.	अं. क.	मि. से.
सिल्वासा	20 17	72 59	38 04
XXX			
XXX			

डामन एण्ड ड्यू (Daman&Die) (U.T.)

नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्वी)	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण)
	अं. क.	अं. क.	मि. से.
डामन	20 25	72 52	38 32
ड्यू	20 42	71 01	45 56
XXXXXX			
XXXXXX			

दिल्ली

क्षेत्र	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण) मि. से.
अलीगज	28 35	77 13	21 08
असलतपुर	28 38	77 05	21 40
अशोकनगर	28 38	77 06	21 36
आजादपुर	28 43	77 11	21 16
आदर्शनगर	28 44	77 10	21 20
आदिलाबाद	28 30	77 17	20 52
आर. के. पुरम्	28 34	77 11	21 16
इण्डियागेट	28 37	77 13	21 08
इन्द्रपुरी	28 38	77 09	21 24
ईस्ट पटेल नगर	28 39	77 10	21 20
ईस्ट आफ कैलाश	28 34	77 15	21 00
इन्दिरागान्धी नैशनल ओपन यूनीवर्सिटी	28 30	77 14	21 04
उद्योगनगर	28 41	77 06	21 36
ओखला	28 33	77 17	20 52
कनाट प्लेस	28 38	77 13	21 08
कटवारियासराए	28 33	77 12	21 12
करावलनगर	28 45	77 16	20 56
करोलबाग	28 40	77 11	21 16
कालकाजी	28 33	77 16	20 56
किदवाइनगर	28 34	77 12	21 12
किशनगंज	28 40	77 12	21 12
किशनगढ	28 31	77 08	21 28
कीर्त्तिनगर	28 40	77 09	21 24
कुतुबमीनार	28 31	77 12	21 12
कृषिविहार	28 33	77 14	21 04
कैलाशनगर	28 40	77 15	21 00
कोटला	28 38	77 18	20 48
कोडली	28 37	77 19	20 44
खयाला	28 40	77 06	21 36
खिचड़ीपुर	28 37	77 19	20 44
खुरालजीखास	28 39	77 17	20 52
खेलगांव ग्रेटरकैलाश	28 33	77 13	21 08
गढीनरैना	28 37	77 08	21 28
गाजीपुर	28 38	77 19	20 44
गान्धीनगर	28 40	77 16	20 56
ग्रीनपार्क	28 33	77 12	21 12
घोंडा	28 41	77 16	20 56
चाणक्यपुरी	28 36	77 11	21 16
चान्दनी चौक	28 40	77 14	21 04
चित्तरंजन पार्क	28 33	77 15	21 00
चिल्लासरोदा	28 35	77 18	20 48
जगतपुर	28 44	77 14	21 04
जनकपुरी	28 37	77 06	21 36
जवाहरनगर	28 41	77 12	21 12
जवाहरलाल ने.वि.वि.	28 32	77 10	21 20

क्षेत्र	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण) मि. से.
जहांगीरपुर	28 44	77 13	21 08
जाकिरनगर	28 34	77 17	20 52
जाफराबाद	28 41	77 16	20 56
जामामस्जिद	28 40	77 14	21 04
जामिया मिलिया वि.वि.	28 34	77 17	20 52
ज्योतिनगर (ईस्ट)	28 42	77 17	20 52
ज्योतिनगर (वैस्ट)	28 42	77 18	20 48
झण्डेवालान	28 39	77 12	21 12
डिफेन्स कालोनी	28 35	77 14	21 04
तातारपुर	28 39	77 07	21 32
तिलकनगर	28 39	77 06	21 36
तिलकब्रिज	28 38	77 14	21 04
तिहारजेल	28 37	77 06	21 36
तीनमूर्त्ति भवन	28 36	77 12	21 12
तुगलकाबाद	28 31	77 16	20 56
त्रिलोकपुरी	28 38	77 18	20 48
द. पटेलनगर	28 39	77 10	21 20
दक्षिणपुरी	28 31	77 14	21 04
दरयागंज	28 39	77 14	21 04
दिल्ली वि.वि.	28 42	77 13	21 08
देवली	28 30	77 14	21 04
देरसराय	28 33	77 11	21 16
दौलतपुर	28 44	77 06	21 36
धारीपुर	28 44	77 12	21 12
धौला कुआं	28 36	77 10	21 20
नंगलोई जाट	28 41	77 04	21 44
नंगलोई सईद	28 40	77 05	21 40
नांगली	28 36	77 17	20 52
नरैना	28 36	77 08	21 28
नसीरपुर	28 36	77 06	21 36
निजामुदीन (ईस्ट)	28 36	77 15	21 00
निजामुदीन (वैस्ट)	28 36	77 14	21 04
निथारी	28 35	77 21	20 36
नेहरूनगर	28 35	77 15	21 00
न्यू दिल्ली रेल्वे स्टे.	28 39	77 13	21 08
पंजाबी बाग	28 41	77 08	21 28
पन्तनगर	28 35	77 15	21 00
पश्चिम बिहार	28 41	77 06	21 36
पहाडगंज	28 39	77 13	21 08
पहाड़ी धीरज	28 40	77 12	21 12
पालम I.A.P.	28 33	77 08	21 28
पालम कालोनी	28 35	77 06	21 36
पीतमपुरा	28 42	77 08	21 28
पुषाइस्टीच्यूट	28 39	77 09	21 24
बगरौला	28 34	77 04	21 44
बसन्त एन्कलेव	28 34	77 10	21 20

क्षेत्र	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण) मि. से.
बादली	28 45	77 09	21 24
बाबरपुर	28 41	77 17	20 52
बिडलामन्दिर	28 38	77 12	21 12
बेगमपुर	28 32	77 13	21 08
बसईदारापुर	28 38	77 06	21 36
भालसवा	28 44	77 10	21 20
मघोलपुर	28 41	77 06	21 36
मंगोलपुरी	28 42	77 06	21 36
मण्डलोई	28 37	77 17	20 52
मयूर विहार	28 37	77 18	20 48
महरौली	28 31	77 11	21 16
महारानीबाग	28 35	77 16	20 56
माडलटाऊन	28 43	77 11	21 16
मादीपुर	28 40	77 08	21 28
मायापुरी	28 38	77 08	21 28
मालकपुर	28 42	77 12	21 12
मालवीयनगर	28 32	77 13	21 08
मुकन्दपुर	28 44	77 10	21 20
मुनिरका	28 33	77 10	21 20
मुस्तफाबाद	28 43	77 13	21 08
मेहरमनगर	28 34	77 08	21 28
मोतीबाग	28 35	77 11	21 16
यमुनाविहार	28 43	77 16	20 56
रवीन्दनगर	28 36	77 14	21 04
राजेन्द्रनगर	28 39	77 11	21 16
राजपुर	28 41	77 12	21 12
राजागार्डन्स	28 40	77 08	21 28
राजोरीगार्डन	28 39	77 07	21 32
रानीबाग	28 42	77 08	21 28
राष्ट्रपति भवन	28 37	77 13	21 08
राष्ट्रीय संस्कृत–संस्थान	28 37	77 06	21 36
रिथाला	28 43	77 06	21 36
रेल्वेकालोनी	28 41	77 09	21 24
रोहिणी	28 44	77 08	21 28
लक्ष्मीनगर	28 39	77 17	20 52
लाजपतनगर	28 35	77 15	21 00
लालकिला	28 39	77 14	21 04
लालकुआं	28 30	77 17	20 52
लोधीकालोनी	28 35	77 13	21 08
लोधीरोड	28 26	77 14	21 04
वजीरपुर	28 41	77 10	21 20
वजीराबाद	28 43	77 14	21 04
वसन्तकुंज	28 32	77 10	21 20
विजयघाट	28 40	77 15	21 00
विशाखा एन्कलेव	28 43	77 09	21 24

दिल्ली

क्षेत्र	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्वी)	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण)	क्षेत्र	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्वी)	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण)	क्षेत्र	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्वी)	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण)
	अं. क.	अं. क.	मि. से.		अं. क.	अं. क.	मि. से.		अं. क.	अं. क.	मि. से.
वैस्ट पटेलनगर	28 40	77 10	21 20	सदरबाजार	28 39	77 11	21 16	इरविन	28 39	77 14	21 04
वैस्ट करावलनगर	28 44	77 15	21 00	सरोजिनीनगर	28 35	77 12	21 12	एस्कार्ट	28 34	77 17	20 52
शंकरपुर	28 38	77 17	20 52	साउथ एक्सटेंशन	28 35	77 14	21 04	करतूरबा	28 39	77 14	21 04
शक्तिनगर	28 42	77 12	21 12	साऊथ पटेलनगर	28 39	77 10	21 20	गंगाराम	28 39	77 12	21 12
शकूरबस्ती	28 41	77 08	21 28	साहिबाबाद	28 45	77 04	21 44	गुजरमल मोदी	28 32	77 13	21 08
शम्सपुर	28 36	77 17	20 52	सीलमपुर	28 40	77 16	20 56	गोबिन्द वल्लभ पन्त	28 39	77 14	21 04
शादीपुर	28 38	77 11	21 16	सुमेपुर	28 44	77 15	21 00	नार्दर्न रेल्वे	28 39	77 13	21 08
शामेपुर	28 44	77 08	21 28	सुब्रोतो पार्क	28 35	77 09	21 24	दीनदयाल उपाध्याय	28 38	77 07	21 32
शास्त्रीनगर	28 41	77 11	21 16	सिविल लाइन्स	28 41	77 13	21 08	बल्लभ भाई पटेल	28 42	77 12	21 12
शालीमार बाग	28 43	77 09	21 24	सैनिक विहार	28 42	77 08	21 28	मूलचन्द	28 34	77 14	21 04
शाहदरा	28 40	77 18	20 48	हैदर पुर	28 43	77 09	21 24	मौ. आजाद मेडिकल	28 39	77 14	21 04
शिवपुरी	28 40	77 17	20 52	हौज़खास	28 33	77 12	21 12	रा.म. लोहिया	28 38	77 12	21 12
शिवाजीपार्क	28 42	77 17	20 52	*प्रसिद्ध हास्पिटलस*				रैड क्रास सोसायटी	28 36	77 14	21 04
श्रीलालबहादुर शास्त्री-राष्ट्रीय संस्कृत-विद्यापीठ	28 33	77 12	21 12	आलइण्डिया इंस्टिच्यूटआफ इण्डियन मेडिकल सांइसेज (A.I.I.M.S.)	28 34	77 13	21 08	लेडी हार्डिंग	28 39	77 13	21 08
सब्जीमण्डी	28 41	77 12	21 12					विलिंग्टन	28 38	77 12	21 12
सफदरजंग	28 34	77 12	21 12					सफदरजंग	28 34	77 12	21 12
								हमदर्द नर्सिंग होम	28 31	77 15	21 00

नागालैण्ड(NAGALAND)

नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्वी)	स्टैण्डर्ड अन्तर (धन)	नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्वी)	स्टैण्डर्ड अन्तर (धन)	नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्वी)	स्टैण्डर्ड अन्तर (धन)
	अं. क.	अं. क.	मि. से.		अं. क.	अं. क.	मि. से.		अं. क.	अं. क.	मि. से.
Bhandari	26 18	94 08	46 32	Kohima	25 39	94 08	46 32	Phek	25 42	94 28	47 52
Chantongia	26 35	94 40	48 40	Mokokchung	26 19	94 32	48 08	Tuensang	26 17	94 48	49 12
Chizami	25 36	94 23	47 32	Mon	26 42	95 04	50 16	Wokha	26 07	94 17	47 08
Dimapur	25 53	93 43	44 52	Naginmara	26 47	94 42	48 48	Zunheboto	26 02	94 31	48 04
Hemma	25 22	93 37	44 28	Noklak	26 14	95 02	50 08				

प. बंगाल

नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्वी)	स्टैण्डर्ड अन्तर (धन)	नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्वी)	स्टैण्डर्ड अन्तर (धन)	नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्वी)	स्टैण्डर्ड अन्तर (धन)
	अं. क.	अं. क.	मि. से.		अं. क.	अं. क.	मि. से.		अं. क.	अं. क.	मि. से.
अज़ीमगंज	24 14	88 15	23 00	इस्लामपुर	26 15	88 12	22 48	कारिसियांग	26 53	88 18	23 12
अन्दाल	23 36	87 12	18 48	उलुबारिया	22 28	88 06	22 24	कालिम्पोंग	27 04	88 29	23 56
अंबिकानगर	22 57	86 46	17 04	एगरा	21 54	87 32	20 08	कालियागंज	25 38	88 19	23 16
अलीपुरदुआर	26 29	89 44	28 56	काकद्वीप	21 53	88 11	22 44	कुमारग्राम	26 37	89 50	29 20
आंदरा	23 30	86 40	17 08	काजलागढ़	22 02	87 47	21 08	कुल्टी	23 44	86 51	17 24
आरामबाग	22 53	87 47	21 08	काटोया	23 38	88 08	22 32	कुल्पी	22 06	88 15	23 00
आसनसोल	23 41	86 59	17 56	काण्ठी	21 47	87 46	21 04	कूचबिहार	26 19	89 26	27 44
इंग्लिशबाजार	25 00	88 09	22 36	काण्डी	23 58	88 03	22 12	कृष्णनगर	23 24	88 30	24 00
इच्छापुर	22 50	88 24	23 36	कालना	23 13	88 22	23 28	केशियारी	22 08	87 15	19 00

प. बंगाल

नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर (धन)	नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर (धन)	नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर (धन)
	अं. क.	अं. क.	मि. से.		अं. क.	अं. क.	मि. से.		अं. क.	अं. क.	मि. से.
कोतालपुर	23 02	87 36	20 24	दार्जीलिंग	27 02	88 16	23 04	भद्रेश्वर	22 50	88 21	23 24
कोलकाता	22 30	88 30	24 00	दिगम्बरपुर	21 57	88 22	23 28	भांगर	22 31	88 37	24 28
खड़गपुर	22 20	87 20	19 20	दिनहाटा	26 08	89 28	27 52	भाटपाड़ा	22 52	88 24	23 36
खरदाह	22 44	88 22	23 28	दुबराजपुर	23 48	87 23	19 32	भाबटा	23 59	88 15	23 00
खातरा	22 59	86 51	17 24	दुर्गापुर	23 29	87 20	19 20	मंगलकोट	23 33	87 54	21 36
गंगासागर	21 38	88 05	22 20	दैनहाट	23 37	88 04	22 16	महिषादल	22 11	87 59	21 56
गढ़नेटा	22 51	87 19	19 16	धातृग्राम	23 15	88 20	23 20	मातीमांगा	22 49	89 56	29 44
गदाधरपुर	24 01	87 43	20 52	नयाग्राम	22 02	87 11	18 44	मानबाज़ार	23 04	86 39	16 36
गांगनापुर	23 09	88 38	24 32	नलहाटी	24 18	87 49	21 16	मुर्शिदाबाद	24 11	88 16	23 04
गोआल्टर	22 43	87 10	18 40	नवद्वीप	23 25	88 22	23 28	मेखलीगंज	26 20	88 55	25 40
गोकर्णा	24 03	88 07	18 28	नवापाड़ा	23 29	88 15	23 00	मेदिनीपुर	22 25	87 20	19 20
गोपीबल्लवपुर	22 13	86 54	17 36	नईहाटी	22 54	88 25	23 40	मैनागुड़ी	26 34	88 49	25 16
गोबरडांगा	22 53	88 45	25 00	पाचाल	23 15	87 18	19 12	रघुनाथपुर	23 33	86 40	16 40
गोयेरकाटा	26 42	89 02	26 08	पानीहाटी	22 42	88 22	23 28	राजवाड़ी	22 25	88 48	25 12
घाटल	22 40	87 43	20 52	पुरुलिया	23 20	86 22	15 28	राजमहाल	25 03	87 50	21 20
चम्पदानी	22 48	88 21	23 24	पूर्वस्थली	23 28	88 21	23 24	रानाघाट	23 11	88 35	24 20
चम्पाहटी	22 23	88 29	23 56	पोर्ट केनिंग	22 18	88 40	24 40	रानीगंज	23 37	87 08	18 32
चन्दननगर	22 51	88 21	23 24	फल्टा	22 17	88 07	22 28	रामगढ	22 42	87 04	18 16
चन्द्रकोना	22 44	87 31	20 04	बडानगर	22 38	88 22	23 28	रामपुरहाट	24 10	87 47	21 08
चांदपाड़ा	22 58	88 47	25 08	बनगाव	23 04	88 49	25 16	रामसागर	23 05	87 17	19 08
चित्तरंजन	23 52	86 52	17 28	बर्दवान	23 16	87 52	21 28	रायगंज	25 37	88 07	22 28
चुचुरा	22 53	88 24	23 36	बल्ली	22 39	88 21	23 24	रायडिगी	22 00	88 26	23 44
चैतल	22 31	88 47	25 08	बसीरहाट	22 40	88 53	25 32	लक्ष्मीकान्तपुर	22 07	88 20	23 20
जंगीपुर	24 28	88 04	22 16	बहरमपुर	24 07	88 16	23 04	लालबाग	24 09	88 17	23 08
जयनगर	22 12	88 25	23 40	बागडंगा	24 02	88 32	24 08	शान्तिपुर	23 15	88 26	23 44
जलपाईगुड़ी	26 31	88 44	24 56	बांकुरा	23 15	87 04	18 16	शिलीगुडी	26 42	88 26	23 44
जियागंज	24 14	88 16	23 04	बादुरिया	22 44	88 47	25 08	श्रीरामपुर	22 45	88 21	23 24
जौग्राम	23 06	88 05	22 20	बाराकपुर	22 55	89 32	28 08	समुद्रगढ़	23 21	88 20	23 20
झारग्राम	22 27	86 59	17 56	बारासत	22 43	88 29	23 56	सांकरैल	22 34	88 14	22 56
झालिदा	23 22	85 58	13 52	बारुईपुर	22 21	88 27	23 48	सियुड़ी	23 55	87 32	20 08
टीटागढ़	22 45	88 22	23 28	बालूरघाट	25 13	88 46	25 04	सीतलकूची	26 10	89 11	26 44
डायमडहार्बर	22 12	88 12	22 48	बांसबारिया	22 58	88 24	23 36	सुताहाटा	22 08	88 07	22 28
डालकोला	25 52	87 51	21 24	बिष्णुपुर	23 05	87 19	19 16	सूरी	23 55	87 32	20 08
डे गंगा	22 40	88 39	24 36	बुरनपुर	23 42	86 58	17 52	सेरमपुर	22 45	88 21	23 24
ढोशा	22 15	88 33	24 12	बेलडांगा	23 56	88 15	23 00	सोनामुखी	23 18	87 25	19 40
तामलुक	22 18	87 55	21 40	बेलूर	22 38	88 18	23 12	सोनारपुर	22 26	88 25	23 40
तारकेश्वर	22 54	88 02	22 08	बेल्डा	22 05	87 21	19 24	हरिहरपाड़ा	24 02	88 27	23 48
तालडागरा	23 02	87 06	18 24	बेहाला	22 31	88 19	23 16	हालिशहर	22 56	88 25	23 40
तूफानगंज	26 19	89 40	28 40	बोलपुर	23 40	87 43	20 52	हावड़ा	22 25	88 20	23 20
तौलीगंज	22 30	88 23	23 32	बैद्यबाटी	22 47	88 20	23 20	हासनाबाद	22 35	88 55	25 40

पंजाब

नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण)	नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण)	नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण)
	अं. क.	अं. क.	मि. से.		अं. क.	अं. क.	मि. से.		अं. क.	अं. क.	मि. से.
अकालगढ़	29 50	75 53	26 28	डकाला	30 13	76 21	24 36	भुच्चो	30 13	75 06	29 36
अजनाला	31 51	74 48	30 48	डेरा बाबा नानक	32 02	75 04	29 44	भैणी आला	30 52	76 04	25 44
अमरगढ़	30 28	76 01	25 56	तपा	30 19	75 21	28 36	भैणी की माली	30 56	76 02	25 52
अमलोह	30 37	76 14	25 04	तरनतारन	31 27	74 58	30 08	मजीठा	31 46	74 57	30 12
अमृतसर	31 37	74 55	30 20	तलवण्डी भाई	30 51	74 56	30 16	मण्डी गोबिन्दगढ़	देखें–गोबिन्दगढ़मण्डी		
अटारी	31 36	74 35	31 40	दसूहा	31 49	75 38	27 28	मलकाणा	29 56	75 02	29 52
अबोहर	30 09	74 11	33 16	दीनानगर	32 09	75 28	28 08	मलोट	30 13	74 29	32 04
अहमदगढ़	30 41	75 50	26 40	दोराहा मण्डी	30 49	76 02	25 52	माच्छीवाड़ा	30 55	76 11	25 16
आनन्दपुर साहिब	31 15	76 31	23 56	धारीवाल	31 57	75 19	28 44	मादपुर	30 51	76 07	25 32
उरमरटाण्डा	31 42	75 38	27 28	धूरी	30 22	75 52	26 32	मानकी	30 48	76 13	25 08
ककराला	30 04	76 07	25 32	नकोदर	31 07	75 29	28 04	मानसा	29 59	75 23	28 28
कपूरथला	31 23	75 23	28 28	नंगल डैम	31 23	76 21	24 36	मालेरकोटला	30 31	75 52	26 32
करतारपुर	31 27	75 30	28 00	नवांशहर	31 07	76 08	25 28	मुकेरियां	31 57	75 37	27 32
कादियां	31 49	75 23	28 28	नाभा	30 22	76 08	25 28	मुक्तसर	30 29	74 31	31 56
कादों	30 47	76 03	25 48	नूरपुर बेदी	31 09	76 29	24 04	मुबारिकपुर	30 37	76 51	22 36
कीरतपुर साहिब	31 11	76 34	23 44	नौगावां	30 44	76 26	24 16	मोगा	30 48	75 10	29 20
कुराली	30 50	76 35	23 40	पटियाला	30 20	76 25	24 20	मोरिण्डा	30 48	76 30	24 00
कोटकपूरा	30 36	74 54	30 24	पट्टी	31 17	74 51	30 36	मोहाली	30 43	76 42	23 12
खण्ट	30 48	76 25	24 20	पठानकोट	32 17	75 42	27 12	मौड़	30 05	75 15	29 00
खन्ना	30 42	76 13	25 08	फगवाड़ा	31 14	75 46	26 56	राजपुरा	30 29	76 36	23 36
खमाणोंकलां	30 50	76 20	24 40	फतेहगढ़ साहिब	30 39	76 23	24 28	रामपुरा फूल	30 17	75 14	29 04
खरड़	30 45	76 37	23 32	फरीदकोट	30 40	74 40	31 20	रायकोट	30 39	75 36	27 36
खेमकरण	31 08	74 34	31 44	फाज़िल्का	30 25	74 04	33 44	राहों	31 03	76 07	25 32
गंगूवाल	31 17	76 28	24 08	फिरोज़पुर	30 55	74 40	31 20	रूपनगर	30 57	76 32	23 52
गढ़दिवाला	31 44	75 45	27 00	फिल्लौर	31 01	75 47	26 52	रोपड़	देखें–रूपनगर		
गढ़शंकर	31 13	76 08	25 28	बंगा	31 11	75 59	26 04	रौणी	30 36	76 05	25 40
गुरदासपुर	32 02	75 27	28 12	बटाला	31 48	75 12	29 12	लुधियाना	30 55	75 54	26 24
गोईन्दवाल	31 22	75 08	29 28	बनूड़	30 33	76 43	23 08	सरदूलगढ़	29 42	75 14	29 04
गोबिन्दगढ़मण्डी	30 40	76 18	24 48	बरनाला	30 23	75 33	27 48	संगरूर	30 12	75 53	26 28
घड़ूआं	30 47	76 33	23 48	बरेटा	29 51	75 41	23 16	संघोल	30 47	76 23	24 28
घनौर	30 21	76 37	23 32	बलाचौर	31 03	76 18	24 48	सनौर	30 18	76 28	24 08
चण्डीगढ़	30 45	76 50	22 40	बसी	30 35	76 50	22 40	समराला	30 51	76 11	25 16
चमकौर साहिब	30 55	76 24	24 24	बसीपठाणां	30 40	76 23	24 28	समाना	30 09	76 12	25 12
जगरांव	30 47	75 29	28 04	बुढ़लाढा	29 56	75 34	27 44	सरहिन्द	30 38	76 22	24 32
जण्डयाला	31 36	75 03	29 48	बेला	30 56	76 23	24 28	साधुगढ़	30 35	76 27	24 12
जलालाबाद	30 37	74 15	33 00	बोरास	30 36	76 32	23 52	सुनाम	30 08	75 48	26 48
जालन्धर	31 19	75 34	27 44	ब्यास	31 31	75 18	28 48	सुल्तानपुर	31 12	75 12	29 12
जीरा	30 58	74 59	30 04	भटिण्डा	30 11	75 00	30 00	सोहाणां	30 42	76 42	23 12
जेजों	31 21	76 09	25 24	भवानीगढ़	30 16	76 02	25 52	हरीके पत्तन	31 30	74 57	30 12
जेतों	30 28	74 53	30 28	भाखड़ा डैम	31 24	76 30	24 00	होशियारपुर	31 32	75 57	26 12
टाण्डाउरमर	देखें– उरमरटांडा			भादसों	30 31	76 15	25 00				
डबवाली	29 58	74 45	31 00	भीखी	30 05	75 34	27 44				

पाण्डिचेरी (Pondicherry)

नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्वी)	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण)	नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्वी)	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण)	नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्वी)	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण)
	अं. क.	अं. क.	मि. से.		अं. क.	अं. क.	मि. से.		अं. क.	अं. क.	मि. से.
Karikal	10 55	79 50	10 40	Mahe	11 42	75 32	27 52	Yanam	16 44	82 13	01 08
Pondicherry	11 58	79 54	10 24								

बिहार और झारखण्ड

नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्वी)	स्टैण्डर्ड अन्तर (धन)	नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्वी)	स्टैण्डर्ड अन्तर (धन)	नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्वी)	स्टैण्डर्ड अन्तर (धन)
	अं. क.	अं. क.	मि. से.		अं. क.	अं. क.	मि. से.		अं. क.	अं. क.	मि. से.
आरा	25 34	84 40	08 40	डाल्टनगंज	24 02	84 04	06 16	बोधगया	24 41	84 58	09 52
औरंगाबाद	24 45	84 25	07 40	तेंघरा	25 29	85 57	13 48	भबुआ	25 03	83 37	04 28
कटिहार	25 30	87 35	20 20	दरभंगा	26 10	85 57	13 48	भागलपुर	25 15	87 02	18 08
किशनगंज	26 10	87 56	21 44	दरुखरिका	24 00	85 33	12 12	मधिपुरा	25 55	86 47	17 08
कोरंजो	22 27	84 28	07 52	दलसिंहसराय	25 40	85 50	13 20	मधुपुर	24 16	86 39	16 36
खगरिया	25 30	86 29	15 56	दानापुर	25 38	85 05	10 20	मधुबनी	26 22	86 05	14 20
खुण्टी	23 05	85 17	11 08	दुम्का	24 16	87 15	19 00	मनिहारी	25 21	87 38	20 32
गया	24 49	85 01	10 04	देवघर	24 30	86 42	16 48	मनोहरपुर	22 23	85 12	10 48
गरवा	24 10	83 52	05 28	देहरी	24 52	84 11	06 44	महाराजगंज	26 07	84 29	07 56
गिरिडिह	24 12	86 21	15 24	दोरण्डा	23 18	85 20	11 20	मुंगेर	25 23	86 30	16 00
गुआ	22 12	85 23	11 32	धनबाद	23 47	86 30	16 00	मुजफ्फरपुर	26 07	85 27	11 48
गुमिया	23 47	85 49	13 16	नबादा	24 53	85 35	12 20	मुरलीगंज	25 54	86 59	17 56
गुम्ला	23 03	84 33	08 12	नालन्दा	25 07	85 25	11 40	मुस्तफाबाद	26 12	84 34	08 16
गोगरी	25 27	86 38	16 32	निरमाली	26 19	86 35	16 20	मोकामा	25 24	85 57	13 48
गोड्डा	24 50	87 13	18 52	नेतर हाट	23 29	84 16	07 04	मोतीहारी	26 40	84 57	09 48
गोपालगंज	26 28	84 26	07 44	नोमुण्डी	22 10	85 32	12 08	रंकाकलां	23 58	83 48	05 12
घाघरा	23 17	84 33	08 12	पटना	25 37	85 13	10 52	रजौन	25 01	86 58	17 52
घाटसिला	22 36	86 29	15 56	पतरातु	23 38	85 17	11 08	रांची	23 23	85 23	11 32
चक्रधरपुर	22 42	85 38	12 32	पाकौर	24 38	87 54	21 36	लहरियासराय	26 07	85 54	13 36
चम्पापुर	24 02	86 31	16 04	पालकोट	22 52	84 41	08 44	लोहारडंगा	23 26	84 42	08 48
चम्पारन	26 50	84 40	08 40	पुरनिया	25 49	87 31	20 04	शेखूपुरा	25 09	85 53	13 32
चान्दिल	22 58	86 03	14 12	फोरबेसगंज	26 18	87 15	19 00	सगौली	26 47	84 44	08 56
चित्तरजन	23 52	86 52	17 28	बक्सर	25 34	83 59	05 56	समस्तीपुर	25 55	85 50	13 20
छतरा	24 12	84 56	09 44	बगहा	27 06	84 05	06 20	सहरसा	25 55	86 35	16 20
छपरा	25 47	84 47	09 08	बठनाहा	26 22	87 14	18 56	सासाराम	24 57	84 03	06 12
छैबासा	22 34	85 51	13 24	बरकाकाना	23 37	85 29	11 56	साहिबगंज	25 13	87 40	20 40
जमशेदपुर	22 50	86 10	14 40	बरौनी	25 30	85 58	13 52	सिमडेगा	22 37	84 31	08 04
जमालपुर	25 19	86 32	16 08	बहादुरगंज	27 32	82 50	01 20	सिन्दरी	23 45	86 42	16 48
जमुई	24 55	86 13	14 52	बिहारगंज	25 44	86 59	17 56	सीतामढी	26 35	85 32	12 08
जरिडिह	23 38	86 04	14 16	बिहारशरीफ	25 11	85 32	12 08	सीवां	26 12	84 23	07 32
जहानाबाद	25 13	84 59	08 56	बून्दु	23 11	85 35	12 20	सुपौल	26 07	86 36	16 24
जामतारा	23 57	86 48	17 12	बेगुसराय	25 25	86 08	14 32	सुल्तानगंज	25 14	86 45	17 00
जोरापोखर	22 26	85 46	13 04	बेट्टिया	26 48	84 33	08 12	सोनपुर	25 42	85 12	10 48
झरिया	23 45	86 24	15 36	बैद्यनाथ	24 29	86 42	16 48	हज़ारीबाग	23 59	85 25	11 40
झाझा	24 46	86 22	15 28	बोकारो	23 51	86 02	14 08	हाजीपुर	25 43	85 18	11 12

मणिपुर (MANIPUR)

नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर (धन)	नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर (धन)	नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर (धन)
	अं. क.	अं. क.	मि. से.		अं. क.	अं. क.	मि. से.		अं. क.	अं. क.	मि. से.
Bishnupur	24 38	93 47	45 08	Mayang	24 35	93 55	45 40	Tamei	25 08	93 41	44 44
Chakpikrong	24 12	93 57	45 48	Moirang	24 28	93 48	45 12	Tamma	25 10	93 45	45 00
Chandel	24 15	94 01	46 04	MombNew	24 05	93 58	45 52	Tamenglong	24 58	93 31	44 04
Chingai	25 15	94 31	48 04	Moreh	24 15	94 18	47 12	Tengnoupal	24 23	94 10	46 40
Chudachandpur	24 19	93 40	44 40	Nungba	24 49	93 27	43 48	Thinghot	24 07	93 37	44 28
Henglep	24 28	93 25	43 40	Parbung	24 14	93 07	42 28	Thoubal	24 38	94 02	46 08
Hanspip	24 07	93 13	42 52	Senapati	25 14	94 07	46 28	Tousem	25 07	93 23	43 32
Imphal	24 47	93 57	45 48	Tadubi	25 27	94 09	46 36	Ukhrul	25 07	94 23	47 32
Kasom-Khullan	24 40	94 18	47 12								

मध्य प्रदेश और वनांचल

नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर	नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर	नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर
	अं. क.	अं. क.	मि. से.		अं. क.	अं. क.	मि. से.		अं. क.	अं. क.	मि. से.
अगर	23 44	76 04	−25 44	कृष्णनगर	23 47	83 25	+03 40	चन्देरी	24 43	78 07	−17 32
अजयगढ	24 53	80 15	−09 00	केरार	23 02	81 37	−03 32	चाचोरा	24 11	76 59	−22 04
अजद	22 03	75 03	−29 48	कोईलारी	23 57	81 45	−03 00	चापई	19 42	81 31	−03 56
अंजहेडा	22 32	75 07	−29 32	कोगुर	19 53	81 27	−04 12	चापरा	22 43	76 20	−24 40
अदेगांव	22 36	79 30	−12 00	कोठी	24 45	80 45	−07 00	चाम्पा	22 02	82 43	+00 52
अमरकण्टक	22 40	81 45	−03 00	कोण्डागांव	19 37	81 41	−03 16	छतरपुर	24 54	79 38	−11 28
अमला	21 55	78 07	−17 32	कोरबा	22 22	82 42	+00 48	छिनारी	19 34	81 26	−04 16
अम्बाह	26 43	78 14	−17 04	कोरवई	24 07	78 03	−17 48	छिन्दवाड़ा	22 03	78 58	−14 08
अम्बिकापुर	23 07	83 12	+02 48	क्षिप्रा	22 54	76 00	−26 00	छुई खदान	21 31	81 02	−05 52
अरंग	21 12	81 58	−02 08	खजुराहो	24 52	79 52	−10 32	जगदलपुर	19 05	82 04	−01 44
अलीराजपुर	22 19	74 21	−32 36	खण्डवा	21 50	76 23	−24 28	जनकपुर	23 43	81 47	−02 52
अशोकनगर	24 33	77 43	−19 08	खनियाधान	25 02	78 07	−17 32	जबलपुर	23 10	79 59	−10 04
इच्छापुर	21 10	76 09	−25 24	खमरिया	23 36	80 32	−07 52	जशपुरनगर	22 53	84 12	+06 48
इच्छावर	23 01	77 01	−21 56	खरगोन	21 52	75 36	−27 36	जऔरा	23 38	75 08	−29 28
इटारसी	22 37	77 45	−19 00	खरोरा	26 22	77 39	−19 24	जावद	24 37	74 52	−30 32
इटावा	24 10	78 12	−17 12	खाचरोद	23 25	75 17	−28 52	जोबट	22 24	74 34	−31 44
इन्दौर	22 44	75 50	−26 40	खिलचीपुर	24 03	76 33	−23 48	झलवाड़ा	23 47	80 43	−07 08
इन्द्रगढ़	25 55	78 34	−15 44	खुरई	24 03	78 20	−16 40	झाबुआ	22 45	74 38	−31 28
उज्जैन	23 09	75 43	−27 08	खेतिया	21 41	74 41	−31 16	टीकमगढ	24 45	78 53	−14 28
उमरिया	23 32	80 53	−06 28	खैरागढ	21 25	80 59	−06 04	डिंडोरी	22 57	81 06	−05 36
उमरी	26 31	78 57	−14 12	गरनावर	24 38	81 02	−05 52	डूगरगढ	21 12	80 50	−06 40
औबेदुल्लागंज	22 59	77 36	−19 36	गरौंली	25 05	79 24	−12 24	तक्खतपुर	22 08	81 53	−02 28
ओरछा	25 21	78 38	−15 28	गादरवाड़ा	22 56	78 50	−14 40	तिरोदी	21 40	79 43	−11 08
कटंगी	21 47	79 48	−10 48	गुना	24 40	77 20	−20 40	तेंदुखेडा	23 10	78 52	−14 32
कटनी	23 47	80 27	−08 12	गोल्लपल्ली	17 55	81 05	−05 40	थाडला	23 01	74 34	−31 44
करकनार	19 17	81 36	−03 36	गोहद	26 25	78 29	−16 04	दतरौदा	24 00	76 17	−24 52
कांकेर	20 17	81 32	−03 52	गोहरगंज	23 01	77 40	−19 20	दतिया	25 39	78 27	−16 12
काठघोड़ा	22 30	82 33	+00 12	ग्वालियर	26 14	78 10	−17 20	दनतेवाड़ा	18 52	81 22	−04 32
किडंदुल	18 40	81 15	−05 00	घुघरी	22 40	80 41	−07 16	दमोह	23 50	79 29	−12 04
कुकशी	22 12	74 45	−31 00	चन्दला	25 05	80 12	−09 12	दिगऊकला	24 03	75 09	−29 24
कुतरु	19 05	80 48	−06 48	चन्दाओरा	23 37	81 37	−03 32	दुर्ग	21 11	81 17	−04 52
कुरसेकोढी	20 13	80 48	−06 48	चंदिया	23 38	80 42	−07 12	देवरी	23 23	79 02	−13 52

मध्य प्रदेश और वनांचल

नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्वी)	स्टैण्डर्ड अन्तर
	अं. क.	अं. क.	मि. से.
देवास	22 58	76 06	−25 36
धमतरी	20 42	81 34	−03 44
धर्मजयगढ	22 28	83 13	+02 52
धर्मावरम्	18 14	80 55	−06 20
धवलपुरकलां	20 23	82 16	−00 56
धार	22 35	75 20	−28 40
नगर	23 18	82 28	−00 08
नयागांव	25 53	77 10	−21 20
नरसिंहगढ़	23 44	77 08	−21 28
नरसिंहपुर	22 57	79 15	−13 00
नवापाड़ा	20 57	81 53	−02 28
नबावबसौदा	23 37	78 12	−17 12
नसरुल्लागंज	22 42	77 17	−20 52
नागदा	23 27	75 25	−28 20
नागोद	24 33	80 37	−07 32
नालखेड़ा	23 51	76 15	−25 00
निमेड	18 54	80 51	−06 36
नीमच	24 27	74 52	−30 32
नीलवाड़	19 34	81 34	−03 44
नेमावर	22 31	76 59	−22 04
नेवाली	21 43	74 55	−30 20
नैनपुर	22 26	80 08	−09 28
पंचगढ़ी	22 28	78 26	−16 16
पठारिया	23 53	79 10	−13 20
पण्डरिया	22 14	81 26	−04 16
पन्ना	24 44	80 14	−09 04
परताबपुर	19 59	80 45	−07 00
परलकोट	19 47	80 42	−07 12
पाटन	23 18	79 42	−11 12
पाधुरना	21 36	78 32	−15 52
पिचोर	25 11	78 11	−17 16
पिछोर	25 58	78 24	−16 24
पिपरिया	22 47	78 20	−16 40
पिरथीपुर	25 13	78 45	−15 00
पुसवरा	20 16	81 37	−03 32
फुलझर	21 14	82 54	+01 36
फूपकलां	26 38	78 52	−14 32
फोपनारकलां	21 13	76 18	−24 48
बगीचा	22 57	83 38	+04 32
बनवाराकलां	23 46	80 33	−07 48
बन्दा	24 03	78 57	−14 12
बन्दारस	18 57	81 52	−02 32
बरखेड़ाकलां	23 53	75 25	−28 20
बरगवा	24 23	82 27	−00 12
बरदी	24 32	82 23	−00 28
बरनगर	23 03	75 23	−28 28
बरवानी	22 02	74 54	−30 24
बरवाह	22 16	76 04	−25 44
बलोदाबाजार	21 38	82 16	−00 56
बस्तर	19 12	81 57	−02 12
बाम्ही	19 32	81 38	−03 28
बारासेओनी	21 46	80 03	−09 48
बालाघाट	21 48	80 15	−09 00
बासोदा	23 52	77 55	−18 20
बिछिया	22 27	80 42	−07 12
बिजयपुर	26 04	77 22	−20 32
बिजावर	24 38	79 32	−11 52
बिलासपुर	22 05	82 09	−01 24
बीजापुर	18 48	80 49	−06 44
बीना	24 10	78 12	−17 12
बीरसिंहपुर	24 48	80 59	−06 04
बुरहानपुर	21 18	76 14	−25 04
बेरनूर	19 41	81 27	−04 12
बैकुण्ठपुर	23 15	82 33	+00 12
बैतूल	21 55	77 54	−18 24
बैरागढ	23 15	77 20	−20 40
बोरियाटिब्बा	20 28	80 53	−06 28
भदौरा	24 48	77 24	−20 24
भरतपुर	23 45	81 45	−03 00
भरेण्डा	19 48	81 13	−05 08
भातापाडा	21 44	81 55	−02 20
भानपुरा	24 32	75 43	−27 08
भानपुरी	19 22	81 50	−02 40
भामगढ	21 50	76 30	−24 00
भिण्ड	26 35	78 46	−14 56
भिलाई	21 13	81 26	−04 16
भैंसदेही	21 38	77 37	−19 32
भोपाल	23 16	77 24	−20 24
भोपालपत्तनम्	18 51	80 24	−08 24
मऊगंज	24 41	81 53	−02 28
मकराई	22 04	77 06	−21 36
मझगवां	24 55	80 47	−06 52
मण्डला	22 37	80 22	−08 32
मनावर	22 14	75 06	−29 36
मन्दसौर	24 05	75 06	−29 36
महाराजपुर	25 01	79 43	−11 08
महाराजपुरडीह	21 58	81 04	−05 44
महासमुन्द	21 06	82 06	−01 36
महिदपुर	23 30	75 38	−27 28
महू	22 33	75 45	−27 00
महेन्द्रगढ़	23 12	82 12	−01 12
महेश्वर	22 11	75 35	−27 40
मांकरी	19 45	81 55	−02 20
मानपुर	22 26	75 37	−27 32
मुरवाडा	23 51	80 22	−08 32
मुरैना	26 23	78 04	−17 44
मुलतई	21 47	78 15	−17 00
मोहम्मदगढ	23 39	78 10	−17 20
मैनपुरखुर्द	20 18	82 15	−01 00
मैहर	24 16	80 49	−06 44
मोरार	26 13	78 14	−17 04
मोहगांवकलां	21 43	79 55	−10 20
रघुगढ़	24 27	77 12	−21 12
रतलाम	23 21	75 07	−29 32
रम्भापुर	22 55	74 35	−31 40
राजगढ	24 01	76 45	−23 00
राजनन्दगांव	21 05	81 05	−05 40
राजपुर	23 19	83 26	+03 44
राजिम	20 58	81 55	−02 20
रामनगर (मण्डला)	22 36	80 31	−07 56
रामनगर (रीवा)	24 12	81 09	−05 24
रामपुरा	24 28	75 27	−28 12
रामाकाना	21 43	78 52	−14 32
रामनुजगंज	23 48	83 42	+04 48
रायगढ	21 54	83 26	+03 44
रायपुर	21 15	81 41	−03 16
रायसेन	23 18	77 47	−18 52
राहतगढ़	23 47	78 22	−16 32
रीवा	24 31	81 19	−04 44
रेहली	23 38	79 05	−13 40
लक्ष्मणपुर	22 58	83 03	+02 12
लखनादाने	22 36	79 25	−11 40
लश्कर	26 12	78 12	−17 12
लामटा	22 08	80 07	−09 32
लालबाग	21 20	76 12	−25 12
लुगासी	25 05	79 34	−11 44
वारासिओनी	21 46	80 03	−09 48
विदिशा	23 32	77 50	−18 40
वेटेहिया	19 52	80 40	−07 20
शहडोल	23 20	81 22	−04 32
शाजापुर	23 26	76 18	−24 48
शाहपुर	21 13	76 13	−25 08
शाहपुरा	23 10	80 43	−07 08
शिवनीगुडा	19 18	81 53	−02 28
शिवपुर	25 39	76 41	−23 16

मध्य प्रदेश और वनांचल

नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर	नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर	नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर
	अं. क.	अं. क.	मि. से.		अं. क.	अं. क.	मि. से.		अं. क.	अं. क.	मि. से.
शिवपुरी	25 26	77 40	−19 20	सिरोंज	24 07	77 42	−19 12	सेओरी नारायण	21 44	82 35	+00 20
श्योपुर	25 40	76 40	−23 20	सिहोरा	23 29	80 07	−09 32	सेंधवा	21 42	75 06	−29 36
सक्ति	22 01	82 58	+01 52	सीतामऊ	24 01	75 23	−28 28	सोनहाट	23 29	82 30	00 00
सतना	24 34	80 55	−06 20	सीधी	24 23	81 54	−02 24	सोनावल	24 00	83 23	+03 32
सनावद	22 11	76 04	−25 44	सीहोर	23 12	77 06	−21 36	सोहागपुर	22 42	78 13	−17 08
सबलगढ	26 15	77 24	−20 24	सुबसरा	24 03	75 38	−27 28	सोहावल	24 35	80 47	−06 52
सरदारपुर	22 39	74 59	−30 04	सूरजपुर	23 13	82 53	+01 32	सौसर	21 38	78 48	−14 48
सागर	23 50	78 50	−14 40	सेओनी	22 06	79 35	−11 40	हट्टा	24 07	79 36	−11 36
सांची	23 29	77 44	−19 04	सेओनीमालवा	22 28	77 29	−20 04	हरदाखास	22 21	77 06	−21 36
सारंगपुर	23 35	76 28	−24 08	सेओन्धा	26 13	78 47	−14 52	होशंगाबाद	22 46	77 45	−19 00
सारनगढ	21 36	83 07	+02 28								

महाराष्ट्र

नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण)	नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण)	नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण)
	अं. क.	अं. क.	मि. से.		अं. क.	अं. क.	मि. से.		अं. क.	अं. क.	मि. से.
अकलकोट	17 31	76 14	25 04	अष्टी (वर्धा)	21 13	78 15	17 00	करकम्ब	17 51	75 21	28 36
अकोला (अहमदनगर)	19 32	74 03	33 48	असुंडी	19 52	80 20	08 40	करजत (कोंकण)	18 54	73 23	36 28
अकोला (मुम्बई)	20 40	77 05	21 40	अस्साय	20 15	75 59	26 04	करंजा	20 28	77 32	19 52
अकोट	21 06	77 08	21 28	अलीपुर	20 32	78 41	15 16	करंजाद्वीप	18 52	72 45	39 00
अगाशी	19 30	72 50	38 40	अलीबाग (रायगढ)	18 38	72 55	38 20	करमाला	18 25	75 15	29 00
अचलपुर	21 19	77 30	20 00	अहमदनगर	19 05	74 44	31 04	करसगांव	21 21	77 40	19 20
अजन्ता	20 30	75 48	26 48	अहमदपुर	18 40	76 57	22 12	कलमनूरी	19 42	77 21	20 36
अन्जनगांव	21 11	77 21	20 36	अहीरि	19 26	80 04	09 44	कलमेश्वर	21 15	79 01	13 56
अन्जनवेल	17 36	73 10	37 20	इगतपुरी	19 41	77 38	19 28	कलवन	20 30	74 06	33 36
अजरा	16 08	74 17	32 52	इन्दापुर	18 00	74 50	30 40	कलाम	20 28	78 20	16 40
अंजी	20 52	78 34	15 44	उडान	18 51	72 59	38 04	कल्याण	19 17	73 11	37 16
अतपडी	17 28	75 02	29 52	उमरखेड़	19 36	77 46	18 56	कल्लाम	18 31	76 00	26 00
अन्तुर	20 26	75 18	28 48	उमरेड	20 50	79 24	12 24	काठी	21 48	74 02	33 52
अमरावती	20 56	77 45	19 00	उल्हासनगर	19 13	73 07	37 32	कादिराबाद	19 52	75 59	26 04
अमलनेर (जलगांव)	21 01	75 09	29 24	उस्मानाबाद	18 09	76 06	25 36	कापसी	18 58	77 25	20 20
अमलनेर (बीड़)	18 57	75 24	28 24	एरन्दोल	20 53	75 23	28 28	काम्पटी	21 12	79 16	12 56
अमांगाव	21 24	80 18	08 48	एलिचपुर	21 18	77 33	19 48	कामथा	21 30	80 23	08 28
अम्बजोगई	18 44	76 23	24 28	एलोरा	20 04	75 15	29 00	कासा	19 56	73 02	37 52
अम्बागांव	20 38	80 00	10 00	ओस्मानाबाद	18 09	76 06	25 36	किनवत	19 38	78 16	16 56
अम्बाड	19 33	75 50	26 40	औंध	17 33	74 16	32 56	किरकी	18 36	73 57	34 12
अरपल्ली	19 45	79 58	10 08	औरंगाबाद	19 52	75 22	28 32	कुदाल	16 01	73 44	35 04
अरमोरी	20 30	80 01	09 56	औसा	18 15	76 34	23 44	कुन्दनवाड़	16 38	74 32	31 52
अरगांव	21 10	77 04	21 44	कतोल	21 16	78 35	15 40	कुरदुवाड़ी	18 06	75 31	27 56
अर्जुनी	21 04	80 15	09 00	कनहेरगांव	19 56	77 11	21 16	कुरहाद	20 10	78 13	17 08
अरवी	21 00	78 18	16 48	कन्दाहार	18 54	77 14	21 04	कुरुन्दवाड़	16 42	74 37	31 32
अष्टा	17 06	74 34	31 44	कन्नड	20 18	75 12	29 12	केलोद	21 30	78 58	14 08
अष्टीचन्दा	19 52	79 52	10 32	कयार	19 54	78 59	14 04	केसलाबोरी	20 24	79 20	12 40
अष्टी (बीड़)	18 50	75 14	29 04	कराड़	17 15	74 12	33 12	कोंडलवाड़ी	18 50	77 44	19 04

महाराष्ट्र

नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण)
	अं. क.	अं. क.	मि. से.
कोपारगांव	19 55	74 32	31 52
कौरगांव(सतारा)	17 42	74 16	32 56
कोलवान	18 36	73 35	35 40
कोल्हापुर	16 42	74 19	32 44
कैज	18 36	76 05	25 40
खडकी	18 34	73 52	34 32
खडगवासला	18 30	73 45	35 00
खण्डाला	18 45	73 25	36 20
खण्डाला (सतारा)	18 01	74 04	33 44
खपा	21 28	79 02	13 52
खमगाव	20 42	76 40	23 20
खरडा	18 38	75 32	27 52
खरडी	19 35	73 27	36 12
खानापुर	17 19	74 45	31 00
खार (मुम्बई)	19 02	72 51	38 36
खुआगांव	20 11	80 15	09 00
खुलदाबाद	20 01	75 16	28 56
खेड (पुणे)	18 54	73 56	34 16
खेड (रत्नागिरी)	17 45	73 25	36 20
खोलापुर	21 00	77 52	18 32
गंगाखेर	18 58	76 35	23 40
गंगापुर	19 45	75 04	29 44
गढचिराली	20 12	80 00	10 00
गुनसंगारी	19 30	76 02	25 52
गेवराई	19 18	75 48	26 48
गोंडिया ग्रेटर मुम्बई	21 26	80 14	09 04
घुगस	19 57	79 12	13 12
घेरड़ी	17 17	75 22	28 32
घोड़	19 04	73 50	34 40
घोलवाड	20 03	72 48	38 48
चन्द्रपुर	19 57	79 16	12 48
चान्दा	19 58	79 21	12 36
चन्दोर	20 20	74 18	32 48
चालिसगांव	20 29	75 10	29 20
चिकालदा	21 29	77 21	20 36
चिखली	20 21	76 15	25 00
चिचगढ	20 54	80 26	08 16
चिपलून	17 32	73 32	35 52
चिमुर	20 28	79 22	12 32
चेम्बूर	19 03	72 54	38 24
चोपडा	21 15	75 20	28 40
चौल	18 35	72 57	38 12
चौसाइया	18 38	75 40	27 20
जजीरा	18 16	72 59	38 04
जमखेड	18 44	75 24	28 24
जयगढ	17 18	73 13	37 08
जलगाव	21 03	75 39	27 24
जलगाव (अकोला)	21 01	76 35	23 40
जव्हार	19 56	73 19	36 44
जामनेर	20 47	75 52	26 32
जालना	19 50	75 58	26 08
जिन्तुर	19 38	76 40	23 20
जियुर	18 15	75 14	29 04
जुन्नार	19 15	73 58	34 08
जैतगढ	20 58	78 40	15 20
ट्रांबे	19 01	72 58	38 08
डफलापुर	16 59	75 09	29 24
डमतेल	17 40	73 10	37 20
डहानु	19 59	72 46	38 56
डांडा	19 05	72 50	38 40
डापोली	17 49	73 12	37 12
डिंडोरी	20 12	73 54	34 24
ढालगांव	17 08	75 00	30 00
ढोंड	18 28	74 36	31 36
ढोंडा	16 20	73 40	35 20
तडवले	18 26	76 10	25 20
तापल	21 29	75 05	29 40
तारापुर	19 52	72 42	39 12
तालेगाव (पूना)	18 41	74 14	33 04
तालेगाव (वर्धा)	20 20	78 10	17 20
तालोडा	21 32	74 11	33 16
तासगाव	17 04	74 41	31 16
तुमसार	21 24	79 48	10 48
तुलजापुर	18 03	76 10	25 20
थाने	19 12	72 58	38 08
थैर	18 22	76 14	25 04
दरयापुर	20 56	77 20	20 40
दरवाहा	20 19	77 46	18 56
दिगरस	20 06	77 48	18 48
दिगलूर	18 33	77 36	19 36
देवगढ	16 24	73 25	36 20
देवरुख	17 05	73 40	35 20
देयूलगावराजा	20 01	76 10	25 20
देवला	20 06	79 08	13 28
देवलाली	19 58	73 52	34 32
देवली	20 37	78 37	15 32
दौलताबाद	19 57	75 18	28 48
धुलिया	20 58	74 50	30 40
धुले	20 58	74 47	30 52
नन्दगांव	20 17	74 43	31 08
नन्दुरवाड	21 00	74 18	32 48
नागपुर	21 10	79 10	13 20
नागमीर	20 33	79 55	10 20
नान्देड	19 11	77 21	20 36
नारखेड	21 30	78 34	15 44
नालदुर्ग	17 49	76 20	24 40
नासिक	20 00	73 52	34 32
निफाड	20 04	74 10	33 20
निलंगा	18 07	76 45	23 00
नेरपिंगलै	21 14	78 03	17 48
नेरवाल	20 05	73 20	36 40
नेरि	20 28	79 31	11 56
नेवास्ता	19 38	74 58	30 08
नेसरि	16 02	74 25	32 20
नैदुर्ग	17 44	76 15	25 00
पंजहारा	20 58	74 18	32 48
पंढरपुर	17 42	75 24	28 24
पथारडी	19 06	75 10	29 20
पद्मपुर	21 19	80 28	08 08
पनवेल	18 59	73 10	37 20
पनहाल	16 45	74 02	33 52
परतूर	19 30	76 12	25 12
परनेर	19 01	74 30	32 00
परमानी	19 16	76 51	22 36
परातवाडा	21 21	77 29	20 04
परेन्दा	18 14	75 33	27 48
पलान्दुर	20 50	80 20	08 40
पालाम	19 01	76 59	22 04
पाचोरा	20 42	75 29	28 04
पाटन	17 24	73 57	34 12
पाटन (महेसाणा)	23 51	72 11	41 16
पातुर	20 28	77 02	21 52
पातोडा	18 48	75 32	27 52
पाथर्डी	19 17	76 30	24 00
पाली	18 34	73 18	36 48
पाल्सी	19 54	77 05	21 40
पिकालडाडी	19 14	80 05	09 40
पिम्पलनेर	20 59	74 09	33 24
पुणे	18 34	73 58	34 08
पुरन्दर	18 15	74 04	33 44
पुरना	19 11	77 05	21 40
पुरली	18 51	76 32	23 52
पुसाद	19 56	77 38	19 28
पुलगांव	20 40	78 22	16 32
पूना (= पुणे)	18 34	73 58	34 08

महाराष्ट्र

नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण)	नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण)	नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण)
	अं. क.	अं. क.	मि. से.		अं. क.	अं. क.	मि. से.		अं. क.	अं. क.	मि. से.
पेठ	17 05	74 21	32 36	मायनी	17 26	74 35	31 40	वाई	17 57	73 57	34 12
पेंडुव	16 04	73 41	35 16	मालवान	16 05	73 30	36 00	वाडा	19 40	73 11	37 16
पैथान	19 29	75 28	28 08	माहुर	19 50	77 59	18 04	वारूद	21 29	78 22	16 32
पोतेगांव	19 59	80 12	09 12	माहुल (मुम्बई)	19 05	72 53	38 28	वालपोय	15 32	74 05	33 40
पौनी	20 45	79 42	11 12	मालेगांव (नासिक)	20 32	74 38	31 28	वाशिम	20 06	77 09	21 24
फल्टान	17 59	74 26	32 16	मलेगांव (ओस्मानाबाद)	18 47	76 57	22 12	वासी	18 33	75 50	26 40
बडनेरा	20 52	77 44	19 04	मिराज	16 51	74 42	31 12	विरदल	21 20	74 44	31 04
बनकोट	17 57	73 04	37 44	मुखेर	18 42	77 24	20 24	विशालगढ	16 55	73 46	34 56
बम्बई	देखें पृष्ठ			मुम्बई	देखें पृष्ठ			विसापुर	18 53	74 42	31 12
बसिम	20 10	77 11	21 16	मुरुद	18 19	72 58	38 08	वीटा	17 17	74 33	31 48
बरसीटकली	20 30	77 06	21 36	मुर्तजापुर	20 44	77 23	20 28	वुन	20 00	78 58	14 08
बसीन	19 21	72 52	38 32	मुल	20 04	79 42	11 12	वैजापुर	19 58	74 46	30 56
बान्दरा	19 04	72 58	38 08	मेनकर	20 05	76 32	23 52	वैरागढ़	20 28	80 09	09 24
बारसी	18 14	75 48	26 48	मेरपट्टी	19 08	80 11	09 16	शहादा	21 32	74 30	32 00
बारामती	18 12	74 39	21 24	मेलघाट	21 44	77 12	21 12	शाहापुर	19 25	73 20	36 40
बालापुर	20 40	76 51	22 36	मेहेकट	20 11	76 39	23 24	शिरपुर	21 21	74 53	30 28
बासमत	19 22	77 10	21 20	मैंदरगी	17 26	76 15	25 00	शेगाव	20 48	76 42	23 12
बिलोली	18 47	77 42	19 12	मोरम	17 46	76 32	23 52	शेवेगांव	19 21	75 14	29 04
बीड	18 59	75 50	26 40	मोरसी	21 21	78 04	17 44	शोलापुर	17 43	75 56	26 16
बुल्ढान	20 31	76 18	24 48	मोहारी	21 19	79 42	11 12	श्रीगोण्डा	18 39	74 44	31 04
बोरी	20 52	79 04	13 44	मोहोल	17 53	75 38	27 28	श्रीवर्धन	18 04	78 03	17 48
ब्रह्मापुरी	20 36	79 57	10 12	मौंडा	21 10	79 30	12 00	सकोली	21 05	80 02	09 52
भडक	20 08	79 10	13 20	म्हासवाड़	17 40	74 50	30 40	संगमेश्वर	17 13	73 35	35 40
भडारा	21 10	79 41	11 16	यवतमाल	20 24	78 08	17 28	संगीर	21 02	74 51	30 36
भदनारा	21 22	79 37	11 32	रंगी	20 23	80 16	08 56	संगोल	17 30	75 15	29 00
भिवंडी	19 18	73 04	37 44	रत्नागिरि	17 00	73 22	36 32	संजेली (मुम्बई)	23 05	73 56	34 16
भींगर	19 05	74 53	30 28	रहिमतपुर	17 37	74 17	32 52	सतना	20 38	74 12	33 12
भुसावल	21 01	75 50	26 40	राजगढ (अलीबाग)	18 16	73 46	34 56	सतारा	17 43	74 05	33 40
भोकरदान	20 18	75 50	26 40	राजुरा चान्दा	19 48	79 25	12 20	ससवाड	18 20	74 01	33 56
भोर	18 10	73 55	34 20	रामटेक	21 28	79 28	12 08	सांगली	16 55	74 37	31 32
मंगरूल	20 36	77 52	18 32	रावेर	21 15	76 05	25 40	संगमनेर	19 37	74 18	32 48
मंगलवेढा	17 32	75 32	27 52	रोहा	18 25	73 08	37 28	सान्ताक्रुज	19 07	72 53	38 28
मजालगुडु	19 09	76 14	25 04	लवाड़ा	18 00	76 23	24 28	सावन्तवनाड	15 52	73 48	34 48
मढा	18 03	75 35	27 40	लाटूर	18 24	76 34	23 44	सावन्तवाड़ी	15 55	73 52	34 32
मथेरा	18 59	73 28	36 08	लाहिर	19 25	80 48	06 48	सिन्दखेट	19 58	76 10	25 20
मनगांव	18 15	73 20	36 40	लोनार	19 59	76 38	23 28	सिन्दखेडा	21 17	74 47	30 52
मनमाड	20 15	74 29	32 04	लोनावाला	18 45	73 27	36 12	सिन्नार	19 52	74 02	33 52
मनवात	19 20	76 32	23 52	वडगांव (अकोला)	20 32	77 00	22 00	सिरपुर	24 10	77 04	21 44
मनसार	21 27	79 24	12 24	वडगांव (पुणे)	18 46	73 41	35 16	सिरसुंडी	20 28	80 28	08 08
मरगाव	15 50	73 59	34 04	वथार	17 56	74 14	33 04	सिरूर	18 50	74 23	32 28
मल्कापुर (बुल्डाना)	20 52	76 18	24 48	वरोण्डा	19 27	77 59	18 04	सिरोंचा	18 52	80 01	09 56
मल्कापुर (कोल्हापुर)	16 57	74 00	34 00	वरोड़ा	20 15	79 05	13 40	सिलोद	20 20	75 42	27 12
महाद	18 05	73 29	36 04	वर्धा	20 42	78 40	15 20	सिहोरा	21 28	79 58	10 08
महाबलेश्वर	17 56	73 42	35 12	वल्हा	18 15	74 13	33 08	सुरगना	20 32	73 40	35 20
मान	17 49	74 32	31 52	वसाई	19 21	72 48	38 48	सुरजागढ़	19 36	80 28	08 08

महाराष्ट्र

नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्वी)	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण)	नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्वी)	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण)	नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्वी)	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण)
	अं. क.	अं. क.	मि. से.		अं. क.	अं. क.	मि. से.		अं. क.	अं. क.	मि. से.
सेंओनी	19 38	79 50	10 40	सौदा	21 05	75 58	26 08	हिंगनघाट	20 32	78 52	14 32
सोनपेट	19 03	76 31	23 56	हरनाई	17 45	73 07	37 32	हिंगोली	19 45	77 12	21 12
सोनाला	20 52	77 01	21 56	हरिसाल	21 30	77 05	21 40	हिवारखेड़	21 10	76 58	22 08
सोलापुर	17 43	75 56	26 16	हडगांव	19 30	77 42	19 12	होतगी	17 37	76 03	25 48

मिज़ोरम(MIZORAM)

नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्वी)	स्टैण्डर्ड अन्तर (धन)	नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्वी)	स्टैण्डर्ड अन्तर (धन)	नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्वी)	स्टैण्डर्ड अन्तर (धन)
	अं. क.	अं. क.	मि. से.		अं. क.	अं. क.	मि. से.		अं. क.	अं. क.	मि. से.
Aizawl	23 43	92 44	40 56	Lungdar	23 12	93 09	42 36	Seling	23 43	92 52	41 28
Champhai	23 27	93 20	43 20	Lunglei	22 54	92 44	40 56	Serchhip	23 19	92 52	41 28
Chawngte	22 37	92 42	40 48	Lungsen	22 53	92 35	40 20	Shermun	22 20	92 38	40 32
Chhimluang	24 19	92 43	40 52	Phaileng	23 41	92 30	40 00	Tukkalah	23 56	92 22	39 28
Demagiri	22 55	92 27	39 48	Saiha	22 28	92 58	41 52	Zawngling	22 13	93 02	42 08

मेघालय(MEGHALAYA)

नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्वी)	स्टैण्डर्ड अन्तर (धन)	नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्वी)	स्टैण्डर्ड अन्तर (धन)	नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्वी)	स्टैण्डर्ड अन्तर (धन)
	अं. क.	अं. क.	मि. से.		अं. क.	अं. क.	मि. से.		अं. क.	अं. क.	मि. से.
Amlarem	25 18	92 07	32 28	Mairang	25 33	91 35	36 20	Songsak	25 39	90 33	32 12
Baghmara	25 12	90 38	32 32	Nongstoin	25 31	91 16	35 04	Tura	25 30	90 13	30 52
Cherrapunji	25 17	91 42	36 48	Riangdo	25 38	91 07	34 28	Umling	25 58	91 51	37 24
Dalu	25 13	90 21	31 24	Rongram	25 37	90 17	31 08	Umsning	25 45	91 53	37 32
Jowai	25 28	92 13	38 52	Selsella	25 40	90 03	30 12	WilliamNagar	25 32	90 33	32 12
Khliehriat	25 20	92 25	39 40	Shillong	25 36	91 53	37 32	Zikzak	25 23	89 53	29 32
Laskein	25 30	92 26	39 44								

राजस्थान

नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्वी)	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण)	नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्वी)	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण)	नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्वी)	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण)
	अं. क.	अं. क.	मि. से.		अं. क.	अं. क.	मि. से.		अं. क.	अं. क.	मि. से.
अकलेरा	24 23	76 36	23 36	उतारनी	26 06	71 58	42 08	केकडी	25 56	75 10	29 20
अजमेर	26 27	74 42	31 12	उदयपुर	24 35	73 41	35 16	कोटरा	24 22	73 10	37 20
अनूपगढ़	29 07	73 06	37 36	एकलिंगजी	24 43	73 46	34 56	कोटा	25 10	75 52	26 32
अमेट	25 20	73 59	34 04	एरिनपुरा	25 09	73 06	37 36	कोलायत	27 50	72 57	38 12
अलवर	27 34	76 38	23 28	ओसियां	26 43	72 55	38 20	खण्डेला	27 36	75 32	27 52
अलीगढ़	25 58	76 07	25 30	करौली	26 30	77 01	21 56	खुईआला	27 06	70 25	48 20
आबू	24 40	72 45	39 00	कांकरोली	25 04	73 54	34 24	खेरबाड़ा	24 00	73 35	35 40
आबूरोड	24 29	72 47	38 52	कामन	27 39	77 16	20 56	गंगानगर	29 49	73 50	34 40
आमेर	26 59	75 52	26 32	किशनगढ़	26 34	74 52	30 32	गंगापुर (भीलवाड़ा)	25 13	74 16	32 56
आसपुर	23 58	74 03	33 48	कुशालगढ़	23 10	74 27	32 12	गंगापुर (टोंक)	26 29	76 46	22 56
आहोर	25 23	72 52	38 32	कुचामन	27 09	74 52	30 32	गिराब	26 02	70 35	47 40
इन्द्रगढ़	25 44	76 12	25 12	कूरी	26 42	70 40	47 20	गागरिया	25 44	70 42	47 12

राजस्थान

नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण)	नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण)	नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण)
	अं. क.	अं. क.	मि. से.		अं. क.	अं. क.	मि. से.		अं. क.	अं. क.	मि. से.
गूढा	25 12	71 48	42 48	नाचना	27 29	71 45	43 00	भीनमाल	25 00	72 19	40 44
घोटारु	27 18	70 04	49 44	नाथद्वारा	24 56	73 50	34 40	भीम	25 39	74 09	33 24
चाल्रू	26 36	75 59	26 04	निम्बहेडा	24 37	74 45	31 00	भीलवाडा	25 21	74 40	31 20
चारनवाला	27 53	72 10	41 20	नीम का थाना	27 44	75 48	26 48	मकराना	27 03	74 43	31 08
चित्तौडगढ	24 54	74 40	31 20	नोखा	27 35	73 29	36 04	मण्डलगढ	25 12	75 09	29 24
चिरावा	28 15	75 38	27 28	नैनवा	25 45	75 57	26 12	महलां	26 50	75 30	28 00
चीलो	27 22	73 30	36 00	नोहर	29 11	74 46	30 56	महाजन	28 48	73 56	34 16
चूरू	28 19	75 01	29 56	पचपदरा	25 55	72 21	40 36	मांगरोल	25 20	76 30	24 00
चौमू	27 08	75 47	26 52	परतापगढ	24 02	74 47	30 52	मारवाडजंक्शन	25 43	73 45	35 00
छबरा	24 40	76 50	22 40	प्रसाद	24 11	73 42	35 12	मालपुरा	26 18	75 25	28 20
छोटीसादडी	24 24	74 42	31 12	पर्बतसर	26 52	74 47	30 52	मावली	24 47	73 58	34 08
जयपुर	26 55	75 52	26 32	पल्लू	28 56	74 13	33 08	मेडता	26 39	74 06	33 36
जसरासर	27 45	73 50	34 40	पाली	25 46	73 20	36 40	मेडतारोड	26 43	73 55	34 20
जसवतपुरा	24 48	72 30	40 00	पिपलोदा	23 35	74 50	30 40	मियालजर	26 18	70 22	48 32
जहाजपुर	25 38	75 12	29 12	पिरावा	24 13	76 03	25 48	मुकन्दबाडा	24 49	75 59	26 04
जाएल	27 15	74 12	33 12	पिलानी	28 23	75 35	27 40	मुनबाओ	25 43	70 15	49 00
जालौर	25 22	72 38	39 28	पीपाररोड	26 27	73 27	36 12	मोदरी	24 25	73 25	36 20
जैसलमेर	[illegible] 55	70 54	46 24	पुनासर	27 02	73 02	37 52	मोहनगढ	27 17	71 18	44 48
जोधपुर	26 18	73 04	37 44	पुष्कर	26 30	74 33	31 48	रतनगढ	28 05	74 39	31 24
जोधासर	28 07	73 50	34 40	पूगल	28 31	72 47	38 52	राजगढ	28 39	75 26	28 16
झालरापाटन	24 33	76 10	25 20	पोखरन	26 55	71 55	42 20	रानीवाडा	24 45	72 13	41 08
झालावाड	24 36	76 09	25 24	फतेहपुर	28 00	75 00	30 00	रामगढ (जयपुर)	27 15	75 10	29 20
झुझुनु	28 06	75 25	28 20	फुलौदी	27 09	72 22	40 32	रामगढ (जैसलमेर)	27 22	70 30	48 00
टोडगढ	25 42	74 00	34 00	फुलेरा	26 52	75 16	28 56	रामदेवरा	27 00	71 52	42 34
टोडारायसिंह	26 00	75 29	28 04	बडी सादडी	24 25	74 28	32 08	रायसिंहनगर	29 32	73 27	36 12
टौंक	26 11	75 50	26 40	बनस्थली	26 23	75 50	26 40	रिखभदेव	24 04	73 40	35 20
डीग	27 28	77 20	20 40	बयाना	26 54	77 17	20 52	रीगंस	27 21	75 34	27 44
डीडवाना	27 24	74 34	31 44	ब्यावर	26 06	74 20	32 40	रूपनगर	26 48	74 54	30 24
डूगरपुर	23 50	73 43	35 08	बान्दनवाडा	26 09	74 42	31 12	रेनी	28 41	75 05	29 40
डेगाना	26 50	74 18	32 48	बरवा	27 06	76 32	23 52	लछमनगढ	27 45	75 04	29 44
तिजारा	27 55	76 50	22 40	बान्दीकुई	27 03	76 34	23 44	लाठी	27 03	71 30	44 00
थानाकस्बा	25 13	77 20	20 40	बाडमेर	25 45	71 25	44 20	लाडनूं	27 39	74 23	32 28
थानागाजी	27 25	76 19	24 44	बाडी	26 39	77 36	19 36	लालसोत	26 34	76 23	24 28
दान्ता	24 12	72 47	38 52	बाप	27 22	72 22	40 32	लूनी	26 00	72 52	38 32
देओरा	26 30	70 42	47 12	बारन	25 06	76 30	24 00	लोहारिया	23 48	74 15	33 00
देचू	26 47	72 20	40 40	बासवाडा	23 30	74 24	32 24	शाहगढ	27 08	69 57	50 12
देवलिया	24 03	74 43	31 08	बाली	25 50	74 05	33 40	शाहपुरा (जयपुर)	27 23	75 58	26 08
देवली	25 46	75 25	28 20	बालोतरा	25 49	72 14	41 04	शाहपुरा (भीलवाडा)	25 40	74 50	30 40
देवीकोट	26 42	71 12	45 12	बिरसलपुर	28 10	72 15	41 00	शेओ	26 11	71 15	45 00
देशनौके	27 48	73 21	36 36	बिलारा	26 10	73 42	35 12	शेरगढ (जोधपुर)	26 25	72 21	40 36
देसुरी	25 20	73 37	35 32	बीकानेर	28 01	73 20	36 40	शेरगढ (झालावाड)	24 40	76 32	23 52
धौलपुर	26 42	77 53	18 28	बून्दी	25 27	75 40	27 20	श्रीगंगानगर	29 49	73 50	34 40
नरैना	26 50	74 11	33 16	भरतपुर	27 15	77 30	20 00	श्रीडूंगरगढ	28 06	74 01	33 56
नवलगढ	27 51	75 18	28 48	भवारी	25 43	72 52	38 32	श्रीमाधोपुरा	27 25	75 32	27 52
नसीराबाद	26 18	74 48	30 56	भवरगढ	25 06	76 50	22 40	श्रीमोहनगढ	27 17	71 12	45 12
नागौर	27 11	73 [illegible]	[illegible]	[illegible]	29 15	75 20	28 40	राम	26 50	70 31	47 56

राजस्थान

नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण)
	अ. क.	अ. क.	मि. से.
समदरी	25 49	72 35	39 40
सरदारशहर	28 27	74 30	32 00
सरवार	26 02	74 55	30 20
सरूपसर	29 22	73 37	35 32
सवाईमाधोपुर	25 58	76 25	24 20
सहारा	25 15	74 16	32 56
सागवाड़ा	23 41	74 01	33 56
सांगानेर	26 49	75 49	26 44
सागोद	24 55	76 21	24 36
सांचोर	24 40	71 50	42 40
साम्भर	26 54	75 10	29 20
सादूलपुर	28 38	75 24	28 24
सिन्दरी	25 33	71 55	42 20
सिरमुटरा	26 31	77 22	20 32
सिरोही	24 53	72 54	38 24
सिवाना	25 36	72 27	40 12
सीकर	27 36	75 09	29 24
सुजानगढ	27 42	74 30	32 00
सूरतगढ	29 19	73 57	34 12
सोजत	25 56	73 42	35 12
हनुमानगढ	29 35	74 21	32 36
हिन्दौन	26 43	77 01	21 56

लक्षद्वीप (Lakshadweep) (मिनिकाम एवं अमिनदिवि द्वीप समूह)

द्वीप / नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण)
	अ. क.	अ. क.	मि. से.
अगत्ति	10 50	72 12	41 12
ऐण्ड्रोथ	10 50	73 41	35 16
कवरत्ती	10 33	72 38	39 28
किल्तान	11 29	73 00	38 00
काल्पेनी	10 05	73 38	35 28
चेटलट	11 42	72 42	39 12
मिनिकॉय	8 17	73 02	37 52
सुहेली पार	10 03	72 17	40 52

सिक्किम (SIKKIM)

नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर (धन)
	अ. क.	अ. क.	मि.से.
Chhubakha	27 52	88 46	25 04
Gangtok	27 22	88 36	24 24
Gezing	27 18	88 14	22 56
Gogong	28 01	88 32	24 08
Goma	27 57	88 13	22 52
Gyalshing	27 18	88 14	22 56
Kondri	27 23	88 17	23 08
Lachen	27 46	88 31	24 04
Lachung	27 43	88 43	24 52
Lambi	27 32	88 10	22 40
Lungma	28 06	88 33	24 12
Maidong	27 25	88 20	23 20
Mangan	27 31	88 30	24 00
Namchi	27 12	88 18	23 12
Nathang	27 18	88 47	25 08
Naya Bazar	27 08	88 15	23 00
Rangli	27 13	88 40	24 40
Rangpo	27 12	88 28	23 52
Tashiding	27 20	88 17	23 08
Temi	27 14	88 23	23 32
Umramchogom	27 45	88 17	23 08
Yaksham	27 24	88 13	22 52
Yumthang	27 49	88 39	24 36
Yathang	27 52	88 32	24 08

हरियाणा

नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण)
	अ. क.	अ. क.	मि. से.
अगरोहा	29 21	75 38	27 28
अम्बाला	30 21	76 52	22 32
अलीपुर	29 08	75 53	26 28
उगाला	30 11	76 59	22 04
करनाल	29 42	77 02	21 52
कलानौर	28 51	76 24	24 24
कालका	30 50	76 56	22 16
कुरुक्षेत्र	29 59	76 50	22 40
केसरी	30 14	76 54	22 24
कैथल	29 48	76 26	24 16
कैरु	28 41	75 52	26 32
खतौली	30 36	76 58	22 08
गुडगांव	28 27	77 04	21 44
गोरखपुर	29 26	75 40	27 20
गोहाना	29 08	76 42	23 12
गौरोटा	27 56	77 25	20 20
घरौण्डा	29 33	76 56	22 08
घाटासेर	27 58	76 03	25 48
चण्डीमन्दिर (कैण्ट)	30 42	76 52	22 32
चरखी दादरी	28 37	76 18	24 48
चिलकाणा	29 12	76 59	22 04
जगाधरी	30 10	77 18	20 48
जारवल	29 48	75 50	26 40
जीन्द	29 19	76 19	24 44
झज्जर	28 37	76 39	23 24
झासा	30 07	76 44	23 04
टोहाना	29 42	75 54	26 24

हरियाणा

नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण)	नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण)	नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण)
	अं. क.	अं. क.	मि. से.		अं. क.	अं. क.	मि. से.		अं. क.	अं. क.	मि. से.
डोहा	27 40	76 56	22 16	पिहोवा	29 57	76 37	23 32	यमुना नगर	30 07	77 18	20 48
तोशाम	28 52	75 54	26 24	पुंडरी	29 45	76 33	23 48	रजाबाद	29 34	75 32	27 52
थानाबास	27 51	76 09	25 24	पूनाहाणा	27 52	77 12	21 12	राऔली	27 42	76 56	22 16
थानेसर	29 58	76 56	22 16	फतेहाबाद	29 31	75 28	28 08	रादौर	30 01	77 08	21 28
दादरी	28 34	77 33	19 48	फरीदाबाद	28 26	77 19	20 44	रायपुर राणी	30 36	77 02	21 52
दुजाना	28 41	76 37	23 32	फिरोज़पुर झिरखा	27 47	76 57	22 12	रिवाड़ी	28 12	76 40	23 20
धोलेरा	27 55	76 04	25 44	बड़ाउचाणा	29 27	76 11	25 16	रिवासा	28 48	75 57	26 12
नरवाणा	29 37	76 07	25 32	बरवाला	29 22	75 54	26 24	रोड़ी	29 44	75 12	29 12
नांगल चौधरी	27 53	76 07	25 32	बल्लभगढ	28 21	77 19	20 44	रोहतक	28 54	76 38	23 28
नांगल दुर्गु	27 53	76 03	25 48	बहादुरगढ	28 41	76 56	22 16	लाडवा	29 59	77 05	21 40
नाथुसिरी कलां	29 22	75 08	29 28	बालसमन्द	29 05	75 29	28 04	लोहारी	29 22	76 51	22 36
नारनौल	28 03	76 14	25 04	बास	29 06	76 12	25 12	लोहारु	28 27	75 49	26 44
नारायणगढ	30 29	77 08	21 28	बुटाणां	29 11	76 38	23 28	शादीपुर जुलाना	29 07	76 23	24 28
नाहर	28 23	76 23	24 28	भट्टू कलां	29 23	75 21	28 36	शाहाबाद	30 10	76 52	22 32
नीलोखेडी	29 51	76 55	22 20	भाणा	29 40	76 31	23 56	सफीदों	29 25	76 40	23 20
नूरपुर	30 13	76 47	22 52	भादसों	29 55	76 58	22 08	साढौरा	30 23	77 13	21 08
नूह	28 07	77 01	21 56	भिवानी	28 48	76 08	25 28	सिरसा	29 32	75 04	29 44
पंचकूला	30 42	76 52	22 32	मनसादेवी	30 43	76 51	22 36	सिवानी	28 55	75 37	27 32
पटौदी	28 18	76 48	22 48	मनीमाजरा	30 42	76 52	22 32	सोनीपत	28 59	77 01	21 56
पलवल	28 09	77 20	20 40	महेन्द्रगढ़	28 17	76 09	25 24	हसनपुर	27 58	77 30	20 00
पानीपत	29 23	77 00	22 00	मानपुर	27 59	77 17	20 52	हांसी	29 06	76 00	26 00
पाबरा	29 24	75 48	26 48	माहम	28 57	76 18	24 48	हिसार	29 10	75 46	26 56
पिंजौर	30 50	76 54	22 24	मुलाना	30 17	77 03	21 48	होडल	27 53	77 22	20 32
पिपली	29 58	76 53	22 28	मोहाना	29 03	76 52	22 32				

हिमाचल प्रदेश

नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण)	नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण)	नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण)
	अं. क.	अं. क.	मि. से.		अं. क.	अं. क.	मि. से.		अं. क.	अं. क.	मि. से.
अम्ब	31 42	76 07	25 32	काला अम्ब	30 30	77 13	21 08	खड़ा पत्थर	31 06	77 34	19 44
अम्बोटा	31 39	76 04	25 44	काल्पा	31 32	78 15	17 00	खणाग	31 31	77 23	20 28
अर्की	31 09	76 58	22 08	किबेर	32 27	77 59	18 04	खदराला	31 16	77 37	19 32
आनी	31 27	77 25	20 20	कियारीघाट	31 00	77 05	21 40	खुण्डनेवाल	30 56	77 42	19 12
आराकोट	31 04	77 50	18 40	किलार	33 08	76 24	24 24	खोकसर	32 26	77 12	21 12
इन्दौरा	32 07	75 40	27 20	कुफरी	31 06	77 12	21 12	गगरेट	31 40	76 04	25 44
ऊना	31 29	76 17	24 52	कुम्हारहट्टी	30 53	77 03	21 48	गुम्मा	31 06	77 28	20 08
औट	31 47	77 11	21 16	कुल्लू	31 58	77 06	21 36	गोहर	31 34	77 02	21 52
कटराई	32 07	77 07	21 32	केलांग	32 37	77 05	21 40	घुमारवीं	31 26	76 43	23 08
कण्डाघाट	30 58	77 07	21 32	कोटखाई	31 08	77 36	19 36	चच्योट	31 32	77 01	21 56
करछम	31 31	78 05	17 40	कोटगढ़	31 19	77 29	20 04	चम्बा	32 34	76 08	25 28
करसोग	31 23	77 13	21 08	कोटला	32 13	76 04	25 44	चम्बी	32 09	76 15	25 00
कसौली	30 55	76 57	22 12	कौरिक	32 06	78 37	15 32	चांगो	31 59	78 37	15 32
कांगड़ा	32 05	76 18	24 48	क्वारसी	32 18	76 31	23 56	चामुण्डा जी	32 07	76 23	24 28
काजा	32 16	78 04	17 44	खजियार	32 32	76 04	25 44	चायल	30 59	77 12	21 12

हिमाचल प्रदेश

नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण)	नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण)	नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण)
	अं. क.	अं. क.	मि. से.		अं. क.	अं. क.	मि. से.		अं. क.	अं. क.	मि. से.
चिन्तपूरणी	31 49	76 07	25 32	नहुआ	30 48	77 06	21 36	यान्थंग	31 53	78 38	15 28
चीड़गांव	31 15	77 53	18 28	नादौन	31 48	76 21	24 36	रवालसर	31 38	76 50	22 40
चुआरी खास	32 24	76 02	25 52	नारकण्डा	31 16	77 27	20 12	राजगढ	30 51	77 20	20 40
चौपाल	30 57	77 36	19 36	नालदेरा	31 11	77 11	21 16	राजबन	30 34	77 36	19 36
जतोग	31 06	77 07	21 32	नालागढ	31 03	76 42	23 12	रामपुर बुशहर	31 27	77 38	19 28
जवाली	32 07	76 02	25 52	नाहन	30 33	77 21	20 36	रायसन	32 05	77 07	21 32
जांगला	31 21	76 42	23 12	निरमण्ड	31 27	77 34	19 44	रूपी	31 38	77 50	18 40
जुब्बल	31 07	77 39	19 24	नूरपुर	32 18	75 54	26 24	रोहडू	31 13	77 45	19 00
जेगिन्दरनगर	31 59	76 46	22 56	नैनादेवी	31 19	76 30	24 00	लगेरा	32 50	75 53	26 28
ज्वालामुखी	31 53	76 19	24 44	नोगली	31 24	77 38	19 28	लम्बा गराओं	31 54	76 33	23 48
टीहरा सुजानपुर	31 51	76 32	23 52	पण्डोह	31 44	77 03	21 48	शर्चू	32 47	77 33	19 48
ठयोग	31 07	77 21	20 36	परवाणू	30 50	76 57	22 12	शाहपुर	32 12	76 10	25 20
डगशई	30 53	77 03	21 48	पाऑंटा साहिब	30 27	77 37	19 32	शिमला	31 06	77 10	21 20
डंखरगोम्पा	32 06	78 12	17 12	पालमपुर	32 07	76 33	23 48	शोघी	31 03	77 06	21 36
डमटाल	32 12	75 40	27 20	पूह	31 47	78 36	15 36	संगरा	30 43	77 22	20 32
डलहौजी	32 32	75 59	26 04	फागु	31 05	77 19	20 44	सतौन	30 34	77 38	19 28
डाढ	32 07	76 31	23 56	बजौरा	31 51	77 08	21 28	सन्तोखगढ़	31 21	76 21	24 36
डेहरा गोपीपुर	31 54	76 13	25 08	बंजार	31 40	77 21	20 36	सपाटू	30 59	76 59	22 04
ढलियारा	31 51	76 12	25 12	बद्दी	30 55	76 48	22 48	सरकाघाट	31 43	76 47	22 52
तारादेवी	31 03	77 08	21 28	बड़सर	31 32	76 28	24 08	सराहन (नाहन)	30 43	77 13	21 08
तीन्दी	32 45	76 27	24 12	बनीखेत	32 33	75 58	26 08	सराहन (रामपुर)	31 31	77 48	18 48
तीसा	32 49	76 08	25 28	बरोट	32 02	76 50	22 40	सल्लाघाट	31 10	76 59	22 04
त्रिलोकनाथ	32 44	76 39	23 24	बरोटी वाला	30 56	76 49	22 44	सांगला	31 29	78 12	17 12
त्रिलोकपुर	30 34	77 09	21 24	बागी	31 15	77 33	19 48	साहू	32 37	76 13	25 08
त्र्यूण्ड	32 17	76 22	24 32	बातल	32 22	77 36	19 36	सुन्दरनगर	31 32	76 53	22 28
थरोट	32 42	76 48	22 48	बिलासपुर	31 20	76 47	22 52	सिहुन्ता	32 18	76 08	25 28
थानेधार	31 20	77 34	19 44	बैजनाथ	32 04	76 37	23 32	सीमा	31 14	77 50	18 40
ददाहू	30 36	77 26	20 16	भरमौर	32 27	76 32	23 52	सुन्नी	31 14	77 06	21 36
देवठी	30 57	77 03	21 48	भरवाई	31 48	76 07	25 32	सैंज	31 49	77 19	20 44
देओट सिद्ध	31 28	76 34	23 44	भून्तर	31 53	77 07	21 32	सोलन	30 55	77 09	21 24
धर्मपुर	30 53	77 02	21 52	मगवाल	32 00	76 06	25 36	हडसर	32 22	76 33	23 48
धर्मशाला	32 13	76 19	24 44	मणिकर्ण	32 02	77 21	20 36	हमीरपुर	31 41	76 31	23 56
धारा	31 50	77 15	21 00	मण्डी	31 43	76 58	22 08	हरसीपत्तन	31 53	76 39	23 24
धौलाकुआं	30 30	77 29	20 04	मनाली	32 16	77 10	21 20	हरिपुर	31 59	76 05	25 40
नगर	32 07	77 08	21 28	मलाना	32 04	77 15	21 00	हरिपुरधार	30 52	77 28	20 08
नगरोटा बगवां	32 06	76 22	24 32	मशोबरा	31 08	77 13	21 08	हॉसी	32 27	77 50	18 40
नचर	31 33	77 56	18 16	मीनस	30 46	77 41	19 16	हाटकोटी	31 08	77 45	19 00
नमगिया	31 49	78 39	15 24	मूरंग	31 37	78 28	16 08				

कुछ विदेशी नगरों के अक्षांश आदि

नगर	देश	स्टैण्डर्ड मेरिडियन अं. क.	अक्षांश अं. क.	रेखांश अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर (स्था. स्टै. टा. से स्था. म. का. का अन्तर) मि. से.	स्थानीय (देश/कालक्षेत्रीय) स्टै. टा. से भा. स्टै. टा. का अन्तर घं. मि.
Abu Dhabi	U.A.E.	60 00 पू.	24 28 उ.	54 22 पू.	−22 32	+01 30
*Abadan	Iran	52 30 पू.	30 20 उ.	48 16 पू.	−16 56	+02 00
Abbottabad	Pakistan	75 00 पू.	34 09 उ.	73 13 पू.	−07 08	+00 30
Accra	Ghana	00 00	05 33 उ.	00 13 प.	−00 52	+05 30
Addis Ababa	Ethiopia	45 00 पू.	09 02 उ.	38 44 पू.	−25 04	+02 30
Aden	Yemen	45 00 पू.	12 45 उ.	45 04 पू.	+00 16	+02 30
Akyab	Myanmar	97 30 पू.	20 09 उ.	92 55 पू.	−18 20	−01 00
*Alexandria	Egypyt	30 00 पू.	31 12 उ.	29 53 पू.	−00 28	+03 30
*Algiers	Algeria	15 00 पू.	36 47 उ.	03 03 पू.	−47 48	+04 30
*Amsterdam	Netherland	15 00 पू.	52 22 उ.	04 53 पू.	−40 28	+04 30
*Angmagssalik	Greenland	45 00 प.	65 36 उ.	37 41 प.	+29 16	+08 30
*Ankara	Turkey	30 00 पू.	39 57 उ.	32 54 पू.	+11 36	+03 30
Anuradhapur	Sri Lanka	82 30 पू.	08 21 उ.	80 23 पू.	−08 28	00 00
*Athens	Greece	30 00 पू.	37 54 उ.	23 43 पू.	−25 08	+03 30
*Auckland	NewZealand	180 00 पू.	36 52 द.	174 42 पू.	−21 12	−06 30
*Austin, Texas	U.S.A.	90 00 प.	30 16 उ.	97 44 प.	−30 56	+11 30
*Bacolod	Phill.	120 00 पू.	10 40 उ.	122 57 पू.	+11 48	−02 30
*Baghdad	Iraq	45 00 पू.	33 20 उ.	44 27 पू.	−02 12	+02 30
Bahawalpur	Pakistan	75 00 पू.	29 59 उ.	73 16 पू.	−06 56	+00 30
Bangkok	Thailand	105 00 पू.	13 44 उ.	100 30 पू.	−18 00	−01 30
Batticoloa	Sri Lanka	82 30 पू.	07 43 उ.	81 45 पू.	−03 00	00 00
*Beijing	China	120 00 पू.	39 55 उ.	116 25 पू.	−14 20	−02 30
*Beirut	Lebanon	30 00 पू.	33 50 उ.	35 25 पू.	+21 40	+03 30
*Belgrade	Yugoslavia	15 00 पू.	44 50 उ.	20 30 पू.	+22 00	+04 30
*Berlin	Germany	15 00 पू.	52 32 उ.	13 25 पू.	−06 20	+04 30
*Berne	Switzerland	15 00 पू.	46 57 उ.	07 26 पू.	−30 16	+04 30
Biratnagar	Nepal	86 15 पू.	26 29 उ.	87 17 पू.	+04 08	−00 15
*Birmingham	England	00 00	52 30 उ.	01 50 प.	−07 20	+05 30
Bogra	Bangla	90 00 पू.	24 51 उ.	79 22 पू.	−02 32	−00 30
*Bonn	Germany	15 00 पू.	50 44 उ.	07 04 पू.	−31 44	+04 30
*Boston	U.S.A	75 00 प.	42 21 उ.	71 04 प.	+15 44	+10 30
*Brasilia	Brazil	45 00 प.	16 13 द.	44 29 प.	+02 04	+08 30
*Bratistava	Slovakia	15 00 पू.	48 09 उ.	17 07 पू.	+08 28	+04 30
*Brisbane	Australia	150 00 पू.	27 28 द.	153 02 पू.	+12 08	−04 30
*Brussels	Belgium	15 00 पू.	50 52 उ.	04 22 पू.	−42 32	+04 30
*Bucharest	Romania	30 00 पू.	44 25 उ.	26 07 पू.	−15 32	+03 30
*Budapest	Hungary	15 00 पू.	47 29 उ.	19 03 पू.	+16 12	+04 30
*Buffalo (N.Y.)	U.S.A	75 00 प.	42 55 उ.	78 50 प.	−15 20	+10 30
*Buenos Aires	Argentina	45 00 प.	34 35 द.	58 27 प.	−53 48	+08 30
*Cairo	Egypt	30 00 पू.	30 03 उ.	31 14 पू.	+04 56	+03 30

* इन नगरों में ग्रीष्मकालीन समय(*Summer Time*) प्रचलित है। ग्रीष्मकालीन समय, स्थानीय स्टै. टा. से एक घण्टा आगे रहता है।

कुछ विदेशी नगरों के अक्षांश आदि

नगर	देश	स्टैण्डर्ड मेरिडियन अं. क.	अक्षांश अं. क.	रेखांश अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर (स्था स्टैं टा से स्था म का का अन्तर) मि. से.	स्थानीय (देश/कालक्षेत्रीय) स्टैं टा से भा स्टैं टा का अन्तर घं. मि.
*California City	U.S.A	120 00 प.	35 07 उ.	117 59 प.	+08 04	+13 30
*Canberra	Australia	150 00 पू.	35 19 द.	149 08 पू.	−03 28	−04 30
*Cape Town	South Africa	30 00 पू.	33 56 द.	18 22 पू.	−46 32	+03 30
*Chicago	U.S.A.	90 00 प.	41 53 उ.	87 38 प.	+09 28	+11 30
Chittagong	Bangla.	90 00 पू.	22 20 उ.	91 50 पू.	+07 20	−00 30
*Cleveland (Ohio)	U.S.A.	75 00 प.	41 30 उ.	81 41 प.	−26 44	+10 30
Colombo	Sri Lanka	82 30 पू.	06 56 उ.	79 51 पू.	−10 56	00 00
Comilla	Bangla.	90 00 पू.	23 27 उ.	91 12 पू.	+04 48	−00 30
*Copenhagen	Denmark	15 00 पू.	55 40 उ.	12 35 पू.	−09 40	+04 30
*Dales ,Texas	U.S.A.	90 00 प.	29 56 उ.	97 34 प.	−20 16	+11 30
*Dallas, Texas	U.S.A.	90 00 प.	32 47 उ.	96 48 प.	−27 12	+11 30
*Damascus	Syria	30 00 पू.	33 30 उ.	36 18 पू.	+25 12	+03 30
Dar-es-salam	Tanzania	45 00 पू.	06 50 द.	39 17 पू.	−22 52	+02 30
*Detroit Mich.	U.S.A.	75 00 प.	42 23 उ.	83 05 प.	−32 20	+10 30
Dhaka	Bangla.	90 00 पू.	23 43 उ.	90 25 पू.	+01 40	−00 30
Dinajpur	Bangla.	90 00 पू.	25 38 उ.	88 38 पू.	−05 28	−00 30
*Dublin	Ireland	00 00	53 20 उ.	06 15 पू.	−25 00	+05 30
Dubai	U.A.E.	60 00 पू.	25 18 उ.	55 18 पू.	−18 48	+01 30
*Edinburgh	Scotland	00 00	55 56 उ.	03 11 प.	−12 44	+05 30
*Edmonton	Canada	105 00 प.	53 33 उ.	113 28 प.	−33 52	+12 30
*Florida City	U.S.A.	75 00 प.	25 27 उ.	80 29 प.	−21 56	+10 30
*Frankfurt	Germany	15 00 पू.	50 06 उ.	08 40 पू.	−25 20	+04 30
Fukuoka	Japan	135 00 पू.	35 34 उ.	137 27 पू.	+09 48	−03 30
Galle	Sri Lanka	82 30 पू.	06 02 उ.	80 13 पू.	−09 08	00 00
*Geneva	Switzerland	15 00 पू.	46 12 उ.	06 09 पू.	−35 24	+04 30
*Glasgow	Scotland	00 00	55 52 उ.	04 15 प.	−17 00	+05 30
*Greenwich	England	00 00	51 29 उ.	00 00	00 00	+05 30
*Guiyang	China	120 00 पू.	26 35 उ.	106 43 पू.	−53 08	−02 30
*Hamilton	Canada	75 00 प.	43 15 उ.	79 50 प.	−19 20	+10 30
Hanoi	North Vietnam	105 00 पू.	21 02 उ.	105 52 पू.	+03 28	−01 30
*Havana	Cuba	75 00 प.	23 08 उ.	82 22 प.	−29 28	+10 30
*Heidelberg	Germany	15 00 पू.	49 24 उ.	08 43 पू.	−25 08	+04 30
*Helsinki	Finland	30 00 पू.	60 09 उ.	24 57 पू.	−20 12	+03 30
Hiroshima	Japan	135 00 पू.	34 24 उ.	132 27 पू.	−10 12	−03 30
*Hongkong	China	120 00 पू.	22 18 उ.	114 10 पू.	−23 20	−02 30
Honolulu	Hawai Island	150 00 प.	21 19 उ.	157 52 प.	−31 28	+15 30
*Houston,Texas	U.S.A.	90 00 प.	29 45 उ.	95 21 प.	−21 24	+11 30
Hydrabad	Pakistan	75 00 पू.	25 22 उ.	68 22 पू.	−26 32	+00 30
*Isfahan	Iran	52 30 पू.	32 40 उ.	51 38 पू.	−03 52	+02 00
Islamabad	Pakistan	75 00 पू.	33 42 उ.	73 10 पू.	−07 20	+00 30

* इन नगरों में ग्रीष्मकालीन समय (*Summer Time*) प्रचलित है। ग्रीष्मकालीन समय, स्थानीय स्टैं टा से एक घं आगे रहता है।

कुछ विदेशी नगरों के अक्षांश आदि

नगर	देश	स्टैण्डर्ड मेरिडियन अं. क.	अक्षांश अं. क.	रेखांश अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर (स्था. स्टैं. टा. से स्था. म. का. का अन्तर) मि. से.	स्थानीय (देश / कालक्षेत्रीय) स्टैं. टा. से भा. स्टैं. टा. का अन्तर घं. मि.
*Istanbul	Turkey	30 00 पू.	41 00 उ.	29 00 पू.	−04 00	+03 30
Jaffna	Sri Lanka	82 30 पू.	09 40 उ.	80 00 पू.	−10 00	00 00
Jakarta	Indonesia	105 00 पू.	06 10 द.	106 49 पू.	+07 16	−01 30
*Jamaica	West Indies	75 00 प.	18 00 उ.	76 48 प.	−07 12	+10 30
*Jerusalem	Israel	30 00 पू.	31 46 उ.	35 14 पू.	+20 56	+03 30
Jessore	Bangla	90 00 पू.	23 10 उ.	89 13 पू.	−03 08	−00 30
*Johanesberg	SouthAfrica	30 00 पू.	26 15 द.	28 00 पू.	−08 00	+03 30
Kabul	Afghanistan	67 30 पू.	34 33 उ.	69 12 पू.	+06 48	+01 00
Kandahar	Afghanistan	67 30 पू.	31 32 उ.	65 30 पू.	−08 00	+01 00
Kandy	SriLanka	82 30 पू.	07 18 उ.	80 38 पू.	−07 28	00 00
Karachi	Pakistan	75 00 पू.	24 52 उ.	67 03 पू.	−31 48	+00 30
Kathmandu	Nepal	86 15 पू.	27 43 उ.	85 19 पू.	−03 44	−00 15
*Khartoum	Sudan	30 00 पू.	15 35 उ.	32 35 पू.	+10 20	+03 30
Khulna	Bangla.	90 00 पू.	22 48 उ.	89 33 पू.	−01 48	−00 30
Kuala Lumpur	Malaysia	120 00 पू.	03 09 उ.	101 43 पू.	−73 08	−02 30
Kushtia	Bangla.	90 00 पू.	23 55 उ.	89 07 पू.	−03 32	−00 30
Kuwait	Kuwait	45 00 पू.	29 20 उ.	47 59 पू.	+11 56	+02 30
Kwangchow	China	120 00 पू.	23 06 उ.	113 16 पू.	−26 56	−02 30
Lagos	Nigeria	15 00 पू.	06 25 उ.	03 27 पू.	−46 12	+04 30
*Leipzig	Germany	15 00 पू.	51 20 उ.	12 23 पू.	−10 28	+04 30
*Leeds	England	00 00	53 50 उ.	01 35 प.	−06 20	+05 30
*Leningrad	Russia	45 00 पू.	59 57 उ.	30 18 पू.	−58 48	+02 30
Lhasa	Tibet	120 00 पू.	29 40 उ.	91 07 पू.	−115 32	−02 30
*Lima	Peru	75 00 प.	12 02 द.	77 02 प.	−08 08	+10 30
*Lisbon	Portugal	00 00	38 43 उ.	09 11 प.	−36 44	+05 30
*Liverpool	England	00 00	53 25 उ.	02 55 प.	−11 40	+05 30
*London	England	00 00	51 32 उ.	00 05 प.	−00 20	+05 30
*Long Beach	Ca. U.S.A.	120 00 प.	33 46 उ.	118 12 प.	+07 12	+13 30
*Los Angeles	U.S.A.	120 00 प.	34 03 उ.	118 14 प.	+07 04	+13 30
*Madrid	Spain	15 00 पू.	40 25 उ.	03 41 प.	−74 44	+04 30
*Manchester	England	00 00	53 30 उ.	02 15 प.	−09 00	+05 30
Mandlay	Myanmar	97 30 पू.	22 00 उ.	96 05 पू.	−05 40	−01 00
*Manila	Philippines	120 00 पू.	14 35 उ.	121 00 पू.	+04 00	−02 30
Mecca	SaudiArabia	45 00 पू.	21 25 उ.	39 54 पू.	−20 24	+02 30
*Melbourne	Australia	150 00 पू.	37 50 द.	144 59 पू.	−20 04	−04 30
*Mexico City	Mexico	90 00 प.	19 26 उ.	99 10 प.	−36 40	+11 30
*Milan	Italy	15 00 पू.	45 28 उ.	09 11 पू.	−23 16	+04 30
Mombasa	Kenya	45 00 पू.	04 00 द.	39 40 पू.	−21 20	+02 30
*Montreal	Canada	75 00 प.	45 30 उ.	73 34 प.	+05 44	+10 30
*Moscow	Russia	45 00 पू.	55 45 उ.	37 34 पू.	−29 44	+02 30

* इन नगरों में ग्रीष्मकालीन समय(*Summer Time*) प्रचलित है। ग्रीष्मकालीन समय, स्थानीय स्टैं. टा. से एक घण्टा आगे रहता है।

कुछ विदेशी नगरों के अक्षांश आदि

नगर	देश	स्टैण्डर्ड मेरिडियन अं. क.	अक्षांश अं. क.	रेखांश अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर (स्था. स्टैं. टा. से स्था. म. का. का अन्तर) मि. से.	स्थानीय (देश/कालक्षेत्रीय) स्टैं. टा. से भा. स्टैं. टा. का अन्तर घं. मि.
Moulmein	Myanmar	97 30 पू.	16 30 उ.	97 38 पू.	+00 32	−01 00
Multan	Pakistan	75 00 पू.	30 11 उ.	71 29 पू.	−14 04	+00 30
*Munich	Germany	15 00 पू.	48 08 उ.	11 35 पू.	−13 40	+04 30
Mymensingh	Bangla.	90 00 पू.	24 45 उ.	90 24 पू.	+01 36	−00 30
Nairobi	Kenya	45 00 पू.	01 18 द.	36 52 पू.	−32 32	+02 30
*New Castle	England	00 00	52 27 उ.	03 06 प.	−12 24	+05 30
*New Orleans	U.S.A.	90 00 प.	29 57 उ.	90 04 प.	−00 16	+11 30
*New York	U.S.A.	75 00 प.	40 43 उ.	74 00 प.	+04 00	+10 30
Noakhali	Bangla.	90 00 पू.	22 49 उ.	91 06 पू.	+04 24	−00 30
*Nuuk	Greenland	60 00 प.	64 11 उ.	51 44 प.	+33 04	+09 30
Osaka	Japan	135 00 पू.	34 40 उ.	135 30 पू.	+02 00	−03 30
*Oslo	Norway	15 00 पू.	59 54 उ.	10 45 पू.	−17 00	+04 30
*Ottawa	Canada	75 00 प.	45 24 उ.	75 43 प.	−02 52	+10 30
Pabna	Bangla.	90 00 पू.	24 00 उ.	89 15 पू.	−03 00	−00 30
*Paris	France	15 00 पू.	48 50 उ.	02 20 पू.	−50 40	+04 30
Pegu	Myanmar	97 30 पू.	17 20 उ.	96 29 पू.	−04 04	−01 00
*Peking	China	120 00 पू.	39 55 उ.	116 28 पू.	−14 08	−02 30
Pinang	Malaysia	120 00 पू.	05 25 उ.	100 20 पू.	−78 40	−02 30
*Perth	Australia	120 00 पू.	32 00 द.	115 50 पू.	−16 40	−02 30
Peshawar	Pakistan	75 00 पू.	34 01 उ.	71 33 पू.	−13 48	+00 30
*Philadelphia	Pa., U.S.A.	75 00 प.	39 58 उ.	75 10 प.	−00 40	+10 30
Phnom penh	Cambodia	105 00 पू.	11 35 उ.	104 57 पू.	−00 12	−01 30
*Pittsburgh	Pa., U.S.A.	75 00 प.	40 25 उ.	79 55 प.	−19 40	+10 30
*Port Elizabeth	South Africa	30 00 पू.	33 58 द.	25 40 पू.	−17 20	+03 30
Port Louis	Mauritius	60 00 पू.	20 10 द.	57 30 पू.	−10 00	+01 30
*Prague	Czecho.	15 00 पू.	50 05 उ.	14 24 पू.	−02 24	+04 30
Prome	Myanmar	97 30 पू.	18 47 उ.	95 15 पू.	−09 00	−01 00
Punakha	Bhutan	90 00 पू.	27 42 उ.	89 52 पू.	−00 32	−00 30
Quetta	Pakistan	75 00 पू.	30 12 उ.	67 00 पू.	−32 00	+00 30
Rangoon	Myanmar	97 30 पू.	16 47 उ.	96 10 पू.	−05 20	−01 00
Rangpur	Bangla.	90 00 पू.	25 45 उ.	89 15 पू.	−03 00	−00 30
Rajshahi	Bangla.	90 00 पू.	24 22 उ.	88 36 पू.	−05 36	−00 30
Rawal pindi	Pakistan	75 00 पू.	33 36 उ.	73 04 पू.	−07 44	+00 30
Riyadh	Saudi Arabia	45 00 पू.	24 39 उ.	46 41 पू.	+06 44	+02 30
*Rome	Italy	15 00 पू.	41 55 उ.	12 27 पू.	−10 12	+04 30
Saigon	SouthVietnam	105 00 पू.	10 49 उ.	106 41 पू.	+06 44	−01 30
*San Diego	Ca; U.S.A.	120 00 प.	32 43 उ.	117 10 प.	+10 40	+13 30
*San Francisco	U.S.A.	120 00 प.	37 48 उ.	122 25 प.	−09 40	+13 30
*Seattle	U.S.A	120 00 प.	47 41 उ.	122 15 प.	−09 00	+13 30

* इन नगरों में ग्रीष्मकालीन समय (*Summer Time*) प्रचलित है। ग्रीष्मकालीन समय, स्थानीय स्टैं. टा. से एक घण्टा आगे रहता है।

कुछ विदेशी नगरों के अक्षांश आदि

नगर	देश	स्टैण्डर्ड मेरिडियन अं. क.	अक्षांश अं. क.	रेखांश अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर (स्था. स्टैं. टा. से स्था. म. का. का अन्तर) मि. से.	स्थानीय (देश/कालक्षेत्रीय) स्टैं. टा. से भा. स्टैं. टा. का अन्तर घं. मि.
*Seoul	South Korea	135 00 पू.	37 31 उ.	126 58 पू.	−32 08	−03 30
*Shanghai	China	120 00 पू.	31 14 उ.	121 28 पू.	+05 52	−02 30
Sharjah	U.A.E.	60 00 पू.	25 20 उ.	55 24 पू.	−18 24	+01 30
Singapore	Singapore	120 00 पू.	01 17 उ.	103 54 पू.	−64 24	−02 30
*Sofia	Bulgaria	30 00 पू.	42 41 उ.	23 21 पू.	−26 36	+03 30
*Stockholm	Sweden	15 00 पू.	59 20 उ.	18 00 पू.	+12 00	+04 30
Sukkur	Pakistan	75 00 पू.	27 42 उ.	68 52 पू.	−24 32	+00 30
*Sydney	Australia	150 00 पू.	33 52 द.	151 12 पू.	+04 48	−04 30
Sylhet	Bangla.	90 00 पू.	24 54 उ.	91 52 पू.	+07 28	−00 30
*Taipei	Taiwan	120 00 पू.	25 03 उ.	121 30 पू.	+06 00	−02 30
*Taskent	Uzbekistan	75 00 पू.	41 20 उ.	69 18 पू.	−82 48	+00 30
*Tehran	Iran	52 30 पू.	35 41 उ.	51 26 पू.	−04 16	+02 00
Thimpu	Bhutan	90 00 पू.	27 28 उ.	89 39 पू.	−01 24	−00 30
Tokyo	Japan	135 00 पू.	35 40 उ.	139 46 पू.	+19 04	−03 30
*Toronto	Canada	75 00 प.	43 39 उ.	79 23 प.	−17 32	+10 30
Trincomalee	Sri Lanka	82 30 पू.	08 31 उ.	81 14 पू.	−05 04	00 00
Tripoli	Libya	15 00 पू.	32 54 उ.	13 15 पू.	−07 00	+04 30
Vancouver	Canada	120 00 प.	49 16 उ.	123 07 प.	−12 28	+13 30
*Vienna	Austria	15 00 पू.	48 12 उ.	16 22 पू.	+05 28	+04 30
*Volgograd	U.S.S.R.	60 00 पू.	48 44 उ.	44 25 पू.	−62 20	+01 30
*Warsaw	Poland	15 00 पू.	52 12 उ.	21 00 पू.	+24 00	+04 30
*Washington (D.C.)	U.S.A.	75 00 प.	38 55 उ.	77 04 प.	−08 16	+10 30
*Wellington	New Zealand	180 00 पू.	41 16 द.	174 47 पू.	−20 52	−06 30
Yokohama	Japan	135 00 पू.	35 27 उ.	139 39 पू.	+18 36	−03 30
Zanzibar	Tanzania	45 00 पू.	06 10 द.	39 11 पू.	−23 16	+02 30
*Zurich	Switzerland	15 00 पू.	47 23 उ.	08 32 पू.	−25 52	+04 30

* *इन नगरों में ग्रीष्मकालीन समय(**Summer Time**) प्रचलित है। ग्रीष्मकालीन समय, स्थानीय स्टैं. टा. से एक घण्टा आगे रहता है।*

स्टैण्डर्ड मेरिडियन सारणी

देश / कालक्षेत्र	स्टैण्डर्ड मेरिडियन (रेखांश)	स्थानीय (देश / कालक्षेत्रीय) स्टैं. टा. से भा. स्टैं. टा. का अन्तर ⊗
	अं क	घं मि.
Afganistan	67 30 पू.	+ 01 00
*Albania	15 00 पू.	+ 04 30
*Algeria	15 00 पू.	+ 04 30
Angola	15 00 पू.	+ 04 30
*Argentina	45 00 प.	+ 08 30
*Austria	15 00 पू.	+ 04 30
*AUSTRALIA यह देश इन 3 कालक्षेत्रों (Time Zones) में बटा है :-		
(i) E.T.(Eeastern time)- (इस काल– –क्षेत्र में Victoria, Tasmania आदि क्षेत्र आते हैं)	150 00 पू.	- 04 30
(ii) C.T.(central time)- (इस में South Australia, Broken Hill Area आदि आते है।	142 30 पू.	- 04 00
(iii) W.T.(Western Time)- (इस कालक्षेत्र में Western Australia आता है)	120 00 पू.	- 02 30
Bahariain	45 00 पू.	+ 02 30
Bangladesh	90 00 पू.	- 00 30
*Belgium	15 00 पू.	+ 04 30
Bhutan	90 00 पू.	- 00 30
Bolivia	60 00 प.	+ 09 30
Bulgaria	30 00 पू.	+ 03 30
Burundi	30 00 पू.	+ 03 30
Cameroon	15 00 पू.	+ 04 30
*CANADA यह देश मुख्यतः इन 4 कालक्षेत्रों (Time Zones) में बंटा है :-		
(i) E.T.(Eastern Time)- (इस काल-क्षेत्र में N.W. Territories और Ontario का पू. भाग पडता है।)	75 00 प.	+ 10 30
(ii) C.T.(Central time)- (इसमे N.W. Territories का मध्यभाग और Ontario का प. भाग पडता है।)	90 00 प.	+ 11 30
(iii) M.T. (Mountain time)- (इसमे N.W territories का कुछ प. भाग तथा Alberta आदि प्रान्त पडते हैं।)	105 00 प.	+ 12 30
(iv) P.T. (Pacific Time)- इस कालक्षेत्र मे N.W. territories का अन्तिम प. भाग तथा **B.Columbia** प्रान्त पडता है)	120 00 प.	+ 13 30
*Chile	60 00 प.	+ 09 30
*China	120 00 पू.	- 02 30
Columbia	75 00 प.	+ 10 30
Congo	15 00 पू.	+ 04 30
*Cuba	75 00 प.	+ 10 30
Cylon	82 30 पू.	00 00
Cyprus	30 00 पू.	+ 03 30

देश / कालक्षेत्र	स्टैण्डर्ड मेरिडियन	स्थानीय (देश / कालक्षेत्रीय) स्टैं. टा. से भा. स्टैं. टा. का अन्तर ⊗
	अं क.	घं मि.
*Denmark	15 00 पू.	+ 04 30
Ecuador	75 00 प.	+ 10 30
*Egypt	30 00 पू.	+ 03 30
*England(U.K.)	00 00	+ 05 30
Ethiopia	45 00 पू.	+ 02 30
*Falkland Islands	60 00 प.	+ 09 30
Fiji	180 00 पू.	- 06 30
*Finland	30 00 पू.	+ 03 30
*France	15 00 पू.	+ 04 30
Gambia	00 00	+ 05 30
*Germany	15 00 पू.	+ 04 30
Ghana	00 00	+ 05 30
*Greece	30 00 पू.	+ 03 30
*Guatemala	90 00 प.	+ 11 30
Honduras	90 00 प.	+ 11 30
*Hong Kong	120 00 पू.	- 02 30
*Iceland	00 00	+ 05 30
INDONESIA यह देश इन छः कालक्षेत्रों में विभाजित है :-		
(i) IrianJaya, Serang आदि द्वीप.	135 00 पू.	- 03 30
(ii) Moluccas,Serem आदि द्वीप.	127 30 पू.	- 03 00
(iii) Celebes,Timor आदि द्वीप.	120 00 पू.	- 02 30
(iv) Bali, Borneo, Java आदि द्वीप.	112 30 पू.	- 02 00
(v) Bangka Bankoelen आदि द्वीप.	105 00 पू.	- 01 30
(vi) Sumatra,	97 30 पू.	- 01 00
India	82 30 पू.	00 00
*Iran	52 30 पू.	+ 02 00
*Iraq	45 00 पू.	+ 02 30
*Irish Republic	00 00	+ 05 30
*Israel	30 00 पू.	+ 03 30
*Italy	15 00 पू.	+ 04 30
*Jamaica	75 00 प.	+ 10 30
Japan	135 00 पू.	- 03 30
*Jordan	30 00 पू.	+ 03 30
Kumpuchia	105 00 पू.	- 01 30
Kenya	45 00 पू.	+ 02 30
*Korea	135 00 पू.	- 03 30
Kuwait	45 00 पू.	+ 02 30
Laos	105 00 पू.	- 01 30
*Lebanan	30 00 पू.	+ 03 30
Libya	15 00 पू.	+ 04 30
*Macao	120 00 पू.	- 02 30
*Madagascar	45 00 पू.	+ 02 30
Malaysia	120 00 पू.	- 02 30
Maldivas Islands	75 00 पू.	+ 00 30
Maurtius	60 00 पू.	+ 01 30

स्टैण्डर्ड मेरिडियन सारणी

देश / कालक्षेत्र	स्टैण्डर्ड मेरिडियन	स्थानीय (देश / कालक्षेत्रीय) स्टैं. टा. से भा. स्टैं. टा. का अन्तर ⊗
	अं क.	घं. मि.
***MEXICO** यह देश इन 3 कालक्षेत्रों में बंटा है :–		
(i) E.T.(Eastern Time)- (इस कालक्षेत्र में Compeche, Chiapas आदि प्रान्त आते हैं)	90 00 प.	+11 30
(ii) C.T.(Central Time):- (इस कालक्षेत्र में BajaCalifornia, Sur Nayarit आदि पड़ते हैं।)	105 00 प.	+12 30
(iii) W.T.(Western Time):- (इस कालक्षेत्र में Baja Caleforria North आते हैं)	120 00 प.	+ 13 30
*Morocco	00 00	+05 30
Mozambique	30 00 पू.	+03 30
Myanmar (Burma)	97 30 पू.	-01 00
Nepal	86 15 पू.	-00 15
*Netherlands	15 00 पू.	+04 30
*New Ireland(U.K.)	00 00	+ 05 30
*New Zealand	180 00 पू.	-06 30
*Nicaragua	90 00 प.	+11 30
Nigeria	15 00 पू.	+ 04 30
*Norway	15 00 पू.	+ 04 30
Oman	60 00 पू.	+01 30
Pakistan	75 00 पू.	+ 00 30
Panama	75 00 प.	+ 10 30
*Paraguay	60 00 प.	+09 30
*Peru	75 00 प.	+10 30
*Philippines	120 00 पू.	-02 30
*Portugal	00 00	+05 30
Qatar	45 00 पू.	+02 30
Saudi Arabia	45 00 पू.	+ 02 30
*Scotland(U.K.)	00 00	+ 05 30
Singapore	120 00 पू.	- 02 30
*South Africa	30 00 पू.	+ 03 30
*Spain	15 00 पू.	+ 04 30
Sri Lanka	82 30 पू.	00 00
*Sudan	30 00 पू.	+ 03 30
*Sweden	15 00 पू.	+ 04 30
*Switzerland	15 00 पू.	+ 04 30
*Syria	30 00 पू.	+ 03 30
*Taiwan	120 00 पू.	- 02 30
Tanzania	45 00 पू.	+ 02 30
Thailand	105 00 पू.	- 01 30
Trinidad	60 00 प.	+ 09 30
*Tunisia	15 00 पू.	+ 04 30
*Turkey	30 00 पू.	+ 03 30
Uganda	45 00 पू.	+ 02 30
*U.K.	00 00	+ 05 30
*Uruguay	45 00 प.	+ 08 30
U.A.E.	60 00 पू.	+ 01 30
***U.S.A.** यह देश इन 4 कालक्षेत्रों (Time Zones) में बंटा है :–		
(i) E.T. (Eastern Time) – (इस कालक्षेत्र में Delaware, Florida, Ohio आदि States पड़ती हैं।)	75 00 प.	+ 10 30
(ii) C.T. (Central Time)- (इस कालक्षेत्र में Alabama, Illinois आदि States पड़ती हैं।)	90 00 प.	+ 11 30
(iii) M.T. (**Mountain Time**)- (इस कालक्षेत्र में Arizona, Colorado आदि States पड़ती हैं।)	105 00 प.	+ 12 30
(iv) P.T. (Pacific Time)– (इस कालक्षेत्र में California, Nevada आदि States पड़ती हैं।)	120 00 प.	+ 13 30
Vatican State	15 00 पू.	+ 04 30
Venezuela	60 00 प.	+ 09 30
Vietnam	105 00 पू.	- 01 30
*Wales(U.K.)	00 00	+ 05 30
*Yugoslavia	15 00 पू.	+ 04 30
Zamibia	30 00 पू.	+ 03 30
Zaire	30 00 पू.	+ 03 30
Zimbabwe	30 00 पू.	+ 03 30

* इन देशों में ग्रीष्मकालीन (**Summer Time**) समय प्रचलित है। **Summer Time** के बारे में विस्तृत जानकारी के लिए "गणकमार्त्तण्ड" देखें।

⊗ गणकमार्त्तण्ड में इसे "विदेश में उत्पन्न जातक का जन्मपत्र कैसे बनाएं" ? शीर्षक के अन्तर्गत विवरण में" अभीष्ट स्टैं. टा. अन्तर" भी लिखा गया है। धन (+) चिह्न वाले 'अभीष्ट स्टैं. टा. अन्तर ' का अर्थ है, कि भा. स्टैं. टा. अभीष्ट स्थानीय (देश/कालक्षेत्रीय) स्टैं. टा. से आगे है। इसी प्रकार ऋण (–) चिह्न वाला "अभीष्ट स्टैं. टा. अन्तर" बतलाता है, कि भा. स्टैं. टा. अभीष्ट स्थानीय (देश/कालक्षेत्रीय) स्टैं. टा. से पीछे है।

ईस्वी सन् 1900 से 2050 तक का सूक्ष्म सूर्यस्पष्ट

(छः सात सेकण्डों में ही इष्टकालिक सूर्य स्पष्ट कीजिए)

प्राचीन शैली से लग्न और दशम स्पष्ट करने के लिए इष्टकालिक सायन स्पष्ट सूर्य की आवश्यकता होती है। यहां पृष्ठ   पर दिए गए तीन कोष्ठकों **सूर्य साधन कोष्ठक (1) , (2) और (3)** से सन् 1900 से सन् 2050 ई. तक के 151 वर्षों में किसी भी समय का सायन सूर्य छः-सात सेकेण्डों में ही स्पष्ट किया जा सकता है। इन कोष्ठकों द्वारा जाने गए स्पष्ट सायन सूर्य में 2–3 कला से ज्यादा स्थूलता नहीं होगी। इसलिए इससे स्पष्ट किए गए लग्न एवं दशम में भी 2–3 कला से अधिक अन्तर नहीं हो सकता। हमारे इष्टकाल में चार सेकण्ड की अशुद्धि होने पर भी लग्न–दशम में एक कला की अशुद्धि आ जाती है। सेकण्डों की तो बात ही क्या, हमारे इष्टकाल में मिनट तक की अशुद्धि अक्सर रहती ही है। अतः इन कोष्ठकों से स्पष्ट सायन सूर्य द्वारा स्पष्ट किए गए लग्न,दशम पर्याप्त सूक्ष्म माने जाएंगे।

सूर्य स्पष्ट करने की विधि :– सूर्यसाधन कोष्ठक नं. (1) से अपने ईस्वी सन् द्वारा, कोष्ठक नं.(2) से अपने महीने की तारीख द्वारा तथा कोष्ठक नं.(3) से अपने इष्टकालिक भा. स्टैं. टा. के घण्टा–मिनटों और तारीख द्वारा रा. अं. क. उठाएं। इन तीनों का योग (जोड़) ही आपका इष्टकालिक स्पष्ट सायन सूर्य होगा। योग की राशि 12 हो या 12 से अधिक हो तो उसमें से 12 घटा दें। यदि आप का वर्ष लीप इयर (प्लुतवर्ष) हो तो सिर्फ फरवरी के बाद के महीनों की तारीख में 1 जोड़ कर कोष्ठक (2) को प्रयोग में लाएं।

उदाहरण (1) :– सन् 1945 की 13 मई को प्रातः 10 घं. 30 मि. भा. स्टैं. टा. पर सायन सूर्य स्पष्ट करें। कोष्ठक नं. (1) में सन् 1945 के आगे 9 रा. 2 अं. 14 क. ; कोष्ठक (2) में 13 मई को 4 रा. 11 अं. 39 क. और कोष्टक (3) में 10 घं. 24 मि. के आगे "23 अप्रैल से 30 मई " के नीचे 8 अं. 12 क. है। इन तीनों का योग 13 रा. 22 अं. 5 क. हुआ। इसमें से 12 राशि घटाने पर 1 रा. 22 अं. 5 क. हमारा इष्टकालिक सायन स्पष्ट सूर्य हो गया।

उदाहरण (2) :– ईस्वी सन् 1948 की 8 अगस्त की शाम को 5 घं. 40 मि. (यानी 17 घं. 40 मि.) भा. स्टैं. टा. पर सायन सूर्य स्पष्ट करना है। कोष्ठक (1) में ईस्वी सन् 1948 में 9 रा. 1 अं. 29 क. है। हमारा सन् 1948 लीप इयर है, और हमारी तारीख फरवरी के बाद की है, अतः कोष्ठक (2) में 8 अगस्त की जगह 9 अगस्त में देखा तो 7 रा. 5 अं. 50 क. मिली। कोष्ठक (3) में 17 घं. 36 मि. के आगे " 7 अगस्त से 14 सितम्बर " के नीचे 8 अं. 29 क. है। इन तीनों का योग 16 रा. 15 अं 48 क. हुआ । अतः इस समय 4 रा. 15 अं. 48 क. स्पष्ट सायन सूर्य हुआ। सायन सूर्य को निरयण बनाना हो तो उसमें से उस दिन का अयनांश घटा दीजिए।

ध्यान दें :– इन कोष्ठकों से इष्ट समय का सूर्य स्पष्ट जानने के लिए भा. स्टैं. टा. का ही प्रयोग करना चाहिए। यदि किसी विदेशी स्टैं. टा. का सूर्य स्पष्ट करना हो तो उस स्टैं. टा. को भा.स्टैं टा. में बदल कर इन कोष्ठकों का प्रयोग करना होगा। जैसे :–

सन् 1962 ई. की 10 फरवरी को 2 घं. 35 मि. (A.M.) जापानी स्टैं. टा. पर सूर्य स्पष्ट करना है, जापानी स्टैं. टा. भा. स्टैं. टा. 3 घं. 30 मि. पीछे रहता है, अतः इस जापानी स्टैं.टा. में से 3 घं. 30 मि. घटा देने पर भा. स्टैं. टा. 23 घं. 5 मि. (9 फर. '62) प्राप्त हुआ। कोष्ठक नं. (1) में सन् 1962 के आगे 9 रा. 2 अं. 6 क. , कोष्ठक नं. (2) में 9 फर. के आगे 1 रा. 9 अं. 40 क. और कोष्ठक नं. (3) में 23 घं. 12 मि. के आगे 9 फर. के नीचे 8 अं. 45 क. मिले। इन तीनों का योग 10 रा. 20 अं. 31 क. हुआ। यह 10 फर. ' 62 को 2 घं. 35 मि. (A.M.) जापानी स्टैं. टा. पर सायन सूर्य स्पष्ट हुआ।

इस प्रकार का एक और उदाहरण लेते हैं – सन् 1950 ई. की 15 अगस्त को 23 घं. 45 मि. (G.M.T.) पर सूर्य स्पष्ट करना है। G.M.T. से भा. स्टैं. टा. 5 घं. 30 मि. आगे रहता है, अतः इस G.M.T. में 5 घं. 30 मि. जोड़ने पर भा. स्टैं. टा. 5 घं. 15 मि. (16 अग. '50) प्राप्त हुआ। कोष्ठक (1) में सन् 1950 के आगे 9 रा. 2 अं. 1 क. ;कोष्ठक (2) में 16 अग. के आगे 7 रा. 12 अं. 33 क. और कोष्ठक (3) में 16 अग. के नीचे 5 घं. 15 मि. के आगे 7 अंश 59 कला मिले। इन तीनों का योग 4 रा. 22 अं. 33 क. प्राप्त हुआ। यह 15 अग. ' 50 ई. को 23 घं. 45 मि. G.M.T. पर सायन सूर्य स्पष्ट हुआ।

इन कोष्ठकों से स्पष्ट किए गए सूर्य का प्रयोग केवल लग्न , दशम , सूर्यक्रान्ति एवं वेलान्तर साधन के लिए ही किया जाए , अन्यत्र नहीं। इससे स्पष्ट किए गए तिथि और योग के समाप्तिकालों में भी सामान्यतः 4–5 मिनट से अधिक स्थूलता नहीं आएगी।

सूर्यसाधन कोष्ठक (1)

ई. सन्	रा.	अं.	क.	ई. सन्	रा.	अं.	क.	ई. सन्	रा.	अं.	क.
*1900	09	02	10	1951	09	01	45	2001	09	02	38
1901	09	01	55	1952	09	01	31	2002	09	02	23
1902	09	01	40	1953	09	02	17	2003	09	02	08
1903	09	01	25	1954	09	02	03	2004	09	01	53
1904	09	01	10	1955	09	01	48	2005	09	02	40
1905	09	01	56	1956	09	01	33	2006	09	02	25
1906	09	01	41	1957	09	02	19	2007	09	02	10
1907	09	01	26	1958	09	02	05	2008	09	01	56
1908	09	01	11	1959	09	01	49	2009	09	02	42
1909	09	01	58	1960	09	01	35	2010	09	02	27
1910	09	01	43	1961	09	02	21	2011	09	02	12
1911	09	01	28	1962	09	02	06	2012	09	01	57
1912	09	01	14	1963	09	01	51	2013	09	02	44
1913	09	02	00	1964	09	01	36	2014	09	02	29
1914	09	01	45	1965	09	02	22	2015	09	02	14
1915	09	01	30	1966	09	02	08	2016	09	01	59
1916	09	01	15	1967	09	01	52	2017	09	02	45
1917	09	02	02	1968	09	01	38	2018	09	02	30
1918	09	01	47	1969	09	02	24	2019	09	02	15
1919	09	01	32	1970	09	02	10	2020	09	02	01
1920	09	01	17	1971	09	01	55	2021	09	02	47
1921	09	02	03	1972	09	01	40	2022	09	02	32
1922	09	01	49	1973	09	02	26	2023	09	02	17
1923	09	01	34	1974	09	02	11	2024	09	02	02
1924	09	01	19	1975	09	01	56	2025	09	02	49
1925	09	02	05	1976	09	01	42	2026	09	02	34
1926	09	01	50	1977	09	02	28	2027	09	02	19
1927	09	01	35	1978	09	02	13	2028	09	02	05
1928	09	01	20	1979	09	01	58	2029	09	02	51
1929	09	02	06	1980	09	01	43	2030	09	02	36
1930	09	01	52	1981	09	02	30	2031	09	02	21
1931	09	01	37	1982	09	02	15	2032	09	02	06
1932	09	01	22	1983	09	02	00	2033	09	02	52
1933	09	02	09	1984	09	01	45	2034	09	02	37
1934	09	01	54	1985	09	02	31	2035	09	02	22
1935	09	01	39	1986	09	02	16	2036	09	02	08
1936	09	01	25	1987	09	02	02	2037	09	02	54
1937	09	02	11	1988	09	01	47	2038	09	02	39
1938	09	01	56	1989	09	02	33	2039	09	02	24
1939	09	01	41	1990	09	02	19	2040	09	02	09
1940	09	01	25	1991	09	02	04	2041	09	02	56
1941	09	02	12	1992	09	01	49	2042	09	02	41
1942	09	01	57	1993	09	02	35	2043	09	02	26
1943	09	01	42	1994	09	02	20	2044	09	02	11
1944	09	01	27	1995	09	02	06	2045	09	02	58
1945	09	02	14	1996	09	01	51	2046	09	02	43
1946	09	01	59	1997	09	02	37	2047	09	02	28
1947	09	01	44	1998	09	02	22	2048	09	02	13
1948	09	01	29	1999	09	02	07	2049	09	03	00
1949	09	02	16	2000	09	01	52	2050	09	02	45
1950	09	02	01	-- --	–	–	–	-- --	–	–	–

*ईस्वी सन् 1900 लीप इयर (प्लुत वर्ष) नहीं था।

★सूर्यसाधन कोष्ठक (2)

तारीख	जनवरी			फरवरी			मार्च			अप्रैल			मई			जून		
	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.
1	00	00	00	01	01	33	01	29	50	03	00	41	04	00	03	04	29	56
2	00	01	01	01	02	34	02	00	50	03	01	40	04	01	01	05	00	53
3	00	02	02	01	03	35	02	01	50	03	02	40	04	01	59	05	01	51
4	00	03	03	01	04	36	02	02	50	03	03	39	04	02	57	05	02	48
5	00	04	05	01	05	37	02	03	50	03	04	38	04	03	55	05	03	45
6	00	05	06	01	06	37	02	04	50	03	05	37	04	04	53	05	04	43
7	00	06	07	01	07	38	02	05	50	03	06	36	04	05	51	05	05	40
8	00	07	08	01	08	39	02	06	50	03	07	35	04	06	49	05	06	38
9	00	08	09	01	09	40	02	07	50	03	08	34	04	07	47	05	07	35
10	00	09	10	01	10	41	02	08	50	03	09	32	04	08	45	05	08	32
11	00	10	11	01	11	41	02	09	50	03	10	31	04	09	43	05	09	30
12	00	11	12	01	12	42	02	10	50	03	11	30	04	10	41	05	10	27
13	00	12	14	01	13	43	02	11	50	03	12	29	04	11	39	05	11	25
14	00	13	15	01	14	43	02	12	50	03	13	28	04	12	37	05	12	22
15	00	14	16	01	15	44	02	13	50	03	14	27	04	13	35	05	13	19
16	00	15	17	01	16	44	02	14	49	03	15	25	04	14	33	05	14	17
17	00	16	18	01	17	45	02	15	49	03	16	24	04	15	31	05	15	14
18	00	17	19	01	18	46	02	16	49	03	17	23	04	16	29	05	16	11
19	00	18	20	01	19	46	02	17	49	03	18	22	04	17	26	05	17	08
20	00	19	22	01	20	47	02	18	48	03	19	20	04	18	24	05	18	06
21	00	20	23	01	21	47	02	19	48	03	20	19	04	19	22	05	19	03
22	00	21	24	01	22	48	02	20	47	03	21	17	04	20	20	05	20	00
23	00	22	25	01	23	48	02	21	47	03	22	16	04	21	18	05	20	58
24	00	23	26	01	24	48	02	22	46	03	23	14	04	22	15	05	21	55
25	00	24	27	01	25	49	02	23	46	03	24	13	04	23	13	05	22	52
26	00	25	28	01	26	49	02	24	45	03	25	11	04	24	11	05	23	49
27	00	26	29	01	27	49	02	25	45	03	26	09	04	25	08	05	24	46
28	00	27	30	01	28	50	02	26	44	03	27	08	04	26	06	05	25	44
29	00	28	31	01	29	50	02	27	43	03	28	06	04	27	03	05	26	41
30	00	29	32	–	–	–	02	28	43	03	29	04	04	28	01	05	27	38
31	01	00	32	–	–	–	02	29	42	–	–	–	04	28	59	–	–	–
32	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–

जुलाई			अगस्त			सितम्बर			अक्तूबर			नवम्बर			दिसम्बर			तारीख
रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	
05	28	35	06	28	10	07	27	59	08	27	14	09	27	59	10	28	13	1
05	29	32	06	29	08	07	28	57	08	28	13	09	28	59	10	29	14	2
06	00	30	07	00	05	07	29	55	08	29	12	10	00	00	11	00	15	3
06	01	27	07	01	03	08	00	53	09	00	12	10	01	00	11	01	15	4
06	02	24	07	02	00	08	01	51	09	01	11	10	02	00	11	02	16	5
06	03	21	07	02	58	08	02	50	09	02	10	10	03	00	11	03	17	6
06	04	18	07	03	55	08	03	48	09	03	09	10	04	00	11	04	18	7
06	05	16	07	04	53	08	04	46	09	04	08	10	05	00	11	05	19	8
06	06	13	07	05	50	08	05	44	09	05	07	10	06	01	11	06	20	9
06	07	10	07	06	48	08	06	43	09	06	07	10	07	01	11	07	21	10
06	08	07	07	07	45	08	07	41	09	07	06	10	08	01	11	08	22	11
06	09	04	07	08	43	08	08	39	09	08	05	10	09	02	11	09	23	12
06	10	02	07	09	40	08	09	38	09	09	05	10	10	02	11	10	24	13
06	10	59	07	10	38	08	10	36	09	10	04	10	11	03	11	11	25	14
06	11	56	07	11	36	08	11	35	09	11	04	10	12	03	11	12	26	15
06	12	54	07	12	33	08	12	33	09	12	03	10	13	03	11	13	27	16
06	13	51	07	13	31	08	13	32	09	13	03	10	14	04	11	14	28	17
06	14	48	07	14	29	08	14	30	09	14	02	10	15	04	11	15	29	18
06	15	45	07	15	27	08	15	29	09	15	02	10	16	05	11	16	31	19
06	16	43	07	16	24	08	16	28	09	16	02	10	17	05	11	17	32	20
06	17	40	07	17	22	08	17	26	09	17	01	10	18	06	11	18	33	21
06	18	37	07	18	20	08	18	25	09	18	01	10	19	07	11	19	34	22
06	19	35	07	19	18	08	19	24	09	19	01	10	20	07	11	20	35	23
06	20	32	07	20	16	08	20	22	09	20	00	10	21	08	11	21	36	24
06	21	29	07	21	13	08	21	21	09	21	00	10	22	09	11	22	37	25
06	22	26	07	22	11	08	22	20	09	22	00	10	23	09	11	23	38	26
06	23	24	07	23	09	08	23	19	09	23	00	10	24	10	11	24	39	27
06	24	21	07	24	07	08	24	18	09	24	00	10	25	11	11	25	40	28
06	25	18	07	25	05	08	25	17	09	25	00	10	26	12	11	26	42	29
06	26	16	07	26	03	08	26	15	09	25	59	10	27	12	11	27	43	30
06	27	13	07	27	01	–	–	–	09	26	59	–	–	–	11	28	44	31
–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	11	29	45	32

★लीप इयर हो तो फरवरी के बाद के महीनों में अभीष्ट तारीख में एक जोड़ कर इस कोष्ठक को प्रयोग में लाएं।

सूर्यसाधन कोष्ठक (3)

काल (भा. स्टैं.टा.)	1 जन. से 19 फर. / 17 नवं. से 31 दिसं.	20 फर. से 23 मार्च / 15 अक्तू. से 16 नवं.	24 मार्च से 22 अप्रै. / 15 सितं. से 14 अक्तू.	23 अप्रै. से 30 मई / 7 अग. से 14 सितं.	31 मई से 30 जून / 1 जुला. से 6 अग.	काल (भा. स्टैं टा.)	1 जन. से 19 फर. / 17 नवं. से 31 दिसं.	20 फर. से 23 मार्च / 15 अक्तू.से 16 नवं.	24 मार्च से 22 अप्रै. / 15 सितं. से 14 अक्तू.	23 अप्रै. से 30 मई / 7 अग. से 14 सितं.	31 मई से 30 जून / 1 जुला. से 6 अग.
घं. मि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	घं. मि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
00 00	7 46	7 46	7 46	7 47	7 47	12 00	8 16	8 16	8 16	8 15	8 15
00 24	7 47	7 47	7 47	7 47	7 48	12 24	8 17	8 17	8 17	8 16	8 16
00 48	7 48	7 48	7 48	7 48	7 49	12 48	8 18	8 18	8 18	8 17	8 17
01 12	7 49	7 49	7 49	7 49	7 50	13 12	8 19	8 19	8 19	8 18	8 18
01 36	7 50	7 50	7 50	7 50	7 51	13 36	8 20	8 20	8 20	8 19	8 19
02 00	7 51	7 51	7 51	7 51	7 51	14 00	8 21	8 21	8 21	8 20	8 20
02 24	7 52	7 52	7 52	7 52	7 52	14 24	8 22	8 22	8 22	8 21	8 21
02 48	7 53	7 53	7 53	7 53	7 53	14 48	8 23	8 23	8 23	8 22	8 22
03 12	7 54	7 54	7 54	7 54	7 54	15 12	8 24	8 24	8 24	8 23	8 23
03 36	7 55	7 55	7 55	7 55	7 55	15 36	8 25	8 25	8 25	8 24	8 24
04 00	7 56	7 56	7 56	7 56	7 56	16 00	8 26	8 26	8 26	8 25	8 25
04 24	7 57	7 57	7 57	7 57	7 57	16 24	8 27	8 27	8 27	8 26	8 26
04 48	7 58	7 58	7 58	7 58	7 58	16 48	8 28	8 28	8 28	8 27	8 27
05 12	7 59	7 59	7 59	7 59	7 59	17 12	8 29	8 29	8 29	8 28	8 28
05 36	8 00	8 00	8 00	8 00	8 00	17 36	8 31	8 30	8 29	8 29	8 29
06 00	8 01	8 01	8 01	8 01	8 01	18 00	8 32	8 31	8 30	8 30	8 29
06 24	8 02	8 02	8 02	8 02	8 02	18 24	8 33	8 32	8 31	8 31	8 30
06 48	8 03	8 03	8 03	8 03	8 03	18 48	8 34	8 33	8 32	8 32	8 31
07 12	8 04	8 04	8 04	8 04	8 04	19 12	8 35	8 34	8 33	8 33	8 32
07 36	8 05	8 05	8 05	8 05	8 05	19 36	8 36	8 35	8 34	8 34	8 33
08 00	8 06	8 06	8 06	8 06	8 06	20 00	8 37	8 36	8 35	8 35	8 34
08 24	8 07	8 07	8 07	8 07	8 07	20 24	8 38	8 37	8 36	8 36	8 35
08 48	8 08	8 08	8 08	8 08	8 08	20 48	8 39	8 38	8 37	8 37	8 36
09 12	8 09	8 09	8 09	8 09	8 09	21 12	8 40	8 39	8 38	8 38	8 37
09 36	8 10	8 10	8 10	8 10	8 09	21 36	8 41	8 40	8 39	8 39	8 38
10 00	8 11	8 11	8 11	8 11	8 10	22 00	8 42	8 41	8 40	8 40	8 39
10 24	8 12	8 12	8 12	8 12	8 11	22 24	8 43	8 42	8 41	8 41	8 40
10 48	8 13	8 13	8 13	8 13	8 12	22 48	8 44	8 43	8 42	8 42	8 41
11 12	8 14	8 14	8 14	8 14	8 13	23 12	8 45	8 44	8 43	8 43	8 42
11 36	8 15	8 15	8 15	8 14	8 14	23 36	8 46	8 45	8 44	8 44	8 43
12 00	8 16	8 16	8 16	8 15	8 15	24 00	8 47	8 46	8 45	8 44	8 44

भारत के किसी भी नगर का इष्टकालिक लग्न स्पष्ट कीजिए

वैसे नवीन शैली (साम्पातिककाल) से लग्न स्पष्ट करने की विधि बहुत सरल है। जो लोग प्राचीन पद्धति (स्पष्ट सूर्य और इष्टकाल) द्वारा ही लग्न स्पष्ट करने का अभ्यास रखते हैं, उन्हें हम यहाँ इसी पद्धति से सरलतापूर्वक लग्न साधन करने का प्रकार बतलाएंगे । एतदर्थ हमने यहाँ अगले 8 पृष्ठों पर सारे भारत (उत्तर अक्षांश 8° से 35° तक) के लिए उपयोगी लग्नसारिणयां दी हैं। इनसे अपने अभीष्ट नगरों का इष्टकालिक लग्न इस प्रकार स्पष्ट कीजिए–

इष्टकाल का सायन सूर्य स्पष्ट कीजिए । पिछले तीन पृष्ठों पर दिए गए तीन सूर्यसाधन कोष्ठकों से इष्टकालिक सायन सूर्य आसानी से स्पष्ट किया जा सकता है। इष्टकाल यदि घड़ी–पलों में है तो उसे घण्टा–मिनटों में बदल लें। अपने नगर के अक्षांश वाली लग्नसारणी में (लग्नसारणी के अपने अक्षांश वाले कालम में) इष्टकालिक सायन सूर्य के राशि–अंशों से घं.मि. उठाएं। लग्नसारणी 5–5 अंशों के अन्तर पर बनी हुई है। अतः सूर्य की शेष अंश–कलाओं को कलाएं बनाकर उन्हें 5 अंशों के अन्तर–मिनटों से गुणा करके 300 का भाग देकर एक लब्धि (मिनट) प्राप्त करें। इसे सारणी से उठाए गए घं. मि. में जोड़ दें। अब इन घं. मि. को इष्टकाल के घण्टा मिनटों में जोड़ने पर जो घं.मि. मिलें, इन्हें अपनी (अपने अक्षांश की) लग्नसारणी में ढूंढ़िये । सारणी में जहां इनके बराबर या इनके लगभग घं.मि. मिलें, उनके बाईं ओर पहले कालम में लिखे राशि–अंशों को अलग लिख लें। शेष मिनटों को 5 से गुणा करके उन्हें 5 अंशों के अन्तरमिनटों से भाग देकर दो लब्धियां (अं.क.) प्राप्त करें। इन्हें अलग लिखे राशि–अंशों में जोड़ने पर आपका इष्टकालिक सायनलग्न स्पष्ट हो जाएगा। इसमें से अपने ईस्वी सन् का अयनांश (जो पिछले पृष्ठ पर दिए गए अयनांश कोष्ठक से प्राप्त किया जा सकता है) घटा देने पर निरयण लग्न स्पष्ट हो जाएगा।

ध्यान रहे – लग्न सारणियां आधे–आधे अक्षांशों के अन्तर पर दी गई हैं। अपने नगर के अक्षांश के समीपतम अक्षांश वाली लग्नसारणी को ही प्रयोग में लाना चाहिए।

उदाहरण (i) – चण्डीगढ़ में सन् 1977 ई. की 15 जून को शाम के 5 बजकर 25 मिनट (भा.स्टैं.टा.) पर लग्न स्पष्ट करना है। इस समय स्पष्ट सायन सूर्य 2 रा. 24 अं. 16 क. और इष्टकाल 30 घ. 7 प. और घण्टा मिनटात्मक इष्ट 12 घं. 3 मि. है। चण्डीगढ़ के अक्षांश 30 अं. 44 क. (उत्तर) हैं। अतः इसके समीप के अक्षांश 30 अं. 30 क. वाली लग्नसारणी को प्रयोग में लाएंगे।

30 अं. 30 क. अक्षांश वाली लग्नसारणी में सायन सूर्य की 2 राशि 20 अं. के आगे 4 घं. 18 मि. मिले। सायन सूर्य के बाकी 4 अंश और 16 कलाओं की 256 कलाएं हुईं। इन्हें 5 अंशों के अन्तरमिनट 21 से गुणा करके 300 का भाग देने पर 18 मिनट मिले। इन्हें सारणी से मिले 4 घं. 18 मिनटों में जोड़ा तो 4 घं. 36 मिनट बने। इन्हें इष्ट के 12 घं. 3 मि. में जोड़ने पर 16 घं. 39 मि. हुए । इन्हें 30 अं. 30 क. (उत्तर) अक्षांश वाली लग्नसारणी में ढूंढ़ने पर हमें इसके लगभग बराबर संख्या 16 घं. 17 मि. मिले। इन घण्टा–मिनटों के बाईं ओर पहले कालम में सारणी में 7 रा. 25 अं. लिखे हैं। इन्हें अलग नोट किया । शेष 22 मिनटों को 5 से गुणा करके 5 अंशों के अन्तर 24 मि. से भाग देने पर दो लब्धियां 4 अं. 35 क. मिलीं। इन्हें अलग लिखे 7 रा. 25 अं. में जोड़ने पर 7 रा. 29 अं. 35 क. हमारा इष्टकालिक सायन लग्न स्पष्ट हो गया । सन् 1977 में अयनांश 23 अं. 32क. है (देखें अयनांशसारणी)। इसे सायन लग्न में से घटाने पर 7 रा. 6अं. 3 क. हमारा इष्टकालिक निरयण लग्न स्पष्ट हो गया।

उदाहरण (ii) – आगरा (उ.प्र.) में सन् 1997 की 8 मार्च को दिन के 11 बजकर 40 मि. (भा.स्टैं.टा.) पर लग्न स्पष्ट करना है । इस समय स्पष्ट सायन सूर्य 11 रा. 17 अं. 42 क. और घण्टा–मिनटात्मक इष्ट 5 घं. 1 मि. है । आगरा के अक्षांश 27 अं. 10 क. (उत्तर) हैं। 27 अं. 00 क. अक्षांश वाली लग्नसारणी में सायन सूर्य की 11 रा. 15 अं. के आगे 23 घं. 27 मि. हैं। सायन सूर्य के शेष 2 अंश और 42 कलाओं की 162 कलाएं हुईं। इन्हें 5 अंशों के अन्तर–मिनट 14 से गुणा कर 300 से भाग देने पर लब्धि 8 मिनट मिले। इन्हें 23 घं. 17 मि. में जोड़ने पर 23 घं. 25 मिनट हुए। इसमें इष्ट के 5 घं. 1 मिनट जोड़ने पर 4 घं. 26 मिनट मिले। इसे 27 अं. 00 क. अक्षांश वाली लग्नसारणी में ढूंढ़ने पर हमें बिल्कुल यही संख्या (4 घं. 26 मि.) 2 रा. 20 अं. के आगे मिल गई। इसलिए 2 रा. 20 अं. 00 क. ही हमारा इष्टकालिक सायन लग्न हुआ। इसमें से सन् 1997 का अयनांश 23 अं. 49 क. घटा देने पर 1 रा. 26 अं. 11 क. हमारा इष्टकालिक निरयण लग्न बन गया ।

उदाहरण (iii) – कांगड़ा (हि.प्र.) में 31 अक्तू.' 96 को 18 घं. 25 मि. (भा.स्टैं.टा.) पर लग्न इस प्रकार स्पष्ट होगा । इस समय इष्टकाल 11 घं. 41 मि. और स्पष्ट सायन सूर्य 7 रा. 8 अं. 21 क. है। कांगड़ा का अक्षांश 32° 5' (उ.) है। 32° अक्षांश वाली लग्नसारणी में सायन सूर्य 7 रा. 5 अं. के आगे 14 घं. 45 मि. और 5 अंशों का अन्तर 24 मि. है। शेष 3 अं. 21 क. की कलाओं (201) को 24 से गुणा कर 300 से भाग देने पर लब्धि 16 मि. मिले। इन्हें 14 घं. 45 मि. में जोड़ने पर 15 घं. 1 मि. हुए । इन्हें इष्टकाल में जोड़ने पर 2 घं. 42 मि. मिले। 32° अक्षांश वाली लग्नसारणी में 2 घं. 42 मि. के लगभग बराबर संख्या (घं. मि.) 2 घं. 41 मि., 1 रा. 25 अं. के आगे है। शेष 1 मि. को 5 से गुणा कर 5 अंशों के अन्तर मिनट 17 से भाग देने पर दो लब्धियां 0 अंश 18 कला मिलीं। इन्हें 1 रा. 25 अं. में जोड़ने पर 1 रा. 25 अं. 18 क. इष्टकालिक सायन लग्न हुआ। इसमें से 1996 ई. का अयनांश 23 अं. 48 कला घटाने पर 1 रा. 1 अं. 30 क. इष्टकालिक निरयण लग्न मिल गया।

सम्पूर्ण भारत की लग्नसारणियां (भाग 1)

सायन सूर्य या सायन लग्न	अक्षांश (उत्तर) 8° 00′	अक्षांश (उत्तर) 8° 30′	अक्षांश (उत्तर) 9° 00′	अक्षांश (उत्तर) 9° 30′	अक्षांश (उत्तर) 10° 00′	अक्षांश (उत्तर) 10° 30′	अक्षांश (उत्तर) 11° 00′	अक्षांश (उत्तर) 11° 30′	अक्षांश (उत्तर) 12° 00′	अक्षांश (उत्तर) 12° 30′	अक्षांश (उत्तर) 13° 00′	अक्षांश (उत्तर) 13° 30′	अक्षांश (उत्तर) 14° 00′	अक्षांश (उत्तर) 14° 30′	अक्षांश (उत्तर) 15° 00′
रा. अं.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
0 00	0 00	0 00	0 00	0 00	0 00	0 00	0 00	0 00	0 00	0 00	0 00	0 00	0 00	0 00	0 00
0 05	0 17	0 17	0 17	0 17	0 17	0 17	0 17	0 17	0 17	0 17	0 17	0 17	0 16	0 16	0 16
0 10	0 35	0 35	0 34	0 34	0 34	0 34	0 34	0 33	0 33	0 33	0 33	0 33	0 33	0 33	0 33
0 15	0 52	0 52	0 51	0 51	0 51	0 51	0 51	0 50	0 50	0 50	0 50	0 50	0 49	0 49	0 49
0 20	1 09	1 09	1 09	1 08	1 08	1 08	1 08	1 07	1 07	1 07	1 07	1 07	1 06	1 06	1 05
0 25	1 27	1 27	1 26	1 26	1 26	1 25	1 25	1 24	1 24	1 24	1 24	1 23	1 23	1 23	1 22
1 00	1 45	1 45	1 44	1 44	1 43	1 43	1 43	1 42	1 42	1 41	1 41	1 40	1 40	1 39	1 39
1 05	2 03	2 03	2 02	2 02	2 01	2 01	2 00	2 00	1 59	1 59	1 58	1 58	1 57	1 56	1 56
1 10	2 22	2 22	2 21	2 21	2 20	2 20	2 19	2 18	2 17	2 17	2 16	2 16	2 15	2 14	2 14
1 15	2 41	2 40	2 39	2 39	2 38	2 38	2 37	2 37	2 36	2 36	2 35	2 34	2 33	2 32	2 32
1 20	3 00	3 00	2 59	2 58	2 57	2 57	2 56	2 56	2 55	2 54	2 53	2 52	2 52	2 51	2 51
1 25	3 19	3 19	3 18	3 18	3 17	3 16	3 15	3 15	3 14	3 13	3 12	3 12	3 11	3 10	3 09
2 00	3 39	3 39	3 38	3 37	3 36	3 36	3 35	3 34	3 33	3 33	3 32	3 31	3 30	3 30	3 29
2 05	4 00	3 59	3 58	3 58	3 57	3 56	3 55	3 54	3 53	3 53	3 52	3 51	3 50	3 49	3 48
2 10	4 20	4 19	4 19	4 18	4 17	4 16	4 15	4 15	4 14	4 13	4 12	4 11	4 10	4 10	4 09
2 15	4 41	4 41	4 40	4 39	4 38	4 37	4 36	4 36	4 35	4 34	4 33	4 32	4 31	4 30	4 29
2 20	5 03	5 02	5 01	5 00	4 59	4 58	4 57	4 57	4 56	4 55	4 54	4 53	4 52	4 51	4 50
2 25	5 24	5 23	5 23	5 22	5 21	5 20	5 19	5 18	5 17	5 16	5 15	5 14	5 13	5 13	5 12
3 00	5 46	5 45	5 44	5 43	5 42	5 41	5 41	5 40	5 39	5 38	5 37	5 36	5 35	5 34	5 33
3 05	6 08	6 07	6 06	6 05	6 04	6 04	6 03	6 02	6 01	6 00	5 59	5 58	5 57	5 56	5 55
3 10	6 30	6 28	6 28	6 27	6 26	6 25	6 25	6 24	6 23	6 22	6 21	6 20	6 19	6 18	6 17
3 15	6 52	6 51	6 50	6 49	6 48	6 48	6 47	6 46	6 45	6 44	6 43	6 42	6 41	6 41	6 40
3 20	7 14	7 13	7 12	7 11	7 10	7 09	7 09	7 08	7 07	7 06	7 05	7 04	7 03	7 03	7 02
3 25	7 35	7 34	7 34	7 33	7 32	7 32	7 31	7 30	7 29	7 28	7 27	7 27	7 26	7 25	7 24
4 00	7 57	7 56	7 55	7 55	7 54	7 53	7 52	7 52	7 51	7 50	7 49	7 49	7 48	7 47	7 46
4 05	8 18	8 18	8 17	8 16	8 15	8 15	8 14	8 14	8 13	8 12	8 11	8 10	8 10	8 09	8 08
4 10	8 39	8 39	8 38	8 38	8 37	8 37	8 36	8 35	8 34	8 33	8 33	8 32	8 31	8 31	8 30
4 15	9 00	9 00	8 59	8 58	8 58	8 57	8 57	8 56	8 56	8 55	8 54	8 54	8 53	8 53	8 52
4 20	9 21	9 21	9 20	9 20	9 19	9 19	9 18	9 18	9 17	9 16	9 16	9 15	9 15	9 14	9 13
4 25	9 42	9 41	9 41	9 40	9 40	9 39	9 39	9 38	9 38	9 37	9 37	9 36	9 36	9 35	9 35
5 00	10 02	10 01	10 01	10 00	10 00	9 59	9 59	9 58	9 58	9 58	9 58	9 58	9 57	9 57	9 56
5 05	10 22	10 22	10 21	10 21	10 20	10 20	10 20	10 19	10 19	10 18	10 18	10 18	10 18	10 17	10 17
5 10	10 42	10 42	10 41	10 41	10 41	10 40	10 40	10 40	10 39	10 39	10 39	10 39	10 38	10 38	10 38
5 15	11 01	11 01	11 01	11 01	11 01	11 01	11 00	11 00	11 00	10 59	10 59	10 59	10 59	10 58	10 58
5 20	11 21	11 21	11 21	11 21	11 20	11 20	11 20	11 20	11 20	11 20	11 20	11 20	11 19	11 19	11 19
5 25	11 41	11 41	11 40	11 40	11 40	11 40	11 40	11 40	11 40	11 40	11 40	11 40	11 40	11 40	11 40
6 00	12 00	12 00	12 00	12 00	12 00	12 00	12 00	12 00	12 00	12 00	12 00	12 00	12 00	12 00	12 00

सम्पूर्ण भारत की लग्नसारणियां (भाग 1)

सायन सूर्य या सायन लग्न	अक्षांश (उत्तर) 8° 00′	अक्षांश (उत्तर) 8° 30′	अक्षांश (उत्तर) 9° 00′	अक्षांश (उत्तर) 9° 30′	अक्षांश (उत्तर) 10° 00′	अक्षांश (उत्तर) 10° 30′	अक्षांश (उत्तर) 11° 00′	अक्षांश (उत्तर) 11° 30′	अक्षांश (उत्तर) 12° 00′	अक्षांश (उत्तर) 12° 30′	अक्षांश (उत्तर) 13° 00′	अक्षांश (उत्तर) 13° 30′	अक्षांश (उत्तर) 14° 00′	अक्षांश (उत्तर) 14° 30′	अक्षांश (उत्तर) 15° 00′
रा. अं.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
6 00	12 00	12 00	12 00	12 00	12 00	12 00	12 00	12 00	12 00	12 00	12 00	12 00	12 00	12 00	12 00
6 05	12 19	12 19	12 20	12 20	12 20	12 20	12 20	12 20	12 20	12 20	12 20	12 20	12 20	12 20	12 21
6 10	12 39	12 39	12 39	12 39	12 40	12 40	12 40	12 40	12 40	12 40	12 40	12 40	12 41	12 41	12 41
6 15	12 59	12 59	12 59	12 59	12 59	12 59	13 00	13 00	13 00	13 00	13 01	13 01	13 01	13 01	13 02
6 20	13 18	13 18	13 19	13 19	13 19	13 20	13 20	13 21	13 21	13 21	13 21	13 21	13 22	13 22	13 22
6 25	13 38	13 38	13 39	13 39	13 40	13 40	13 40	13 41	13 41	13 41	13 42	13 42	13 42	13 43	13 43
7 00	13 58	13 58	13 59	13 59	14 00	14 00	14 01	14 01	14 02	14 02	14 02	14 03	14 03	14 04	14 04
7 05	14 18	14 18	14 19	14 19	14 20	14 20	14 21	14 21	14 22	14 22	14 23	14 23	14 24	14 24	14 25
7 10	14 39	14 39	14 40	14 40	14 41	14 41	14 42	14 42	14 43	14 43	14 44	14 44	14 45	14 46	14 47
7 15	15 00	15 00	15 01	15 01	15 02	15 02	15 03	15 03	15 04	15 05	15 06	15 06	15 07	15 07	15 08
7 20	15 21	15 21	15 22	15 22	15 23	15 23	15 24	15 25	15 26	15 26	15 27	15 28	15 29	15 29	15 30
7 25	15 42	15 42	15 43	15 44	15 45	15 45	15 46	15 46	15 47	15 48	15 49	15 49	15 50	15 51	15 52
8 00	16 03	16 04	16 05	16 05	16 06	16 07	16 08	16 08	16 09	16 10	16 11	16 11	16 12	16 13	16 14
8 05	16 25	16 25	16 26	16 27	16 28	16 28	16 29	16 30	16 31	16 32	16 33	16 33	16 34	16 35	16 36
8 10	16 46	16 47	16 48	16 49	16 50	16 50	16 51	16 52	16 53	16 54	16 55	16 56	16 57	16 57	16 58
8 15	17 08	17 09	17 10	17 11	17 12	17 12	17 13	17 14	17 15	17 16	17 17	17 18	17 19	17 20	17 21
8 20	17 30	17 31	17 32	17 33	17 34	17 35	17 35	17 36	17 37	17 38	17 39	17 40	17 41	17 42	17 43
8 25	17 52	17 53	17 54	17 55	17 56	17 56	17 57	17 58	17 59	18 00	18 01	18 02	18 03	18 04	18 05
9 00	18 14	18 15	18 16	18 17	18 18	18 18	18 19	18 20	18 21	18 22	18 23	18 24	18 25	18 26	18 27
9 05	18 36	18 36	18 37	18 38	18 39	18 40	18 41	18 42	18 43	18 44	18 45	18 46	18 47	18 47	18 48
9 10	18 57	18 58	18 59	19 00	19 01	19 02	19 03	19 03	19 04	19 05	19 06	19 07	19 08	19 09	19 10
9 15	19 19	19 19	19 20	19 21	19 22	19 23	19 24	19 24	19 25	19 26	19 27	19 28	19 29	19 30	19 31
9 20	19 40	19 40	19 41	19 42	19 43	19 44	19 45	19 45	19 46	19 47	19 48	19 49	19 50	19 50	19 51
9 25	20 00	20 01	20 02	20 02	20 03	20 04	20 05	20 06	20 07	20 07	20 08	20 09	20 10	20 11	20 12
10 00	20 21	20 21	20 22	20 23	20 24	20 24	20 25	20 26	20 27	20 27	20 28	20 29	20 30	20 30	20 31
10 05	20 41	20 42	20 42	20 43	20 43	20 44	20 45	20 45	20 46	20 47	20 48	20 48	20 49	20 50	20 51
10 10	21 00	21 01	21 01	21 02	21 03	21 03	21 04	21 04	21 05	21 06	21 07	21 07	21 08	21 08	21 09
10 15	21 19	21 20	21 21	21 21	21 22	21 22	21 23	21 23	21 24	21 24	21 25	21 26	21 27	21 27	21 28
10 20	21 38	21 38	21 39	21 39	21 40	21 40	21 41	21 42	21 43	21 43	21 44	21 44	21 45	21 45	21 46
10 25	21 57	21 57	21 58	21 58	21 59	21 59	22 00	22 00	22 01	22 01	22 02	22 02	22 03	22 03	22 04
11 00	22 15	22 15	22 16	22 16	22 17	22 17	22 17	22 18	22 18	22 19	22 19	22 20	22 20	22 20	22 21
11 05	22 33	22 33	22 34	22 34	22 34	22 35	22 35	22 36	22 36	22 36	22 36	22 36	22 37	22 37	22 38
11 10	22 51	22 51	22 51	22 52	22 52	22 52	22 52	22 53	22 53	22 53	22 53	22 53	22 54	22 54	22 55
11 15	23 08	23 08	23 09	23 09	23 09	23 09	23 09	23 10	23 10	23 10	23 10	23 10	23 11	23 11	23 11
11 20	23 25	23 25	23 26	23 26	23 26	23 26	23 26	23 27	23 27	23 27	23 27	23 27	23 27	23 27	23 28
11 25	23 43	23 43	23 43	23 43	23 43	23 43	23 43	23 43	23 43	23 43	23 43	23 43	23 44	23 44	23 44
12 00	24 00	24 00	24 00	24 00	24 00	24 00	24 00	24 00	24 00	24 00	24 00	24 00	24 00	24 00	24 00

सम्पूर्ण भारत की लग्नसारणियां (भाग 2)

सायन सूर्य या सायन लग्न	अक्षांश (उत्तर) 15° 00′	अक्षांश (उत्तर) 15° 30′	अक्षांश (उत्तर) 16° 00′	अक्षांश (उत्तर) 16° 30′	अक्षांश (उत्तर) 17° 00′	अक्षांश (उत्तर) 17° 30′	अक्षांश (उत्तर) 18° 00′	अक्षांश (उत्तर) 18° 30′	अक्षांश (उत्तर) 19° 00′	अक्षांश (उत्तर) 19° 30′	अक्षांश (उत्तर) 20° 00′	अक्षांश (उत्तर) 20° 30′	अक्षांश (उत्तर) 21° 00′	अक्षांश (उत्तर) 21° 30′	अक्षांश (उत्तर) 22° 00′
रा. अं.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
0 00	0 00	0 00	0 00	0 00	0 00	0 00	0 00	0 00	0 00	0 00	0 00	0 00	0 00	0 00	0 00
0 05	0 16	0 16	0 16	0 16	0 16	0 16	0 16	0 16	0 16	0 16	0 15	0 15	0 15	0 15	0 15
0 10	0 33	0 33	0 32	0 32	0 32	0 32	0 32	0 32	0 31	0 31	0 31	0 31	0 31	0 30	0 30
0 15	0 49	0 48	0 48	0 48	0 48	0 48	0 48	0 48	0 47	0 47	0 47	0 47	0 46	0 46	0 46
0 20	1 05	1 05	1 05	1 04	1 04	1 04	1 04	1 04	1 03	1 03	1 02	1 02	1 02	1 01	1 01
0 25	1 22	1 22	1 22	1 21	1 21	1 21	1 20	1 20	1 19	1 19	1 18	1 18	1 18	1 17	1 17
1 00	1 39	1 38	1 38	1 37	1 37	1 37	1 37	1 36	1 36	1 36	1 35	1 35	1 34	1 33	1 33
1 05	1 56	1 55	1 55	1 54	1 54	1 54	1 53	1 53	1 52	1 52	1 51	1 51	1 50	1 50	1 49
1 10	2 14	2 13	2 13	2 12	2 12	2 12	2 11	2 10	2 09	2 09	2 08	2 07	2 07	2 06	2 06
1 15	2 32	2 31	2 31	2 30	2 30	2 29	2 28	2 28	2 27	2 27	2 26	2 25	2 24	2 24	2 23
1 20	2 51	2 50	2 49	2 49	2 48	2 47	2 46	2 45	2 45	2 44	2 43	2 43	2 42	2 41	2 40
1 25	3 09	3 09	3 08	3 07	3 06	3 06	3 05	3 04	3 03	3 03	3 02	3 01	3 00	2 59	2 59
2 00	3 29	3 28	3 27	3 27	3 26	3 25	3 24	3 23	3 22	3 21	3 21	3 20	3 19	3 18	3 17
2 05	3 48	3 48	3 47	3 46	3 45	3 44	3 43	3 43	3 42	3 41	3 40	3 39	3 38	3 37	3 36
2 10	4 09	4 08	4 07	4 06	4 05	4 04	4 03	4 03	4 02	4 01	4 00	3 59	3 58	3 57	3 56
2 15	4 29	4 28	4 27	4 26	4 26	4 25	4 24	4 23	4 22	4 21	4 20	4 19	4 18	4 17	4 16
2 20	4 50	4 49	4 48	4 47	4 47	4 46	4 45	4 44	4 43	4 42	4 41	4 40	4 39	4 38	4 37
2 25	5 12	5 11	5 10	5 09	5 08	5 07	5 06	5 05	5 04	5 03	5 02	5 01	5 00	4 59	4 58
3 00	5 33	5 32	5 31	5 30	5 30	5 29	5 28	5 27	5 26	5 25	5 24	5 23	5 22	5 21	5 20
3 05	5 55	5 54	5 53	5 52	5 51	5 51	5 50	5 49	5 48	5 47	5 46	5 45	5 44	5 43	5 42
3 10	6 17	6 16	6 15	6 14	6 14	6 13	6 12	6 11	6 10	6 09	6 08	6 07	6 06	6 05	6 04
3 15	6 40	6 39	6 38	6 37	6 36	6 35	6 34	6 33	6 32	6 31	6 30	6 29	6 28	6 27	6 26
3 20	7 02	7 01	7 00	6 59	6 58	6 57	6 56	6 55	6 55	6 54	6 53	6 52	6 51	6 50	6 49
3 25	7 24	7 23	7 22	7 22	7 21	7 20	7 19	7 18	7 17	7 16	7 15	7 15	7 14	7 13	7 12
4 00	7 46	7 46	7 45	7 44	7 43	7 42	7 41	7 40	7 40	7 39	7 38	7 37	7 36	7 35	7 35
4 05	8 08	8 08	8 07	8 06	8 05	8 05	8 04	8 03	8 02	8 01	8 01	8 00	7 59	7 58	7 57
4 10	8 30	8 30	8 29	8 28	8 27	8 27	8 26	8 25	8 24	8 24	8 23	8 22	8 22	8 21	8 20
4 15	8 52	8 51	8 51	8 50	8 49	8 49	8 48	8 48	8 47	8 46	8 45	8 44	8 44	8 43	8 43
4 20	9 13	9 13	9 12	9 12	9 11	9 11	9 10	9 09	9 09	9 08	9 08	9 07	9 06	9 06	9 05
4 25	9 35	9 34	9 34	9 33	9 33	9 33	9 32	9 32	9 31	9 30	9 30	9 29	9 28	9 28	9 27
5 00	9 56	9 56	9 55	9 55	9 54	9 54	9 53	9 53	9 52	9 52	9 51	9 51	9 50	9 50	9 49
5 05	10 17	10 16	10 16	10 15	10 15	10 15	10 15	10 14	10 14	10 14	10 13	10 13	10 12	10 12	10 12
5 10	10 38	10 37	10 37	10 37	10 37	10 37	10 36	10 36	10 35	10 35	10 35	10 35	10 34	10 34	10 33
5 15	10 58	10 58	10 58	10 58	10 58	10 58	10 57	10 57	10 57	10 56	10 56	10 56	10 56	10 55	10 55
5 20	11 19	11 19	11 19	11 18	11 18	11 18	11 18	11 18	11 18	11 18	11 17	11 17	11 17	11 17	11 17
5 25	11 40	11 40	11 39	11 39	11 39	11 39	11 39	11 39	11 39	11 39	11 39	11 39	11 39	11 38	11 38
6 00	12 00	12 00	12 00	12 00	12 00	12 00	12 00	12 00	12 00	12 00	12 00	12 00	12 00	12 00	12 00

सम्पूर्ण भारत की लग्नसारणियां (भाग 2)

सायन सूर्य या सायन लग्न	अक्षांश (उत्तर) 15° 00′	अक्षांश (उत्तर) 15° 30′	अक्षांश (उत्तर) 16° 00′	अक्षांश (उत्तर) 16° 30′	अक्षांश (उत्तर) 17° 00′	अक्षांश (उत्तर) 17° 30′	अक्षांश (उत्तर) 18° 00′	अक्षांश (उत्तर) 18° 30′	अक्षांश (उत्तर) 19° 00′	अक्षांश (उत्तर) 19° 30′	अक्षांश (उत्तर) 20° 00′	अक्षांश (उत्तर) 20° 30′	अक्षांश (उत्तर) 21° 00′	अक्षांश (उत्तर) 21° 30′	अक्षांश (उत्तर) 22° 00′
रा. अं.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
6 00	12 00	12 00	12 00	12 00	12 00	12 00	12 00	12 00	12 00	12 00	12 00	12 00	12 00	12 00	12 00
6 05	12 21	12 21	12 21	12 21	12 21	12 21	12 21	12 21	12 21	12 21	12 21	12 21	12 21	12 21	12 22
6 10	12 41	12 41	12 41	12 42	12 42	12 42	12 42	12 42	12 42	12 42	12 43	12 43	12 43	12 43	12 43
6 15	13 02	13 02	13 02	13 02	13 02	13 02	13 03	13 03	13 03	13 03	13 04	13 04	13 04	13 05	13 05
6 20	13 22	13 23	13 23	13 23	13 23	13 23	13 24	13 24	13 25	13 25	13 25	13 26	13 26	13 26	13 27
6 25	13 43	13 44	13 44	13 44	13 45	13 45	13 45	13 46	13 46	13 47	13 47	13 48	13 48	13 48	13 48
7 00	14 04	14 05	14 05	14 06	14 06	14 06	14 07	14 07	14 08	14 08	14 09	14 09	14 10	14 10	14 10
7 05	14 25	14 25	14 26	14 26	14 27	14 27	14 28	14 28	14 29	14 30	14 30	14 31	14 31	14 32	14 33
7 10	14 47	14 47	14 48	14 48	14 49	14 49	14 50	14 50	14 51	14 52	14 52	14 53	14 54	14 54	14 55
7 15	15 08	15 08	15 09	15 10	15 11	15 11	15 12	15 12	15 13	15 14	15 15	15 15	15 16	15 17	15 17
7 20	15 30	15 30	15 31	15 32	15 33	15 33	15 34	15 35	15 36	15 36	15 37	15 37	15 38	15 39	15 40
7 25	15 52	15 52	15 53	15 54	15 55	15 55	15 56	15 57	15 58	15 59	15 59	16 00	16 01	16 02	16 03
8 00	16 14	16 14	16 15	16 16	16 17	16 18	16 19	16 19	16 20	16 21	16 22	16 23	16 24	16 25	16 25
8 05	16 36	16 37	16 38	16 38	16 39	16 40	16 41	16 42	16 43	16 44	16 45	16 45	16 46	16 47	16 48
8 10	16 58	16 59	17 00	17 01	17 02	17 03	17 04	17 04	17 05	17 06	17 07	17 08	17 09	17 10	17 11
8 15	17 21	17 21	17 22	17 23	17 24	17 25	17 26	17 27	17 28	17 29	17 30	17 31	17 32	17 33	17 34
8 20	17 43	17 44	17 45	17 45	17 46	17 47	17 48	17 49	17 50	17 51	17 52	17 53	17 54	17 55	17 56
8 25	18 05	18 06	18 07	18 08	18 09	18 09	18 10	18 11	18 12	18 13	18 14	18 15	18 16	18 17	18 18
9 00	18 27	18 28	18 29	18 29	18 30	18 31	18 32	18 33	18 34	18 35	18 36	18 37	18 38	18 39	18 41
9 05	18 48	18 49	18 50	18 51	18 52	18 53	18 54	18 55	18 56	18 57	18 58	18 59	19 00	19 01	19 02
9 10	19 10	19 11	19 12	19 12	19 13	19 14	19 15	19 16	19 17	19 18	19 19	19 20	19 21	19 22	19 23
9 15	19 31	19 32	19 33	19 33	19 34	19 35	19 36	19 37	19 38	19 39	19 40	19 41	19 42	19 43	19 44
9 20	19 51	19 52	19 53	19 54	19 55	19 56	19 57	19 57	19 58	19 59	20 00	20 01	20 02	20 03	20 04
9 25	20 12	20 12	20 13	20 14	20 15	20 16	20 17	20 17	20 18	20 19	20 20	20 21	20 22	20 23	20 24
10 00	20 31	20 32	20 33	20 34	20 35	20 35	20 36	20 37	20 38	20 39	20 39	20 40	20 41	20 42	20 43
10 05	20 51	20 51	20 52	20 53	20 54	20 55	20 55	20 56	20 57	20 57	20 58	20 59	21 00	21 01	21 01
10 10	21 09	21 10	21 11	21 11	21 12	21 13	21 14	21 15	21 15	21 16	21 17	21 18	21 18	21 19	21 19
10 15	21 28	21 28	21 29	21 29	21 30	21 31	21 32	21 32	21 33	21 33	21 34	21 35	21 36	21 36	21 37
10 20	21 46	21 46	21 47	21 48	21 48	21 49	21 49	21 50	21 51	21 52	21 52	21 53	21 53	21 54	21 54
10 25	22 04	22 04	22 05	22 05	22 06	22 06	22 07	22 07	22 08	22 08	22 09	22 09	22 10	22 11	22 11
11 00	22 21	22 21	22 22	22 22	22 23	22 23	22 23	22 24	22 24	22 25	22 25	22 26	22 26	22 27	22 27
11 05	22 38	22 38	22 39	22 39	22 39	22 39	22 40	22 40	22 41	22 41	22 42	22 42	22 42	22 43	22 43
11 10	22 55	22 55	22 55	22 55	22 56	22 56	22 56	22 57	22 57	22 57	22 58	22 58	22 58	22 59	22 59
11 15	23 11	23 12	23 12	23 12	23 12	23 12	23 12	23 12	23 13	23 13	23 13	23 14	23 14	23 14	23 14
11 20	23 28	23 27	23 28	23 28	23 28	23 28	23 28	23 28	23 29	23 29	23 29	23 29	23 29	23 29	23 30
11 25	23 44	23 44	23 44	23 44	23 44	23 44	23 44	23 44	23 44	23 44	23 45	23 45	23 45	23 45	23 45
12 00	24 00	24 00	24 00	24 00	24 00	24 00	24 00	24 00	24 00	24 00	24 00	24 00	24 00	24 00	24 00

सम्पूर्ण भारत की लग्नसारणियां (भाग 3)

सायन सूर्य या सायन लग्न	अक्षांश (उत्तर) 22° 00′	अक्षांश (उत्तर) 22° 30′	अक्षांश (उत्तर) 23° 00′	अक्षांश (उत्तर) 23° 30′	अक्षांश (उत्तर) 24° 00′	अक्षांश (उत्तर) 24° 30′	अक्षांश (उत्तर) 25° 00′	अक्षांश (उत्तर) 25° 30′	अक्षांश (उत्तर) 26° 00′	अक्षांश (उत्तर) 26° 30′	अक्षांश (उत्तर) 27° 00′	अक्षांश (उत्तर) 27° 30′	अक्षांश (उत्तर) 28° 00′	अक्षांश (उत्तर) 28° 30′	अक्षांश (उत्तर) 29° 00′
रा. अं.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
0 00	0 00	0 00	0 00	0 00	0 00	0 00	0 00	0 00	0 00	0 00	0 00	0 00	0 00	0 00	0 00
0 05	0 15	0 15	0 15	0 15	0 15	0 15	0 15	0 15	0 14	0 14	0 14	0 14	0 14	0 14	0 14
0 10	0 30	0 30	0 30	0 30	0 30	0 29	0 29	0 29	0 29	0 29	0 29	0 28	0 28	0 28	0 28
0 15	0 46	0 45	0 45	0 45	0 45	0 44	0 44	0 44	0 44	0 43	0 43	0 43	0 43	0 42	0 42
0 20	1 01	1 01	1 01	1 00	1 00	0 59	0 59	0 59	0 58	0 58	0 58	0 57	0 57	0 57	0 56
0 25	1 17	1 16	1 16	1 16	1 15	1 15	1 14	1 14	1 13	1 13	1 13	1 12	1 12	1 11	1 11
1 00	1 33	1 32	1 32	1 31	1 31	1 30	1 30	1 29	1 29	1 28	1 28	1 27	1 27	1 26	1 26
1 05	1 49	1 49	1 48	1 47	1 47	1 46	1 46	1 45	1 45	1 44	1 43	1 43	1 42	1 41	1 41
1 10	2 06	2 05	2 04	2 04	2 03	2 03	2 02	2 01	2 01	2 00	1 59	1 59	1 58	1 57	1 57
1 15	2 23	2 22	2 21	2 21	2 20	2 19	2 19	2 18	2 17	2 16	2 16	2 15	2 14	2 13	2 13
1 20	2 40	2 40	2 39	2 38	2 37	2 37	2 36	2 35	2 34	2 33	2 33	2 32	2 31	2 30	2 29
1 25	2 59	2 58	2 57	2 56	2 55	2 54	2 54	2 53	2 52	2 51	2 50	2 49	2 48	2 47	2 46
2 00	3 17	3 16	3 15	3 14	3 14	3 13	3 12	3 11	3 10	3 09	3 08	3 07	3 06	3 05	3 04
2 05	3 36	3 35	3 34	3 33	3 33	3 32	3 31	3 30	3 29	3 28	3 27	3 26	3 25	3 24	3 23
2 10	3 56	3 55	3 54	3 53	3 52	3 51	3 50	3 49	3 48	3 47	3 46	3 45	3 44	3 43	3 42
2 15	4 16	4 15	4 14	4 13	4 12	4 11	4 10	4 09	4 08	4 07	4 06	4 05	4 04	4 03	4 01
2 20	4 37	4 36	4 35	4 34	4 33	4 32	4 31	4 30	4 28	4 27	4 26	4 25	4 24	4 23	4 22
2 25	4 58	4 57	4 56	4 55	4 54	4 53	4 52	4 51	4 50	4 48	4 47	4 46	4 45	4 44	4 43
3 00	5 20	5 19	5 18	5 17	5 16	5 14	5 13	5 12	5 11	5 10	5 09	5 08	5 07	5 05	5 04
3 05	5 42	5 41	5 39	5 38	5 37	5 36	5 35	5 34	5 33	5 32	5 31	5 30	5 29	5 27	5 26
3 10	6 04	6 03	6 02	6 01	6 00	5 59	5 58	5 57	5 55	5 54	5 53	5 52	5 51	5 50	5 49
3 15	6 26	6 25	6 24	6 23	6 22	6 21	6 20	6 19	6 18	6 17	6 16	6 15	6 14	6 13	6 12
3 20	6 49	6 48	6 47	6 46	6 45	6 44	6 43	6 42	6 41	6 40	6 39	6 38	6 37	6 36	6 35
3 25	7 12	7 11	7 10	7 09	7 08	7 07	7 06	7 05	7 04	7 03	7 02	7 01	7 00	6 59	6 58
4 00	7 35	7 34	7 33	7 32	7 31	7 30	7 29	7 28	7 27	7 26	7 26	7 25	7 24	7 23	7 22
4 05	7 57	7 57	7 56	7 55	7 54	7 53	7 52	7 51	7 51	7 50	7 49	7 48	7 47	7 46	7 45
4 10	8 20	8 19	8 18	8 18	8 17	8 16	8 15	8 15	8 14	8 13	8 12	8 11	8 11	8 10	8 09
4 15	8 43	8 42	8 41	8 40	8 40	8 39	8 38	8 38	8 37	8 36	8 35	8 35	8 34	8 33	8 32
4 20	9 05	9 04	9 04	9 03	9 03	9 02	9 01	9 01	9 00	8 59	8 59	8 58	8 57	8 57	8 56
4 25	9 27	9 27	9 26	9 26	9 25	9 25	9 24	9 23	9 23	9 22	9 22	9 21	9 20	9 20	9 19
5 00	9 49	9 49	9 49	9 48	9 48	9 47	9 47	9 46	9 46	9 45	9 45	9 44	9 44	9 43	9 42
5 05	10 12	10 11	10 11	10 10	10 10	10 09	10 09	10 09	10 08	10 08	10 07	10 07	10 07	10 06	10 06
5 10	10 33	10 33	10 33	10 32	10 32	10 32	10 31	10 31	10 31	10 30	10 30	10 30	10 29	10 29	10 29
5 15	10 55	10 55	10 55	10 54	10 54	10 54	10 54	10 53	10 53	10 53	10 53	10 52	10 52	10 52	10 52
5 20	11 17	11 17	11 16	11 16	11 16	11 16	11 16	11 16	11 15	11 15	11 15	11 15	11 15	11 15	11 14
5 25	11 38	11 38	11 38	11 38	11 38	11 38	11 38	11 38	11 38	11 37	11 37	11 37	11 37	11 37	11 37
6 00	12 00	12 00	12 00	12 00	12 00	12 00	12 00	12 00	12 00	12 00	12 00	12 00	12 00	12 00	12 00

सम्पूर्ण भारत की लग्नसारणियां (भाग 3)

सायन सूर्य या सायन लग्न	अक्षांश (उत्तर) 22° 00′	अक्षांश (उत्तर) 22° 30′	अक्षांश (उत्तर) 23° 00′	अक्षांश (उत्तर) 23° 30′	अक्षांश (उत्तर) 24° 00′	अक्षांश (उत्तर) 24° 30′	अक्षांश (उत्तर) 25° 00′	अक्षांश (उत्तर) 25° 30′	अक्षांश (उत्तर) 26° 00′	अक्षांश (उत्तर) 26° 30′	अक्षांश (उत्तर) 27° 00′	अक्षांश (उत्तर) 27° 30′	अक्षांश (उत्तर) 28° 00′	अक्षांश (उत्तर) 28° 30′	अक्षांश (उत्तर) 29° 00′
रा. अं.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
6 00	12 00	12 00	12 00	12 00	12 00	12 00	12 00	12 00	12 00	12 00	12 00	12 00	12 00	12 00	12 00
6 05	12 22	12 22	12 22	12 22	12 22	12 22	12 22	12 22	12 22	12 22	12 22	12 22	12 23	12 23	12 23
6 10	12 43	12 43	12 43	12 44	12 44	12 44	12 44	12 44	12 44	12 44	12 45	12 45	12 45	12 45	12 45
6 15	13 05	13 05	13 05	13 06	13 06	13 06	13 06	13 07	13 07	13 07	13 07	13 08	13 08	13 08	13 08
6 20	13 27	13 27	13 27	13 28	13 28	13 28	13 28	13 29	13 29	13 30	13 30	13 30	13 31	13 31	13 31
6 25	13 48	13 49	13 49	13 50	13 50	13 50	13 51	13 51	13 52	13 52	13 53	13 53	13 53	13 54	13 54
7 00	14 10	14 11	14 11	14 12	14 12	14 13	14 13	14 14	14 14	14 15	14 15	14 16	14 16	14 17	14 17
7 05	14 33	14 33	14 34	14 34	14 35	14 35	14 36	14 37	14 37	14 38	14 38	14 39	14 39	14 40	14 41
7 10	14 55	14 55	14 56	14 57	14 57	14 58	14 59	14 59	15 00	15 01	15 01	15 02	15 03	15 03	15 04
7 15	15 17	15 18	15 19	15 19	15 20	15 21	15 22	15 22	15 23	15 24	15 24	15 25	15 26	15 27	15 27
7 20	15 40	15 41	15 41	15 42	15 43	15 44	15 45	15 45	15 46	15 47	15 48	15 49	15 49	15 50	15 51
7 25	16 03	16 03	16 04	16 05	16 06	16 07	16 08	16 08	16 09	16 10	16 11	16 12	16 13	16 14	16 15
8 00	16 25	16 26	16 27	16 28	16 29	16 30	16 31	16 31	16 32	16 33	16 34	16 35	16 36	16 37	16 38
8 05	16 48	16 49	16 50	16 51	16 52	16 53	16 54	16 55	16 56	16 57	16 58	16 59	17 00	17 01	17 02
8 10	17 11	17 12	17 13	17 14	17 15	17 16	17 17	17 18	17 19	17 20	17 21	17 22	17 23	17 24	17 25
8 15	17 34	17 35	17 36	17 37	17 38	17 39	17 40	17 41	17 42	17 43	17 44	17 45	17 46	17 47	17 48
8 20	17 56	17 57	17 58	17 59	18 00	18 01	18 02	18 03	18 04	18 05	18 06	18 08	18 09	18 10	18 11
8 25	18 18	18 19	18 20	18 21	18 22	18 24	18 25	18 26	18 27	18 28	18 29	18 30	18 31	18 32	18 34
9 00	18 41	18 41	18 42	18 43	18 44	18 46	18 47	18 48	18 49	18 50	18 51	18 52	18 53	18 54	18 56
9 05	19 02	19 03	19 04	19 05	19 06	19 07	19 08	19 09	19 10	19 11	19 13	19 14	19 15	19 16	19 17
9 10	19 23	19 24	19 25	19 26	19 27	19 28	19 29	19 30	19 31	19 32	19 34	19 35	19 36	19 37	19 38
9 15	19 44	19 45	19 46	19 47	19 48	19 49	19 50	19 51	19 52	19 53	19 54	19 55	19 56	19 57	19 58
9 20	20 04	20 05	20 06	20 07	20 08	20 09	20 10	20 11	20 12	20 13	20 14	20 15	20 16	20 17	20 18
9 25	20 24	20 25	20 26	20 26	20 27	20 28	20 29	20 30	20 31	20 32	20 33	20 34	20 35	20 36	20 37
10 00	20 43	20 44	20 45	20 45	20 46	20 47	20 48	20 49	21 50	20 51	20 52	20 53	20 54	20 55	20 56
10 05	21 01	21 02	21 03	21 04	21 05	21 06	21 06	21 07	21 08	21 09	21 10	21 11	21 12	21 13	21 13
10 10	21 19	21 20	21 21	21 22	21 22	21 24	21 24	21 25	21 26	21 27	21 27	21 28	21 29	21 30	21 31
10 15	21 37	21 38	21 38	21 39	21 40	21 41	21 41	21 42	21 43	21 44	21 44	21 45	21 46	21 46	21 47
10 20	21 54	21 55	21 55	21 56	21 57	21 57	21 58	21 59	21 59	22 00	22 01	22 01	22 02	22 03	22 03
10 25	22 11	22 11	22 12	22 13	22 13	22 14	22 14	22 15	22 15	22 16	22 17	22 17	22 18	22 19	22 19
11 00	22 27	22 28	22 28	22 29	22 29	22 30	22 30	22 31	22 31	22 32	22 32	22 33	22 33	22 34	22 34
11 05	22 43	22 44	22 44	22 44	22 45	22 45	22 46	22 46	22 46	22 47	22 47	22 48	22 48	22 49	22 49
11 10	22 59	22 59	22 59	23 00	23 00	23 00	23 01	23 01	23 01	23 02	23 02	23 03	23 03	23 03	23 04
11 15	23 14	23 15	23 15	23 15	23 15	23 16	23 16	23 16	23 16	23 17	23 17	23 17	23 17	23 18	23 18
11 20	23 30	23 30	23 30	23 30	23 30	23 30	23 31	23 31	23 31	23 31	23 31	23 31	23 32	23 32	23 32
11 25	23 45	23 45	23 45	23 45	23 45	23 45	23 45	23 45	23 45	23 46	23 46	23 46	23 46	23 46	23 46
12 00	24 00	24 00	24 00	24 00	24 00	24 00	24 00	24 00	24 00	24 00	24 00	24 00	24 00	24 00	24 00

सम्पूर्ण भारत की लग्नसारणियां (भाग 4)

सायन सूर्य या सायन लग्न	अक्षांश (उत्तर) 29° 00′	अक्षांश (उत्तर) 29° 30′	अक्षांश (उत्तर) 30° 00′	अक्षांश (उत्तर) 30° 30′	अक्षांश (उत्तर) 31° 00′	अक्षांश (उत्तर) 31° 30′	अक्षांश (उत्तर) 32° 00′	अक्षांश (उत्तर) 32° 30′	अक्षांश (उत्तर) 33° 00′	अक्षांश (उत्तर) 33° 30′	अक्षांश (उत्तर) 34° 00′	अक्षांश (उत्तर) 34° 30′	अक्षांश (उत्तर) 35° 00′
रा. अं.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
0 00	0 00	0 00	0 00	0 00	0 00	0 00	0 00	0 00	0 00	0 00	0 00	0 00	0 00
0 05	0 14	0 14	0 14	0 14	0 14	0 13	0 13	0 13	0 13	0 13	0 13	0 13	0 13
0 10	0 28	0 28	0 28	0 27	0 27	0 27	0 27	0 27	0 26	0 26	0 26	0 26	0 26
0 15	0 42	0 42	0 41	0 41	0 41	0 41	0 40	0 40	0 40	0 39	0 39	0 39	0 38
0 20	0 56	0 56	0 56	0 55	0 55	0 55	0 54	0 54	0 53	0 53	0 53	0 52	0 52
0 25	1 11	1 10	1 10	1 09	1 09	1 09	1 08	1 08	1 07	1 07	1 06	1 06	1 05
1 00	1 26	1 25	1 25	1 24	1 24	1 23	1 22	1 22	1 21	1 21	1 20	1 20	1 19
1 05	1 41	1 40	1 40	1 39	1 38	1 38	1 37	1 36	1 36	1 35	1 34	1 34	1 33
1 10	1 57	1 56	1 55	1 54	1 54	1 53	1 52	1 51	1 51	1 50	1 49	1 48	1 48
1 15	2 13	2 12	2 11	2 10	2 09	2 09	2 08	2 07	2 06	2 05	2 04	2 03	2 03
1 20	2 29	2 29	2 28	2 27	2 26	2 25	2 24	2 23	2 22	2 21	2 20	2 19	2 18
1 25	2 46	2 46	2 45	2 44	2 43	2 42	2 41	2 40	2 39	2 38	2 37	2 36	2 35
2 00	3 04	3 03	3 02	3 01	3 00	2 59	2 58	2 57	2 56	2 55	2 54	2 53	2 52
2 05	3 23	3 21	3 21	3 19	3 18	3 17	3 16	3 15	3 14	3 13	3 12	3 11	3 09
2 10	3 42	3 40	3 40	3 38	3 37	3 36	3 35	3 34	3 33	3 32	3 30	3 29	3 28
2 15	4 01	4 00	3 59	3 58	3 57	3 56	3 54	3 53	3 52	3 51	3 50	3 48	3 47
2 20	4 22	4 21	4 19	4 18	4 17	4 16	4 15	4 13	4 12	4 11	4 10	4 08	4 07
2 25	4 43	4 42	4 40	4 39	4 38	4 37	4 35	4 34	4 33	4 32	4 30	4 29	4 28
3 00	5 04	5 03	5 02	5 01	5 00	4 58	4 57	4 56	4 54	4 53	4 52	4 51	4 49
3 05	5 26	5 25	5 24	5 23	5 22	5 20	5 19	5 18	5 17	5 15	5 14	5 13	5 11
3 10	5 49	5 48	5 46	5 45	5 44	5 43	5 42	5 41	5 39	5 38	5 37	5 35	5 34
3 15	6 12	6 11	6 09	6 08	6 07	6 06	6 05	6 04	6 02	6 01	6 00	5 58	5 57
3 20	6 35	6 34	6 33	6 32	6 30	6 29	6 28	6 27	6 26	6 24	6 23	6 22	6 21
3 25	6 58	6 57	6 56	6 55	6 54	6 53	6 52	6 51	6 50	6 48	6 47	6 46	6 45
4 00	7 22	7 21	7 20	7 19	7 18	7 17	7 16	7 15	7 14	7 12	7 11	7 10	7 09
4 05	7 45	7 44	7 43	7 43	7 42	7 41	7 40	7 39	7 38	7 36	7 36	7 35	7 33
4 10	8 09	8 08	8 07	8 06	8 05	8 05	8 04	8 03	8 02	8 01	8 00	7 59	7 58
4 15	8 32	8 32	8 31	8 30	8 29	8 28	8 28	8 27	8 26	8 25	8 24	8 23	8 22
4 20	8 56	8 55	8 54	8 54	8 53	8 52	8 52	8 51	8 51	8 49	8 48	8 48	8 47
4 25	9 19	9 19	9 18	9 17	9 17	9 16	9 15	9 15	9 14	9 13	9 13	9 12	9 11
5 00	9 42	9 42	9 41	9 41	9 40	9 40	9 39	9 39	9 38	9 37	9 37	9 36	9 36
5 05	10 06	10 05	10 05	10 04	10 04	10 03	10 03	10 03	10 02	10 01	10 01	10 00	10 00
5 10	10 29	10 28	10 28	10 28	10 27	10 27	10 26	10 26	10 26	10 25	10 25	10 24	10 24
5 15	10 52	10 51	10 51	10 51	10 50	10 50	10 50	10 50	10 49	10 49	10 49	10 48	10 48
5 20	11 14	11 14	11 14	11 14	11 14	11 13	11 13	11 13	11 13	11 13	11 12	11 12	11 12
5 25	11 37	11 37	11 37	11 37	11 37	11 37	11 37	11 37	11 36	11 36	11 36	11 36	11 36
6 00	12 00	12 00	12 00	12 00	12 00	12 00	12 00	12 00	12 00	12 00	12 00	12 00	12 00

सम्पूर्ण भारत की लग्नसारणियां (भाग 4)

सायन सूर्य या सायन लग्न	अक्षांश (उत्तर) 29° 00′	अक्षांश (उत्तर) 29° 30′	अक्षांश (उत्तर) 30° 00′	अक्षांश (उत्तर) 30° 30′	अक्षांश (उत्तर) 31° 00′	अक्षांश (उत्तर) 31° 30′	अक्षांश (उत्तर) 32° 00′	अक्षांश (उत्तर) 32° 30′	अक्षांश (उत्तर) 33° 00′	अक्षांश (उत्तर) 33° 30′	अक्षांश (उत्तर) 34° 00′	अक्षांश (उत्तर) 34° 30′	अक्षांश (उत्तर) 35° 00′
रा. अं.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
6 00	12 00	12 00	12 00	12 00	12 00	12 00	12 00	12 00	12 00	12 00	12 00	12 00	12 00
6 05	12 23	12 23	12 23	12 23	12 23	12 23	12 23	12 23	12 23	12 24	12 24	12 24	12 24
6 10	12 45	12 46	12 46	12 46	12 46	12 46	12 47	12 47	12 47	12 47	12 47	12 48	12 48
6 15	13 08	13 09	13 09	13 09	13 09	13 10	13 10	13 10	13 11	13 11	13 11	13 12	13 12
6 20	13 31	13 32	13 32	13 32	13 33	13 33	13 33	13 34	13 34	13 35	13 35	13 36	13 36
6 25	13 54	13 55	13 55	13 56	13 56	13 57	13 57	13 57	13 58	13 59	13 59	14 00	14 00
7 00	14 17	14 18	14 18	14 19	14 20	14 20	14 21	14 21	14 22	14 23	14 23	14 24	14 24
7 05	14 41	14 41	14 42	14 43	14 43	14 44	14 45	14 45	14 46	14 47	14 47	14 48	14 49
7 10	15 04	15 05	15 05	15 06	15 07	15 08	15 08	15 09	15 10	15 11	15 11	15 12	15 13
7 15	15 27	15 28	15 29	15 30	15 31	15 32	15 32	15 33	15 34	15 35	15 36	15 36	15 37
7 20	15 51	15 52	15 53	15 54	15 55	15 56	15 56	15 57	15 58	15 59	16 00	16 01	16 02
7 25	16 15	16 16	16 16	16 17	16 18	16 19	16 20	16 21	16 22	16 23	16 24	16 25	16 26
8 00	16 38	16 39	16 40	16 41	16 42	16 43	16 44	16 45	16 46	16 47	16 49	16 50	16 51
8 05	17 02	17 03	17 04	17 05	17 06	17 07	17 08	17 09	17 10	17 11	17 13	17 14	17 15
8 10	17 25	17 26	17 27	17 28	17 29	17 31	17 32	17 33	17 34	17 35	17 37	17 38	17 39
8 15	17 48	17 49	17 50	17 52	17 53	17 54	17 55	17 56	17 58	17 59	18 00	18 01	18 03
8 20	18 11	18 12	18 14	18 15	18 16	18 17	18 18	18 19	18 21	18 22	18 23	18 24	18 26
8 25	18 34	18 35	18 36	18 37	18 38	18 40	18 41	18 42	18 43	18 45	18 46	18 47	18 49
9 00	18 56	18 57	18 58	18 59	19 00	19 02	19 03	19 04	19 05	19 07	19 08	19 09	19 11
9 05	19 17	19 18	19 20	19 21	19 22	19 23	19 24	19 26	19 27	19 28	19 29	19 31	19 32
9 10	19 38	19 39	19 40	19 41	19 43	19 44	19 45	19 47	19 48	19 49	19 50	19 52	19 53
9 15	19 58	19 59	20 01	20 02	20 03	20 04	20 05	20 07	20 08	20 09	20 10	20 12	20 13
9 20	20 18	20 19	20 20	20 21	20 23	20 24	20 25	20 26	20 27	20 28	20 30	20 31	20 32
9 25	20 37	20 38	20 39	20 40	20 41	20 43	20 44	20 45	20 46	20 47	20 48	20 49	20 51
10 00	20 56	20 56	20 58	20 59	21 00	21 01	21 02	21 03	21 04	21 05	21 06	21 07	21 08
10 05	21 13	21 14	21 15	21 16	21 17	21 18	21 19	21 20	21 21	21 22	21 23	21 24	21 25
10 10	21 31	21 31	21 32	21 33	21 34	21 35	21 36	21 37	21 38	21 39	21 40	21 41	21 42
10 15	21 47	21 48	21 49	21 49	21 50	21 51	21 52	21 53	21 54	21 55	21 55	21 56	21 57
10 20	22 03	22 04	22 05	22 05	22 06	22 07	22 08	22 08	22 09	22 10	22 11	22 11	22 12
10 25	22 19	22 20	22 20	22 21	22 21	22 22	22 23	22 23	22 24	22 25	22 25	22 26	22 27
11 00	22 34	22 35	22 35	22 36	22 36	22 37	22 37	22 38	22 39	22 39	22 40	22 40	22 41
11 05	22 49	22 49	22 50	22 50	22 51	22 52	22 52	22 52	22 53	22 53	22 54	22 54	22 55
11 10	23 04	23 04	23 04	23 05	23 05	23 06	23 06	23 06	23 07	23 07	23 07	23 08	23 08
11 15	23 18	23 18	23 18	23 19	23 19	23 19	23 20	23 20	23 20	23 21	23 21	23 21	23 21
11 20	23 32	23 32	23 32	23 33	23 33	23 33	23 33	23 33	23 34	23 34	23 34	23 34	23 34
11 25	23 46	23 46	23 46	23 46	23 46	23 46	23 47	23 47	23 47	23 47	23 47	23 47	23 47
12 00	24 00	24 00	24 00	24 00	24 00	24 00	24 00	24 00	24 00	24 00	24 00	24 00	24 00

लग्न का प्रारम्भकाल कैसे जानें?

आगे लग्नसाधन के तीन कोष्ठक दिए गए हैं। इनकी मदद से भारत के किसी भी नगर में किसी भी दिन अभीष्ट लग्न का प्रारम्भकाल (भा.स्टैं.टा.) अत्यन्त सरलता से एक दो मिनट में ही इस प्रकार जाना जा सकता है–

कोष्ठक (1) [लग्नसाधन कोष्ठक (1)] से अभीष्ट तारीख के आगे लिखे अपने अभीष्ट लग्न के घं. मि. लेकर उनमें कोष्ठक (2) से अपने नगर के अक्षांशों और अभीष्ट लग्न द्वारा प्राप्त मिनटों को चिह्नानुसार जोड़िये या घटाइए (मेष से कन्या तक के छः लग्नों के लिए ये मिनट ऋण और शेष के लिए धन हैं)। इसमें कोष्ठक (3) से अपने ईस्वी वर्ष द्वारा प्राप्त मिनट भी चिह्नानुसार जोड़ें या घटाएं। इस प्रकार प्राप्त घं. मि. में अभीष्ट नगर के स्टैण्डर्ड अन्तर के मिनटों को चिह्न के विपरीत जोड़ने या घटाने से आपके अभीष्ट नगर में अभीष्ट तारीख को अभीष्ट लग्न का प्रारम्भ काल (भा.स्टैं.टा.) ज्ञात हो जाएगा। स्पष्टता के लिए नीचे दिए गए उदाहरण देखिए–

उदाहरण (i) – 11 अक्तू. 86 को मुम्बई में धनु लग्न का प्रारम्भकाल ऐसे ज्ञात किया जाएगा–

घं. मि.
10 14 [कोष्ठक (1), 11 अक्तू. धनु लग्न]
+34 [कोष्ठक (2), मुम्बई अक्षांश 19° 00' (उ.) (धनु लग्न)]
10 48
+ 1 [कोष्ठक (3), सन् 1986]
10 49
+38 (मुम्बई का स्टैण्डर्ड अन्तर,चिह्न बदलकर)
11 27 [11 अक्तू.' 86 को मुम्बई में धनु लग्न का प्रारम्भकाल (भा.स्टैं.टा.)]

ध्यान दें– यदि लीपइयर हो तो केवल फरवरी के बाद के महीनों (मार्च से दिसम्बर तक के महीनों) की तारीखों में एक जोड़ कर कोष्ठक (1) को प्रयोग में लाना चाहिए। इसके लिए यह उदाहरण देखिए –

उदाहरण (ii) – 11 सितं.'80 को अहमदाबाद (गु.) में तुला लग्न का प्रारम्भकाल (भा.स्टैं.टा.) इस प्रकार ज्ञात किया जाएगा–

घं. मि.
8 04 [कोष्ठक (1), 12 (=11+1) सितं. तुला लग्न]
+16 [कोष्ठक (2), अहमदाबाद अक्षांश 23° 00' (उ.), तुला लग्न]
8 20
+ 3 [कोष्ठक (3), सन् 1980]
8 23
+39 [अहमदाबाद का स्टैण्डर्ड अन्तर, चिह्न बदलकर]
9 02 [11 सितं.'80 को अहमदाबाद में तुला लग्न का प्रारम्भकाल (भा.स्टैं.टा.)]

ध्यान रहे – लीप ईयर में जनवरी और फरवरी मासों की तारीखों में कोष्ठक (1) के प्रयोग के लिए एक नहीं जोड़ना चाहिए। यह उदाहरण देखिए–

उदाहरण (iii) – 10 फर.' 80 को अहमदाबाद में तुला लग्न का प्रारम्भकाल (भा.स्टैं.टा.) ऐसे मालूम कीजिए–

घं. मि.
22 05 [कोष्ठक (1), 10 फरवरी, तुला लग्न]
+16 [कोष्ठक (2), अहमदाबाद अक्षांश 23°00'(उ), तुला लग्न]
22 21
+ 3 [कोष्ठक (3), सन् 1980]
22 24
+39 [अहमदाबाद का स्टैंडर्ड अन्तर, चिह्न बदलकर]
23 03 [10 फर.'80 को अहमदाबाद में तुला लग्न का प्रारम्भकाल (भा.स्टैं.टा.)]

यह भी ध्यान में रखिए – कोष्ठक (1) में दिए गए घं. मि. लग्नों का 'अस्पष्ट प्रारम्भकाल' है। अस्पष्ट प्रारम्भकाल' के इन घं. मि. में कोष्ठक (2) और कोष्ठक (3) से प्राप्त मिनटों तथा विपरीत चिह्न वाले स्टैण्डर्ड अन्तर के मिनटों का जोड़–घटाव कर देने

पर जो लग्न का प्रारम्भकाल (भा.स्टैं.टा.) प्राप्त होता है, वह लग्न का 'स्पष्ट प्रारम्भकाल' है। यदि लग्न का 'अस्पष्ट प्रारम्भकाल' [कोष्ठक (1) से प्राप्त काल] अर्धरात्रि से पहिले का (यानी P.M) और लग्न का स्पष्ट प्रारम्भकाल अर्धरात्रि के बाद का (यानी A.M.) हो तो लग्न के स्पष्ट पारम्भ काल में 4 मिनट जोड़ कर उसे लग्न का वास्तविक स्पष्टकाल समझना चाहिए। इसी प्रकार यदि लग्न का अस्पष्ट प्रारम्भकाल अर्धरात्रि के बाद का (यानी A.M) और स्पष्ट प्रारम्भकाल अर्धरात्रि से पहिले का (यानी P.M) हो तो स्पष्ट प्रारम्भकाल में से 4 मिनट घटाकर उसे लग्न का वास्तविक प्रारम्भकाल समझना चाहिए। इस तरह के दो उदाहरण नीचे दिए जा रहे हैं:–

उदाहरण (i) – 24 मार्च 1965 को अमृतसर में धनु का प्रारम्भ काल इस प्रकार जाना जाएगा–

घं. मि.
23 23 [कोष्ठक (1), 24 मार्च धनु लग्न का अस्पष्ट प्रारम्भकाल]
+1 01 [कोष्ठक (2), अमृतसर अक्षांश 31° 37'(उ.), धनु लग्न]
00 24
– 1 [कोष्ठक (3), सन् 1965]
00 23
+30 [अमृतसर का स्टैण्डर्ड अन्तर, चिह्न बदलकर]
00 53 [धनु लग्न का स्पष्ट प्रारम्भकाल (भा.स्टैंटा.)]
+ 4
00 57 [24 मार्च'65 को अमृतसर में धनु लग्न का वास्तविक प्रारम्भकाल (भा.स्टैं.टा.)]

क्योंकि यहां कोष्ठक (1) से प्राप्त धनु लग्न का अस्पष्ट प्रारम्भकाल (23 घं. 23 मि.) अर्धरात्रि से पहिले का (P.M) और स्पष्ट प्रारम्भकाल (00 घं. 53 मि.) अर्धरात्रि से बाद का (A.M) है, अतः पूर्वोक्त निर्देशानुसार इस स्पष्ट प्रारम्भकाल (00घं.53मि.) में 4 मिनट जोड़कर प्राप्तकाल 00 घं. 57 मि. को धनु लग्न का वास्तविक प्रारम्भकाल (भा.स्टैं.टा.) माना गया है।

अब इसके साथ वाला दूसरा उदाहरण भी लेते हैं–

उदाहरण (ii) – 2 नवं.'84 को गुवाहटी (आसाम) में सिंह लग्न का प्रारम्भकाल हम इस प्रकार ज्ञात करेंगे–

घं. मि.
0 56 [कोष्ठक(1), 3 (=2+1) नवं., सिंह लग्न का अस्पष्ट प्रारम्भकाल]
– 27 [कोष्ठक (2), गुवाहटी अक्षांश 26° 10'(उ.), सिंह लग्न]
00 29
+03 [कोष्ठक (3), सन् 1984]
00 32
– 37 [गुवाहटी का स्टैण्डर्ड अन्तर, चिह्न बदलकर]
23 55 [सिंह लग्न का स्पष्ट प्रारम्भकाल (भा.स्टैं.टा.)]
– 4
23 51 [2 नवं.'84 को गुवाहटी में सिंह लग्न का वास्तविक प्रारम्भकाल (भा.स्टैं.टा.)]

यहाँ अस्पष्ट प्रारम्भकाल A.M और स्पष्ट प्रारम्भकाल P.M. है, अतः पूर्वोक्त निर्देशानुसार लग्न के स्पष्ट प्रारम्भकाल में 4 मिनट घटा कर उसे ही सिंह लग्न का वास्तविक प्रारम्भकाल माना गया है।

इन कोष्ठकों से जाना गया लग्नारम्भकाल चित्रापक्षीय अयनांशानुसारी होगा– यह भी जान लेना चाहिए।

विश्व के सभी नगरों के निरयण एवं सायन लग्नों का प्रारम्भकाल तुरन्त बतलाने वाली अद्भुत सारणियां मेरी पुस्तक 'विश्व लग्न सारणी' में मिलेंगी। इनकी मदद से विश्व के किसी भी देश के किसी भी नगर में अभीष्ट लग्न का सायन एवं निरयण सूक्ष्म प्रारम्भकाल वस्तुतः एक ही मिनट में जाना जा सकता है। यहां दी गई ये सारणियां वहीं से उद्धृत की गई हैं।

लग्नसाधन कोष्ठक (1)

(लीप इयर हो तो केवल फरवरी के बाद के महीनों में अभीष्ट तारीख में एक जोड़कर इस कोष्ठक का प्रयोग करें।)

तारीख	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
जन. 1	-- --	-- --	-- --	-- --	-- --	-- --	00 46	02 43	04 50	07 00	09 01	10 54
1/2	12 44	14 41	16 48	18 58	20 59	22 52	00 42	02 39	04 46	06 56	08 57	10 50
2/3	12 40	14 37	16 44	18 54	20 55	22 48	00 38	02 35	04 42	06 52	08 53	10 46
3/4	12 36	14 33	16 40	18 50	20 51	22 44	00 34	02 31	04 38	06 48	08 49	10 42
4/5	12 32	14 29	16 36	18 46	20 47	22 40	00 30	02 27	04 34	06 44	08 45	10 38
5/6	12 28	14 25	16 32	18 42	20 43	22 36	00 26	02 23	04 30	06 40	08 41	10 34
6/7	12 24	14 21	16 28	18 38	20 39	22 32	00 22	02 19	04 26	06 36	08 37	10 30
7/8	12 20	14 17	16 24	18 34	20 35	22 28	00 18	02 15	04 22	06 32	08 33	10 26
8/9	12 16	14 13	16 20	18 30	20 31	22 24	00 14	02 11	04 18	06 28	08 29	10 22
9/10	12 12	14 09	16 16	18 26	20 27	22 20	00 10	02 07	04 14	06 24	08 25	10 18
10/11	12 09	14 06	16 13	18 23	20 24	22 17	00 07	02 04	04 11	06 21	08 22	10 15
11/12	12 05	14 02	16 09	18 19	20 20	22 13	00 03	02 00	04 07	06 17	08 18	10 11
12/13	12 01	13 58	16 05	18 15	20 16	22 09	23 59	01 56	04 03	06 13	08 14	10 07
13/14	11 57	13 54	16 01	18 11	20 12	22 05	23 55	01 52	03 59	06 09	08 10	10 03
14/15	11 53	13 50	15 57	18 07	20 08	22 01	23 51	01 48	03 55	06 05	08 06	09 59
15/16	11 49	13 46	15 53	18 03	20 04	21 57	23 47	01 44	03 51	06 01	08 02	09 55
16/17	11 45	13 42	15 49	17 59	20 00	21 53	23 43	01 40	03 47	05 57	07 58	09 51
17/18	11 41	13 38	15 45	17 55	19 56	21 49	23 39	01 36	03 43	05 53	07 54	09 47
18/19	11 37	13 34	15 41	17 51	19 52	21 45	23 35	01 32	03 39	05 49	07 50	09 43
19/20	11 33	13 30	15 37	17 47	19 48	21 41	23 31	01 28	03 35	05 45	07 46	09 39
20/21	11 29	13 26	15 33	17 43	19 44	21 37	23 27	01 24	03 31	05 41	07 42	09 35
21/22	11 25	13 22	15 29	17 39	19 40	21 33	23 23	01 20	03 27	05 37	07 38	09 31
22/23	11 21	13 18	15 25	17 35	19 36	21 29	23 19	01 16	03 23	05 33	07 34	09 27
23/24	11 17	13 14	15 21	17 31	19 32	21 25	23 15	01 12	03 19	05 29	07 30	09 23
24/25	11 13	13 10	15 17	17 27	19 28	21 21	23 11	01 08	03 15	05 25	07 26	09 19
25/26	11 09	13 06	15 13	17 23	19 24	21 17	23 07	01 04	03 11	05 21	07 22	09 15
26/27	11 06	13 03	15 10	17 20	19 21	21 14	23 04	01 01	03 08	05 18	07 19	09 12
27/28	11 02	12 59	15 06	17 16	19 17	21 10	23 00	00 57	03 04	05 14	07 15	09 08
28/29	10 58	12 55	15 02	17 12	19 13	21 06	22 56	00 53	03 00	05 10	07 11	09 04
29/30	10 54	12 51	14 58	17 08	19 09	21 02	22 52	00 49	02 56	05 06	07 07	09 00
30/31	10 50	12 47	14 54	17 04	19 05	20 58	22 48	00 45	02 52	05 02	07 03	08 56
31	10 46	12 43	14 50	17 00	19 01	20 54	22 44	-- --	-- --	-- --	-- --	-- --
फर 1	-- --	-- --	-- --	-- --	-- --	-- --	-- --	00 41	02 48	04 58	06 59	08 52
1/2	10 42	12 39	14 46	16 56	18 57	20 50	22 40	00 37	02 44	04 54	06 55	08 48
2/3	10 38	12 35	14 42	16 52	18 53	20 46	22 36	00 33	02 40	04 50	06 51	08 44
3/4	10 34	12 31	14 38	16 48	18 49	20 42	22 32	00 29	02 36	04 46	06 47	08 40
4/5	10 30	12 27	14 34	16 44	18 45	20 38	22 28	00 25	02 32	04 42	06 43	08 36
5/6	10 26	12 23	14 30	16 40	18 41	20 34	22 24	00 21	02 28	04 38	06 39	08 32
6/7	10 22	12 19	14 26	16 36	18 37	20 30	22 20	00 17	02 24	04 34	06 35	08 28
7/8	10 18	12 15	14 22	16 32	18 33	20 26	22 16	00 13	02 20	04 30	06 31	08 24
8/9	10 14	12 11	14 18	16 28	18 29	20 22	22 12	00 09	02 16	04 26	06 27	08 20
9/10	10 10	12 07	14 14	16 24	18 25	20 18	22 08	00 05	02 12	04 22	06 23	08 16
10/11	10 07	12 04	14 11	16 21	18 22	20 15	22 05	00 02	02 09	04 19	06 20	08 13
11/12	10 03	12 00	14 07	16 17	18 18	20 11	22 01	23 58	02 05	04 15	06 16	08 09
12/13	09 59	11 56	14 03	16 13	18 14	20 07	21 57	23 54	02 01	04 11	06 12	08 05
13/14	09 55	11 52	13 59	16 09	18 10	20 03	21 53	23 50	01 57	04 07	06 08	08 01
14/15	09 51	11 48	13 55	16 05	18 06	19 59	21 49	23 46	01 53	04 03	06 04	07 57
15/16	09 47	11 44	13 51	16 01	18 02	19 55	21 45	23 42	01 49	03 59	06 00	07 53
16/17	09 43	11 40	13 47	15 57	17 58	19 51	21 41	23 38	01 45	03 55	05 56	07 49
17/18	09 39	11 36	13 43	15 53	17 54	19 47	21 37	23 34	01 41	03 51	05 52	07 45
18/19	09 35	11 32	13 39	15 49	17 50	19 43	21 33	23 30	01 37	03 47	05 48	07 41
19/20	09 31	11 28	13 35	15 45	17 46	19 39	21 29	23 26	01 33	03 43	05 44	07 37
20/21	09 27	11 24	13 31	15 41	17 42	19 35	21 25	23 22	01 29	03 39	05 40	07 33
21/22	09 23	11 20	13 27	15 37	17 38	19 31	21 21	23 18	01 25	03 35	05 36	07 29
22/23	09 19	11 16	13 23	15 33	17 34	19 27	21 17	23 14	01 21	03 31	05 32	07 25
23/24	09 15	11 12	13 19	15 29	17 30	19 23	21 13	23 10	01 17	03 27	05 28	07 21
24/25	09 11	11 08	13 15	15 25	17 26	19 19	21 09	23 06	01 13	03 23	05 24	07 17
25/26	09 07	11 04	13 11	15 21	17 22	19 15	21 05	23 02	01 09	03 19	05 20	07 13
26/27	09 03	11 00	13 07	15 17	17 18	19 11	21 01	22 58	01 05	03 15	05 16	07 09
27/28	09 00	10 57	13 04	15 14	17 15	19 08	20 58	22 55	01 02	03 12	05 13	07 06
28/29	08 56	10 53	13 00	15 10	17 11	19 04	20 54	22 51	00 58	03 08	05 09	07 02
29	08 52	10 49	12 56	15 06	17 07	19 00	20 50	22 47	-- --	-- --	-- --	-- --

लग्नसाधन कोष्ठक (1)

(लीप इयर हो तो केवल फरवरी के बाद के महीनों में अभीष्ट तारीख में एक जोड़कर इस कोष्ठक का प्रयोग करें।)

तारीख	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
मार्च 1	-- --	-- --	-- --	-- --	--- ---	---	-- --	-- --	00 58	03 08	05 09	07 02
1/2	08 52	10 49	12 56	15 06	17 07	19 00	20 50	22 47	00 54	03 04	05 05	06 58
2/3	08 48	10 45	12 52	15 02	17 03	18 56	20 46	22 43	00 50	03 00	05 01	06 54
3/4	08 44	10 41	12 48	14 58	16 59	18 52	20 42	22 39	00 46	02 56	04 57	06 50
4/5	08 40	10 37	12 44	14 54	16 55	18 48	20 38	22 35	00 42	02 52	04 53	06 46
5/6	08 36	10 33	12 40	14 50	16 51	18 44	20 34	22 31	00 38	02 48	04 49	06 42
6/7	08 32	10 29	12 36	14 46	16 47	18 40	20 30	22 27	00 34	02 44	04 45	06 38
7/8	08 28	10 25	12 32	14 42	16 43	18 36	20 26	22 23	00 30	02 40	04 41	06 34
8/9	08 24	10 21	12 28	14 38	16 39	18 32	20 22	22 19	00 26	02 36	04 37	06 30
9/10	08 20	10 17	12 24	14 34	16 35	18 28	20 18	22 15	00 22	02 32	04 33	06 26
10/11	08 17	10 14	12 21	14 31	16 32	18 25	20 15	22 12	00 19	02 29	04 30	06 23
11/12	08 13	10 10	12 17	14 27	16 28	18 21	20 11	22 08	00 15	02 25	04 26	06 19
12/13	08 09	10 06	12 13	14 23	16 24	18 17	20 07	22 04	00 11	02 21	04 22	06 15
13/14	08 05	10 02	12 09	14 19	16 20	18 13	20 03	22 00	00 07	02 17	04 18	06 11
14/15	08 01	09 58	12 05	14 15	16 16	18 09	19 59	21 56	00 03	02 13	04 14	06 07
15/16	07 57	09 54	12 01	14 11	16 12	18 05	19 55	21 52	23 59	02 09	04 10	06 03
16/17	07 53	09 50	11 57	14 07	16 08	18 01	19 51	21 48	23 55	02 05	04 06	05 59
17/18	07 49	09 46	11 53	14 03	16 04	17 57	19 47	21 44	23 51	02 01	04 02	05 55
18/19	07 45	09 42	11 49	13 59	16 00	17 53	19 43	21 40	23 47	01 57	03 58	05 51
19/20	07 41	09 38	11 45	13 55	15 56	17 49	19 39	21 36	23 43	01 53	03 54	05 47
20/21	07 37	09 34	11 41	13 51	15 52	17 45	19 35	21 32	23 39	01 49	03 50	05 43
21/22	07 33	09 30	11 37	13 47	15 48	17 41	19 31	21 28	23 35	01 45	03 46	05 39
22/23	07 29	09 26	11 33	13 43	15 44	17 37	19 27	21 24	23 31	01 41	03 42	05 35
23/24	07 25	09 22	11 29	13 39	15 40	17 33	19 23	21 20	23 27	01 37	03 38	05 31
24/25	07 21	09 18	11 25	13 35	15 36	17 29	19 19	21 16	23 23	01 33	03 34	05 27
25/26	07 17	09 14	11 21	13 31	15 32	17 25	19 15	21 12	23 19	01 29	03 30	05 23
26/27	07 13	09 10	11 17	13 27	15 28	17 21	19 11	21 08	23 15	01 25	03 26	05 19
27/28	07 10	09 07	11 14	13 24	15 25	17 18	19 08	21 05	23 12	01 22	03 23	05 16
28/29	07 06	09 03	11 10	13 20	15 21	17 14	19 04	21 01	23 08	01 18	03 19	05 12
29/30	07 02	08 59	11 06	13 16	15 17	17 10	19 00	20 57	23 04	01 14	03 15	05 08
30/31	06 58	08 55	11 02	13 12	15 13	17 06	18 56	20 53	23 00	01 10	03 11	05 04
31	06 54	08 51	10 58	13 08	15 09	17 02	18 52	20 49	22 56	-- --	-- --	-- --
अप्रैल 1	-- --	-- --	-- --	-- --	-- --	-- ---	-- --	-- --	-- --	01 06	03 07	05 00
1/2	06 50	08 47	10 54	13 04	15 05	16 58	18 48	20 46	22 52	01 02	03 03	04 56
2/3	06 46	08 43	10 50	13 00	15 01	16 54	18 44	20 42	22 48	00 58	02 59	04 52
3/4	06 42	08 39	10 46	12 56	14 57	16 50	18 40	20 38	22 44	00 54	02 55	04 48
4/5	06 38	08 35	10 42	12 52	14 53	16 46	18 36	20 34	22 40	00 50	02 51	04 44
5/6	06 34	08 31	10 38	12 48	14 49	16 42	18 32	20 30	22 36	00 46	02 47	04 40
6/7	06 30	08 27	10 34	12 44	14 45	16 38	18 28	20 26	22 32	00 42	02 43	04 36
7/8	06 26	08 23	10 30	12 40	14 41	16 34	18 24	20 22	22 28	00 38	02 39	04 32
8/9	06 22	08 19	10 26	12 36	14 37	16 30	18 20	20 18	22 24	00 34	02 35	04 28
9/10	06 18	08 15	10 22	12 32	14 33	16 26	18 16	20 14	22 20	00 30	02 31	04 24
10/11	06 15	08 12	10 19	12 29	14 30	16 23	18 13	20 11	22 17	00 27	02 28	04 21
11/12	06 11	08 08	10 15	12 25	14 26	16 19	18 09	20 07	22 13	00 23	02 24	04 17
12/13	06 07	08 04	10 11	12 21	14 22	16 15	18 05	20 03	22 09	00 19	02 20	04 13
13/14	06 03	08 00	10 07	12 17	14 18	16 11	18 01	19 59	22 05	00 15	02 16	04 09
14/15	05 59	07 56	10 03	12 13	14 14	16 07	17 57	19 55	22 01	00 11	02 12	04 05
15/16	05 55	07 52	09 59	12 09	14 10	16 03	17 53	19 51	21 57	00 07	02 08	04 01
16/17	05 51	07 48	09 55	12 05	14 06	15 59	17 49	19 47	21 53	00 03	02 04	03 57
17/18	05 47	07 44	09 51	12 01	14 02	15 55	17 45	19 43	21 49	23 59	02 00	03 53
18/19	05 43	07 40	09 47	11 57	13 58	15 51	17 41	19 39	21 45	23 55	01 56	03 49
19/20	05 39	07 36	09 43	11 53	13 54	15 47	17 37	19 35	21 41	23 51	01 52	03 45
20/21	05 35	07 32	09 39	11 49	13 50	15 43	17 33	19 31	21 37	23 47	01 48	03 41
21/22	05 31	07 28	09 35	11 45	13 46	15 39	17 29	19 27	21 33	23 43	01 44	03 37
22/23	05 27	07 24	09 31	11 41	13 42	15 35	17 25	19 23	21 29	23 39	01 40	03 33
23/24	05 23	07 20	09 27	11 37	13 38	15 31	17 21	19 19	21 25	23 35	01 36	03 29
24/25	05 19	07 16	09 23	11 33	13 34	15 27	17 17	19 15	21 21	23 31	01 32	03 25
25/26	05 15	07 12	09 19	11 29	13 30	15 23	17 13	19 11	21 17	23 27	01 28	03 21
26/27	05 11	07 08	09 15	11 25	13 26	15 19	17 09	19 07	21 13	23 23	01 24	03 17
27/28	05 08	07 05	09 12	11 22	13 23	15 16	17 06	19 04	21 10	23 20	01 21	03 14
28/29	05 04	07 01	09 08	11 18	13 19	15 12	17 02	19 00	21 06	23 16	01 17	03 10
29/30	05 00	06 57	09 04	11 14	13 15	15 08	16 58	18 56	21 02	23 12	01 13	03 06
30	04 56	06 53	09 00	11 10	13 11	15 04	16 54	18 52	20 58	23 08	-- ---	-- --

लग्नसाधन कोष्ठक (1)

(लीप इयर हो तो केवल फरवरी के बाद के महीनों में अभीष्ट तारीख में एक जोड़कर इस कोष्ठक का प्रयोग करें।)

तारीख	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
मई 1	-- --	-- --	-- --	-- --	-- --	-- --	-- --	-- --	-- --	-- --	01 09	03 02
1/2	04 52	06 50	08 56	11 06	13 07	15 00	16 50	18 48	20 55	23 04	01 05	02 58
2/3	04 48	06 46	08 52	11 02	13 03	14 56	16 46	18 44	20 51	23 00	01 01	02 54
3/4	04 44	06 42	08 48	10 58	12 59	14 52	16 42	18 40	20 47	22 56	00 57	02 50
4/5	04 40	06 38	08 44	10 54	12 55	14 48	16 38	18 36	20 43	22 52	00 53	02 46
5/6	04 36	06 34	08 40	10 50	12 51	14 44	16 34	18 32	20 39	22 48	00 49	02 42
6/7	04 32	06 30	08 36	10 46	12 47	14 40	16 30	18 28	20 35	22 44	00 45	02 38
7/8	04 28	06 26	08 32	10 42	12 43	14 36	16 26	18 24	20 31	22 40	00 41	02 34
8/9	04 24	06 22	08 28	10 38	12 39	14 32	16 22	18 20	20 27	22 36	00 37	02 30
9/10	04 20	06 18	08 24	10 34	12 35	14 28	16 18	18 16	20 23	22 32	00 33	02 26
10/11	04 17	06 15	08 21	10 31	12 32	14 25	16 15	18 13	20 20	22 29	00 30	02 23
11/12	04 13	06 11	08 17	10 27	12 28	14 21	16 11	18 09	20 16	22 25	00 26	02 19
12/13	04 09	06 07	08 13	10 23	12 24	14 17	16 07	18 05	20 12	22 21	00 22	02 15
13/14	04 05	06 03	08 09	10 19	12 20	14 13	16 03	18 01	20 08	22 17	00 18	02 11
14/15	04 01	05 59	08 05	10 15	12 16	14 09	15 59	17 57	20 04	22 13	00 14	02 07
15/16	03 57	05 55	08 01	10 11	12 12	14 05	15 55	17 53	20 00	22 09	00 10	02 03
16/17	03 53	05 51	07 57	10 07	12 08	14 01	15 51	17 49	19 56	22 05	00 06	01 59
17/18	03 49	05 47	07 53	10 03	12 04	13 57	15 47	17 45	19 52	22 01	00 02	01 55
18/19	03 45	05 43	07 49	09 59	12 00	13 53	15 43	17 41	19 48	21 57	23 58	01 51
19/20	03 41	05 39	07 45	09 55	11 56	13 49	15 39	17 37	19 44	21 53	23 54	01 47
20/21	03 37	05 35	07 41	09 51	11 52	13 45	15 35	17 33	19 40	21 49	23 50	01 43
21/22	03 33	05 31	07 37	09 47	11 48	13 41	15 31	17 29	19 36	21 45	23 46	01 39
22/23	03 29	05 27	07 33	09 43	11 44	13 37	15 27	17 25	19 32	21 41	23 42	01 35
23/24	03 25	05 23	07 29	09 39	11 40	13 33	15 23	17 21	19 28	21 37	23 38	01 31
24/25	03 21	05 19	07 25	09 35	11 36	13 29	15 19	17 17	19 24	21 33	23 34	01 27
25/26	03 17	05 15	07 21	09 31	11 32	13 25	15 15	17 13	19 20	21 29	23 30	01 23
26/27	03 13	05 11	07 17	09 27	11 28	13 21	15 11	17 09	19 16	21 25	23 26	01 19
27/28	03 10	05 08	07 14	09 24	11 25	13 18	15 08	17 06	19 13	21 22	23 23	01 16
28/29	03 06	05 04	07 10	09 20	11 21	13 14	15 04	17 02	19 09	21 18	23 19	01 12
29/30	03 02	05 00	07 06	09 16	11 17	13 10	15 00	16 58	19 05	21 14	23 15	01 08
30/31	02 58	04 56	07 02	09 12	11 13	13 06	14 56	16 54	19 01	21 10	23 11	01 04
31	02 54	04 52	06 58	09 08	11 09	13 02	14 52	16 50	18 57	21 06	23 07	-- ---
जून 1	-- --	-- --	-- --	-- --	-- --	-- --	-- --	-- --	-- --	-- --	-- --	01 00
1/2	02 50	04 48	06 55	09 04	11 05	12 58	14 48	16 46	18 53	21 02	23 03	00 56
2/3	02 46	04 44	06 51	09 00	11 01	12 54	14 44	16 42	18 49	20 58	22 59	00 52
3/4	02 42	04 40	06 47	08 56	10 57	12 50	14 40	16 38	18 45	20 54	22 55	00 48
4/5	02 38	04 36	06 43	08 52	10 53	12 46	14 36	16 34	18 41	20 50	22 51	00 44
5/6	02 34	04 32	06 39	08 48	10 49	12 42	14 32	16 30	18 37	20 46	22 47	00 40
6/7	02 30	04 28	06 35	08 44	10 45	12 38	14 28	16 26	18 33	20 42	22 43	00 36
7/8	02 26	04 24	06 31	08 40	10 41	12 34	14 24	16 22	18 29	20 38	22 39	00 32
8/9	02 22	04 20	06 27	08 36	10 37	12 30	14 20	16 18	18 25	20 34	22 35	00 28
9/10	02 18	04 16	06 23	08 32	10 33	12 26	14 16	16 14	18 21	20 30	22 31	00 24
10/11	02 15	04 13	06 20	08 29	10 30	12 23	14 13	16 11	18 18	20 27	22 28	00 21
11/12	02 11	04 09	06 16	08 25	10 26	12 19	14 09	16 07	18 14	20 23	22 24	00 17
12/13	02 07	04 05	06 12	08 21	10 22	12 15	14 05	16 03	18 10	20 19	22 20	00 13
13/14	02 03	04 01	06 08	08 17	10 18	12 11	14 01	15 59	18 06	20 15	22 16	00 09
14/15	01 59	03 57	06 04	08 13	10 14	12 07	13 57	15 55	18 02	20 11	22 12	00 05
15/16	01 55	03 53	06 00	08 09	10 10	12 03	13 53	15 51	17 58	20 07	22 08	00 01
16	01 51	03 49	05 56	08 05	10 06	11 59	13 49	15 47	17 54	20 03	22 04	23 57
17	01 47	03 45	05 52	08 01	10 02	11 55	13 45	15 43	17 50	19 59	22 00	23 53
18	01 43	03 41	05 48	07 57	09 58	11 51	13 41	15 39	17 46	19 55	21 56	23 49
19	01 39	03 37	05 44	07 53	09 54	11 47	13 37	15 35	17 42	19 51	21 52	23 45
20	01 35	03 33	05 40	07 49	09 50	11 43	13 33	15 31	17 38	19 47	21 48	23 41
21	01 31	03 29	05 36	07 45	09 46	11 39	13 29	15 27	17 34	19 43	21 44	23 37
22	01 27	03 25	05 32	07 41	09 42	11 35	13 25	15 23	17 30	19 39	21 40	23 33
23	01 23	03 21	05 28	07 37	09 38	11 31	13 21	15 19	17 26	19 35	21 36	23 29
24	01 19	03 17	05 24	07 33	09 34	11 27	13 17	15 15	17 22	19 31	21 32	23 25
25	01 15	03 13	05 20	07 29	09 30	11 23	13 13	15 11	17 18	19 27	21 28	23 21
26	01 11	03 09	05 16	07 25	09 26	11 19	13 09	15 07	17 14	19 23	21 24	23 17
27	01 08	03 06	05 13	07 22	09 23	11 16	13 06	15 04	17 11	19 20	21 21	23 14
28	01 04	03 02	05 09	07 18	09 19	11 12	13 02	15 00	17 07	19 16	21 17	23 10
29	01 00	02 58	05 05	07 14	09 15	11 08	12 58	14 56	17 03	19 12	21 13	23 06
30	00 56	02 54	05 01	07 10	09 11	11 04	12 54	14 52	16 59	19 08	21 09	23 02

लग्नसाधन कोष्ठक (1)

(लीप इयर हो तो केवल फरवरी के बाद के महीनों में अभीष्ट तारीख में एक जोड़कर इस कोष्ठक का प्रयोग करें।)

तारीख	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
जुलाई 1	00 52	02 50	04 57	07 06	09 07	11 00	12 51	14 48	16 55	19 04	21 05	22 58
2	00 48	02 46	04 53	07 02	09 03	10 56	12 47	14 44	16 51	19 00	21 01	22 54
3	00 44	02 42	04 49	06 58	08 59	10 52	12 43	14 40	16 47	18 56	20 57	22 50
4	00 40	02 38	04 45	06 54	08 55	10 48	12 39	14 36	16 43	18 52	20 53	22 46
5	00 36	02 34	04 41	06 50	08 51	10 44	12 35	14 32	16 39	18 48	20 49	22 42
6	00 32	02 30	04 37	06 46	08 47	10 40	12 31	14 28	16 35	18 44	20 45	22 38
7	00 28	02 26	04 33	06 42	08 43	10 36	12 27	14 24	16 31	18 40	20 41	22 34
8	00 24	02 22	04 29	06 38	08 39	10 32	12 23	14 20	16 27	18 36	20 37	22 30
9	00 20	02 18	04 25	06 34	08 35	10 28	12 19	14 16	16 23	18 32	20 33	22 26
10	00 17	02 15	04 22	06 31	08 32	10 25	12 16	14 13	16 20	18 29	20 30	22 23
11	00 13	02 11	04 18	06 27	08 28	10 21	12 12	14 09	16 16	18 25	20 26	22 19
12	00 09	02 07	04 14	06 23	08 24	10 17	12 08	14 05	16 12	18 21	20 22	22 15
13	00 05	02 03	04 10	06 19	08 20	10 13	12 04	14 01	16 08	18 17	20 18	22 11
14	00 01	01 59	04 06	06 15	08 16	10 09	12 00	13 57	16 04	18 13	20 14	22 07
14/15	23 57	01 55	04 02	06 11	08 12	10 05	11 56	13 53	16 00	18 09	20 10	22 03
15/16	23 53	01 51	03 58	06 07	08 08	10 01	11 52	13 49	15 56	18 05	20 06	21 59
16/17	23 49	01 47	03 54	06 03	08 04	09 57	11 48	13 45	15 52	18 01	20 02	21 55
17/18	23 45	01 43	03 50	05 59	08 00	09 53	11 44	13 41	15 48	17 57	19 58	21 51
18/19	23 41	01 39	03 46	05 55	07 56	09 49	11 40	13 37	15 44	17 53	19 54	21 47
19/20	23 37	01 35	03 42	05 51	07 52	09 45	11 36	13 33	15 40	17 49	19 50	21 43
20/21	23 33	01 31	03 38	05 47	07 48	09 41	11 32	13 29	15 36	17 45	19 46	21 39
21/22	23 29	01 27	03 34	05 43	07 44	09 37	11 28	13 25	15 32	17 41	19 42	21 35
22/23	23 25	01 23	03 30	05 39	07 40	09 33	11 24	13 21	15 28	17 37	19 38	21 31
23/24	23 21	01 19	03 26	05 35	07 36	09 29	11 20	13 17	15 24	17 33	19 34	21 27
24/25	23 17	01 15	03 22	05 31	07 32	09 25	11 16	13 13	15 20	17 29	19 30	21 23
25/26	23 13	01 11	03 18	05 27	07 28	09 21	11 12	13 09	15 16	17 25	19 26	21 19
26/27	23 09	01 07	03 14	05 23	07 24	09 17	11 08	13 05	15 12	17 21	19 22	21 15
27/28	23 06	01 04	03 11	05 20	07 21	09 14	11 05	13 02	15 09	17 18	19 19	21 12
28/29	23 02	01 00	03 07	05 16	07 17	09 10	11 01	12 58	15 05	17 14	19 15	21 08
29/30	22 58	00 56	03 03	05 12	07 13	09 06	10 57	12 54	15 01	17 10	19 11	21 04
30/31	22 54	00 52	02 59	05 08	07 09	09 02	10 53	12 50	14 57	17 06	19 07	21 00
31	22 50	-- --	-- --	-- --	-- --	-- --	-- --	-- --	-- --	-- --	-- --	-- --
अग. 1	-- --	00 48	02 55	05 04	07 06	08 58	10 49	12 46	14 53	17 02	19 04	20 56
1/2	22 47	00 44	02 51	05 00	07 02	08 54	10 45	12 42	14 49	16 58	19 00	20 52
2/3	22 43	00 40	02 47	04 56	06 58	08 50	10 41	12 38	14 45	16 54	18 56	20 48
3/4	22 39	00 36	02 43	04 52	06 54	08 46	10 37	12 34	14 41	16 50	18 52	20 44
4/5	22 35	00 32	02 39	04 48	06 50	08 42	10 33	12 30	14 37	16 46	18 48	20 40
5/6	22 31	00 28	02 35	04 44	06 46	08 38	10 29	12 26	14 33	16 42	18 44	20 36
6/7	22 27	00 24	02 31	04 40	06 42	08 34	10 25	12 22	14 29	16 38	18 40	20 32
7/8	22 23	00 20	02 27	04 36	06 38	08 30	10 21	12 18	14 25	16 34	18 36	20 28
8/9	22 19	00 16	02 23	04 32	06 34	08 26	10 17	12 14	14 21	16 30	18 32	20 24
9/10	22 15	00 12	02 19	04 28	06 30	08 22	10 14	12 10	14 17	16 26	18 28	20 20
10/11	22 12	00 09	02 16	04 25	06 27	08 19	10 10	12 07	14 14	16 23	18 25	20 17
11/12	22 08	00 05	02 12	04 21	06 23	08 15	10 06	12 03	14 10	16 19	18 21	20 13
12/13	22 04	00 01	02 08	04 17	06 19	08 11	10 02	11 59	14 06	16 15	18 17	20 09
13/14	22 00	23 57	02 04	04 13	06 15	08 07	09 58	11 55	14 02	16 11	18 13	20 05
14/15	21 56	23 53	02 00	04 09	06 11	08 03	09 54	11 51	13 58	16 07	18 09	20 01
15/16	21 52	23 49	01 56	04 05	06 07	07 59	09 50	11 47	13 54	16 03	18 05	19 57
16/17	21 48	23 45	01 52	04 01	06 03	07 55	09 46	11 43	13 50	15 59	18 01	19 53
17/18	21 44	23 41	01 48	03 57	05 59	07 51	09 42	11 39	13 46	15 55	17 57	19 49
18/19	21 40	23 37	01 44	03 53	05 55	07 47	09 38	11 35	13 42	15 51	17 53	19 45
19/20	21 36	23 33	01 40	03 49	05 51	07 43	09 34	11 31	13 38	15 47	17 49	19 41
20/21	21 32	23 29	01 36	03 45	05 47	07 39	09 30	11 27	13 34	15 43	17 45	19 37
21/22	21 28	23 25	01 32	03 41	05 43	07 35	09 26	11 23	13 30	15 39	17 41	19 33
22/23	21 24	23 21	01 28	03 37	05 39	07 31	09 22	11 19	13 26	15 35	17 37	19 29
23/24	21 20	23 17	01 24	03 33	05 35	07 27	09 18	11 15	13 22	15 31	17 33	19 25
24/25	21 16	23 13	01 20	03 29	05 31	07 23	09 14	11 11	13 18	15 27	17 29	19 21
25/26	21 12	23 09	01 16	03 25	05 27	07 19	09 10	11 07	13 14	15 23	17 25	19 17
26/27	21 08	23 05	01 12	03 21	05 23	07 15	09 06	11 03	13 10	15 19	17 21	19 13
27/28	21 05	23 02	01 09	03 18	05 20	07 12	09 03	11 00	13 07	15 16	17 18	19 10
28/29	21 01	22 58	01 05	03 14	05 16	07 08	08 59	10 56	13 03	15 12	17 14	19 06
29/30	20 57	22 54	01 01	03 10	05 12	07 04	08 55	10 52	12 59	15 08	17 10	19 02
30/31	20 53	22 50	00 57	03 06	05 08	07 00	08 51	10 48	12 55	15 04	17 06	18 58
31	20 49	22 46	-- --	-- --	-- --	-- --	-- --	-- --	-- --	-- --	-- --	-- --

लग्नसाधन कोष्ठक (1)

(लीप इयर हो तो केवल फरवरी के बाद के महीनों में अभीष्ट तारीख में एक जोड़कर इस कोष्ठक का प्रयोग करें।)

तारीख	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
सितं. 1	-- --	-- --	00 53	03 02	05 04	06 56	08 47	10 44	12 51	15 00	17 02	18 54
1/2	20 45	22 42	00 49	02 58	05 00	06 52	08 43	10 40	12 47	14 56	16 58	18 50
2/3	20 41	22 38	00 45	02 54	04 56	06 48	08 39	10 36	12 43	14 52	16 54	18 46
3/4	20 37	22 34	00 41	02 50	04 52	06 44	08 35	10 32	12 39	14 48	16 50	18 42
4/5	20 33	22 30	00 37	02 46	04 48	06 40	08 31	10 28	12 35	14 44	16 46	18 38
5/6	20 29	22 26	00 33	02 42	04 44	06 36	08 27	10 24	12 31	14 40	16 42	18 34
6/7	20 25	22 22	00 29	02 38	04 40	06 32	08 23	10 20	12 27	14 36	16 38	18 30
7/8	20 21	22 18	00 25	02 34	04 36	06 28	08 19	10 16	12 23	14 32	16 34	18 26
8/9	20 17	22 14	00 21	02 30	04 32	06 24	08 15	10 12	12 19	14 28	16 30	18 22
9/10	20 13	22 10	00 17	02 26	04 28	06 20	08 11	10 08	12 15	14 24	16 26	18 18
10/11	20 10	22 07	00 14	02 23	04 25	06 17	08 08	10 05	12 12	14 21	16 23	18 15
11/12	20 06	22 03	00 10	02 19	04 21	06 13	08 04	10 01	12 08	14 17	16 19	18 11
12/13	20 02	21 59	00 06	02 15	04 17	06 09	08 00	09 57	12 04	14 13	16 15	18 07
13/14	19 58	21 55	00 02	02 11	04 13	06 05	07 56	09 53	12 00	14 09	16 11	18 03
14/15	19 54	21 51	23 58	02 07	04 09	06 01	07 52	09 49	11 56	14 05	16 07	17 59
15/16	19 50	21 47	23 54	02 03	04 05	05 57	07 48	09 45	11 52	14 01	16 03	17 55
16/17	19 46	21 43	23 50	01 59	04 01	05 53	07 44	09 41	11 48	13 57	15 59	17 51
17/18	19 42	21 39	23 46	01 55	03 57	05 49	07 40	09 37	11 44	13 53	15 55	17 47
18/19	19 38	21 35	23 42	01 51	03 53	05 45	07 36	09 33	11 40	13 49	15 51	17 43
19/20	19 34	21 31	23 38	01 47	03 49	05 41	07 32	09 29	11 36	13 45	15 47	17 39
20/21	19 30	21 27	23 34	01 43	03 45	05 37	07 28	09 25	11 32	13 41	15 43	17 35
21/22	19 26	21 23	23 30	01 39	03 41	05 33	07 24	09 21	11 28	13 37	15 39	17 31
22/23	19 22	21 19	23 26	01 35	03 37	05 29	07 20	09 17	11 24	13 33	15 35	17 27
23/24	19 18	21 15	23 22	01 31	03 33	05 25	07 16	09 13	11 20	13 29	15 31	17 23
24/25	19 14	21 11	23 18	01 27	03 29	05 21	07 12	09 09	11 16	13 25	15 27	17 19
25/26	19 10	21 07	23 14	01 23	03 25	05 17	07 08	09 05	11 12	13 21	15 23	17 15
26/27	19 06	21 03	23 10	01 19	03 21	05 13	07 04	09 01	11 08	13 17	15 19	17 11
27/28	19 03	21 00	23 07	01 16	03 18	05 10	07 01	08 58	11 05	13 14	15 16	17 08
28/29	18 59	20 56	23 03	01 12	03 14	05 06	06 57	08 54	11 01	13 10	15 12	17 04
29/30	18 55	20 52	22 59	01 08	03 10	05 02	06 53	08 50	10 57	13 06	15 08	17 00
30	18 51	20 48	22 55	-- --	-- --	-- --	-- --	-- --	-- --	-- --	-- --	-- --
अक्तू. 1	-- --	-- --	-- --	01 04	03 06	04 58	06 49	08 46	10 53	13 02	15 04	16 56
1/2	18 47	20 44	22 51	01 00	03 02	04 54	06 45	08 42	10 49	12 58	15 00	16 52
2/3	18 43	20 40	22 47	00 56	02 58	04 50	06 41	08 38	10 45	12 54	14 56	16 48
3/4	18 39	20 36	22 43	00 52	02 54	04 46	06 37	08 34	10 41	12 50	14 52	16 44
4/5	18 35	20 32	22 39	00 48	02 50	04 42	06 33	08 30	10 37	12 46	14 48	16 40
5/6	18 31	20 28	22 35	00 44	02 46	04 38	06 29	08 26	10 33	12 42	14 44	16 36
6/7	18 27	20 24	22 31	00 40	02 42	04 34	06 25	08 22	10 29	12 38	14 40	16 32
7/8	18 23	20 20	22 27	00 36	02 38	04 30	06 21	08 18	10 25	12 34	14 36	16 28
8/9	18 19	20 16	22 23	00 32	02 34	04 26	06 17	08 14	10 21	12 30	14 32	16 24
9/10	18 15	20 12	22 19	00 28	02 30	04 22	06 13	08 10	10 17	12 26	14 28	16 20
10/11	18 12	20 09	22 16	00 25	02 27	04 19	06 10	08 07	10 14	12 23	14 25	16 17
11/12	18 08	20 05	22 12	00 21	02 23	04 15	06 06	08 03	10 10	12 19	14 21	16 13
12/13	18 04	20 01	22 08	00 17	02 19	04 11	06 02	07 59	10 06	12 15	14 17	16 09
13/14	18 00	19 57	22 04	00 13	02 15	04 07	05 58	07 55	10 02	12 11	14 13	16 05
14/15	17 56	19 53	22 00	00 09	02 11	04 03	05 54	07 51	09 58	12 07	14 09	16 01
15/16	17 52	19 49	21 56	00 05	02 07	03 59	05 50	07 47	09 54	12 03	14 05	15 57
16/17	17 48	19 45	21 52	00 01	02 03	03 55	05 46	07 43	09 50	11 59	14 01	15 53
17/18	17 44	19 41	21 48	23 57	01 59	03 51	05 42	07 39	09 46	11 55	13 57	15 49
18/19	17 40	19 37	21 44	23 53	01 55	03 47	05 38	07 35	09 42	11 51	13 53	15 45
19/20	17 36	19 33	21 40	23 49	01 51	03 43	05 34	07 31	09 38	11 47	13 49	15 41
20/21	17 32	19 29	21 36	23 45	01 47	03 39	05 30	07 27	09 34	11 43	13 45	15 37
21/22	17 28	19 25	21 32	23 41	01 43	03 35	05 26	07 23	09 30	11 39	13 41	15 33
22/23	17 24	19 21	21 28	23 37	01 39	03 31	05 22	07 19	09 26	11 35	13 37	15 29
23/24	17 20	19 17	21 24	23 33	01 35	03 27	05 18	07 15	09 22	11 31	13 33	15 25
24/25	17 16	19 13	21 20	23 29	01 31	03 23	05 14	07 11	09 18	11 27	13 29	15 21
25/26	17 12	19 09	21 16	23 25	01 27	03 19	05 10	07 07	09 14	11 23	13 25	15 17
26/27	17 08	19 05	21 12	23 21	01 23	03 15	05 06	07 03	09 10	11 19	13 21	15 13
27/28	17 05	19 02	21 09	23 18	01 20	03 12	05 03	07 00	09 07	11 16	13 18	15 10
28/29	17 01	18 58	21 05	23 14	01 16	03 08	04 59	06 56	09 03	11 12	13 14	15 06
29/30	16 57	18 54	[illegible]	[illegible]	[illegible]	03 04	04 55	06 52	08 59	11 08	13 10	15 02
30/31	16 53	18 50	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	04 51	06 48	08 55	11 04	13 06	14 58
31	16 49	18 46	[illegible]	23 02	-- --	-- --	-- --	-- --	-- --	-- --	-- --	-- --

लग्नसाधन कोष्ठक (1)

(भाग 6)

(लीप इयर हो तो केवल फरवरी के बाद के महीनों में अभीष्ट तारीख में एक जोड़कर इस कोष्ठक का प्रयोग करें।)

तारीख	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
नवं. 1	-- --	-- --	-- --	-- --	01 04	02 56	04 47	06 44	08 51	11 00	13 02	14 54
1/2	16 45	18 42	20 49	22 58	01 00	02 52	04 43	06 40	08 47	10 56	12 58	14 50
2/3	16 41	18 38	20 45	22 54	00 56	02 48	04 39	06 36	08 43	10 52	12 54	14 46
3/4	16 37	18 34	20 41	22 50	00 52	02 44	04 35	06 32	08 39	10 48	12 50	14 42
4/5	16 33	18 30	20 37	22 46	00 48	02 40	04 31	06 28	08 35	10 44	12 46	14 38
5/6	16 29	18 26	20 33	22 42	00 44	02 36	04 27	06 24	08 31	10 40	12 42	14 34
6/7	16 25	18 22	20 29	22 38	00 40	02 32	04 23	06 20	08 27	10 36	12 38	14 30
7/8	16 21	18 18	20 25	22 34	00 36	02 28	04 19	06 16	08 23	10 32	12 34	14 26
8/9	16 17	18 14	20 21	22 30	00 32	02 24	04 15	06 12	08 19	10 28	12 30	14 22
9/10	16 14	18 11	20 18	22 26	00 29	02 21	04 12	06 09	08 16	10 25	12 27	14 19
10/11	16 10	18 07	20 14	22 23	00 25	02 17	04 08	06 05	08 12	10 21	12 23	14 15
11/12	16 06	18 03	20 10	22 19	00 21	02 13	04 04	06 01	08 08	10 17	12 19	14 11
12/13	16 02	17 59	20 06	22 15	00 17	02 09	04 00	05 57	08 04	10 13	12 15	14 07
13/14	15 58	17 55	20 02	22 11	00 13	02 05	03 56	05 53	08 00	10 09	12 11	14 03
14/15	15 54	17 51	19 58	22 07	00 09	02 01	03 52	05 49	07 56	10 05	12 07	13 59
15/16	15 50	17 47	19 54	22 03	00 05	01 57	03 48	05 45	07 52	10 01	12 03	13 55
16/17	15 46	17 43	19 50	21 59	00 01	01 53	03 44	05 41	07 48	09 57	11 59	13 51
17/18	15 42	17 39	19 46	21 55	23 57	01 49	03 40	05 37	07 44	09 53	11 55	13 47
18/19	15 38	17 35	19 42	21 51	23 53	01 45	03 36	05 33	07 40	09 49	11 51	13 43
19/20	15 34	17 31	19 38	21 47	23 49	01 41	03 32	05 29	07 36	09 45	11 47	13 39
20/21	15 30	17 27	19 34	21 43	23 45	01 37	03 28	05 25	07 32	09 41	11 43	13 35
21/22	15 26	17 23	19 30	21 39	23 41	01 33	03 24	05 21	07 28	09 37	11 39	13 31
22/23	15 22	17 19	19 26	21 35	23 37	01 29	03 20	05 17	07 24	09 33	11 35	13 27
23/24	15 18	17 15	19 22	21 31	23 33	01 25	03 16	05 13	07 20	09 29	11 31	13 23
24/25	15 14	17 11	19 18	21 27	23 29	01 21	03 12	05 09	07 16	09 25	11 27	13 19
25/26	15 10	17 07	19 14	21 23	23 25	01 17	03 08	05 05	07 12	09 21	11 23	13 15
26/27	15 07	17 04	19 11	21 19	23 22	01 14	03 05	05 02	07 09	09 18	11 20	13 12
27/28	15 03	17 00	19 07	21 16	23 18	01 10	03 01	04 58	07 05	09 14	11 16	13 08
28/29	14 59	16 56	19 03	21 12	23 14	01 06	02 57	04 54	07 01	09 10	11 12	13 04
29/30	14 55	16 52	18 59	21 08	23 10	01 02	02 53	04 50	06 57	09 06	11 08	13 00
30	14 51	16 48	18 55	21 04	23 06	-- --	-- --	-- --	-- --	-- --	-- --	-- --
दिसं. 1	-- --	-- --	-- --	-- --	-- --	00 58	02 49	04 46	06 53	09 02	11 04	12 56
1/2	14 47	16 44	18 51	21 00	23 02	00 54	02 45	04 42	06 49	08 58	11 00	12 52
2/3	14 43	16 40	18 47	20 56	22 58	00 50	02 41	04 38	06 45	08 54	10 56	12 48
3/4	14 39	16 36	18 43	20 52	22 54	00 46	02 37	04 34	06 41	08 50	10 52	12 44
4/5	14 35	16 32	18 39	20 48	22 50	00 42	02 33	04 30	06 37	08 46	10 48	12 40
5/6	14 31	16 28	18 35	20 44	22 46	00 38	02 29	04 26	06 33	08 42	10 44	12 36
6/7	14 27	16 24	18 31	20 40	22 42	00 34	02 25	04 22	06 29	08 38	10 40	12 32
7/8	14 23	16 20	18 27	20 36	22 38	00 30	02 21	04 18	06 25	08 34	10 36	12 28
8/9	14 19	16 16	18 23	20 32	22 34	00 26	02 17	04 14	06 21	08 30	10 32	12 24
9/10	14 15	16 12	18 19	20 28	22 31	00 22	02 13	04 10	06 17	08 26	10 28	12 20
10/11	14 12	16 09	18 16	20 25	22 27	00 19	02 10	04 07	06 14	08 23	10 25	12 17
11/12	14 08	16 05	18 12	20 21	22 23	00 15	02 06	04 03	06 10	08 19	10 21	12 13
12/13	14 04	16 01	18 08	20 17	22 19	00 11	02 02	03 59	06 06	08 15	10 17	12 09
13/14	14 00	15 57	18 04	20 13	22 15	00 07	01 58	03 55	06 02	08 11	10 13	12 05
14/15	13 56	15 53	18 00	20 09	22 11	00 03	01 54	03 51	05 58	08 07	10 09	12 01
15/16	13 52	15 49	17 56	20 05	22 07	23 59	01 50	03 47	05 54	08 03	10 05	11 57
16/17	13 48	15 45	17 52	20 01	22 03	23 55	01 46	03 43	05 50	07 59	10 01	11 53
17/18	13 44	15 41	17 48	19 57	21 59	23 51	01 42	03 39	05 46	07 55	09 57	11 49
18/19	13 40	15 37	17 44	19 53	21 55	23 47	01 38	03 35	05 42	07 51	09 53	11 45
19/20	13 36	15 33	17 40	19 49	21 51	23 43	01 34	03 31	05 38	07 47	09 49	11 41
20/21	13 32	15 29	17 36	19 45	21 47	23 39	01 30	03 27	05 34	07 43	09 45	11 37
21/22	13 28	15 25	17 32	19 41	21 43	23 35	01 26	03 23	05 30	07 39	09 41	11 33
22/23	13 24	15 21	17 28	19 37	21 39	23 31	01 22	03 19	05 26	07 35	09 37	11 29
23/24	13 20	15 17	17 24	19 33	21 35	23 27	01 18	03 15	05 22	07 31	09 33	11 25
24/25	13 16	15 13	17 20	19 29	21 31	23 23	01 14	03 11	05 18	07 27	09 29	11 21
25/26	13 12	15 09	17 16	19 25	21 27	23 19	01 10	03 07	05 14	07 23	09 25	11 17
26/27	13 08	15 05	17 12	19 21	21 24	23 15	01 0[illegible]	03 03	05 10	07 19	09 21	11 13
27/28	13 05	15 02	17 09	19 18	21 20	23 12	01 03	03 00	05 07	07 16	09 18	11 10
28/29	13 01	14 58	17 05	19 14	21 16	23 08	00 59	02 56	05 03	07 12	09 14	11 06
29/30	12 57	14 54	17 01	19 10	21 12	23 04	00 55	02 52	04 59	07 08	09 10	11 02
30/31	12 53	14 50	16 57	19 06	21 08	23 00	00 51	02 48	04 55	07 04	09 06	10 58
31/32	12 49	14 46	16 53	19 02	21 04	22 56	00 47	02 44	04 51	07 00	09 02	10 54
32	12 45	14 42	16 49	18 58	21 00	22 52	-- --	-- --	-- --	-- --	-- --	-- --

लग्नसाधन कोष्ठक (2)

लग्न→	मेष (−)	वृष (−)	मिथुन (−)	कर्क (−)	सिंह (−)	कन्या (−)	लग्न→	मेष (−)	वृष (−)	मिथुन (−)	कर्क (−)	सिंह (−)	कन्या (−)
अक्षांश↓ (उत्तर)	तुला (+)	वृश्चिक (+)	धनु (+)	मकर (+)	कुम्भ (+)	मीन (+)	अक्षांश↓ (उत्तर)	तुला (+)	वृश्चिक (+)	धनु (+)	मकर (+)	कुम्भ (+)	मीन (+)
अं. क.	मिनट	मिनट	मिनट	मिनट	मिनट	मिनट	अं. क.	मिनट	मिनट	मिनट	मिनट	मिनट	मिनट
08 00	5	11	14	13	8	1	23 00	16	33	42	38	24	4
08 30	5	12	15	13	8	1	23 30	16	34	43	39	24	4
09 00	6	12	16	14	9	2	24 00	17	35	44	40	25	4
09 30	6	13	16	15	9	2	24 30	17	35	45	41	25	5
10 00	6	14	17	16	10	2	25 00	17	36	46	42	26	5
10 30	7	14	18	17	10	2	25 30	18	37	47	43	26	5
11 00	7	15	19	17	11	2	26 00	18	38	48	44	27	5
11 30	8	16	20	18	11	2	26 30	18	39	50	45	28	5
12 00	8	16	21	19	12	2	27 00	19	40	51	46	28	5
12 30	8	17	22	20	12	2	27 30	19	41	52	47	29	5
13 00	9	18	23	21	13	2	28 00	20	41	53	48	30	5
13 30	9	19	24	21	13	2	28 30	20	42	54	49	30	5
14 00	9	19	25	22	14	2	29 00	21	43	55	50	31	5
14 30	10	20	25	23	14	3	29 30	21	44	56	51	31	6
15 00	10	21	26	24	15	3	30 00	21	45	58	52	32	6
15 30	10	21	27	25	15	3	30 30	22	46	59	53	33	6
16 00	11	22	28	26	16	3	31 00	22	47	60	54	33	6
16 30	11	23	29	27	16	3	31 30	23	48	61	56	34	6
17 00	11	24	30	28	17	3	32 00	23	49	62	57	35	6
17 30	12	24	31	28	17	3	32 30	24	50	64	58	35	6
18 00	12	25	32	29	18	3	33 00	24	51	65	59	36	6
18 30	12	26	33	30	18	3	33 30	25	52	66	60	37	7
19 00	13	27	34	31	19	3	34 00	25	53	67	61	37	7
19 30	13	27	35	32	20	3	34 30	26	54	69	62	38	7
20 00	13	28	36	33	20	4	35 00	26	55	70	64	39	7
20 30	14	29	37	34	21	4	35 30	26	56	71	65	40	7
21 00	14	30	38	35	21	4	36 00	27	57	73	66	40	7
21 30	15	31	39	35	22	4	36 30	27	58	74	67	41	7
22 00	15	31	40	36	22	4	37 00	28	59	76	69	42	7
22 30	15	32	41	37	23	4							

लग्नसाधन कोष्ठक (3)

सन्	संस्कार मिनट	सन्	संस्कार मिनट	सन्	संस्कार मिनट	सन्	संस्कार मिनट	सन्	संस्कार मिनट	सन्	संस्कार मिनट	सन्	संस्कार मिनट
1900	-3	1922	-1	1944	+2	1966	0	1988	+3	2010	+1	2032	+4
1901	-2	1923	0	1945	-1	1967	+1	1989	0	2011	+2	2033	+1
1902	-1	1924	+1	1946	0	1968	+2	1990	+1	2012	+3	2034	+2
1903	0	1925	-2	1947	+1	1969	-1	1991	+2	2013	0	2035	+3
1904	+1	1926	-1	1948	+2	1970	0	1992	+3	2014	+1	2036	+4
1905	-1	1927	0	1949	-1	1971	+1	1993	0	2015	+2	2037	+1
1906	-1	1928	+1	1950	0	1972	+2	1994	+1	2016	+3	2038	+2
1907	0	1929	-2	1951	+1	1973	0	1995	+2	2017	+1	2039	+3
1908	+1	1930	-1	1952	+2	1974	+1	1996	+3	2018	+2	2040	+4
1909	-2	1931	0	1953	-1	1975	+2	1997	0	2019	+3	2041	+1
1910	-1	1932	+1	1954	0	1976	+3	1998	+1	2020	+4	2042	+2
1911	0	1933	-1	1955	+1	1977	-1	1999	+2	2021	+1	2043	+4
1912	+1	1934	0	1956	+2	1978	+1	2000	+3	2022	+2	2044	+4
1913	-2	1935	+1	1957	-1	1979	+2	2001	0	2023	+3	2045	+1
1914	-1	1936	+2	1958	0	1980	+3	2002	+1	2024	+4	2046	+2
1915	0	1937	-1	1959	+1	1981	0	2003	+2	2025	+1	2047	+3
1916	+1	1938	0	1960	+2	1982	+1	2004	+3	2026	+2	2048	+4
1917	-2	1939	+1	1961	-1	1983	+2	2005	0	2027	+3	2049	+1
1918	-1	1940	+2	1962	0	1984	+3	2006	+1	2028	+4	2050	+2
1919	0	1941	-1	1963	+1	1985	0	2007	+2	2029	+1		
1920	+1	1942	0	1964	+2	1986	+1	2008	+3	2030	+2		
1921	-2	1943	+1	1965	-1	1987	+2	2009	0	2031	+3		

जातक की जन्मकुण्डली तुरन्त बनाइए

यहां आगे सन् 1941 से 2000 ई. तक (60 वर्षों) के सूर्यादि सभी ग्रहो के राशिचार (राशिप्रवेश) का काल (भा. स्टैं. टा.) दिया गया है। इसकी और पृष्ठ 352 पर दी गई लग्नारम्भ–ज्ञानपद्धति की सहायता से इस 60 वर्ष की अवधि के अन्तर्गत भारत के किसी भी नगर–ग्राम में उत्पन्न जातक की जन्मकुण्डली वस्तुतः 3–4 मिनट के भीतर ही बिना किसी गुणा–भाग के (केवल मौखिक जोड़–घटाव द्वारा) इस प्रकार बनाई जा सकती है।

अभीष्ट स्थान पर अभीष्ट तारीख को अभीष्ट समय पर पृ. 354 पर दिए लग्नकोष्ठकों से लग्न ज्ञात करके उस लग्न की कुण्डली बनाइए। अपने अभीष्ट सन् वाले 'ग्रहों का राशिचार' कोष्ठक से अभीष्ट समय पर सूर्य आदि आठ ग्रहों की राशियां ज्ञात कीजिए। इसी प्रकार अभीष्ट सन् वाले "चन्द्रमा का राशिचार" कोष्ठक से उस समय चन्द्रमा की राशि भी जान लें। इन नौ ग्रहों को अपनी–अपनी राशियों में जन्मकुण्डली के भीतर अंकित कर दें। बस यह उस जातक की जन्मकुण्डली बन गई।

जैसे – मान लीजिए 15 जनवरी, 1972 ई. के प्रातः 9 घं. 30 मिनट (भा. स्टैं. टा.) पर दिल्ली में पैदा हुए जातक की जन्मकुण्डली बनानी है। इसदिन इस समय दिल्ली में कुम्भ लग्न था, अतः यहां कुम्भ लग्न वाली जन्मकुण्डली बनाई जाएगी।

सन् 1972 ई. वाला "ग्रहों का राशिचार" कोष्ठक देखा। इसमें 15 जन.' 72 ई. को प्रातः 9 घं. 30 मिनट (भा.स्टैं. टा.) पर सूर्य मकर में, बुध धनु में, शुक्र कुम्भ में, मंगल मीन में, गुरु धनु में, शनि वृष में, राहु मकर में और केतु कर्क में मिला। इसी सन् वाला "चन्द्रमा का राशिचार" कोष्ठक देखा। इसमें इस समय (15 जन.'72 ई. के प्रातः 9 घं. 30 मिनट पर) चन्द्रमा धनु में मिला। अतः इस जातक की जन्मकुण्डली यह बनी ,–

जन्मकुण्डली

15 जन.'72, प्रातः 9 घण्टा 30 मिनट (भा.स्टैं.टा.)
(जन्मस्थान दिल्ली)
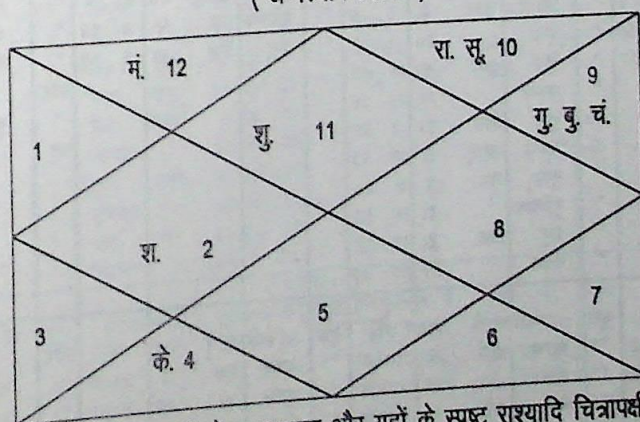
ध्यान रहे – यहां दिए गए कोष्ठकों से प्राप्त लग्न और ग्रहों के स्पष्ट राश्यादि चित्रापक्षीय निरयण होंगे।

'गणकमार्त्तण्ड' में सन् 1941 से 2050 ई. तक का चन्द्रसहित सभी ग्रहों का सूक्ष्मतम राशिचारकाल (राशिप्रवेशकाल) दिया गया है। वहां साप्ताहिक स्पष्ट मं., बु., गु., शु., श., रा. तथा दैनिक स्पष्ट सूर्य और चन्द्रमा भी दिए गए हैं।

विश्व के सभी (0° से 66° अक्षांश) स्थलों का लग्नारम्भकाल बतलाने वाली सारणी मेरी पुस्तक ' विश्वलग्नसारणी ' में मिलेगी।

ग्रहों का राशि चार

(सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है)

गणित कर्ता – सुबोध, संजय

सन् 1941

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
सूर्य	(वर्षारम्भ में धनु में)				
"	मकर	जन.	13	19	49
"	कुम्भ	फर.	12	8	50
"	मीन	मार्च	14	5	47
"	मेष	अप्रै.	13	14	24
"	वृष	मई	14	11	22
"	मिथुन	जून	14	18	3
"	कर्क	जुला.	16	4	58
"	सिंह	अग.	16	13	21
"	कन्या	सितं.	16	13	14
"	तुला	अक्तू.	17	1	5
"	वृश्चिक	नवं.	16	0	47
"	धनु	दिसं.	15	15	21

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
बुध	(वर्षारम्भ में धनु में)				
"	मकर	जन.	12	23	58
"	कुम्भ		30	13	46
"	मीन	अप्रै.	7	22	21
"	मेष		25	16	14
"	वृष	मई	10	0	38
"	मिथुन		25	8	29
"	कर्क	अग.	2	13	36
"	सिंह		17	23	1
"	कन्या	सितं.	3	0	38
"	तुला		22	23	22
"	वृश्चिक	नवं.	28	17	57
"	धनु	दिसं.	17	23	42

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
शुक्र	(वर्षारम्भ में वृश्चिक में)				
"	धनु	जन.	8	13	0
"	मकर	फर.	1	13	31
"	कुम्भ		25	14	4
"	मीन	मार्च	21	16	1
"	मेष	अप्रै.	14	20	18
"	वृष	मई	9	3	22
"	मिथुन	जून	2	13	6
"	कर्क		27	1	15
"	सिंह	जुला.	21	16	9
"	कन्या	अग.	15	11	9
"	तुला	सितं.	9	12	41
"	वृश्चिक	अक्तू.	5	0	39
"	धनु		31	8	11
"	मकर	नवं.	28	19	19

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
भौम	(वर्षारम्भ में वृश्चिक में)				
"	धनु	फर.	8	0	44
"	मकर	मार्च	23	15	33
"	कुम्भ	मई	6	4	23
"	मीन	जून	20	20	4
"	मेष	अग.	28	4	35
"	*मीन	सितं.	16	16	10
"	मेष	दिसं.	28	4	4
गुरु	(वर्षारम्भ में मेष में)				
"	वृष	अप्रै.	27	2	55
शनि	(वर्षारम्भ में मेष में)				
"	वृष	जून	18	18	13
"	*मेष	दिसं.	14	12	34
राहु	(वर्षारम्भ में कन्या में)				
"	सिंह	सितं.	6	2	57

सन् 1942

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
सूर्य	(वर्षारम्भ में धनु में)				
"	मकर	जन.	14	2	3
"	कुम्भ	फर.	12	15	4
"	मीन	मार्च	14	12	1
"	मेष	अप्रै.	13	20	36
"	वृष	मई	14	17	31
"	मिथुन	जून	15	0	7
"	कर्क	जुला.	16	10	57
"	सिंह	अग.	16	19	17
"	कन्या	सितं.	16	19	10
"	तुला	अक्तू.	17	7	4
"	वृश्चिक	नवं.	16	6	50
"	धनु	दिसं.	15	21	27

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
बुध	(वर्षारम्भ में धनु में)				
"	मकर	जन.	5	15	42
"	कुम्भ		25	9	5
"	*मकर	फर.	8	0	53
"	कुम्भ	मार्च	11	14	9
"	मीन	अप्रै.	1	12	29
"	मेष		17	11	32
"	वृष	मई	1	18	39
"	मिथुन		23	17	32
"	*वृष	जून	9	18	24
"	मिथुन	जुला.	7	5	9
"	कर्क		26	1	52
"	सिंह	अग.	9	15	42
"	कन्या		26	21	38
"	तुला	सितं.	21	1	49
"	*कन्या	अक्तू.	5	19	33
"	तुला	नवं.	2	18	26
"	वृश्चिक		21	16	53
"	धनु	दिसं.	10	17	58
"	मकर		29	20	33

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
शुक्र	(वर्षारम्भ में मकर में)				
"	कुम्भ	मार्च	29	22	16
"	मीन	अप्रै.	29	20	2
"	मेष	मई	27	3	3
"	वृष	जून	22	5	10
"	मिथुन	जुला.	17	15	55
"	कर्क	अग.	11	15	16
"	सिंह	सितं.	5	4	51
"	कन्या		29	10	37
"	तुला	अक्तू.	23	11	9
"	वृश्चिक	नवं.	16	8	58
"	धनु	दिसं.	10	5	50

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
भौम	(वर्षारम्भ में मेष में)				
"	वृष	फर.	23	15	18
"	मिथुन	अप्रै.	15	1	27
"	कर्क	जून	3	2	55
"	सिंह	जुला.	21	12	2
"	कन्या	सितं.	6	21	10
"	तुला	अक्तू.	22	18	53
"	वृश्चिक	दिसं.	5	23	2
गुरु	(वर्षारम्भ में वृष में)				
"	मिथुन	मई	9	22	44
"	कर्क	अक्तू.	6	12	10
"	*मिथुन	दिसं.	19	22	3
शनि	(वर्षारम्भ में मेष में)				
"	वृष	मार्च	3	22	55
राहु	(पूरा वर्ष सिंह में)				

सन् 1943

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
सूर्य	(वर्षारम्भ में धनु में)				
"	मकर	जन.	14	8	10
"	कुम्भ	फर.	12	21	10
"	मीन	मार्च	14	18	6
"	मेष	अप्रै.	14	2	40
"	वृष	मई	14	23	36
"	मिथुन	जून	15	6	15
"	कर्क	जुला.	16	17	8
"	सिंह	अग.	17	1	32
"	कन्या	सितं.	17	1	25
"	तुला	अक्तू.	17	13	18
"	वृश्चिक	नवं.	16	13	2
"	धनु	दिसं.	16	3	37

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
बुध	(वर्षारम्भ में मकर में)				
"	कुम्भ	मार्च	6	20	41
"	मीन		25	0	16
"	मेष	अप्रै.	9	2	20
"	वृष		25	4	24
"	मिथुन	जुला.	2	21	7
"	कर्क		17	15	14
"	सिंह	अग.	1	16	37
"	कन्या		21	6	17
"	तुला	अक्तू.	27	1	57
"	वृश्चिक	नवं.	14	9	31
"	धनु	दिसं.	3	17	32
"	मकर		26	9	33

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
शुक्र	(वर्षारम्भ में धनु में)				
"	मकर	जन.	3	2	51
"	कुम्भ		27	1	14
"	मीन	फर.	20	3	5
"	मेष	मार्च	16	11	25
"	वृष	अप्रै.	10	6	9
"	मिथुन	मई	5	16	58
"	कर्क	जून	1	7	27
"	सिंह		30	13	41
"	कन्या	नवं.	2	9	53
"	तुला	दिसं.	2	7	25
"	वृश्चिक		28	13	34

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
भौम	(वर्षारम्भ में वृश्चिक में)				
"	धनु	जन.	17	10	8
"	मकर	फर.	27	10	27
"	कुम्भ	अप्रै.	8	11	13
"	मीन	मई	18	7	29
"	मेष	जून	28	7	24
"	वृष	अग.	12	9	41
गुरु	(वर्षारम्भ में मिथुन में)				
"	कर्क	मई	27	9	7
"	सिंह	अक्तू.	23	8	17
शनि	(वर्षारम्भ में वृष में)				
"	मिथुन	अग.	5	18	41
"	*वृष	दिसं.	17	2	47
राहु	(वर्षारम्भ में सिंह में)				
"	कर्क	मार्च	26	5	56

* वक्र गति से राशि प्रवेश

ग्रहों का राशि चार

(सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है)

सन् 1944

ग्रह	राशि	तारीख	समय घं. मि.	ग्रह	राशि	तारीख	समय घं. मि.	ग्रह	राशि	तारीख	समय घं. मि.	ग्रह	राशि	तारीख	समय घं. मि.
सूर्य	(वर्षारम्भ में धनु में)			बुध	(वर्षारम्भ में मकर में)			शुक्र	(वर्षारम्भ में वृश्चिक में)			भौम	(वर्षारम्भ में वृष में)		
"	मकर	जन. 14	14 18	"	*धनु	जन. 4	6 34	"	धनु	जन. 22	15 37	"	मिथुन	मार्च 14	6 29
"	कुम्भ	फर. 13	3 17	"	मकर	फर. 7	12 26	"	मकर	फर. 16	6 31	"	कर्क	मई 10	16 1
"	मीन	मार्च 14	0 13	"	कुम्भ	28	4 30	"	कुम्भ	मार्च 11	17 5	"	सिंह	जून 30	22 41
"	मेष	अप्रै. 13	8 49	"	मीन	मार्च 16	0 38	"	मीन	अप्रै. 5	2 28	"	कन्या	अग. 18	9 55
"	वृष	मई 14	5 48	"	मेष	31	2 48	"	मेष	29	12 14	"	तुला	अक्तू. 3	10 55
"	मिथुन	जून 14	12 31	"	वृष	जून 7	0 39	"	वृष	मई 23	22 45	"	वृश्चिक	नवं. 16	3 27
"	कर्क	जुला. 15	23 26	"	मिथुन	24	3 14	"	मिथुन	जून 17	9 26	"	धनु	दिसं. 27	17 9
"	सिंह	अग. 16	7 48	"	कर्क	जुला. 8	2 51	"	कर्क	जुला. 11	19 17	गुरु	(वर्षारम्भ में सिंह में)		
"	कन्या	सितं. 16	7 39	"	सिंह	24	14 16	"	सिंह	अग. 5	3 56	"	*कर्क	फर. 4	14 34
"	तुला	अक्तू. 16	19 29	"	कन्या	अक्तू. 1	7 4	"	कन्या	29	11 59	"	सिंह	जून 19	1 22
"	वृश्चिक	नवं. 15	19 10	"	तुला	18	14 11	"	तुला	सितं. 22	20 39	"	कन्या	नवं. 18	8 15
"	धनु	दिसं. 15	9 44	"	वृश्चिक	नवं. 6	4 4	"	वृश्चिक	अक्तू. 17	7 3	शनि	(वर्षारम्भ में वृष में)		
				"	धनु	26	12 52	"	धनु	नवं. 10	20 23	"	मिथुन	अप्रै. 23	15 4
				"	*वृश्चिक	दिसं. 31	10 49	"	मकर	दिसं. 5	15 32	राहु	(वर्षारम्भ में कर्क में)		
								"	कुम्भ	31	0 35	"	मिथुन	अक्तू. 12	8 54

सन् 1945

ग्रह	राशि	तारीख	समय घं. मि.	ग्रह	राशि	तारीख	समय घं. मि.	ग्रह	राशि	तारीख	समय घं. मि.	ग्रह	राशि	तारीख	समय घं. मि.
सूर्य	(वर्षारम्भ में धनु में)			बुध	(वर्षारम्भ में वृश्चिक में)			शुक्र	(वर्षारम्भ में कुम्भ में)			भौम	(वर्षारम्भ में धनु में)		
"	मकर	जन. 13	20 27	"	धनु	जन. 5	4 58	"	मीन	जन. 26	21 50	"	मकर	फर. 5	14 55
"	कुम्भ	फर. 12	9 27	"	मकर	फर. 1	0 23	"	मेष	फर. 28	8 58	"	कुम्भ	मार्च 16	11 50
"	मीन	मार्च 14	6 23	"	कुम्भ	19	18 49	"	*मीन	अप्रै. 19	13 23	"	मीन	अप्रै. 24	2 54
"	मेष	अप्रै. 13	14 59	"	मीन	मार्च 7	23 1	"	मेष	मई 25	20 38	"	मेष	जून 2	10 49
"	वृष	मई 14	11 58	"	मेष	25	17 59	"	वृष	जुला. 1	1 56	"	वृष	जुला. 13	16 4
"	मिथुन	जून 14	18 38	"	*मीन	अप्रै. 14	2 39	"	मिथुन	29	11 41	"	मिथुन	अग. 27	17 53
"	कर्क	जुला. 16	5 31	"	मेष	मई 10	8 26	"	कर्क	अग. 24	20 52	"	कर्क	अक्तू. 22	22 59
"	सिंह	अग. 16	13 52	"	वृष	जून 1	0 23	"	सिंह	सितं. 19	4 19	गुरु	(वर्षारम्भ में कन्या में)		
"	कन्या	सितं. 16	13 41	"	मिथुन	15	14 19	"	कन्या	अक्तू. 13	19 16	"	*सिंह	मार्च 9	19 16
"	तुला	अक्तू. 17	1 30	"	कर्क	30	1 10	"	तुला	नवं. 6	23 53	"	कन्या	जुला. 18	11 38
"	वृश्चिक	नवं. 16	1 11	"	सिंह	जुला. 19	19 17	"	वृश्चिक	30	22 58	"	तुला	दिसं. 19	6 29
"	धनु	दिसं. 15	15 46	"	*कर्क	अग. 26	10 52	"	धनु	दिसं. 24	9 45	शनि	(वर्षारम्भ में मिथुन में)		
				"	सिंह	सितं. 3	14 28					"	कर्क	सितं. 22	18 12
				"	कन्या	23	23 28					"	*मिथुन	दिसं. 22	10 22
				"	तुला	अक्तू. 10	23 59					राहु	(पूरा वर्ष मिथुन में)		
				"	वृश्चिक	30	8 34								
				"	धनु	नवं. 26	23 14								
				"	*वृश्चिक	28	11 27								

सन् 1946

ग्रह	राशि	तारीख	समय घं. मि.	ग्रह	राशि	तारीख	समय घं. मि.	ग्रह	राशि	तारीख	समय घं. मि.	ग्रह	राशि	तारीख	समय घं. मि.
सूर्य	(वर्षारम्भ में धनु में)			बुध	(वर्षारम्भ में वृश्चिक में)			शुक्र	(वर्षारम्भ में धनु में)			भौम	(वर्षारम्भ में कर्क में)		
"	मकर	जन. 14	2 30	"	धनु	जन. 4	19 16	"	मकर	जन. 17	16 10	"	*मिथुन	जन. 14	16 9
"	कुम्भ	फर. 12	15 34	"	मकर	25	5 21	"	कुम्भ	फर. 10	13 31	"	कर्क	अप्रै. 5	23 34
"	मीन	मार्च 14	12 33	"	कुम्भ	फर. 12	1 57	"	मीन	मार्च 6	13 11	"	सिंह	जून 8	5 6
"	मेष	अप्रै. 13	21 9	"	मीन	28	10 5	"	मेष	30	16 37	"	कन्या	जुला. 29	16 1
"	वृष	मई 14	18 8	"	मेष	मई 7	12 31	"	वृष	अप्रै. 24	1 13	"	तुला	सितं. 14	14 47
"	मिथुन	जून 15	0 49	"	वृष	24	3 25	"	मिथुन	मई 18	16 13	"	वृश्चिक	अक्तू. 28	8 5
"	कर्क	जुला. 16	11 44	"	मिथुन	जून 7	0 2	"	कर्क	जून 12	15 19	"	धनु	दिसं. 8	12 21
"	सिंह	अग. 16	20 7	"	कर्क	23	5 13	"	सिंह	जुला. 8	2 8	गुरु	(वर्षारम्भ में तुला में)		
"	कन्या	सितं. 16	19 57	"	सिंह	अग. 31	4 33	"	कन्या	अग. 3	8 45	"	*कन्या	अप्रै. 8	10 32
"	तुला	अक्तू. 17	7 47	"	कन्या	सितं. 16	0 56	"	तुला	31	8 5	"	तुला	अग. 19	3 2
"	वृश्चिक	नवं. 16	7 28	"	तुला	अक्तू. 3	15 30	"	वृश्चिक	अक्तू. 4	6 2	शनि	(वर्षारम्भ में मिथुन में)		
"	धनु	दिसं. 15	22 2	"	वृश्चिक	24	17 22	"	*तुला	नवं. 20	21 16	"	कर्क	जून 8	16 10
				"	*तुला	नवं. 26	18 35	"	वृश्चिक	दिसं. 27	0 8	राहु	(वर्षारम्भ में मिथुन में)		
				"	वृश्चिक	दिसं. 6	8 28					"	वृष	मई 1	11 53
				"	धनु	29	18 4								

* वक्र गति से राशि प्रवेश

ग्रहों का राशि चार

(सर्वत्र भा. स्टै. टा. दिया गया है)

सन् 1947

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
सूर्य	(वर्षारम्भ में धनु में)				
"	मकर	जन.	14	8	44
"	कुम्भ	फर.	12	21	43
"	मीन	मार्च	14	18	39
"	मेष	अप्रै.	14	3	14
"	वृष	मई	15	0	11
"	मिथुन	जून	15	6	52
"	कर्क	जुला.	16	17	47
"	सिंह	अग.	17	2	12
"	कन्या	सितं.	17	2	6
"	तुला	अक्तू.	17	13	58
"	वृश्चिक	नवं.	16	13	39
"	धनु	दिसं.	16	4	11
बुध	(वर्षारम्भ में धन में)				
"	मकर	जन.	17	22	43
"	कुम्भ	फर.	4	10	7
"	मीन		27	7	33
"	*कुम्भ		28	14	38
"	मीन	अप्रै.	11	3	32
"	मेष		30	19	15
"	वृष	मई	15	15	30
"	मिथुन		29	23	14
"	कर्क	जून	21	5	52
"	*मिथुन	जुला.	12	10	58
"	कर्क	अग.	5	19	24
"	सिंह		23	9	47
"	कन्या	सितं.	8	2	53
"	तुला		26	22	7
"	वृश्चिक	दिसं.	3	2	35
"	धनु		22	19	29
शुक्र	(वर्षारम्भ में वृश्चिक में)				
"	धनु	जन.	30	21	22
"	मकर	फर.	27	9	48
"	कुम्भ	मार्च	25	7	34
"	मीन	अप्रै.	19	14	26
"	मेष	मई	14	14	32
"	वृष	जून	8	10	47
"	मिथुन	जुला.	3	3	35
"	कर्क		27	16	14
"	सिंह	अग.	21	0	26
"	कन्या	सितं.	14	4	51
"	तुला	अक्तू.	8	6	58
"	वृश्चिक	नवं.	1	8	11
"	धनु		25	9	27
"	मकर	दिसं.	19	11	51
भौम	(वर्षारम्भ में धनु में)				
"	मकर	जन.	16	20	42
"	कुम्भ	फर.	24	4	28
"	मीन	अप्रै.	3	8	35
"	मेष	मई	12	6	19
"	वृष	जून	21	18	27
"	मिथुन	अग.	3	18	54
"	कर्क	सितं.	19	16	53
"	सिंह	नवं.	14	16	39
गुरु	(वर्षारम्भ में तुला में)				
"	वृश्चिक	जन.	18	1	45
"	*तुला	मई	11	6	53
"	वृश्चिक	सितं.	17	5	37
शनि	(पूरा वर्ष कर्क में)				
राहु	(वर्षारम्भ में वृष में)				
"	मेष	नवं.	18	14	51

सन् 1948

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
सूर्य	(वर्षारम्भ में धनु में)				
"	मकर	जन.	14	14	51
"	कुम्भ	फर.	13	3	49
"	मीन	मार्च	14	0	44
"	मेष	अप्रै.	13	9	19
"	वृष	मई	14	6	17
"	मिथुन	जून	14	13	0
"	कर्क	जुला.	15	23	57
"	सिंह	अग.	16	8	22
"	कन्या	सितं.	16	8	17
"	तुला	अक्तू.	16	20	8
"	वृश्चिक	नवं.	15	19	49
"	धनु	दिसं.	15	10	20
बुध	(वर्षारम्भ में धनु में)				
"	मकर	जन.	10	12	52
"	कुम्भ		28	11	49
"	*मकर	फर.	27	23	35
"	कुम्भ	मार्च	9	22	43
"	मीन	अप्रै.	5	2	13
"	मेष		21	22	18
"	वृष	मई	6	2	55
"	मिथुन		22	21	4
"	कर्क	जुला.	30	7	8
"	सिंह	अग.	14	2	24
"	कन्या		30	13	56
"	तुला	सितं.	20	20	17
"	*कन्या	अक्तू.	23	3	12
"	तुला	नवं.	4	14	21
"	वृश्चिक		25	12	5
"	धनु	दिसं.	14	14	9
शुक्र	(वर्षारम्भ में मकर में)				
"	कुम्भ	जन.	12	17	36
"	मीन	फर.	6	7	22
"	मेष	मार्च	2	13	46
"	वृष		29	6	32
"	मिथुन	अप्रै.	28	21	29
"	कर्क	सितं.	1	18	48
"	सिंह		30	14	52
"	कन्या	अक्तू.	26	17	35
"	तुला	नवं.	20	15	55
"	वृश्चिक	दिसं.	15	0	23
भौम	(वर्षारम्भ में सिंह में)				
"	*कर्क	मार्च	1	13	22
"	सिंह	अप्रै.	29	17	37
"	कन्या	जुला.	5	8	30
"	तुला	अग.	24	6	5
"	वृश्चिक	अक्तू.	7	18	59
"	धनु	नवं.	18	1	2
"	मकर	दिसं.	27	4	56
गुरु	(वर्षारम्भ में वृश्चिक में)				
"	धनु	फर.	11	10	49
"	*वृश्चिक	जून	22	20	47
"	धनु	अक्तू.	8	1	41
शनि	(वर्षारम्भ में कर्क में)				
"	सिंह	जुला.	26	13	21
राहु	(पूरा वर्ष मेष में)				

सन् 1949

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
सूर्य	(वर्षारम्भ में धनु में)				
"	मकर	जन.	13	20	59
"	कुम्भ	फर.	12	9	57
"	मीन	मार्च	14	6	53
"	मेष	अप्रै.	13	15	31
"	वृष	मई	14	12	33
"	मिथुन	जून	14	19	17
"	कर्क	जुला.	16	6	14
"	सिंह	अग.	16	14	37
"	कन्या	सितं.	16	14	30
"	तुला	अक्तू.	17	2	22
"	वृश्चिक	नवं.	16	2	4
"	धनु	दिसं.	15	16	37
बुध	(वर्षारम्भ में धनु में)				
"	मकर	जन.	2	7	57
"	कुम्भ	मार्च	9	16	12
"	मीन		29	2	21
"	मेष	अप्रै.	13	14	21
"	वृष		28	7	12
"	मिथुन	जुला.	5	23	2
"	कर्क		22	5	25
"	सिंह	अग.	5	21	26
"	कन्या		23	22	4
"	तुला	अक्तू.	30	19	21
"	वृश्चिक	नवं.	18	7	4
"	धनु	दिसं.	7	9	41
"	मकर		27	3	51
शुक्र	(वर्षारम्भ में वृश्चिक में)				
"	धनु	जन.	8	2	41
"	मकर	फर.	1	2	57
"	कुम्भ		25	3	18
"	मीन	मार्च	21	5	5
"	मेष	अप्रै.	14	9	16
"	वृष	मई	8	16	19
"	मिथुन	जून	2	2	9
"	कर्क		26	14	30
"	सिंह	जुला.	21	5	44
"	कन्या	अग.	15	1	19
"	तुला	सितं.	9	3	48
"	वृश्चिक	अक्तू.	4	17	23
"	धनु		31	4	4
"	मकर	नवं.	29	0	11
भौम	(वर्षारम्भ में मकर में)				
"	कुम्भ	फर.	3	7	36
"	मीन	मार्च	13	8	46
"	मेष	अप्रै.	21	6	5
"	वृष	मई	31	17	39
"	मिथुन	जुला.	13	9	19
"	कर्क	अग.	27	15	54
"	सिंह	अक्तू.	15	10	0
"	कन्या	दिसं.	10	14	45
गुरु	(वर्षारम्भ में धनु में)				
"	मकर	फर.	28	7	59
"	*धनु	अग.	27	7	46
"	मकर	अक्तू.	11	13	47
शनि	(पूरा वर्ष सिंह में)				
राहु	(वर्षारम्भ में मेष में)				
"	मीन	जून	6	17	50

* वक्र गति से राशि प्रवेश

ग्रहों की राशि चार

(सर्वत्र भा. स्टै. टा. दिया गया है)

सन् 1950

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
सूर्य	(वर्षारम्भ में धनु में)				
"	मकर	जन.	14	3	18
"	कुम्भ	फर.	12	16	16
"	मीन	मार्च	14	13	10
"	मेष	अप्रै.	13	21	42
"	वृष	मई	14	18	38
"	मिथुन	जून	15	1	18
"	कर्क	जुला.	16	12	11
"	सिंह	अग.	16	20	33
"	कन्या	सितं.	16	20	26
"	तुला	अक्तू.	17	8	20
"	वृश्चिक	नवं.	16	8	6
"	धनु	दिसं.	15	22	44

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
बुध	(वर्षारम्भ में मकर में)				
"	*धनु	जन.	20	23	34
"	मकर	फर.	8	11	08
"	कुम्भ	मार्च	3	20	14
"	मीन		21	8	5
"	मेष	अप्रै.	5	6	58
"	वृष		24	3	16
"	*मेष	मई	15	8	11
"	वृष	जून	8	0	59
"	मिथुन		29	10	40
"	कर्क	जुला.	13	16	18
"	सिंह		29	5	4
"	कन्या	अग.	19	16	43
"	*सिंह	सितं.	18	5	9
"	कन्या	अक्तू.	4	21	41
"	तुला		23	14	58
"	वृश्चिक	नवं.	10	23	38
"	धनु		30	14	57

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
शुक्र	(वर्षारम्भ में मकर में)				
"	कुम्भ	मार्च	30	8	48
"	मीन	अप्रै.	29	16	38
"	मेष	मई	26	19	49
"	वृष	जून	21	20	12
"	मिथुन	जुला.	17	6	1
"	कर्क	अग.	11	4	50
"	सिंह	सितं.	4	18	06
"	कन्या		28	23	43
"	तुला	अक्तू.	23	0	13
"	वृश्चिक	नवं.	15	22	05
"	धनु	दिसं.	9	19	02

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
भौम	(वर्षारम्भ में कन्या में)				
"	*सिंह	अप्रै.	20	12	44
"	कन्या	मई	17	21	28
"	तुला	जुला.	30	6	2
"	वृश्चिक	सितं.	16	2	5
"	धनु	अक्तू.	28	8	4
"	मकर	दिसं.	6	19	59
गुरु	(वर्षारम्भ में मकर में)				
"	कुम्भ	मार्च	13	10	08
शनि	(वर्षारम्भ में सिंह में)				
"	कन्या	सितं.	20	5	48
राहु	(वर्षारम्भ में मीन में)				
"	कुम्भ	दिसं.	24	20	48

सन् 1951

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
सूर्य	(वर्षारम्भ में धनु में)				
"	मकर	जन.	14	9	27
"	कुम्भ	फर.	12	22	26
"	मीन	मार्च	14	19	18
"	मेष	अप्रै.	14	3	49
"	वृष	मई	15	0	43
"	मिथुन	जून	15	7	23
"	कर्क	जुला.	16	18	19
"	सिंह	अग.	17	2	46
"	कन्या	सितं.	17	2	41
"	तुला	अक्तू.	17	14	35
"	वृश्चिक	नवं.	16	14	18
"	धनु	दिसं.	16	4	53

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
बुध	(वर्षारम्भ में धनु में)				
"	मकर	फर.	5	3	9
"	कुम्भ		24	18	55
"	मीन	मार्च	13	6	28
"	मेष		28	20	49
"	वृष	जून	5	13	07
"	मिथुन		21	5	38
"	कर्क	जुला.	5	6	50
"	सिंह		22	16	46
"	कन्या	सितं.	29	0	40
"	तुला	अक्तू.	16	1	0
"	वृश्चिक	नवं.	3	21	10
"	धनु		25	7	19
"	*वृश्चिक	दिसं.	18	5	5

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
शुक्र	(वर्षारम्भ में धनु में)				
"	मकर	जन.	2	16	08
"	कुम्भ		26	14	37
"	मीन	फर.	19	16	38
"	मेष	मार्च	16	1	17
"	वृष	अप्रै.	9	20	39
"	मिथुन	मई	5	8	42
"	कर्क	जून	1	1	58
"	सिंह		30	16	49
"	कन्या	नवं.	2	18	03
"	तुला	दिसं.	2	3	34
"	वृश्चिक		28	6	25

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
भौम	(वर्षारम्भ में मकर में)				
"	कुम्भ	जन.	14	2	36
"	मीन	फर.	21	8	23
"	मेष	अप्रै.	1	12	22
"	वृष	मई	12	7	40
"	मिथुन	जून	24	4	14
"	कर्क	अग.	8	4	3
"	सिंह	सितं.	24	5	54
"	कन्या	नवं.	12	17	56
गुरु	(वर्षारम्भ में कुम्भ में)				
"	मीन	मार्च	23	17	11
शनि	(पूरा वर्ष कन्या में)				
राहु	(पूरा वर्ष कुम्भ में)				

सन् 1952

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
सूर्य	(वर्षारम्भ में धनु में)				
"	मकर	जन.	14	15	35
"	कुम्भ	फर.	13	4	34
"	मीन	मार्च	14	1	29
"	मेष	अप्रै.	13	10	02
"	वृष	मई	14	6	58
"	मिथुन	जून	14	13	40
"	कर्क	जुला.	16	0	36
"	सिंह	अग.	16	9	2
"	कन्या	सितं.	16	8	56
"	तुला	अक्तू.	16	20	48
"	वृश्चिक	नवं.	15	20	30
"	धनु	दिसं.	15	11	03

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
बुध	(वर्षारम्भ में वृश्चिक में)				
"	धनु	जन.	7	17	26
"	मकर		29	21	43
"	कुम्भ	फर.	17	5	11
"	मीन	मार्च	4	7	31
"	मेष	मई	9	19	26
"	वृष		28	11	27
"	मिथुन	जून	11	14	29
"	कर्क		26	14	24
"	सिंह	जुला.	19	22	59
"	*कर्क	अग.	8	21	25
"	सिंह	सितं.	3	8	19
"	कन्या		20	7	33
"	तुला	अक्तू.	7	12	22
"	वृश्चिक		27	10	07

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
शुक्र	(वर्षारम्भ में वृश्चिक में)				
"	धनु	जन.	22	6	57
"	मकर	फर.	15	21	00
"	कुम्भ	मार्च	11	7	0
"	मीन	अप्रै.	4	15	59
"	मेष		29	1	27
"	वृष	मई	23	11	46
"	मिथुन	जून	16	22	20
"	कर्क	जुला.	11	8	11
"	सिंह	अग.	4	16	57
"	कन्या		29	1	15
"	तुला	सितं.	22	10	17
"	वृश्चिक	अक्तू.	16	21	10
"	धनु	नवं.	10	11	09
"	मकर	दिसं.	5	7	20
"	कुम्भ		30	18	17

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
भौम	(वर्षारम्भ में कन्या में)				
"	तुला	जन.	6	5	2
"	वृश्चिक	अग.	16	4	37
"	धनु	अक्तू.	2	17	45
"	मकर	नवं.	13	1	17
"	कुम्भ	दिसं.	22	7	34
गुरु	(वर्षारम्भ में मीन में)				
"	मेष	मार्च	31	18	09
शनि	(वर्षारम्भ में कन्या में)				
"	तुला	नवं.	25	19	33
राहु	(वर्षारम्भ में कुम्भ में)				
"	मकर	जुला.	12	23	47

* वक्र गति से राशि प्रवेश

ग्रहों का राशि चार

(सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है)

सन् 1953

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
सूर्य	(वर्षारम्भ में धनु में)				
"	मकर	जन.	13	21	44
"	कुम्भ	फर.	12	10	45
"	मीन	मार्च	14	7	41
"	मेष	अप्रै.	13	16	16
"	वृष	मई	14	13	12
"	मिथुन	जून	14	19	49
"	कर्क	जुला.	16	6	41
"	सिंह	अग.	16	15	02
"	कन्या	सितं.	16	14	54
"	तुला	अक्तू.	17	2	47
"	वृश्चिक	नवं.	16	2	30
"	धनु	दिसं.	15	17	05

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
बुध	(वर्षारम्भ में वृश्चिक में)				
"	धनु	जन.	2	2	32
"	मकर		21	20	26
"	कुम्भ	फर.	8	11	38
"	मीन		25	12	17
"	*कुम्भ	मार्च	23	20	33
"	मीन	अप्रै.	10	11	00
"	मेष	मई	4	13	44
"	वृष		20	6	8
"	मिथुन	जून	3	3	51
"	कर्क		20	21	05
"	सिंह	अग.	27	16	53
"	कन्या	सितं.	12	7	59
"	तुला		30	8	44
"	वृश्चिक	अक्तू.	23	0	37
"	*तुला	नवं.	14	1	57
"	वृश्चिक	दिसं.	5	16	39
"	धनु		26	13	12

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
शुक्र	(वर्षारम्भ में कुम्भ में)				
"	मीन	जन.	26	20	17
"	मेष	मार्च	1	10	35
"	*मीन	अप्रै.	13	9	49
"	मेष	मई	27	7	26
"	वृष	जुला.	1	0	42
"	मिथुन		29	5	3
"	कर्क	अग.	24	12	06
"	सिंह	सितं.	18	18	33
"	कन्या	अक्तू.	13	8	59
"	तुला	नवं.	6	13	22
"	वृश्चिक		30	12	19
"	धनु	दिसं.	24	9	1

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
भौम	(वर्षारम्भ में कुम्भ में)				
"	मीन	जन.	30	8	13
"	मेष	मार्च	11	6	30
"	वृष	अप्रै.	21	19	32
"	मिथुन	जून	4	6	54
"	कर्क	जुला.	19	13	51
"	सिंह	सितं.	4	6	34
"	कन्या	अक्तू.	21	22	23
"	तुला	दिसं.	9	12	28
गुरु	(वर्षारम्भ में मेष में)				
"	वृष	अप्रै.	9	19	36
"	मिथुन	अग.	30	9	38
"	*वृष	नवं.	30	6	53
शनि	(वर्षारम्भ में तुला में)				
"	*कन्या	अप्रै.	24	10	27
"	तुला	अग.	21	11	52
राहु	(पूरा वर्ष मकर में)				

सन् 1954

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
सूर्य	(वर्षारम्भ में धनु में)				
"	मकर	जन.	14	3	49
"	कुम्भ	फर.	12	16	51
"	मीन	मार्च	14	13	49
"	मेष	अप्रै.	13	22	25
"	वृष	मई	14	19	23
"	मिथुन	जून	15	2	2
"	कर्क	जुला.	16	12	54
"	सिंह	अग.	16	21	16
"	कन्या	सितं.	16	21	08
"	तुला	अक्तू.	17	9	2
"	वृश्चिक	नवं.	16	8	47
"	धनु	दिसं.	15	23	23

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
बुध	(वर्षारम्भ में धनु में)				
"	मकर	जन.	14	11	34
"	कुम्भ	फर.	1	0	1
"	मीन	अप्रै.	9	2	7
"	मेष		27	5	40
"	वृष	मई	11	16	23
"	मिथुन		26	16	09
"	कर्क	अग.	3	20	06
"	सिंह		19	13	55
"	कन्या	सितं.	4	12	44
"	तुला		24	3	3
"	वृश्चिक	नवं.	30	2	49
"	धनु	दिसं.	19	10	39

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
शुक्र	(वर्षारम्भ में धनु में)				
"	मकर	जन.	17	5	22
"	कुम्भ	फर.	10	2	41
"	मीन	मार्च	6	2	20
"	मेष		30	5	50
"	वृष	अप्रै.	23	14	35
"	मिथुन	मई	18	5	54
"	कर्क	जून	12	5	38
"	सिंह	जुला.	7	17	37
"	कन्या	अग.	3	2	33
"	तुला		31	7	39
"	वृश्चिक	अक्तू.	5	16	07
"	*तुला	नवं.	14	4	1
"	वृश्चिक	दिसं.	28	14	00

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
भौम	(वर्षारम्भ में तुला में)				
"	वृश्चिक	जन.	29	1	3
"	धनु	मार्च	27	10	19
"	मकर	अक्तू.	10	23	20
"	कुम्भ	नवं.	24	23	21
गुरु	(वर्षारम्भ में वृष में)				
"	मिथुन	अप्रै.	20	4	16
"	कर्क	सितं.	9	18	46
शनि	(पूरा वर्ष तुला में)				
राहु	(वर्षारम्भ में मकर में)				
"	धनु	जन.	30	2	45

सन् 1955

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
सूर्य	(वर्षारम्भ में धनु में)				
"	मकर	जन.	14	10	04
"	कुम्भ	फर.	12	23	03
"	मीन	मार्च	14	19	57
"	मेष	अप्रै.	14	4	30
"	वृष	मई	15	1	27
"	मिथुन	जून	15	8	7
"	कर्क	जुला.	16	19	00
"	सिंह	अग.	17	3	23
"	कन्या	सितं.	17	3	16
"	तुला	अक्तू.	17	15	10
"	वृश्चिक	नवं.	16	14	54
"	धनु	दिसं.	16	5	30

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
बुध	(वर्षारम्भ में धनु में)				
"	मकर	जन.	7	2	37
"	कुम्भ		26	2	5
"	*मकर	फर.	13	2	8
"	कुम्भ	मार्च	12	5	47
"	मीन	अप्रै.	2	22	39
"	मेष		19	2	31
"	वृष	मई	3	7	58
"	मिथुन		23	1	30
"	*वृष	जून	18	11	36
"	मिथुन	जुला.	6	22	16
"	कर्क		27	16	05
"	सिंह	अग.	11	6	17
"	कन्या		28	6	43
"	तुला	सितं.	20	21	57
"	*कन्या	अक्तू.	11	2	43
"	तुला	नवं.	3	22	39
"	वृश्चिक		23	3	48
"	धनु	दिसं.	12	4	49
"	मकर		31	4	7

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
शुक्र	(वर्षारम्भ में वृश्चिक में)				
"	धनु	जन.	30	21	36
"	मकर	फर.	27	4	15
"	कुम्भ	मार्च	24	23	39
"	मीन	अप्रै.	19	5	15
"	मेष	मई	14	4	34
"	वृष	जून	8	0	18
"	मिथुन	जुला.	2	16	46
"	कर्क		27	5	14
"	सिंह	अग.	20	13	21
"	कन्या	सितं.	13	17	49
"	तुला	अक्तू.	7	20	04
"	वृश्चिक		31	21	29
"	धनु	नवं.	24	23	02
"	मकर	दिसं.	19	1	45

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
भौम	(वर्षारम्भ में कुम्भ में)				
"	मीन	जन.	5	23	47
"	मेष	फर.	17	1	4
"	वृष	अप्रै.	1	5	51
"	मिथुन	मई	15	23	30
"	कर्क	जुला.	1	2	8
"	सिंह	अग.	17	0	54
"	कन्या	अक्तू.	3	3	14
"	तुला	नवं.	18	20	26
गुरु	(वर्षारम्भ में कर्क में)				
"	*मिथुन	जन.	28	17	58
"	कर्क	मई	3	16	12
"	सिंह	अक्तू.	1	17	20
शनि	(वर्षारम्भ में तुला में)				
"	वृश्चिक	नवं.	12	12	02
राहु	(वर्षारम्भ में धनु में)				
"	वृश्चिक	अग.	19	5	43

* वक्र गति से राशि प्रवेश

ग्रहों का राशि चार

(सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है)

सन् 1956

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
सूर्य	(वर्षारम्भ में धनु में)				
"	मकर	जन.	14	16	12
"	कुम्भ	फर.	13	5	9
"	मीन	मार्च	14	2	3
"	मेष	अप्रै.	13	10	36
"	वृष	मई	14	7	33
"	मिथुन	जून	14	14	14
"	कर्क	जुला.	16	1	10
"	सिंह	अग.	16	9	33
"	कन्या	सितं.	16	9	25
"	तुला	अक्तू.	16	21	16
"	वृश्चिक	नवं.	15	20	58
"	धनु	दिसं.	15	11	32
बुध	(वर्षारम्भ में मकर में)				
"	कुम्भ	मार्च	7	2	53
"	मीन		25	13	09
"	मेष	अप्रै.	9	17	16
"	वृष		25	7	11
"	मिथुन	जुला.	3	6	13
"	कर्क		18	7	2
"	सिंह	अग.	2	5	20
"	कन्या		21	7	25
"	तुला	अक्तू.	27	12	54
"	वृश्चिक	नवं.	14	20	44
"	धनु	दिसं.	4	2	57
"	मकर		25	11	15
शुक्र	(वर्षारम्भ में मकर में)				
"	कुम्भ	जन.	12	7	57
"	मीन	फर.	5	22	27
"	मेष	मार्च	2	6	17
"	वृष		29	2	31
"	मिथुन	अप्रै.	29	7	29
"	*वृष	जुला.	7	22	12
"	मिथुन		20	11	56
"	कर्क	सितं.	1	19	54
"	सिंह		30	8	55
"	कन्या	अक्तू.	26	9	15
"	तुला	नवं.	20	6	29
"	वृश्चिक	दिसं.	14	14	23
भौम	(वर्षारम्भ में तुला में)				
"	वृश्चिक	जन.	4	0	17
"	धनु	फर.	18	18	35
"	मकर	अप्रै.	4	17	16
"	कुम्भ	मई	22	19	11
"	मीन	अग.	3	5	29
"	*कुम्भ		18	15	26
"	मीन	नवं.	22	0	47
गुरु	(वर्षारम्भ में सिंह में)				
"	*कर्क	मार्च	14	15	54
"	सिंह	मई	22	9	36
"	कन्या	अक्तू.	28	22	21
शनि	(पूरा वर्ष वृश्चिक में)				
राहु	(पूरा वर्ष वृश्चिक में)				

सन् 1957

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
सूर्य	(वर्षारम्भ में धनु में)				
"	मकर	जन.	13	22	15
"	कुम्भ	फर.	12	11	16
"	मीन	मार्च	14	8	12
"	मेष	अप्रै.	13	16	48
"	वृष	मई	14	13	48
"	मिथुन	जून	14	20	31
"	कर्क	जुला.	16	7	27
"	सिंह	अग.	16	15	50
"	कन्या	सितं.	16	15	41
"	तुला	अक्तू.	17	3	31
"	वृश्चिक	नवं.	16	3	12
"	धनु	दिसं.	15	17	46
बुध	(वर्षारम्भ में मकर में)				
"	*धनु	जन.	8	9	59
"	मकर	फर.	7	11	02
"	कुम्भ		28	14	55
"	मीन	मार्च	17	14	39
"	मेष	अप्रै.	1	14	54
"	वृष	जून	7	21	56
"	मिथुन		25	17	53
"	कर्क	जुला.	9	18	03
"	सिंह		25	22	39
"	कन्या	अग.	20	19	26
"	*सिंह	सितं.	2	20	23
"	कन्या	अक्तू.	2	14	27
"	तुला		20	2	27
"	वृश्चिक	नवं.	7	14	33
"	धनु		27	17	33
शुक्र	(वर्षारम्भ में वृश्चिक में)				
"	धनु	जन.	7	16	23
"	मकर		31	16	27
"	कुम्भ	फर.	24	16	37
"	मीन	मार्च	20	18	15
"	मेष	अप्रै.	13	22	19
"	वृष	मई	8	5	19
"	मिथुन	जून	1	15	13
"	कर्क		26	3	46
"	सिंह	जुला.	20	19	22
"	कन्या	अग.	14	15	33
"	तुला	सितं.	8	19	01
"	वृश्चिक	अक्तू.	4	10	15
"	धनु		31	0	17
"	मकर	नवं.	29	6	36
भौम	(वर्षारम्भ में मीन में)				
"	मेष	जन.	17	15	10
"	वृष	मार्च	7	9	19
"	मिथुन	अप्रै.	24	3	27
"	कर्क	जून	10	23	45
"	सिंह	जुला.	28	19	03
"	कन्या	सितं.	13	23	30
"	तुला	अक्तू.	29	23	37
"	वृश्चिक	दिसं.	13	12	23
गुरु	(वर्षारम्भ में कन्या में)				
"	*सिंह	अप्रै.	18	6	49
"	कन्या	जून	19	16	39
"	तुला	नवं.	28	19	00
शनि	(पूरा वर्ष वृश्चिक में)				
राहु	(वर्षारम्भ में वृश्चिक में)				
"	तुला	मार्च	7	8	42

सन् 1958

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
सूर्य	(वर्षारम्भ में धनु में)				
"	मकर	जन.	14	4	29
"	कुम्भ	फर.	12	17	30
"	मीन	मार्च	14	14	26
"	मेष	अप्रै.	13	23	00
"	वृष	मई	14	19	54
"	मिथुन	जून	15	2	32
"	कर्क	जुला.	16	13	24
"	सिंह	अग.	16	21	47
"	कन्या	सितं.	16	21	40
"	तुला	अक्तू.	17	9	32
"	वृश्चिक	नवं.	16	9	16
"	धनु	दिसं.	15	23	51
बुध	(वर्षारम्भ में धनु में)				
"	मकर	फर.	2	7	51
"	कुम्भ		21	7	2
"	मीन	मार्च	9	12	41
"	मेष		26	9	56
"	*मीन	अप्रै.	21	6	7
"	मेष	मई	9	18	50
"	वृष	जून	2	10	58
"	मिथुन		17	6	22
"	कर्क	जुला.	1	13	48
"	सिंह		20	14	05
"	कन्या	सितं.	25	12	17
"	तुला	अक्तू.	12	12	03
"	वृश्चिक		31	16	53
"	धनु	नवं.	24	15	54
"	*वृश्चिक	दिसं.	5	17	28
शुक्र	(वर्षारम्भ में मकर में)				
"	कुम्भ	मार्च	30	17	05
"	मीन	अप्रै.	29	12	56
"	मेष	मई	26	12	30
"	वृष	जून	21	11	12
"	मिथुन	जुला.	16	20	05
"	कर्क	अग.	10	18	20
"	सिंह	सितं.	4	7	19
"	कन्या		28	12	47
"	तुला	अक्तू.	22	13	16
"	वृश्चिक	नवं.	15	11	10
"	धनु	दिसं.	9	8	11
भौम	(वर्षारम्भ में वृश्चिक में)				
"	धनु	जन.	25	13	20
"	मकर	मार्च	8	7	28
"	कुम्भ	अप्रै.	18	4	59
"	मीन	मई	29	3	36
"	मेष	जुला.	11	3	34
"	वृष	सितं.	2	1	57
"	*मेष	नवं.	18	1	55
गुरु	(वर्षारम्भ में तुला में)				
"	*कन्या	मई	18	0	0
"	तुला	जुला.	21	19	28
"	वृश्चिक	दिसं.	28	12	56
शनि	(वर्षारम्भ में वृश्चिक में)				
"	धनु	फर.	8	11	47
"	*वृश्चिक	जून	2	10	47
"	धनु	नवं.	7	15	17
राहु	(वर्षारम्भ में तुला में)				
"	कन्या	सितं.	24	11	40

* वक्र गति से राशि प्रवेश

ग्रहों का राशि चार

(सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है)

(सन् 1959)

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
सूर्य	(वर्षारम्भ में धनु में)				
"	मकर	जन.	14	10	34
"	कुम्भ	फर.	12	23	34
"	मीन	मार्च	14	20	30
"	मेष	अप्रै.	14	5	3
"	वृष	मई	15	1	58
"	मिथुन	जून	15	8	37
"	कर्क	जुला.	16	19	31
"	सिंह	अग.	17	3	58
"	कन्या	सितं.	17	3	54
"	तुला	अक्तू.	17	15	48
"	वृश्चिक	नवं.	16	15	30
"	धनु	दिसं.	16	6	2

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
बुध	(वर्षारम्भ में वृश्चिक में)				
"	धनु	जन.	5	21	51
"	मकर		26	15	43
"	कुम्भ	फर.	13	14	45
"	मीन	मार्च	1	20	08
"	मेष	मई	8	16	57
"	वृष		25	18	00
"	मिथुन	जून	8	15	25
"	कर्क		24	11	17
"	सिंह	सितं.	1	14	14
"	कन्या		17	14	37
"	तुला	अक्तू.	5	2	13
"	वृश्चिक		25	19	07
"	धनु	दिसं.	31	2	43

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
शुक्र	(वर्षारम्भ में धनु में)				
"	मकर	जन.	2	5	22
"	कुम्भ		26	3	58
"	मीन	फर.	19	6	11
"	मेष	मार्च	15	15	13
"	वृष	अप्रै.	9	11	16
"	मिथुन	मई	5	0	38
"	कर्क		31	20	51
"	सिंह	जून	30	21	20
"	कन्या	नवं.	3	0	9
"	तुला	दिसं.	1	23	16
"	वृश्चिक		27	23	01

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
भौम	(वर्षारम्भ में मेष में)				
"	वृष	जन.	24	13	37
"	मिथुन	मार्च	29	12	00
"	कर्क	मई	21	0	24
"	सिंह	जुला.	9	19	33
"	कन्या	अग.	26	17	37
"	तुला	अक्तू.	11	15	44
"	वृश्चिक	नवं.	24	11	24
गुरु	(वर्षारम्भ में वृश्चिक में)				
"	*तुला	जून	22	12	26
"	वृश्चिक	अग.	17	16	35
शनि	(पूरा वर्ष धनु में)				
राहु	(पूरा वर्ष कन्या में)				

(सन् 1960)

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
सूर्य	(वर्षारम्भ में धनु में)				
"	मकर	जन.	14	16	41
"	कुम्भ	फर.	13	5	39
"	मीन	मार्च	14	2	34
"	मेष	अप्रै.	13	11	10
"	वृष	मई	14	8	9
"	मिथुन	जून	14	14	51
"	कर्क	जुला.	16	1	48
"	सिंह	अग.	16	10	14
"	कन्या	सितं.	16	10	09
"	तुला	अक्तू.	16	22	02
"	वृश्चिक	नवं.	15	21	45
"	धनु	दिसं.	15	12	17

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
बुध	(वर्षारम्भ में धनु में)				
"	मकर	जन.	19	10	11
"	कुम्भ	फर.	5	22	05
"	मीन		25	3	3
"	*कुम्भ	मार्च	7	19	35
"	मीन	अप्रै.	10	21	04
"	मेष	मई	1	6	44
"	वृष		16	7	23
"	मिथुन		30	11	24
"	कर्क	जून	19	23	14
"	*मिथुन	जुला.	18	23	20
"	कर्क	अग.	5	0	52
"	सिंह		24	0	6
"	कन्या	सितं.	8	15	55
"	तुला		27	5	40
"	वृश्चिक	अक्तू.	24	10	12
"	*तुला		30	23	01
"	वृश्चिक	दिसं.	3	8	14
"	धनु		23	6	2

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
शुक्र	(वर्षारम्भ में वृश्चिक में)				
"	धनु	जन.	21	22	08
"	मकर	फर.	15	11	21
"	कुम्भ	मार्च	10	20	48
"	मीन	अप्रै.	4	5	26
"	मेष		28	14	39
"	वृष	मई	23	0	47
"	मिथुन	जून	16	11	14
"	कर्क	जुला.	10	21	04
"	सिंह	अग.	4	5	57
"	कन्या		28	14	30
"	तुला	सितं.	21	23	54
"	वृश्चिक	अक्तू.	16	11	18
"	धनु	नवं.	10	1	59
"	मकर	दिसं.	4	23	13
"	कुम्भ		30	12	10

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
भौम	(वर्षारम्भ में वृश्चिक में)				
"	धनु	जन.	5	7	45
"	मकर	फर.	14	13	53
"	कुम्भ	मार्च	24	19	19
"	मीन	मई	2	18	29
"	मेष	जून	11	12	03
"	वृष	जुला.	23	11	45
"	मिथुन	सितं.	9	0	59
गुरु	(वर्षारम्भ में वृश्चिक में)				
"	धनु	जन.	22	21	24
शनि	(पूरा वर्ष धनु में)				
राहु	(वर्षारम्भ में कन्या में)				
"	सिंह	अप्रै.	12	14	39

(सन् 1961)

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
सूर्य	(वर्षारम्भ में धनु में)				
"	मकर	जन.	13	22	56
"	कुम्भ	फर.	12	11	53
"	मीन	मार्च	14	8	47
"	मेष	अप्रै.	13	17	22
"	वृष	मई	14	14	20
"	मिथुन	जून	14	20	59
"	कर्क	जुला.	16	7	52
"	सिंह	अग.	16	16	14
"	कन्या	सितं.	16	16	06
"	तुला	अक्तू.	17	4	0
"	वृश्चिक	नवं.	16	3	45
"	धनु	दिसं.	15	18	22

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
बुध	(वर्षारम्भ में धनु में)				
"	मकर	जन.	11	0	24
"	कुम्भ		28	19	02
"	मीन	अप्रै.	6	9	33
"	मेष		23	12	34
"	वृष	मई	7	18	04
"	मिथुन		23	21	38
"	कर्क	जुला.	31	18	23
"	सिंह	अग.	15	17	18
"	कन्या	सितं.	1	0	59
"	तुला		21	18	22
"	*कन्या	अक्तू.	28	17	33
"	तुला	नवं.	4	8	32
"	वृश्चिक		26	22	09
"	धनु	दिसं.	16	1	10

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
शुक्र	(वर्षारम्भ में कुम्भ में)				
"	मीन	जन.	26	19	18
"	मेष	मार्च	2	21	16
"	*मीन	अप्रै.	7	6	35
"	मेष	मई	28	8	52
"	वृष	जून	30	22	47
"	मिथुन	जुला.	28	22	11
"	कर्क	अग.	24	3	15
"	सिंह	सितं.	18	8	42
"	कन्या	अक्तू.	12	22	37
"	तुला	नवं.	6	2	46
"	वृश्चिक		30	1	36
"	धनु	दिसं.	23	22	14

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
भौम	(वर्षारम्भ में मिथुन में)				
"	कर्क	अप्रै.	22	22	54
"	सिंह	जून	17	18	01
"	कन्या	अग.	6	15	26
"	तुला	सितं.	22	2	42
"	वृश्चिक	नवं.	4	18	19
"	धनु	दिसं.	16	1	6
गुरु	(वर्षारम्भ में धनु में)				
"	मकर	फर.	10	11	33
शनि	(वर्षारम्भ में धनु में)				
"	मकर	फर.	1	23	52
"	*धनु	सितं.	17	23	55
"	मकर	अक्तू.	8	1	9
राहु	(वर्षारम्भ में सिंह में)				
"	कर्क	अक्तू.	30	17	37

* वक्र गति से राशि प्रवेश

ग्रहों का राशि चार

(सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है)

सन् 1962

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
सूर्य	(वर्षारम्भ में धनु में)				
"	मकर	जन.	14	5	4
"	कुम्भ	फर.	12	18	03
"	मीन	मार्च	14	14	57
"	मेष	अप्रै.	13	23	31
"	वृष	मई	14	20	27
"	मिथुन	जून	15	3	7
"	कर्क	जुला.	16	14	02
"	सिंह	अग.	16	22	25
"	कन्या	सितं.	16	22	19
"	तुला	अक्तू.	17	10	13
"	वृश्चिक	नवं.	16	10	00
"	धनु	दिसं.	16	0	38

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
बुध	(वर्षारम्भ में धनु में)				
"	मकर	जन.	3	18	04
"	कुम्भ	मार्च	10	17	02
"	मीन		30	14	02
"	मेष	अप्रै.	15	5	34
"	वृष		29	18	00
"	मिथुन	जुला.	6	21	57
"	कर्क		23	20	36
"	सिंह	अग.	7	11	18
"	कन्या		25	4	42
"	तुला	नवं.	1	3	45
"	वृश्चिक		19	18	15
"	धनु	दिसं.	8	20	05
"	मकर		28	7	24

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
शुक्र	(वर्षारम्भ में धनु में)				
"	मकर	जन.	16	18	33
"	कुम्भ	फर.	9	15	50
"	मीन	मार्च	5	15	28
"	मेष		29	18	59
"	वृष	अप्रै.	23	3	53
"	मिथुन	मई	17	19	34
"	कर्क	जून	11	19	58
"	सिंह	जुला.	7	9	13
"	कन्या	अग.	2	20	37
"	तुला		31	8	1
"	वृश्चिक	अक्तू.	7	16	41
"	*तुला	नवं.	7	7	25
"	वृश्चिक	दिसं.	29	17	18

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
भौम	(वर्षारम्भ में धनु में)				
"	मकर	जन.	24	13	36
"	कुम्भ	मार्च	4	1	21
"	मीन	अप्रै.	11	8	27
"	मेष	मई	20	8	33
"	वृष	जून	30	0	24
"	मिथुन	अग.	12	11	48
"	कर्क	सितं.	30	2	0
"	सिंह	दिसं.	10	23	19
गुरु	(वर्षारम्भ में मकर में)				
"	कुम्भ	फर.	24	23	20
शनि	(पूरा वर्ष मकर में)				
राहु	([illegible] वर्ष कर्क में)				

सन् 1963

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
सूर्य	(वर्षारम्भ में धनु में)				
"	मकर	जन.	14	11	21
"	कुम्भ	फर.	13	0	18
"	मीन	मार्च	14	21	10
"	मेष	अप्रै.	14	5	40
"	वृष	मई	15	2	34
"	मिथुन	जून	15	9	13
"	कर्क	जुला.	16	20	09
"	सिंह	अग.	17	4	35
"	कन्या	सितं.	17	4	30
"	तुला	अक्तू.	17	16	24
"	वृश्चिक	नवं.	16	16	09
"	धनु	दिसं.	16	6	46

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
बुध	(वर्षारम्भ में मकर में)				
"	*धनु	जन.	26	4	2
"	मकर	फर.	8	7	26
"	कुम्भ	मार्च	5	4	41
"	मीन		22	21	39
"	मेष	अप्रै.	6	21	11
"	वृष		24	9	34
"	*मेष	मई	24	4	21
"	वृष	जून	6	14	20
"	मिथुन		30	22	54
"	कर्क	जुला.	15	8	1
"	सिंह		30	16	17
"	कन्या	अग.	20	8	44
"	*सिंह	सितं.	23	15	07
"	कन्या	अक्तू.	5	10	01
"	तुला		25	2	43
"	वृश्चिक	नवं.	12	10	42
"	धनु	दिसं.	1	23	01

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
शुक्र	(वर्षारम्भ में वृश्चिक में)				
"	धनु	जन.	30	20	55
"	मकर	फर.	26	22	22
"	कुम्भ	मार्च	24	15	34
"	मीन	अप्रै.	18	19	57
"	मेष	मई	13	18	29
"	वृष	जून	7	13	43
"	मिथुन	जुला.	2	5	52
"	कर्क		26	18	11
"	सिंह	अग.	20	2	17
"	कन्या	सितं.	13	6	48
"	तुला	अक्तू.	7	9	11
"	वृश्चिक		31	10	47
"	धनु	नवं.	24	12	36
"	मकर	दिसं.	18	15	40

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
भौम	(वर्षारम्भ में सिंह में)				
"	*कर्क	जन.	10	6	12
"	सिंह	मई	20	14	52
"	कन्या	जुला.	16	5	10
"	तुला	सितं.	[illegible]	2	33
"	वृश्चिक	अक्तू.	16	14	44
"	धनु	नवं.	26	18	38
गुरु	(वर्षारम्भ में कुम्भ में)				
"	मीन	मार्च	7	18	40
शनि	(पूरा वर्ष मकर में).				
राहु	(वर्षारम्भ में कर्क में)				
"	मिथुन	मई	19	20	36

सन् 1964

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
सूर्य	(वर्षारम्भ में धनु में)				
"	मकर	जन.	14	17	29
"	कुम्भ	फर.	13	6	29
"	मीन	मार्च	14	3	22
"	मेष	अप्रै.	13	11	52
"	वृष	मई	14	8	45
"	मिथुन	जून	14	15	23
"	कर्क	जुला.	16	8	18
"	सिंह	अग.	16	10	43
"	कन्या	सितं.	16	10	37
"	तुला	अक्तू.	16	22	30
"	वृश्चिक	नवं.	15	22	13
"	धनु	दिसं.	15	12	48

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
बुध	(वर्षारम्भ में धनु में)				
"	मकर	फर.	6	7	4
"	कुम्भ		26	6	14
"	मीन	मार्च	13	20	34
"	मेष		29	5	15
"	वृष	जून	5	18	35
"	मिथुन		21	21	11
"	कर्क	जुला.	5	21	17
"	सिंह		22	23	32
"	कन्या	सितं.	29	11	30
"	तुला	अक्तू.	16	13	16
"	वृश्चिक	नवं.	4	6	59
"	धनु		25	6	13
"	*वृश्चिक	दिसं.	21	19	12

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
शुक्र	(वर्षारम्भ में मकर में)				
"	कुम्भ	जन.	11	22	20
"	मीन	फर.	5	13	37
"	मेष	मार्च	1	22	59
"	वृष		28	22	57
"	मिथुन	अप्रै.	29	20	20
"	*वृष	जून	29	8	54
"	मिथुन	जुला.	24	21	34
"	कर्क	सितं.	1	20	01
"	सिंह		30	2	44
"	कन्या	अक्तू.	26	0	50
"	तुला	नवं.	19	21	01
"	वृश्चिक	दिसं.	14	4	23

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
भौम	(वर्षारम्भ में धनु में)				
"	मकर	जन.	4	23	22
"	कुम्भ	फर.	12	3	13
"	मीन	मार्च	21	4	37
"	मेष	अप्रै.	29	1	5
"	वृष	जून	8	11	30
"	मिथुन	जुला.	21	4	7
"	कर्क	सितं.	4	19	52
"	सिंह	अक्तू.	25	2	44
"	कन्या	दिसं.	30	15	26
गुरु	(वर्षारम्भ में मीन में)				
"	मेष	मार्च	15	2	31
"	वृष	अग.	3	22	26
"	*मेष	अक्तू.	26	23	57
शनि	(वर्षारम्भ में मकर में)				
"	कुम्भ	जन.	27	19	30
राहु	(वर्षारम्भ में मिथुन में)				
"	वृष	दिसं.	5	23	34

ग्रहों का राशि चार

(सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है)

सन् 1965

ग्रह	राशि	तारीख	समय घं. मि.	ग्रह	राशि	तारीख	समय घं. मि.	ग्रह	राशि	तारीख	समय घं. मि.	ग्रह	राशि	तारीख	समय घं. मि.
सूर्य	(वर्षारम्भ में धनु में)			बुध	(वर्षारम्भ में वृश्चिक में)			शुक्र	(वर्षारम्भ में वृश्चिक में)			भौम	(वर्षारम्भ में कन्या में)		
"	मकर	जन. 13	23 31	"	धनु	जन. 7	5 40	"	धनु	जन. 7	6 3	"	*सिंह	फर. 25	6 45
"	कुम्भ	फर. 12	12 32	"	मकर	30	6 45	"	मकर	31	5 53	"	कन्या	जून 15	6 0
"	मीन	मार्च 14	9 30	"	कुम्भ	फर. 17	17 46	"	कुम्भ	फर. 24	5 54	"	तुला	अग. 10	1 32
"	मेष	अप्रै. 13	18 05	"	मीन	मार्च 5	20 21	"	मीन	मार्च 20	7 23	"	वृश्चिक	सितं. 25	0 33
"	वृष	मई 14	15 03	"	मेष	मई 10	12 48	"	मेष	अप्रै. 13	11 22	"	धनु	नवं. 5	16 50
"	मिथुन	जून 14	21 42	"	वृष	30	0 22	"	वृष	मई 7	18 21	"	मकर	दिसं. 14	23 35
"	कर्क	जुला. 16	8 36	"	मिथुन	जून 13	6 34	"	मिथुन	जून 1	4 18	गुरु	(वर्षारम्भ में मेष में)		
"	सिंह	अग. 16	16 59	"	कर्क	28	1 12	"	कर्क	25	17 01	"	वृष	मार्च 21	10 54
"	कन्या	सितं. 16	16 52	"	सिंह	जुला. 19	17 38	"	सिंह	जुला. 20	8 59	"	मिथुन	अग. 6	1 51
"	तुला	अक्तू. 17	4 46	"	*कर्क	अग. 15	5 59	"	कन्या	अग. 14	5 49	शनि	(पूरा वर्ष कुम्भ में)		
"	वृश्चिक	नवं. 16	4 29	"	सिंह	सितं. 4	5 58	"	तुला	सितं. 8	10 20	राहु	(पूरा वर्ष वृष में)		
"	धनु	दिसं. 15	19 05	"	कन्या	21	21 01	"	वृश्चिक	अक्तू. 4	3 23				
				"	तुला	अक्तू. 8	23 57	"	धनु	30	21 05				
				"	वृश्चिक	28	16 33	"	मकर	नवं. 29	15 13				

सन् 1966

ग्रह	राशि	तारीख	समय घं. मि.	ग्रह	राशि	तारीख	समय घं. मि.	ग्रह	राशि	तारीख	समय घं. मि.	ग्रह	राशि	तारीख	समय घं. मि.
सूर्य	(वर्षारम्भ में धनु में)			बुध	(वर्षारम्भ में वृश्चिक में)			शुक्र	(वर्षारम्भ में मकर में)			भौम	(वर्षारम्भ में मकर में)		
"	मकर	जन. 14	5 48	"	धनु	जन. 3	8 37	"	कुम्भ	मार्च 30	23 27	"	कुम्भ	जन. 22	3 24
"	कुम्भ	फर. 12	18 49	"	मकर	23	7 26	"	मीन	अप्रै. 29	8 49	"	मीन	मार्च 1	6 19
"	मीन	मार्च 14	15 45	"	कुम्भ	फर. 10	0 19	"	मेष	मई 26	5 3	"	मेष	अप्रै. 9	6 46
"	मेष	अप्रै. 14	0 19	"	मीन	26	17 12	"	वृष	जून 21	2 8	"	वृष	मई 19	22 05
"	वृष	मई 14	21 13	"	*कुम्भ	मार्च 31	16 59	"	मिथुन	जुला. 16	10 07	"	मिथुन	जुला. 1	15 23
"	मिथुन	जून 15	3 49	"	मीन	अप्रै. 8	5 36	"	कर्क	अग. 10	7 50	"	कर्क	अग. 15	15 36
"	कर्क	जुला. 16	14 38	"	मेष	मई 5	22 07	"	सिंह	सितं. 3	20 30	"	सिंह	अक्तू. 2	3 26
"	सिंह	अग. 16	22 59	"	वृष	21	21 33	"	कन्या	28	1 50	"	कन्या	नवं. 22	4 19
"	कन्या	सितं. 16	22 51	"	मिथुन	जून 4	18 19	"	तुला	अक्तू. 22	2 20	गुरु	(वर्षारम्भ में मिथुन में)		
"	तुला	अक्तू. 17	10 46	"	कर्क	21	20 41	"	वृश्चिक	नवं. 15	0 19	"	*वृष	जन. 10	3 15
"	वृश्चिक	नवं. 16	10 33	"	सिंह	अग. 29	5 26	"	धनु	दिसं. 8	21 26	"	मिथुन	मार्च 24	4 56
"	धनु	दिसं. 16	1 11	"	कन्या	सितं. 13	21 33					"	कर्क	अग. 21	23 19
				"	तुला	अक्तू. 1	18 23					शनि	(वर्षारम्भ में कुम्भ में)		
				"	वृश्चिक	23	17 55					"	मीन	अप्रै. 9	4 49
				"	*तुला	नवं. 18	14 57					"	*कुम्भ	नवं. 3	12 00
				"	वृश्चिक	दिसं. 6	12 46					"	मीन	दिसं. 20	1 27
				"	धनु	27	22 55					राहु	(वर्षारम्भ में वृष में)		
												"	मेष	जून 25	2 32

सन् 1967

ग्रह	राशि	तारीख	समय घं. मि.	ग्रह	राशि	तारीख	समय घं. मि.	ग्रह	राशि	तारीख	समय घं. मि.	ग्रह	राशि	तारीख	समय घं. मि.
सूर्य	(वर्षारम्भ में धनु में)			बुध	(वर्षारम्भ में धनु में)			शुक्र	(वर्षारम्भ में धनु में)			भौम	(वर्षारम्भ में कन्या में)		
"	मकर	जन. 14	11 55	"	मकर	जन. 15	23 14	"	मकर	जन. 1	18 42	"	तुला	जन. 22	23 09
"	कुम्भ	फर. 13	0 55	"	कुम्भ	फर. 2	10 53	"	कुम्भ	25	17 25	"	*कन्या	अप्रै. 19	10 09
"	मीन	मार्च 14	21 50	"	मीन	अप्रै. 10	4 4	"	मीन	फर. 18	19 50	"	तुला	जुला. 4	21 54
"	मेष	अप्रै. 14	6 22	"	मेष	28	18 36	"	मेष	मार्च 15	5 15	"	वृश्चिक	अग. 31	0 33
"	वृष	मई 15	3 17	"	वृष	मई 13	8 12	"	वृष	अप्रै. 9	2 0	"	धनु	अक्तू. 14	5 53
"	मिथुन	जून 15	9 54	"	मिथुन	28	1 15	"	मिथुन	मई 4	16 45	"	मकर	नवं. 23	11 46
"	कर्क	जुला. 16	20 47	"	कर्क	अग. 4	23 40	"	कर्क	31	16 09	गुरु	(वर्षारम्भ में कर्क में)		
"	सिंह	अग. 17	5 10	"	सिंह	21	4 45	"	सिंह	जुला. 1	3 31	"	सिंह	सितं. 14	14 06
"	कन्या	सितं. 17	5 4	"	कन्या	सितं. 6	1 9	"	कन्या	नवं. 3	4 32	शनि	(पूरा वर्ष मीन में)		
"	तुला	अक्तू. 17	16 58	"	तुला	25	8 2	"	तुला	दिसं. 1	18 34	राहु	(पूरा वर्ष मेष में)		
"	वृश्चिक	नवं. 16	16 43	"	वृश्चिक	दिसं. 1	11 06	"	वृश्चिक	27	15 31				
"	धनु	दिसं. 16	7 18	"	धनु	20	21 30								

* वक्र गति से राशि प्रवेश

ग्रहों की राशि चार

(सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है)

सन् 1968

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
सूर्य	(वर्षारम्भ में धनु में)				
"	मकर	जन.	14	18	00
"	कुम्भ	फर.	13	6	59
"	मीन	मार्च	14	3	54
"	मेष	अप्रै.	13	12	28
"	वृष	मई	14	9	27
"	मिथुन	जून	14	16	09
"	कर्क	जुला.	16	3	6
"	सिंह	अग.	16	11	29
"	कन्या	सितं.	16	11	21
"	तुला	अक्तू.	16	23	13
"	वृश्चिक	नवं.	15	22	55
"	धनु	दिसं.	15	13	30

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
बुध	(वर्षारम्भ में धनु में)				
"	मकर	जन.	8	13	44
"	कुम्भ		27	1	40
"	*मकर	फर.	18	3	20
"	कुम्भ	मार्च	11	15	07
"	मीन	अप्रै.	3	8	14
"	मेष		19	17	22
"	वृष	मई	3	21	56
"	मिथुन		22	6	40
"	*वृष	जून	28	10	14
"	मिथुन	जुला.	2	12	10
"	कर्क		28	5	46
"	सिंह	अग.	11	20	59
"	कन्या		28	16	26
"	तुला	सितं.	20	6	34
"	*कन्या	अक्तू.	15	0	0
"	तुला	नवं.	3	23	58
"	वृश्चिक		23	14	32
"	धनु	दिसं.	12	15	42
"	मकर		31	12	31

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
शुक्र	(वर्षारम्भ में वृश्चिक में)				
"	धनु	जन.	21	13	18
"	मकर	फर.	15	1	45
"	कुम्भ	मार्च	10	10	42
"	मीन	अप्रै.	3	18	56
"	मेष		28	3	53
"	वृष	मई	22	13	51
"	मिथुन	जून	16	0	12
"	कर्क	जुला.	10	10	02
"	सिंह	अग.	3	19	01
"	कन्या		28	3	48
"	तुला	सितं.	21	13	33
"	वृश्चिक	अक्तू.	16	1	26
"	धनु	नवं.	9	16	50
"	मकर	दिसं.	4	15	14
"	कुम्भ		30	6	24

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
भौम	(वर्षारम्भ में मकर में)				
"	कुम्भ	जन.	1	4	36
"	मीन	फर.	8	18	59
"	मेष	मार्च	19	7	58
"	वृष	अप्रै.	29	12	27
"	मिथुन	जून	11	16	40
"	कर्क	जुला.	26	19	30
"	सिंह	सितं.	11	13	34
"	कन्या	अक्तू.	29	17	10
"	तुला	दिसं.	18	17	51
गुरु	(वर्षारम्भ में सिंह में)				
"	कन्या	अक्तू.	12	6	15
शनि	(वर्षारम्भ में मीन में)				
"	मेष	जून	17	7	23
"	*मीन	सितं.	28	8	55
राहु	(वर्षारम्भ में मेष में)				
"	मीन	जन.	12	5	31

सन् 1969

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
सूर्य	(वर्षारम्भ में धनु में)				
"	मकर	जन.	14	0	13
"	कुम्भ	फर.	12	13	13
"	मीन	मार्च	14	10	08
"	मेष	अप्रै.	13	18	43
"	वृष	मई	14	15	39
"	मिथुन	जून	14	22	18
"	कर्क	जुला.	16	9	11
"	सिंह	अग.	16	17	32
"	कन्या	सितं.	16	17	22
"	तुला	अक्तू.	17	5	12
"	वृश्चिक	नवं.	16	4	55
"	धनु	दिसं.	15	19	31

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
बुध	(वर्षारम्भ में मकर में)				
"	कुम्भ	मार्च	8	8	3
"	मीन		27	1	47
"	मेष	अप्रै.	11	8	22
"	वृष		26	13	01
"	मिथुन	जुला.	4	13	34
"	कर्क		19	22	43
"	सिंह	अग.	3	18	21
"	कन्या		22	10	22
"	तुला	अक्तू.	28	23	21
"	वृश्चिक	नवं.	16	7	59
"	धनु	दिसं.	5	12	43
"	मकर		26	2	46

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
शुक्र	(वर्षारम्भ में कुम्भ में)				
"	मीन	जन.	26	19	21
"	मेष	मार्च	5	1	26
"	*मीन		31	16	09
"	मेष	मई	29	4	33
"	वृष	जून	30	20	22
"	मिथुन	जुला.	28	15	11
"	कर्क	अग.	23	18	21
"	सिंह	सितं.	17	22	50
"	कन्या	अक्तू.	12	12	16
"	तुला	नवं.	5	16	08
"	वृश्चिक		29	14	50
"	धनु	दिसं.	23	11	24

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
भौम	(वर्षारम्भ में तुला में)				
"	वृश्चिक	फर.	11	15	55
"	धनु	सितं.	10	10	34
"	मकर	अक्तू.	26	18	31
"	कुम्भ	दिसं.	7	0	20
गुरु	(वर्षारम्भ में कन्या में)				
"	तुला	नवं.	12	0	50
शनि	(वर्षारम्भ में मीन में)				
"	मेष	मार्च	7	15	38
राहु	(वर्षारम्भ में मीन में)				
"	कुम्भ	जुला.	31	8	29

सन् 1970

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
सूर्य	(वर्षारम्भ में धनु में)				
"	मकर	जन.	14	6	15
"	कुम्भ	फर.	12	19	17
"	मीन	मार्च	14	16	14
"	मेष	अप्रै.	14	0	48
"	वृष	मई	14	21	44
"	मिथुन	जून	15	4	23
"	कर्क	जुला.	16	15	17
"	सिंह	अग.	16	23	42
"	कन्या	सितं.	16	23	35
"	तुला	अक्तू.	17	11	28
"	वृश्चिक	नवं.	16	11	11
"	धनु	दिसं.	16	1	45

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
बुध	(वर्षारम्भ में मकर में)				
"	*धनु	जन.	13	2	46
"	मकर	फर.	8	6	36
"	कुम्भ	मार्च	2	0	55
"	मीन		19	4	36
"	मेष	अप्रै.	3	3	46
"	वृष	जून	8	14	04
"	मिथुन		27	8	2
"	कर्क	जुला.	11	9	25
"	सिंह		27	7	51
"	कन्या	अग.	20	0	16
"	*सिंह	सितं.	9	1	35
"	कन्या	अक्तू.	3	19	38
"	तुला		21	14	37
"	वृश्चिक	नवं.	9	1	13
"	धनु		28	23	27

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
शुक्र	(वर्षारम्भ में धनु में)				
"	मकर	जन.	16	7	42
"	कुम्भ	फर.	9	4	59
"	मीन	मार्च	5	4	38
"	मेष		29	8	14
"	वृष	अप्रै.	22	17	18
"	मिथुन	मई	17	9	20
"	कर्क	जून	11	10	27
"	सिंह	जुला.	7	1	0
"	कन्या	अग.	2	15	03
"	तुला		31	9	26
"	वृश्चिक	अक्तू.	11	2	13
"	*तुला		30	7	37
"	वृश्चिक	दिसं.	30	13	50

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
भौम	(वर्षारम्भ में कुम्भ में)				
"	मीन	जन.	16	6	34
"	मेष	फर.	26	4	10
"	वृष	अप्रै.	9	12	44
"	मिथुन	मई	23	15	34
"	कर्क	जुला.	8	8	39
"	सिंह	अग.	24	3	28
"	कन्या	अक्तू.	10	8	46
"	तुला	नवं.	26	14	43
गुरु	(वर्षारम्भ में तुला में)				
"	वृश्चिक	दिसं.	11	15	51
शनि	(पूरा वर्ष मेष में)				
राहु	(पूरा वर्ष कुम्भ में)				

* वक्र गति से राशि प्रवेश

ग्रहों का राशि चार

(सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है)

सन् 1971

ग्रह	राशि	तारीख	समय घं. मि.
सूर्य	(वर्षारम्भ में धनु में)		
"	मकर	जन. 14	12 27
"	कुम्भ	फर. 13	1 25
"	मीन	मार्च 14	22 19
"	मेष	अप्रै. 14	6 52
"	वृष	मई 15	3 48
"	मिथुन	जून 15	10 28
"	कर्क	जुला. 16	21 24
"	सिंह	अग. 17	5 51
"	कन्या	सितं. 17	5 47
"	तुला	अक्तू. 17	17 43
"	वृश्चिक	नवं. 16	17 26
"	धनु	दिसं. 16	8 0

ग्रह	राशि	तारीख	समय घं. मि.
बुध	(वर्षारम्भ में धनु में)		
"	मकर	फर. 3	14 34
"	कुम्भ	22	19 03
"	मीन	मार्च 11	2 29
"	मेष	27	9 19
"	*मीन	अप्रै. 30	21 16
"	मेष	मई 6	10 52
"	वृष	जून 3	20 33
"	मिथुन	18	22 23
"	कर्क	जुला. 3	3 3
"	सिंह	21	12 37
"	कन्या	सितं. 27	0 47
"	तुला	अक्तू. 14	0 15
"	वृश्चिक	नवं. 2	1 42
"	धनु	24	18 35
"	*वृश्चिक	दिसं. 10	15 40

ग्रह	राशि	तारीख	समय घं. मि.
शुक्र	(वर्षारम्भ में वृश्चिक में)		
"	धनु	जन. 30	19 24
"	मकर	फर. 26	16 08
"	कुम्भ	मार्च 24	7 19
"	मीन	अप्रै. 18	10 35
"	मेष	मई 13	8 25
"	वृष	जून 7	3 10
"	मिथुन	जुला. 1	19 01
"	कर्क	26	7 10
"	सिंह	अग. 19	15 12
"	कन्या	सितं. 12	19 48
"	तुला	अक्तू. 6	22 19
"	वृश्चिक	31	0 8
"	धनु	नवं. 24	2 12
"	मकर	दिसं. 18	5 35

ग्रह	राशि	तारीख	समय घं. मि.
भौम	(वर्षारम्भ में तुला में)		
"	वृश्चिक	जन. 12	22 07
"	धनु	मार्च 1	22 25
"	मकर	अप्रै. 21	21 12
"	कुम्भ	अक्तू. 24	12 17
"	मीन	दिसं. 16	17 13
गुरु	(पूरा वर्ष वृश्चिक में)		
शनि	(वर्षारम्भ में मेष में)		
"	वृष	अप्रै. 28	10 28
राहु	(वर्षारम्भ में कुम्भ में)		
"	मकर	फर. 17	11 27

सन् 1972

ग्रह	राशि	तारीख	समय घं. मि.
सूर्य	(वर्षारम्भ में धनु में)		
"	मकर	जन. 14	18 39
"	कुम्भ	फर. 13	7 36
"	मीन	मार्च 14	4 28
"	मेष	अप्रै. 13	13 01
"	वृष	मई 14	9 56
"	मिथुन	जून 14	16 36
"	कर्क	जुला. 16	3 31
"	सिंह	अग. 16	11 56
"	कन्या	सितं. 16	11 52
"	तुला	अक्तू. 16	23 46
"	वृश्चिक	नवं. 15	23 30
"	धनु	दिसं. 15	14 03

ग्रह	राशि	तारीख	समय घं. मि.
बुध	(वर्षारम्भ में वृश्चिक में)		
"	धनु	जन. 6	22 23
"	मकर	28	1 46
"	कुम्भ	फर. 15	3 32
"	मीन	मार्च 2	7 9
"	मेष	मई 8	19 29
"	वृष	26	8 16
"	मिथुन	जून 9	7 7
"	कर्क	24	18 57
"	सिंह	सितं. 1	22 17
"	कन्या	18	4 18
"	तुला	अक्तू. 5	13 15
"	वृश्चिक	25	22 27
"	धनु	दिसं. 31	10 54

ग्रह	राशि	तारीख	समय घं. मि.
शुक्र	(वर्षारम्भ में मकर में)		
"	कुम्भ	जन. 11	12 41
"	मीन	फर. 5	4 45
"	मेष	मार्च 1	15 44
"	वृष	28	19 48
"	मिथुन	अप्रै. 30	12 56
"	*वृष	जून 22	19 25
"	मिथुन	जुला. 27	4 20
"	कर्क	सितं. 1	19 21
"	सिंह	29	20 17
"	कन्या	अक्तू. 25	16 17
"	तुला	नवं. 19	11 29
"	वृश्चिक	दिसं. 13	18 20

ग्रह	राशि	तारीख	समय घं. मि.
भौम	(वर्षारम्भ में मीन में)		
"	मेष	जन. 31	22 06
"	वृष	मार्च 17	10 43
"	मिथुन	मई 2	14 54
"	कर्क	जून 18	14 40
"	सिंह	अग. 4	23 45
"	कन्या	सितं. 21	1 43
"	तुला	नवं. 6	6 33
"	वृश्चिक	दिसं. 21	6 58
गुरु	(वर्षारम्भ में वृश्चिक में)		
"	धनु	जन. 6	7 26
शनि	(पूरा वर्ष वृष में)		
राहु	(वर्षारम्भ में मकर में)		
"	धनु	सितं. 5	14 26

सन् 1973

ग्रह	राशि	तारीख	समय घं. मि.
सूर्य	(वर्षारम्भ में धनु में)		
"	मकर	जन. 14	0 43
"	कुम्भ	फर. 12	13 40
"	मीन	मार्च 14	10 34
"	मेष	अप्रै. 13	19 09
"	वृष	मई 14	16 07
"	मिथुन	जून 14	22 49
"	कर्क	जुला. 16	9 45
"	सिंह	अग. 16	18 09
"	कन्या	सितं. 16	18 04
"	तुला	अक्तू. 17	5 59
"	वृश्चिक	नवं. 16	5 45
"	धनु	दिसं. 15	20 22

ग्रह	राशि	तारीख	समय घं. मि.
बुध	(वर्षारम्भ में धनु में)		
"	मकर	जन. 19	21 34
"	कुम्भ	फर. 6	10 23
"	मीन	24	12 13
"	*कुम्भ	मार्च 13	16 34
"	मीन	अप्रै. 11	9 19
"	मेष	मई 2	17 36
"	वृष	17	23 13
"	मिथुन	जून 1	0 21
"	कर्क	20	6 44
"	*मिथुन	जुला. 27	12 19
"	कर्क	अग. 3	14 48
"	सिंह	25	14 07
"	कन्या	सितं. 10	5 6
"	तुला	28	13 52
"	वृश्चिक	अक्तू. 23	6 21
"	*तुला	नवं. 6	1 19
"	वृश्चिक	दिसं. 4	12 23
"	धनु	24	16 26

ग्रह	राशि	तारीख	समय घं. मि.
शुक्र	(वर्षारम्भ में वृश्चिक में)		
"	धनु	जन. 6	19 41
"	मकर	30	19 17
"	कुम्भ	फर. 23	19 05
"	मीन	मार्च 19	20 25
"	मेष	अप्रै. 13	0 18
"	वृष	मई 7	7 17
"	मिथुन	31	17 19
"	कर्क	जून 25	6 15
"	सिंह	जुला. 19	22 37
"	कन्या	अग. 13	20 07
"	तुला	सितं. 8	1 44
"	वृश्चिक	अक्तू. 3	20 42
"	धनु	30	18 23
"	मकर	नवं. 30	2 19

ग्रह	राशि	तारीख	समय घं. मि.
भौम	(वर्षारम्भ में वृश्चिक में)		
"	धनु	फर. 3	2 29
"	मकर	मार्च 17	21 47
"	कुम्भ	अप्रै. 29	4 36
"	मीन	जून 11	7 41
"	मेष	जुला. 30	6 35
गुरु	(वर्षारम्भ में धनु में)		
"	मकर	जन. 25	12 48
शनि	(वर्षारम्भ में वृष में)		
"	मिथुन	जून 10	19 19
राहु	(पूरा वर्ष धनु में)		

* [illegible] वक्री प्रवेश

ग्रहों का राशि चार

(सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है)

सन् 1974

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
सूर्य	(वर्षारम्भ में धनु में)				
"	मकर	जन.	14	7	4
"	कुम्भ	फर.	12	20	02
"	मीन	मार्च	14	16	54
"	मेष	अप्रै.	14	1	24
"	वृष	मई	14	22	17
"	मिथुन	जून	15	4	54
"	कर्क	जुला.	16	15	46
"	सिंह	अग.	17	0	9
"	कन्या	सितं.	17	0	4
"	तुला	अक्तू.	17	12	00
"	वृश्चिक	नवं.	16	11	49
"	धनु	दिसं.	16	2	29

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
बुध	(वर्षारम्भ में धनु में)				
"	मकर	जन.	12	12	01
"	कुम्भ		30	3	38
"	मीन	अप्रै.	7	15	49
"	मेष		25	2	33
"	वृष	मई	9	9	26
"	मिथुन		25	1	16
"	कर्क	अग.	2	4	16
"	सिंह		17	8	14
"	कन्या	सितं.	2	12	25
"	तुला		22	18	57
"	वृश्चिक	नवं.	28	7	51
"	धनु	दिसं.	17	12	12

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
शुक्र	(वर्षारम्भ में मकर में)				
"	कुम्भ	मार्च	31	4	4
"	मीन	अप्रै.	29	4	10
"	मेष	मई	25	21	17
"	वृष	जून	20	16	53
"	मिथुन	जुला.	16	0	2
"	कर्क	अग.	9	21	15
"	सिंह	सितं.	3	9	38
"	कन्या		27	14	52
"	तुला	अक्तू.	21	15	22
"	वृश्चिक	नवं.	14	13	26
"	धनु	दिसं.	8	10	39

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
भौम	(वर्षारम्भ में मेष में)				
"	वृष	फर.	15	15	51
"	मिथुन	अप्रै.	9	14	34
"	कर्क	मई	29	14	36
"	सिंह	जुला.	17	9	49
"	कन्या	सितं.	2	22	39
"	तुला	अक्तू.	18	20	06
"	वृश्चिक	दिसं.	1	20	54
गुरु	(वर्षारम्भ में मकर में)				
"	कुम्भ	फर.	9	10	28
शनि	(पूरा वर्ष मिथुन में)				
राहु	(वर्षारम्भ में धनु में)				
"	वृश्चिक	मार्च	25	17	23

सन् 1975

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
सूर्य	(वर्षारम्भ में धनु में)				
"	मकर	जन.	14	13	14
"	कुम्भ	फर.	13	2	13
"	मीन	मार्च	14	23	04
"	मेष	अप्रै.	14	7	32
"	वृष	मई	15	4	22
"	मिथुन	जून	15	10	58
"	कर्क	जुला.	16	21	51
"	सिंह	अग.	17	6	17
"	कन्या	सितं.	17	6	14
"	तुला	अक्तू.	17	18	10
"	वृश्चिक	नवं.	16	17	56
"	धनु	दिसं.	16	8	33

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
बुध	(वर्षारम्भ में धनु में)				
"	मकर	जन.	5	4	31
"	कुम्भ		25	23	39
"	*मकर	फर.	4	6	10
"	कुम्भ	मार्च	11	15	32
"	मीन	अप्रै.	1	1	15
"	मेष		16	20	42
"	वृष	मई	1	5	50
"	मिथुन		28	10	51
"	*वृष		31	8	33
"	मिथुन	जुला.	7	15	13
"	कर्क		25	11	28
"	सिंह	अग.	9	1	27
"	कन्या		26	12	19
"	तुला	सितं.	23	0	45
"	*कन्या	अक्तू.	1	2	47
"	तुला	नवं.	2	11	07
"	वृश्चिक		21	5	20
"	धनु	दिसं.	10	6	39
"	मकर		29	12	44

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
शुक्र	(वर्षारम्भ में धनु में)				
"	मकर	जन.	1	8	1
"	कुम्भ		25	6	52
"	मीन	फर.	18	9	30
"	मेष	मार्च	14	19	16
"	वृष	अप्रै.	8	16	42
"	मिथुन	मई	4	8	52
"	कर्क		31	11	38
"	सिंह	जुला.	1	11	28
"	कन्या	नवं.	3	7	33
"	तुला	दिसं.	1	13	31
"	वृश्चिक		27	7	50

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
भौम	(वर्षारम्भ में वृश्चिक में)				
"	धनु	जन.	13	2	18
"	मकर	फर.	22	19	28
"	कुम्भ	अप्रै.	3	12	24
"	मीन	मई	12	23	20
"	मेष	जून	22	8	51
"	वृष	अग.	4	20	29
"	मिथुन	सितं.	28	9	53
"	*वृष	दिसं.	14	9	23
गुरु	(वर्षारम्भ में कुम्भ में)				
"	मीन	फर.	19	18	29
"	मेष	जुला.	18	21	37
"	*मीन	सितं.	11	0	41
शनि	(वर्षारम्भ में मिथुन में)				
"	कर्क	जुला.	23	16	32
राहु	(वर्षारम्भ में वृश्चिक में)				
"	तुला	अक्तू.	12	20	22

सन् 1976

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
सूर्य	(वर्षारम्भ में धनु में)				
"	मकर	जन.	14	19	17
"	कुम्भ	फर.	13	8	16
"	मीन	मार्च	14	5	10
"	मेष	अप्रै.	13	13	42
"	वृष	मई	14	10	36
"	मिथुन	जून	14	17	15
"	कर्क	जुला.	16	4	10
"	सिंह	अग.	16	12	36
"	कन्या	सितं.	16	12	32
"	तुला	अक्तू.	17	0	27
"	वृश्चिक	नवं.	16	0	11
"	धनु	दिसं.	15	14	47

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
बुध	(वर्षारम्भ में मकर में)				
"	*धनु	फर.	2	11	05
"	मकर		5	23	24
"	कुम्भ	मार्च	5	12	27
"	मीन		23	11	02
"	मेष	अप्रै.	7	11	46
"	वृष		24	2	57
"	मिथुन	जुला.	1	10	16
"	कर्क		15	23	50
"	सिंह		31	4	6
"	कन्या	अग.	20	4	53
"	*सिंह	सितं.	29	6	35
"	कन्या	अक्तू.	3	12	25
"	तुला		25	14	15
"	वृश्चिक	नवं.	12	21	51
"	धनु	दिसं.	2	7	38

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
शुक्र	(वर्षारम्भ में वृश्चिक में)				
"	धनु	जन.	21	4	21
"	मकर	फर.	14	16	04
"	कुम्भ	मार्च	10	0	31
"	मीन	अप्रै.	3	8	25
"	मेष		27	17	05
"	वृष	मई	22	2	50
"	मिथुन	जून	15	13	03
"	कर्क	जुला.	9	22	53
"	सिंह	अग.	3	8	1
"	कन्या		27	17	04
"	तुला	सितं.	21	3	13
"	वृश्चिक	अक्तू.	15	15	39
"	धनु	नवं.	9	7	48
"	मकर	दिसं.	4	7	25
"	कुम्भ		30	0	57

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
भौम	(वर्षारम्भ में वृष में)				
"	मिथुन	मार्च	2	19	09
"	कर्क	मई	4	22	47
"	सिंह	जून	26	10	05
"	कन्या	अग.	14	7	18
"	तुला	सितं.	29	11	11
"	वृश्चिक	नवं.	12	2	56
"	धनु	दिसं.	23	13	45
गुरु	(वर्षारम्भ में मीन में)				
"	मेष	फर.	25	18	05
"	वृष	जुला.	8	18	05
"	*मेष	दिसं.	8	14	42
शनि	(पूरा वर्ष कर्क में)				
राहु	(पूरा वर्ष तुला में)				

* वक्र गति से राशि प्रवेश

ग्रहों का राशि चार

(सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है)

सन् 1977

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
सूर्य	(वर्षारम्भ में धनु में)				
"	मकर	जन.	14	1	30
"	कुम्भ	फर.	12	14	31
"	मीन	मार्च	14	11	27
"	मेष	अप्रै.	13	20	01
"	वृष	मई	14	16	55
"	मिथुन	जून	14	23	29
"	कर्क	जुला.	16	10	18
"	सिंह	अग.	16	18	38
"	कन्या	सितं.	16	18	30
"	तुला	अक्तू.	17	6	24
"	वृश्चिक	नवं.	16	6	11
"	धनु	दिसं.	15	20	49

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
बुध	(वर्षारम्भ में धनु में)				
"	मकर	फर.	6	9	30
"	कुम्भ		26	17	16
"	मीन	मार्च	15	10	42
"	मेष		30	15	20
"	वृष	जून	6	21	55
"	मिथुन		23	12	30
"	कर्क	जुला.	7	12	04
"	सिंह		24	5	44
"	कन्या	सितं.	30	21	23
"	तुला	अक्तू.	18	1	33
"	वृश्चिक	नवं.	5	17	04
"	धनु		26	7	45
"	*वृश्चिक	दिसं.	26	16	59

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
शुक्र	(वर्षारम्भ में कुम्भ में)				
"	मीन	जन.	26	20	17
"	मेष	मार्च	9	2	1
"	*मीन		23	9	21
"	मेष	मई	29	19	47
"	वृष	जून	30	17	20
"	मिथुन	जुला.	28	7	53
"	कर्क	अग.	23	9	14
"	सिंह	सितं.	17	12	51
"	कन्या	अक्तू.	12	1	51
"	तुला	नवं.	5	5	30
"	वृश्चिक		29	4	6
"	धनु	दिसं.	23	0	38

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
भौम	(वर्षारम्भ में धनु में)				
"	मकर	फर.	1	7	49
"	कुम्भ	मार्च	12	1	12
"	मीन	अप्रै.	19	13	01
"	मेष	मई	28	17	30
"	वृष	जुला.	8	16	32
"	मिथुन	अग.	21	23	49
"	कर्क	अक्तू.	13	1	12
गुरु	(वर्षारम्भ में मेष में)				
"	वृष	फर.	22	18	44
"	मिथुन	जुला.	18	10	51
शनि	(वर्षारम्भ में कर्क में)				
"	सिंह	सितं.	7	11	03
राहु	(वर्षारम्भ में तुला में)				
"	कन्या	अप्रै.	30	23	20

सन् 1978

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
सूर्य	(वर्षारम्भ में धनु में)				
"	मकर	जन.	14	7	34
"	कुम्भ	फर.	12	20	36
"	मीन	मार्च	14	17	33
"	मेष	अप्रै.	14	2	7
"	वृष	मई	14	23	02
"	मिथुन	जून	15	5	38
"	कर्क	जुला.	16	16	27
"	सिंह	अग.	17	0	48
"	कन्या	सितं.	17	0	41
"	तुला	अक्तू.	17	12	37
"	वृश्चिक	नवं.	16	12	25
"	धनु	दिसं.	16	3	3

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
बुध	(वर्षारम्भ में वृश्चिक में)				
"	धनु	जन.	7	5	51
"	मकर		31	15	21
"	कुम्भ	फर.	19	6	16
"	मीन	मार्च	7	9	36
"	मेष		26	10	21
"	*मीन	अप्रै.	8	23	12
"	मेष	मई	11	0	7
"	वृष		31	12	35
"	मिथुन	जून	14	22	40
"	कर्क		29	12	44
"	सिंह	जुला.	20	1	0
"	*कर्क	अग.	21	11	10
"	सिंह	सितं.	4	17	45
"	कन्या		23	10	17
"	तुला	अक्तू.	10	11	42
"	वृश्चिक		29	23	44

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
शुक्र	(वर्षारम्भ में धनु में)				
"	मकर	जन.	15	20	53
"	कुम्भ	फर.	8	18	10
"	मीन	मार्च	4	17	50
"	मेष		28	21	29
"	वृष	अप्रै.	22	6	45
"	मिथुन	मई	16	23	10
"	कर्क	जून	11	0	59
"	सिंह	जुला.	6	16	51
"	कन्या	अग.	2	9	39
"	तुला		31	11	44
"	वृश्चिक	दिसं.	31	5	51

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
भौम	(वर्षारम्भ में कर्क में)				
"	*मिथुन	फर.	16	12	41
"	कर्क	मार्च	17	12	55
"	सिंह	जून	2	7	45
"	कन्या	जुला.	25	2	4
"	तुला	सितं.	10	10	18
"	वृश्चिक	अक्तू.	24	6	5
"	धनु	दिसं.	4	9	44
गुरु	(वर्षारम्भ में मिथुन में)				
"	कर्क	अग.	5	10	11
शनि	(पूरा वर्ष सिंह में)				
राहु	(वर्षारम्भ में कन्या में)				
"	सिंह	नवं.	18	2	18

सन् 1979

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
सूर्य	(वर्षारम्भ में धनु में)				
"	मकर	जन.	14	13	46
"	कुम्भ	फर.	13	2	45
"	मीन	मार्च	14	23	38
"	मेष	अप्रै.	14	8	11
"	वृष	मई	15	5	7
"	मिथुन	जून	15	11	46
"	कर्क	जुला.	16	22	39
"	सिंह	अग.	17	7	2
"	कन्या	सितं.	17	6	56
"	तुला	अक्तू.	17	18	51
"	वृश्चिक	नवं.	16	18	37
"	धनु	दिसं.	16	9	15

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
बुध	(वर्षारम्भ में वृश्चिक में)				
"	धनु	जन.	4	13	42
"	मकर		24	18	14
"	कुम्भ	फर.	11	13	03
"	मीन		28	0	28
"	मेष	मई	7	5	15
"	वृष		23	12	43
"	मिथुन	जून	6	9	9
"	कर्क		22	23	09
"	सिंह	अग.	30	17	13
"	कन्या	सितं.	15	11	14
"	तुला	अक्तू.	3	4	28
"	वृश्चिक		24	15	11
"	*तुला	नवं.	23	6	42
"	वृश्चिक	दिसं.	7	2	3
"	धनु		29	8	16

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
शुक्र	(वर्षारम्भ में वृश्चिक में)				
"	धनु	जन.	30	17	26
"	मकर	फर.	26	9	50
"	कुम्भ	मार्च	23	23	03
"	मीन	अप्रै.	18	1	12
"	मेष	मई	12	22	20
"	वृष	जून	6	16	38
"	मिथुन	जुला.	1	8	10
"	कर्क		25	20	09
"	सिंह	अग.	19	4	8
"	कन्या	सितं.	12	8	45
"	तुला	अक्तू.	6	11	24
"	वृश्चिक		30	13	28
"	धनु	नवं.	23	15	50
"	मकर	दिसं.	17	19	34

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
भौम	(वर्षारम्भ में धनु में)				
"	मकर	जन.	12	16	19
"	कुम्भ	फर.	19	22	14
"	मीन	मार्च	30	0	50
"	मेष	मई	7	21	34
"	वृष	जून	17	8	32
"	मिथुन	जुला.	30	4	55
"	कर्क	सितं.	14	12	52
"	सिंह	नवं.	6	15	27
गुरु	(वर्षारम्भ में कर्क में)				
"	सिंह	अग.	29	19	12
शनि	(वर्षारम्भ में सिंह में)				
"	कन्या	नवं.	4	1	2
राहु	(पूरा वर्ष सिंह में)				

* वक्र गति से राशि प्रवेश

ग्रहों का राशि चार

(सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है)

सन् 1980

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
सूर्य	(वर्षारम्भ में धनु में)				
"	मकर	जन.	14	19	58
"	कुम्भ	फर.	13	8	57
"	मीन	मार्च	14	5	50
"	मेष	अप्रै.	13	14	22
"	वृष	मई	14	11	17
"	मिथुन	जून	14	17	56
"	कर्क	जुला.	16	4	50
"	सिंह	अग.	16	13	12
"	कन्या	सितं.	16	13	03
"	तुला	अक्तू.	17	0	54
"	वृश्चिक	नवं.	16	0	37
"	धनु	दिसं.	15	15	13

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
बुध	(वर्षारम्भ में धनु में)				
"	मकर	जन.	17	10	49
"	कुम्भ	फर.	3	22	11
"	मीन	अप्रै.	10	3	45
"	मेष		29	7	3
"	वृष	मई	14	0	4
"	मिथुन		28	11	36
"	कर्क	जून	22	8	10
"	*मिथुन	जुला.	5	4	5
"	कर्क	अग.	4	22	59
"	सिंह		21	19	26
"	कन्या	सितं.	6	13	50
"	तुला		25	14	01
"	वृश्चिक	दिसं.	1	18	37
"	धनु		21	8	13

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
शुक्र	(वर्षारम्भ में मकर में)				
"	कुम्भ	जन.	11	3	11
"	मीन	फर.	4	20	07
"	मेष	मार्च	1	8	50
"	वृष		28	17	22
"	मिथुन	मई	1	10	54
"	*वृष	जून	16	17	59
"	मिथुन	जुला.	28	17	17
"	कर्क	सितं.	1	17	59
"	सिंह		29	13	35
"	कन्या	अक्तू.	25	7	35
"	तुला	नवं.	19	1	50
"	वृश्चिक	दिसं.	13	8	12

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
भौम	(वर्षारम्भ में सिंह में)				
"	कन्या	जून	29	3	26
"	तुला	अग.	19	11	12
"	वृश्चिक	अक्तू.	3	9	45
"	धनु	नवं.	13	18	41
"	मकर	दिसं.	22	23	10
गुरु	(वर्षारम्भ में सिंह में)				
"	कन्या	सितं.	26	17	31
शनि	(वर्षारम्भ में कन्या में)				
"	*सिंह	मार्च	15	5	27
"	कन्या	जुला.	27	9	22
राहु	(वर्षारम्भ में सिंह में)				
"	कर्क	जून	6	5	16

सन् 1981

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
सूर्य	(वर्षारम्भ में धनु में)				
"	मकर	जन.	14	1	57
"	कुम्भ	फर.	12	14	58
"	मीन	मार्च	14	11	55
"	मेष	अप्रै.	13	20	30
"	वृष	मई	14	17	27
"	मिथुन	जून	15	0	8
"	कर्क	जुला.	16	11	04
"	सिंह	अग.	16	19	27
"	कन्या	सितं.	16	19	19
"	तुला	अक्तू.	17	7	10
"	वृश्चिक	नवं.	16	6	53
"	धनु	दिसं.	15	21	28

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
बुध	(वर्षारम्भ में धनु में)				
"	मकर	जन.	9	1	1
"	कुम्भ		27	4	58
"	*मकर	फर.	22	12	03
"	कुम्भ	मार्च	11	13	26
"	मीन	अप्रै.	4	17	10
"	मेष		21	8	3
"	वृष	मई	5	12	24
"	मिथुन		22	21	44
"	कर्क	जुला.	29	18	44
"	सिंह	अग.	13	11	45
"	कन्या		30	2	40
"	तुला	सितं.	20	21	49
"	*कन्या	अक्तू.	19	18	52
"	तुला	नवं.	4	20	44
"	वृश्चिक		25	1	5
"	धनु	दिसं.	14	2	38

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
शुक्र	(वर्षारम्भ में वृश्चिक में)				
"	धनु	जन.	6	9	18
"	मकर		30	8	43
"	कुम्भ	फर.	23	8	22
"	मीन	मार्च	19	9	34
"	मेष	अप्रै.	12	13	22
"	वृष	मई	6	20	21
"	मिथुन		31	6	28
"	कर्क	जून	24	19	37
"	सिंह	जुला.	19	12	23
"	कन्या	अग.	13	10	34
"	तुला	सितं.	7	17	18
"	वृश्चिक	अक्तू.	3	14	13
"	धनु		30	16	07
"	मकर	नवं.	30	16	15

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
भौम	(वर्षारम्भ में मकर में)				
"	कुम्भ	जन.	30	1	52
"	मीन	मार्च	9	3	5
"	मेष	अप्रै.	17	0	50
"	वृष	मई	27	13	04
"	मिथुन	जुला.	9	4	25
"	कर्क	अग.	23	7	34
"	सिंह	अक्तू.	10	11	46
"	कन्या	दिसं.	3	4	4
गुरु	(वर्षारम्भ में कन्या में)				
"	तुला	अक्तू.	27	13	25
शनि	(पूरा वर्ष कन्या में)				
राहु	(वर्षारम्भ में कर्क में)				
"	मिथुन	दिसं.	24	8	14

सन् 1982

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
सूर्य	(वर्षारम्भ में धनु में)				
"	मकर	जन.	14	8	13
"	कुम्भ	फर.	12	21	14
"	मीन	मार्च	14	18	10
"	मेष	अप्रै.	14	2	42
"	वृष	मई	14	23	36
"	मिथुन	जून	15	6	13
"	कर्क	जुला.	16	17	06
"	सिंह	अग.	17	1	29
"	कन्या	सितं.	17	1	23
"	तुला	अक्तू.	17	13	17
"	वृश्चिक	नवं.	16	13	01
"	धनु	दिसं.	16	3	38

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
बुध	(वर्षारम्भ में धनु में)				
"	मकर	जन.	1	21	37
"	कुम्भ	मार्च	9	11	56
"	मीन		28	14	07
"	मेष	अप्रै.	12	23	31
"	वृष		27	21	01
"	मिथुन	जुला.	5	18	39
"	कर्क		21	14	16
"	सिंह	अग.	5	7	42
"	कन्या		23	14	52
"	तुला	अक्तू.	30	9	16
"	वृश्चिक	नवं.	17	19	17
"	धनु	दिसं.	6	22	46
"	मकर		27	0	32

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
शुक्र	(वर्षारम्भ में मकर में)				
"	*धनु	फर.	7	15	46
"	मकर		14	13	50
"	कुम्भ	मार्च	31	7	22
"	मीन	अप्रै.	28	23	19
"	मेष	मई	25	13	33
"	वृष	जून	20	7	41
"	मिथुन	जुला.	15	13	59
"	कर्क	अग.	9	10	43
"	सिंह	सितं.	2	22	49
"	कन्या		27	3	57
"	तुला	अक्तू.	21	4	26
"	वृश्चिक	नवं.	14	2	33
"	धनु	दिसं.	7	23	49
"	मकर		31	21	16

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
भौम	(वर्षारम्भ में कन्या में)				
"	तुला	जुला.	23	2	54
"	वृश्चिक	सितं.	10	19	04
"	धनु	अक्तू.	23	13	17
"	मकर	दिसं.	2	6	5
गुरु	(वर्षारम्भ में तुला में)				
"	वृश्चिक	नवं.	26	5	55
शनि	(वर्षारम्भ में कन्या में)				
"	तुला	अक्तू.	6	6	23
राहु	(पूरा वर्ष मिथुन में)				

* वक्र गति से राशि प्रवेश

ग्रहों का राशि चार

(सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है)

सन् 1983

ग्रह	राशि	तारीख	समय घं. मि.
सूर्य	(वर्षारम्भ में धनु में)		
"	मकर	जन. 14	14 21
"	कुम्भ	फर. 13	3 21
"	मीन	मार्च 15	0 15
"	मेष	अप्रै. 14	8 47
"	वृष	मई 15	5 40
"	मिथुन	जून 15	12 16
"	कर्क	जुला. 16	23 10
"	सिंह	अग. 17	7 36
"	कन्या	सितं. 17	7 33
"	तुला	अक्तू. 17	19 28
"	वृश्चिक	नवं. 16	19 12
"	धनु	दिसं. 16	9 45

ग्रह	राशि	तारीख	समय घं. मि.
बुध	(वर्षारम्भ में मकर में)		
"	*धनु	जन. 17	18 01
"	मकर	फर. 8	21 40
"	कुम्भ	मार्च 3	10 26
"	मीन	20	18 25
"	मेष	अप्रै. 4	17 13
"	वृष	25	11 13
"	*मेष	मई 8	22 50
"	वृष	जून 8	22 20
"	मिथुन	28	21 38
"	कर्क	जुला. 13	0 59
"	सिंह	28	17 52
"	कन्या	अग. 20	1 42
"	*सिंह	सितं. 14	13 06
"	कन्या	अक्तू. 4	21 41
"	तुला	23	2 43
"	वृश्चिक	नवं. 10	12 06
"	धनु	30	6 18

ग्रह	राशि	तारीख	समय घं. मि.
शुक्र	(वर्षारम्भ में मकर में)		
"	कुम्भ	जन. 24	20 15
"	मीन	फर. 17	23 08
"	मेष	मार्च 14	9 20
"	वृष	अप्रै. 8	7 32
"	मिथुन	मई 4	1 16
"	कर्क	31	7 43
"	सिंह	जुला. 1	22 05
"	*कर्क	सितं. 11	7 27
"	सिंह	20	16 32
"	कन्या	नवं. 3	9 29
"	तुला	दिसं. 1	8 10
"	वृश्चिक	26	23 59

ग्रह	राशि	तारीख	समय घं. मि.
भौम	(वर्षारम्भ में मकर में)		
"	कुम्भ	जन. 9	15 38
"	मीन	फर. 16	23 51
"	मेष	मार्च 28	6 23
"	वृष	मई 8	4 20
"	मिथुन	जून 20	2 47
"	कर्क	अग. 4	2 52
"	सिंह	सितं. 20	0 41
"	कन्या	नवं. 7	22 20
"	तुला	दिसं. 30	7 24
गुरु	(वर्षारम्भ में वृश्चिक में)		
"	धनु	दिसं. 22	3 1
शनि	(पूरा वर्ष तुला में)		
राहु	(वर्षारम्भ में मिथुन में)		
"	वृष	जुला. 13	11 12

सन् 1984

ग्रह	राशि	तारीख	समय घं. मि.
सूर्य	(वर्षारम्भ में धनु में)		
"	मकर	जन. 14	20 24
"	कुम्भ	फर. 13	9 22
"	मीन	मार्च 14	6 16
"	मेष	अप्रै. 13	14 50
"	वृष	मई 14	11 48
"	मिथुन	जून 14	18 30
"	कर्क	जुला. 16	5 26
"	सिंह	अग. 16	13 53
"	कन्या	सितं. 16	13 50
"	तुला	अक्तू. 17	1 46
"	वृश्चिक	नवं. 16	1 30
"	धनु	दिसं. 15	16 04

ग्रह	राशि	तारीख	समय घं. मि.
बुध	(वर्षारम्भ में धनु में)		
"	मकर	फर. 4	20 30
"	कुम्भ	24	6 52
"	मीन	मार्च 11	16 28
"	मेष	27	13 10
"	वृष	जून 4	5 1
"	मिथुन	19	14 20
"	कर्क	जुला. 3	16 51
"	सिंह	21	13 53
"	कन्या	सितं. 27	12 50
"	तुला	अक्तू. 14	12 29
"	वृश्चिक	नवं. 2	10 53
"	धनु	24	8 43
"	*वृश्चिक	दिसं. 14	5 11

ग्रह	राशि	तारीख	समय घं. मि.
शुक्र	(वर्षारम्भ में वृश्चिक में)		
"	धनु	जन. 20	19 16
"	मकर	फर. 14	6 14
"	कुम्भ	मार्च 9	14 13
"	मीन	अप्रै. 2	21 48
"	मेष	27	6 14
"	वृष	मई 21	15 49
"	मिथुन	जून 15	1 58
"	कर्क	जुला. 9	11 49
"	सिंह	अग. 2	21 05
"	कन्या	27	6 25
"	तुला	सितं. 20	16 58
"	वृश्चिक	अक्तू. 15	5 57
"	धनु	नवं. 8	22 54
"	मकर	दिसं. 3	23 45
"	कुम्भ	29	19 44

ग्रह	राशि	तारीख	समय घं. मि.
भौम	(वर्षारम्भ में तुला में)		
"	वृश्चिक	मार्च 6	22 30
"	*तुला	मई 3	11 37
"	वृश्चिक	अग. 5	4 17
"	धनु	सितं. 26	2 31
"	मकर	नवं. 7	10 35
"	कुम्भ	दिसं. 17	4 27
गुरु	(पूरा वर्ष धनु में)		
शनि	(वर्षारम्भ में तुला में)		
"	वृश्चिक	दिसं. 21	8 39
राहु	(पूरा वर्ष वृष में)		

सन् 1985

ग्रह	राशि	तारीख	समय घं. मि.
सूर्य	(वर्षारम्भ में धनु में)		
"	मकर	जन. 14	2 43
"	कुम्भ	फर. 12	15 39
"	मीन	मार्च 14	12 32
"	मेष	अप्रै. 13	21 05
"	वृष	मई 14	18 02
"	मिथुन	जून 15	0 40
"	कर्क	जुला. 16	11 32
"	सिंह	अग. 16	19 54
"	कन्या	सितं. 16	19 47
"	तुला	अक्तू. 17	7 42
"	वृश्चिक	नवं. 16	7 29
"	धनु	दिसं. 15	22 07

ग्रह	राशि	तारीख	समय घं. मि.
बुध	(वर्षारम्भ में वृश्चिक में)		
"	धनु	जन. 6	20 05
"	मकर	28	11 30
"	कुम्भ	फर. 15	16 18
"	मीन	मार्च 3	18 58
"	मेष	मई 9	19 36
"	वृष	27	22 06
"	मिथुन	जून 10	23 00
"	कर्क	26	3 53
"	सिंह	जुला. 21	19 46
"	*कर्क	अग. 3	12 59
"	सिंह	सितं. 3	3 53
"	कन्या	19	17 54
"	तुला	अक्तू. 7	0 27
"	वृश्चिक	27	3 2

ग्रह	राशि	तारीख	समय घं. मि.
शुक्र	(वर्षारम्भ में कुम्भ में)		
"	मीन	जन. 26	22 05
"	मेष	मई 30	7 26
"	वृष	जून 30	13 46
"	मिथुन	जुला. 28	0 27
"	कर्क	अग. 23	0 8
"	सिंह	सितं. 17	2 54
"	कन्या	अक्तू. 11	15 26
"	तुला	नवं. 4	18 52
"	वृश्चिक	28	17 21
"	धनु	दिसं. 22	13 50

ग्रह	राशि	तारीख	समय घं. मि.
भौम	(वर्षारम्भ में कुम्भ में)		
"	मीन	जन. 25	12 56
"	मेष	मार्च 6	17 46
"	वृष	अप्रै. 17	12 41
"	मिथुन	मई 31	4 40
"	कर्क	जुला. 15	14 36
"	सिंह	अग. 31	7 17
"	कन्या	अक्तू. 17	18 14
"	तुला	दिसं. 4	18 35
गुरु	(वर्षारम्भ में धनु में)		
"	मकर	जन. 10	14 38
शनि	(वर्षारम्भ में वृश्चिक में)		
"	*तुला	जून 1	2 53
"	वृश्चिक	सितं. 17	5 0
राहु	(वर्षारम्भ में वृष में)		
"	मेष	जन. 29	14 10

* वक्र गति से राशि प्रवेश

ग्रहों की राशि चार

(सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है)

सन् 1986

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
सूर्य	(वर्षारम्भ में धनु में)				
"	मकर	जन.	14	8	51
"	कुम्भ	फर.	12	21	49
"	मीन	मार्च	14	18	42
"	मेष	अप्रै.	14	3	12
"	वृष	मई	15	0	6
"	मिथुन	जून	15	6	43
"	कर्क	जुला.	16	17	37
"	सिंह	अग.	17	2	1
"	कन्या	सितं.	17	1	56
"	तुला	अक्तू.	17	13	53
"	वृश्चिक	नवं.	16	13	41
"	धनु	दिसं.	16	4	20

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
बुध	(वर्षारम्भ में वृश्चिक में)				
"	धनु	जन.	1	18	27
"	मकर		21	8	50
"	कुम्भ	फर.	7	22	52
"	मीन		25	8	42
"	*कुम्भ	मार्च	19	10	55
"	मीन	अप्रै.	11	13	13
"	मेष	मई	4	3	42
"	वृष		19	14	54
"	मिथुन	जून	2	13	54
"	कर्क		20	22	00
"	सिंह	अग.	27	3	41
"	कन्या	सितं.	11	18	26
"	तुला		29	22	39
"	वृश्चिक	अक्तू.	23	8	24
"	*तुला	नवं.	10	23	29
"	वृश्चिक	दिसं.	5	14	35
"	धनु		26	2	36

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
शुक्र	(वर्षारम्भ में धनु में)				
"	मकर	जन.	15	10	05
"	कुम्भ	फर.	8	7	20
"	मीन	मार्च	4	6	58
"	मेष		28	10	40
"	वृष	अप्रै.	21	20	06
"	मिथुन	मई	16	12	56
"	कर्क	जून	10	15	32
"	सिंह	जुला.	6	8	51
"	कन्या	अग.	2	4	39
"	तुला		31	15	26
"	वृश्चिक	दिसं.	31	18	19

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
भौम	(वर्षारम्भ में तुला में)				
"	वृश्चिक	जन.	22	20	20
"	धनु	मार्च	16	5	23
"	मकर	सितं.	26	22	30
"	कुम्भ	नवं.	16	20	46
"	मीन	दिसं.	30	16	32
गुरु	(वर्षारम्भ में मकर में)				
"	कुम्भ	जन.	25	7	1
शनि	(पूरा वर्ष वृश्चिक में)				
राहु	(वर्षारम्भ में मेष में)				
"	मीन	अग.	18	17	09

सन् 1987

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
सूर्य	(वर्षारम्भ में धनु में)				
"	मकर	जन.	14	15	04
"	कुम्भ	फर.	13	4	1
"	मीन	मार्च	15	0	51
"	मेष	अप्रै.	14	9	19
"	वृष	मई	15	6	11
"	मिथुन	जून	15	12	49
"	कर्क	जुला.	16	23	45
"	सिंह	अग.	17	8	13
"	कन्या	सितं.	17	8	11
"	तुला	अक्तू.	17	20	08
"	वृश्चिक	नवं.	16	19	55
"	धनु	दिसं.	16	10	32

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
बुध	(वर्षारम्भ में धनु में)				
"	मकर	जन.	13	23	36
"	कुम्भ		31	13	12
"	मीन	अप्रै.	8	20	45
"	मेष		26	16	12
"	वृष	मई	11	0	58
"	मिथुन		26	7	18
"	कर्क	अग.	3	12	33
"	सिंह		18	23	13
"	कन्या	सितं.	4	0	17
"	तुला		23	21	30
"	वृश्चिक	नवं.	29	17	09
"	धनु	दिसं.	18	23	12

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
शुक्र	(वर्षारम्भ में वृश्चिक में)				
"	धनु	जन.	30	14	52
"	मकर	फर.	26	3	15
"	कुम्भ	मार्च	23	14	37
"	मीन	अप्रै.	17	15	41
"	मेष	मई	12	12	07
"	वृष	जून	6	5	57
"	मिथुन		30	21	13
"	कर्क	जुला.	25	9	4
"	सिंह	अग.	18	17	03
"	कन्या	सितं.	11	21	45
"	तुला	अक्तू.	6	0	34
"	वृश्चिक		30	2	51
"	धनु	नवं.	23	5	30
"	मकर	दिसं.	17	9	36

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
भौम	(वर्षारम्भ में मीन में)				
"	मेष	फर.	11	16	48
"	वृष	मार्च	27	12	35
"	मिथुन	मई	11	16	08
"	कर्क	जून	27	1	14
"	सिंह	अग.	13	3	0
"	कन्या	सितं.	29	4	35
"	तुला	नवं.	14	16	32
"	वृश्चिक	दिसं.	30	8	46
गुरु	(वर्षारम्भ में कुम्भ में)				
"	मीन	फर.	3	1	4
"	मेष	जून	16	21	37
"	*मीन	अक्तू.	26	4	42
शनि	(वर्षारम्भ में वृश्चिक में)				
"	धनु	दिसं.	17	2	43
राहु	(पूरा वर्ष मीन में)				

सन् 1988

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
सूर्य	(वर्षारम्भ में धनु में)				
"	मकर	जन.	14	21	15
"	कुम्भ	फर.	13	10	14
"	मीन	मार्च	14	7	6
"	मेष	अप्रै.	13	15	35
"	वृष	मई	14	12	26
"	मिथुन	जून	14	19	02
"	कर्क	जुला.	16	5	55
"	सिंह	अग.	16	14	19
"	कन्या	सितं.	16	14	14
"	तुला	अक्तू.	17	2	10
"	वृश्चिक	नवं.	16	1	55
"	धनु	दिसं.	15	16	31

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
बुध	(वर्षारम्भ में धनु में)				
"	मकर	जन.	6	15	13
"	कुम्भ		26	5	2
"	*मकर	फर.	9	15	08
"	कुम्भ	मार्च	11	10	49
"	मीन	अप्रै.	1	11	55
"	मेष		17	11	47
"	वृष	मई	1	18	34
"	मिथुन		23	6	0
"	*वृष	जून	10	23	39
"	मिथुन	जुला.	6	23	19
"	कर्क		26	2	2
"	सिंह	अग.	9	15	52
"	कन्या		26	20	46
"	तुला	सितं.	20	17	25
"	*कन्या	अक्तू.	6	11	54
"	तुला	नवं.	2	17	00
"	वृश्चिक		21	16	21
"	धनु	दिसं.	10	17	24
"	मकर		29	19	26

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
शुक्र	(वर्षारम्भ में मकर में)				
"	कुम्भ	जन.	10	17	44
"	मीन	फर.	4	11	33
"	मेष	मार्च	1	2	7
"	वृष		28	15	27
"	मिथुन	मई	2	15	49
"	*वृष	जून	10	19	53
"	मिथुन	जुला.	29	19	43
"	कर्क	सितं.	1	15	49
"	सिंह		29	6	39
"	कन्या	अक्तू.	24	22	50
"	तुला	नवं.	18	16	13
"	वृश्चिक	दिसं.	12	22	07

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
भौम	(वर्षारम्भ में वृश्चिक में)				
"	धनु	फर.	13	6	51
"	मकर	मार्च	28	18	32
"	कुम्भ	मई	12	18	51
"	मीन	जुला.	1	9	42
गुरु	(वर्षारम्भ में मीन में)				
"	मेष	फर.	3	2	28
"	वृष	जून	19	23	02
शनि	(पूरा वर्ष धनु में)				
राहु	(वर्षारम्भ में मीन में)				
"	कुम्भ	मार्च	6	20	07

* वक्र गति से राशि प्रवेश

ग्रहों का राशि चार

(सर्वत्र भा. स्टें. टा. दिया गया है)

सन् 1989

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
सूर्य	(वर्षारम्भ में धनु में)				
"	मकर	जन.	14	3	15
"	कुम्भ	फर.	12	16	16
"	मीन	मार्च	14	13	12
"	मेष	अप्रै.	13	21	45
"	वृष	मई	14	18	39
"	मिथुन	जून	15	1	16
"	कर्क	जुला.	16	12	08
"	सिंह	अग.	16	20	31
"	कन्या	सितं.	16	20	27
"	तुला	अक्तू.	17	8	23
"	वृश्चिक	नवं.	16	8	10
"	धनु	दिसं.	15	22	48

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
बुध	(वर्षारम्भ में मकर में)				
"	कुम्भ	मार्च	6	19	28
"	मीन		25	0	11
"	मेष	अप्रै.	9	2	37
"	वृष		25	2	26
"	मिथुन	जुला.	2	20	32
"	कर्क		17	15	38
"	सिंह	अग.	1	16	25
"	कन्या		21	3	58
"	तुला	अक्तू.	27	1	30
"	वृश्चिक	नवं.	14	9	3
"	धनु	दिसं.	3	16	45
"	मकर		26	1	51

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
शुक्र	(वर्षारम्भ में वृश्चिक में)				
"	धनु	जन.	5	22	55
"	मकर		29	22	07
"	कुम्भ	फर.	22	21	36
"	मीन	मार्च	18	22	41
"	मेष	अप्रै.	12	2	25
"	वृष	मई	6	9	22
"	मिथुन		30	19	33
"	कर्क	जून	24	8	54
"	सिंह	जुला.	19	2	4
"	कन्या	अग.	13	0	59
"	तुला	सितं.	7	8	56
"	वृश्चिक	अक्तू.	3	8	1
"	धनु		30	14	37
"	मकर	दिसं.	1	10	32

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
भौम	(वर्षारम्भ में मीन में)				
"	मेष	जन.	7	23	29
"	वृष	मार्च	1	4	56
"	मिथुन	अप्रै.	19	5	40
"	कर्क	जून	6	16	47
"	सिंह	जुला.	24	19	16
"	कन्या	सितं.	10	2	6
"	तुला	अक्तू.	26	0	56
"	वृश्चिक	दिसं.	9	8	45
गुरु	(वर्षारम्भ में वृष में)				
"	मिथुन	जुला.	2	5	38
शनि	(पूरा वर्ष धनु में)				
राहु	(वर्षारम्भ में कुम्भ में)				
"	मकर	सितं.	23	23	05

सन् 1990

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
सूर्य	(वर्षारम्भ में धनु में)				
"	मकर	जन.	14	9	31
"	कुम्भ	फर.	12	22	32
"	मीन	मार्च	14	19	26
"	मेष	अप्रै.	14	3	57
"	वृष	मई	15	0	49
"	मिथुन	जून	15	7	24
"	कर्क	जुला.	16	18	13
"	सिंह	अग.	17	2	35
"	कन्या	सितं.	17	2	29
"	तुला	अक्तू.	17	14	27
"	वृश्चिक	नवं.	16	14	16
"	धनु	दिसं.	16	4	57

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
बुध	(वर्षारम्भ में मकर में)				
"	*धनु	जन.	4	22	33
"	मकर	फर.	7	10	06
"	कुम्भ		28	4	0
"	मीन	मार्च	17	0	47
"	मेष	अप्रै.	1	2	36
"	वृष	जून	7	22	14
"	मिथुन		25	3	26
"	कर्क	जुला.	9	3	3
"	सिंह		25	13	11
"	कन्या	अक्तू.	2	6	4
"	तुला		19	13	52
"	वृश्चिक	नवं.	7	3	25
"	धनु		27	11	15

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
शुक्र	(वर्षारम्भ में मकर में)				
"	*धनु	जन.	27	20	21
"	मकर	फर.	20	21	44
"	कुम्भ	मार्च	31	9	30
"	मीन	अप्रै.	28	18	06
"	मेष	मई	25	5	36
"	वृष	जून	19	22	22
"	मिथुन	जुला.	15	3	51
"	कर्क	अग.	9	0	4
"	सिंह	सितं.	2	11	55
"	कन्या		26	16	57
"	तुला	अक्तू.	20	17	28
"	वृश्चिक	नवं.	13	15	41
"	धनु	दिसं.	7	13	04
"	मकर		31	10	38

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
भौम	(वर्षारम्भ में वृश्चिक में)				
"	धनु	जन.	21	1	44
"	मकर	मार्च	3	9	15
"	कुम्भ	अप्रै.	12	18	16
"	मीन	मई	23	0	8
"	मेष	जुला.	3	16	20
"	वृष	अग.	19	20	45
गुरु	(वर्षारम्भ में मिथुन में)				
"	कर्क	जुला.	20	23	42
शनि	(वर्षारम्भ में धनु में)				
"	मकर	मार्च	21	1	52
"	*धनु	जून	20	17	35
"	मकर	दिसं.	15	0	57
राहु	(पूरा वर्ष मकर में)				

सन् 1991

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
सूर्य	(वर्षारम्भ में धनु में)				
"	मकर	जन.	14	15	42
"	कुम्भ	फर.	13	4	42
"	मीन	मार्च	15	1	35
"	मेष	अप्रै.	14	10	04
"	वृष	मई	15	6	56
"	मिथुन	जून	15	13	31
"	कर्क	जुला.	17	0	21
"	सिंह	अग.	17	8	44
"	कन्या	सितं.	17	8	38
"	तुला	अक्तू.	17	20	34
"	वृश्चिक	नवं.	16	20	21
"	धनु	दिसं.	16	10	59

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
बुध	(वर्षारम्भ में धनु में)				
"	*वृश्चिक	जन.	3	8	45
"	धनु		4	14	13
"	मकर	फर.	1	23	23
"	कुम्भ		20	18	37
"	मीन	मार्च	8	23	05
"	मेष		26	13	44
"	*मीन	अप्रै.	15	23	37
"	मेष	मई	11	1	36
"	वृष	जून	1	23	57
"	मिथुन		16	14	45
"	कर्क	जुला.	1	0	55
"	सिंह		20	15	42
"	*कर्क	अग.	28	14	31
"	सिंह	सितं.	3	23	27
"	कन्या		24	23	20
"	तुला	अक्तू.	11	23	38
"	वृश्चिक		31	7	34
"	धनु	नवं.	26	12	53
"	*वृश्चिक	दिसं.	1	5	2

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
शुक्र	(वर्षारम्भ में मकर में)				
"	कुम्भ	जन.	24	9	46
"	मीन	फर.	17	12	52
"	मेष	मार्च	13	23	29
"	वृष	अप्रै.	7	22	29
"	मिथुन	मई	3	17	50
"	कर्क		31	4	13
"	सिंह	जुला.	2	11	29
"	*कर्क	सितं.	1	19	17
"	सिंह		25	22	54
"	कन्या	नवं.	3	10	10
"	तुला	दिसं.	1	2	27
"	वृश्चिक		26	16	00

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
भौम	(वर्षारम्भ में वृष में)				
"	मिथुन	मार्च	22	4	22
"	कर्क	मई	15	23	14
"	सिंह	जुला.	5	12	31
"	कन्या	अग.	22	17	30
"	तुला	अक्तू.	7	17	21
"	वृश्चिक	नवं.	20	11	25
गुरु	(वर्षारम्भ में कर्क में)				
"	सिंह	अग.	14	15	36
शनि	(पूरा वर्ष मकर में)				
राहु	(वर्षारम्भ में मकर में)				
"	धनु	अप्रै.	13	2	2

* वक्र गति से राशि प्रवेश

ग्रहों का राशि चार

(सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है)

सन् 1992

ग्रह	राशि	तारीख	समय घं.	मि.
सूर्य	(वर्षारम्भ में धनु में)			
"	मकर	जन. 14	21	43
"	कुम्भ	फर. 13	10	42
"	मीन	मार्च 14	7	36
"	मेष	अप्रै. 13	16	08
"	वृष	मई 14	13	03
"	मिथुन	जून 14	19	44
"	कर्क	जुला. 16	6	39
"	सिंह	अग. 16	15	03
"	कन्या	सितं. 16	14	57
"	तुला	अक्तू. 17	2	51
"	वृश्चिक	नवं. 16	2	35
"	धनु	दिसं. 15	17	13
बुध	(वर्षारम्भ में वृश्चिक में)			
"	धनु	जन. 5	17	31
"	मकर	26	4	47
"	कुम्भ	फर. 13	1	49
"	मीन	29	9	28
"	मेष	मई 7	11	05
"	वृष	24	3	38
"	मिथुन	जून 7	0	21
"	कर्क	23	3	49
"	सिंह	अग. 31	4	0
"	कन्या	सितं. 16	0	54
"	तुला	अक्तू. 3	14	53
"	वृश्चिक	24	15	09
"	*तुला	नवं. 27	11	13
"	वृश्चिक	दिसं. 5	23	40
"	धनु	29	17	13
शुक्र	(वर्षारम्भ में वृश्चिक में)			
"	धनु	जन. 20	10	11
"	मकर	फर. 13	20	30
"	कुम्भ	मार्च 9	4	2
"	मीन	अप्रै. 2	11	16
"	मेष	26	19	26
"	वृष	मई 21	4	50
"	मिथुन	जून 14	14	54
"	कर्क	जुला. 9	0	46
"	सिंह	अग. 2	10	10
"	कन्या	26	19	45
"	तुला	सितं. 20	6	40
"	वृश्चिक	अक्तू. 14	20	11
"	धनु	नवं. 8	13	58
"	मकर	दिसं. 3	16	12
"	कुम्भ	29	14	55
भौम	(वर्षारम्भ में वृश्चिक में)			
"	धनु	जन. 1	4	13
"	मकर	फर. 10	5	34
"	कुम्भ	मार्च 20	6	5
"	मीन	अप्रै. 28	0	14
"	मेष	जून 6	11	26
"	वृष	जुला. 17	23	05
"	मिथुन	सितं. 1	20	25
"	कर्क	नवं. 4	0	18
"	*मिथुन	दिसं. 22	20	47
गुरु	(वर्षारम्भ में सिंह में)			
"	कन्या	सितं. 11	18	44
शनि	(पूरा वर्ष मकर में)			
राहु	(वर्षारम्भ में धनु में)			
"	वृश्चिक	अक्तू. 30	5	0

सन् 1993

ग्रह	राशि	तारीख	समय घं.	मि.
सूर्य	(वर्षारम्भ में धनु में)			
"	मकर	जन. 14	3	57
"	कुम्भ	फर. 12	16	57
"	मीन	मार्च 14	13	52
"	मेष	अप्रै. 13	22	25
"	वृष	मई 14	19	20
"	मिथुन	जून 15	1	57
"	कर्क	जुला. 16	12	48
"	सिंह	अग. 16	21	08
"	कन्या	सितं. 16	20	59
"	तुला	अक्तू. 17	8	51
"	वृश्चिक	नवं. 16	8	36
"	धनु	दिसं. 15	23	14
बुध	(वर्षारम्भ में धनु में)			
"	मकर	जन. 17	22	20
"	कुम्भ	फर. 4	9	52
"	मीन	25	19	49
"	*कुम्भ	मार्च 2	13	35
"	मीन	अप्रै. 11	0	35
"	मेष	30	19	01
"	वृष	मई 15	15	59
"	मिथुन	29	23	01
"	कर्क	जून 20	21	10
"	*मिथुन	जुला. 13	10	46
"	कर्क	अग. 5	15	09
"	सिंह	23	9	54
"	कन्या	सितं. 8	2	40
"	तुला	26	20	51
"	वृश्चिक	दिसं. 3	1	12
"	धनु	22	18	51
शुक्र	(वर्षारम्भ में कुम्भ में)			
"	मीन	जन. 27	1	19
"	मेष	मई 30	16	44
"	वृष	जून 30	9	50
"	मिथुन	जुला. 27	16	52
"	कर्क	अग. 22	14	56
"	सिंह	सितं. 16	16	52
"	कन्या	अक्तू. 11	4	58
"	तुला	नवं. 4	8	9
"	वृश्चिक	28	6	32
"	धनु	दिसं. 22	2	58
भौम	(वर्षारम्भ में मिथुन में)			
"	कर्क	अप्रै. 14	12	14
"	सिंह	जून 12	14	27
"	कन्या	अग. 2	7	4
"	तुला	सितं. 18	0	37
"	वृश्चिक	अक्तू. 31	17	15
"	धनु	दिसं. 11	22	50
गुरु	(वर्षारम्भ में कन्या में)			
"	तुला	अक्तू. 12	18	28
शनि	(वर्षारम्भ में मकर में)			
"	कुम्भ	मार्च 5	18	26
"	*मकर	अक्तू. 15	12	44
"	कुम्भ	नवं. 10	4	23
राहु	(पूरा वर्ष वृश्चिक में)			

सन् 1994

ग्रह	राशि	तारीख	समय घं.	मि.
सूर्य	(वर्षारम्भ में धनु में)			
"	मकर	जन. 14	10	00
"	कुम्भ	फर. 12	23	03
"	मीन	मार्च 14	19	59
"	मेष	अप्रै. 14	4	32
"	वृष	मई 15	1	24
"	मिथुन	जून 15	8	0
"	कर्क	जुला. 16	18	51
"	सिंह	अग. 17	3	14
"	कन्या	सितं. 17	3	9
"	तुला	अक्तू. 17	15	04
"	वृश्चिक	नवं. 16	14	50
"	धनु	दिसं. 16	5	26
बुध	(वर्षारम्भ में धनु में)			
"	मकर	जन. 10	12	28
"	कुम्भ	28	10	43
"	*मकर	फर. 28	23	01
"	कुम्भ	मार्च 10	7	30
"	मीन	अप्रै. 6	1	19
"	मेष	22	22	31
"	वृष	मई 7	3	16
"	मिथुन	23	18	43
"	कर्क	जुला. 31	6	50
"	सिंह	अग. 15	2	35
"	कन्या	31	13	22
"	तुला	सितं. 21	17	19
"	*कन्या	अक्तू. 24	17	49
"	तुला	नवं. 5	9	1
"	वृश्चिक	26	11	25
"	धनु	दिसं. 15	13	37
शुक्र	(वर्षारम्भ में धनु में)			
"	मकर	जन. 14	23	13
"	कुम्भ	फर. 7	20	29
"	मीन	मार्च 3	20	09
"	मेष	27	23	57
"	वृष	अप्रै. 21	9	36
"	मिथुन	मई 16	2	51
"	कर्क	जून 10	6	14
"	सिंह	जुला. 6	1	2
"	कन्या	अग. 2	0	1
"	तुला	31	20	30
भौम	(वर्षारम्भ में धनु में)			
"	मकर	जन. 20	9	5
"	कुम्भ	फर. 27	18	41
"	मीन	अप्रै. 6	23	59
"	मेष	मई 15	22	19
"	वृष	जून 25	11	28
"	मिथुन	अग. 7	15	18
"	कर्क	सितं. 24	3	17
"	सिंह	नवं. 22	19	28
गुरु	(वर्षारम्भ में तुला में)			
"	वृश्चिक	नवं. 11	12	17
शनि	(पूरा वर्ष कुम्भ में)			
राहु	(वर्षारम्भ में वृश्चिक में)			
"	तुला	मई 19	7	59

* वक्र गति से राशि प्रवेश

ग्रहों का राशि चार

(सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है)

सन् 1995

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
सूर्य	(वर्षारम्भ में धनु में)				
"	मकर	जन.	14	16	08
"	कुम्भ	फर.	13	5	6
"	मीन	मार्च	15	2	0
"	मेष	अप्रै.	14	10	32
"	वृष	मई	15	7	26
"	मिथुन	जून	15	14	06
"	कर्क	जुला.	17	1	1
"	सिंह	अग.	17	9	28
"	कन्या	सितं.	17	9	26
"	तुला	अक्तू.	17	21	23
"	वृश्चिक	नवं.	16	21	09
"	धनु	दिसं.	16	11	44

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
बुध	(वर्षारम्भ में धनु में)				
"	मकर	जन.	3	7	18
"	कुम्भ	मार्च	10	14	11
"	मीन		30	2	3
"	मेष	अप्रै.	14	14	40
"	वृष		29	6	41
"	मिथुन	जुला.	6	20	50
"	कर्क		23	5	41
"	सिंह	अग.	6	21	23
"	कन्या		24	20	43
"	तुला	अक्तू.	31	18	30
"	वृश्चिक	नवं.	19	6	34
"	धनु	दिसं.	8	9	2
"	मकर		28	1	58

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
शुक्र	(वर्षारम्भ में तुला में)				
"	वृश्चिक	जन.	1	3	46
"	धनु		30	11	35
"	मकर	फर.	25	20	20
"	कुम्भ	मार्च	23	6	1
"	मीन	अप्रै.	17	6	7
"	मेष	मई	12	1	56
"	वृष	जून	5	19	21
"	मिथुन		30	10	21
"	कर्क	जुला.	24	22	02
"	सिंह	अग.	18	5	58
"	कन्या	सितं.	11	10	44
"	तुला	अक्तू.	5	13	43
"	वृश्चिक		29	16	14
"	धनु	नवं.	22	19	10
"	मकर	दिसं.	16	23	36

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
भौम	(वर्षारम्भ में सिंह में)				
"	*कर्क	फर.	10	2	39
"	सिंह	मई	11	4	25
"	कन्या	जुला.	10	21	59
"	तुला	अग.	29	1	0
"	वृश्चिक	अक्तू.	12	8	54
"	धनु	नवं.	22	14	01
"	मकर	दिसं.	31	18	12
गुरु	(वर्षारम्भ में वृश्चिक में)				
"	धनु	दिसं.	7	6	54
शनि	(वर्षारम्भ में कुम्भ में)				
"	मीन	जून	2	10	23
"	*कुम्भ	अग.	10	2	10
राहु	(वर्षारम्भ में तुला में)				
"	कन्या	दिसं.	6	10	57

सन् 1996

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
सूर्य	(वर्षारम्भ में धनु में)				
"	मकर	जन.	14	22	24
"	कुम्भ	फर.	13	11	21
"	मीन	मार्च	14	8	13
"	मेष	अप्रै.	13	16	44
"	वृष	मई	14	13	39
"	मिथुन	जून	14	20	18
"	कर्क	जुला.	16	7	12
"	सिंह	अग.	16	15	35
"	कन्या	सितं.	16	15	30
"	तुला	अक्तू.	17	3	26
"	वृश्चिक	नवं.	16	3	11
"	धनु	दिसं.	15	17	47

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
बुध	(वर्षारम्भ में मकर में)				
"	*धनु	जन.	22	13	09
"	मकर	फर.	9	5	20
"	कुम्भ	मार्च	3	19	20
"	मीन		21	8	5
"	मेष	अप्रै.	5	7	6
"	वृष		23	20	59
"	*मेष	मई	16	10	33
"	वृष	जून	7	16	21
"	मिथुन		29	10	34
"	कर्क	जुला.	13	16	41
"	सिंह		29	4	36
"	कन्या	अग.	19	12	43
"	*सिंह	सितं.	18	20	11
"	कन्या	अक्तू.	4	18	19
"	तुला		23	14	36
"	वृश्चिक	नवं.	10	23	05
"	धनु		30	13	52

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
शुक्र	(वर्षारम्भ में मकर में)				
"	कुम्भ	जन.	10	8	14
"	मीन	फर.	4	3	0
"	मेष		29	19	32
"	वृष	मार्च	28	14	13
"	मिथुन	मई	4	8	56
"	*वृष	जून	4	15	58
"	मिथुन	जुला.	30	16	04
"	कर्क	सितं.	1	13	12
"	सिंह		28	23	34
"	कन्या	अक्तू.	24	13	58
"	तुला	नवं.	18	6	30
"	वृश्चिक	दिसं.	12	11	57

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
भौम	(वर्षारम्भ में मकर में)				
"	कुम्भ	फर.	7	21	21
"	मीन	मार्च	16	22	27
"	मेष	अप्रै.	24	19	01
"	वृष	जून	4	5	45
"	मिथुन	जुला.	16	21	09
"	कर्क	अग.	31	6	47
"	सिंह	अक्तू.	19	13	57
"	कन्या	दिसं.	17	17	50
गुरु	(वर्षारम्भ में धनु में)				
"	मकर	दिसं.	26	7	57
शनि	(वर्षारम्भ में कुम्भ में)				
"	मीन	फर.	16	18	19
राहु	(पूरा वर्ष कन्या में)				

सन् 1997

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
सूर्य	(वर्षारम्भ में धनु में)				
"	मकर	जन.	14	4	28
"	कुम्भ	फर.	12	17	26
"	मीन	मार्च	14	14	19
"	मेष	अप्रै.	13	22	51
"	वृष	मई	14	19	47
"	मिथुन	जून	15	2	27
"	कर्क	जुला.	16	13	21
"	सिंह	अग.	16	21	46
"	कन्या	सितं.	16	21	41
"	तुला	अक्तू.	17	9	38
"	वृश्चिक	नवं.	16	9	25
"	धनु	दिसं.	16	0	4

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
बुध	(वर्षारम्भ में धनु में)				
"	मकर	फर.	5	1	28
"	कुम्भ		24	18	27
"	मीन	मार्च	13	6	32
"	मेष		28	19	52
"	वृष	जून	5	11	58
"	मिथुन		21	6	4
"	कर्क	जुला.	5	7	0
"	सिंह		22	17	10
"	कन्या	सितं.	29	0	15
"	तुला	अक्तू.	16	0	42
"	वृश्चिक	नवं.	3	20	25
"	धनु		25	4	36
"	*वृश्चिक	दिसं.	18	16	59

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
शुक्र	(वर्षारम्भ में वृश्चिक में)				
"	धनु	जन.	5	12	29
"	मकर		29	11	28
"	कुम्भ	फर.	22	10	47
"	मीन	मार्च	18	11	44
"	मेष	अप्रै.	11	15	24
"	वृष	मई	5	22	21
"	मिथुन		30	8	39
"	कर्क	जून	23	22	14
"	सिंह	जुला.	18	15	52
"	कन्या	अग.	12	15	31
"	तुला	सितं.	7	0	43
"	वृश्चिक	अक्तू.	3	2	3
"	धनु		30	13	46
"	मकर	दिसं.	2	10	12

ग्रह	राशि	तारीख		समय घं.	मि.
भौम	(वर्षारम्भ में कन्या में)				
"	*सिंह	मार्च	25	4	6
"	कन्या	जून	3	20	21
"	तुला	अग.	4	8	4
"	वृश्चिक	सितं.	20	5	17
"	धनु	नवं.	1	4	43
"	मकर	दिसं.	10	14	02
गुरु	(पूरा वर्ष मकर में)				
शनि	(पूरा वर्ष मीन में)				
राहु	(वर्षारम्भ में कन्या में)				
"	सिंह	जून	24	13	54

* वक्र गति से राशि प्रवेश

ग्रहों का राशि चार

(सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है)

ग्रह	राशि	तारीख	समय घं. मि.	ग्रह	राशि	तारीख	समय घं. मि.	ग्रह	राशि	तारीख	समय घं. मि.	ग्रह	राशि	तारीख	समय घं. मि.
							सन् 1998								
सूर्य	(वर्षारम्भ में धनु में)			बुध	(वर्षारम्भ में वृश्चिक में)			शुक्र	(वर्षारम्भ में मकर में)			भौम	(वर्षारम्भ में मकर में)		
"	मकर	जन. 14	10 47	"	धनु	जन. 7	13 42	"	*धनु	जन. 20	11 46	"	कुम्भ	जन. 17	19 13
"	कुम्भ	फर. 12	23 45	"	मकर	29	20 56	"	मकर	फर. 23	13 18	"	मीन	फर. 24	23 23
"	मीन	मार्च 14	20 36	"	कुम्भ	फर. 17	5 0	"	कुम्भ	मार्च 31	10 31	"	मेष	अप्रै. 5	1 17
"	मेष	अप्रै. 14	5 4	"	मीन	मार्च 5	7 24	"	मीन	अप्रै. 28	12 30	"	वृष	मई 15	18 25
"	वृष	मई 15	1 56	"	मेष	मई 10	16 23	"	मेष	मई 24	21 28	"	मिथुन	जून 27	12 58
"	मिथुन	जून 15	8 32	"	वृष	29	11 23	"	वृष	जून 19	12 55	"	कर्क	अग. 11	12 27
"	कर्क	जुला. 16	19 26	"	मिथुन	जून 12	14 54	"	मिथुन	जुला. 14	17 40	"	सिंह	सितं. 27	17 43
"	सिंह	अग. 17	3 50	"	कर्क	27	13 49	"	कर्क	अग. 8	13 27	"	कन्या	नवं. 16	19 29
"	कन्या	सितं. 17	3 46	"	सिंह	जुला. 20	14 17	"	सिंह	सितं. 2	1 3	गुरु	(वर्षारम्भ में मकर में)		
"	तुला	अक्तू. 17	15 44	"	*कर्क	अग. 10	17 44	"	कन्या	26	6 0	"	कुम्भ	जन. 8	15 52
"	वृश्चिक	नवं. 16	15 34	"	सिंह	सितं. 4	5 58	"	तुला	अक्तू. 20	6 32	"	मीन	मई 26	4 18
"	धनु	दिसं. 16	6 15	"	कन्या	21	7 28	"	वृश्चिक	नवं. 13	4 48	"	*कुम्भ	सितं. 10	11 11
				"	तुला	अक्तू. 8	11 53	"	धनु	दिसं. 7	2 17	शनि	(वर्षारम्भ में मीन में)		
				"	वृश्चिक	28	8 43	"	मकर	30	23 58	"	मेष	अप्रै. 17	13 12
												राहु	(पूरा वर्ष सिंह में)		
							सन् 1999								
सूर्य	(वर्षारम्भ में धनु में)			बुध	(वर्षारम्भ में वृश्चिक में)			शुक्र	(वर्षारम्भ में मकर में)			भौम	(वर्षारम्भ में कन्या में)		
"	मकर	जन. 14	17 01	"	धनु	जन. 3	1 19	"	कुम्भ	जन. 23	23 17	"	तुला	जन. 12	14 46
"	कुम्भ	फर. 13	6 0	"	मकर	22	20 00	"	मीन	फर. 17	2 38	"	वृश्चिक	अग. 23	22 42
"	मीन	मार्च 15	2 51	"	कुम्भ	फर. 9	11 31	"	मेष	मार्च 13	13 40	"	धनु	अक्तू. 8	16 25
"	मेष	अप्रै. 14	11 17	"	मीन	26	10 43	"	वृष	अप्रै. 7	13 27	"	मकर	नवं. 18	10 43
"	वृष	मई 15	8 5	"	*कुम्भ	मार्च 25	16 34	"	मिथुन	मई 3	10 30	"	कुम्भ	दिसं. 27	10 18
"	मिथुन	जून 15	14 39	"	मीन	अप्रै. 11	0 56	"	कर्क	31	1 8	गुरु	(वर्षारम्भ में कुम्भ में)		
"	कर्क	जुला. 17	1 31	"	मेष	मई 5	12 54	"	सिंह	जुला. 3	4 48	"	मीन	जन. 13	3 19
"	सिंह	अग. 17	9 57	"	वृष	21	6 26	"	*कर्क	अग. 25	23 36	"	मेष	मई 26	16 29
"	कन्या	सितं. 17	9 55	"	मिथुन	जून 4	3 56	"	सिंह	सितं. 28	10 00	शनि	(पूरा वर्ष मेष में)		
"	तुला	अक्तू. 17	21 52	"	कर्क	21	18 25	"	कन्या	नवं. 3	10 08	राहु	(वर्षारम्भ में सिंह में)		
"	वृश्चिक	नवं. 16	21 38	"	सिंह	अग. 28	16 46	"	तुला	30	20 31	"	कर्क	जन. 11	16 52
"	धनु	दिसं. 16	12 16	"	कन्या	सितं. 13	7 56	"	वृश्चिक	दिसं. 26	7 54				
				"	तुला	अक्तू. 1	7 58								
				"	वृश्चिक	23	20 47								
				"	*तुला	नवं. 15	14 04								
				"	वृश्चिक	दिसं. 6	14 01								
				"	धनु	27	12 31								
							सन् 2000								
सूर्य	(वर्षारम्भ में धनु में)			बुध	(वर्षारम्भ में धनु में)			शुक्र	(वर्षारम्भ में वृश्चिक में)			भौम	(वर्षारम्भ में कुम्भ में)		
"	मकर	जन. 14	23 00	"	मकर	जन. 15	11 12	"	धनु	जन. 20	0 59	"	मीन	फर. 4	5 47
"	कुम्भ	फर. 13	11 59	"	कुम्भ	फर. 1	23 33	"	मकर	फर. 13	10 40	"	मेष	मार्च 14	23 12
"	मीन	मार्च 14	8 53	"	मीन	अप्रै. 9	0 16	"	कुम्भ	मार्च 8	17 46	"	वृष	अप्रै. 25	7 52
"	मेष	अप्रै. 13	17 23	"	मेष	27	5 34	"	मीन	अप्रै. 2	0 41	"	मिथुन	जून 7	15 25
"	वृष	मई 14	14 15	"	वृष	मई 11	16 45	"	मेष	26	8 36	"	कर्क	जुला. 22	20 08
"	मिथुन	जून 14	20 52	"	मिथुन	26	15 16	"	वृष	मई 20	17 49	"	सिंह	सितं. 7	12 55
"	कर्क	जुला. 16	7 47	"	कर्क	अग. 3	18 39	"	मिथुन	जून 14	3 47	"	कन्या	अक्तू. 25	9 20
"	सिंह	अग. 16	16 13	"	सिंह	19	14 08	"	कर्क	जुला. 8	13 41	"	तुला	दिसं. 13	12 52
"	कन्या	सितं. 16	16 11	"	कन्या	सितं. 4	12 28	"	सिंह	अग. 1	23 15	गुरु	(वर्षारम्भ में मेष में)		
"	तुला	अक्तू. 17	4 8	"	तुला	24	1 28	"	कन्या	26	9 7	"	वृष	जून 2	19 02
"	वृश्चिक	नवं. 16	3 54	"	वृश्चिक	नवं. 30	1 56	"	तुला	सितं. 19	20 28	शनि	(वर्षारम्भ में मेष में)		
"	धनु	दिसं. 15	18 31	"	धनु	दिसं. 19	10 07	"	वृश्चिक	अक्तू. 14	10 35	"	वृष	जून 7	1 4
								"	धनु	नवं. 8	5 14	राहु	(वर्षारम्भ में कर्क में)		
								"	मकर	दिसं. 3	8 53	"	मिथुन	जुला. 30	19 50
								"	कुम्भ	29	10 29				

* वक्र गति से राशि प्रवेश

इष्टकालिक चन्द्रसाधन

यहां आगे 30 पृष्ठों पर सन् 1941 से 2000 ई. तक का चन्द्रराशि–चार दिया गया है, जिसके द्वारा यहां दी गई दो सारणियों { चन्द्रसाधन सारणी (1) और (2) } की सहायता से इन 60 वर्षों में किसी भी समय का (इष्टकालिक) चन्द्र सरलतापूर्वक इस तरह स्पष्ट किया जा सकता है :–

इष्ट समय (जिस समय चन्द्र स्पष्ट करना है, उस समय) में चन्द्रमा जिस राशि में विद्यमान है, उसे ' वर्त्तमान राशि ' और वर्त्तमान राशि में चन्द्रमा जितने समय तक रहता है उस समय को ' राशिभोगकाल ' तथा ' वर्त्तमान राशि ' के प्रारम्भकाल से इष्ट समय तक बीते काल को हम यहां ' राशिभुक्तकाल ' कहेंगे।

चन्द्रसाधन सारणी (1) से 'राशिभोगकाल' के घं. मि. द्वारा चन्द्रमा की दैनिक गति (24 घण्टे की गति) जान लीजिए। इस दैनिक गति को आधा करने पर 12 घण्टे की और दुगुना करने पर 48 घण्टे की चन्द्रमा की गति प्राप्त हो जाएगी। इसके अनुसार 'राशिभुक्तकाल' के 12, 24, 36, 48, एवं 60 घण्टों का चालन इस सारणी {चन्द्रसाधन सारणी (1) } से सरलतापूर्वक जाना जा सकता है। 'राशिभुक्तकाल' के शेष घण्टा–मिनटों का चालन चन्द्रसाधन सारणी (2) से इस प्रकार जान लीजिए :–

राशिभुक्तकाल के शेष घण्टों के नीचे एवं मिनटों के आगे लिखी संख्या को इस सारणी से उठाइए। चन्द्र की दैनिक गति के अंशों के नीचे और कलाओं के आगे लिखी संख्या भी इसी सारणी से उठा लीजिए। इन दोनों संख्याओं के योग के बराबर संख्या अथवा इसकी समीपतम संख्या इसी सारणी { चन्द्रसाधन सारणी (2) } में जहां मिले उसके बिल्कुल ऊपर वाली पंक्ति में अंश और बाईं ओर वाले पहिले कॉलम में कलाएं होंगी। यही ' राशिभुक्तकाल ' के शेष घं. मि. का चालन होगा। जैसे – यदि चन्द्रमा की दैनिक गति 11 अं. 45 क. हो तो 7 घं. 30 मि. का चालन चन्द्रसाधन सारणी (2) से इस प्रकार जाना जाएगा :–

सारणी में 7 घं. के नीचे 30 मि. के आगे 5051 संख्या है, और 11 अं. के नीचे 45 क. के आगे 3102 संख्या है। इन दोनों संख्याओं का योग 8153 हुआ। इस संख्या की समीपतम संख्या 8159 इसी सारणी में 3 अंश के नीचे और 40 क. के आगे है। इसका अर्थ हुआ कि यहां 7 घं. 30 मि. का चालन 3 अं. 40 क. है।

ऊपर बतलाए गए ढंग से प्राप्त राशिभुक्तकाल के पूरे (कुल) घं. मि. के चालनों का योग कर लीजिए। इस योग से मिली अंश–कलाएं ही उस समय (इष्ट समय में) चन्द्रमा की वर्त्तमान राशि की अंश–कलाएं होंगी। नीचे दिए गए उदाहरण देखिए ,–

उदाहरण (1) :– 21 दिसं.' 95 को 20 घं. 5 मि. (भा. स्टैं. टा.) पर चन्द्र स्पष्ट करना है ,–

इस समय (इष्ट समय में) चन्द्रमा की 'वर्त्तमान राशि' वृश्चिक और राशिभोगकाल 47 घं. 56 मि. तथा ' राशिभुक्तकाल ' (वृश्चिकराशि का भुक्तकाल) 45 घं. 27 मि. है (देखिए–सन् 1995 ई. वाला 'चन्द्रमा का राशिचार ')। चन्द्रसाधन सारणी (1) से 'राशिभोगकाल' 47 घं. 56 मि. द्वारा चन्द्रमा की दैनिक गति 15 अं. 1 क. मिली। इनके अनुसार इष्ट समय में उपरोक्त प्रक्रिया द्वारा चन्द्रस्पष्ट इस प्रकार किया जाएगा ,–

		अं.	क.
24 घं. का चालन (चन्द्रसाधन सारणी (1) से)	=	15	01
12 घं. का चालन (चन्द्रसाधन सारणी (1) से)	=	+07	30
9 घं. 27 मि. का चालन (चन्द्रसाधन सारणी (1) से)	=	+05	55
45 घं. 27 मि. का चालन	=	28	26

इस प्रकार स्पष्ट हुआ कि इस समय स्पष्टचन्द्र 7 रा. 28 अं. 26 क. है।

उदाहरण (2) :– 10 फर.' 95 ई. को प्रातः 8 घं. 2 मि. (भा.स्टैं.टा.) पर चन्द्रमा स्पष्ट करना है। सन् 1995 ई. वाले "चन्द्रमा का राशिचार" से स्पष्ट है – इस समय "वर्त्तमान राशि" वृष और "राशि भोगकाल" 60 घं. 48 मि. तथा "राशिभुक्तकाल (वृषराशि का भुक्तकाल)" 50 घं. 26 मि. है। " राशिभोगकाल" 60 घं. 48 मि. द्वारा चन्द्रसाधन सारणी (1) से चन्द्रमा की दैनिक गति 11 अं. 51 क. मिली। इनके अनुसार इष्ट समय प्रातः 8 घं. 2 मि. (भा. स्टैं. टा.) पर चन्द्रमा इस प्रकार स्पष्ट किया जाएगा ,–

		अं.	क.
48 घं. का चालन (चन्द्रसाधन सारणी (1) से)	=	23	42
2 घं. 26 मि. का चालन (चन्द्रसाधन सारणी (2) से)	=	+01	12
50 घं. 26 मि का चालन	=	24	54

इस प्रकार ज्ञात हो गया कि हमारे इष्ट समय पर स्पष्ट चन्द्र 1 रा.. 24 अं. 54 क. है।

इस प्रकार जाना गया स्पष्ट चन्द्र भी चित्रापक्षीय निरयण होगा।

चन्द्रसाधन सारणी (1)

(चन्द्र के एकराशि-भोग-काल से चन्द्र की 24 घण्टे की गति का ज्ञान)

चन्द्र द्वारा राशिभोगकाल →	घं. 46		घं. 47		घं. 48		घं. 49		घं. 50		घं. 51		घं. 52		घं. 53		घं. 54	
मिनट	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क..	अं.	क..	अं.	क..	अं.	क..	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
0	15	39	15	19	15	00	14	41	14	24	14	07	13	50	13	35	13	20
3	15	38	15	18	14	59	14	40	14	23	14	06	13	50	13	34	13	19
6	15	37	15	17	14	58	14	40	14	22	14	05	13	49	13	33	13	18
9	15	36	15	16	14	57	14	39	14	21	14	04	13	48	13	32	13	17
12	15	35	15	15	14	56	14	38	14	20	14	04	13	47	13	32	13	17
15	15	34	15	14	14	55	14	37	14	19	14	03	13	46	13	31	13	16
18	15	33	15	13	14	54	14	36	14	19	14	02	13	46	13	30	13	15
21	15	32	15	12	14	53	14	35	14	18	14	01	13	45	13	29	13	14
24	15	31	15	11	14	52	14	34	14	17	14	00	13	44	13	29	13	14
27	15	30	15	10	14	52	14	34	14	16	13	59	13	43	13	28	13	13
30	15	29	15	09	14	51	14	33	14	15	13	59	13	43	13	27	13	13
33	15	28	15	08	14	50	14	32	14	14	13	58	13	42	13	26	13	11
36	15	27	15	08	14	49	14	31	14	13	13	57	13	41	13	26	13	11
39	15	26	15	06	14	47	14	30	14	13	13	56	13	41	13	25	13	10
42	15	25	15	05	14	47	14	29	14	12	13	55	13	40	13	24	13	10
45	15	24	15	05	14	46	14	28	14	11	13	55	13	39	13	23	13	09
48	15	23	15	04	14	45	14	27	14	10	13	54	13	38	13	23	13	08
51	15	22	15	03	14	44	14	26	14	09	13	53	13	37	13	22	13	07
54	15	21	15	02	14	43	14	25	14	08	13	52	13	37	13	21	13	07
57	15	20	15	01	14	42	14	25	14	08	13	51	13	36	13	20	13	06

मिनट	घं. 55		घं. 56		घं. 57		घं. 58		घं. 59		घं. 60		घं. 61		घं. 62		घं. 63	
↓	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अ.	क.
0	13	05	12	51	12	38	12	25	12	12	12	00	11	48	11	37	11	26
3	13	04	12	51	12	37	12	24	12	11	11	59	11	47	11	36	11	25
6	13	04	12	50	12	36	12	23	12	11	11	59	11	47	11	35	11	25
9	13	03	12	49	12	35	12	23	12	10	11	58	11	46	11	35	11	24
12	13	02	12	49	12	35	12	22	12	10	11	58	11	46	11	34	11	23
15	13	02	12	48	12	34	12	22	12	09	11	57	11	45	11	34	11	23
18	13	01	12	47	12	34	12	21	12	08	11	56	11	45	11	33	11	22
21	13	00	12	46	12	33	12	20	12	08	11	56	11	44	11	33	11	22
24	12	59	12	46	12	32	12	19	12	07	11	55	11	43	11	32	11	21
27	12	59	12	45	12	32	12	19	12	07	11	55	11	43	11	32	11	21
30	12	58	12	44	12	31	12	18	12	06	11	54	11	42	11	31	11	20
33	12	58	12	44	12	31	12	17	12	05	11	53	11	41	11	31	11	20
36	12	56	12	43	12	30	12	17	12	05	11	53	11	41	11	30	11	19
39	12	56	12	42	12	29	12	16	12	04	11	52	11	40	11	30	11	19
42	12	55	12	41	12	28	12	16	12	04	11	52	11	40	11	29	11	18
45	12	55	12	41	12	28	12	15	12	03	11	51	11	39	11	28	11	18
48	12	54	12	40	12	27	12	14	12	02	11	50	11	39	11	28	11	17
51	12	53	12	40	12	26	12	14	12	02	11	50	11	38	11	27	11	17
54	12	53	12	39	12	26	12	13	12	01	11	49	11	38	11	27	11	16
57	12	52	12	39	12	25	12	13	12	01	11	49	11	37	11	26	11	16

चन्द्रसाधन सारणी (2)

मिनट या कला	घण्टा या अंश															
	0	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15
0	----	13802	10792	9031	7781	6812	6021	5351	4771	4260	3802	3388	3010	2663	2341	2041
1	31584	13730	10756	9007	7763	6798	6009	5341	4762	4252	3795	3382	3004	2657	2336	2036
2	28573	13660	10720	8983	7745	6784	5997	5330	4753	4244	3788	3375	2998	2652	2330	2032
3	26812	13590	10685	8959	7728	6769	5985	5320	4744	4236	3780	3368	2992	2646	2325	2027
4	25563	13522	10649	8935	7710	6755	5973	5310	4735	4228	3773	3362	2986	2640	2320	2022
5	24594	13454	10614	8912	7692	6741	5961	5300	4726	4220	3766	3355	2980	2635	2315	2017
6	23802	13388	10580	8888	7674	6726	5949	5289	4717	4212	3759	3349	2974	2629	2310	2012
7	23133	13323	10546	8865	7657	6712	5937	5279	4708	4204	3752	3342	2968	2624	2305	2008
8	22553	13258	10511	8842	7639	6698	5925	5269	4699	4196	3745	3336	2962	2618	2300	2003
9	22041	13195	10478	8819	7622	6684	5913	5259	4690	4188	3737	3329	2956	2613	2295	1998
10	21584	13133	10444	8796	7604	6670	5902	5249	4682	4180	3730	3323	2950	2607	2289	1993
11	21170	13071	10411	8773	7587	6656	5890	5239	4673	4172	3723	3316	2944	2602	2284	1988
12	20792	13010	10378	8751	7570	6642	5878	5229	4664	4164	3716	3310	2938	2596	2279	1984
13	20444	12950	10345	8728	7552	6628	5866	5219	4655	4156	3709	3303	2933	2591	2274	1979
14	20122	12891	10313	8706	7535	6614	5855	5209	4646	4148	3702	3297	2927	2585	2269	1974
15	19823	12833	10280	8683	7518	6600	5843	5199	4638	4141	3695	3291	2921	2580	2264	1969
16	19542	12775	10248	8661	7501	6587	5832	5189	4629	4133	3688	3284	2915	2574	2259	1965
17	19279	12719	10216	8639	7484	6573	5820	5179	4620	4125	3681	3278	2909	2569	2254	1960
18	19031	12663	10185	8617	7467	6559	5809	5169	4611	4117	3674	3271	2903	2564	2249	1955
19	18796	12607	10153	8595	7451	6546	5797	5159	4603	4109	3667	3265	2897	2558	2244	1950
20	18573	12553	10122	8573	7434	6532	5786	5149	4594	4102	3660	3258	2891	2553	2239	1946
21	18361	12499	10091	8552	7417	6519	5774	5139	4585	4094	3653	3252	2885	2547	2234	1941
22	18159	12445	10061	8530	7401	6505	5763	5129	4577	4086	3646	3246	2880	2542	2229	1936
23	17966	12393	10030	8509	7384	6492	5752	5120	4568	4079	3639	3239	2874	2536	2223	1932
24	17781	12341	10000	8487	7368	6478	5740	5110	4559	4071	3632	3233	2868	2531	2218	1927
25	17604	12289	09970	8466	7351	6465	5729	5100	4551	4063	3625	3227	2862	2526	2213	1922
26	17434	12239	09940	8445	7335	6451	5718	5090	4542	4055	3618	3220	2856	2520	2208	1917
27	17270	12188	09910	8424	7318	6438	5706	5081	4534	4048	3611	3214	2850	2515	2203	1913
28	17112	12139	09881	8403	7302	6425	5695	5071	4525	4040	3604	3208	2845	2509	2198	1908
29	16960	12090	09852	8382	7286	6412	5684	5061	4516	4032	3597	3201	2839	2504	2193	1903
30	16812	12041	09823	8361	7270	6398	5673	5051	4508	4025	3590	3195	2833	2499	2188	1899
31	16670	11993	09794	8341	7254	6385	5662	5042	4499	4017	3583	3189	2827	2493	2183	1894
32	16532	11946	09765	8320	7238	6372	5651	5032	4491	4010	3576	3183	2821	2488	2178	1889
33	16398	11899	09737	8300	7222	6359	5640	5023	4482	4002	3570	3176	2816	2483	2173	1885
34	16269	11852	09708	8279	7206	7346	5629	5013	4474	3994	3563	3170	2810	2477	2168	1880
35	16143	11806	09680	8259	7190	6333	5618	5003	4466	3987	3556	3164	2804	2472	2164	1875
36	16021	11761	09652	8239	7174	6320	5607	4994	4457	3979	3549	3157	2798	2467	2159	1871
37	15902	11716	09625	8219	7159	6307	5596	4984	4449	3972	3542	3151	2793	2461	2154	1866
38	15786	11671	09597	8199	7143	6294	5585	4975	4440	3964	3535	3145	2787	2456	2149	1862
39	15673	11627	09570	8179	7128	6282	5574	4965	4432	3957	3529	3139	2781	2451	2144	1857
40	15563	11584	09542	8159	7112	6269	5563	4956	4424	3949	3522	3133	2775	2445	2139	1852
41	15456	11540	09515	8140	7097	6256	5552	4947	4415	3942	3515	3126	2770	2440	2134	1848
42	15351	11498	09488	8120	7081	6243	5541	4937	4407	3934	3508	3120	2764	2435	2129	1843
43	15249	11455	09462	8101	7066	6231	5531	4928	4399	3927	3501	3114	2758	2430	2124	1838
44	15149	11413	09435	8081	7050	6218	5520	4918	4390	3919	3495	3108	2753	2424	2119	1834
45	15051	11372	09409	8062	7035	6205	5509	4909	4382	3912	3488	3102	2747	2419	2114	1829
46	14956	11331	09383	8043	7020	6193	5498	4900	4374	3905	3481	3096	2741	2414	2109	1825
47	14863	11290	09356	8023	7005	6180	5488	4890	4365	3897	3475	3089	2736	2409	2104	1820
48	14771	11249	09330	8004	6990	6168	5477	4881	4357	3890	3468	3083	2730	2403	2099	1816
49	14682	11209	09305	7985	6975	6155	5466	4872	4349	3882	3461	3077	2724	2398	2095	1811
50	14594	11170	09279	7966	6960	6143	5456	4863	4341	3875	3454	3071	2719	2393	2090	1806
51	14508	11130	09254	7947	6945	6131	5445	4853	4333	3868	3448	3065	2713	2388	2085	1802
52	14424	11091	09228	7929	6930	6118	5435	4844	4324	3860	3441	3059	2707	2382	2080	1797
53	14341	11053	09203	7910	6915	6106	5424	4835	4316	3853	3434	3053	2702	2377	2075	1793
54	14260	11015	09178	7891	6900	6094	5414	4826	4308	3846	3428	3047	2696	2372	2070	1788
55	14180	10977	09153	7873	6885	6081	5403	4817	4300	3838	3421	3041	2691	2367	2065	1784
56	14102	10939	09128	7854	6871	6069	5393	4808	4292	3831	3415	3034	2685	2362	2061	1779
57	14025	10902	09104	7836	6856	6057	5382	4798	4284	3824	3408	3028	2679	2356	2056	1774
58	13949	10865	09079	7818	6841	6045	5372	4789	4276	3817	3401	3022	2674	2351	2051	1770
59	13875	10828	09055	7800	6827	6033	5361	4780	4268	3809	3395	3016	2668	2346	2046	1765

चन्द्रमा का राशि चार

गणित कर्ता – सुबोध, संजय

(सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है)

राशि	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.
							सन् 1941							
मेष	दिसं. 27	7 15	फर. 2	20 1	मार्च 29	10 35	मई 22	22 45	जुला. 16	12 56	सितं. 9	5 9	नवं. 2	18 52
वृष	29	19 52	5	8 47	31	23 31	25	11 39	19	1 39	11	17 30	5	7 18
मिथुन			7	19 21	अप्रै. 3	11 35	27	23 27	21	13 15	14	5 53	7	19 56
कर्क			10	2 21	5	21 5	30	9 33	23	22 24	16	16 5	10	7 43
सिंह			12	6 9	8	2 54	जून 1	17 31	26	5 8	18	22 48	12	17 9
कन्या			14	8 7	10	5 8	3	22 49	28	10 5	21	2 13	14	22 57
तुला			16	9 46	12	5 3	6	1 20	30	13 47	23	3 34	17	0 59
वृश्चिक			18	12 12	14	4 28	8	1 47	अग. 1	16 37	25	4 28	19	0 31
धनु			20	16 6	16	5 23	10	1 45	3	19 3	27	6 23	20	23 35
मकर			22	21 47	18	9 24	12	3 16	5	22 0	29	10 22	23	0 28
कुम्भ	जन. 1	12 52	25	5 32	20	17 10	14	8 10	8	2 44	अक्तू. 1	16 49	25	4 54
मीन	3	23 6	27	15 36	23	4 6	16	17 15	10	10 21	4	1 38	27	13 21
मेष	6	11 48	मार्च 2	3 44	25	16 43	19	5 24	12	21 4	6	12 29	30	0 47
वृष	9	0 14	4	16 40	28	5 37	21	18 15	15	9 36	9	0 47	दिसं. 2	13 25
मिथुन	11	10 5	7	4 11	30	17 43	24	5 49	17	21 33	11	13 26	5	1 56
कर्क	13	16 49	9	12 20	मई 3	3 56	26	15 21	20	6 54	14	0 40	7	13 35
सिंह	15	21 16	11	16 40	5	11 15	28	22 55	22	13 10	16	8 40	9	23 36
कन्या	18	0 38	13	18 7	7	15 7	जुला. 1	4 36	24	17 3	18	12 48	12	6 55
तुला	20	3 42	15	18 20	9	16 0	3	8 20	26	19 38	20	13 50	14	10 48
वृश्चिक	22	6 51	17	19 4	11	15 21	5	10 18	28	21 59	22	13 27	16	11 38
धनु	24	10 25	19	21 46	13	15 10	7	11 25	31	0 51	24	13 41	18	10 57
मकर	26	15 6	22	3 14	15	17 31	9	13 14	सितं. 2	4 51	26	16 20	20	10 56
कुम्भ	28	21 56	24	11 34	17	23 51	11	17 33	4	10 35	28	22 20	22	13 42
मीन	31	7 42	26	22 16	20	10 7	14	1 33	6	18 37	31	7 31	24	20 35
							सन् 1942							
मेष			फर. 19	23 55	अप्रै. 15	16 18	जून 9	4 6	अग. 2	18 1	सितं. 26	12 11	नवं. 20	2 58
वृष			22	11 16	18	3 13	11	15 43	5	4 30	28	21 0	22	12 30
मिथुन	जन. 1	8 20	24	23 49	20	15 35	14	4 16	7	16 57	अक्तू. 1	8 32	24	23 49
कर्क	3	19 32	27	11 12	23	4 3	16	16 52	10	5 21	3	21 9	27	12 32
सिंह	6	5 7	मार्च 1	19 53	25	14 30	19	4 31	12	16 17	6	8 25	30	1 12
कन्या	8	12 45	4	1 44	27	21 14	21	13 47	15	1 9	8	16 32	दिसं. 2	11 29
तुला	10	17 57	6	5 31	30	0 7	23	19 27	17	7 48	10	21 24	4	17 40
वृश्चिक	12	20 35	8	8 15	मई 2	0 29	25	21 28	19	12 14	13	0 5	6	19 52
धनु	14	21 24	10	10 51	4	0 20	27	21 6	21	14 46	15	2 6	8	19 40
मकर	16	21 57	12	14 1	6	1 38	29	20 22	23	16 12	17	4 39	10	19 14
कुम्भ	19	0 9	14	18 18	8	5 43	जुला. 1	21 27	25	17 46	19	8 24	12	20 36
मीन	21	5 40	17	0 20	10	12 51	4	1 57	27	20 56	21	13 35	15	0 59
मेष	23	15 3	19	8 43	12	22 30	6	10 20	30	2 58	23	20 24	17	8 32
वृष	26	3 9	21	19 34	15	9 49	8	21 41	सितं. 1	12 26	26	5 18	19	18 34
मिथुन	28	15 41	24	8 1	17	22 14	11	10 18	4	0 27	28	16 31	22	6 17
कर्क	31	2 44	26	19 59	20	10 55	13	22 45	6	12 56	31	5 15	24	18 59
सिंह	फर. 2	11 35	29	5 20	22	22 16	16	10 8	8	23 45	नवं. 2	17 17	27	7 45
कन्या	4	18 22	31	11 7	25	6 26	18	19 35	11	7 57	5	2 15	29	18 58
तुला	6	23 22	अप्रै. 2	13 55	27	10 30	21	2 19	13	13 39	7	7 12		
वृश्चिक	9	2 51	4	15 11	29	11 10	23	5 55	15	17 36	9	9 1		
धनु	11	5 13	6	16 35	31	10 17	25	6 59	17	20 34	11	9 32		
मकर	13	7 17	8	19 23	जून 2	10 6	27	6 58	19	23 12	13	10 41		
कुम्भ	15	10 15	11	0 15	4	12 32	29	7 43	22	2 9	15	13 47		
मीन	17	15 30	13	7 17	6	18 38	31	11 2	24	6 9	17	19 18		

चन्द्रमा का राशि चार

(सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है)

राशि	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.
							सन् 1943							
मेष			फर. 9	23 6	अप्रै. 5	18 49	मई 30	9 14	जुला. 23	20 52	सितं. 16	14 55	नवं. 10	10 4
वृष			12	7 23	8	1 9	जून 1	16 50	26	4 17	18	19 29	12	14 34
मिथुन			14	18 52	10	10 47	4	2 35	28	14 44	21	4 4	14	21 40
कर्क			17	7 44	12	23 4	6	14 28	31	3 7	23	15 58	17	8 4
सिंह			19	20 5	15	11 42	9	3 30	अग. 2	16 11	26	5 0	19	20 46
कन्या			22	6 44	17	22 8	11	15 26	5	4 37	28	16 54	22	9 11
तुला	जन. 1	2 49	24	15 11	20	5 15	14	0 0	7	15 4	अक्तू. 1	2 34	24	18 50
वृश्चिक	3	6 36	26	21 18	22	9 35	16	4 28	9	22 22	3	10 1	27	1 0
धनु	5	7 7	मार्च 1	1 7	24	12 28	18	5 50	12	2 8	5	15 33	29	4 31
मकर	7	6 15	3	3 4	26	15 5	20	5 55	14	3 3	7	19 24	दिसं. 1	6 54
कुम्भ	9	6 9	5	4 4	28	18 11	22	6 36	16	2 37	9	21 45	3	9 21
मीन	11	8 39	7	5 31	30	22 1	24	9 17	18	2 40	11	23 15	5	12 32
मेष	13	14 48	9	9 1	मई 3	2 58	26	14 38	20	5 2	14	1 10	7	16 45
वृष	16	0 26	11	15 55	5	9 45	28	22 39	22	11 1	16	5 8	9	22 23
मिथुन	18	12 21	14	2 25	7	19 7	जुला. 1	8 58	24	20 49	18	12 36	12	6 3
कर्क	21	1 9	16	15 6	10	7 3	3	21 5	27	9 12	20	23 41	14	16 18
सिंह	23	13 41	19	3 30	12	19 56	6	10 9	29	22 15	23	12 37	17	4 45
कन्या	26	0 53	21	13 46	15	7 3	8	22 34	सितं. 1	10 23	26	0 37	19	17 35
तुला	28	9 39	23	21 21	17	14 32	11	8 21	3	20 41	28	9 55	22	4 14
वृश्चिक	30	15 10	26	2 46	19	18 25	13	14 13	6	4 36	30	16 27	24	11 6
धनु	फर. 1	17 28	28	6 43	21	20 7	15	16 24	8	9 49	नवं. 1	21 6	26	14 25
मकर	3	17 39	30	9 44	23	21 23	17	16 18	10	12 25	4	0 48	28	15 36
कुम्भ	5	17 26	अप्रै. 1	12 16	25	23 37	19	15 51	12	13 8	6	3 59	30	16 24
मीन	7	18 42	3	14 57	28	3 31	21	16 55	14	13 23	8	6 54		
							सन् 1944							
मेष	दिसं. 24	11 13	जन. 31	4 35	मार्च 26	0 11	मई 19	19 8	जुला. 13	6 51	सितं. 5	21 43	अक्तू. 30	19 13
वृष	26	14 5	फर. 2	9 58	28	2 22	21	21 57	15	11 17	7	23 42	नवं. 1	19 33
मिथुन	28	18 0	4	18 40	30	8 24	24	2 54	17	17 55	10	5 21	3	22 20
कर्क	30	23 59	7	5 55	अप्रै. 1	18 32	26	11 7	20	2 53	12	14 42	6	5 2
सिंह			9	18 33	4	7 12	28	22 29	22	14 1	15	2 31	8	15 36
कन्या			12	7 26	6	20 1	31	11 12	25	2 36	17	15 17	11	4 14
तुला			14	19 21	9	7 17	जून 2	22 41	27	15 3	20	3 50	13	16 35
वृश्चिक			17	4 55	11	16 35	5	7 19	30	1 22	22	15 19	16	3 16
धनु			19	11 4	13	23 56	7	13 5	अग. 1	8 6	25	0 38	18	12 1
मकर			21	13 41	16	5 15	9	16 54	3	11 16	27	6 43	20	18 54
कुम्भ			23	13 44	18	8 26	11	19 47	5	12 0	29	9 14	22	23 52
मीन	जन. 1	18 17	25	13 0	20	9 50	13	22 27	7	12 2	अक्तू. 1	9 8	25	2 55
मेष	3	22 9	27	13 31	22	10 37	16	1 29	9	13 10	3	8 16	27	4 31
वृष	6	4 23	29	17 7	24	12 34	18	5 28	11	16 47	5	8 51	29	5 53
मिथुन	8	12 55	मार्च 3	0 45	26	17 32	20	11 13	13	23 30	7	12 50	दिसं. 1	8 41
कर्क	10	23 38	5	11 51	29	2 26	22	19 32	16	9 3	9	21 3	3	14 27
सिंह	13	12 3	8	0 42	मई 1	14 30	25	6 33	18	20 35	12	8 35	5	23 52
कन्या	16	1 1	10	13 31	4	3 18	27	19 10	21	9 13	14	21 24	8	11 58
तुला	18	12 36	13	1 10	6	14 29	30	7 10	23	21 52	17	9 47	11	0 27
वृश्चिक	20	20 57	15	10 59	8	23 11	जुला. 2	16 25	26	9 5	19	20 55	13	11 10
धनु	23	1 20	17	18 21	11	5 42	4	22 13	28	17 17	22	6 21	15	19 16
मकर	25	2 34	19	22 45	13	10 38	7	1 13	30	21 40	24	13 30	18	1 5
कुम्भ	27	2 17	22	0 20	15	14 19	9	2 46	सितं. 1	22 44	26	17 45	20	5 17
मीन	29	2 23	24	0 12	17	16 58	11	4 16	3	22 4	28	19 15	22	8 29

चन्द्रमा की राशि चार

(सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है)

राशि	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.
							सन् 1945							
मेष			फर. 16	23 11	अप्रै. 12	19 20	जून 6	14 35	जुला. 31	2 21	सितं. 23	17 23	नवं. 17	15 20
वृष			19	1 32	14	18 48	8	15 28	अग. 2	5 5	25	17 39	19	14 39
मिथुन			21	6 35	16	20 43	10	16 53	4	8 47	27	20 6	21	14 27
कर्क			23	14 18	19	2 25	12	20 30	6	13 54	30	1 33	23	16 39
सिंह	जन. 2	8 48	26	0 9	21	11 54	15	3 27	8	20 54	अक्तू. 2	9 48	25	22 32
कन्या	4	20 17	28	11 35	23	23 47	17	13 48	11	6 17	4	20 7	28	8 8
तुला	7	8 51	मार्च 3	0 3	26	12 25	20	2 9	13	17 57	7	7 57	30	20 13
वृश्चिक	9	20 9	5	12 30	29	0 41	22	14 19	16	6 35	9	20 46	दिसं. 3	9 3
धनु	12	4 27	7	23 5	मई 1	11 48	25	0 39	18	17 48	12	9 20	5	21 14
मकर	14	9 34	10	6 5	3	20 51	27	8 33	21	1 42	14	19 42	8	7 52
कुम्भ	16	12 25	12	9 3	6	2 53	29	14 15	23	5 58	17	2 8	10	16 15
मीन	18	14 20	14	9 9	8	5 37	जुला. 1	18 12	25	7 43	19	4 30	12	21 50
मेष	20	16 34	16	8 24	10	5 56	3	20 59	27	8 42	21	4 11	15	0 38
वृष	22	20 0	18	8 59	12	5 36	5	23 14	29	10 33	23	3 19	17	1 27
मिथुन	25	1 5	20	12 36	14	6 39	8	1 51	31	14 17	25	4 3	19	1 44
कर्क	27	8 4	22	19 50	16	10 52	10	5 55	सितं. 2	20 8	27	7 57	21	3 15
सिंह	29	17 11	25	6 0	18	19 0	12	12 28	5	3 59	29	15 28	23	7 39
कन्या	फर. 1	4 23	27	17 50	21	6 18	14	22 3	7	13 44	नवं. 1	1 54	25	15 49
तुला	3	16 54	30	6 22	23	18 54	17	10 1	10	1 21	3	14 1	28	3 15
वृश्चिक	6	4 56	अप्रै. 1	18 49	26	7 1	19	22 23	12	14 8	6	2 49	30	16 5
धनु	8	14 18	4	6 3	28	17 39	22	8 55	15	2 13	8	15 19		
मकर	10	19 52	6	14 30	31	2 20	24	16 25	17	11 16	11	2 17		
कुम्भ	12	22 7	8	19 5	जून 2	8 44	26	21 6	19	16 11	13	10 14		
मीन	14	22 35	10	20 10	4	12 42	29	0 1	21	17 36	15	14 24		
							सन् 1946							
मेष			फर. 7	12 33	अप्रै. 3	4 20	मई 28	1 19	जुला. 21	16 10	सितं. 14	3 52	नवं. 7	23 0
वृष			9	15 31	5	4 41	30	1 30	23	19 18	16	6 36	9	23 36
मिथुन			11	18 39	7	6 11	जून 1	0 58	25	20 56	18	9 27	11	23 37
कर्क			13	22 19	9	9 53	3	1 37	27	22 5	20	12 49	14	0 47
सिंह			16	3 8	11	16 3	5	5 6	30	0 12	22	16 59	16	4 20
कन्या			18	10 4	14	0 28	7	12 15	अग. 1	4 57	24	22 34	18	10 48
तुला			20	19 53	16	10 52	9	22 46	3	13 23	27	6 27	20	20 0
वृश्चिक			23	8 10	18	23 0	12	11 19	6	1 7	29	17 12	23	7 22
धनु	जन. 2	4 8	25	20 49	21	12 0	15	0 15	8	14 1	अक्तू. 2	5 58	25	20 7
मकर	4	14 7	28	7 10	24	0 1	17	12 13	11	1 34	4	18 24	28	9 7
कुम्भ	6	21 47	मार्च 2	13 50	26	8 54	19	22 14	13	10 29	7	3 58	30	20 42
मीन	9	3 21	4	17 20	28	13 40	22	5 32	15	16 53	9	9 43	दिसं. 3	5 10
मेष	11	7 12	6	19 13	30	14 59	24	9 49	17	21 33	11	12 27	5	9 45
वृष	13	9 43	8	21 6	मई 2	14 37	26	11 28	20	1 8	13	13 47	7	11 0
मिथुन	15	11 34	11	0 3	4	14 36	28	11 39	22	3 59	15	15 21	9	10 28
कर्क	17	13 48	13	4 28	6	16 39	30	11 58	24	6 30	17	18 10	11	10 6
सिंह	19	17 49	15	10 24	8	21 46	जुला. 2	14 15	26	9 29	19	22 45	13	11 47
कन्या	22	0 52	17	18 4	11	6 4	4	19 57	28	14 14	22	5 15	15	16 53
तुला	24	11 20	20	3 56	13	16 52	7	5 30	30	22 1	24	13 51	18	1 43
वृश्चिक	26	23 57	22	15 59	16	5 15	9	17 49	सितं. 2	9 6	27	0 44	20	13 22
धनु	29	12 14	25	4 55	18	18 14	12	6 43	4	21 57	29	13 26	23	2 19
मकर	31	22 2	27	16 12	21	6 27	14	18 22	7	9 49	नवं. 1	2 20	25	15 9
कुम्भ	फर. 3	4 48	29	23 45	23	16 19	17	3 52	9	18 41	3	13 4	28	2 48
मीन	5	9 16	अप्रै. 1	3 21	25	22 38	19	11 6	12	0 20	5	19 56	30	12 14

चन्द्रमा का राशि चार

(सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है)

राशि	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.
							सन् 1947							
मेष	जन. 1	18 36	फर. 25	6 20	अप्रै. 20	21 36	जून 14	17 10	अग. 8	7 31	अक्तू. 1	19 15	नवं. 25	13 16
वृष	3	21 38	27	11 19	23	0 28	16	20 31	10	13 47	4	1 6	27	17 48
मिथुन	5	22 3	मार्च 1	14 51	25	2 24	18	21 7	12	16 59	6	5 28	29	19 46
कर्क	7	21 27	3	17 5	27	4 36	20	20 39	14	17 39	8	8 36	दिसं. 1	20 45
सिंह	9	21 47	5	18 48	29	7 48	22	21 5	16	17 19	10	10 56	3	22 19
कन्या	12	1 4	7	21 25	मई 1	12 32	25	0 9	18	18 2	12	13 20	6	1 39
तुला	14	8 27	10	2 38	3	19 13	27	6 45	20	21 48	14	17 4	8	7 17
वृश्चिक	16	19 37	12	11 30	6	4 14	29	16 38	23	5 42	16	23 27	10	15 12
धनु	19	8 38	14	23 31	8	15 33	जुला. 2	4 38	25	17 6	19	9 6	13	1 11
मकर	21	21 22	17	12 19	11	4 15	4	17 24	28	5 54	21	21 14	15	12 54
कुम्भ	24	8 34	19	23 19	13	16 22	7	5 51	30	18 0	24	9 38	18	1 35
मीन	26	17 49	22	7 24	16	1 47	9	16 52	सितं. 2	4 25	26	20 2	20	13 39
मेष	29	0 56	24	12 57	18	7 31	12	1 15	4	12 58	29	3 28	22	23 4
वृष	31	5 38	26	16 57	20	10 4	14	6 9	6	19 35	31	8 16	25	4 34
मिथुन	फर. 2	7 53	28	20 13	22	10 50	16	7 43	9	0 0	नवं. 2	11 25	27	6 29
कर्क	4	8 28	30	23 11	24	11 29	18	7 15	11	2 16	4	13 58	29	6 18
सिंह	6	8 53	अप्रै. 2	2 13	26	13 32	20	6 43	13	3 10	6	16 42	31	6 7
कन्या	8	11 9	4	6 2	28	17 59	22	8 13	15	4 17	8	20 13		
तुला	10	17 0	6	11 44	31	1 10	24	13 24	17	7 28	11	1 9		
वृश्चिक	13	2 59	8	20 17	जून 2	10 52	26	22 36	19	14 13	13	8 7		
धनु	15	15 40	11	7 44	4	22 29	29	10 35	22	0 40	15	17 35		
मकर	18	4 25	13	20 29	7	11 11	31	23 25	24	13 13	18	5 21		
कुम्भ	20	15 17	16	8 2	9	23 38	अग. 3	11 40	27	1 22	20	17 59		
मीन	22	23 47	18	16 28	12	10 6	5	22 34	29	11 29	23	5 13		
							सन् 1948							
मेष			फर. 15	13 26	अप्रै. 10	1 30	जून 3	18 17	जुला. 28	10 38	सितं. 20	22 43	नवं. 14	12 34
वृष			17	21 57	12	9 20	6	1 27	30	19 58	23	9 8	16	21 49
मिथुन			20	3 0	14	15 8	8	5 25	अग. 2	1 13	25	16 57	19	4 29
कर्क			22	4 37	16	19 6	10	7 22	4	2 45	27	21 30	21	9 11
सिंह			24	4 5	18	21 35	12	8 53	6	2 14	29	23 7	23	12 39
कन्या	जन. 2	7 51	26	3 30	20	23 21	14	11 18	8	1 51	अक्तू. 1	23 4	25	15 28
तुला	4	12 45	28	5 3	23	1 36	16	15 22	10	3 37	3	23 13	27	18 10
वृश्चिक	6	20 55	मार्च 1	10 23	25	5 42	18	21 21	12	8 41	6	1 28	29	21 27
धनु	9	7 32	3	19 45	27	12 47	21	5 16	14	17 5	8	7 11	दिसं. 2	2 20
मकर	11	19 32	6	7 49	29	23 4	23	15 12	17	3 52	10	16 38	4	9 53
कुम्भ	14	8 11	8	20 33	मई 2	11 22	26	3 1	19	16 1	13	4 40	6	20 30
मीन	16	20 35	11	8 30	4	23 28	28	15 39	22	4 43	15	17 19	9	9 6
मेष	19	7 12	13	19 1	7	9 26	जुला. 1	3 0	24	16 59	18	5 0	11	21 14
वृष	21	14 27	16	3 37	9	16 34	3	11 2	27	3 17	20	14 49	14	6 36
मिथुन	23	17 39	18	9 44	11	21 19	5	15 9	29	10 5	22	22 27	16	12 35
कर्क	25	17 44	20	13 4	14	0 32	7	16 21	31	13 0	25	3 47	18	16 0
सिंह	27	16 37	22	14 9	16	3 9	9	16 29	सितं. 2	13 3	27	6 56	20	18 19
कन्या	29	16 37	24	14 24	18	5 55	11	17 30	4	12 12	29	8 32	22	20 50
तुला	31	19 41	26	15 41	20	9 27	13	20 50	6	12 37	31	9 41	25	0 14
वृश्चिक	फर. 3	2 47	28	19 49	22	14 27	16	2 56	8	16 3	नवं. 2	11 53	27	4 47
धनु	5	13 17	31	3 44	24	21 38	18	11 30	10	23 18	4	16 37	29	10 42
मकर	8	1 35	अप्रै. 2	14 58	27	7 26	20	21 57	13	9 47	7	0 51	31	18 32
कुम्भ	10	14 15	5	3 35	29	19 24	23	9 51	15	22 4	9	12 13		
मीन	13	2 28	7	15 30	जून 1	7 47	25	22 35	18	10 43	12	0 54		

चन्द्रमा की राशि चार

(सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है)

राशि	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.
							सन् 1949							
मेष	दिसं. 29	0 32	फर. 4	13 38	मार्च 31	2 10	मई 24	15 27	जुला. 18	7 14	सितं. 10	21 45	नवं. 4	10 12
वृष	31	13 9	7	1 4	अप्रै. 2	14 6	27	2 45	20	19 10	13	10 36	6	22 46
मिथुन			9	8 45	4	23 53	29	11 31	23	3 56	15	21 25	9	9 52
कर्क			11	12 14	7	6 30	31	17 56	25	9 5	18	4 34	11	18 51
सिंह			13	12 43	9	9 44	जून 2	22 34	27	11 43	20	7 49	14	1 12
कन्या			15	12 16	11	10 23	5	1 53	29	13 27	22	8 19	16	4 43
तुला			17	12 56	13	10 1	7	4 17	31	15 37	24	7 54	18	5 49
वृश्चिक			19	16 10	15	10 30	9	6 23	अग. 2	18 59	26	8 28	20	5 47
धनु			21	22 31	17	13 35	11	9 17	4	23 49	28	11 31	22	6 25
मकर			24	7 35	19	20 25	13	14 22	7	6 20	30	17 51	24	9 41
कुम्भ	जन. 3	4 48	26	18 40	22	6 53	15	22 46	9	14 59	अक्तू. 3	3 21	26	16 54
मीन	5	17 14	मार्च 1	7 9	24	19 33	18	10 22	12	2 3	5	15 7	29	3 58
मेष	8	5 55	3	20 10	27	8 25	20	23 13	14	14 52	8	4 0	दिसं. 1	16 57
वृष	10	16 13	6	8 13	29	19 58	23	10 39	17	3 23	10	16 49	4	5 25
मिथुन	12	22 34	8	17 21	मई 2	5 25	25	19 5	19	13 7	13	4 9	6	15 58
कर्क	15	1 21	10	22 28	4	12 28	28	0 35	21	18 53	15	12 41	9	0 22
सिंह	17	2 15	12	23 57	6	17 1	30	4 16	23	21 15	17	17 37	11	6 51
कन्या	19	3 11	14	23 24	8	19 21	जुला. 2	7 15	25	21 51	19	19 18	13	11 30
तुला	21	5 39	16	22 51	10	20 17	4	10 12	27	22 32	21	19 0	15	14 21
वृश्चिक	23	10 18	19	0 17	12	21 8	6	13 28	30	0 44	23	18 35	17	15 50
धनु	25	17 4	21	5 0	14	23 33	8	17 28	सितं. 1	5 15	25	19 58	19	17 6
मकर	28	1 44	23	13 21	17	5 3	10	23 5	3	12 14	28	0 44	21	19 55
कुम्भ	30	12 17	26	0 33	19	14 22	13	7 16	5	21 33	30	9 26	24	1 57
मीन	फर. 2	0 37	28	13 15	22	2 35	15	18 23	8	8 56	नवं. 1	21 11	26	11 54
							सन् 1950							
मेष			फर. 21	16 50	अप्रै. 17	6 38	जून 10	18 48	अग. 4	9 55	सितं. 28	2 6	नवं. 21	14 57
वृष			24	5 45	19	19 32	13	7 47	6	22 25	30	14 7	24	3 20
मिथुन	जन. 2	23 31	26	17 22	22	7 58	15	19 48	9	10 32	अक्तू. 3	2 47	26	15 58
कर्क	5	7 7	मार्च 1	1 42	24	18 31	18	6 6	11	20 20	5	14 4	29	4 2
सिंह	7	12 36	3	6 20	27	1 54	20	14 28	14	3 21	7	22 9	दिसं. 1	14 28
कन्या	9	16 50	5	8 19	29	5 36	22	20 39	16	8 12	10	2 31	3	21 53
तुला	11	20 19	7	9 15	मई 1	6 18	25	0 22	18	11 42	12	3 59	6	1 33
वृश्चिक	13	23 12	9	10 40	3	5 34	27	1 52	20	14 33	14	4 14	8	2 2
धनु	16	1 57	11	13 41	5	5 25	29	2 15	22	17 17	16	5 3	10	1 2
मकर	18	5 34	13	18 54	7	7 51	जुला. 1	3 20	24	20 33	18	7 58	12	0 51
कुम्भ	20	11 27	16	2 29	9	14 8	3	7 3	27	1 14	20	13 44	14	3 34
मीन	22	20 37	18	12 22	12	0 10	5	14 40	29	8 18	22	22 17	16	10 25
मेष	25	8 43	21	0 12	14	12 35	8	1 55	31	18 15	25	8 58	18	20 59
वृष	27	21 33	23	13 6	17	1 33	10	14 43	सितं. 3	6 26	27	21 4	21	9 29
मिथुन	30	8 22	26	1 21	19	13 48	13	2 41	5	18 51	30	9 46	23	22 6
कर्क	फर. 1	15 51	28	10 58	22	0 31	15	12 31	8	5 13	नवं. 1	21 46	26	9 50
सिंह	3	20 24	30	16 46	24	8 54	17	20 10	10	12 19	4	7 16	28	20 10
कन्या	5	23 18	अप्रै. 1	19 4	26	14 14	20	2 1	12	16 24	6	12 59	31	4 25
तुला	8	1 47	3	19 13	28	16 26	22	6 16	14	18 38	8	14 59		
वृश्चिक	10	4 39	5	19 4	30	16 26	24	9 1	16	20 20	10	14 38		
धनु	12	8 19	7	20 23	जून 1	15 57	26	10 50	18	22 40	12	13 58		
मकर	14	13 10	10	0 33	3	17 9	28	12 50	21	2 27	14	15 7		
कुम्भ	16	19 52	12	8 3	5	21 51	30	16 37	23	8 8	16	19 39		
मीन	19	5 5	14	18 25	8	6 45	अग. 1	23 32	25	15 59	19	3 54		

चन्द्रमा का राशि चार

(सर्वत्र भा. स्टें. टा. दिया गया है)

राशि	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.
							सन् 1951							
मेष			फर. 11	12 49	अप्रै. 7	6 18	मई 31	18 45	जुला. 25	7 36	सितं. 18	1 40	नवं. 11	17 55
वृष			14	0 3	9	16 37	जून 3	5 54	27	18 0	20	10 2	14	2 36
मिथुन			16	12 38	12	4 46	5	18 13	30	6 24	22	21 20	16	13 20
कर्क			19	0 15	14	17 14	8	6 56	अग. 1	18 58	25	9 56	19	1 51
सिंह			21	9 32	17	3 46	10	18 55	4	6 30	27	21 26	21	14 32
कन्या			23	16 21	19	10 45	13	4 27	6	16 15	30	6 10	24	0 55
तुला	जन. 2	9 46	25	21 12	21	14 7	15	10 8	8	23 40	अक्तू. 2	11 59	26	7 16
वृश्चिक	4	12 3	28	0 44	23	15 9	17	12 0	11	4 24	4	15 43	28	9 45
धनु	6	12 12	मार्च 2	3 29	25	15 40	19	11 28	13	6 39	6	18 30	30	10 0
मकर	8	12 1	4	6 6	27	17 25	21	10 38	15	7 22	8	21 14	दिसं. 2	10 8
कुम्भ	10	13 41	6	9 23	29	21 30	23	11 43	17	8 7	11	0 30	4	11 57
मीन	12	18 53	8	14 22	मई 2	4 10	25	16 14	19	10 36	13	4 45	6	16 29
मेष	15	4 10	10	21 59	4	13 4	28	0 32	21	16 14	15	10 35	8	23 42
वृष	17	16 16	13	8 28	6	23 47	30	11 40	24	1 30	17	18 44	11	9 7
मिथुन	20	4 55	15	20 50	9	11 55	जुला. 3	0 9	26	13 27	20	5 32	13	20 14
कर्क	22	16 24	18	8 52	12	0 37	5	12 48	29	2 1	22	18 7	16	8 43
सिंह	25	2 4	20	18 30	14	12 6	8	0 41	31	13 19	25	6 13	18	21 39
कन्या	27	9 51	23	0 53	16	20 22	10	10 46	सितं. 2	22 24	27	15 27	21	9 7
तुला	29	15 37	25	4 35	19	0 32	12	17 48	5	5 10	29	20 57	23	17 3
वृश्चिक	31	19 17	27	6 49	21	1 24	14	21 18	7	9 56	31	23 34	25	20 44
धनु	फर. 2	21 11	29	8 52	23	0 49	16	21 55	9	13 8	नवं. 3	0 56	27	21 9
मकर	4	22 20	31	11 46	25	0 57	18	21 21	11	15 20	5	2 43	29	20 20
कुम्भ	7	0 19	अप्रै. 2	16 6	27	3 36	20	21 40	13	17 24	7	5 59	31	20 25
मीन	9	4 47	4	22 11	29	9 38	23	0 44	15	20 25	9	11 4		
							सन् 1952							
मेष	दिसं. 25	14 16	फर. 1	12 54	मार्च 27	8 41	मई 21	0 45	जुला. 14	12 0	सितं. 7	4 44	नवं. 1	0 58
वृष	27	19 53	3	21 10	29	14 25	23	7 25	16	19 12	9	9 10	3	4 30
मिथुन	30	3 29	6	8 30	31	23 41	25	16 20	19	5 8	11	17 35	5	10 53
कर्क			8	21 17	अप्रै. 3	11 50	28	3 44	21	17 4	14	5 20	7	20 51
सिंह			11	9 55	6	0 35	30	16 39	24	6 3	16	18 23	10	9 27
कन्या			13	21 17	8	11 28	जून 2	4 42	26	18 49	19	6 44	12	22 1
तुला			16	6 36	10	19 25	4	13 30	29	5 40	21	17 15	15	8 6
वृश्चिक			18	13 13	13	0 47	6	18 20	31	13 6	24	1 35	17	14 59
धनु			20	16 57	15	4 34	8	20 11	अग. 2	16 43	26	7 40	19	19 29
मकर			22	18 19	17	7 40	10	20 52	4	17 23	28	11 28	21	22 48
कुम्भ			24	18 33	19	10 36	12	22 7	6	16 48	30	13 17	24	1 50
मीन	जन. 2	23 11	26	19 21	21	13 45	15	1 7	8	16 52	अक्तू. 2	14 1	26	5 1
मेष	5	5 26	28	22 27	23	17 44	17	6 18	10	19 21	4	15 12	28	8 36
वृष	7	14 50	मार्च 2	5 9	25	23 35	19	13 42	13	1 21	6	18 37	30	13 13
मिथुन	10	2 22	4	15 32	28	8 17	21	23 13	15	10 55	9	1 43	दिसं. 2	19 52
कर्क	12	15 0	7	4 10	30	19 55	24	10 48	17	23 0	11	12 36	5	5 25
सिंह	15	3 48	9	16 48	मई 3	8 46	26	23 45	20	12 3	14	1 32	7	17 37
कन्या	17	15 33	12	3 43	5	20 7	29	12 21	23	0 38	16	13 51	10	6 29
तुला	20	0 45	14	12 19	8	4 7	जुला. 1	22 19	25	11 37	18	23 53	12	17 18
वृश्चिक	22	6 15	16	18 41	10	8 45	4	4 16	27	20 2	21	7 24	15	0 30
धनु	24	8 11	18	23 9	12	11 18	6	6 31	30	1 16	23	13 1	17	4 21
मकर	26	7 53	21	2 2	14	13 20	8	6 36	सितं. 1	3 29	25	17 17	19	6 19
कुम्भ	28	7 19	23	3 53	16	15 57	10	6 28	3	3 42	27	20 25	21	7 56
मीन	30	8 28	25	5 39	18	19 42	12	7 53	5	3 29	29	22 43	23	10 23

चन्द्रमा का राशि चार

(सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है)

राशि	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.
							सन् 1953							
मेष			फर. 18	3 55	अप्रै. 14	1 2	जून 7	17 42	अग. 1	4 58	सितं. 24	22 27	नवं. 18	19 49
वृष			20	7 42	16	2 23	9	20 48	3	8 38	26	23 5	20	20 18
मिथुन			22	15 14	18	6 55	12	1 31	5	14 52	29	3 6	22	22 19
कर्क	जन. 1	13 21	25	1 59	20	15 35	14	8 57	7	23 37	अक्टू. 1	11 12	25	3 35
सिंह	4	1 23	27	14 32	23	3 34	16	19 31	10	10 30	3	22 30	27	12 47
कन्या	6	14 23	मार्च 2	3 27	25	16 30	19	8 2	12	22 52	6	11 13	30	0 51
तुला	9	2 7	4	15 36	28	4 9	21	20 9	15	11 36	8	23 50	दिसं. 2	13 28
वृश्चिक	11	10 31	7	1 58	30	13 39	24	5 43	17	22 57	11	11 31	5	0 35
धनु	13	15 0	9	9 33	मई 2	21 6	26	12 4	20	7 12	13	21 33	7	9 29
मकर	15	16 29	11	13 45	5	2 48	28	15 52	22	11 37	16	4 59	9	16 20
कुम्भ	17	16 41	13	14 56	7	6 45	30	18 18	24	12 51	18	9 5	11	21 28
मीन	19	17 23	15	14 26	9	9 5	जुला. 2	20 29	26	12 30	20	10 9	14	1 7
मेष	21	20 0	17	14 10	11	10 30	4	23 15	28	12 33	22	9 34	16	3 34
वृष	24	1 22	19	16 14	13	12 24	7	3 13	30	14 48	24	9 27	18	5 35
मिथुन	26	9 32	21	22 11	15	16 30	9	8 57	सितं. 1	20 23	26	11 56	20	8 25
कर्क	28	20 5	24	8 10	18	0 10	11	16 57	4	5 19	28	18 29	22	13 27
सिंह	31	8 18	26	20 44	20	11 18	14	3 26	6	16 39	31	4 58	24	21 43
कन्या	फर. 2	21 15	29	9 41	23	0 4	16	15 48	9	5 12	नवं. 2	17 35	27	9 1
तुला	5	9 29	31	21 30	25	11 50	19	4 18	11	17 56	5	6 9	29	21 36
वृश्चिक	7	19 15	अप्रै. 3	7 36	27	21 4	21	14 44	14	5 46	7	17 26		
धनु	10	1 19	5	15 37	30	3 42	23	21 41	16	15 17	10	3 2		
मकर	12	3 45	7	21 12	जून 1	8 29	26	1 14	18	21 19	12	10 44		
कुम्भ	14	3 45	10	0 7	3	12 7	28	2 35	20	23 39	14	16 5		
मीन	16	3 9	12	0 56	5	15 3	30	3 19	22	23 23	16	18 54		
							सन् 1954							
मेष			फर. 8	14 59	अप्रै. 4	9 35	मई 29	6 7	जुला. 22	18 57	सितं. 15	8 19	नवं. 9	5 37
वृष			10	17 40	6	9 8	31	6 18	24	21 33	17	9 10	11	4 42
मिथुन			12	22 26	8	11 11	जून 2	6 59	27	0 33	19	11 55	13	4 25
कर्क			15	5 23	10	16 55	4	10 4	29	4 40	21	17 12	15	6 42
सिंह			17	14 22	13	2 14	6	16 44	31	10 45	24	0 50	17	12 40
कन्या			20	1 12	15	13 50	9	2 58	अग. 2	19 32	26	10 26	19	22 11
तुला			22	13 30	18	2 20	11	15 18	5	6 54	28	21 46	22	10 2
वृश्चिक	जन. 1	9 4	25	2 0	20	14 50	14	3 39	7	19 27	अक्टू. 1	10 25	24	22 48
धनु	3	17 50	27	12 40	23	2 27	16	14 34	10	6 49	3	23 6	27	11 22
मकर	5	23 47	मार्च 1	19 44	25	11 58	18	23 24	12	15 10	6	9 34	29	22 43
कुम्भ	8	3 40	3	22 55	27	18 8	21	6 4	14	20 11	8	16 4	दिसं. 2	7 43
मीन	10	6 30	5	23 23	29	20 39	23	10 37	16	22 52	10	18 31	4	13 26
मेष	12	9 10	7	23 8	मई 1	20 33	25	13 22	19	0 40	12	18 22	6	15 52
वृष	14	12 18	10	0 10	3	19 48	27	15 1	21	2 56	14	17 48	8	16 2
मिथुन	16	16 30	12	3 58	5	20 34	29	16 43	23	6 29	16	18 52	10	15 43
कर्क	18	22 25	14	10 58	8	0 39	जुला. 1	19 53	25	11 38	18	22 58	12	16 50
सिंह	21	6 39	16	20 34	10	8 43	4	1 47	27	18 33	21	6 21	14	21 5
कन्या	23	17 26	19	7 53	12	19 56	6	11 2	30	3 32	23	16 21	17	5 12
तुला	26	5 52	21	20 14	15	8 30	8	22 53	सितं. 1	14 42	26	4 3	19	16 33
वृश्चिक	28	17 55	24	8 50	17	20 53	11	11 19	4	3 20	28	16 44	22	5 22
धनु	31	3 26	26	20 19	20	8 9	13	22 13	6	15 26	31	5 31	24	17 45
मकर	फर. 2	9 24	29	4 53	22	17 38	16	6 29	9	0 39	नवं. 2	16 52	27	4 32
कुम्भ	4	12 20	31	9 26	25	0 38	18	12 12	11	5 54	5	0 59	29	13 11
मीन	6	13 39	अप्रै. 2	10 26	27	4 40	20	16 5	13	7 52	7	5 0	31	19 31

चन्द्रमा का राशि चार

(सर्वत्र भा. स्टें. टा. दिया गया है)

राशि	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.
							सन् 1955							
मेष	जन. 2	23 29	फर. 26	10 53	अप्रै. 22	5 7	जून 16	1 1	अग. 9	13 44	अक्तू. 3	2 59	नवं. 26	23 38
वृष	5	1 29	28	13 26	24	5 5	18	2 17	11	17 34	5	5 12	29	0 53
मिथुन	7	2 27	मार्च 2	16 32	26	5 30	20	2 1	13	20 6	7	7 28	दिसं. 1	0 33
कर्क	9	3 50	4	20 28	28	7 54	22	2 3	15	21 52	9	10 32	3	0 35
सिंह	11	7 12	7	1 29	30	13 5	24	4 11	17	23 58	11	14 45	5	2 39
कन्या	13	13 53	9	8 11	मई 2	21 0	26	9 48	20	3 56	13	20 23	7	7 51
तुला	16	0 12	11	17 19	5	7 11	28	19 12	22	11 10	16	4 1	9	16 22
वृश्चिक	18	12 47	14	5 1	7	19 7	जुला. 1	7 20	24	21 57	18	14 11	12	3 30
धनु	21	1 15	16	17 54	10	8 4	3	20 19	27	10 45	21	2 36	14	16 9
मकर	23	11 40	19	5 20	12	20 36	6	8 29	29	22 52	23	15 31	17	5 10
कुम्भ	25	19 26	21	13 12	15	6 46	8	18 49	सितं. 1	8 21	26	2 22	19	17 16
मीन	28	0 59	23	17 18	17	13 9	11	2 48	3	14 56	28	9 25	22	3 2
मेष	30	5 1	25	18 58	19	15 42	13	8 10	5	19 27	30	12 48	24	9 20
वृष	फर. 1	8 6	27	20 2	21	15 46	15	11 3	7	22 56	नवं. 1	13 56	26	12 3
मिथुन	3	10 42	29	22 4	23	15 13	17	12 5	10	2 2	3	14 37	28	12 9
कर्क	5	13 25	अप्रै. 1	1 53	25	16 1	19	12 33	12	5 1	5	16 22	30	11 23
सिंह	7	17 15	3	7 38	27	19 39	21	14 6	14	8 21	7	20 8		
कन्या	9	23 25	5	15 15	30	2 45	23	18 27	16	12 57	10	2 15		
तुला	12	8 46	8	0 51	जून 1	12 57	26	2 38	18	19 59	12	10 41		
वृश्चिक	14	20 53	10	12 30	4	1 10	28	14 12	21	6 11	14	21 19		
धनु	17	9 35	13	1 27	6	14 8	31	3 9	23	18 46	17	9 44		
मकर	19	20 16	15	13 38	9	2 35	अग. 2	15 8	26	7 17	19	22 49		
कुम्भ	22	3 37	17	22 41	11	13 12	5	0 53	28	17 10	22	10 37		
मीन	24	8 3	20	3 35	13	20 50	7	8 18	30	23 29	24	19 7		
							सन् 1956							
मेष			फर. 16	22 6	अप्रै. 11	11 46	जून 5	6 59	जुला. 29	22 39	सितं. 22	10 2	नवं. 16	2 30
वृष			19	3 35	13	15 32	7	10 29	अग. 1	5 1	24	16 50	18	7 40
मिथुन			21	7 1	15	18 21	9	11 23	3	8 0	26	21 50	20	10 32
कर्क			23	8 40	17	21 3	11	11 23	5	8 18	29	1 2	22	12 27
सिंह	जन. 1	11 46	25	9 32	20	0 10	13	12 16	7	7 37	अक्तू. 1	2 49	24	14 37
कन्या	3	15 8	27	11 19	22	4 12	15	15 32	9	8 4	3	4 17	26	17 56
तुला	5	22 30	29	15 53	24	9 51	17	21 53	11	11 40	5	7 3	28	22 55
वृश्चिक	8	9 26	मार्च 3	0 24	26	17 55	20	7 12	13	19 25	7	12 42	दिसं. 1	5 51
धनु	10	22 18	5	12 19	29	4 42	22	18 39	16	6 41	9	21 59	3	14 57
मकर	13	11 14	8	1 15	मई 1	17 17	25	7 15	18	19 28	12	10 0	6	2 13
कुम्भ	15	23 3	10	12 40	4	5 30	27	19 54	21	7 52	14	22 30	8	14 49
मीन	18	9 3	12	21 30	6	15 7	30	7 13	23	18 56	17	9 15	11	2 55
मेष	20	16 35	15	4 0	8	21 11	जुला. 2	15 43	26	4 17	19	17 21	13	12 22
वृष	22	21 10	17	8 57	11	0 17	4	20 33	28	11 27	21	23 8	15	18 2
मिथुन	24	22 56	19	12 46	13	1 47	6	22 2	30	15 56	24	3 19	17	20 23
कर्क	26	22 53	21	15 39	15	3 9	8	21 35	सितं. 1	17 48	26	6 31	19	20 51
सिंह	28	22 48	23	18 2	17	5 35	10	21 9	3	18 3	28	9 16	21	21 21
कन्या	31	0 43	25	20 51	19	9 52	12	22 47	5	18 27	30	12 8	23	23 31
तुला	फर. 2	6 23	28	1 33	21	16 22	15	3 57	7	21 5	नवं. 1	16 0	26	4 23
वृश्चिक	4	16 14	30	9 23	24	1 11	17	12 54	10	3 28	3	21 56	28	12 0
धनु	7	4 52	अप्रै. 1	20 30	26	12 10	20	0 33	12	13 46	6	6 44	30	21 52
मकर	9	17 49	4	9 17	29	0 41	22	13 18	15	2 18	8	18 13		
कुम्भ	12	5 16	6	21 2	31	13 14	25	1 51	17	14 41	11	6 49		
मीन	14	14 40	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	27	[illegible]	20	[illegible]	13	18 9		

चन्द्रमा का राशि चार

(सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है)

राशि	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.
							सन् 1957							
मेष	दिसं. 30	18 44	फर. 6	4 5	अप्रै. 1	15 46	मई 26	7 25	जुला. 20	0 16	सितं. 12	13 3	नवं. 6	1 55
वृष			8	12 50	4	0 32	28	15 11	22	9 43	15	0 2	8	11 57
मिथुन			10	17 47	6	7 10	30	20 2	24	15 8	17	8 13	10	19 41
कर्क			12	19 6	8	11 28	जून 1	22 57	26	16 56	19	12 43	13	1 20
सिंह			14	18 16	10	13 39	4	1 11	28	16 48	21	13 57	15	5 11
कन्या			16	17 29	12	14 39	6	3 47	30	16 50	23	13 26	17	7 43
तुला			18	18 59	14	15 58	8	7 24	अग. 1	18 53	25	13 12	19	9 35
वृश्चिक			21	0 19	16	19 16	10	12 30	3	23 57	27	15 15	21	11 53
धनु			23	9 39	19	1 52	12	19 28	6	7 59	29	20 55	23	15 56
मकर	जन. 2	9 22	25	21 35	21	11 58	15	4 43	8	18 14	अक्तू. 2	6 17	25	22 57
कुम्भ	4	21 55	28	10 19	24	0 16	17	16 11	11	5 58	4	18 11	28	9 18
मीन	7	10 27	मार्च 2	22 36	26	12 32	20	4 44	13	18 37	7	6 53	30	21 49
मेष	9	21 11	5	9 47	28	23 0	22	16 11	16	7 7	9	18 59	दिसं. 3	10 [illegible]
वृष	12	4 24	7	19 3	मई 1	7 1	25	0 30	18	17 41	12	5 38	5	19 [illegible]
मिथुन	14	7 34	10	1 29	3	12 49	27	5 8	21	0 34	14	14 6	8	2 [illegible]
कर्क	16	7 44	12	4 37	5	16 53	29	7 1	23	3 24	16	19 50	10	[illegible]
सिंह	18	6 53	14	5 8	7	19 47	जुला. 1	7 53	25	3 22	18	22 47	12	[illegible]
कन्या	20	7 12	16	4 43	9	22 9	3	9 25	27	2 30	20	23 43	14	[illegible]
तुला	22	10 30	18	5 26	12	0 47	5	12 49	29	3 0	23	0 4	[illegible]	[illegible]
वृश्चिक	24	17 32	20	9 13	14	4 46	7	18 29	31	6 33	25	1 36	[illegible]	[illegible]
धनु	27	3 41	22	17 1	16	11 7	10	2 17	सितं. 2	13 45	27	5 57	2[illegible]	[illegible]
मकर	29	15 37	25	4 13	18	20 27	12	12 1	4	23 59	29	13 59	23	[illegible]
कुम्भ	फर. 1	4 13	27	16 53	21	8 14	14	23 29	7	11 59	नवं. 1	1 14	25	17 [illegible]
मीन	3	16 43	30	5 5	23	20 39	17	12 7	10	0 38	3	13 55	28	6 3
							सन् 1958							
मेष			फर. 23	9 55	अप्रै. 18	22 11	जून 12	12 8	अग. 6	3 54	सितं. 29	17 47	नवं. 23	6 20
वृष	जन. 2	5 14	25	22 12	21	10 18	14	23 57	8	16 29	अक्तू. 2	6 47	25	19 5?
मिथुन	4	12 4	28	7 30	23	20 33	17	9 8	11	2 27	4	18 30	28	6 21
कर्क	6	15 36	मार्च 2	12 36	26	4 11	19	15 39	13	8 35	7	3 11	30	15 38
सिंह	8	17 23	4	14 1	28	8 47	21	20 15	15	11 30	9	8 0	दिसं. 2	22 46
कन्या	10	19 5	6	13 30	30	10 42	23	23 46	17	12 47	11	9 28	5	3 32
तुला	12	21 55	8	13 10	मई 2	10 59	26	2 39	19	14 8	13	9 5	7	5 57
वृश्चिक	15	2 21	10	14 53	4	11 14	28	5 19	21	16 44	15	8 46	9	6 42
धनु	17	8 22	12	19 47	6	13 14	30	8 25	23	21 8	17	10 21	11	7 15
मकर	19	16 6	15	3 59	8	18 31	जुला. 2	13 6	26	3 30	19	15 13	13	9 28
कुम्भ	22	1 55	17	14 46	11	3 40	4	20 34	28	11 58	21	23 44	15	15 7
मीन	24	13 54	20	3 8	13	15 47	7	7 17	30	22 39	24	11 7	18	0 52
मेष	27	2 52	22	16 7	16	4 46	9	20 2	सितं. 2	11 12	26	23 57	20	13 26
वृष	29	14 24	25	4 31	18	16 36	12	8 9	5	0 9	29	12 49	23	2 15
मिथुन	31	22 15	27	14 46	21	2 17	14	17 25	7	11 8	नवं. 1	0 32	25	13 12
कर्क	फर. 3	1 59	29	21 31	23	9 38	16	23 19	9	18 23	3	10 4	27	21 42
सिंह	5	2 54	अप्रै. 1	0 31	25	14 51	19	2 50	11	21 44	5	16 31	30	4 12
कन्या	7	3 0	3	0 47	27	18 9	21	5 23	13	22 29	7	19 42		
तुला	9	4 13	5	0 6	29	20 0	23	8 2	15	22 29	9	20 19		
वृश्चिक	11	7 46	7	0 27	31	21 18	25	11 19	17	23 30	11	19 52		
धनु	13	13 57	9	3 33	जून 2	23 23	27	15 31	20	2 50	13	20 15		
मकर	15	22 25	11	10 23	5	3 51	29	21 6	22	9 2	15	23 24		
कुम्भ	18	8 49	13	20 43	7	11 50	अग. 1	4 50	24	17 58	18	6 32		
मीन	20	20 53	16	9 12	9	23 14	3	15 18	27	5 8	20	17 26		

चन्द्रमा का राशि चार

(सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है)

राशि	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.
							सन् 1959							
मेष			फर. 13	5 43	अप्रै. 8	20 30	जून 2	8 30	जुला. 26	22 49	सितं. 19	15 32	नवं. 13	5 16
वृष			15	18 35	11	9 17	4	21 29	29	11 18	22	3 13	15	17 15
मिथुन			18	6 22	13	21 55	7	9 54	31	23 39	24	15 52	18	5 53
कर्क			20	14 58	16	8 42	9	20 52	अग. 3	9 58	27	3 13	20	18 15
सिंह			22	20 5	18	16 6	12	5 54	5	17 48	29	11 29	23	4 55
कन्या	जन. 1	9 11	24	22 48	20	19 43	14	12 24	7	23 38	अक्तू. 1	16 15	25	12 21
तुला	3	12 49	27	0 36	22	20 25	16	15 59	10	3 58	3	18 24	27	15 50
वृश्चिक	5	15 15	मार्च 1	2 42	24	19 51	18	17 1	12	7 9	5	19 26	29	16 9
धनु	7	17 7	3	5 56	26	19 59	20	16 48	14	9 34	7	20 54	दिसं. 1	15 8
मकर	9	19 45	5	10 43	28	22 37	22	17 20	16	12 0	9	23 59	3	15 2
कुम्भ	12	0 48	7	17 23	मई 1	4 50	24	20 38	18	15 38	12	5 21	5	17 52
मीन	14	9 29	10	2 19	3	14 32	27	4 1	20	21 48	14	13 4	8	0 43
मेष	16	21 24	12	13 35	6	2 33	29	15 8	23	7 13	16	22 58	10	11 4
वृष	19	10 18	15	2 23	8	15 27	जुला. 2	4 0	25	19 14	19	10 39	12	23 20
मिथुन	21	21 27	17	14 45	11	4 2	4	16 18	28	7 43	21	23 19	15	12 0
कर्क	24	5 34	20	0 28	13	15 14	7	2 49	30	18 21	24	11 25	18	0 9
सिंह	26	11 1	22	6 24	15	23 54	9	11 22	सितं. 2	1 59	26	20 57	20	11 6
कन्या	28	14 54	24	8 58	18	5 10	11	18 0	4	6 53	29	2 42	22	19 45
तुला	30	18 9	26	9 36	20	7 6	13	22 35	6	10 4	31	4 53	25	1 5
वृश्चिक	फर. 1	21 14	28	10 3	22	6 48	16	1 8	8	12 33	नवं. 2	4 54	27	2 59
धनु	4	0 27	30	11 52	24	6 8	18	2 16	10	15 11	4	4 43	29	2 36
मकर	6	4 22	अप्रै. 1	16 7	26	7 14	20	3 24	12	18 34	6	6 16	31	1 58
कुम्भ	8	9 59	3	23 11	28	11 51	22	6 22	14	23 21	8	10 52		
मीन	10	18 22	6	8 51	30	20 37	24	12 42	17	6 10	10	18 47		
							सन् 1960							
मेष	दिसं. 26	20 30	फर. 3	1 48	मार्च 28	20 3	मई 22	9 34	जुला. 15	21 33	सितं. 8	15 3	नवं. 2	8 42
वृष	29	5 31	5	12 58	31	5 48	24	20 8	18	7 50	10	23 3	4	16 29
मिथुन	31	16 30	8	1 37	अप्रै. 2	17 44	27	8 5	20	20 6	13	10 12	7	2 38
कर्क			10	13 30	5	6 11	29	20 48	23	8 47	15	22 48	9	14 54
सिंह			12	23 26	7	16 51	जून 1	8 58	25	20 48	18	10 34	12	3 35
कन्या			15	7 14	10	0 13	3	18 39	28	7 18	20	20 1	14	14 5
तुला			17	13 6	12	4 15	6	0 24	30	15 20	23	2 52	16	20 44
वृश्चिक			19	17 16	14	6 7	8	2 16	अग. 1	20 12	25	7 38	18	23 45
धनु			21	19 58	16	7 26	10	1 48	3	22 6	27	11 3	21	0 42
मकर			23	21 54	18	9 36	12	1 7	5	22 11	29	13 46	23	1 31
कुम्भ	जन. 2	3 19	26	0 9	20	13 33	14	2 22	7	22 16	अक्तू. 1	16 23	25	3 49
मीन	4	8 24	28	4 9	22	19 33	16	6 58	10	0 16	3	19 39	27	8 19
मेष	6	17 38	मार्च 1	11 5	25	3 34	18	15 7	12	5 39	6	0 32	29	15 2
वृष	9	5 40	3	21 16	27	13 34	21	1 55	14	14 48	8	7 59	दिसं. 1	23 38
मिथुन	11	18 24	6	9 35	30	1 21	23	14 8	17	2 40	10	18 25	4	10 5
कर्क	14	6 18	8	21 44	मई 2	14 0	26	2 50	19	15 20	13	6 52	6	22 16
सिंह	16	16 44	11	7 44	5	1 34	28	15 7	22	3 5	15	19 2	9	11 13
कन्या	19	1 23	13	14 52	7	9 57	जुला. 1	1 37	24	13 1	18	4 39	11	22 49
तुला	21	7 43	15	19 35	9	14 23	3	8 51	26	20 46	20	10 54	14	6 49
वृश्चिक	23	11 21	17	22 48	11	15 40	5	12 13	29	2 12	22	14 29	16	10 34
धनु	25	12 41	20	1 26	13	15 37	7	12 32	31	5 27	24	16 47	18	11 10
मकर	27	12 59	22	4 14	15	16 14	9	11 38	सितं. 2	7 7	26	19 7	20	10 39
कुम्भ	29	14 9	24	7 50	17	19 7	11	11 44	4	8 18	28	22 21	22	11 9
मीन	31	18 3	26	12 53	20	1 0	13	14 43	6	10 27	31	2 48	24	14 15

चन्द्रमा का राशि चार

(सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है)

राशि	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.
							सन् 1961							
मेष			फर. 19	12 1	अप्रै. 15	8 11	जून 8	22 7	अग. 2	10 5	सितं. 26	5 6	नवं. 20	0 11
वृष			21	18 39	17	13 12	11	4 44	4	16 5	28	8 10	22	3 45
मिथुन			24	4 56	19	21 21	13	13 24	7	1 19	30	15 2	24	9 28
कर्क	जन. 3	4 50	26	17 29	22	8 42	16	0 20	9	12 59	अक्तू. 3	1 46	26	18 23
सिंह	5	17 45	मार्च 1	6 17	24	21 32	18	13 5	12	1 54	5	14 39	29	6 20
कन्या	8	5 54	3	17 50	27	9 10	21	1 47	14	14 48	8	3 17	दिसं. 1	19 14
तुला	10	15 22	6	3 23	29	17 47	23	11 55	17	2 19	10	14 3	4	6 18
वृश्चिक	12	20 49	8	10 35	मई 1	23 18	25	18 4	19	11 4	12	22 33	6	13 58
धनु	14	22 29	10	15 22	4	2 49	27	20 35	21	16 15	15	5 1	8	18 35
मकर	16	21 56	12	17 57	6	5 35	29	21 4	23	18 9	17	9 39	10	21 28
कुम्भ	18	21 17	14	19 4	8	8 28	जुला. 1	21 27	25	17 59	19	12 32	12	23 55
मीन	20	22 32	16	20 0	10	11 53	3	23 17	27	17 34	21	14 8	15	2 48
मेष	23	3 7	18	22 21	12	16 6	6	3 32	29	18 45	23	15 30	17	6 30
वृष	25	11 22	21	3 39	14	21 49	8	10 23	31	23 10	25	18 15	19	11 19
मिथुन	27	22 27	23	12 41	17	5 53	10	19 40	सितं. 3	7 29	28	0 2	21	17 52
कर्क	30	11 1	26	0 44	19	16 48	13	7 0	5	18 59	30	9 42	24	2 52
सिंह	फर. 1	23 49	28	13 34	22	5 34	15	19 47	8	7 59	नवं. 1	22 11	26	14 28
कन्या	4	11 48	31	0 57	24	17 45	18	8 44	10	20 42	4	10 55	29	3 25
तुला	6	21 48	अप्रै. 2	9 47	27	2 52	20	19 51	13	7 57	6	21 31	31	15 17
वृश्चिक	9	4 45	4	16 12	29	8 14	23	3 23	15	17 3	9	5 16		
धनु	11	8 16	6	20 49	31	10 47	25	6 57	17	23 28	11	10 47		
मकर	13	9 5	9	0 13	जून 2	12 13	27	7 35	20	3 5	13	14 59		
कुम्भ	15	8 44	11	2 48	4	14 4	29	7 5	22	4 20	15	18 26		
मीन	17	9 6	13	5 9	6	17 16	31	7 23	24	4 27	17	21 22		
							सन् 1962							
मेष			फर. 9	18 47	अप्रै. 5	15 13	मई 30	9 40	जुला. 23	21 8	सितं. 16	12 51	नवं. 10	10 40
वृष			11	22 47	7	16 12	जून 1	11 51	26	0 43	18	13 43	12	10 27
मिथुन			14	6 6	9	20 30	3	15 35	28	6 18	20	17 49	14	11 54
कर्क			16	16 19	12	5 0	5	22 15	30	14 7	23	1 44	16	16 50
सिंह			19	4 25	14	16 53	8	8 23	अग. 2	0 15	25	12 39	19	1 54
कन्या			21	17 19	17	5 54	10	20 50	4	12 17	28	1 7	21	13 57
तुला			24	5 50	19	17 59	13	9 7	7	1 1	30	13 52	24	2 41
वृश्चिक	जन. 2	23 50	26	16 35	22	4 15	15	19 4	9	12 28	अक्तू. 3	1 59	26	14 14
धनु	5	4 35	मार्च 1	0 15	24	12 34	18	2 6	11	20 47	5	12 27	28	23 56
मकर	7	6 35	3	4 15	26	18 51	20	6 49	14	1 23	7	20 0	दिसं. 1	7 47
कुम्भ	9	7 29	5	5 10	28	22 54	22	10 9	16	3 0	9	23 55	3	13 41
मीन	11	8 53	7	4 31	मई 1	0 49	24	12 56	18	3 13	12	0 38	5	17 32
मेष	13	11 53	9	4 16	3	1 30	26	15 44	20	3 48	13	23 45	7	19 33
वृष	15	17 3	11	6 26	5	2 36	28	19 5	22	6 21	15	23 26	9	20 40
मिथुन	18	0 31	13	12 22	7	6 2	30	23 48	24	11 46	18	1 50	11	22 30
कर्क	20	10 12	15	22 10	9	13 15	जुला. 3	6 49	26	20 8	20	8 20	14	2 46
सिंह	22	21 54	18	10 29	12	0 14	5	16 39	29	6 49	22	18 41	16	10 35
कन्या	25	10 48	20	23 28	14	13 2	8	4 47	31	19 1	25	7 12	18	21 45
तुला	27	23 14	23	11 45	17	1 8	10	17 19	सितं. 3	7 48	27	19 55	21	10 23
वृश्चिक	30	9 7	25	22 31	19	11 0	13	3 55	5	19 51	30	7 43	23	22 5
धनु	फर. 1	15 10	28	7 3	21	18 33	15	11 12	8	5 30	नवं. 1	18 4	26	7 25
मकर	3	17 35	30	12 43	24	0 16	17	15 21	10	11 28	4	2 23	28	14 18
कुम्भ	5	17 47	अप्रै. 1	15 18	26	4 33	19	17 29	12	13 45	6	7 54	30	19 16
मीन	7	17 34	3	15 36	28	7 33	21	19 0	14	13 34	8	10 23		

चन्द्रमा का राशि चार

(सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है)

राशि	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.
							सन् 1963							
मेष	दिसं. 25	15 19	जन. 31	7 13	मार्च 26	23 56	मई 20	21 14	जुला. 14	11 32	सितं. 6	23 38	अक्तू. 31	19 43
वृष	27	16 44	फर. 2	10 5	28	23 49	22	20 49	16	13 50	9	1 7	नवं. 2	18 49
मिथुन	29	16 56	4	14 20	31	2 6	24	21 0	18	16 1	11	4 4	4	18 43
कर्क	31	17 37	6	20 20	अप्रै. 2	7 51	26	23 43	20	19 9	13	8 59	6	21 13
सिंह			9	4 22	4	16 51	29	6 14	23	0 24	15	15 52	9	3 16
कन्या			11	14 35	7	4 1	31	16 23	25	8 38	18	0 38	11	12 35
तुला			14	2 40	9	16 16	जून 3	4 40	27	19 45	20	11 23	14	0 4
वृश्चिक			16	15 11	12	4 53	5	17 12	30	8 15	22	23 49	16	12 40
धनु			19	1 54	14	16 52	8	4 38	अग. 1	19 49	25	12 30	19	1 28
मकर			21	9 9	17	2 41	10	14 20	4	4 43	27	23 4	21	13 21
कुम्भ			23	12 44	19	8 54	12	21 51	6	10 38	30	5 43	23	22 47
मीन	जन. 1	22 56	25	13 50	21	11 15	15	2 51	8	14 20	अक्तू. 2	8 27	26	4 32
मेष	4	1 49	27	14 17	23	10 55	17	5 26	10	16 56	4	8 44	28	6 36
वृष	6	4 27	मार्च 1	15 51	25	10 0	19	6 26	12	19 29	6	8 41	30	6 18
मिथुन	8	7 38	3	19 44	27	10 43	21	7 17	14	22 40	8	10 11	दिसं. 2	5 36
कर्क	10	12 27	6	2 18	29	14 49	23	9 41	17	2 58	10	14 25	4	6 34
सिंह	12	19 54	8	11 10	मई 1	22 49	25	15 5	19	8 55	12	21 31	6	10 49
कन्या	15	6 17	10	21 51	4	9 51	28	0 6	21	17 7	15	6 55	8	18 57
तुला	17	18 38	13	9 54	6	22 18	30	11 51	24	3 50	17	18 4	11	6 10
वृश्चिक	20	6 45	15	22 33	9	10 50	जुला. 3	0 22	26	16 18	20	6 31	13	18 53
धनु	22	16 30	18	10 11	11	22 38	5	11 40	29	4 25	22	19 26	16	7 32
मकर	24	23 1	20	18 49	14	8 47	7	20 45	31	13 52	25	7 1	18	19 2
कुम्भ	27	2 50	22	23 25	16	16 11	10	3 31	सितं. 2	19 39	27	15 13	21	4 34
मीन	29	5 8	25	0 32	18	20 11	12	8 17	4	22 23	29	19 10	23	11 25
							सन् 1964							
मेष			फर. 18	2 53	अप्रै. 12	19 18	जून 6	15 46	जुला. 31	5 50	सितं. 23	17 53	नवं. 17	13 17
वृष			20	6 0	14	19 50	8	16 45	अग. 2	9 45	25	21 1	19	14 46
मिथुन			22	9 0	16	20 50	10	16 15	4	11 49	27	23 52	21	14 54
कर्क			24	12 15	18	23 36	12	16 13	6	12 50	30	3 0	23	15 30
सिंह	जन. 2	20 33	26	16 17	21	4 43	14	18 24	8	14 12	अक्तू. 2	6 39	25	18 1
कन्या	5	3 3	28	22 1	23	12 5	17	0 1	10	17 33	4	11 21	27	23 14
तुला	7	13 16	मार्च 2	6 28	25	21 31	19	9 14	13	0 22	6	17 59	30	7 16
वृश्चिक	10	1 48	4	17 50	28	8 53	21	21 6	15	10 54	9	3 26	दिसं. 2	17 42
धनु	12	14 28	7	6 40	30	21 40	24	10 2	17	23 39	11	15 31	5	5 55
मकर	15	1 31	9	18 17	मई 3	10 23	26	22 37	20	12 3	14	4 27	7	18 58
कुम्भ	17	10 17	12	2 37	5	20 47	29	9 40	22	22 13	16	15 27	10	7 24
मीन	19	16 51	14	7 25	8	3 15	जुला. 1	18 15	25	5 46	18	22 50	12	17 22
मेष	21	21 28	16	9 57	10	5 50	3	23 46	27	11 15	21	2 45	14	23 35
वृष	24	0 27	18	11 50	12	5 59	6	2 20	29	15 22	23	4 37	17	2 5
मिथुन	26	2 21	20	14 20	14	5 41	8	2 51	31	18 30	25	6 6	19	2 5
कर्क	28	4 7	22	18 6	16	6 48	10	2 48	सितं. 2	20 58	27	8 24	21	1 26
सिंह	30	7 3	24	23 14	18	10 38	12	4 0	4	23 26	29	12 13	23	2 5
कन्या	फर. 1	12 35	27	5 55	20	17 36	14	8 8	7	3 5	31	17 48	25	5 40
तुला	3	21 37	29	14 40	23	3 22	16	16 8	9	9 21	नवं. 3	1 20	27	12 58
वृश्चिक	6	9 36	अप्रै. 1	1 48	25	15 8	19	3 32	11	19 5	5	11 7	29	23 34
धनु	8	22 22	3	14 36	28	3 59	21	16 28	14	7 30	7	23 6		
मकर	11	9 27	6	2 53	30	16 45	24	4 51	16	20 7	10	12 11		
कुम्भ	13	17 36	8	12 9	जून 2	3 50	26	15 26	19	6 25	13	0 7		
मीन	15	23 4[illegible]	[illegible]	17 2[illegible]	4	11 42	28	23 45	21	13 27	15	8 42		

चन्द्रमा का राशि चार

(सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है)

राशि	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.
							सन् 1965							
मेष			फर. 7	13 47	अप्रै. 3	2 11	मई 27	20 35	जुला. 21	13 24	सितं. 14	0 59	नवं. 7	15 51
वृष			9	19 34	5	6 55	30	0 24	23	19 47	16	8 36	9	21 48
मिथुन			11	22 44	7	10 34	जून 1	1 50	25	22 35	18	14 2	12	1 42
कर्क			13	23 45	9	13 39	3	2 28	27	22 41	20	17 6	14	4 33
सिंह			15	23 53	11	16 29	5	3 54	29	21 53	22	18 16	16	7 11
कन्या			18	1 2	13	19 41	7	7 17	31	22 20	24	18 54	18	10 16
तुला			20	5 11	16	0 16	9	13 16	अग. 3	1 54	26	20 52	20	14 24
वृश्चिक			22	13 28	18	7 24	11	21 51	5	9 31	29	1 57	22	20 15
धनु	जन. 1	12 6	25	1 17	20	17 39	14	8 37	7	20 33	अक्तू. 1	10 56	25	4 29
मकर	4	1 8	27	14 20	23	6 7	16	20 55	10	9 12	3	22 53	27	15 17
कुम्भ	6	13 27	मार्च 2	2 12	25	18 28	19	9 39	12	21 51	6	11 30	30	3 46
मीन	9	0 1	4	11 48	28	4 21	21	21 11	15	9 28	8	22 38	दिसं. 2	15 53
मेष	11	7 47	6	19 18	30	10 54	24	5 46	17	19 27	11	7 31	5	1 27
वृष	13	12 10	9	1 4	मई 2	14 44	26	10 36	20	2 59	13	14 18	7	7 29
मिथुन	15	13 28	11	5 14	4	17 5	28	12 11	22	7 25	15	19 25	9	10 28
कर्क	17	13 0	13	7 51	6	19 11	30	11 58	24	8 53	17	23 6	11	11 48
सिंह	19	12 39	15	9 29	8	21 55	जुला. 2	11 53	26	8 37	20	1 39	13	13 5
कन्या	21	14 28	17	11 20	11	1 52	4	13 47	28	8 32	22	3 44	15	15 38
तुला	23	20 5	19	15 9	13	7 31	6	18 55	30	10 48	24	6 33	17	20 15
वृश्चिक	26	5 49	21	22 23	15	15 21	9	3 30	सितं. 1	16 58	26	11 32	20	3 7
धनु	28	18 19	24	9 15	18	1 38	11	14 41	4	3 7	28	19 43	22	12 6
मकर	31	7 24	26	22 3	20	13 54	14	3 12	6	15 37	31	6 58	24	23 0
कुम्भ	फर. 2	19 23	29	10 5	23	2 31	16	15 55	9	4 13	नवं. 2	19 34	27	11 22
मीन	5	5 37	31	19 30	25	13 16	19	3 44	11	15 28	5	7 4	29	23 57
							सन् 1966							
मेष	जन. 1	10 44	फर. 25	0 26	अप्रै. 20	12 46	जून 14	5 12	अग. 7	20 57	अक्तू. 1	9 5	नवं. 24	23 2
वृष	3	17 57	27	10 12	22	21 41	16	13 54	10	7 40	3	20 24	27	9 29
मिथुन	5	21 17	मार्च 1	16 46	25	4 29	18	19 13	12	14 39	6	5 31	29	17 21
कर्क	7	21 49	3	19 39	27	9 16	20	21 59	14	17 33	8	11 29	दिसं. 1	22 57
सिंह	9	21 28	5	19 43	29	12 16	22	23 40	16	17 39	10	14 9	4	2 59
कन्या	11	22 17	7	18 49	मई 1	14 5	25	1 42	18	17 1	12	14 29	6	6 3
तुला	14	1 49	9	19 13	3	15 48	27	5 1	20	17 47	14	14 13	8	8 39
वृश्चिक	16	8 39	11	22 51	5	18 48	29	10 4	22	21 29	16	15 18	10	11 25
धनु	18	18 15	14	6 37	8	0 26	जुला. 1	16 59	25	4 34	18	19 26	12	15 19
मकर	21	5 40	16	17 45	10	9 23	4	1 54	27	14 25	21	3 22	14	21 29
कुम्भ	23	18 4	19	6 25	12	21 4	6	12 54	30	2 1	23	14 32	17	6 45
मीन	26	6 44	21	18 51	15	9 32	9	1 23	सितं. 1	14 34	26	3 11	19	18 45
मेष	28	18 22	24	6 9	17	20 37	11	13 34	4	3 13	28	15 29	22	7 26
वृष	31	3 12	26	15 46	20	5 5	13	23 10	6	14 38	31	2 16	24	18 13
मिथुन	फर. 2	8 3	28	23 4	22	10 55	16	4 54	8	23 2	नवं. 2	11 1	27	1 41
कर्क	4	9 14	31	3 31	24	14 50	18	7 11	11	3 28	4	17 26	29	6 11
सिंह	6	8 21	अप्रै. 2	5 18	26	17 42	20	7 39	13	4 27	6	21 29	31	8 57
कन्या	8	7 39	4	5 33	28	20 19	22	8 14	15	3 40	8	23 33		
तुला	10	9 18	6	6 4	30	23 19	24	10 35	17	3 18	11	0 35		
वृश्चिक	12	14 43	8	8 45	जून 2	3 25	26	15 33	19	5 21	13	2 0		
धनु	14	23 55	10	15 2	4	9 26	28	23 3	21	11 2	15	5 23		
मकर	17	11 35	13	1 1	6	18 0	31	8 36	23	20 18	17	12 1		
कुम्भ	20	0 12	15	13 20	9	5 9	अग. 2	19 51	26	7 59	19	22 11		
मीन	22	12 44	18	1 47	11	17 38	5	8 20	28	20 37	22	10 38		

चन्द्रमा का राशि चार

(सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है)

राशि	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.
							सन् 1967							
मेष			फर. 14	23 23	अप्रै. 10	12 2	जून 4	1 11	जुला. 28	16 45	सितं. 21	7 26	नवं. 14	19 57
वृष			17	11 47	13	0 35	6	13 24	31	5 25	23	20 30	17	8 53
मिथुन			19	21 13	15	11 30	8	23 23	अग. 2	15 42	26	8 27	19	20 46
कर्क			22	2 24	17	19 32	11	6 54	4	22 22	28	17 14	22	6 50
सिंह			24	3 58	20	0 5	13	12 21	7	2 0	30	22 2	24	14 25
कन्या	जन. 2	11 24	26	3 45	22	1 35	15	16 14	9	4 7	अक्तू. 2	23 29	26	19 7
तुला	4	14 25	28	3 51	24	1 21	17	18 54	11	6 8	4	23 16	28	21 2
वृश्चिक	6	18 23	मार्च 2	5 58	26	1 13	19	20 51	13	9 1	6	23 16	30	21 10
धनु	8	23 30	4	11 0	28	3 1	21	23 4	15	13 9	9	1 12	दिसं. 2	21 11
मकर	11	6 15	6	18 55	30	8 13	24	2 55	17	18 45	11	6 10	4	23 3
कुम्भ	13	15 19	9	5 7	मई 2	17 17	26	9 46	20	2 16	13	14 23	7	4 30
मीन	16	2 55	11	17 2	5	5 15	28	20 9	22	12 13	16	1 16	9	14 6
मेष	18	15 49	14	5 57	7	18 16	जुला. 1	8 49	25	0 26	18	13 46	12	2 35
वृष	21	3 26	16	18 40	10	6 35	3	21 10	27	13 23	21	2 47	14	15 33
मिथुन	23	11 33	19	5 14	12	17 6	6	7 0	30	0 32	23	14 59	17	3 5
कर्क	25	15 46	21	12 3	15	1 18	8	13 46	सितं. 1	7 59	26	0 53	19	12 30
सिंह	27	17 21	23	14 53	17	6 55	10	18 16	3	11 39	28	7 21	21	19 56
कन्या	29	18 12	25	14 56	19	10 3	12	21 36	5	12 52	30	10 14	24	1 27
तुला	31	20 1	27	14 11	21	11 18	15	0 35	7	13 28	नवं. 1	10 31	26	5 1
वृश्चिक	फर. 2	23 45	29	14 38	23	11 51	17	3 36	9	15 1	3	9 52	28	6 52
धनु	5	5 34	31	17 55	25	13 18	19	7 3	11	18 34	5	10 16	30	7 52
मकर	7	13 16	अप्रै. 3	0 46	27	17 18	21	11 39	14	0 28	7	13 30		
कुम्भ	9	22 52	5	10 52	30	1 2	23	18 30	16	8 43	9	20 35		
मीन	12	10 26	7	23 3	जून 1	12 16	26	4 23	18	19 9	12	7 14		
							सन् 1968							
मेष	दिसं. 28	7 29	फर. 4	18 27	मार्च 30	10 13	मई 23	22 27	जुला. 17	11 53	सितं. 10	4 47	नवं. 3	19 36
वृष	30	19 23	7	7 18	अप्रै. 1	22 47	26	11 19	20	0 21	12	16 8	6	7 5
मिथुन			9	19 16	4	11 32	29	0 1	22	12 55	15	4 45	8	19 37
कर्क			12	4 16	6	22 28	31	11 33	24	23 47	17	16 14	11	8 8
सिंह			14	10 4	9	5 55	जून 2	21 6	27	8 30	20	0 48	13	18 56
कन्या			16	13 41	11	9 35	5	3 46	29	15 15	22	6 9	16	2 20
तुला			18	16 23	13	10 30	7	7 8	31	20 17	24	9 9	18	5 47
वृश्चिक			20	19 6	15	10 20	9	7 46	अग. 2	23 37	26	11 4	20	6 11
धनु			22	22 20	17	10 56	11	7 9	5	1 36	28	13 8	22	5 25
मकर	जन. 1	9 40	25	2 29	19	13 51	13	7 22	7	3 10	30	16 16	24	5 38
कुम्भ	3	14 4	27	8 8	21	19 57	15	10 27	9	5 50	अक्तू. 2	21 1	26	8 41
मीन	5	22 22	29	16 5	24	5 8	17	17 40	11	11 12	5	3 47	28	15 27
मेष	8	10 9	मार्च 3	2 45	26	16 37	20	4 38	13	20 9	7	12 48	दिसं. 1	1 27
वृष	10	23 8	5	15 24	29	5 18	22	17 29	16	8 2	10	0 0	3	13 20
मिथुन	13	10 40	8	3 51	मई 1	18 6	25	6 5	18	20 37	12	12 35	6	1 56
कर्क	15	19 31	10	13 44	4	5 38	27	17 15	21	7 35	15	0 43	8	14 23
सिंह	18	1 58	12	19 55	6	14 28	30	2 37	23	15 51	17	10 20	11	1 45
कन्या	20	6 49	14	22 58	8	19 39	जुला. 2	9 52	25	21 41	19	16 15	13	10 38
तुला	22	10 41	17	0 17	10	21 25	4	14 37	28	1 51	21	18 49	15	15 52
वृश्चिक	24	13 45	19	1 29	12	21 2	6	16 50	30	5 2	23	19 27	17	17 28
धनु	26	16 20	21	3 47	14	20 26	8	17 20	सितं. 1	7 45	25	19 56	19	16 46
मकर	28	19 15	23	8 1	16	21 38	10	17 45	3	10 35	27	21 56	21	15 56
कुम्भ	30	23 50	25	14 29	19	2 17	12	20 4	5	14 22	30	2 29	23	17 14
मीन	फर. 2	7 28	27	23 16	21	10 51	15	1 58	7	20 9	नवं. 1	9 52	25	22 20

चन्द्रमा का राशि चार

(सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है)

सन् 1969

राशि	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.
मेष			फर. 21	0 6	अप्रै. 16	17 52	जून 10	6 0	अग. 3	19 21	सितं. 27	14 15	नवं. 21	6 20
वृष			23	10 6	19	3 7	12	16 19	6	4 25	29	21 8	23	14 2
मिथुन	जन. 2	8 6	25	22 24	21	14 33	15	4 8	8	16 11	अक्तू. 2	7 17	25	23 45
कर्क	4	20 20	28	10 41	24	3 7	17	16 47	11	4 53	4	19 38	28	11 34
सिंह	7	7 27	मार्च 2	21 8	26	14 44	20	5 18	13	17 3	7	7 54	दिसं. 1	0 29
कन्या	9	16 48	5	5 7	28	23 20	22	16 6	16	3 45	9	18 0	3	12 9
तुला	11	23 29	7	10 54	मई 1	4 12	24	23 27	18	12 21	12	1 7	5	20 18
वृश्चिक	14	2 56	9	15 2	3	6 7	27	2 44	20	18 17	14	5 46	8	0 18
धनु	16	3 41	11	18 5	5	6 46	29	2 55	22	21 26	16	8 58	10	1 19
मकर	18	3 18	13	20 35	7	7 58	जुला. 1	1 57	24	22 30	18	11 44	12	1 22
कुम्भ	20	3 52	15	23 19	9	11 3	3	2 4	26	22 53	20	14 42	14	2 26
मीन	22	7 24	18	3 17	11	16 36	5	5 6	29	0 20	22	18 21	16	5 49
मेष	24	15 0	20	9 34	14	0 28	7	11 54	31	4 27	24	23 14	18	11 55
वृष	27	2 8	22	18 47	16	10 17	9	22 0	सितं. 2	12 13	27	6 9	20	20 22
मिथुन	29	14 49	25	6 32	18	21 48	12	10 1	4	23 15	29	15 45	23	6 40
कर्क	फर. 1	2 59	27	19 0	21	10 24	14	22 42	7	11 51	नवं. 1	3 46	25	18 35
सिंह	3	13 35	30	5 53	23	22 40	17	11 7	9	23 55	3	16 25	28	7 30
कन्या	5	22 20	अप्रै. 1	13 44	26	8 28	19	22 12	12	10 6	6	3 6	30	19 53
तुला	8	5 5	3	18 36	28	14 20	22	6 40	14	17 59	8	10 13		
वृश्चिक	10	9 40	5	21 27	30	16 24	24	11 34	16	23 42	10	13 59		
धनु	12	12 8	7	23 35	जून 1	16 14	26	13 8	19	3 35	12	15 50		
मकर	14	13 17	10	2 4	3	15 56	28	12 44	21	6 5	14	17 25		
कुम्भ	16	14 34	12	5 41	5	17 29	30	12 22	23	7 57	16	20 4		
मीन	18	17 42	14	10 50	7	22 8	अग. 1	14 5	25	10 14	19	0 22		

सन् 1970

राशि	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.
मेष			फर. 11	1 52	अप्रै. 6	22 20	मई 31	13 57	जुला. 25	1 17	सितं. 17	19 0	नवं. 11	15 24
वृष			13	8 32	9	2 40	जून 2	19 41	27	7 13	19	21 56	13	18 1
मिथुन			15	18 43	11	10 23	5	3 25	29	16 0	22	4 41	15	22 54
कर्क			18	7 4	13	21 31	7	13 42	अग. 1	3 6	24	15 15	18	7 18
सिंह			20	19 57	16	10 21	10	2 11	3	15 43	27	4 2	20	19 2
कन्या			23	8 3	18	22 18	12	14 56	6	4 48	29	16 55	23	7 59
तुला	जन. 2	5 30	25	18 26	21	7 37	15	1 17	8	16 42	अक्तू. 2	4 22	25	19 21
वृश्चिक	4	10 55	28	2 19	23	14 8	17	7 45	11	1 41	4	13 47	28	3 39
धनु	6	12 31	मार्च 2	7 14	25	18 38	19	10 45	13	6 49	6	20 57	30	9 11
मकर	8	11 59	4	9 23	27	22 3	21	11 51	15	8 30	9	1 43	दिसं. 2	13 2
कुम्भ	10	11 30	6	9 49	30	1 1	23	12 51	17	8 11	11	4 14	4	16 16
मीन	12	13 3	8	10 4	मई 2	3 53	25	15 8	19	7 46	13	5 7	6	19 23
मेष	14	17 50	10	11 56	4	7 13	27	19 23	21	9 6	15	5 45	8	22 40
वृष	17	1 58	12	17 0	6	11 58	30	1 45	23	13 36	17	7 53	11	2 34
मिथुन	19	12 39	15	1 54	8	19 16	जुला. 2	10 13	25	21 46	19	13 17	13	8 2
कर्क	22	0 53	17	13 51	11	5 44	4	20 51	28	8 57	21	22 42	15	16 11
सिंह	24	13 45	20	2 46	13	18 22	7	9 20	30	21 45	24	11 6	18	3 21
कन्या	27	2 11	22	14 38	16	6 41	9	22 21	सितं. 2	10 43	27	0 0	20	16 15
तुला	29	12 42	25	0 22	18	16 13	12	9 40	4	22 35	29	11 10	23	4 14
वृश्चिक	31	19 48	27	7 47	20	22 16	14	17 20	7	8 16	31	19 50	25	13 4
धनु	फर. 2	23 5	29	13 6	23	1 41	16	20 59	9	14 53	नवं. 3	2 22	27	18 18
मकर	4	23 28	31	16 35	25	3 57	18	21 47	11	18 14	5	7 18	29	21 1
कुम्भ	6	22 44	अप्रै. 2	18 41	27	6 22	20	21 36	13	19 1	7	10 56	31	22 46
मीन	8	22 56	4	20 10	29	9 37	22	22 18	15	18 39	9	13 27		

चन्द्रमा का राशि चार

(सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है)

राशि	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.
							सन् 1971							
मेष	दिसं. 26	18 20	फर. 1	10 10	मार्च 28	5 18	मई 22	1 19	जुला. 15	13 35	सितं. 8	3 35	नवं. 2	1 9
वृष	28	20 17	3	14 20	30	6 10	24	2 38	17	16 55	10	4 50	4	0 29
मिथुन	30	22 26	5	21 16	अप्रै. 1	10 24	26	5 28	19	21 42	12	9 1	6	1 37
कर्क			8	6 46	3	18 48	28	11 29	22	4 31	14	16 37	8	6 23
सिंह			10	18 17	6	6 30	30	21 17	24	13 50	17	3 0	10	15 21
कन्या			13	7 2	8	19 30	जून 2	9 41	27	1 29	19	15 5	13	3 21
तुला			15	19 47	11	7 58	4	22 9	29	14 11	22	3 49	15	16 10
वृश्चिक			18	6 47	13	18 56	7	8 35	अग. 1	1 43	24	16 14	18	4 8
धनु			20	14 29	16	3 59	9	16 24	3	10 13	27	2 58	20	14 36
मकर			22	18 21	18	10 42	11	22 4	5	15 9	29	10 33	22	23 18
कुम्भ			24	19 11	20	14 39	14	2 17	7	17 21	अक्तू. 1	14 19	25	5 47
मीन	जन. 3	0 52	26	18 38	22	16 6	16	5 32	9	18 18	3	14 52	27	9 37
मेष	5	4 8	28	18 40	24	16 9	18	8 9	11	19 32	5	13 56	29	11 5
वृष	7	8 54	मार्च 2	21 5	26	16 38	20	10 46	13	22 19	7	13 41	दिसं. 1	11 23
मिथुन	9	15 28	5	3 2	28	19 37	22	14 28	16	3 26	9	16 10	3	12 23
कर्क	12	0 12	7	12 31	मई 1	2 33	24	20 31	18	11 2	11	22 37	5	16 2
सिंह	14	11 18	10	0 26	3	13 22	27	5 44	20	20 56	14	8 45	7	23 34
कन्या	17	0 4	12	13 19	6	2 13	29	17 38	23	8 41	16	21 3	10	10 39
तुला	19	12 38	15	1 56	8	14 37	जुला. 2	6 14	25	21 26	19	9 50	12	23 21
वृश्चिक	21	22 37	17	13 15	11	1 9	4	17 3	28	9 36	21	22 3	15	11 19
धनु	24	4 44	19	22 8	13	9 36	7	0 49	30	19 19	24	9 0	17	21 17
मकर	26	7 23	22	3 45	15	16 10	9	5 42	सितं. 2	1 19	26	17 44	20	5 8
कुम्भ	28	8 1	24	6 2	17	20 55	11	8 45	4	3 44	28	23 15	22	11 8
मीन	30	8 25	26	5 57	19	23 48	13	11 4	6	3 52	31	1 23	24	15 28
							सन् 1972							
मेष			फर. 19	5 54	अप्रै. 14	1 11	जून 7	21 7	अग. 1	9 25	सितं. 24	23 26	नवं. 18	20 57
वृष			21	7 59	16	0 21	9	21 29	3	12 4	27	0 3	20	20 23
मिथुन			23	11 49	18	1 14	11	21 37	5	14 43	29	2 0	22	19 35
कर्क	जन. 2	2 14	25	17 44	20	5 25	13	23 26	7	18 5	अक्तू. 1	6 15	24	20 38
सिंह	4	8 58	28	1 43	22	13 19	16	4 30	9	23 4	3	12 52	27	1 1
कन्या	6	19 3	मार्च 1	11 39	25	0 4	18	13 21	12	6 31	5	21 31	29	9 8
तुला	9	7 21	3	23 21	27	12 15	21	1 3	14	16 50	8	8 1	दिसं. 1	20 8
वृश्चिक	11	19 35	6	11 58	30	0 51	23	13 38	17	5 8	10	20 9	4	8 39
धनु	14	5 40	8	23 40	मई 2	13 3	26	1 21	19	17 18	13	9 4	6	21 28
मकर	16	12 54	11	8 24	4	23 41	28	11 14	22	3 6	15	20 47	9	9 33
कुम्भ	18	17 42	13	13 10	7	7 21	30	18 59	24	9 33	18	5 3	11	19 46
मीन	20	21 1	15	14 38	9	11 16	जुला. 3	0 31	26	13 12	20	9 4	14	2 58
मेष	22	23 45	17	14 32	11	11 58	5	3 58	28	15 22	22	9 47	16	6 40
वृष	25	2 36	19	14 56	13	11 10	7	5 51	30	17 27	24	9 12	18	7 32
मिथुन	27	6 9	21	17 32	15	11 3	9	7 12	सितं. 1	20 26	26	9 27	20	7 6
कर्क	29	11 5	23	23 12	17	13 38	11	9 25	4	0 49	28	12 16	22	7 19
सिंह	31	18 7	26	7 42	19	20 5	13	13 56	6	6 47	30	18 20	24	10 3
कन्या	फर. 3	3 44	28	18 16	22	6 8	15	21 44	8	14 40	नवं. 2	3 17	26	16 31
तुला	5	15 36	31	6 9	24	18 19	18	8 40	11	0 49	4	14 16	29	2 40
वृश्चिक	8	4 7	अप्रै. 2	18 46	27	6 56	20	21 9	13	12 59	7	2 34	31	15 7
धनु	10	14 56	5	6 58	29	18 51	23	8 56	16	1 38	9	15 29		
मकर	12	22 29	7	16 58	जून 1	5 18	25	18 28	18	12 18	12	3 44		
कुम्भ	15	2 41	9	23 13	3	13 31	28	1 22	20	19 14	14	13 25		
मीन	17	4 37	12	1 31	5	18 47	30	6 5	22	22 28	16	19 7		

चन्द्रमा का राशि चार

(सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है)

राशि	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.
							सन् 1973							
मेष			फर. 8	19 8	अप्रै. 4	9 43	मई 29	6 9	जुला. 22	21 43	सितं. 15	9 7	नवं. 9	2 54
वृष			10	22 37	6	11 0	31	7 1	25	1 33	17	13 8	11	4 53
मिथुन			13	1 18	8	12 38	जून 2	6 32	27	3 7	19	16 27	13	5 41
कर्क			15	3 43	10	15 42	4	6 38	29	3 30	21	19 25	15	6 58
सिंह			17	6 45	12	20 34	6	9 1	31	4 16	23	22 22	17	9 52
कन्या			19	11 37	15	3 14	8	14 40	अग. 2	7 13	26	2 5	19	14 57
तुला			21	19 30	17	11 48	10	23 38	4	13 44	28	7 47	21	22 19
वृश्चिक			24	6 36	19	22 31	13	11 6	7	0 4	30	16 33	24	7 55
धनु	जन. 3	3 55	26	19 24	22	11 4	15	23 52	9	12 45	अक्तू. 3	4 20	26	19 34
मकर	5	15 34	मार्च 1	7 14	24	23 52	18	12 44	12	1 25	5	17 14	29	8 33
कुम्भ	8	1 18	3	16 7	27	10 27	21	0 21	14	12 17	8	4 28	दिसं. 1	21 10
मीन	10	8 45	5	21 48	29	17 5	23	9 23	16	20 48	10	12 20	4	7 15
मेष	12	13 43	8	1 19	मई 1	19 52	25	14 57	19	3 11	12	16 59	6	13 25
वृष	14	16 25	10	4 1	3	20 21	27	17 14	21	7 45	14	19 45	8	15 54
मिथुन	16	17 34	12	6 52	5	20 30	29	17 20	23	10 45	16	22 2	10	16 3
कर्क	18	18 26	14	10 21	7	22 3	जुला. 1	16 58	25	12 35	19	0 48	12	15 46
सिंह	20	20 39	16	14 41	10	2 4	3	18 1	27	14 11	21	4 28	14	16 52
कन्या	23	1 45	18	20 23	12	8 48	5	22 6	29	17 2	23	9 19	16	20 43
तुला	25	10 34	21	4 16	14	17 58	8	5 59	31	22 40	25	15 51	19	3 52
वृश्चिक	27	22 27	23	14 53	17	5 8	10	17 10	सितं. 3	8 1	28	0 46	21	13 57
धनु	30	11 18	26	3 32	19	17 45	13	6 1	5	20 17	30	12 17	24	2 1
मकर	फर. 1	22 49	28	15 55	22	6 42	15	18 44	8	9 2	नवं. 2	1 17	26	14 59
कुम्भ	4	7 50	31	1 27	24	18 6	18	6 2	10	19 49	4	13 18	29	3 41
मीन	6	14 24	अप्रै. 2	7 7	27	2 7	20	15 10	13	3 40	6	22 3	31	14 40
							सन् 1974							
मेष	जन. 2	22 31	फर. 26	10 44	अप्रै. 22	0 48	जून 15	19 30	अग. 9	10 23	अक्तू. 2	21 56	नवं. 26	14 30
वृष	5	2 39	28	17 9	24	5 30	18	0 28	11	18 8	5	5 41	28	21 4
मिथुन	7	3 38	मार्च 2	21 27	26	8 47	20	2·20	13	22 26	7	11 36	दिसं. 1	0 54
कर्क	9	2 59	4	23 40	28	11 34	22	2 35	15	23 36	9	15 33	3	3 13
सिंह	11	2 38	7	0 31	30	14 26	24	3 1	17	23 0	11	17 44	5	5 16
कन्या	13	4 34	9	1 32	मई 2	17 52	26	5 14	19	22 40	13	19 0	7	8 4
तुला	15	10 14	11	4 39	4	22 34	28	10 17	22	0 47	15	20 51	9	12 13
वृश्चिक	17	19 49	13	11 25	7	5 22	30	18 21	24	6 49	18	1 1	11	18 9
धनु	20	8 4	15	22 6	9	14 56	जुला. 3	4 54	26	16 49	20	8 42	14	2 9
मकर	22	21 9	18	10 57	12	2 55	5	17 3	29	5 12	22	19 46	16	12 25
कुम्भ	25	9 35	20	23 16	14	15 34	8	5 49	31	17 57	25	8 23	19	0 34
मीन	27	20 32	23	9 19	17	2 29	10	17 54	सितं. 3	5 43	27	20 6	21	13 9
मेष	30	5 16	25	16 53	19	10 5	13	3 46	5	15 58	30	5 26	23	23 57
वृष	फर. 1	11 8	27	22 36	21	14 24	15	10 8	8	0 15	नवं. 1	12 17	26	7 18
मिथुन	3	13 56	30	2 58	23	16 33	17	12 51	10	5 56	3	17 15	28	10 59
कर्क	5	14 23	अप्रै. 1	6 13	25	17 58	19	12 59	12	8 45	5	20 56	30	12 7
सिंह	7	13 58	3	8 35	27	19 56	21	12 19	14	9 20	7	23 51		
कन्या	9	14 45	5	10 52	29	23 23	23	12 56	16	9 17	10	2 29		
तुला	11	18 40	7	14 26	जून 1	4 49	25	16 35	18	10 40	12	5 39		
वृश्चिक	14	2 49	9	20 44	3	12 30	28	0 2	20	15 20	14	10 25		
धनु	16	14 33	12	6 31	5	22 28	30	10 42	23	0 6	16	17 49		
मकर	19	3 40	14	18 53	8	10 24	अग. 1	23 7	25	11 59	19	4 12		
कुम्भ	21	15 56	17	7 23	10	23 9	4	11 51	28	0 43	21	16 34		
मीन	24	2 19	19	17 38	13	10 48	6	23 56	30	12 17	24	4 44		

चन्द्रमा का राशि चार

(सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है)

राशि	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.
							सन् 1975							
मेष			फर. 16	14 52	अप्रै. 12	2 45	जून 5	18 12	जुला. 30	10 27	सितं. 22	23 11	नवं. 16	12 13
वृष			19	0 57	14	12 31	8	3 23	अग. 1	21 17	25	11 2	18	23 16
मिथुन			21	7 32	16	20 13	10	9 31	4	4 25	27	20 37	21	8 8
कर्क			23	10 12	19	1 33	12	13 16	6	7 36	30	2 40	23	14 46
सिंह	जन. 1	12 30	25	9 59	21	4 28	14	15 49	8	8 5	अक्तू. 2	5 4	25	19 26
कन्या	3	13 54	27	8 53	23	5 40	16	18 13	10	7 54	4	4 57	27	22 27
तुला	5	17 36	मार्च 1	9 13	25	6 30	18	21 18	12	9 4	6	4 17	30	0 23
वृश्चिक	8	0 3	3	12 53	27	8 39	21	1 35	14	12 54	8	5 10	दिसं. 2	2 12
धनु	10	8 55	5	20 38	29	13 42	23	7 31	16	19 44	10	9 14	4	5 11
मकर	12	19 39	8	7 39	मई 1	22 23	25	15 37	19	5 2	12	17 8	6	10 43
कुम्भ	15	7 46	10	20 11	4	9 59	28	2 8	21	16 6	15	4 10	8	19 39
मीन	17	20 29	13	8 47	6	22 33	30	14 26	24	4 25	17	16 43	11	7 29
मेष	20	8 15	15	20 37	9	9 59	जुला. 3	2 39	26	17 12	20	5 16	13	20 11
वृष	22	17 7	18	6 55	11	19 12	5	12 27	29	4 51	22	16 44	16	7 19
मिथुन	24	21 56	20	14 41	14	2 3	7	18 39	31	13 25	25	2 20	18	15 33
कर्क	26	23 11	22	19 7	16	6 56	9	21 37	सितं. 2	17 50	27	9 21	20	21 6
सिंह	28	22 32	24	20 28	18	10 18	11	22 51	4	18 44	29	13 24	23	0 54
कन्या	30	22 11	26	20 6	20	12 44	14	0 5	6	17 56	31	14 57	25	3 58
तुला	फर. 2	0 8	28	20 1	22	15 0	16	2 41	8	17 41	नवं. 2	15 13	27	6 56
वृश्चिक	4	5 38	30	22 19	24	18 6	18	7 22	10	19 53	4	15 55	29	10 14
धनु	6	14 33	अप्रै. 2	4 25	26	23 11	20	14 10	13	1 37	6	18 50	31	14 21
मकर	9	1 47	4	14 21	29	7 9	22	22 55	15	10 41	9	1 14		
कुम्भ	11	14 9	7	2 39	31	18 2	25	9 34	17	22 2	11	11 18		
मीन	14	2 48	9	15 15	जून 3	6 29	27	21 50	20	10 30	13	23 40		
							सन् 1976							
मेष	दिसं. 29	23 6	फर. 6	12 33	अप्रै. 1	1 54	मई 25	14 28	जुला. 19	5 33	सितं. 11	20 54	नवं. 5	9 45
वृष			9	1 2	3	14 46	28	3 1	21	18 17	14	9 55	7	22 45
मिथुन			11	10 36	6	2 10	30	13 47	24	4 57	16	22 1	10	11 9
कर्क			13	16 2	8	10 28	जून 1	22 15	26	12 17	19	6 57	12	21 48
सिंह			15	17 59	10	14 56	4	4 27	28	16 49	21	11 51	15	5 40
कन्या			17	18 19	12	16 6	6	8 31	30	19 49	23	13 31	17	10 11
तुला			19	19 1	14	15 33	8	10 48	अग. 1	22 28	25	13 42	19	11 40
वृश्चिक			21	21 34	16	15 14	10	12 2	4	1 29	27	14 12	21	11 21
धनु			24	2 38	18	17 3	12	13 26	6	5 9	29	16 32	23	11 5
मकर	जन. 2	20 8	26	10 4	20	22 18	14	16 36	8	9 53	अक्तू. 1	21 32	25	12 50
कुम्भ	5	4 31	28	19 33	23	7 16	16	23 0	10	16 26	4	5 19	27	18 14
मीन	7	15 47	मार्च 2	6 52	25	19 1	19	9 7	13	1 37	6	15 31	30	3 42
मेष	10	4 35	4	19 37	28	7 58	21	21 42	15	13 28	9	3 35	दिसं. 2	16 2
वृष	12	16 19	7	8 30	30	20 39	24	10 17	18	2 23	11	16 36	5	5 5
मिथुन	15	0 49	9	19 17	मई 3	7 54	26	20 45	20	13 43	14	5 7	7	17 8
कर्क	17	5 43	12	2 9	5	16 46	29	4 28	22	21 30	16	15 15	10	3 25
सिंह	19	8 11	14	4 57	7	22 39	जुला. 1	9 57	25	1 40	18	21 42	12	11 37
कन्या	21	9 54	16	5 2	10	1 31	3	13 59	27	3 34	21	0 24	14	17 27
तुला	23	12 16	18	4 27	12	2 12	5	17 7	29	4 53	23	0 34	16	20 47
वृश्चिक	25	16 0	20	5 13	14	2 9	7	19 43	31	6 59	25	0 0	18	21 59
धनु	27	21 13	22	8 45	16	3 9	9	22 19	सितं. 2	10 38	27	0 37	20	22 15
मकर	30	4 1	24	15 36	18	6 54	12	1 59	4	16 4	29	4 3	22	23 25
कुम्भ	फर. 1	12 44	27	1 19	20	14 28	14	8 2	6	23 28	31	11 4	25	3 23
मीन	3	23 46	29	13 3	23	1 33	16	17 23	9	9 5	नवं. 2	21 23	2[illegible]	20 26

चन्द्रमा का राशि चार

(सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है)

सन् 1977

राशि	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.
मेष			फर. 22	15 44	अप्रै. 18	6 39	जून 11	18 28	अग. 5	9 9	सितं. 29	2 26	नवं. 22	16 1
वृष	जन. 1	12 9	25	4 12	20	19 1	14	7 12	7	20 55	अक्तू. 1	13 9	25	3 23
मिथुन	4	0 5	27	16 45	23	7 54	16	20 0	10	9 38	4	1 36	27	15 47
कर्क	6	9 44	मार्च 2	2 52	25	19 40	19	7 44	12	20 59	6	13 47	30	4 25
सिंह	8	17 11	4	9 29	28	4 36	21	17 47	15	5 59	8	23 31	दिसं. 2	16 4
कन्या	10	22 55	6	13 12	30	9 45	24	1 29	17	12 46	11	5 46	5	1 2
तुला	13	3 11	8	15 23	मई 2	11 30	26	6 15	19	17 51	13	8 57	7	6 9
वृश्चिक	15	6 1	10	17 22	4	11 17	28	8 6	21	21 35	15	10 24	9	7 35
धनु	17	7 50	12	20 5	6	10 58	30	8 4	24	0 13	17	11 39	11	6 51
मकर	19	9 47	15	0 6	8	12 27	जुला. 2	7 57	26	2 22	19	14 2	13	6 7
कुम्भ	21	13 29	17	5 47	10	17 10	4	9 50	28	5 8	21	18 23	15	7 34
मीन	23	20 29	19	13 34	13	1 28	6	15 28	30	9 57	24	1 1	17	12 44
मेष	26	7 11	21	23 46	15	12 36	9	1 12	सितं. 1	17 54	26	9 53	19	21 45
वृष	28	20 1	24	12 2	18	1 13	11	13 38	4	4 58	28	20 45	22	9 22
मिथुन	31	8 11	27	0 50	20	14 4	14	2 24	6	17 34	31	9 6	24	21 58
कर्क	फर. 2	17 42	29	11 53	23	2 3	16	13 49	9	5 13	नवं. 2	21 41	27	10 27
सिंह	5	0 20	31	19 27	25	11 57	18	23 21	11	14 13	5	8 32	29	22 6
कन्या	7	4 56	अप्रै. 2	23 22	27	18 40	21	6 57	13	20 18	7	15 57		
तुला	9	8 32	5	0 43	29	21 51	23	12 30	16	0 16	9	19 32		
वृश्चिक	11	11 42	7	1 10	31	22 13	25	15 49	18	3 6	11	20 17		
धनु	13	14 44	9	2 21	जून 2	21 25	27	17 15	20	5 40	13	20 1		
मकर	15	18 4	11	5 33	4	21 33	29	18 1	22	8 38	15	20 44		
कुम्भ	17	22 39	13	11 23	7	0 35	31	19 51	24	12 37	18	0 1		
मीन	20	5 38	15	19 53	9	7 41	अग. 3	0 34	26	18 20	20	6 35		

सन् 1978

राशि	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.
मेष			फर. 12	13 12	अप्रै. 8	7 57	जून 1	21 7	जुला. 26	9 24	सितं. 19	3 49	नवं. 12	21 30
वृष			14	23 5	10	16 28	4	6 47	28	18 23	21	10 17	15	4 14
मिथुन			17	11 23	13	3 33	6	18 5	31	5 59	23	20 13	17	13 12
कर्क			19	23 50	15	16 2	9	6 34	अग. 2	18 38	26	8 30	20	0 39
सिंह			22	10 46	18	3 44	11	19 12	5	7 7	28	20 54	22	13 27
कन्या	जन. 1	7 57	24	19 37	20	12 37	14	6 10	7	18 29	अक्तू. 1	7 32	25	1 11
तुला	3	14 47	27	2 26	22	18 4	16	13 37	10	3 46	3	15 35	27	9 34
वृश्चिक	5	17 59	मार्च 1	7 23	24	20 49	18	16 57	12	10 1	5	21 19	29	14 3
धनु	7	18 16	3	10 38	26	22 20	20	17 13	14	12 59	8	1 22	दिसं. 1	15 45
मकर	9	17 23	5	12 40	29	0 7	22	16 25	16	13 30	10	4 21	3	16 33
कुम्भ	11	17 37	7	14 28	मई 1	3 16	24	16 44	18	13 14	12	6 52	5	18 13
मीन	13	21 0	9	17 24	3	8 18	26	19 56	20	14 9	14	9 36	7	21 48
मेष	16	4 33	11	22 53	5	15 18	29	2 40	22	17 59	16	13 29	10	3 33
वृष	18	15 38	14	7 41	8	0 18	जुला. 1	12 26	25	1 36	18	19 36	12	11 14
मिथुन	21	4 18	16	19 18	10	11 18	4	0 6	27	12 33	21	4 43	14	20 44
कर्क	23	16 42	19	7 49	12	23 44	6	12 40	30	1 8	23	16 32	17	8 9
सिंह	26	3 54	21	18 57	15	12 2	9	1 19	सितं. 1	13 29	26	5 10	19	20 59
कन्या	28	13 30	24	3 25	17	21 57	11	12 50	4	0 22	28	16 6	22	9 29
तुला	30	20 59	26	9 14	20	4 2	13	21 35	6	9 14	30	23 51	24	19 12
वृश्चिक	फर. 2	1 45	28	13 8	22	6 31	16	2 29	8	15 46	नवं. 2	4 32	27	0 41
धनु	4	3 51	30	16 1	24	6 53	18	3 48	10	19 55	4	7 22	29	2 25
मकर	6	4 14	अप्रै. 1	18 40	26	7 8	20	3 6	12	22 4	6	9 43	31	2 11
कुम्भ	8	4 41	3	21 45	28	9 3	22	2 32	14	23 8	8	12 34		
[illegible]	10	7 10	6	1 56	30	13 41	24	4 10	17	0 32	10	16 25		

चन्द्रमा का राशि चार

(सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है)

राशि	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.
							सन् 1979							
मेष	दिसं. 27	20 33	फर. 2	16 7	मार्च 29	12 15	मई 23	5 39	जुला. 16	16 55	सितं. 9	9 4	नवं. 3	6 13
वृष	30	0 43	4	22 51	31	16 5	25	10 25	18	22 39	11	12 1	5	8 0
मिथुन			7	8 51	अप्रै. 2	23 31	27	17 14	21	6 50	13	18 43	7	12 14
कर्क			9	20 54	5	10 30	30	2 54	23	17 14	16	5 4	9	20 14
सिंह			12	9 45	7	23 19	जून 1	15 6	26	5 27	18	17 40	12	7 48
कन्या			14	22 17	10	11 35	4	3 52	28	18 33	21	6 42	14	20 48
तुला			17	9 21	12	21 39	6	14 29	31	6 43	23	18 45	17	8 32
वृश्चिक			19	17 42	15	5 11	8	21 26	अग. 2	15 52	26	4 56	19	17 35
धनु			21	22 37	17	10 38	11	1 6	4	21 0	28	12 37	22	0 6
मकर			24	0 20	19	14 34	13	2 59	6	22 39	30	17 23	24	4 56
कुम्भ	जन. 2	2 8	26	0 11	21	17 23	15	4 41	8	22 25	अक्तू. 2	19 26	26	8 47
मीन	4	4 6	27	23 58	23	19 36	17	7 20	10	22 14	4	19 43	28	11 54
मेष	6	9 2	मार्च 2	1 37	25	22 0	19	11 26	12	23 52	6	19 48	30	14 34
वृष	8	16 54	4	6 36	28	1 52	21	17 8	15	4 29	8	21 34	दिसं. 2	17 29
मिथुन	11	3 2	6	15 26	30	8 31	24	0 43	17	12 25	11	2 44	4	21 57
कर्क	13	14 48	9	3 15	मई 2	18 36	26	10 34	19	23 8	13	11 58	7	5 20
सिंह	16	3 35	11	16 11	5	7 7	28	22 40	22	11 37	16	0 16	9	16 7
कन्या	18	16 19	14	4 28	7	19 35	जुला. 1	11 40	25	0 41	18	13 17	12	4 57
तुला	21	3 10	16	15 2	10	5 39	3	23 8	27	13 1	21	1 1	14	17 6
वृश्चिक	23	10 21	18	23 23	12	12 31	6	7 0	29	23 8	23	10 36	17	2 19
धनु	25	13 27	21	5 13	14	16 54	8	10 55	सितं. 1	5 50	25	18 4	19	8 13
मकर	27	13 35	23	8 37	16	20 2	10	12 7	3	8 56	27	23 34	21	11 49
कुम्भ	29	12 44	25	10 7	18	22 53	12	12 27	5	9 22	30	3 10	23	14 30
मीन	31	13 1	27	10 49	21	1 59	14	13 40	7	8 47	नवं. 1	5 6	25	17 15
							सन् 1980							
मेष			फर. 20	9 27	अप्रै. 15	6 30	जून 9	0 20	अग. 2	11 38	सितं. 26	4 15	नवं. 20	2 8
वृष			22	12 13	17	6 37	11	2 9	4	14 34	28	4 17	22	1 45
मिथुन	जन. 1	6 16	24	18 7	19	9 20	13	4 52	6	19 11	30	6 58	24	2 9
कर्क	3	14 0	27	3 8	21	16 6	15	10 3	9	1 54	अक्तू. 2	13 21	26	5 25
सिंह	6	0 28	29	14 29	24	2 47	17	18 43	11	10 55	4	23 8	28	12 46
कन्या	8	13 4	मार्च 3	3 7	26	15 36	20	6 26	13	22 9	7	11 3	30	23 48
तुला	11	1 42	5	15 57	29	4 16	22	19 6	16	10 46	9	23 46	दिसं. 3	12 32
वृश्चिक	13	11 50	8	3 39	मई 1	15 27	25	6 14	18	23 0	12	12 18	6	0 47
धनु	15	18 11	10	12 46	4	0 44	27	14 35	21	8 48	14	23 41	8	11 24
मकर	17	21 16	12	18 17	6	8 1	29	20 19	23	14 56	17	8 39	10	20 12
कुम्भ	19	22 34	14	20 19	8	13 2	जुला. 2	0 20	25	17 42	19	14 5	13	3 6
मीन	21	23 43	16	20 5	10	15 40	4	3 24	27	18 23	21	15 56	15	7 52
मेष	24	2 2	18	19 26	12	16 33	6	6 9	29	18 43	23	15 24	17	10 31
वृष	26	6 14	20	20 25	14	17 6	8	9 5	31	20 25	25	14 32	19	11 42
मिथुन	28	12 37	23	0 43	16	19 15	10	12 56	सितं. 3	0 37	27	15 35	21	12 53
कर्क	30	21 14	25	8 58	19	0 45	12	18 42	5	7 44	29	20 19	23	15 48
सिंह	फर. 2	8 1	27	20 24	21	10 17	15	3 13	7	17 25	नवं. 1	5 12	25	21 58
कन्या	4	20 31	30	9 16	23	22 39	17	14 29	10	4 58	3	17 3	28	7 50
तुला	7	9 23	अप्रै. 1	21 59	26	11 19	20	3 8	12	17 36	6	5 51	30	20 8
वृश्चिक	9	20 34	4	9 33	28	22 16	22	14 47	15	6 10	8	18 10		
धनु	12	4 17	6	19 12	31	6 54	24	23 33	17	17 3	11	5 19		
मकर	14	8 9	9	2 9	जून 2	13 32	27	5 1	20	0 38	13	14 42		
कुम्भ	16	9 8	11	5 56	4	18 31	29	7 59	22	4 21	15	21 32		
मीन	18	8 57	13	6 56	6	22 3	31	9 46	24	4 58	18	1 13		20

चन्द्रमा का राशि चार
(सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है)

राशि	तारीख	समय घं मि	तारीख	समय घं मि	तारीख	समय घं मि	तारीख	समय घं मि	तारीख	समय घं मि	तारीख	समय घं मि	तारीख	समय घं मि
							सन् 1981							
मेष			फर. 9	21 57	अप्रै. 5	15 28	मई 30	12 20	जुला. 24	1 55	सितं. 16	14 29	नवं. 10	11 0
वृष			12	0 27	7	14 59	जून 1	12 12	26	4 30	18	15 52	12	10 27
मिथुन			14	4 1	9	16 11	3	11 48	28	6 30	20	18 12	14	9 49
कर्क			16	9 6	11	20 29	5	13 15	30	8 55	22	22 17	16	11 8
सिंह			18	16 3	14	4 10	7	18 7	अग. 1	12 58	25	4 14	18	15 42
कन्या			21	1 12	16	14 27	10	2 52	3	19 47	27	12 1	20	23 43
तुला			23	12 31	19	2 16	12	14 29	6	5 45	29	21 47	23	10 22
वृश्चिक	जन. 2	8 30	26	1 4	21	14 48	15	3 7	8	17 56	अक्तू. 2	9 33	25	22 33
धनु	4	19 0	28	12 50	24	3 14	17	15 11	11	6 11	4	22 23	28	11 24
मकर	7	3 2	मार्च 2	21 41	26	14 13	20	1 50	13	16 24	7	10 9	30	23 55
कुम्भ	9	8 55	5	2 48	28	22 2	22	10 27	15	23 39	9	18 33	दिसं. 3	10 38
मीन	11	13 13	7	4 52	मई 1	1 52	24	16 36	18	4 19	11	22 50	5	18 1
मेष	13	16 25	9	5 30	3	2 24	26	20 5	20	7 25	13	23 58	7	21 30
वृष	15	19 0	11	6 32	5	1 27	28	21 28	22	10 0	15	23 55	9	21 55
मिथुन	17	21 41	13	9 24	7	1 17	30	22 2	24	12 50	18	0 42	11	21 5
कर्क	20	1 31	15	14 49	9	3 53	जुला. 2	23 27	26	16 30	20	3 48	13	21 6
सिंह	22	7 36	17	22 38	11	10 19	5	3 24	28	21 29	22	9 44	15	23 50
कन्या	24	16 41	20	8 27	13	20 13	7	10 54	31	4 29	24	18 9	18	6 21
तुला	27	4 22	22	19 52	16	8 12	9	21 41	सितं. 2	14 3	27	4 29	20	16 25
वृश्चिक	29	16 53	25	8 23	18	20 48	12	10 10	5	1 57	29	16 22	23	4 42
धनु	फर. 1	3 53	27	20 42	21	9 5	14	22 13	7	14 32	नवं. 1	5 16	25	17 34
मकर	3	11 52	30	6 49	23	20 9	17	8 25	10	1 21	3	17 43	28	5 44
कुम्भ	5	16 51	अप्रै. 1	13 7	26	4 53	19	16 18	12	8 43	6	3 33	30	16 19
मीन	7	19 47	3	15 32	28	10 17	21	22 1	14	12 41	8	9 14		
							सन् 1982							
मेष	दिसं. 25	12 44	जन. 31	11 24	मार्च 27	0 25	मई 20	20 13	जुला. 14	13 14	सितं. 7	0 35	अक्तू. 31	16 36
वृष	27	16 42	फर. 2	15 2	29	2 34	22	21 12	16	16 55	9	5 23	नवं. 2	19 17
मिथुन	29	17 33	4	17 13	31	4 50	24	20 56	18	18 1	11	8 57	4	20 54
कर्क	31	16 58	6	18 45	अप्रै. 2	8 3	26	21 23	20	17 54	13	11 35	6	22 54
सिंह			8	20 51	4	12 28	29	0 3	22	18 17	15	13 45	9	2 5
कन्या			11	1 1	6	18 16	31	5 43	24	21 0	17	16 31	11	6 49
तुला			13	8 28	9	1 54	जून 2	14 19	27	3 23	19	21 23	13	13 20
वृश्चिक			15	19 22	11	11 56	5	1 14	29	13 32	22	5 35	15	22 0
धनु			18	8 9	14	0 11	7	13 42	अग. 1	2 6	24	17 5	18	9 1
मकर			20	20 14	16	13 1	10	2 42	3	14 58	27	5 59	20	21 50
कुम्भ			23	5 46	18	23 47	12	14 44	6	2 29	29	17 31	23	10 33
मीन	जन. 2	0 27	25	12 26	21	6 42	15	0 5	8	11 54	अक्तू. 2	1 59	25	20 44
मेष	4	5 36	27	17 0	23	9 55	17	5 41	10	19 3	4	7 32	28	2 59
वृष	6	7 53	मार्च 1	20 26	25	10 57	19	7 45	12	23 54	6	11 15	30	5 39
मिथुन	8	8 18	3	23 27	27	11 43	21	7 37	15	2 37	8	14 18	दिसं. 2	6 13
कर्क	10	8 27	6	2 26	29	13 44	23	7 10	17	3 47	10	17 21	4	6 32
सिंह	12	10 9	8	5 51	मई 1	17 51	25	8 17	19	4 39	12	20 39	6	8 11
कन्या	14	15 1	10	10 34	4	0 11	27	12 26	21	6 50	15	0 39	8	12 14
तुला	16	23 43	12	17 39	6	8 37	29	20 12	23	12 2	17	6 9	10	19 4
वृश्चिक	19	11 32	15	3 48	8	19 4	जुला. 2	7 6	25	21 5	19	14 13	13	4 27
धनु	22	0 26	17	16 18	11	7 20	4	19 45	28	9 12	22	1 15	15	15 54
मकर	24	12 23	20	4 46	13	20 20	7	8 40	30	22 5	24	14 8	18	4 42
कुम्भ	26	22 17	22	14 39	16	7 58	9	20 34	सितं. 2	9 23	27	2 16	20	17 37
मीन	29	5 54	24	20 5[illegible]	18	16 8	12	6 22	4	18 8	29	11 16	23	4 51

चन्द्रमा का राशि चार

(सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है)

राशि	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.
							सन् 1983							
मेष			फर. 18	2 8	अप्रै. 13	14 55	जून 7	8 58	अग. 1	0 58	सितं. 24	12 32	नवं. 18	3 38
वृष			20	9 1	15	20 33	9	14 13	3	8 49	26	21 8	20	10 52
मिथुन			22	13 15	18	0 45	11	16 35	5	13 1	29	3 39	22	15 41
कर्क			24	14 57	20	4 6	13	17 29	7	14 0	अक्तू. 1	7 41	24	19 2
सिंह	जन. 2	16 53	26	15 7	22	6 55	15	18 33	9	13 17	3	9 24	26	21 46
कन्या	4	19 7	28	15 29	24	9 42	17	21 5	11	12 58	5	9 54	29	0 35
तुला	7	0 51	मार्च 2	18 7	26	13 21	20	1 56	13	15 7	7	10 55	दिसं. 1	4 5
वृश्चिक	9	10 10	5	0 36	28	19 9	22	9 20	15	21 4	9	14 26	3	8 58
धनु	11	22 0	7	11 9	मई 1	4 1	24	19 6	18	6 51	11	21 45	5	15 57
मकर	14	10 57	10	0 1	3	15 44	27	6 45	20	19 1	14	8 41	8	1 35
कुम्भ	16	23 44	12	12 37	6	4 27	29	19 27	23	7 48	16	21 19	10	13 30
मीन	19	11 15	14	23 19	8	15 35	जुला. 2	7 43	25	20 0	19	9 18	13	2 4
मेष	21	20 21	17	7 49	10	23 36	4	17 42	28	6 52	21	19 16	15	12 56
वृष	24	2 10	19	14 26	13	4 35	7	0 7	30	15 37	24	3 4	17	20 33
मिथुन	26	4 37	21	19 21	15	7 35	9	2 55	सितं. 1	21 23	26	9 2	20	0 47
कर्क	28	4 37	23	22 32	17	9 50	11	3 16	3	23 55	28	13 24	22	2 46
सिंह	30	3 55	26	0 19	19	12 17	13	2 59	6	0 2	30	16 22	24	4 1
कन्या	फर. 1	4 34	28	1 42	21	15 37	15	3 57	7	23 31	नवं. 1	18 25	26	6 0
तुला	3	8 28	30	4 21	23	20 21	17	7 42	10	0 31	3	20 35	28	9 42
वृश्चिक	5	16 32	अप्रै. 1	9 56	26	3 2	19	14 53	12	4 57	6	0 19	30	15 32
धनु	8	4 7	3	19 21	28	12 9	22	1 3	14	13 34	8	6 58		
मकर	10	17 11	6	7 38	30	23 38	24	13 4	17	1 21	10	16 59		
कुम्भ	13	5 49	8	20 18	जून 2	12 20	27	1 47	19	14 9	13	5 18		
मीन	15	16 56	11	7 0	5	0 7	29	14 10	22	2 8	15	17 33		
							सन् 1984							
मेष	दिसं. 31	17 16	फर. 8	5 0	अप्रै. 2	16 52	मई 27	7 16	जुला. 20	23 40	सितं. 13	13 11	नवं. 7	1 38
वृष			10	15 14	5	3 24	29	16 59	23	10 36	16	1 24	9	13 15
मिथुन			12	21 48	7	11 51	जून 1	0 2	25	18 0	18	11 17	11	23 3
कर्क			15	0 21	9	17 32	3	4 50	27	21 38	20	17 23	14	6 36
सिंह			17	0 5	11	20 15	5	8 11	29	22 44	22	19 34	16	11 42
कन्या			18	23 4	13	20 49	7	10 50	31	23 11	24	19 13	18	14 28
तुला			20	23 34	15	20 52	9	13 30	अग. 3	0 47	26	18 25	20	15 40
वृश्चिक			23	3 22	17	22 22	11	16 52	5	4 40	28	19 17	22	16 36
धनु	जन. 1	23 29	25	11 4	20	3 0	13	21 48	7	11 5	30	23 26	24	18 50
मकर	4	9 27	27	21 49	22	11 31	16	5 6	9	19 41	अक्तू. 3	7 17	26	23 54
कुम्भ	6	21 13	मार्च 1	10 7	24	23 5	18	15 10	12	6 7	5	18 .7	29	8 36
मीन	9	9 54	3	22 46	27	11 44	21	3 19	14	18 6	8	6 29	दिसं. 1	20 20
मेष	11	21 44	6	11 0	29	23 33	23	15 34	17	6 53	10	19 10	4	9 4
वृष	14	6 36	8	21 49	मई 2	9 30	26	1 40	19	18 41	13	7 11	6	20 35
मिथुन	16	11 32	11	5 52	4	17 21	28	8 27	22	3 22	15	17 29	9	5 41
कर्क	18	13 6	13	10 13	6	23 5	30	12 17	24	7 52	18	0 53	11	12 20
सिंह	20	12 57	15	11 11	9	2 48	जुला. 2	14 25	26	8 55	20	4 50	13	17 6
कन्या	22	13 9	17	10 22	11	4 54	4	16 17	28	8 23	22	5 53	15	20 35
तुला	24	15 30	19	9 57	13	6 20	6	19 2	30	8 26	24	5 32	17	23 16
वृश्चिक	26	20 57	21	12 4	15	8 28	8	23 16	सितं. 1	10 53	26	5 45	20	1 44
धनु	29	5 25	23	18 6	17	12 44	11	5 12	3	16 37	28	8 24	22	4 50
मकर	31	16 3	26	4 0	19	20 13	13	13 4	6	1 21	30	14 43	24	9 44
कुम्भ	फर. 3	4 1	28	16 14	22	6 54	15	23 6	8	12 14	नवं. 2	0 41	20	17 33
मीन	5	16 41	31	4 55	24	19 20	18	11 4	11	0 25	4	12 57	[illegible]	4 32

चन्द्रमा का राशि चार

(सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है)

राशि	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.
							सन् 1985							
मेष			फर. 24	9 1	अप्रै. 19	21 47	जून 13	10 46	अग. 7	2 20	सितं. 30	17 17	नवं. 24	5 44
वृष	जन. 3	5 9	26	21 57	22	10 43	15	23 34	9	15 14	अक्तू. 3	6 11	26	18 46
मिथुन	5	14 9	मार्च 1	8 53	24	22 32	18	10 40	12	2 46	5	18 53	29	7 16
कर्क	7	19 55	3	15 53	27	7 56	20	19 21	14	11 1	8	5 12	दिसं. 1	18 17
सिंह	9	23 25	5	18 49	29	13 56	23	1 47	16	15 54	10	11 40	4	3 5
कन्या	12	2 1	7	19 11	मई 1	16 31	25	6 22	18	18 38	12	14 21	6	9 3
तुला	14	4 47	9	19 2	3	16 44	27	9 28	20	20 44	14	14 38	8	12 1
वृश्चिक	16	8 17	11	20 15	5	16 16	29	11 30	22	23 17	16	14 23	10	12 37
धनु	18	12 43	14	0 4	7	17 3	जुला. 1	13 16	25	2 51	18	15 25	12	12 21
मकर	20	18 31	16	6 46	9	20 43	3	16 4	27	7 40	20	19 5	14	13 7
कुम्भ	23	2 22	18	15 58	12	4 12	5	21 26	29	14 8	23	1 57	16	16 53
मीन	25	12 53	21	3 7	14	15 9	8	6 21	31	22 52	25	11 46	19	0 47
मेष	28	1 28	23	15 41	17	3 58	10	18 21	सितं. 3	10 9	27	23 39	21	12 19
वृष	30	13 59	26	4 43	19	16 47	13	7 10	5	23 4	30	12 35	24	1 23
मिथुन	फर. 1	23 45	28	16 27	22	4 15	15	18 17	8	11 17	नवं. 2	1 20	26	13 43
कर्क	4	5 36	31	0 56	24	13 35	18	2 25	10	20 24	4	12 26	29	0 9
सिंह	6	8 12	अप्रै. 2	5 19	26	20 22	20	7 55	13	1 34	6	20 26	31	8 34
कन्या	8	9 18	4	6 18	29	0 28	22	11 48	15	3 42	9	0 45		
तुला	10	10 41	6	5 40	31	2 17	24	14 59	17	4 29	11	1 54		
वृश्चिक	12	13 37	8	5 27	जून 2	2 49	26	17 56	19	5 37	13	1 22		
धनु	14	18 30	10	7 27	4	3 34	28	20 59	21	8 20	15	1 5		
मकर	17	1 17	12	12 49	6	6 14	31	0 47	23	13 13	17	2 57		
कुम्भ	19	9 53	14	21 37	8	12 20	अग. 2	6 23	25	20 23	19	8 24		
मीन	21	20 32	17	9 1	10	22 15	4	14 51	28	5 48	21	17 41		
							सन् 1986							
मेष			फर. 14	4 34	अप्रै. 9	20 36	जून 3	8 36	जुला. 27	22 19	सितं. 20	15 53	नवं. 14	6 41
वृष			16	16 54	12	8 31	5	21 5	30	10 0	23	2 7	16	17 22
मिथुन			19	5 34	14	21 24	8	9 58	अग. 1	22 49	25	14 27	19	5 28
कर्क			21	15 59	17	9 20	10	22 10	4	10 35	28	2 41	21	18 10
सिंह			23	23 11	19	18 21	13	8 44	6	20 19	30	12 39	24	5 58
कन्या	जन. 2	15 1	26	3 45	21	23 34	15	16 44	9	4 3	अक्तू. 2	19 23	26	14 57
तुला	4	19 26	28	6 53	24	1 30	17	21 25	11	9 57	4	23 22	28	20 2
वृश्चिक	6	21 51	मार्च 2	9 38	26	1 40	19	22 57	13	14 2	7	1 45	30	21 31
धनु	8	22 53	4	12 36	28	1 50	21	22 32	15	16 25	9	3 46	दिसं. 2	21 1
मकर	10	23 59	6	16 11	30	3 43	23	22 6	17	17 49	11	6 25	4	20 38
कुम्भ	13	2 58	8	20 56	मई 2	8 28	25	23 47	19	19 39	13	10 23	6	22 24
मीन	15	9 30	11	3 40	4	16 21	28	5 15	21	23 35	15	16 7	9	3 37
मेष	17	19 59	13	13 5	7	2 52	30	14 50	24	6 57	18	0 0	11	12 21
वृष	20	8 49	16	1 2	9	15 6	जुला. 3	3 10	26	17 47	20	10 12	13	23 32
मिथुन	22	21 15	18	13 51	12	3 58	5	16 4	29	6 23	22	22 19	16	11 52
कर्क	25	7 21	21	1 3	14	16 15	8	3 59	31	18 17	25	10 54	19	0 29
सिंह	27	14 54	23	8 51	17	2 23	10	14 16	सितं. 3	3 48	27	21 49	21	12 32
कन्या	29	20 31	25	13 10	19	9 7	12	22 35	5	10 45	30	5 21	23	22 42
तुला	फर. 1	0 53	27	15 11	21	12 10	15	4 27	7	15 43	नवं. 1	9 16	26	5 33
वृश्चिक	3	4 17	29	16 24	23	12 27	17	7 36	9	19 23	3	10 35	28	8 31
धनु	5	6 53	31	18 14	25	11 43	19	8 31	11	22 17	5	11 2	30	8 30
मकर	7	9 20	अप्रै. 2	21 35	27	11 59	21	8 35	14	0 55	7	12 20		
कुम्भ	9	12 52	5	3 0	29	15 8	23	9 46	16	4 1	9	15 48		
मीन	11	18 59	7	10 39	31	22 7	25	14 0	18	8 39	11	21 59		

चन्द्रमा का राशि चार

(सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है)

राशि	तारीख	समय घं मि.	तारीख	समय घं मि.	तारीख	समय घं मि.	तारीख	समय घं मि.	तारीख	समय घं मि.	तारीख	समय घं मि.	तारीख	समय घं मि.
							सन् 1987							
मेष	दिसं. 29	0 39	फर. 4	2 30	मार्च 30	21 45	मई 24	12 20	जुला. 17	23 53	सितं. 10	17 22	नवं. 4	12 24
वृष	31	8 4	6	12 19	अप्रै. 2	5 37	26	21 12	20	8 43	12	23 32	6	18 10
मिथुन			9	0 37	4	16 24	29	7 55	22	20 3	15	9 20	9	2 27
कर्क			11	13 12	7	4 50	31	20 8	25	8 33	17	21 33	11	13 33
सिंह			14	0 38	9	16 39	जून 3	8 47	27	21 13	20	10 7	14	2 15
कन्या			16	10 19	12	1 56	5	19 52	30	9 6	22	21 17	16	14 4
तुला			18	18 6	14	8 7	8	3 26	अग. 1	18 54	25	6 18	18	22 49
वृश्चिक			20	23 40	16	11 50	10	6 58	4	1 19	27	13 4	21	3 58
धनु			23	2 55	18	14 16	12	7 33	6	4 4	29	17 47	23	6 34
मकर	जन. 1	7 25	25	4 21	20	16 35	14	7 9	8	4 10	अक्तू. 1	20 47	25	8 14
कुम्भ	3	7 35	27	5 14	22	19 38	16	7 51	10	3 28	3	22 42	27	10 27
मीन	5	10 59	मार्च 1	7 16	24	23 57	18	11 13	12	4 5	6	0 30	29	14 3
मेष	7	18 31	3	12 6	27	5 58	20	17 47	14	7 46	8	3 28	दिसं. 1	19 13
वृष	10	5 28	5	20 36	29	14 6	23	3 5	16	15 19	10	8 54	4	1 59
मिथुन	12	18 0	8	8 9	मई 2	0 34	25	14 15	19	2 10	12	17 40	6	10 38
कर्क	15	6 34	10	20 44	4	12 50	28	2 35	21	14 41	15	5 19	8	21 31
सिंह	17	18 19	13	8 10	7	1 8	30	15 20	24	3 15	17	17 57	11	10 10
कन्या	20	4 38	15	17 20	9	11 12	जुला. 3	3 8	26	14 46	20	5 12	13	22 42
तुला	22	12 36	18	0 10	11	17 39	5	12 4	29	0 29	22	13 41	16	8 32
वृश्चिक	24	17 23	20	5 5	13	20 44	7	16 58	31	7 40	24	19 25	18	14 16
धनु	26	19 3	22	8 35	15	21 51	9	18 11	सितं. 2	11 55	26	23 17	20	16 23
मकर	28	18 47	24	11 12	17	22 47	11	17 26	4	13 38	29	2 16	22	16 42
कुम्भ	30	18 37	26	13 35	20	1 3	13	16 53	6	13 58	31	5 6	24	17 16
मीन	फर. 1	20 40	28	16 44	22	5 32	15	18 37	8	14 37	नवं. 2	8 18	26	19 40
							सन् 1988							
मेष			फर. 21	15 30	अप्रै. 16	12 28	जून 10	3 32	अग. 3	15 5	सितं. 27	9 47	नवं. 21	6 6
वृष			23	20 34	18	15 35	12	8 26	5	19 47	29	11 24	23	8 4
मिथुन	जन. 2	17 29	26	5 21	20	21 44	14	15 3	8	3 22	अक्तू. 1	16 29	25	11 39
कर्क	5	4 39	28	16 58	23	7 31	17	0 7	10	13 28	4	1 35	27	18 24
सिंह	7	17 15	मार्च 2	5 48	25	19 57	19	11 47	13	1 30	6	13 43	30	4 51
कन्या	10	6 8	4	18 26	28	8 35	22	0 44	15	14 32	9	2 48	दिसं. 2	17 38
तुला	12	17 11	7	5 44	30	19 12	24	12 21	18	3 11	11	15 2	5	5 59
वृश्चिक	15	0 25	9	14 50	मई 3	2 59	26	20 31	20	13 35	14	1 28	7	15 43
धनु	17	3 28	11	21 2	5	8 24	29	0 53	22	20 20	16	9 44	9	22 27
मकर	19	3 36	14	0 12	7	12 19	जुला. 1	2 42	24	23 17	18	15 36	12	3 3
कुम्भ	21	2 54	16	1 6	9	15 28	3	3 43	26	23 34	20	18 59	14	6 38
मीन	23	3 29	18	1 7	11	18 14	5	5 28	28	22 58	22	20 18	16	9 50
मेष	25	6 52	20	2 1	13	21 6	7	8 54	30	23 25	24	20 41	18	12 57
वृष	27	13 38	22	5 34	16	0 54	9	14 18	सितं. 2	2 31	26	21 50	20	16 20
मिथुन	29	23 17	24	12 51	18	6 52	11	21 44	4	9 11	29	1 37	22	20 49
कर्क	फर. 1	10 54	26	23 42	20	15 58	14	7 19	6	19 13	31	9 21	25	3 35
सिंह	3	23 36	29	12 30	23	3 55	16	19 2	9	7 30	नवं. 2	20 46	27	13 27
कन्या	6	12 25	अप्रै. 1	1 3	25	16 43	19	8 3	11	20 34	5	9 48	30	1 51
तुला	9	0 0	3	11 51	28	3 38	21	20 22	14	9 6	7	21 56		
वृश्चिक	11	8 40	5	20 24	30	11 12	24	5 41	16	19 54	10	7 46		
धनु	13	13 29	8	2 41	जून 1	15 43	26	10 55	19	3 55	12	15 18		
मकर	15	14 51	10	6 56	3	18 29	28	12 44	21	8 35	14	21 2		
कुम्भ	17	14 19	12	9 27	5	20 53	30	12 49	23	10 13	17	1 17		
मीन	19	13 53	14	10 55	7	23 46	अग. 1	13 5	25	10 2	19	4 11		

चन्द्रमा का राशि चार

(सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है)

राशि	तारीख	समय घं मि	तारीख	समय घं मि	तारीख	समय घं मि	तारीख	समय घं मि	तारीख	समय घं मि	तारीख	समय घं मि	तारीख	समय घं मि
							सन् 1989							
मेष			फर. 11	0 44	अप्रै. 6	20 42	मई 31	16 12	जुला. 25	4 4	सितं. 17	18 51	नवं. 11	16 45
वृष			13	3 50	8	20 41	जून 2	17 14	27	6 58	19	19 21	13	15 54
मिथुन			15	9 34	10	23 21	4	19 4	29	10 57	21	22 16	15	15 58
कर्क			17	17 56	13	6 2	6	23 31	31	16 39	24	4 29	17	19 3
सिंह			20	4 33	15	16 33	9	7 44	अग. 3	0 44	26	13 45	20	2 19
कन्या			22	16 49	18	5 14	11	19 18	5	11 24	29	1 8	22	13 17
तुला	जन. 1	14 34	25	5 44	20	18 5	14	8 3	7	23 52	अक्तू. 1	13 39	25	2 0
वृश्चिक	4	0 54	27	17 42	23	5 49	16	19 33	10	12 9	4	2 22	27	14 29
धनु	6	7 40	मार्च 2	2 56	25	15 51	19	4 34	12	22 5	6	14 2	30	1 44
मकर	8	11 25	4	8 23	27	23 41	21	11 14	15	4 31	8	23 7	दिसं. 2	11 23
कुम्भ	10	13 34	6	10 20	30	4 48	23	16 11	17	7 49	11	4 27	4	18 59
मीन	12	15 32	8	10 10	मई 2	7 6	25	19 54	19	9 14	13	6 9	6	23 58
मेष	14	18 18	10	9 47	4	7 24	27	22 41	21	10 18	15	5 33	9	2 14
वृष	16	22 20	12	11 4	6	7 21	30	1 4	23	12 25	17	4 45	11	2 42
मिथुन	19	3 58	14	15 30	8	9 1	जुला. 2	3 58	25	16 31	19	5 56	13	3 2
कर्क	21	11 35	16	23 33	10	14 12	4	8 43	27	22 59	21	10 43	15	5 16
सिंह	23	21 35	19	10 33	12	23 32	6	16 28	30	7 49	23	19 27	17	11 3
कन्या	26	9 45	21	23 7	15	11 50	9	3 23	सितं. 1	18 44	26	7 1	19	20 47
तुला	28	22 40	24	11 59	18	0 41	11	15 58	4	7 9	28	19 43	22	9 5
वृश्चिक	31	9 58	27	0 1	20	12 9	14	3 48	6	19 48	31	8 17	24	21 37
धनु	फर. 2	17 48	29	10 6	22	21 37	16	12 57	9	6 46	नव. 2	19 58	27	8 36
मकर	4	21 50	31	17 9	25	5 7	18	19 4	11	14 23	5	5 52	29	17 29
कुम्भ	6	23 12	अप्रै. 2	20 43	27	10 44	20	22 56	13	18 12	7	12 51		
मीन	8	23 36	4	21 23	29	14 21	23	1 37	15	19 7	9	16 17		
							सन् 1990							
मेष	दिसं. 26	21 0	फर. 1	14 20	मार्च 28	5 56	मई 22	3 9	जुला. 15	18 19	सितं. 8	5 57	नवं. 2	0 57
वृष	28	22 51	3	17 4	30	6 0	24	2 40	17	20 41	10	8 4	4	0 42
मिथुन	30	22 39	5	20 10	अप्रै. 1	7 38	26	1 59	19	21 57	12	10 41	6	0 28
कर्क			8	0 16	3	12 0	28	3 16	21	23 28	14	14 24	8	2 9
सिंह			10	6 9	5	19 18	30	8 5	24	2 44	16	19 31	10	6 53
कन्या			12	14 31	8	4 58	जून 1	16 46	26	9 1	19	2 21	12	14 40
तुला			15	1 29	10	16 15	4	4 14	28	18 44	21	11 23	15	0 48
वृश्चिक			17	13 58	13	4 36	6	16 49	31	6 50	23	22 44	17	12 32
धनु			20	1 47	15	17 11	9	5 11	अग. 2	19 12	26	11 27	20	1 17
मकर			22	10 53	18	4 22	11	16 28	5	5 52	28	23 15	22	14 5
कुम्भ	जन. 1	0 24	24	16 30	20	12 17	14	1 50	7	14 0	अक्तू. 1	7 53	25	1 7
मीन	3	5 33	26	19 22	22	16 6	16	8 25	9	19 44	3	12 37	27	8 34
मेष	5	9 0	28	20 53	24	16 39	18	11 50	11	23 43	5	14 24	29	11 52
वृष	7	11 8	मार्च 2	22 35	26	15 48	20	12 43	14	2 38	7	15 5	दिसं. 1	12 2
मिथुन	9	12 53	5	1 38	28	15 49	22	12 36	16	5 8	9	16 28	3	11 4
कर्क	11	15 39	7	6 35	30	18 34	24	13 25	18	7 57	11	19 46	5	11 9
सिंह	13	20 54	9	13 32	मई 3	0 59	26	16 58	20	11 57	14	1 22	7	14 4
कन्या	16	5 32	11	22 29	5	10 37	29	0 16	22	18 7	16	9 4	9	20 39
तुला	18	17 6	14	9 23	7	22 16	जुला. 1	10 57	25	3 9	18	18 39	12	6 34
वृश्चिक	21	5 40	16	21 45	10	10 46	3	23 25	27	14 48	21	6 3	14	18 34
	23	16 53	19	10 6	12	23 17	6	11 43	30	3 21	23	18 49	17	7 23
	26	1 27	21	20 18	15	10 49	8	22 34	सितं. 1	14 23	26	7 21	19	19 58
	28	7 21	24	2 45	17	19 54	11	7 23	3	22 20	28	17 16	22	7 13
	30	11 21	26	5 30	20	1 20	13	13 59	6	3 9	30	23 3	24	15 51

चन्द्रमा का राशि चार

(सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है)

राशि	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.
							सन् 1991							
मेष			फर. 19	8 56	अप्रै. 15	0 6	जून 8	20 1	अग. 2	10 45	सितं. 25	22 23	नवं. 19	16 26
वृष			21	12 58	17	1 54	10	22 1	4	15 43	28	3 5	21	19 32
मिथुन			23	15 55	19	3 22	12	21 53	6	18 3	30	6 47	23	20 45
कर्क	जन. 1	22 18	25	18 14	21	5 51	14	21 35	8	18 38	अक्तू. 2	9 53	25	21 48
सिंह	3	23 44	27	20 41	23	9 55	16	22 55	10	18 54	4	12 40	28	0 1
कन्या	6	4 32	मार्च 2	0 28	25	15 40	19	3 12	12	20 39	6	15 44	30	4 9
तुला	8	13 13	4	6 52	27	23 13	21	10 49	15	1 32	8	20 15	दिसं. 2	10 28
वृश्चिक	11	0 56	6	16 38	30	8 53	23	21 18	17	10 23	11	3 31	4	18 59
धनु	13	13 49	9	5 1	मई 2	20 43	26	9 37	19	22 22	13	14 7	7	5 42
मकर	16	2 10	11	17 36	5	9 42	28	22 37	22	11 20	16	2 53	9	18 13
कुम्भ	18	12 53	14	3 55	7	21 29	जुला. 1	10 59	24	23 9	18	15 8	12	7 14
मीन	20	21 28	16	11 0	10	5 51	3	21 17	27	8 48	21	0 32	14	18 38
मेष	23	3 33	18	15 27	12	10 9	6	4 21	29	16 12	23	6 32	17	2 32
वृष	25	7 8	20	18 31	14	11 27	8	7 51	31	21 38	25	10 5	19	6 28
मिथुन	27	8 42	22	21 20	16	11 39	10	8 36	सितं. 3	1 16	27	12 36	21	7 26
कर्क	29	9 23	25	0 29	18	12 34	12	8 9	5	3 24	29	15 13	23	7 11
सिंह	31	10 42	27	4 16	20	15 33	14	8 23	7	4 47	31	18 29	25	7 35
कन्या	फर. 2	14 20	29	9 6	22	21 8	16	11 4	9	6 43	नवं. 2	22 41	27	10 12
तुला	4	21 31	31	15 47	25	5 13	18	17 23	11	10 54	5	4 15	29	15 57
वृश्चिक	7	8 18	अप्रै. 3	1 9	27	15 28	21	3 20	13	18 39	7	11 55		
धनु	9	21 4	5	13 7	30	3 30	23	15 42	16	5 55	9	22 17		
मकर	12	9 25	8	1 57	जून 1	16 29	26	4 41	18	18 49	12	10 52		
कुम्भ	14	19 39	10	12 56	4	4 49	28	16 46	21	6 41	14	23 38		
मीन	17	3 22	12	20 16	6	14 24	31	3 0	23	15 52	17	9 57		
							सन् 1992							
मेष			फर. 9	17 22	अप्रै. 4	5 17	मई 28	22 20	जुला. 22	15 10	सितं. 15	3 12	नवं. 8	16 58
वृष			12	0 32	6	11 54	31	4 1	24	23 5	17	12 31	11	0 58
मिथुन			14	4 34	8	16 56	जून 2	7 3	27	3 14	19	19 26	13	6 50
कर्क			16	5 46	10	20 40	4	8 47	29	4 14	21	23 23	15	11 9
सिंह			18	5 24	12	23 14	6	10 31	31	3 40	24	0 38	17	14 25
कन्या			20	5 21	15	1 14	8	13 18	अग. 2	3 34	26	0 29	19	17 3
तुला			22	7 44	17	3 54	10	17 46	4	5 53	28	0 54	21	19 44
वृश्चिक	जन. 1	0 50	24	14 5	19	8 46	13	0 21	6	11 46	30	3 58	23	23 30
धनु	3	12 6	27	0 31	21	17 1	15	9 13	8	21 13	अक्तू. 2	11 1	26	5 32
मकर	6	0 46	29	13 20	24	4 31	17	20 18	11	9 1	4	21 50	28	14 35
कुम्भ	8	13 45	मार्च 3	2 11	26	17 17	20	8 51	13	21 43	7	10 30	दिसं. 1	2 18
मीन	11	1 41	5	13 30	29	4 42	22	21 13	16	10 13	9	22 46	3	14 51
मेष	13	11 1	7	22 53	मई 1	13 16	25	7 19	18	21 34	12	9 22	6	1 52
वृष	15	16 42	10	6 17	3	19 3	27	13 51	21	6 38	14	18 5	8	9 52
मिथुन	17	18 51	12	11 32	5	22 59	29	16 55	23	12 23	17	0 56	10	14 52
कर्क	19	18 38	14	14 30	8	2 3	जुला. 1	17 44	25	14 40	19	5 48	12	17 50
सिंह	21	17 54	16	15 37	10	4 51	3	18 0	27	14 29	21	8 37	14	20 0
कन्या	23	18 41	18	16 12	12	7 53	5	19 24	29	13 43	23	9 58	16	22 27
तुला	25	22 42	20	18 6	14	11 46	7	23 14	31	14 35	25	11 12	19	1 57
वृश्चिक	28	6 42	22	23 10	16	17 24	10	6 2	सितं. 2	18 56	27	14 3	21	6 58
धनु	30	18 1	25	8 18	19	1 38	12	15 32	5	3 24	29	20 5	23	[illegible]
मकर	फर. 2	6 56	27	20 32	21	12 41	15	3 0	7	15 2	नवं. 1	5 50	25	[illegible]
कुम्भ	4	19 47	30	9 23	24	1 19	17	15 36	10	3 49	3	18 5	28	20 [illegible]
मीन	7	7 32	अप्रै. 1	20 34	26	13 13	20	4 10	12	16 8	6	6 28	30	[illegible]

चन्द्रमा का राशि चार

(सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है)

राशि	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.	तारीख	समय घं. मि.
							सन् 1993							
मेष	जन. 2	10 53	फर. 26	1 14	अप्रै. 21	13 18	जून 15	4 29	अग. 8	20 18	अक्तू. 2	9 7	नवं. 25	22 11
वृष	4	19 50	28	12 24	23	23 59	17	14 56	11	8 11	4	21 34	28	10 6
मिथुन	7	1 3	मार्च 2	20 36	26	8 45	19	22 26	13	17 0	7	8 22	30	20 3
कर्क	9	3 10	5	0 49	28	15 11	22	3 14	15	21 45	9	16 0	दिसं. 3	3 46
सिंह	11	3 46	7	1 33	30	19 2	24	6 19	17	23 11	11	19 48	5	9 21
कन्या	13	4 40	9	0 32	मई 2	20 42	26	8 47	19	23 8	13	20 27	7	13 3
तुला	15	7 21	11	0 2	4	21 20	28	11 30	21	23 39	15	19 42	9	15 16
वृश्चिक	17	12 37	13	2 10	6	22 36	30	15 6	24	2 23	17	19 40	11	16 51
धनु	19	20 24	15	8 14	9	2 13	जुला. 2	20 5	26	7 59	19	22 15	13	19 0
मकर	22	6 16	17	18 2	11	9 20	5	3 2	28	16 15	22	4 34	15	23 10
कुम्भ	24	17 46	20	6 5	13	19 53	7	12 26	31	2 31	24	14 27	18	6 33
मीन	27	6 20	22	18 47	16	8 19	10	0 7	सितं. 2	14 18	27	2 34	20	17 19
मेष	29	18 46	25	7 5	18	20 29	12	12 40	5	3 2	29	15 17	23	5 59
वृष	फर. 1	5 4	27	18 15	21	6 48	14	23 44	7	15 27	नवं. 1	3 24	25	18 5
मिथुन	3	11 38	30	3 16	23	14 48	17	7 31	10	1 32	3	14·1	28	3 42
कर्क	5	14 14	अप्रै. 1	9 7	25	20 37	19	11 48	12	7 40	5	22 18	30	10 27
सिंह	7	14 11	3	11 33	28	0 39	21	13 41	14	9 49	8	3 37		
कन्या	9	13 31	5	11 35	30	3 23	23	14 53	16	9 28	10	6 2		
तुला	11	14 23	7	11 3	जून 1	5 28	25	16 55	18	8 46	12	6 32		
वृश्चिक	13	18 22	9	12 6	3	7 54	27	20 43	20	9 50	14	6 43		
धनु	16	1 55	11	16 30	5	11 51	30	2 32	22	14 6	16	8 25		
मकर	18	12 14	14	0 56	7	18 26	अग. 1	10 18	24	21 52	18	13 12		
कुम्भ	21	0 9	16	12 28	10	4 8	3	20 0	27	8 21	20	21 47		
मीन	23	12 44	19	1 10	12	16 9	6	7 36	29	20 25	23	9 26		
							सन् 1994							
मेष			फर. 15	22 11	अप्रै. 11	11 40	जून 5	0 5	जुला. 29	15 10	सितं. 22	6 50	नवं. 15	19 41
वृष			18	11 7	14	0 41	7	13 2	अग. 1	4 1	24	19 32	18	8 34
मिथुन			20	22 10	16	12 57	10	0 45	3	15 50	27	8 20	20	21 23
कर्क			23	5 23	18	22 44	12	10 20	6	0 40	29	18 47	23	8 59
सिंह	जन. 1	15 1	25	8 41	21	4 46	14	17 37	8	6 23	अक्तू. 2	1 22	25	18 12
कन्या	3	18 26	27	9 35	23	7 6	16	22 36	10	10 3	4	4 15	28	0 9
तुला	5	21 25	मार्च 1	10 3	25	7 1	19	1 30	12	12 55	6	4 54	30	2 44
वृश्चिक	8	0 27	3	11 49	27	6 23	21	2 54	14	15 48	8	5 11	दिसं. 2	2 54
धनु	10	3 58	5	15 49	29	7 9	23	3 53	16	19 6	10	6 43	4	2 19
मकर	12	8 44	7	22 12	मई 1	10 54	25	5 59	18	23 9	12	10 35	6	2 58
कुम्भ	14	15 47	10	6 42	3	18 21	27	10 50	21	4 37	14	17 10	8	6 42
मीन	17	1 49	12	17 8	6	5 4	29	19 26	23	12 29	17	2 19	10	14 31
मेष	19	14 14	15	5 20	8	17 41	जुला. 2	7 16	25	23 15	19	13 36	13	1 52
वृष	22	2 46	17	18 23	11	6 40	4	20 12	28	12 0	22	2 19	15	14 52
मिथुन	24	12 50	20	6 20	13	18 44	7	7 46	31	0 19	24	15 16	18	3 31
कर्क	26	19 16	22	14 57	16	4 47	9	16 45	सितं. 2	9 43	27	2 39	20	14 42
सिंह	28	22 43	24	19 21	18	11 59	11	23 16	4	15 22	29	10 45	22	23 57
कन्या	31	0 44	26	20 22	20	16 0	14	3 59	6	18 9	31	14 55	25	6 54
तुला	फर. 2	2 50	28	19 54	22	17 21	16	7 31	8	19 41	नवं. 2	15 56	27	11 17
वृश्चिक	4	5 58	30	19 59	24	17 18	18	10 14	10	21 29	4	15 27	29	13 11
[illegible]	6	10 28	अप्रै. 1	22 19	26	17 34	20	12 33	13	0 29	6	15 23	31	13 31
[illegible]	8	16 24	4	3 47	28	19 58	22	15 25	15	5 6	8	17 32		
[illegible]	11	0 4	6	12 19	31	1 53	24	20 9	17	11 30	10	23 2		
[illegible]	13	10 1	8	23 13	जून 2	11 39	27	4 0	19	20 0	13	8 4		

चन्द्रमा का राशि चार

(सर्वत्र भा. स्टॅ. टा. दिया गया है)

राशि	तारीख	समय घं मि.	तारीख	समय घं मि.	तारीख	समय घं मि.	तारीख	समय घं मि.	तारीख	समय घं मि.	तारीख	समय घं मि.	तारीख	समय घं मि.
							सन् 1995							
मेष	दिसं. 30	8 57	फर. 5	17 22	अप्रै. 1	10 22	मई 25	22 59	जुला. 19	11 45	सितं. 12	5 11	नवं. 5	21 18
वृष			8	5 36	3	21 48	28	11 4	21	23 20	14	15 0	8	7 12
मिथुन			10	18 24	6	10 36	30	23 55	24	12 14	17	3 13	10	18 57
कर्क			13	5 13	8	22 39	जून 2	12 26	27	0 23	19	15 34	13	7 37
सिंह			15	13 8	11	7 48	4	23 24	29	10 51	22	1 51	15	19 28
कन्या			17	18 39	13	13 13	7	7 33	31	19 27	24	9 13	18	4 30
तुला			19	22 45	15	15 34	9	12 8	अग. 3	2 0	26	14 8	20	9 39
वृश्चिक			22	2 8	17	16 19	11	13 26	5	6 14	28	17 30	22	11 27
धनु			24	5 9	19	17 9	13	12 51	7	8 15	30	20 13	24	11 26
मकर	जन. 2	13 56	26	8 8	21	19 27	15	12 21	9	8 56	अक्तू. 2	22 57	26	11 37
कुम्भ	4	16 26	28	11 52	24	0 7	17	14 1	11	9 56	5	2 20	28	13 46
मीन	6	22 41	मार्च 2	17 33	26	7 26	19	19 26	13	13 10	7	7 4	30	18 58
मेष	9	9 1	5	2 13	28	17 11	22	4 50	15	20 5	9	13 56	दिसं. 3	3 14
वृष	11	21 49	7	13 51	मई 1	4 52	24	16 57	18	6 43	11	23 27	5	13 47
मिथुन	14	10 30	10	2 41	3	17 40	27	5 53	20	19 21	14	11 18	8	1 45
कर्क	16	21 15	12	14 4	6	6 8	29	18 13	23	7 31	16	23 53	10	14 23
सिंह	19	5 44	14	22 14	8	16 25	जुला. 2	5 9	25	17 38	19	10 53	13	2 41
कन्या	21	12 19	17	3 10	10	23 10	4	14 0	28	1 28	21	18 40	15	13 1
तुला	23	17 17	19	6 0	13	2 13	6	20 3	30	7 25	23	23 7	17	19 49
वृश्चिक	25	20 40	21	8 5	15	2 38	8	22 57	सितं. 1	11 48	26	1 14	19	22 39
धनु	27	22 42	23	10 30	17	2 12	10	23 24	3	14 51	28	2 32	21	22 34
मकर	30	0 14	25	13 53	19	2 49	12	22 57	5	16 58	30	4 25	23	21 34
कुम्भ	फर. 1	2 49	27	18 40	21	6 8	14	23 42	7	19 8	नवं. 1	7 54	25	21 55
मीन	3	8 12	30	1 20	23	12 57	17	3 38	9	22 45	3	13 30	28	1 28
							सन् 1996							
मेष			फर. 23	1 20	अप्रै. 17	20 24	जून 11	9 10	अग. 4	21 55	सितं. 28	17 15	नवं. 22	10 45
वृष	जन. 1	19 37	25	9 39	20	3 40	13	17 50	7	5 26	30	22 11	24	16 31
मिथुन	4	7 55	27	21 10	22	13 39	16	4 22	9	16 6	अक्तू. 3	6 40	27	0 19
कर्क	6	20 32	मार्च 1	9 50	25	1 44	18	16 21	12	4 27	5	18 12	29	10 40
सिंह	9	8 42	3	21 36	27	14 3	21	5 7	14	17 9	8	6 52	दिसं. 1	23 7
कन्या	11	19 33	6	7 29	30	0 20	23	17 3	17	5 12	10	18 29	4	11 39
तुला	14	3 49	8	15 19	मई 2	7 17	26	2 7	19	15 36	13	3 46	6	21 40
वृश्चिक	16	8 30	10	21 10	4	11 9	28	7 5	21	23 15	15	10 35	9	3 47
धनु	18	9 46	13	1 7	6	13 10	30	8 25	24	3 30	17	15 25	11	6 33
मकर	20	9 2	15	3 30	8	14 50	जुला. 2	7 50	26	4 46	19	18 52	13	7 39
कुम्भ	22	8 30	17	5 5	10	17 22	4	7 33	28	4 30	21	21 29	15	8 55
मीन	24	10 22	19	7 13	12	21 31	6	9 30	30	4 36	23	23 54	17	11 42
मेष	26	16 9	21	11 21	15	3 32	8	14 48	सितं. 1	7 1	26	2 59	19	16 32
वृष	29	1 55	23	18 39	17	11 30	10	23 23	3	13 1	28	7 51	21	23 17
मिथुन	31	14 8	26	5 13	19	21 32	13	10 17	5	22 44	30	15 34	24	7 51
कर्क	फर. 3	2 49	28	17 38	22	9 27	15	22 31	8	10 52	नवं. 2	2 21	26	18 21
सिंह	5	14 40	31	5 36	24	22 4	18	11 16	10	23 33	4	14 57	29	6 40
कन्या	8	1 9	अप्रै. 2	15 22	27	9 14	20	23 31	13	11 15	7	2 55	31	19 37
तुला	10	9 43	4	22 24	29	17 0	23	9 39	15	21 9	9	12 9		
वृश्चिक	12	15 42	7	3 10	31	20 55	25	16 10	18	4 50	11	18 9		
धनु	14	18 46	9	6 31	जून 2	22 2	27	18 46	20	10 3	13	21 46		
मकर	16	19 35	11	9 13	4	22 14	29	18 36	22	12 55	16	0 20	5	[illegible]
कुम्भ	18	19 39	13	11 58	6	23 25	31	17 41	24	14 9	18	2 59	8	20 [illegible]
मीन	20	20 58	15	15 26	9	2 55	अग. 2	18 13	26	15 4	20	6 21	0	[illegible]

चन्द्रमा का राशि चार

(सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है)

राशि	तारीख	समय घं मि.	तारीख	समय घं मि.	तारीख	समय घं मि.	तारीख	समय घं मि.	तारीख	समय घं मि.	तारीख	समय घं मि.	तारीख	समय घं मि.
							सन् 1997							
मेष			फर. 12	5 47	अप्रै. 8	2 38	जून 1	19 32	जुला. 26	6 45	सितं. 18	23 51	नवं. 12	21 12
वृष			14	10 59	10	5 11	3	23 32	28	11 26	21	1 32	14	22 19
मिथुन			16	19 40	12	11 0	6	5 11	30	18 31	23	6 38	17	1 12
कर्क			19	6 57	14	20 36	8	13 30	अग. 2	3 53	25	15 35	19	7 28
सिंह			21	19 35	17	8 56	11	0 45	4	15 18	28	3 26	21	17 41
कन्या			24	8 26	19	21 44	13	13 36	7	4 12	30	16 29	24	6 26
तुला	जन. 3	6 47	26	20 20	22	8 56	16	1 24	9	17 1	अक्तू. 3	5 8	26	19 0
वृश्चिक	5	14 6	मार्च 1	6 1	24	17 39	18	9 58	12	3 38	5	16 18	29	5 19
धनु	7	17 17	3	12 24	27	0 5	20	14 59	14	10 26	8	1 12	दिसं. 1	12 58
मकर	9	17 41	5	15 17	29	4 41	22	17 35	16	13 22	10	7 14	3	18 37
कुम्भ	11	17 24	7	15 39	मई 1	7 55	24	19 22	18	13 43	12	10 19	5	22 58
मीन	13	18 27	9	15 11	3	10 12	26	21 39	20	13 21	14	11 4	8	2 25
मेष	15	22 9	11	15 48	5	12 13	29	1 7	22	14 8	16	10 53	10	5 8
वृष	18	4 48	13	19 15	7	15 7	जुला. 1	6 1	24	17 29	18	11 37	12	7 38
मिथुन	20	13 57	16	2 30	9	20 21	3	12 34	27	0 3	20	15 10	14	11 5
कर्क	23	0 59	18	13 14	12	4 58	5	21 16	29	9 39	22	22 44	16	16 58
सिंह	25	13 23	21	1 56	14	16 42	8	8 25	31	21 28	25	10 0	19	2 17
कन्या	28	2 21	23	14 42	17	5 32	10	21 17	सितं. 3	10 25	27	23 2	21	14 32
तुला	30	14 17	26	2 11	19	16 50	13	9 42	5	23 17	30	11 31	24	3 19
वृश्चिक	फर. 1	23 8	28	11 38	22	1 8	15	19 12	8	10 33	नवं. 1	22 9	26	13 58
धनु	4	3 52	30	18 37	24	6 36	18	0 42	10	18 47	4	6 39	28	21 19
मकर	6	5 2	अप्रै. 1	23 0	26	10 18	20	2 55	12	23 18	6	13 6	31	1 53
कुम्भ	8	4 21	4	1 6	28	13 19	22	3 31	15	0 37	8	17 32		
मीन	10	3 58	6	1 50	30	16 17	24	4 20	17	0 11	10	20 2		
							सन् 1998							
मेष	दिसं. 28	1 17	फर. 2	16 30	मार्च 29	10 51	मई 23	7 39	जुला. 16	20 39	सितं. 9	9 48	नवं. 3	7 2
वृष	30	2 50	4	19 52	31	10 57	25	7 58	18	23 21	11	10 53	5	5 59
मिथुन			7	1 13	अप्रै. 2	13 46	27	9 6	21	2 33	13	14 0	7	5 59
कर्क			9	8 45	4	20 23	29	12 59	23	7 13	15	19 53	9	9 3
सिंह			11	18 31	7	6 38	31	20 52	25	14 22	18	4 28	11	16 17
कन्या			14	6 19	9	19 3	जून 3	8 19	28	0 29	20	15 11	14	3 6
तुला			16	19 13	12	7 58	5	21 9	30	12 46	23	3 23	16	15 42
वृश्चिक			19	7 22	14	20 10	8	9 2	अग. 2	1 7	25	16 9	19	4 21
धनु			21	16 41	17	6 48	10	18 45	4	11 15	28	4 0	21	16 8
मकर			23	22 8	19	15 1	13	2 21	6	18 8	30	13 7	24	2 30
कुम्भ	जन. 2	5 0	26	0 12	21	20 6	15	8 10	8	22 9	अक्तू. 2	18 25	26	10 35
मीन	4	7 46	28	0 22	23	22 3	17	12 21	11	0 26	4	20 9	28	15 36
मेष	6	10 49	मार्च 2	0 28	25	21 55	19	15 2	13	2 17	6	19 46	30	17 27
वृष	8	14 28	4	2 12	27	21 29	21	16 45	15	4 45	8	19 17	दिसं. 2	17 16
मिथुन	10	19 11	6	6 45	29	22 53	23	18 43	17	8 34	10	20 46	4	16 59
कर्क	13	1 44	8	14 27	मई 2	3 54	25	22 33	19	14 14	13	1 36	6	18 46
सिंह	15	10 55	11	0 50	4	13 5	28	5 38	21	22 6	15	10 4	9	0 20
कन्या	17	22 43	13	12 59	7	1 17	30	16 13	24	8 18	17	21 12	11	9 59
तुला	20	11 39	16	1 51	9	14 14	जुला. 3	4 48	26	20 27	20	9 38	13	22 17
वृश्चिक	22	23 5	18	14 14	12	2 11	5	16 50	29	9 6	22	22 21	16	10 58
[illegible]	25	7 7	21	0 36	14	12 25	8	2 28	31	20 8	25	10 26	18	22 25
[illegible]	27	11 32	23	7 41	16	20 42	10	9 23	सितं. 3	3 52	27	20 39	21	8 9
[illegible]	29	13 31	25	11 3	19	2 45	12	14 12	5	7 59	30	3 39	23	16 2
[illegible]	31	14 42	27	11 54	[illegible]	6 16	14	17 45	7	9 25	नवं. 1	6 52	25	21 49

चन्द्रमा का राशि चार

(सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है)

राशि	तारीख	समय घं मि.	तारीख	समय घं मि.	तारीख	समय घं मि.	तारीख	समय घं मि.	तारीख	समय घं मि.	तारीख	समय घं मि.	तारीख	समय घं मि.
							सन् 1999							
मेष			फर. 20	12 41	अप्रै. 16	6 51	जून 10	3 7	अग. 3	16 3	सितं. 27	5 10	नवं. 21	1 53
वृष			22	15 0	18	6 22	12	3 34	5	19 8	29	6 41	23	2 3
मिथुन	जन. 1	3 40	24	18 2	20	6 45	14	2 58	7	21 10	अक्तू. 1	8 38	25	1 14
कर्क	3	5 30	26	22 19	22	9 44	16	3 23	9	23 6	3	11 59	27	1 36
सिंह	5	10 5	मार्च 1	4 16	24	16 2	18	6 42	12	2 9	5	17 4	29	4 46
कन्या	7	18 23	3	12 18	27	1 16	20	13 54	14	7 34	7	23 54	दिसं. 1	11 24
तुला	10	5 53	5	22 38	29	12 25	23	0 30	16	16 11	10	8 38	3	21 1
वृश्चिक	12	18 31	8	10 49	मई 2	0 40	25	12 55	19	3 38	12	19 30	6	8 36
धनु	15	6 2	10	23 12	4	13 18	28	1 24	21	16 10	15	8 4	8	21 15
मकर	17	15 15	13	9 30	7	1 9	30	12 50	24	3 29	17	20 37	11	10 6
कुम्भ	19	22 9	15	16 14	9	10 28	जुला. 2	22 31	26	12 5	20	6 39	13	21 51
मीन	22	3 13	17	19 31	11	15 55	5	5 51	28	17 54	22	12 38	16	6 48
मेष	24	6 54	19	20 40	13	17 36	7	10 25	30	21 43	24	14 56	18	11 52
वृष	26	9 39	21	21 28	15	17 0	9	12 28	सितं. 2	0 32	26	15 13	20	13 20
मिथुन	28	12 4	23	23 32	17	16 16	11	13 2	4	3 14	28	15 34	22	12 44
कर्क	30	15 6	26	3 50	19	17 36	13	13 46	6	6 24	30	17 42	24	12 8
सिंह	फर. 1	19 57	28	10 34	21	22 26	15	16 24	8	10 34	नवं. 1	22 28	26	13 33
कन्या	4	3 37	30	19 26	24	7 0	17	22 19	10	16 27	4	5 50	28	18 26
तुला	6	14 17	अप्रै. 2	6 5	26	18 15	20	7 50	13	0 46	6	15 16	31	3 6
वृश्चिक	9	2 43	4	18 11	29	6 41	22	19 52	15	11 44	9	2 26		
धनु	11	14 38	7	6 48	31	19 14	25	8 22	18	0 19	11	15 0		
मकर	14	0 4	9	18 6	जून 3	7 2	27	19 32	20	12 11	14	3 55		
कुम्भ	16	6 22	12	2 6	5	16 59	30	4 33	22	21 8	16	15 8		
मीन	18	10 11	14	6 3	7	23 50	अग. 1	11 19	25	2 31	18	22 38		
							सन् 2000							
मेष			फर. 11	0 57	अप्रै. 5	14 30	मई 30	10 2	जुला. 24	2 8	सितं. 16	13 29	नवं. 10	5 54
वृष			13	5 23	7	17 12	जून 1	12 8	26	7 5	18	19 6	12	9 39
मिथुन			15	8 3	9	19 26	3	12 14	28	9 4	20	23 15	14	11 41
कर्क			17	9 36	11	22 15	5	12 16	30	9 9	23	2 12	16	13 33
सिंह			19	11 7	14	2 4	7	13 58	अग. 1	9 1	25	4 19	18	16 14
कन्या			21	14 6	16	7 4	9	18 23	3	10 32	27	6 29	20	20 16
तुला			23	19 59	18	13 40	12	1 45	5	15 18	29	10 7	23	1 52
वृश्चिक	जन. 2	14 38	26	5 30	20	22 30	14	11 41	7	23 59	अक्तू. 1	16 43	25	9 25
धनु	5	3 26	28	17 46	23	9 53	16	23 32	10	11 47	4	2 56	27	19 19
मकर	7	16 5	मार्च 2	6 29	25	22 46	19	12 27	13	0 47	6	15 35	30	7 28
कुम्भ	10	3 32	4	17 19	28	10 42	22	1 8	15	13 4	9	4 1	दिसं. 2	20 31
मीन	12	12 54	7	1 17	30	19 19	24	11 49	17	23 32	11	13 55	5	8 1
मेष	14	19 22	9	6 47	मई 3	0 1	26	19 0	20	7 48	13	20 43	7	16 0
वृष	16	22 44	11	10 44	5	1 53	28	22 23	22	13 41	16	1 15	9	20 5
मिथुन	18	23 41	13	13 56	7	2 42	30	22 56	24	17 13	18	4 40	11	21 25
कर्क	20	23 37	15	16 49	9	4 12	जुला. 2	22 23	26	18 48	20	7 46	13	21 44
सिंह	23	0 23	17	19 48	11	7 27	4	22 41	28	19 27	22	10 54	15	22 46
कन्या	25	3 42	19	23 38	13	12 47	7	1 29	30	20 44	24	14 23	18	1 47
तुला	27	10 46	22	5 26	15	20 11	9	7 46	सितं. 2	0 25	26	18 55	20	7 24
वृश्चिक	29	21 27	24	14 12	18	5 39	11	17 27	4	7 49	29	1 38	22	15 40
धनु	फर. 1	10 11	27	1 54	20	17 8	14	5 31	6	18 54	31	11 21	25	[illegible]
मकर	3	22 47	29	14 44	23	6 1	16	18 29	9	7 48	नवं. 2	23 42	27	[illegible]
कुम्भ	6	9 44	अप्रै. 1	1 58	25	18 31	19	7 1	11	20 1	5	12 29	30	[illegible]
मीन	8	18 27	3	9 52	28	4 18	21	17 55	14	5 58	7	23 1	[illegible]	20 [illegible]

श्री मार्त्तण्ड ज्योतिष कार्यालय के नियम

हमारे यहां जन्मपत्र एवं वर्षफल शुद्धगणित से बनाये जाते हैं, जिनमें आयु, रोग, सन्तान, स्त्री, धन एवं भाग्योदय, तरक्की आदि का निर्णय किया जाता है ।

जन्मपत्र की फीस :- साधारण जन्मपत्र की फीस कम से कम 401 रु. और बड़े जन्मपत्र की फीस 501 रु.है। डाकव्यय अलग होगा । विदेशी जन्मपत्र कम्प्यूटर से तैयार की गई सारणियों से बड़ी सावधानी के साथ बनाए जाते हैं, गणित विशेष परिश्रम से करनी पड़ती है, अतः जिनका जन्म विदेश में हुआ हो, उनके साधारण जन्मपत्र की फीस कम से कम 551 रु. है। यदि आप वर्षफल बनवाना चाहते हैं, तो अपनी जन्मकुण्डली की नकल व पेशा लिख कर भेजें। जन्मपत्र बनवाने के लिए जन्म, तारीख, मास, सन्, जन्मसंवत्, जन्मटाईम, जन्मस्थान, जाति, पेशा एवं विशेष विचारणीय विषय भी लिखना न भूलें। टेवा की फीस 51 रु. है ।

वर्षफल की फीस - साधारणतया 151 रु.है। विस्तृत फलादेश वाले वर्षफल की फीस 201 रु. है। जिनकी जन्मकुण्डली न हो, वे व्यक्ति पत्र लिखने का समय, तारीख एवं अपनी अन्दाजन उम्र, पेशा, जाति अवश्य लिखें। वर्षफल का आर्डर देते समय यह लिखना जरुरी है, कि सवर्ष आपके वर्षफल में किन बातों पर विशेष रूप से विचार किया जाए। शुद्ध विवाहमुहूर्त जानने की फीस 51 रु. है, और वर-कन्या की कुण्डली मिलान की फीस 151 रु. है । जन्मपत्र एवं वर्षफल हिन्दी और पंजाबी में सुन्दर और विस्तृत फलादेश सहित बनाएं जाते हैं। आर्डर के साथ पूरी फीस पेशगी भेजें। विशेष प्रश्न की फीस 101 रु. है । सर्वसाधारण प्रश्न फीस 51 रु. है।

नोट- प्रत्येक काम की पूरी फीस आर्डर के साथ ही भेजें । वी. पी. पी. नहीं की जाएगी । बिना पेशगी के कोई भी कार्य नहीं किया जायेगा।

घर बैठे प्रश्न पूछने की रीति- यद्यपि सामने आकर प्रश्न पूछने से सब शंकाएं निवृत्त हो जाती हैं, फिर भी यदि कोई सज्जन किसी विशेष कारण से प्रत्यक्ष न मिल सकें, तो वह अपनी अन्दाजन उम्र, पेशा, जाति, प्रश्न लिखने की तारीख एवं टाईम लिख दें। जो प्रश्न पूछना हो, उसे स्पष्ट शब्दों में खुलासा तौर पर लिखें।

व्यापारियों के लिए चांस -हम समय-समय पर रुई, बिनौला, सरसों, गुड़, खांड एवं शेयर मार्कीट आदि के चांस देते हैं । वर्षों से अनेकों व्यापारी हमारे परामर्श से लाभ उठाते आ रहे हैं। यदि आप भी लाभ उठाना चाहते हैं, तो आप आज ही 500 रु. का मनीआर्डर भेजकर एक मास की रिपोर्ट प्राप्त करें । वर्ष भर की फीस 5000 रु. है। जो व्यापारी साल में प्रमुख- प्रमुख एक-दो चांस ही चाहते हैं, 500 रु. भेजकर रजि.में नाम दर्ज करा सकते हैं । जिन व्यापारियों के नाम रजिस्टर में दर्ज होंगे, उन्हें ही अपने विचार भेज सकेंगें ।

—: पण्डित जी से प्रत्यक्ष मिलने का समय :—

सर्दियों में- प्रातः 9 से 2 बजे तक।
गर्मियों में- प्रातः 8 से 1 बजे तक।

दूर से आने वाले सज्जन पत्र द्वारा या टेलीफोन से पूज्य पण्डित जी से मिलने का दिन एवं समय पहले ही निश्चित कर लें।

पुंसवनी (पुत्रदाता दिव्य औषधि)

इस ईश्वरप्रदत्त प्रभावयुक्त दिव्यौषधि को गर्भ के दूसरे मास के अन्त में सेवन करने से पुत्र ही उत्पन्न होता है । इस अद्भुत औषधि की प्रशंसा में असंख्य पत्र और ईनाम प्राप्त हुए हैं। मूल्य 400 रु. पैकिंग एवं डाकव्यय सहित 425 रु.भेजें । वी. पी. पी. नहीं की जाएगी ।

सिद्ध शनियन्त्र - विधिपूर्वक शुभमुहूर्त में बने इस यन्त्र को धारण करने से शनिजन्य अशुभफल, पीड़ा, चिन्ता, आदि से मुक्ति मिलती है, अनुभव करें। भेंट-251 रु. है ।

श्री लक्ष्मी यन्त्र - अष्टगंधादि से विधिपूर्वक सिद्धमुहूर्त में बनाए गए इसयंत्र को विधिवत् पूजास्थान या गल्ले में रखने से लक्ष्मी की कृपा रहती है, कोष में भारी बरकत रहती है, तजुर्बा लें । भेंट 501 रु. डाक व्यय अलग ।

अठराहा नाशक यन्त्र - जिन औरतों के प्यारे बच्चे देवदोष, गर्भदोष व अठराहा, मसानदोष के कारण मर जाते है, उनके लिए यह यन्त्र वरदानरूप सिद्ध हो चुका है। इस विधिपूर्वक निर्मित यन्त्र के प्रभाव से बच्चे दीर्घायु होकर, सैकड़ों माता-पिता को सुखी कर रहे हैं । तजुर्बा करके चमत्कार देखें । विधानपत्र यन्त्र के साथ भेजा जाता है। भेंट 251 रु. डाक व्यय पृथक्।

सिद्ध गोपाल यन्त्र - इससिद्ध यन्त्र को विधिपूर्वक श्रद्धासहित स्त्री धारण करे, तो चिरंजीव पुत्र की प्राप्ति होती है । आर्डर देते समय स्त्री का नाम, जाति लिखें । विधानपत्र साथ भेजा जाएगा । भेंट 251रु. डाकखर्च पृथक्।

[गुरुवार को कार्यालय बन्द रहता है ।]

पत्र व्यवहार के लिए पता- पं.इन्दुशेखर शास्त्री, ज्योतिषाचार्य, एम. ए.,
श्री मार्त्तण्ड ज्योतिष कार्यालय
मु. पो. कुराली [रोपड़] पंजाब,
पिन कोड-१४०१०३- फोन : [01888] 41277

Laser typesetting by Manish Kant Gupta under guidance from Gyan ... Photostat, - Kurali, Ph. 01888-641274

martand.com